हिन्दी-शब्दार्थ-पारिजात।

अर्थात्

हिन्दी के क्लिष्ट, अप्रचलित तथा संस्कृत के हिन्दी भाषा में प्रचलित शब्दों
का तात्पर्यबोधक, तथा प्रसिद्ध कवियों तथा स्थानों का
संक्षिप्त विवरणयुक्त कोश विशेष।

सम्पादक,

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा।

"बालकोपयोगी" पुस्तकमाला, "स्त्रीशिक्षा पुस्तक" माला, "विवेकानन्द" ग्रन्थावली आदि
के संग्रहकर्त्ता, "श्रीराघवेन्द्र" तथा "श्रीयादवेन्द्र" मासिकपत्रों के सम्पादक,
"संस्कृत-हिन्दी-अङ्गरेज़ी" कोश, "अङ्गरेज़ी-संस्कृत-हिन्दी" कोश,
"संस्कृत-हिन्दी" कोश, "अङ्गरेजी-हिन्दी" कोश, "चरिता-
म्बुधि" कोश के सम्पादक।]

—10 X 01—

प्रकाशक,

रामनरायन लाल, पब्लिशर ऐंड बुकसेलर,

इलाहाबाद

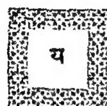
सन् १९१४

संस्करण २०००]

[मूल्य ३]

भूमिका।

—:0:—



यद्यपि हिन्दी साहित्य में अब से पहिले गणना मात्र के लिये इनेगिने एक दो कोश थे जिनमें हिन्दी के कतिपय शब्दों का अर्थ मिल जाता था तथापि हिन्दी-शब्दार्थ-पारिजात जैसा एक भी कोश नहीं था। इससे यह आशा करना अनुचित नहीं है कि इस कोश द्वारा हिन्दी साहित्य के अंग की आंशिक पुष्टि अवश्य ही होगी। इस कोश में हिन्दी साहित्य में व्यवहृत तथा हिन्दी के वर्तमान समाचार पत्रों में प्रचलित शब्दों के अर्थ संगृहीत कर दिये गये हैं।

हिन्दी जैसे वर्द्धमान साहित्य के इस कोश को सर्वाङ्गपूर्ण बतलाना तो धृष्टता है; तब हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि संग्रहकर्त्ता ने इस कोश में यथासम्भव इस बात का प्रयत्न अवश्य किया है कि हिन्दी के प्रायः सभी शब्दों के अर्थ आजाँय। सर्वाङ्ग सुन्दर कोश बनाने के कार्य में समय और धन दोनों ही की आवश्यकता होती है, पर कोश अथवा कोई भी पुस्तक क्यों न हो-जिसके बनाने या बनवाने का मुख्य उद्देश्य मूल्य की सुलभता ही है वह ग्रन्थ कहाँ तक सर्वाङ्गपूर्ण हो सकता है इसे हमारे पाठक स्वयं विचार लें।

अन्त में हम इस ग्रन्थ के पाठकों को यह बतला देना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझते हैं कि इस कोश के शब्द-संग्रह-कार्य में हमें अपने मित्र साहित्याचार्य पण्डित चन्द्रशेखर जी ओझा से पूर्ण साहाय्य मिला है।

जिन दिनों यह पुस्तक छप रही थी उन दिनों हमें इसके क्रम में कई एक नयी बातें सूझीं। यदि उनके अनुसार इस कोश का क्रम रखा जाता तो अवश्य ही यह पुस्तक और भी अधिक उपयोगी हो सकती थी, पर इस बार तो नहीं—आशा है दूसरे संस्करण में इसकी यह कमी भी पूरी की जा सकेगी।

दारागञ्ज,
ता० १०-७-१४.

चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा।

सङ्केताक्षरों का विवरण ।

अ०	=	अव्यय ।
क्रि०	=	क्रिया ।
गु०	=	गुणवाचक ।
तत्०	=	तत्सम ।
तद्भ०	=	तद्भव ।
दे०	=	देश विशेष में प्रचलित
पु०	=	पुल्लिङ्ग ।
प्रा०	=	प्राकृत ।
वा०	=	वाग्धारा या Idiom
वि०	=	विशेषण ।
सर्व०	=	सर्वनाम ।
स्त्री०	=	स्त्रीलिङ्ग ।

ओं तत्सत्।

हिन्दी

शब्दार्थ-पारिजात।

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर है कण्ठस्थान से उच्चारित होने के कारण यह कण्ठ्य कहा जाता है। जिस शब्द के पूर्व यह अक्षर जोड़ा जाता है, वह शब्द विपरीत अर्थवाचक हो जाता है। यथा अनाचार, अर्थात् आचार रहित, अकर्मण्य अर्थात् जो कर्म के उपयुक्त न हो। स्वरादि शब्द के पूर्व अ होने से अन् हो जाता है। यथा अनधिकार अर्थात् अधिकार का अभाव।

अ० (पु०) विष्णु, निषेध, अल्प, अभाव, अनुकम्पा। सादृश्य, (यथा अब्राह्मण) भेद (यथा अपट) अप्राशस्त्य (यथा अकाल) अल्पता (यथा अनुदरा) गणित में अ १ संख्या वाची है।

अऊत तद्० } **अपुत्र** तत्० } (पु०) [अ=नहीं, ऊत=पुत्र] पुत्रहीन, जिसके सन्तान न हो, निर्वंश, क्वारा, मूर्ख, जाहिल।

अंश तत्० (पु०) भाग, बाँट, पृथक, स्कन्ध, दिन, भूपरिधि का ३६०वाँ भाग। —क तत्० [अंश+अक] (पु०) बाँटने वाला, साझी, भाग। —ांश तत्० (पु०) [अंश+अंश] भाग का भाग; —ी तत्० [अंश+ई] (पु०) बटाऊ, बाँटने वाला, बटवैया, भागी।

अंशु तत्० (पु०) [अंश+उ] किरन, रश्मि, तेज, मयूख, आभा, दीप्ति, ज्योति। —जाल तत्० पु० [अंशु+जाल] रश्मि समुदाय। —धर तत्० (पु०) [अंशु+धर] रश्मिधारी अर्थात् सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, दीप, देवता, ब्रह्म, प्रतापी। —मान तत्० पु० [अंशु+मान] सूर्य, चन्द्रमा। एक राजा का नाम।

[अंशुमान सूर्यवंश में एक राजा हो गये हैं। ये राजा सगर के पौत्र और राजा असमञ्जस के पुत्र थे। जब राजा सगर के साठ हज़ार पुत्र यज्ञीय अश्व को खोजते हुए पाताल में जा महर्षि कपिल के क्रोध से भस्म होगये; तब राजा सगर ने अपने पुत्रों के आने में विलम्ब देख अपने पौत्र अंशुमान को भेजा। ये जाकर मुनि को सन्तुष्ट कर यज्ञीय अश्व ले आये और पितामह का यज्ञ पूरा कराया। साथ ही अपने पितृव्यों के उद्धार का उपाय भी गरुड़ जी से अवगत किया। —हरिवंश-वनपर्व देखो।]
—माली तत्० (पु०) [अंशु+माली] जो अंशुओं की माला धारण किये हुए हैं, अर्थात् सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप आदि।

अंशुक तत्० (पु०) [अंशु+क] वस्त्र, रेशमी वस्त्र, टसर, रश्मि समुदाय।

अंसल, या अंसली तद्० } **अंशल** तत्० } (पु०) बाँटने वाला, भाग करने वाला।

अंहति या **अंहती** तत्० (स्त्री०) [अंह+ति] दान, त्याग, पीड़ा।

अंहस् तत्० (पु०) [अंह+अस] पाप, स्वधर्म त्याग, अपराध, पातक, दुष्कृति, कल्मष, अघ।

अकच्छ तद्० (गु०) [अ + कच्छ] नङ्गा, मेहरा, व्यभिचारी, लम्पट। जैन सम्प्रदाय विशेष के साधु, ये निर्ग्रन्थ भी कहे जाते हैं।

अकड़ तद्० (स्त्री०) टेढ़ापन, फूलाहट, ऐंठ, बाँकापन, शेख़ी, नटखटी जैसे—

"घड़ी भर में सब अकड़ निकाल दूँगा।"

—बाज़ अकड़ैत, छैला, बाँका, छैलचिकनियाँ। —मकड़ ऐंठ कर चलना, घमण्ड, अभिमान। —ना (क्रि०) (आकुञ्चन) ऐंठना, टेढ़ा होना, दुलना, पोढ़ा करना, कड़ा पड़ना। —ैत (गु०) बाँका, छैला, अभिमानी। —वाई (स्त्री०) अंगग्रह, वातरोग।

अकण्टक तत्० (गु०) [अ + कण्टक] काँटा रहित, अविरोधी, शत्रुहीन, निरुपाधि, चैन से।

अकथ तद्० (गु०) [अ + कथ] न कहने योग्य, कहने की शक्ति के बाहिर। —नीय तत्० या अकथ्य तत्० (गु०) जो कहने योग्य न हो। —यितव्य तत्० अवक्तव्य। —ा तत्० (स्त्री०) कुकथा, मन्दकथा, अपभाषा।

अकनी तद्० (आकर्ण्य का अप०) सुनकर।

अकम्पन तद्० (गु०) [अ + कम्पन] नहीं काँपना, दृढ़, कठोर, मज़बूत।

[अकम्पन रावण के एक सेनापति का नाम भी था। हनुमान ने उसे मारा था। यह रावण का मामा, सुमाली का बेटा था और इसकी माता का नाम केतुमालिनी था। रावण की माता कैकसी इसकी बहिन थी। इसकी दूसरी बहिन का नाम कुम्भीनसी था।]

अकपट तत्० (गु०) [अ + कपट] कपटहीन, सरल, सीधा, छलरहित। —ता तद्० उदारता, सरलता।

अकरन तद्० (गु०) [अ + करन] निष्कारण, हेतु-शून्य, कारण-रहित, न करने योग्य।

अकरा तद्० (अनर्घ तत्०) (गु०) मँहगा, बहुमूल्य, बढ़िया।

अकरणी तद्० (गु०) असङ्गत, अनुचित, अकर्त्तव्य।

अकरुण तत्० (गु०) [अ + करुण] करुणा रहित, निर्दय, निष्ठुर।

अकर्ण तत्० (गु०) [अ + कर्ण] कर्ण रहित, बहरा, बूचा। (पु०) साँप।

अकर्म तत्० (पु०) [अ + कर्म] कुकर्म्म, अपराध, पाप, बुरा काम, अधर्म, बुराई। —ा तत्० काम-हीन, बेकार बैठा। —ी तत्० निगोड़ा, चण्डाल, अपराधी।

अकर्मक तत्० (गु०) [अ + कर्मक] वह क्रिया जिसमें कर्म न हो, जैसे:—"आना, रहना," कर्म रहित।

अकर्मण्य (गु०) तत्० आलसी, कार्याक्षम, काम करने के अयोग्य।

अकल तत्० (गु०) [अ + कला] अङ्गहीन, अवयव-रहित, निराकार, परमात्मा। सिख सम्प्रदाय के परमात्मा का नाम।

अकल्पन तत्० (गु०) [अ + कल्पन] सचाहट, प्रकृत, सत्य, यथार्थ, वास्तविक।

अकल्पित (गु०) सच्चा, कल्पना-रहित।

अकल्याण तत्० (गु०) [अ + कल्याण] अनङ्गल, अकुशल, अशुभ, मन्द, बुरा।

अकवार तद्० (पु०) कुच काँख, गोदी। दोनों हाथों के बीच का स्थान।

अकसर तद्० (गु०) अकेला, एकाकी, बहुधा (यह अक्सर का अपभ्रंश है)।

अकस्मात् तत्० (अ०) हठात्, बलात्, दैवात्, अचानक, अचानचक, सहसा।

अका तद्० (गु०) निर्बोध, जड़, मूढ़, पागल।

अकाण्ड तत्० (गु०) अकस्मात्, हठात्।

अकाज तद्० (पु०) बिगाड़, हिंसा, व्यर्थ।

अकाम (गु०) अकारथ, व्यर्थ, निष्फल।

अकारण (अ०) कारणरहित, अनर्थक, व्यर्थ।

अकाल (पु०) दुर्भिक्ष, असमय। —पुरुष तत्० सिक्खों के ग्रन्थों में ईश्वर का नाम है। —पुष्प (पु०) अनऋतु का फूल। —जलद (पु०) असमय के मेघ। —वृष्टि (स्त्री०) कुसमय की वर्षा—मृत्यु (संस्कृत में यह पुलिङ्ग है, पर हिन्दी में यह स्त्रीलिङ्ग है) कुसमय की मृत्यु, अपक्व मृत्यु।

अकास तद्० (पु०) आकाश, शून्य, आसमान, गगन, नभ, पोल, अन्तरिक्ष।

अकिञ्चन तत्० (पु०) दरिद्र, कङ्गाल, दीन, दुखी। —ता,—त्व दरिद्रता।—कर तुच्छ।

अकीरति तद्० } (स्त्री०) अकीर्त्ति, अपकीर्त्ति, अयश,
अकीर्त्ति तत्० } अप्रतिष्ठा, दुर्नाम, कलङ्क,—कर(पु०) दुर्नाम करने वाला, अयशस्कर।

अकुतोभय तद्० (पु०) निडर, निःशङ्क, निर्भय, साहसी।

अकुताना (क्रि०) ऊबना, घबड़ाना। अकुताही-ऊबै, घबड़ाई।

अकुल तत्० (पु०) [अ+कुल] कुलरहित, नीच, निगोड़ा।

अकुलाना (क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना।

अकुलीन तत्० (पु०) कुलहीन, सङ्कर, कुजाति।

अकुशल तत्० (पु०) अमङ्गल, अशुभ, बुरा।

अकूपार तत्० (पु०) समुद्र, सागर।

अकेला तद्० (पु०) एकला, एक ही, दुःखी।

अकोर तद्० (स्त्री०) घूस, मुहमरी, तोया।

अक्रूर तत्० (पु०) दयालु, सरल, अक्रोधी, कोमल स्वभाव।

अक्रूर (पु०) यो कृष्ण के चाचा थे। ये श्वफल्क के पुत्र थे। माता का नाम गान्दिनी था। इनकी ही सम्मति से सत्यभामा के पिता शतधन्वा ने सत्राजित को मार कर उसकी स्यमन्तकमणि लेली थी। जब कृष्ण ने उसे डराया, तब वह स्यमन्तकमणि अक्रूर को देकर भागा; किन्तु पकड़ कर मार डाला गया।

अक्त तत्० (पु०) भींजा, गीला, लिपा, सींचा हुआ।

अक्ष तत् (पु०) पहिया, धुरी या कील, चौसर का पाँसा, गाड़ी का जुआँ, गाड़ी, रथ, आँख, रुद्राक्ष, सोने की तोल का एक बाट विशेष, आत्मा, ज्ञान, मुकदमा, सर्प।

[—पाद विख्यात, हिन्दू दार्शनिक ऋषि, इनका दूसरा नाम गौतम है। इन्होंने न्याय-दर्शन प्रणयन किया है। इसीसे न्याय का दूसरा नाम अक्षपाद दर्शन भी है। इनका होना खीष्टाब्द से ६०० वर्ष पूर्व से २०० वर्ष पूर्व के भीतर माना जाता है। इनके बनाये दर्शन में ५२८ सूत्र हैं। इन्होंने न्याय में ईश्वर और परलोक को माना है। दुःख से अत्यन्त निवृत्ति को यह मुक्ति मानते हैं। न्याय का दूसरा नाम आन्वीक्षिकी विद्या भी है। जिसका अर्थ है सुनकर अन्वेषण करना।]

अक्षत तत्० } [अ+क्षत] (पु०) बिना टूटे चाँवल
अच्छत तद्० } जो पूजा के काम में आते हैं। बिना टूटा, साजा। —योनि (स्त्री०) वह स्त्री जिसे पतिसंसर्ग न हुआ हो।

अक्षय [अ+क्षय] (पु०) अविनाशी, जिसका कभी नाश न हो, अमर, चिरंजीवी, स्थिर।

[—कुमार रावण के उस पुत्र का नाम जो हनुमान द्वारा मारा गया। यह मन्दोदरी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसको लोग अच्छयकुमार भी कहते हैं।]

[—वट बरगद का पूज्य वृक्ष, इसको अखयवट भी कहते हैं यह प्रयागराज के क़िले में वर्तमान था।]

अक्षम तत्० (पु०) [अ+क्षम] क्षमता-रहित, अशक्त।

अक्षर तत्० [प्रा० अच्छर] (पु०) अकारादिवर्ण, विष्णु, ब्रह्मा, ब्रह्म, शिव, मोक्ष, गगन, धर्म, तपस्या, अपामार्ग (चिचेरी) जल। (पु०) नाश-रहित, निर्विकार, सत्य। —विन्यास लेख, लिपि। —माला वर्णमाला, अक्षर श्रेणी।

अक्षांश तत्० (पु०) [अक्ष+अंश] कल्पित भूगोल को ऊपर की रेखा विशेष। पृथिवी की धुरी, पृथिवी के उत्तर या दक्षिण केन्द्र तक ९०° (नब्बे अंश) पर रेखा। (Latitude.)

अक्षि तत्० (पु०) } आँख, नेत्र, नयन। —गत आँख
अक्षि तद्० (स्त्री०) } पर चढ़ा हुआ (शत्रु)। —विभ्रम आँख घुमाना। —विक्षेप कटाक्षपात।

अक्षुण्ण तत्० (पु०) अघूर्णित, मनस्ताप-रहित। अटूट, समस्त, अविकृत।

अक्षौहिणी तत्० (स्त्री०) एक बड़ी सेना जिसमें २१८७० रथ, इतने ही हाथी, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल होते हैं।

अखड़ तद्० (पु०) गँवार, जङ्गली, अशासित, अन-सिखा, अनगढ़, अखाड़ा।

अखण्ड तत्० (गु०) सम्पूर्ण, समस्त, सब, खण्ड-रहित।

अखरना तद्० (स्त्री०) अनुचित मालूम होना।

अखरोट तद्० (पु०) वृक्ष एवं फल विशेष।

अखाड़ा तद्० (पु०) मल्लयुद्ध स्थान, आङ्गन, साधु या गुसाइयों का दल। रामायण में अखरा का प्रयोग अखाड़े के स्थान में हुआ है।

अखाद्य तत्० (गु०) खाने के अयोग्य, अभक्ष्य।

अखिल तत्० (गु०) समस्त, सारा, सब।

अख्याति तत्० (स्त्री०) अकीर्त्ति, अपयश, दुर्नाम।

अग तत्० (पु०) अचल, पर्वत, वृक्ष आदि।

अगड़बगड़ तद्० (गु०) बचमेल, घालमेल, असंलग्न वाक्य।

अगणित तत्० (गु०) बहुत, असंख्यात, अपार, अनगिनत।

अगण्य (गु०) गिनने योग्य नहीं, असार, तुच्छ।

अगति तत्० (स्त्री०) नरक, अकालमृत्यु, (गु०) गति-हीन, आश्रयहीन। —क-गति अनन्य उपाय होकर स्वीकार करना।

अगद तत्० (पु०) दवाई (गु०) निरोग, आरोग्य, सुस्थ।

अगम तद्० (गु०) अगम्य, दुर्गम, अपहुँच, औघट। विकट, गहरा, अथाह।

अगर तद्० (पु०) सुगन्धित काष्ट विशेष। —वाला वैश्य वर्ण के अन्तर्गत एक शाखा, जो अपने को अगरोहा ग्राम (यह दिल्ली के पश्चिम की ओर है) के रहने वाले होने के कारण अग्रवाल कहते हैं।

अग्र तत्० (गु०) आगे, अगुआ, आगा, मुख्य, एक मुख्य राजा का नाम।

अगला तद्० (गु०) पहला, पूर्व, प्रधान।

अगवा तद्० (पु०) दूत, अगवानी।

अगवाड़ा तद्० (पु०) आगा, अग्र भाग।

अगवाही तद्० (स्त्री०) अग्नि दाह।

अगस्ति तद्० } (पु०) वृक्ष विशेष, तारा। यह तारा
अगस्त्य तत्० } भाद्र मास के अन्त में उदय होता है।

[१ अगस्त्य तारा के उदय होते ही जल निर्मल हो जाता है। इसके उदय होने पर ही राजा गण विजय यात्रा करते थे और पितृ तर्पण आदि आरम्भ किया जाता है। २ अगस्त्य एक ऋषि का नाम है जो मित्रावरुण के पुत्र थे। इनका पहला नाम मान है। पीछे से विन्ध्य पर्वत का गर्व खर्व करने के कारण इनका नाम अगस्त्य पड़ा। इनका दूसरा नाम कुम्भज भी है। इनका नामोल्लेख वेद में भी पाया जाता है और इनके नाम की अगस्त्य संहिता भी प्रचलित है।]

अगहण या अगहन तद्० } मार्गशीर्ष मास। यह
अग्रहायिण तत्० } मास बड़ा पवित्र माना गया है, हिन्दुओं का यह नवाँ मास है। प्रायः लोग इसे मगसिर भी कहते हैं।

अगहुड तद्० (गु०) पहिले पहल, अगला, आगे की ओर, सामने।

अगाऊ तद्० (गु०) अगाड़ी, आगे, पहिले।

अगाड़ी तद्० (क्रि० वि०) आगे, सामने। (स्त्री०) घोड़े के बाँधने की आगे की रस्सी। —मारना मोहरा मारना, वैरी की अगली सेना को हटाना।

अगाध तत्० (गु०) अथाह, जिसकी थाह न मिले, बहुत गहरा।

अगासी तद्० (स्त्री०) पगड़ी, बरान्दा।

अगुवा तद्० (पु०) एक पक्षी या कीड़ा विशेष, देवता विशेष।

अगिनि तद्० } (पु०) आग, आँच, वन्हि।
अग्नि तत्० }

अगुण तत्० (गु०) निर्गुण, जिसमें गुण न हों, गुणहीन।

अगुवा तद्० (पु०) मार्ग दिखाने हारा।

अगेन्द्र तत्० (पु०) पहाड़ों का राजा, सुमेरु, हिमालय।

अगोचर तत्० (गु०) इन्द्रियों की गति के अदृश्य।

अगोरना तद्० (क्रि०) रखावना, चौकी देना।

अगोरा तद्० (पु०) देखनेवाला, रखवाला।

अगौनी तद्० (स्त्री०) भेंट के लिये आगे जाना।

अग्नि तत्० (पु०) आग, वन्हि, चित्रक वृक्ष। **—देव** वैदिक देवता। अग्निकोणाधिपति। **—कोण** पूर्व दक्षिण का कोना। **—संस्कार** या **—क्रिया** मुर्दा जलाना। **—कुण्ड** अग्नि जलाने के लिये गढ़ा। **—कुमार** क्षुधा वर्द्धक औषध विशेष। **—क्रीड़ा** आतिशबाज़ी। **—होत्री** जो अग्नि में नित्य नियमित रूप से हवन करता हो। **—ज्वाला** अग्नि शिखा, आँवले का पेड़। **—परीक्षा** अग्नि के हाथ पर रख कर झूठ सच की परीक्षा लेना। यह विधान साक्षियों से शपथ लेने का स्मृतियों में निरूपण किया गया है। **—बाण** अग्न्यास्त्र अर्थात् जिसे चलाने से आग बरसे। **—मान्द्य** अजीर्ण, भूख न लगना या भूख की कमी। **—यन्त्र** बन्दूक, तोप, तमञ्चा। **—ष्टोम** यज्ञ विशेष, अग्नि सम्बन्धी वेदोक्त अग्निस्तव। **—ष्वात्ता** पितृ विशेष, मरीचिपुत्र, देवताओं के पूर्वज। **अग्न्याधान** श्रुति-विहित, अग्निसंस्कार, अग्निरक्षण, अग्निहोत्र। **—उत्पात** आग लगना, आकाश से अग्नि बरसना, धूमकेतु दर्शन, उल्कापात।

अग्र तत्० (पु०) आगे, पहले, किसी काम का मुखिया, आदि, प्रथम, ऊपर का भाग, सिर, शिखर। (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, अधिक। **—गामी** (पु०) आगे चलने वाला, अगुवा, उत्साही। **—सर** (पु०) अगुवा, सन्देशी, दूत। **—ज** (पु०) जेठ, बड़ा भाई। **—जन्मा** (पु०) ब्राह्मण, पुरोहित, जेठा भाई, देवताओं में सर्व प्रथम उत्पन्न अर्थात् ब्रह्मा। **—पश्चात्** (अ०) आगे पीछे, आगा पीछा। **—णी** (पु०) आगे चलने वाला, समाज का मुखिया। **—भाग** (पु०) पहला भाग, पहिला हिस्सा।

अग्रहण तत्० (पु०) अगहन मास, [देखो अगहन]।

अग्रहार तत्० (पु०) देवस्व, ब्रह्मस्व, देवता को अर्पित सम्पत्ति। धान्यपूर्ण खेत।

अग्राह्य, तत्० (गु०) ग्रहण करने योग्य नहीं, तुच्छ, निस्सार, शिवनिर्माल्य।

अघ तत्० (पु०) पाप, अधर्म, अपराध, दोष। [**—असुर** (पु०) कंस के सेनापति का नाम है, बकासुर इसका जेठ भाई था, और पूतना इसकी जेठी बहिन थी, भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये इसीको कंस ने वृन्दावन भेजा था]। **—नाशक** (गु०) पाप दूर करने वाले प्रयोग, मन्त्र जप करना आदि।

अघखानि तद्० (गु०) पापों का समुदाय, पापी अधर्मी।

अघटित तत्० (गु०) घटना-रहित, असम्भव, अनहोनी, अयोग्य।

अघमर्षण तत्० (गु०) सब पापों का नाशक, पाप हटाने वाले वैदिक मन्त्र, एक प्रयोग जो सन्ध्योपासन में किया जाता है।

अघाई तद्० (स्त्री०) छकाई, अफराई, पेटभराव, तृप्ति।

अघाना तद्० पेटभरना, अफराना, तृप्त होना, छकना, भरपूर होना।

अघोर तत्० (पु०) महादेव का दूसरा नाम, रूप में भयङ्कर, उपासना विशेष। **—पन्थ** (पु०) शैव सम्प्रदाय की एक शाखा का नाम है, इस सम्प्रदाय के लोग अपने को अघोरी या अघोर-पन्थी कहते हैं। ये बहुत ही मलीन होते हैं, घृणा का ये नाम तक नहीं जानते हैं, इनके लिये अभक्ष्य पदार्थ है ही नहीं। सर्वतोभाव से घृणा को जीत लेना ही इनके धर्म का मूल है।

अङ्क तत्० (पु०) चौक, चिन्ह, सङ्केत, दाग, रेखा, संख्या।

अङ्कना तद्० लिखना, छापना, सङ्केत करना, चिन्ह करना, मोल भाव करना।

अङ्कवार तद्० (पु०) कौली, कोला, गोदी।

अङ्काना तद्० परखना, जाँचना, मोल ठहराना।

अङ्काव तद्० (पु०) निरख, भाव मोल ठहराना।

अङ्कित तत्० (गु०) चिन्ह किया हुआ, मुद्रित, चिन्हित, परखा हुआ, जाँच किया हुआ, छपा हुआ।

अङ्कुर तत्० (पु०) अँकुआ, फुनगी, नया उगा हुआ तृण आदि, बीज से उत्पन्न कोंपल, गाँठी।

अङ्कुरित तत्० (पु०) अङ्कुरयुक्त जितनें अङ्कुर उत्पन्न हुए हों, । —यौवन (पु०) यौवन का आरम्भ, युवा अवस्था की पहली दशा ।

अङ्कुश तत्० (पु०) आँकड़ी, लोहे का एक हथियार जिससे हाथी चलाये जाते हे । मुड़ा हुआ काँटा । —ग्रह (पु०) आंकुश को पकड़, महावत, हस्तिपक, हाथी चलाने वाला । —धारी हस्तिपक ।

अङ्कोरना तद्० भूँजना, गरम करना घूँस लेना ।

अङ्ग तत्० (पु०) शरीर का एक हिस्सा, अवयव, शरीर, मित्र का सम्बोधन, शास्त्र विशेष, वेदाङ्ग, जैन शास्त्र विशेष । बलि राजा का क्षेत्रज पुत्र, इस राजा के शासित देश का भी नाम अङ्ग देश है । जन्मान्ध महर्षि दीर्घतमा से बलि राजा की पत्नी सुदेष्णा के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी । गङ्गा और सरयू के सङ्गम के मध्य देश को अङ्ग देश कहते हैं । —जन्मा (पु०) सन्तान, केश, काम, पीड़ा, मद, मोह । —राज (पु०) कर्ण का नाम है, राजा दुर्योधन ने अर्जुन को प्रतियोगिता करने के लिये कर्ण को अङ्ग देश का अधिपति बनाया था । कर्ण का पहला नाम वसुषेण था । —ग्रह (पु०) अकड़-वाई, वात रोग ।

अङ्गड़ाई तद्० (स्त्री०) जम्हाई, मरोड़ना ।

अङ्गन तद्० (पु०) अँगनाई, आँगन, चौक, मकान के बीच की भूमि ।

अङ्गद तत्० (पु०) बहुँटा, बाजूबन्द, कपिराज बालि का पुत्र ।

अङ्गना तत्० (स्त्री०) सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई ।

अङ्गन्यास तत्० (पु०) वैदिक या तान्त्रिक उपासनाओं में मन्त्रों के द्वारा अङ्गस्पर्श करना ।

अङ्गरखा तद्० (पु०) पहिनने का सिला हुआ कपड़ा, चपकन ।

अङ्गराग तत्० (पु०) शरीर को सुन्दर और सुगन्धित बनाने वाला लेप, चन्दन लगाना, सुगन्धित पदार्थों से शरीर पर बेल बूटे निकालना ।

अङ्गरी तद्० (स्त्री०) युद्ध के समय पहना जाने वाला परिच्छद, कवच, बख्तर ।

अङ्गार तत्० (पु०) जलता हुआ कोयला । —क मङ्गल ग्रह ।

अङ्गारा तद्० (पु०) कोयला, जली लकड़ी ।

अङ्गारी तद्० (स्त्री०) अंगीठी, बोरसी, या बरोसी आग रखने का बर्तन ।

अङ्गिया तद्० (स्त्री०) चोली, काँचुली, कञ्चुली, तोसरा कपड़ा, स्त्रियों के पहिनने का कुरता ।

अङ्गिरा तत्० (पु०) तारा, ब्रह्मा का मानसपुत्र, ये धर्मशास्त्र प्रवर्तक ऋषियों में से है, इनके बनाये हुए ग्रन्थ का नाम अङ्गिरा-संहिता है । देवगुरु बृहस्पति इन्हीं के पुत्र हैं ।

अङ्गी तत्० (पु०) शरीर वाला, शरीर धारी, प्रधान, किसी समुदाय का मुखिया ।

अङ्गीकार तत्० (पु०) स्वीकार, मानना, सहना, अगेजना, प्रतिज्ञा, सम्मति ।

अङ्गीठी तद्० (स्त्री०) आग रखने का पात्र, बरोसी ।

अङ्गुल तत्० (पु०) आठ जौ के बराबर परिमाण, एक गिरह का तीसरा हिस्सा ।

अङ्गुली तद्० (स्त्री०) अंगुरी, हाथ का या पैर का अङ्ग । —त्राण अंगुरियों की रक्षा करने वाला, यह युद्ध में अस्त्र शस्त्रों से अङ्गुलियों की रक्षा करने के लिये बनाया जाता था, दस्ताना ।

अङ्गूठा तद्० (पु०) अङ्गुष्ठ, मोटी अंगुरी ।

अङ्गूठी तद्० (स्त्री०) मुंदरी, छल्ला, अङ्गुलीय, अङ्गुलियों में पहिनने का गहना ।

अङ्गूर तद्० (पु०) दाख, द्राक्षा, फल विशेष, मेवा ।

अङ्गेट (स्त्री०) अङ्गोट, डौल, आकार, आकृति ।

अङ्गेठी तद्० (स्त्री०) (देखो अङ्गीठी) ।

अङ्गोछा तद्० (पु०) शरीर पोछने का वस्त्र, अंगवछा, गमछा, अँगपूछा, तोलिया ।

अङ्गोरा तद्० (पु०) मच्छर, मशक, मसा ।

अङ्घ्रि तत्० (पु०) चरण, चौथा हिस्सा, वृक्षों की जड़ । —प (पु०) वृक्ष ।

अच् तत्० (पु०) स्वरवर्ण, संज्ञा विशेष, छिपाकर करना ।

अचक तद्० (अ०) अचानचक, हठात्, अकस्मात्, विना जाने बूझे ।

अचकरी तद्० (स्त्री०) लम्पटता, खिलाड़पन, अनुचित काम, धींगाधींगी, अत्याचार।

अचण्ड तत्० (गु०) धीर, शान्त, सुशील, मृदु, सरल स्वभाव वाला।

अचम्भ: तद्० (पु०) चमत्कार, विस्मय, —करना (क्रि०) विस्मित होना, आश्चर्यित होना।

अचञ्चल तत्० (पु०) स्थिर, बिना घबड़ाया हुआ, दृढ़प्रकृति वाला।

अचर तत्० (गु०) जड़ पदार्थ, जो चल न सके, अचल, अटल, स्थावर, दृढ़।

अचरज तद्० (पु०) अचम्भा, आश्चर्य।

अचल, तत्० (गु०) अटल, स्थिर, धीर, पर्वत, वृक्ष, जो चलायमान न हो, शिव, जैनियों का पहला तीर्थङ्कर।

अचला तत्० (स्त्री०) पृथिवी, धरती, धरणी, सातवीं संख्या, माघ शुक्ला सप्तमी, इस दिन के किये शुभकर्म अचल होते हैं, इसीसे इस सप्तमी को अचला कहते हैं।

अचानक तद्० (अ०) अकस्मात्, हठात्, एकाएक, एकाएकी, बिना कारण, दैवयोग से।

अचाना, अचवाना, (क्रि०) मुंह धोना, कुल्ला करना, खाने के पीछे मुंह साफ करना, आचमन करना।

अचार तद्० (पु०) आचार, व्यवहार, चालचलन, शास्त्र कथित, नित्य करने योग्य क्रिया, जो व्यवहार धर्म सेवा का सहायक हो।

अचिन्त तद्० (गु०) जिसको चिन्ता न हो, बेसुध, निर्बुद्धि, चिन्ता हीन।

अचिर तत्० (अ०) देर नहीं, शीघ्र, तुरन्त, वेग।

अचूक तद्० (गु०) बिना चूका हुआ, ठीक।

अचेत तद्० (गु०) अज्ञान, मूर्च्छित, सुन होना, इन्द्रियों के ज्ञान नष्ट हो जाना।

अचैतन्य तत्० (गु०) अज्ञानता, निर्जीव, जड़पदार्थ, मूर्खता।

अचैन तद्० चैन न रहना, दुःखी, व्याकुल, आकुल, अरम्य।

अच्युत तत्० (पु०) जो कभी च्युत न हो, जिसका कभी नाश न हो, स्थिर, अमर, सर्वदा वर्तमान रहने वाला, ठहरा हुआ, अचल, विष्णु का एक नाम।

अछत तद्० जीते रहना, वर्तमान रहना, स्थिति, होता रहना, जैसे:—

"तुमहीं अछत अस हाल हमारी" —रामायण।

अछत्र तद्० (पु०) जिसको छत्र नहीं, राज्य से च्युत, असहाय।

अछताना-पछताना तद्० पश्चात्ताप करना, किये हुए बुरे कर्मों से दुःखी होना।

अच्छा तद्० भला, उत्तम, सुन्दर, मनोहर, चंगा, (स्वीकारार्थक अव्यय।)

अछरा तद्० (स्त्री०) देवाङ्गना, स्वर्ग की वेश्या, अप्सरा का यह अपभ्रंश है, इसका बहुवचन, अछरन होता है। यथा:—

"मोहहिं सब अछरन के रूप"—पद्मावत।

अछवानी तद्० (स्त्री०) बत्ती, बानी।

अछूता तद्० नहीं छुआ हुआ, जूठा नहीं, नवीन, पवित्र।

अछेह तद्० (गु०) बहुत अधिक, यथा:—

"धरे रूप गुण कोगरब फिरै अछेह उछाह"
—बिहारी सतसई।

अज तद्० आज, वर्तमान दिन।

अज तत् (पु०) नहीं उत्पन्न होने वाला, विष्णु से उत्पन्न ब्रह्मा शिव।

[सूर्यवंशीय अयोध्या का राजा, जिसके पुत्र महाराज दशरथ थे। अज राजा बड़े वीर थे, गन्धर्वराज के पुत्र से सम्मोहनास्त्र उनको मिला था।] बकरा, मेष राशि, —ा तत्० बकरी, माया, अविद्या, प्रकृति।

अजगर तत्० (सं०) बकरे को निगलने वाला बहुत मोटा साँप, आलसी, निकम्मा।

अजगव तत्० (पु०) शिव का धनुष।

अजगुत तद्० अद्भुत, आश्चर्य, बिना देखी सुनी वस्तु।

अजय तत्० (गु०) जिसकी जीत नहीं हुई हो, जो अजेय हो, जिसे कोई नहीं जीत सके, वीरभूमि ज़िले की एक नदी का नाम।

अजसी तद्० (गु०) निन्दित, यशरहित।

अजर तत्० (गु०) जवान, यौवन, युवा, अमर,जो कभी बूढ़ा न हो।

अजहूँ तद्० (अ०) आज भी, अभी, अबलौं, अबतक, आजतक।

अजस्र तत्० (अ०) निरन्तर, नित्य, सर्वदा, प्रतिक्षण।

अजाड तद्० (पु०) सनिया टाट।

अजाति तद्० (पु०) बिना जाति का, बिटला हुआ, विजाति, त्याज्य।

अजान तद्० (गु०) अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध, अविवेकी।

अजामिल तत्० (पु०) एक ब्राह्मण का नाम, यह ब्राह्मण प्रथम अवस्था में सच्चरित्र था, परन्तु पीछे से कुसङ्ग में पड़ कर आचारभ्रष्ट हुआ, दासी के गर्भ से उत्पन्न इसके दश पुत्र थे, जिनमें से एक का नारायण नाम था, मरने के समय अजामिल ने अपने नारायण पुत्र को पुकारा, इसी कारण विष्णु दूत इसको विष्णुलोक ले गये। —श्री मद्भागवत।

अजातशत्रु तत्० (पु०) राजा युधिष्ठिर का दूसरा नाम, युधिष्ठिर किसीको अपना शत्रु नहीं समझते थे, इसी कारण उनका यह नाम पड़ा। २ इस नाम के एक राजा का वर्णन उपनिषदों में भी आता है, यह राजा ब्रह्मज्ञानी था। महर्षि गार्ग्य इसके यहाँ गये थे और राजा से कुछ विषयों में उपदेश लेकर लौट आये। ३ मगध के एक प्राचीन राजा का भी नाम अजातशत्रु था, उसके पिता का नाम बिम्बिसार था। ४८५ ख्रीष्टाब्द के पूर्व यह मगध का राज्य करता था।

अजित तत्० (गु०) नहीं जीता हुआ, ऐसा बली जो सबको जीत ले।

अजिन तत्० (पु०) मृगछाला, हरिण की खाल जिस पर ब्रह्मचारी संन्यासी आदि धार्मिक व्यक्ति बैठकर उपासना करते हैं।

अजिर तत्० (पु०) आँगन, अँगना, चौक, चबूतरा।

अजीर्ण तत्० पुराना नहीं, अपच, नहीं पचना, अजीर्ण होना।

अजीव तत्० (गु०) बिना जीव का, अचेतन, मरा हुआ, मृत, जड़ पदार्थ।

अजुगत तद्० (स्त्री०) अन्धेर, उत्पात, अत्याचार, उत्पातीकार्य।

अजौं तद्० (अ०) आजतक, अबतक, अबही तक।

अज्ञ तत्० (गु०) [अ+ज्ञ] नहीं जानने वाला, मूर्ख, बेसमझ, अबूझ, अनजान, असमझ, अनसमझ, अबोध।

अज्ञात तत्० (गु०) [अ+ज्ञात] नहीं जाना हुआ, अनजाना।

अज्ञान तत्० (गु०) [अ+ज्ञान] मूर्ख, निर्बुद्धि, अज्ञ, बुद्धिहीन —तः (अ) अज्ञान से, बेसमझी से, अनजाने।

अज्ञेय तत्० (गु०) नहीं जानने योग्य, कष्ट से जानने योग्य, दुरूह।

अञ्चल तत्० (पु०) अञ्चला, कपड़े का शेष भाग, किनारा, दिक्प्रदेश।

अञ्जन तत्० (पु०) सुरमा, काजल, आँख में लगाने का द्रव्य, अञ्जना, शोभना, काजल लगाना, धान्यविशेष, अञ्जना या अञ्जनी तत्० दिग्गज की हथिनी, वानरी विशेष, हनुमान की माता का नाम, अञ्जना नाम्नी वानरी के गर्भ से महावीर हनुमान की उत्पत्ति हुई थी।

अञ्जलि तत्० (स्त्री०) जोड़ हस्त, हाथ का सम्पुट, अञ्जुरि, दोनों हाथों को ऐसा जोड़ना जिससे बीच में अवकाश रहे। परिमाण विशेष। —कर्म सुशीलता, प्रणाम, नमस्कार, विनय करना। —बन्धन हाथ जोड़ना, करसम्पुट नमस्कार, नम्रता प्रदर्शित करने की मुद्रा।

अञ्जसा तत्० (अ०) शीघ्रता, शीघ्रता से, वेगी।

अञ्झा तद्० अनध्याय, छुट्टी, अवकाश।

अञ्जीर तद्० अञ्जीर नामक वृक्ष, फल विशेष, प्रियाल।

अटक तद्० (स्त्री०) रोक, वारण, रुकावट डालना, अटकाना, भारत वर्षान्तर्गत उड़ीसा प्रान्त के एक नगर का नाम, सिन्धु नदी का दूसरा नाम है। कहते हैं सिन्धु नदी के प्रबल वेग के कारण उसका अटक नाम पड़ा। क्योंकि वहाँ जाकर लोग अटक जाते हैं। —ल (स्त्री०) अनुमान, विचार। —ना रोकना, छेकना, वारण करना, किसी कार्य में विघ्न डालना। —ाव (पु०) रुकावट, प्रतिबन्ध। —लपच्चू बिना प्रमाण, बिना ठौर ठिकाने, अनिश्चित।

अटका तद्० (पु०) मिट्टी का पात्र विशेष, श्री जगन्नाथ जी का प्रसाद।

अटखेल तद्० (पु०) बहुत खेलने वाला, खिलाड़ी, चञ्चल। —ी (स्त्री०) चञ्चलता, खिलाड़पन, ढिठाई, चञ्चलत्व।

अटट तद्० (पु०) मोटा, पोढ़ा, दृढ़।

अटन तत्० (पु०) फिरना, चलना, घूमना, भ्रमण, यात्रा।

अटना तद्० (क्रि०) समाना, भर जाना, घूमना, फिरना।

अटपट तद्० (पु०) अनियमित, टेढ़ा, बाँका, टर्रा। —ी (स्त्री०) तिरछी, टेढ़ीमेढ़ी, बेढँगी, कठिन।

अटम तद्० (पु०) राशि, ढेर, बटोरा।

अटल तत्० (पु०) दृढ़, पोढ़ा, अचल, नहीं टलने वाला। गुसाइयों के एक अखाड़े का नाम।

अटवी तत्० (स्त्री०) वन, जंगल, गहन, कानन, भयानक जङ्गल, हिंस्र जन्तुओं का वास-स्थान।

अटा तद्० वा अटारी (स्त्री०) कोठा, ऊपर की कोठरी, सब से ऊपर का कमरा।

अटाला तद्० (पु०) अटला, ढेर, सामग्री, सामान, असबाब।

अटिया तद्० (स्त्री०) छोटी मड़ैया, झोपड़ी, छोटा मकान, पर्णकुटी।

अटूट तद्० (पु०) बहुत, पोढ़ा, नहीं टूटने वाला, नहीं घटने वाला, अटूट, अभुक्त, अटूट, अल, सम्पूर्ण, पूरा, कुल।

अटेक तद्० (पु०) टेक नहीं, निराधार, उद्देश्य-हीन, भ्रष्ट-प्रतिज्ञ।

अटेर तद्० (पु०) एक ग्राम का नाम। —न (पु०) फेटी, चरखी, घोड़े की एक चाल। —नी (क्रि०) फेटा बनाना, गोलाकार बनाना, मोड़ना।

अटोल तद्० (पु०) अचिकन, असभ्य, गवाँड़ी, जङ्गली, बर्बर।

अट्टहास तत्० (पु०) बहुत हँसना, खिलखिला कर हँसना, कहकहा मारना।

अट्टालिका तत्० (स्त्री०) अट्टाल, अटारी, राजगृह, प्रासाद, धवलागार, बड़ा मकान, हर्म्य।

अठतालीस तद्० संख्या-विशेष, आठ और चालीस।

अठतीस तद्० संख्या विशेष, अड़तीस, आठ और तीस।

अठल तद्० (पु०) संस्कार विशेष।

अठवारा तद्० (पु०) आठवाँ दिन, सप्ताह, आठ दिन का समुदाय।

अठेल तद्० (पु०) जो ठेला न जाय, अविचलनीय, अपरिहार्य, जो न हट सके, यथेष्ट, प्रचुर, दृढ़, स्थिर।

अड़ तद्० (स्त्री०) झगड़ा, विरोध, हठ, गमन, चेष्टा।

अड्डा तद्० मण्डी, हाट, बाज़ार, विदेशीय या प्रान्तीय वस्तुओं के उतारने की जगह, उतार, थिति, रुकावट। —ा (पु०) पेटपाल, रोकना, रुकावट, प्रतिबन्ध।

अड़तला तद्० (पु०) शरण, आश्रय, आड़, बचाने वाला, रक्षा करने वाला।

अड़ना तद्० (क्रि०) थमना, रुकना, द्विविधा करना, निश्चय से च्युत होना।

अड़वंगा तद्० (पु०) बाँका, तिर्छा, श्रासमान, बेढङ्गा। —**ा अड़वंग** (पु०) बावलापन, अविचार।

अड़बड तद्० (पु०) प्रलाप, निरर्थक बकना, गाल देना, ऊँचा नीचा।

अड़बन्ध तद्० (पु०) कटिबन्ध, कोपीन।

अड़बल तद्० (गु०) अड़जाने वाला, रुकनेवाला, अड़ुआ, हठी, मगरा।

अडाड़ा तद्० (पु०) कड़ाड़ा, ढोंग।

अडानी तद्० (स्त्री०) छाता रोकने वाला, बड़ा पंखा।

अड़ूसा तद्० (पु०) एक वृक्ष का नाम, रूसावसा, आँखों में इसका प्रयोग होता है।

अड़ेयाना तद्० (क्रि०) आश्रय देना, रक्षा करना, आश्वासित करना।

अडैच तद्० (स्त्री०) वैरभाव, शत्रुता, द्वेष।

अडोल तद्० (गु०) नहीं डोलने वाला, स्थिर, अचल, अटल, दृढ़, नहीं हिलने वाला।

अडोस-पडोस तद्० (पु०) पड़ोस, पास पास बसना, प्रतिवेश, पास पास का मकान।

अड्डा तद्० (पु०) ठहरने की जगह, मेला रहने का स्थान, छावनी।

अढाई तद्० (गु०) संख्या विशेष, दो और आधा। —**गुना** दो और आधे से अधिक, एक हिस्से में और अढाई हिस्सा बढ़ाना।

अढुकि तद्० (अ०) उढ़क कर, सहारा लेकर।

अढैया तद्० (स्त्री०) तौल, माप, बटखरा।

अणि तत्० (स्त्री०) अग्राग्र कीलक, पहिये के अग्र-भाग का काँटा, तीखीधार, नोक बाढ़, कणि मोनी, धार, सीमा।

अणिमा तत्० (पु०) या **अनिमा** तद्० (स्त्री०) (हिन्दी में स्त्री०) आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति, बहुत सूक्ष्म, योग का एक ऐश्वर्य विशेष।

अणु तत्० (पु०) कणिका, अत्यन्त सूक्ष्म, धान्य विशेष, सूक्ष्म वस्तु, सब से छोटा हिस्सा। छप्पर के छेद से घर में आये हुए सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए जो छोटे कण दीख पड़ते हैं, उनमें से एक कण के साठवें भाग को अणु या परमाणु कहते हैं। यह नैयायिकों का प्रधान तत्व है। नैयायिक इसीके द्वारा सांसारिक पदार्थों की उत्पत्ति मानते हैं। यह शक्तिमान है। मिलने और बिछुड़ने की शक्ति इसमें वर्तमान है। —**मात्र** (गु०) छोटासा। —**वीक्षण** (पु०) छोटे छोटे पदार्थों को देखने के लिये काँच का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, दूरबीन।

अण्टा तद्० (पु०) गेंद, गोली, एक प्रकार का खेल।

—**चित** तद्० (गु०) अभागी, उतान पड़ा हुआ, बेलाग गिरा हुआ।

अण्ठलाना तद्० (क्रि०) शाकीर्ति करना, ऐंठना, बाँकापन दिखाना, अभिमान करना, अङ्गों को स्वयं मरोड़ना।

अण्ड तत्० (पु०) एरंडवृक्ष, अण्डा, बीज, पेशीकोष, अण्डकोष, कस्तूरी। —**ा** (पु०) पक्षी आदि के उत्पन्न होने का स्थान, गोलाकार। —**कटाह** (पु०) जगत् विश्व, संसार, गोल। —**कोष** (पु०) मुष्क, थैली, ब्रौह —**ज** (पु०) अण्डे से पैदा होने वाले जन्तु, यथा पक्षी-साँप-मछली-गोह-गिरगिट-बिसखपरा।

अण्डी तद्० (स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष, ज्यादेतर यह ओढ़ने के काम में आता है, आसाम की अण्डी बहुत अच्छी होती है।

अतः तत्० (अ०) इससे, इस कारण, इस हेतु, इसलिये।

अतएव तत्० (अ०) इसी कारण, इसी हेतु, इसीलिये।

अतनु तत्० (पु०) या **अतन** (तद्०) देह रहित, बिना शरीर का, कामदेव।

कामदेव का शरीर महादेव के क्रोध से भस्म हो गया था, इन्द्र ने इसे महादेव पर विजय पाने की आशा से भेजा था, परन्तु अभाग्यवश दग्ध हो गया। पुनः पार्वती की प्रार्थना से महादेव ने इसको उज्जी-वित किया अतएव कामदेव का नाम अतनु है।

अतन्द्रित तत्० (पु०) आलस्य रहित, कर्मठ, चपल, चालाक, जाग्रत।

अतल तत्० (पु०) बिना तल का, बिना पेंदे का वर्तुल, गोल, सात पातालों में का पहला पाताल। —स्पर्श (पु०) अगाध, अतिगंभीर, जिसके तल का स्पर्श न हो सके।

अतसी तत्० (स्त्री०) तीसी, अलसी, शण, पाट।

अतार्इ तत्० (पु०) गवैया, जंत्री, बजाने वाला, बजवैया।

अति तत्० (पु०) अधिक, बहुत, विस्तर, अत्यन्त बड़ा, बीता हुआ, हो चुका, उल्लंघना, पार। —काय (पु०) बड़ा शरीर, भयानक शरीर वाला। [रावण का एक पुत्र, इसने तपस्या के द्वारा ब्रह्मा को सन्तुष्ट करके एक अभेद्य कवच पाया था, जिससे यह अजेय हो उठा था। लक्ष्मण के साथ युद्ध में यह मारा गया।—काल (पु०) अवेर, विलम्ब, देरी। —क्रम (पु०) नाँघना, पार होना, अपराध, अपमान करना, अन्यथा करना, क्रमभङ्ग करना। —क्रान्त (पु०) पार गया हुआ, जिन शब्दों के पहले अति शब्द आता है वे शब्द अपने अधिक अर्थ के वाचक हो जाते हैं।—कृच्छ्र तत्० (पु०) व्रत विशेष, पाप दूर करने के लिये यह व्रत किया जाता है, यह व्रत प्राजापत्य व्रत का भेद है, उससे इसमें विशेषता यही है कि जितने दिन भोजन करने का नियम है उतने दिन अतिकृच्छ्र में दाहिने हाथ में जितना अन्न आवे उतनाही आहार करना चाहिये।

अतिथि तत्० (पु०) साधु, यात्री, पाहुन, जिनके आने की तिथि नियत न हो। श्री रामचन्द्र जी के पौत्र और कुश के पुत्र का नाम। —भक्त (पु०) अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथि पूजक।

अतिपन्था तत्० (पु०) बड़ा मार्ग, राजपथ, सड़क।

अतिपर तत्० (पु०) अति शत्रु, महा वैरी, उदासीन, असंबन्ध।

अतिपराक्रम तत्० (पु०) बड़ा प्रताप, तेज।

अतिपात तत्० (पु०) अन्याय, उत्पात, उपद्रव।

अतिपातक तत्० (पु०) भारी पाप, नव प्रकार के पापों में सब से बड़े तीन पाप, माता, कन्या, और पुत्र की स्त्री का संसर्ग करना, पुरुषों के लिये अतिपातक है। और पुत्र पिता तथा श्वशुर का संसर्ग करना, स्त्रियों के लिये अतिपातक है।

अतिपान तत्० (पु०) बहुत पीना, मत्तता, पीने का व्यसन।

अतिपार्श्व तत्० (पु०) सन्निकट, समीप, अति निकट, पास, दूर नहीं।

अतिप्रसंग तत्० (पु०) अत्यन्त मेल, पुनरुक्ति, अति विस्तार, व्यभिचार, क्रम का नाश करना।

अतिबला तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, पीतबला, बरियार का पेड़।

अतिरथी तत्० [अति + रथिन्] (पु०) अतिशय योद्धा, रणकुशल, महा योद्धा, बहुत मनुष्यों को एक साथ लड़ाने वाला।

अतिरिक्त तत्० [अति + रिच् + क्त] (पु०) बहुत, भिन्न, अधि, अतिशय, अत्यन्त, अनेक।

अतिरेक तत्० [अति + रिच् + घञ्] (पु०) आधिक्य, अतिशय।

अतिरोग तत्० [अति + रुज + घञ्] क्षयरोग, क्षयी, महाव्याधि।

अतिशय तत्० [अति + शी + अल] (पु०) अत्यन्त, विस्तार, यश, बाहुल्य, अतिरिक्त। —पान (पु०) अत्यन्त मद्यप। —ी श्रेष्ठ, अधिक, अत्यन्त। —उक्ति (स्त्री०) अतिशय उक्ति, सन्मानित करने के लिये असम्भव प्रशंसा। काव्य का अलङ्कार विशेष।

अतिसार या **अतीसार** तत्० [अति-सृ + घञ्] संग्रहणी रोग, जठर की व्याधि, पेट की पीड़ा।

अतीत तत्० [अति + ई + क्त] (पु०) भूत, गत, अतिक्रान्त, बीता हुआ, सङ्गीत शास्त्रानुसार परिमाण विशेष। —काल (पु०) बीता हुआ समय।

अतीव तत्० [अति+इव] अतिशय, अत्यन्त, यथेष्ट, बहुत अधिक।

अतीस तद्० (पु०) औषधि विशेष।

अतुल तत्० [अ+तुल] (गु०) या अतुल्य, अनुपम, असदृश, तुलना रहित।—ित अनुपम, असमाननीय, उपमारहित, सर्वश्रेष्ठ।

अतेजा तद्० क्षीणता, हतश्री, हतप्रभ।

अतोल तद्० या अतौल, अप्रमाण, इयत्ता रहित, तोलने का नहीं।

अत्ता, अत्तिका तद्० (स्त्री०) माता, ज्येष्ठा बहिन, बड़ी मौसी, सास। इसका प्रयोग पुराने नाटकों में आता है। नाटकों में जेठी बहिन के सम्बोधन में अत्तिका आता है।

अत्यन्त तत्० [अति+अन्त] (गु०) अतीव अतिशय, अत्यधिक।—**कोपन** (गु०) चण्ड, अतिशय क्रोधी।—**गामी** शीघ्र गामी, अधिक चलने वाला।—**वासी**, एकान्त वासी योगी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी। —**अभाव** (पु०) न्यायमतसे सब प्रकार से अभाव, त्रिकाल में जिसकी स्थिति न हो, अभाव पदार्थ।

अत्यय तत्० [अति+ई+अल्] (पु०) विनाश, अतिक्रम, मृत्यु, दोष, राजाज्ञा का लङ्घन, अपराध।

अत्यर्थ तत्० (पु०) विस्तार, अतिशय, अधिक।

अत्यष्टि तत्० छन्दो विशेष, वह छन्द जिसमें अष्टादश वर्ण और चार पाद होते हैं।

अत्याचार तत्० (पु०) कुव्यवहार, अन्याय, दौरात्म्य, निषिद्धाचरण।—ी (गु०) दुष्कर्मी, दुरात्मा, कुकर्मी।

अत्यावश्यक तत्० (पु०) अति प्रयोजनीय, बहुत आवश्यक।

अत्युक्ति तत्० (स्त्री०) असम्भव कथन, आरोपित कथन, काव्य का अलङ्कार विशेष।

अत्युक्था तत्० (स्त्री०) छन्दोविशेष, चार पाद और बारह अक्षर वाला।

अत्युत्कट तत्० (गु०) अतिशय कठिन, अति तीव्र।

अत्युत्कण्ठा तत्० (स्त्री०) अतिशय मनस्ताप, अत्यन्त चिन्ता।

अत्युत्कृष्ट तत्० (गु०) अत्युत्तम, बहुत अच्छा।

अत्युत्तम तत्० (पु०) अति रमणीय, अतिशय उत्कृष्ट, बहुत अच्छा।

अत्युत्तर तत्० (पु०) सिद्धान्त, मीमांसा निर्धारण, निश्चय करना, पाश्चात्य।

अत्र तत्० (अ०) यहीं, यहां, इस ठौर।—त्य (अ०) यहीं का, इसी स्थान का, इस ठौर का।

अत्रप तत्० निर्लज्ज, लज्जाहीन।

अत्रभवान् तत्० पूज्य, श्लाघ्य। नाटकों में इस शब्द का प्रायः व्यवहार होता है।

अत्रस्थ तत्० इसी स्थान का वासी, यहीं रहने वाला।

अत्रि तत्० (पु०) सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम, यह ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, कर्दम प्रजापति की कन्या अनसूया इन्हें ब्याही थी, इनके पुत्रों का नाम महर्षि दुर्वासा और चन्द्र है। मनु संहिता में लिखा है कि मनु के दश प्रजापति पुत्रों में से एक अत्रि भी थे।—**जात** (पु०) चन्द्र, दिग्गज, नेत्रज, नेत्रप्रसूत, नेत्रभू, निशाकर, सुधांशु, चन्द्रमा।

अथ तत्० (अ०) अनन्तर, मङ्गल आरम्भार्थ, प्रश्न, अधिकार, संशय, विकल्प, समुच्चय, तदनन्तर, तदपरि, पश्चात्।—च वाक्य योजनार्थ अव्यय शब्द, और।—वा पक्षान्तर, या, वा, प्रकारान्तर, किम्वा।

अथक तद्० अथकित अश्रान्त, अक्लान्त।

अथर्व तत्० (अथर्वन्) अतिवृद्ध, चतुर्थवेद। यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है। इसमें नौ शाखा पांच कल्प हैं और बीस काण्डों में समाप्त होता है। इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है, इससे सम्बन्ध रखनेवाली उपनिषदों की संख्या कोई ५८ और कोई ३१ बताते हैं। इसमें अधिकता से अभिचार प्रयोग पाये जाते हैं।—**ण** (पु०) शिव महादेव।—**णी** (पु०) अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, पुरोहित।—**शिख** उपनिषद्-भेद,—**शिखामणि** उपनिषद्भेद।—**शिरः** अथर्व वेद की सातवीं उपनिषद्—**ा** ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जिसे ब्रह्मा

ने ब्रह्म विद्या सिखलायी थी, और इसीने सर्वप्रथम अग्नि को प्रकट कर आर्यजाति में यज्ञक्रिया का प्रचार किया।

अथयउ तद्‌० (गु०) डूब गया, बूड़ गया, अस्त हो गया, अस्तमित, रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है, संस्कृत के अस्तमित शब्द से यह निकला है।

अथाई तद्‌० (स्त्री०) मित्रों के एकट्ठे होने का स्थान, सभा, चौपार, बैठक।

अथान या **अथानो**, तद्‌० (पु०) अचार, खटाई, (गु०) बिना स्थान, बे ठिकाने।

अथाह तद्‌० (गु०) गहिरा, गंभीर, अगाध, बहुत गहरा, बेथाह।

अदकचा तद्‌० (पु०) बेठन, लपेटन, बेठुन, लपेटने का वस्त्र।

अदग्ध तत्‌० (गु०) अप्रज्वलित, अपक्व, नहीं जला हुआ, कच्चा।

अदण्डनीय तत्‌० (गु०) या **अदण्ड्य** (गु०) दण्ड के अनुपयुक्त, अदण्ड है, जिसको दण्ड न दिया जा सके, जो दण्डित न हो सके, स्वधर्मनिष्ठ, सदाचारी, महात्मा।

अदत्त तत्‌० (गु०) अदात, नहीं दिया, असमर्पित अप्रतिपादित।—ा (स्त्री०) अविवाहिता, कुमारी, अनूढ़ा।

अदन तत्‌० (पु०) भक्षण, भोजन, जेवनार, आहार, खाना,—ीय (गु०) भक्षणीय, खाद्य वस्तु, भोजन, भोजन योग्य।

अदभ्र तत्‌० (गु०) यथेष्ट, प्रचुर, अधिक, पूरा, ढेर का, सम्पूर्ण। (पु०) स्नेहोत्पादक पुरुष।

अद्भुत तत्‌० (गु०) विलक्षण, आश्चर्यजनक, विचित्र, अनोखा।

अदम्य तत्‌० (गु०) दमन करने के अयोग्य, दुर्दान्त, जो नहीं दबाया जा सके।

अदरसा तद्‌ (पु०) मिठाई विशेष।

अदर्शन तत्‌० (गु०) छिपा, ढका, लुका, गुप्त। —ीय अदृश्य, नहीं देखने योग्य।

अदलबदल तद्‌० (अ०) परिवर्तन।

अदवायन तद्‌० (स्त्री०) खाट की रस्सी।

अदहन तद्‌० (पु०) भात बनाने के लिये गर्म पानी।

अदाता तद्‌० (पु०) अदानी, सूम, कृपण, लोचड़, दान शक्ति हीन।

अदाया तद्‌० (स्त्री०) दया, शून्यता, कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता।

अदिति तत्‌० (स्त्री०) देवमाता, देवताओं की माँ, महर्षि कश्यप की स्त्री, दक्ष प्रजापति की कन्या, वामनावतार में भगवान् विष्णु इन्हींके गर्भ से उत्पन्न हुए थे, १२ देवताओं की ये माता थीं। नरकासुर को मारने पर भगवान् कृष्ण जी को जो दो कुण्डल मिले थे, वे कुण्डल इन्हीं को समर्पित हुए थे।—नन्दन (पु०) देवता, सुर।

अदिन तद्‌० (पु०) अभाग्य दिन, कुदिन, बुरी दशा, खोटे ग्रह।

अदिष्ट तत्‌० (पु०) भाग्य, प्रारब्ध, विपत्ति।

अदृश्य तत्‌० (गु०) अगोचर, अलक्षित, गुप्त, छिपा हुआ, जो न देख पड़े।

अदृष्ट तत्‌० (गु०) अगोचर, अलख, अनदेखा, भाग्य, दुर्भाग्य, प्राकृतिक, प्रकृति से उत्पन्न, अग्नि जलादि प्राप्त भय।—पुरुष (पु०) किसी कार्य में स्वयं कूद पड़ने वाला, बिना बनाये बनने वाला।—पूर्व (गु०) पहले का नहीं देखा, बिना जाना हुआ। नैयायिक मत से धर्माधर्म की संज्ञा, नैयायिक और वैशेषिक के मत से अदृष्ट आत्मा का धर्म है। सांख्य और पातञ्जल अदृष्ट को बुद्धिधर्म कहते हैं।—फल, (पु०) पूर्वकर्मों के फल, सुख दुःख,।

अदेय तत्‌०(गु०) दान के योग्य नहीं, असमर्पणीय, किसी का न्यास, चाहे उसे स्वामी ने रखा हो या स्वयं मँगवाया हो, पुत्र, स्त्री, और सन्तान के रहते अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति आदि अदेय वस्तु हैं।—दान (पु०) अयोग्य को दान, अपात्र को दान।

अदौरी तद्‌० (स्त्री०) बड़ी मर्योड़ी।

अद्धी तद्‌० (स्त्री०) आधा, बराबर भाग, आधी दमड़ी, महीन सूती कपड़ा।

अघस्र तत्० (गु०) पेटार्थी, लोभी लालची, पेटू ।

अद्य तत्० (अ०) आज, अब, अभी, वर्तमान दिन । —**तन** (गु०) अद्यजात, आजका उत्पन्न, अद्यजात, काल विशेष ।—**ापि** (अ०) अद्य पर्यन्त, आज तक, —**ावधि** (अ०) अद्यारभ्य, आजसे लेकर, (समय परिच्छेदार्थक अव्यय)

अद्रक तद्० (स्त्री०) आर्द्रक, आदी, आदा, कच्ची सोंठ ।

अद्रि तत्० (पु०) पर्वत, पहाड़, अचल, वृक्ष, शैल, सूर्य, परिमाण विशेष ।—**कीला** (स्त्री०) भूमि, पृथिवी —**ज** (पु०) शिलाजीत, गेरू, पर्वतजात वस्तु । —**जा** (स्त्री०) अद्रितनया, पार्वती, सैंहली, वृक्ष, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली लता । —**तनया** (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, अद्रि नन्दनी ।—**पति** (पु०) पर्वतराज हिमालय पर्वत ।—**वह्नि** (पु०) पर्वत मे उत्पन्न अग्नि ।—**भिद्** (पु०) पर्वतभेदक, वज्र, इन्द्र ।—**राज** (पु०) हिमालय पर्वत, प्रधान पर्वत ।—**शृङ्ग** पर्वत के ऊपर का भाग, पर्वत शिखर ।

अद्वितीय, तत्० (गु०) अनुपम, अतुल्य, एकही, अतुल, द्वितीय रहित ।

अद्वैत तत्० (गु०) द्वैत रहित, एक, भेद रहित, जिसके समान दूसरा नहो, शङ्कराचार्य का मत, जिसमें उन्होंने जीव और ईश्वर को एक माना है । जगत् को मिथ्या सिद्ध किया है ।—**वादी** जो केवल एक ही ईश्वर पदार्थ मानते हैं । एकेश्वर वादी, अद्वय वादी, बौद्ध विशेष ।

अध तत्० (अ०) नीचा, तल, औंड़ा, आधा ।—**स्** तत्० (अ०) नीचे, निम्न, तल, पाताल,—**कृत**, (गु०) नीचे किया हुआ, अवक्षेपण ।—**पात** (पु०) नीचे पतन, ध्वंस, नष्ट, नरक-पात, सौभाग्य सम्पत्ति से वञ्चित होना ।—**प्रस्तरण** (पु०) कुशासन, तृण-शय्या ।—**शिरा** (पु०) अधोमुख सूर्य वंशीय त्रिशंकुराजा । (त्रिशंकु शब्द में विस्तार से देखो) —**क्षिप्त** (पु०) अधस्त्यक्त, निन्दित, ययातिराजा, त्रिशङ्कु ।

अधकचा तद्० (गु०) अधकच्चा, कचौसा फल, अधपक्का ।

अधकपाली तद्० (पु०) अधासीसी, आधे सिर की पीड़ा, रोग विशेष, सूर्यावर्त ।

अधगो तत्० (स्त्री०) नीचे की इन्द्रियाँ, गुदा आदि ।

अधन तत्० (पु०) कंगाल, दरिद्र, धन हीन, दीन ।

अधवर, तद्० (गु०) आधी दूर, बीच में, मध्य में ।

अधम तत्० (गु०) नीच, निकृष्ट, अपकृष्ट, निन्दित । (पु०) जार, उपपति, भेद । —**भृतक** (पु०) छोटा भृत्य, नीचभृत्य, पहरे वाला, मोटिया, कुली । —**ऋण** (अधमर्ण) ऋणी, धर्ता, खधुक, देनदार, —**ा** (स्त्री०) स्वीया आदि नायिकाओं में से एक नायिका ।—**अङ्ग** (पु०) पद, चरण, निकृष्ट अवयव । —**ाधम** (गु०) अति नीच, अति निकृष्ट, नीचातिनीच ।

अधमाई तद्० पापिष्ठता, नीचता, दुष्टता, अधमता ।

अधर तत्० (पु०) नीचे का होंठ, मध्य, शून्य, मुख का अवयव विशेष, अपकृष्ट, नीच, अधः, तल, स्मरागार, योनि, ।—**मधु** (पु०) वदनामृत, अधरामृत, अधररस,—**ा** (स्त्री०) अधोदिक, नीचा, अधीर । —**ीकृत**, अपवादित, पराहत, तिरस्कृत, निन्दित । —**ीभूत** (गु०) विप्रकृत, अधरी कृत ।

अधर्म तत्० [अ+धर्म] (पु०) पाप, अन्धेर, अन्याय, अनीति, धर्म नहीं, विधर्म, धर्म विरोधी, अधर्म की उत्पत्ति के विषय में पौराणिक कथा यह है, ब्रह्मा के पृष्ठ देश से इसकी उत्पत्ति हुई है, इसके वामभाग से अलक्ष्मी (दरिद्रता) उत्पन्न हुई जो अधर्म से ब्याही गई ।—**ात्मा** (पु०) पापिष्ट, अन्यायी ।—**ाचारी** (पु०) नीचआचार वाला, दुर्नयी, परोद्वेजक ।—**िष्ठ** (पु०) अति दुराचारी ।—**ी** (पु०) पापी, दुराचारी, दोषी ।

अधबन तद्० (गु०) आधा, अर्द्ध, बराबर का हिस्सा ।

अधवाड़ तद्० (स्त्री०) आधा थान, अधाई, आधे घर के लोग ।

अधान तद्० (पु०) तेल आदि ।

अधार तद्० (अधार) (पु०) आश्रय, अवलम्ब, आहार, सहारा, कलेवा, खाना ।

अधार्मिक तत्० [अ–धर्म+इक] (पु०) धर्महीन, अन्यायी ।

अधि तत्० (अ०) आधिक्य बोधक, प्राधान्य बोधक, अधिक, ऊपर का भाग, ईश्वर, उपसर्ग, सामने, वश में ।

अधिक तत्० (पु०) अतिरिक्त, बहुत, विस्तर, बहुत देर विशेष।—तर (पु०) दूसरे की अपेक्षा अधिक।—ता (स्त्री०) आधिक्य, अतिरिक्तता, बहुतायत, बढ़ती। —न्तु (अ०) और, दूसरा, अपर, विशेषतः। —धिक (पु०) बढ़ती से बढ़ती।—ङ्ग (पु०) बीस अँगुलियों से अधिक अँगुली वाला, या और किसी अधिक अवयव से युक्त ।

अधिकरण तत्० (पु०) आधार, आधा पात्र, अधिकार करण, आधिपत्य, सातवाँ कारक ।

अधिकाई तद्० (स्त्री०) बहुतायत, अधिकता, बढ़ती, आधिक्य, सरसाई ।

अधिकाना तद्० (क्रि०) बढ़ाना, उभारना ।

अधिकार तत्० [अधि+कृ+घञ्] स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्व, बपौती ।—स्थ (पु०) वश में रहने वाला, ज़मींदारी में बसने वाला ।—ी (पु०) प्रभु, स्वामी, अधिपति, अधिकार विशिष्ट, स्वत्ववान्, पुजारी, पण्डा, स्थान या मठाधीशों के मन्त्री ।

अधिकृत तत्० (पु०) देखवैया, औंवहार, लगाया गया, नियोजित, कार्य में लगा हुआ, आयव्यय देखने वाला, अध्यक्ष ।

अधिगत तत्० [अधि+गम्+क्त] (पु०) अवगत, ज्ञात, प्राप्त, पठित, जानकार, ऊपर गये हुए, स्वर्गीय, मुक्त ।

अधिज्य तत्० (पु०) धनुर्गुण नियोजित, धनुष चढ़ाये हुए, युद्धार्थी, वीर ।

अधित्यका तत्० (स्त्री०) पर्वत के ऊपर का स्थान अथवा भूमि, समस्थल, टीला, तराई, कोह ।

अधिदेवता तत्० (पु०) इष्टदेव, प्रतिष्ठाता, अधिष्ठात्री, देवता, अधिदेव ।

अधिदैवत तत्० (पु०) मुख्य देवता, सूर्य मण्डलस्थ, चिन्ता करने योग्य पुरुष, ब्रह्मविद्या, दैव बल ।

अधिप तत्० (पु०) राजा, प्रभु, स्वामी ।

अधिपति तत्० (पु०) (देखो अधिप) ।

अधिमांस तत्० (पु०) आँख में का फोड़ा ।

अधिमास तत्० (पु०) लौंद, मलमास, दो अमावस्या युक्त मास ।

अधियाना तद्० (क्रि०) आधा करना, बराबर हिस्सा करना ।

अधिरथ तत्० (पु०) सारथि, रथ हाँकने वाला, कर्ण का पिता ।

अधिराज तत्० (पु०) नरपति, महाराज ।

अधिवास तत्० (पु०) शुभ की पहिली क्रिया, वासस्थान, निवास, नित्यता, सुगन्धिद्रव्य, प्रतिवासी ।

अधिवेदन तत्० (पु०) संस्कार विशेष, विवाह ।

अधिवेशन तत्० (पु०) बैठक, विचारार्थ किसी स्थान पर जमाव, सभा का अधिवेशन ।

अधिष्ठाता तत्० [अधि+स्था+तृ] रक्षक, पालने वाला, अध्यक्ष, प्रधान । (स्त्री०) अधिष्ठात्री अधिदेवता, स्थितिकारिणी ।

अधिष्ठान तत्० [अधि+स्था+अनट्] (पु०) ठांव, व्यवहार चक्र, प्रभाव चक्र, अध्ययन, अवस्थान, स्थायी । अधिष्ठित (पु०) स्थापित, नियुक्त ।

अधीत तत्० (पु०) पढ़ा हुआ, पठित, शिक्षित । —ि अध्ययन, पठन ।—ी अध्ययन विशिष्ट, कृताध्ययन । (पु०) छात्र, विद्यार्थी ।

अधीन तत्० (पु०) वशीभूत, आज्ञाकारी, सेवक, आश्रित, वशतापन्न —ता (स्त्री०) दासत्व, पारतन्त्र्य, वशीभूत, अधीनत्व ।

अधीर तत्० (पु०) चञ्चल, कातर, अस्थिर, अपरिश्रम, उतावला हड़बड़िया ।—ा (स्त्री०) विद्युत्, चञ्चला, मध्यानायिका का एक भेद ।

दोहा "व्यङ्गयुक्ति पति सों कहे मध्या धीरा नारि ।
मध्या देह उराहनो वचन अधीरा गारि ॥"

चञ्चला स्त्री ।—ता (स्त्री०) घबराहट, चञ्चलाहट, उतावली, हड़बड़ी, छटपटी ।

अधीरज तद्० (पु०) घबराहट, अधीरता, अधैर्य, चञ्चलता।

अधीश तत्० (पु०) या अधीस तद्० स्वामी, प्रभु, मालिक, ईश्वर।—श्वर मण्डलेश्वर, चक्रवर्ती।

अधुना तत्० (अ०) इस बेर, अब, अभी, इदानीं सम्प्रति, —तन (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, वर्तमान समय में रहने वाला।

अधूरा तद्० (गु०) अधबना, अपूर्ण, असमस्त, असमाप्त।

अधेड़ तद्० (गु०) अधवैसा, अधबूढ़ा, इसका प्रयोग प्रायः अधिकता से स्त्रियों के लिये होता है।

अधेन तद्० (पु०) पढ़ना, अध्ययन।

अधेला तद्० (पु०) आधा पैसा, अधवाई, पैसे का आधा।—अधेली दे० आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना।

अधैर्य तत्० (गु०) उतावला, अस्थिर, व्याकुल।

अधोगत तद्० (स्त्री०) अवनत, नीचगामी—ति अधोगमन, नरक प्राप्ति, अधःपतन।

अधोतर तद्० (स्त्री०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कपड़ा।

अधोधम तद्० (पु०) अति नीच, पाजी।

अधोमुख तद्० (पु०) अवनत मुख, नीचे मुख, औंधा मुख।

अधोवायु तत्० (पु०) अपानवायु, मलक्रिया,।

अधोभुवन तत्० (पु०) पाताल, बलि के रहने का स्थान।

अधोमस्तक तत्० (पु०) सूर्यवंश का त्रिशंकु राजा।

अधोमुखा तत्० (स्त्री०) गोजिह्वा वृक्ष।

अधोक्षज, तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, नारायण, इन्द्रिय जन्य, ज्ञान को वश करने वाला, योगीराज, वासुदेव।

अध्यक्ष तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, मुख्य, प्रधान। —ता कर्तृत्व, तत्त्वावधारकता।

अध्ययन तत्० (पु०) पाठ, पठन, पढ़ना।

अध्यदार तत्० (पु०) प्रणव वर्ण, ओंकार।

अध्यवसाय तत्० (पु०) उद्यम, उपाय, यत्न, आस्था, उत्साह, कर्म, उत्तम काम करने की उत्कण्ठा। कर्मदृढ़ता।—यी (पु०) उत्साही, काम को उत्तमता पूर्वक करने की उत्सुकता।

अध्यशन तत्० (पु०) बारबार भोजन करना, अधिक परिमाण में खाना।

अध्यात्म तत्० (गु०) आत्मज्ञान, आत्म संबन्धी, आत्म विषयक।—दृश (पु०) ऋषि, मुनि, आत्म दर्शक।—विद्या (स्त्री०) ब्रह्मविद्या, आत्मतत्त्व विषयक शास्त्र।—रति (स्त्री०) जो सर्वदा भगवान् को आराधना करते हैं।—ा (पु०) अध्यात्मनिष्ठा, परमार्थिकता, जीवात्मा, परमात्मा।

अध्यापक तत्० (पु०) पाठक, गुरु, उपाध्याय, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ाने वाला।

अध्यापन तत्० (पु०) पाठ पढ़ाना, विद्यादान, सिखाना, शिक्षा देना।

अध्याय तत्० (पु०) प्रकरण, पर्व, पाठ, सर्ग, परिच्छेद, पुस्तक के भाग।

अध्यारोप तत्० (पु०) मिथ्या आग्रह, मिथ्याकलङ्क, अधिक्षेप।

अध्यारोहण तत्० (पु०) आरोहण, चढ़ना।

अध्यारोही तत्० (पु०) आरोहणकर्ता, चढ़ने वाला।

अध्यास तत्० (पु०) आरोप, भ्रम, भूल, एक वस्तु में दूसरी वस्तु की कल्पना निवास।—ी—ि—त—स्ति (गु०) कृत निवास।—ीन आसनस्थ, कृताधिवेशन, उपविष्ट, बैठा हुआ।

अध्याहरण तत्० (पु०) कल्पना करना, वितर्क करना।

अध्याहार तत्० (पु०) आकाङ्क्षा पूर्ति के लिये शब्द ढूंढ़ना, वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये लुप्त शब्द का अनुसन्धान करके अर्थसुगम करना। वाक्य पूर्ति के लिये पदयोजना करना।

अध्यूषित तत्० (गु०) बसवास, बसाहुआ।

अध्यूढ़ा तत्० (स्त्री०) विवाहिता स्त्री, परिणीता।

अध्येता तत्० (पु०) छात्र, शिष्य, पाठक।

अध्येषणा तत्० (स्त्री०) याचना, माँगना, आदर पूर्वक प्रार्थना, प्रश्न।

अध्रुव तत्० (गु०) अनिश्चित, क्षणभङ्गुर।

अध्व तत्० (पु०) बाट, मार्ग, पन्था।—ग (पु०) पथिक, पान्थ, बटोही, उष्ट्र, सूर्य, खेचर, वृक्षविशेष।

—गा (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गा, जाह्नवी।—गामी (पु०) पथिक पान्थ,—जा (स्त्री०) वृक्ष विशेष।
—नीन (पु०) पथिक, पर्यटक, भ्रमणकर्ता।
—न्य (पु०) पथिक।

अध्वर तत्० (पु०) याग, यज्ञ, वसुभेद, सावधान।

अध्वर्यु तत्० (पु०) यजुर्वेदज्ञ होमकर्ता विशेष, अध्वर्यु का कार्य यह है कि यज्ञमण्डप में भूमि को माप कर कुण्ड बनावे, यज्ञोपपात्र तैयार करे, जाकर समिध और पानी लावे, अग्नि प्रदीप्त करे, और यज्ञपशु लाकर बलि दे और उस समय उस यज्ञपशु के कल्याणार्थ यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ता जाय।

अध्वान्त तत्० (पु०) ईषद् अन्धकार, सन्ध्याकाल, तमोरहित।

अन् तत्० (अ०) निषेधार्थक अव्यय। ना, नहीं, बिना, रहित।

अनः तत्० (पु०) शकट, अन्न, जननी, जन्म, जन्मी, अत्यल्प काल।

अनंश तत्० (पु०) अंशरहित, बटवारे में हिस्सा पाने का अनधिकारी। जैसे—जन्मान्ध, मूक, नपुंसक, कुष्ठी, मूर्ख, इत्यादि भाग पाने के अयोग्य हैं।

अन-अहिवात तद्० (पु०) वैधव्य, रँड़ापा, विधवापन, सौभाग्य रहित।

अन-इच्छा तद्० (स्त्री०) बिना चाह, चाह नहीं, बिना प्रयोजन।

अन-इच्छित तद्० (पु०) बिना चाह का, बिना प्रयोजन का, अभीष्ट नहीं।

अन-इस तद्० (पु०) बुरा, निकम्मा, व्यर्थ, निष्प्रोजन।

अनक तद्० (पु०) नगारा, मृदङ्ग, नीच, छोटा।

अनख तद्० (पु०) ईर्षा, डाह, अकाज, जलापा, कुढ़न, क्रोध, वैर, द्वेष, द्रोह।

अनखगार तद्० (पु०) क्रोधयुक्त गाली, क्रोध की गाली।

अनखाना (क्रिया०) क्रोध करना, चिढ़ना।

अन-गढ़ तद्० (पु०) अनगढ़ा, अडबङ्ग, अपरिचित, प्राकृतिक, बिना बनाया हुआ।—ा (पु०) टेढ़ा, बाँका, अनसीखा।—ी (स्त्री०) बे ठिकाने, बेमेल, बे सिर पैर का, बेढङ्गा, जैसे अनगढ़ी बात।

अन-गणित तद्० (पु०) बहुत, असंख्यात, अपार, अनगणित या अनगिनती (पु०) अधिक संख्यक।

अन-गार तत्० (पु०) आगारशून्य, गृहरहित, ऋषि, मुनि, तपस्वी, वनवासी।

अनग्नि तत्० (पु०) श्रुति स्मृति विहित, अग्निहोत्र कर्महीन, निरग्नि, अग्नि का अभाव, अग्नि चयन रहित यज्ञ।

अनघ तत्० [अन + अघ] (पु०) निष्पाप, निर्मल, पाप रहित, सुकृती, पुण्यवान्, पवित्र, शुद्ध।—ा (स्त्री०) सुन्दर, अच्छा, गान का एक परिमाण।

अनङ्ग तत्० (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ। ब्रह्मा के आदेश से, तारकासुर पर विजय प्राप्त करने के लिये महादेव के पुत्र का सेनापति होना आवश्यक था, परन्तु योगिराज महादेव का विवाह तो हुआ ही नहीं था, और वे विवाह करना भी नहीं चाहते थे, अतएव कामदेव पर यह भार सौंपा गया, उसने अपना काम प्रारम्भ कर दिया। जब महादेव को यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने अपने क्रोध से कामदेव को जला डाला, तभी से कामदेव का नाम अनङ्ग पड़ा। कामदेव दूसरे जन्म में भगवान् कृष्ण का पुत्र हुआ, नाम था प्रद्युम्न, और उसकी स्त्री मायावती हुई। (पु०) शरीर रहित, अङ्गहीन। (पु०) आकाश, मन।
—भीम (पु०) उड़ीसा का अत्यन्त प्रसिद्ध राजा, कहते हैं जगन्नाथ जी का मन्दिर इसी राजा ने बनवाया था। ११७४ खृष्टाब्द में यह यहाँ राज्य करता था। यह अत्यन्त पुण्यात्मा तथा यशस्वी था।

अन-चाहत तद्० (पु०) नहीं चाहा हुआ, इच्छारहित, अनिच्छित।

अन-चित तद्० (पु०) अचानक, एकाएक, अचीत, अकस्मात्, दैवात्।

अन-छीला तद्० (पु०) या अन-छिला तद्० (पु०) बिना छिला हुआ, छिलका समेत, अनाड़ी।

अन-जान तद्० (गु०) अनपहिचान, अनचीन्हा, अपरिचित, अज्ञातकुलशील, निर्बुद्धि ।—ने (क्रि० वि०) बिन जाने, बिना जाने बूझे, बिना जाने, नहीं जान के ।

अन-जामा तद्० (गु०) मरु, बाँझ, अफला, बिना उगा, उत्पत्तिशक्ति रहित ।

अनजीवत तद्० (गु०) प्राण रहित, मृतक, मुर्दा, शव। रामायण में इसका प्रयोग आया है। यथाः—“अन-जीवत सम चौदह प्राणी।”

अनट तद्० (स्त्री०) गाँठ, गिरह, ऐंठ, विरुद्धाचरण, विपरीताचरण।

अनड्वान तत्० (पु०) बैल, साँड़, बलद, वृष ।

अनत तद्० (अन्त) (गु०) अन्यत्र, और ठाँव, दूसरी ठौर, अन्य स्थान, सीमा ।

अन-देखा तद्० (गु०) अदृष्ट, नहीं देखा हुआ, अदृश्य, अलख, गुप्त ।

अनन्त तत्० (पु०) विष्णु, बलदेव, शेषनाग, अनन्तजित् नामक जैनाचार्य, वासुकि, सिन्दुवार वृक्ष, आकाश, अभ्रक, अवरख, (गु०) अन्त रहित, अनवधि, अशेष, असीम, अपर्याप्त, अपार । काश्मीर का राजा, यह राजा संग्रामराज का पुत्र था बाल्यावस्था ही से इसकी वीरता स्फुटित होने लग गई थी । अनेक युद्धों में इसने विजय प्राप्त किया था । अन्तमें वह स्त्री के प्रेम से राज्यकार्य से उदासीन हो गया था । यद्यपि सुचतुर मंत्री राज्य की उत्तम व्यवस्था करते थे, तथापि स्त्री के कहने से इसने अपने पुत्र कलश को काश्मीर का राजा बनाया, राज्य पाकर वह उच्छृङ्खल हो गया, और पिता के साथ अनुचित व्यवहार करने लगा। मंत्रियों को यह बात खटकने लगी, अतएव पुनः उन लोगों ने कौशल से वृद्ध अनन्त को राज पाट अपने हाथ में लेने को कहा । राजा ने वैसा ही किया । —गौर (पु०) सङ्गीत शास्त्र, स्वर भेद ।—चतुर्दशी (स्त्री०) भाद्र मास की शुक्ल चतुर्दशी, अनन्त देव का व्रत विशेष ।—विजय (पु०) राजा युधिष्ठिर का शङ्ख ।—वीर्य (पु०) अपरिसीम पराक्रम, जिन विशेष ।—व्रत (पु०) भाद्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन जो किया जाता है, अनन्त देव का व्रत ।—मूल (पु०) मूल विशेष, स्वनामख्यात लता ।

अनन्तर तत्० (गु०) अनन्तर, अवकाशरहित, अनवकाश, अत्यन्त समीप, पास । (पु०) पीछे, पाछे, पश्चात् । —ज (पु०) क्षत्रिया के गर्भ में ब्राह्मण से उत्पन्न, अथवा क्षत्रिय के वीर्य से वैश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान ।

अनन्य तत्० (गु०) एक ही जिसको दूसरे का भरोसा नहीं, अभिन्न, अन्य नहीं ।—गति (गु०) अनन्य गतिक, गत्यन्तर-शून्य, एकाश्रय ।—चेता (पु०) एकनिष्ठ, अनन्यमना, एकचित्त, एकतान ।

अन-पढ़ा तद्० (पु०) मूर्ख, अज्ञ, विद्या हीन, अशिक्षित।

अनपत्य तत्० (गु०) निःसन्तान, निर्वंश, पुत्रहीन, अपुत्र ।

अन-पत्रप तत्० (गु०) निर्लज्ज, फूहड़, लज्जाहीन ।

अनपराध तत्० (गु०) निर्दोष, निरपराध, दोषशून्य, शुद्ध, सच्चरित्र ।

अनपाय तत्० (गु०) अनश्वर, अक्षय, अनाश्रय, चिरस्थायी (पु०) अलङ्कृत । —ी (पु०) स्थिर, निश्चल, अविनश्वर अपाय रहित ।—यिनी (स्त्री०) नाशरहित, अचला, दृढ़, नित्य ।

अनपेक्ष तत्० (गु०) स्वाधीन, निरपेक्ष । —क्षित (गु०) अनतुरुद्ध, अमान्य कृत, वर्जित, अनिश्चित ।

अन-बनाव तद्० (पु०) अनरस, बिगाड़, फूट, ऐंठा-ऐंठी ।

अन-बूझ तद्० (गु०) असमझ, अनजान, बुद्धिहीन, निर्बोध ।

अन-बेधा तद्० (पु०) अनछेदा, अबेधा, अच्छिद्रित ।

अन-बोल तद्० (गु०) चुपचाप, अवाक्, अबोल, अनबोला, चुपका, गूँगा, साफ नहीं बोलने वाला, अस्पष्टवादी, पशु ।

अन-भल तद्० (पु०) बुराई, खुटाई, बुरा, खोटा, अमङ्गल ।—ाई बुराई ।

अनभिगमन तत्० (पु०) अस्थान गमन, भयङ्कर स्थान में गमन ।

अनभिज्ञ तत्० (गु०) अनजान, अज्ञान, मूर्ख, निर्बोध ।

अनभिव्यक्त तत्० (गु०) अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रकाश।

अनभिमत तत्० (गु०) असम्मत, मत विरुद्ध, अनिष्ट।

अनभ्यस्त तत्० (गु०) अनभ्यासित, अपठित, अनधीत।

अनभ्यास तत्० (पु०) अशिक्षा, अनध्ययन, अव्यवहार।

अन-मना तद्० (गु०) घबरा, मोथी, भावित।

अ-नम्र तत्० (गु०) अविनत, अविनयी, उद्दण्ड।

अन-मिल तद्० (गु०) बेमेल, बेजोड़, टूटेफूटे, अटपट।

अन-मोल तद्० (गु०) अमोल, उत्तम, अमूल्य, बढ़िया।

अनय तत्० (पु०) स्वधन, विपद, भाग्य, अशुभ, दुर्नीति, पाप।

अन-रस तद्० (पु०) विरस, मित्रों में अनबनाव, फूट, बिगाड़, ऐंठाऐंठी।

अन-रीति तद्० (स्त्री०) कुचाल, कुढङ्ग, अपरीति, कुरीति।

अनर्गल तत्० (गु०) निरर्गल, अबाध, अप्रतिहत, प्रतिबन्धक रहित, ओटक, स्वेच्छक।

अनर्घ्य तत्० (गु०) अमूल्य, अक्रेय, अत्युत्कृष्ट।

अनर्जित तत्० (गु०) अनुपार्जित, बिना परिश्रम लब्ध, बिना कमाया हुआ।

अनर्थ तत्० (गु०) वृथा, निष्फल, अर्थहीन, अनुचित। —क (गु०) वृथा, निष्फल, अप्रयोजन, निरर्थक।

अनर्ह तत्० (गु०) अनुपयुक्त, अयोग्य।

अनल तत्० (पु०) पूर्णता रहित, अग्नि, आग, वसुभेद, भेला चित्त।—पक्ष (पु०) पक्षि विशेष, यह पक्षी सर्वदा आकाश ही में उड़ा करता है, ज़मीन पर कभी नहीं रहता, अपने अण्डे को वह आकाश से गिरा देता है, वह अण्डा पृथ्वी पर पहुँचने से पहले ही फूट जाता है, और उसमें से बच्चा निकल आता है। जो उसी समय से उड़ने लग जाता है। यथा:—

दोहा

"अनलपक्ष का पेटुआ, गिरेउ धरणि अरराय।
बहु मलीन यह लीन है, मिल्यो तासु को धाय॥"
—विचारमाला।

प्रभा (स्त्री०) ज्योतिष्मती नामक लता विशेष, अग्नि की शिखा, दीप्ति।—प्रिया (स्त्री०) अग्नि भार्या, स्वाहा।

अनलस तत्० (गु०) आलस्य विहीन, उद्युक्त, परिश्रमी उद्योगी।

अनल्प तत्० (गु०) अधिक, बहुविस्तर।

अनवद्य तत्० (गु०) अनिन्दित, सुन्दर, स्वच्छ, मान्यमान, सम्भ्रान्त।—ङ्ग (पु०) सुन्दर अङ्ग, सुडौल।

अनवकाश तत्० (गु०) अवकाश रहित, निरवसर।

अनवधान तत् (पु०) अमनोयोग, चित्त की एकाग्रता का अभाव, अप्रणिधान चित्त का अनावेश, अमनोयोगी, अनाविष्ट।—ता (स्त्री०) मनोयोग शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता।

अनवरत तत्० (गु०) निरन्तर, अजस्र, सर्वदा, अविरत, नित्य, लगातार, प्रतिदिन।

अनवर तद्० (पु०) छल्ला, बिछिया, मुदरी, भूषण विशेष।

अनवस्था तत्० (स्त्री०) दुर्दशा, अवाधा, अवस्थारहित, स्थित्यभाव, दरिद्रता, अस्थिर, दुरवस्था, तर्क विशेष। नैयायिकों के मत से एक प्रकार का दोष, यथा—मनुष्य किससे उत्पन्न हुए, इस प्रश्न का उत्तर दिया गया कि मनु से, मनु कहाँ से उत्पन्न हुए, ब्रह्मा से, ब्रह्मा कहाँ से उत्पन्न हुए, विष्णु से, इसी प्रकार लगातार प्रश्न करते जाने से कुछ निर्णय नहीं होसकता। निर्णय होना तो दूर रहा, प्रश्नों का उत्तर देना ही कठिन हो जायगा, इसीको अनवस्थादोष कहते हैं।—न (पु०) वायु, अस्थायित्व, कुस्थायित्व, कुव्यवहार, अवस्थिति, शून्य, अस्थिर। —स्थित (गु०) अस्थिर, चञ्चल।—स्थिति (स्त्री०) वासरहित, अवस्थानाभाव, अस्थिरता। —स्थितचित्त (गु०) उन्माद, पागल, चाञ्चल्य, अनभिनिविष्ट।

अनशन तत्० (पु०) अनाहार, उपवास, अभोजन। —व्रत (गु०) उपवास करते करते शरीर छोड़ देना।

अनश्वर तत्० (गु०) अविनाशी, नित्य, सनातन।

अनसिखा तद्‌० (गु०) अनपढ़ा, मूर्ख, अजान, अशिक्षित।

अनसुत तद्‌० (गु०) अनाकानी, अमानित।

अनसूया तत्‌० (स्त्री०) असूया रहित, ऋषि कन्या। महर्षि अत्रि से यह ब्याही गई थी, दक्ष प्रजापति की कन्या थी और इसकी माता का नाम प्रसूति था। महाकवि कालिदास कृत शकुन्तला नाटक में भी एक अनसूया का नाम आता है, जो उसी नाटक की नायिका शकुन्तला की सखी का नाम है।

अन्हवाए (क्रि०) नहवाए, स्नान कराए, नहवाए, स्नान।

अन-हित तद्‌० (पु०) स्नेहरहित, बैरी, द्वेषी, शत्रु, बुरा करने वाला, बुरा, बुराई।

अन-होना तद्‌० (क्रि०) असम्भव, अचरज, अनहोनी, सम्भव पर नहीं।

अनाकारण तद्‌० (पु०) व्यर्थ, योंही, निष्कारण, कारणाभाव, निर्निमित्त।

अनागत तत्‌० (गु०) अनुपस्थित, अनायात, अज्ञात, भविष्यत्, आगे होने वाला।

अनाघ्रात तत्‌० (गु०) बिना सूँघा, आघ्राण नहीं किया, अस्पृष्ट अभिनव।

अनाचार तत्‌० (पु०) कुचाल, कुरीति, अशुचि, कदाचार, शुद्धाचार हीन, श्रुतिस्मृति विरुद्ध कर्माचार।—री कदाचारी, अशुद्धाचारी।

अनाज तद्‌० (पु०) धान्य, शस्य, नाज, गल्ला।

अनाड़ी तद्‌० (गु०) मूर्ख, अचेतन, निर्बोध।

——**पन** तद्‌० (पु०) मूर्खता, निर्बुद्धि, अनभिज्ञता।

अनाढ्य तत्‌० (गु०) दरिद्र, दुःखी।

अनातप तत्‌० (पु०) छाया, घर्माभाव।—त्र (गु०) छत्ररहित।

अनात्मवान् तत्‌० (गु०) अवशीभूतमना, जो अपने मन को वश नहीं कर सकता।

अनात्म्य तत्‌० (गु०) आत्म भिन्न, पर।

अनाथ तत्‌० (गु०) स्वामी हीन, दीन, दुःखी, अस्वामिक, सहायहीन।—ा (स्त्री०) पतिहीना, विधवा, असहाया, रक्षक रहिता।—िनी (स्त्री०) अनाश्रिता, विधवा, पतिहीना, दुःखिनी।

अनादर तत्‌० (पु०) अपमान, असम्मान, अवज्ञा, अवहेलन, अयत्न।

अनादि तत्‌० (गु०) आदि रहित, उत्पत्ति हीन, स्वयम्भू, नित्य ब्रह्म, बहुत दिनों से जो शिष्ट परम्परा से चला आता हो, बहुत दिनों से सज्जनों में जिसका परस्पर व्यवहार होता चला आता हो।

अनादिष्ट तत्‌० (गु०) अननुज्ञात, बिना आज्ञा का।

अनाद्यन्त, [अन+आदि+अन्त] तत्‌० (गु०) नित्य, अनन्त, सनातन, सर्व कालीन, शाश्वत, ब्रह्म, अनादि, अनन्त।

अनन्नास तद्‌० (पु०) अननास, अनानास, फल विशेष।

अनाप्त तत्‌० (गु०) अनिपुण, अपारक, अविश्वासी।

अनाविल तत्‌० (गु०) निर्मल, परिष्कार, स्वच्छ, साफ, सुथरा।

अनावृष्टि तत्‌० (स्त्री०) अवर्षण, वर्षाभाव, जलकष्ट, सूखा।

अनामक तत्‌० (पु०) रोगविशेष, अर्शरोग, बवासीर।

अनामय तत्‌० (पु०) आरोग्य, नीरोग, पुष्ट, अरोग, स्वस्थता।

अनामा तत्‌० (पु०) कनिष्ठा, अँगुली के ऊपर वाली अँगुली, अनामिकाँगुलि, अनामिका।

अनायक तत्‌० (गु०) स्वामि-रहित, रक्षाहीन।

अनायत तत्‌० (गु०) अविस्तृत, अप्रशस्त।

अनायत्त तत्‌० (गु०) अनधीन, अवशीभूत, उच्छृङ्खल।

अनायास तत्‌० (पु०) अल्प परिश्रम, अक्लेश, अयत्न, सहज, सौकर्य, सुकरत्व।

अनार तद्‌० (पु०) वृक्ष विशेष, अनारफल, दाड़िम।

अनारम्भ तत्‌० (पु०) आरम्भाभाव, बिना आरम्भ किया हुआ।

अनारोग्य तत्‌० (पु०) अस्वस्थता, रुग्णावस्था।

अनार्य तत्‌० (गु०) अश्रेष्ठ, अप्रधान, अनाड़ी, नीच, अमान्य, जातिविशेष, आर्यजाति के अतिरिक्त अन्यान्य जातियाँ अनार्य या आर्येतर शब्द से

विख्यात हैं। आर्यों से जिनका आचार व्यवहार नीति धर्म आदि में विरोध था, वे अनार्य कहे जाते थे। ऋग्वेद आदि मान्यतम ग्रन्थों में दस्यु या दास शब्द अनार्य के पर्याय में आते हैं।—कर्मा (गु०) आर्यों से विरुद्ध कर्म करने वाले, निन्दिताचार, गर्हित।—जुष्ट (गु०) अनार्यों के कर्म, अनार्य सेवित क्रिया।—देश (पु०) अनार्यों का वास-स्थान, जहाँ चातुर्वर्ण्य की व्यवस्था न हो।

अनाहार तत्० (पु०) भूखा, उपवास, लंघन।—री (गु०) अभुक्त, उपवासी, अभोजन।

अनाहूत तत्० (गु०) अनिमन्त्रित, अकृताह्वान, नहीं बुलाया हुआ।

अनिकेता तत्० (गु०) अनिकेतन, निरालय, गृहशून्य, निर्वास, बिना घर का।

अनिगीर्ण तत्० (पु०) अनुक्त, अकथित।

अनित्य तत्० (गु०) विनाशी, झूठा, क्षणिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंसशाली।—ता (स्त्री०) अचिरस्थायिता, क्षणविध्वंसिता।—तावादी (पु०) जो किसी पदार्थ को चिरस्थायी नहीं मानते, बौद्ध विशेष। —सम (पु०) न्यायशास्त्र कथित तर्क न करके, केवल उदाहरणों के द्वारा तर्क करना।

अनिन्दित तत्० (गु०) अगर्हित, उत्तम।

अनिमित्तक तत्० (गु०) निष्कारण, अहेतुक, बिना कारण।

अनिमिष तत्० (पु०) देवता, मत्स्य। (गु०) निमिषशून्य।—आचार्य (पु०) देवगुरु बृहस्पति।

अनियत तत्० (गु०) अस्थायी, अनित्य, अचिरस्थायी।

अनियन्त्रित तत्० (गु०) अनिवारित, अशासित, स्वेच्छाचारी।

अनियम तत्० (पु०) नियमाभाव, अनिश्चय।—न्ति (गु०) अनिर्द्धारित, अनियम युक्त।

अनिर्णय तत्० (पु०) द्विविधा, सन्देह, संशय, दो बातों में से किसी का ठीक नहीं होना, अनिश्चय, अनवधारण।

अनिर्णीत तत्० (गु०) अनिर्द्धारित, अनिश्चित।

अनिर्दिष्ट तत्० (गु०) अनिश्चित, अनुद्देशित।

अनिर्वचनीय तत्० (गु०) अवर्णनीय, अकथ्य, वचन के अगम्य, वर्णनारहित, असाध्य वर्णन, उत्तम, अत्युत्तम।

अनिवारित तत्० (गु०) अप्रतिषेधित, अवारित, बाधा रहित, वारण शून्य।

अनिवार्य तत्० (गु०) अवारणीय, दुरत्यय, वारण करने के अयोग्य, असाध्य, कठिन, दुर्जय।

अनिल तत्० (पु०) वायु, पवन, वसुविशेष, बतास, देवता विशेष, यह अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं, इन्द्र के छोटे भाई हैं, इनके पिता का नाम कश्यप है, भीम और हनुमान इनके पुत्रों का नाम है। वायु ४९ उनचास हैं, इनका रथ १०० सौ और कभी कभी हज़ार घोड़ों से खींचा जाता है। अन्यान्य देवताओं के समान वायु को भी यज्ञ में भाग दिया जाता है। दमयन्ती के सतीत्व का साक्ष्य इन्होंने दिया था, त्वष्टा के ये जामाता हैं। शरीर में पाँच वायु होते हैं जिनके नाम ये हैं प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। —प्रक (पु०) विभीतक वृक्ष, बहेरे का वृक्ष। —सख (पु०) अग्नि, अनल, आग।—ात्मज (पु०) वायुपुत्र, हनुमान, भीमसेन, दूसरा पाण्डव, —ामय (पु०) वातरोग, अजीर्ण,—ाशी (पु०) वायु भक्षण के द्वारा जीवन धारण करने वाला, तपस्वी, सर्प, व्रत विशेष।

अनिर्लोचित तत्० (गु०) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित, अविवेचित, अविचारित, ऊहापोह ज्ञानशून्य।

अनिश तत्० (अ०) निरन्तर, सतत, सर्वदा। (गु०) रात्रि का अभाव।

अनिष्ट तत्० (गु०) अनभिलषित, अवाञ्छित, हानि, अपकार, बुरा।—कर (गु०) अपकारक, अहितकर।

अनिष्ठुर तत्० (गु०) अनिर्दय, सरलचित्त।

अनिष्पात तत्० (गु०) अप्रवीण, अकृती, अपकार।

अनी तत्० (पु०) सीमा, पैना, नोक, तीक्ष्णधार, अणी।

अनीक तत्० (स्त्री०) सेना, भीड़, कटक, सैन्य, योद्धा, युद्ध।—**स्थ** (पु०) सेना रक्षक, हस्तिपक, राजरक्षक, चिन्ह।

अनीति तत्० (स्त्री०) कुचाल, अन्याय, दुर्नीति, अत्याचार।

अनीदृश तत्० (गु०) अतुल्य, असमान, बराबर नहीं, बेजोड़।

अनीश तत्० या **अनीस** तद्० (गु०) अनधिकार, अस्वामी, ईश्वर नहीं, जीव, स्वामी रहित, जो किसी को भी ईश्वर न माने।

अनीश्वर तत्० (गु०) ईश्वर भिन्न, नास्तिक। —**वाद** (पु०) नास्तिक, जिस मत में ईश्वर न माना गया हो, चार्वाक।—**वादी** (पु०) देवनिन्दक, नास्तिक, अभक्त।

अनीह तत्० (गु०) आलसी, ढीला, बोदा, निश्चेष्ट निर्लोभ।—**ा** (स्त्री०) अनिच्छा, उदासीनता।

अनु—तत्० (उपसर्ग) पीछे, पश्चात्, सह, सादृश्य, लक्षण, वीप्सा, इत्यम्भाव, भाग, हीन, आयाम, समीप, अपरिपाटी, अनुसार, अधीन, कणा, अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, थोड़ा। —**कथन**(पु०) कहने के बाद कथन, पश्चात् कथन, बारंबार कथन, आपस की बात चीत, किसी के अनुसार वा अनुकूल कहना, कही हुई बात को फिर से कहना।—**कम्पा** (स्त्री०) दया, कृपा, करुणा, स्नेह, अनुग्रह,।—**कम्पित** (गु०) अनुग्राह्य, काइंपिक, वेगवान्,।—**कम्प्य** (गु०) अनुग्राह्य, कृपापात्र।—**करण** (पु०) अनुरूप, उतारा, सदृश, करण, प्रतिरूप करण।

अनुकर्षण तत्० (पु०) खींच, टान, घसीट, आकर्षण।

अनुकूल तत्० (गु०) सहाय, सहकारी, अनुग्राहक। (पु०) पतिभेद, काव्य के नायकों में से एक नायक। यथा:—

दोहा "निज नारी सन्मुख सदा विमुख विरानी वा—
नायक सो अनुकूल है ज्यों सीता को राम
कविदेव।

——**ता** (स्त्री०) साहाय्य,

अनुक्त तत्० (पु०) अकथित, दृष्टान्त।

अनुक्रम तत्० (पु०) परिपाटी, रीतिभाँति, यथाक्रम, आनुपूर्वी।

अनुक्रमणिका तत्० (स्त्री०) क्रमानुसार, प्रबन्ध, सूचीपत्र, निघण्टु, भूमिका, ग्रन्थों का मुख्यग्रन्थ, आभास।

अनुक्रोश तत्० (पु०) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह।

अनुक्षण तत्० (पु०) सर्वदा, सदा, नित्य, सर्वक्षण, सब समय, घड़ी घड़ी।

अनुखाल तद्० (पु०) खाई, खाड़ी, नाला।

अनुग तत्० (पु०) पश्चाद्गामी, सेवक, दास, भृत्य, अनुचर, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला।

अनुगत तत्० (पु०) आश्रित, शरणागत, पीछे चलने हारा।

अनुगमन तत्० (पु०) पीछे जाना, पश्चाद्गमन, सहगमन।

अनुगामी तत्० (पु०) साथी, अनुकारी, अनुवर्ती, सहचर, सेवक।

अनुगृहीत तत्० (गु०) उपकृत, प्रतिपालित, आश्वासित।

अनुग्रह तत्० (पु०) प्रसन्नता, दया, करुणा, दुःख दूर करने की इच्छा।

अनुग्राहक तत्० (गु०) दयावान्, करुणान्वित।

अनुचर तत्० (पु०) सङ्गी, दास, सहचर, साथी।

अनुचित तत्० (गु०) अयोग्य, अनुपयुक्त, अनरीत।

अनुच्छ्रित तत्० (गु०) उन्नति रहित, बहुत ऊँचा नहीं।

अनुज तत्० (पु०) कनिष्ठ, लहुरा भाई, छोटा भाई, लघुभ्राता, कनिष्ठ, अवरज, यवीयान्।

अनुजीवी तत्० (गु०) पराधीन, आश्रित, परतन्त्र (पु०) दास

अविचल, अत्यक्त, नहीं छोड़ा

, अनुमति,

अनुज्ञात तत्० (गु०) आज्ञा प्राप्त।

अनुतप्त तत्० (गु०) अनुशोची, पश्चात्ताप विशिष्ट।

अनुताप तत्० (पु०) खेद, पश्चात्ताप, अनुशोचन।
—न्ति (गु०) दुःखित, अनुशोचक।

अनुतारा तत्० (स्त्री०) उपग्रह, उपतारा।

अनुत्कण्ठा तत्० (स्त्री०) निरुद्वेग, उत्कण्ठा रहित।

अनुत्तर तत्० (गु०) प्रत्युत्तरहीन, उत्तर नहीं, मौनी, चुपका, श्रेष्ठ, स्थिर, अधः, दक्षिण दिशा, स्वामी।

अनुदय तत्० (पु०) उदय के पूर्वकाल, उदय रहित, भोर, सबेरा, विहान।

अनुदात्त तत्० (पु०) स्वर विशेष, नीच स्वर, उत्तम नहीं, अनुदार।

अनुदार तत्० (पु०) अतिशय, दाता नहीं, अदाता, कृपण, असहाय, स्त्री के वशवर्ती।

अनुदिन तत्० (अ०) प्रतिदिन, प्रत्यह, नित्य, दिन दिन, सदा।

अनुद्वाह तत्० (पु०) अविवाह, अनूढ़ावस्था, कुमारपन, कुंवारपन।

अनुद्विग्न तत्० (गु०) निश्चिन्त, उद्वेग रहित, स्वस्थ, स्थिर।

अनुद्वेग तत्० (पु०) उद्वेग रहित, व्याकुल नहीं, निश्चिन्त।

अनुनय तत्० (पु०) नम्र, कोमल, विनय, स्तव, स्तुति।

अनुनाद तत्० (पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

अनुनासिक तत्० (गु०) नासिका संबन्धी। (पु०) सानुनासिक, अनुनासिक, वर्ण, यथा:—ङ ञ ण न म।

अनुप तद्० (गु०) अनुपम, अतुल्य, अपूर्व।

अनुपकारी तत्० (पु०) अहितकारी, अनुपकारक।

अनुपम तत्० (गु०) अनुप, उत्तम, उपमा-रहित।

अनुपमेय तत्० (गु०) असदृश, असम, विषम।

अनुपयुक्त तत्० (गु०) अयुक्त, अयोग्य, अनुचित, अन्याय।

अनुपल तत्० (पु०) पल का साठवाँ हिस्सा, काल विशेष, सेकेण्ड।

अनुपस्थित तत्० (गु०) उपस्थिति रहित, उपस्थित नहीं।

अनुपात तत्० (पु०) सम, समान भाव, समान रूप से गिरना, त्रैराशिक, बराबर सम्बन्ध।

अनुपातक तत्० (पु०) महापातक के समान पाप, ब्रह्महत्या आदि बड़े पापों के समान पाप।

अनुपान तत्० (पु०) पथ्य, औषध का संयम, औषध के साथ सेवन करने योग्य पदार्थ।

अनुपाय तत्० (गु०) उपाय हीन, निरवलम्ब, निराश्रय।

अनुप्रास तत्० (पु०) यमक पद विन्यास, काव्य का अलङ्कार विशेष, समान वर्ण विन्यास, मित्राक्षर योजना, केवल वर्ण की सदृशता होने से अनुप्रास अलङ्कार माना जाता है। यह शब्दालङ्कार है। इसके पाँच भेद हैं, छेकानुप्रास, वृत्त्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाटानुप्रास और अन्त्यानुप्रास। विषय की कोमलता तथा कठोरता के अनुरोध से तत्सम वर्णों के प्रयोग होने के कारण इस अलङ्कार का नाम अनुप्रास पड़ा है।

अनुबन्ध तत्० (पु०) मित्र, सुहृद, सम्बन्ध, विनश्वर, मुख्यानुयायी, शिशु प्रकृति का अनुवर्तन, बन्ध, आरम्भ, लेश।

अनुभव तत्० (पु०) ज्ञान, बोध, अनुमान, यथार्थ ज्ञान, विचार, सोचना, समझना, उपलब्धि।

अनुभाव तत्० (पु०) दृढ़, अनुमान, निश्चय, महिमा, बड़ाई, भाव का सूचक, प्रभाव, सज्जन के ज्ञान का निश्चय।

अनुभूत तत्० (गु०) बीती, मन से जाना गया, अनुभव किया हुआ, विचार किया हुआ, प्रतीति किया हुआ, निश्चित।

अनुमत तत्० (गु०) सम्मत, स्वीकृत, अङ्गीकृत, आज्ञा, सहमत, एक मत।

अनुमति तत्० (स्त्री०) अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, कलाहीन चन्द्रयुक्त पूर्णिमा।

अनुमरण तत्० (पु०) एक सङ्ग मरण, सहमरण, पश्चात् मरण, सती।

अनुमान तत्० (पु०) अटकल, विचार, हेतु के द्वारा निर्णय करना, तर्क, अनुभव, बोध।

अनुमापक तत्० (पु०) निर्णायक, अनुमान का हेतु, निश्चय का कारण।

अनुमता तत्० (स्त्री०) सहमता, अनुगामिनी।

अनुमेय तत्० (पु०) अनुमान करने योग्य।

अनुमोदन तत्० (पु०) आमोद करण, सन्तोष प्रकाश, दूसरे के सुख से सुख, आनन्द युक्त, सम्मति, प्रवृति, प्रदान, प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार।

अनुमोदित तत्० (गु०) अनुमत, आह्लादित, आनन्दित।

अनुयायी तत्० (गु०) सदृश, अनुवर्ती, अनुगामी, पश्चात्गामी, अनुसारी।

अनुयोग तत्० (पु०) ताड़ना, धमकी, घुड़की, तिरस्कार, आक्षेप, प्रश्न, जिज्ञासा, निन्दा, शिक्षा, उपदेश, प्रबोध, अनुशासन। —कारी (पु०) तिरस्कारक, आक्षेपक, प्रश्न कारक।—ी (पु०) निन्दित, तिरस्कृत।

अनुयोजक तत्० (पु०) अनुयोग कारी, उपदेशक।

अनुयोजन तत्० (पु०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूँछ पाँछ।

अनुयोज्य तत्० (गु०) अनुयोगार्ह, आज्ञाप्य, निन्दा-योग्य।

अनुरक्त तत्० (गु०) प्रेमी, अत्यन्त लीन, आसक्त, रत।

अनुराग तत्० (पु०) प्रीति, स्नेह, ममता, आसक्ति, रति, प्रशंसा, थोड़ी लाली।—ी (पु०) अनुराग-युक्त, अनुरक्त।

अनुराधा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, यह सत्तरहवाँ नक्षत्र है, इसकी तीन तारायें हैं, इसका स्थान वृश्चिकराशि का मुख है।

अनुरूप तत्० (गु०) सदृश, तुल्य, एकसा, अनुसार।

अनुरोध तत्० (पु०) अपेक्षा, उपरोध, अनुवर्तन, पक्षपात।

अनुलोम तत्० (गु०) सीधा, क्रम से, यथाक्रम, अविलोम, जातिविशेष।—ज (पु०) ब्राह्मण के औरस और क्षत्रियाणी के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनुवर्तन तत्० (पु०) अनुसार चलन।

अनुवृत्ति तत्० (स्त्री०) उपजीविका, सेवा मार्ग।

अनुवाद तत्० (पु०) भाषान्तर करना, निन्दा, अपवाद, बार बार कहना।—क (पु०) भाषान्तर-करने वाला।

अनुवेदना तत्० (स्त्री०) सहानुभूति, समवेदना।

अनुशय तत्० (पु०) पश्चात्ताप, अनुताप, जिघांसा, द्वेष।—ी (पु०) पश्चात्तापी, रोगविशेष।

अनुशासन तत्० (पु०) आदेश, आज्ञा, या अनुस्तासन तद्०।

अनुशास्ता तत्० (पु०) शिक्षक, उपदेष्टा, अनुयामक।

अनुशीलन तत्० (पु०) आन्दोलन, पुनः पुनः अभ्यास, मनन।

अनुशोक तत्० (पु०) पश्चात्ताप, खेद।

अनुशोचन तत्० (पु०) पश्चात्ताप करना।

अनुषङ्ग तत्० (पु०) मिलन, दया, संबन्ध, प्रणय।

अनुष्टुप् [अनु + स्तुभ्] तत्० (पु०) छन्द विशेष, चार पाद का यह छन्द होता है। एक पाद में ८ आठ अक्षर होते हैं, सरस्वती।

अनुष्ठान [अनु + स्था + अनट्] तत्० (पु०) आरम्भ, उपक्रम, सूचना, कार्य. आचरण।—शरीर (पु०) लिङ्ग देह, आद्यदेह।

अनुष्ठित [अ + स्था + क्त] तत्० (गु०) आरब्ध आचरित।

अनु[illegible] + स्था + य]तत्० (गु०) उपक्रान्त, [illegible] करने योग्य।

[illegible]] तत्० (पु०)

अनुसरना (क्रि०) संग चलना, पीछे जाना।

अनुसरहिं (क्रि०) अनुगमन करते हैं, पीछे चलते हैं, अनुसार चलते हैं।

अनुसार [अनु+सृ+घञ्] तत्० (पु०) अनुरूप, अनुवर्तन।

अनुसूचन [अनु+सूच्+अनट्] तत्० (पु०) विचार, ध्यान।—ा (स्त्री०) आन्दोलन, सुचिन्ता, अनुष्ठान।

अनुस्वार [अनु+स्वृ+घञ्] तत्० (पु०) एक बिन्दु वर्ण। (ं)

अनुहार [अनु+हृ+घञ्] तत्० (पु०) सादृश्य अनुकरण।

अनुहार्य [अनु+हृ+ण्यत्] तत्० (पु०) मासिक श्राद्ध।

अनूठा तद्० (गु०) अपूर्व, नया, निराला।

अनूढ़ा [अन्+ऊढ़ा] तद्० (स्त्री०) कुआँरी, अविवाहिता।—गामी (पु०) व्यभिचारी, गणिकासेवी, लंपट।

अनूप तत्० (पु०) जलप्लावित देश, सजल देश, उपमा रहित।—ज (पु०) आर्द्रक, आदी, अदरक।

अनृत तत्० (गु०) झूठा, मिथ्या, असत्य, वितथ।—वादी (पु०) मिथ्यावादी।

अनेक [न—एक] (गु०) अधिक, विस्तर, बहु, भूरि, ढेर।—ज (पु०) द्विज, पक्षी-बहुजात।—ता (स्त्री०) भेद, विरोध, अधिक्य।—धा बारंबार।—शः (अ०) अनेक प्रकार, बहु प्रकार।

अनैक्य [न—ऐक्य] तत्० (पु०) परस्पर असम्मिलन, एकताभाव, विरोध, असंयोग।

अनैसे तद्० (क्रि०वि०) कुदृष्टि से।

अनोखा तद्० (गु०) अपूर्व, अद्भुत, दुर्लभ।

अनोना तद्० (गु०) अलोना, नोन-रहित।

अन्त तत्० (पु०) नाश स्वरूप, प्रान्त, शेष, समाप्ति, सीमा, निश्चय, अवयव। (गु०) समीप, निकट, अतिमनोहर।—ःकरण (पु०) हृदय, मनः, चित्त, स्वान्त।—ःपाती (पु०) अन्तर्गत, बीच वाला, मध्यवर्ती, अनुप्रान्त।—पुर (पु०) अवरोध, रनवास, कोठरी।—शय्या (स्त्री०) भूमिशय्या।—शरीर (पु०) आत्मा, चिदात्मा, सच्चिदंश।—संज्ञा (स्त्री०) अनुभव, चेतना, चैतन्य।—सत्वा (स्त्री०) गर्भवती।—सलिल (पु०) अन्तर्जल, पृथिवी-स्थजल, सरस्वती नदी।—श्वेत (पु०) हाथी।

अन्तक तत्० (पु०) नाशकर्ता, यम, काल।

अन्तकर तत्० (पु०) नाशकर, विनायक।

अन्तकाल तत्० (पु०) मरने का समय।

अन्तज तद्० (पु०) अन्त्यज तत्० शूद्र नीच जाति।

अन्तड़ी तद्० (स्त्री०) अंतड़ी, आँतें, नाड़ीं।

अन्ततः तत्० (अ०) शेषतः, निकृष्टपक्ष।

अन्तर तत्० (अ०) भीतर, अभ्यन्तर, मध्य, माँझ, प्रान्त, स्वीकार, (पु०) मध्यवर्ती स्थान, सीमा, अवसर, परिधान, अन्तर्द्धान, विभिन्न, सहाय, छिद्र, स्वीय, आत्मीय, भेद बिना, बहि, अन्तरात्मा, सुयोग, अवकाश, तुल्य, अनुरूप, अन्य, दूरता।

अन्तरङ्ग [अन्तर+अङ्ग] तत्० (पु०) आत्मीय, स्वजन, स्वसम्पर्की, सुहृद।—ता (स्त्री०) आत्मीयता, सौहार्द।

अन्तरा तत्० (पु०) चरण, मध्य का पद, निकट, मध्य, बीच, बिना।

अन्तरातप तत्० (स्त्री०) अन्तरिया, तिजारी।

अन्तरात्मा तत्० (पु०) जीवात्मा, प्राण।

अन्तरापत्य तत्० (पु०) गर्भवती, गर्भिणी, गुर्विणी, द्विजीवा।

अन्तराय तत्० (पु०) बाधा, विघ्न, रुकावट।

अन्तराल तत्० (पु०) फाँक, अन्तर, भेद।

अन्तरिच्छ तद्० (पु०) आकाश, गगन।

अन्तरित तत्० (गु०) भीतरी, आन्तरिक।

अन्तरीया तत्० (स्त्री०) तिजारी, तीसरे दिन आने वाला ज्वर।

अन्तरीक्ष तत्० (पु०) आकाश, गगन, शून्य, नभ।

अन्तरीप तत्० (पु०) समुद्र का टेक, द्वीप।

अन्तरीय [अन्तर+ईय] तत्० (पु०) भीतर का, बीचला, मध्यका, परिधान वस्त्र।

अन्तर्गत तत्० (स्त्री०) मन की बात, पैठा, मध्यस्थ ।

अन्तर्गति तत्० (स्त्री०) मन के तरङ्ग, विस्मरण ।

अन्तर्दाह तत्० (पु०) छाती की जलन, शरीर की ज्वाला ।

अन्तर्द्धान तत्० (पु०) अदर्शन, लुकाव, छिप जाना ।

अन्तर्ध्यान तत्० (पु०) मानसिक ध्यान, मनः संबन्धी ध्यान ।

अन्तर्पट (पु०) ओट, आड़, टट्टी, पर्दा ।

अन्तर्भूत तत्०(पु०) मध्य में स्थापित, मध्यङ्गत ।

अन्तर्मनस तत्० (गु०) उदास, घबरा, व्याकुल ।

अन्तर्यामी, तत्० अन्तर्जामी तद्० मनकी बात बूझने हारा ।

अन्तर्वत्नी तत्० (स्त्री०) गर्भिणी, द्विजीवा ।

अन्तर्वेद तत्० (पु०) गङ्गा यमुना के बीच का देश, ब्रह्मावर्त देश ।

अन्तर्हित तत्० (गु०) छिपाव, लुकाव, अदृश्य, अन्तर्हीन ।

अन्तिक तत्० (पु०) समीप, पास, निकट, सन्निधान ।

अन्तिम [अन्त+इम्] तत्० (पु०) शेष, चरम, अवसान, अन्त वाला ।

अन्तेवासी [अन्ते+वस्+णिन्] तत्० (पु०) विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, प्रान्तस्थायी ।

अन्त्य तत्० (गु०) शेष का, अन्त्य का, नीच, अधम जाति, अन्तिम, शेषोत्पन्न, जघन्य ।—कर्म (पु०) प्रेतकर्म, शवदाहादि कर्म ।—ज (पु०) शूद्र, रजकादि सप्त जाति, यथा—रजक, चर्मकार, चमार, वरुड़, कैवर्त, मेद, भील, (गु०) जघन्यज जाति, अवरज ।—जन्मा (पु०) शूद्र, अवरवर्ण, जघन्य जाति ।—स्थ (पु०) यवरल ये वर्ण ।

अन्त्येष्टि [अन्त्य+इष्टि] (पु०) प्रेत कर्म, शवदाहादि कर्म, मृत देह का अन्तिम संस्कार ।-क्रिया (स्त्री०) शवदाह ।

अन्त्र तत्० (स्त्री०) आँत, आँतड़ी, नाड़ी ।—वृद्धि (स्त्री०) कोश वृद्धि रोग ।

अन्दर तद्० अभ्यन्तर, भीतर ।

अन्दाज़न (दे०) अनुमान से, लग भग ।

अन्देशा सन्देह, संशय ।

अन्ध तत्० (गु०) नेत्रहीन, अचक्षु, अन्धा, सूरदास, मुनि विशेष । वैश्य जातीय मुनि, अयोध्या में सरयू तीर पर यह रहते थे । शूद्रा कन्या के साथ इन्होंने अपना ब्याह किया था, और आश्रम में रहते थे । अयोध्याधिपति राजा दशरथ ने हाथी के भ्रम से अन्ध मुनि के पुत्र को शब्दवेधी बाण से निहत किया । बाणविद्ध पुत्र को पिता-माता ने देख के अपने प्राण छोड़ दिये और राजा को शाप दिया कि तुम भी पुत्रवियोग ही से मरोगे ।

अन्धस तत्० (पु०) अन्न, भात ।

अन्धक तत्० (पु०) देश विशेष, मुनि विशेष, असुर विशेष । यह दैत्य कश्यप के औरस और दिति के गर्भ से उत्पन्न हुआ था । देवताओं के द्वारा जब दैत्य मारे गये, तब दिति ने कश्यप से वर माँगा कि मेरे पुत्र को अवध्य बनाइये, कश्यप ने कहा 'तथास्तु' वही पुत्र अन्धक था, इसके हज़ारबाहु हज़ार मस्तक, दो हज़ार नेत्र, और दो हज़ार चरण थे । यह संसार का अति उत्पीड़न करता था । अन्त में महादेव के द्वारा निहत हुआ ।

अन्धकार तत्० (पु०) अन्धेर, अँधियारा, प्रकाशाभाव, ध्वान्त, तिमिर, तमिस्त्र ।

अन्धकूप तत्० (पु०) अन्धकार मय कूप, जलरहित कूप, अन्धा कुंआ ।

अन्धगोलाङ्गूल तत्० (पु०) अन्धे द्वारा गौ की पूंछ पकड़ कर चलने की क्रिया । जो दशा अन्धे का सहारा अन्धे द्वारा पकड़े जाने पर होती है अर्थात् दोनों गड्ढे में गिर पड़ते हैं, वही दशा अन्धगोलाङ्गूल की भी है ।

अन्धड़ तद्० (पु०) आँधी, झड़, वतास, प्रचण्डवात ।

अन्धतमस तत्० (पु०) अत्यन्त अन्धकार, - निबिड़ अन्धकार, नरक विशेष ।

अन्धतामिस्र तत्० (पु०) निविडान्धकार युक्त, नरक विशेष।

अन्धपरम्पराग्रस्त तत्० (पु०) अन्धों की परम्परा में ग्रस्त, अज्ञानियों के अनुयायी।

अन्धला तद्० (पु०) अचक्षु, नयन-हीन, बिन आँख का, काना।

अन्धाधुन्ध तद्० (पु०) अधिक करना, अनियम, अन्धों के समान करना।

अन्धसुत तद्० (पु०) अन्धे का पुत्र, राजा दुर्योधन आदि।

अन्धियारा तद्० (पु०) अँधेरा, अन्धकार।

अन्धिसन्धि तद्० (पु०) छिद्र, छेद, भौंका, गढ़ा।

अन्धेर तद्० (पु०) अन्याय, उपद्रव, उत्पात, अन्धाधुन्ध, अन्याय।

अन्धेरा तद्० (पु०) अँधियारा, अज्ञान।

अन्धेरी (दे०) घोड़े की आँख मूदने की दमनी।

अन्न तत्० (पु०) ओदन, भात, अनाज, सूर्य। —कष्ट (पु०) दुर्भिक्ष। —कूट (पु०) पर्व विशेष, दिवाली के दूसरे दिन भात का पर्वत के समान ढेर लगाया जाता है। —जल (पु०) अन्नपानी, खाना पीना, दाना पानी। —दान (पु०) आहार दान, अन्नव्यय। —दास पेट के लिये दास बनने वाले, पेटू। —दाता (पु०) पालने हारा, रक्षक। —पानी भोजन और जल। —पूर्णा (स्त्री०) अन्नाधिष्ठात्री, देवी, काशीश्वरी, विश्वेश्वरी। —प्राशन (पु०) संस्कार विशेष, बालक बालिकाओं को प्रथम अन्न खिलाना। छठवें महीने यह संस्कार किया जाता है। —विकार (पु०) शुक्रवीर्य, विष्ठा, मल। —ब्रह्म (पु०) अन्नस्वरूप ब्रह्म। —भाजन (पु०) भोजन करने का पात्र। —भिक्षा (स्त्री०) अन्न के लिये प्रार्थना। —भोक्ता (पु०) अन्न खाने वाला, जिसके साथ खान पान है। —मय (पु०) अन्नस्वरूप, अन्न द्वारा वर्द्धित। —रस (पु) अन्न का सारभाग, माण्ड, अन्न से पेट में जो रस उत्पन्न होता है। —लिप्सा (स्त्री०) क्षुधा, बुभुक्षा। —वस्त्र (पु०) ग्रासाच्छादन। —क्षेत्र (पु०) अधिक अन्न, बहुत मनुष्यों का भोजन। —भाव (पु०) अन्नकी अवस्थिति, दुर्भिक्ष, अकाल, महँगी। —र्थी (पु०) भोजन के लिये अन्न माँगने वाला। —हारी (पु०) अन्न भोक्ता, अन्न भक्षक, अन्न खाने हारा।

अन्नी तद्० (स्त्री०) दाई, धायी, धात्री, उपमाता।

अन्मोल तद्० (पु०) अमूल्य, अति उत्तम।

अन्य तत्० (पु०) भिन्न, पृथक, और, अपर, पर। —कृत (पु०) अन्य द्वारा अनुष्ठित, अन्य द्वारा जात, भिन्न सम्पादित। —गामी (पु०) व्यभिचारी, पारदारिक, परस्त्रीगामी, लम्पट। —चाली (पु०) स्वधर्म त्यागी, कुपथगामी। —ज (पु०) कुयोनि, हीन जाति। —तः (अ०) अन्यत्र स्थानान्तर। —त्र (अ०) और कहीं, दूसरा ठाँव। —था तत्० (अ०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध, अन्य प्रकार, विपर्यय, वरार्थ, मिथ्या, दुष्ट, वितथ, और प्रकार, उलटा। —कृत (पु०) खण्डन, परिवर्तन, बदला किया हुआ। —ख्याति (स्त्री०) अपख्याति, दुष्कीर्ति, दुर्नाम। दर्शनों में इस शब्द का प्रयोग आत्मविषयक मिथ्याज्ञान के अर्थ में होता है। आत्मा का अयथार्थ ज्ञान। —चरण (पु०) उलटा चलन, विपरीत व्यवहार, विरुद्धाचरण, विपर्यय-करण। —सिद्धि (पु०) अभावनीय कर्मों की उत्पत्ति, एक प्रकार का हेत्वभास तर्क विशेष, जिसमें असत्ययुक्तियों के द्वारा कोई विषय सिद्ध किया गया हो।

अन्य-देशी तत्० (पु०) दूसरे देश के वासी, भिन्न देशी।

अन्य-पुष्ट तत्० (पु०) कोकिल, कोइल, पिक, परपालित।

अन्य-भृत तत्० (पु०) कोइल, पिक।

अन्य-पूर्वा (स्त्री०) परपूर्वा, जिस कन्या का एक बार विवाह हो जाने के अनन्तर पति के मरने पर जो पुनर्वार विवाह होता है; द्विरूढ़ा, दो बार ब्याही हुई।

अन्यमनस या **अन्यमनस्क** (पु०) अन्यचिन्तक, चपल, अन्यचित, अन्यमना।

अन्यमनस्कता तत्० (स्त्री०) अन्यमनस्क होना, दूसरी ओर मन लगाना, प्रस्तुत बात पर असावधानी।

अन्यादृश तत्० (गु०) अन्य प्रकार, भिन्न रूप, विसदृश।

अन्यान्य तत्० (गु०) अपरापर, भिन्न भिन्न, दूसरे दूसरे, और और।

अन्याय तत्० (पु०) उपद्रव, अविचार, न्याय बहिर्भूत, अनुचित।—ी (पु०) अन्यायकारी, अत्याचारी, दुर्वृत्त, अधर्मी, न्यायशून्य, न्याय-रहित, दुष्ट।

अन्योन्य तत्० (गु०) परस्पर, उभयतः, मिलाप। —भेद (पु०) परस्पर का भेद, आपस का भेद, विरोध।—ाश्रय (पु०) एक वस्तु के ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान, परस्पर ज्ञान, मावेश, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान के अधीन दूसरी वस्तु का ज्ञान और उस वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान।

अन्वय (पु०) वंश, कुल, पदच्छेद, सन्तति।—ज्ञ (पु०) वंशावलि जानने वाला, बन्दी, भाट।—ी (गु०) संबन्ध विशिष्ट, सम्पर्की, पश्चाद्वर्ती।

अन्वित तत्० (गु०) युक्त, संबन्धित, पूरा, मिला हुआ।

अन्वेषण तत्० (पु०) खोजना, पता लगाना, अनुसन्धान करना।

अन्वह तत्० (पु०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन।

अन्वाचय तत्० (गु०) संयोजित, संयुक्त, द्वन्द्व, समास का एक भेद।

अन्हवाना तद्० (क्रि०) स्नान कराना, धुलाना।

अन्हान तद्० (पु०) स्नान, धोवन।

अन्होना तद्० (पु०) असाध्य, असम्भव।

अप् तत्० (उपसर्ग) नीच, अधम, बुरा, ध्वंस, असम्पूर्णता विकृत, त्याग, वर्जनार्थ, अपकृष्टार्थ, वियोग, विपर्यय, चौर्य निर्देश, हर्ष, यज्ञ कर्म, अनिर्देश्य प्रज्ञा।—कर्म (पु०) दुष्कर्म, अनिष्टकर्म, कुकर्म, कुचलन।—कर्ष (पु०) जघन्यता, छुटाई, मुख्य काल के रहते अमुख्य काल में कर्म करना। —कर्षण खींचना, टानना।—कलङ्क (पु०) अपयश, कलङ्क, मिथ्यापवाद, दुर्नाम।—कार (पु०) अनिष्ट, हानि, क्षति, अनुपकार।—कारक (पु०) बुरा करने वाला, अनिष्टकारी।—कीर्ति (स्त्री०) अयश, अख्याति, दुर्नाम, अकीर्ति।—कृत (गु०) अपकार प्राप्त।—कृति (स्त्री०) अपकार, अनुपकार। —कृष्ट (गु०) अधम, न्यून, नीचा, बुरा, निकृष्ट। —कृष्टता (स्त्री०) जघन्यता, निकृष्टत्व, नीचता। —क्रम (पु०) भागना, छूटना, क्रमविपर्यय, पलायन। —क्रोश (पु०) निन्दन, भर्त्सन।—गत (गु०) दूर गया, मुआ, मरा, मृत, गत, दूरीभूत।—घात (पु०) हत्या, वध, मारना।—चय (पु०) टोटा, घाटा क्षतिः, खोजना।—चार (पु०) उपाक, अजीर्ण।—छाया (स्त्री०) प्रेत, उपदेवता।

अपञ्चीकृत तत्० (पु०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पाँच भूतों के पृथक पृथक भाव।

अपटक (पु०) अहंगी, पक्षपाती।

अपटी तत्० (स्त्री०) वस्त्रप्रावरण, कनात।

अपटु तत्० (गु०) अचतुर, निर्बुद्धि, अकुशल, अनिपुण, व्याधित, रोगी।

अपठ तद्० (पु०) अनभ्यास, अनपढ़ा, मूर्ख।

अपठित तत्० (गु०) अशिक्षित, अध्ययन रहित।

अपड तद्० (गु०) स्थायी, अटल, पोढ़ा, दृढ़।

अपडर तद्० (पु०) मिथ्याभय, निष्कारण डर।

अपत तद्० (गु०) पापी, अप्रतिष्ठित।

अपति तद्० (स्त्री०) अनादर, अपमान।

अपतियारा तद्० (गु०) विश्वासघातक, कपटी।

अपत्य तत्० (पु०) सन्तान, बेटा, लड़का, जिसकी स्थिति से पितर गिरने न पावें, पुत्र, कन्या। —शत्रु (पु०) कर्कट, केंकड़ा।—स्नेह (पु०) पुत्र और कन्या के प्रति स्वाभाविक मोह।

अपत्रप तत्० (गु०) लज्जाहीन, निर्लज्ज, नहीं लजाने वाला।

अपथ तत्० (पु०) कुमार्ग, मार्ग रहित।

अपथ्य तत्० (गु०) अहितकारक भोजन, रोग बढ़ाने वाले पदार्थ।—ाशी (पु०) कुपथ्य भोक्ता, कुपथ्याभिलाषी।

अपद तत्० (गु०) पदरहित, पंगु, कर्मच्युत, (पु०) सर्प, कृमि।—स्थ (गु०) स्थान भिन्न, कर्मच्युत, पदच्युत, अपने पद से हटाया गया।

अपदार्थ तत्० (गु०) अयोग्य वस्तु, अवस्तु, पदार्थ भिन्न, अनुत्तम।

अपदेवता, तत्० (पु०) प्रेत, पिशाच आदि, निकृष्ट देवता।

अपदेश तत्० (पु०) छल, कपट।

अपध्वंसक तत्० (पु०) घिनौना, खण्डनकारी।

अपनयन तत्० [अप + नी + अनट्], (पु०) अपनय, खण्डन, दूरी करण, मरण, निष्कृति।

अपना तद्० (सर्व०) स्वकीय, निजका, स्व।

अपनाना (क्रि० स०) अपनायना, अपना संबन्ध जोड़ना।

अपनायत तद्० (स्त्री०) नाता, गोता, घराना, संबन्ध, भाई चारा।

अपनीत तत्० (गु०) हटाया गया, दूरीभूत, अपसारित।

अपवश तद्० (गु०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, अपने वश में, मन्मुखी।

अपभय तत्० (पु०) भय, डर, अपना डर, निर्भय, विगत भय।

अपभाषा तत्० (स्त्री०) गँवारी बोली, कुवाक्य, असाधु शब्द।

अपभ्रंश तत्० (पु०) अपशब्द, प्राकृत, व्याकरण विरुद्ध शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य भाषा।

अपमान तत्० (पु०) अमर्यादा, तिरस्कार, अनादर, असम्मान।—**र्नित** (गु०) अपमान प्राप्त, मान-हीन।

अपमृत्यु तत्० (पु० स्त्री०) रोग के विना मरण, अपघात मरण, अस्वाभाविक कारणों से मृत्यु, अकाल मृत्यु, अनमौत मरण।

अपयश तत्० **अपजस** तद्० (पु०) अपकीर्ति, दुर्नाम, अख्याति।

अपर तत्० (गु०) इतर, अन्य, पर, भिन्न, दूसरा।

अपर-ग तद्० (पु०) अन्यगामी, व्यभिचारी।

अपरना तद्० **अपर्णा** तत्० (स्त्री०) विना पत्ते वाली, उमा, पार्वती, भवानी।

अपरम्पार तद्० (पु०) अपार, अनन्त, असीमा, अशेष।

अपराजय तत्० (पु०) अपराभव, अजीत, जीत, पराभव हीनता।

अपराजित तत्० (गु०) जो जीता न जाय, अजेय, अनिर्जित। (पु०) विष्णु, ऋषिविशेष, शिव, —**ा** (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, अपनपर्णी, स्वल्पफला, विष्णुक्रान्ता, शेफाली, शमी भेद, सङ्किनी, स्वनाम ख्यातलता विशेष।

अपराध तत्० (पु०) दोष, अधर्म, पाप, अन्याय, —**ी** (पु०) पापी, दोषी, अन्यायी।

अपराधीन तत्० (गु०) स्वाधीन, जो परतन्त्र नहीं है।

अपराह्न तत्० (पु०) दिनका शेष भाग, तीसरा पहर।

अपरिगृहीता तत्० (स्त्री०) कुलस्त्री, विवाहिता स्त्री, जो परिगृहीत न हो।

अपरिग्रह तत्० (पु०) अप्रतिग्रह, अस्वीकार।

अपरिचय तत्० (गु०) अज्ञात, अजान।

अपरिचित तत्० (गु०) अज्ञात, अदृष्ट, जिसके साथ सम्भाषण न हुआ हो।

अपरिच्छद तत्० (गु०) हीनवस्त्र, मलिन वसन, अनुपयुक्त वेश।

अपरिणीत तत्० (पु०) अविवाहित, कुमार, क्वारा, —**ा** (स्त्री०) अविवाहिता, कन्या, अनूढ़ा।

अपरितुष्ट तत्० (गु०) असन्तुष्ट, निरानन्द, तृप्ति-रहित।

अपरिपक्व तत्० (गु०) अपक्व, परिपाक हीन, अपटु।

अपरिपाटी तत्० (स्त्री०) अनरीति, कुढङ्ग।

अपरिमित तत्० (गु०) परिमाण हीन, अधिक, प्रचुर।

अपरिम्लान तत्० (गु०) म्लानि रहित, खिला हुआ।

अपरिष्कार तत्० (पु०) मलीन, मैला कुचैला, अनिर्मल, अशुद्ध, अस्पष्ट।

अप्रिय तत्० (गु०) अनभीष्ट, (पु०) शत्रु।—वचन (पु०) निष्ठुर वाक्य, कुवाक्य।—वक्ता (पु०) निष्ठुर भाषी, उग्रवक्ता।

अप्रीति तत्० (स्त्री०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम, अरुचि, वैर।—कर (पु०) अरुचिकर, निठुर, कठोर।

अप्सरा तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्गवेश्या, तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा आदि। तद्० अपछरा।

अफराई तद्० (स्त्री०) अघाना, अफर्ना, परितृप्त।

अफरना तद्० (स्त्री०) अघाना, तृप्तहोना, भोजन जन्य सन्तुष्टि।

अफल तत्० (गु०) वृथा, निष्फल, फलरहित, वन्ध्या, भाऊ का वृक्ष।—ा (स्त्री०) आमलकी वृक्ष, घृतकुमारी, घीकुवार।

अफीम तद्० आफू, औषध विशेष, अहिफेन।

अफुल्ल तत्० (गु०) उदास, पुष्प रहित, बिना फूल, कली।

अफेण्डा तद्० (पु०) मनमौजी, आपमानी, मनस्वी।

अफेन तत्० (गु०) फेन रहित, भाग रहित, बिना फेन, कफ रहित।

अफैलावट तद्० (पु०) सङ्कीर्ण, विस्तार नहीं।

अब तद्० (क्रि० वि०) इस समय, अबही अभी, विशेष निश्चय।—तई (अ०) अबतक, अबतक, अबलौं।—तक (अ०) तुरन्त, अभी, मृतप्राय।—तें (अ०) अभीतें, आजतें, अभू।—तोडी (अ०) इस घड़ी तक, इस समय तक।

अबकर्तन तत्० (पु०) सूत्र यन्त्र, चरखा।

अब्ज तत्० (पु०) कमल, पद्म, शङ्ख, चक्र, धन्वन्तरी, वैद्य।

अबधूत तत्० (पु०) योगी, संन्यासी, पाप रहित, जीवन्मुक्त, महात्मा।

अबध्य तत्० (गु०) मारने के योग्य नहीं, अपराधी होने पर भी जिसे प्राणदण्ड नहीं दिया जा सके। ब्राह्मण, गुरु, स्नातक आदि अबध्य हैं।

अबन्धित तत्० (गु०) बन्धनरहित, ,स्वच्छन्द स्वेच्छाचारी।

अबनी तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, धरती।

अबल तत्० (पु०) निर्बल, दुबला, कृश, बल रहित।—ा (स्त्री०) बलहीना, नारी, स्त्री।

अबलोकन तत्० (पु०) निरीक्षण, देखना।

अबुद्धि तत्० (स्त्री०) बुद्धिहीन, निर्बोध, असमझ।

अबुध तत्० (गु०) अबूझ, मूर्ख, असमझ।

अबूझ तद्० (गु०) मूर्ख, असमझ, अनसमझ, अज्ञानी।

अबेर तद्० (स्त्री०) विलम्ब देरी, देर, कुसमय, असमय।

अबोध तत्० (पु०) अज्ञान, मूर्ख।

अबोल तद्० (गु)० चुपचाप, अवाक्, मौन।

अब्द तत्० (पु०) वर्ष, साल, संवत्सर।

अब्धि तत्० (पु०) समुद्र, सागर, अर्णव, सिन्धु।

अभक्त तत्० (पु०) शठ, भक्ति हीन।

अभय तत्० (पु०) निर्भय, निडर, त्रास रहित।—ा (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, हरीतकी विशेष।—दान (पु०) दुःख से उद्धार, शरण ग्रहण, "मा भैः" कह कर अपनाना।

अभरण तद्० (पु०) आभूषण, अलङ्कार, गहना।

अभरम तद्० (गु०) पतही, अमर्याद।

अभाग तद्० (पु०) विपत्ति, दुर्दशा, विपद।

अभागा तद्० गु०) मन्दभागी, भाग्यहीन।

अभाग्य तत्० (गु०) दुरभाग्य, दुरदृष्ट, मन्दभाग्य।

अभाजन तत्० (गु०) पात्ररहित, कुपात्र, अविश्वासी अपात्र, अयोग्य।

अभार तद्० (गु०) हलका, लघु, अगुरु।

अभाव तत्० (पु०) अविद्यमान, नास्ति, अनस्ता, ध्वंस।

अभावनीय तत्० (गु०) अचिन्तनीय, अतर्क्य।

अभि तत्० (उपसर्ग) चौफेरा, आगे, समन्तात्, उभयार्थ, वीप्सा इत्यम्भाव, धर्षण, अभिलाष, आभिमुख्य, चिन्ह, औत्सुक्य।

अभिक तत्० (पु०) कामुक, लम्पट, लुच्चा।

अभिख्या तत्० (स्त्री०) नाम, शोभा, उपाधि।

अभिगमन तत्० (पु०) निकटगमन, सहवासकरण।

अभिग्रह तत्० (पु०) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अपहार, लुण्ठन, चोरी, लड़ाई के लिये आह्वान, उत्साह बढ़ाने वाला, योधाओं का परस्पर कथन।

अभिघात तत्० (पु०) डण्डा आदि के द्वारा मारना, आघात, दाँत से काटना।

अभिचार तत्० (पु०) मारण मन्त्र विशेष, हिंसा-कर्म, मारण उच्चाटन आदि उपपातक विशेष। —ी (पु०) हिंसाजनक-कर्म-कर्ता, अनिष्ट-कारक।

अभिजन तत्० (पु०) वंश, गोष्ठी, परिवार, पालक, पोषी, रक्षक, पूर्वजों का निवासस्थान।

अभिजात तत्० (गु०) सद्वंशजात, कुलीन, सुन्दर, रूपवान्।

अभिजित तत्० (पु०) मुहूर्त विशेष, दिवस का अष्टम मुहूर्त, नक्षत्र विशेष, इसमें लगने वाले तीन नक्षत्र होते हैं।

अभिज्ञ तत्० (गु०) ज्ञाता, विज्ञ, पण्डित।—ता (स्त्री०) विज्ञता, पाण्डित्य, नैपुण्य।—न (पु०) सम्यक् स्मरणार्थ चिन्ह विशेष।

अभिधा तत्० (स्त्री०) नाम, संज्ञा शब्द की शक्ति विशेष, शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा शब्द अपने ठीक ठीक अर्थों का बोधन करते हैं।

अभिधान तत्० (पु०) नाम, संज्ञा, शब्दों के अर्थ बतलाने वाले ग्रन्थ, कोश।

अभिधेय तत्० (पु०) अभिधान, नाम। (गु०) अभिधागम्य, प्रतिपाद्य, अर्थ।

अभिनन्दन तत्० (पु०) बुद्धविशेष। (गु०) आल-न्दन, हर्षण।—पत्र सम्मान सूचक पत्र, एड्रेस।

अभिनव तत्० (गु०) नूतन, नवीन, नव्य।—गुप्त (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध अलङ्कारवेत्ता, इनका धार्मिक मत शैव था, इनके बनाये संस्कृत के ८ ग्रन्थ हैं, ये ९९३ ई० से १०१५ ई० के बीच में हुए थे।

अभिनय तत्० (पु०) शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य क्रिया, नर्तन, भाँड़, स्वाँग, नाटक का खेल।

अभिनिविष्ट तत्० (गु०) मनोयोगी, प्रणिहित, आविष्ट, अधिक लग जाना।

अभिनिवेश तत्० (पु०) मनोयोग, मनोनिवेश, प्रणिधान, प्रवेश, पैठना, विचार।

अभिन्न तत्० (गु०) अपृथक्, संयुक्त, मिलित, मिश्रित, मिला।

अभिप्राय तत्० (पु०) आशय, मनोरथ, तात्पर्य।

अभिप्रेत तत्० (गु०) अभिप्राय का विषय, वाञ्छित, अभीष्ट, ईप्सित।

अभिभव तत्० (पु०) पराजय, हार, पराभव, नीचे दिखाना।

अभिभावक तत्० (पु०) तत्त्वावधायक, रक्षक, सहा-यक, आश्रय।—ता या त्व (स्त्री०) तत्त्वावधा-यकता, सहायता।

अभिभूत तत्० (गु०) अज्ञान, अचैतन्य, विह्वल, पराभूत, पराजित।

अभिमत तत्० (गु०) सम्मत, इष्ट, अनुमत, मनो-नीत।

अभिमन्यु तत्० (पु०) अर्जुन का पुत्र और श्रीकृष्ण का भानजा, सुभद्रा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था। कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव सेना के सभी प्रधान प्रधान वीर इस षोड़शवर्षीय वीर बालक के पराक्रम से निरस्त हो चुके थे, तब कौरवदल के सात महा-रथियों ने अन्याय से इसका वध किया था। इसकी स्त्री का नाम उत्तरा था, विराटराज की यह कन्या थी। इसी अभिमन्यु-पत्नी उत्तरा के पुत्र महाराज परीक्षित थे। और अभिमन्यु के साथ पैशाचिक दारुण इस अत्याचार के कारण ही कौरव सेना का नाश निर्मूल हुआ है।

(२) काश्मीर के राजा, यह राजा खृष्टाब्द के दो हज़ार वर्ष पहिले काश्मीर का अधिपति था, इसके समय में काश्मीर राज्य में बौद्ध धर्म की अत्यन्त प्रबलता थी। काश्मीर राज्य में अभिमन्यु-पुर नामक एक नगर इस राजा ने अपने नाम से बसाया था।—(महाभारत)।

अभिमर्षण तत्० (पु०) मनन चिन्तन, पर-स्त्रीगमन।

अभिमान तत्० (पु०) अहङ्कार, मद, गर्व, आक्षेप। —नी (पु०) घमण्डी, अकड़बाज़, अहङ्कारी, अभिमानयुक्त, आक्षेपान्वित, अनादर से खिन्न। —जनक (गु०) अहङ्कारयुक्त, गर्वजनक।

अभिमुख तत्० (गु०) सम्मुख, समक्ष, आगे, सामने।

अभियोक्ता तत्० (गु०) अभियोगकर्त्ता, वादी, अर्थी।

अभियोग तत्० (पु०) अपराधादि योजन, आवेदन, किसी का अपराध धर्माधिकरण में उपस्थित करना।

अभिराम तत्० (गु०) सुन्दर, प्यारा, मनोहर, रमणीय।

अभिरुचि तत्० (स्त्री०) तुष्टि, भलाई, चाह, मन का अभिलाष, रसज्ञान, आस्वाद।

अभिरूप तत्० (गु०) योग्य, उपयुक्त। (पु०) विद्वान्, कामदेव, चन्द्रमा, शिव, विष्णु, सदृश।

अभिलषणीय तत्० (गु०) वाञ्छनीय, मनोहर, सुन्दर।

अभिलषित तत्० (गु०) इष्ट, वाञ्छित, इच्छित।

अभिलाष तत्० (पु०) आकाँक्षा, स्पृहा, कामना, आशा।—षी (पु०) अभिलाषयुक्त, सस्पृह, इच्छुक, वाञ्छान्वित।

अभिलाषुक तत्० (गु०) इच्छान्वित, सस्पृह।

अभिवद तत्० (पु०) दुर्वचन, गाली

अभिवादन तत्० (पु०) नमस्कार, वन्दना, पादग्रहण पूर्वक प्रणाम।—नीय (गु०) प्रणम्य, प्रणाम के योग्य।

अभिव्यक्त तत्० (गु०) प्रकाशित, विज्ञापित।—क्ति (स्त्री०) विज्ञापन, प्रकाश, व्यक्तकरण, घोषणा।

अभिशाप तत्० (पु०) शाप, बुरा मानना, दूषणवाक्य, क्रोध, अनिष्ट-प्रार्थना।

अभिषङ्ग तत्० (पु०) आलिङ्गन, सब प्रकार से सङ्ग, आक्रोश, पराभव।

अभिषव तत्० (पु०) यज्ञस्नान, मद्यसन्धान, चिरस्थापित मद्योत्पादक द्रव्य, सोमलतापान।

अभिषिक्त तत्० (गु०) कृताभिषेक, कर्म में नियुक्ति, पदस्थ, जिसका अभिषेक हुआ।

अभिषेक तत्० (पु०) मंत्र पूर्वक स्नान, कर्म में नियोग करना, पदस्थ करण, शान्ति स्नान, सिञ्चन।

अभिसम्पात तत्० (पु०) अभिशाप, संग्राम, क्रोध, मन्यु, रोष।

अभिसर तत्० (पु०) साथी, संगी, सहचर, अनुचर, सहाय, मित्र।

अभिसार तत्० (पु०) नायक अथवा नायिका का सङ्केत (पूर्व निर्दिष्ट) स्थान में गमन, बल, युद्ध, सहाय।

अभिसारिका तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष, नायक के सहवासार्थ सङ्केत स्थान में जाने वाली नायिका। यथा:—

दोहा

"जो पेरी मद मदन करि, आपहि पति पर जाइ।
वेष अङ्ग अभिसारिका, सजै समान बनाइ॥"
—कवि देवजी।

अभिसारिका दो प्रकार की होती है। एक कृष्णाभिसारिका, और दूसरी शुक्लाभिसारिका। इनके ये भेद वेष के अनुसार हैं अर्थात् काले वस्त्रवाली कृष्णा और श्वेत वस्त्रवाली शुक्ला। कृष्णपक्ष में अभिसार करने वाली कृष्णाभिसारिका, और शुक्लपक्ष में अभिसार करने वाली शुक्लाभिसारिका के नाम से परिचित होती है।

अभिहित तत्० (गु०) उक्त, कथित, व्यक्त, प्रकाशित।

अभी तद्० (अ०) इसी समय, शीघ्र, वेगी।

अभीत तत्० (गु०) निडर, निर्भय, साहसी।

अभीक्ष्ण तत्० (पु०) पुनः पुनः, बार बार, भूयो भूयः।

अभीप्सित तत्० (गु०) अभीष्ट, वाञ्छित, प्रिय, मनोभिलषित।

अभीरु तत्० (गु०) निर्दोष, निर्भय। (पु०) महादेव, भैरव, शतावरि।

अभीष्ट तत्० (गु०) इच्छित, वाञ्छित, अभिलषित।

अभूँ तद्० (अ०) अभी, अब, अब ही, आज।

अभूतपूर्व तत्० (पु०) अद्भुत, विलक्षण, आश्चर्य, जैसा कि न हुआ हो।

अभूतरिपु तत्० (पु०) अज्ञात शत्रु, शत्रु-हीन, रिपु-हीन, जिसका कोई बैरी न हो।

अभेद तत्० (गु०) भेद रहित, अविशेष, ऐक्य, अभेद, परस्पर।—य (गु०) अभेदनीय। (पु०) हीरा।

अभोजन तत्० (पु०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास, अनशन।

अभोजी तत्० (पु०) अखादक, अभोगी।

अभ्यङ्ग तत्० (पु०) आपाद-मस्तक-तैल-लेपन, तैलमर्द्दन।

अभ्यञ्जन तत्० (पु०) तैललेपन, तेल, उबटन।

अभ्यन्तर तत्० (पु०) अन्तराल, मध्य, बीच, अन्तर, भीतर।—वर्ती (पु०) मध्यवासी।

अभ्यर्थना तत्० (स्त्री०) आदर, सम्मान, सम्भाषण।

अभ्यागत तत्० (पु०) पाहुन, अतिथि।

अभ्यास तत्० (पु०) साधन, चिन्तन, शिक्षा, आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार।

अभ्युदय तत्० (पु०) ऐश्वर्य, वृद्धि।

अभ्र तत्० (पु०) आकाश, मेघ, बादल।

अभ्रक तत्० (पु०) अबरक, धातु विशेष, भोडल, भोडर।

अम् तत्० (अ०) शीघ्रता, अल्प। (पु०) आँव, रोग विशेष।

अमका-ढमका (दे० शा०) फलाना, अमुक, अज्ञात अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का बोधक।

अमङ्गल तत्० (पु०) अशुभ, अकल्याण, दुर्लक्षण।—जनक (गु०) अशुभ-जनक, दुर्लक्षण-युक्त।

अमङ्गल्य तत्० (गु०) अशुभ जनक, अनिष्ट सूचक।

अमचूर तद्० (पु०) आँम की फकिया, आम का चूर्ण, खटाई।

अमत तत्० (गु०) असम्मत, अनभिप्रेत। (गु०) रोग, मृत्यु, काल।

अमत्सर तत्० (पु०) द्वेषाभाव, मत्सर-रहित।

अमनोयोग तत्० (पु०) अनवधानता।

अमनोज्ञ तत्० (गु०) असुन्दर, कुरूप, घिनौना।

अमर तत्० (पु०) देवता, नित्य, चिरस्थायी, मरण-रहित, कुलिश वृक्ष, अस्थि संहारक वृक्ष, थापद, पारा।—ज (गु०) देवजात, देव से उत्पन्न, देव-प्रभव।—त्व (पु०) देवभाव, देवत्व, देव सायुज्य।—दारु (पु०) वृक्ष विशेष, देवदारु।—द्विज (पु०) देवल ब्राह्मण, पुजारी।—पति (पु०) इन्द्र, देवों का राजा।—पुर (पु०) देवों का नगर।—लोक (पु०) स्वर्ग, देवलोक।—सिंह (पु०) उज्जयिनी-पति। (पु०) विक्रमादित्य की सभा के नौरत्नों में से एक रत्न, अमर कोष नामक संस्कृत कोष इन्होंने बनाया था। यही एक ग्रन्थ इनकी कीर्ति को अमर रखने के लिये यथेष्ट साधन है। (२) प्रसिद्ध गोरखा सेना-पति, १८१४-१५ खृष्टाब्द में नैपाल के युद्ध में अँग्रेज़ सेनापति आक्टर लोनी को इन्होंने खूब छकाया था। जब विलासपुर के राजा ने अँग्रेज़ सेनापति की सहायता की, तब अमरसिंह नैपाल की राजधानी काठमाण्डू चले गये, और युद्ध का भी अन्त हुआ। (३) राजपूताना के अन्तर्गत मेवाड़ के राजपूत कुल गौरव प्रतापसिंह का पुत्र, यह बाल्यकाल ही से अपने पिता के समीप रहने के कारण उनके महनीय चरित्रों के अनुकरण करने में समर्थ हो सका था। यह अपनी युवावस्था में मेवाड़ का राजा हुआ। यह अपने पिता के समान तेजस्वी तथा न्यायी था, थोड़े ही समय में यह एक आदर्श राजा हो गया।

अमराई तद्० (स्त्री०) आम का वन, बाग़।

अमरावती तत्० (स्त्री०) इन्द्रपुरी, स्वर्ग, एक नगरी का नाम।

अमरु तत्० (पु०) एक राजा और कवि का नाम, कहते हैं—मण्डन मिश्र की स्त्री के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये शङ्कराचार्य जी इसी राजा के मृत शरीर में प्रविष्ट हुए थे, और "अमरुशतक," नाम का एक शृङ्गार रस का काव्य बनाया था।

अमरुत् तत्० (गु०) सुस्थिर, शान्त, अचञ्चल, निर्वात, (पु०) फल विशेष।

अमरेश तत्० (पु०) देवताओं का राजा इन्द्र।
अमर्यादा तत्० (स्त्री०) अनीति, असम्मान, मानहानि। तद्० अमर्याद (स्त्री०)।
अमर्ष तत्० (पु०) क्रोध, कोप, रोस, अक्षमा।
अमर्षण तत्० (गु०) क्रोधी, रागी, कोपान्वित।
अमल तत्० (पु०) निर्मल, राज्य, काम, प्रयोग, मादक वस्तु।
अमलतास तद्० (पु०) औषध विशेष।
अमात्य तत्० (पु०) प्रधान मन्त्री, दीवान, राजमन्त्री।
अमान तत्० (गु०) मान रहित, निरहङ्कार।
अमाना तद्० (क्रि०) समान भरना, खपना।
अमान्य तत्० (गु०) मान रहित, त्याज्य, अनादृत, अस्वीकार।
अमानुष तत्० (गु०) जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्य की शक्ति से बाहर।
अमाय तत्० (गु०) कपट-रहित, वास्तव, यथार्थ, माया-रहित।
अमावस तद्० (स्त्री०) तिथि विशेष, जिस तिथि में चन्द्रमा सूर्य एक ही राशि पर वर्त्तमान हैं, चान्द्रमास का अन्तिम दिन।
अमावस्या तत्०, **अमावास्या** तत्० (देखो अमावस)
अमिउ तद्० (पु०) अमृत, सुधा।
"कोन्हेसि अमिउ जिये जेहि पाई" —(पद्मावत)
अमिट तद्० (गु०) नित्य, दृढ़, अटल।
अमित तत्० (गु०) बहुत, अधिक, प्रचुर, असंख्यात।
अमित्र तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, अरि।—**भूत** (गु०) विपक्ष, वैरी, अहितकारी।
अमितौजा तत्० (पु०) सर्वशक्तिमान्।
अमिय तद्० (पु०) अमृत, सुधा, पीयूष।
अमी तद्० (स्त्री०) अमृत, सुधा, आसव। (तत्०) (गु०) [अम्+इन्] रोगी, रोगार्त, पीड़ित।
अमुक तत्० (गु०) वह, कोई, अमका ढमका, बुद्धिस्थ-व्यक्ति, सम्मुखागत।
अमुत्र तत्० (अ०) परकाल, परलोक।
अमूर्त तत्० (गु०) निराकार, मूर्त्तिहीन।—**f** (गु०) मूर्तिहीन, आकृति रहित।
अमूल तद्० (गु०) मूल रहित, निर्मूल, जड़शून्य।
अमूलक तत्० (गु०) मूल रहित, निर्मूल, अप्रामाणिक, मिथ्या।
अमूल्य तत्० (पु०) उत्तम, बढ़िया, श्रेष्ठ।
अमृत तत्० (पु०) समुद्रोत्पन्न द्रव्यविशेष, पीयूष, सुधा, जल, घृत, मुक्ति, दूध, औषध, विष, यज्ञशेष द्रव्य, अयाचित वस्तु, वत्सनाभ, भक्षणीय द्रव्य, सुस्वाद द्रव्य, पारद, अन्नधन, स्वर्ण, हृद्य। (गु०) मरण रहित (पु०) धन्वन्तरि, वराही कन्द, धनमूँग, देवता, सुन्दर।—**कर** (पु०) चन्द्रमा, निशाकर।—**कुण्ड** (पु०) अमृत का पात्र।—**जटा** (स्त्री०) जटामाँसी।—**तरङ्गिणी** (स्त्री०) ज्योत्स्ना, प्रकाशमयी रात्रि।—**दीधिति** (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, शशधर।—**फल** (पु०) पटोल, परवर।—**फला** (स्त्री०) दाख, अंगूर, आमलकी।—**वल्ली** (स्त्री०) गुड़ूची-लता।—**बिन्दु** (पु०) एक उपनिषद् का नाम।—**रस** (पु०) सुधा, अमृत।—**रसा** (स्त्री०) अंगूर।—**सम्भवा** (स्त्री०) गुड़ूच।—**स्रवा** (स्त्री०) कदली वृक्ष, लता विशेष।
अमृता तत्० (स्त्री०) गुडूची, दूर्वा, तुलसी, मदिरा, आमलकी, हरीतकी, पिप्पली।
अमृती तद्० (स्त्री०) कुटिया, मिठाई विशेष।
अमृष्य तत्० (गु०) असह्य, असहनीय।
अमेधा तत्० (गु०) मूर्ख, मूढ़, अबोध।
अमेध्य तत्० (गु०) अपवित्र, अशुद्ध, दुष्ट।
अमोघ तत्० (गु०) अव्यर्थ, सफल।—**वीर्य** (पु०) अव्यर्थ वीर्य, अखण्ड तेज, अव्यर्थ प्रताप।
अम्बक (पु०) चक्षु, नयन, नेत्र, ताँबा।
अम्वत तद्० (पु०) खट्टा, अम्ल, चूक, खटाई।
अम्बर तत्० (पु०) आकाश, वस्त्र, कार्पास, स्वनामख्यात, सुगन्धद्रव्य विशेष।
अम्बरीप तत्० (पु०) भर्जनपात्र, युद्ध, विष्णु, शिव, शावक, भास्कर, सूर्यवंशीय राजा विशेष। अयोध्यानगरी इनकी राजधानी थी, इनके पिता का नाम नाभाग था, इस अप्रतिम बलशाली राजा ने दसलाख राजाओं के साथ एक समय युद्ध किया था, सम्पूर्ण पृथिवी पर अपना

राज्य स्थापित करके यथाविधि कई सौ यज्ञ इन्होंने सम्पादित किये थे, इसीके प्रताप से इन्होंने दुर्लभ स्वर्ग प्राप्त किया था। नरक भेद, आम्रातक वृक्ष, अनुताप, पश्चात्ताप।

अम्चल तद्० (स्त्री०) मादक वस्तु, खट्टारस।

अम्बष्ठ तत्० (पु०) [अम्ब+स्था+ड] जाति विशेष, निषाद पिता के औरस से शूद्रा स्त्री के गर्भ में उत्पन्न, इस जाति को बङ्गाल में वैद्य जाति कहते हैं। मुनि विशेष, देश विशेष, हस्तिपक, महावत।

अम्बा तत्० (स्त्री०) [अम्बा+आ] माता, जननी, दुर्गा, काशी राज की ज्येष्ठा कन्या, इसीने दूसरे जन्म में शिखण्डी रूप धारण करके भीष्म पितामह को मारा था।

अम्बारी तद्० (स्त्री०) हौदा, चन्दवा।

अम्बालिका तत्० (स्त्री०) [अम्बाला+इक्+आ] मा, माता, जननी, काशीराज की छोटी लड़की, प्रसिद्ध राजापाण्डु के पिता विचित्र वीर्य से यह व्याही गयी थी, पाण्डु के मरने के अनन्तर यह अपनी सास सत्यवती के साथ वन चली गई थी।

अम्बिका तत्० (स्त्री०) [अम्बा+इक्+आ] दुर्गा भगवती, माता, काशीराज की मध्यमा कन्या, यह विचित्र वीर्य से व्याही गई थी, इसके पुत्र का नाम धृतराष्ट्र था, यह पाण्डु के मरने के बाद सत्यवती के साथ वन चली गई थी, और वहीं उसने तपस्या के द्वारा इस शरीर को छोड़ा।

अम्बिया तद्० (पु०) टीकोरा, छोटा आम।

अम्बु तत्० (पु०) [अद्+उ] जल, सलिल, पानीय, पानी, नीर।—कण (पु०) ओस, शीत, तुषार।—ज (पु०) कमल, पद्म, वज्र।—जन्म (पु०) पद्म, कमल, पङ्कज।—द (पु०) मेघ, घटा, वर्षा, वारिद।—धर (पु०) वारिद, मेघ, वारिधर।—धि (पु०) समुद्र, सागर, सिन्धु, जलधि।—निधि (पु०) जलधि, समुद्र।—वाह (पु०) मेघ, वारिद, बादल।

अम्भस् तत्० (पु०) अम्बु, जल, पानी।—ोज (पु०) [अम्भस+जान+ड] पद्म, कमल, अम्बुज, चन्द्र, सारसपक्षी।—ोद (पु०) जलद, अभ्र, मेघ।—ोधर (पु०) जलधर, मेघ, समुद्र।—ोधि (पु०) समुद्र, सागर।—ोनिधि (पु०) समुद्र, सागर, जलधि।

अम्मा तद्० (स्त्री०) माता, मा, महतारी।

आम्रा तद्० (पु०) आँवला, फल विशेष, धात्री-फल।

अम्ल तत्० (स्त्री०) खट्टा, चूक, अम्बल।

अम्लपित्त तत्० (पु०) रोग विशेष।

अम्लान तत्० (गु०) म्लान रहित, हृष्ट, ताजा।—ता (स्त्री०) हृष्टभाव, प्रसन्नता।

अम्ली तद्० (स्त्री०) अमिली, तितिड़ी, इमली।

अयःपिण्ड तत्० (पु०) [अयस्+पिण्ड] लौह पिण्ड, लोहे का गोला।

अयत्न तत्० (पु०) औदास्य, अयतन, असत्कार।

अयथार्थ तत्० (गु०) मिथ्या, अन्याय, अन्धेर।

अयन तत्० (पु०) वर्ष का आधा, सूर्य का उत्तर ओर दक्षिण दिशा का गमन, गमन, आश्रय, मार्ग।

अयश तत्० (पु०) अकीर्ति, कलङ्क, निन्दा, अख्याति।—कर (गु०) [अ+यशस्+कृ+अण्] दुर्नाम जनक, अख्याति कर।—वी (पु०) [अ+यशस्+विन्] अख्याति युक्त, प्रतिष्ठा रहित।

अयस्कान्त तत्० (पु०) [अयस्+कान्त] मणि विशेष, चुम्बक पत्थर।

अया.चक तत्० (गु०) याञ्चा रहित, अभिक्षुक।

अयाचित तत्० (गु०) याञ्चा बिना प्राप्त, अप्रार्थित।—व्रत (गु०) बिना माँगी प्राप्त हुए पदार्थों से जीविका निर्वाह करने वाला।

अयं तत्० (पु०) यह, ऐसा, इसका प्रयोग रामायण में आया है।

अयान तद्० (गु०) लड़काई, मूर्खता, अनजानपन।—प (गु०) लड़कपन, मूर्खता, बेसमझी।

अयाना तद्० (गु०) भोला, अबूझ, मूर्ख।

अयुक्त तत्० (गु०) अमिश्रित, अनुचित, असङ्गत।

अयुत तत्० (गु०) अयुक्त, अमिलित, अमिश्रित। (पु०) दश सहस्र संख्या, दश हजार।

अये तत्० (अ०) सम्बोधनार्थ, विषादार्थ, कोपार्थ।

अयोग तत्० (पु०) विश्लेष, विच्छेद, अनैक्य।

अयोगव तत्० (पु०) शूद्र के औरस से वैश्य कन्या के गर्भ से जात सन्तान, जाति विशेष।

अयोघन तत्० (पु०) [अयस्+घन] एकत्रीभूत लौह पुञ्ज, निहाली, हथौड़ा, निहाई।

अयोध्या तत्० (स्त्री०) [अ+युध्+आ] कोशला, अवधपुरी, सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी। —नाथ (पु०) अयोध्याधिपति। (२) पण्डित केदारनाथ के पुत्र, ये काश्मीरी ब्राह्मण थे, इनके पिता एक धनाढ्य वाणिज्य व्यवसायी थे। १८४० खृष्टाब्द में पण्डित अयोध्यानाथ का आगरे में जन्म हुआ था। फारसी, अरबी, और अंग्रेज़ी के यह विद्वान थे। आगरे में उनकी वकालत खूब चली थी, जब सदर अदालत आगरे से इलाहाबाद आयी तभी पं० अयोध्यानाथ भी इलाहाबाद आये। बहुत से लोकोपकारी कार्य इन्होंने किये थे। इन्होंने द्रव्योपार्जन भी खूब किया और उसका सदुपयोग भी, युक्तप्रदेश के सभी लोकोपकारी कार्यों में यह शामिल होते थे, अतएव ये वहाँ के नेता समझे जाते थे, "इण्डियन हेरल्ड" नामक दैनिक पत्र का कुछ दिन तक सम्पादन करते रहे। पुनः उसके बन्द होने पर "इण्डियन यूनियन" नाम की पत्रिका निकालते थे। इलाहाबाद म्यूनिसपिल्टी के कमिश्नर और इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के फेलो थे, युक्तप्रदेशवासी हिन्दुस्तानियों में सर्वप्रथम छोटे लाट के कौंसिल में यही बैठे थे।

अयोनि तत्० (गु०) योनिभिन्न, अनुत्पन्न। —ज (गु०) जीव विशेष, योनिजात भिन्न, वृक्ष आदि।

अरई तद्० (पु०) मथानी, मई।

अरगजा तद्० (पु०) तत्० अरगजा, एक सुगन्धित द्रव्य विशेष, प्रसिद्ध।

अरझना तद्० (क्रि०) उलझना, फँसना, बझना।

अरणा तद्० (स्त्री०) जङ्गली भैंस।

अरणि तत्० (स्त्री०) काष्ट विशेष, जिसे घिस कर आग निकालते हैं। अग्नि धारक काष्ठ विशेष।

अरण्ड तत्० (पु०) रेंडी, अण्डी वृक्ष।

अरण्य तत्० (पु०) वन, कानन, विपिन, जङ्गल। —वासी (पु०) वनस्थ, वनवासी, तपस्वी, मुनि।

अरबराना तद्० (क्रि०) हड़बड़ाना, घबड़ाना।

अरविन्द तत्० (पु०) कमल, उत्पल, पङ्कज।

अरवी तद्० (स्त्री०) घुइयाँ, कच्चु, वन्डा।

अरसट्टा तद्० (पु०) आँकाव, निरख, परख।

अरसिक तत्० (गु०) अरसज्ञ, अविदग्ध।

अरहट तद्० (पु०) तत्० अरघट्ट, रेंटा, पानी का चरखा, पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र।

अरहर तद्० (स्त्री०) दाल, अन्नविशेष, तूर।

अराजक तत्० (गु०) [अ+राज+वुञ्] राजशून्य देश।

अराति तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, वैरी।

अराधना तत्० (क्रि०) पूजना, सेवा करना, मन्त्र जपना।

अरारा तद्० (पु०) ददोड़ा, दरदरा।

अरि तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, रिपु। —मण्डल (पु०) शत्रु समूह, शत्रु राज्य। —षड्वर्ग (पु०) छ शत्रुओं का समुदाय, छ शत्रु ये हैं—काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर।

अरिन्दम तत्० (गु०) [अरि+दम+अल्] शत्रुजयी, योधा, बली, शत्रुओं को दमन करने वाला।

अरिष्ट तत्० (पु०) सूतिकागृह, तक्र, विपाक, दुःख, मरण चिन्ह, उत्पात, उपद्रव, वृषभासुर, इसी असुर को कंस ने श्रीकृष्णचन्द्र जी को मारने के लिये ब्रज में भेजा था। इसका विशाल शरीर तथा भयङ्कर शब्द सुनकर ब्रजवासी भयभीत हो गये। भगवान् कृष्ण ने इसका अन्तिम सत्कार किया।

अरी तद्० स्त्री का सम्बोधन।

अरु तद्० (अ०) फिर, पुनः, और, भी।

अरुई तद्० (स्त्री०) गर्भवती स्त्री का चिन्ह।

अरुचि तत्० (स्त्री०) रोगविशेष, भोजन के प्रति अभिलाषाभाव, अनिच्छा, वितृष्णा, अश्रद्धा, जी मचलाना।

अरुझाना तद्० (क्रि०) फासना, फसाना, उलझाना।

अरुण तत्० (पु०) अर्क वृक्ष, सूर्य, अव्यक्त राग, ईषद्रक्त वर्ण, सन्ध्या राग, शब्द रहित, कुष्ठभेद, सूर्य के सारथि का नाम, यह गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता थे, महर्षि कश्यप के औरस तथा विनता के गर्भ

से इनकी उत्पत्ति हुई थी, इनके पैर नहीं हैं, क्योंकि जब इनका शरीर गठित नहीं हुआ था, तभी इनकी माता विनता ने अण्डे फोड़ दिये। इनकी स्त्री का नाम श्येनी था, सम्पाति और जटायु इनके दो पुत्र थे।—उदय (पु०) प्रातःकाल, विहान, प्रभात।—कमल (पु०) रक्त कमल।—लोचन (पु०) लालनेत्र, कपोत, कबूतर, कोकिल।—सारथि (पु०) सूर्य, भानु, दिवाकर।

अरुणाई तद्० (स्त्री०) भोर, लाल रङ्ग।

अरुन्तुद तत्० (पु०) [अरु+तुद+ख] मर्मस्पृक्, मर्म पीड़क, पीड़ाकारी, नाशक, अवश्य।

अरुन्धती तत्० (स्त्री०) वसिष्ठ मुनि की पत्नी, अति सूक्ष्म नक्षत्र विशेष, कर्दम मुनि की कन्या, वसिष्ठ के समान इनको भी नक्षत्र मण्डल में स्थान मिला है, कहते हैं, मरने के छ महीने पहले यह तारा नहीं दीखता।

अरूप तत्० (पु०) कुरूप, कुत्सित रूप, कुश्री।

अरे तद्० (अ०) नीच संबोधन, सक्रोध आह्वान।

अरेब तद्० (पु०) पाप, अपराध, दोष।

अरोग तत्० (पु०) रोग रहित, भला, चङ्गा।

अरोचक तत्० (पु०) रोग विशेष, अरुचि रोग।

अर्क तत्० (पु०) सूर्य, आदित्य, इन्द्र, ताम्र, स्फटिक, पण्डित, ज्येष्ठ भ्राता, रविवार, आकवृक्ष।—तनय (पु०) कर्णराज, सावर्णि, मनु, शनि, यम।—घृत (पु०) आरोग्य, सप्तमी का व्रत, सूर्य के जल ग्रहण के समान राजाओं का प्रजा के निकट कर ग्रहण।

अर्गट तद्० (स्त्री०) सुर्त, सावधानता।

अर्गनी तद्० (पु०) कपड़ा फैलाने की तानी हुई रस्सी।

अर्गजा तद्० (देखो अरगजा)

अर्गल तत्० (पु०) खील, आगल, हुड़का, किवाड़ बन्द करने की लकड़ी।—ा (स्त्री०) खील, हुड़का, दुर्गा सप्तशती के पाठ के पहले पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र।

अर्घ तत्० (पु०) पूजा का द्रव्य, पूजा का उपहार, पूजा में जल देना, मोल।

अर्घ्य तत्० (पु०) दर्शनी, भेंट, उपहार, उत्तम गृह में आये हुए को जलादिदान।

अर्घा तद्० (स्त्री०) अर्घ देने का पात्र, तर्पण का पात्र विशेष, जलहरी, जिसमें शिवलिङ्ग रहता है।

अर्चक तत्० (पु०) पूजक, याजक, अर्चनाकारी।

अर्चा या अर्चना तत्० (स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना, प्रतिमा, देवमूर्ति।

अर्चिः तत्० (स्त्री०) अग्नि शिखा, चमक, आँच ज्योति।

अर्चित तत्० (पु०) पूजित, आराधित।

अर्चिष्मान् तत्० (पु०) [अर्चिस्+मत्] अग्नि, सूर्य (पु०) दीप्तिमान, देदीप्यमान।

अर्च्य तत्० (पु०) पूजनीय, पूज्य।

अर्जक तत्० (पु०) उपार्ज्जनकर्ता, अर्जयिता, कमाने वाला।

अर्जन तत्० (पु०) उपार्जन कमाई, प्राप्ति, लाभ, प्रतिपत्ति, सञ्चय करण, लाभ करण।

अर्जित तत्० (पु०) अर्जित किया हुआ, सञ्चित, लब्ध।

अर्जुन तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, तीसरा पाण्डव, देवराज इन्द्र के औरस तथा कुन्ती के गर्भ से इनका जन्म हुआ था, यह पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र थे, उनदिनों इनके समान धनुर्विद्या विशारद दूसरा नहीं था, साक्षात् भगवान् इनके सारथी थे, महादेव की आराधन करने से इन्हें पाशुपतास्त्र प्राप्त हुआ था, अस्त्रविद्या सीखने के लिये यह स्वर्ग में इन्द्र के निकट गये थे, अपना मनोरथ भङ्ग होने के कारण उर्वशी ने इन्हें नपुंसक होजाने का शाप दिया था, जिसका उपयोग अज्ञात वास के समय विराट राजधानी में इन्होंने किया था, अर्जुन की तीन स्त्रियाँ थीं, द्रौपदी, सुभद्रा, और चित्राङ्गदा, इनके अतिरिक्त कौरव्य नाग की कन्या उलूपी को भी इन्होंने ब्याहा था।

अर्णव तत्० (पु०) समुद्र, सागर, अब्धि।—पोत (पु०) जहाज, बृहत् नौका, समुद्रयान।—यान (पु०) जहाज।

अर्थ तत्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य, धन, शब्द का बोध्य।—ज्ञ (गु०) भावज्ञ, मर्मज्ञ।—ज्ञान (पु०) तात्पर्य, बोध।—तः (अ०) फलतः अर्थात् वस्तुतः।—दूषण (पु०) अपरिमित व्यय।—नाश (पु०) धननाश, निराश।—पति (पु०) राजा कुवेर, अतिधनी।—पर (गु०) कृपण, व्यय, शङ्कित।—प्रयोग (पु०) वृद्धि निमित्त धन दान।—प्राप्ति (स्त्री०) धनलाभ, लभ्य।—वत्व (पु०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता।—वाद (पु०) काल्पनिक, फलश्रुति, स्तुति, प्रशंसा, परोक्षक वाक्य।—विज्ञान (पु०) शब्दार्थज्ञान।—वृद्धि (स्त्री०) धन वर्द्धन।—शाली (पु०) धनशाली, धनवान्।—शास्त्र (पु०) नीति शास्त्र, दण्ड, नीति, धन उपार्जक, शास्त्र।

अर्थात् तत्० (अ०) वस्तुतः, अर्थतः, फलतः।

अर्थान्तर तत्० (पु०) अन्यार्थ, दूसरा अर्थ।—न्यास (पु०) अर्थालङ्कार विशेष, यथा—

"दृढ़ सामान्यते विशेष होय,
भूषन अर्थान्तर न्यास सोय"

अर्थी तत्० (पु०) धनी, याचक, वादी, मुरदे की खाट, रथी।

अर्दावा तद्० (पु०) मोटा आटा, दलिया।

अर्दित तत्० (गु०) [अर्द+क्त] पीड़ित, यन्त्रणा-युक्त, हिंसित, याचित, गत।

अर्द्ध तत्० (गु०) तुल्य विभाग, सम विभाग, आधा मध्य।—चन्द्र (पु०) चन्द्रखण्ड, अर्द्धेन्दु, गलहस्त, गलहस्त, मयूर पुच्छस्थ चन्द्रमा।—नारीश (पु०) शिव, महादेव, हरगौरि, मूर्ति विशेष।—निमेष (पु०) आधा क्षण।—रथ (पु०) एक रथी से न्यून योद्धा, अर्द्धरथी।—रात्र (पु०) महानिशा, रात्रि का अर्द्धभाग, आधीरात।—ऽश (पु०) अर्द्धभाग।—ङ्ग (पु०) स्त्री, कलत्र,—भार्या, शांताङ्ग, रोग विशेष, पक्षाघात।

अर्पण तत्० (पु०) दान, समर्पण, भेंट।

अर्ब तद्० (पु०) दशकोटि, संख्या विशेष।—खर्ब असंख्यात्।

अर्वाक् तत्० (गु०) प्राक्, पूर्व, आदि, अग्र, अवर, निकट पश्चात्।

अर्वाचीन तत्० (गु०) नूतन, अज्ञान, विरुद्ध।

अर्बुद तत्० (पु०) दश करोड़ संख्या विशेष, रोग विशेष, पर्वत विशेष, आबू पर्वत।

अर्भक तत्० (पु०) बालक, शिशु, शावक, मूर्ख, कृश कुशतृण, स्वल्प, सदृश।

अर्यमा तत्० (पु०) आदित्य, सूर्य, अर्कवृक्ष, नित्य, पितर विशेष।

अर्रारा तद्० (पु०) एकही समय गिरना, अकस्मात् गिरना।

अर्राना तद्० (क्रि०) एक बेर आ पड़ना।

अर्श तत्० (पु०) पीड़ा, बवासीर, रोग विशेष।

अर्शपर्श तद्० (पु०) छुआ छूत, अशुद्ध।

अर्ह तत्० (पु०) योग्य, उत्तम पात्र, श्रेष्ठ, उपयुक्त।

अर्हन्त तद्० (पु०) जैन विशेष, जैनियों के एक तीर्थ-ङ्कर का नाम।

अल तत्० (अ०) भूषण, पर्याप्ति, वारण, निरर्थक, वृथा, शक्ति, निरर्थक।

अलक तत्० (पु०) घूंघर, जुल्फिया, केश, घूघराले बाल।

अलका तत्० (स्त्री०) कुवेरपुरी।—धिप (पु०) कुवेर, धनेश्वर।

अलकावली तत्० (स्त्री०) वेणी, घूंघराले बाल।

अलक्षण तत्० (पु०) बुरे चिन्ह, कुलक्षण।

अलख तद्० (गु०) अगोचर, अनदेखा।

अलग तद्० (अ०) भिन्न, न्यारा, पृथक्।

अलगनी तद्० (स्त्री०) (देखो अर्गनी)

अलङ्कार तत्० (पु०) भूषण, आभरण।—हीन (गु०) भूषण रहित, अशोभित।

अलङ्कृत तत्० (गु०) भूषित, शोभित, सजाया।

अलङ्ग तद्० (पु०) पार, ओर, छोर, एक तरफ।

अलडबलड तद्० (स्त्री०) गड़, बकझक, निर्बुद्धि, अव्यवस्थित।

अलतनी तद्० (स्त्री०) हाथी का पागडोर।

अलता तद्० (पु०) आलता, लाख का रंग।

अलबेला तद्० (पु०) छैला निराला, छैल छबीला।

अलम् तत्० (अ०) पूर्णता, सामर्थ्य, निषेध, निर-र्थक, बहुत, बस, समूह, भीड़।

अलस तत्० (पु०) आलसी, मन्द, ढीला, आलस्य-युक्त, कर्मों में अनुत्साही।—सा (स्त्री०) आलस्य, शैथिल्य।

अलसाना (क्रि०) ऊँघना, झूमना, हिलना।

अलसी तद्० (स्त्री०) तीसी, मसीना।

अलान तत्० (पु०) हस्तिबन्धन, हाथीबाँधने की रस्सी, सिक्कड़।

अलाप तद्० (पु०) आलाप, स्वर, राग।

अलाव तद्० धूनी, जखीरा।

अलि तत्० (पु०) भँवरा, भ्रमर, मदिरा, सखी।—नि (स्त्री०) भ्रमरी।

अलीक तत्० (गु०) झूठ, मिथ्या, असार।

अलीन तत्० (गु०) अयोग्य, अमनोयोगी।

अलेख तत्० (पु०) लिखने के अयोग्य।

अलेक-पलवा (पु०) अलीक प्रलाप, झूठ बोलना, मनमाना, बकवाद।

अलैया-बलैया तत्० (स्त्री०) निछावर, खेल।

अलोकन तत्० (पु०) गुप्त होना, अदृश्यता, अम्पत होना।

अलोणा तद्० (गु०) अलुना, बिना नोन, स्वाद-रहित।

अलोप तद्० (गु०) छिपा, बिगाड़, प्रकट।

अलोल तत्० (स्त्री०) चञ्चल नहीं, अटल, खेल कूद।

अलौकिक तत्० (गु०) अनोखा, अद्भुत, सर्वसुन्दर, सर्वश्रेष्ठ।

अल्प तत्० (गु०) थोड़ा, कुछ, छोटा, किञ्चित्, लघु।—बुद्धि (पु०) मन्द बुद्धि असमझ।—ायु (गु०) अल्पजीवी, शीघ्र मरने वाला।—ाहार (पु०) थोड़ा खाना, अल्प आहार।

अल्हड़ तद्० (गु०) अनाड़ी, अनसीखा, अनुभव-रहित।

अव तत्० (उप०) विशेष, निश्चय, अप्राकल्य, अनादर, आलम्बन, विज्ञान, व्यापन, शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन, यह जिस शब्द के पहले आता है उस शब्द का अर्थ कभी प्रकरण के अनुसार, भेद, व्यापकता, अभाव और अनादर होता है।

अवकथन तत्० (पु०) [अव + कथ् + अनट्] स्तुति, उपासना, प्रसादकवाक्य।

अवकर्तन तत्० (पु०) [अव + कृत + अनट्] सूत बनाने का यन्त्र, चरखा।

अवकर्षण तत्० (पु०) [अव + कृष् + अनट्] उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना।

अवकाश तत्० (पु०) [अव + काश + अल्] अवसर, समय, विश्रामकाल, सुखीहता, छुट्टी का समय।

अवकीर्ण तत्० (गु०) [अव + कृ + क्त] विक्षिप्त, अनादृत, इधर उधर फैलाया हुआ, बिखेरा गया।

अवकीर्णी तत्० (गु०) [अव + कृ + क्त + इन्,] क्षत-व्रत, नियमभ्रष्ट व्रत, निषिद्ध वस्तुओं के संसर्ग से जिसका व्रत भङ्ग हो गया हो, अयोग्य वस्तुसेवी मनुष्य।

अवकुञ्चन तत्० (पु०) [अव + कुच् + अनट्] वक्री-करण, टेढ़ा करना, मोड़ना।

अवकुण्ठन तत्० (पु०) [अव + कुठ + अनट्] साहस परित्याग, भीरु होना, असाहसी होना।

अवकुण्ठित तत्० (गु०) [अव + कुठ + इत] असाहसी, भीरु।

अवक्तव्य तत्० (गु०) [अ + वच् + तव्य] अकथ्य, कथन के अयोग्य।

अवकेशी तत्० (गु०) बाँझ, बन्ध्या, निष्पुत्र, पुत्र-हीन, सन्तान रहित।

अवक्रन्दन तत्० (पु०) [अव + क्रन्द + अनट्] खूब ज़ोर से क्रन्दन, चिल्ला चिल्ला कर रोना।

अवक्रुष्ट तत्० (गु०) [अव + क्रुश + क्त,] भर्त्सित, निन्दित, मन्दध्वनित, कुशब्द युक्त, गाली दिया हुआ।

अवखण्डन तत्० (पु०) [अव + खड + अनट्] खनन, खोदना।

अवगत तत्० (गु०) [अव + गम् + क्त] ज्ञात, परि-चित, विदित।

अवगति तत्० (स्त्री०) [अव + गम् + क्ति] ज्ञान बोध, विज्ञता, गमन।

अवगाढ़ तत्० (गु०) [अव + गाह + क्त,] निमज्जित, कृतस्नान।

अवगाहन तत्० (पु०) [अव+गाह+अनट्] स्नान-करण, निमज्जन, डुबकी, गोता, अथाह, अति गहरा, जिसका नीचे का तल मालूम न हो सके, अनन्त।

अवगीत तत्० (पु०) निन्दा, दोषदुष्ट, अति निन्दित, विशेष लाञ्छित।

अवगुण तद्० (पु०) अवगुन, दोष, खोट, औगुण, निन्दित गुण, दुर्गुण।

अवगूहन तत्० (पु०) [अव+गूह+अनट्] आलिङ्गन, आश्लेष, प्रेम से परस्पर अङ्ग संस्पर्श।

अवग्रह तत्० (पु०) अनावृष्टि, बहुकाल अवर्षण, ग्रहण, अपहरण, प्रतिबन्धक, हाथी का मस्तक, हाथियों का झुण्ड, स्वभाव, ज्ञानविशेष, शाप।

अवघट तद्० औघट (गु०) कुघाट, अड़बड़, ऊँचा खाला, टूटा फूटा।

अवघात तत्० (पु०) [अव+हन्+घञ्] अपघात अपमृत्यु।

अवचर तद्० औचर (गु०) एक दृष्टि, औचक्, अचान-चक, एकबारगी, चपकुलश।

अवचेष्टा तत्० (स्त्री०) [अव+चेष्टा] मन्दचेष्टा, अनाड़ीपना।

अवच्छिन्न तत्० (गु०) सीमाबद्ध, अवधि सहित, युक्त।

अवज्ञा तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान, उपेक्षा, अमान्यकरण, अवहेला।

अवज्ञात तत्० (गु०) उपेक्षित, अनादृत, अपमानित।

अँवट तद्० (अ०) औटा कर, खौलाकर, गर्त, गह्वर, छिद्र, नटवृत्ति से जीवन करने वाला।

अवडेरि तद्० (अ०) बहकाय, धोखा देकर, यथा चौपाई "प्रभु कहे शिव सती बिवाही।
पुनि अवडेरि मराइनि ताही"॥—रामायण।

अवढर तद्० (गु०) नीच पर भी ढलने वा दया करने वाला, बिना विचारे दया करने वाला।

अवतंस तत्० (पु०) कर्णभूषण, कर्णालङ्कार, चूड़ा-मणि, मुकुट।

अवतरण तत्० (पु०) [अव+तृ+अनट्] नमना अवरोहण, अवतार, उतरना, भाषान्तर, अनुवाद करना (स्त्री०) अवतरणिका, आभास, भूमिका, वक्तव्य विषय की सूचना।

अवतरना (क्रि०) नीचे उतरना, प्रकट होना, प्रकाश पाना।

अवतार तत्० (पु०) [अव+तृ+घञ्] देहान्तर धारण, मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना। भगवान् का लीलार्थ प्राकट्य। भगवान् के चौबीस अवतार हैं, जिनमें प्रधान दश गिने जाते हैं। दश अवतार ये हैं। मत्स्य, कच्छप, वाराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, बौद्ध और कल्की।

अवतीर्ण तत्० (गु०) [अव+तृ+क्त] अवरूढ़, आविर्भूत, उपस्थित, उत्तीर्ण, जन्मा हुआ, उत्पन्न, अवतार लिया हुआ, अवतीर्न।

अवदात तत्० (गु०) [अव+दो+क्त] शुभ्र, श्वेत, गौर, स्वच्छ।

अवदान तत्० (पु०) [अव+दा+अनट्] त्याग, उत्सर्ग, निवेदन, कुत्सित दान, वध, मार डालना, पराक्रम उल्लङ्घन।

अवदीच तद्० (पु० गुजराती ब्राह्मणों की एक शाखा विशेष, उत्तर भारत के रहने वाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे थे औदीच्य या अवदीच कहे जाते हैं।

अवद्ध तत्० (गु०) [अ+वध+क्त] बन्धन शून्य, अनियन्त्रित।—मुख (गु०) अप्रियवादी, दुर्मुख, मुखर।

अवद्य तत्० (गु०) [अ+वद+य] अधम, निन्द-नीय, अकथ्य, अनिष्ट।

अवद्योत तत्० (गु०) [अव+द्युत्+घञ्] ईषदुज्वल, किञ्चिद्दीप्त, अल्प प्रकाश, संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थविशेष।

अवध तद्० (स्त्री०) वचन, सीमा, सीव, समय, अयोध्यापुरी, अवध प्रदेश।

अवधान तत्० (पु०) [अव+धा+अनट्] मनोयोग, मनःसंयोजन, चौकसाई, सावधानी।

अवधारण तत्० (पु०) [अव+धृ+णिच्+अनट्] निश्चय, निर्णय, स्थिर करना।

अवधारी तत्० (क्रि० वि०) निश्चय किया गया, सोचा गया।

अवधि तत्० (पु०) [अव+धा+कि] पर्यन्त, सीमा, छेद, से, तक, लौं।

अवधीर्य तत्० (अ०) [अव+धृ+ल्यप्] विचार कर, सोच कर, अपमानित कर।

अवधूत तत्० [अव+धू+क्त] कम्पित, कम्पायमान, परिवर्जित, परिष्कृत। (पु०) उदासीन, योगी, संन्यासी, गुरू दत्तात्रेय के समान साधु विशेष, वर्ण और आश्रमोचित्त धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को देखने वाले योगी अवधूत कहे जाते हैं। (स्त्री०) अवधूतानी।

अवध्य तत्० (गु०) [अ+वध्+य] वध के अयोग्य, जिसको प्राणदण्ड नहीं दिया जासके।

अवनत तत्० (गु०) [अव+नी+क्त] नम्र, विनीत, अधःपतित, दुर्दशा ग्रस्त।

अवनति तत्० (स्त्री०) [अव+नी+क्ति] विनय, नम्रता, अधःपात, दुर्दशा।

अवनि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, रक्षण, पालन।—भू (पु०) [अवनि+भू+क्विप्] मङ्गल ग्रह, भौम।

अवनी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, भूमि। —कुमारी (स्त्री०) सीता, मिथिलेश राजा जनक यज्ञ करने के अर्थ हल से पृथिवी जोतते थे। वहीं एक घड़ा निकला, उसी घड़े से जानकी जी उत्पन्न हुई हैं।—पति (पु०) भूपति, राजा।—प रवनी तद्० (स्त्री०) रानी, राजा की पत्नी, राजा की स्त्री। अवनिप तत्० रमणी।

अवनेजन तत्० (पु०) धौतकरण, मार्जन।

अवन्ति तत्० (स्त्री०) देश विशेष का नाम, यह नर्मदा की उत्तर ओर बसा हुआ है, इसकी राजधानी उज्जयिनी थी, जिसे अवन्तीपुरी भी कहते थे, इसका दूसरा नाम विशाला है, यह सिप्रा नदी के तीर पर है। यह देश मालवा का पश्चिमी हिस्सा है। महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर नर्मदा तक, और पश्चिम को ओर माही नदी तक विस्तृत था। यही प्रसिद्ध महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी थी।

अवन्द्य तत्० (गु०) अपूज्य, अवन्दनीय, प्रणाम के अयोग्य।

अवन्ध्य तत्० (गु०) सफल, फलवान्।

अवभास तत्० (पु०) [अव+भास+घञ्] प्रकाश करण, प्रकाशन, माया, प्रपञ्च।

अवभृथ तत्० (पु०) व्रत यज्ञ आदि की समाप्ति का स्नान, यज्ञ शेष, औषध आदि से लिप्त होकर कुटुम्ब परिजन सहित स्नान को अवभृथ स्नान कहते हैं।

अवम तत्० (पु०) तिथि का क्षय, नीच, तीन तिथि जिस दिन में हों।

अवमत तत्० (गु०) [अव+मन्+क्त] अवज्ञात, अपमानित, तिरस्कृत।

अवमर्षण तत्० (पु०) [अव+मृष्+अनट्] अवमर्ष, अपक्षय, परिक्षय, लोप।

अवमान तत्० (पु०) [अव+मा+अनट्] अपमान, अमर्यादा, अपयश, दुर्नाम।

अवमानना तत्० (स्त्री०) अनादर, अपमान।

अवमानित तत्० (गु०) [अव+मन्+इत] अपमान ग्रस्त, असम्मानित।

अवमूर्द्ध तत्० (पु०) [अव+मूर्द्धन्] अधःशिर, अधोमस्तक।

अवयव तत्० (पु०) [अव+यु+अच्] अङ्ग, देह, शरीर, हस्त, पाद आदि भाग, एक देश—ी (गु०) [अवयव+ईन्] अङ्गी, अङ्ग सहित, हस्तपाद, विशिष्ट, समस्त।

अवर तत्० (गु०) कनिष्ठ, अश्रेष्ठ, मन्द, क्षुद्र, चरम। —ज (पु०) कनिष्ठ भ्राता, अनुज, शूद्र। —जा (स्त्री०) कनिष्ठा, भगिनी, छोटी बहिन।

अवराधक तत्० (पु०) उपासक, सेवक, ध्यानी, सेवा करने वाला, दास।

अवराधना तद्० (क्रि०) सेवना, सेवा, सेवा करना।

अवराधे तद्० सेवा की, उपासना की, आराधना की, सेवा किये, उपासना किये।

अवरुद्ध तत्० (गु०) [अव+रुध्+क्त] अटकाया गया, रोका हुआ।

अवरेख तद्० (स्त्री०) लेख, लकीर, प्रतिज्ञा।

अवरोध तत्० (पु०) रोक, अटक, रणवास, अन्तःपुर राजस्त्रीगृह, राजगृह, राजदारा।

अवर्ण तत्० (पु०) अ अक्षर, अकार, निन्दा, परिवाद।

अवर्त तद्० (पु०) पानी का चक्कर, भवँर।

अवर्तमान् तत्० (गु०) अभाव, अनुपस्थित, मृत।

अवल तत्० (गु०) दुर्बल, क्षीण, असक्त, (पु०) वरुण वृक्ष।

अवलम्ब तत्० (पु०) [अव+लम्ब्+अल्] आश्रय, शरण, आसरा, आधार।

अवलम्बन तत्० (पु०) [अव+लब+अनट्] आश्रय, ठेस।—नीय (गु०) आश्रयणीय, अवलम्बन करने के योग्य।

अवलम्बित तत्० (गु०) आश्रित, लटकता, निर्भर।

अवली तत्० (स्त्री०) पाँति, पंक्ति, लकीर।

अवलेह तत्० (पु०) चटनी, चाटने वाली कोई चीज़, चाटने वाली कोई औषधी, भोज्य विशेष।—नी (गु०) जिह्वा से आस्वादन, चीखना।

अवलोकन तत्० (पु०) दर्शन, दृष्टि, देखना, दृष्टि देना।

अवलोकय तत्० देख, देखे, देखिये, दृष्टि कीजिये, यह शब्द यद्यपि संस्कृत की क्रिया है तथापि इसका बहुतायत से प्रयोग रामायण में मिलता है।

अवश तत्० (गु०) अवाध्य, अनायत, अनधीन, पराधीन, बलहीन, असमर्थ।

अवशिष्ट तत्० (गु०) अवशेष, शेष, उद्धृत, बाकी उच्छिष्ट।

अवशेष तत्० (पु०) अन्त, शेष, बाक़ी।—न्ति (गु०) बाक़ी बचा हुआ, जो बच रहा।

अवश्य तत्० (अ०) निश्चय करके, निस्सन्देह, निश्चित, उचित, कर्तव्य, सर्वथा कर्तव्य, नितान्त निश्चित। —म्भावी (गु०) [अवश्य+भू+णिनि] निस्सन्देह, होने के योग्य, एकान्त भावी।

अवसर तत्० (पु०) अवकाश, समय, विराम, विश्राम, प्रस्ताव, मन्त्रविशेष, वर्षण, वत्सर, क्षण।

अवसन्न तत्० (गु०) श्रान्त, क्लान्त, जड़ीभूत, गिरा हुआ, थका हुआ, उदास।

अवसान तत्० (पु०) अन्त, शेष, समाप्ति, मृत्यु, सीमा।

अवसि तद्० (अ०) (देखो अवश्य)
"अवसि देखिये, देखन योगू।"

अवसेरि तद्० देर, विलम्ब, उत्कण्ठा, चाह, आशा।

अवस्था तत्० (स्त्री०) [अव+स्था+अ] दशा, गति, समय, दुर्दशा।—त्रय (पु०) जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्था हैं।

अवस्थाता तत्० (पु०) अवस्थानकारी, अधिष्ठाता।

अवस्थान तत्० (पु०) [अवस्था+अनट्] स्थिति, वास।

अवस्थान्तर तत्० (पु०) [अवस्था+अन्तर] दूसरी अवस्था, अन्य दशा।

अवस्थापन तत्० (पु०) [अव+स्था+णिच्+अनट्] स्थापित करना।

अवस्थित तत्० (गु०) [अव+स्था+क्त] स्थिरीभूत, कृतावस्थान।

अवहित तत्० (गु०) [अव+धा+क्त] विज्ञात, अवधान, गत।

अवहित्था तत्० (स्त्री०) [अ+वहिर्+स्था+क्विप्] छद्मवेश, चालाकी से अपने को छिपाना।

अवहेला तत्० (स्त्री०) अनादर, अवज्ञा, अवज्ञा।

अवाई तद्० (स्त्री०) नगचाई, नगीच, पास।

अवाक् तत्० (गु०) [अ+वच्+णिच्] स्तब्ध, वाक्यरहित।

अवाङ्मुख तत्० (गु०) [अवाक्+मुख] अधोमुख नत, लज्जित।

अवाच्य तत्० (गु०) अकथ्य, मौनी, गुपचुप, कहने के अयोग्य।

अवाची तत्० (स्त्री०) [अवाच्+ई] दक्षिण दिशा।

अवाध्य तत्० (गु०) अतर्क्य, विनाविधा (देखो अवाधी)।

अबाधी तद्० (गु०) बाधाहीन, दुःख रहित, सुख-रूप, सुखदाई।

अवाँ तद्० (पु०) आँवा, पजावा, जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते हैं।

अबेर तद्० (स्त्री०) विलम्ब, अत्याचार।

अविकल तत्० (गु०) ज्यों का त्यों, वैसाही, समस्त, त्रुटि रहित, यथार्थ।

अविकल्प तत्० (पु०) असंशय, निस्सन्देह।—ि—त (गु०) सन्देह रहित, असंशय।

अविकार तत्० (गु०) विकृति शून्य, अविकल, जन्म मरणादि विकार शून्य, अज, अविनाशी, ईश्वर, अविकारी।

अविचल तत्० (गु०) अचल, स्थावर, स्थिर, भय शून्य, निष्कम्प, निडर।—ि—त (गु०) स्थिर, दृढ़, निश्चित।

अविचार तत्० (पु०) अत्याचार, अन्याय, भूल, अधर्म।—ि—त (गु०) अविवेचित, अकृत-विचार।—ी (गु०) विचार-रहित, अन्यायकारक, अविचक्षण।

अविच्छिन्न तत्० (गु०) अभिन्न, संलग्न, युक्त, भेद-रहित।

अविज्ञ तत्० (गु०) अप्रवीन, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०) अनैपुण्य, अप्रवीणता।

अवितत तत्० (गु०) विस्तार-रहित, अविस्तृत, संकुचित।

अवितथ तत्० (पु०) सत्य, यथार्थ (गु०) सत्यवान्, यथार्थ विशिष्ट।

अविदग्ध तत्० (गु०) [अ+वि+दह्+क्त] अप-ण्डित, अचतुर, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०) अपा-ण्डित्य, अनिपुणता।

अविदित तत्० (गु०) अज्ञात, अनवगत, बेमालूम।

अविद्य तत्० (गु०) [अ+विद्या] मूर्ख, अनभिज्ञ, विद्या-रहित।

अविद्यमान् तत्० (गु०) अवर्तमान, अभाव, असत्ता।

अविद्या तत्० (स्त्री०) अज्ञान, माया, अज्ञानता, मूर्खता, मोह।

अविनय तत्० (पु०) नम्रता-रहित, धृष्टता, ढिठाई।

अविनाशी तद्० (पु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला, जिसका कभी नाश न हो, नाश रहित, परमात्मा, तत्० अविनाशी।

अविनीति तत्० (गु०) अन्यायी, ढीठ, चञ्चल, उच्छृङ्खल।

अविमुक्त तद्० (गु०) अव्यक्त, मोक्ष मुक्ति (पु०) काशी।

अविरल तत्० (गु०) निरन्तर, सघन, अविच्छिन्न, निबिड़।

अविरोध तत्० (पु०) सुख, चैन, मिलाप, प्रीति, द्वेष का अभाव, एकता।—ी (पु०) मिलापी, धीर, शान्त (स्त्री०)।—िनी।

अविलम्ब तत्० (पु०) शीघ्र, तुरन्त, झट पट।

अविवादी तत्० (गु०) मेली, सहज स्वभाव का, शान्त, झगड़ा न करने वाला।

अविवेक तत्० (पु०) विचार हीन, मूर्खपन, विवेक शून्यता।—ी (पु०) अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारने वाला।

अविशेष तत्० (पु०) सामान्य, तुल्य, सदृश, विशेषता-रहित।

अविश्वास तत्० (गु०) विश्वास शून्य, अप्रतीति, प्रतीति हीन।

अवेर तत्० (स्त्री०) विलम्ब, अवार, देरी, अधिक समय।

अव्यक्त तत्० (गु०) [अवि+अञ्ज्+क्त] अस्फुट, अप्रकाशित। (पु०) विष्णु, शिव, कन्दर्प, मूर्ख, प्रकृति आत्मा महदादि, परमात्मा, क्रिया रहित।—राग (पु०) ईषत् लोहित वर्ण।

अव्यग्र तत्० (गु०) घबड़ाहट रहित, अनाकुल।

अव्यय तत्० (पु०) शब्द विशेष, जो सर्वदा एक समान रहते हैं यथा—और, अथवा, फिर, पुनः आदि, विष्णु, परमेश्वर (गु०) नाश रहित, कृपण।

अव्यवस्था तत्० (स्त्री०) असम्मति, अनरीति, अविधि, शास्त्र विरुद्ध व्यवस्था।

अव्यवस्थित तत्० (गु०) नीति आदि शास्त्रों की व्यवस्था से अनभिज्ञ, अस्थिर चित्त, सिद्धान्त रहित।

अव्यवहार्य तत्० (गु०) व्यवहार के अयोग्य, जाति-भ्रष्ट ।

अव्यवहित तत्० (गु०) व्यवधान रहित, संसक्त, सन्निकट, अत्यन्त समीप ।

अव्याप्ति तत्० (स्त्री०) अप्राप्ति, अफैलना, न्याय के मत से लक्षण सम्बन्धी एक प्रकार का दोष, लक्ष्य के एक देश में लक्षण का नहीं जाना अव्याप्ति है । यथा—शिखा सूत्र विशिष्ट ब्राह्मण है, शिखा सूत्र का रहना ब्राह्मण का लक्षण है, सन्यासी ब्राह्मण है, परन्तु वह शिखा सूत्र रहित है, अतएव पूर्वोक्त ब्राह्मण का लक्षण संन्यासी में अव्याप्त हुआ, अथवा अग्नि का लक्षण किया गया कि उष्णस्पर्शवान् धूम विशिष्ट अग्नि है, लोहे के गोले में अग्नि है परन्तु उसमें धूम नहीं है अतएव पूर्वोक्त अग्नि का लक्षण अव्याप्त हुआ, इसीको अव्याप्ति कहते हैं ।

अव्याहत तत्० (गु०) बेरोक, अवरोध रहित, आशावान् ।

अशकुन तत्० (पु०) बुरे सगुन, अपसगुन, असगुन, भावी के लिये बुरे चिन्ह ।

अशक्त तत्० (गु०) शक्ति रहित, असमर्थ, निर्बल ।
—ता (स्त्री०) [अशक्त+ता] अक्षमता, अपारगता, शक्ति हीनता ।**ि—** (स्त्री०) शक्ति-हीनता क्षीणता ।

अशक्य तत्० (गु०) असाध्य, शक्ति के अगम्य, शक्य रहित, असम्भव ।**—ता** (स्त्री०) असाध्य, साध्यातिरिक्त ।

अशङ्क तत्० (गु०) शङ्का रहित, निश्चिन्त, निर्भय, निडर, निर्विघ्न ।

अशन तत्० (पु०) [अश्+अनट्] भोजन, भक्षण, अभ्यवहार, अन्न, आहार ।**—ा च्छादन** (पु०) [अशन+आच्छादन] अन्न वस्त्र, रोटी कपड़ा ।

अशनि तत्० (पु०) [अशन+ई] विद्युत् वज्र, इन्द्र का वज्र ।

अशम तत्० (गु०) क्षुब्ध, विक्षुब्ध, अशान्ति ।

अशम्बल तत्० (गु०) अर्थहीन, मार्ग व्यय शून्य, पाथेय हीन ।

अशम्य तत्० (गु०) विराम योग्य, अविश्रान्ति, विश्रामाभाव ।

अशरण तत्० (गु०) निराश्रय, रक्षाहीन, निरालम्ब ।

अशरीर तत्० (पु०) कन्दर्प, काम, मदन, (गु०) शरीर रहित ।

अशान्त तत्० (गु०) अशिष्ट, दुरन्त, अधीर, अवन्तुष्ट, भावित ।**—ता** (स्त्री०) अशिष्टता, दौरात्म्य, घबड़ाहट ।**ि—** (स्त्री०) उत्पात, दौरात्म्य, अतुष्टी ।

अशासित तत्० (गु०) अकृत शासन, शासन रहित ।

अशावरी या असावरी तद्० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

अशास्त्र तत्० (गु०) शास्त्र विरुद्ध, अवैध, विधिहीन ।
—ीय (गु०) वेद विरुद्ध, अवैध ।

अशिक्षित तत्० (गु०) अनसीखा, मूर्ख, शिक्षा वर्जित, असभ्य, अप्राप्त शिक्षा, अपठित, अनभिज्ञ ।

अशित तत्० (गु०) [अश्+क्त] भुक्त, खादित, तृप्त ।

अशिव तत्० (गु०) अमङ्गल, अशुभ ।

अशिर तत्० (पु०) [अश्+इर] हीरक, हीरा, (पु०) अग्नि, राक्षस, सूर्य ।

अशिरस्क तत्० (गु०) मस्तक हीन, कबन्ध ।

अशिशिर तत्० (गु०) अशीतल, ग्रीष्म, उष्ण ।

अशिश्विका तत्० (स्त्री०) [अशिशु+इक्+आ] अनपत्या, पुत्र कन्याहीना स्त्री ।

अशिष्ट तत्० (गु०) दुरन्त, प्रगल्भ, असभ्य, दबंग, मूर्ख ।**—ता** (स्त्री०) दुरन्तता, असभ्यता ।

अशुचि तत्० (गु०) अशुद्ध, अपवित्र, अशौच ।

अशुद्ध तत्० (गु०) ठीक नहीं, अपवित्र, अकृत शोधन, अपरिष्कृत, अशुचि, भूलयुक्त, त्रुटि सहित, अशौच युक्त ।**—ि—**(स्त्री०) अशुद्ध, अशोधन, भूल, अशौच ।

अशुभ तत्० (गु०) [अ+शुभ] अमङ्गल, पाप, बुरा ।
—चिन्ता (स्त्री०) अनिष्ट सोचना, बुरा चिन्तन ।
—दर्शन (पु०) अमङ्गल दर्शन, मन्द लक्षण ।

अशून्य-शयनव्रत तत्० (पु०) व्रत विशेष, श्रावण कृष्ण द्वितीया को यह व्रत किया जाता है ।

अशेष तत्० (गु०) शेषहीन, निःशेष, समग्र, सर्व ।
—ज्ञ (पु०) [अशेष+ज्ञा+ड] सर्वज्ञ, सर्ववित्,

सब जाननेवाला ।—तः (अ०) [अशेष+तस्] सब प्रकार से, अनेक रूप से ।—विशेष (गु०) अनेक प्रकार, बहुत तरह ।

अशोक तत्० (पु०) [अ+शोक] शोक रहित, पुष्प वृक्ष विशेष, राज विशेष, विख्यात मौर्य सम्राट् बिन्दुसार के पुत्र तथा चन्द्र गुप्त के पौत्र का नाम, महाराजा अशोक अपने शत्रुओं को परास्त करके २५ वर्ष की अवस्था में सिंहासनारूढ़ हुए थे, प्राचीन शिला लेखों से इनका दूसरा नाम पियदशी, या प्रियदर्शी भी जाना जाता है। अपने अभिषेक के ८वें वर्ष में इन्होंने कालिङ्ग देश को जीता था। राज्याभिषेक के समय महाराजा अशोक हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायी थे, समय समय पर इन्होंने बौद्धों के विरुद्धाचरण भी किया था। बुद्ध गया के "बोधि द्रुम" को इन्होंने कटवा दिया था। कपिला वस्तु के निकट बुद्ध भगवान् के स्मारक ८ स्तूपों में से ७ को तोड़ देने के लिये इन्होंने आज्ञा प्रचारित की थी। अशोक २५७ खृष्टाब्द के पूर्व राज्यासन पर आसीन हुए थे, राजा होने के ७ वें वर्ष अर्थात् २६४ खृष्टाब्द के पूर्व वह बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए। राज्य पाने के १४ चौदह वर्ष के मध्य में भारत के आधे से अधिक भाग पर अपना अधिकार इन्होंने स्थापित किया था। वह बौद्ध धर्म के प्रचार करने के लिये अत्यन्त सचेष्ट थे। इन्हींके समय में बौद्ध महासभा का दूसरा अधिवेशन हुआ था, खृ० २२३ उन्होंने राज्य किया था, (देखो आदर्शमहात्मा)।

अशौच तत्० (पु०) शान्ति, अविचार, अपवित्रता, अशुद्धता।

अशोच्य तत्० (गु०) अशोचनीय, शोक के अयोग्य।

अशोभन तत्० (गु०) मन्द, कुदृश्य। दुर्दर्शन, बुरी। —ीय (गु०) कुत्सित आकार, बुरा।

अशोभा तद्० (पु०) अनगढ़, कुरूप, बुरा।

अशौच तत्० (पु०) शुचित्वाभाव, अशुद्धि ।—न्त (पु०) [अशौच+अन्त] अशौच का अन्तिम दिन, देहशुद्धि का अवसान दिन।

अशौर्य तत्० (पु०) भीरुता, अविक्रम, अशूरत्व।

अश्म तत्० (पु०) [अश्+मन्] पत्थर, पर्वत, मेघ। —ज (पु०) [अश्म+जन्+ड] शिलाजीत, लोह, पत्थर से उत्पन्न वस्तु ।—दारण (पु०) [अश्मन् +दारण] पत्थर काटने वाला अस्त्र।

अश्मरी तत्० (स्त्री०) [अश्मर+ई] मूत्रकृच्छ्र रोग, पथरी रोगी।

अश्रद्धा तत्० (स्त्री०) अभक्ति, घृणा, अविश्वास, घिन।

अश्रद्धेय तत्० (गु०) घृण्य, घृणा के योग्य, श्रद्धानर्ह, अनादरणीय।

अश्रप तत्० (पु०)[अस्र+पा+ड] राक्षस, निशाचर।

अश्राद्ध तत्० (गु०) प्रेतकर्म रहित।

अश्रान्त तत्० (पु०) अनवरत, विश्राम रहित, श्रान्ति हीन ।—न्ति (स्त्री०) अविश्राम, अनवरत।

अश्राव्य तत्० (गु०) श्रवणानर्ह, सुनने के अयोग्य, अश्रोतव्य।

अश्रि तत्० (स्त्री०) [अ+श्रि+क्विप्] धार, पैना, तीखा, तीक्ष्ण।

अश्रु तत्० (पु०) [अ+श्रु +क्विप्] आँसू, नेत्रजल, नयनाम्बु।

अश्रुत तत्० (गु०) नहीं सुना, अनाकर्णित ।—पूर्व (गु०) पहले का नहीं सुना गया, अद्भुत, विलक्षण।

अश्रेयस् तत्० (गु०) निर्गुण, अधम, अमङ्गल।

अश्रेष्ठ तत्० (गु०) बुरा, साधारण, उत्तम नहीं।

अश्लील तत्० (गु०) नीच, अधम, ग्राम्यभाषा, (पु०) घृणा अथवा लज्जा सूचक बात, काव्यगत दोष, काव्य में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना जो श्रवणानन्तरघृणा लज्जा अथवा अमङ्गल सूचक हों। यह शब्द दोष है, घृणा व्यञ्जक, लज्जाव्यञ्जक और अमङ्गल व्यञ्जक ये इसके भेद हैं।

अश्लेष तत्० (पु०) श्लेषरहित, अप्रणय, असंलग्न, अप्रीति, श्लेषभिन्न, अपरिहास।

अश्लेषा तत्० (स्त्री०) नवाँ नक्षत्र, इस नक्षत्र में छ तारे हैं।—भव (पु०) केतुग्रह।

अश्व तत्० (पु०) [अश्+व] घोटक, तुरङ्ग, घोड़ा, वाजि, हय। —गन्धा (स्त्री०) [अश्वगन्ध+आ]

ओषधविशेष।—तर (पु०) [अश्व+तर] गर्दभी के गर्भ और अश्व के औरस से उत्पन्न पशु, खच्चर, नागराजविशेष, अश्वविशेष। (स्त्री०) अश्वतरी।—पति (पु०) घोड़े का स्वामी।—मेध (पु०) यज्ञ विशेष, जिसमें घोड़े का हवन किया जाता है। इस यज्ञ में विशेष लक्षणयुक्त अश्व को धोकर उसके सिर में जयपत्र बान्धकर स्वेच्छा से घूमने के लिये छोड़ देते थे, पुनः एक वर्ष के बाद वह घोड़ा घूम कर जब आता था तब उसका बलिदान और हवन किया जाता था।—वार (पु०) अश्वारोही, सादी, घुड़सवार।—शाला (स्त्री०) अश्वगृह, अस्तबल, घुड़साल।—वैद्य (पु०) अश्वचिकित्सक।—शिक्षक (पु०) चाबुक सवार।—सेवक (पु०) साईस।—रूढ़ (पु०) [अश्व+आरूढ़] असवार, घुड़चढ़ा।

अश्वत्थ तत्० (पु०) [अश्व+स्था+ड] वृक्षविशेष, चलद्रुम, पीपल।—ा (स्त्री०) पूर्णिमा तिथि।

अश्वत्थामा तत्० (पु०) [अश्व+स्था+मन्] द्रोणाचार्य का पुत्र, भूमिपतित होते ही इसने उच्चैःश्रवा घोड़े के समान शब्द किया था, उसके बाद ही आकाशवाणी हुई कि इस पुत्र ने जन्म के समकाल ही में गंभीर ध्वनि के द्वारा दिगन्त को प्रतिध्वनित किया है अतएव इसका नाम अश्वत्थामा होगा"। २ पाण्डव पक्षीय मालवराज इन्द्र वर्मा का हाथी।

अश्वसेन तत्० (पु०) तक्षक का पुत्र, नाग विशेष, सनत्कुमार।

अश्विनी तत्० (स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों में का पहला नक्षत्र, इसमें तीन तारे रहते हैं और मेषराशि के सिर पर इसका स्थान है। दक्षप्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री, इस नक्षत्र का आकार घोड़े के मुँह के समान है।—कुमार (पु०) स्वर्ग का वैद्य, देवता विशेष, अश्वरूपी सूर्य के औरस तथा अश्वारूप धारिणी संज्ञा के गर्भ से इस युगल देववैद्य की उत्पत्ति हुई थी।—(हरिवंश या ऋग्वेद द्रष्टव्य)।

अश्शी या अस्सी तद्० संख्या विशेष।

अषाढ़ तत्० (पु०) अषाढ मास, व्रतपलाशदण्ड, अषाढ़ानक्षत्र इस महीने की पूर्णिमा को होता है, और उस दिन चन्द्रमा भी उसीके साथ रहता है।

अष्ट तत्० (पु०) संख्या विशेष।—क (पु०) [अष्ट+क] अष्ट संख्या, आठ की पूर्ति।—कर्ण (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधि।—का (स्त्री०) श्राद्ध विशेष, तिथिविशेष, अष्टका श्राद्ध।—धातु (पु०) सुवर्ण, रूपा, जस्ता, काँसा, तांबा, रांगा, शीशा, लोहा।—धाती (पु०) अष्टधातु का बना हुआ।—प्रहर (पु०) आठ पहर, आठ याम।—वसु (पु०) देव विशेष, आप, ध्रुव, सोम, धव, अनिल अनल, प्रत्यूष, प्रभास।—मी (स्त्री०) [अष्टम+ई] तिथिविशेष, जिस दिन चन्द्रमा की आठवीं कला की क्रिया हो।—मूर्ति (पु०) शिव की अष्टविध मूर्ति विशेष, यथा क्षितिमूर्ति शर्व, जलमूर्ति भव, अग्नि मूर्ति रुद्र, वायुमूर्ति उग्र, आकाशमूर्ति भीम, यजमानमूर्ति पशुपति, चन्द्रमूर्ति महादेव, सूर्यमूर्ति ईशान।—सिद्धि (स्त्री०) योग की आठ सिद्धियाँ यथा—अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व।

अष्टाङ्ग तत्० (पु०) [अष्ट+अङ्ग] (पु०) आठ अङ्ग, आठ अवयव।—र्घ्य (पु०) [अष्ट+अङ्ग+अर्घ्य] आठ द्रव्यों से संयुक्त पूजा की सामग्री विशेष।—प्रणाम (पु०) [अष्ट+अङ्ग+प्रणाम] आठ अङ्गों से प्रणाम करना।

अष्टादश तत्० (पु०) संख्या विशेष अठारह—ङ्ग (पु०) [अष्टादश+अङ्ग] अठारह औषधियों के मिलाने से बनी हुई पाचन की गोलियाँ।—ोपचार (पु०) [अष्टादश+उपचार] पूजा की अठारह सामग्रियाँ, यथा-आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, तर्पण, माल्य, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन।—ोपपुराण (पु०) [अष्टादश+उपपुराण] पुराणविशेष, गौण पुराण, यथा-सनत्कुमारोक्त, नारसिंह, नारद, कौमार, शिवधर्म, दुर्वासा कथित, नारद प्रोक्त, कापिल, मानव, औशनस, ब्रह्माण्ड, वारुण, कालिका, माहेश्वर, सांब, सौर, पराशर कथित और दो भागवत ये अष्टादश

उपपुराण हैं।—धान्य (पु०) अठारह प्रकार के अन्न, यथा—यव, गोधूम, धान्य, तिल, गंगु, कुलित्थ, माष, मुद्ग, मसूर, निष्पाव, श्याम, सर्षप, गवेधुक, नीवार, अरहर, तीना, चना, चीना।
—पुराण (पु०) अठारह पुराण, यथा—ब्राह्म, पाद्म, वैष्णव, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिङ्ग, वाराह, स्कन्द, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्माण्ड।
—विद्या (स्त्री०) अठारह विद्या। यथा—छ अङ्ग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्म शास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व, और अर्थशास्त्र ये अष्टादश विद्या हैं।—स्मृतिकार (पु०) अष्टादश स्मृतियों के बनाने वाले, आर्यों के धर्म शास्त्रकार, यथा—विष्णु, पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास, हारीत, शातातप, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शङ्ख, लिखित, भरद्वाज, उशना, अत्रि, शौनक, याज्ञवल्क्य, ये अष्टादश स्मृतिकार हैं।

अष्टास्त्र तत्० (पु०) अठकोण।

अष्टि तत्० (स्त्री०) गुठली, बीज, अठुली।

असंख्य तत्० (गु०) अनगिनती, बहुत, अगणनीय, संख्या रहित, अपरिमित।

असंख्यात तत्० (गु०) असंख्य, अगणित, अपरिमित।

असंख्येय तत्० (गु०) अगणनीय, जिसकी संख्या न गिनी जा सके।

असङ्गत तत्० (गु०) अनुचित, अयोग्य, मिथ्या।

असंग्रह तत्० (पु०) सङ्ग्रह-हीन, एकत्रित नहीं।

असंयुक्त तत्० (गु०) [असं+युज्+क्त] अलग्न, अमिलित, पृथक्।

असंयोग तत्० (पु०) अनमेल, भिन्न।

असंलग्न तत्० (गु०) अमिल, असङ्गत।

असंशय तत्० (गु०) निश्चय, निःसन्देह, संशय रहित।

अस तद्० ऐसा, ऐसी, इस प्रकार से, इस प्रकार का, इस चाल का।

असकृत तत्० (अ०) पुनः पुनः, बारबार।

असकत दे० (स्त्री०) आलस्य, उघाँस।—ती (गु०) आलसी, ढीलरला।

असज्जन तत्० (गु०) [असत्+जन] कुपात्र, दुष्ट, द्वेषी।

असत् तत्० [अ+सत्] असाधु, अन्यायी, अधर्मी।

असत्य तत्० (गु०) झूठ, मिथ्या, अन्याय।

असन्तुष्ट तत्० (गु०) अप्रसन्न, अतृप्त, दुखी, सम्यक् तुष्टि रहित।

असन्तोष तत्० (पु०) अनाह्लाद, अपरितोष।

असम्मान तत्० (पु०) अपमान, असत्कार।

असभ्य तत्० (गु०) अपात्र, सभा के योग्य नहीं, असामाजिक, अभव्य, खल, नीच।—ता (स्त्री०) [असभ्य+ता] अभव्यता, धूर्तत्व, उजड्डपन।

असम तत्० (गु०) विषम, अतुल्य।

असमग्र तत्० अपूर्ण, अनिखिल, अल्प, अधूरा।

असमञ्जस तत्० (गु०) असङ्गत, अनुपयुक्त, अतुल्य, असदृश।

असमय तत० (पु०) अकाल, विपत्ति, दुर्भिक्ष।

असमर्थ तत्० (गु०) अशक्त, दुर्बल, क्षीण।

असमवायी-कारण (पु०) समवायीकारण का आसन्न कारण, समवायीकारण के साथ रहनेवाला कारण। जैसे घट के प्रति दो कपालों का संयोग।

असम-साहस तत्० (पु०) दुःसाहस, असमान साहस, अतुल्य उत्साह, सामर्थ्य से बाहर उत्साह।

असमक्ष तत्० (गु०) परोक्ष, अगोचर।

असमाधि तत्० (स्त्री०) अचिन्ता, अविवेचन, अविमर्ष।

असमान तत्० (गु०) छोटा बड़ा, समान नहीं, विषम, अतुल्य, विभिन्न।

असमापिकाक्रिया तत्० (स्त्री०) जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो, सकल कृदन्त क्रिया, काल बोधक कृदन्त।

असमास तत्० (गु०) अघटना, अधूरा, अपूर्ण, समाप्ति-रहित।

असंबद्ध तत्० (गु०) अनमेल, अनर्थ, अन्याय।

असम्भव तत्० (गु०) अनहोना, अघटन।

असम्मत तत्० (गु०) अमेल, अस्वीकार, अनभिमत, सम्मति रहित।

असहन तत्० (पु०) [अ+सह+अनट्] शत्रु, वैरी, असह्य, अघोर, उग्र, भयङ्कर।

असह्य तत्० (गु०) असहनीय, कठिन, सहन करने के अयोग्य।

असाधु तत्० (पु०) अधर्मी, पापी, असज्जन।

असाध्य तत्० (गु०) कठिन, अगम्य, दुष्प्राप्य।

असामर्थ्य तद्० (गु०) अपारग, सामर्थ्य हीन।

असार तत्० (गु०) छूंछ, पोला, भूला, थोदला, सार रहित।

असावधान तत्० (पु०) निश्चिन्त, अचेत, बेपरवाई।

असि तत्० (पु०) खड्ग, तलवार, खाँड।

असिद्ध तत्० (गु०) अधपका, अधूरा।

असीमा तत्० [स्त्री०] अपार, अनन्त, बहुत, सीमा-रहित, निरवधिक।

असु तत्० (पु०) [अस्+उ] प्राण, जीवन।

असुर तत्० (गु०) सुर विरोधी, दैत्य, दानव।

असूझ दे० (गु०) अदृश्य, लोकप्य, भूल।

असुस्थ तत्० (गु०) सुप्रस्थिति रहित, रोगी। —ता (स्त्री०) अस्वास्थ्य, असच्छन्दता।

असूया तत्० (स्त्री०) निन्दा, द्वेष, गुणों में दोषारोपण करना, परिवाद, क्रोध।

असृक् तत्० (स्त्री०) रक्त, रुधिर, लोहू।

असों तद्० (पु०) यह साल, यह वर्ष, वर्तमान संवत्सर।

असोच तद्० (गु०) अचेत, अविचारित—ी (गु०) निर्मोही, प्रमादी, सुस्थिर।

असोज तद्० (पु०) आश्विन, कुआँर का महीना।

अस्त तत्० (पु०) [अस्+क्त] अस्ताचल, पश्चिमाचल। (गु०) क्षिप्त, अवसान, अन्तर्द्धान, प्राप्त, निक्षिप्त, प्रेरित, त्यक्त (पु०) मृत्यु।—गत (गु०) अस्तप्राप्त, अन्तर्हित।—गिरि (पु०) अस्ताचल, चरम पर्वत।—व्यस्त (गु०) सङ्कीर्ण, विक्षिप्त, आकुल। —ाचल (पु०) पर्वत विशेष।

अस्त्र तत्० (पु०) [अस्+त्र] आयुध, प्रहरण, शस्त्र, खड्ग, हथियार, धनुष।—चिकित्सक (पु०) [अस्त्र+कित्+सन्+क] शस्त्रवैद्य, अस्त्र के द्वारा रोग दूर करने वाला, जर्राह।—विद्या (स्त्री०) अस्त्र चलाने की विद्या, धनुर्वेद।

अस्थाय तत्० (गु०) [अ+स्था+य] अस्थायी, स्थिति रहित, अगाध, अतलस्पर्श।

अस्थि तत्० (पु०) हाड़, शरीर का पंजड़, शरीरस्थ धातु विशेष।

अस्थिर तत्० (गु०) चञ्चल प्रकृति, अस्थायी, अनिश्चित,—ता (स्त्री०) अस्थैर्य, अनिश्चय।—मना (पु०) अस्थिर मति, अस्थिरान्तःकरण।

अस्थैर्य तत्० (गु०) अनिश्चय, स्थिरताभाव, अधीरता, चञ्चलता।

अस्मरण तत्० (पु०) भूल, विस्मृति।

अस्त्र तत्० (पु०) कोण, एक देश, नोक।

अस्व तत्० (पु०) निर्धनी, कङ्गाल, दरिद्री।

अस्वर तत्० (पु०) हल् व्यञ्जन, कुस्वर, निन्दित शब्द।

अहङ्कार तत्० (पु०) अभिमान, दम्भ, अहंकृति।

अहम्मति तत्० (स्त्री०) मनमौजी, गर्वी।

अहर तद्० (पु०) डोवा, पोखरा, अहरा।

अहरह तत्० (पु०) प्रतिदिन, दिन दिन।

अहर्निश तत्० (अ०) [अहः+निशि] दिवा रात्रि, नक्तन्दिन, अष्टप्रहर।

अहर्मुख तत्० (पु०) प्रातःकाल, सबेरा, भोर, प्रत्यूष।

अहर्पित तत्० (गु०) अप्रसन्न, मलीन।

अहल्या तत्० (स्त्री०) गौतम मुनि की स्त्री, अप्सरा विशेष, जोती भूमि।

अहह तत्० (अ०) अद्भुत या खेद प्रकाशक शब्द।

अहहिं (क्रिया०) अस्ति, है, विद्यमान है।

अहार तद्० (पु०) आहार, भोजन, खाना, लेई, माँड़ी।

अहिंसा तत्० (स्त्री०) अनिष्ट करने की अनिच्छा, प्राणिवध न करने की अभिलाषा।

अहिंसक तत्० (गु०) अहिंस्र, अहिंसाकारक।

अहि तत्० (पु०) साँप, सर्प, नाग, फणी।—गति (स्त्री०) साँप की चाल, टेढ़ी चाल।

अहिछार तद्० (पु०) साँप का विष।

अहित तत्० (पु०) शत्रु, बैरी, विरुद्ध, अपथ्य, अनुपकार, अमङ्गल ।—कारी (पु०) अप्रिय करने वाला, शत्रु ।

अहिनी तद्० (स्त्री०) सर्पिणी, साँप की स्त्री ।

अहिपति तत्० (पु०) साँपों का राजा, वासुकी ।

अहिफेन तत्० (पु०) नागफेन, अफीम ।

अहिवात तद्० (पु०) सुहाग, सौभाग्य, सधवा होने के चिन्ह ।

अहीर तद्० (पु०) ग्वाल, आभीर । अहीरिनी (स्त्री०) या अहीरिन ।

अहे तद्० (अ०) संबोधन द्योतक, अहो !

अहेतुक तत्० (गु०) अकारण, अनर्थक ।

अहेर तद्० (स्त्री०) आखेट, मृगया, शिकार ।

अहेरिया तद्० (पु०) बहेलिया, व्याधा ।

अहेरी तद्० (पु०) खेटकी, बहेलिया, चिड़ीमार ।

अहो तत्० (अ०) आश्चर्य, अवस्था, शोक, करुणा, विषाद बोधक, संबोधन, प्रशंसा, विस्मय, अथवा, आश्चर्य प्रकाशक शब्द ।

अहोरात्र तत्० (पु०) [अहन् + रात्रि + अ] दिवानिशी, दिन और रात्रि ।

आ तत्० आकार दूसरा स्वरवर्ण है, शब्दों के आदि में इसका योग होने से यह अवधि का वाचक होता है, न्यून अथवा विपरीत भी इसका अर्थ होता है ।

आ तत्० पितामह, वाक्य, महेश्वर । (अ०) स्मृति, ईषदर्थ, अभिव्याप्ति, सीमा, वाक्य, अनुकम्पा, समुच्चय, निषिद्ध, सन्धिवर्ण, स्वीकार, कोप, पीड़ा, स्पर्द्धा, तर्जन ।

आः तत्० कष्ट सूचक शब्द, खेदोक्ति ।

आई तद्० आ कर, आनकर, आयु, वय, अवस्था ।

आँक तद्० (पु०) अङ्क, चिन्ह, संख्या, अङ्कित करना ।

आँकड़ी तद्० (स्त्री०) आँकुसी, काँटा, अङ्कुर ।

आँकना तद्० (क्रि०) निरखना, परखना, परीक्षा करना ।

आँकरी तद्० (स्त्री०) वाण का फल, अङ्कुश ।

आँकुसा तद्० (पु०) अङ्कुश, अङ्कुसी ।

आँक तद्० (पु०) अर्क, मन्दार, अकौआ, अकवन ।

आकम्पन तत्० (पु०) [आ + कम्प् + अनट्] काँपना, थर थराहट, ईषत्कम्पन ।

आकर तत्० (पु०) [आ + कृ + अप्] धातु और रत्नों का उत्पत्ति स्थान, खानि आदि, मूल, समूह, श्रेष्ठ । जिस स्थान से जो वस्तु बहुतायत से निकले वह स्थान आकर है ।

आकर्ण तत्० (गु०) कर्णमूलावधि, कान तक । —चक्षु (पु०) कर्ण पर्यन्त विस्तृत चक्षु, दीर्घ नयन, विशाल नेत्र ।

आकर्ष तत्० (पु०) खींच, तान, रोक, पाशक, पासा, द्यूतक्रीड़ा, चौपड़ खेलना, आकर्षणी, आँकुशी । —क (पु०) [आ + कृष् + णक्] शिला विशेष, चुम्बक पत्थर, आकर्षण कर्ता ।—ण (पु०) [आ + कृष् + अनट्] बलप्रयोग पूर्वक खींचना, टानना ।

आकलन तत्० (पु०) [आ + कल् + अनट्] एकत्र करण, संग्रह करण, बन्धन ।

आकलित तत्० (गु०) [आ + कल् + क्त] बद्ध, परिसंख्यात ।

आकला तद्० (गु०) खट खटिया, उतावला, उच्छृङ्खल ।

आकाङ्क्षा तत्० (स्त्री०) इच्छा, चाहना, अभिलाष, वाञ्छा ।

आकार तत्० (पु०) स्वरूप, डील डौल, मूर्ति, आकृति, चेहरा, सङ्केत, इङ्गित ।—गुप्ति (स्त्री०) भय हर्ष आदि से उत्पन्न अङ्ग विकार को छिपाना । —गोपन (पु०) इत्यादि सूचक चिन्हों को छिपाना ।—न्त (पु०) [आकार + अन्त] जिसके अन्त में आकार हो ऐसे शब्द, रमा आदि ।

आकारतः तत्० (अ०) [आकार + तस्] स्वरूपतः, सदृश मूर्तितः, आकृति से ।

आकारादि तत्० (गु०) [आकार + आदि] जिस शब्द का आद्याक्षर आकार हो ।

आकाल तद्० (पु०) अकाल, दुर्भिक्ष, दुःसमय, महँगी । —िक (गु०) [आ + काल + इक] अकाल सम्भव, असामयिक, अकाल निमित्त, असमय में उत्पन्न ।

आकाश तत्० (पु०) गगन, शून्य, अम्बर, पञ्चभूतों में से एक भूत विशेष, व्योम, अन्तरिक्ष।—ग (पु०) आकाशगामी, आकाशचर।—गङ्गा (स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा, नक्षत्र पथ विशेष। —गामी (पु०) [आकाश+गम्+णिनि] खेचर, आकाशचर, आकाश में चलनेवाला।—दीप (पु०) बाँस के सहारे टाँगा हुआ दीपक, अन्तरीक्षस्थ प्रदीप, कार्तिक मास में जो दीपदान होता है। —वाणी (स्त्री०) अशरीरिणी वाक, देववाणी, —विद्या (स्त्री०) वायु निरूपण करने की विद्या। —वृत्ति (स्त्री०) निराश्रय, अनियमित वृत्ति, दरिद्र।—वेल (स्त्री०) लता विशेष।

आकिञ्चन तत्० (पु०) दरिद्रता, प्रयास, यत्न, अकिञ्चनता।

आकीर्ण तत्० (पु०) व्याप्त, विस्तारित, भृत, सङ्कीर्ण, सङ्कुल, समाकुल।

आकुञ्चन तत्० (पु०) [आ+कुच्+अनट्] सङ्कोच, वक्रता, न्यायमत से पञ्च प्रकार के कर्मों में से एक कर्म।

आकुञ्चित तत्० (पु०) तिरछा, टेढ़ा, बाँका।

आकुण्ठित (पु०) लज्जित, अवाक्।

आकुल तत्० (पु०) [आ+कुल+अल्] व्याकुलित, व्यस्त, कातर, आर्त, उद्विग्न, पूर्ण, आकीर्ण, घबराया।—लित (पु०) [आ+कुल+क्त] व्याकुल, कातर, व्यस्तचित्त।

आकृति तत्० (स्त्री०) [आ+कृ+क्ति] रूप, मूर्त्ति, शरीर, आकार, अवयव, डौल।

आकृष्ट तत्० (पु०) आकर्षित, खींचा गया, कृत आकर्षण।

आक्रन्द तत्० (पु०) [आ+क्रन्द+अल्] रोदन, आह्वान, भयङ्कर युद्ध, मित्र, भ्राता, नाथ, पार्ष्णिस्थ, राजा के आगे का राजा, मित्र राजा।

आक्रम तत्० (पु०) [आ+क्रम+अल्] आक्रमण, चढ़ाई, अतिक्रम, क्रान्ति।—ण (पु०) [आ+क्रम्+अनट्] आक्रम, बलात्कार, चढ़ाई करना, ऊपर गिरना, हमला, ...

आक्रान्त तत्० (पु०) [आ+क्रम्+क्त] बलवान् के द्वारा गृहीत, कृत आक्रमण, जिसके ऊपर आक्रमण किया जाय, ग्रस्त।

आक्रीड तत्० (पु०) राजा का उपवन, राजमहल के समीप का बाग, राजाओं का साधारण वन। —न (पु०) [आ+क्रीड+अनट्] मृगया, शिकार, आखेट।

आक्रोश तत्० (पु०) [आ+क्रुश्+अल्] क्रोधवश कर्तव्याकर्तव्य विचार को भूल जाना, अभिषङ्ग, आक्षेप, शाप, राग, कोप, क्रोध।—न (पु०) [आ+क्रुश्+अनट्] अभिशाप, अभिषङ्ग, कटूक्ति, भर्त्सना, अभिसम्पात।

आक्लान्त तत्० (पु०) [आ+क्लम्+क्त] श्रान्त, अतिशय क्लान्ति युक्त, अवसन्न, खिन्न, श्रान्तियुक्त।

आँख तद्० (स्त्री०) नेत्र, नयन, चक्षु (बहु वचन-आँखें, आँखियाँ)।—चढ़ाना (क्रि०) क्रोध करना, कुपित होना।—चुराना (क्रि०) लज्जित होना (छिपाना)।—ठंढी करना (क्रि०) इष्ट मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता।—दिखाना (क्रि०) धमकाना, कुपित होना (वा०)। "— फूटी, पीर गयी" विवादग्रस्त पदार्थ के विनष्ट होने पर यह लोकोक्ति कही जाती है।—फेरना (क्रि०) मित्रताभङ्ग, प्रेम तोड़ना।— फोड़ा (पु०) नशा, होश।—मूँदना मृत्यु, मतवाली, मस्ती। —बचाना छिपना, अपने दुष्कर्मों से लज्जित होना। —मारना (स्त्री०) आँख मटकाना, सैनकरना, इशारे से बात करना, इङ्गित करना।—मिचौली (स्त्री०) खेल विशेष।—मिलाना प्रेम करना, मित्रता करना।—रखना अनुसन्धान करना, निरीक्षण करना, खोज परताल करना।—लगाना किसी की प्रीति में फँसना या फँसाना।

आखण्ड तद्० (पु०) समुदय, खण्ड रहित, सम्पूर्ण।

आखण्डल तत्० (पु०) [आ+खण्ड+ल] इन्द्र, सहस्राक्ष, शचीपति।

आखा तद्० (पु०) चलनी, बोरा, गठिया।

आखात तद्० (पु०) [आ+खन्+क्त] अखात,

आखु तत्० (पु०) [आ+खन्+उ] मूषिक; शूकर, चोर, चोर।

आखेट तत्० (पु०) मृगया, अहेर, शिकार।—क (पु०) व्याध (पु०) अन्वेषित, भयानक।

आख्या तत्० (स्त्री०) नाम, संज्ञा, अभिधान, नाँव। —त (पु०) कथित, उक्त, प्रसिद्ध, व्याकरण का धातुप्रकरण।—न (पु०) नाम, संज्ञा, इतिहास, उपन्यास, कथन।

आख्यायिका तत्० (स्त्री०) [आ+ख्या+ण्वुल्+आ] उपलब्धार्थ कथा, इतिहास, उपन्यास, उपकथा।

आँग तद्० (पु०) अङ्ग, देह, शरीर।

आँगन तद्० (पु०) चौक, अङ्गनाई, प्राङ्गण।

आग तद्० अग्नि (स्त्री०) अग्नि, अनल, आगी। —देना (क्रि०) शव संस्कार करना।

आगत तत्० (पु०) [आ+गम्+क्त] पहुँचा, उपस्थित, सम्मुख, आयात।

आगन्तुक तत्० (पु०) अनित्य स्थायी, आहार्य, अचानक आया हुआ, अतिथि।—ज्वर (पु०) पीड़ा विशेष, आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर।

आगम तत्० (पु०) [आ+गम्+अल्] आगमन, सर्वविध शास्त्र, सांतिपत्र आदि, व्याकरण के मत से प्रकृति प्रत्यय के मध्य में होने वाले कार्य, तन्त्र शास्त्र, लिखत पत्री, वेद, तन्त्र, भविष्यत्। कहते हैं शिव दुर्गा, और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत शास्त्र आगम कहे जाते हैं।—ज्ञ (पु०) वेदज्ञ, तन्त्रवेत्ता। —न (पु०) [आ+गम्+अनट्] पहुँचना, उपस्थित होना।—िक (पु०) [आगम+उक्त] तन्त्र शास्त्र विहित कर्म, तान्त्रिक उपासना, शास्त्रोक्त। —वक्ता (पु०) आगमज्ञानी।—बाँधना भावी को ठीक करना, भावी के लिये सोचना, आगम कहना, भावी कहना।

आगल.न्त तद्० (पु०) गलेतक, कण्ठपर्यन्त।

आग होना तद्० (क्रि०) गरमाना, क्रोधित होना।

आगा तद्० (पु०) अग्र, सामना, अगवाड़ा। "—पीछा करना" संशयित, दुविधा में पड़ना।

आगामी तत्० (पु०) [आ+गम्+ई] आने वाला, आगे आनेवाला, भावी।

आगाड़ी तद्० (स्त्री०) घोड़े के पाँव की रस्सी।

आगर तद्० (पु०) चतुर, जानकार, जानने वाला, नागर, सयाना, पूर्ण। (स्त्री०) आगरी।

आगार तत्० (पु०) घर, गृह, मकान।

आगिल तद्० (पु०) अगिला, होनहार, भविष्यत्, अग्रसर, अग्रगामी।

आगी तद्० (देखो आग)

आगुल्फ तत्० (पु०) [आ+गुल्फ] गुल्फ पर्यन्त, टिहुना तक।

आगू तद्० (क्रि० वि०) सामने, सम्मुख, आगे, अगाड़ी।

आगे (क्रि० वि०) पहिले, सामने, सम्मुख, तब, फिर, बढ़ कर।—पीछे अग्रपश्चात्, आगे पीछे, पूर्वापर, एक आगे एक पीछे, क्रमशः।

आग्नीध्र तत्० (पु०) [अग्नि+इन्ध+र] यज्ञ, अग्नि रखने का स्थान, होता का गृह, धन के द्वारा वरण किया जाने वाला ऋत्विक्।

आग्नेय तत्० (पु०) स्वर्ण, देश विशेष, रक्त, घृत, अगस्त्य मुनि, पाचक, अग्नि संबन्धीय, अग्नि तुल्य। —स्त्र (पु०) [आग्नेय+अस्त्र] अग्निबाण, आग्नेयास्त्र, बन्दूक, कमान।—ई (स्त्री०) अग्निकोण, अग्नि की स्त्री स्वाहा।—गिरि (पु०) धधकने वाले पर्वत, ज्वालामुखी।

आग्रह तत्० (पु०) [आ+ग्रह+अल्] अतिशय यत्न, प्रयास, अनुग्रह, आसक्ति, आक्रमण, ग्रहण, उपकार, साहस।

आग्रहायण तत्० (पु०) [आ+ग्रह+अय्+अनट्] मार्गशीर्षमास, अगहन मास, किसी के मत में वर्ष का पहला मास।—ेष्टि (स्त्री०) [आग्रहायण+इष्टि] नवान्न भक्षण, नूतन अन्न का प्रारम्भ।

आघात तत्० (पु०) [आ+हन्+णिच्+क्त] हनन, वध, चोट, कोप, अपचय, प्रहार, वधस्थान।

आघार तद्० (पु०) धूप, घृत, छिड़काव, हवि।

आघूर्णन तत्० (पु०) [आ+घूर्ण+अनट्] चक्र के समान घूमना, फिरना, चक्कर खाना।

आघूर्णित तत्० (गु०) [आ+घूर्ण+क्त] घूमता हुआ, घुमाया हुआ।

आघोषण तत्० (पु०) [आ+घुष्+अनट्] प्रचारण, प्रकाश करण, घोषणा करना।

आघ्राण तत्० (पु०) [आ+घ्रा+अनट्] गन्ध-ग्रहण, सूँघना, तृप्ति।—**र्ह** (गु०) [आघ्राण+अर्ह] गन्ध ग्रहण के योग्य, सुगन्ध लेने के उपयुक्त।

आघ्रात तत्० (गु०) [आ+घ्रा+क्त] गृहीत गन्ध, सूँघा हुआ।

आघ्रेय तत्० (गु०) [आ+घ्रा+य] आघ्राण करने के योग्य, सूँघने के उपयोगी।

आङ्गिक तत्० (गु०) अङ्ग निष्पन्न भाव, नाट्य विशेष, अङ्गों के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, शारीरिक, शरीर संबन्धी।

आङ्गिरस तत्० (पु०) देव गुरु, बृहस्पति।

आँच तद्० (स्त्री०) गरम, ताप, ज्वाला।

आँचल तद्० (पु०) अञ्चल, किनारा, कपड़े का अगला हिस्सा।

आचका तद्० अगणित, अकस्मात्, हठात्।

अचातुर्य तत्० (पु०) अपाटव, अकुशलत्व, अनाड़ीपना, अनिपुणता।

आचमन तत्० (पु०) आचवना, कुल्ली, भोजन के अन्त में मुँह धोना, नित्य किये जाने वाले कर्मों के पहले जलद्वारा कण्ठ धोना।

आचम्भित तद्० (गु०) हठात्, अद्भुत, अचरज, अकस्मात्, दैवात्।

आचरण तत्० (पु०) चलन, व्यवहार, रीति, चाल, आचार लौकिक कर्म।—**ीय** (गु०) [आ+चर+अनीय] आचर के योग्य, व्यवहार्य।

आचरित तत्० (गु०) [आ+चर+णिच्+क्त] कृताचरण, व्यवहृत।

आचर्य तत्० (गु०) [आ+चर+य] आचरणीय, कर्तव्य, करणीय।

आचार तत्० (पु०) [आ+चर+घञ्] व्यवहार, चरित्र, वृत्त, शील, रीति, स्नान, आचमन आदि।—**वर्जित** (गु०) आचार रहित, अनाचारी।—**विरुद्ध** (गु०) व्यवहार विरुद्ध, कुरीति।

आचारी तत्० (पु०) शास्त्रीय आचार रखने वाला, शास्त्र के अनुसार चलने वाला, साम्प्रदायिक विशेष, आचार विशिष्ट, आचारान्वित।

आचार्य तत्० (पु०) [आ+चर+ण्यत्] वेदाध्यापक, वेदोपदेष्टा शिक्षादाता, पाठ गुरु, शिक्षा आचार और धर्म की शिक्षा देने वाले।—**मिश्र** (गु०) आर्य, पूजनीय, गुरु।—**ा** (स्त्री०) मन्त्रों की व्याख्या करने वाली, उपदेश दात्री।—**ाणी** (स्त्री०) आचार्य की, गुरु पत्नी।

आचोट तद्० (स्त्री०) आयास, क्षत विक्षत, घाव, अनाकृष्ट, बिना जोती भूमि।

आच्छन्न तत्० (गु०) [आ+छद+क्त] आच्छादित, आवृत, व्याप्त, वेष्टित, रचित, छिपाव, ढाका।

आछा तद्० (अ०) स्वीकारार्थक, उत्तम, अङ्गीकार।

आच्छादक तत्० (पु०) [आ+छद+णक्] आवरणकर्ता, गोपनकारी, ढाँकनेवाला।

आच्छादन तत्० (पु०) वस्त्र, परिधान, आवरण, ढकना।

आच्छादित तत्० (गु०) कृताच्छादन, आवृत, ढाका हुआ।

आच्छाद्य तत्० (गु०) [आ+छद्+ण्यत्] आच्छादनीय, आवृत करने के योग्य।

आच्छिन्न तत्० (गु०) [आ+छिद्+क्त] छेदना, काटना, कर्तन।

आछी तद्० (स्त्री०) अच्छी, उत्तमा, सुघर, बढ़िया, नीकी, भली।

आंजन तद्० (पु०) काजल, सुरमा, आँख में लगाने की चीज़।

आंजला तद्० पसर, दो हाथ भर, अञ्जलि।

आज तद्० (अ०) अद्य, अब, अभी, वर्तमान दिन।—**कल** (अ०) इन दिनों में, कुछ दिनों में।—**कल करना** टालना, हाँ हूँ करना।

आजन्म तत्० (पु०) [आ+जन्म] जन्मावधि, जन्म से लेकर।

आजा तद्० (पु०) पितामह, दादा, पिता का पिता।

आजाना तद्० (पु०) अकस्मात् आना, घटना, अज्ञात, अपरिचित।

आजानु तत्० टहुना तक, जानुपर्यन्त, जानु अवधि।—बाहु (पु०) जानुपर्यन्त लम्बित बाहु, विशाल बाहु, सामुद्रिक शास्त्र में आजानु बाहु होना एक शुभ लक्षण समझा जाता है।

आजि तत्० (स्त्री०) युद्ध, समान भूमि, लड़ाई, संग्राम, रण, क्षण, आक्षेप, आक्रोश, गमन, गति।

आजीव तत्० (पु०) जीविका, जीवनोपाय, वृत्ति, वन्धान।—िका (स्त्री०) वृत्ति, वन्धान, रोज़ी।

आजीवी तद्० (पु०) उपजीवी, उपजीवक।

आजू तद्० (स्त्री०) बिना वेतन के काम करने वाला, बेगार, अवैतनिक, अवेतन।

आज्ञप्त तत्० (पु०) [आ+ज्ञप्+क्त] अनुमति प्राप्त, आदेशित, निदेशित।

आज्ञप्ति तत्० (स्त्री०) [आ+ज्ञप्+क्ति] आदेश, निदेश, विधि, आज्ञा।

आज्ञा तत्० (स्त्री०) आदेश, निदेश, अनुमति, शासन।—कारी (पु०) आज्ञा के अनुसार काम करने वाला, आज्ञावह, आज्ञानुवर्ती, अनुमति पालक।—चक्र (पु०) षट् चक्रों में से छठवाँ चक्र।—तिक्रम (पु०) [आज्ञा+अतिक्रम] आदेशातिक्रम, आज्ञालङ्घन।—दायक (पु०) अनुमतिकारी, आदेश कर्ता।—नुवर्तन (पु०) [आज्ञा+अनुवर्तन] आज्ञा के अनुसार चलना।—पत्र (पु०) पत्री, सन्देशपत्र, आदेशलिपि, निदेश लिखन, हुकुमनामा।—प्रतिघात (पु०) स्वामिद्रोह, राजशासन त्याग।—वर्ती (पु०) आज्ञा के वश, आज्ञावह, आज्ञाधीन।

आज्ञापक तत्० (पु०) [आ+ज्ञा+णिच्] आदेशकारक, आज्ञाकर्ता, स्वामी।

आज्ञापन तत्० (पु०) [आ+ज्ञा+णिच्+ल्युट्] अनुमतिकरण, आदेश करना।

आज्य तत्० (पु०) [आ+अज्+य] घी, घृत, हवि।—प (पु०) पितृलोक विशेष, घृतभोजी।

आँझू तद्० (पु०) आँसु, अश्रु।

आञ्जनेय तत्० (पु०) अञ्जना वानरी का पुत्र, हनुमान।

आँट तद्० (स्त्री०) गाँठ, विरोध, झाड़ी।

आँटना तत्० समाना, भरना, पैठना।

आँट साँट तद्० (स्त्री०) साझा, लगा, लट्टा।

आँटी तद्० (स्त्री०) छोटी अँटिया, गोली।

आँठी तद्० (स्त्री०) गुठली, अँठुली, बीज।

आटा तद्० (स्त्री०) पिसान, चौरा, सूजी।

आटोप तत्० (पु०) [आ+टुप्+अल्] दर्प, गर्व, अहङ्कार, वायुजन्य उदर शब्द।

आठ तद्०, (पु०) संख्या विशेष, अष्ट, चार का दूना।—पहर (पु०) आठयाम, दिनरात।

आंड तद्० (पु०) वृषण, अण्ड, पोता, अण्डकोश।

आड तद्० (स्त्री०) परदा, रोक, ओट।

आडम्बर तत्० (पु०) खटला, उद्योग, पटह, तूर्यरव, हाथी का शब्द, आरम्भ, वस्त्र, दर्प, हर्ष, समारोह, घटा, अहङ्कार्जन, क्रोध।—ी (पु०) दाम्भिक, समारोह, घटा, हर्ष, अहङ्कार।

आड़ा तद्० (पु०) टेढ़ा, तिरछा, बाँका।

आड़ी तद्० (पु०) रक्षक, स्वरविशेष।

आड़ेआना तद्० बचावना, बीच में पड़ना, बाधक होना।

आढ़क तद्० (पु०) परिमाण विशेष, चार सेर।

आढ्य तत्० (पु०) धनवान्, धनी, धनयुक्त, विशिष्ट, अन्वित, धनाढ्य, गुणाढ्य, सम्पन्न।

आढ़त तद्० (स्त्री०) अड्डा, माल का चलान, चलान करने का स्थान।

आढ़तिया तद्० (पु०) व्यापारी, महाजन, बाहर चलान करने वाला।

आणि तत्० (पु०) [आण्+ई] कोन, अन्ति, सीमा।

आँत तद्० (स्त्री०) अँतड़ी, अन्त्र, नाड़ी।

आतङ्क तत्० (पु०) आतङ्क, भय, पीड़ा।

आतत तत्० (पु०) आरोपित, विस्तारित।

आततायी तत्० (पु०) [आतत+अय्+णिन्] यथोद्यत, अनिष्टकारी । (पु०) महापापी, आग लगाने वाला, विष देने वाला, शस्त्रोन्मादी, धनापहारी, भूमि और परदारा अपहारक ये छ आततायी कहे जाते हैं—(शुक्र० नी०) हत्यारा, डाँकू ।

आतप तत्० (पु०) धूप, सूर्य का किरण, सूर्य का प्रकाश ।—त्यय (पु०) [आतप+अत्यय] सूर्य की किरणों का नाश, धूप का अभाव ।—भाव (पु०) [आतप+अभाव] छाया, धूप का अभाव । —दक (पु०) [आतप+उदक] मृगतृष्णा, मरीचिका, सूर्य की किरणों में जलज्ञान ।—त्र, त्रक (पु०) [आतप+त्रै+ड+आतप+त्रै+ड+क] छत्र, छाता, ।—लङ्घन (पु०) धूप लगना ।

आतपन तत्० (पु०) [आ+तप+अनट्] शिव का नाम ।

आतर तत्० (पु०) [आ+तृ+अल्] अन्तर, बीच, उतराई ।

आतर्पण तत्० (पु०) [आ+तृप्+अनट्] प्रीणन, तृप्ति, मङ्गलालेपन ।

आता तद्० (पु०) फल विशेष, सीताफल, शरीफा ।

आतायीपन तद्० (पु०) धूर्तता, खलता, शठता ।

आतायी तद्० (पु०) धूर्त, शठ, (पु०) पक्षि विशेष, चील ।

आतिथेय तत्० (पु०) अतिथि सेवा कारक, अतिथिपूजक, अतिथि सेवा की सामग्री, अभ्यागत का सम्मान करने वाला ।

आतिथ्य तत्० (पु०) अतिथि के भोजन आदि के पदार्थ, अतिथि सेवा ।

आतिदेशिक तत्० (पु०) अतिदेश प्राप्त, दूसरे प्रकार से उपस्थित ।

आतिशय्य तत्० (पु०) आधिक्य, अतिरेक ।

आतुर तत्० (पु०) रोगी, पीड़ित, गति शक्ति रहित, कातर, व्याकुल, अस्थिर ।

आतू तद्० (स्त्री०) गुरुवायन, पण्डितायन ।

आतोद्य तद्० (पु०) [आ+तुद्+य] वाद्य, वीणा, मुरज, वंशी का शब्द, चतुर्विध वाद्य ।

आत्त तत्० (पु०) [आ+दा+क्त] गृहीत, प्राप्त, पकड़ लिया गया ।—गन्ध (पु०) गृहीत गन्ध, हतदर्प, अभिभूत, पराजित ।—गर्व (पु०) खण्डित गर्व, अहङ्कार चूर्ण, भग्नदर्प ।

आत्म तद्० (पु०) निज, अपना, स्वीय, जीव । —कलह (पु०) [आत्मन्+कलह] मित्रों के साथ विवाद, गृह कलह ।—कार्य (पु०) [आत्मन+कार्य] अपना काम, गोपनीय कार्य । —गरिमा (स्त्री०) [आत्मन्+गरिमा] आत्मश्लाघा, दर्प, अहङ्कार ।—ग्राही (पु०) [आत्मन्+ग्रह+णिन्] आत्मम्भरी, स्वार्थ पर, स्वार्थी । —घात (पु०) [आत्मन्+घात] आत्म हत्या, स्वयंमरण, अपने किये उपाय से मरण ।—ज (पु०) [आत्मन्+जन्+ड] पुत्र, सन्तान, बेटा । (पु०) स्वोत्पन्न ।—जन्मा (पु०) [आत्मन्+जन्+मन्] पुत्र, तनय, सन्तान ।—जा (स्त्री०) [आत्मन्+जन्+ड+आ] कन्या, पुत्री, दुहिता, बुद्धि ।—ज्ञान (पु०) [आत्मन्+ज्ञा+अनट्] ब्रह्म विषयक ज्ञान, स्वानुभव ।—तत्व (पु०) [आत्मन्+तत्व] ब्रह्म तत्व, आत्म याथार्थ्य ।—ता (स्त्री०) [आत्मन्+ता] बन्धुता, प्रणय, सद्भाव, प्रेम, प्रीति । —नेपद (पु०) क्रिया का चिन्ह विशेष ।—वञ्चक (पु०) [आत्मन्+वञ्च्+णक्] कृपण, पापी, नास्तिक ।—वत् (पु०) [आत्मसदृश, अपने समान ।—वश (पु०) [आत्मन्+वश] स्वाधीन, स्ववश, स्वप्रधान ।—म्भरि (पु०) अपना पेट पालने वाला, स्वार्थी ।—योनि (पु०) आत्मन्+योनि] ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव ।—रक्षा (स्त्री०) [आत्मन्+रक्षा] अपना रक्षण, आत्म त्राण ।—लाभ (पु०) [आत्मन्+लाभ] उत्पत्ति, स्वलाभ स्वार्थ ।—श्लाघा (स्त्री०) [आत्मन्+श्लाघा] आत्म गर्व, अपनी प्रशंसा ।—सम्भव (पु० स्त्री०) [आत्मन्++सम्भव] पुत्र, कन्या ।—सात् (पु०)

[आत्मन् + सात्] अपने आधीन, स्वहस्तगत। —हत्या (स्त्री०) [आत्मन् + हन् + क्यप्] आत्मघात, स्ववध।—हा (पु०) [आत्मन् + हन् + क्विप्] अपनेको मारने वाला, आत्मघाती, अपने प्रयत्न से मृत।

आत्मर तत्० (पु०) [आ + अत् + मन्] यत्न, धृति, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, देह, मन, परब्रह्मचर्तन, पुत्र, जीव, अर्क, हुताशन, वायु।—भिमत (पु०) [आत्मन् + अभिमत] आत्मसम्मत, अपना मतानुयायी।

आत्मिक तद्० (पु०) मन का, अपना, विचार।

आत्मीय तत्० (पु०) [आत्मन् + ईय] स्वकीय, अन्तरङ्ग, स्वजन, आत्मजन।—ता ह्यता, बन्धुता, अन्तरङ्गता, सद्भाव, प्रणय।

आत्मोत्कर्ष तत्० (पु०) [आत्मन् + उत्कर्ष] अपनी श्रेष्ठता, अपनी प्रभुता।

आत्मोद्भवा तत्० (स्त्री०) [आत्मन् + उद्भवा] कन्या, पुत्री, आत्मजा।

आत्यन्तिक तत्० (पु०) [अत्यन्त + इक्] अतिशय, विस्तार, प्रचुर, अधिक।

आत्रेय तत्० (पु०) अत्रि मुनि का पुत्र, दुर्वासा, चन्द्र, शरीरस्थ रस धातु।—ी (स्त्री०) नदी विशेष, ऋषिपत्नी विशेष।

आथर्वण तत्० (पु०) अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण, अथर्व समूह।

आद्यन्त तद्० (पु०) आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त।

आदर तत्० (पु०) [आ + दृ + अल्] आस्था, सम्मान, मर्यादा, प्रतिष्ठा।—णीय (पु०) सम्मानार्ह, मान्य।

आदर्श तत्० (पु०) [आ + दृश् + अल्] दर्पण, मुकुर, आदर्शन, निदर्श, प्रतिपुस्तक, मूल पुस्तक, टीका, चिन्ह।

आदा तद्० (पु०) मूल विशेष, अदरख, अद्रक।

आदान तत्० (पु०) [आ + दा + अनट्] ग्रहण, लेना, स्वीकार, अश्वाभरण विशेष, रोगलक्षण। —प्रदान (पु०) [आदान + प्रदान] लेन देन, त्याग, ग्रहण।

अदालत तद्० विचारस्थान, धर्माधिकरण।

आदि तत्० (पु०) पूर्व, प्रथम, मूल, अग्र, पहिला आकार, उत्पत्तिस्थान।—क (अ०) पहिले से, इत्यादि, और सब।—कवि (पु०) वाल्मीकि मुनि, रामायणकर्ता, कहते हैं सर्वप्रथम छन्दोबद्ध कविता इन्होंने ही की थी, क्रौञ्च युगल को देख अकस्मात् इनकी छन्दोमयी वाणी प्रकाशित हुई, अतएव यह आदि कवि कहे जाते हैं।—कारण (पु०) पहला कारण, पूर्व निमित्त, आद्य हेतु, मूल हेतु, निदान।—देव (पु०) नारायण, विष्णु। वराह (पु०) विष्णु का वराह अवतार।—राज (पु०) सर्व प्रथम राजा, पृथुराज।—शूर (पु०) राजा विशेष, बङ्गाल के सेनवंशीय राजाओं का पहिला राजा, इस राजा का नाम वीरसेन था, परन्तु सेनवंश का यह प्रथम राजा था इसीसे इसे आदिशूर भी कहते हैं। पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिये इसी राजा ने कन्नौज से पाँच वेदज्ञ ब्राह्मण बुलवाये थे, उस समय बौद्धधर्म की प्रबलता के कारण बङ्गाल में वेदज्ञ ब्राह्मणों का अत्यन्त अभाव हो गया था।

आदित्य तत्० (पु०) देवता, सूर्य, दिवाकर, अर्क वृक्ष, रवि, भानु।—वार (पु०) सूर्यवार, सूर्य का दिन, सप्ताह का अन्तिम दिन।—मण्डल (पु०) सूर्य मण्डल, सूर्य लोक।—सूनु (पु०) सुग्रीव वानर, यम, शनैश्चर, सावर्णि मनु, वैवस्वत मनु, कर्ण।

आदितेय तत्० (पु०) अदिति के पुत्र, देवगण।

आदिम तत्० (पु०) [आदि + मट्] आद्य, प्रथम उत्पन्न वस्तु।

आदिष्ट तत्० (पु०) [आ + दिश् + क्त] आदेशित, आज्ञप्त, अनुमत, कथित, प्राप्तोपदेश, गृहीत, आज्ञा।

आदृत तत्० (पु०) [आ + दृ + क्त] आदरान्वित, सादर सम्मानित, पूजित, अर्चित।

आदेश तत्० (पु०) [आ + दिश् + अन्] आज्ञा, अनुमति, व्याकरण में एक वर्ण के स्थान में दूसरे वर्ण की उत्पत्ति, प्रकृति और प्रत्यय को मिलाने वाले कार्य, ज्योतिष शास्त्र का फल, फलादेश।—ी (पु०) आज्ञापक, आज्ञाकारक, गणक, दैवज्ञ।

—ष्य (पु०) [आ+दिश्+तृण्] पुरोहित, याजक, अनुमतिप्रद, आज्ञाकारक, आदेशकर्ता।

आद्योपान्त तत्० (गु०) [आद्य+उपान्त] प्रारम्भ से अन्त तक, समस्त, सम्पूर्ण।

आदौ तत्० (अ०) प्रथम, आगे, आदि।

आद्य तत्० (अ०) प्रथम, अगला, पहिला, भोजनीय द्रव्य।—कवि (पु०) वाल्मीकि मुनि, ब्रह्मा।

आद्यन्त तत्० (गु०) [आदि+अन्+क्त] प्रथम और अन्त, आद्य, और प्रान्त, प्रथम से लेकर शेष पर्यन्त, आद्योपान्त, आदि अन्त।

आधा तद्० (पु०) आधा, अर्द्धक, अर्द्ध, बराबर भाग।—कपाली शिरोरोग विशेष, अर्द्धशिरो वेदना।

आधान तत्० (पु०) धारण, गर्भधारण, स्थापित द्रव्य, अग्न्याधान, गर्भाधान।—िक (पु०) [आ+धान+इक्] गर्भाधान सस्कार।

आधार तत्० (पु०) आश्रय, आहार, अधिकरण, पात्र, अम्बुधारण, वृक्ष का आल बाल, सेतु।

आधाशिसी तद्० (स्त्री०) अधकपाली, आधे सिर में पीड़ा, रोग विशेष।

आधि तत्० (पु०) [आ+ध्यै+कि] मन पीड़ा व्यसन, बन्धक, प्रत्याशा, आधार।

आधिक्य तत्० (पु०) बहुतायत, अधिक, अधिकत्व, अतिशय।

आधिदैविक तत्० (गु०) देवप्रयुक्त, दैवाधीन, बौद्धपदार्थ, बुद्धि सम्बन्धी।

आधिपत्य तत्० (पु०) स्वामित्व, प्रभुत्व, ऐश्वर्य, अधिकार।

आधिवेदनिक तत्० (गु०) द्वितीय विवाह के लिये, प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।

आधिभौतिक तत्० (गु०) जो भूतों के सम्बन्ध से उत्पन्न हो।

आधीन तत्० (गु०) आज्ञाकारी, वश, नम्र, स्वाधिकार युक्त, वशवर्ती।

आधुनिक तत्० (गु०) इदानीन्तन, साम्प्रतिक, अधुनातन, नवीन, नव्य, टटका अभीका, नया।

आधूत तत्० (गु०) [आ+धू+क्त] ईषत्कम्पित, व्याकुल, कम्पित, चालित।

आधेआध तद्० आधी, आध, अर्द्धार्द्ध।

आधेक तद्० अर्द्धभाग, तुल्य दो भागों का एक भाग।

आधेय तत्० (गु०) [आ+धा+य] जो आधार का पूरक हो।

आधोरण तत्० (पु०) [आ+धोर+अनट्] हस्तिपक, महावत, हाथीवान्।

आध्मात तत्० (गु०) [आ+ध्मा+क्त] शब्दित, दग्ध, अग्नि सयोगान्वित, (पु०) वात रोग विशेष, युद्ध, सयत।

आध्मान् तत्० (पु०) [आ+ध्मा+अनट्] वायुरोग, वायु से पेट फूलना।

आध्यात्मिक तत्० (गु०) आत्माश्रित, दुःख विशेष, आन्तरिक।

आध्यान तत्० (पु०) [आ+ध्या+अनट्] ध्यान, चिन्ता, स्मरण, दुर्भावना, अनुशोचना, उत्कण्ठापूर्वक स्मरण।

आध्यापक तत्० (पु०) [अधि+इङ्+णिच्+अक्] पाठगुरु, शिक्षक, उपाध्याय।

आध्वनीन तत्० (पु०) [अध्वन+ईन] पथिक, पान्थ, पाथेय, मार्गव्यय।

आन तद्० (स्त्री०) और, अन्य, प्रतिज्ञा, उच्छ्वास, बहिर्मुख श्वास, भिन्न।

आनक तत्० (पु०) [आङ्+णक्] पटह, भेरी, मृदङ्ग, शब्द युक्त मेघ।

आनक—दुन्दुभि तत्० (पु०) [आनक+दुन्दुभि] श्री कृष्ण का पिता वासुदेव, वृहत, भेरी।

आनत तद्० लाता है, ले आता है, लाते हो।

आनत तत्० (गु०) [आ+नम्+क्त] अवनत, नम्रीभूत।

आनद्ध तत्० (पु०) [आ+नह्+क्त] चर्मावृतमुख वाद्य, नगारा आदि, वस्त्रमात्र, वेशरचना आदि, बद्ध, मिलित, जोड़ा हुआ।

आनन तत्० (पु०) [अन्+अण्] मुँह, मुख, आस्य, वदन, चेहरा।

आनन्तर्य तत्० (पु०) पश्चाद्भाव, शेष, अनन्तरत्व, नैकट्य, सन्निकर्ष।

आनन्त्य तत्० (पु०) अपरिसीमता, असंख्यता, अत्यधिकता।

आनन्द तत्० (पु०) [आ+नन्द+घञ्] ह्लाद, हर्ष, सुख। (गु०) हर्षयुक्त सुखी।—कर (गु०) आह्लादकर, सुखजनक।—कानन (पु०) आनन्द दायक वन, काशी पुरी का नाम। —चित्त (गु०) हर्ष से प्रफुल्लचित्त।—पट (पु०) नयी विवाहिता स्त्री का वस्त्र, नवोढ़ा का कपड़ा।—पूर्ण (गु०) अधिक आनन्द, समस्त आनन्द।—प्रभव (पु०) रेत, वीर्य, शुक्र।—शय्या (स्त्री०) नवोढ़ा शयन।—अर्णव (पु०) [आनन्द+अर्णव] आह्लाद सागर, सुख समुद्र।—वर्द्धन (पु०) यह कवि काश्मीर निवासी और प्रसिद्ध अलङ्कार शास्त्री थे, अवन्ति वर्मा के राज्य काल में यह काश्मीर में वर्तमान थे, काव्यालोक, ध्वन्यालोक, सहृदयालोक नाम के ग्रन्थ संस्कृत में उन्होंने बनाये हैं। अवन्ति वर्मा सन् ८५५ से ८८० के बीच तक रहे, आनन्दवर्द्धन का भी यही समय है।—गिरि तत्० (पु०) प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डित, यह शङ्कराचार्य के शिष्य थे, खृष्टीय नवम शताब्दी में यह उत्पन्न हुए थे, शङ्कर दिग्विजय नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया था, इसके अतिरिक्त उपनिषदों का भाष्य, और श्रीमद्भगवद्गीता की टीका इन्होंने बनायी थी।—थु तत्० (पु०) [आनन्द+थु] आह्लाद, हर्ष।—मयकोष तत्० (पु०) पञ्चकोष के अन्तर्गत, कोष विशेष, सत्व, प्रधान, ज्ञान, कारण शरीर, सुषुप्ति।

आनन्दि तत्० (पु०) [आ+नन्द+इ] हर्ष, आह्लाद, सुख।

आनन्दित तत्० (गु०) [आ+नन्द+क्त] आनन्द युक्त, हर्षान्वित, हृष्ट।

आनयन तत्० (पु०) [आ+नी+अनट्] स्थानान्तर नयन, ले आना, लाना।

आनर्त तत्० (पु०) [आ+नृत+अण्] देश विशेष, द्वारका पुरी, नृत्यस्थान, युद्ध, आनर्त देशवासी मनुष्य।

आनर्तित तत्० (गु०) [आ+नृत+क्त] कम्पित, नृत्यविशिष्ट।

आनवी तद्० (क्रि०) लाइये, ले आना, लेते आइये।

आनहु तद्० (क्रि०) लाओ, ले आओ, उपस्थित करो।

आना तद्० (पु०) -) चार पैसा, आना, पाव आना, सोलह हिस्सा का एक हिस्सा।

आनाकानी तद्० (स्त्री०) टालमटोल।

आनाड़ी तद्० (क्रि०) अनभिज्ञ, निर्बोध, अकर्मण्य।—पना मूर्खता, अनभिज्ञता।

आनाजाना तद्० (क्रि०) आवागमन, यातायात।

आनिहौं तद्० (क्रि०) लाऊँगा, ले आऊँगा।

आनीत तत्० (गु०) [आ+नी+क्त] आनयन करण, ले आना।

आनुकूल्य तत्० (पु०) अनुकूलता, सहायता।

आनुपूर्व तत्० (पु०स्त्री०) क्रमिक, अनुक्रम, क्रमागत, पर्याय, दव।—ी (स्त्री०) परिपाटी, अनुक्रम, क्रमानुगत।

आनुमानिक तत्० (गु०) अनुमान सिद्ध, गम्य।

आनुषङ्गिक तत्० (गु०) प्रसङ्गाधीन, प्रस्ताव क्रम से युक्तिसिद्ध, सम्बन्धी, अप्रधान फल, गौणफल।

आनृशंस्य तत्० (पु०) अनिष्ठुरता, दया, स्नेह।

आनेता तद्० (पु०) [आ+नी+तृण्] आनयन कर्ता, आहरण कर्ता।

आन्तरिक तत्० (गु०) अन्तःकरण संबन्धी, अन्तरस्थ, मनोगत, मानसिक।

आन्दू तद्० (पु०) हाथी बाँधने की शृङ्खल।

आन्दोलन तत्० (पु०) [आन्दोल+अनट्,] झूलन, अनुशीलन, कम्पन, इधर उधर जाना, चलन, बार बार कथन, ध्यान, पुनः पुनः ।

आन्वीक्षिकी तत्० (स्त्री०) न्यायशास्त्र ।

आन्न तद्० (क्रि०) आनन करना, ले आना ।

आप तद्० अपना, अपने, स्व ।

आप तत्० (पु०) [आप्+अस्] अष्ट वस्तुओं में एक, जल, पाय ।

आपकाज तद्० (गु०) आपकाजी, स्वार्थी ।

आपण तत्० (पु०) [आ+पण्+अल्] पण्य विक्रयशाला, दूकान, हाट, बाजार ।—**णिक** (पु०) वणिक्, व्यवसायी, दुकानदार ।

आपगा तत्० (स्त्री०) [आप्+गम्+ड+आ] नदी, स्रोतस्वनी ।

आपज्जनक तत्० (गु०) [आपद्+जनक] विपदजनक, अनिष्टकारी ।

आपत्ति तद्० (स्त्री०) विपत्ति, दुःख, क्लेश ।

आपद् तत्० (स्त्री०) आपदा, विपद, विपत्ति ।—**ग्रस्त** (गु०) विपन्न, आपत्ति में फंसा हुआ ।

आपनिक तद्० (पु०) पन्नग, पन्ना, मरकत, इन्द्र नीलमणि, देश विशेष ।

आपन्न तत्० (गु०) प्राप्त शरणय, अभागा, आपदग्रस्त, आपदप्राप्त ।—**सत्वा** (स्त्री०) [आपन्न+सत्व+आ] गर्भवती, गुर्विणी, अन्तःसत्वा ।—**नाश** (पु०) [आप+नश्+घञ्] आपद नाश, विपत्ति नाश ।

आपमित्यक तत्० (पु०) [अपमित+अक्] विनिमयप्राप्त, बदला किया हुआ, गृहीत द्रव्य ।

आपरूप तद्० (पु०) आये, आप, ईश्वर, साक्षात् ।

आपस तद्० (पु०) परस्पर, आप सब, निज, स्वय ।

आपसा तद्० (स्त्री०) आप समान, अपने जैसा ।

आपा तद्० (स्त्री०) बड़ी बहिन, ज्येष्ठा भगिनी, आपनी ।

आपाक तद्० (पु०) अग्यापजाय, कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन पकाने का स्थान, आँवा ।

आपाततः तत्० (अ०) सम्प्रति, इस समय के समान ।

आपाद-पर्यन्त तत्० (अ०) चरणावधि मस्तक पर्यन्त, पैर से ले कर सिर तक ।

आपादमस्तक तत्० (,०) चरणा वधि—शिर पर्यन्त ।

आपान तत्० (पु०) [आ+पा+अनट्] मद्यपानार्थ गोष्ठी, मतवालों का झुण्ड, मद्यप, मतवाला ।

आपामर-साधारण तत्० (अ०) [आ+पामर+साधारण] अन्त्य मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य, सर्वसाधारण ।

आपिञ्जर तत्० (पु०) स्वर्ण, हेम, कनक, काञ्चन ।

आपीड़ तत्० (पु०) शिखास्थित माला, शेखर, शिरोमाला, शिरोभूषण, मुकुट कलगी ।

आपीन तत्० (पु०) [आ+पा+क्त] गोस्तन, ईषत् स्थूल, गौका थन, कठोर, मोटा, बड़ा ।

आपूर्त्ति तत्० (स्त्री०) [आ+पूर+क्ति] ईषत् पूरण, सम्यक्, पूरण ।

आपृच्छा तत्० (स्त्री०) [आ+पृच्छ+ड+आ] आभाषण, आलाप, जिज्ञासा, प्रश्न ।

आप्त तत्० (गु०) [आप्+क्त] प्रत्ययित, विश्वस्त, लब्ध, सत्य, बन्धु, अभ्रान्त, सचा, विश्वसित, किसी भी कारण से कभी झूठ न बोलने वाला ।—**कारी** (पु०) [आप्त+कृ+णिन्] विश्वासी, विश्वस्त व्यक्ति ।—**गर्व** (गु०) आप्ताहङ्कार, दम्भ विशिष्ट, दाम्भिक ।—**ग्राही** (गु०) स्वार्थ पर आत्मम्भरि, लोभी ।—**वर्ग** (पु०) आत्मीय स्वजन, बन्धु बान्धव, माननीय मित्र ।—**सार** (पु०) [आप्त+सृ+घञ्] आत्मरक्षण, स्वशरीर गोपन, स्वायत्त ।

आप्तोक्ति तत्० (स्त्री०) [आप्त+उक्ति] सिद्धान्तवाक्य, आप्तवचन, विश्वस्त व्यक्ति का कथन ।

आप्यायित तत्० (पु०) [आ+प्याय+क्त] तृप्त, प्रीत, सन्तुष्ट, आनन्दित।

आप्रच्छन तत्० (पु०) [आ+प्रच्छ+अनट्] आने या जाने के समय, मित्रों में परस्पर कुशल प्रश्न जनित आनन्द।

आप्लव तत्० (पु०) [आ+प्लु+अल्] स्नान, अवगाहन, जलमय, सर्वत्र डुबाव।—व्रती (पु०) [आप्लव+व्रती] स्नातक ब्राह्मण आप्लुत व्रती।

आप्लुत तत्० (पु०) [आ+प्लु+क्त] स्नान। (पु०) कृतस्नान, विहितावगाहन। (पु०) स्नातक, सिक्त, भींगा।—व्रती (पु०) [आ+प्लुत+व्रत+इनि] ब्रह्मचर्य त्यागानन्तर जो गृहस्थ आश्रम अवलम्बन करते हैं, स्नातक ब्राह्मण, समाप्त वेदाध्ययन स्नान शील।

आफू तद्० (स्त्री०) अमल, अफीम।

आबाधा तत्० (स्त्री०) लम्ब, रेखा विशेष।

आभरण तत्० (पु०) [आ+भृ+अनट्] भूषण, अलङ्कार गहना।

आभा तत्० (स्त्री०) प्रभा, शोभा, दीप्ति, द्युति, ज्योति, आलोक, उज्ज्वलता, चमक, शोभा, झलक।

आभाष तत्० (पु०) [आ+भाष्+अल्] भूमिका, अनुष्ठान, उपक्रमणिका, प्रबन्ध, सम्भाष।

आभाषण तत्० (पु०) [आ+भाष्+अनट्] आलापन, कथन, सम्भाषण।

आभास तत्० (पु०) [आ+भास्+अल्] सदृश, प्रतिबिम्ब, दीप्तिदोष, अभिप्राय, अवतरणिका।

आभास्वर तत्० (पु०) चौंसठ संख्यक, गण देवता विशेष।

आभिचारिक तत्० (पु०) [अभि+चर्+ष्णक्] अभिचारकर्त्ता, हिंसा कर्म का प्रयोग करने वाला।

आभिजात्य तत्० (पु०) वंश संबन्धी, कौलीन्य, कुलीनता, सद्वंश, पाण्डित्य।

आभिधानिक तत्० (पु०) कोशवेत्ता, अभिधानोक्त, अभिधान में प्रसिद्ध।

आभिमुख्य तत्० (पु०) संबोधन, अभिमुख करण, संमुखीनत्व, समक्ष वर्तिता, सम्मुखता, सामना।

आभीर तत्० (पु०) गोप, अहीर, ग्वाला, ब्राह्मण के औरस से अम्बष्ठा जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष।— पल्लि, पल्ली (स्त्री०) गोपग्राम, गोष्ठघोष, बथान। (स्त्री०) आभीरी।

आभूषण तत्० (पु०) अलङ्कार, गहना, भूषण।

आभ्यासिक तत्० (पु०) श्रुतिधर, अभ्यासकर्त्ता।

आभ्युदयिक तत्० (पु०) श्राद्ध विशेष, अभ्युदय संपन्न, सौभाग्यवान्, शुभान्वित।

आम तत्० (पु०) [अम्+घञ्] पाकरहित, अपक्व, कच्चा, असिद्ध, (पु०) आमाशय रोग, आम्रफल।—गन्धि (पु०) गन्धयुक्त, चिता का धूम प्रभृति, कच्चे माँस के गन्धयुक्त पदार्थ, दुर्गन्ध।—चूर आम का सूखा चूर्ण, आम की खटाई।

आमड़ा तद्० (पु०) फल विशेष।

आमन्त्रण तत्० (पु०) [आ+मन्त्र+अनट्] संबोधन, आह्वान, निमन्त्रण।

आमन्त्रित तत्० (पु०) [आ+मन्त्र+क्त] निमन्त्रित, आहूत।

आमय तत्० (पु०) [आ+मय्+अल्] रोग, पीड़ा, व्याधि।

आमयावी तत्० (पु०) [आमय+अत्+इस्] रोगी, पीड़ित।

आमरक्त तत्० (पु०) उदर रोग विशेष, लाल मल निकलने की पीड़ा, अतिसार, उदर रोग।

आमर्श तत्० (पु०) [आ+मृश्+अल्] परामर्श, विवेचन, सुचिन्ता।

आमर्ष तत्० (पु०) [आ+मृष्+अल्] क्रोध, रोष, राग।

आमला तद्० (पु०) आमलक, फल विशेष, धात्रीफल, कार्तिक मास में इस वृक्ष की पूजा होती है।

आमवात् तत्० (पु०) पित्त से उत्पन्न चर्म रोग।

आमशूल तत्० (पु०) रोग विशेष, अजीर्ण होने के कारण उदर को पीड़ा विशेष, वायु गोला, वायु शूल ।

आमात्य तत्० (पु०) [आमा + त्यप्] प्रधान, मन्त्री, पात्र ।

आमान्न तत्० (पु०) [आम + अद् + क्त] अपक्वान्न, तण्डुल, कच्चा अन्न, सीधा, कोरा अन्न ।

आमाशय तत्० (पु०) [आम् + आ + शि + अच्] अपक्व स्थान, आमस्थली, उदरस्थ एक प्रकार की थैली, अतिसार, आमरोग ।

आमिष तत्० (पु०) माँस मत्स्य आदि भोजन की वस्तु, सम्भोग, घूँस, रिश्वत, लोभ, सञ्चय, लाभ, काम के गुण, रूप, भोजन ।—**प्रिय** (पु०) कङ्क पक्षी, बाज पक्षी । (गु०) मत्स्य माँस से सन्तुष्ट मनुष्य ।—**भुक्** (गु०) माँस भोक्ता, माँसाशी ।—**श्शी** (गु०) मत्स्यमाँस भोजन शील, माँस-भक्षक ।

आमूल तत्० (पु०) मूल पर्यन्त, कारण, मूलावधि, पहिले से ।

आमृष्ट तत्० (गु०) [आ + मृष् + क्त] मर्दित, उच्छेदित, अपमानित ।

आमोद तत्० (पु०) [आ + मुद् + अच्] अति दूरगामी गन्ध, सौरभ, हर्ष, आनन्द, कौतुक ।

आमोदित तत्० (गु०) [आ + मुद् + क्त] आनन्दित, जात हर्ष, सुगन्धीकृत, सुरभित ।

आमोदी तत्० (गु०) [आ + मुद् + णिन्] मुख वासन, मुख को सुगन्धित करने वाली वस्तु, हर्ष विशिष्ट, सुगन्धयुक्त, सौरभान्वित, आह्लादित ।

आम्नाय तत्० (पु०) [आ + म्ना + य] वेद निगम, उपदेश, प्राचीन परिपाटी, सम्प्रदाय ।

आम्बर तद्० (स्त्री०) कहरुवा, बनावटी मूँगा ।

आम्र तत्० (पु०) फल विशेष, आम, रसाल सहकार ।

आम्राई तद्० (स्त्री०) आम का बाग, (सं०)आम्रराजि ।

आम्रेडन तत्० (पु०) एक ही बात को पुन. पुनः कथन, पुनरुक्ति, द्विवार या त्रिवार कथित ।

आय तत्० (पु०) लाभ, धनागम, उपार्ज्जन, आमदनी ।

आयत तत्० (गु०) [आ + यम् + क्त] दीर्घ, लम्बा, विस्तृत, सधवात्व, सधवा का, साधारण धर्म, धूप ।

आयतन तत्० (पु०) [आ + यत् + अनट्] यज्ञ स्थान, देव स्थान, परिसर, प्रस्थ, प्रशस्त, चौड़ा, बड़ा, विशाल, फैला हुआ ।

आयति तत्० (स्त्री०) [आ + यम् + क्ति] उत्तरकाल, भविष्यत्काल ।

आयत्त तत्० (गु०) [आ + यत् + क्त] अधीन, वशीभूत, वशतापन्न, वश्य ।

आयसु तद्० (पु०) आज्ञा, आदेश, प्रेरण, यथा "पठुनाई कहँ आयसु दीजै" ।— पद्मावत ।

आया तद्० (स्त्री०) लड़कों को खिलाने वाली, उपमाता, धात्री, धाय ।

आयात तत्० (गु०) [आ + या + क्त] आगत, उपस्थित ।

आयाम तत्० (पु०) [आ + यम + घञ्] दैर्घ्य, लम्बा, स्तुति, विस्तार, चौड़ा ।

आयास तत्० (पु०) [आ + यस् + घञ्] श्रान्ति, श्रम, क्लेश, परिश्रम, व्यायाम, प्रयास, यत्न ।

आयुः तत्० (पु०) [आ + अय् + उस्] जीवितकाल, जीवन समय, उम्र ।

आयुध तत्० (पु०) [आ + युध् + क] हथियार, अस्त्र, शस्त्र, धनुष आदि ।—**गार** (पु०) [आयुध + आगार] अस्त्रगृह ।

आयुधिक तत्० (गु०) अस्त्रजीवी, शस्त्राजीव, अस्त्रधारी ।

आयुधीय तत्० (गु०) अस्त्रधारी, शस्त्राजीव ।

आयुर्वेद तत्० (पु०) [आयुस् + विद् + अच्] अष्टादश विद्यान्तर्गत धन्वन्तरि प्रणीत विद्या विशेष, अथर्ववेद का उपाङ्ग, चिकित्सा शास्त्र, वैद्यक शास्त्र, निदान शास्त्र ।—**ी** (गु०) आयुर्वेदज्ञ, चिकित्सा व्यवसायी, वैद्य ।

आयुष्कर तत्० (गु०) [आयुस्+कृ+अच्] परमायुजनक, आयु वृद्धि कारक, आयुष्य, आयुवर्द्धक।

आयुष्काम तत्० (गु०) दीर्घजीवी, आयुप्रार्थी।

आयुष्टोम तत्० (पु०) [आयुस्+स्तोम्+अच्] यज्ञ विशेष, आयु वृद्धिकर यज्ञ।

आयुष्मान् तत्० (गु०) [आयुस्+मत्] चिरजीवी, दीर्घजीवी, दीर्घायु, (पु०) सप्तविंशतियोगों में एक योग विशेष।

आयुष्य तत्० (गु०) पथ्य, आयु का हित कारक, आयुवर्द्धक।

आयोगव तत्० (पु०) शूद्र के औरस से वैश्या के गर्भ में उत्पन्न, जाति विशेष।

आयोजन तत्० (पु०) [आ+युज्+अनट्] आहरण, तयारी, उद्योग।

आयोधन तत्० (पु०) [आ+युध्+अनट्] युद्ध, रण, संग्राम, वध।

आर तद्० (पु०) काँटा, पैना, अंकुश, मङ्गल, शनिश्चर, लुहार, चमार, ताँबा, पीतल।

आरचा तत्० (स्त्री०) मूर्ति, प्रतिमा, अर्चा, पूजा।

आरज तद्० (पु०) बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज।

आरत तद्० (गु०) आर्त, पीड़ित, दुःखित, व्याकुल, अत्यन्त दुःखी, दुःख का दबोचा हुआ, अति पीड़ित, दुःखान्वित।

आरता तद्० (पु०) दुलहे की आरती, विवाह की एक रीति विशेष।

आरति तद्० (ती०) (स्त्री०) देवता को दीप दिखाना, दीपदर्शायन, निवृत्ति।

आरन तद्० (पु०) अरण्य, वन, कानन यथा— "कीन्हेसि मायज आरन रहे" — भागवत।

आरब्ध तत्० (गु०) उपक्रान्त, आरम्भ किया गया।

आरम्भ तत्० (पु०) प्रारम्भ, उपक्रम।

आरा तद्० (पु०) चर्मभेदक शस्त्र, काष्टभेदक, अस्त्र, करांत, दरांत, क्रकच।—कस क्रकचव्यवहारकारी, लकड़ी चीरने वाला।

आराति तत्० (पु०) शत्रु, विपक्ष, वैरी, अरि, रिपु।

आरात् तत्० (अ०) दूर, निकट, समीप।

आरात्रिक तत्० (पु०) आरति नीराजन, नीराजन पात्र, आरति प्रदीप।

आराधक तत्० (गु०) [आ+राध्+णक्] पूजक, सेवक, अर्चक, पुजारी।

आराधन तत्० (पु०) [आ+राध्+अनट्] साधना, उपासना, तोषण।—ा (स्त्री० [आ+राध्+अङ्+आ] उपासना, सेवा, परिचर्या, शुश्रूषा।

आराधित तत्० (गु०) [आ+राध्+क्त] उपासित, साधित, पूजित।

आराध्य तत्० (गु०) [आ+राध्+य] आराधना के योग्य, उपास्य, सेवनीय।

आराम तत्० (पु०) [आ+रम्+घञ्] उपवन, बाग, विश्राम, उपशम, पीड़ा की शान्ति, सुख।

आरी तद्० (स्त्री०) करौती, क्षुरप्र।

आरुंधना तद्० (क्रि०) गला दबाना, श्वास रोक।

आरूढ़ तत्० [आ+रुह+क्त] कृत आरोहण, वृक्ष आदि पर चढ़ा हुआ, आरोहित, चढ़ा।

आरोग तद्० (गु०) नीरोग, आराम, सुखी, सुस्थ, रोग रहित।

आरोग्य तत्० (पु०) [आ+रुज्+ष्यञ्] रोग हीनता, रोगाभाव, अनामय, आराम, स्वास्थ्य।

आरोप तत्० (पु०) [आ+रूप+घञ्] मिथ्या रचना, कल्पना, बनावट।

आरोपण तत्० (पु०) [आ+रुप+अनट्] चढ़ाव, स्थापन, चढ़ाना।

आरोपित तत्० (गु०) [आ+रुप+क्त] कृतारोपण, निहित, काल्पनिक, सौंपा हुआ, न्यास रखा हुआ।

आरोहण तत्० (पु०) [आ+रुह+अनट्] उत्थान, चढ़ाव, सीढ़ी, सोपान, नीचे से ऊपर जाना।

आर्जव तत्० (पु०) [ऋजु+अ] सारल्य, सरलता, नम्रता, विनय।

आर्त तत्० (गु०) पीड़ित, अस्वस्थ, क्लेशित। —नाद (पु०) [आ+नद+घञ्] पीड़ित ध्वनि, क्लेश जन्य चीत्कार, कातर स्वर। —स्वर (पु०) आर्तनाद।

आर्तव तत्० (पु०) स्त्रीरज, स्त्रियों का ऋतुकाल, मासिक, पुष्प ऋतु में उत्पन्न।

आर्त्विज्य तत्० (पु०) ऋत्विज का कर्म, पौरोहित्य, पुरोहित का कर्म।

आर्थिक तत्० (गु०) अर्थज्ञ, विज्ञ, पण्डित, धनी। —ता (स्त्री०) अर्थविषयक ज्ञान।

आर्द्र तत्० (गु०) सजल वस्तु, भीजा, गीला, सरस, सीला।

आर्द्रक तत्० (पु०) (देखो आदा)।

आर्द्रा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, अठाइस नक्षत्रों में छठवाँ नक्षत्र।

आर्य तत्० (गु०) सत्कुलोद्भव, श्रेष्ठ, पूज्य, वृद्ध, महत्त। —पुत्र (पु०) भर्ता, स्वामी, गुरुपुत्र। —भट्ट (पु०) विख्यात, भारतीय, ज्योतिर्वेत्ता विद्वान्, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम आर्यसिद्धान्त है, कुसुमपुर नामक स्थान में ४७५ ई० में यह उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ही भारतवर्ष में सौरकेन्द्रिक मत का प्रचार किया है। इन्होंने प्रमाणित किया है कि पृथिवी तथा अन्यान्य ग्रह, सौर जगत में अवस्थित होकर सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं। इन्होंने एक बीजगणित भी बनाया है। —मिश्र (गु०) गौरवान्वित, मान्य, पूज्य। —क्षेमीश्वर (पु०) संस्कृत का एक कवि, चण्डकौशिक नामक नाटक इन्होंका बनाया है। बङ्गाल के पाल वंशीय राजा महीपाल की आज्ञा से इन्होंने अपना नाटक लिखा था, इनका समय, १०२६—१०४० के लगभग समझना चाहिये।

आर्यावर्त तत्० (पु०) [आर्य+आवर्त] विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश, पुण्यभूमि, आर्यों का निवासस्थान।

आर्शि तद्० (स्त्री०) मुकुर, दर्पण, आयना, अलङ्कार विशेष।

आर्ष तत्० (पु०) [ऋषि+अ] विवाह विशेष, अष्टविध विवाह में एक विवाह। जिस विवाह में वर से एक या दो गोमिथुन लेकर कन्या दी जाती है वह आर्ष है। ऋषि-प्रणीत, ऋषिकथित, ऋषि प्रोक्त।

आर्हत तत्० (पु०) जैन तीर्थङ्कर।

आल तत्० (पु०) पीतवर्ण, हरिद्रावर्ण, हरताल, वृक्ष विशेष।

आलन तद्० (पु०) शाक विशेष, अलवण, लवण-रहित।

आलवाल तत्० (पु०) [आल+वल+घञ्] कियारी, थाँवला, घेरा, जो वृक्षों के नीचे प्रायः जल ठहरने के लिये बनाया जाता है। जलाधार, थाला।

आलम्ब तत्० (पु०) [आ+लम्ब+घञ्] अवलम्ब, आश्रय, उपजीव्य।

आलम्बन तत्० (पु०) [आ+लम्ब+अनट्] अवलम्बन, आश्रय, शृङ्गारादि रसों का विभाव विशेष, जिसके आश्रय से रस का आविर्भाव होता है, नायक नायिका प्रतिनायक आदि।

आलय तत्० (पु०) [आ+ली+अच्] गृह, वासस्थान, घर, गेह, मकान।

आलस तद्० (गु०) [आ+लस्+अल्] अलस, आलस्ययुक्त, कर्मानुत्साही, सुस्ती, ढील।

आलस्य तत्० (गु०) [आ+लस्+य] अलसता, तन्द्रा, मन्दता, कार्यानुत्साहिता। —त्याग जम्भण, जँभाई, गात्रभङ्ग।

आला तद्० (पु०) दीवा का ताख, छोटा खोह।

आलाय-बलाय (या अलाय-बलाय) तद्० आपद, अशुभ, दुर्निमित्त, अशुभ सूचक चिन्ह।

आलान तत्० (पु०) गजबन्धनस्तम्भ, गजबन्धन रज्जु, हाथी का खूँटा, बेड़ी, बन्धन, रस्सी, निगड।

आलाप तत्० (पु०) [आ+लप्+घञ्] कथोपकथन, सम्भाषण, कुशल, जिज्ञासा, बात चीत, स्वर मिलाना।

आलापना तद्० (क्रि०) स्वर मिलाना, गाना, तान।

आलापिनी तत्० (स्त्री०) [आलाप+इन्+ई] वीणा विशेष, यन्त्र विशेष।

आलापी तत्० (गु०) [आलाप+इन्] परिचित, कथक, वक्ता।

आलबू तत्० (स्त्री०) लौकी, तुम्बी, कद्दू।

आलि तत्० (स्त्री०) सखी, वयस्या, सजनी, सहचारिणी, सखी, सहेली, सेतु, पंक्ति, (पु०) वृश्चिक, भ्रमर। (गु०) विशदाशय, निर्मलान्तःकरण, व्यर्थ।

आलिखित तत्० (गु०) [आ+लिख+क्त] चित्रित, लिखित।

आलिङ्गन तत्० (पु०) [आ+लिङ्ग्+अनट्] अङ्कमिलन, प्रीति पूर्वक परस्पर आश्लेष, अकवार भेंट, कौला, गोदी।

आली तत्० (स्त्री०) [आल्+ई] सखी, पंक्ति, वृश्चिक।

आलीढ़ तत्० (पु०) [आ+लिह+क्त] बाण छोड़ने के समय का आसन विशेष, बायाँ पैर पीछे की ओर और दाहिना पैर सामने रख कर बैठना (गु०) भक्षित, स्वादित, चखित, भुक्त, लेहित।

आलु तत्० (पु०) कन्द विशेष, स्वनाम ख्यात मूल विशेष।

आलूलायित तत्० (गु०) बन्धन रहित, जो बाँधा हुआ न हो।

आलेख्य तत्० (पु०) [आ+लिख्+य] चित्रपट, लिखन, लिपि।

आलेप तद्० (पु०) [आ+लिप्+घञ्] मलहम, लेप, लेपनीय द्रव्य।

आलोक तत्० (पु०) दर्शन, दीप्ति, ज्योति, भटई, प्रकाश।

आलोकन तत्० (पु०) [आ+लोक+अनट्] दर्शन, ईक्षण, देखना।

आलोचन तत्० (पु०) [आ+लच्+अनट्] आन्दोलन, विवेचन, चर्चा दर्शन, (स्त्री०) अनुशीलन, विवेचना, चर्चा, आन्दोलन।

आलोचित तत्० (गु०) [आ+लुच्+क्त] अनुशीलित, आन्दोलित, विवेचित।

आलोच्य तत्० (गु०) [आ+लुच्+य] आलोचनीय, विवेचनीय, विचारणीय।

आलोडना तद्० (क्रि०) मन्थना, बिलोना, आवर्तन।

आलोल तत्० (गु०) चञ्चल, अति चञ्चल।

आल्हा तद्० (पु०) एक हिन्दू वीर का नाम, कवि विशेष, कविता विशेष, ग्रन्थ विशेष।

आवक तद्० (पु०) पौआ, औंकी सहना, उपारदायित्व।

आवती तत्० (स्त्री०) अवाई, निकट आना, आगामी।

आवना तद्० (क्रि०) पहुँचना, पुगना, आना।

आवनेहारा दे० (गु०) आवैया, आवनहार।

आवदार दे० (गु०) सुशोभन, मनोहरता युक्त, चमकीला, स्वच्छ।

आवरण तत्० (पु०) [आ+वृ+अनट्] ढाल, आच्छादन, ढकने की वस्तु।

आवनो दे० (गु०) आना, गुमना, उपस्थित।

आवभगत दे० (स्त्री०) आदर, मान, सत्कार।

आवमाव दे० (स्त्री०) आदर मान्य।

आवर्जन तत्० (पु०) [आ+वृज्+अनट्] फेंकना, मना करना, रोकना।

आवर्त तत्० (पु०) भँवर, चक्र, फेर, घुमाव।

आवलि तत्० (स्त्री०) पंक्ति, श्रेणि, पाँति।

आवश्यक तत्० (गु०) अवश्यकर्तव्य, प्रयोजनीय, निश्चय, उचित।—ता (स्त्री०) प्रयोजन, दर, कार, अपेक्षा।

आवसथ तत्० (पु०) गृह, भवन, गेह, व्रत विशेष।

आवह तत्० (पु०) [आ+वह+अच्] सप्त वायु के अन्तर्गत वायु विशेष, भूवायु।—मान (गु०) क्रमागत, पूर्वापर, क्रमिक।

आँवा दे० (पु०) कुम्हार की भट्टी, मृत्पात्र पकाने की प्रक्रिया विशेष।

आवाई दे० (पु०) चर्चा, समाचार।

आवागमन तद्० (पु०) आना जाना, जन्म-मरण।

आवाजाई दे० (स्त्री०) नित्य गमनागमन, सतत आनाजाना, " क्या आवाजाई करते हो ?" ।

आवास तत्० (पु०) [आ+वस्+घञ्] गृह, घर, धाम।

आवाहन तत्० (पु०) आदर से बुलाना, षोडशोपचार पूजा का अङ्ग।

आविर्भाव तत्० (पु०) प्रकटता, प्रत्यक्षता, प्रकाश, उत्पत्ति।

आविर्भूत तत्० (पु०) [आविस्+भू+क्त] प्रकाशित, अधिष्ठित, अवतीर्ण, प्रादुर्भूत, प्रत्यक्ष, प्रकट, प्रकाश।

आविष्कार तत्० (पु०) [आविस्+कृ+घञ्] प्रकाश, आक्षेप, खेद, परिताप।

आविष्कृत तत्० (पु०) [आविस्+कृ+क्त) प्रकाशित, प्रकटित।

आविष्ट तत्० (पु०) [आ+विश्+क्त] आवेशयुक्त, निविष्ट, अभिरत, अवहित, मनोयोगी, लीन, किसी की धुन लग जाना।

आवृत तत्० (पु०) [आ+वृ+क्त) वेष्टित, घेरा, कृतावरण, ढाका, आच्छादित।

आवृत्ति तत्० (स्त्री०) [आ+वृत+क्ति] उद्धरणी, पर्याय, पुन पुन पाठ करके याद करना, अभ्यसन।

आवेदन तत्० (पु०) [आ+विद्+अनट्] निवेदन, ज्ञापन, अभियोग, मनोगत भाव का प्रकाश करण।

आवेद्य-संग्रह तत्० (पु०) निवेदन पत्र विशेष, जिसके द्वारा जमींदार अपना स्वत्व सम्राट् की सेवा में उपस्थित करते हैं।

आवेश तत्० (पु०) [आ+विश्+घञ्] प्रवेश, घुसना, सञ्चार, उदय, आसक्ति, अभिनिवेश, मनोयोग, अहङ्कार विशेष, अपस्मार रोग।

आवेशन तत्० (पु०) [आ+विश्+अनट्] प्रवेश, शिल्प शाला, कारखाना।

आवो दे० आगे बुलाना।

आश दे० (स्त्री०) रेशा, सूत।

आंशिक तत्० (पु०) विभागी, हिस्सादार, प्रतापी, तेजस्वी।

आशंसा तत्० (स्त्री०) [आ+शंस्+अ+आ] प्रार्थना, आकांक्षा, अनुमान, सहं, संशय, इच्छा, अभिलाष, चाह।

आशंसित तत्० (पु०) [आ+शंस्+क्त] प्रार्थित, आकाङ्क्षित, अभिलषित, कथित।

आशक्त तत्० (पु०) [आ+शक्+क्त] सम्यक शक्ति विशिष्ट, सक्षम, मोहित, लीन।

आशङ्कनीय तत्० (पु०) [आ+शङ्क्+अनीय, आशङ्का का स्थान, भयावह, भयस्थान।

आशङ्का तत्० (स्त्री०) [आ+शङ्क+अ+आ] भय, डर, सन्देह, त्रास, साध्वस, आतङ्क, संशय।

आशपास (या आसपास) तद्० (अ०) अगलबगल, चारोंओर, इतस्ततः।

आशय तत्० (पु०) [आ+शी+अच्] अभिप्राय, तात्पर्य, आधार, आश्रय, मन, कटहर का वृक्ष, विभव, धर्माधर्म, अदृष्ट।

आशा तत्० (स्त्री०) [आश्+अ+आ] दीर्घाकाङ्क्षा, भरोसा, आसरा, तृष्णा पश्चिम विशेष दिक्। —बद्ध (पु०) आश्वास, प्रत्याशा, भरोसा रखना। —भङ्ग (पु०) निराश्वास, नैराश्य, भरोसा टूटना।

आशातीत तत्० (पु०) [आशा+अतीत] आशा से अधिक, चाह से अधिक।

आशीस् तद्० (स्त्री०) आशिर्वाद, वर, शुभाशंसा, मङ्गल प्रार्थना।

आशीविष तत्० (पु०) [आशी+विष्+अच्] सर्प, अहि, भुजङ्ग, साँप।

आशीर्वचन तत्० (पु०) [आशीस्+वच्+अनट्] शुभजनक वाक्य, कल्याण वाक्य।

आशीर्वाद तत्० (पु०) आशीस्+वद्+घञ्] आशीर्वचन, मङ्गल प्रार्थना। —क (पु०) आशीर्वाद कर्त्ता, कल्याण प्रार्थक।

आशु तत्० (पु०) शीघ्र, द्रुत, तुरन्त तुर्त, झटपट, वर्षा काल में उत्पन्न होने वाले धान्य।

—ग (पु०) शीघ्रगामी, वाण, शर, वायु, मन। —तोष (पु०) शीघ्र तुष्ट, महादेव, शीघ्र प्रसन्न होने वाला।

आश्चर्य तत्० (पु०) [आङ्+चर+य] अपूर्व, विस्मय, अद्भुत, चमत्कार, विचित्र, अलौकिक। —ान्वित (पु०) [आश्चर्य+अन्वित] चमत्कृत विस्मित।

आश्रम तत्० (पु०) [आश्रम+अल्] शास्त्रोक्त धर्म विशेष, ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थ, भिक्षु, ब्रह्मचर्य गार्हस्थ्य वानप्रस्थ भैक्ष्य ये चार प्रकार की अवस्था, ऋषि मुनि के रहने का स्थान, वन, मठ, स्थान। —गुरु (पु०) कुलाचार्य, कुलपति। —धर्म (पु०) आश्रम के लिये शास्त्र कथित आचार और नियम। —भ्रष्ट (पु०) आश्रम विरुद्ध चलने वाला।

आश्रय तत्० (पु०) [आ+श्रि+अल्] शरण, अवलम्बन, राजनीति, सन्धि आदि षड्गुणों के अन्तर्गत गुण विशेष, सामीप्य, रक्षा का स्थान, उपजीव्य, आधार, कारण, विषय, प्रतारणा। —भूत (पु०) अवलम्बभूत, शरण्य, भरोसा-गीर। —स्थान (पु०) आश्रय का स्थान।

आश्रयण तत्० (पु०) [आ+श्रि+अनट्] आश्रय, शरण, अवस्थान।

आश्रयणीय तत्० (पु०) [आ+श्रि+अनीय] आश्रय के योग्य, आश्रयोपयुक्त।

आश्रित तत्० (पु०) [आ+श्रि+क्त] कृताश्रय, शरणागत, अधीन। —स्वत्व (पु०) भृत्य का अधिकार, अधीन का अधिकार।

आश्लिष्ट तत्० (पु०) [आ+श्लिष+क्त] आलिङ्गित, व्याप्त, कृतालिङ्गन।

आश्लेष तत्० (पु०) [आ+श्लिष्+घञ्] आलिङ्गन, मिलन, जुड़ना।

आश्वसित तत्० (पु०) [आ+श्वस्+क्त] आश्वस्त, आश्वास युक्त, प्रत्याशान्वित।

आश्वस्त तत्० (पु०) [आ+श्वस्+क्त] आश्वास प्राप्त, आशायुक्त।

आश्वास तत्० (पु०) [आ+श्वस्+घञ्] अनुनय, निर्वृति, भविष्यत् शुभाशा, प्रत्याशा, आशाप्रदान, भरोसा, प्रबोध।

आश्वासित तत्० (पु०) [आ+श्वास्+णिच्+क्त] अनुनीत, आश्वस्त, प्रत्याशा-विशिष्ट।

आश्विन तत्० (पु०) मास विशेष, शरद ऋतु का दूसरा मास, कुआर, असोज।

आषाढ़ तत्० (पु०) वर्षा ऋतु प्रथम मास, सूर्य का मिथुन राशिपर स्थिति काल, ब्रह्मचारियों का पलाशदण्ड, मलय पर्वत। —क (पु०) आषाढ़ महीना। —भव (पु०) मङ्गल ग्रह, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ा तत्० (स्त्री०) [आ+सह+क्त+आ] नक्षत्र विशेष, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी तत्० (स्त्री०) [आषाढ़+ई] आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आस तद्० (स्त्री०) आशा, भरोसा, आसरा।

आसक्त तत्० (पु०) [आ+सञ्ज+क्त] आसक्ति विशिष्ट, निविष्ट, अनुरक्त, मग्न, तत्पर, प्रसित। —ि (स्त्री०) अनुरक्ति, आसङ्ग, प्रणय।

आसङ्ग तत्० (पु०) [आ+सञ्ज+अल्] संसर्ग, संसृष्टि, अनुराग।

आसत्ति तत्० (स्त्री०) [आ+सद्+क्ति] सङ्गम, मिलन, लाभ, न्याय मत से पदों का अत्यन्त सन्निधान, अव्यवहित पदोच्चारण, यह शब्दबोध का एक हेतु है, समीपता।

आसन तत्० (पु०) [आस्+अनट्] बैठने का स्थान, पीठ, पीढ़ा, चौकी, हाथी का कान्ध, शत्रु और जीगीषु का अवसर प्रतीक्षार्थ अवस्थान, कुश या ऊन का बना हुआ, जिस पर पूजा के समय बैठा जाता है। योगियों के बैठने का प्रकार, पद्मासन स्वस्तिकासन आदि, सुरत की रीति।

आसन-तले-आना दे० (क्रि०) अधीन, होना, अनुगत होना।

आसन्दी तत्० (स्त्री०) खटोली, कुरसी।

आसन्न तत्० (गु०) [आ+सद्+क्त] उपस्थित, निकट, निकटवर्ती, समीप, पास, शेष, अवसान।—**काल** (पु०) अन्तिम काल, मृत्यु का समय।

आसव तत्० (पु०) [आ+सु+अस्] मद्य, मदिरा, मधु, मद।—**वृक्ष** (पु०) ताल वृक्ष।

आसादन तत्० (पु०) [आ+सद्+णिच्+अनट्] प्रापण, लाभ करण, मिलन।

आसादित तत्० (गु०) [आ+सद्+णिच्+क्त] प्राप्त, लब्ध, मिलित।

आसावरी तत्० (स्त्री०) रागिणी विशेष।

आसिख तद्भ० (स्त्री०) आशीष, आशीर्वाद।

आसिद्ध तत्० (गु०) [आ+सिध्+क्त] अवरुद्ध, बन्दीभूत, बधुआ, बन्दी।

आसिधार तत्० (पु०) [आसि+धृ+घञ्] युवा और युवती का एक स्थान में अविकृत चित्त से अवस्थान रूप व्रत।

आसीन तत्० (गु०) [आस्+ईन] उपविष्ट, कृतासन, बैठा हुआ मनुष्य।

आसुर तत्० (पु०) दैत्य, विवाह विशेष, असुर सम्बन्धी।

आसुरी तत्० (स्त्री०) राई, सर्षप, असुर सम्बन्धिनी, शस्त्रचिकित्सा।—**चिकित्सा** (स्त्री०) आनुमानिक, शस्त्रचिकित्सा।

आसेचनक तत्० (गु०) [आ+सिच्+अनट्+क] प्रिय दर्शन, जिसको देखने से तृप्ति नहीं होती।

आस्कन्दित तत्० (गु०) [आ+स्कन्द+क्त] घोड़ों की गति विशेष, घोड़ों की पाँचवीं गति, तिरस्कृत।

आस्कत दे० (स्त्री०) आलस्य, ढीलापन, शिथिलता।—**ती** (गु०) आलसी, ढीला, ठण्डा।

आस्तरण तत्० (पु०) [आ+स्तृ+अनट्] हाथी की झूल, उत्तम आसन, शय्या।

आस्तिक तत्० (पु०) [अस्ति+कण्] मुनि विशेष, जरत्कारु मुनि का पुत्र, इनकी माता का भी जरत्कारु नाम था, इनकी माता सर्पराज वासुकी की बहिन थी, महर्षि आस्तिक ने पितृकुल और मातृकुल का त्रास दूर किया था, पाण्डववंशीय राजा जनमेजय के सर्पसत्र नामक यज्ञ में महात्मा आस्तिक ने अपने भाई तथा मातुल प्रभृति को भस्म होने से बचाया। (गु०) नास्तिक भिन्न, ईश्वर परायण, ईश्वर और परलोक के प्रति विश्वासी, ईश्वरवादी, महात्मा।

आस्था तत्० (स्त्री०) यत्न, टेक, विश्वास, अवलम्बन, आश्रय, श्रद्धा, मनोयोग, सभा, आदर।

आस्थान तत्० (पु०) [आ+स्था+अनट्] सभा, समाज, यत्न, आश्रम।

आस्पद तत्० (पु०) पद, स्थान, क्षमता।

आस्फालन तत्० (पु०) [आ+स्फाल+अनट्] आटोप, प्रगल्भता, अहमिका।

आस्फालित तत्० (गु०) [आ+स्फाल्+क्त] ताड़ित, गर्वित, कम्पित।

आस्फोटन तत्० (पु०) [आ+स्फुट+अनट्] प्रफुल्ल होना, विकास, प्रकाश, बाहु शब्द, ताल ठोकना।

आस्माकीन तत्० (गु०) [अस्मक+ईन] हमारे पक्ष का।

आस्य तत्० (पु०) [अस्+ण्यत्] मुख, वदन, आनन।—**देश** (पु०) मुख का स्थान।

आस्वाद तत्० (पु०) [आ+स्वद+घञ्] रसानुभव, स्वाद ग्रहण, रुचि, चस्का, रस।

आस्वादन तत्० (पु०) [आ+स्वद+अनट्] रसानुभव, स्वाद ग्रहण, स्वादु।

आस्वादक तत्० (पु०) [आ+स्वद+अक] स्वाद ग्रहण कर्ता, स्वाद लेने वाला।

आस्वादु तत्० (गु०) सुरस, मिष्ट, स्वादिष्ट, स्वादी।

आहट दे० (स्त्री०) शब्द, खराटा, स्वर।

आहट-जाहट दे० (स्त्री०) आना जाना।

आहरण तत्० (पु०) [आ+हृ+अनट्] छीनना, लूटना, खसोटना।

आहव तत्० (पु०) [आ+हु+अप्] रण, युद्ध यज्ञ, याग।
आहवनीय तत्० (पु०) [आ+हु+अनीय] यज्ञाग्नि विशेष।
आहर्तव्य तत्० (गु०) [आ+हृ+तव्य] ग्रहण करने के योग्य, ले आने के योग्य, संगृहीतव्य।
आहर्ता तत्० (गु०) [आ+हृ+तृ] आनेता, आनयन वा उपार्जन कर्ता।
आहा तत्० (अ०) खेद या आश्चर्य बोधक शब्द।
आहाव तत्० (पु०) [आ+ह्वे+घञ्] क्षुद्र जलाशय, चहबचा, युद्ध आह्वान, आमन्त्रण।
आहार तत्० (पु०) [आ+हृ+घञ्] अशन, भोजन, भक्षण।
आहार्य तत्० (गु०) [आ+हृ+ण्यत्] आनेतुक, आहरणीय, भोजनार्ह, (पु०) नेपथ्य, भूषण आदि के द्वारा निर्मित, नाटकोक्ति में व्यवहृत विशेष, अङ्ग संस्कार।—शोभा (स्त्री०) कृत्रिम शोभा, चित्र अथवा भूषण आदि के द्वारा बनायी शोभा।
आहि तद्० (क्रि०) है, (अ०) खेद सूचक शब्द।
आहित तत्० (गु०) [आ+धा+क्त] न्यस्त, अर्पित, स्थापित, कृत।—अग्नि (पु०) [आहित+अग्नि] साग्निक, अग्निहोत्री।
आहितुण्डिक तत्० (पु०) [अहि+तुण्ड+ठिञ्] व्याल ग्राही, साँप पकड़ने वाला, काल बेलिया।
आहुक तत्० (पु०) राज विशेष, प्राचीन समय में मृत्तिकावत नगरी के राजा भोज नाम से प्रसिद्ध थे, उसी भोजवंश में अभिजित् नामक एक राजा उत्पन्न हुए, उनको युग्म सन्तति हुई, पुत्र का नाम आहुक रखा गया, इनकी स्त्री का नाम काश्या था, इसीके गर्भ से महाराजा आहुक को देवक और उग्रसेन नामक दो पुत्र हुए थे, देवक श्री कृष्णचन्द्र के मातामह थे, और उग्रसेन कंस का पिता।
आहुति तत्० (स्त्री०) [आ+हु+क्ति] आकाज्य, होम की वस्तु, देवता के उद्देश्य से अग्नि में हवि देना, देवयज्ञ, होम।
आहूत तत्० (गु०) [आ+ह्वे+क्त] निमन्त्रित, आमन्त्रित, कृताह्वान, न्योता हुआ, पुकारा।
आहृत तत्० (गु०) [आ+हृ+क्त] अर्जित, आनीत, सञ्चित, भुक्त, गृहीत।
आहो तत्० (अ०) विकल्प, प्रश्न, सन्देह, विचार।
आहो तत्० पुरुषिका, (स्त्री०) अहमिका, आत्मश्लाघा, आत्मगर्विता।
आहोस्वित् तत्० (अ०) विकल्प, प्रश्न, जिज्ञासा।
आह्निक तत्० (गु०) दैनिक, दिन साध्य, दिन संबन्धी, दिवाकृत्य, (पु०) भोजन प्रकरण समूह, ग्रन्थ भाग, नित्यक्रिया, इष्टदेवता की नित्य आराधना।
आह्लाद तत्० (पु०) [आ+ह्लद+घञ्] आनन्द, हर्ष, तुष्टि।—जनक (गु०) हर्ष जनक, आनन्द-वर्द्धक, तुष्टि कर।
आह्लादित तत्० (गु०) [आ+ह्लद+णिच्+क्त] आनन्दित, हृष्ट, हर्ष युक्त।
आह्वय तत्० (पु०) [आ+ह्वे+अल्] नाम, संज्ञा, आख्या।
आह्वान तत्० (पु०) [आ+ह्वे+ल्युट्] आवाहन, निमन्त्रण।

इ

इ, स्वर का तीसरा वर्ण।
इ तत्० (पु०) कामदेव, गणेश।
इ तत्० (अ०) भेद, कोपोक्ति, अपाकरण, अनुकम्पा, खेद, कोप, सन्ताप, दुःख, भावना।
इक तद्० (गु०) एक, एक का दूसरा रूप।—अङ्ग एक ओर का शरीर, आधा अङ्ग, एक शरीर, एक अङ्ग, एकपक्ष।—छत्रराज (पु०) चक्रवर्ती राज्य, समस्त संसार का एक राज्य, प्रतिद्वन्दी रहित राज्य।—टक (पु०) एक ताक, एकटकी, निस्पन्द नेत्र से देखना।—ट्ठा (गु०) एकठौरा, एकत्र, जमात।—ठौर-रा (गु०) एकट्ठा, समूह।—लौता (गु०) एक ही, केवल,

एक होने से अधिक प्रीति पात्र।—सार (गु०) बराबर, सरीखा, समान, सदृश।—सङ्ग (गु०) एक साथ।

इक्का तद्० (गु०) एकका, अकेला, अद्वितीय, अनूठा, अनुपम, उत्तम, (पु०) एक घोड़े या बैल की गाड़ी, इलाहाबादी इक्का, पटनाहा इक्का।

इक्षु तत्० (पु०) [इष्+सु] ऊख, ईख, केतारी, गन्ना, गांडा।—काण्ड (पु०) इक्षुवृक्ष, शर-मुञ्ज, काशतृण।—रस (पु०) ईख का रस, राब। इक्षोद (पु०) इक्षु रस का समुद्र।—सार (पु०) गुड़, चाँड़।

इक्ष्वाकु तत्० (पु०) वैवस्वत मनु का पुत्र, सूर्य वंश का पहला राजा, इन्होंने सर्वप्रथम अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया, यह रामचन्द्र के पूर्व पुरुष थे, इनके पुत्र का नाम कुक्षि था। २ काशी का राजा, इस के पिता का नाम सुबन्धु था, यह इक्षुदण्ड फोड़ कर उत्पन्न हुआ था, इसी कारण इक्ष्वाकु इनका नाम पड़ा था।

इङ्गलैण्डीय तत्० (गु०) इङ्गलैण्ड देश सम्बन्धी।

इङ्गित तत्० (पु०) [इङ्ग+क्त] अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा, सङ्केत, इशारा, गमन, चेष्टित, अन्वेषण, हृद्गत भाव।

इङ्गुदी तत्० (स्त्री०) [इङ्गुद+ई] वृक्षविशेष, इसके फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रणविरोपण भी है, क्योंकि इसके तेल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं।

इच्छन तद्० (पु०) आँख, नेत्र, नयन, दृष्टि, देखना।

इच्छा तत्० (स्त्री०) वाञ्छा, मनोरथ, आकाङ्क्षा स्पृहा, अभिलाष।—न्वित (गु०) इच्छुक, सस्पृह, अभिलाषी, स्वेच्छक, वासना विशिष्ट।—वती (स्त्री०) इच्छा युक्ता स्त्री, अभिलाषिणी रमणी।—चारी (पु०) मनमौजी, अपने मन का, मन के अनुसार घूमने वाला, स्वतन्त्र।

इच्छित तत्० ।—(गु०) ईप्सित, मनवाञ्छित के अनुसार, चाहा हुआ।

इच्छुक तत्० (पु०) इच्छान्वित, अभिलाषी, आकांक्षी।

इज्य तत्० (पु०) [यज्+य] बृहस्पति, देवाचार्य, गुरु, (गु०) शिक्षक पूज्य।

इज्या तत्० (स्त्री०) [यज्+य+आ] दान, याग, यज्ञ, पूजा, अर्चा, सेवा, अष्टविध धर्म का प्रथम धर्म।—शील (पु०) बार बार यज्ञ करने वाला, याजक, यज्ञकारी।

इडा तत्० (स्त्री०) शरीर के दक्षिण भागस्थित नाड़ी, सरस्वती, गौ, वचन, पृथिवी, स्वर्ग, आगु गमन, वैवस्वत मनु की पुत्री, चन्द्रमा के पुत्र बुध के साथ इसका विवाह हुआ था, इसीके गर्भ से प्रसिद्ध राजा पुरूरवा की उत्पत्ति हुई थी।

इठलाना दे० (क्रि०) इतराना, मोड़ना, बल करना।

इत तद्० (अ०) इधर, इस ओर, इस तरफ, यहाँ, इसठौर।

इत: तत्० (अ०) नियम, पञ्चमी विभक्ति का अर्थ, विभाग, यहाँ से, इस हेतु।—पर (गु०) इसके बाद, इसके अनन्तर।

इतना तद्० (अ०) अवधि का बोधक, इयत्तावाची, परिच्छेदक, एतना।

इतर तत्० (अ०) अन्य, भिन्न, नीच, सामान्य।—विशेष (पु०) अन्य से भिन्न, विभिन्नता, प्रभेद।—लोक छोटी जाति, दूसरा लोक।

इतरेतर तत्० (गु०) [इतर+इतर] अन्यान्य, परस्पर।

इतरेद्यु तत्० (अ०) दूसरे दिन, अन्यदिन।

इतराना दे० (क्रि०) मद चलना, अभिमान करना।

इतराया दे० (क्रि०) चोचलाई, मगलिया।

इतवार दे० (पु०) रविवार, आदित्य वार।

इतस्ततः तत्० (अ०) [इतस्+तद्+तस्] अत्र तत्र, इधर उधर, चारो ओर।

इति तत्० (अ०) समाप्ति बोधक, अतएव, हेतु परिशेष, प्रकरण प्रकाश, समाप्ति, निदर्शन, प्रकार।—कथा (स्त्री०) अर्थ शून्य वाक्य, अयुक्त बात।—कर्तव्य (गु०) कर्म का अङ्ग, उचित कर्तव्य।

इतिहास तत्० (पु०) [इति+ह+आस] पूर्व वृत्तान्त, अतीत काल की घटनाओं का विवरण, प्राचीन कथा, पुरावृत्त, उपाख्यान।

इतेक दे० (अ०) इतनाही एताही, इतना।

इतौ दे० (अ०) इतना नियम, अवधि।

इत्थम् तत्० (अ०) इस प्रकार, इस तरह।

इत्यादि तत्० (अ०) प्रभृति, आदि, इससे लेकर और सब।

इदम् तत्० (पु०) पुरोवर्ती, सम्मुखस्थवस्तु, यह।

इदमित्थम् तत्० (अ०) यह, इस प्रकार, निश्चय।

इदानीं तत्० (अ०) इस काल में, इस समय में, सम्प्रति, अधुना।

इदानीन्तन तत्० (पु०) आधुनिक, सम्प्रति जात, इस समय का नवीन।

इधर दे० (अ०) यहाँ, इस ठौर, इस स्थान।

इन तत्० (पु०) सूर्य, समर्थ, राजा पति, ईश्वर, हस्त नक्षत्र, १२ की संख्या।

इन्दारा (या इनारा) तत्० (पु०) कूप, पक्का कुआँ।

इन्दिरा तत्० (स्त्री०) [इन्दिर+आ] लक्ष्मी, कमला, रमा।—वर (पु०) विष्णु, नारायण। —मन्दिर (पु०) नीलोत्पल, नील कमल। —लय (पु०) [इन्दिरा+आलय] पद्म, पङ्कज।

इन्दीवर तत्० (पु०) [इन्दी+वर+अण्] नीलोत्पल, नील कमल।

इन्दु तत्० (पु०) [इन्द+उ] शशी, चन्द्र, कर्पूर।—कला (स्त्री०) इन्दुलेखा, चन्द्रलेखा।—कान्त (पु०) मणि विशेष, चन्द्रकान्त मणि, कान्ता (स्त्री०) रात्रि, निशा, यामिनी।—व्रत (पु०) चान्द्रायण व्रत।—भृत् (पु०) महादेव, शिव।—मती चन्द्र युक्ता रात्रि, पौर्णमासी, अयोध्या के राजा अज की स्त्री, इसीके गर्भ से महाराज दशरथ उत्पन्न हुए थे, यह विदर्भराज की कन्या थी।

इन्दुर तत्० (पु०) मूष, मूहा, मूषिक।

इन्द्र तत्० (पु०) वेदोक्त देवता, भारतीय प्राचीन आर्य ऋषिगण, जिन देवताओं की आराधना करते थे, उनमें एक इन्द्र भी हैं। ऋग्वेद में लिखा है, इन्द्र की माता ने बहुत वर्षों तक इन्हें अपने गर्भ में धारण कर रखा था, उत्पन्न होने के अनन्तर इन्द्र ने अपने पिता को पैर पकड़ के मार डाला। २ पौराणिक देवता, अन्यान्य देवता इनके अधीन हैं, अतएव यह देवराज कहे जाते हैं। पुलोमा दानव की कन्या शची से इनका विवाह हुआ था, इनके पुत्र का नाम जयन्त था।—कील (पु०) मन्दर पर्वत, मन्दराचल। —कुञ्जर (पु०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत, हस्ति।—गोप (पु०) रक्त वर्ण, कीट विशेष, खद्योत।—जाल (पु०) मायाकर्म, छल, कपट, माया।—जालिक (पु०) मायावी, मायिक, बाजीगर।—जित् (पु०) लङ्केश्वर रावण का पुत्र, मेघनाद।—तुल्य (पु०) इन्द्र के समान सर्वश्रेष्ठ, अधिपति, सर्वोत्तम। —त्व (पु०) स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म, राजत्व, प्राधान्य।—धनुष (पु०) शक्रधनु, सूर्य की किरण, मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष के आकार का दील पड़ता है।- नील (पु०) नीलम, नीलमणि।—नीलक (पु०) पन्ना, मरकत, पन्ना। —प्रस्थ (पु०) राजा युधिष्ठिर का बनाया हुआ नगर विशेष, हस्तिनापुर, हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ, इत्यादि जिसके नाम हैं। इस समय दिल्ली के नाम से वह प्रसिद्ध है, यद्यपि दिल्ली यमुना के बायें किनारे पर स्थित है, तथापि इन्द्रप्रस्थ यमुना के दक्षिण तट पर स्थित था।—वधू (पु०) भूक्षुकीट विशेष।—यव औषधि विशेष।

इन्द्राणी तत्० (स्त्री०) [इन्द्र+आनी] शची, इन्द्र पत्नी, मातृका विशेष।

इन्द्रानुज तत्० (पु०) [इन्द्र+अनुज] विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण।

इन्द्रावरज तत्० (पु०) [इन्द्र+अवर+जन्+ड] नारायण, विष्णु।

इन्द्रायण तद्० (स्त्री०) ओषधि विशेष ।

इन्द्रायुध तत्० (पु०) [इन्द्र + आयुध] इन्द्र धनु, शक्र धनु, ।

इन्द्रासन तत्० (पु०) [इन्द्र + आसन] इन्द्र का आसन, ऐरावत हस्ति ।

इन्द्रिय तत्० (पु०) [इन्द्र + इय] इन्द्री, ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय, अन्तरिन्द्रिय, नेत्र, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन ये छ: ज्ञान साधन, वाक् पाणि गुदा और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रीय, और मन बुद्धि चित्त और अहङ्कार ये अन्तरेन्द्रिय । —गण (पु०) इन्द्रिय समूह, एकादश इन्द्रिय । —गोचर (गु०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञानगम्य, ज्ञानपथवर्ती ।—ग्राह्य (गु०) ज्ञानगम्य विषय शब्द स्पर्श रूप रसगन्ध आदि ।—दोष (पु०) कामादि दोष, कामुकता, लम्पटता ।—निग्रह (पु०) कामादि इन्द्रिय दमन, चक्षु आदि इन्द्रियों को अपने वश में करना ।—विषय (पु०) इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रिय, गोचर, नेत्र आदि के पयस्थित । —ागोचर (गु०) [इन्द्रिय + अगोचर] इन्द्रियों के अगोचर, जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाय ।—ार्थ (पु०) इन्द्रिय जन्य ज्ञान का विषय रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द ।

इन्द्री तद्० (स्त्री०) देखो इन्द्रिय ।

इन्धन तत्० (पु०) [इन्ध् + अनट्] ईंधन, जलावन, लकड़ी ।

इप्सु तत्० (गु०) इच्छित, इच्छुक, लोभी ।

इभ तत्० (पु०) गज, कुञ्जर, हस्ति, हाथी ।—पालक (पु०) महावत, हाथीवान ।

इभ्य तत्० (गु०) [इभ् + य] धनवान्, धनशाली, धनी ।

इमन दे० स्वर का मिलन, रागिनी विशेष । —कल्यान रागिनी विशेष ।

इमली दे० (पु०) वृक्ष विशेष, फल विशेष, तिन्तिड़ी, कुचिया, अम्ली ।

इमि तद्० (अ०) ऐसे, इस प्रकार से, यों, इस तरह ।

इमरती दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

इरा तत्० (स्त्री०) वाणी, मधु, मद्य, भूमि, जल, सरस्वती, कश्यपपत्नी ।—वान् (पु०) [इरा + वतु] समुद्र, मेघ, राजा, अर्जुनपुत्र, अर्जुन के औरस तथा ऐरावत की विधवा कन्या के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन पक्षीय आर्यशृङ्ग नामक राक्षस के द्वारा यह निहत हुआ ।

इलशा दे० (पु०) इलिश् मत्स्य विशेष ।

इलविला तत्० (स्त्री०) कुवेर की माता, विश्रवा मुनि की पत्नी ।

इला तत्० (स्त्री०) वैवस्वत मनु की कन्या, यह विष्णु के प्रसाद से यद्यपि पुरुष हो गयी थी, तथापि कुमार वन में जाने के कारण पुन स्त्री हो गया, यह बुध से ब्याही गयी थी, इसीके गर्भ से पुरूरवा उत्पन्न हुए थे ।—वृत (पु०) जम्बुद्वीप के नव वर्षान्तर्गत वर्ष विशेष ।

इलायची दे० (स्त्री०) एलाची, एला ।

इल्ला दे० (पु०) मस्सा, माँस वृद्धि ।

इव तत्० (अ०) सदृश, समान, उपमा, सरीखा, ऐसा ।

इषु तत्० (पु०) [इष + उ] बाण, शर, तीर काण्ड ।—धि (पु०) तूण, बाणाधार, तरकस ।

इष्ट तत्० (पु०) [इष + क्त] यज्ञादि कर्म, यथेप्सित, काम, सत्कार, यज्ञ स्वामी, (गु०) आकांक्षित, वाञ्छित, पूजित, प्रिय ।—गन्ध (गु०) सौरभ, सुगन्धि द्रव्य ।—देव (पु०) मन्त्रदाता, दीक्षागुरु, अभीष्ट देवता, उपास्य देवता । —देवता (पु०) उपास्य देवता सब से बड़ा देवता, अपना देवता, अवश्य पूजनीय देवता ।

इष्टापूर्त तत्० (पु०) यज्ञखातादि कर्म, लोकोपकारार्थ यज्ञ कूप खनन आदि ।

इष्टालाप तत्० (पु०) अभिलषित, कथोप कथन ।

इष्टि तत्० (स्त्री०) याग यज्ञ, अभिलाष, इच्छा ।

इष्वास तत्० (पु०) धनुष, कार्मुक, शरासन ।

इस तद्० यह, आश्चर्य या विस्मय बोधक ।

इसबगोल दे० (पु०) औषधि विशेष ।

इस्त्रि या इस्त्री दे० (पु०) कपड़ा चिकनाने का यन्त्र, जिससे धोबी कपड़े कड़ा बनाते हैं।

इस्थिर तद्० (गु०) स्थिर, निश्चल, अचञ्चल।

इस्पात दे० (पु०) पक्का लोहा, खेड़ी, परिष्कृत लौह।

इह तद्० (अ०) यह।—लोक, यहाँ का लोक। —काल (पु०) यह काल, यह समय।—लोक (पु०) यह काल, यह जन्म, यह संसार।

इहाँ तद्० इस स्थान पर, इस जगह।

इहि तत्० (क्रि०वि०) यहाँ इस में, इस जगह।

ई

ई दीर्घ ईकार, चौथा स्वर वर्ण।

ई तत्० (अ०) विषाद, अनुकम्पा, क्रोध, दुःख भावना, प्रत्यक्ष सन्निधि, (पु०) कन्दर्प, कामदेव (स्त्री०) लक्ष्मी।

ईकार (पु०) अक्षर विशेष, ईवर्ण।

ईक्ष तत्० (स्त्री०) दर्शन, ईक्षण, देखना।

ईक्षक तत्० (पु०) [ईक्ष्+अक्] अवलोकन-कर्ता, दर्शक, दिखैया।

ईक्षण तत्० (पु०) दृष्टि दर्शन, चक्षु।—श्रवा (पु०) सर्प, चक्षुश्रवा।

ईक्षित तत्० (गु०) [ईक्ष्+क्त] दृष्ट, अवलोकित, देखा हुआ।

ईख तद्० (पु०) ऊख, गन्ना।

ईंट तद्० (पु०) ईंटा, इष्टका।

ईंटाया तद्० (पु०) वृक्ष विशेष।

ईठ तत्० (गु०) इष्ट, वाञ्छित, चाहा हुआ।

ईठा तत्० (स्त्री०) स्तुति, स्तव, प्रशंसा, नाड़ी विशेष, गुण कथन, प्रतिष्ठा।

ईडित तत्० (गु०) [ईड+क्त] स्तुत, प्रशंसित, नुत, कृतस्तव।

ईंडुवा तद्० (पु०) विंडा, उबकन, टेकन।

ईंडुरी तत्० (स्त्री०) इडुरी, सिरपर भार रखने की जो मन या कपड़े की बनती है।

ईति तत्० (स्त्री०) अपहार, प्रवास, उपद्रव, आपदा छः प्रकार की ईति, (अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, मूसों से खेती का नाश, पक्षियों से खेती नाश, राज विद्रोह से क्लेश)।

ईद दे० (पु०) मुसल्मानों का एक पर्व।

ईदृक तत्० (गु०) ईदृश, एतत् सदृश, इसके समान, इस प्रकार।

ईदृक्ष तत्० (गु०) एतत् सदृश, इस प्रकार।

ईदृश तत्० (गु०) ईदृक्, ऐसा, यह, इस रीत।

ईप्सा तत्० (स्त्री०) चाह, वाञ्छा, अभिलाषा।

ईप्सित तत्० (गु०) वाञ्छित, अभिलषित, अभीष्ट।

ईर्षा तत्० (स्त्री०) अक्षमा, परश्रीकातरता, द्वेष, हिंसा।—लु (गु०) ईर्षा विशिष्ट, परश्रीकातर, द्वेषयुक्त।

ईर्ष्या तत्० (स्त्री०) हिंसा परश्रीकातर्य, द्वेष, हिंसका, द्रोह।—न्वित (गु०) हिंसक, ईर्ष्याकारी।—वान् (गु०) ईर्ष्याकारी, ईर्ष्यान्वित, हिंसक।—लु (गु०) हिंसा विशिष्ट, अशान्ति-युक्त।

ईर्षी तत्० (पु०) द्रोही, द्वेषी, दूसरे की अभिवृद्धि से जलने वाला।

ईश तत्० (पु०) प्रभु स्वामी ईश्वर, ऐश्वर्यशाली, महादेव, ईशानकोण [illegible] अधिपति।—सखा (पु०) कुबेर, धनपति।

ईशा तत्० (पु०) हलीश, लाङ्गलदण्ड, दुर्गा भगवती ईश्वरी।

ईशान तत्० (पु०) महादेव, रुद्र विशेष, शिव की अष्ट विध मूर्तियों के अन्तर्गत सूर्य मूर्ति, शमी वृक्ष, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा।—कोण (पु०) उत्तर पूर्व के मध्य का कोन।—ी (स्त्री०) दुर्गा भगवती, ईश्वरी, शमी वृक्ष।

ईशिता तत्० (गु०) ईश्वर, प्रभु, अधिपति, प्रधानता महत्व।

उखड़ाना दे० (क्रि०) उखाड़ना, उजाड़ना।
उखल उखली तद्० (पु० स्त्री०) उखली, ओखली, जिसमें चावल आदि कूटते हैं।
उखाल पुखाल दे० (पु०) ओला उठा।
उगत तद्० (पु०) उपजना, उद्भव, जन्म, उत्पत्ति।
उगना तद्० (क्रि०) उत्पन्न होना, बढ़ना।
उगते ही जलना प्रारम्भ समय में ही कार्य का नाश होना।
उगलना तद्० (क्रि०) वमन करना, थूकना, उलटी करना, कै करना।
उगाल तद्० (पु०) पाहर, सीठी, थूक।
उगाहना तद्० (क्रि०) इकट्ठा करना, एकत्र करना, बटोरना, समेटना।
उग्र तत्० (गु०) उत्कट, रौद्र, तीक्ष्ण, कटु क्रोधी, कठिन, वत्सनाम नामक विष, महादेव, शिव की वायु मूर्ति, क्षत्रिय की औरस तथा शूद्रा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष।—गन्ध (पु०) उत्कट गन्धयुक्त, तीक्ष्णगन्ध।—चण्डा (स्त्री०) भगवती की मूर्ति विशेष, इनके अठारह भुजा हैं। आश्विन कृष्णा नवमी को कोटि योगिनी परिवेष्टित, अष्टादशभुजासमन्वित इसी उग्र चण्डी की पूजा होती है।—ता (स्त्री०) कठोरता कठिनता।—तारा (स्त्री) भगवती की मूर्ति विशेष, इनका दूसरा नाम मातङ्गिनी है।—स्वभाव (गु०) कठोर चित्त, कठिन हृदय।—सेन (पु०) यदुवंशी राजा आहुक का पुत्र और कंस का पिता, मथुरा का राजा।
उघड़ना दे० (क्रि०) नङ्गा होना, व्यक्त होना, प्रकाशित होना।
उघरहिं दे० खुलते हैं, खुल जाते हैं, स्पष्ट हो जाते हैं, नंगे हो जाते हैं।
उघरे दे० खुले, प्रकट हुए, प्रकाशित हुए, खुले हुए।
उघाड़ना दे० (क्रि०) नङ्गा करना, खोलना, व्यक्त करना।
उघाड़ू दे० (पु०) उघाड़नेहारा, प्रकाशक।
उचं तद्० (अ) उच्च, उन्नत, बड़ा।
उचंनीच तद्० उच्चनीच, असमान, निम्नोन्नत, उच्चावच।

उचकना दे० (क्रि०) कूद के उठना, उछलना, कूदना।
उचक्का दे० (पु०) ठग गांठकटा, चोर, छली, धाखण्डी।
उचटना दे० (क्रि०) उखड़ना, बिछलना, बिखरना, उदास होना, मन नहीं लगना, नींद का टूटना।
उचरङ्ग तद्० (पु०) पतङ्ग, भुनगा।
उचरना तद्० (क्रि०) उच्चार करना, कहना, धीरे धीरे चलना, शकुन विशेष, काक की गति विशेष से भावी आगमन का अनुमान "उचरहू काक पिया मोर आवत"।
उचलना तद्० (क्रि०) बिलगाना, अलग करना।
उचा दे० (क्रि० वि०) उठाय, उचांकर, उभार, उभारकर।
उचाटना तद्० (क्रि०) पृथक् करना, अलग करना, उचाट होना, उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी लगना।
उचाटु तद्० (गु०) उखड़ा हुआ, व्यग्रचित्त, उचटा हुआ, उचटा, उखड़ा, हटा।
उचित तत्० (गु०) [उच + क्त] न्यस्त, विदित, परिचित, योग्य, यथार्थ, न्याय।
उचेलना दे० (क्रि०) उधेरना, अलग करना।
उचोट दे० (पु०) ठोकर, ठेस, चोट।
उच्च तत्० (गु०) ऊर्ध्व, उन्नत, प्रांशु, ऊंचा, बड़ा, तुङ्ग उत्तुङ्ग, उच्छ्रित।—तरु (पु०) नारिकेल वृक्ष, (पु०) ऊंचावृक्ष।—ता (स्त्री०) ऊर्ध्व, परिमाण, उच्च।—नीच (गु०) निम्नोन्नत, असमान।—भाषी (गु०) कटुवक्ता, उग्रवक्ता।—मना (गु०) सदन्तःकरण, महाशय।—शिखा, (स्त्री०) अधिक शिखा उन्नतशिखा।—स्वर (पु०) बड़ा शब्द, दूर व्यापी स्वर।
उच्चाट तद्० (पु०) उचाटी, उदास, अरुचि।
उच्चार तत्० (पु०) [उत् + चर् + घञ्] विष्ठा, मल मूत्र पुरीष, (बहुत लोग उच्चारण के अर्थ में उच्चार शब्द का प्रयोग करते हैं, परन्तु वह प्रयोग अत्यन्त अशुद्ध है)।
उच्चारण तत्० (पु०) [उत् + चर + णि + अनट्] कथन, कहना, निकलना, उल्लेख, शब्द प्रयोग।

उच्चारणीय तत्० (गु०) [उत्+चर+णिच्+अनीय] उच्चारितव्य कथनीय, उच्चारण करने के योग्य।
उच्चारित तत्० (गु०) [उत्+चर्+णिच्+क्त] कथित, उक्त, अभिहित।
उच्चैः तत्० (अ०) ऊर्ध्व, ऊपर, ऊंचा, बड़ा। —**शब्द** (पु०) उच्चस्वर, चीत्कार, चिचियाना, चिल्लाना।—**श्रवा** (पु०) इन्द्र का घोड़ा, देवराज इन्द्र को यह समुद्र मन्थन के समय मिला है।
उच्छ्वास तत्० (पु०) [उत्+श्वस्+घञ्] श्वास, आश्वास प्रकरण।
उच्छिन्न तत्० (गु०) [उत्+छिद्+क्त] उच्छन्न, उखड़ा, निर्मूल, विनष्ट, खण्डित, छिन्न भिन्न। —**ता** (स्त्री०) नाश, खण्डन।
उच्छिष्ट तत्० (गु०) [उत्+शिष्+क्त] भोजन का अवशिष्ट जूठा, त्यक्त।—**भोजन** (पु०) भुक्तावशिष्ट आहार, अवशिष्ट भोजन, जूठा खाना।
उच्छृङ्खल तत्० (गु०) [उत्+शृङ्खल] शृङ्खला रहित अबाध, अनियन्त्रित निरङ्कुश, अनर्गल, विशृङ्खल।
उच्छेद तत्० (पु०) [उत्+छिद्+अल] उन्मूलन, उत्पाटन, विनाश।
उच्छ्राय तत्० (पु०) [उत्+श्रि+अल] पर्वत वृक्ष आदि की उच्चता, उच्च परिमाण।
उच्छ्रित तत्० (गु०) [उत्+श्रि+उक्त] उन्नत, उच्च, प्रवृद्ध।
उछङ्ग तत्० (स्त्री०) गोदी, गोद, उत्सङ्ग, कनिया अंक।
उछलना तद्० (क्रि०) फुदकना, कूदना, उछाल मारना।
उछाड़ दे० (पु०) वमन, ओकि, रद्द।
उछालना (क्रि०) ऊपर फेंक के रोकना।
उछाह तद्० (पु०) उत्साह, आनन्द, हर्ष।
उजड दे० (गु०) उतावला, अप्रवीण, उच्छृङ्खल, चौगाना, शून्य, पटपर, जनशून्यस्थान।
उजडना दे० (क्रि०) उखड़ना, विनशाना, (वि०) उजरे पुजरे, नष्ट हुए, वीरान।
उजल तद्० (पु०) निर्मल, चमक, भड़क, उज्वल, स्वच्छ, श्वेत।
उजवाना दे० (क्रि०) ढलवाना, उभालना।
उजयार दे० (पु०) उजेला, प्रकाश, चाँदनी, रोशनी।
उजागर दे० (गु०) चमकीला, यशस्वी, प्रसिद्ध विख्यात, प्रतापी।
उजाड़ दे० (पु०) उच्छिन्न, सूना, पटपर, (क्रि०)। —**ना** नाश करना, चौपट करना, नष्ट विनष्ट करना।
उजान दे० (पु०) नदी का चढ़ाव, ऊंचापन।
उजारि दे० उजाड़कर, नाशकर के, नष्टकरके, मिटा करके।
उजाला तद्० (पु०) चमक, प्रकाश, तेज।
उज्जल तद्० (गु०) स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तियुक्त।
उज्ज्वल तत्० (गु०) देखो उज्जल।
उज्ज्वलन तत्० (गु०) [उत्+ज्वल्+अनट्] उद्दीपन, प्रकाश करना, चमकना, ऊपर की ओर ज्वाला जाना।
उजृम्भित तत्० (गु०) [उत्+जृम्भ+क्त] प्रफुल्ल, विकसित, प्रस्फुटित, (पु०) चेष्टा, आवेषण।
उज्जैन तद्० (पु०) उज्जयिनी नगरी, विशालापुरी, (देखो अवन्ती)।
उझकना दे० (क्रि०) ताकना, झाकना।
उझलना दे० (क्रि०) उँड़ेलना, रिक्त करना, खाली करना, एक पात्र की वस्तु दूसरे पात्र में रखना।
उझलित तद्० (गु०) छोड़ा हुआ, डाला हुआ।
उज्झित तत्० (गु०) [उज्झ+क्त] उत्सृष्ट, त्यक्त, वर्जित।
उञ्छ तत्० (गु०) [उछ+अल्] हेय, क्षुद्र।—**वृत्ति** (स्त्री०) सामान्य जीविका, जघन्य, आजीव्य, मुनि वृत्ति, कटे हुए खेत में गिरे हुए अन्न से वृत्ति निर्वाह।—**शिल** (पु०) उपेक्षित अन्न का संग्रह।
उञ्छशील तत्० (गु०) उञ्छजीवी, अति सामान्य कर्म से जीविका निर्वाह करने वाले, मुनि ऋषि।
उट तत्० (पु०) तृण, तिनका, ऊर्ण, पत्ता।—**ज** (पु०) पर्णशाला, पत्ररचित गृह, पत्तों से बना घर।
उटक्करलस दे० (गु०) अविवेचक, उतावला।
उट्टङ्कन तत्० (पु०) सङ्केत, इङ्गित, प्रसङ्ग, प्रस्ताव।

उट्टङ्कित तत्० (गु०) संकेतित, चिन्हित, उल्लेखित, उत्थापित ।
उठङ्गन दे० (पु०) टेक, आधार, आश्रय, आड़ ।
उठना तद्० (क्रि०) उगना, चढ़ना, खड़ा होना ।
उठबैठ तद्० (स्त्री०) खिलखिली, चञ्चलपन, असुख, अधिक क्लेश, "उठबैठ के मैंने रात बिताई" ।
उठवैया तद्० (पु०) उठल्लू, उठाने हारा ।
उठल्लू तद्० अस्थिर, चलचल, चपल, चञ्चल ।
उठाईगीरा तद्० (गु०) चोट्टा, हथलपक, ठग, उचक्का ।
उठान तद्० (पु०) उदय, दिखाई, आंगन ।
उठाना तद्० (क्रि०) खड़ा करना, उधार लेना, दूरी करना, ख़र्च करना ।
उठा देना तद्० दूर करना, उभारना, भड़काना ।
उडगण तद्० (पु०) तारे, नक्षत्रगण, नक्षत्रसमूह ।
उड़चलना तद्० (क्रि०) अकड़ना, इतराना ।
उड़ती तद्० (पु०) अस्थिर अनिश्चित, अमूलक, जनश्रुति ।
उड़ना तद्० (क्रि०) पक्षी का आकाश में चलना, आकाशगमन ।
उड़ाऊ तद्० (पु०) अपव्ययी, लुटाऊ, वृथा धन नाशशील, अधिक ख़र्चीला ।
उड़ाक तद्० (पु०) उड़ैया, लेभागा, अपहरणकर्त्ता ।
उड़ान तद्० (स्त्री०) कूदना, पक्षियों की चाल ।
उड़ाना तद्० (क्रि०) उड़ा देना, भगाना, लुटाना । —पुड़ाना लुटाना, गवाना, अपव्यय करना, नाश करना ।
उड़ावहिं तद्० उड़ाते हैं, भगाते हैं, नाश करते हैं ।
उड़ाहीं तद्० उड़ते हैं, उड़ जाते हैं ।
उड्डीन तत्० (पु०) उड़ना, परवाज होना ।
उड्डीयमान तत्० (पु०) उड़नेवाला, आकाशगामी, नभचर ।
उडु तत्० (पु०) नक्षत्र, राशि, तारा ।—पथ (पु०) आकाश, गगन, नभस्थल ।
उडुप तत्० (पु०) चन्द्र, नाव, घरनई, डोंगी ।
उड्डूस दे० (पु०) खटमल, खटकीरा ।
उढकना दे० (क्रि०) उलटाना, औंधाना ।
उढङ्गना दे० (क्रि०) करवट लेना, लेटना, पार्श्व परिवर्तन करना ।
उढना दे० ओढ़ना, कपड़ा पहिनना ।
उढाना दे० आच्छादन करना, ढकना, कपड़ा पहिनना ;
उढैया दे० (पु०) ओढ़नेवाला, पहिननेवाला ।
उढेलना दे० ढालना, उफलना ।
उत तद्० (अ०) उधर, उस ओर, उस तरफ ।
उतथ्य तत्० (पु०) [उतथ+य] मुनि विशेष, अङ्गिरा का पुत्र, वृहस्पति का ज्येष्ठ सहोदर ।—नुज (पु०) [उतथ्य+अनुज] वृहस्पति ।
उतना तद्० (अ) उतना ही, उतना ही, उत्ता, परिमाण विशेष ।
उतरण तद्० (स्त्री०) उतार, उद्धार, मुक्ति ।
उतरना तद्० (क्रि०) नीचे आना, घट जाना, टिकना, वास लेना, विश्राम करना, किनारे पहुँचना, पार होना, लांघना, घटना, कम होना, उदास होना, फीका पड़ना, यथा "आजकल उसका रङ्ग उतर गया" ।
उतला तद्० (पु०) उतावला, घबरा, व्यस्त, व्याकुल व्यग्र ।
उतार तद्० (पु०) नीचे आना, घटी ।
उतारण तद्० (स्त्री०) टुकड़ा, टूक, खण्ड ।
उतारा तद्० (पु०) ढाल, अपमान, दण्ड ।
उतावल दे० (स्त्री०) शीघ्रता, वेग, फुर्ताई, कहीं कहीं उताहल भी कहा जाता है ।
उतावली दे० (गु०) वेगी, शीघ्र, फुर्तीला ।
उत्तीर्ण तत्० (गु०) [उत्+तृ+क्त] उद्गत, पारगत, पार पहुँचा, सफल ।
उत्क तत्० (गु०) उन्मना, अन्यमनस्क, उद्विग्न, इच्छु, उत्कण्ठित ।
उत्कट तत्० (गु०) [उत्+कट+अत्] तीव्र, मत्त, विषम, गूढ़, कठिन, दुस्सह, उद्दाम, कठोर, उग्र, अधिक, दुःसाध्य ।
उत्कण्ठा तत्० (स्त्री०) अभिलाषा, खेद, उत्कलिका, इष्ट प्राप्ति के लिये विलम्ब का असहन, प्रियप्राप्ति

जन्य उदासी, अन्यमनस्कता, व्याकुलता, व्यस्तता, भावना, चिन्ता, औत्सुक्य उद्वेग।

उत्कण्ठित तत्० (पु०) उत्कण्ठायुक्त, उत्सुक, उन्मना, उद्विग्न, भावित, चिन्तित।—ा तत्० (स्त्री०) चिन्तान्विता, उद्विग्ना, नायिका विशेष, सङ्केत स्थान में नायक के न आने से अनुतप्ता, इसे उत्कामी कहते हैं।

यथा—"आप जाय सङ्केत में पीव न आयो होय, ताको मन चिन्ता करे उत्का कहिये सोय"।

मतिराम

उत्कर्ष तत्० (पु०) [उत्+कृष्+अल्] प्रधानत्व, श्रेष्ठता, आधिक्य, उत्तमता, श्रेष्ठपन।—ता (स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रबलता।

उत्कल तत् (पु०) देश विशेष, इसका दूसरा नाम ओड़ भी था, इस समय उड़ीसा देश के नाम से प्रसिद्ध है। ताम्रलिप्ती नदी के दक्षिण किनारे पर बसा है और कपिशा नदी तक चला गया है। इसके प्रसिद्ध नगर पुरी और कटक हैं। पुरी ही में जगन्नाथ जी का मन्दिर है।

उत्कीर्ण तत्० (पु०) क्षत, खोदित, उल्लिखित, वेधित, खोदा हुआ।

उत्कृष्ट तत्० (पु०) [उत्+कृष+क्त] उत्कर्ष विशिष्ट, अतिशय, प्रकृष्ट, प्रशस्त, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।—ता (स्त्री) उत्तमता, उत्कर्ष।

उत्क्रान्त तत्० (पु०) [उत्+क्रम+क्त] निर्गत, ऊपर गया हुआ, उल्लङ्घित।

उत्क्रान्ति तत्० (स्त्री०) मृत्यु, मरण।

उत्क्रोश तत्० (पु०) पक्षि विशेष, कुररी, टिट्टिम, राजपक्षी, चिल्लाना।

उत्खात तत्० (पु०) उत्+खन्+क्त, उन्मूलित, उत्पाटित, विदारित।

उत्तंस तत्० (पु०) कर्णपूर, कर्णाभरण, शेखर, शिरोभूषण, कनफूल।

उत्तप्त तत्० (पु०) [उत्+तप्+क्त] तप्त, सन्तप्त, उष्ण, दग्ध, परिप्लुत, तापित, चिन्तित, भावित।—ता (स्त्री०) उष्णता, सन्ताप।

उत्तम तत्० (पु०) [उत्+तम+अल्] भद्र, उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, नायक, भेद, राजा उत्तानपाद का पुत्र, उत्तानपाद की प्रिया सुरुचि के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, अविवाहित अवस्था ही में उत्तम अहेर खेलने किसी वन में गया, और वहीं एक यक्ष ने उसे मार डाला।—ना (स्त्री०) उत्कर्ष, सौन्दर्य।—पद (पु०) श्रेष्ठपद, उच्चपद।—र्ण (पु०) [उत्तम+ऋण] ऋणदाता, महाजन।—संग्रह (पु०) सम्यक संग्रह, एकान्त में परस्त्री के साथ परस्पर आलिङ्गन।—साहस (पु०) दण्ड विशेष, अस्सी हजार पण परिमित दण्ड, अतिशय साहस, दुःसाहस।—ा (स्त्री०) उत्कृष्टा नारी, श्रेष्ठा।—ाङ्ग (पु०) [उत्तम+अङ्ग] मस्तक, शिर, मुण्ड।—ोत्तम (पु०) [उत्तम+उत्तम] अतिशय, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट।

उत्तर तत्० [उत्+तृ+अल्] प्रतिवचन, प्रतिवाक्य, समाधान, (पु०) उत्तर, अनन्तर, दिक् विशेष, (अ०) पश्चात्, (पु०) विराट राजपुत्र।—काल (पु०) भविष्यत् काल, आगामी समय।—कुरु (पु०) जम्बु द्वीप के नववर्षों के अन्तर्गत एक वर्ष।—कोशला (स्त्री०) अयोध्या नगरी, सूर्य वंशी राजाओं की प्राचीन राजधानी।—क्रिया (स्त्री०) प्रतिवचनदान, अन्त्येष्टि क्रिया, सांवत्सरिक श्राद्ध आदि पितृकर्म।—च्छद (पु०) प्रच्छदपट, आच्छादन वस्त्र, पलँग पोश।—पक्ष (पु०) सिद्धान्त, समाधान, विचार विशेष।—प्रत्युत्तर (पु०) वादानुवाद, तर्क।—ा (स्त्री०) मत्स्य देश के राजा विराट की कन्या, यह अर्जुन पुत्र अभिमन्यु से ब्याही गई थी, इसीके गर्भ से राजा परीक्षित उत्पन्न हुए थे।—ाधिकारी (पु०) मृत्यु के बाद अधिकारी, दामाद, धनग्राही, वारिस।

उत्तराफाल्गुनी तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत बारहवाँ नक्षत्र।

उत्तरभाद्रपद तत्० (पु०) छब्बीसवाँ नक्षत्र।

उत्तरायण तत्० (पु०) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, विषवत् रेखा के उत्तर भाग में सूर्य का स्थिति काल उत्तरायण, माघ से लेकर छ महीना, देवताओं का दिन।

उत्तरार्द्ध तत्० (पु०) उत्तर का आधा हिस्सा, पिछला भाग।

उत्तराषाढ़ तत्० (स्त्री०) इक्कीसवां नक्षत्र ।

उत्तराहा तद्० उत्तर दिशा का।

उत्तरीय तत्० (पु०) उत्तर देशवासी, ऊपर रखने का कपड़ा, दुपट्टा ।

उत्तरोत्तर तत्० (पु०) [उत्तर+उत्तर,] परस्पर क्रम से, एक के अनन्तर एक, आगे आगे ।

उत्तान तत्० (पु०) [उत्+तन+घञ,] उन्मुख, ऊर्ध्वमुख, चित्त, उथला ।—पात्र (पु०) थाला, रोटी सेंकने का बर्तन ।—पाद (पु०) राजा विशेष, स्वायम्भुव मनु का पुत्र, नक्षत्र विशेष ।—शय (पु०) बहुत छोटा लड़का, चित्त सोने वाला ।

उत्ताप तत्० (पु०) [उत्+तप्+घञ,] तेज, गरमी, सन्ताप, उष्णता ।

उत्तापन तत्० (पु०) [उत्+तप्+णिच्+अनट्,] सन्तापन, उष्णकरण ।

उत्ताल तद्० (पु०) उत्कट, महत् श्रेष्ठ, भयानक त्वरित ।

उत्तिष्ठमान तत्० (पु०) उत्थानशील, वर्द्धनशील, वर्द्धमान ।

उत्तीर्ण तत्० (पु०) पारप्राप्त, पारङ्गत, मुक्त, उद्गत, उपनीत ।

उत्तुङ्ग तत्० (पु०) उच्च, ऊर्ध्व, उन्नत, ऊंचा ।

उत्स् दे० (पु०) धुनना, कुल्हाव, पर्त, तह, परी ।—करना (क्रि०) तह जमाना, धुनना, पर्त लगाना, शिथिल करना ।

उत्यक्त तद्० (पु०) वर्जित, परित्यक्त, छोड़ा ।

उत्तेजना तत्० (स्त्री०) व्याकुल करण, भर्त्सन, किसी कार्य में पुनः पुनः प्रवर्त्तन, प्रेरणा, मार्जना ।

उत्तेजित तत्० (पु०) [उत्+क्त,] प्रेरित, पुनः पुनः आदेशित, तर्जित धिक्कृत, भर्त्सित, शासित ।

उत्तोलन तत्० (पु०) [उत्+तुल्+अनट्] ऊर्ध्व नयन, तौलना, उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना।

उत्थान तत्० (पु०) [उत्+स्था+अनट्] सैन्य, युद्ध, पौरुष, पुस्तक, उद्यम, उद्गम, हर्ष, आंगन, चैत्य, मलोत्सर्ग, तन्त्र, स्वमण्डल, सैन्य, चिन्ता, सन्निविष्ट, उपविष्ट, उठाव ।—कादशी (स्त्री०) कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी, उसी दिन शेषशायी जागृत होते हैं ।

उत्थापन तत्० (पु०) [उत्+स्था+णिच्+अनट्] उठावना, उचालना ।

उत्थित तत्० (पु०) [उत्+स्था+क्त] उत्पन्न, उत्तोलित, वृद्धि विशिष्ट, उठा हुआ ।—ङ्गुलि (स्त्री०) विस्तृत अङ्गुलि, करतल, थप्पड़ ।

उत्पतन तत्० (पु०) [उत्+पत्+अनट्] ऊर्ध्व गमन, उत्पत्ति, पक्षी का उड़ना, ऊपर उठना ।

उत्पतित (पु०) [उत्+पत्+क्त] ऊपर गया, ऊर्ध्व गमन ।

उत्पत्ति तत्० (स्त्री०) [उत्+पद्+क्ति] जनन, जन्म, उद्भव, आदि ।—शाली (पु०) जन्म विशिष्ट, जो उत्पन्न होता है ।

उत्पथ तत्० (पु०) कुमार्ग, कुमार्गगमन, सत्पथच्युत ।

उत्पन्न तत्० (पु०) [उत्+पद्+क्त] उत्पत्ति विशिष्ट, जात, जन्मा हुआ, जन्मित ।

उत्पल तत्० (पु०) नीलकमल, नीलपद्म, पद्ममल से उत्पन्न होने वाले पुष्प मात्र ।—पत्र (पु०) पद्मपत्र, स्त्रीनखक्षत ।

उत्पाटन तत्० (पु०) मूल सहित उखाड़ना, उन्मूलन ।

उत्पात तत् (पु०) [उत्+पत्+घञ्] उपद्रव, दौरात्म्य, दुष्टता, बिगाड़, हानि, अन्धेर ।—वात (पु०) बवण्डल, अन्धड़ ।—ग्रस्त (पु०) उपद्रव युक्त, उपद्रुत ।

उत्पादक तत्० (पु०) [उत्+पद्+णक्] जनक, उत्पत्ति कर्ता ।

उत्पादन तत्० (पु०) [उत्+पद्+णिच्+अनट्] जनन, उत्पन्न करना, जन्माना, जन्मवाना, उपजाना ।

उत्पादिका तत्० (स्त्री०) [उत्+पद्+इक्+आ] जननी, उत्पादन कारिणी, माता, प्रति पदार्थ में एक प्रकार की शक्ति, उत्पादिका शक्ति ।

उत्पीड़न तत्० (पु०) बाधा, क्लेश पहुँचाना, खेदित करने का उपाय ।

उत्प्रेक्षा तत्० (स्त्री०) [उत्+प्र+ईक्ष्+आ] अनवधान, सादृश्य अनुमान, उपेक्षा, उपमा, दीप्त, अर्थालङ्कार विशेष, अतिशय, सादृश्य होने के कारण उपमान गत गुण क्रिया आदि की उपमेय में सम्भावना।

उत्प्लवन त० (पु०) [उत्+प्लु+अनट्] कूदना, लाघना, लाफ मारना।

उत्फाल तत्० (पु०) लाघना, कूदना, लाफ मारना।

उत्फुल्ल तत्० (गु०) [उत्+फुल्+क्त] प्रफुल्ल, विकसित, आनन्दित।

उत्सङ्ग तत्० (पु०) उत्+सञ्ज्+अन्] क्रोड़ अङ्क, कोला, गोदी, कुक्ष, कोल।—ी (गु०) सम्प्रयी, सङ्गी।

उत्सन्न तत्० (गु०) [उत्+सद्+क्त] हत, नष्ट उत्थित, उत्पतित।

उत्सर्ग तत्० (पु०) [उत्+सृज्+अच्] त्याग, दान, विसर्जन।—पत्र (पु०) दान पत्र, कार्य त्याग पत्र।

उत्सर्जन तत्० (पु०) [उत्+सृज्+अनट्] उत्सर्ग, त्याग, दान, वितरण।

उत्सव तत्० (पु०) [उत्+सु+अल्] आनन्द, नियत, आह्लाद जन व्यापार, यज्ञ पूजा, अर्चा आदि।—जनक (गु०) आल्हाद जनक, प्रमोद जनक।

उत्सादन तत्० (पु०) [उत्+सद्+णिच्+अनट्] उच्छेद करण, विनाशन, छिन्न भिन्न करना।

उत्सादित तत्० (गु०) [उत्+सद्+णिच्+क्त] विनाशित, छिन्न भिन्न कृत, निर्मली कृत शरीर।

उत्सारण तत्० (पु०) [उत्+सृ+अनट्] दूरी करण, दूसरे स्थान भेजना।

उत्साह तत्० (पु०) [उत्+सह्+घञ्] अध्यवसाय, उद्योग, उद्यम, वीर रसका स्थायी भाव।—वर्द्धन (पु०) उद्यमवृद्धि, उद्यमाधिक्य।—शील उद्योगी, उद्यमी।—ान्वित (गु०) उत्साह युक्त, उद्यमी।

उत्साहित तत्० (गु०) उत्साह शाली, प्राप्तोत्साह।

उत्साही तत्० (गु०) [उत्+सह्+णिन्] उद्यमयुक्त, उद्योगी।

उत्सुक तत्० (गु०) [उत्—सु+क्त] मनोरथ सिद्धि के लिये उद्यत।

उथलना दे० (क्रि०) उलट देना, औंधना, तले ऊपर करना।

उथल पुथल दे० उलट पुलट, विपरीत, इधर का उधर, नीचे ऊपर।

उथला दे० (गु०) छिछला, हलका, उठा।

उदक तत्० (पु०) जल, सलिल, वारि, पय, (अ०) उत्तर दिशा, देश वा काल।—क्रिया (स्त्री०) मृत मनुष्य को लक्ष्य करके जल देना।

उदधि तत्० (पु०) जलधि, सागर।—मेखला (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।

उदन्त तत्० (पु०) समाचार, वार्ता, वृत्तान्त।

उदन्वान् तत्० (पु०) समुद्र, पयोधि, वारिनिधि।

उदपान तत्० (पु०) कूप, झील, तालाव।

उदय तत्० (पु०) उदयाचल, समुन्नति, दीप्ति, मङ्गल, प्राची, धनलाभ।—काल (पु०) प्रभातकाल, सर्प विशेष।—गिरि (पु०) उदयाचल, पूर्वपर्वत।

उदयन तत्० (पु०) प्रकाश होना ऊर्द्ध गमन, अगस्त्य मुनि, वत्सराज, शतानीक के पुत्र, इनकी राजधानी कौशाम्बी थी, वासव दत्ता इनकी रानी का नाम था, वत्सराज और उदयन दोनों नाम से यह प्रसिद्ध हे। विख्यात दार्शनिक, पण्डित, उदयनाचार्य, द्वादश शताब्दी के मध्यभाग में मिथिला में उत्पन्न हुए थे। कहते हैं कि बौद्धों का नाश करने के लिये भगवान् मिथिला में उदयनाचार्य रूप से प्रकट हुए थे, प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रन्थ कुसुमाञ्जलि इन्हींका बनाया है इसके अतिरिक्त वाचस्पति मिश्र के बनाये न्यायशास्त्र के कितने ग्रन्थों की टीका भी इन्होंने की हैं। इनकी कन्या लीलावती, उस समय विख्यात विदुषी थी।

उदयाचल तत्० (पु०) उदयगिरि, पूर्व पर्वत।
उदयास्त तत्० (पु०) प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त, उदय से अस्त लौं, पूर्व दिशा से पश्चिम तक।
उदर तत्० (पु०) पेट, जठर।—भङ्ग (पु०) अतिसार, पेट की छुटाई।—म्भरि (पु०) पेटार्थी, पेटू, भोजनप्रिय।—रस (पु०) उदरस्थित पाचक रस।—रोग (पु०) जठरव्याधि विशेष, पेट की पीड़ा।—सर्वस्व (गु०) उदरपरायण, पेटू।—ाग्नि (पु०) जठरानल, पचाने की शक्ति।—ावर्त (पु०) नाभी।—ामय (पु०) उदररोग, पेट की पीड़ा, उदरभङ्ग, अतिसार।
उदरिणी तत्० (स्त्री०) गर्भिणी, द्विजीवा।
उदरी तत्० (गु०) उदरिक, उदरिल, तोंदीला, मोंट वाला।
उदर्क तत्० (पु०) भावी, भविष्यत्काल।
उदर्चि तत्० (पु०) अग्नि, अग्नि की शिखा, शिव, कन्दर्प (गु०) उद्गत ज्वाला, उज्ज्वल, प्रकाशमय।
उदात्त तत्० (पु०) स्वरविशेष, वेदगान में उच्चस्वर, दान, वाद्यविशेष, काव्यालङ्कार विशेष, नायक विशेष, (गु०) स्वरित, दया त्याग आदि गुण सम्पन्न, मनोहर, महान्।
उदाता तत्० (गु०) दाता, दान शील, उदार।
उदान तत्० (पु०) कण्ठस्थवायु, प्राणवायु, उदरावर्त, नाभि, सर्प विशेष।
उदार तत्० (गु०) [उत्+आ+ऋ+अप्] दाता, महत्, सरल, महात्मा।—ता (स्त्री०) सरलता, वदान्यता।—त्व (पु०) दातृत्व, दानशीलता।
उदास तत्० (पु०) [उत्+आस्+अल्] एकान्ती, मलीन, उद्विग्नचित्त।
उदासी तत्० (पु०) वैरागी, एकान्तवासी, विदेशी, एक सम्प्रदाय के साधु।
उदासीन तत्० (पु०) निःसङ्ग, योगी, अतिथि, वनवासी, तपस्वी, शत्रु मित्र को समान देखने वाला, सम्प्रदाय विशेष।
उदाहट तद्० (स्त्री०) धुंधला रङ्ग, भूरा।
उदाहरण तत्० (पु०) दृष्टान्त, निदर्शन, लक्ष्य, उपमा।
उदाहृत तत्० (गु०) [उत्+आ+हृ+क्त] दृष्टान्त दिया हुआ, उत्प्रेक्षित, उक्त, कथित।
उदित तत्० (गु०) [उद्+इ+क्त] उद्गत, प्रकाशित, आविर्भूत।
उदीची तत्० (स्त्री०) [उत्+अञ्च्+ई] उत्तर-दिक्।
उदीच्य तत्० (पु०) शरावती नदी के पश्चिमोत्तर देश, भावी कर्तव्य।
उदीरण तत्० (पु०) [उत्+ईर्+अनट्] कथन, उच्चारण, वाक्य।
उदीरित तत्० (गु०) उच्चारित, उक्त, कथित।
उदुम्बर तत्० (पु०) गूलर, डूमर।
उदूखल तत्० (पु०) उलूखल, गूगल।
उद्गत तत्० (गु०) ऊर्ध्वगत, उदित, उत्थित, वर्धित।
उद्गमन तत्० (पु०) ऊर्ध्वगमन, ऊपर जाना।
उद्गाता तत्० (पु०) सामवेदज्ञ, सामवेदवेत्ता ब्राह्मण, सामवेद गायक।
उद्गार तत्० (पु०) डकार, वमन, ओकाई, फरठ, उफान, गर्जन।
उद्गीत तत्० (गु०) ऊँचे स्वर से गाया हुआ।
उद्गीथ तत्० (पु०) सामवेद का अंश विशेष, प्रणव ओङ्कार।
उद्घाटन तत्० (पु०) कूप का चरसा, खाल, कूएँ से जल निकालने के लिये रज्जूसहित घट।
उद्घात तत्० (गु०) आरम्भ, शास्त्र, ग्रन्थ, परिच्छेद, अध्याय, पादस्खलन, उत्तुंग, मुद्गर, उपक्रम, प्रतिघात, अस्त्र विशेष, बाधा।
उद्दंश तत्० (पु०) मसा, मशक, डांस।
उद्दन्त तद्० (गु०) वृहद्दन्त, दंतुला, आगे निकला हुआ दाँत।
उद्दालक तत्० (पु०) प्राचीन आर्य ऋषि, इनका प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु आयोदधौम्य ने इनका उद्दालक नाम रक्खा। श्वेतकेतु इन्हीं के पुत्र थे।
उद्दिम तद्० (पु०) उद्यम, उद्योग।
उद्दिष्ट तत्० (गु०) कृत उद्देश, लक्षित, मनमत, अभिप्रेत, मनस्य।

उद्दीपक तत्० (गु०) प्रकाशकर्त्ता, व्यक्तकारी ।

उद्दीपन तत्० (पु०) प्रकाशन, तापन, रसों का विभाव विशेष ।

उद्देश तत्० (पु०) अनुसन्धान, अन्वेषण, अभिप्राय नाम निर्देशपूर्वक वस्तु निरूपण ।

उद्देश्य तत्० (गु०) उद्देष्टव्य, लक्ष्य, प्रयोजन ।

उद्धत तत्० (गु०) धृष्ट, अविनीत, दुरन्त, दुष्ट, कुचाल अभिमानी, मस्त ।

उद्धव तत्० (पु०) श्री कृष्ण का मित्र और भक्त, उत्सव, आमोद, प्रमोद ।

उद्धरण तत्० (पु०) उद्धार, मुक्ति, त्राण, फंसे हुए को निकालना ।

उद्धार तत्० (पु०) बचाव, छुटकारा, मुक्ति, रक्षण त्राण, मोचन ।

उद्धृत तत्० (गु०) उद्धार, रक्षित, मुक्ति, त्राण ।

उद्बन्धन तत्० (पु०) [उत्+बन्ध+अनट्] ऊपर बाँधना, गले में रस्सी लगाना, फाँसी देना, टाँगना ।—मृत (गु०) गले में रस्सी डाल कर मरा हुआ, फाँसी पाया हुआ ।

उद्वाह तत्० (पु०) [उत्+वह्+घञ्] विवाह, परिणय, दारक्रिया ।—ोपयुक्त (गु०) विवाह के उपयुक्त, परिणय योग्य, वयस्क ।

उद्बोधन तत्० (पु०) [उत्+बुध्+अनट्] स्मरण चिन्ह, ज्ञापन, ज्ञान, अनुमान ।

उद्भट तत्० (गु०) अज्ञात नाम कवि के बनाये हुए श्लोक, प्रवर, उदार, महात्मा, बेजोड़, असमान, महाशय, अनुपम वीर ।

उद्भव तत्० (पु०) [उत्+भू+अल्] उत्पत्ति, जन्म, प्रादुर्भाव ।

उद्भावन तत्० (पु०) [उत्+भू+अनट्] कल्पना, प्रकाश ।

• उद्भासित तत्० (गु०) [उत्+भास्+क्त] उद्दीपित, प्रदीप्त, जो प्रकाशित हो ।

उद्भिज्ज तत्० (गु०) वृक्षलता आदि, जो भूमि फोड़ कर निकलते हैं ।—ज् (गु०) भूमिभेदन पूर्वक उत्पत्ति शील ।

उद्भिद् तत्० (गु०) [उत्+भिद्+क्विप्] अङ्कुरित या प्रफुल्लित होना, वृक्षलता आदि ।—विद्या (स्त्री०) वृक्ष आदि रोपने की विद्या, माली का काम ।

उद्भिन्न तत्० (गु०) [उत्+भिद+क्त] भेदित, विद्ध, प्रकाशित ।

उद्भूत तत्० (गु०) [उत्+भू+क्त] उत्पन्न, ज्ञात । —रूप (पु०) दृष्टिगोचर होने योग्य रूप ।

उद्यत तत्० (गु०) [उत्+यम्+क्त] समुद्युक्त, प्रवृत्त उत्थित, परिश्रमी, (पु०) अध्याय ।

उद्यम तत्० (पु०) [उत्+यम+अण्] उद्योग उत्साह, अध्यवसाय, चेष्टा, यत्न ।—ी (गु० उद्योगी, उत्साही, सतर्क ।

उद्यान तत्० (पु०) [उत्+या+अनट्] क्रीडावन उपवन, बगीचा, आराम ।—पाल (पु०) उद्या रक्षक, माली, बागवान ।

उद्यापन तत्० (पु०) [उत्+या+णिच्+अनट् व्रत समाप्ति, विसर्जन, समापन ।

उद्युक्त तत्० (गु०) [उत्+युज्+क्त] उद्यमयु उद्योगविशिष्ट, उत्साहान्वित, यत्नवान्, लगा हुअ परिश्रमी ।

उद्योग तत्० (पु०) [उत्+युज्+घञ्] यत्न, चेष् उत्साह, अध्यवसाय, उद्यम, प्रयास, आयोजन उपाय ।—ी (गु०) उद्योग विशिष्ट, यत्नवान्, उद्यु उत्साही ।

उद्योत तत्० (पु०) प्रकाश, चमक, आलोक, उि वाली ।

उद्र तत्० (पु०) उदविलाव, जल की बिल्ली ।

उद्रिक्त तत्० (गु०) स्फुट, स्पष्ट, व्यक्त परिवृद्ध, ब हुआ ।

उद्रेक तत्० (पु०) उपक्रम, आरम्भ, वृद्धि, उत्पा उत्तेज, प्रकाश ।

उद्विग्न तत्० (गु०) [उत्+विज्+क्त] उद्वेगयु उत्कण्ठित, भावित, भावनान्वित ।—चित्त (गु सचिन्त अन्तःकरण, भावनायुक्तचित्त ।—म (गु०) उद्विग्न चित्त ।

उद्बुद्ध तत्० (गु०) [उत्+बुध्+क्त] विकासित, प्रकाशित ।

उद्वृत्त तत्० (गु०) [उत्+वृत्+क्त] उत्क्षिप्त, उद्भ्रान्त, अतिरिक्त, अधिक, अवशिष्ट, दुर्वृत्त, क्षुभित अवाच्य ।

उद्वेग तत्० (पु०) व्याकुलता, भावना, चिन्ता, विरहजन्य दुःख ।—कर (गु०) चिन्ताजनक, व्याकुलता वर्द्धक ।—ी (गु०) उद्विग्न, उत्कण्ठित, भावनायुक्त, चिन्तान्वित ।

उधर तद्० (अ०) वहाँ, उस ठाँव, उस ठौर ।

उधरा तद्० (गु०) खुला, मुक्त, छुटा ।

उधार तद्० (पु०) धार, देना, ऋण ।

उधारना तद्० (क्रि०) मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना ।

उधेड़ना तद्० (क्रि०) सुलझाना, खोलना ।

उधेड़बुन तद्० (पु०) परिश्रम, झंझट, कामधंधा ।

उन्नत तत्० (गु०) [उत्+नम्+क्त] वर्द्धित उच्च, उत्तुङ्ग ।—नाभि (गु०) उच्च नाभियुक्त, ।—नत (गु०) उच्चनीच स्थान आदि, ऊबड़खाबड़, बन्धुर ।

उन्नति तत्० (स्त्री०) [उत्+नम्+क्ति] समृद्धि, वृद्धि, उच्चता, उदय, गरुड़ भार्या ।

उन्नमित तत्० (गु०) [उत्+नम्+क्त] उत्तोलित, ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वीकृत ।

उन्नयन तत्० (पु०) वितर्क, ऊर्ध्वप्रापण, उत्तोलन, ऊपर ले जाना ।

उन्नामन तत्० (पु०) [उत्+नम्+अन्] ऊपर से नीचे की ओर झुकाया गया ।

उन्निद्र तत्० (गु०) प्रफुल्ल, विकसित, प्रकाशित निद्रा रहित ।

उन्मत्त तत्० (गु०) [उत्+मद्+क्त] उन्मादयुक्त, वायु के द्वारा चित्त विभ्रमी, बौरहा, पागल, मतवाला ।

उन्मद तत्० (गु०) [उत्+मद्+अच्] उन्मादयुक्त, प्रमादी, सिड़ी, उन्मत्त ।

उन्मना तत्० (गु०) [उत्+मनस्] उत्कण्ठित चित्त, चिन्तित, व्याकुल, अमुल ।

उन्माद तत्० (पु०) वातरोग विशेष, चित्तविभ्रम, (गु०) उन्मादरोगयुक्त, क्षिप्त ।—क्षेत्र (पु०) वायुग्रस्त, पागल ।

उन्मान तत्० परिमाण, तौलना, मापना, परिमाणकरण ।

उन्मिषित तत्० (गु०) [उत्+मिष्+क्त] प्रफुल्ल, विकसित ।

उन्मीलन तत्० (पु०) उन्मेष, विकाश, प्रकाश, आँख खोलना ।

उन्मीलित तत्० (गु०) विकासित, प्रस्फुटित, विकास प्राप्त ।

उन्मुख तत्० (गु०) ऊर्ध्वमुख, अभिमुख, अवहित, चेष्टा, उत्कंठित ।

उन्मूलक तत्० (गु०) उन्मूलनकारी, समूल उखाड़ देने वाला ।

उन्मूलन तत्० (पु०) [उत्—मूल्+अनट्] उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना ।

उन्मेष तत्० (पु०) नयन उन्मीलन, आंख खोलना, विकाश, प्रकाश, ज्ञान, बुद्धि, पलक ।

उन्मोचन तत्० (पु०) परित्याग करना, मुक्त करण ।

उन्हारा तद्० (पु०) डाल, डौल, रूप ।

उप तत्० (उपसर्ग) समीप, पास, बराबर, न्यून, कम, छोटा, हीन, प्रतिनिधि, सदृश, अनुगति, पश्चाद्भव, अनुकम्पा, आधिक्य, भूषण, दोषोद्घाटन, निदर्शन, आश्चर्यकरण, मारणदान, व्यापकता, लिप्सा, पूजा, उद्योग ।—कण्ठ (गु०) निकट, समीप, (पु०) ग्राम के समीप, अश्वों की गति विशेष ।—कथा (स्त्री०) आख्यायिका, इतिहास, पुराण, लबर सबर, कहानी, कल्पित कथा ।—करण (पु०) सामग्री, परिच्छेद, राजाओं का छत्र चामर आदि, भोजन के लिये व्यञ्जन, आदि, नैवेद्य पुष्प धूप आदि पूजा के लिये सामग्री, अप्रधान द्रव्य ।

उपकार तत्० (पु०) [उप्—कृ+घञ्] उपकृति, आनुकूल्य, कृपा सहायता ।—ी (गु०) उपकारविशिष्ट उपकारक ।—क (गु०) उपकारी, आनुकूल्यकारी, सहाय, कृपावन्त ।

उपकारिका तत्० (स्त्री०) [उप्—कृ + इक्—आ] उपकारकर्त्री, राजगृह, कुशल, निपुण।

उपकारेच्छु तत्० (गु०) उपकारकरणाभिलाषी, दाता।

उपकार्य तत्० (गु०) [उप्—कृ + ण्यत्] उपकारोचित, जिसका उपकार किया जाय।—ा (स्त्री०) राज सदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, गोला।

उपकुर्वाण, तत्० (पु०) कुछ दिन के लिये ब्रह्मचारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य समाप्त करने के अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं।

उपकूप तत्० (पु०) कूप के समीप का जलाशय, पशुओं के जल पीने के लिये जो बनाया जाता है।

उपकूल तत्० (पु०) नदी, तालाब आदि का तीर।

उपकृत तत्० (गु०) कृतोपकार, जिसकी सहायता की गयी है।—ी (स्त्री०) उपकार, साहाय्य, कृतोपकार, आनुकूल्य।

उपक्रम तत्० (पु०) [उप् + क्रम + अल्] आरम्भ, उद्योग, धोखा, आद्यकृति, प्रथम आरम्भ, चिकित्सा, पलायन, प्रक्रम, सूचना, अनुष्ठान।

उपक्रान्त तत्० (गु०) समारब्ध, अनुष्ठित, कृतप्रारम्भ, प्रस्तुत।

उपक्रोश तत्० (पु०) [उप + क्रुश — अल्] निन्दा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हण।

उपखान तद्० (पु०) कथा, इतिहास, (स०) उपाख्यान।

उपगत तत्० (गु०) [उप् + गम् + क्त] प्राप्त, अङ्गीकृत स्वीकृत, कृतमैथुन, आसक्त, अभिरत।

उपगम तत्० (पु०) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार, निकट गमन।

उपगुरु तत्० (पु०) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु, उपदेशक, शिक्षागुरु।

उपगूहन तत्० (पु०) [उप + गुह + अनट्] आलिङ्गन, अँकवार भेंट।

उपग्रह तत्० (पु०) बँधुआ, दया, सहायता, उपयोग, अनुकूल, ग्रह विशेष, अप्रधान ग्रह।

उपघात तत्० (पु०) [उप + हन् + घञ्] रोग, पीड़ा, आघात।

उपङ्ग तद्० (पु०) बाजा, वाद्यविशेष।

उपचय तत्० (पु०) [उप + चि + अल्] वृद्धि, उन्नति, आधिक्य, बढ़ती।

उपचरित तत्० (गु०) [उप + चर् + क्त] उपासित, सेवित, आराधित।

उपचर्या तत्० (स्त्री०) [उप + चर + क्यप्] चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतीकार, शुश्रूषा।

उपचार तत्० (पु०) [उप + चर + घञ्] उपाय, आकार, पूजन की सामग्री, प्रकार, सेवा, रोगों का प्रतिकार, चिकित्सा, उपकरण, शुश्रूषा, उपक्रम, व्यवहार, उत्कोच, घूँस, आरोप।

उपचित तत्० (गु०) [उप + चि + क्त, दुग्ध, समृद्ध, वर्द्धित, सञ्चित, रचित, समाहित।

उपज तद्० (पु०) गाना, अन्तरा, अनुज, कनिष्ठ, सूझ, स्फूर्ति, फुरन, पैदावार, उत्पत्ति।

उपजना तद्० (क्रि०) उगना, पढ़ना, अङ्कुर होना।—उपजहिं, उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं।

उपजाऊ तद्० (गु०) उपजनेहारा।

उपजात तत्० (गु०) उपार्जित, घटित, उत्पन्न।

उपजाना तद्० (क्रि०) उत्पन्न करना, सिरजना।

उपजाप तत्० (पु०) भेद, विच्छेद, विसम्वाद, पार्थक्य, सुहृद्भेदन, फूटके भेद करण।

उपजायें तत्० उत्पन्न किये, पैदा किये, निकाले।

उपजित तद्० (गु०) उत्पन्न हुआ, उपजा।

उपजिह्वा तद्० (स्त्री० क्षुद्र जिह्वा, छोटी जीभ।

उपजीविका तत्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, जीवनोपाय, अवलम्ब।

उपजीवी तत्० (गु०) अवलम्बी, आश्रयी, अनुगत।

उपज्ञा तत्० (स्त्री०) आद्यज्ञान, प्रथमज्ञान, उपदेश के विना ईश्वर दत्त प्रथमज्ञान।

उपटना तद्० (पु०) उपरना, बांदना।

उपठना तद्० (क्रि०) थकना, उचाट होना।

उपड़ना तद्० (क्रि०) उखड़ना, उत्पाटन करना।

उपढौंकन तत्० (पु०) [उप + ढौक् + अनट्] पारितोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट।

उपतन्त्र तत्० (पु०) [उप+तन्त्र] यामल आदि तन्त्र शास्त्र, सूक्ष्मसूत्र।

उपतप्त तत्० (पु०) [उप+तप्+क्त] सन्तापित, दुःखित, खेदित।

उपताप तत्० (पु०) रोग, पीड़ा, वेगावेगी, उत्ताप, त्वरा, अशुभ, शोक, विपद।

उपतारा तत्० (स्त्री०) क्षुद्र नक्षत्र, नेत्र तारका मण्डल, नेत्रगोलक।

उपत्यका तत्० (स्त्री०) पर्वतों के समीप की भूमि।

उपदंश तत्० (पु०) सुजाक, रोग विशेष, मेढ़ रोग, मद्यपान, सर्पदंश।

उपदल तत्० (पु०) मुकुल, पत्ता, पान, पुष्प दल, फूलों की पत्ती।

उपदर्शक तत्० (पु०) द्वारपाल, प्रहरी।

उपदा तत्० (स्त्री०) उपढौकन, भेंट, उपायन, दर्शन।

उपदिष्ट तत्० (पु०) [उप+दिश्+क्त] उपदेश प्राप्त, कृतोपदेश।

उपदेवता तत्० (पु०) भूत, प्रेत, देवता विशेष।

उपदेश तत्० (पु०) [उप+दिश+अल्] शिक्षा, मन्त्र दान, दीक्षा, हित कथन।—कारी (पु०) उपदेशकर्त्ता, उपदेशकारी, उपदेष्टा, शिक्षक।—ी (पु०) गुरु आचार्य, उपाध्याय।

उपदेश्य तत्० (पु०) [उप+दिश्+य] उपदेष्टव्य, उपदेशयोग्य, उपदेश के अधिकारी।

उपदेष्टा तत्० (पु०) [उप+दिश्+तृण्] उपदेशकर्त्ता, आचार्य, शिक्षक, शिक्षा गुरु।

उपदेह तत्० (पु०) विलेपन, लेप।

उपद्रव तत्० (पु०) उत्पात, अन्याय, बखेड़ा, उपाधि, ऊधम, अन्धेर, विद्रोह।

उपद्रुत तत्० (पु०) [उप+द्रु+क्त] विडम्बित, अपकृत आकुलित।

उपद्वीप तत्० (पु०) टापू बड़ा, छोटा द्वीप, जलरहित स्थान, जलमध्य वर्ती स्थान।

उपधर्म तत्० (पु०) पाखण्ड, पापी, नास्तिक।

उपधान तत्० (पु०) [उप+धा+अनट्] बालीश, तकिया, उसीसा, सिरहाना, गिराफ।

उपधायक तत्० (पु०) [उप+धा+णक्] जन्मदाता, स्थापनकर्त्ता।

उपधि तत्० (पु०) [उप+धा+कि] कपट, छल, रथ चक्र।

उपनत तत्० (पु०) [उप+नम्+क्त] उपस्थित, प्राप्त, समीप, आनीत।

उपनय तत्० (पु०) [उप+नी+अल्] उपनयन, गृह्योक्त विधान के अनुसार, वेदाभ्यास के लिये बालक का गुरु समीप गमन, न्याय का एक पारिभाषिक शब्द, (व्याप्ति विशिष्ट हेतु में पक्षगत धर्मों का प्रतिपादक वाक्य)।

उपनयन तत्० (पु०) [उप+नी+अनट्, द्विजों का यज्ञसूत्र धारण संस्कार, उपवीत संस्कार।

उपनाम तत्० (पु०) पदवी, पद्धति, उपाधि, अल्ल, आदक।

उपनिधि तत्० (पु०) थाती, धरोहर, न्यस्तवस्तु, स्थापित द्रव्य।

उपनिषत् तत्० (स्त्री०) [उप+नि+षद्+क्विप्] धर्म वेदान्त शास्त्र, निर्जन स्थान, तत्व ज्ञान, वेद का शिरोभाग, ब्रह्मविद्या, वेदरहस्य।

उपनीत तत्० (पु०) कृतोपनयन (पु०) निकट प्राप्त उपस्थित, सम आगत, उपवीती।

उपनेता तत्० (पु०) [उप+नी+तृण] आनयनकारी, उपस्थापक।

उपनेत्र तत्० (पु०) चश्मा, नेत्रों का सहायक।

उपन्यस्त तत्० (पु०) निक्षिप्त न्यासीकृत, दत्त।

उपन्यास तत्० (पु०) [उप+नी+अस्+घञ्] वाक्योपक्रम, प्रस्तावना, उपकथा, कहानी, गद्य काव्य विशेष।

उपपति तत्० (पु०) जार, गुप्त पति, लगुआ, नायक विशेष यथ—

"जो परनारी के रसिक उपपति ताहि बखान"

उपकारिका तत्० (स्त्री०) [उप्—कृ+इक्—आ] उपकारकर्त्ता, राजगृह, कुशल, निपुण ।

उपकारेच्छु तत्० (गु०) उपकारकरणाभिलाषी, दाता ।

उपकार्य तत्० (गु०) [उप्—कृ+ण्यत्] उपकारोचित, जिसका उपकार किया जाय ।—ा (स्त्री०) राज सदन, राजगृह, अन्न रखने का स्थान, गोला ।

उपकुर्वाण, तत्० (पु०) कुछ दिन के लिये ब्रह्मचारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य समाप्त करने के अनन्तर जो गृहस्थ होते हैं ।

उपकूप तत्० (पु०) कूप के समीप का जलाशय, पशुओं के जल पीने के लिये जो बनाया जाता है ।

उपकूल तत्० (पु०) नदी, तालाब आदि का तीर ।

उपकृत तत्० (गु०) कृतोपकार, जिसकी सहायता की गयी है ।—ि (स्त्री०) उपकार, साहाय्य, कृतोपकार, आनुकूल्य ।

उपक्रम तत्० (पु०) [उप्+क्रम+अल्] आरम्भ, उद्योग, धोखा, आद्यकृति, प्रथम आरम्भ, चिकित्सा, पलायन, प्रक्रम, सूचना, अनुष्ठान ।

उपक्रान्त तत्० (गु०)समारब्ध, अनुष्ठित, कृतप्रारम्भ, प्रस्तुत ।

उपक्रोश तत्० (पु०) [उप+क्रुश—अल्] निन्दा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हण ।

उपखान तद्० (पु०) कथा, इतिहास, (स०) उपाख्यान ।

उपगत तत्० (गु०) [उप्+गम्+क्त] प्राप्त, अङ्गीकृत स्वीकृत, कृतमैथुन, आसक्त, अभिरत ।

उपगम तत्० (पु०) आगमन, योग, प्रीति, अङ्गीकार, निकट गमन ।

उपगुरु तत्० (पु०) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु, उपदेशक, शिक्षागुरु ।

उपगूहन तत्० (पु०) [उप+गुह+अनट्] आलिङ्गन, अँकवार भेंट ।

उपग्रह तत्० (पु०) बँधुआ, दया, सहायता, उपयोग, अनुकूल, ग्रह विशेष, अप्रधान ग्रह ।

उपघात तत्० (पु०) [उप+हन्+घञ्] रोग, पीड़ा, आघात ।

उपङ्ग तद्० (पु०) बाजा, वाद्यविशेष ।

उपचय तत्० (पु०) [उप+चि+अल्] वृद्धि, उन्नति आधिक्य, बढ़ती ।

उपचरित तत्० (गु०) [उप+चर्+क्त] उपासित, सेवित, आराधित ।

उपचर्या तत्० (स्त्री०) [उप+चर+क्यप्] चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतीकार, शुश्रूषा ।

उपचार तत्० (पु०) [उप+चर+घञ्] उपाय, आकार, पूजन की सामग्री, प्रकार, सेवा, रोगों का प्रतिकार, चिकित्सा, उपकरण, शुश्रूषा, उपक्रम, व्यवहार, उत्कोच, घूँस, आरोप ।

उपचित तत्० (गु०) [उप+चि+क्त, दुग्ध, समृद्ध, वर्द्धित, सञ्चित, रचित, समाहित ।

उपज तद्० (पु०) गाना, अन्तरा, अनुज, कनिष्ठ, सूझ, स्फूर्ति, फुरन, पैदावार, उत्पत्ति ।

उपजना तद्० (क्रि०) उगना, बढ़ना, अङ्कुर होना ।—उपजहिं, उपजते हैं, उत्पन्न होते हैं ।

उपजाऊ तद्० (गु०) उपजनेहारा ।

उपजत तत्० (गु०) उपार्जित, घटित, उत्पन्न ।

उपजाना तद्० (क्रि०) उत्पन्न करना, सिरजना ।

उपजाप तत्० (पु०) भेद, विच्छेद, विसम्वाद, पार्थक्य, सुहृद्भेदन, फूटसे भेद करण ।

उपजायें तत्० उत्पन्न किये, पैदा किये, निकाले ।

उपजित तद्० (गु०) उत्पन्न हुआ, उपजा ।

उपजिह्वा तद्० (स्त्री० क्षुद्र जिह्वा, छोटी जीभ ।

उपजीविका तत्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, जीवनोपाय, अवलम्ब ।

उपजीवी तत्० (गु०) अवलम्बी, आश्रयी, अनुगत ।

उपज्ञा तत्० (स्त्री०) आद्यज्ञान, प्रथमज्ञान, उपदेश के विना ईश्वर दत्त प्रथमज्ञान ।

उपटना तद्० (पु०) उपरना, बाँटना ।

उपठना तद्० (क्रि०) थकना, उचाट होना ।

उपड़ना तद्० (क्रि०) उखड़ना, उत्पाटन करना ।

उपढौंकन तत्० (पु०) [उप+ढौक्+अनट्] पारितोषिक द्रव्य, उपहार, भेंट ।

उपरोहित तत्० (पु०) उपरोधा, कुल गुरु, पुरोधा, पुरोहित।

उपरौंचा तद्० (पु०) बहुरोचा, उपर्णा।

उपर्ना तद्० (पु०) देखो उपरना।

उपर्य्युपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, ऊपर ऊपर, पर पर।

उपर्ला तद्० (०पु) उपरौंछा, बहिर।

उपर्थाई तर्थाई, तद्० (पु०) ओला उठी।

उपल तत्० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर, शिला, रत्न।

उपलक्ष तत्० (पु०) सहारा, ताक, अनुमान, अव-लम्बन, छल।

उपलक्षण तत्० (पु०) दृष्टान्त, सामग्री, अन्यार्थ-बोधक, अवलम्बन, अधिक।

उपलक्ष्य तत्० (पु०) आश्रय, अवलम्बन, सहाय, अनुमान।

उपला तद्० (पु०) कण्डा, गोइठा, छाना।

उपलब्ध तत्० (पु०) [उप+लभ्+क्त] प्राप्त, लाभ, अनुभवयुक्त, अनुभूत, प्रणीत।—र्थ्या (स्त्री०) आख्यायिका, उपकथा।

उपलब्धि तत्० (स्त्री०) [उप+लभ्+क्ति] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति।

उपवन तत्० (पु०) उद्यान, आराम, कृत्रिमवन, मकान के निकट छोटा बाग।

उपवसथ तत्० (पु०) ग्राम, निवासस्थल, निवसथ।

उपवास तत्० (पु०) [उप+वस्+घञ्] लङ्घन, अनाहार, दिनरात भोजनाभाव।

उपवासी तत्० (पु०) [उप+वस्+णिन्] उप-वास युक्त, अहोरात्र भोजनाभावविशिष्ट, उपोषी, व्रती।

उपविद्य तत्० (पु०) [उप+विद्+क्यप्] नाटक चेटक आदि, शिल्पकारादि, शिल्पी।—ा (स्त्री०) शिल्प आदि विज्ञान शास्त्र।

उपविष तत्० (पु०) कृत्रिम विष, न्यून विष, अफीम आदि।

उपविष्ट तत्० (पु०) [उप+विश्+क्त] आसीन गृहीतासन, कृतोपवेशन, आसनस्थ।

उपवीत तत्० (पु०) यज्ञसूत्र, जनेऊ।

उपवेद तत्० (पु०) प्रधान चार वेदों से अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्थापत्य वेद, येही चार उपवेद हैं। आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा इन्द्र धन्वन्तरि आदि हैं गान्धर्व वेद के प्रचारक भरत मुनि, विश्वामित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्थापत्य वेद का विश्वकर्मा ने प्रचार किया, स्थापत्य वेद बहुत बृहत् था।

उपवेष्टन तत्० (पु०) [उप+विष्+अनट्] लपेटना, बसना, जामा।

उपवेशन तत्० (पु०) स्थिति, उपविष्ट होना, बैठना।

उपशम तत्० (पु०) [उप+शम्+अल्] शान्ति, समताई, समाई, शमता, ह्रास।

उपशय तत्० (पु०) [उप+शी+अच्] निदान पञ्चक के अन्तर्गत, रोगज्ञापक।

उपशल्य तत्० (पु०) [उप+शल्+य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा।

उपशायी तत्० (पु०) [उप+शी+णिन्] स्वप्न करने वाला, प्रशान्त।

उपश्रुत तत्० (पु०) [उप+श्रु+क्त] प्रति-श्रुत, अङ्गीकृत, स्वीकृत वाग्दत्त)

उपशास्त्र तत्० (पु०) शास्त्रानुयायी, शास्त्रा-नुवर्ती।

उपसंहार तत्० (पु०) [उप+सं+हृ+घञ्] शेष भाग, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्रह, संक्षेप उपनीत।

उपस तद्० (पु०) दुर्गन्धि, दुर्गन्ध।

उपसत्ति तत्० (स्त्री०) [उप+सद्+क्ति] मङ्गलमात्र प्रतिपादन, उपासना, सेवा, विनय पूर्वक गुरु समीप गमन।

उपसना तत्० (क्रि०) उपसना, सड़ना, पचना।

उपसर्ग तत्० (पु०) [उप+सृज्+घञ्] रोगभेद, उपद्रव, पीड़ा, प्रपरा प्रभृति बीस अव्यय शब्द।

उपपत्ति तत्० (स्त्री०) [उप + पद् + क्ति] सङ्गति, निर्वृत्ति, समाधान, सिद्धान्त, जन्म, योग्यता, हेतु कारण, अभिप्राय, मूल, अन्त, प्रमाण, निदर्शन, घटना, दैव विषय।

उपपत्नी तत्० (स्त्री०) वेश्या, परस्त्री, रखनी।

उपपद तत्० (पु०) लेख, पद के समीपवर्ती पद, जैसे प्रति दिन नाम में शर्मा, वर्मा।

उपपन्न तत्० (गु०) [उप + पद + क्त] साधित, समाप्त, सम्पूर्ण, सिद्ध।

उपपातक तत्० पाप विशेष, गोवधादि पाप।

उपपादन तत्० (पु०) [उप + पद + णिच + अनट्] साधन, समाधान, युक्ति, सिद्धकरण सम्पादन, संग्रह, सञ्चय।

उपबर्ह तत्० (पु०) तकिया, बालिश, उपधान।

उपभुक्त तत्० (गु०) [उप + भुज् + क्त] भोग किया हुआ, भक्षित, भोगकृत, अधिकृत।

उपभोक्ता तत्० (पु०) [उप + भुज् + तृण] भोगकारी स्वत्वाधिकारी।

उपभोग तत्० (पु०) [उप + भुज + घञ्] भोजनातिरिक्त भोग, निर्वेश, विलास, विषयों का सुखास्वादन।

उपमा तत्० (स्त्री०) सादृश्य, दृष्टान्त, तुल्यता, समानता, अर्थालङ्कार विशेष जो सादृश्य होने से होता है।

उपमाता तत्० (स्त्री०) दूध पिलानेवाली, धाय, धात्री, माता के समान (गु०) उपमाकरनेवाला चित्रकार।

उपमान तत्० (पु०) दृष्टान्त, सादृश्य, तुल्यता, प्रतिमूर्ति, जिस पदार्थ से उपमा दी जावे, चन्द्रमुख में चन्द्र उपमान है, प्रमाण विशेष।

उपमित तत्० (गु०) उत्प्रेक्षित, तुल्यकृत, सम्भावित।

उपमिति तत्० (स्त्री०) उपमा सादृश्य ज्ञान से उत्पन्न ज्ञान।

उपमेय तत्० (गु०) समगुण्य, दृष्टान्त योग्य, उपमान के समान गुणयुक्त।

उपयम तत्० (पु०) विवाह, उद्वाह, ब्याह, परिणय।

उपयुक्त तत्० (गु०) योग्य, समर्थ, उचित, उत्कण्ठित हृदय।

उपयोग तत्० (पु०) आचरण, इष्ट सिद्धि के उपाय, सामर्थ्य, अनुकूलता।

उपयोगिता तत्० (स्त्री०) फलसाधनता, प्रयोजन, आनुकूल्य।

उपयोगी तत्० (गु०) उपयुक्त, द्रव्य आदि, क्रिया साधन, अनुकूल, सहाय।

उपर तत्० (पु०), ऊर्ध्व, ऊंचा, पर उन्नतदेश।

उपरक्त तत्० (गु०) विपन्न, पीड़ा ग्रस्त, (पु०) राहुग्रस्त चन्द्र या सूर्य।

उपरत तत्० (पु०) विरत शान्त, निवृत्त मत, विगत त्यक्त।

विरति तत्० (स्त्री०) विरति, निवृत्ति, मृत्यु, परित्याग।

उपरना तद्० (पु०) दुपट्टा, एक पट्टा, ओढ़नी, अंगा उत्तरीय वस्त्र।

उपराग तत्० (पु०) सूर्य वा चन्द्र ग्रहण, राहुग्रहण, परिवाद, व्यसन।

उपराजा तत्० (पु०) छोटे राजा, युवराज।

उपरान्त तत्० (अ०) पीछे, परे, पश्चात्, इसके अनन्तर।

उपराम तत्० (पु०) परिणाम, वैराग्य, निवृत्ति, आरति, विरति, विराम, आराम।

उपराला तद्० (पु०) सहायक, साथी।

उपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व, उपर।—दृष्टि (स्त्री०) तुच्छ देवता की दृष्टि, वायु का प्रकोप।

उपरिष्टात् तत्० (अ०) ऊपर, ऊर्ध्व।

उपरिस्थ तत्० (गु०) ऊर्ध्वस्थित, उपरस्थित, उपर का।

उपरी तद्० (गु०) ऊपर का, उपरसंबन्धी, जोते खेत के उपर की मिट्टी, भूमि से उखाड़ी हुई माटी।

उपरुद्ध तत्० (गु०) रक्षित, प्रति रुद्ध।

उपरोक्त (गु०) उपरकथित, प्रथम उक्त, पहले कहा हुआ।

उपरोध तत्० (पु०) अनुरोध, गौरव, वाक्परचय, साहाय्य, सहायता।

उपरोहित तत्० (पु०) उपरोधार, कुल गुरु, पुरोधा, पुरोहित।

उपरौंचा तद्० (पु०) भट्टोचा, उपर्ना।

उपर्ना तद्० (पु०) देखो उपरना।

उपर्युपरि तत्० (अ०) ऊर्ध्व ऊर्ध्व, उपर उपर, पर पर।

उपलाँ तद्० (०पु) उपरौंछा, बहिर।

उपर्चाई तर्वाई, तद्० (पु०) धोना उठी।

उपल तत्० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर, शिला, रत्न।

उपलक्ष तत्० (पु०) सहारा, ताक, अनुमान, अवलम्बन, छल।

उपलक्षण तत्० (पु०) दृष्टान्त, मामगी, अन्यार्थबोधक, अवलम्बन, अधिक।

उपलक्ष्य तत्० (पु०) आश्रय, अवलम्बन, सहाय, अनुमान।

उपला तद्० (पु०) कण्डा, घूँइठा, छाना।

उपलब्ध तत्० (पु०) [उप + लभ् + क्त] प्राप्त, लाभ, अनुभवयुक्त, अनुभूत, प्रणीत।—र्धा (स्त्री०) आख्यायिका, उपकथा।

उपलब्धि तत्० (स्त्री०) [उप + लभ् + क्ति] ज्ञान, अनुभव, मति, प्राप्ति।

उपवन तत्० (पु०) उद्यान, आराम, कृत्रिमवन, मकान के निकट छोटा बाग।

उपवसथ तत्० (पु०) ग्राम, निवासस्थल, निवसथ।

उपवास तत्० (पुं०) [उप + वस् + घञ्] लंघन, अनाहार, दिनरात भोजनाभाव।

उपवासी तत्० (पु०) [उप + वस् + णिन्] उपवास युक्त, अहोरात्र भोजनाभावविशिष्ट, उपोषी, व्रती।

उपविद्य तत्० (पु०) [उप + विद् + क्यप्] नाटक चेटक आदि, शिल्पकारादि, शिल्पी।—I (स्त्री०) शिल्प आदि विज्ञान शास्त्र।

उपविष तत्० (पु०) कृत्रिम विष, न्यून विष, अफीम आदि।

उपविष्ट तत्० (पु०) [उप + विश् + क्त] आसीन गृहीतासन, कृतोपवेशन, आसनस्थ।

उपवीत तत्० (पु०) यज्ञसूत्र, जनेऊ।

उपवेद तत्० (पु०) प्रधान चार वेदों से अतिरिक्त वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, स्थापत्य वेद, येही चार उपवेद हैं। आयुर्वेद के आदि आचार्य ब्रह्मा इन्द्र धन्वन्तरि आदि हैं गान्धर्व वेद के प्रचारक भरत मुनि, विश्वामित्र ने धनुर्विद्या का उपदेश किया, स्थापत्य वेद का विश्वकर्मा ने प्रचार किया, स्थापत्य वेद बहुत वृहत् था।

उपवेष्टन तत्० (पु०) [उप + विष् + अनट्] लपेटना, बसना, जामा।

उपवेशन तत्० (पु०) स्थिति, उपविष्ट होना, बैठना।

उपशम तत्० (पु०) [उप + शम् + अल्] शान्ति, समताई, ममाई, शमता, ह्रास।

उपशय तत्० (पु०) [उप + शी + अल्] निदान पञ्चक के अन्तर्गत, रोगज्ञापक।

उपशल्य तत्० (पु०) [उप + शल् + य] ग्रामान्त, ग्राम की सीमा।

उपशायी तत्० (पु०) [उप + शी + णिन्] स्वप्न करने वाला, प्रशान्त।

उपश्रुत तत्० (पु०) [उप + श्रु + क्त] प्रतिश्रुत, अङ्गीकृत, स्वीकृत वाग्दत्त)

उपशास्त्र तत्० (पु०) शास्त्रानुयायी, शास्त्रानुवर्ती।

उपसंहार तत्० (पु०) [उप + सं + हृ + घञ्] शेष नाश, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्रह, संक्षेप व्यतीत।

उपस तद्० (पु०) दुर्गन्धि, दुर्गन्ध।

उपसत्ति तत्० (स्त्री०) [उप + सद् + क्ति] अङ्गमात्र प्रतिपादन, उपासना, सेवा, विनय पूर्वक गुरु समीप गमन।

उपसना तत्० (क्रि०) उपसना, मढ़ना, पचना।

उपसर्ग तत्० (पु०) [उप + सृज् + घञ्] रोगभेद, उपद्रव, पीड़ा, प्रपरा प्रभृति बीस अव्यय शब्द।

उपसर्जन तत्० (पु०) [उप+सृज्+अनट्] प्रधान भिन्न, उप्रधान, उपस्थित ।

उपसर्पण तत्० (पु०) [उप+सृप्+अनट्] उपासना, अवगमन, अनुवृत्ति ।

उपस्त्री तत्० (स्त्री०) रखेली, उपपत्नी, ढेमनी ।

उपस्थ तत्० (पु०) [उप+स्था+ड] लिङ्ग, स्त्री पुरुष चिन्ह विशेष ।—**निग्रह** (पु०) जितेन्द्रियत्व, कामदमन ।

उपस्थाता तत्० (पु०) [उप+स्था+तृच्] भृत्य, सेवक ।

उपस्थान तत्० (पु०) [उप+स्था+अनट्] नैकट्य, समीप्य, उपासना ।

उपस्थापन तत्० (पु०) [उप+स्था+णिच+अनट्] उपस्थिति करण, निकट आनयन ।

उपस्थित तत्० (गु०) [उप+स्था+क्त] समीपस्थित, आगत, आनीत, उपनीत, उपसन्न, वर्तमान । —**वक्ता** (पु०) सद्वक्ता, वचन पटु ।—**कवि** (पु०) शीघ्रकवि, आशुकवि ।

उपस्थिति तत्० (स्त्री०) [उप+स्था+क्ति] उपस्थान, निकट होना, प्राप्ति निष्पत्ति ।

उपहत तत्० (गु०) [उप+हन्+क्त] नष्ट, उत्पात ग्रस्त, आघात प्राप्त, घात अशुद्धद्रव्य ।

उपहसित तत्० (गु०) [उप+हस्+क्त] उपहास प्राप्त, विद्रूप ।

उपहार तत्० (पु०)[उप+हृ+घञ्] उपढौकन द्रव्य, भेंट, उपायन, सत्कार ।

उपहास तत्० (पु०) [उप+हस्+घञ्] परिहास, निन्दार्थ वाक्य, विद्रूप, हँसि ठट्ठा ।

उपहास्य तत्० (गु०) [उप+हस्+ण्यत्] हसनीय, निन्दनीय ।—**ता** (स्त्री०) निन्दा, गर्हा, कुत्सा, दुष्कीर्ति ।

उपहित तत्० (गु०) [उप+धा+क्त] स्थापित ।

उपहृत तत्० (गु०) [उप+हृ+क्त] आनीत, दत्त ।

उपांशु तत्० (पु०) जपविशेष, निर्जनस्थ, असङ्ग ।

उपाकर्म तत्० (पु०) आरम्भ, वर्षाकाल के बाद वेद प्रारम्भ करने का समय, सत्कार विशेष ।

उपाख्यान तत्० (पु०) [उप+आ+ख्या+अनट्] पूर्व वृत्तान्त कथन, आख्यान, इतिहास ।

उपाङ्ग तत्० (पु०) अप्रधान भाग, तीलक, पत्रलेखा क्षुद्रभाग ।

उपाड़ना तत्० (क्रि०) उखाड़ना, उखेलना ।

उपात्त तत्० (गु०) गृहीत, प्रतिगृहीत, प्राप्त ।

उपादान तत्० (पु०) [उप+आ+दा+अनट्] अपने अपने विषयों की ओर इन्द्रियों का जाना, प्रत्याहार, प्रवृत्तिजनक ज्ञान, न्यायमत में समवायी करण ।

उपादेय तत्० (गु०) [उप+आ+दा+य] ग्राह्य, उत्तम, ग्रहण योग्य, उत्कृष्ट, विधेयकर्म ।—**ता** (स्त्री०) उत्तमता, उत्कर्ष ।

उपाध तत्० (पु०) उपद्रव, अन्याय ।

उपाधि तत्० (पु०) धर्मध्यान, छल, पदवी, नाम चिन्ह, कुटुम्ब व्यापृत, उपनाम ।

उपाधी तत्० (गु०) अन्यायी, उपद्रवी, अधर्मी ।

उपाध्याय तत्० (पु०) [उप+अधि+इङ्+घञ्] अध्यापक, पण्डित, उपदेशक ।

उपाध्यायी तत्० (स्त्री०) अध्यापकभार्या, उपदेशनी ।

उपानत तत्० (स्त्री०) उपानह, पादुका, जूती ।

उपाना तत्० (क्रि०) उपार्जन करना सिरजना ।

उपान्त तत्० (गु०) निकट, समीप, अन्तिक, पास ।

उपाय तत्० (पु०) [उप+आ+इ+अच्]साधन, चेष्टा, प्रतीकार, उपार्जन ।

उपायन तत्० (पु०) [उप+अय्+अनट्] उपहार उपढौकन, भेंट, व्रत की प्रतिष्ठा, समीप गमन ।

उपायी तत्० (गु०) उपाय कारक, उपार्जक, खोजी, सन्धानी, मन्त्री ।

उपार्जन तत्० (पु०)[उप+अर्ज+अनट्] अर्जन, धनादि सञ्चय, धनाहरण, लाभकरण, एकत्रित करण ।

उपार्जित तत्० (गु०) [उप+अर्ज+क्त] सञ्चित, आर्जित, जोड़ा हुआ ।

उपालम्भ तत्० (पु०) [उप+आ+लभ+अल्] दुर्वाक्य, तिरस्कार, विलम्ब, कालक्षेप, उलहना, टाल टोल ।

उपास तद्० (पु०) उपवास, अनाहार, भोजनाभाव।
उपासक तद्० (पु०) [उप्+आस्+णक] उपासनकर्ता, आराधक, साधक, भक्त।
उपासन तद्० (पु०) [उप+आस्+अनट्] शुश्रूषा, सेवा, आनुगत्य, आराधना, धनुर्विद्या।
उपासना तद्० (पु०) [उप+आस्+अन+आ] सेवा, शुश्रूषा, परिचर्या, आराधना।
उपासित तद्० (पु०) [उप+आस्+क्त] आराधित, सेवित, पूजित।
उपासी तद्० (पु०) उपासक, भूखा, उपवासी।
उपास्य तद्० (पु०) [उप+आस+य] आराध्य, सेव्य, पूजने योग्य।
उपेक्षा तद्० (स्त्री०) [उप+ईक्ष्+अ] अस्वीकार, त्याग, अनादर, धोखा।
उपेक्षित तद्० (पु०) [उप+ईक्ष्+क्त] अवज्ञात, तिरस्कृत, निन्दित, परित्यक्त।
उपेत तद्० (पु०) [उप+इ+क्त] युक्त, मिलित, एकत्रित, समागत, आसन्न।
उपेन्द्र तद्० (पु०) वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था।
उपोद्घात तद्० (पु०) [उप्+उत्+हन्+घञ्] उदाहरण, आरम्भ, समाप्ति विशेष।
उपोषण तद्० (पु०) [उप+वस्+अनट्] अनाहार, फाका, उपवास।
उफनना दे० (क्रि०) उफनना, उबलना, उफलना।
उफान दे० (पु०) उबाल, उफाल।
उबकना दे० (क्रि०) वमन होना, ओकाना, कै होना, उलटी होना, रद्द करना।
उबकाई दे० (स्त्री०) उछाँट, उफाल।
उबटन दे० (पु०) उपटन, मञ्जन, बाँटना, अभ्यङ्ग।
उबटन दे० (पु०) उपटन, मञ्जन, उबटना, अभ्यङ्ग।
उबरण तद्० (पु०) उद्वर्तन, बचाव, आड़।
उबरा तद्० (पु०) अधिक, बहुत, बढ़ती, रक्षित।
उबलना दे० (क्रि०) सीजना, खलबलाना, पकना।
उबसना दे० (क्रि०) सड़ना, गलना, पचना।
उबाना तद्० (क्रि०) बोना, रोपना, लगाना।
उबारना तद्० (क्रि०) छोड़ना, बचाना, रखना।
उबालना दे० (क्रि०) उसीजना, उसेवना, रांधना।
उभ (पु०) ऊर्ध्व, उप, द्वि, दो।
उभक तद्० (पु०) रोछ, भालू, भल्लूक।
उभय तद्० (पु०) युगल, युग्म, दो, दोनों, द्वि, परस्पर।
उभयतः तद्० (अ०) पार्श्वतः, पार्श्वद्वय, दोनों ओर से।
उभयत्र तद्० (अ०) दोनों स्थानों में, दोनों तरफ।
उभयथा तद्० (अ०) द्विधा, दो प्रकार, दोनों तरह।
उभरना तद्० (क्रि०) उठना, बढ़ना, उतारना, निकलना, निकल आना।
उभराई तद्० (पु०) उतराई, कुलाहट।
उभराना तद्० (क्रि०) बहुत भराना, छकाना।
उभाड़ना तद्० (क्रि०) लेजाना, ठगना, काढ़ना।
उभाना तद्० (क्रि०) उठाना, खड़ा करना, उभियाना करना।
उभार तद्० (पु०) घुमड़ा, फुलावट।
उभारना तद्० (क्रि०) फुलाना, उसकाना, उत्तेजित करना।
उमङ्ग तद्० (पु०) मग्नता, धुन, तृष्णा, उत्साह, आनन्दाधिक्य, हृष्टता।
उमङ्गना तद्० (क्रि०) आनन्द से आगे जाना, उत्साह पूर्वक आगे बढ़ना।
उमङ्गी तद्० (पु०) उत्सवाभिलाषी, धुनी, अभिलाषी।
उमण्डना उमड़ना तद्० (क्रि०) उमड़ना, उभरना, परिवृद्ध होना, बढ़कर बहना, वेग से बहना।
उमरी तद्० (स्त्री०) गुलर वृक्ष।
उमहाना तद्० (क्रि०) उमड़ना।
उमा तद्० (स्त्री०) [उ+मा+आ] दुर्गा, अलसी, कीर्ति, हरिद्रा, कान्ति शान्ति। भगवती, पार्वती, महादेव की स्त्री पार्वती, यह हिमालय की कन्या थी, मेना के गर्भ से इनका जन्म हुआ था, पूर्व जन्म में यह दक्ष प्रजापति की

कन्या थी, दक्ष से महादेव की निन्दा सुन इसने अपना देह त्याग किया, तदनन्तर हिमालय के यहाँ उत्पन्न हुई। शिव को पति पाने के लिये इसने कठोर तपस्या की, इसकी कठोर तपस्या देख, माता ने "उ मा" तपस्या मत करो, वारण किया, इसी कारण इसका नाम उमा हुआ। —पति (पु०) शिव, महादेव।—सुत (पु०) कार्त्तिकेय, और गणेश।—ेश (पु०) [उमा + ईश] महादेव, शिव।

उर तत्० (पु०) वक्षस्थल, छाती, गोदी, हृदय। —क्षत (पु०) [उरस् + क्षत] फुप्फुस की पीड़ा, हृदय व्याधि।

उरग तत्० (पु०) [उरस् + गम् + ड] अहि, सर्प, नाग, भुजङ्ग।

उरगना तद्० (क्रि०) सहना, सहन करना, जोगवना। यथा—

"आइ भरत्थ कहाधौ करे जिय, भाय गुनैा,
जो दुख देय, तो ले उरगो वालसुनो"
रामचन्द्रिका

उरभ्र तद्० (स्त्री०) भेड़ी।

उरगाद तत्० (पु०) सर्पभक्षक, गरुड़, विष्णु का वाहन।

उरगारि तत्० (पु०) [उरग + अरि] गरुड़, नागरिपु, वैनतेय, सर्पों को खाने वाला, सर्पशत्रु।

उरझना तद्० (क्रि०) अटकना, लगना, सक्त होना, आसक्त होना।

उरवसी तद्० (स्त्री०) सं० उर्वशी, अतिप्रिय, हृदय में वास करने वाली, देवाङ्गना विशेष, एक अप्सरा का नाम, नारायण की जङ्घा से यह उत्पन्न हुई थी, श्वेतद्वीप में नर नारायण की तपस्या भङ्ग करने के अर्थ, इन्द्र की अप्सरायें वहाँ गयीं, तब नारायण ने उर्वशी की सृष्टि की, उर्वशी का सौन्दर्य देख कर और अप्सरायें लज्जित हो गयी, और फिर गयीं।

उरमिला तद्० (स्त्री०) लक्ष्मणजी की स्त्री का नाम, राजा सीरध्वज जनक की कन्या।

उरविजा तद्० (स्त्री०) भूमिसुता, पृथ्वी से उत्पन्न, जानकी, पृथ्वी की कन्या, सीता, रामप्रिया।

उररी तत्० (अ०) स्वीकार, अङ्गीकार।—कार (पु०) स्वीकार।—कृत (गु०) अङ्गीकृत, स्वीकृत।

उरस्त्राण तत्० (पु०) [उरस् + त्रै + अनट्] वक्षत्राण, कवच, बखतर।

उरु तत्० (गु०) [उर + उ] विशाल, श्रेष्ठ, बड़ा। —पथ (पु०) महापथ, राजमार्ग।—व्यथा (पु०) राक्षस, निशाचर।

उरुगाय तत्० (पु०) [उरग + इ + घञ्] श्रीकृष्ण, विष्णु।

उरुज तत्० (पु०) [उरु + जन् + ड] वैश्य, बनियाँ, तीसरा वर्ण।

उरेब दे० (स्त्री०) उलझाव, वञ्चना।

उरोज तत्० (पु०) [उरस् + जन् + ड] स्तन, कुच, पयोधर।

उर्जित तत्० (गु०) [ऊर्ज्ज + क्त] वर्द्धित, उन्नत, उत्सृष्ट।

उर्ण तत्० (स्त्री०) भेड़, भेंड़ आदि का रोम, ऊन।

उर्द तद्० (पु०) उर्द्द, उड़द, माष, कलाई।

उर्दाबेगनी तद्० (स्त्री०) अन्तःपुर रक्षिका, रनिवास की पहरुई।

उर्व्वर तत्० (गु०) [उत + ऋ + अच्] शस्ययुक्त स्थान, शस्यान्वित देश।

उर्व्वरा तत्० (स्त्री०) उपजाऊ भूमि।

उर्वशी तत्० (स्त्री०) देखो उरवसी।

उर्व्वी तत्० (स्त्री०) [उरु + ई] पृथ्वी, पृथिवी, धरणी, धरती।—धर (पु०) पर्वत, शेषनाग।

उलङ्ग तद्० (गु०) नग्न, विवस्त्र, दिगम्बर, वस्त्ररहित।

उलचना तद्० (क्रि०) छानना, सुखाना, पसाना।

उलझन तद्० (स्त्री०) फँसाव, अटकाव, असमाधेय।

उलझना तद्० (क्रि०) फंसना, लिपटना, झगड़ना।

उलझेड़ा तद्० (पु०) उलझन, उलझाव।

उलटना तद्० (क्रि०) पलटना, औंधाना, विपरीत करना, दोहराना, मोड़ना, नीचे ऊपर करना।

उलट पुलट तद्० (क्रि० वि०) गटपट, तल ऊपर, इधर का उधर विपर्यय।

उलटा तद्० (पु०) औंधा, पलटा, विपरीत।
उलथना तद्० (क्रि०) लहराना, झुलना।
उलथा दे० (पु०) अनुवाद, भाषान्तर करण, अनुकरण, रागिनी विशेष।
उलरना दे० (क्रि०) लेटना, शयन करना।
उललना दे० (क्रि०) लौटाना, गिराना, सुलाना।
उलहना तद्० (पु०) निन्दा, दोष, उपालम्भ, गिला, उगना।—देना (क्रि०) उपालम्भ करना, पुकारना।
उलाहना तद्० (पु०) उलहना, उपालम्भ।
उलीचना दे० (क्रि०) उँड़ेलना, जल सींचना।
उलीचा दे० (क्रि०) उलचा, थोड़ा थोड़ा करके जल निकालना, जलनिस्सारण, उछालकर जल निकालना।
उलूक तत्० (पु०) उल्लू, पेचा, उलूका, कौरव पक्षीय योद्धा विशेष, महाभारत युद्ध के पहले दुर्योधन का दूत होकर यह युधिष्ठिर के पास गया था, शकुनि की अनुमति से दुर्योधन ने पाण्डवों को युद्धार्थ आह्वान किया था, युद्ध के अठारहवें दिन यह सहदेव के द्वारा मारा गया था।
२—वैशेषिक दर्शन प्रणेता, इनका दूसरा नाम कणाद था, इसी कारण वैशेषिक दर्शन को औलूक्य और काणाद दर्शन कहते हैं। यह खृष्टाब्द के ५०० वर्ष पूर्व उत्पन्न हुए थे।
उलूखल तत्० (पु०) ओखली, उदूखल, ओखरी।
उलूपी तत्० (स्त्री०) नागकन्या, अर्जुन की पत्नी और कौरव्य नामक नाग की कन्या।
उलेण्डना दे० (क्रि०) उलझना, खाली करना।
उल्का तत्० (पु०) लूका, तारे का गिरना, आकाश से जो एक प्रकार का अङ्गार सा गिरता है, अग्निपिण्ड।— पात (पु०) तारा टूटना, लूका गिरना, अशुभसूचक चिन्ह, आश्चर्य।—मुखी (स्त्री०) शृगाली, गीदड़ी, सियारिन।
उल्मुख तद्० (पु०) (सं० में उल्मुक) लूका, कोयला, अङ्गारा।
उल्लङ्घन तत्० (पु०) अन्यथा, नाँघना, न मानना।
उल्लास तत्० (पु०) [उत्+लस्+घञ्] आनन्द, हुलास, प्रसन्नता, हर्ष।
उल्लू तद्० (पु०) देखो उलूक।—पन (पु०) मूर्खता गवाँरपन।
उल्लेख तत्० (पु०) [उत्+लिख+घञ्] उच्चारण, कथन, प्रसङ्ग।
उल्लेखन तत्० (पु०) [उत्+लिख+अनट्] वमन, खनन, कथन, उच्चारण।
उल्लेखित तत्० (पु०) [उत्+लिख्+क्त] प्रस्तावित, कथित, उक्त।
उल्लोच तत्० (पु०) [उत्+लुच्+घञ्] चन्द्रातप, चाँदनी।
उल्लोल तत्० (पु०) महातरङ्ग, कल्लोल, बड़ीभारी लहर।
उल्वण तत्० (पु०) गर्भवेष्टन, झाली, जरायु, (पु०) व्यक्तस्पष्ट, पित्तादि विकार।
उशना तत्० (पु०) शुक्राचार्य, भार्गव, दैत्यगुरु।
उशीनर तत्० (पु०) देशविशेष, चन्द्रवंशीय राजा विशेष।
उशीर तत्० (स्त्री०) खसखस, सुगन्धि-तृण।
उशाना तद्० (क्रि०) उबलना, सीजना।
उषा तत्० (स्त्री०) बाणराज की कन्या, अनिरुद्ध की स्त्री, भोर, पौह, तड़का, प्रभात।—काल (पु०) प्रत्यूष समय, प्रभात काल।—पति (पु०) अनिरुद्ध, कामदेव का पुत्र।
उषित तत्० (पु०) [वस्+क्त] पर्युषित, दग्ध, त्वरित, स्थित, आश्रित।
उष्ट्र तत्० (पु०) ऊँट, पशु विशेष।
उष्ण तत्० (पु०) तप्त, गरम, घाम, उग्र आतप, ग्रीष्मकाल, निदाघकाल।—नदी (पु०) वैतरणी नदी, यमराज के द्वारपर तपी हुई नदी।—बाष्प (पु०) स्वेद, पसीना।—वीर्य (पु०) तीक्ष्ण, तेज युक्त द्रव्य, रूक्ष, उग्र।—रश्मि (पु०) दिवाकर, सूर्य।
उष्मा तत्० (स्त्री०) क्षयव्याधि, यक्ष्मारोग, सन्ताप, पित्त, (तद्) उबाला, उफाला, सिजाया, सिद्ध भाव्य।— अंशु (पु०) [उष्ण+अंशु] सूर्य, रवि, भानु।—गम (पु०) निदाघकाल का आगमन।
उष्णिक् तत्० (पु०) सप्ताक्षर छन्दो विशेष।

उष्णीष तत्० (पु०) शिरोवेष्टन वस्त्र, पगड़ी, पाग, मुकुट ।
उष्मा तत्० (स्त्री०) ताप, धूप, गरमी, क्रोध ।
उसता दे० (पु०) नाई, नापित, उस्ता ।
उसरना तद्० (क्रि०) टलना, पीठदेना, हटना, उपसरण करना ।
उसलपसल दे० (गु०) घबराया, हड़बड़ा ।
उसरा दे० (पु०) उसारा, बरान्दा ।
उसास तद्० (पु०) श्वास, सांस, पवन, प्राण वायु, दीर्घ निश्वास, ठण्ढी सांस ।
उसीजना दे० (क्रि०) पक जाना, झुलस जाना ।
उसीसा दे० (पु०) सिरहाना, तकिया ।
उसेवना दे० गारना, छानना, पसाना ।
उस्काना दे० उकसना, उभारना ।
उस्तरा दे० सेंतमेंत, बिन मोल ।
उस्ताना दे० जलाना, सुलगाना ।
उस्तुरा दे० (पु०) अस्तुरा, छुरा, छूरे ।
उस्र तत्० (पु०) वृष, साँड़, किरण ।
उस्रा तत्० (स्त्री०) धेनु, गो, गाय ।
उस्रधन्वा तत्० (पु०) इन्द्र, देवराज ।
उहरना दे० (पु०) बैठना, दबाना, गिराना ।
उहाड़ दे० (पु०) आच्छादन, बैठन, ओहार ।
उहार दे० (पु०) उघार, खोल, पट, परदा ।
उहिया दे० कनफटा, योगियों के पहनने का धातु का कड़ा, यथा—"कर उहिया कांधे मृग छाला" (पद्मावत)

ऊ

ऊ तत्० (अ०) वाक्यारम्भ, रक्षा, महादेव, ब्रह्मा, प्रश्नवाक्य, बन्धन, मोक्ष, प्रधान, चन्द्र ।
ऊख तद्० (पु०) ईख, ईखुदण्ड, गन्ना, पौंड़ा ।
ऊखली तद्० (स्त्री०) उलूखल ।
ऊगर तद्० (पु०) उदुम्बर, गूलर, ऊमर ।
ऊंघ दे० (स्त्री०) ऊंघाई, नींद, निदास ।
ऊंघना दे० (क्रि०) झपकी में होना, नींद आना ।
ऊंघाई दे० (स्त्री०) ऊंघास, नींद, ऊंघ ।
ऊंचा तद्० (पु०) उच्च, उन्नत, बड़ा, लम्बा ।
ऊंचाई तद्० (स्त्री०) उचान, उन्नति, लम्बाई ।
ऊंचा बोलने वाला, (गु०) घमण्डी, अभिमानी, अहङ्कार से बोलने वाला ।
ऊंचासुनना, (क्रि०) कम सुनना, बाधिर्य, बहरापन ।
ऊंचकानी, (सं०) बहरापन ।
ऊंचे बोल का बोल नीचा, अहङ्कारियों का अन्तिम पराजय, बुरा परिणाम ।
ऊंट तद्० (पु०) जन्तु विशेष, उष्ट्र, (स्त्री०) ऊंटनी ।
ऊंटकटारा दे० (पु०) औषधि विशेष, ऊंट का भोजन विशेष, भरभाड़, उटकटाई ।
ऊटपटाङ्ग दे० (पु०) अनर्थक, फक्कोड़ियात ।
ऊत दे० (पु०) मूर्ख, निर्वंश, मृत, पुत्र रहित, मृत मनुष्य ।
ऊद, ऊदबिलाव तद्० (पु०) जलजन्तु विशेष, जिसका आकार बिल्ली से कुछ मिलता है ।
ऊदा दे० (पु०) भूरा, धुंधला रङ्ग, खैरा ।
ऊधम दे० (पु०) उत्पात, उपद्रव, बलवा ।
ऊधो तद्० (पु०) (सं० उद्धव) सं उद्धव, श्री कृष्ण का चाचा मित्र और भक्त ।
ऊन तद्० (पु०) उर्णा, न्यून, कम, थोड़ा, घटा, उदास, सुस्त ।—नी (गु०) ऊन से बनी हुई वस्तु, ऊन रचित ।
ऊपर तत्० (अ०) उपर, ऊर्ध्व, ऊपरि, अधिक, ऊंचा ।
ऊपरी तद्० (गु०) विदेशी, परदेशी, ऊपर का ।
ऊमर दे० (पु०) उदुम्बर, गूलर ।
ऊघट दे० (पु०) औघट, विकट रास्ता, बुरा रास्ता ।
ऊघट दे० (पु०) औघट, अगम्य ।
ऊम दे० (पु०) ग्रीष्मता, दुर्बलता ।
ऊयी दे० (स्त्री०) बांबी, वल्मीक, कीट ।
ऊरु तत्० (पु०) जङ्घा, जांघ ।

ऊर्ज तत्० (पु०) [ऊर्ज+अस्] कार्तिक मास, यत्न, चेष्टा, बल, निश्वास, उत्साह।
ऊर्जस्वल तत्० (गु०) [ऊर्जस्+वल्] अतिशय बलवान्, उग्र, अस्थिर, चञ्चल।
ऊर्जस्वी तत्० (गु०) [ऊर्जस्+विन्] अधिक बलशाली, तेजस्वी, (पु०) रसालङ्कार विशेष।
ऊर्णनाभ तत्० (पु०) मकरी, कीट विशेष, रेशम का कीड़ा।
ऊर्णा तत्० (पु०) भेड़ों के रोम, रोंवा।
ऊर्ध्व तत्० (पु०) ऊपर, ऊँचा, उच्च, उन्नत, उच्छ्रित, शुद्ध, लम्बा।—गामी (गु०) ऊर्ध्वगमनकर्ता, पुण्यात्मा।—जानु (गु०) ऊपरिस्थजङ्घा।—तिक्त (पु०) चिरायता।—देव (पु०) विष्णु, नारायण।—पाद (पु०) जीव विशेष, शरभ।—पुण्ड्र (पु०) वैष्णवी तिलक।—बाहु (पु०) उन्नत हस्त, व्रतविशेष, साधुविशेष।—रेखा (स्त्री०) हस्तरेखा विशेष, शुभसूचक हस्तरेखा।—रेता (पु०) अस्खलित वीर्य, कामत्यागी, आजन्म ब्रह्मचारी, भीष्म, महादेव, मुनिविशेष।—लोक (पु०) स्वर्ग, सुरलोक, देवलोक।—श्वास (पु०) रोगविशेष, दमा, ऊर्ध्व वायु, शीघ्र गमन से उच्छ्वास।—स्थ (गु०) उपरिस्थित, उच्चस्थ।
ऊर्वशी तत्० देखो उरवसी।
ऊर्मि तत्० (पु०) तरङ्ग वीचि, प्रकाश, वेग, भङ्ग, वेदना, पीड़ा, उत्कण्ठा, लहरी, हल्का देख —माला (स्त्री०) तरङ्ग समूह, अधिकतरङ्ग —माली (पु०) समुद्र, जलधि।
ऊलूखा तत्० (पु०) तृण विशे०।
ऊषण तत्० (पु०) कालीमिर्च, गोलमिर्च।
ऊषर तत्० (पु०) क्षारभूमि, खारी भूमि, नोना भूमि।
ऊषा तत्० (स्त्री०) देखो उषा।
ऊसर तत्० (पु०) क्षारभूमि, बिना उपज की भूमि।
ऊह तत्० (पु०) तर्क वितर्क, ऊहापोह, अनुसन्धान विचार।—पोह (पु०) विचारपरम्परा।
ऊह्य तत्० (पु०) अध्याहार, वाक्य में आवश्यक किन्तु अनुक्त शब्द को विचार द्वारा जानना।

ऋ

ऋ, सातवां स्वरवर्ण।
ऋ तत्० (अ०) गर्हणवाक्य, निन्दावचन, (स्त्री०) अदिति, देवमाता, परिहास वाक्य, विकार, (पु०) सूर्य, गणेश।
ऋक् तत्० (पु०) वेद विशेष, ऋग्वेद, मन्त्र विशेष।
ऋक्थ तत्० (पु०) धन सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन।
ऋक्ष तत्० (पु०) रीछ, भालू, नक्षत्र।
ऋग्वेद तत्० (पु०) वेद विशेष।
ऋचा तत्० (स्त्री०) वेदमन्त्र, वेद, काण्डी, कण्डिका।
ऋजु तत्० (गु०) अवक्र, सरल, सीधा, सुधा, सोझा —काय (पु०) कश्यपमुनि, (गु०) सीधा शरीर। —भुज (गु०) सीधी रेखा वा भुज।—भुजक्षेत्र (पु०) वह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा हो।—स्वभाव (पु०) सरलान्तःकरण, सदन्तःकरण विशिष्ट।
ऋण तत्० (पु०) उधार, देना, क़र्ज़।—ग्रहण (पु०) उधार लेना, क़र्ज़ा करना।—दाता (गु०) महाजन, ऋण देने वाला।—पत्र (पु०) ऋणग्रहण सूचक पत्र, तमस्सुक।—मुक्त (गु०) ऋण परिशोध, धार रहित।—मुक्तपत्र (पु०) ऋण परिशोध सूचकपत्र, फ़ारिग़ख़ती।—मार्ग (पु०) जो क़र्ज़ा नहीं चुकाता।—पनयन (पु०) ऋण शोधन, धार चुकाना, क़र्ज़ा दे देना।
ऋणिया तत्० (पु०) ऋणी, धारता।
ऋत तत्० (पु०) सत्य, यथार्थ, वृत्ति विशेष, उञ्छशील वृत्ति के द्वारा निर्वाह, (गु०) दीप्त, पूजित।—धामा (पु०) विष्णु, नारायण।
ऋतु तत्० (पु०) वसन्त आदि छः प्रकार का काल, स्त्री कुसुम, रजोदर्शन, दीप्ति।—मती (स्त्री०) रजस्वला, स्त्री धर्मिणी, पुष्पवती।—राज (पु०) वसन्तकाल।—स्नाता (स्त्री०) रजोदर्शन के अनन्तर चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री।—स्नान (पु०) चतुर्थ दिन का स्नान।
ऋते तत्० (अ०) बिना, भिन्न, अलग।
ऋत्विक् तत्० (पु०) यज्ञ कराने वाला पुरोहित, याजक।

ऋद्ध तत्० (गु०) सम्पन्न, धनाढ्य, समृद्ध ।
ऋद्धि तत्० (स्त्री०) समृद्धि, धन सम्पत्ति, एक औषध का नाम, पार्वती, गिरजा ।
ऋभुक्षा तत्० (स्त्री०) इन्द्राणी, शची ।
ऋषभ तत्० (पु०) श्रेष्ठ, ऋषिश्रेष्ठ, बैल ।
ऋषि तत्० (पु०) मुनि, तपस्वी, तपसी, तापस ।—राज (पु०) प्रधान ऋषि ।—मित्र (पु०) शान्ति प्रिय, राम चन्द्रिका में विश्वामित्र के लिये इसका प्रयोग किया गया है ।
ऋषीश तत्० (पु०) ऋषियों में प्रधान, ऋषिश्रेष्ठ ।
ऋष्यकेतु तत्० (पु०) अनिरुद्ध, ऊषापति ।
ऋष्यमूक तत्० (पु०) पर्वत विशेष, जो किष्किन्धा के पास है ।
ऋष्यश्रृङ्ग तत्० (पु०) तपःप्रभाव सम्पन्न महर्षि, महाराज दशरथ की कन्या शान्ता इनसे ब्याही गयी थी, इन्हींके द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करा कर राजा दशरथ ने चार पुत्र प्राप्त किये थे। ये महर्षि विभाण्डक के पुत्र थे। स्वर्गीय अप्सरा उर्वशी को देखने से विभाण्डक महर्षि का रेतस्खलन हुआ। संयोगवश वह जल में गिरा, जिसे एक हरिणी ने जल के साथ पी लिया। उसी गर्भ से ऋष्यशृङ्ग उत्पन्न हुए थे ।

ॠ, ऌ, ॡ

ॠ तत्० (स्त्री०) देवमाता ।
ऌ-ॡ स्वर का नवम और दशम वर्ण ।

ए

ए तत्० (अ०) अनसूया, आमन्त्रण, अनुकम्पा, आह्वान, सम्बोधनार्थक, (पु०) विष्णु ।
एक तत्० (गु०) अद्वितीय, प्रथम, मुख्य, अन्य, केवल, प्रथम संख्या ।
एक आध तत्० कुछ थोड़ा, एक या आधा ।
एकई तद्० अनन्य, वही, अभिन्न, तुल्य, समान ।
एकएक तत्० पृथक पृथक, भिन्न भिन्न, प्रत्येक ।
एकक तत्० एकाकी, अकेला, निराला, असहाय ।
एक काल तत्० (गु०) समान समय, एक समय, युगपत् ।
एककालीन तत्० (गु०) समकाल उत्पन्न, एक समय, एक काल, एक ही बार।
एक की दस सुनाना दे० (वा०) स्वल्पापराध का अधिक दण्ड, एक गाली देनेवाले को दस गाली सुनाना ।
एकचित्त तत्० (गु०) एकान्ती, एक मन, अनन्य-मनाः ।
एकजाई तद्० (स्त्री०) सकृत प्रसूता, पहिलौठी ।
एकटक दे० (पु०) एकताक से देखना, सतृष्णा दृष्टि।
एकट्ठा दे० एक स्थान में संग्रह किया गया ।
एकतन्त्री तत्० (गु०) एक प्रभु के वशवर्ती, एक तन्त्रयुक्त, एक मतावलम्बी ।
एकतरा तद्० (पु०) अँतरिया ज्वर, तिजारी ।
एकतही तद्० (पु०) एक जगह, (स्त्री०) मिरज़ई।
एकता (स्त्री०) एकाई, समानता, मेल, एकत्व, ऐक्य, मिलान, अनन्यता, बहुत लोग एकता के स्थान में ऐक्यता कहा करते हैं जो अशुद्ध है ।
एकतान तत्० (गु०) एकाग्र, एक विषयासक्त-चित्त।
एकताल तत्० (पु०) समन्वित ताल, समताल, तुल्यलय, मेलताल, एकस्वर ।
एकतीर्थी तत्० (पु०) [एक+तीर्थ+इन्] सतीर्थ, गुरुभाई ।
एकतुम्बी तत्० (स्त्री०) तानपूरा, तम्बूरा, वाद्यमन्त्र विशेष ।
एकत्र तत्० (अ०) एक स्थान में, एक ठौर, एक सङ्ग में मिलित ।
एकदा तत्० (अ०) एक समय, एक बार, किसी समय ।
एकदिक् तत्० (गु०) एकदेश, एक भाग, समदेश ।
एकदेशस्थ तत्० (गु०) एक देशी, समदेशीय ।

एकदेह तत्० (पु०) बुधग्रह, एक शरीर, अभिन्न, एक आत्मा।
एकधा दे० (अ०) केवल, एक बार, एक प्रकार।
एकन, एकन्ह तद्० एकने, किसी ने, एक को, किसी को।
एक न एक (वा०) एक नहीं तो दूसरा, एक या दूसरा।
एकपट्टा दे० (पु०) ओढ़नी, पिछौरी।
एकपत्नी तत्० (स्त्री०) पतिव्रता, सती, साध्वी।
एकपरामर्श तत्० (पु०) एकतन्त्र, एकमत।
एकपाश तत्० (पु०) एकपार्श्व, एक तरफ़।
एकप्रभुत्व तत्० (पु०) एक राजत्व, एकाधिपत्य।
एकयोनि तत्० (पु०) सहोदर, एक माँके।
एकरूप तत्० (पु०) समभाव, एकसा।
एकलव्य तत्० (पु०) निषाद, राज हरधनु का पुत्र और द्रोणाचार्य का शिष्य, यह अपनी गुरुभक्ति के कारण विख्यात है। द्रोणाचार्य ने इसे नीच जाति समझ कर अस्त्रविद्या सिखलाना अस्वीकार किया, तब यह मिट्टी के द्रोणाचार्य बनाकर और उसीको अपना अध्यापक समझ, स्वयं अस्त्रविद्या सीखने लगा, कुछ दिन में यह ऐसा अस्त्रविद्या में चतुर निकला कि इसकी लक्ष्यवेधनचातुरी देख, अर्जुन को भी चकित होना पड़ा।
एकला तद्० अकेला, एकाकी, निराला, एकल, सहायहीन।
एकलाई तद्० (पु०) ओढ़नी, एकपट्टा, उत्तरीय वसन, प्रावार, चादर।
एकला दुकेला तद्० एकाकी, द्वितीयरहित, एक या दो।
एकलौटा } तद्० (पु०) एकौका, अद्वितीय, एक
एकलौता } मात्र पुत्र।
एकवार तद्० एकदा, एककाल, युगपत्।
एकशफ तत्० (पु०) घोड़ा, एक खुर के जन्तुमात्र।
एकसङ्ग तत्० (पु०) [एक+सङ्ग+अच्] विष्णु, एक साथ, सहवास।
एकसङ्गी तत्० (पु०) मायी, सहवासी, मार्य, समभिव्याहारी, सङ्गी।
एकसर तद्० (गु०) एकमति, दुविधा रहित, एक साथ।
एकसा तद्० (गु०) समान, बराबर, एकरस, एक सार।
एकसार तद्० (गु०) समान, एकरस, एकसा।
एकहरा दे० (पु०) पतला, झीना, एक सार।
एकहायन तत्० (गु०) एक वर्ष का, जिसको उत्पन्न हुए एक वर्ष हुए।
एकहारा दे० (गु०) दुर्बल शरीर, कृश, क्षीण।
एका तत्० (स्त्री०) दुर्गा भगवती, एकाकी, तद्० (पु०) मेल मिलाप, ऐक्य, एकता, एकोद्देश्य, सम्मति, सहमति।
एकाई तद्० (स्त्री०) एकता, सब का मेल।
एकाएकी तद्० (अ०) अकस्मात्, सहसा, अचानक, एकबार में।
एकाकार तत्० (गु०) [एक+आकार] एक समान, तुल्य आकृति, एक रूप, सदृश, एक धर्म, भेद रहित, एकमय, एकाचार, पशु समान आचार।
एकाकिन्ह तद्० (पु०) अकेले को, असहाय को।
एकाकी तत्० (पु०) अकेला, एकही, मात्र, केवल, एक, आपही आप, सहाय रहित।
एकाक्ष तत्० (पु०) एक आँखवाला, काना, कौआ।
एकाक्षर तत्० (पु०) मन्त्र विशेष।
एकाग्र तत्० (गु०) [एक+अग्र्+र] अनन्यचित्त, एकमना, अभिनिविष्ट, मनोयोगी, एकचित्त, आविष्ट।—ता (स्त्री०) एकाग्र चित्तता, अभिनिवेश प्रणिधान, विशेष सावधानी से ध्यान।
एकातपत्र तत्० (गु०) [एक+आतपत्र] सार्वभौम, महाराजा, चक्रवर्ती, एकच्छत्र।
एकात्मता तत्० (स्त्री०) [एकात्मन्+ता] अभेद, एक स्वरूपता।
एकात्मा तत्० (पु०) [एक+आत्मन्] एक प्राण, एक देह, अभिन्न।
एकादश तत्० (पु०) [एक+दशन्+डट्] संख्या विशेष ११ ग्यारह।—ी (स्त्री०) तिथि विशेष, पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, चन्द्रमा

की एकादश कला की क्रिया विशेष, हरि वासर, व्रत विशेष।

एकादिक्रम तत्० (गु०) [एक+आदि+क्रम्+ अच्] आनुपूर्विक, अनुक्रम, क्रमानुरूप, क्रमिक।

एकाधिपति तत्० (पु०) [एक +अधिपति] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्।

एकान्त तत्० (गु०) [एक+अन्त] निभृत, निर्जन, निराला, अलग, भिन्न।

एकान्तर तत्० (पु०) एकओर, अलगड।

एकान्तर कोण तत्० (पु०) एक ओर का कोना।

एकायन तत्० (गु०) एकमति, एकमार्ग, एक विषयासक्त चित्त, एक स्थान।

एकार तत्० (पु०) [ए+कार] ए अक्षर, एकादश स्वर वर्ण। –न्त (गु०) जिसके अन्त में ए हो।

एकार्णव, तत्० (पु०) [एक+अर्णव] एकाकार, एक समुद्र।

एकार्थ तत्० (गु०) [एक+अर्थ] समार्थ, तुल्यतात्पर्य।

एकाश्रित तत्० (गु०) [एक+आश्रित] अनन्य-गतिक, एक के ही आश्रित।

एकाह तत्० (पु०) एक दिन, केवल एकही दिन जीनेवाला कीट।

एकाह्निक तत्० (गु०) [एक+अह+इक्] एक दिन साध्य, एकदिन में ही उत्पन्न होनेवाला, प्रति-दिन उत्पत्ति शील।

एकेला तद्० (पु०) एकाकी, अकेला।

एकैक तद्० (गु०) प्रत्येक, प्रति।

एकोद्दिष्ट तत्० (पु०) श्राद्ध विशेष।

एको तद्० (गु०) एक भी, कोई भी, अनिर्धारित, व्यक्त।

एड़ दे० (स्त्री०) घोड़े को चलाने का काँटा, चरण का पश्चाद्भाग,—ी (पु०) पाव का पिछला भाग।

एढ़ा टेढ़ा दे० बांका, तिरछापन, टेढ़ापन।

एण तत्० (पु०) हरिण, मृग, हिरन,—ी (स्त्री०) हरिनी,मृगी,—ीन (स्त्री०) हिरन का बहुवचन, —मद (पु०) कस्तुरी।

एतत् तत्० (सर्व०) यह, पुरोवर्ती, सम्मुखस्थित, —काल (पु०) उपस्थित काल, इस समय, सम्प्रति, —कालीन (पु०) [एतत्+काल+ईन्] एकाल-वर्ती, आधुनिक।

एतदर्थ तत्० (अ०) इसलिये, इसकारण।

एतना तद्० (गु०) इतना, इता, एता।

एतादृक तद्० (गु०) एतादृश्, ऐसा।

एतावत् तत्० (अ०) इतनाही, एतर्यन्त, यहा तक।

एत.वता तत्० (अ०) इसकरके, इस कारण, इस हेतु।

एत.वन्मात्र तद्० (अ०) इतना ही, यही, केवल।

एरण्ड तत्० (पु०) अरण्ड, रेंड़ी।

एराफेर दे० (पु०) एराफेरी, सट्टा बट्टा।

एरी दे० स्त्री सम्बोधन।

एलवा दे० (पु०) औषध विशेष, मुसब्बर।

एला तत्० (स्त्री०) इलायची, एलाची।

एलोई दे० (पु०) हे हमारे ईश्वर!

एलोक तद्० (पु०) यह लोक, यह संसार।

एहेतुक तद्० (गु०) इस लिये, इस कारण।

एवम् तत्० (अ०) इस प्रकार और, अङ्गीकार, —अस्तु (अ०) ऐसाही हो।

एहा तद्० (गु०) यह, ऐसा, यही।

एहि तद्० (गु०) इस, इसको।

एहू तत्० यह भी, और भी, यह।

ऐ

ऐ द्वादश स्वरवर्ण, है, सम्बोधन, आह्वान, स्मरणार्थ, आमन्त्रण, (पु०) महेश्वर, शिव।

ऐक तद्० (पु०) सं० ऐक्य, एकता, एकमत, एक सम्मति, सहमति।

ऐकमत्य तत्० (पु०) म-मति, एकता, एकमत।

ऐकान्तिक तत्० (गु०) नितान्त, अत्यन्त निर्जन, एकान्त, गढ, अत्यन्त दृढ, एकान्तवासी, वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव विशेष।

ऐकाह्निक तत्० (पु०) एक दिन का, एकाहनिष्पन्न, एक दिन के अन्तर से उत्पन्न, अन्तरिया।

ऐक्य तत्० (पु०) समानता, एकता, मेल।

ऐगुण तद्० (पु०) औगुण, अनाड़ीपन, दोष।

ऐंच दे० (पु०) सङ्कोच, ईंच, खैंच, टान।

ऐंचना दे० (क्रि०) ईंचना, खींचना, टानना।

ऐच्छिक तत्० (पु०) इच्छा पूर्वक, स्वेच्छाधीन।

ऐंठ दे० (स्त्री०) बल, मड़ोड़, गांठ, अकड़।

ऐंठना दे० (क्रि०) मरोड़ना, बल देना, बलखाना, मड़ड़ जाना।

ऐतिह्य तत्० (पु०) परम्परा प्राप्त उपदेश, पौराणिक, प्रमाण विशेष, इतिहास प्रसिद्ध प्रवाद कथा।

ऐन तद्० (पु०) सं० अयन, घर, मकान, स्थान, ठीक, ज्यों का त्यों, आँख, "ऐन समय पर पहुंचूंगा"।

ऐन्द्रजालिक तत्० (पु०) इन्द्रजालकारक, मायावी, मायावान्, बाजीगर।

ऐरावण तत्० (पु०) ऐरावत हस्ति, रावण के एक पुत्र का नाम।

ऐरावत तत्० (पु०) इन्द्र का हाथी, जो समुद्र से निकला था, इन्द्र का सीधा धनु।—ी (स्त्री०) ऐरावत की हथिनी, एक पौधे का नाम, एक नदी का नाम, रावी, जो पंजाब में है।

ऐरेय तत्० (पु०) मद्यविशेष।

ऐश्वर्य तत्० (पु०) विभव, सम्पदा, गौरव, ईश्वरधर्म, महिमा, महत्व।—शाली (पु०) भाग्यवान् प्रारब्धी।

ऐषमः तत्० (अ०) वर्तमान संवत्सर, असों, इस साल।

ऐसा तद्० (पु०) इस प्रकार, इसके समान।

ऐसातैसा तद्० कुछ योंहीं, न भला न बुरा, न वाह वाह, न छीछी।

ऐहिक तत्० (पु०) इस लोक के भोग, यहाँ होने वाला, यहाँ उत्पन्न।

ऐहैं दे० (क्रि०) आवेंगे।

ओ

ओ त्रयोदश स्वरवर्ण, (अ०) करुणा, स्मृति, सम्बोधन, ब्रह्मा, विष्णु, आह, आहा।

ओंठ तद्० (पु०) ओष्ठ, अधर, होंट,

ओंड़ा दे० (पु०) गहरा, गम्भीर, अंडा।

ओंधा तद्० (पु०) औंधा, उलटा, तलउपर।

ओक तत्० (पु०) घर, मकान, गृह, स्थान, आश्रय।

ओखली तद्० (स्त्री०) ऊखल, उलूखल।

ओगरा तद्० (पु०) खिचड़ी, भक्ष्यविशेष।

ओघ तत्० (पु०) समूह जल का वेग, ढेरी, थोक, राशि।

ओङ्कार तत्० (पु०) [ओम्+कार] प्रणव, आद्य बीजमन्त्र।

ओछा तत्० (पु०) छिछोरा, हलका, उतावला, नीच।

ओज तत्० (पु०) बल, दीप्ति, तेज, पराक्रम प्रताप।

ओजस्वी तत्० (पु०) प्रतापी, बली, तीक्ष्णचित, तेजस्वी।

ओझ तद्० (पु०) पचौनी, ओझा, भुण्डी, पेट।

ओझड़ तद्० (पु०) झोंक, धक्का, ठोकर, पचौनी, आंत।

ओझल तद्० (स्त्री०) आड़, ओट, छिपाव, परदा, टट्टी, एकान्त।—करना (क्रि०) छिपाना, परदा करना।

ओझा तद्० (पु०) भोकस, टोनहा, यन्त्री, मान्त्रिक, उपाध्याय, उपाध्याय शब्द का ही यह अपभ्रंश है, इसका प्राकृतरूप उवज्झाओ है, उवज्झाओ ही से ओझा निकला है।

ओट तद्० (स्त्री०) आड़, पत्र, टट्टी, छिपाव।—करना (क्रि०) छिपाना।—होना (क्र०) छिपना।

ओटना तद्० (क्रि०) आड़ करना, रेतना, रूई से बिनौला निकालना।

ओटा तद्० (पु०) व्यवधान, आड़, लुकाव, बैठन।

ओठ तद्० (पु०) ओष्ठ, ओंठ, होंठ, अधर।

ओडन तद्० (पु०) ढाल, फरी, शतचन्द्र।

ओडा तद्० (पु०) खांचा, टोकरा, दौरा।

ओढ़ना तद्० (क्रि०) पहनना, पहिरना, (पु०) रज़ाई, ओढ़ने की वस्तु, पटू, लोई।

ओढ़नी तद्० (पु०) एकलाई, घूंघट, स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा।

ओत तत्० (पु०) बढ़ती, बढ़ोतरी, हीनता।

ओतप्रोत तत्० (पु०) आड़ा टेढ़ा, ताना बाना, लम्बाई में ग्रथित, चौड़ाई।

ओतु तत्० (पु०) बिलाव, बिल्ली, बिलाई, (स्त्री०) ओतु।

ओथल पोथल दे० उलटा चित्त।

ओदन तत्० (पु०) भात, रींधे हुए चांवल, अन्न।

ओदा तद्० (पु०) गीला, भींगा, भीजा, आर्द्र।

ओधे तद्० (पु०) अधिकारी, भीतरिया, वल्लभ सम्प्रदाय में ठाकुर जी की रसोई बनाने वाले को भी कहते हैं।

ओप तद्० (स्त्री०) सुन्दरता, चमचमाहट, घोंट।

ओपची तद्० (पु०) अस्त्रधारी, झिलमी।

ओपना तद्० (क्रि०) घोटना, साफ़ करना।

ओपार तद्० नदी के उस पार।

ओम् तत्० (अ०) प्रणव, ओङ्कार बीज।

ओर तद्० (स्त्री०) कगार, मार्ग, सीमा, पार्श्व, आलंग।

ओरमा दे० (पु०) एकहरी सिलाई।

ओरी दे० (पु०) पक्षपाती, ओलती।

ओरेहा दे० (पु०) निर्माण, सृष्टि, रचना।

ओल दे० (पु०) सूरण, मनौती।

ओलती दे० (स्त्री०) ओरौनी, ओरी।

ओला दे० (पु०) शिलावृष्टि, मिठाई।—होजाना (क्रि०) खूब ठण्डा होना।

ओष तद्० (स्त्री०) शीत, शिशिर, पाला।

ओषधि तत्० (स्त्री०) फलपाक स्थायी वृक्ष, तृण, घास, पौधा।

ओषधीश तत्० (पु०) चन्द्र, शशधर, चन्द्रमा, कपूर।

ओष्ठ तत्० (पु०) होंठ, ओंठ, अधर, रदनच्छद, दन्तच्छद—रोग (पु०) मुखरोग विशेष, ओष्ठ व्रण।

ओष्ठ्य तत्० (पु०) ओष्ठ द्वारा उच्चारित वर्ण।

ओसर दे० (स्त्री०) कलोर, जवान गौ, कलोर गाय या भैंस।

ओसरा दे० (पु०) बारी, पाली, दावा, पाला पाली, क्रम से।

ओसरी दे० (पु०) देखो **ओसरा**।

ओसीसा दे० (पु०) सिरहाना, तकिया।

ओह तत्० (अ०) सम्बोधनवाचक, वाह वाह, हाः, आहा।

औ

औ चतुर्दश स्वरवर्ण (अ०) आह्वान, सम्बोधन, विरोध, निर्णय, (पु०) अनन्त, निःस्वन।

औं तत्० (अ०) शूद्रों का प्रणव।

औंगी दे० (पु०) चुप, मौन, गूंगापन।

औंघाना दे० (क्रि०) झपकी आना।

औंड दे० (पु०) बेलदार, माली।

औंडा दे० (पु०) अथाह, गहिरा, गम्भीर।

औंधना दे० (क्रि०) उमँडना, घटा उठना।

औंधा तद्० (पु०) उलटा, तलऊपर।

औंला तद्० (पु०) धात्रीफल, आमलकी, आवँरा।

[illegible]

औकारान्त तत्० (पु०) जिनके अन्त में औकार हो, ऐसे शब्द।

औखध तद्० (पु०) ओषधि, दवा।

औगी दे० (स्त्री०) कषा, कोड़ा, चाबुक।

औगुण तद्० (पु०) दोष, खोट, कलङ्क,—ी (पु० गुणहीन, निर्गुण, मूर्ख।

औघट तद्० (पु०) अगम्य, दुर्गम, दुस्तर, ठाट।

औचक तद्० (अ०) औचट, हठात्, अकस्मात्, अचानक, सहसा।

औंछ तद्० (पु०) जड़ विशेष।

[illegible]

औटन तद्‌० (पु०) जलाव, उबालन, छुरी ।

औटना तद्‌० (क्रि०) जलाना, सुखाना, उबालना ।

औतार तद्‌० (पु०) अवतार, प्रकट, जन्म, अवतीर्ण होना (देखो अवतार) ।

औत्तानपादी तत्‌० (पु०) ध्रुव, प्रसिद्ध भक्त देखो ध्रुव ।

औत्कर्ष्य तत्‌० (पु०) श्रेष्ठता, उत्तमता ।

औत्सुक्य तत्‌० (पु०) उत्सुकता, अभिलाषा, भावना ।

औदनिक तत्‌० (गु०) सूपकार पाचक, रन्धनकर्ता रसोईया ।

औदरिक तत्‌० (गु०) उदरमात्र पोषक, पेटपोसू, पेटार्थी, पेटू ।

औदात तद्‌० (गु०) अवदात, श्वेत, गोर, शुक्ल, सुफेद, धौला ।

औदान दे० (पु०) बलुआ, सेंतका, सेंत मेंत का ।

औदार्य तत्‌० (गु०) महत्व, श्रेष्ठत्व, सरलता, अकापट्य, दातृत्व ।

औदास्य तत्‌० (पु०) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा, मनोमालिन्य ।—**भाव** (पु०) वैराग्य भाव, उदासीनता ।

औद्धत्य तत्‌० (पु०) परगुणासहिष्णुत्व, धृष्टता, गरभता, दौरात्म्य ।

औद्वाहिक तत्‌० (पु०) विवाह सम्बन्धी धन, विवाह में प्राप्त धन ।

औने पौने तद्‌० (गु०) अपूर्ण, न्यूनाधिक, घटी बढ़ी ।

औपचारिक तत्‌० (गु०) आरोपित, जिस में जो गुण न हो उसमें उसगुण को कहना ।

औपयिक तत्‌० (गु०) न्याय्य, उपयुक्त, योग्य ।

औवट तत्‌० (पु०) अवबाट, बुरा या कठिन मार्ग, औगट, औघट, दुर्गम ।

और दे० (अ०) औ, फिर, अधिक, विशेष, वाक्यान्तरबोधक ।—एक दूसरा, कोई, और कोई, और एक ।—ही बिलकुल दूसरा, अत्यन्त भिन्न ।

औरस तत्‌० (पु०) पुत्रविशेष, स्वउत्पादित पुत्र, सवर्णा स्त्री के गर्भ से स्वयं जनित पुत्र, स्वपुत्र ।

और्ध्वदेहिक तत्‌० (गु०) प्रेत क्रिया, अग्निसंस्कारादि, अन्त्येष्टिक्रिया, श्राद्ध ।

औषध तत्‌० (पु०) अगद, भेषज, दवा ।—**ालय** (पु०) वैद्यगृह, दवाख़ाना ।

औसना तद्‌० (क्रि०) उबसना, सड़ना, पचना ।

औसर तद्‌० (पु०) अवसर, अवकाश, छुट्टी ।

औसान तद्‌० (पु०) चेतना, बोध, साहस, समाप्ति, अवसान ।

औसेर तद्‌० (पु०) चिन्ता, भभर, खटका ।

क

क व्यञ्जन का प्रथम वर्ण ।

क तत्‌० (पु०) शिर, जल, सुख, केश, अग्नि, आत्मा, कामदेव, काम, ग्रन्थि, दक्ष, धन, प्रकाश, ब्रह्मा, वायु, विष्णु, मयूर, मन, यम, राजा, शब्द, शरीर, सूर्य ।

कइकई तद्‌० (स्त्री०) राजा दशरथ की एक रानी, भरत की माता, केकय देश के राजा की कन्या ।

कई तद्‌० (अ०) कितेक, कितने, कै एक, कति, कियत्‌ ।

कएक तद्‌० कुछ थोड़ा, एकाध, अल्प, कतिपय ।

कंस तत्‌० (पु०) तांबा और रांगा मिश्रित धातु विशेष, कांसा, मथुरा का स्वनामख्यात राजा, कंसराज, भोजवंशीय राजा उग्रसेन का क्षेत्रज पुत्र, जरासन्ध का दामाद, दानवराज द्रुमिल के औरस और उग्रसेन की पत्नी के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा यह मथुरामें मारा गया ।

कंसकार तत्‌० (पु०) ब्राह्मण के औरस तथा वैश्या के गर्भ से उत्पन्न जातिविशेष, कंसारी, बर्तन बेचने वाला ।

ककड़ी तद्‌० (स्त्री०) खीरा, एक प्रकार का फल, ककरी ।

ककनी तद्‌० (स्त्री०) पहुंची, कङ्कण, कँगना, स्त्रियों के हाथ में पहिनने का गहना ।

ककरेजा तद्० (पु०) बैंगनी रङ्ग, बैजनी ।
ककरोन्दा तत्० (पु०) फलविशेष ।
ककहरा तद्० (पु०) क से लेकर ह तक वर्ण, बाराखड़ी, वर्णमाला ।
ककुत्स्थ तत्० (पु०) इक्ष्वाकु राजा का पौत्र, इसका दूसरा नाम पुरञ्जय था, देवासुर संग्राम में युद्ध के लिये देवताओं की प्रार्थना इसने स्वीकार की और इन्द्र को वाहन बनाकर, समर-क्षेत्र में अवतीर्ण होना स्थिर किया, इन्द्र ने वृषभ रूप धारण किया । उस पर चढ़ कर पुरञ्जय ने युद्ध किया, तभी से इसका नाम ककुत्स्थ पड़ा, और इसीसे इसके वंशधर काकुत्स्थ कहे जाते हैं ।
ककुद् तत्० (पु०) राजचिन्ह, पर्वत विशेष, शिखा, डील (डब) ।
ककुभ् तत्० (स्त्री०) दिशा, दिक्, ओर, छन्दविशेष ।
ककोरना दे० (क्रि०) खरोचना, खोदना, उखाड़ना ।
कखरी तद्० (पु०) कांख, कोख, बगल ।
कखौरी तद्० (स्त्री०) कांख का फोड़ा ।
कगर तद्० (पु०) छोर, अन्त, शेष, किनारा पार्श्व ।
कगारा तद्० (स्त्री०) करारा, पहाड़ी ।
कङ्क तत्० (पु०) [कङ्क + अच्] मांसभक्षी पक्षी, बक, बगला, यमराज, ब्राह्मण वेषधारी युधिष्ठिर का नाम, क्योंकि विराट् के यहां युधिष्ठिर ने ब्राह्मण वेष बनाया था, क्षत्रिय ।
कङ्कण तत्० (पु०) [कं + कण् + अल्] कगना, हाथ का आभरण विशेष, बाना, कड़ा, वलय ।
कङ्कपत्र तत्० (पु०) बाण विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है ।
कङ्कर तद्० (पु०) कांकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े ।
कङ्काल तत्० (पु०) [कङ्क + आल] अस्थि, हाड़, अस्थिचर्म रहित शरीर ।—**माला** (स्त्री०) हाड़ों की माला ।—**माली** (पु०) अस्थिमय माला पहिनने वाला, महादेव, भैरव ।
कङ्कालिन तद्० (स्त्री०) डाकिनि, डायन ।
कङ्केला तद्० (पु०) पथरेल, पथरीला, किरकिरा, बलुआ ।
कङ्कोल तद्० (पु०) कद्दू विशेष ।
कङ्गन तद्० (पु०) स्त्रियों के पहुंचे में पहनने का गहना, कड़ा ।
कङ्गनी तद्० (स्त्री०) चूड़ी, कङ्गन, कँगना, ककनी, छन्द, कांगनी, अन्नविशेष ।
कङ्गरोड तद्० (पु०) रीढ़, पक्षि विशेष ।
कङ्गार तद्० (पु०) भार वह न करने वाला ।
कङ्गाल तद्० (पु०) दीन, दरिद्र, दुःखी ।—**ली** (स्त्री०) दरिद्रता, दीनता ।
कङ्गाल बांका दे० दरिद्र और अभिमानी ।
कङ्गूरा दे० (पु०) शिखर उच्चप्रदेश, पर्वत, अथवा ऊँचे मकान, ऊपरी भाग ।
कङ्गूड़ी दे० (स्त्री०) कानका निचला भाग ।
कङ्गूवा दे० (पु०) कङ्घा, कङ्घी, ककही ।
कङ्घा दे० (पु०) कङ्घी, कङ्गवा, केशमार्जनी ।
कच तत्० (पु०) केश, बाल, रोम, लोम, मेघ, बृहस्पति का पुत्र, यह देवताओं के आदेश से मृतसञ्जीवनी नामक विद्या सीखने के लिये शुक्राचार्य के समीप गया था, वहां अनेकानेक, यहां तक कि तीन तीन बार प्राण संहार तक का कष्ट उठाकर इसने विद्या सीखी, पुनः स्वर्ग में उस विद्या का इसने प्रचार किया ।
कचक दे० (स्त्री०) कसकस, किरकिर, बिना स्वाद का ।
कचकच दे० (स्त्री०) विवाद, झगड़ा, व्यर्थ कोलाहल करना ।
कचकना दे० (क्रि०) मुरकना, फिरना, विकसित होना, खिल जाना ।
कचकचाना दे० (स्त्री०) मिलाना, किरकिराना, बिना समझे बोलना ।
कचका दे० (पु०) कछुआ का छिलका ।
कचकेला दे० (पु०) कच्चा केला, अपक्व कदली फल ।
कचकैयां दे० (पु०) धक्का, ठोकर, ठेस ,
कचनार दे० (पु०) वृक्ष विशेष ।
कचपच दे० (स्त्री०) मचामच, सघन, घना, निविड़ ।

चपचिया दे० (पु०) गुच्छा, समूह, कृतिका नक्षत्र ।
चपन दे० (पु०) कचाहट, कचाई ।
चवच दे० (पु०) लड़के वाले, अधिक सन्तान ।
चमच दे० (स्त्री०) बड़बड़, बकबक ।
चवना दे० (क्रि०) स्वतन्त्रता पूर्वक खाना, निश्चिन्त भाव से भोजन करना ।
चरी दे० (पु०) शुष्क फल विशेष, फल सहित चने की टहनियां ।
चला दे० (पु०) चिकनी मट्टी, चहला, पिच्छिल भूमि
चलोन दे० (पु०) विट लवण ।
चलोहिया दे० (स्त्री०) मट्टिया लोहा, कच्चा लोहा ।
चहरी दे० (स्त्री०) विचारस्थान, सभा, समाज ।
चाई दे० (स्त्री०) अजीर्ण, आपच, कचाई ।
चाल दे० (पु०) झगड़ा, विवाद, कलह ।
चालू दे० (पु०) कच्चू अथवा, घुंयां, मसाला डालकर एक प्रकार से बनाये हुए आलू, कन्द विशेष ।
चिया दे० (पु०) हंसुवा, दरांती ।
चियाहट दे० (स्त्री०) घिनघिनाहट, घृणा ।
चियाना दे० हिचकना, भड़कना, सहमना, हतोत्साह होना ।
चुमर दे० (पु०) गँवार विशेष ।
चूर दे० (पु०) सुगन्धित कन्द विशेष ।
चेरा दे० (पु०) जाति विशेष ।
चौरी दे० (स्त्री०) पूरी पीठी या पोई भरी हुई, बेड़ई ।
च्चा दे० (गु०) अपक्व, काचा, कचिया ।
च्चू दे० (पु०) घुंयां, अरवी, कन्द विशेष ।
च्छ दे० (पु०) देश विशेष, जो गुजरात के पास है ।
च्छप तत्० (पु०) कछुआ, कूर्म, कमठ ।
छ दे० (पु०) कच्छप, नितम्ब, काँछ ।
छना दे० (पु०) कांछ धोना, पोछना ।
छनी दे० (स्त्री०) जँघई, धोलाई ।

कछलम्पट दे० (गु०) अजितेन्द्रिय, लुच्चा ।
कछवाहा दे० (पु०) राजपूतों की जाति विशेष, कहते हैं श्री रामचन्द्र जी के पुत्र कुश के ये वंशधर हैं ।
कछार दे० (पु०) नदी या तालाब का तट, किनारा, पहाड़ का किनारा ।
कछारना दे० (क्रि०) छांटना, धोना, पंघारना ।
कछु दे० (गु०) कुछ, थोड़ा, एकाध, किञ्चित् ।
कछुक दे० (गु०) कुछ, थोड़ा सा, कुछ एक, इसका प्रयोग रामायण में बहुत आया है ।
कछुआ दे० (पु०) कूर्म, कच्छप, कमठ ।
कछोटी तद्० (स्त्री०) लंगोटी, कौपीन ।
कज तद्० (पु०) कञ्ज, कमल ।
कजरा तद्० (पु०) काजल, आँख में लगाने की वस्तु ।
कजरे तद्० (गु०) काजल लगाये हुए ।
कजला तद्० (गु०) काला, काजल लगाये ।
कजलौटी तद्० (स्त्री०) काजल पारने का पात्र ।
कज्जल तत्० (पु०) काजल, अञ्जन, सुरमा ।—गिरि (पु०) काला पहाड़, काजल का पर्वत, सुरमे का पहाड़ ।
कञ्चन तत्० (पु०) सुवर्ण, सोना, जाति विशेष ।
कञ्चनक तत्० (पु०) कचनार, मैनफल ।
कञ्चनी दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, नौची, कञ्चन जाति की स्त्री, सुवर्ण की पुतली ।
कञ्चु तत्० (पु०) चोली, अँगिया, कांचली ।—की (स्त्री०) चोली ।
कञ्ज तत्० (पु०) पद्म, कमल, कँवल ।
कञ्जार दे० (पु०) झोरी बेचने वाली जाति ।
कञ्जा दे० (पु०) भूरी आँख वाला ।
कञ्जियां दे० (स्त्री०) भाखों की अञ्जनें ।
कञ्जूस दे० (पु०) सूम, कृपण, लालची ।—ी (स्त्री०) कृपणता ।
कट तत्० (पु०) कटि, कटिप्रदेश, कमर ।
कटक तत्० (पु०) वलय, पर्वत का मध्य भाग, नितम्ब, मेखला चक्र, सेना रहने का स्थान, देश विशेष, पर्वत की समभूमि ।

कटकी तद्० (गु०) कटक नगर के बनी हुई वस्तु, पर्वत, शैल, पहाड़।

कटकना तद्० (क्रि०) बांधनू, ढांचा, उपाय।

कटकई दे० (पु०) दल, सेना, झुण्ड।

कटकटहिं दे० (क्रि०) कड़कटाते हैं, किचकिचाते हैं, क्रोध का शब्द।

कट्टहिं दे० (क्रि०) काटते हैं, काट लेते हैं।

कटखना तद्० (गु०) कटहा, हर्किया, कटौवा।

कटघरा तद्० (पु०) कटहरा, कठरा।

कटना दे० (पु०) कट जाना, बीतना।

कटनी दे० (स्त्री०) कटाई, लौनाकाल, खेत का कटना।

कटफल दे० (पु०) कायफल, कैफल।

कटरा दे० (पु०) चौक, हाट, निकास, शहर का बीच।

कटहर दे० (पु०) कटहल फल विशेष।

कटहरा दे० (पु०) काठ का बड़ा पिंजड़ा।

कटहा दे० (पु०) कटौवा, कटखना, हर्सिया।

कटा दे० (पु०) हत्या, वध, काटाकाटी।

कटाक्ष दे० (पु०) तिरछी चितवन, भावयुक्त दृष्टि, आँख का सङ्केत।

कटान दे० घट जाना, पैना।

कटार दे० (पु०) कटारी, खञ्जर।

कटाल दे० (पु०) ज्वार, समुद्र का चढ़ना।

कटाव दे० (पु०) नदी का किनारा, नदी के वेग से ढहता भूभाग।

कटाह तत् (पु०) कड़ाही, कड़ाह, हण्डा।

कटि तत् (पु०) कमर, कड़ियाव, लङ्क, शरीर का मध्य भाग।—तट (पु०) कटिदेश, नितम्ब।—देश (पु०) शरीर का मध्यावयव।

कटित तद्० (पु०) खपत, विक्रय, बिकाव, उपयोग में आना।

कटिबन्ध तद्० (पु०) कमरबन्धा, पृथिवी का ठण्डा गर्म आदि भाग।

कटिबद्ध तद्० (गु०) कमर बांधे हुए, तैयार, उद्यत।

कटिया तद्० (स्त्री०) बंसी, बड़िस, वस्त्र विशेष, सन का बना हुआ।

कटिसूत्र तद्० (पु०) कटिभूषण विशेष, करधनी।

कटीला दे० (गु०) पौधा विशेष, कण्टकयुक्त, काटों वाला, सावन्त, कण्टार।

कटु तत्० (गु०) अप्रिय, दुर्गन्ध, कटुरस युक्त, मत्सर, तीक्ष्ण सुगन्धि।

कटुक तत्० (गु०) कड़ुवा, तिक्त, तीखा।

कटुकी तत्० (स्त्री०) कटुकी औषधि।

कटुग्रन्थ तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, पिपरामूल।

कटूत्कट तत्० वा, कटुभद्र, (स्त्री०) सोंठ।

कटुभी तद्० (स्त्री०) मालकांगुनी।

कटुरोहिणी तत्० (स्त्री०) कटुकी औषधि।

कटूक्ती तत्० (स्त्री०) फूहड़ाई, दुर्वचन।

कटोरा दे० (पु०) बेला, पान पात्र विशेष।

कटोल दे० (पु०) चण्डाल, फल विशेष।

कटकट दे० (पु०) झगड़ा, लड़ाई, बानरों की बोली।

कटकिना दे० (क्रि०) काल यापन करना, दुःख से काल बिताना, काल काटना।

कट्टर दे० (गु०) काटनेवाला, कटौवल, हठी, दुराग्रही।

कट्ठा दे० (पु०) मापने की वस्तु, बिसवा, जिससे खेत मापे जाते हैं।

कठ तत्० (पु०) [कठ् + अच्] मुनि विशेष, वेद की कठ नामक शाखा, यजुर्वेद, स्वर ब्राह्मण।—शाखा (स्त्री०) यजुर्वेद का एक भाग।—उपनिषद् (स्त्री०) पुस्तक विशेष, वेदान्त शास्त्र, दशोपनिषद् में का एक उपनिषत्।

कठघरा तद् (पु०) कटहरा, घेरा, बेड़ा, काठ की बनी हुई चारदिवारी।

कठड़ा दे० (पु०) कठरा, कठौवा, कठौती, (स्त्री०) कठड़ी।

कठन्दर दे० (पु०) काष्ठोदर, रोग विशेष, पेट का कड़ापन।

कठघिरुकी दे० (स्त्री०) भेक, कमर, सांड़ा।

कठरा दे० (पु०) काठ का बना पात्र विशेष, (स्त्री०) कठरी।

कठवता दे० (स्त्री०) काठ का बर्तन विशेष, कठौता, कठवत।

कठहंसी तद्० (स्त्री०) शुष्कहास्य, काष्ठहास्य, बिना कारण हास्य।

कठारी दे० (पु०) काठ का बना कमण्डलु।

कठिन तत्० (पु०) [कठ्+इन्] कर्कश, कठोर, निष्ठुर, कड़ा, दृढ़, स्तब्ध।—ता (स्त्री०) कठोरता, निठुरता, दुरूहता।—त्व (पु०) कड़ापन, कठिनता।—पृष्ठक (पु०) कूर्म, कच्छप, कछुआ।—अन्तःकरण (पु०) निष्ठुर, दृढ़ अन्तःकरण, निर्दय।

कठिनिका तत्० (स्त्री०) [कठ्+इक्+आ] खड़ी, कठिनी।

कठिनी तत्० (स्त्री०) खड़ी, मिट्टी, छुई।

कठिया दे० (पु०) कठौती, फांदा, जाला, काठ की माला, काठ का छोटा पात्र।

कठिल्ल दे० (पु०) करेला, तरकारी।

कठेठी दे० (स्त्री०) कड़ी, कठिना, धन।

कठोर तत्० (पु०) कठिन, कठोर, दृढ़, निष्ठुर।—ता (स्त्री०) निठुरता, निठुराई।

कठोलिया दे० (स्त्री०) काष्ठनिर्मित पात्र, काठ का छोटा पात्र।

कठौता } (पु०) देखो कठवता।
कठौती } (स्त्री०)

कड़क दे० (पु०) धड़ाका, चटक, गर्जन, कड़कड़ाहट, कड़ाका।

कड़कना दे० (क्रि०) चटकना, धड़कना, गरजना।

कड़क कर दे० गर्जन के साथ, साभिमान।

कड़कच दे० (पु०) लोन, लवण, खार, समुद्र का लवण विशेष।

कड़का दे० (पु०) बिजली, तड़ित, गर्जन, भयङ्कर शब्द।

कड़खा दे० (पु०) युद्ध में बढ़ावा देना, उत्साहित करना, गान विशेष, जिसमें शूरवीरों का यश वर्णित हो।

कड़खैत दे० (पु०) भाट, बढ़ावा देने वाला, चारण, इस जाति के लोग राजपूताने में अधिक पाये जाते हैं, यहां इनको जागीरें मिली हुई हैं। ये लड़ाई में वीर राजाओं को अपनी ओजस्विनी कविता से उत्साहित किया करते हैं।

कड़ची दे० (स्त्री०) तीखी, कटु, जुआर बाजरे की डांठी।

कड़ा दे० (गु०) कठोर, दृढ़ सख्त, उत्कट, हाथ का आभूषण, वलय, दुआर अथवा कड़ाह कड़ाही को पकड़ने के लिये छल्ला वेंट।

कड़ाका दे० (पु०) उपवास, फ़ाका, निर्जल, उपवास।

कड़ाड़ा दे० (पु०) नदी का ऊंचा तीर, किनारा, करार।

कड़ाह तद्० (पु०) लोहे का पात्र, जिसमें दूध आदि औंटा जाता है।

कड़ाही तद्० (स्त्री०) छोटा कड़ाह।

कड़िहार दे० (पु०) कर्णधार, मल्लाह, केवट, मांझी।

कड़ी दे० (स्त्री०) कांपड़ी, धरन, बेड़ी, धरनि।

कड़ुवा तद्० (गु०) कटु, तीता, कायल।

कड़ोर दे० (पु०) करोड़, संख्याविशेष, सौलाख।

कड़मड़ दे० (पु०) कड़ाकड़, चर्मर।

कढ़ना दे० (क्रि०) निकलना, उठना, खिलाना।

कढ़ी दे० (स्त्री०) भोजन विशेष, बेसन और दही से बनी हुई वस्तु।

कढ़ुआ दे० (गु०) उधार, ऋण, निकाला हुआ, जातिच्युत)

कण तत्० (पु०) [कण्+अल्] अतिसूक्ष्म, कणा, अणुकणिका, चूर्ण।—जीर (पु०) श्वेत जीरा।—भक्षक (पु०) कणभोजी, कणादमुनि, पक्षि विशेष।

कणा तत्० (स्त्री०) विन्दु, छोटा भाग, अल्प।

कणाद तत्० (पु०) [कण्+अद्+अच्] सुवर्णकार, मुनि विशेष, वैशेषिकदर्शनकर्त्ता, यह तण्डुलकणा खाकर अपनी जीविका करते थे, इसी कारण इनका कणाद नाम हुआ है। इनका दूसरा नाम उलूक था, अतएव वैशेषिक दर्शन को औलूक्य दर्शन भी कहते हैं। यह परमाणुवादियों में थे। इनका बनाया दर्शन षड्दर्शन के अन्तर्गत समझा जाता है।

कणमात्र तत्० एक विन्दु, किञ्चिन्मात्र, बहुत थोड़ा।

कणिका तत्० (स्त्री०) [कणिक+आ] लेश, विन्दु, कणा, छोटा भाग, अणु खुद्दी, चावल के टुकड़े।

कणी तत्० (स्त्री०) छिटक, टुकड़ा, भाग, बहुत पतला।

कण्टक तत्० (पु०) [कण्ट+णक्] कांटा, कृपण, क्षुद्र शत्रु, रोमाञ्च, रोमहर्ष, दोष,—**द्रुम** (पु०) कांटा युक्त वृक्ष, शाल्मलीवृक्ष ।—**प्रावृता** (स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुवारी ।—**फल** (पु०) पनस कटहर, —**भुक्** (पु०) ऊंट, उष्ट्र ।—**मय** (पु०) कांटे से भरा, बहुत कांटे वाला ।—**लता** (स्त्री०) खीरा, फलविशेष ।—**ारि** छोटी कटाई, श्वेत घीकुआर ।

कण्टार दे० (पु०) कटीला, खरदरा, कण्टकमय । —**िका** (स्त्री०) छोटी श्वेत कटाई ।

कण्ठिया दे० (स्त्री०) झांकड़ी, वंशी ।

कण्ठ तत्० (पु०) गला, घाटी, उपस्थित ।—**ला** (स्त्री०) माला, कण्ठी, गण्डा, गले का आभूषण । —**स्थ** (पु०) मुखस्थ, मुखाग्र ।

कण्ठपाशक तत्० (पु०) हाथि के गले में बांधने की रस्सी ।

कण्ठभूषा तत्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, ग्रैवेयक, हार ।

कण्ठमाला तत्० (स्त्री०) कण्ठ में पहनने की माला, रोग विशेष ।

कण्ठा दे० (पु०) कण्ठभूषण विशेष, बड़े दाने की माला ।—**गत** (पु०) [कण्ठ+आगत] शरीर त्याग के उद्योगी, मरणोद्यत ।—**ग्र** (पु०) [कण्ठ+ अग्र] मुखाग्र, कण्ठस्थ, मुखस्थ ।

कण्ठिधारी तद्० (पु०) वैरागी, भगत, कण्ठी पहनने वाला ।

कण्ठी तत्० (स्त्री०) कण्ठाभरण, कण्ठमाला, तुलसी की माला ।

कण्ठीरव तत्० (पु०) सिंह, व्याघ्र, शेर ।

कण्ठ्य तत्० (पु०) कण्ठ से उच्चारित होने वाले अक्षर, कण्ठोच्चारित ।

कण्डा दे० (पु०) उपला, उपरी, गोहरी ।

कण्डी दे० (स्त्री०) छोटी उपली ।

कण्डुपुष्पी तत्० (स्त्री०) शंखाहूली, औषध विशेष ।

कण्डू तत्० (पु०) रोग विशेष, खुजलाहट, खुजली, खाज ।—**घ्न** (पु०) पवांर औषधि, कण्डू रोग दूर करने की औषधि ।

कण्डूति तत्० (स्त्री०) कण्डूयन, खुजलाहट, खाज होना ।

कण्डेरा तद्० (पु०) काण्डकार, वाण बनाने वाली जाति, धुनियां ।

कण्डोल दे० (पु०) बांस का बना अन्न रखने का पात्र ।

कण्व तत्० (पु०) मुनि विशेष, एक तपस्वी प्राचीन ऋषि का नाम, यह शकुन्तला के पालक पिता थे । मालिनी नदी के तीर पर इनका आश्रम था, कुलपति की उपाधि इन्हें मिली थी, क्योंकि इनके आश्रम में अनेक सहस्र बालक शिक्षा पाते थे ।

कत तद्० (अ०) कहां, क्योंकर, क्या, कैसा, किस वास्ते, किसलिये ।

कतनई तद्० (स्त्री०) सूत कातने की मजूरी ।

कतना तद्० (क्रि०) काता जाना, कितना, किस परिमाण में ।

कतम तत्० कतम (गु०) [किम्+तम] अनेक व्यक्तियों में से एक व्यक्ति, अनिर्दिष्ट मनुष्य, कौन, कौनसा ।

कतरण तद्० (स्त्री०) काटन, छांटन, कतरा ।

कतरना (क्रि०) काटना, छांट करना, छांट छूट करना ।

कतरनी तद्० (स्त्री०) क़ैंची, अस्त्र विशेष, कटनी ।

कतरा तद्० (पु०) भिन्न भिन्न, टुकड़ा ।

कतराना तत्० (क्रि०) कटवाना, अलग होना, पृथक् पृथक् होना ।

कतहूं दे० (अ०) कहां भी, किसी जगह भी, किसी ठौर भी ।

कताई तद्० (स्त्री०) कातने की कौड़ी ।

कतारा दे० (पु०) पांत का पांत, धारी, क्रमिक, क्रमान्वय ।

कति तत्० (गु०) केतिक, कितने, कितने एक ।—**पय** (गु०) थोड़े, कम ।

कतीरा दे० (पु०) निर्यास, गोंद विशेष ।

कतुवा दे० (पु०) तक्का, तकुवा, सूवा ।

कतेक दे० (गु०) कति, कितने, दो एक ।

कत्त दे० (अ०) कहां, क्योंकर ।

कत्तान दे० (पु०) छुरा, कटार, यमधार ।

कत्था दे० (पु०) खैर, खदिर, जो पान के साथ खाया जाता है ।

कत्थक तद्० (पु०) गानेवाली एक जाति, गाने नाचने वाला।

कथक तत्० (पु०) [कथ्+ण्वुल्] वक्ता, पुराण की कथा बाँचने वाला, पुराण वक्ता।

कथञ्चन तत्० (अ०) किम प्रकार, किसी प्रकार।

कथञ्चित् तत्० (अ०) किसी प्रकार, अधिक कष्ट से।

कथन तत्० (पु०) बोल, कहन, उच्चारण, उक्ति, विवरण करण।

कथनीय तत्० (पु०) वर्णनीय, कहनेयोग्य, वक्तव्य, कथन योग्य, निन्दा।

कथम् तत्० (अ०) हर्ष, गर्हा, प्रकारार्थ, सम्भ्रम प्रश्न, सम्भावना।

कथहिं तद्० (क्रि०) कहते हैं, वर्णन करते हैं, गान करते हैं।

कथा तत्० (स्त्री०) बात, इतिहास, पवांरा, वृत्तान्त। —**प्रबन्ध** (पु०) आख्यायिका, कहानी, क़िस्सा, गल्प।—**प्रसङ्ग** (पु०) कथोपकथन, बातचीत, वातुल, विषवैद्य।—**प्राण** (पु०) नाटक वक्ता, कथक।—**वार्ता** (स्त्री०) कथोपकथन, बातचीत, सम्भाषण, आलाप।—**सचिव** (पु०) सम्मति दाता, मन्त्री, बात चीत करने में सहायक।

कथित तत्० (पु०) [कथ्+क्त] उक्त, कहा हुआ।

कथितव्य तत्० (पु०) [कथ्+तव्य] वक्तव्य, कथनीय, कथनार्ह, कहने के योग्य।

कथोपकथन तत्० (पु०) [कथ्+उप्+कथन] आलाप, बातचीत।

कथ्य तत्० (पु०) [कथ्+य] वक्तव्य, कथितव्य, कथनार्ह।

कद् तद्० (अ०) कब, कहिया, किस समय, कदा।

कदक्षर तत्० (पु०) कुत्सित वर्ण, ख़राब अक्षर।

कदध्वा तत्० (पु०) [कद्+अध्वन्] निन्दित पंथ, कुत्सित मार्ग, कुपथ।

कदन तत्० (पु०) [कद+अनट्] पाप, युद्ध, मारण, मर्दन, वधिक, नाशक।

कदन्न तत्० (पु०) [कद्+अद्+क्त] कुत्सित अन्न, अपवित्र अन्न।

कदम तद्० (पु०) कदम्ब वृक्ष, वृक्ष विशेष, चरण, पाद।

कदम्ब तत्० (पु०) [कद्+अम्ब] वृक्ष विशेष, नीप, कदम वृक्ष।—**क** (पु०) मधूह।—**कुसुमाकार** (पु०) गोलाकार, वर्तुलाकार।

कदराई तद्० (स्त्री०) कादरता, कादरपन, भीरुता।

कदर्थ तत्० (पु०) [कद्+अर्थ] निरर्थक, कुकथा।

कदर्य तत्० (पु०) कुत्सित, निन्दित, अपकृष्ट, मन्द, क्षुद्र, कदराई।

कदली तत्० (स्त्री०) कदलक, केले का वृक्ष।

कदा तत्० (अ०) [किम्+दा] कब, किस समय, कद।

कदाकार तत्० (पु०) [कद+आ+कृ+घञ्] कुत्सित, आकृत, कुरूप।

कदाकृति तत्० (स्त्री०) कुत्सित आकृति, कुरूप।

कदाच तद्० (अ०) कदाचित्, कदाचन, कभी, किसी समय।

कदाचन तत्० (अ०) कब, किसी समय, कभी।

कदाचार तत्० (पु०) बुरा व्यवहार, कुचलन, निन्दित कर्म, असदाचार, दुराचार।

कदाचित् तत्० (अ०) कधी, कभी, कभू। किसी समय।

कदापि तत्० (अ०) [कदा+अपि] कभीभी, कब कब, कभूं।

कदीमा दे० (पु०) शावल, लोहांगी।

कदू दे० (पु०) अलाबू, लौका, लौकी, गौर्ई।

कद्रू तत्० (पु०) धूसरवर्ण, (स्त्री०) नागमाता का नाम, कश्यपमुनि की स्त्री। दक्ष प्रजापति की कन्या, इन्हींके गर्भ से सर्पों की उत्पत्ति हुई है। —**पुत्र** (पु०) सर्प, भुजङ्ग।—**सुत** (पु०) नाग, सर्प, भुजङ्ग, कद्रूपुत्र।

कधी दे० (अ०) कभूं, कब, कदाचित्।

कन तद्० (पु०) कण, धुण, आटा, अणु ।

कनक तत्० (पु०) स्वर्ण, सुवर्ण धतूरा, पलाशवृक्ष, नागकेसरवृक्ष ।—चम्पक (पु०) वृक्षविशेष, कनकचया ।—रस (पु०) हरिताल ।—लोचन (पु०) हिरण्याक्ष, एक राक्षस का नाम ।—चल (पु०) सुमेरु पर्वत, अस्त गिरि, दान विशेष ।

कनकटा दे० (पु०) बूचा, कर्ण रहित, बधिर ।

कनखजूरा दे० (पु०) गोजर, कनशलाई, कीट विशेष ।

कनखी दे० (स्त्री०) सैन, सङ्केत, इशारा, कटाक्ष ।

कनपटी दे० (स्त्री०) परपड़ो, गण्डस्थल, कान के समीप का भाग ।

कनफटा दे० (पु०) योगी विशेष, नाथसम्प्रदायी ।

कनरसिया दे० (पु०) कर्ण रसिक, गीतज्ञ, बात चीत सुनने के इच्छुक ।

कनल तद्० (पु०) भिलावा ।

कनवाई दे० (स्त्री०) कर्णवेध, कान छेदना ।

कनशलाई दे० (स्त्री०) कनखजूरा, गोजर ।

कनहर दे० (पु०) पतवार, कर्ण ।

कनहा दे० (पु०) अन्न की जाच करने वाला ।

कनागत तत्० (पु०) पितृपक्ष, अपरपक्ष, कन्यागत ।

कनात दे० (पु०) तम्बू, डेरा, रावटी ।

कनिक दे० (पु०) पिसान, आटा, चूर्ण ।

कनियाना तद्० (क्रि०) टलना, कतराना ।

कनियाहट तद्० (स्त्री०) भड़क, सङ्कोच, खीच ।

कनिष्ठ तत्० (गु०) छोटा, लहुरा, अनुज, अतियुवा, पश्चात् उत्पन्न ।

कनिष्ठा तत्० (स्त्री०) छोटी अगुली ।

कनिहा दे० (पु०) घुना, प्रति हिंसक ।

कनीनिका तत्० (स्त्री०) आखों की तारा, छोटी अँगुरी ।

कनीयान् तत्० (गु०) कनिष्ठ, अनुज, छोटा, अतियुवा अल्पवय ।

कने दे० (अ०) पास, समीप, साथ, सङ्ग ।

कनेठी दे० (स्त्री०) कान मरोड़ना, थप्पड़ मारना ।

कनेर दे० (पु०) कनेल, करवीर, हस्तिवेश्या, पहले जिसको प्राण दण्डकी राजाज्ञा होती थी, उसे कनेर के फूलों की माला पहनाई जाती थी "अंसेन बिभ्रत् करवीर मालाम्"। (मृच्छकटिक)

कनैया तत्० (पु०) कर्णवेधन, कंछेदौनी ।

कनौज तद्० (पु०) नगर विशेष, एक नगर का नाम, कान्यकुब्ज ।

कनौजिया तद्० (पु०) कनौज के वासी, ब्राह्मण विशेष, कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।

कनौड़ा दे० (गु०) सङ्कोची, मुखचोर ।

कन्त तद्० (पु०) स्वामी, प्रियतम, भतार, प्रिय ।

कन्था तत्० (स्त्री०) गुदड़ी, कथड़ी, पुराने वस्त्र से बना ओढ़ना ।—धारी (पु०) भिक्षुक, संन्यासी, संसार त्यागी, गुदड़ बाबा ।

कन्द तत्० (पु०) [क्न्द्+अच्] मूल जड़, सूरण, ओल, गाजर, लहसुन ।—वर्द्धन (पु०) मूल, सूरन, ओल —मूल (पु०) जड़ मूल, मुनिभोजन विशेष ।

कन्दरा तत्० (स्त्री०) [कन्दर+आ] खोह, गुफा, गुहा, पर्वत की सुरङ्ग ।—ल(पु०) पर्कटी वृक्ष, अखरोट वृक्ष ।

कन्दर्प तत्० (पु०) [कं—दृप्+अच्] काम, मदन, कामदेव, अनङ्ग ।

कन्दल तत्० (गु०) [कन्द+ला+ड] उपराग, नवीन अङ्कुर, विवाद, कलह, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, संग्राम ।—कन्द (पु०) ज़िमिकन्द, ज़िमी कन्द, मूल विशेष ।

कन्दला तद्० (पु०) कन्दरा, गुफा, खोह, कौंचबीज।

कन्दलित तत्० (गु०) प्रस्फुटित, अङ्कुरित, अङ्कुर प्राप्त ।

कन्दसार तद्० (पु०) मृग, हरिण, कुरङ्ग, नन्दन वन।

कन्दासी तद्० (पु०) पुष्प और ओषधि विशेष, प्रियवासा ।

कन्दु तत्० (पु०) [कन्द+उ] लोहमय पाकपात्र कढ़ा, तावा, साकल, कढ़ी, बेड़ी ।

कन्दुक तत्० (पु०) गेंद, खिलौना विशेष ।

कन्धा तद्० (पु०) कांध, कांधा, कन्धा, स्कन्ध ।

कन्धर तत्० (पु०) ग्रीवा, घेंटुवा, गला, गर्दन, मेघ तृण विशेष ।

कन्धा तद्० (पु०) कन्धा, स्कन्ध, ग्रीवा।
कन्धि तद्० (पु०) समुद्र, मेघ, (स्त्री०) ग्रीवा, गला।
कन्धियाना तद्० (क्रि०) कान्धपर रखना, कन्धे का बल देना, कन्धे का सहारा देना।
कन्धेली तद्० (स्त्री०) ज़ीन, खोगीर, गद्दी, वह वस्तु जो बैलों की पीठ पर रखी जाती है, और इस पर बनिये अन्न लादते हैं।
कन्यका तत्० (स्त्री०) अविवाहिता कन्या, पुत्री, दश वर्ष की लड़की।
कन्या तत्० (स्त्री०) कुमारी, लड़की, बेटी, दुहिता, बारह राशियों में से छठी राशि, ओषधि विशेष। —काल (पु०) कन्या की दश वर्ष की अवस्था, रजोदर्शन की पहिली अवस्था।—गत (पु०) कन्या निष्ठ, कन्या राशिस्थित।—दाता (पु०) विवाह में कन्यादान करने का अधिकारी।—दान (पु०) विवाह, वर को कन्या समर्पण।—पति (पु०) जामाता, उपपति, व्यभिचारी।—भाव (पु०) कुमारिकावन, कुमारीत्व।—राशि (पु०) षष्ठ राशि, निकम्मी वस्तु, लज्जित, वलज्ज।
कन्हरीया दे० (पु०) कन्हारी, मांझी, कर्णधार, मल्लाह।
कन्हाई दे० (स्त्री०) कनहाई, खेलकूदना, (पु०) श्रीकृष्ण।
कन्हैया दे० (पु०) श्रीकृष्ण का नाम, अत्यन्त प्रिय।
कपकपी तद्० (स्त्री०) थरथरी, फुरफुरी।
कपट तत्० (पु०) [क+पट्+अल्] अयथार्थ व्यवहार, छल, प्रतारणा, चातुरी।—ता (स्त्री०) धूर्तता, शठता,—वेश (पु०) छल वेश, मिथ्या, कल्पितवेष।—वेशधारी (पु०) छल वेशधारी, प्रतारक, धोखा देने वाला, ठग।—भू (स्त्री०) माया भूमि।
कपटी तत्० (गु०) छली, बहुरूपिया, खोटा, कपट कारी, छद्मवेशी।
कपड़ा दे० (पु०) वस्त्र, लुगा, लत्ता।
कपड़े से होना दे० रजस्वला होना।
कपना तद्० कांपना, थरथराना।
कपर्द तत्० (पु०) महादेव की जटा, वराटिका, कौड़ी।
कपर्दी तत्० (पु०) शिव, महादेव, जटाधारी।
कपर्दिका तत्० (स्त्री०) वराटिका, कौड़ी।
कपाट तत्० (पु) किवाड़, किवाड़ी, द्वार, देहली, घर, आवरण।
कपार तद्० (पु०) देखो कपाल।
कपाल तत्० (पु०) [क+पाल+अल्] ललाट, भाल, कपार, अदृष्ट, भाग्य।—क्रिया (स्त्री०) संस्कार विशेष, अधजले मुर्दे के शिर में हवन करना।—भृत् (पु०) शिव, महादेव, महेश्वर।
कपालिका तत्० (स्त्री०) [कपाल+इक्+आ] दन्तरोग विशेष, खोपड़ी।
कपालिनी तत्० (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, कपाल धारिणी।
कपाली तत्० (पु०) शिव, महादेव, स्वनामप्रधान जाति विशेष, द्वार के ऊपर का काठ, खरदर।
कपालीय तद्० (गु०) भाग्यवान्, कपार के बली।
कपास तद्० (पु०) बांगा, रुई, कपास।
कपि तत्० (पु०) [कप्+इ] वानर, मर्कट, धन्न विशेष, शाक विशेष।—कच्छु (स्त्री०) वृक्ष विशेष। —कुञ्जर (पु०) वानरों का राजा, प्रधान, राजा, हनुमान्।
कपिञ्जल तत्० (पु०) चातक पक्षी, तित्तिर पक्षी, कादम्बरी कथा के उपनायक का एक मित्र, मुनि विशेष।
कपित्थ तत्० (पु०) कैथ, कैथा, फल विशेष।
कपिध्वज तत्० (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव।
कपिवक्र तत्० (गुं०) वानर के समान मुखवाला। कहते हैं नारद जी ने विवाह करने की इच्छा से सुन्दर बनने के लिये—सो भी भगवान् के समान—भगवान् से प्रार्थना की, भगवान् ने उनके आध्यात्मिक कल्याण की ओर ध्यान देकर सुन्दर बनाना तो दूर रहा, उनका मुंह बन्दरों का सा बना दिया और नारद जी से कह दिया कि आप अब बड़े सुन्दर हो गये। नारद जी भी स्वयम्वर स्थान में पहुंचे और कन्या के सामने इस अभिलाषा से

खड़े हुए कि यह मुझे देखे और वरण करे। परन्तु वैसा होना नहीं था; किन्तु उनको सामने खड़ा देख, कन्या उधर से अपना मुंह फेर लेती थी, परन्तु नारद जी कब मानने वाले थे, जिधर वह मुंह फेरती थी उधर ही आप खड़े हो जाते थे। इनकी लीला देख वहां के लोगों ने कहा, यह बनरमुंहा इधर उधर क्यों दौड़ता है, अब नारद जी को सन्देह हुआ और जल के समीप जाकर, अपना मुंह उन्होंने देखा, तब तो उनको निर्णय होगया।

कपिल तत्० (पु०) पीला रंग, पीले रंग का, नील पीत वर्ण, गन्धद्रव्य, मुनि विशेष। विख्यात साङ्ख्य शास्त्र प्रणेता कपिल मुनि, यह कर्दम प्रजापति के औरस से और देवहूति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, यह भगवान् के पांचवें अवतार हैं। उनका बनाया हुआ साङ्ख्यदर्शन षड्दर्शन की श्रेणी में समझा जाता है। साङ्ख्यदर्शन को लोग निरीश्वर दर्शन कहते हैं। इस दर्शन में प्रकृति और पुरुष का निरूपण बहुत ही अच्छी रीति से किया गया है। **—धारा** (स्त्री०) गङ्गा, तीर्थ विशेष, काशी का एक स्थान विशेष।

कपिला तत्० (स्त्री०) पीली गाय, धेनु, दक्ष राजा की एक कन्या का नाम।

कपिश तत्० (पु०) खैरा, भूरारंग, बदामी, कृष्ण पीत मिश्रित वर्ण।

कपीश तत्० (पु०) कपि स्वामी, वानर राज, सुग्रीव, हनुमान्, वानरों का राजा।

कपीश्वर तत्० (पु०) सुग्रीव, हनुमान्, वानरों का राजा।

कपुत्र तद्० (पु०) कपूत, कुपूत, कुबुद्धि पुत्र।

कपूत तद्० (पु०) निन्दित पुत्र, दुराचारी पुत्र।

कपूर तद्० (पु०) कर्पूर, सुगन्धिद्रव्य विशेष। **—तिलक** (पु०) एक हाथी का नाम जो ब्रह्मावर्त-बिठूर में था।

कपूरी तद्० (स्त्री०) पान, पत्र विशेष, रङ्ग विशेष।

कपोत तत्० (पु०) कबूतर, परेवा, पारावत। **—पालिका** (स्त्री०) घर के बाहर की ओर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान। **—वर्णा** (स्त्री०) छोटी इलायची। **—इ** (पु०) नद विशेष।

कपोतिका तत्० (स्त्री०) कबूतरी, मूली, तरकारी।

कपोल तत्० (पु०) गाल, गण्डस्थल।

कपिन्द्र तद्० (पु०) कपीन्द्र, कपिराज।

कफ तत्० (पु०) श्लेष्मा, खखार, बलगम, शरीरस्थ धातु विशेष। **—घ्न** (पु०) कफ नाशक, श्लेष्मा नाशक। **—वर्द्धक** (पु०) कफ बढ़ाने वाला, तगर वृक्ष। **—विरोधी** (पु०) मरिच। **—रि** (पु०) सुण्ठी, सोंठ।

कफोणी तत्० (पु०) बांह के बीच की गांठ, केहुनी।

कब दे० (अ०) कदा, कदिया, किस समय। **—तक** (अ०) अवधि वाचक अव्यय, किस समय तक। **—लौं** कितनी देरतक।

कबकब दे० (अ०) किस किस समय।

कबड्डी दे० (स्त्री०) भारतीय एक खेल।

कबन्ध तत्० (पु०) मस्तकहीन देह, बिना सिर का धड़, एक राक्षस का नाम।

कबरा तद्० (पु०) कर्बुर, चितकबरा, चितला।

कबहूं तद्० (अ०) कभी भी, किसी समय भी, कवचित् कुत्र।

कवाड़ दे० (स्त्री०) कवार, किवाड़।

कवारू दे० (पु०) काम, उद्यम, गुण, झंझट।

कव्य तत्० (पु०) पितृश्राद्ध, पितृदान।

कभी दे० (अ०) कदापि, कधी, कधु।

कभू दे० (अ०) कब, कभी, कधू, कदापि।

कमठ तत्० (पु०) कूर्म, कच्छप, कछुवा, दैत्य विशेष, मुनि भाजन।

कमठा दे० (पु०) बाँस का धनुष, कमान।

कमठी तत्० (स्त्री०) कच्छपी, कछुई, धनुही।

कमण्डल तद्० (पु०) करवा, कठारी, साधुओं का जलपात्र, साधु, संन्यासियों का मिट्टी या काठ से बनाया जलपात्र।

कमढ़ा दे० (पु०) पेठा, कुम्हड़ा, कोंहड़ा ।

कमनीय तत्० (पु०) सुन्दर, सुघरा, सुघड़, मनोहर, रम्य ।

कमरख तद्० (पु०) एक प्रकार का फल और वृक्ष ।

कमल तत्० (पु०) पद्म, जलज, अम्बुज ।—ज (पु०) ब्रह्मा ।—नाभ (पु०) पद्मनाभ, भगवान्, विष्णु ।—वाय (पु०) कामला रोग, पांवर, एक रोग विशेष, जिसमें शरीर और आंखें पीली हो जाती हैं ।

कमला तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, सरस्वती, विष्णुपत्नी ।—कर (पु०) तालाब, जिस तालाब में कमल पुष्प अधिकता से पाये जाते हैं ।—पति (पु०) विष्णु भगवान्, नारायण ।—सन (पु०) [कमल+आसन] ब्रह्मा ।—सना (स्त्री०) लक्ष्मी, सरस्वती ।

कमलाक्ष तत्० (पु०) कमल नयन, पद्म नेत्र, पद्मपत्र के समान आंखों वाला ।

कमलिनी तत्० (स्त्री०) कुमोदिनी, कमलों का समूह ।

कमाई दे० (स्त्री०) उपार्जन, प्राप्ति, लाभ ।

कमाऊ दे० (पु०) कमानेवाला, उद्यमी, परिश्रमी, यत्नी, भारत का एक प्रान्त विशेष ।

कमाना दे० (क्रि०) प्राप्ति करना, निर्मल करना, साफ़ करना ।

कमासुत दे० (पु०) कमेरा, श्रमी, कमाने वाला, उद्यमी, साहसी ।

कमेरा दे० (पु०) मजूर, सहायक, कामकर ।

कमोदनी दे० (स्त्री०) कुमुद, कमल विशेष, यह रात को विकसित होता है ।

कमोरी दे० (स्त्री०) मटकी, गगरी, बड़ा घड़ा ।

कम्प तत्० (पु०) कपकपी, थरथराहट, गात्रादि सञ्चालन ।—ज्वर (पु०) कम्प सहित ज्वर, जिस में शरीर कांपता है ।

कम्पन तत्० (पु०) थरथर, डगडग, स्पन्दन, कांपन, चलन ।

कम्पना तद्० (क्रि०) थरथराना, कांपना ।

कम्पवायु तत्० (पु०) रोग विशेष, शरीर की अवशता ।

कम्पमान् तत्० (पु०) कम्पन युक्त, सकम्प ।

कम्पाहा दे० (पु०) थरथराहा, कम्पित ।

कम्पित तत्० (पु०) कम्पायमान, डगमगा ।

कम्प्र तत्० (पु०) कम्प युक्त, कम्प सहित ।

कम्बल तत्० (पु०) कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशाला ।

कम्बु तत्० (पु०) शङ्ख, कण्ठ, गला ।—ग्रीव (पु०) शङ्ख के समान कण्ठ वाला ।

कयरी दे० (स्त्री०) टिकोरा, अंबिया, बहुत छोटा आम ।

कर तत्० (पु०) हाथ, राजस्व, महसूल, हस्तिशुण्ड, किरण, राजधन, हस्तनक्षत्र ।

करइ दे० (क्रि०) करत , करतहम, करे, करैं, करते हैं ।

करई दे० (क्रि०) देखो करइ ।

करउ दे० (क्रि०) करो, करौ, करिये, कीजिये ।

करक दे० (स्त्री०) पीड़ा, दर्द, कड़क, रह रह कर उठने वाली पीड़ा ।

करकच दे० (पु०) लोन, लवण, निमक ।

करकचि दे० (पु०) किचकिचाहट, हड्डा गुड्डा, अपुष्ट, कोमल ।

करकरा दे० (पु०) खोटा, झूठा, कठोर, कठिन ।

करका तत्० (स्त्री०) ओला, पत्थर पड़ना, शिलावृष्टि ।

करकाना दे० (क्रि०) लचकाना, मुरकाना ।

करख तद्० (पु०) खैंच, खिचाव, हठ, अधिक द्रव्य, माप विशेष ।

करखी तद्० (क्रि०) खींची, आकर्षित की, अपनी ओर खींचती ।

करगत तत्० (पु०) हस्तगत, हाथ लगा हुआ, प्राप्त, लब्ध, हाथ में आया हुआ, हस्तनक्षत्र स्थित चन्द्रमा ।

करगदा तद्० (पु०) करधनी, कटि बन्धन ।

करग्रह तत्० (पु०) विवाह, पाणि-ग्रहण, परिणय,—तद्० कर गहना ।

करङ्क दे० (पु०) पञ्जर, पांसुरी, हड्डी।
करज तत्० (पु०) हाथ से उत्पन्न अङ्गुलियां।
करञ्ज तत्० (पु०) करिञ्जा, वृक्ष विशेष।
करट तत्० (पु०) कुकवास, गिरगिट, काक, कौआ, हाथी का गाल, कुत्सित जीवी।
करटी तत्० (पु०) रांगा, काकपत्नी।
करण तत्० (पु०) [कृ+अनट्] साधन, निर्माण, इन्द्रिय, योगियों का आसन भेद। व्याकरण का तीसरा कारक, ज्योतिष में एक प्रकार के समय विभाग को करण कहते हैं, वे करण ११ हैं, इनमें ७ सात चल और ४ स्थिर हैं, दो करण एक चन्द्र दिन के बराबर होता है।
करणी तत्० (स्त्री०) [कृ+अनट्+ई] कार्य, करणीय, बढ़ई का अस्त्र विशेष, गणित शास्त्र में वह राशि जिसका मूल निश्चित न हो।
करणीय तत्० (पु०) अवश्य कर्तव्य, कर्तव्य कर्म।
करणेच्छा तत्० (स्त्री०) [करण+इच्छा] निर्माणेच्छा, करने की इच्छा।
करण्ड तत्० (पु०) काक पक्षी, कौआ, डिब्बा, डिबिया, पेटिका।
करत् करत (क्रि०) करता है, करतही।
करतब तद्० (पु०) काम, कर्तव्य, करने योग्य काम, चाल, गुण, परख।
करतल तद्० (पु०) हस्ततल, हथेली, हाथ का तल।
करताल तद्० (पु०) एक बाजे का नाम, कठ-ताल।
करताली तद्० (स्त्री०) हाथ बजाना, हाथ बजाने का शब्द।
करतूती दे० (स्त्री०) काम, धन्धा, कर्तव्य, यथा—

"करतूती कहि देत, आप कहिये नहिं साईं"।
—उद्धृत

करतोया तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी वङ्गाल में हैं।
करदपत्र तद्० (पु०) पट्टा, राजस्व सूचक पत्र।
करदा तद्० (पु०) बदलाई, बट्टा।
करदायी तत्० (पु०) [कर+दा+णिङ्] माल-गुज़ार, शुल्कप्रद।
करधृत तत्० (पु०) करनिहित, हस्त धृत।
करना दे० (क्रि०) बनाना, रचना, सुधारना।
करपत्र तत्० (पु०) करांत, आरा, क्रकच।
करपुट तत्० (पु०) कृताञ्जलि, बद्धाञ्जलि।
करवाल तत्० (पु०) असि, खड्ग, खांडा, तलवार।
करवालिका तत्० (स्त्री०) छुरी, कटारी।
करवी दे० (स्त्री०) नारी, डांठी, जुआर या बाजरे की डांठी, पशु भक्ष्य।
करभ तत्० (पु०) ऊंट, हाथी का बच्चा।
करभूषण तत्० (पु०) कङ्कण, वलय, कड़ा, बिजा-यठ।
करम तत्० (पु०) कर्म, काम धंधा, भाग, भाग्य।
करमाला तत्० (स्त्री०) जपमाला, जप करने की छोटी माला, स्मरणी।
करलगुवा दे० (पु०) स्त्रीवश, स्त्रीजित।
करवट दे० (स्त्री०) पंसवाड़ा, पांजर, पार्श्वपरि वर्तन।
करवीर तत्० (पु०) कनेर का फूल या पेड़, कनेर का वृक्ष, पुष्प।
करशाला तत्० (स्त्री०) चुंगीघर, महसूल घर।
करसम्पुट तत्० (पु०) हाथ जोड़ना, बद्धाञ्जलि।
करसी दे० (पु०) जंगली गोईठा, गोबरी।
करहा दे० (पु०) कड़हा, कटि, कमर।
करहार तत्० (पु०) शिकाकन्द, मैनफल।
करहाटक तत्० (पु०) शिकाकन्द, मैनफल, औषधि विशेष।
करांत दे० (पु०) क्रकच, आरा, करपत्र।
करांती दे० (पु०) आरे से चीरने वाला, लकड़ी काटने वाला।
करा दे० (पु०) कड़ा, कठिन, खोटा, झूठा।
कराना दे० (क्रि०) बनवाना, करवाना, निर्माण कराना।
करायल दे० (पु०) कढ़ी, व्यञ्जन विशेष, सुगन्ध, द्रव्य विशेष।

करइहिं तद्० (क्रि०) करावेगा, करवावेगा, ।
करार दे० (पु०) करारा, किनार, ठहराव, कोल, शर्त ।
करारा दे० (पु०) कड़ारा, कठिन ।
कराल तत्० (गु०) भयङ्कर, टेढ़ा, भयानक, डरावन ।—ाकृति (स्त्री०) भयङ्कर स्वरूप, डरावनी सूरत ।
कराली तत्० (स्त्री०) भयङ्कर, कठिन, अग्नि के सप्तजिह्वाओं के अन्तर्गत जिह्वा विशेष ।
करावली तत्० (स्त्री०) किरणों का समूह ।
कराहना दे० (क्रि०) सांस भरना, दुःख करना, उसांसें लेना ।
करि तद्० (पु०) हाथी, हस्ति, रामायण में इसका प्रयोग आया है ।—कुम्भ (पु०) गजकुम्भ, हाथी का मस्तक ।—गर्जित (पु०) हाथी का गर्जन, हाथी का शब्द ।—ज (पु०) हस्ति शावक, करभ, हाथी का बच्चा ।
करिण तद्० (पु०) हाथी, शुण्डवाला ।
करणी तत्० (स्त्री०) हथिनी, करेणु ।
करिया दे० (पु०) केंवट, कर्णधार, मल्लाह, काला, श्याम, काला रंग ।
करियादः तत्० (पु०) सूस, जलहस्ति, जलजन्तु विशेष ।
करिल तद्० (पु०) नवीन पत्ते, पल्लव, अङ्कुर, कैल ।
करिष्णु तत्० (गु०) कर्तव्य, करणीय, करण शील ।
करिष्यमाण तत्० (गु०) करिष्यत्, उद्यत, यत्नवान् ।
करी तद्० (पु०) हाथी, गज, मातङ्ग ।—न्द्र (पु०) [करी+इन्द्र] प्रधान हस्ति, ऐरावत हस्ति ।
करीजै दे० (क्रि०) करिये, कीजिये, करें, करना योग्य है, करनाही चाहिये ।
करीर तत्० (पु०) वंशाङ्कुर, बांसका कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष विशेष, जिसे ऊंट खाते हैं । टेंटी का पेड़ ।
करील तद्० (पु०) देखो करीर ।
करीष तत्० (पु०) सूखा गोमय, कंडा ।
करुआई दे० (स्त्री०) कडुआपन, तिताई, तिक्तता ।
करुण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, करुणा, उचितदया, बुद्धविशेष, रसविशेष ।—विप्रलम्भ (पु०) शृङ्गार रस का भेद विशेष, नायिका और नायक में से कोई एक लोकान्तर चलजाय, परन्तु पुनः सम्मिलन की आशा हो, ऐसी अवस्था का नाम करुणविप्रलम्भ है ।
करुणा तत्० (स्त्री०) दया, कृपा, अनुग्रह अनुकम्पा, रामायण में इस के स्थान में करुना का प्रयोग प्रायः किया गया है ।—कर (पु०) दयालु, कृपाकर, दयाकर, दया की राशि ।—निधान (गु०) दयाधार, दया का आधार, सानुकम्प, अतिशयदयालु ।—रहित (गु०) करुणा शून्य, दयाशून्य ।—मय (गु०) दया के रूप, दयामय, दया करने वाला, कृपालु, दयालु । —यतन (पु०) दया के स्थान ।—ई (पु०) करुणानिधान, दयालु, करुणामय ।
करुवा तद्० (पु०) कमण्डल, करवा, कठारी, मिट्टी का कोरा बर्तन, करवा चौथ, एक पर्व या त्योहार, जो कार्तिक के महीने में होता है ।
करेकर दे० (अ०) एकत्र, बराबर, संग संग ।
करेत दे० (पु०) सर्प विशेष ।
करेणु तत्० (पु०) हाथी, गज, कर्णिकार वृक्ष ।
करेरा दे० (गु०) दृढ़, सख्त, कठोर, कड़ा ।
करेला तत्० (पु०) तरकारी विशेष ।
करैत तद्० (पु०) देखो करेत ।
करोड़ दे० (पु०) कड़ोड़, कोटि, सौ लाख १०००००००।
करोड़ा दे० (पु०) उगाहने वाला, प्रधान ।
करोनी दे० (स्त्री०) खुर्चन, दूध का जलन ।
करोरा दे० करोरी, देखो करोड़ ।
करो दे० (क्रि०) करता हूं, बनाता हूं, करूं, रचूं ।
करौंदा तद्० (पु०) करमर्दक, एक खट्टे फल का नाम ।
कर्क तत्० (पु०) गेंगरा, कांकड़ा, कर्कराशि, चतुर्थ राशि ।

कर्कट तत्० (पु०) कुलीर, केंकड़ा, चौथी राशि, नाग विशेष, पक्षि विशेष, कमल मूल, तुम्बी।

कर्कश तत्० (गु०) कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, (स्त्री०) कर्कशा। **—वाक्य** (पु०) निष्ठुर वचन, परुष वाक्य।

कर्कन्धु तत्० (पु०) बदरी वृक्ष, बेर का पेड़।

कर्चूर तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, सुगन्ध द्रव्य का भेद, सुवर्ण, कर्पुर।

कर्छनी दे० (स्त्री०) करोचनी, कुर्चनी, पाक बनाने का एक बर्तन।

कर्छा दे० (पु०) डबुआ, डब्बू, कछुल।

कर्छोल दे० (स्त्री०) कुलांच, कूद, चौकड़ी।

कर्छी दे० (स्त्री०) कर्छुली, फेटी, आंटी।

कर्छुल दे० (पु०) कर्छा।

कर्ण तत्० (पु०) कान, श्रवण, पतवार, अङ्गराज, राधेय, युधिष्ठिर का बड़ा भाई, सूर्य के औरस से कुन्ती के गर्भ में यह उत्पन्न हुआ, अपनी वीरता के कारण यह प्रसिद्ध था, इसने परशुराम से अस्त्र विद्या सीखी थी। त्रिभुज क्षेत्र में भुज और कोटि की रेखा के अतिरिक्त तीसरी रेखा का नाम, चतुष्कोण क्षेत्र में उस कोने का नाम जो सामने के कोनों से खींची हुई होती है। **—कण्डू** (पु०) कर्ण रोगविशेष, कान की खुजलाहट। **—कुहर** (पु०) कान की गोलाई, श्रवनेन्द्रिय, गोलक। **—गोचर** (पु०) श्रवणज्ञान, किसी बात को सुन लेना। **—धार** (पु०) मांझी, नाविक, नाव, चलाने वाला, पतवारदार। **—फूल** (पु०) कान का भूषण विशेष, कर्णालङ्कार, कनफूल। **—मल** (पु०) कर्ण-गूथ, कान का मैल। **—वेधन** (पु०) संस्कार विशेष, कान छेदन। **—वेष्टन** (पु०) कुण्डल, कान में पहने का गहना।

कर्णाकर्णी तत्० (स्त्री०) काना कानी, योहरन,

कर्णाट तत्० (पु०) देशविशेष, स्वनाम प्रसिद्ध देश। **—क** (पु०) कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य।

कर्णाटी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, कर्णाट देश में उत्पन्न मनुष्य या वस्तु।

कर्णानुज तत्० (पु०) कर्ण का छोटा भाई, राजा युधिष्ठिर।

कर्णाभरण तत्० (पु०) कर्णालङ्कार, कर्णभूषण, कर्ण-फूल।

कर्णिका तत्० (स्त्री०) कान का एक प्रकार का गहना, हाथी के शुण्ड का अतिशय पतला भाग, हाथ की मध्यामा अङ्गुली।

कर्णिकाचल तत्० (पु०) सुमेरु पर्वत।

कर्णिकार तत्० (पु०) वृक्ष और पुष्प विशेष।

कर्णीरथ तत्० (पु०) ओढ़ार्य छोटी गाड़ी, स्त्रियों के आने जाने के लिये पर्दादार रथ, एक्का,

कर्णीसुत तत्० (पु०) कंसराज।

कर्णेजप तत्० (पु०) पिशुन, दुर्जन, ठग, इधर की बात उधर कहने वाला।

कर्त्तन तत्० (पु०) कतरन, काटन, छाटन।

कर्त्तनी तत्० (स्त्री०) कर्त्तरी, कतरनी, कैंची।

कर्त्तव्य तत्० (पु०) करणीय, करणार्ह, करने योग्य, उपयुक्त, उचित। **—ता** (स्त्री०) उपयुक्तता, उपयुक्त।

कर्त्तरिका तत्० (स्त्री०) कैंची, काटने के लिये अस्त्र विशेष, छुरी।

कर्त्तरी तत्० (स्त्री०) काटने का अस्त्र, कैंची।

कर्त्ता तत्० (पु० प्रभु, स्वामी, अधिकारी, करने वाला, अधिपति, प्रथम कारक।

कर्तार तत्० (पु०) ईश्वर, सृष्टि करने वाला, सिरजन-हार।

कर्त्तित तत्० (गु०) काटा हुआ, छिन्न, खण्डित, काता हुआ सूत।

कर्तृकर्मभाव (पु०) कर्त्ता और कर्म का संबन्ध।

कर्तृक तत्० (गु०) कारक, साधक, कार्य, साध्य, बनाया हुआ।

कर्तृत्व (पु०) कर्ता का धर्म, प्रभुता, स्वामित्व, अधिकार।

कर्तृप्रधान तत्० (गु०) जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो, जिस वाक्य में कर्ता क्रिया के अनुसार हो।

कर्तृवाचक तत्० (गु०) कर्त्ता, कारक को कहने वाली क्रिया।

कर्दम तत्० (पु०) कांदो, कींचड़, चहला, पांक।

कर्धनी दे० (स्त्री०) कटिबन्धन, सूत या चान्दी सोने का बना हुआ कमर में पहनने का गहना।

कर्पास तत्० (पु०) कपास, रुई, बांगा।

कर्पासी तद्‌० (स्त्री०) कपड़ा, सूत, वस्त्र, सूती कपड़ा।

कर्पूर तत्० (पु०) कपूर, श्वेत वर्ण, सुगन्ध द्रव्य विशेष, चन्द्र।

कर्बुरा तद्‌० (गु०) चितकबरा चित्रविचित्र, नाना रङ्गयुक्त।

कर्म तत्० (पु०) क्रिया, भाग्य, दूसरा कारक, कार्य, प्रयोजन, व्यापार, लग्न से दशवां लग्न। —कर (गु०) जो मजूरी लेकर काम करता है। भृत्य, नौकर, समस्त काम करने वाला। (स्त्री०)—करी।—काण्ड (पु०) संस्कार विशेष, जप यज्ञ होम आदि, वेद का एक अङ्ग जिसमें कर्म करने की विधि लिखी है। —कार (पु०) जाति विशेष, शूद्रा के गर्भ और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न एक जाति, लोहार, कर्मचारी, बेगार।—कारक (पु०) दूसरा कारक, कर्ता के व्यापार से जिसको लाभ पहुंचे।—च्युत (गु०) काम से बाहर किया हुआ, कर्मभ्रष्ट, पदच्युत।

कर्मनाशा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, जो चौसा के पास है, कहते हैं कि उसके जलस्पर्श से मनुष्य के धर्म नष्ट हो जाते हैं।

कर्म निपुणाई तद्‌० (स्त्री०) कर्मकुशलता, कर्म करने की चतुराई।

कर्मपथ तत्० (पु०) कर्म मार्ग, वेद की रीति, अपना उद्देश्य।

कर्मप्रधान तत्० (पु०) जहां कर्म की प्रधानता हो, कर्मवाच्य क्रिया।

कर्मफल तत्० (पु०) कर्मों का फल, कर्मविपाक, सुख दुःख।

कर्मभूमि तत्० (स्त्री०) आर्यावर्त, भारतवर्ष, जहां कर्म करने से विशेष फल हो।

कर्मभोग तत्० (पु०) प्रारब्ध का भोग, कर्म से उत्पन्न फलों का भोग, तपस्या, दुःख, मची-विशेष।

कर्ममूल तत्० (पु०) कर्मों की जड़, कुश, कर्म को पहिली अवस्था।

कर्मयुग तत्० (पु०) कलियुग, चौथायुग, शेषयुग।

कर्मरङ्ग तत्० (पु०) कमरख, फल विशेष।

कर्मवाचक तत्० (पु०) कर्म की प्रधानता सूचक क्रिया विशेष।

कर्मविपाक तत्० (पु०) कर्म का फल, दुःख सुख, कर्मफल बताने वाले एक ग्रन्थ का नाम।

कर्मशील तत्० (गु०) स्वभाव ही से कर्मकरने वाला, उत्साही, उद्यमी, परिश्रमी।

कर्मशूर तत्० (गु०) कर्मठ, कर्मनिपुण, कर्मदक्ष।

कर्मसचिव तत्० (पु०) काम करने में उपयोगी, मन्त्री, अमात्य, दीवान।

कर्मसंन्यास तत्० (पु०) कर्मों का फल त्याग, निष्काम कर्म।

कर्मसमाधि तत्० (पु०) कामों से विरक्ति, किसी काम को नहीं करना।

कर्मसाक्षी (पु०) सूर्य, दुष्कर्म सुकर्म के द्रष्टा।

कर्मसाधन तत्० (पु०) कार्य सम्पादन, कर्मसिद्ध करने का उद्योग।

कर्माधर्मी तद्‌० (गु०) जपतपिया, भाग्यवान्, स्वधर्मनिष्ठ, स्वकर्मनिरत।

कर्मार तत्० (पु०) कर्मकार, लौहकार, बंश, बांस, कमरख, फल विशेष।

कर्मिष्ठ तत्० (गु०) कर्मप्रवीण, वैदिक कर्म करने वाला, कर्मकाण्डी।

कर्मी तत्० (गु०) कर्मसंसक्त, कर्म करनेवाला, कामक.ज़ु, शुभ कर्म युक्त, भाग्यवान्, कर्मनिष्ठ।

कर्मेन्द्रिय तत्० (पु०) कर्मसम्पादन करनेवाली पांच इन्द्रियां, यथा—वाक्, पाणि, वायु, पाद, और उपस्थ।

कर्ष तत्० (पु०) सोलह मासे की तौल, अस्सी रत्ती, खींचना, खेती, विरोध, ईर्षा, यथा,

"बातहि बात कर्ष बढ़िआवा"।

—(रामायण)

कर्षक तत्० (पु०) किसान, हरजोता, खेत करने वाला, कृषिजीवी, खींचने वाला।

कर्षण तत्० (पु०) [कृष्+अनट्] खेंच, टान, जोतना, कृषिकर्म, चास।

कर्षणी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अंकुशी, वंशी, आकर्षणी।

कर्षणीय तत्० (गु०) [कृष्+अनीय] कर्षण करने योग्य, जोतने योग्य खेत, खींचने योग्य।

कर्षफला तत्० (स्त्री०) [कर्ष+फल्+इ] आमलकी वृक्ष, बहेड़ा।

कर्षा दे० (पु०) ईर्षा, उत्साह, विरोध, क्रोध।

कर्हिचित् तत्० (अ०) किसी क्षण, किसी समय, कदाचित्, अनियमित काल में, अनिर्दिष्ट काल में।

कल तत्० (पु०) गम्भीर और मधुर शब्द, अव्यक्त ध्वनि, प्रिय, सुन्दर। दे० व्यतीत या आगामी दिन, सुस्थता, आराम, सुखशान्ति। अङ्कुर, यन्त्र।

कलकण्ठ तत्० (पु०) हंस, कबूतर, कोकिल, कोइल, मधुरस्वर युक्त।

कलकल तत्० (पु०) [कल+कल+अल्] अस्फुट शब्द, कोलाहल।

कलकी तद्० (पु०) भगवान के अवतारों में से दसवां अवतार, भावी भगवान् का अवतार।

कलगी दे० (पु०) कलङ्गी, चूड़ा, शेखर, पगड़ी या मुकुट में लगाने का एक आभूषण विशेष।

कलङ्क तत्० (पु०) अपवाद, अपयश, दुष्कीर्ति, दाग, चिन्ह, दोष, मिथ्या अपराध।

कलङ्की तत्० (गु०) दोषी, पापी, अपराधी, (स्त्री०) कलङ्किनी।

कलजहंवा दे० (गु०) कमूटा, कलछाट।

कलजिन तत्० (गु०) द्वेषी, हिंसक, दुर्जन, पापी, पापात्मा, कालजिह्वा।

कलञ्ज तत्० (पु०) [कलं+जन्+ड] विषग्रस्त बाण से हत पशु पक्षी आदि, मूल विशेष।

कलत्र तत्० (पु०) [कल+त्र] भार्या, स्त्री, नितम्ब, किला, दुर्ग।—लाभ (पु०) पत्नी लाभ, भार्याप्राप्ति, विवाह।

कलधौत तत्० (पु०) सोना, चांदी, सुवर्ण, रजत मधुर शब्द।

कलध्वनि तत्० (पु०) कबूतर, कोइल, अस्पष्ट मधुर शब्द।

कलन्दर तत्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष।

कलप तद्० (पु०) कल्प, ब्रह्मा का दिन, कल्पना रचना, सामर्थ्य, युगान्त, बाल काले करने का मसाला।

कलपना दे० (क्रि०) अनुताप करना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, कुढ़ना।

कलपाना दे० (क्रि०) दुःखित करना, कुढ़ाना।

कलपित तद्० (गु०) कल्पित, मिथ्या रचित कृत्रिम, मूल शून्य विचार।

कलपतरु तद्० (पु०) कल्प वृक्ष, देवताओं का वृक्ष, मनोरथ सिद्ध करने वाला वृक्ष।

कलपांत तद्० (पु०) कल्पान्त, कल्प की समाप्ति युगान्त।

कलभ तत्० (पु०) करभ, हस्तिशावक, हाथी या ऊँट का बच्चा।

कलम तत्० (पु०) स्वनाम ख्यात लिखने की वस्तु, लेखनी, धान्य विशेष, साठी धान। —तराश कलम बनाने की छुरी।—दान मसी और कलम रखने की पेटिका।

कलमकल दे० (स्त्री०) घबराहट, दुःख।

कलमलाना दे० (क्रि०) छटपटाना, कुलबुलाना, चञ्चलता प्रकाश करना।

कलमले दे० (क्रि०) चञ्चल हुए, छटपटाये।

कलमी दे० (स्त्री०) फूलों का थारा, वे फल जो दो वृक्षों के संयोग से उत्पन्न किये जाते हैं।

कलरव तत्० (पु०) मधुर और अस्फुट शब्द, जनसमूह का शब्द।

कलल तत्० (पु०) गर्भ को आच्छादन करने वाला चर्म, जरायु।

कलवल दे० (स्त्री०) विपद, आपद, झकोर।

कलवार दे० (पु०) जातिविशेष, मद्य कहने वाली जाति, शुंडी, कल्पाल, कलार।

कलविङ्क तत्० (पु०) पक्षि विशेष, गुंला, पाक।

कलश तद्० (पु०) घट, घड़ा, गगरी, मिट्टी का जलपात्र ।

कलशी तद्० (स्त्री०) छोटा जलपात्र, गगरी, घैली ।

कलस तद्० (पु०) घट, घड़ा, परिमाण विशेष, मन्दिर आदि का मुकुट ।

कलसा तद्० (पु०) शिखर, शृङ्ग, चूड़ा ।

कलसिरा दे० (पु०) कृष्ण मस्तक विशेष, काले सिर वाला ।

कलहंस तद्० (पु०) हंस विशेष, राजहंस ।

कलह तद्० (पु०) [कल्+हन्+ड] विरोध, विवाद, झगड़ा, द्वन्द्व ।—कारी (पु०) विवाद करने वाला, झगड़ालू ।—प्रिय (पु०) विवाद प्रिय, विवादसन्तोषी ।

कलहान्तरिता तद्० (स्त्री०) [कलह+अन्तरित+आ] नायिका विशेष, जो स्त्री पहले अपने पति का अपमान करती है, और पीछे उसके चले जाने पर दुःखित होती है, यथा ।

"कह्यो न माने कंत को, पुनि पीछे पछताय"
कलहान्तरिता नायिका ताहि कहत कविराय"
—मतिराम

कलहारा तद्० (पु०) लड़ाका, झगड़ालू, कलहप्रिय ।

कलही तद्० (पु०) कलिप्रिय, विरोध करने वाला, (स्त्री०) झगड़ा करने वाली स्त्री ।

कला तद्० (स्त्री०) चन्द्रमा का सोलहवां भाग, अंश, भाग, हिस्सा, राशिचक्र का अत्यन्त सूक्ष्मभाग, एक राशि के तीस भाग होते हैं, उनमें एक भाग का साठवां भाग, समय का परिमाण । शिल्प आदि विद्या, इसके चौसठ भेद होते हैं । वे ये हैं । (१)—गीत (पु०) गाना, यह चार प्रकार का होता है, स्वरग, पदग, लयग और अवधानग । (२) —वाद्य वाजन, इसके अनेक भेद हैं । (३) —नृत्य नाच, प्रधानतः इसके दो भेद हैं । नाट्य जहाँ अनुकरण, किसी के कार्यों का अनुकरण कर्मभोग नाट्य है और केवल भाव बताना तथा उत्पन्न ... करना अनाट्य है । (४)—आलेख्य विशेष । और, इसके छः अङ्ग होते हैं :—रूप भेद, प्रमाण, भाव और सुन्दरता की योजना, जिसका चित्र हो उससे मिलान, लिखने की विशेषता, और रङ्गों का यथास्थान सन्निवेश । यह अन्य और अपने चित्त विनोद के लिये बनाया जाता है । (५) —विशेषकच्छेद्य मस्तक में तिलक लगाने के लिये भूर्जपत्र आदि का विविध प्रकार के सांचे बनाना । (६)—तण्डुल कुसुमवलि विकार बिना टूटे हुए चावलों से अनेक प्रकार की देवमन्दिर में सांची काढ़ना, और फूलों के सन्निवेशविशेष से विविध वस्तु बनाना । (७)—पुष्पास्तरण जो अनेक प्रकार के पुष्पों से वस्तु बनायी जाती है, जिसे पुष्पशय्या भी कहते हैं । (८)—दशनवसनाङ्गराग दांत, कपड़े, और शरीर रंगने की विधि । (९) —मणिभूमिकाकर्म ग्रीष्मकाल में सोने रहने के लिये स्थान बनाना । (१०)—शयनरचन शय्या बिछाना, इसमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि जिस पर सोने से अन्न पच जाय । (११)—उदकवाद्य जलमें मृदङ्ग आदि के समान ध्वनि निकालना, जलतरङ्ग बजाना । (१२)—उदकाघात हाथ या यन्त्र-कल से जल फेंक कर मारना । (१३)—चित्रयोग प्राकृतिक बातों में विशेषता उत्पन्न करना, काले बाल को सफेद, या सफेद को काला करना, आदि । (१४)—माल्यग्रन्थनविकल्प माला गूथने के अनेक प्रकार की रीति । (१५)—शेखरकापीडयोजन सिर के आगे की ओर लटकने वाले फूलों से बने हुए एक प्रकार के गहने को शेखरक कहते हैं । चोटी के चारों ओर गोलाकार फूलों की माला को आपीड़ कहते हैं । इन दोनों को विविध वर्ण के पुष्पों से बनाना, और यथास्थान पहिनना । (१६)—नेपथ्यप्रयोग देश काल के अनुसार वस्त्र, आभूषण आदि से अपने शरीर को सजाना । (१७)—कर्णपत्रभङ्ग हाथीदाँत और शङ्ख आदि के गहने बनाना । (१८)—गन्धयुक्ति सुगन्ध पदार्थ बनाने की रीति । (१९)—अलङ्कारयोग संयोग्य और असंयोग्य दो प्रकार के अलङ्कार होते हैं । जिनका

संयोग किया जाय—कण्ठी, कण्ठा, चंपाकली आदि संयोज्य हैं। कड़ा, कुण्डल आदि असंयोज्य हैं। इनके बनाने की प्रक्रिया। (२०)—**ऐन्द्रजाल** इन्द्रजाल आदि शास्त्रों के बताये हुए कर्म, अद्भुत कर्म दिखाना। (२१)—**कौचुमारयोग**, सुन्दर बनने और बनाने की रीति। (२२)—**हस्तलाघव** सभी कामों में शीघ्रता। (२३)—**विचित्रशाकयूपभक्ष्यविकारक्रिया** अनेक प्रकार के शाक, यूप-पेय भक्ष्य बनाने की प्रक्रिया। आहार बनाना। (२४)—**पानकरसरागासवयोजन** विविध प्रकार के शर्बत, आसव, अर्क, आदि बनाना। (२५)—**सूचीवानकर्म** इस के सीवन, ऊतन, और विरचन ये तीन भेद हैं। अंगरखा, कोट, कमीज़, कुरता, आदि का सीना सीवन है। फटे कपड़ों का सीना ऊतन और कँथड़ी आदि सीना विरचन है। (२६)—**सूत्रक्रीड़ा** एक ही सूत को अनेक प्रकार का दिखाना। (२७)—**वीणाडमरुकवाद्य** वीणा और डमरू बजाना, यद्यपि ये भी वाद्य हैं, तथापि इनमें अधिक कठिनता होने के कारण ये अलग कहे गये हैं। (२८)—**प्रहेलिका** विनोद के लिये पहेलियां, ये प्रसिद्ध हैं। (२९)—**प्रतिमाला** इसे अन्त्याक्षरिका भी कहते हैं। एक प्रकार का शास्त्रार्थ, क्रम से एक के कहे हुए श्लोक के अन्तिमाक्षर जिस श्लोक के आदि में हो उसको कहना। (३०)—**दुर्वाचकयोग** उच्चारण और अर्थ में कठिन शब्दों का प्रयोग करना, जिसे कूट कहते हैं। (३१)—**पुस्तकवाचन** महाभारत आदि को स्वर लय के साथ गाना। (३२)—**नाटकाख्यायिकादर्शन** नाटक और आख्यायिका का ज्ञान प्राप्त करना। (३३)—**काव्यसमस्यापूरण** सामान्य अभिप्राय जान कर कविता बनाना, या कठिन अभिप्राय समझ कर श्लोक बना देना। त्रिपद समस्या मूँक समस्या आदि इसके अनेक भेद हैं। (३४)—**पट्टिकावानविकल्प** पलङ्ग, कुर्सी आदि को बेत या और किसी वस्तु से अनेक प्रकार का बुनना। (३५)—**तक्षकर्म** बिगड़ी हुई चीज़ों को सुधारना। (३६)—**तक्षण** बढ़ई के काम। (३७)—**वास्तुविद्या** गृह बनाने और सजाने की रीति। (३८)—**रूप्यरत्नपरीक्षा** सोना, चांदी, हीरा, आदि का परखना। (३९)।—**धातुवाद** मिट्टी, पत्थर, रत्न तथा अन्यान्य धातुओं को पृथक् करने, शोधन करने और मिलाने आदि की विद्या। (४०)—**मणिरागाकरज्ञान** हीरा, आदि रत्नों को रँगने की विद्या, इन मणियों के उत्पत्तिस्थान का ज्ञान करना। (४०)—**वृक्षायुर्वेदयोग** वृक्षों का रोपना, बढ़ाना, उनके दोषों को हटाना और कलम आदि करने की विधि। (४२)—**मेषलावककुक्कुटयुद्धविधि** मेढ़ा, लावा, और कुक्कुट—मुर्ग़—के युद्ध की प्रक्रिया, इसे सजीवद्यूत कहते हैं, यह किसी प्रकार के ठहराव से किया जाता है। (४३)—**शुकसारिकाप्रलापन** शुक, सारिका को पढ़ाना, ये पढ़ाने पर मनुष्य भाषा में बोलते हैं। (४४)—**उत्सादन** शरीर दबाना और तेल लगाना। (४५)—**अक्षरमुष्टिकाकथन** गुप्तबात को कहने के लिये, संक्षेप में कहना। (४६)—**म्लेच्छितविकल्प** शुद्ध शब्दों में लिखी हुई भी बात को अक्षरों के उलटने पलटने से अर्थ समझना, या साङ्केतिक शब्दों का अर्थ समझना। (४७)—**देशभाषाविज्ञान** अन्य देशियों के साथ व्यवहार करने के लिये उनकी भाषा जानना। (४८)—**पुष्पशकटिका** पुष्पों से निर्मित छोटी गाड़ी। (४९)।—**निमित्तज्ञान** प्राकृतिक लक्षणों से, अथवा पशुओं की चेष्टा बोलने आदि से भावी शुभाशुभ फल जानना। (५०)—**यन्त्रमन्त्रिका** गमन वृष्टि लड़ाई आदि के लिये सजीव या निर्जीव यन्त्रों के लक्षण बताने वाला शास्त्र, जिसे विश्वकर्मा ने बनाया है। (५१)—**धारणमात्रिका** पढ़े हुए ग्रन्थों को स्मरण रखने के शास्त्र। (५२)—**संपाद्य** बिना सुनी हुई बात को उसके जाननेवाले के साथ पढ़ना। (५३)—**मानसी** मन की बातें जानने की विद्या। (५४)—**काव्यक्रिया** संस्कृत, प्राकृत,

अपभ्रंश आदि भाषाओं में कविता करना। (५५)—अभिधानकोष शब्दों का अर्थ निरूपण करना। (५६)—छन्दोज्ञान छन्द बताने वाले शास्त्रों का ज्ञान। (५७)—क्रियाकल्प काव्य बनाने की विधि। (५८)—छलित दूसरों को ठगने के उपाय। (५९)—वस्त्र-गोपन अच्छे प्रकार से वस्त्र पहिनना, फटे हुए कपड़े को भी ऐसा पहनना जिससे उसका फटना मालुम न पड़े, बड़े वस्त्र को भी पहन कर छोटा बना लेना। (६०)—द्यूतविशेष निर्जीव द्यूत खेलना। (६१)—आकर्षक्रीड़ा पासे का खेल, चौपड़। (६२)—बालक्रीडनक गुड़िया आदि के द्वारा लड़कों को प्रसन्न रखना। (६३)—वैनयिकी स्वयं नम्र होना और दूसरे को नम्र होने की शिक्षादेना, घोड़े और हाथियों को चाल सिखाना। (६४)—वैजयिकी व्यायामिकी विजय प्राप्त करने और व्यायाम करने की विद्या। येही चौंसठ कलायें हैं।

कलाई दे० (स्त्री०) पहुंचा।

कलाकन्द दे० (पु०) मिष्टान्न विशेष, बरफ़ी।

कलाकर तत्० (पु०) चन्द्रमा।

कलाधर तत्० (पु०) चन्द्रमा, सूर्य।

कलाना दे० (क्रि०) भूनना, झकोराना।

कलानिधि तत्० (पु०) चन्द्रमा।

कलाप तत्० (पु०) [कल+पा+ड्] समूह, ढेर, राशि, प्रचलित संस्कृत व्याकरणों में से एक व्याकरण।—क (पु०) कविताओं के अर्थ करने की रीति, चार श्लोकों का एक साथ अन्वय। मोर, मयूर।

कलापी तत्० (पु०) मयूर पक्षी।

कलापूर्ण तत्० (पु०) पूर्णिमा का चन्द्रमा, प्रसिद्ध शिल्पी।

कलाबत्तू दे० (पु०) सोना चांदी का पतला तार।

कलार दे० (पु०) जाति विशेष, कलवार, शुण्डी।

कालाल दे० देखो कलार।

कलारिन दे० (स्त्री०) कलवारी, कलवार की स्त्री।

कलावन्त तत्० (पु०) कथक, गायक, गानेवाला, गीत नृत्य से जीविका करने वाली जाति।

कलालाप तत्० (पु०) [कला+आलाप] भ्रमर, अव्यक्त मधुर ध्वनि।

कलि तत्० (पु०) [कल्+इ] चौथा युग, कलह, बिना खिले फूल।—काल (पु०) कलियुग।

कलिका तत्० (स्त्री०) [कलिक+आ] कौंढ़ी, अविकसित पुष्प, कोंपल, टूसी, फुनगी।

कलिङ्ग तत्० (पु०) देश विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी नदी के मुहाने पर है। इस देश की राजधानी का नाम कलिङ्ग नगर है।

कलिञ्जर तत्० (पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत पुराण प्रसिद्ध है, आज भी, यह अपने पुराने नाम से विख्यात है, यह बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत करवी के पास है।

कलियाना (क्रि०) कुसुमित होना, पुष्पियात होना, फूलना, खिलना।

कलियुग तत्० (पु०) कर्मयुग, चौथायुग।

कली तत्० (स्त्री०) कलिका, कौंढ़ी, अर्द्धविकसित पुष्प, यथा—।

"अलि कलीहिं पै लगें आगे कौन हवाल"
(विहारी सत्सई)

कलुष तत्० (पु०) समल, आविल, मलसहित, पाप, गँदला।

कलुषित तत्० (गु०) मलदूषित, पापग्रस्त, मल-पूर्ण, पातकी, दुष्कृती।

कलूटा दे० (गु०) काला, कुरूप, कटांहा।

कलेऊ तत्० (पु०) बासी भात, प्रातःकाल का भोजन, जलपान, बासी खाना।

कलेजा दे० (पु०) आंत विशेष, यकृत्, उत्साह, साहस, हृदय की दृढ़ता।—उलाटना अधिक कै करना।—फटना अधिक दुःख से व्याकुल होना।—ठण्ढाकरना मनोरथ सिद्धि, अभिलाषा की पूर्ति।—जलना दुःखी होना, दूसरे की उन्नति न सहना, अनुताप करना।—कांपना भयभीत होना।—पर सांप लोटना अनुताप

होना।—से लगा रखना अत्यन्त प्रेम करना। —में डाल रखना बहुत चाहना, अधिक प्रेम।

कलेवर तत्० (पु०) देह, शरीर, काय, अङ्ग।

कलेवा तद्० (पु०) प्रातःकाल का जलपान, विवाह की एक रीति।

कलेश तद्० (अ०) (पु०) क्लेश, दुःख, कष्ट, आपत्ति, विपद।

कलोर दे० (पु०) नयी गाय, ओसर।

कलोल तद्० (पु०) खेलकूद, क्रीड़ा, कल्लोल, विनोद।

कलोलिनी तद्० (स्त्री०) प्रवाह से बहने वाली नदिया, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी।

कलौंजी दे० ओषधि विशेष, मँगरेला।

कल्क तत्० (पु०) विष्ठा, मल, कीट, तलछट।

कल्की तत्० (पु०) विष्णु का दसवां अवतार, कलियुग में होने वाला अवतार, (गु०) पापी, अपराधी।

कल्प तत्० (पु०) [क्लृप्+अल्] उपाय, अभिप्राय, विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, कर्मकाण्ड।—क (पु०) काटने वाला, कल्पना करने वाला।- तरु (पु०) देव वृक्ष, कल्पवृक्ष, दाता।—द्रुम (पु०) अभिलषित फल देने वाला, सुर द्रुम।—पादप (पु०) कल्पवृक्ष। —सूत्र (पु०) वैदिक कर्म काण्ड, सृष्टि के आरम्भ का समय। ान्त (पु०) [कल्प+अन्त] ब्रह्मा का दिनावसान, युगान्त, प्रलय काल, संहार काल।—न्तस्थायी (गु०) नित्य स्थायी, अक्षय।

कल्पित तत्० (गु०) [क्लृप्+क्त] रचित, आरोपित, कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत।—र्घ (गु०) [कल्पित+अर्घ] अर्पित, प्रतिपादित।

कल्मलाना दे० (क्रि०) कुलबुलाना, फड़कना।

कल्मष तत्० (पु०) पाप, अधर्म, अपराध, नरक विशेष।

कल्माष तत्० (पु०) [कल्+मष्+घञ्] कर्बुरवर्ण, रङ्ग बिरङ्गा।

कल्य तत्० (पु०) [कल् +य] प्रातःकाल, प्रत्यूष, आने वाला दिन या व्यतीत दिन।

कल्याण तत्० (पु०) कुशल, मङ्गल, शुभ।

कल्याणवर्मन् तत्० (पु०) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और देवग्राम के रहने वाले बघेल क्षत्रिय थे, इनका बनाया सारावली नामक एक ज्योतिष का ग्रन्थ विद्यमान है। यह प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहर के समकालीन थे, ऐसा विद्वानों का अनुमान है। म-म- सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है।

कल्ल तद्० (गु०) बधिर, श्रवणेन्द्रिय रहित, बहरा।

कल्लर दे० (पु०) ऊसर, क्षारभूमि, खार।

कल्ला दे० (पु०) घेटुआ, गला, छलकारी, मायावी, प्रतारक, दुष्ट, ठग, जबड़ा।

कल्लाना दे० (क्रि०) जलन, दहन, तपाना, जलन पड़ना, पीड़ा होना।

कल्लापरवर दे० (पु०) भुंजा, मिठाई, चबेना।

कल्लोल तत्० (पु०) महातरङ्ग बड़ी लहर, गर्जन।

कल्लोलिनी तत्० (स्त्री०) तरङ्ग वाली नदी, धारा के साथ बहने वाली नदी।

कल्ह तद्० (अ०) कल्य, आगामी या अतीत दिन। यह शब्द अतीत या अगले आने वाले दिन के अर्थ में प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग से जानी जाती है।

कल्हण तत्० (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, यह काश्मीर निवासी थे, और महाराजा जयसिंह के समय में विद्यमान थे, इन्होंने काश्मीर के राजाओं का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी है। राजतरङ्गिणी से ११४८ ई० कल्हण का समय निश्चित किया जाता है।

कवच तत्० (पु०) सन्नाह, बख्तर, वर्म, झिलम।

कवयी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष।

कवर्ग तत्० (पु०) ककारादि पांच अक्षर, क, ख, ग, घ, ङ।

कवल तत्० (पु०) ग्रास, कौर।

कवलित तत्० (गु०) [कवल+क्त] ग्रसित भुक्त, खादित।

कवलीकृत तत्० (गु०) अधीनी कृत, ग्रसित, भुक्त।

कवि तत्० (पु०) [कव्+इन्] कविता करने वाला, काव्यकर्ता, ब्रह्मा व्यास वाल्मीकि आदि, पण्डित।—ता कवित्त, पद्य, श्लोक, छन्द, हृदय के भावों का लौकिक पदार्थों के साथ मिलान करके नियमित छन्द में प्रकाशित करना, शुक्राचार्य।

कविका तत्० (स्त्री०) [कविका+अ] खलीन, लगाम, घोड़े की रास।

कवित्त तद्० (पु०) कविता, कवित्व, काव्य, छन्दो विशेष।

कविताई दे० (स्त्री०) पद्य, पद्य रचना, काव्य।

कविनासा तद्० (स्त्री०) कर्मनासा नदी, इसका प्रयोग रामायण में किया गया है।

कविमाता तत्० (स्त्री०) शुक्राचार्य की माता, काश्मीर की भूमि।

कविराज तत्० (पु०) प्रधान कवि, एक संस्कृत कवि का नाम। बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन की सभा में ये सभा पण्डित थे। अतएव इनका समय भी लक्ष्मण सेन का ही समय मानना उचित है, लक्ष्मण सेन का समय १११६ ई० निश्चित हुआ है। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम राघवपाण्डवीय है। इसमें रामायण और महाभारत की कथा साथ ही साथ लिखी गयी है।

कशर दे० (पु०) वृक्ष विशेष, कचनार।

कशा तत्० (स्त्री०) [कश्+ङ्] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोड़ा, सौंटी।—घात (पु०) कशा प्रहार, कोड़ा मारना।—र्ह (गु०) [कशा+अर्ह] कशाघात योग्य, कोड़ा मारने के उपयुक्त, अपराधी, दोषी।

कशेरू तत्० (पु०) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का कन्द, तृण कन्द।

कश्चित् तत्० (अ०) कोई, अनिर्दिष्ट मनुष्य।

कश्मल तत्० (पु०) मूर्च्छा, अचैतन्य, पाप।

कश्मीर तत्० (पु०) देश विशेष, काश्मीर।

कश्य तत्० (गु०) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने योग्य, घोड़े का तङ्ग।

कश्यप तत्० (पु०) एक मुनि का नाम, यह महर्षि मरीच के पुत्र थे, देवता दानव मनुष्य आदि इन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। आदिति और दिति दो इनकी स्त्रियां थीं।

कश्यपमेरु तत् (पु०) एक पर्वत और देश का नाम, उसी पर्वत पर बसने के कारण काश्मीर को कश्यपमेरु भी कहते हैं।

कष तत्० (पु०) [कष्+अल्] सोने चांदी की परीक्षा करने का पत्थर, कसौटी, शान, निकष, परखने वाली वस्तु।

कषण तत्० (पु०) परखना, परीक्षा, जांच, खींचना, आकर्षण, तर्जन।

कषा तत्० (स्त्री०) चाबुक, कोड़ा, कसौंव, कषाय।

कषाय तत्० (पु०) कषैला, कसाव, क्वाथ, काढ़ा।

कषौटी दे० (स्त्री०) धातु परीक्षा करने का पत्थर।

कष्ट तत्० (पु०) [कष्+क्त] पीड़ा, क्लेश, कृच्छ्र, विपद्।—कर (गु०) कष्टदायक, पीड़ा देने वाला।—कल्पना (स्त्री०) मिथ्या रचना, निष्प्रयोजन कल्पना।—साध्य (गु०) दुःसाध्य, कष्ट से साधन करने योग्य।

कष्टित तत्० (गु०) [कष्ट+इत्] दुःखित, पीड़ित, कष्ट युक्त।

कस दे० (अ०) कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अव्यय।

कसक दे० (पु०) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा होना, फटना, (क्रि०) कसकना, दरकना, फटना, पीड़ा होना।

कसकसा दे० (गु०) किरकिरापन, ककरीलापन स्वाद रहित।

कसन दे० (पु०) डाढ़ी बान्धना, यन्त्रणा, वेदना, दुःख।

कसना दे० (क्रि०) बाँधना, खींचना, परखना, जांचना, तलना, भूनना, परीक्षा करना।

कसमसाना दे० (क्रि०) कसमस करना, शरीर मरोड़ना, जंभाई लेना।

होना।—से लगा रखना अत्यन्त प्रेम करना। —में डाल रखना बहुत चाहना, अधिक प्रेम।

कलेवर तत्० (पु०) देह, शरीर, काय, अङ्ग।

कलेवा तद्० (पु०) प्रातःकाल का जलपान, विवाह की एक रीति।

कलेश तद्० (अ०) (पु०) क्लेश, दुःख, कष्ट, आपत्ति, विपद।

कलोर दे० (पु०) नयी गाय, ओसर।

कलोल तद्० (पु०) खेलकूद, क्रीड़ा, कल्लोल, विनोद।

कलोलिनी तद्० (स्त्री०) प्रवाह से बहने वाली नदियां, तरङ्गिणी, खेलने वाली नदी।

कलौंजी दे० ओषधि विशेष, मँगरेला।

कल्क तत्० (पु०) विष्ठा, मल, कीट, तलछट।

कल्की तत्० (पु०) विष्णु का दसवां अवतार, कलियुग में होने वाला अवतार, (गु०) पापी, अपराधी।

कल्प तत्० (पु०) [क्लृप्+अल्] उपाय, अभिप्राय, विधि, प्रलय, ब्रह्मा का दिन, शास्त्र विशेष, कर्मकाण्ड।—क (पु०) काटने वाला, कल्पना करने वाला। तरु (पु०) देव वृक्ष, कल्पवृक्ष, दाता।—द्रुम (पु०) अभिलषित फल देने वाला, सुर द्रुम।—पादप (पु०) कल्पवृक्ष। —सूत्र (पु०) वैदिक कर्म काण्ड, सृष्टि के आरम्भ का समय। न्त (पु०) [कल्प+अन्त] ब्रह्मा का दिनावसान, युगान्त, प्रलय काल, संहार काल।—न्तस्थायी (गु०) नित्य स्थायी, अक्षय।

कल्पित तत्० (गु०) [क्लृप्+क्त] रचित, आरोपित, कृत्रिम, मिथ्या प्रकाशित, कल्पना सम्भूत।—र्घ (गु०) [कल्पित+अर्ध] अर्पित, प्रतिपादित।

कल्मलाना दे० (क्रि०) कुलबुलाना, फड़कना।

कल्मष तत्० (पु०) पाप, अधर्म, अपराध, नरक विशेष।

कल्माष तत्० (पु०) [कल्+मष्+घञ्] कर्बुरवर्ण, रङ्ग बिरङ्गा।

कल्य तत्० (पु०) [कल् +य] प्रातःकाल, प्रत्यूष, आने वाला दिन या व्यतीत दिन।

कल्याण तत्० (पु०) कुशल, मङ्गल, शुभ।

कल्याणवर्मन् तत्० (पु०) यह एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे और देवग्राम के रहने वाले बघेल क्षत्रिय थे, इनका बनाया सारावली नामक एक ज्योतिष का ग्रन्थ विद्यमान है। यह प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर के समकालीन थे, ऐसा विद्वानों का अनुमान है। म-म- सुधाकर द्विवेदी जी के मतानुसार इनका समय सन् ५७८ ई० अनुमान होता है।

कल्ल तद्० (गु०) बधिर, श्रवणेन्द्रिय रहित, बहरा।

कल्लर दे० (पु०) ऊसर, क्षारभूमि, खार।

कल्ला दे० (पु०) घेटुवा, गला, छलकारी, मायावी, प्रतारक, दुष्ट, ठग, जबड़ा।

कल्लाना दे० (क्रि०) जलन, दहन, तपाना, जलन पड़ना, पीड़ा होना।

कल्लापरवर दे० (पु०) भुंजा, मिठाई, चबेना।

कल्लोल तत्० (पु०) महातरङ्ग बड़ी लहर, गर्जन।

कल्लोलिनी तत्० (स्त्री०) तरङ्ग वाली नदी, धारा के साथ बहने वाली नदी।

कल्ह तद्० (अ०) कल्य, आगामी या अतीत दिन। यह शब्द अतीत या अगले आने वाले दिन के अर्थ में प्रयोग किया गया है, यह बात प्रसङ्ग से जानी जाती है।

कल्हण तत्० (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, यह काश्मीर निवासी थे, और महाराजा जयसिंह के समय में विद्यमान थे, इन्होंने काश्मीर के राजाओं का इतिहास लिखा है, जिसका नाम राजतरङ्गिणी है। राजतरङ्गिणी से ११४८ ई० कल्हण का समय निश्चित किया जाता है।

कवच तत्० (पु०) सन्नाह, बखतर, वर्म, झिलम।

कवयी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष।

कवर्ग तत्० (पु०) ककारादि पांच अक्षर, क, ख, ग, घ, ङ।

कवल तत्० (पु०) ग्रास, कौर ।

कवलित तत्० (पु०) [कवल+क्त] ग्रसित भुक्त, खादित ।

कवलीकृत तत्० (पु०) अधीनी कृत, ग्रसित, भुक्त ।

कवि तत्० (पु०) [कव्+इन्] कविता करने वाला, काव्यकर्ता, ब्रह्मा व्यास वाल्मीकि आदि, पण्डित ।—ता कवित्त, पद्य, श्लोक, छन्द, हृदय के भावोंको लौकिक पदार्थों के साथ मिलान करके नियमित छन्द में प्रकाशित करना, शुक्राचार्य ।

कविका तत्० (स्त्री०) [कविका+अ] खलीन, लगाम, घोड़े की रास ।

कवित्त तद्० (पु०) कविता, कवित्व, काव्य, छन्दो विशेष ।

कविताई दे० (स्त्री०) पद्य, पद्य रचना, काव्य ।

कविनासा तद्० (स्त्री०) कर्मनासा नदी, इसका प्रयोग रामायण में किया गया है ।

कविमाता तत्० (स्त्री०) शुक्राचार्य की माता, काश्मीर की भूमि ।

कविराज तत्० (पु०) प्रधान कवि, एक संस्कृत कवि का नाम । बङ्गाल के सेनवंशी राजा लक्ष्मण सेन की सभा में ये सभा पण्डित थे । अतएव इनका समय भी लक्ष्मण सेन का ही समय मानना उचित है, लक्ष्मण सेन का समय १११६ ई० निश्चित हुआ है । इनके बनाये ग्रन्थ का नाम राघवपाण्डवीय है । इसमें रामायण और महाभारत की कथा साथ ही साथ लिखी गयी है ।

कशार दे० (पु०) वृक्ष विशेष, कचनार ।

कशा तत्० (स्त्री०) [कश्+इ] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोड़ा, औंगी ।—घात (पु०) कशा प्रहार, कोड़ा मारना ।—र्ह (पु०) [कशा+अर्ह] कशाघात योग्य, कोड़ा मारने के उपयुक्त , अपराधी, दोषी ।

कशेरू तत्० (पु०) कन्द विशेष, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का कन्द, तृण कन्द ।

कश्चित् तत्० (अ०) कोई, अनिर्दिष्ट मनुष्य ।

कश्मल तत्० (पु०) मूर्च्छा, अचैतन्य, पाप ।

कश्मीर तत्० (पु०) देश विशेष, काश्मीर ।

कश्य तत्० (पु०) कोड़ा मारने योग्य, दमन करने योग्य, घोड़े का तङ्ग ।

कश्यप तत्० (पु०) एक मुनि का नाम, यह महर्षि मरीच के पुत्र थे, देवता दानव मनुष्य आदि इन्हीं से उत्पन्न हुए हैं । अदिति और दिति दो इनकी स्त्रियां थीं ।

कश्यपमेरु तत् (पु०) एक पर्वत और देश का नाम, उसी पर्वत पर बसने के कारण काश्मीर को कश्यपमेरु भी कहते हैं ।

कष तत्० (पु०) [कष्+अल्] सोने चांदी की परीक्षा करने का पत्थर, कसौटी, शान, निकष, परखने वाली वस्तु ।

कषण तत्० (पु०) परखना, परीक्षा, जांच, खोचना, आकर्षण, तर्जन ।

कषा तत्० (स्त्री०) चाबुक, कोड़ा, कसौंव, कषाय ।

कषाय तत्० (पु०) कसैला, कषाय, क्वाथ, काढ़ा ।

कषौटी दे० (स्त्री०) धातु परीक्षा करने का पत्थर ।

कष्ट तत्० (पु०) [कष्+क्त] पीड़ा, क्लेश, कृच्छ्र, विपद ।—कर (पु०) कष्टदायक, पीड़ा देने वाला ।—कल्पना (स्त्री०) मिथ्या रचना, निष्प्रयोजन कल्पना ।—साध्य (पु०) दुःसाध्य, कष्ट से साधन करने योग्य ।

कष्टित तत्० (पु०) [कष्ट+इत्] दुःखित, पीड़ित, कष्ट युक्त ।

कस दे० (अ०) कैसा, क्या, प्रश्नार्थक अव्यय ।

कसक दे० (पु०) पीड़ा, दुःख, धीरे धीरे पीड़ा होना, फटना, (क्रि०) कसकना, दरकना, फटना, पीड़ा होना ।

कसकसा दे० (पु०) किरकिरापन, ककरीलापन स्वाद रहित ।

कसन दे० (पु०) डाढ़ी बान्धना, यन्त्रणा, वेदना, दुःख ।

कसना दे० (क्रि०) बांधना, खैंचना, परखना, जांचना, तलना, भुनना, परीक्षा करना ।

कसमसाना दे० (क्रि०) कसमस करना, शरीर मरोड़ना, जंभाई लेना ।

काकड़ा दे० (पु०) चर्मविशेष, एक प्रकार का चमड़ा ।—सिंघी (पु०) ओषधि विशेष ।

काकए दे० (पु०) कुष्ठ रोग ।

काकभुशुण्डि तद्० (पु०) एक मुनि का नाम, जिस का मुंह काक के समान था, रामायण का प्रसिद्ध वक्ता ।

काका दे० (पु०) पितृव्य, चाचा, पिता का छोटा भाई ।—तूआ (पु०) पक्षी विशेष ।

काकिणी तत्० (स्त्री०) बीस कौड़ी, पाच गण्डा कौड़ी, छदाम ।

काकी दे० (स्त्री०) काका की स्त्री, चाची, पितृव्य-पत्नी ।

काकु तत्० (पु०) व्यङ्ग्य वचन, वक्रोक्ति, टेढ़ी बोली, स्वर विशेष के द्वारा निषेध वाक्य से विधि, और विधि वाक्य से निषेध का अर्थ निकालना । —क्ति (स्त्री०) [काकु+उक्ति] कातरोक्ति, व्यङ्ग्य कथन ।

काकोदर तत्० (पु०) [काक+उदर] भुजङ्ग सर्प फणी, साँप, कौआ का पेट ।

काकोल तत्० (पु०) नरक विशेष, काली, एक प्रकार की विषैली धातु ।

काकोली तत्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, ज्वर-नाशक ओषधि ।

काकोलूकिका तत्० (स्त्री०) काक और उल्लू के समान शत्रुता, अधिक शत्रुता ।

काख तद्० (स्त्री०) काँख, कक्ष, पार्श्व ।—अलाई (स्त्री०) कखौरी, पार्श्वव्रण, काँख का घाव । —ासोती काँख से कन्धे तक ।

काग दे० (पु०) काक, कौआ ।—ासुर (पु०) एक दैत्य का नाम, जिसे श्री कृष्ण चन्द्र ने मारा था । कंस की प्रेरणा से यह काक का रूप धारण कर के श्री कृष्ण को मारने के लिये गोकुल में गया था, वहां इसे श्रीकृष्ण ने मारा ।

कागद दे० (पु०) कागज़, पत्र ।

काच तद्० (पु०) स्वच्छमृत्तिका विशेष, मणि, स्फटिक, शीशा, आईना ।—मणि (पु०) स्फटिक मणि ।

काचक तद्० (पु०) पाषाण विशेष, स्फटिक, कांच, कांस ।

काचा दे० (पु०) कच्चा, अज्ञानी, अधूरा ।

काछ तद्० (पु०) निकट, समीप, नदी का किनारा, कक्ष, कच्छ, लाँग, धोती का अन्तिम छोर ।

काछन दे० (स्त्री०) काछी की स्त्री, मालिन ।

काछना दे० (क्रि०) काछ मारना, बटोरना ।

काछनी दे० (स्त्री०) काछ विशेष, लँगोटी, कौपीन, जाँघिया ।

काछिय दे० काछना चाहिये, पहनना उचित है, पहनो, परिधान करो, काछिये, पहनिये । यथा:— "जस काछिय तस नाचिय नाचा" (रामायण)।

काछी दे० (पु०) जाति विशेष, मुराई, कुंजड़ा, माली ।

काछे दे० (क्रि०) पहने हुए, बनाये हुए, बनाने से, काछने से ।

काज तद्० (पु०) काज कर्म, काम धन्धा, क्रिया, कारज ।—कर्म क्रियाकर्म, क्रिया और दूसरे व्यापार ।

काजल तद्० (पु०) कज्जल, अञ्जन, सुरमा, आँख में लगाने की एक चीज़ ।

काजलि तद्० (पु०) वस्तु विशेष, मत्स्य विशेष ।

काजी दे० (पु०) कार्यकर्ता, काम करने वाला, विचारक, विचारकर्ता, उद्योगी, परिश्रमी, मुसल्मान जाति के विचारक या, व्यवस्थापक ।

काजे दे० लिये, निमित्त, हेतु ।

काञ्चन तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हेम, सोना, पद्म, केशर, स्वनामख्यात पुष्प, वृक्षविशेष । —क (पु०) धातुविशेष, हरिताल ।—कदली (पु०) सुवर्णकदली, चम्पा, केला ।—गिरि (पु० सुमेरु पर्वत, सुवर्ण पर्वत ।—ाग्र (पु०) सुवर्ण पर्वत, सुमेरु ।—पुष्पिका (स्त्री०) सुवर्णी ओषधिविशेष ।—मय (पु०) [काञ्चन+मयट्] कनकमय, सुवर्ण का ।—ाचल (पु०) सुवर्ण का पर्वत सुमेरु पर्वत ।

काञ्चनार तत्० (पु०) कचनार का वृक्ष ।

काञ्चनी तत्० (स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी ।

काञ्चि तत्० (पु०) मेखला, चन्द्रहार, करधनी, मध्य भाग ।

काञ्ची तत्० (स्त्री०) [कञ्चि+ई] मेखला, स्त्रियों के कटि देश में पहनने का गहना । सप्त पुरियों में से एक पुरी, तीर्थ विशेष, इसके दो भाग हैं, एक का नाम विष्णुकाञ्ची और दूसरे का नाम शिवकाञ्ची है ।—पद (पु०) जघन, नितम्ब ।

काञ्जिक तत्० (पु०) बासी भात से निकाला हुआ जल, माण्ड, पसाया जल ।

काट दे० (पु०) चीरा, काटा हुआ, मैल, मलीनता, खण्ड खण्ड करण ।

काटकूट दे० (स्त्री०)छांट छूट, कतर ब्योंत, छेदन भेदन ।—करना कतरना, काटना, काट डालना ।

काटखाना दे० काटना, दंशन करना, आक्रमण करना ।

काटना दे० (क्रि०) छेदन करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, कतरना, चीरना, काटखाना, खा जाना, खाजैना, कुल्हाड़ी या आरे आदि से काटना ।

काटमण्डु दे० (पु०) नेपाल के एक नगर का नाम, यह नेपाल देश की राजधानी है । यहीं नेपाल के राजा रहते हैं ।

काटि दे० (पु०) कमर, कटि, मध्यभाग, रामायण में कटि का काटि प्रयोग किया गया है ।

काटु दे० (पु०) काटने वाला, छेदक, लकड़ीहार या लकड़हारा ।

काठ तद्० (पु०) काष्ठ, लकड़ी, दारु, काठी ।—कबाड़ (वा०) काष्ठ की वस्तु ।—का उल्लू (वा०) मूर्ख, नासमझ, अनाड़ी ।—चबाना (वा०) दुःख से निर्वाह करना, काल काटना, समय बिताना ।—में पांव देना स्वयं दुःख भोगने के लिये उद्यत होना ।—पुतली (वा०) लकड़ी की मूर्त्ति के समान दूसरों की इच्छा से चलना, नितान्त अनभिज्ञ, मूर्ख ।

काठ कीड़ा दे० (स्त्री०) खटमल उड़ीस, खाट का कीरा ।

काठड़ा दे० (पु०) काठ का बना हुआ बर्तन ।

काठिन्य तत्० (पु०) कठिनता, दृढ़ता, निष्ठुरता, कठोरपन ।

काठियावाड़ (पु०) देश विशेष, गुजरात का एक भाग विशेष ।

काठी दे० (स्त्री०) खोल, शरीर का गठन, काठ, ज़ीन घोड़े पर रखने की चीज़, काठियावाड़ में रहने वाले क्षत्रियों की एक जाति ।

काड़ा दे० (पु०) जुवा, भैंसा ।

काढ़त (क्रि०) निकालता है, निकालते हो ।

काढ़ना दे० (क्रि०) निकालना, उधेड़ना, बाहर करना, निर्माण करना, बेल बूटे निकालना, घोड़े को चाल सिखलाना ।

काढ़ा दे० (पु०) क्वाथ, कषाय, कथ ।

काण तत्० (पु०) एक आंख वाला, एकाक्षा । (स्त्री) काणी ।

काण्ड तत्० (पु०) खण्ड, प्रकरण, पोल, बाण, शर व्यापार, दण्ड, वर्ग, परिच्छेद अवसर, प्रस्ताव ।—कार (पु०) बाण बनाने वाला ।—ग्रह (पु०) प्रकरण ज्ञान,—पट जवनिका, पर्दा,—पृष्ठ शस्त्र से जीने वाला, व्याध ।—रुहा (स्त्री०) कटुकी वृक्ष ।

काण्डर्षि तत् (पु०) वेद की एक शाखा का अध्यापक, मुनि विशेष ।

कातना तद्० (क्रि०) सूत कातना, रुई से सूत बनाना, चरखे से सूत बनाना ।

कातर तत् (पु०) भयभीत, व्याकुल, डरपोक, किसी वस्तु में आसक्ति के कारण घबड़ाहट, अधीर ।—ता (स्त्री०) व्याकुलता, उद्वेग ।

कातिक तद्० (पु०) आठवाँ महीना, देवताओं के उठने का मास ।

कातिकी तद्० (स्त्री०) कातिक की वस्तु, कार्तिक की पूर्णिमा ।

काती दे० (स्त्री०) छोटी तलवार । (पु०) सूत कातनेवाला ।

कात्यायन तत्० (पु०) विख्यात धर्मशास्त्रकार, विश्वामित्र कुल में इनका जन्म हुआ था, कात्यायन श्रौतसूत्र और कात्यायन गृह्यसूत्र नामक दो ग्रन्थ इनके बनाये सर्वमान्य हैं। (२) प्रसिद्ध स्मृति-कर्ता, यह महर्षि गोभिल के पुत्र थे, "कर्मप्रदीप" नामक इनका बनाया एक स्मृति ग्रन्थ है। (३) प्रसिद्ध वैयाकरण, पाणिनि के सूत्रों पर इन्होंने वार्तिक बनाया है। इनके पिता का नाम सोमदत्त था, वे वत्सवंशियों की राजधानी कौशाम्बी में रहते थे। इनका दूसरा नाम वररुचि था।

कात्यायनी (स्त्री०) देवीविशेष, स्मृतिविशेष, कात्यायन वंशी भगवती की एक मूर्ति, महर्षि कात्यायन ने सब से पहले इसकी पूजा की थी इसी कारण इसको कात्यायनी कहते हैं। इसकी कथा मार्कण्डेयपुराण में विस्तार से लिखी है।

कादम्ब तत्० (पु०) कलहंस, राजहंस, सुन्दर हंस।

कादम्बरी तत्० (स्त्री०) मदिरा, मद्य, सुरा, सरस्वती, ग्रन्थविशेष, बाणभट्ट के द्वारा निर्मित कादम्बरी नामक ग्रन्थ की नायिका।

कादम्बिनी तत्० (स्त्री०) मेघमाला, मेघश्रेणि, मेघसमूह।

कादर दे० (पु०) कातर, डरपोक, भीरु। —ता (स्त्री०) भय, डर, व्याकुलता।

कादराई दे० (स्त्री०) भय, व्याकुलता, डर।

कादा दे० (पु०) कादो, कीचड़, पङ्क।

कान (पु०) कर्ण, श्रवण, श्रवणेन्द्रिय। —ऐंठना वा —अमेठना कान खींचना, तर्जन करना, भर्त्सन करना। —भरना (वा०) विरोध डालना, किसी के विरुद्ध भड़काना। —पर जूँ न चलना, असावधानता, प्रमाद। —पर रखना (वा०) स्मरण रखना, उत्सुक रहना। —पर हाथ धरना, अस्वीकार करना, नहीं मानना। —पकड़ना (वा) अपनी भूल समझ लेना, अच्छे उपदेश मानना। —फूटना बहरा होना, किसी का न सुनना। कानों को दुःख पहुँचना। —फोड़ना (वा०) बड़ा शब्द, भयानक ध्वनि। —फूंकना अपने अधीन करना, वश में करना। —झुकाना (वा०) सुनने की अभिलाषा। —दबा कर चला जाना (वा०) भाग जाना, किसी बात का निपटारा किये बिना, या उत्तर सुने बिना चले जाना। —धरना (वा०) सावधानी से सुनना। —दे सुनना (वा०) उत्सुकता से सुनना। —देना सुनने की ओर सावधानी, —काटना (वा०) पराजित करना, झुकाना। —खड़े होना (वा०) सावधान होना, सजग हो जाना। —खोल देना (वा०) सावधान करना, सजग करना। —लगाना (वा०) विश्वासी, उत्सुक होना। —मलना (वा०) ताड़ना करना, सज़ा देना। —में उंगली देकर रहना (वा०) उदासीन होना। —में तेल डालना नहीं सुनना, उपेक्षा करना। —में तेल डालकर सो रहना (वा०) बिलकुल उदासीनता दिखाना, असावधानी। —न हिलाना (वा०) कुछ उत्तर न देना, उपेक्षा की दृष्टि से देखना। —फूंसी मन्त्रणा करना। —कानी करना (वा०) चर्चा करना, अफवाह उड़ाना। —कान कहना (वा०) अति गुप्तरूप से कहना।

कान दे० (स्त्री०) लाज, सङ्कोच।

कानन तत्० (पु०) वन, अरण्य, कान का बहु वचन, दो कान, ब्रह्मा का मुंह।

कानि दे० (पु०) लज्जा, मान, सङ्कोच।

कानी दे० (स्त्री०) सङ्कोच, मर्यादा, एक आंख वाली स्त्री।

कानीन तत्० (पु०) कर्ण और व्यास, अविवाहित स्त्री से उत्पन्न पुत्र, कन्यका जात, अनूढ़ा पुत्र अविवाहिता गर्भज।

कान्त तत्० (पु०) [कम्+क्त] कुङ्कुम, लौह विशेष, श्रीकृष्णचन्द्र, पति, स्वामी, शिला विशेष, प्रिय। —ता (स्त्री०) मनोहर, प्रिय —लौह (पु०) अयस्कान्त, शुद्ध लौह, कान्तिसार लोह। (स्त्री०)।

कान्ता नारी, सर्वाङ्ग सुन्दरी स्त्री।

कान्तार तत्० (पु०) महावन, कुपथ, दुर्गम पथ।

कान्ताह्वा तत्० (स्त्री०) ओषधिविशेष प्रियङ्गु।

कान्ति तत्० (स्त्री०) शोभा, दीप्ति, चन्द्रमा की एक कला ।—दायक (गु०) शोभा दायक, दीप्ति कारक ।—पाषाण (पु०) चुम्बक पत्थर ।

कान्दा तद्० (पु०) मूल विशेष, जल का कन्द, कल कंदरा ।

कान्यकुब्ज तत्० (पु०) [कन्या+कुब्ज] देश और ब्राह्मण विशेष, इस का नाम और प्रचलित अपभ्रंश कन्नौज है, यह नगर कुछ दिनों तक भारत की राजधानी रह चुका है ।

कान्ह देo (पु०), कान्हर देo (पु०) भगवान् श्री कृष्णचन्द्र जी का एक नाम ।

कान्हड़ा दे० (पु०) एक रागिनी का नाम ।

कापट्य तत्० (पु०) कपटता, शठता, धूर्तता, छल, प्रतारणा

कापथ तत्० (पु०) कुपथ, कुत्सित मार्ग, दुर्गम रास्ता ।

कापालिक तत्० (पु०) वर्णसङ्कर जातिविशेष, वाममार्गी, अघोर सम्प्रदाय के मनुष्य ।

कापिल तत्० (गु०) साङ्ख्य शास्त्र, सांख्यशास्त्र वेत्ता ।

कापुरुष तत्० (पु०) कुत्सित पुरुष, निन्दित पुरुष, अकर्मण्य ।—त्व (पु०) अधमत्व, नीचता ।

काम तत्० (पु०) [कम्+घञ्] मदन, कन्दर्प, इच्छा, वासना, अभिलाष, ब्रह्मा के हृदय से उत्पन्न, बलदेव, रमणेच्छा, कार्य, काज ।—आना (वा०) काम में आना, व्यवहार में आना, रण में हत होना ।—पूरा करना (वा०) समाप्त करना, समाप्ति ।—चलाना किसी प्रकार काम निकालना ।—में लाना (वा०) उपयोग करना । —निकालना (वा०) इच्छा पूर्ण करना ।—काज कार बार, काम धन्धा ।—कला (स्त्री०) कामदेव पत्नी, चन्द्रमा की सोलह कला, कामशास्त्र । —कामी (गु०) कामासक्त, सम्भोगी ।—कार (गु०) कामेच्छा, सम्भोगी ।—केलि (पु०) सुरत, रमणक्रिया ।—चारी (पु०) कामुक, स्वतन्त्र, उच्छृङ्खल ।—द (गु०) कामदाता, मनोरथपूरक ।—दगाई (स्त्री०) कामधेनु ।—दा (स्त्री०) कामधेनु, भगवती ।—दुघा (स्त्री०) कामधेनु, अभिलाषा पूर्णकरने वाली गौ ।—देव (पु०) मदन, कन्दर्प ।—धेनु (स्त्री०) देवताओं की गौ । —रूप (गु०) इच्छानुसार रूपधारण करने वाला. ।—तरु तत्० (पु०) कल्पवृक्ष, देववृक्ष, स्वेच्छानुसार चलने वाला, अप्रतिहतमनोरथ ।

कामन्दक तत्० (पु०) भारतीय एक नैतिक विद्वान् का नाम, इनके बनाये ग्रन्थ का नाम कामन्दकीयनीति है, ये चाणक्य के पीछे उत्पन्न हुए थे ।

कामना तत्० (स्त्री०) इच्छा, वासना, वाञ्छा ।

कामपत्नी तत्० (स्त्री०) रति, कामदेव की स्त्री ।

कामपाल तत्० (पु०) बलदेव, बलराम, श्री कृष्ण का बड़ा भाई ।

कामपीड़ित तत्० (गु०) कामासक्त, काम से दुःखी ।

कामभक्ष तत्० (गु०) इच्छानुसार भोजन करने वाला, भक्ष्याभक्ष्य विचार रहित ।

कामरी दे० (स्त्री०) कम्बल, लोई ।
"ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय"

कामरूपी तत्० (गु०) विद्याधर, बहुरुपिया

कामला तत्० (स्त्री०) पाण्डु रोग ।

कामलोल तत्० (गु०) चञ्चल, चलचित्त ।

कामशर तत्० (पु०) कन्दर्प बाण ।

कामाक्ष्या तत्० (स्त्री०) देवीविशेष, इन देवी का स्थान त्रिकूट गढ़-आसाम में है ।

कामातुर तत्० (गु०) कामार्त, काम पीड़ित, कामुक ।

कामात्मा तत्० (गु०) कामुक, लम्पट, व्यभिचारी ।

कामाधिकार तत्० (पु०) प्रेम की उत्पत्ति, स्वेच्छाधीन ।

कामाधिष्ठित तत्० (गु०) कामाभिभूत, कामवशग ।

कामान्ध तत्० (गु०) [काम+अन्ध] काम के वशीभूत, काम के द्वारा हिताहित ज्ञानशून्य, विवेक भ्रष्ट ।

कामायुध तत्० (पु०) [काम+आयुध] कामदेव के बाण, कामदेव का आयुध ।

कामारण्य तत्० (पु०) [काम+अरण्य] मनोहर वन, उत्तम बगीचा ।

कामारि तत्० (पु०) [काम+अरि] काम के शत्रु, शिव, महादेव ।

कामार्त तत्० (गु०) [काम+आर्त] काम पीड़ित, कामातुर, काम के वशीभूत ।

कामार्थी दे० (पु०) कांमरिया, गङ्गाजलिया ।

कामासक्त तत्० (गु०) [काम+आसक्त] कामातुर, काम पीड़ित ।

कामिनी तत्० (स्त्री०) [कामिन्+ई] अतिशय कामयुक्ता स्त्री, भीरु स्त्री, स्त्री, सर्व साधारण स्त्री, युवती ।

कामी तत्० (पु०) [काम+णिन्] काम करने वाला, कामातुर, अभिलाषी, चक्रवाक पक्षी, सोने का टुकड़ा ।

कामुक तत्० (पु०) [कम्+उकण्] कामी, कामातुर, लम्पट, कामासक्त ।

कामोदा तद्० (स्त्री०) रागिणी विशेष ।

काम्बोज तत्० (पु०) देश विशेष, म्लेच्छ जाति विशेष, कम्बोज देश के घोड़े, वङ्ग के दक्षिण पूर्व का देश ।

काम्य तत्० (गु०) [कम्+ण्यण्] कमनीय, सुन्दर, कामनायुक्त, अभिलाषा का विषय । —कर्म (पु०) इच्छित फलसिद्धि के लिये धर्म कार्य ।—त्व (पु०) आकांक्षा, अभिलाष । —दान (पु०) कामना सहित दान, नैमित्तिक दान, किसी पर्व विशेष में दान ।

काय तत्० (पु०) मनुष्य तीर्थ, प्राजापत्य तीर्थ, कनिष्ठा और अनामिका अँगुली के नीचे का भाग, मूर्ति, देह, शरीर, तनु, वपु तन, डील ।—स्थित (गु०) शरीरस्थ, मरमा, ईश्वर ।

कायक तत्० (गु०) शरीर संबन्धी, देही, शरीरी, जीव ।

कायक्लेश तत्० (पु०) [काय+क्लेश] शरीर संबन्धी दुःख, देह का कष्ट ।

कायथ तद्० देखो कायस्थ ।

कायफल दे० (पु०) एक औषधि का नाम, यह सुपारी जैसे रूपरङ्ग का होता है ।

कायमनोवाक्य तत्० (पु०) [काय+मनस् +वच्+ष्यण्] शरीर मन और वचन ।

कायर दे० (गु०) कातर, डरपोकना, आलसी, कादर ।

कायस्थ तत्० (पु०) जाति विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति ।

कायस्था तत्० (स्त्री०) हरीतकी धात्रीवृक्ष, आंवला, आमलकी, छोटी बड़ी इलायची ।

काया दे० (पु०) शरीर, देह, तनु, काय ।—कल्प (पु०) शरीर को बदलना, औषध आदि के द्वारा शरीर का संशोधन करना ।

कायिक तत्० (गु०) शारीरक, दैहिक, शरीर संबन्धी।

कार (पु०) [कृ+घञ्] व्यापार करने वाला, कर्ता, यत्न, काज, व्यापार, उपाय, काम काज ।

कारक तत्० (पु०) [कृ+णक्] कर्ता, हेतु, करने वाला, वैयाकरणों के मत से क्रिया से संबन्ध रखने वाले विभक्ति के अर्थ, क्रिया, निमित्त ।

कारचोबी दे० (गु०) वस्त्र विशेष, चांदी सोने के तारों द्वारा जिस वस्त्र पर बेल बूटे बनाये हों ।

कारखाना तद्० दे० (पु०) कार्यालय, कर्मालय ।

कारज दे० (पु०) कार्य, काज, काम, काम धन्धा, कारबार ।

कारण तत्० (पु०) [कृ+णिच्+अनट्] जिसके बिना जिस कार्य की सिद्धि नहीं वह उस कार्य का कारण है । हेतु, बीज, निमित्त, प्रयोजन, निदान, वास्ते, लिये ।—कारण (पु०) कारण का कारण, परमेश्वर, संसार सृष्टि करने वाला । —गुण (पु०) हेतु के गुण, कारण के धर्म । —ता (स्त्री०) हेतुता निमित्तता ।—वादी

(पु०) अर्दास करने वाला, निवेदक, अभियोग उपस्थित करने वाला, फरियादी।—वारि (पु०) सृष्टि उत्पन्न करने वाला जल, सृष्टि के प्रथम का जल—विशिष्ट (पु०) युक्तिसिद्ध, उचित। —माला (स्त्री०) कारणसमूह, घटनापरम्परा। —शरीर (पु०) सत्वप्रधान, अज्ञान, आनन्दमय कोष, सुषुप्ति शरीर।—भूत (पु०) मूल कारण, हेतुभूत।

कारण्डव तत्० (पु०) पक्षि विशेष, हंस विशेष।

कारवल्ली तत्० (स्त्री०) कटुफल, करेला, तरकारी विशेष।

कारबार दे० (पु०) व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार कर्म, काम।

कारवी तत्० (स्त्री०) [कारव+ई] मयूर शिखा, कृष्णजटा, अजमोद, कलौंजी, औषध विशेष।

कारा तत्० (स्त्री०) [कार+आ] बन्धनालय, बन्दीखाना, बन्धन, पीड़ा, स्वाधीनता नाश। —गार (पु०) [कारा+आगार] जेलखाना, बन्धनगृह, अवरोधन स्थान।—गृह (पु०) बन्धन गृह, कारालय।

कारिख दे० (पु०) करिखा, कालख, स्याही, श्यामता।

कारी तत्० (पु०) वृक्षविशेष, कार्यकर्ता, करने वाला, (स्त्री०) काली, श्यामा, कालेरंग की, यथार्थ, भरपूर, ठीक ठीक, मूर्च्छा, अचेत होना, बेसुध होना।

कारीगर दे० (पु०) शिल्पी, शिल्पकार, काम करने वाला।

कारु, कारुकर तत्० (पु०) विश्वकर्मा, शिल्पी, शिल्पकारक, निर्माता, सुवर्णकार, बढ़ई।

कारुणिक तत्० (पु०) दयालु, कृपालु, करुणा युक्त, कृपावान्।

कारुण्य तत्० (पु०) दया, कृपा।

कार्कश्य तत्० (पु०) कठोरता, कठिनता, कर्कशता, परुषता, नीरसता, क्रूरता।

कार्तवीर्य तत्० (पु०) कृतवीर्य राजा का पुत्र, सहस्रबाहु अर्जुन, ये नर्मदा तीरस्थ हैहयराज्य के अधिपति थे, कार्तवीर्य का दूसरा नाम हैहय भी था, इन्हींके नामानुसार इनके राज्य का भी नाम पड़ा है। इनकी राजधानी का नाम माहिष्मती नगरी है, त्रिलोक विजयीरावण को भी इनके पराक्रम के सामने नीचा देखना पड़ा था, रावण इनके यहां बन्दी हुआ था। परशुराम ने कार्तवीर्य को मारा था।

कार्तस्वर तत्० (पु०) सुवर्ण, हेम, सोना, पुष्प विशेष।

कार्तान्तिक तत्० (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, ज्योतिः शास्त्रज्ञ, दैवज्ञ।

कार्तिक तत्० (पु०) शरद ऋतु का दूसरा महीना, कातिक मास, इस मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा कृत्तिका नक्षत्र के समीप रहता है।

कार्तिकेय तत्० (पु०) महादेव का ज्येष्ठ पुत्र, चन्द्रमा की स्त्री कृत्तिका के दूध से यह पाला गया था, इसी कारण देवताओं ने इसका कार्तिकेय नाम रखा। यह देवताओं का सेनापति था, तारकासुर के वध के लिये यह उत्पन्न किया गया था। इसने देवसेना का परिचालन किया और तारकासुर को मारा। तारकासुर के मारने के बाद इसका नाम तारकारि पड़ा था, इसकी स्त्री का नाम देवसेना था, जो ब्रह्मा की पुत्री थी। देवसेना का दूसरा नाम षष्ठीदेवी है। (ब्रह्मवैवर्त)

कार्पण्य तत्० (पु०) कृपणता, दीनता, अत्यन्त धनलोभ, कम खर्च करना, अमुक्तहस्त, इस शब्द के प्रयोग के स्थान में। "कार्पण्यता" का प्रयोग करना अनुचित और अशुद्ध है।

कार्पास तत्० (पु०) रुआ का पेड़, कपास, रुई, सूती कपड़े।

कार्मण तत्० (पु०) कर्मदक्ष, कर्मठ, मूलकर्म, औषध मन्त्र आदि के द्वारा मोहन वशीकरण उच्चाटन आदि कर्म, शत्रुपराजय आदि के लिये मन्त्र तन्त्र की योजना।

कार्मिक तत्० (पु०) विचित्र वस्त्र, जड़ाऊ वस्त्र, कारचोबी के कपड़े।

कार्मुक तत्० (पु०) धनुष, चाप, कर्म सम्पादन करने वाला।—**भृत्** (पु०) धनुर्द्धारी, धानुष्क, वीर, योद्धा।

कार्य तत्० (पु०) [कृ+ण्यत्] कर्म काम, काज, हेतु, प्रयोजन।—**कार** (पु०) कर्मचारी, उपकारक, सहायक।—**कारक** (पु०) कार्य कर्ता, कर्म सम्पादन करने वाला।—**कलप** (पु०) कार्य समूह, अनेक कार्य, कार्याधिका। —**कुशल** (गु०) कर्मठ, कार्यदक्ष, चतुरता से काम करने वाला।—**क्षम** (गु०) कार्य करने के योग्य, कृती, समतावान्।—**तः** (अ०) यथार्थ रूप से, निश्चित रूप से, क्रिया के रूप से। —**दक्ष** (गु०) कर्म में निपुण, कर्मठ, कर्मकुशल।—**निष्ठ** (गु०) काम में लगा हुआ, कार्यासक्त, काम काजी।—**पटु** (गु०) कर्मदक्ष, कर्मकुशल।—**प्रद्वेष** (पु०) आलस्य, अलसता।—**वाही** (स्त्री०) कारवाई।—**विवरण** (पु०) कार्यों का वर्णन, कार्यों का लिपिबद्ध करना।—**हन्ता** (पु०) प्रतिबन्धक, बाधक, कार्य नाशक।—**ाधिकारी** (पु०) काम करने वाला, प्रतिनिधि, कर्मचारी।—**ाधिष्ठाता** (पु०) श्रेष्ठ, सेठ, कार्यासक्त, व्यापारमग्न।—**ाधीश** (पु०) कार्याध्यक्ष, स्वामी, प्रभु।

कार्श्य तत्० (पु०) क्षीणता, कृशता, दुर्बलता।

कार्षक तत्० (पु०) [कृष्+णक्] कृषक, किसान, कर्षणकारी।

कार्षापण तत्० (पु०) मान विशेष।

काल तत्० (पु०) [कल्+घञ्] समय, क्षण, मुहूर्त, अवसर, बेला, मृत्यु, मरण, शिव, शनि, यम, ऋतु, महँगी, दुष्काल, अकाल, साँप, सर्प, मृत्यु कारक जन्तु या द्रव्य, आगामी या व्यतीत दिन। —**काटना** (वा०) व्यर्थ समय नष्ट करना, निरर्थक बैठे रहना।—**गवाँना** (वा०) उचित समय पर काम न करना।—**बिताना** (वा०) काल काटना।—**कूट** (पु०) हलाहल, विष। —**क्षेप** (पु०) समय बिताना, दिन काटना।

कालक तत्० (पु०) कालिमा, कृष्णत्व सत्ता विशेष।

कालकील तत्० (पु०) घबड़ाहट, कोलाहल, हड़बड़ी।

कालकेय तत्० (पु०) राक्षस विशेष, इस नाम का राक्षसों का एक समूह, जो वृत्रासुर का साथी था।

कालक्रम तत्० (पु०) समयानुसार।—

कालखा दे० (पु०) लहसन, तिल, मस्सा।

कालज्ञ तत्० (गु०) समय ज्ञाता, समयानुसार काम करने वाला।

कालञ्जर तत्० (पु०) शिव का एक नाम, वाममार्गियों का बड़ा महन्त।

कालधर्म तत्० (पु०) समय के धर्म, मृत्यु, मरण, जन्म।

कालनिर्यास तत्० (पु०) सुगन्धि द्रव्य विशेष।

कालनिशा तत्० (स्त्री०) प्रलय की रात्रि, दिवाली की रात, मरण समय।

कालनेमि तत्० (पु०) दैत्य विशेष, कपटी मुनि। यह दैत्य देवासुर संग्राम में कुबेर आदि को जीत कर अन्त में भगवान् के द्वारा मारा गया। (२) राक्षस विशेष, यह विष्णु के तेज से डर कर रावण के नाना सुमाली के साथ पाताल में भग गया था। (३) रावण का मामा, सञ्जीवनी बूटी लाने के समय हनुमान् को रोकने अथवा मारने के लिये रावण ने इसीको भेजा था। यह कथा रामायण में है।

कालपालक तत्० (पु०) समय की अपेक्षा करने वाला, गूढ़ नीतिज्ञ।

कालपाश तत्० (पु०) यमपाश, मृत्युपाश, मरण रज्जु।

कालपुरुष तत्० (पु०) यमराज के अनुचर, ज्योतिष् शास्त्र, शुभाशुभ जानने के लिये कल्पित द्वादश राशियों का पुरुषाकार, यमराज, ये ब्रह्मा के पौत्र और सूर्य के पुत्र हैं। इनका स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर है। इन के ६ मुख, १६ हाथ, २४ आँखें, और ६ पैर हैं। इनका रङ्ग काला है और ये लाल रङ्ग के वस्त्र पहनते हैं।

कालपर्णी तत्० (स्त्री०) औषधिविशेष, काला निसोत।

कालप्रभात तत्० (पु०) शरद् ऋतु । शरत्काल।

कालवेला तत्० (स्त्री०) अयोग्यकाल, किसी काम करने के लिये निन्दित समय।

कालभैरव तत्० (पु०) शिव के अंश से उत्पन्न, उनका अनुचर, ब्रह्मज्ञान-शून्य, ब्रह्मा का पांचवां मस्तक काटने के लिये इनकी उत्पत्ति हुई थी।

कालमा दे० (पु०) संशय, सन्देह, दुविधा, खटका।

कालमूल तत्० (पु०) लाल चित्रक, औषध विशेष।

कालमेषिका तत्० (स्त्री०) मजीठ, वाकुची, औषधि विशेष।

कालमेषी तत्० (स्त्री०) मजीठ, काला निसोत।

कालयवन तत्० (पु०) प्रसिद्ध बली यवनराजा, यह महर्षि गर्ग के औरस से गोपाली नामक किसी अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। महर्षि गर्ग ने पुत्र पाने के लिये लोहचूर्ण खाकर बारह वर्ष तक तपस्या की थी, उसी का फलस्वरूप कालयवन हुआ। घटनावश कालयवन को पुत्रहीन यवनराज ने पाला और अपने बाद उसे ही अपना उत्तराधिकारी भी बनाया। मगधराज जरासन्ध तथा उसके पक्षवालों ने कालयवन को कृष्ण से लड़ने को भेजा था।

कालरात्रि तत्०(स्त्री०) प्रलय काल की रात, युगान्त रात्रि, भगवती का नाम, मृत्यु समय, अँधेरी रात।

कालशाक तत्० (पु०) औषधि विशेष, सरसोंका।

कालसार तत्० (पु०) तेंदुआ का पेड़।

कालसूत्र तत्० (पु०) नरक विशेष।

कालस्कन्ध तत्० (पु०) तमाल वृक्ष, तिन्दुक वृक्ष।

कालस्वरूप तत्० (पु०) मृत्यु का आकार, मृत्यु के समान भयङ्कर, घातुक, हिंसक।

काला दे० (पु०) कालारङ्ग, कृष्णवर्ण, कलौटा, श्रवणेन्द्रियरहित, बधिर,—**गुरु** (पु०) [काल + अगरु] सुगन्धि-द्रव्य-विशेष, कृष्णवर्ण सुगन्धि-काष्ठ।—**ग्नि** (पु०) प्रलय काल की आग, कालानल, सृष्टि संहारकारी अग्नि।—**चोर** (वा) अपरिचित मनुष्य, अनजान, बेजान।—**त्यय** (पु०) समयनाश, समय का दुरुपयोग।—**न्तक** (पु०) यमराज, धर्मराज—**न्तर** (पु०) समयान्तर, दूसरे समय, ।—**मुँह करना** (वा०) अमर्यादित करना, अप्रतिष्ठा करना, डांटना, लज्जित होना या करना।

कालाप तत्० (पु०) कलाप व्याकरण जानने वाला।

कालापानी दे० (स्त्री०) नौका गाहना, सन आदि के द्वारा नौका के नीचे के छिद्र रोकना (पु०) देश विशेष, जहाँ का जल अत्यन्त ख़राब होता है। एकद्वीप, जिसे अण्डमन टापू कहते हैं। इसके चारों ओर का जल अत्यन्त खारा है और काला है, अतएव इसे कालापानी कहते हैं। जिन्हें देश निकाले का दण्ड दिया जाता है, वे वहाँ भेजे जाते हैं।

कालायस तत्० (पु०) [काल + आयस] लोह विशेष, ईस्पात लोहा।

कालिक तत्० (पु०) कालसम्बन्धी, सामयिक, गयेदिन का, काला, कलङ्क, श्यामा।

कालिका तत्० (स्त्री०) कालीदेवी, महाकाली देवी।

कालिख्या तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, किन्दवाली नामक एक वृक्ष।

कालिङ्ग तत्० (पु०) फलविशेष, तरबूज़।

कालिदास तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि, विक्रमादित्य की सभा के नव रत्नों में का प्रधान रत्न। इनका समय ५८८ ई० में पूर्व का बताया जाता है। सीलोन का राजा और महाकवि कुमारदास इनका मित्र हो गया था, कालिदास विक्रमादित्य की सभा को छोड़ कर, कुमारदास के पास सीलोन गये थे, और वहीं इनकी समाधि हुई। (२) दूसरे कालिदास को पाश्चात्य लोग महाकवि भवभूति के समय का मानते हैं। इनका समय ६४८ ई० निश्चित हुआ है। (३) तीसरे कालिदास प्रसिद्ध विद्वान् और ग्रन्थकार राजा भोज के समय में थे। इनके विषय में

बहुत सी किंवदन्तियां भी प्रचलित हैं। राजा भोज ११वीं शताब्दी में हुए थे, अतएव उनके समकालीन कालिदास का भी वही समय बताया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी कई कालिदास हुए हैं।

कालिन्दी तत्० (स्त्री०) कलिन्द पर्वत से उत्पन्न, यमुना, यह सूर्य की कन्या है। यमराज और शनिश्चर ये दोनों इसके भाई हैं।—**भेदन** (पु०) बलराम।

कालिमा तत्० (स्त्री०) [काल्+इमन्] कृष्णता, मलिनता, मालिन्य, कलङ्क, कालापन।

कालियक तत्० (पु०) मलय चन्दन।

कालिया तद्० (पु०) सर्पराज, कालीनाग, गरुड़ के भय से समुद्र में रहना छोड़ ब्रज में यह रहने लगा था, यहां कृष्ण के द्वारा पराजित हुआ और उन्हीं के आज्ञानुसार पुनः समुद्र में जाकर रहने लगा।

काली तत्० (स्त्री०) श्यामवर्ण, काले रङ्ग वाली, आद्या प्रकृति, शान्तनु राजा की पत्नी, कालिका-भगवती, पूर्व या परदिन।

कालीदह तद्० (पु०) ब्रज के एक सरोवर का नाम, जहां कालीनाग रहता था।

कालीन तत्० (पु०) सामयिक, समयगत, निर्दिष्ट समय का, चिरकालिक, बहुत पुराना (दे०) गलीचा।

कालेश्वर तत्० (पु०) महादेव, शिव, मृत्यु को जीत लेने वाला योगी।

काल्पनिक तत्० (पु०) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, मिथ्या, आरोपित, कृत्रिम, अस्वाभाविक।—**ता** (स्त्री०) कृत्रिमता।

कावर दे० (स्त्री०) कांवर, बहँगी।

कावादेना दे० (क्रि०) घोड़े को चाल सिखाना, चक्कर देना।

कावेरी तत्० (स्त्री०) नदी विशेष।

काव्य तत्० (पु०) रसयुक्त वाक्य, जिनसे चित्त चमत्कृत हो, शुक्राचार्य, पितृपुरुष, परिहास, कौतुक, कविता।—**चौर** (पु०) दूसरे की कविता का भाव या पाठ अंश ग्रहण करने वाले।—**त्व** (पु०) काव्य का धर्म, काव्य का विशेष लक्षण।

काश तत्० (पु०) तृणविशेष, खाँसी, खोंसी, श्वास का रोग। तद्० कास।—**भी** (स्त्री०) भारङ्गी औषधि।

काशि तत्० (पु०) सूर्य, रवि।

काशिका तत्० (स्त्री०) वाराणसीक्षेत्र काशीधाम, व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम।—**प्रिय** (पु०) विश्वनाथ।—**राज** (पु०) वाराणसी का राजा, दिवोदास, धन्वन्तरी आदि।

काशी तत्० (स्त्री०) शिवपुर, वाराणसी। (पु०) कासरोगी, दीप्तिमान्, तेजोमय।—**नाथ** (पु०) शिव, विश्वेश्वर।—**राज** (पु०) काशी का राजा, दिव दास।

काशीश तत्० (पु०) उपधातु विशेष, कसीस, हीराकस।

काश्मरी तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, गँभार का वृक्ष।

काश्मीर तत्० (पु०) स्वनाम ख्यात देश, कश्मीर, पुष्करमूल।—**ज** (पु०) औषधविशेष, कूट, काश्मीर में उत्पन्न होने वाला पदार्थ, कुङ्कुम।

काश्मीरा दे० (पु०) मोटा ऊनी वस्त्र विशेष।

काश्यप तत्० (पु०) कणाद मुनि, मृगविशेष, गोत्र विशेष, कश्यप मुनि का वंश।

काश्यपमेरु तत्० (पु०) कश्यप मुनि का वासस्थान, पर्वत विशेष, जिस पर कश्यप मुनि रहते थे। प्रसिद्ध काश्मीर देश।

काश्यपी तत्० पृथिवी, धरणी, धरित्री।—**ि** (पु०) अरुण, सूर्य का सारथी।

काष्ठ तत्० (पु०) इन्धन, दारु, लकड़ी, काठ।—**कीता** (पु०) बढ़ई।

काष्ठी तत्० (स्त्री०) फटकरी।

कासवी दे० (पु०) तांती, कपड़ा बनाने वाला, तन्तुवाय।

कासार तत्० (पु०) सरोवर, तलाव, कमलयुक्त [illegible]

कासी तद्० (पु०) कास, रोग विशेष, कासका रोगी।

कासु दे० (सर्व०) किसको।

काह दे० (पु०) किसको, किनको, क्या, कौन वस्तु, कौन काम।

काहानी दे० (स्त्री०) आख्यायिका, कथा।

काहण तद्० (पु०) कार्षापण, सोलह पण, मान विशेष।

काहार दे० (पु०) भृत्य, कर्मकर, धीवर।

काहू दे० किसी, कोई, किसी को।

काहे दे० क्यों, किस लिये, किस प्रयोजन से।

कि दे० (अ०) दो वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध सूचक अव्यय।

किंवदन्ती तद्० (स्त्री०) उड़ती ख़बर, अनिश्चित समाचार, जनश्रुति।

किंशुक तद्० (पु०) पलाश वृक्ष, टेसू, छिउल, ढाँक।

किएहु दे० किये से भी, करने से भी।

किकियाना दे० चिल्लाना, रोना, पुकारना, दुहाई देना।

किङ्कर तद्० (पु०) [किं+कृ+अ] दास, भृत्य, नौकर, नफर, सेवक, चाकर। —त्व (पु०) दासत्व, अधीनता, (स्त्री०) किङ्करी।

किङ्किणी तद्० (स्त्री०) कटि का आभरण, क्षुद्रघण्टिका, करधनी विशेष।

किचकिच दे० (पु०) कच कच, सें सें, व्यर्थ कोलाहल, अव्यक्त शब्द विशेष, एक पक्षी का शब्द। किचकिच करना।

किचकिचाना दे० (क्रि०) क्रोध के वश होना, दाँत पीसना, अधीर होना।

किचड़ या किचर दे० (पु०) पङ्क, कर्दम, काँदा आँख का मल।

किचड़ाना या किचराना दे० (क्रि०) आँख का रोग विशेष, आँख आना।

किचपिच दे० (पु०) काँदा, कीचड़, पाँक, स्पष्ट उत्तर न देना, अव्यक्तध्वनि, वानर आदि का शब्द।

किचपिचाना दे० (क्रि०) गड़बड़ाना, किसी प्रकार का कर्तव्य स्थिर नहीं करना। दोलायमान चित्त, मन की दुविधा।

किचिरमिचिर दे० वानर आदि का शब्द, अव्यक्त ध्वनि।

किचर दे० (पु०) कीचर, आँख का मल।

किञ्च तद्० (अ०) और भी, दूसरा भी, आरम्भ, साकल्य, वाक्यान्तर द्योतक।

किञ्चित् तद्० (अ०) अल्प, ईषत्, कुछ थोड़ा।

किञ्चिन्मात्र तद्० (अ०) कुछ, स्वल्प, अत्यल्प, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित्।

किञ्जल्क तद्० (पु०) सिफाकन्द, फूल की पाँखड़ी, फूल का रज, केशर, पराग, कमल के बीच की जटा।

किटि तद्० (पु०) शूकर, सूअर, वराह।

किट्ट तद्० (पु०) मल, विष्ठा, विट, मैला। —वर्जित (गु०) मल रहित, शुद्ध, स्वच्छ।

किड़किड़ दे० (पु०) दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द।

किड़किड़ाना दे० (क्रि०) अतिशय क्रोध युक्त होना, क्रोध से अन्धा होना, क्रोध के आवेग से दाँत किड़किड़ाना।

किण्व तद्० (पु०) मदिरा बीज, जिससे मद्य में मादकता उत्पन्न होती है।

कित तद्० (अ०) कितनी, कहाँ, किधर, क्व, कुत्र।

कितई दे० (अ०) लौं, तक, तलक, पर्यन्त।

कितना दे० (गु०) परिमाण विषयक प्रश्नार्थक। —ही (वा०) बहुत अधिक, प्रचुर परिमाण।

कितव तद्० (पु०) धूर्त, वञ्चक, प्रतारक, जुआ खेलने वाला, जुआरी।

कितेक दे० (गु०) बहुत अधिक, प्रचुर।

किते दे० (अ०) कहाँ, किधर।

कित्ति तद्० (स्त्री०) यश, कीर्ति यथा:—

"अखण्ड कित्ति लेय, दंयमान सेगिये"

—रामचन्द्रिका।

किदारा दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष, यह गरमी के दिनों में आधीरात को गायी जाती है।

किधर दे० (अ०) कहां, किस ओर ।

किन दे० (अ०) क्यों नहीं, किसने, कौन, किसको ।

किनवैया दे० (गु०) ग्राहक, खरीदने वाला, गाहक, लेनेवाला ।

किनना दे० (क्रि०) मूल्य देकर लेना, क्रयण करना, लेना ।

किनारा दे० (पु०) नदी का तीर, तट, समीप, पार्श्व, धोती आदि का प्रान्त, कोर ।—खींचना (वा०) अलग होना, धोखा देना ।

किनारी दे० (स्त्री०) गोटा, गोट, मगजी, कोर, वस्त्र का प्रान्त, अन्त ।

किन्तु तत्० (अ०) तोभ्या, पहले कही हुई बात के विरुद्ध बात, परन्तु, अथच ।—वादी (गु०) दूसरों के कही हुई बात को काटने वाला, औरों की न मानने वाले ।

किन्नर तत्० (पु०) [किं+नर] स्वनाम ख्यात-देवयोनि विशेष, किम्पुरुष, जैन विशेष, गन्धर्व, देवताओं के गवैया, किन्नर दो तरह के होते हैं, एक का शरीर तो आदमियों का सा, परन्तु मुंह घोड़े के समान होता है, दूसरे का मुंह आदमी का सा और धड़ घोड़े का सा होता है ।

किन्नरी तत्० (स्त्री०) विद्याधरी, स्वर्गीय-वेश्या, अप्सरा ।

किन्नरेश्वर तत्० (पु०) [किन्नर+ईश्+वरच्] कुवेर, यक्षपति, देवताओं के कोषाध्यक्ष ।

किम् तत्० (सर्व०) क्या, क्यों, कैसा, क्योंकर, किस प्रकार ।

किमपि तत्० (अ०) कुछ भी, जो कुछ, यत्किञ्चित् ।

किमर्थ तत्० (अ०) किस लिये, क्यों, काहे को, किस निमित्त से, किस प्रयोजन से ।

किमाश्च दे० (पु०) खजुहां, कौंच वृक्ष और फल विशेष ।

किमि तद्० (सर्व०) क्योंकर, किस भांति, किस उपाय से ।

किमुत तत्० (अ०) प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अतिशय, सम्भावना ।

किम्पच तत्० (गु०) किम्पचान, अदाता, कृपण ।

किम्पुरुष तत्० (पु०) किन्नर, विद्याधर, स्वर्गीय गायक । (गु०) कुत्सित पुरुष, निन्दित मनुष्य, दुराचारी ।

किम्वा तत्० (अ०) अथवा, वा, विकल्प, यदि, वा, समुच्चय ।

किम्भूत तत्० (गु०) [किं+भू+क्त] किस प्रकार, कैसा, कीदृश ।—किमाकार (वा०) कुत्सित आकृति विशिष्ट, अनभिज्ञता ।

कियत् तत्० (गु०) कितना, कितना परिमाण ।

कियारी दे० (स्त्री०) मेंड़, लकीर, थँवला, क्यारी, खेत, तगता, चमन ।

किये दे० करने से, करे ।

किरकिटी दे० (स्त्री०) आँख में की कणिका, छोटी लकड़ी ।

किरकिरा दे० (गु०) रेतीला, बलुआ ।

किरण तत्० (स्त्री०) दीप्ति, रश्मि, मयूख, सूर्य का तेज, प्रकाशमान् पदार्थों का तेज ।—माली (पु०) सूर्य, चन्द्रमा ।—हस्त (पु०) चन्द्रमा सूर्य ।

किरवान तद्० (पु०) कृपाण, तलवार, खड्ग ।

किरात तत्० (पु०) म्लेच्छ जाति विशेष, भील, निषाद, देश विशेष, एक प्रकार की जङ्गली जाति । चिरायता, औषधि विशेष ।

किरातक तत्० (पु०) चिरायता, ओषधि विशेष ।

किराना दे० वस्तुविशेष, मसाला आदि ।

किरिच दे० (पु०) टुकड़ा, खण्ड, एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

किरिया दे० (स्त्री०) शपथ, सौंह, क्रिया, सौगन्द ।

किरीट तत्० (पु०) शिरोभूषण विशेष, मुकुट, राजाओं की पगड़ी या टोपी ।

किरीटी तत्० (पु०) अर्जुन का एकनाम, ओषधि विशेष ।

किरौ दे० (पु०) किड़हा दाँत, टूटा दाँत ।

किर्च दे० (स्त्री०) कांस, किरीच, खड्ग, पपाव, अस्त्र विशेष, छोटी तलवार के आकार का एक शस्त्र ।

किर्मीर तत्० (पु०) राक्षसविशेष, बक नामक राक्षस का भाई, द्यूत में पराजित होकर जब पाण्डव वन में गये, तब वहां इसी राक्षस ने उनका रास्ता रोका था। भीम आगे बढ़े और इसके साथ युद्ध करने लगे, अन्त में भीम ने इसे मार डाला।

किल तत्० (अ०) निश्चय, दृढ़।

किलक दे० (स्त्री०) चटक, चमक, प्रभा, दीप्ति, प्रकाश।

किलकिञ्चित् तत्० (पु०) स्त्रियों का हाव विशेष, शृङ्गार की एक क्रिया विशेष, यथा—
"हरष गरब अभिलाष भ्रम, हासरोष भय भीत
होत एकही संग हैं, किलकिञ्चित् यह रीत"
मतिराम

किलकिलाना दे० (क्रि०) किलकिल शब्द करना, गर्जन करना, गुर्राना।

किलकिला दे० (पु०) वानरों का एक प्रकार का शब्द, गर्जन।

किलनी दे० (स्त्री०) क्षुद्रजन्तु विशेष। कुत्ते का जुंवा।

किला दे० (पु०) कोट गढ़, राजाओं के महल, दुर्ग।

किलाना दे० (क्रि०) पछोड़ना, टोंकदेना, बीनना, धराना।

किलकारी दे० चोखमारना, बहुत ज़ोर से गर्जन करना।—मारना प्रसन्नता के साथ हँसना, प्रसन्नता जताने की उद्धत चेष्टायें।

किल्ली दे० (स्त्री०) अर्गल, कीली, बेंड़ा।

किल्विष तत्० (पु०) पाप, दोष, अपराध, अशुभ, अनिष्ट रोग।—ी (पु०) अपराधी, अधर्मी, पापी, रोगी।

किशलय तत्० (पु०) नवीन पत्ते, कोमल पत्ते, फूलों की पंखुड़ियाँ।

किशोर तत्० (पु०) अवस्था विशेष, बाल्यावस्था के बाद की अवस्था। १४—वर्ष के नीचे की अवस्था वाला।

किशोरी तत्० (स्त्री०) कुमारी, अविवाहिता युवती, युवती स्त्री।

किष्किन्धा तत्० (पु०) पर्वत विशेष, वानर-राज बालि की राजधानी का नाम, यह पर्वत दक्षिण भारत में है।

किसलय तत्० (पु०) देखो किशलय।

किस दे० (सर्व०) कौन।

किसनई दे० (स्त्री०) किसान का काम, खेती बारी।

किसान दे० (पु०) खेती करने वाला, कृषक, हरवाहा।

किसे दे० (सर्व०) किसको, किसका, किसी को।

किसे दे० देखो किस।

किस्ती दे० (स्त्री०) नौका, छोटी परन्तु सुन्दर नाव।

की दे० (क्रि०) करी, करदी, करडाली।

कीकट तत्० (पु०) देश विशेष, मगध देश, कृपण, दरिद्र, पापी।

कीकड़ दे० (पु०) बबूल, कटीला पेड़।

कीकस तत्० (पु०) हाड़, अस्थि।

कीचक तत्० (पु०) वायु के संयोग से बोलने वाला बांस, फटाहुआ बांस, केकय राजा का पुत्र, राक्षस विशेष, दैत्य विशेष, मत्स्यदेश के राजा विराट का साला। यह बड़ा पराक्रमी था, इसके भय से उस समय के प्रायः सभी बलवान् डरते थे। यहां तक कि दुर्योधन भी इसके भय से मत्स्य देश पर चढ़ाई नहीं करता था। यह द्रौपदी को बुरी दृष्टि से देखने लगा, इसका समाचार सुन कर भीम ने इसे मार डाला।

कीच दे० (पु०) पङ्क, कौंदा।

कीचड़ दे० देखो कीच।

कीजिय दे० (क्रि०) करें, कीजिये, करना चाहिये।

कीजै दे० (क्रि०) करिये, कीजिये, करना उचित है।

कीट तत्० (पु०) कृमि, कीड़ा, कीरा, पतङ्ग।
—घ्न (पु०) गन्धक, औषध विशेष।

कीड़ा दे० (पु०) कौतुक, खेल तमाशे, पुतला, खिलवाड़।

कीड़ दे० (पु०) कीट, कीड़ा।

कीतवः सं० (पु०) जुआरी, कैसी वस्तु।

कीदृश् सं० (पु०) किस प्रकार का, कैसा, किस तरह।

कीदृश सं० (पु०) कैसा, किस प्रकार का।

कीना दे० (क्रि०) किया, पूर्वकिया, (पु०) बैर, शत्रुता।

कीनना दे० (क्रि०) किनना, खरीदना, मोल लेना।

कीन्ह दे० (क्रि०) किया, बनाया, रचा, सिरजा।

कीन्हें दे० (क्रि०) करे, किये, करते थे।

कीर सं० (पु०) शुक पक्षी, तोता, सुग्गा, सुआ।

कीरत, कीरती सं० (स्त्री०) कीर्ति, यश, बड़ाई, प्रशंसा।

कीरा सं० (पु०) नाग, सर्प, कीड़ा, सुग्गा।

कीर्ण सं० (पु०) आच्छन्न, विक्षिप्त, व्याप्त, प्रसारित, फैला हुआ।

कीर्तन सं० (पु०) कथन, वर्णन, गुणगान, यशोवर्णन।

कीर्तनिया सं० (पु०) गायक, भजक, गाने वाला, गाने से जीनेवाला।

कीर्ति सं० (स्त्री०) प्रतिष्ठा, ख्याति, [illegible] करने योग्य काम, गुणख्याति, यश मातृकाविशेष। —कर (पु०) ख्याति करने वाले काम, प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले काम। —पताका (स्त्री०) सफलता की प्रतिष्ठा, यश का चिह्न। —मान् (पु०) यश पाने वाला, कीर्तिशाली। —स्तम्भ (पु०) कीर्ति चिह्न, यादगार। —शेष (पु०) मरण, यश की प्राप्ति मुख्य के शरीर मुख्य का रह जाना।

कीर्तित सं० (पु०) कथित, ख्यात, वर्णित, प्रसिद्ध।

कील सं० (पु०) शङ्कु, खूँटा, मेख, कांटा, खूँटी, खोला, लोहे का कांटा। —[illegible] [illegible], [illegible]।

कीलकः सं० (पु० [illegible] किवाड़ की किल्ली [illegible]

कीलना दे० (क्रि०) [illegible] बन्धन करना। [illegible]

कीला दे० (स्त्री०) लोहे [illegible]

कीलाल सं० (पु०) जल, र[illegible] —धि (पु०) समुद्र, सागर।

कीलित सं० (पु०) बन्द, बद्ध, स्तम्भित।

कीश सं० (पु०) वानर, बन्दर, [illegible] (पु०) पक्षिविशेष। —[illegible] चिड़िया, सिरचिरा।

कुः सं० (अ०) पाप, कुत्सित, [illegible] अल्प, कुत्सित, बुराई, निन्दा [illegible] जिन शब्दों के पहिले यह आता है [illegible] यह बुरा अर्थ प्रगट करता है।

कुआचार सं० (पु०) अनरीति, [illegible] कुचाल।

कुँअर दे० (पु०) कुँवर, कुमार, कुमार।

कुँवारा सं० (पु०) अविवाहित, कुमार, कुआरो।

कुआरपन दे० (स्त्री०) कुमारी, कुमारी अवस्था रहित।

कुकुन्द दे० (पु० [illegible] [illegible]।

कुकुर [illegible] (पु० [illegible]

[illegible]

ीर तत्० (पु०) राक्षस
ाक्षस का भाई, युत ...का बेटा, राजकुमार,
ाण्डव वन में गये, ...
नका रास्ता रोका ...पुत्री, राजकन्या।
सके साथ युद्ध करते ...रा।
ार डाला। ...धारी।
ा तत्० (...) [कु+कृ+मन्,] बुरा कर्म
ाक दे० ..., दुराचार, अन्याय, पाप, अनुचित,
ाश ।—ी (पु०) कुत्सित कर्मकारी, पापात्मा,
..., दुराचारी।
...कीट तत्० (पु०) अरुण शिखा, ताम्रचूड़, मुर्गा,
...
हरप ... (पु०) कूकर, कुत्ता, श्वान।
ोत दक० (स्त्री०) दुष्कर्म, निन्दितकर्म,
...ण।
किलाना ...०) कील, पेट।
...न करना (स्त्री०) अपयश, दुर्नाम, निन्दा।
किला ...०) मन्दग्रह, खोटे ग्रह, दुखदायी ग्रह,
...द, गर्म...
...(पु०) निन्दित गांव, जिस गांव में
नी दे० नीच लोग रहते हों।
...ा ...० बेडौल, कुरूप।
... दे० कुसमय में मारना। मर्मस्थान में मारना।
तत्० (पु०) केयर, सुगन्ध द्रव्यविशेष, रोरी।
...दे० (पु०) गुलाल रखने के लिये शीशा का
...हुआ पात्र।
...० (पु०) [कुच+अच्] स्तन, थन, चूंची,
छाती।
... (पु०) कुचिखाना, तह करना कुच का बहु
...
...तत्० (पु०) लाल चन्दन, रक्त चन्दन, बिना
...का चन्दन।
...मल तत्० (पु०) स्तन के ऊपर का भाग,
...का मुंह।
...० (पु०) निन्दक, दोषानुबन्धित्सु, दोष
वाला।
...ा दे० (क्रि०) चूर करना, मसलना, पीस देना,
...टुकड़े कर देना।
... दे० (पु०) औषध विशेष, विषविशेष।

कुचाग्र तत्० (पु०) स्तन का अग्रभाग, चूची का ढोंठा, भिटनी, भेटुना।

कुचाल दे० (पु०) कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, कुव्यवहार।

कुचाली दे० (पु०) उपद्रवी, खोटे चाल चलन वाला।

कुचाह दे० (पु०) अनिच्छा, अशुभ इच्छा, प्रेम रहित, कपट स्नेह।

कुचि दे० (पु०) बुहारी, बढ़नी, मार्जनी, शोधनी, झाड़ू।

कुचिया दे० (पु०) लोलकी, कान के नीचे का कोमल भाग।

कुचैला तद्० (पु०) मलान, मलीन वस्त्रधारी, गुदड़ी, कन्थाधारी।

कुचैना दे० (पु०) दुःख, विषाद, खेद, अप्रसन्नता।

कुचकी दे० (स्त्री०) जांघ का फोड़ा।

कुछ दे० (पु०) अल्प, थोड़ा, एक आध।—और गाना (वा०) झूठी बात करना, दूसरे के स्थान में दूसरी बात कहना।—...क (वा०) थोड़ा बहुत, कुछ कुछ।—से कुछ होना—का कुछ होना (वा०) उलटा पलटी, विपरीतता।—कुछ (वा०) थोड़ा सा, स्वल्प।—नकुछ (वा०) थोड़ा बहुत, यत्किञ्चित्।—नहीं हो (वा०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, अस्वीकार।—हो (वा०) जो कुछ हो, इसका प्रयोग उस वस्तु के लिये किया जाता है, जो जानी हुई न हो, और उसके जानने की आवश्यकता भी न हो।

कुज तत्० (पु०) मङ्गलग्रह, नरकासुर, मङ्गलवार।

कुञ्जलोचन तद्० (पु०) कुञ्जरवन, हाथियों का वन, जिस वन में अधिक हाथी हों।

कुजाति तत्० (पु०) नीच जाति, अधम जाति, जातिच्युत, जाति भ्रष्ट, दुराचारी।

कुजोग तद्० (पु०) अनमेल संबन्ध, खोटा योग, अशुभ योग।

कुञ्चित तत्० (पु०) छल्लेदार, घूंघर वाले।

कुञ्चिका तत्० (स्त्री०) कुंजी, ताली।

कुञ्ची तत्० (स्त्री०) कलौंजी।

कुञ्ज तत्० (पु०) लता आदि से ढका हुआ स्थान, लता के द्वारा बना हुआ अकृत्रिम गृह।

कुञ्जर तत्० (पु०) हाथी, यह शब्द जिस जाति वाचक शब्द के आगे जोड़ा जाता है, उसकी प्रधानता बतलाता है। जैसे—नरकुञ्जर, प्रधान मनुष्य। यथा—

"कपिकुञ्जरहिं बोलि लै आये"।

—रामायण।

कुञ्जिका तत्० (स्त्री०)।

कुञ्जी दे० देखो कुञ्जिका।

कूट तत्० (पु०) समूह, शिखर, साङ्केतिक शब्द, व्यथा, शूल, पत्थर तोड़ने वाली हथौड़ी।

कुटकी दे० (स्त्री०) एक औषध का नाम, मसाला।

कुटज तत्० (पु०) कुरैया का नाम, इन्द्रयव, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य, पुष्प विशेष।

कुटना दे० (क्रि०) खण्ड करना, तोड़ना, चूर्ण करना। (पु०) भड़ुआ, भंड़वा।

कुटनाई दे० (स्त्री०) कुटनापन, कुटना के गुण।

कुटनाना दे० (क्रि०) फुसलाना, वश में करने व आज्ञाकारी बनाने का उद्योग करना।

कुटनी तद्० (स्त्री०) कुट्टनी, दूती, सन्देश ले जाने वाली।—**पना** दूती कर्म।

कुटिया तद्० (स्त्री०) पर्णगृह, तृण निर्मित गृह, घास फूस का बना घर।

कुटिल तत्० (पु०) [कुट+इल्] वक्र, बांका, टेढ़ा, क्रूर, दुष्ट।—**ता** (स्त्री०) कुटिलत्व, वक्रता, शठता, क्रूरता, शठता, वक्रता।—**न्तः-करण** (पु०) कपटी, खल, असत् अन्तः करण। क्रूर।

कुटिलाई तद्० (स्त्री०) छल, कपट, वक्रता, टेढ़ापन।

कुटी तत्० (स्त्री०) झोंपड़ी, मढ़ी, छोटा घर।—**चक** (पु०) पुत्र के अन्न से जीने वाला।—**चर** (पु०) यति विशेष। संन्यास की प्रथम अवस्था।

कुटीर तत्० (पु०) क्षुद्रगृह, कुटी।

कुटुम तद्० (पु०) जाति बान्धव, सन्तान, सन्तति परिजन, परिवार।

कुटुमी तद्० (पु०) कुटुम्ब विशिष्ट।

कुटुम्ब तत्० (पु०) देखो कुटुम।

कुटुम्बी तत्० (पु०) देखो कुटुमी।

कुटेव दे० (पु०) कु व्यवहार, खोटी चाल।

कुट्टनी तत्० (स्त्री०) कुटनी, दूती।

कुट्टमित तत्० (पु०) [कुट्ट+मा+क्त] स्त्रि की एक प्रकार की शृङ्गार चेष्टा। यथा—

"जहां सुक्ख अरु दुःख की, प्रगट करे जो वाम,
परम ललित यह हाव है, होत कुट्टमित नाम"

—रसरा

कुठार तत्० (पु०) फरसा, कुल्हाड़ी, कुल्हाड़।

कुठारी तत्० (स्त्री०) कुल्हाड़ी, छोटी कुल्हाड़ी।

कुठाहर दे० (स्त्री०) असमय, बेठिकाने, म स्थान, नीच स्थान।

कुड़कना दे० (क्रि०) कुड़कुड़ करना, घूरना गुर्राना।

कुड़मा दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार, कुनबा।

कुडव तत्० (पु०) सेर का चौथा भाग, चार पल।

कुढङ्ग दे० (पु०) अशिष्ट व्यवहार, हानिकार आचरण।

कुढ़ना दे० (क्रि०) क्रोध करना, दूसरों की उन्न देख मन ही मन दुःखित होना, ईर्षा करना।

कुढब दे० (पु०) कुरूप, असुन्दर, अनाड़ी।

कुढ़ाना दे० (क्रि०) दुःखित करना, छेड़ना।

कुढ़ानी दे० (स्त्री०) छेड़ना, सन्तापित करना।

कुणवा या कुनवा दे० (पु०) परिवार, कुटुम्ब।

कुण्ठित तत्० (पु०) [कुण्ठ+क्त] सङ्कुचि भीत, लज्जित।

कुण्ड तत्० (पु०) [कुण्ड+अल्] परिमा विशेष, जलाशय, खड्ढा, कूप, जलाधार विशे चौबच्चा। बारह प्रकार के पुत्रों में से एक प्रक का पुत्र। पति के रहते उपपति से उत्पन्न सन्त को कुण्ड कहते हैं। हवन करने का स्थान, य गर्त्त।

कुण्डल तत्० (पु०) कर्णभूषण विशेष, बाला, बाली ।

कुण्डलिया दे० (पु०) एक भाषा के छन्द का नाम, इस छन्द में १४४ मात्रा होती है, जिस शब्द से प्रारम्भ किया जाय, उसी शब्द से इसे समाप्त करना चाहिये । इस छन्द में एक वाक्य कुण्डल-दुवारा पढ़ा जाता है, इसीसे इसका नाम कुण्डलिया है ।

कुण्डली तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, कचनार, गुडुच, जलेबी, घेरा, फेंटा, कुण्डलाकार होना,—कृत (पु०) गोल बना हुआ ।

कुण्डिन तत्० (पु०) एक मुनि का नाम, नगर विशेष, विदर्भ नगर, बरार प्रदेश के मध्य-वर्ती एक नगर का नाम, इसका दूसरा नाम विदर्भ भी है । वरदा नदी के किनारे पर यह बसा हुआ था । यह दो भागों में विभक्त था, उत्तरीय कुण्डिन की राजधानी अमरावती थी, और दक्षिण कुण्डिन की राजधानी प्रतिष्ठान नगर था ।

कुण्डी दे० (स्त्री०) किवाड़ बन्द करने की सांकल, ज़ञ्जीर ।

कुतः तत्० (अ०) प्रश्नार्थक, कहाँ से, क्यों ।

कुतनु तत्० (गु०) कुत्सित शरीर । (पु०) कुबेर, यक्ष-राज ।

कुतप तत्० (पु०) दिन का आठवाँ भाग, दिन का आठवां मुहूर्त्त, एकोद्दिष्ट नामक श्राद्ध आरम्भ करने का समय, मध्याह्न, अतिथि, भाञ्जा ।—काल (पु०) गरमी का समय, मध्याह्न समय ।

कुतरना तद्० (क्रि०) काटना, छोटे छोटे टुकड़े करना ।

कुतरु तद्० (पु०) काटने वाला, पिल्ला, कुत्ते का बच्चा ।

कुतर्क तत्० (पु०) कुत्सित तर्क, निन्दित तर्क, दुर्बल युक्तियों के सहारे का तर्क, विरुद्ध विचार ।—ी (गु०) कुतर्क करने वाला ।

कुत्तल तद्० (पु०) पृथ्वीतल, भूतल ।

कुतिया दे० (स्त्री०) कुकुरी, कुत्ती ।

कुतूहल तत्० (पु०) अपूर्ववस्तु देखने की लालसा, आमोद, कौतुक, परिहास, उत्सुकता । (गु०) अपूर्व, अद्भुत, प्रशस्त ।—ी (गु०) आमोदी, कौतुकी, उद्योगी ।

कुतृण तत्० (पु०) निन्दित तृण, बुरी घास ।

कुत्ता दे० (पु०) कुकुर, ग्राम मृग । (स्त्री०) कुत्ती ।

कुत्र तत्० (अ०) कहां, किस स्थान पर ।—ापि (अ०) कहीं भी, किसी ठिकाने ।

कुत्सन तत्० (पु०) [कुत्स + अनट्] निन्दन, भर्त्सन, ग्लानिकरण ।

कुत्सा तत्० (स्त्री०) निन्दा, कुत्सा, गर्हा, बुराई, अवज्ञा, अपमान ।—जनक (गु०) निन्दा कराने वाला, ग्लानिकर ।

कुत्सित तत्० (गु०) [कुत्स + क्त] निन्दित, मलीन, नीच ।

कुथ तत्० (पु०) [कुथ् + अल्] हाथी पर का बिछावन, आस्तरण, हाथी की झूल ।

कुथली दे० (स्त्री०) झोली, कोथली ।

कुदकना तद्० (क्रि०) कूदना, फांदना, उछलना ।

कुदरना तद्० (क्रि०) फांदना, कूदना, उछलना ।

कुदरा तद्० (पु०) छोटा कुदार, जिससे मिट्टी खोदी जाती है ।

कुदान तत्० (पु०) बुरा दान, खोटा दान, अनुचित दान, (दे०) उछलने का स्थान ।

कुदाना तद्० (क्रि०) कुदवाना, लाँघना, उछालना ।

कुदार तद्० (पु०) भूमि खोदने का साधन, बेल, बेलचा, कुदारी ।

कुदाल तद्० (पु०) देखो कुदार ।

कुदिन तत्० (पु०) दुर्दिन, मेघाच्छादित दिन, खोटे दिन, दुःख के दिन ।

कुदृश्य तत्० (गु०) असभ्य, कुरूप, कदरूप ।

कुदृष्टि तत्० (स्त्री०) अल्पदृष्टि, विरुद्धाचरण, अनिष्ट करण, बुरे आशय से देखना ।

कुदेश तत्० असुखकर देश, कुत्सित देश, गङ्गा-रहित देश ।

कुद्दाल तत्० (पु०) देखो कुदार।

कुधर तत्० (पु०) शैल, पर्वत, पहाड़।

कुधातु तत्० (पु०) लोहा, लोह—यथा—
"पारस परसि कुधातु सोहाई।" —रामायण

कुधारा तत्० (स्त्री०) दुर्व्यवहार, कुरीति, असभ्याचरण।

कुध्र तत्० (पु०) देखो कुधर।

कुनख तत्० (पु०) रोग विशेष, कुत्सित नख युक्त। —ी (पु०) नख रोगी, चिपटे नख वाला।

कुनटी तत्० (स्त्री०) उपधातु विशेष, मनसिल, दुष्ट, नर्तकी।

कुनबा दे० (पु०) कुटुम्ब, परिवार, कुल।

कुनारी तत्० (स्त्री०) दुष्ट स्त्री, भ्रष्टचरित्र स्त्री, दुश्चरित्रा रमणी।

कुनाल तत्० (पु०) प्रसिद्ध महाराजा अशोक के एक पुत्र का नाम, पटरानी पद्मावती के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था, यह अतिशय सुन्दर था, अतएव इसको सौतेली मा तिष्यरक्षा इस पर आसक्त हुई और अपना दुष्ट अभिप्राय उससे प्रकाशित किया। परन्तु कुनाल ने उसे साफ साफ जवाब दे दिया। इस कारण क्रुद्ध होकर उसने प्रतिज्ञा की कि कुनाल की आखें मैं निकलवा लूंगी। एक समय महाराजा अशोक विद्रोह शान्त करने के लिये तक्षशिला गये और तब तक के लिये राज्य की देख रेख तिष्यरक्षा, (उनकी दूसरी स्त्री) को सौंप गये। तिष्यरक्षा ने इसे सुयोग समझ कर, अपने प्रधान कर्मचारी को कुनाल की आंखें निकालने के लिये आदेश दिया। इसे राजाज्ञा समझ कर, कुनाल ने अपनी आँखें स्वयं निकाल दी, इसकी ख़बर जब अशोक को लगी, तब उन्होंने तिष्यरक्षा के वध की आज्ञा दी, परन्तु कुनाल ने बड़ी प्रार्थना करके अपनी विषैली सौतेली माँ की रक्षा की।

कुनीति तत्० (स्त्री०) अन्याय, कुविचार, अनुचित व्यवहार।

कुन्त तत्० (पु०) भाला, बरछी, पानी, पवन, राजा विशेष, कुन्ती का पिता।

कुन्तल तत्० (पु०) केश, बाल, शिखा, देशविशेष का नाम, जो चोलदेश के उत्तर की ओर है। कुरुगढ़ के दक्षिणस्थ कल्याणदुर्ग नामक न॰ कुन्तल देश की राजधानी थी। इस समय के हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग है किसी समय कुन्तल देश था।—**वर्द्धन** (पु॰) भृङ्गराज वृक्ष, भंगरिया।

कुन्तिभोज तत्० (पु०) एक राजा का नाम, राजा शूरसेन के पिता की बहिन के लड़के थे ये निस्सन्तान थे, इसीसे इन्होंने शूरसेन की कन्या पृथा को गोद लिया था। इसी कारण पृथा का कुन्ती नाम हुआ था, महाभारत के युद्ध में य॰ सम्मिलित हुए थे।

कुन्ती तत्० (स्त्री०) राजा शूरसेन या वसु की कन्या पाण्डु के साथ इसका विवाह हुआ था। नारद मुनि ने इसे वशीकरण मन्त्र बतलाया था जिस के प्रसाद से कुन्ती देवताओं को बुला लि॰ करती थी।

कुन्द तत्० (पु०) पुष्पवृक्ष विशेष, कुन्द का फूल, एक प्रकार का श्वेत पुष्प।

कुन्दन दे० (पु०) अच्छा सोना, उत्तम सुवर्ण।

कुपति तत्० (पु०) दुष्ट पति, दुष्ट स्वामी।

कुपथ तत्० (पु०) कुपंथ, कुमार्ग, विषय, कुत्सित मार्ग, दुर्व्यवहार, दुराचरण।—**गामी** (गु०) दुराचारी, पापात्मा, पापी।

कुपथ्य तत्० (गु०) अपथ्य, अनुचित भोजन, समय और प्रकृति के विरुद्ध भोजन।

कुपरामर्श तत्० (पु०) कुत्सित मन्त्रणा। खोटा सिखावन।

कुपात्र तत्० (गु०) अयोग्य, अपात्र, अनुपयुक्त।

कुपित तत्० (गु०) क्रोधित, कोपित, कोपयुक्त।

कुपुत्र तत्० (पु०) कुसन्तान, दुराचारी पुत्र।

कुपुरुष तत्० (पु०) निकृष्ट मनुष्य, अधम मनुष्य, समाज-बहिष्कृत पुरुष।

कुपूत तद्० (पु०) कुपुत्र, कपूत।

कुप्य तत्० (पु०) सोना और चांदी से भिन्न धातु, कम मूल्यवाली धातु।

कुप्पा दे० (पु०) चर्मभाण्ड, चाम का बना हुआ घी या तेल रखने का बर्तन, (स्त्री०) कुप्पी।

कुब या कूब दे० (पु०) कूबड़, कुब्ज, पीठ पर का डील।

कुबजा तद्० (पु०) कूबड़ मनुष्य।

कुबड़ कुबड़ा दे० (पु०) टेढ़ा, कुब्ज।

कुब्ज तद्० (पु०) टेढ़ी पीठ, कुबड़।

कुब्जा तद्० (स्त्री०) कूबड़ स्त्री, राजा कंस की परचारिका का नाम।

कुयत तद्० (स्त्री०) निन्दित वार्ता, निकृष्ट वार्ता।

कुभार्या तद्० (स्त्री०) कलही स्त्री, झगड़ने वाली स्त्री, कुलटा भार्या।

कुभाव तद्० (पु०) निन्दित अभिप्राय, कुदृष्टि, कुस्वभाव।

कुमण्डल तद्० (पु०) कुत्सित मनुष्यों का समूह, धरामण्डल, पृथिवीमण्डल।

कुमति तद्० (स्त्री०) अल्प बुद्धि, दुर्बुद्धि, दुर्मति।

कुमद तद्० (पु०) कुत्सितमद, दुरभिमान, कमल विशेष।

कुमदिन तद्० (स्त्री०) कमल विशेष, रात को विकसित होने वाला कमल।

कुमन्त्रणा तद्० (स्त्री०) असत्परामर्श, अधम सम्मति।

कुमन्त्री तद्० (पु०) असत्परामर्श देने वाला।

कुमाच दे० (पु०) एक प्रकार की रोटी।

कुमार तद्० (पु०) कार्तिकेय, नाटकोक्ति में युवराज, पांच वर्ष का लड़का। जैन विशेष, कुआँर, अविवाहित बालक, राजपुत्र।—पाल (पु०) शालिवाहन राजा, देखो शालिवाहन।

कुमारिका तद्० (स्त्री०) कुमारी कन्या, अविवाहिता, भारतवर्ष का एक भाग विशेष, उपद्वीप विशेष, जो भारत के दक्षिण की ओर है, जो भारत का एक खण्ड समझा जाता है। सिंहल राज की कन्या का नाम, सिंहलेश्वर शतशृङ्ग की कन्या, और भरतराजा की कन्या। इसका शरीर साधारण स्त्रियों का सा था, परन्तु मुंह बकरी का। इसने अपने प्रयत्न से पुनः मनुष्य का मुख प्राप्त किया। (स्कन्द पुराण देखो)।

कुमारिल तद्० (पु०) विख्यात, दार्शनिक पण्डित और वेदों का भाष्यकार, ये आदि शङ्कराचार्य के समय में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने मीमांसा वार्तिक और तन्त्रवार्तिक नाम के ग्रन्थ लिखे हैं। जिस समय यह उत्पन्न हुए थे, उस समय भारत की स्थिति, विचित्र थी। बौद्ध धर्म का बोलबाला था। कुमारिल ने बौद्ध शास्त्र का अध्ययन, बौद्ध साधुओं से किया, पुनः उनका खण्डन किया। गुरुद्रोह के पाप से छुटकारा पाने के लिये प्रयाग में तुषानल में उन्होंने अपने शरीर को भस्म कर डाला। यह दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे, इनका समय सन् ६५० से—७०० ई० के बीच निश्चित किया गया है।

कुमारी तद्० (स्त्री०) दश वर्ष की कन्या बिन ब्याही, अविवाहिता। जम्बूद्वीप।—पूजा (स्त्री०) तन्त्रशास्त्रोक्त आराधना।

कुमार्ग तद्० (पु०) कुपथ, कुचार, दुराचरण, दुर्गम पथ।

कुमुद तद्० (पु०) श्वेत कमल, रक्त कमल, कुमोदिनी, कोईं।—बन्धु (पु०) चन्द्रमा, कुमुद का मित्र।

कुमुदिनी तद्० (स्त्री०) कुमुद युक्त सरोवर, कमलिनी, पद्मिनी।

कुम्भ तद्० (पु०) घड़ा, कलश, घट, हाथी का मस्तक, एक राजा का नाम, यह मेवाड़ के राजा मुकुल के पुत्र थे। महाराणा मुकुल के छल से मारे जाने पर १४१९ ई० में कुम्भ मेवाड़ के महाराणा हुए। यह विख्यात शूर और पण्डित थे। जयदेव के गीतगोविन्द की एक टीका इन्होंने लिखी है। मालवा का राजा, महमूद अपनी और गुजरात के राजा की सेना लेकर चित्तौर पर चढ़ आया। कुम्भ ने बड़ी योग्यता के साथ अपनी वीरता प्रकाशित की। शत्रु सेना को हराकर, महमूद को इन्होंने क़ैद कर लिया। पुनः

उसके साथ राणा कुम्भ का व्यवहार दयापूर्ण ही रहा। महमूद ६ महीने तक चित्तौरगढ़ में क़ैद रहा। दिल्ली के बादशाह ने जब दिल्ली पर चढ़ाई की उस समय महमूद ने अपनी जाति के विरुद्ध तलवार उठाई थी।—कर्ण (पु०) राक्षस विशेष, रावण का छोटा भाई।—कार (पु०) शूद्रा के गर्भ से और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न जाति विशेष। कुम्हार।—ज (पु०) कुम्भ से उत्पन्न, वशिष्ठ और अगस्त्य मुनि।—सम्भव (पु०) कुम्भ से उत्पन्न, महर्षि वशिष्ठ, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य।—वीर्य (पु०) रीठा।

कुम्भा तत्० (पु०) छोटा घड़ा, एक राजा का नाम।

कुम्भिका तत्० (स्त्री०) जल का एक प्रकार का तृण, वृक्ष विशेष।

कुम्भिनी दे० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।

कुम्भी तत्० (स्त्री०) तृणविशेष, जो पानी पर जमा हुआ होता है।

कुम्भीनस तत्० (पु०) फणधर, सर्प, साँप।

कुम्भीपाक तत्० (पु०) नरक विशेष।

कुम्भीर तत्० (पु०) जलजन्तु विशेष, नक्र, मकर, मगर।

कुम्भीरुणा तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, निशोत।

कुम्हलाना दे० (क्रि०) मुरझाना, सूखना, रङ्ग बदल जाना।

कुम्हार तद्० (पु०) कुलाल, कुम्भकार, घड़ा आदि मीट्टी का बर्तन बनाने वाला। (स्त्री०) कुम्हारी, जन्तु विशेष, कुम्हार जाति की स्त्री।

कुयशः तत्० (पु०) दुर्नाम, अपयश, दुष्कीर्ति।

कुयोग तत्० (पु०) दुष्टयोग, दुःखदायक ग्रह।

कुयोगी तत्० (पु०) विषयातुरक्त, विषय भोगी। यथा—।

"पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारि,
मोह विटप नहिं सकत उतारि"
—रामायण।

कुरङ्ग तत्० (पु०) हरिण, मृग, एण।—नयन (स्त्री०) मृगनयना, मृगलोचना।—नाभि (पु०) कस्तूरी, मृगनाभि।

कुरण्टक तत्० (पु०) औषध विशेष, पियवासा।

कुरमा दे० (पु०) कुनबा, घराना।

कुरवक तत्० (पु०) औषधि का नाम, प्रियवर, पियवासा।

कुरर तत्० (पु०) कुललपक्षी, उत्क्रोश, बगला।

कुराई दे० पाव फसने योग्य, विलम्ब, ... रायी करना, देर लगाना।

कुररी तत्० (स्त्री०) पक्षिविशेष, चील्ह, मेषी।

कुरी दे० (स्त्री०) जाति, कुल, घराना।

कुरीति तत्० (स्त्री०) निषिद्धाचरण, कदाचार, कुव्यवहार।

कुरीर तत्० (पु०) मढ़ी, मढ़ी, रतक्रिया, मैथुन।

कुरु तत्० (पु०) चन्द्रवंशी राजकुल, देश विशेष, उत्तर भारत में है। पृथिवी के नव खण्ड में ... खण्ड।—केतु (पु०) दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित।—क्षेत्र (पु०) दिल्ली के पास एक मैदान, जहां कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी, यहां इसी नाम का एक भील है जो थानेश्वर के दक्षिण की ओर है। सरस्वती नदी के दक्षिण, और दृषद्वती नदी के उत्तर है।—पति-राय (पु०) कुरुराज, ... धन, युधिष्ठिर।—वंश (पु०) राजाकुरु सन्तति।

कुरुचि तत्० (स्त्री०) नीच वासना, ... अजीर्ण।

कुरुवक तत्० (पु०) औषध विशेष।

कुरूल दे० (पु०) घूंगर, चिकुर।

कुरूप तत्० (पु०) कुत्सित आकृति, कदाकार, कुडौल, भद्दा।

कुरेलना तत्० (क्रि०) टटोलना, कुतरना।

कुर्कुट दे० (पु०) कूड़ा, भाड़न, बुहारन।

कुकुंटी तत्० (पु०) सेमर वृक्ष ।

कुलांल दे० (स्त्री०) कूद, कुलांच, चौकड़ी ।

कुव्वां दे० (पु०) कुब्ज, कुबड़ ।

कुर्म्मी दे० (पु०) एक जाति का नाम, जो खेती का काम करती है ।

कुर्यांल दे० (स्त्री०) सुख, आराम, चिन्ता-रहित । —में गुलेल लगाना (वा०) निराश होना, सुख के समय दुःख ।

कुरीं तत्० (स्त्री०) कोमल, अस्थि, उप अस्थि ।

कुल तत्० (पु०) गोत्र, वंश, जाति, वर्ण, स्वजातीय गण, जन समूह ।—कण्टक (पु०) कुपुत्र । —कन्या (स्त्री०) कुलीना कन्या ।—कर्म (पु०) परम्परा का व्यवहार, कुलाचार; कुलक्रिया ।—घाती (पु०) कुलनाशक ।—ज (पु०) कुलीन, सत्कुलोद्भव, सद्वंशीय ।—तारण (पु०) सुपुत्र ।—द्रोही (पु०) कुमार्गी, वंशदूषक । —धर्म (पु०) कुल व्यवहार, कुलाचार । —नाश (पु०) सन्तानहीनता, कुलध्वंस । —पूजक (पु०) पुरोहित, कुलदेव ।—वधू (स्त्री०) पतिव्रता, कुलस्त्री ।—बोड (पु०) कुलनाशक, घरघालू ।

कुला दे० (पु०) कुल्ला, कुलकुची, गण्डूष ।

ख्वा दे० (पु०) मूल धन, पूंजी ।

लञ्जन दे० (पु०) औषधि विशेष, पान की जड़, मूल विशेष ।

कुलट तत्० (पु०) राय, भाट, कुलाचार्य ।

कुलटा तत्० (स्त्री०) असती, व्यभिचारिणी ।

कुलथी तत्० (स्त्री०) अन्नविशेष, कलाई विशेष ।

कुलबुलाना दे० (क्रि०) खुजलाना, कसमसाना । चुलबुलाना ।

कुलबुलाहट दे० (स्त्री०) कीड़े का चल फेर, चुलबुलाहट ।

कुलमा दे० (पु०) लड्डुआ, भोजन विशेष ।

कुलवन्त तद्० (पु०) कुलवान्, कुलीन, श्रेष्ठ ।

कुलवन्ती तद्० (स्त्री०) अच्छे घराने की स्त्री । पतिव्रता, बड़े घर की बेटी ।

कुलवान् तत्० (पु०) कुलीन, सद्वंशज ।

कुला तत्० (स्त्री०) मनसिल, औषध विशेष ।

कुलांच दे० (पु०) कूदना, फाँदना ।—मारना छलांग, फांदना ।

कुलाङ्गना तत्० (स्त्री०) कुलीन स्त्री ।

कुलाचार तत्० (पु०) वंशधर्म, कुलरीति, तान्त्रिक रीति ।

कुलाचार्य तत्० (पु०) वंशगुरु, पुरोहित ।

कुलाल तत्० (पु०) कुम्हार, कुम्भकार ।

कुलाहल तद्० (पु०) कोलाहल, कुतूहल, शोर ।

कुलिहया दे० (स्त्री०) कुलदा, सारा, पुरवा । —में गुड़ फोड़ना (व) गुप्त काम करना ।

कुलीन तत्० (पु०) श्रेष्ठवंशोद्भूत, सद्वंशजात ।

कुलीनाई तद्० (स्त्री०) कुलीना, उत्तम कुल ।

कुलाकुली दे० (पु०) मुलारी, कुलाची ।

कुल्हाड़ी दे० (स्त्री०) कुठार, कुहाड़ी ।

कुलिश तत्० (पु०) वज्र, इन्द्र का अस्त्र ।

कुवलय तत्० (पु०) श्वेत कमल, नीलोफर । —श्व (पु०) एक राजा का नाम, यह महाराजा श्रावस्त का पौत्र और वृहदश्व का पुत्र था, इसके पितामह श्रावस्त ने श्रावस्ती नाम की नगरी बसायी थी । महाराज कुवलयाश्व ने उत्तङ्क महर्षि की आज्ञा से धुन्धु नामक राक्षस को मार डाला, तब से इनका धुन्धुमार नाम पड़ा । (२) शत्रुजित् नामक राजा का पुत्र, इनका नाम ऋतुध्वज था । कुवलय नामक एक तेज़ घोड़ा इनके पास था, इसी कारण इनको कुवलयाश्व कहते थे । गन्धर्व राज की कन्या मदालसा इनसे ब्याही गयी थी ।

कुवलयापीड तत्० (पु०) [कुवलय+आ +पीड़] हस्ति रूपी एक दैत्य, कंसराजा का एक हाथी ।

कुवाक्य तत्० (पु०) परुष वाक्य, कठोर बात, गाली ।

कुवादी तत्० (पु०) दुष्ट, कुवचन वक्ता, मुंहफट ।

कुविक्रम तत्० (पु०) अत्याचार, उपद्रव, शठता ।—ी (पु०) उपद्रवी, दुर्जन, दुरात्मा, शठ ।

कुविचार तत्० (पु०) अन्याय विचार, अयथार्थ विचार, नीच विचार।

कुविन्द तत्० (पु०) तन्तुवाय, कपड़ा बनाने वाला, शूद्र के गर्भ और विश्वकर्मा के औरस से उत्पन्न जाति विशेष, जुलाहा।

कुविन्दु तत्० (गु०) नीचवीर्य, अधमपुत्र, दुष्ट का पुत्र।

कुविहङ्ग तत्० (पु०) अधम पक्षी, बाज पक्षी।

कुबुद्धि तत्० (स्त्री०) मन्दबुद्धि, भ्रान्तबुद्धि मतिभ्रम।

कुवृत्ति तत्० (पु०) अधमव्यापार, नीचकर्म, निन्दित वासना।

कुवेर तत्० (पु०) यक्षराज, धनेश, किन्नरेश, धन का देवता, देवताओं का कोषाध्यक्ष, महर्षि पुलस्त्य का पोता, और विश्रवा के ये पुत्र थे। यक्ष नामक भूतयोनि विशेष के ये राजा और चौथे लोकपाल हैं। इनकी राजधानी का नाम अलका है। इनका नाम वैश्रवण है, परन्तु इनके अतिशय कुरूप होने के कारण इनका नाम कुवेर पड़ा, इनके तीन पैर और आठ दाँत हैं, और देखने में भी अत्यन्त कुरूप हैं। महर्षि भरद्वाज की कन्या देववर्णिनी के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे।

कुश तत्० (पु०) [कुश्+अल्] स्वनाम प्रसिद्ध तृण विशेष, दर्भ, कुशा, द्वीप विशेष, महाराजा श्रीरामचन्द्र का पुत्र, यह महर्षि वाल्मीकि के तपोबल से सीता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी राजधानी का नाम कुशावती है।—ध्वज (पु०) मिथिला के राजा का नाम, राजा ह्रस्व रोमपाद के यह पुत्र थे, सीतादेवी के यह चाचा और सीरध्वज जनक के छोटे भाई थे। मारडवी और श्रुतकीर्ति नाम की इनकी दो कन्यायें थीं, जो यथाक्रम भरत और शत्रुघ्न से ब्याही गईं थीं। —नाभ (पु०) महाराजा कुश का पुत्र, प्रजापति ब्रह्मा का एक पराक्रमी पुत्र, कुश नामक था, उसके चार पुत्र थे, उनमें कुशनाभ था। कुशनाभ ने महोदय नाम का नगर बसाया था।

कुशकण्डिका तत्० (स्त्री०) सब प्रकार के होमों के लिये अग्नि का संस्कार करने की विधि।

कुशमुद्रिका तत्० (स्त्री०) कुश की पैती, कुश की मुन्दरी।

कुशल तत्० (पु०) भलाई, कल्याण, मङ्गल, पुण्य, (गु०) शिक्षित, निपुण, दक्ष।—ता कुशलक्षेम, कल्याण, निपुणता, दक्षता।—क्षेम (पु०) मङ्गल, कल्याण।

कुशलाई तद्० (स्त्री०) मङ्गलमय, चतुराई, निपुणता।

कुशलात तद्० (स्त्री०) कुशलक्षेम, मङ्गल।

कुशस्थली तत्० (स्त्री०) द्वारका, श्रीकृष्ण की पुरी।

कुशासन तत्० (पु०) कुशनिर्मित आसन, कुत्सित शासन, अत्याचार सहित शासन।

कुशिक तत्० (पु०) मुनि विशेष, एक राजा का नाम, ये राजा महर्षि विश्वामित्र के पितामह, और गाधिराजा के पिता थे।

कुशिक्षा तत्० (स्त्री०) असदुपदेश, हानिकारी सिखावन।

कुशील तत्० (गु०) दुरात्मा, दुष्ट स्वभाव।

कुशीलव तत्० (पु०) नटविशेष, कथक, देश विदेशों में कीर्तिगान करने वाले।

कुशूला तत्० (स्त्री०) देहरी, कुठिला, अन्न रखने के लिये मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा भाण्ड।

कुशेशय तत्० (पु०) कमल, पद्म, सारसपक्षी। —कर (पु०) सूर्य।

कुशोदक तत्० (पु०) [कुश+उदक] कुश सहित जल, तर्पण।

कुषीद तत्० (पु०) वृत्ति, जीविका, सूद लेकर ऋण देना, ब्याजू रुपैया, वार्द्धुषिक, (गु०) जड़, चेष्टा रहित, निर्दय।

कुष्ठ तत्० (पु०) कुष्+क्त, कोढ़, रोगविशेष, महाव्याधि, इस रोग के अठारह भेद हैं। जिनमें सात

महा दुःख और कष्ट साध्य अथवा असाध्य हैं। ये ग्यारह उतने भयङ्कर नहीं हैं तौभी कष्टदायी अवश्य हैं। एक प्रकार की लता।—कृन्तन (पु०) पँवार-नाशिनी (स्त्री०) एक प्रकार की बेल, जिससे कुष्ठ रोग छूटता है। सोमराजी, सोमराज वल्ली।—सूदन (पु०) औषधि विशेष, किरवाला।

कुष्ठी तत्० (पु०) कोढ़ी, कुष्ठरोगी।

कुष्माण्ड तत्० (पु०) फल विशेष, कोंहड़ा, कुम्हड़ा, भतुआ।

कुसङ्ग तत्० (पु०) दुर्जन सहवास।

कुसङ्गत तद्० (पु०) बुरा साथ, दुर्जन सङ्ग।

कुसमङ तद्० (पु०) अनवसर में भी, बुरे दिनों में भी, आपत्ति का समय।

कुसमय तत्० (पु०) कठिन समय, खोटे दिन।

कुसरात तद्० (स्त्री०) कुशलाई।

कुसीद तत्० (पु०) देखो कुषीद।

कुसुम तत्० (पु०) पुष्प, फूल, एक प्रकार का लाल फूल, जो कपड़े रँगने के काम में आता है।—पुर (पु०) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, पटना।—बाण (पु०) कामदेव।—शर (पु०) कामदेव, मदन।—स्तवक (पु०) पुष्पगुच्छा, फूलों का गुच्छा।—आकर (पु०) ऋतुविशेष, वसन्तऋतु।—ाञ्जलि (पु०) पुष्पाञ्जलि, ग्रन्थ विशेष, न्याय शास्त्र का एक ग्रन्थ।—ायुध (पु०) कन्दर्प, मदन।

कुसुमित तत्० (पु०) पुष्पित, प्रफुल्ल, प्रफुल्लित।

कुसुम्भ तत्० (पु०) पुष्पविशेष, कुसुम फूल।—ा (पु०) रङ्ग विशेष।

कुस्वप्न तत्० (पु०) दुःस्वप्न, अरिष्ट दर्शन।

कुहक तत्० (पु०) माया, इन्द्रजाल, जाल, मायावी, कुटिल, फरेबी, छली।

कुहड़, कुम्हड़ तद्० (पु०) कुष्माण्ड, कोंहड़ा।

कुहबर, कोहबर दे० (पु०) स्थान विशेष, विवाह के अनन्तर वर दुलहिन के बैठने के लिये सजा हुआ घर।

कुहर तत्० (पु०) गह्वर, छिद्र, गुहा, कान के बीच का भाग, कण्ठ शब्द।

कुहरा दे० (पु०) कोहरा, कुहेसा, कुहासा।

कुहराम दे० (पु०) बिलबिलाना, विलाप, रोना, रोदन।

कुही दे० (पु०) पक्षिविशेष, बाज पक्षी।

कुहासा दे० (पु०) कुहेलिका, कुहरा।

कुहु तत्० (स्त्री०) अमावस्या, जिस अमावस्या को चन्द्रमा नहीं दीख पड़ते। कोकिल ध्वनि, कोइल का शब्द।

कुहुक तद्० (पु०) कोकिल का शब्द।

कुहुकना दे० (क्रि०) आर्तस्वर करना, चिंघाड़ना, चिल्लाना।

कुहू तत्० देखो कुहु।

कूँआ दे० (पु०) कूप, इनारा।

कूँआर दे० (पु०) आश्विन मास, सातवां महीना।

कूँच दे० (पु०) रत्ती, बीज विशेष।

कूँची दे० (स्त्री०) बुहारी, बुचारा, बढ़नी।

कूँतना दे० (क्रि०) मोल ठहराना, मूल्यनिर्द्धारण करना।

कूक दे० (स्त्री०) शब्द, ध्वनि, आर्त ध्वनि, दुःखित शब्द।

कूकना दे० (क्रि०) चिल्लाना, बोलना, कुहुकुहु करना, आह मारना, विलाप करना।

कूकर तद्० (पु०) कुत्ता, कुकुर।

कूकरी दे० (स्त्री०) सूत की गट्टी।

कूकू दे० (पु०) कबूतर का शब्द।

कूचिका दे० (स्त्री०) तूलिका, तूली, कूची, सलाई।

कूचिया दे० (स्त्री०) कल्ली, कनपट्टी।

कूची दे० (स्त्री०) तृणनिर्मित तूलिका, जिससे दीवार में चूना लगाया जाता है।

कूजन तत्० (पु०) शब्द स्वर, ध्वनि, पक्षी का शब्द।

कूजना तद्० (क्रि०) शब्द करना, बोलना।

कूजित तत्० (पु०) पक्षी की ध्वनि, विहङ्ग-ध्वनि।

कूजहिं तद्० (क्रि०) कूजते हैं, गुंजारते हैं।

कूट तत्० (पु०) पर्वत, पहाड़, पहाड़ की चोटी, शिखर, कपट, समूह, राशि, छल, सड़ा हुआ, कागज़, व्यङ्ग्योक्ति, अप्रयुक्त बात।
कूटना दे० (क्रि०) पीसना, खाड़ना, कुचलना, पीटना, मारना।
कूटार्थ तत्० (पु०) गूढ़ार्थ।
कूटसाक्षी तत्० (पु०) मिथ्यासाक्षी, कृत्रिम साक्षी, एच पेच दार साक्षी।
कूड़ा दे० (पु०) भाड़ना, बुहारना, कतवार, घास पात, अगड़ बगड़।
कूण्डा दे० (पु०) मिट्टी का बड़ा पात्र, कठोता, कठरा।
कूढ़ दे० (पु०) मूर्ख, असमझ, अनभिज्ञ।
कूत दे० (पु०) अटकल, अन्दाज़, परख।
कूतना दे० देखो कूंतना।
कूथना दे० (क्रि०) कहरना।
कूदना दे० (क्रि०) फांदना, उछलना।
कूप तत्० (पु०) खनाम प्रयात जलाशय, कुँआ, इनारा, नदी के मध्यस्थ पर्वत या वृक्ष।—मण्डुक (पु०) कुँए का भेटक, अल्पज्ञ।
कूपार तत्० (पु०) समुद्र, जलधि।
कूबरी दे० (स्त्री०) कंस की दासी, काठ की या बाँस की मुड़ी हुई लकड़ी।
कूर तद्० (गु०) कपटी, कठोर, टेढ़ा। अन्न, भक्त, भात।
कूर्च्च तत्० (पु०) भौंहों के मध्य का स्थान, मयूर पुच्छ।
कूर्दन तत्० (पु०) कूदना, खेलना।
कूर्मी तत्० (स्त्री०) दर्वा, करछी, करछुल।
कूर्म तत्० (पु०) कच्छप, कछुआ, वाह्य वायुविशेष।—चक्र (पु०) कृषि सम्बन्धी एक चक्र विशेष, पूजा के लिये यन्त्र विशेष।—पृष्ठ (पु०) कछुवे की पीठ।—राज (पु०) कच्छपराज, भगवान् का अवतार विशेष।
कूल तत्० (पु०) तीर, किनारा, तट, नदी आदि के जल का समीप।—क (पु०) कृत्रिम पर्वत।—द्रुम (पु०) तीरस्थित वृक्ष।

कूहा दे० (पु०) चूतड़, नितम्ब।
कूली दे० (पु०) मोटिया, मजूरा।
कूष्माण्ड तत्० (पु०) गणदेवता विशेष, कोंहड़ा।
कूष्माण्डा तत्० (स्त्री०) देवी विशेष, भगवती।
कृकवाक तत्० (पु०) मयूर, मोर।—ध्वज (पु०) कार्तिकेय, षडानन।
कृकलाश तत्० (स०) (पु०) गिरगिट, सरट।
कृच्छ्र तत्० (पु०) तपस्या, कष्ट, पीड़ा, पापनिवारणार्थ सन्तापनादि व्रत, रोग विशेष।—गत (पु०) यन्त्रणायुक्त, दुःखी, पापी, रोगी।
कृच्छ्रातिकृच्छ्र तत्० (पु०) प्रायश्चित्ताङ्ग व्रत विशेष।
कृत तत्० (गु०) किया, बनाया, रचित, सत्युग।—क (गु०) काल्पनिक, कृत्रिम।—कर्मा (गु०) कार्यक्षम, प्रवीण, शिक्षित, निपुण, दक्ष।—कार्य (गु०) सम्पादित कार्य, चरितार्थ।—काल (पु०) निश्चित समय।—कृत्य पूर्ण काम, कृतकार्य, प्राप्त मनोरथ।—घ्न (पु०) उपकार न मानने वाला।—घ्नता (स्त्री०) अकृतज्ञता।—घ्नताई (स्त्री०) हितैषी के प्रति अहिताचरण, अकृतज्ञता।—ज्ञ (पु०) उपकार मानने वाला।
कृतयुग तत्० (पु०) सत्ययुग, उन्नति का समय, आदि, युग १७२८००० वर्ष का यह युग होता है।
कृतवर्मा तत्० (पु०) यदुवंशी राजा कनक का पुत्र, यह कृतवर्मा महाभारत के युद्ध के कृतवर्मा से भिन्न है।
कृतविद्य तत्० (पु०) शास्त्रज्ञ, शास्त्रदक्ष।
कृतवीर्य तत्० (पु०) नृपविशेष, यदुवंशी एक राजा का नाम।
कृतान्त तत्० (पु०) यमराज, मृत्यु, काल सिद्धान्त, शुभाशुभ।
कृतार्थ तत्० (पु०) सम्पादित कार्य, सिद्ध मनोरथ निहाल।
कृति तत्० (स्त्री०) कार्य, काम, आचरण, उपकार करण।
कृति तत्० (स्त्री०) चमड़े की रस्सी, कृत्तिका नक्षत्र।

कृपनाई तद्० (स्त्री०) कृपणता, सूमड़ापन ।

कृमि तत्० (पु०) कीट, कीड़ा, किरवा ।—घ्न (पु०) वायविड़ङ्ग ।—जग्धा (पु०) काला, अगर ।

[कृ]मिल तत्० (पु०) कीड़ों से भरा, कीटयुक्त ।

[कृ]श तत्० (पु०) दुर्बल, दुबला, क्षीण, पतला, सूक्ष्म ।—ता (स्त्री०) दुर्बलता, क्षीणता ।—दृष्टि (पु०) मन्ददृष्टि ।

[कृ]शाङ्गी तत्० (स्त्री०) पतली स्त्री, दुर्बलाङ्गी, क्षीणाङ्गी ।

[कृ]शानु तत्० (पु०) अग्नि, अनल, आग ।

[कृ]शाश्व तत्० (पु०) मुनिविशेष, राजाविशेष ।

[कृ]शोदर तत्० (पु०) क्षीणमध्य, क्षीणोदर, दुर्बलशरीर ।

[कृ]षक तत्० (पु०) किसान, हरवाह, कर्षक ।

[कृ]षाण दे० (पु०) किसान ।

[कृ]षि तत्० (स्त्री०) खेती, चास, वैश्यवृत्तिविशेष ।—कर्म (पु०) हलचलाना, खेती करना । —जीवी (पु०) कृषक, किसान ।

[कृ]षी तत्० (स्त्री०) खेती ।—वल (पु०) किसान, कृषिजीवी ।

[कृ]ष्ण तत्० (पु०) विष्णु का पूर्णावतार, यह माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न हुए थे, इन्होंने अनेक प्रजापीड़क राक्षसप्रकृति, दानवों को मार कर धर्म स्थापित किया था ।—द्वैपायन (पु०) महर्षिपराशर के औरस और दासराज की पालित कन्या सत्यवती के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे । इनकी माता ने अपना गर्भ द्वीप में फेंक दिया था, इस कारण इनका नाम द्वैपायन पड़ा था, इन्होंने वेदों का विभाग किया था, इस कारण इनको व्यास नाम से लोगों ने प्रसिद्ध किया । इन्हीं महर्षि ने अष्टादश पुराण बनाये हैं । कोई कोई कहते हैं कि व्यास नाम के अनेक महर्षि हुए हैं । अतएव अष्टादश पुराणों के कर्त्ता व्यास नाम धारी, भिन्न भिन्न ऋषि हैं । मिश्र (पु०) प्रबोध-चन्द्रोदय नाटक के कर्त्ता ये ही कृष्ण मिश्र थे । ये राजा कीर्तिवर्मा के सभासद थे । यह कीर्तिवर्मा चन्देल राजा था । इसने चेदि के राजा कर्णदेव का पराजय किया था । इसका समय सन् १०५० ई० से ११९६ ई० के बीच में निश्चित होता है, अतः कृष्णमिश्र का भी यही समय मानना पड़ता है ।

कृष्णकर्मा तत्० (पु०) निन्दितकर्मकारी, पापाचारयुक्त, पापविशिष्ट, अपराधी, पापी, दुष्कृती ।

कृष्णगन्धा तत्० (स्त्री०) शोभाञ्जनवृक्ष, सहिजन का वृक्ष ।

कृष्णचतुर्दशी तत्० (स्त्री०) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, भूतचतुर्दशी ।

कृष्णजीरा तद्० (पु०) काला जीरा, कलौंजी ।

कृष्णता तत्० (स्त्री०) कृष्णवर्ण, कालापन, घुघुची, श्यामता ।

कृष्णतुलसी तत्० (स्त्री०) काली तुलसी ।

कृष्णपक्ष तत्० (पु०) अँधेरा पाख, वदि, चन्द्रमा के ह्रास का काल ।

कृष्णफला तत्० (स्त्री०) वाकुची, करौंदा, करमर्दक ।

कृष्णभद्रा तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, कुटकी ।

कृष्णभूमि तत्० (स्त्री०) काले वर्ण की मृत्तिका युक्त देश ।

कृष्णमय तत्० (पु०) कृष्ण में लीन, अधिक कृष्ण ।

कृष्णलोह तत्० (पु०) अयस्कान्त मणि, चुम्बक पत्थर ।

कृष्णवक्त्र तत्० (पु०) काले मुँह वाला वानर, लङ्गूर ।

कृष्णवर्त्मा तत्० (पु०) अग्नि, हुताशन, चित्रक वृक्ष ।

कृष्णवानर तत्० (पु०) काला वानर, कृष्णवर्ण कपि ।

कृष्णवीज तत्० (पु०) तरबूज, काले बीज वाला तरबूज ।

कृष्णवृत्तिका तत्० (स्त्री०) कम्भारी औषधि का नाम ।

कृष्णाश्रित तत्० (पु०) कृष्ण के भक्त, वैष्णव, श्री कृष्ण के आश्रित।
कृष्णसखा तत्० (पु०) कृष्ण का मित्र, अर्जुन।
कृष्णसर्प तत्० (पु०) कालासर्प, करइट साँप।
कृष्णसार तत्० (पु०) हरिण विशेष, यज्ञीय मृग, काला हरिण।
कृष्णसारङ्ग तत्० (पु०) कृष्णवर्ण मृग, हरिण।
कृष्णा तत्० (स्त्री०) काले रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी, यह जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका नाम भी कृष्णा पड़ा था। यमुना, एक नदी का नाम, यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से प्रसिद्ध है। काली सरसों।
कृष्णाग्रज तत्० (पु०) श्री कृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव, बलराम।
कृष्णागरु तत्० (पु०) काला अगरु।
कृष्णाचल तत्० (पु०) काला पहाड़, रैवतक पर्वत, यह गिरनार के नाम से इस समय प्रसिद्ध है, काठियावाड़ में जूनागढ़ के पास है।
कृष्णाजिन तत्० (पु०) कृष्णसार मृग का चर्म, कालामृग चर्म।
कृष्णाफल तत्० (पु०) काली मिर्च।
कृष्णार्पण तत्० (पु०) निष्काम कर्म, अपने कर्म फल श्री कृष्ण भगवान् को निवेदन करना, फलाकाङ्क्षा से रहित कर्म सम्पादन।
कृष्णोपकुल्या तत्० (स्त्री०) ओषध विशेष, पीपरी।
कृसर तत्० (पु०) चित्रान्न, खीचड़ी।
कृप्त तत्० (पु०) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित।—केश (पु०) जटाधारी।
के दे० (अ०) सम्बन्धबोधक, प्रश्नार्थक, कौनका छोटा रूप, सम्बन्धबोधक विभक्ति का बहुवचन।
केंओड़ा दे० (पु०) केतकी, पुष्प विशेष।
केंचुवा दे० (पु०) कीट विशेष।
केंकड़ा दे० (पु०) कर्कट, गेंगटा।
केकय तत्० (पु०) सूर्य वंशीय राजा विशेष, देश विशेष, जो सिन्धु देश की सीमा पर स्थित है।
केकयी तत्० (स्त्री०) अयोध्या के अधिपति महाराज दशरथ की स्त्री और भरत की माता। केकय या कैकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी। केकय देश पञ्जाब में विपाशा और शतद्रु के बीच में प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर है।
केकर तत्० (पु०) डरा, भेंगा, वक्र, टेढ़ा।
केका तत्० (स्त्री०) मयूरध्वनि, मोर की बोली।
केकी तत्० (पु०) मोर, मयूर, शिखी, केकावल।
केचित् तत्० (अ०) कौन से, कौन, कोई।
केतन तत्० (पु०) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण, क्री[ड़ा], कीड़ा, काम, चिन्ह।
केतिक दे० (पु०) थोड़े, दो चार, अल्प परिमाण
केतकी तत्० (स्त्री०) केवड़ा का वृक्ष, केवड़े के फू[ल]
केता दे० (अ०) कितना।
केतु तत्० ध्वजा, पताका, नवमग्रह, राहु का श[रीर] पापग्रह, उत्पात चिन्ह, दानवविशेष, स[मुद्र] मन्थन के अनन्तर देवतागण पंक्ति से बैठ[े] अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धा[रण] कर वहाँ बैठ गया, चन्द्रमा और सूर्य ने यह [बात] प्रकाशित कर दी। उसी समय भगवान् यद्यपि उनका सिर काट डाला, तथापि अमृत [पान] करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो गये, मस्तक भाग का नाम राहु और शरीर [का] नाम केतु हुआ। ये दोनों ग्रह माने जाते हैं। [इन] की दशा सात वर्ष तक रहती है। ये दोनों पा[पग्रह] हैं।
केतुतारा तत्० (स्त्री०) धूमकेतु, अशुभ सू[चक] तारा, पुच्छल तारा।
केतुमाल तत्० (पु०) जम्बु द्वीप के नव खण्डों का एक खण्ड।
केते दे० (पु०) कितने, के।
केदली तद्० (स्त्री०) रम्भा, कदली, केला, एक [प्रकार का] फलने वाला पेड़।
केदार तत्० (पु०) क्यारी, खेत, क्षेत्र, पर्वतवि[शेष] जो बदरीनारायण के पास है, तीर्थस्थान, [शिव], भूमिविशेष।—खण्ड (पु०) खण्ड विशेष स्क[न्द] पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खण्ड।

केन्द्र तत्० (पु०) लग्न, लग्न का चौथा, पांचवां और दशवां स्थान, गोलाकार वस्तु का मध्यस्थान, गोलाकार वा वृत्तक्षेत्र का वह स्थान, जहां से परिधि तक खींची गयी रेखाएँ आपस में बराबर हों।

केन्द्रीभूत तत्० (गु०) राशिकृत, एकत्रित, सङ्कुचित सङ्कीर्ण, असम्पूर्ण।

केमद्रुम तत्० (पु०) जन्मकाल का ग्रह, योग विशेष, दरिद्रयोग।

केयूर तत्० (पु०) अलङ्कारविशेष, अङ्गद, बाजू बन्द।

केर तद्० (अ०) सम्बन्धार्थक, का, की, के।—ा (पु०) केलावृक्ष, सम्बन्ध द्योतक का स्त्रीलिङ्ग।

केरल तत्० (पु०) देश विशेष, मालाबार देश, पश्चिमी घाट नामक पर्वत और समुद्र के बीच का एक भाग, जो कावेरी नदी के उत्तर की ओर है। इस देश की मुख्य नदियां नेत्रवती, शरावती और काली नाम की हैं। सम्भव है इसी काली नदी का पहले मुरला नाम रहा हो। आज केरल कनाड़ा का एक भाग समझा जाता है।

केला तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष, कदली।

केलि तत्० (स्त्री०) परिहास, खेल, विहार, क्रीड़ा। —कला (स्त्री०) रतिक्रिया, सरस्वती की वीणा।

केलिगृह तत्० (पु०) नाट्यशाला, रङ्गशाला, नाटक खेलने का स्थान।

केली तत्० (स्त्री०) सुखशयन, आनन्द, सुख, क्रीड़ा, खेल।

केवट तद्० (पु०) कैवर्त, दास, धीवर, मछुवा, मल्लाह।

केवड़ा दे० (पु०) वृक्षविशेष, फूलविशेष, एक प्रकार का जल।

केवल तत्० (गु०) मात्र, असहाय, अन्यहीन, एकाकी, एक प्रकार का ज्ञान, निर्णीत।

केवली तत्० (गु०) एकाकी, ग्रन्थविशेष, जैनियों की मुक्ति, जन्मपत्री।

केवाड़ दे० (पु०) द्वार, कपाट।

केवान दे० (पु०) कँवल, कमल।

क्लेश तत्० (पु०) दुःख, पीड़ा, वेदना, यन्त्रणा।

केश तत्० (पु०) बाल, रोम, लोम, सिर के बाल, कच।—कलाप (पु०) केशसमूह, चोटी, जूड़ा। —ग्रह (पु०) केशाकर्षण, केश पकड़ कर खींचना।—पाश (पु०) केश समूह।—विन्यास (पु०) चोटी बनाना, कबरीबन्धन।—मार्जिनी (स्त्री०) कङ्कतिका, कंगही।

केशर तत्० (पु०) नागकेशर वृक्ष, फूलों की पंखुड़ियाँ, स्वनाम प्रसिद्ध, सुगन्धद्रव्य विशेष। सिंह और घोड़ों के गरदन पर के बाल।

केशरञ्जन तत्० (पु०) भंगरा पौधा, वृक्ष विशेष।

केशरिया तद्० (पु०) पीलारङ्ग विशेष, केशर का रङ्ग, एक प्रकार का पहनावा, जिसे राजपूत युद्ध के समय पहनते थे, यह पहनावा एक प्रकार का शपथ समझा जाता था, अर्थात् केशरिया पहन कर युद्ध से हट नहीं सकते, मर भले ही जाँय।

केशरी तत्० (पु०) सिंह, मृगराज, एक वानर का नाम, हनुमान जी का पिता।

केशव तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान् के केशव नाम पड़ने का कारण भगवान् ने स्वयं कहा है कि सूर्य चन्द्रमा आदि प्रकाश शील पदार्थों को केश कहते हैं, वे हमारे हैं, अतएव हमारा नाम केशव है। यथा :—

"अंशवो ये प्रकाशन्ते मम ते केशसंज्ञिताः।
सर्वज्ञाः केशवं तस्मान्माहुर्मां द्विजसत्तमाः"॥
—महाभारत।

केशाकेशी तत्० (पु०) परस्पर बाल पकड़ के लड़ना।

केशी तत्० (गु०) उत्तम केश युक्त, एक दानव, यह राजा कंस का अनुचर था। कंस की आज्ञा से घोड़े का रूप बन कर वृन्दावन गया और अनेक गोपाल तथा गौओं को इसने मार डाला, पुनः भगवान् कृष्ण ने इसको शास्ती की और मार डाला।

कृष्णाश्रित तत्० (पु०) कृष्ण के भक्त, वैष्णव, श्री कृष्ण के आश्रित ।
कृष्णसखा तत्० (पु०) कृष्ण का मित्र, अर्जुन।
कृष्णसर्प तत्० (पु०) कालासर्प, करइट साँप ।
कृष्णसार तत्० (पु०) हरिण विशेष, यज्ञीय मृग, काला हरिण ।
कृष्णसारङ्ग तत्० (पु०) कृष्णवर्ण मृग, हरिण ।
कृष्णा तत्० (स्त्री०) काले रङ्ग की स्त्री, द्रौपदी, यह जन्म के समय काली थी, इसी कारण इसका नाम भी कृष्णा पड़ा था । यमुना, एक नदी का नाम, यह नदी दक्षिण भारत में इसी नाम से प्रसिद्ध है । काली सरसों ।
कृष्णाग्रज तत्० (पु०) श्री कृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव, बलराम ।
कृष्णागरु तत्० (पु०) काला अगरु ।
कृष्णाचल तत्० (पु०) काला पहाड़, रैवतक पर्वत, यह गिरनार के नाम से इस समय प्रसिद्ध है, काठियावाड़ में जूनागढ के पास है ।
कृष्णाजिन तत्० (पु०) कृष्णसार मृग का चर्म, कालामृग चर्म ।
कृष्णाफल तत्० (पु०) काली मिर्च ।
कृष्णार्पण तत्० (पु०) निष्काम कर्म, अपने कर्म फल श्री कृष्ण भगवान् को निवेदन करना, फलाकाङ्क्षा से रहित कर्म सम्पादन ।
कृष्णोपकुल्या तत्० (स्त्री०) ओषध विशेष, पीपरी ।
कृसर तत्० (पु०) चित्रान्न, खीचड़ी ।
क्लृप्त तत्० (पु०) रचित, स्थिरीकृत, निर्मित ।—केश (पु०) जटाधारी ।
के दे० (अ०) सम्बन्धबोधक, प्रश्नार्थक, कौनका छोटा रूप, सम्बन्धबोधक विभक्ति का बहुवचन ।
केंओड़ा दे० (पु०) केतकी, पुष्प विशेष ।
केंचुवा दे० (पु०) कीट विशेष ।
केंकड़ा दे० (पु०) कर्कट, गेंगटा ।
केकय तत्० (पु०) सूर्य वंशीय राजा विशेष, देश विशेष, जो सिन्धु देश की सीमा पर स्थित है ।
केकयी तत्० (स्त्री०) अयोध्या के अधिपति महाराज दशरथ की स्त्री और भरत की माता । केकय या कैकेय राज्य के राजा की यह कन्या थी । केकय देश पञ्जाब में विपाशा और शतद्रु के बीच में है, प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर है ।
केकर तत्० (पु०) डरा, भैंगा, वक्र, टेढ़ा ।
केका तत्० (स्त्री०) मयूरध्वनि, मोर की बोली ।
केकी तत्० (पु०) मोर, मयूर, शिखी, केकावल ।
केचित् तत्० (अ०) कौन से, कौन, कोई ।
केतन तत्० (पु०) गृह, ध्वजा, निमन्त्रण, क्रीड़ा, कोंड़ा, काम, चिन्ह ।
केतिक दे० (पु०) थोड़े, दो चार, अल्प परिमाण।
केतकी तत्० (स्त्री०) केवड़ा का वृक्ष, केवड़े के फूल।
केता दे० (अ०) कितना ।
केतु तत्० ध्वजा, पताका, नवमग्रह, राहु का शरीर, पापग्रह, उत्पात चिन्ह, दानवविशेष, समुद्र मन्थन के अनन्तर देवतागण पंक्ति में बैठ कर अमृत पान करते थे, केतु दानव भी देवरूप धारण कर वहां बैठ गया, चन्द्रमा और सूर्य ने यह बात प्रकाशित कर दी । उसी समय भगवान् ने यद्यपि उनका सिर काट डाला, तथापि अमृत पान करने के कारण वे मरे नहीं, किन्तु एक के दो हो गये, मस्तक भाग का नाम राहु और शरीर का नाम केतु हुआ । ये दोनों ग्रह माने जाते हैं। केतु की दशा सात वर्ष तक रहती है । ये दोनों पापग्रह हैं।
केतुतारा तत्० (स्त्री०) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा, पुच्छल तारा ।
केतुमाल तत्० (पु०) जम्बु द्वीप के नव खण्डों में का एक खण्ड ।
केते दे० (पु०) कितने, कै ।
केदली तद्० (स्त्री०) रम्भा, कदली, केला, एक ब फलने वाला पेड़ ।
केदार तत्० (पु०) क्यारी, खेत, क्षेत्र, पर्वतविशेष जो बदरीनारायण के पास है, तीर्थस्थान, शि भूमिविशेष ।—खण्ड (पु०) खण्ड विशेष स्कन्द पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खण्ड ।

कोका दे० (पु०) धायभाई, फरिया, कंबल, वस्त्रविशेष।

कोकिल तत्० (पु०) कोयल, पिक।—वास (पु०) आम्रवृक्ष।

कोकिला तत्० (स्त्री०) देखो कोकिल।

कोकी तत्० (स्त्री०) चक्रवाकी, चकई।

कोङ्कण तत्० (पु०) शस्त्रविशेष, देशविशेष, यह देश दक्षिण भारत में है।

कोख तद्० (पु०) कुक्षि, गर्भ, जठर, पेट, पार्श्व।—बन्ध (गु०) वन्ध्या, सन्तानहीन।

कोजागर तत्० (पु०) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद का पर्व, महोत्सव।

कोळा, कोळी दे० (स्त्री०) गोदी, लड़कों को झुलाने की झोली।

कोछे दे० (पु०) कोख, कुक्षि।

कोट, कोट्ट तत्० (पु०) गढ़, क़िला, दुर्ग।—धारण (पु०) चार दीवारी।

कोटर तत्० (पु०) वृक्ष का खोखला, खोंड़रा, खोहड़।

कोटवी तत्० (पु०) नग्न स्त्री, विवस्त्र नारी।

कोटा दे० (पु०) एक नगर का नाम, राजपूताने का एक राज्य।

कोटि तत्० (पु०) करोड़, सौलाख, 10000000, प्रश्न, एक ओर का भुज, शस्त्रों का अग्रभाग, पतला भाग।—कल्प (पु०) सर्वदा, सर्वक्षण।—वर्ष (पु०) करोड़ वर्ष, बाणासुर के नगर का नाम।

कोटिर तत्० (पु०) जटा, किरीटि, मुकुट।

कोटीश तत्० (गु०) कोटि रुपये का धनी, महाधनी, करोड़पती।

कोठर तद्० (पु०) देखो।—कोटर।

कोठरी तद्० (स्त्री०) छोटा गृह।

कोठा तद्० (पु०) घर, गृह।

कोठी तद्० (स्त्री०) महाजनी घर, जहां देन लेन होता है।

कोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खखोरना, खखोलना, गढ़ा खोदना।

कोड़ा दे० (पु०) चाबुक, कशा।—करना (व) वश में करना, अधीन करना।

कोड़ी दे० (स्त्री०) बीस संख्या से परिमित कोई वस्तु।

कोढ़ दे० (पु०) कुष्ठ रोग।—में खाज निकालना (वा०) एक दुःख में दूसरा दुःख, दुःखपर दुःख पड़ना।

कोढ़ी दे० (गु०) कुष्ठरोगी, कुष्ठी।

कोण तत्० (पु०) गृह का एक देश, अस्त्रों का अग्रभाग, वीणा आदि बजाने का साधन, वाद्य विशेष, मङ्गलग्रह, दो रेखाओं का सन्धि-स्थान।

कोतल दे० (पु०) अश्वभेद, बिना सवारी का सजा हुआ घोड़ा।

कोथमीर दे० (पु०) कच्ची धनिया, धनियां की हरी पत्तियां।

कोद दे० (स्त्री०) पक्ष, ओर।

कोदण्ड तत्० (पु०) धनुष, धन्वा, धनुही।

कोदो तद्० (पु०) अन्न विशेष, कोद्रव।

कोद्रव } तत्० (पु०)।
कोद्रव्य } तत्० देखो कोदो।

कोन तद्० (पु०) खूंट, कोण।

कोना कुथरा दे० (वा०) अनिश्चित कोण, किसी स्थान पर।

कोन्त तत्० (पु०) कुन्त, भाला, बर्छी, बल्लम।

कोप तत्० (पु०) क्रोध, राग, तामस, रिस, खिस।—न्ध (गु०) अत्यन्त क्रुद्ध।

कोपना तद्० (क्रि०) क्रोधित होना, कुपित होना, कोप करना।

कोपर, कोपल तद्० (पु०) कटोरा, कटोरी, तर्पण करने का पात्र, तष्टी।

कोपान्वित तत्० (गु०) क्रुद्ध, क्रोधित।

कोपित तद्० (गु०) क्रोधशील।

कोपी तत्० (गु०) क्रोधी, कुपित हुआ।

केशर तत्० (पु०) कुंकुम, नागकेशर, केसर, घोड़े के गरदन पर के बाल, श्रयाल।
केहरि तद्० (पु०) सिंह, एक वानर का नाम।
केहरी तद्० (पु०) देखो केहरि।
केहु दे० (अ०) कौन मनुष्य, कोई, कोई व्यक्ति, अनिर्दिष्ट व्यक्ति।
केहि दे० किसे, किसको।
कै दे० (सर्व०) कितना, कितेक, बहुत, कौन।
कैंचली दे० (स्त्री०) साँप का खोल, सर्पचर्म, कैंचुल, किचुली।
कैंची दे० (स्त्री०) कतरनी, अस्त्र विशेष।
कैकेयी तत्० (स्त्री०) देखो केकयी।
कैङ्कर्य तत्० (पु०) किङ्करत्व, भृत्यता, दासत्व, नवधा भक्ति का एक अङ्ग।
कैकसी तत्० (स्त्री०) लङ्केश्वर रावण और कुम्भकर्ण आदि की माता का नाम, यह सुमाली राक्षस की कन्या और विश्रवा मुनि की पत्नी थी।
कैटभ तत्० (पु०) एक राक्षस का नाम, शेषशायी भगवान् के कर्णमल से इसकी उत्पत्ति बतलायी जाती है, यह बहुत बड़ा वीर था, भगवान् ही ने इसे मारा था।—ारि (पु०) नारायण, भगवान्, विष्णु।—श्वरी (स्त्री०) दुर्गा, भगवती।
कैत दे० (पु०) फल विशेष, कैथा, कैथ।
कैतक तत्० (पु०) केवड़े के फूल, केतकी पुष्प।
कैतव तद्० (पु०) छल, कपट, जुआ, मूँगा। —वाद (पु०) छलना, ठगना, प्रवञ्चना औषध विशेष, चिरायता।
कैथ, कैथा दे० (पु०) वृक्षविशेष, कैत।
कैथी दे० (स्त्री०) मुड़ियाअक्षर, कायस्थों के द्वारा कल्पित एक प्रकार की नागरी लिपि।
कैमुतिक तत्० (पु०) न्यायविशेष, अनायाससिद्धि, एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि।
कैयट तत्० (पु०) व्याकरणमहाभाष्य के टीकाकार, ये काश्मीर के रहने वाले थे, ये अपने समय के व्याकरण के विद्वानों में प्रधान समझे जाते थे। इनका समय ग्यारहवीं सदी विद्वानों के मत से निश्चित है। (२) ये भी काश्मीरनिवासी थे। ९७७ ई० में इन्होंने आनन्दवर्द्धन के देवीशतक की टीका लिखी है। इनके पिता का नाम चन्द्रादित्य और पितामह का नाम वल्लभदेव था।
कैरव तत्० (पु०) कुमुद, श्वेत कमल, कोईं।
कैरी दे० (स्त्री०) छोटा आम, कच्चा आम।
कैल दे० (पु०) अङ्कुर, कोपल, गामा, एक प्रकार का बैलों का वर्ण, मटमैला रङ्ग।
कैलास तत्० (पु०) पर्वतविशेष, शिव और कुवेर का वासस्थान।—निकेतन (पु०) महादेव, कुवेर।
कैवर्त तत्० (पु०) मल्लाह, मछुआ, कर्णधार।
कैवल्य तत्० (पु०) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण, परित्राण, परम धाम प्राप्ति।
कैशिक तत्० (स्त्री०) बालों की लट।
कैसा दे० (अ०) किस प्रकार, किस भांति। (वा०) किसी प्रकार का।
कैसे दे० (अ०) किस प्रकार से, क्योंकर।
कैसों दे० भावी, भविष्यत्, आगामी।
कैहौं दे० कहूँगा, कहूँगा।
को दे० (अ०) कर्मवाचक, द्वितीयाविभक्ति, सम्प्रदान का चिन्ह।
कोई दे० (अ०) अनिश्चय, अनिर्दिष्ट।—सा (वा०) कोई आदमी।—न कोई (वा०) यह अथवा वह।
कोऊ दे० (स०) कोई मनुष्य, अनिश्चित व्यक्ति।
कोयरी दे० (पु०) जाति विशेष, काछी, करने वाली जाति।
कोंचना दे० (क्रि०) बींधना, गोदना, चुभाना।
कोंढ़ा दे० (पु०) कुष्माण्ड, कोहड़ा।
कोंपल दे० (पु०) अङ्कुर, मञ्जरी, कली।
कोक तत्० (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा, बघेरा, इस नाम का एक शृङ्गारी कवि जिसका बनाया ग्रन्थ कोकशास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है।—नद (पु०) लालकमल।

कौला दे० (पु०) संतरा, नीबूविशेष, नारङ्गी।
कौड़ा दे० (पु०) बड़ी कौड़ी, शङ्खविशेष।
कौड़ियाला दे० (पु०) सर्पविशेष, पैसेवाला, धनी, नदी विशेष, सरयूनदी।
कौड़ी दे० (स्त्री०) वराटक, वराटिका, छोटा शङ्ख, धन, कमाई।
कौणप तत्० (पु०) राक्षस, रात में चलने वालों की एक जाति।
कौण्डिन्य तत् (पु०) कुण्डिन मुनि का पुत्र, विष्णुगुप्त, चाणक्य।
कौतुक तत्० (पु०) कुतूहल, अभिलाष, उत्सव, हर्ष, परिहास, विवाहादि उत्सव, परम्परागत महोत्सव, गीत वाद्य आदि।—ी (पु०) हर्षाभिलाषी, परिहास करनेवाला, रसिक।
कौतुकिया तद्० (पु०) कौतुक करने वाला, खेल करने वाला, खिलवाड़ी, नट।
कौतूहल तत्० (पु०) अपूर्व वस्तु देखने का अभिलाष, हर्ष, कौतुक।
कौन दे० (सर्व) प्रश्नार्थक।—सा (वा०) कैसा, किस प्रकार का।
कौन्ता तद्० (स्त्री०) कुन्ती, पाण्डव माता।
कौन्ती तत्० (स्त्री०) कुन्तधारी, भाला धारण करने वाला।
कौन्तेय तत्० (पु०) कुन्ती के पुत्र, पाण्डव, अर्जुन।
कौप तत्० (पु०) कूप सम्बन्धी जल, कूपोदक।
कौपीन तत्० (पु०) कोपीन, लँगोटी।
कौमार तत्० (पु०) कौमारावस्था, बाल्यकाल, जन्म से लेकर पांच वर्ष की अवधि तक।—ी (स्त्री०) मातृकाविशेष, कार्तिक की शक्ति, वराही कन्द, कन्यावस्था।
कौमुदी तत्० (स्त्री०) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा का प्रकाश, कार्तिकोत्सव, कार्तिकी पूर्णिमा, आश्विन की पूर्णिमा, व्याकरण का एक ग्रन्थ।
कौमोदकी तत्० (स्त्री०) विष्णु की गदा का नाम, श्री कृष्ण की गदा।
कौर तद्० (पु०) कवल, ग्रास।
कौरव तत्० (पु०) कुरुराज का वंश, कुरुदेश में रहने वाले।
कौरव्य तत्० (पु०) कुरुराज का वंश, मुनिविशेष।
कौल तत्० (पु०) सत्कुलोद्भव, कुलीन, तान्त्रिकों के अनुसार कुलाचारनामक वाममार्ग के उपासक, सद्वंशज, ब्रह्मज्ञानी, कवल।
कौला दे० (पु०) कोना, गोदी, आलिङ्गन।
कौलव तत्० (पु०) एकादश करणों में का तीसरा करण।
कौलिक तत्० (पु०) कुलपरम्पराप्राप्त, कुल परम्परानुसार कार्यकारी। (पु०) वाममार्गी, तन्तुवाय, तांती, पाखण्ड।
कौली दे० (स्त्री०) अँकवार, गोदी।
कौलेय तत्० (पु०) कुकुर, कुत्ता।
कौलेली दे० (पु०) गन्धक।
कौवा दे० (पु०) काग, कौआ, कव्वा।
कौवेर तत्० (पु०) कुवेर सम्बन्धी, कुवेर का, कुट नाम की औषधि, उत्तरदिशा।
कौवेरी तत्० (स्त्री०) उत्तरदिशा, कुवेर की शक्ति।
कौशल तत्० (पु०) अवधपुरवासी, निपुणता, दक्षता।
कौशली तद्० (स्त्री०) कुशलात, जुहार, कुशल प्रश्न।
कौशल्या तत्० (स्त्री०) राजा दशरथ की पटरानी, श्रीरामचन्द्र जी की ये माता थीं, ये दक्षिण कोशल के राजा की कन्या थीं और रामचन्द्र जी के अश्वमेध यज्ञ समाप्त होने पर इन्होंने परलोक यात्रा की।
कौशाम्बी तत्० (स्त्री०) वत्सदेश की राजधानी का नाम, प्रयाग से ३० मील उत्तर की ओर है।
कौशिक तत० (पु०) महर्षि विश्वामित्र का दूसरा नाम, ये महाराज कुशिक के वंश में उत्पन्न हुए थे, गाधिराज इनके पिता का नाम है। इन्द्र, उल्लू।
कौशिकी तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम जो दरभङ्गा के पूरब की ओर बहती है, भागलपुर के

कोपीन तद्० (स्त्री०) लगोट, लगोटी।

कोबी दे० (स्त्री०) एक तरकारी का नाम, छत्राक, गोभी।

कोमल तत्० (गु०) नरम, मृदु, सुकुमार, मनोज्ञ, मनोहर।—ता मृदुता।

कोमलताई तद्० (स्त्री०) मृदुता, कोमलता, नरमाहट।

कोयल तद्० (पु०) कोकिल, कोइल पक्षी।

कोयला दे० (पु०) अङ्गारा, खोरा, कोला।

कोये दे० आँख के डेले, आँखों के बीच का श्वेत डेला या ढेंढर।

कोरक तत्० (पु०) कली, मुकुल, अविकसित द्रव्य, मुकुल।

कोरङ्गी दे० (स्त्री०) छोटी इलायची।

कोर दे० (पु०) किनारा, छोर, कगर, प्रान्तभाग।

कोरा दे० (गु०) नया, नवीन, विनावर्ता, बिना उपयोग में आया हुआ, (इसका प्रयोग वर्तन कपड़ा कागज आदि के लिये होता है)।

कोरे रहना दे० (वा०) निराश होना, मनोरथ सिद्ध न होना।

कोरि दे० (अ०) खुरच कर, खोद कर, कोड़ कर।

कोरी दे० (स्त्री०) सादी, विनवर्ती, हिन्दू जुलाहा, कपड़ा बिनने वाला।

कोल दे० (पु०) खाली, खाल, सकड़ी गली, पहाड़ियाँ, सूकर, सूअर, एक जङ्गली जाति।

कोला दे० (पु०) गोदी, बगल, उत्सङ्ग।

कोलाहल तत्० (पु०) रोला, कलकल, शोरगुल, बहुत दूर तक जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द।

कोलियाना दे० गोद में लेना, कोरा लेना।

कोली दे० (पु०) तन्तुवाय, ताती, कपड़े बनाने वाली एक जाति, छोटी गली, साकड़ गली।

कोल्हू दे० (पु०) चरखी, तेल निकालने या ऊख से रस निकालने की कल।

कोविद तत्० (पु०) पण्डित, बुध, निपुण, ज्ञानी।

कोश तत्० (पु०) कमल का मध्यभाग, तलवार की म्यान, अस्त्रों को रखने का घर, शब्दकोश, भण्डार, खजाना, शब्दसंग्रह, अभिधान।

कोशला तत्० (स्त्री०) अयोध्या नगरी, देशविशेष का नाम, इसका वर्णन रामायण में आया है। यह सरयू नदी के किनारे है। पहले इसके दो भाग थे, उत्तरकोशला और दक्षिणकोशला। यह सूर्यवंश राजाओं की राजधानी थी।—पुरी, कोशलपुरी (स्त्री०) अयोध्या।—धीश (पु०) श्रीरामचन्द्र कोशल के राजा।

कोष तत्० (पु०) देखो कोश।

कोषाध्यक्ष तत्० (पु०) कोषाधीश, कोषाधिपति, भण्डारी, खजाची।

कोष्ठ तत्० (पु०) गृहमध्य, कोष्ठमध्य, पाकाशय, खाना, खात।—बद्ध (पु०) मलावरोध, मलक रुकावट, रोगविशेष।

कोष्ठागार तत्० (पु०) भण्डार, कोष, खजाना।

कोस तद्० (पु०) मार्ग की लम्बाई का परिमाण, आठ हजार या चार हजार हाथ की लम्बाई, दो मील।

कोसना या कोशना दे० (क्रि०) शापदेना, बातों से दुःखी करते रहना।

कोसा दे० (पु०) छीमी, फली, कन विशेष।

कोह तद्० (पु०) क्रोध, रोष, कोप, इस अर्थ में कोहु और कोहू इन शब्दों का भी प्रयोग रामायण में किया गया है।

कोहिनी तद्० (स्त्री०) बाँह के बीच की गाँठ।

कोहबर दे० (पु०) कौतुक गृह, देवगृह।

कोहाना दे० (क्रि०) कोपकरना, क्रोधकरना खिसियाना।

कोहाय दे० (पु०) क्रोध, कोप रूठना, कोहाना।

कोही दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, यथा—

"कर कुठार मैं अकरुण कोही
आगे अपराधी गुरुद्रोही"

—रामायण।

कौ दे० (अ०) का, को।

कौआ दे० (पु०) काग, काक।

कौंध दे० (स्त्री०) प्रकाश, प्रताप, दीप्ति, चमक।

कौंधना दे० (क्रि०) चमकना, प्रकाशित होना।

कौंधा दे० (पु०) बिजली, विद्युत चमक।

क्रूर तत्० (पु०) परद्रोही, निर्दय, नृशंस, कठिन, प्रथम तृतीय पञ्चम सप्तम नवम और एकादश राशि। —कर्मा (पु०) भयङ्कर कर्म करने वाला, दुरात्मा, निष्ठुरकर्मकारी ।—गन्ध (पु०) उग्रगन्ध, तीखा गन्ध ।—ता (स्त्री०) खलता, निष्ठुरता, निर्दयता ।—लोचन (पु०) शनिग्रह, शनैश्चर । —स्वरा (पु०) कर्कश ध्वनियुक्त, भयङ्कर शब्द । —आकार (पु०) रावण, भयङ्कर आकार।—आचार (पु०) भयानक, नृशंस, निठुर ।

क्रेतव्य तत्० (पु०) क्रेयवस्तु, क्रयणीय, ख़रीदने योग्य ।

क्रेता तत्० (पु०) क्रयकर्ता, ख़रीददार ।

क्रेय तत्० (पु०) क्रयणीय, ख़रीदने योग्य ।

क्रोड़ तत्० (पु०) दोनों बाहु के बीच का भाग, अङ्क कोला, वक्षस्थल ।—पत्र (पु०) अतिरिक्त पत्र, प्रधान पत्र के साथ दूसरा पत्र ।

क्रोध तत्० (पु०) कोप, रोष, अमर्ष, ब्रह्मा के भौंह से उत्पन्न, शरीर धारियों के स्वाभाविक छ शत्रुओं के अन्तर्गत एक शत्रु ।—मूर्च्छित (पु०) सुगन्ध द्रव्यविशेष, (पु०) अतिक्रोधी ।—आतुर (पु०) क्रोधी ।—अन्ध (पु०) क्रोध से अन्धा ।

क्रोधन तत्० (पु०) क्रोधी, क्रोधयुक्त, क्रोधान्वित ।

क्रोधित तद्० (पु०) प्रकुपित, क्रोधदीप्त ।

क्रोधी तत्० (पु०) क्रोधयुक्त, रागी, रिसहा ।

क्रोश तत्० (पु०) चार हज़ार या आठ हज़ार हाथ के मार्ग की लम्बाई ।

क्रोष्टा तत्० (पु०) शृगाल, शियाल, गीदड़ ।

क्रौञ्च तत्० (पु०) बकपक्षी, पर्वतविशेष, जिसके लिये परशुराम और कार्तिकेय दोनों लड़े थे। द्वीपभेद ।—द्वीप (पु०) सात महाद्वीपों के अन्तर्गत एक द्वीप ।

क्रौर्य तत्० (पु०) क्रूरता, निष्ठुरता ।

क्लान्त तत्० (पु०) श्रान्त, थका हुआ, थका माँदा, थकित ।—मना (पु०) श्रान्तमन, उद्विग्नचित्त, विषादयुक्त ।

क्लान्ति तत्० (स्त्री०) श्रान्ति, श्रम, परिश्रम, थकावट, शरीर की ग्लानि ।—कर (पु०) श्रमजनक, श्रान्तिकर ।—च्छिद (पु०) विश्राम, स्वास्थ्य ।

क्लिन्न तत्० (पु०) आर्द्र, भीगा, सजल, गीला ।

क्लिशित तद्० (पु०) क्लेशयुक्त, दुःखी, पीड़ित ।

क्लिश्यमान तत्० (पु०) सन्तापित, पीड़ित ।

क्लिष्ट तत्० (पु०) क्षीण, दुर्बल, रोगी, पूर्वापर विरुद्ध वाक्य ।—कर्मा (पु०) नृशंस कर्म करने वाला, पीड़ित ।

क्लीव तत्० (पु०) नपुंसक, पुरुषार्थहीन, निर्बल, हिजड़ा ।

क्लेद तद्० (पु०) आर्द्रता, स्वेद, पसीना, ओदा, भींगा ।

क्लेदन तत्० (पु०) भिगोना, आर्द्र करना, पाँच प्रकार के कफ के अन्तर्गत कफ विशेष ।

क्लेदित तद्० (पु०) भींगा हुआ, आर्द्र, स्वेदित ।

क्लेश तत्० (पु०) दुःख, यन्त्रणा, उपताप, पीड़ा, कष्ट, आयास, भय ।—कर (पु०) दुःखदायक, कष्टदायक ।—द (पु०) दुःखकर, व्यथा देनेवाला ।—प्रहाण (पु०) विपत्ति का नाश, सांसारिक वासना जन्य दुःखों का नाश ।—वान् (पु०) आपत्तिग्रस्त, आपन्न, दुर्गत ।—अपह (पु०) क्लेशनाशकारी ।

क्लेशित तत्० (पु०) क्लेश विशिष्ट, दुःखयुक्त ।

क्लैव्य तत्० (पु०) दुर्बलता, मानसिक निर्बलता, अनुत्साह ।

क्वचित् तत्० (अ०) कहीं, किसी स्थान पर ।

क्वाण तत्० (पु०) ध्वनि, वीणा आदि का शब्द ।

क्वाथ तत्० (पु०) काढ़ा, निर्यास ।

क्षई तद्० (स्त्री०) क्षयरोग, कफ और रक्त का निकलना, सूखी खाँसी ।

क्षण तत्० (पु०) कालविशेष, तीस कला परिमित समय, दशपलपरिमित समय, उत्सव, पर्व, अवसर ।—दा (स्त्री०) रात्रि, निशा । —दान्ध (पु०) रात के अन्धे, प्राणिविशेष, उल्लू ।—द्युति (स्त्री०) विद्युत्, चपला,

उत्तरीय भाग में और जो पुरनिया के पश्चिम की ओर है। आज कल इसको कुशी कहते हैं। इसी नदी के तीर पर महर्षि ऋष्यशृङ्ग का आश्रम था।

कौशेय तत्० (पु०) पटवस्त्र, पीताम्बर, रेशमी धोती आदि।

कौस्तुभ तत्० (पु०) विष्णु वक्षःस्थित मणि, मुद्रा विशेष।

क्या दे० (अ०) प्रश्नार्थक, किं।

क्यारी दे० (स्त्री०) घेंवरा, मेंड़, उपवन, चमन।

क्यों दे० (अ०) किसलिये, काहे को, कैसा।

क्योंकर दे० (अ०) किस प्रकार, कैसा, क्यों।

क्योंकि दे० (अ०) इसलिये, इस कारण, किन्तु।

क्रकच तत्० (पु०) करपत्र, आरा, करांती।

क्रतु तत्० (पु०) यज्ञ याग, पूजा, वैदिककर्म विशेष। —**द्वेषी** (पु०) असुर, दानव, दैत्य, नास्तिक। —**ध्वंसी** (पु०) शिव, महादेव, इन्होंने दक्षप्रजापति का यज्ञध्वंस किया था। —**पुरुष** (पु०) नारायण, विष्णु। —**भुज** (पु०) देवता, अमर देव।

क्रतीमाली दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, किरवाली।

क्रन्दन तत्० (पु०) अश्रुपात, रोदन, कौंदना, रोना। —**कारी** (गु०) विलाप करनेवाला, रोदन करने वाला।

क्रन्दित तत्० (गु०) अनुयोचित, विलपित, रोदित।

क्रम तत्० (पु०) परिपाटी, रीति, वैदिक विधान, कल्पविधि, अनुक्रम, भांति, शक्ति, आक्रमण, चलन। —**क्रम** (पु०) शनैः २। —**भङ्ग** (पु०) अनियम, विधिहीनता, साहित्य का एक दोष। —**योग** (पु०) विधि नियोग। —**शः** (अ०) क्रम क्रम से, शनैः २। —**गत** (गु०) क्रमप्राप्त, क्रमान्वय, परम्परागत। —**नुयायी** (गु०) विहित व्यवस्थित, नियमानुकूल। —**नुसार** (अ०) क्रम क्रम से, नियमानुसार। —**न्वय** (गु०) क्रमानुयायी, यथाक्रम, क्रमागत।

क्रमुक तत्० (पु०) सुपारी, कसैली।

क्रमेलक तत्० (पु०) ऊँट, उष्ट्र।

क्रय तत्० (पु०) द्रव्य देकर वस्तु लेना, मूल्य द्वारा पदार्थ ग्रहण, मोल लेना, खरीदना। —**क्रीत** खरीदा हुआ। —**विक्रय** (पु०) लेन देन, व्यापार।

क्रयणीय तत्० (गु०) क्रेय, क्रेतव्य, लेने योग्य।

क्रयिक तत्० (पु०) क्रेता, लेने वाला, खरीददार

क्रयी तत्० (गु०) क्रयकर्ता, मोल लेने वाला।

क्रय्य तत्० (गु०) बेंचने के लिये बाजार में [illegible] हुई वस्तु।

क्रान्त तत्० (गु०) आक्रमित, पददलित, दबाया।

क्रान्ति तत्० (स्त्री०) आक्रमण, उपद्रव, अत्याचार गति, खगोल के बीच में किञ्चित् वक्र रेखा, सूर्य पथ, दीप्ति प्रकाश। —**वृति** (स्त्री०) मण्डल। —**मण्डल** (पु०) राशिचक्र।

क्रियमाण तत्० (गु०) व्यवहारान्वित, प्रारब्धकर्म तीन प्रकार के कर्मों का एक भेद।

क्रिया तत्० (स्त्री०) व्यवहार, कृत्य, कार्य कर्म, शपथ, व्यापार, श्राद्ध। —**न्वित** (गु०) कर्मान्वित। —**पटु** (गु०) चतुर, प्राज्ञ, दक्ष विदग्ध। —**पर** (गु०) कर्मठ, सुकर्मा, पटु। —**पाद** (पु०) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद, [illegible] शपथ करना। —**वसन्त** (गु०) पराजित। —**वान्** (गु०) कर्मोद्यत, कर्मउद्योगी, कर्म में नियुक्त। —**विशेषण** (पु०) अव्ययशब्द। —**रूप** (पु०) धातुरूप, आख्यात। —**लोप** (पु०) कर्म में विरक्ति, कर्मनिवृत्ति।

क्रीड़नक तत्० (पु०) खेल, खेलने की वस्तु।

क्रीड़ा तत्० (स्त्री०) खेल, केलि, कौतुक, नर्म परिहास। —**वन** (पु०) प्रमदवन, केलिकानन। —**मृग** (पु०) खेल के पशु, वानर आदि।

क्रीत तत्० (गु०) मूल्य द्वारा गृहीत, खरीदा हुआ —**पुत्र** (पु०) बारह प्रकार के पुत्रों में से एक पुत्र।

क्रुद्ध तत्० (गु०) क्रोधित, कोपान्वित।

राजा, शासक, रक्षक।—पाल (पु०) राजा, नृपति।—मण्डन (पु०) प्रजा, आदर्श पुरुष।
क्षितीश तत्० (पु०) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल।
क्षितीश्वर तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, महीश।
क्षिप्त तत्० (पु०) रखी हुई वस्तु, फैलायी गयी।
क्षिप्र तत्० (पु०) शीघ्र, उतावल, अविलम्ब।
क्षीण तत्० (पु०) निर्बल, दुर्बल, कृश, दुबला पतला।—अङ्ग (पु०) दुर्बलाङ्ग।
क्षीर तत्० (पु०) दूध, दुग्ध, पय।—कण्ठ (पु०) बच्चा, दूधमुहाँ बालक।—नीर (वा०) अभेद-भाव, गाढ़मैत्री।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र।
क्षीरस्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये कश्मीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का समय ७०० शाके अर्थात् ७७९ ई० से लेकर सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी जयापीड़ के गुरु थे। क्षीर-स्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं।
क्षीरी तद्० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, खीरी, मन।
क्षीरोद तत्० (पु०) क्षीर समुद्र।—तनया (स्त्री०) लक्ष्मी।
क्षुण्ण तद्० (पु०) चूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त चित्त।
क्षुत्पिपासा तद्० (स्त्री०) भूख प्यास।
क्षुद्र तत्० (पु०) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, थोड़ा, नीच, अधम।—घण्टिका (स्त्री०) कटिभूषण, करधनी।—ता (स्त्री०) अल्पता, नीचता, अधमता।
क्षुधा तत्० (स्त्री०) बुभुक्षा, खाने की इच्छा, भूख।—तुर (पु०) क्षुधा से व्याकुल, क्षुधापीड़ित।—(पु०) क्षुधापीड़ित, भूखा।—वन्त (पु०) भूखा, अत्यन्त भूखा।
क्षुधित तत्० (पु०) क्षुधान्वित, बुभुक्षित।
क्षुर तत्० (पु०) अस्तुरा, छुरा, खुर, मूंज।—क (पु०) गोखरू, वृक्ष विशेष।
क्षुल्लक तत्० (पु०) कौड़ी, नीच, क्षुद्र।
क्षेत्र तत्० (पु०) खेत, पुण्यभूमि, शरीर, तीर्थ, सिद्धस्थान, द्रव्य, प्रकृति, गृह, नगर।—ज (पु०) अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र।—ज्ञ (पु०) आत्मा, जीव, शरीर का देवता।—देवता (पु०) खेतों के अधिष्ठाता देवता।—फल (पु०) खेत की लम्बाई चौड़ाई।—पाल (पु०) देवता विशेष, खेत रक्षक, किसान।—विद् (पु०) कृषिशास्त्र वेत्ता।—जीव (पु०) कृषक, कर्षक।—धिप (पु०) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेष आदि, बारह राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार।
क्षेप तत्० (पु०) त्याग, फेंकना, छोड़ना, बीतना।
क्षेपक तत्० फेंकनेवाला, त्यागी, क्षेपकारक, ग्रन्थों में मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अशुद्ध अंश।
क्षेपण तत्० (पु०) प्रेरण, भेजना, पठाना, पठान।
क्षेम तत्० (स्त्री०) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मयाजन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र।—कृत् (पु०) कल्याण कारक मङ्गलकर्ता।—कर (पु०) शुभकर मङ्गल कर।—कुशल (पु०) आरोग्य मङ्गल।
क्षेमेन्द्र तत्० (पु०) ये कश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि हैं, कश्मीर के राजा अनन्त देव के समय में ये कश्मीर में वर्तमान थे। इनका समय ११ ग्यारहवीं शताब्दी निश्चित हुआ है। कम से कम इनके बनाये २९—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं। इनकी कवितायशक्ति और लौकिकज्ञान विलक्षण था। इनके ग्रन्थों में एक का नाम "अवदानकल्पलता" है। उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है।
क्षोणि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, अवनी,—श (पु०) क्षितिश, (पु०) मङ्गल।—प (पु०) राजा, नरपति।—देव (पु०) ब्राह्मण।
क्षोणी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।
क्षोभ तत्० (पु०) क्रोध, पश्चात्ताप, उत्साह-भङ्ग।
क्षौणी तत्० (स्त्री०) देखो क्षोणी।
क्षौद्र (पु०) मधु, शहद।—ज (पु०) मधु से उत्पन्न पदार्थ।

बिजली।—ध्वंसी (गु०) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला।—भङ्गुर (गु०) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी।

क्षणक तत्० (पु०) क्षण, काल।

क्षणप्रति तत्० (अ०) सतत, अनवरत, बराबर।

क्षणरुचि तत्० (स्त्री०) बिजली, चमक, प्रकाश।

क्षणिक तत्० (गु०) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल, स्थितिशील।

क्षत तत्० (पु०) घाव, चोट, व्रण, फोड़ा।—कास (पु०) कास, रोगविशेष।—ज (पु०) रक्त, शोणित, रुधिर, लोहू।—व्रत (गु०) नष्ट व्रत।

क्षति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपचय, क्षय।

क्षत्ता तत्० (पु०) सारथि, दरवान, ब्राह्मण के औरस से और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, दासी पुत्र, नियोग से उत्पन्न सन्तान।

क्षत्र तत्० (पु०) मुकुट, छाता, छतरी, शरीर, द्वितीय वर्ण।—बन्धु (पु०) निन्दित क्षत्रिय।—धारी (पु०) राजा, भूपाल।

क्षत्रिय तत्० (पु०) ब्रह्मा के बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, छत्री, राजन्य, दूसरा वर्ण।—ा (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।—ाणी (स्त्री०) क्षत्रिय स्त्री जाति, क्षत्रिय पत्नी।

क्षत्री तत्० (प०) देखो क्षत्रिय।

क्षत्रिन दे० (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षतरानी दे० (स्त्री०) क्षत्रिया।

क्षपणक तत्० (पु०) बुद्धविशेष, संन्यासी, उन्मत्त, राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न, इसका बनाया कोई ग्रन्थ अब तक न तो देखा गया है और न सुना ही गया है। अभीतक इसका भी पता नहीं लगा है, कि इस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था। परन्तु फुटकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं। यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खृष्टीय छठी शताब्दी माना जाता है।

क्षपा तत्० (स्त्री०) रजनी, रात्रि, निशा।—कर (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, विधु।—नाथ (पु०) चन्द्रमा।

क्षम तत्० (गु०) सक्त, योग्य, समर्थ, पात्र।—ता (स्त्री०) सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता।

क्षमना तद्० (क्रि०) सहना, क्षमा करना।

क्षमा तत्० (स्त्री०) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, रात्रि, दुर्गा, कृपा, मोचन, अपराधमुक्ति।—वान् (गु०) दयालु, क्षमा वाला, धैर्यशील, सहिष्णु।

क्षमापन तत्० (पु०) क्षमा कराना अपराध ... कराना।

क्षमिय दे० (गु०) क्षमा कीजिये।

क्षमिता तत्० (गु०) क्षमाशील, सहिष्णु।

क्षमी तत्० (गु०) क्षमिता, दयालु, सहनशील।

क्षय तत्० (पु०) रोगविशेष यक्ष्मारोग, घर, विनाश, प्रलय, अपचय।—काल (पु०) प्रलयकाल।—कास (पु०) यक्ष्माकास, राजरोग।—पक्ष (पु०) कृष्णपक्ष।—मास, मलमास, अधिमास।

क्षरण तत्० (पु०) स्रवण, स्राव, चूना, झरना।

क्षान्त तत्० (गु०) सहनशील, सन्तोषी, सहिष्णु, क्षमान्वित।

क्षान्ति तत्० (स्त्री०) शक्ति रहने पर भी किसी अपकार न करना।

क्षाम तत्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, निर्बल।—कण्ठ (गु०) सूखा कण्ठ, मन्दशब्द।

क्षार तत्० (पु०) खार, भस्म, नोना, लवणविशेष, समुद्रीलवण।—पत्र (पु०) बथुआ शाक विशेष।—भूमि (स्त्री०) खारी भूमि, ऊसर खेत।—मृत्तिका (स्त्री०) खारीमिट्टी।—श्रेष्ठ (पु०) ढांकवृक्ष, पलास।—सिन्धु (पु०) लवण समुद्र।

क्षालन तत्० (पु०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना।

क्षिति तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, अवनि।—ज (पु०) भौमासुर, मङ्गल ग्रह, धातु उपधातु आदि जो पृथिवी से निकलते हैं।—नाथ (पु०)

राजा, शासक, रक्षक।— पाल (पु०) राजा, नृपति।—मण्डन (पु०) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष।

क्षितीश तत्० (पु०) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल।

क्षितीश्वर तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, महीश।

क्षिप्त तत्० (गु०) रखी हुई वस्तु, फैलायी गयी।

क्षिप्र तत्० (पु०) शीघ्र, उतावल, अविलम्ब।

क्षीण तत्० (गु०) निर्बल, दुर्बल, कृश, दुबला पतला। —ाङ्ग (गु०) दुर्बलाङ्ग।

क्षीर तत्० (पु०) दूध, दुग्ध, पय,।—कण्ठ (पु०) बच्चा, दूधमुहां बालक।—नीर (वा०) अभेद-भाव, गाढ़मैत्री।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र।

क्षीरस्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये काश्मीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का समय ७०० शाके अर्थात् ७७६ ई० से लेकर सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी जयापीड़ के गुरु थे। क्षीर-स्वामी ने अमरकोश की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं।

क्षीरी तत्० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, खीरी, थन।

क्षीरोद तत्० (पु०) क्षीर समुद्र।—तनया (स्त्री०) लक्ष्मी।

क्षुण्ण तत्० (गु०) चूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त चित्त।

क्षुत्पिपासा तत्० (स्त्री०) भूख प्यास।

क्षुद्र तत्० (गु०) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, थोड़ा, नीच, अधम। —घण्टिका (स्त्री०) कटिभूषण, करधनी।—ता (स्त्री०) अल्पता, नीचता, अधमता।

क्षुधा तत्० (स्त्री०) बुभुक्षा, खाने की इच्छा, भूख। —तुर (गु०) क्षुधा से व्याकुल, क्षुधापीड़ित। —(गु०) क्षुधापीड़ित, भूखा।— वन्त (गु०) भूखा, अत्यन्त भूखा।

क्षुधित तत्० (गु०) क्षुधान्वित, बुभुक्षित।

क्षुर तत्० (पु०) अस्तुरा, छुरा, खुर, मूंज।—क (पु०) गोखरू, वृक्ष विशेष।

क्षुल्लक तत्० (पु०) कौड़ी, नीच, क्षुद्र।

क्षेत्र तत्० (पु०) खेत, पुण्यभूमि, शरीर, तीर्थ, सिद्धस्थान, द्रव्य, प्रकृति, गृह, नगर।—ज (पु०) अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र।—ज्ञ (पु०) आत्मा, जीव, शरीर का देवता।—देवता (पु०) खेतों के अधिष्ठाता देवता।—फल (पु०) खेत की लम्बाई चौड़ाई।—पाल (पु०) देवता विशेष, खेत रक्षक, किसान।—वित् (पु०) कृषिशास्त्र वेत्ता।—ाजीव (गु०) कृषक, कर्षक।—ाधिप (पु०) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेघ आदि, बारह राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार।

क्षेप तत्० (पु०) त्याग, फेंकना, छोड़ना, बीतना।

क्षेपक तत्० क्षेपकर्त्ता, त्यागी, क्षेपकारक, ग्रन्थों में मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अशुद्ध अंश।

क्षेपण तत्० (पु०) प्रेरण, भेजना, पठाना, पठान।

क्षेम तत्० (स्त्री०) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र।—कृत् (गु०) कल्याण कारक मङ्गलकर्त्ता।—कर (गु०) शुभकर मङ्गल कर।—कुशल (पु०) आरोग्य मङ्गल।

क्षेमेन्द्र तत्० (पु०) ये काश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि हैं, काश्मीर के राजा अनन्त देव के समय में ये काश्मीर में वर्तमान थे। इनका समय ११ ग्यारहवीं शताब्दी निश्चित हुआ है। कम से कम इनके बनाये २८—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं। इनकी कविताशक्ति और लौकिकज्ञान विलक्षण था। इनके ग्रन्थों में एक का नाम "अवदानकल्पलता" है। उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है।

क्षोणि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, अवनी,—ज (गु०) क्षितिज, (पु०) मङ्गल।—प (पु०) राजा, नरपति।—देव (पु०) ब्राह्मण।

क्षोणी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।

क्षोभ तत्० (पु०) क्रोध, पश्चात्ताप, उत्साह-भङ्ग।

क्षौणी तत्० (स्त्री०) देखो क्षोणी।

क्षौद्र (पु०) मधु, शहद।—ज (गु०) मधु से उत्पन्न पदार्थ।

बिजली।—ध्वंसी (गु०) अतिशय अस्थिर, क्षणमात्र ही में नष्ट होने वाला।—भङ्गुर (गु०) क्षण ही में नष्ट होने वाला, विनाशी।

क्षणक तत्० (पु०) क्षण, काल।

क्षणप्रति तत्० (अ०) सतत, अनवरत, बराबर।

क्षणरुचि तत्० (स्त्री०) बिजली, चमक, प्रकाश।

क्षणिक तत्० (गु०) क्षणमात्र स्थायी, अल्पकाल, स्थितिशील।

क्षत तत्० (पु०) घाव, चोट, व्रण, फोड़ा।—कास (पु०) कास, रोगविशेष।—ज (पु०) रक्त, शोणित, रुधिर, लोहू।—व्रत (गु०) नष्ट व्रत।

क्षति तत्० (स्त्री०) अपकार, अनिष्ट, हानि, अपचय, क्षय।

क्षत्ता तत्० (पु०) सारथि, दरवान, ब्राह्मण के औरस से और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष, दासी पुत्र, नियोग से उत्पन्न सन्तान।

क्षत्र तत्० (पु०) मुकुट, छाता, छतरी, शरीर, द्वितीय वर्ण।—बन्धु (पु०) निन्दित क्षत्रिय। —धारी (पु०) राजा, भूपाल।

क्षत्रिय तत्० (पु०) ब्रह्मा के बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, क्षत्री, राजन्य, दूसरा वर्ण।—ा (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।—ाणी (स्त्री०) क्षत्रिय स्त्री जाति, क्षत्रिय पत्नी।

क्षत्री तत्० (पु०) देखो क्षत्रिय।

क्षत्रिन दे० (स्त्री०) क्षत्रिय जाति की स्त्री।

क्षतरानी दे० (स्त्री०) क्षत्रिया।

क्षपणक तत्० (पु०) बुद्धविशेष, संन्यासी, उन्मत्त, राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न, इसका बनाया कोई ग्रन्थ अब तक न तो देखा गया है और न सुना ही गया है। अभी तक इसका भी पता नहीं लगा है, कि इस नाम का ग्रन्थ इसने बनाया था। परन्तु फुटकल श्लोक इसके नाम से पाये जाते हैं। यह विक्रम के समकालीन था, इसका भी समय खृष्टीय छठी शताब्दी माना जाता है।

क्षपा तत्० (स्त्री०) रजनी, रात्रि, निशा।—कर (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, विधु।—नाथ (पु०) चन्द्रमा।

क्षम तत्० (गु०) सक्त, योग्य, समर्थ, पात्र। —ता (स्त्री०) सामर्थ, शक्ति, योग्यता।

क्षमना तद्० (क्रि०) सहना, क्षमा करना।

क्षमा तत्० (स्त्री०) सहिष्णुता, सहन करने की शक्ति, पृथ्वी, अपराध-मार्जन, रात्रि, दुर्गा, कृपा, मोचन, अपराधमुक्ति।—वान् (गु०) दयालु, क्षमा करने वाला, धैर्यशील, सहिष्णु।

क्षमापन तत्० (पु०) क्षमा कराना अपराध-मार्जन कराना।

क्षमिय दे० (गु०) क्षमा कीजिये।

क्षमिता तत्० (गु०) क्षमाशील, सहिष्णु।

क्षमी तत्० (गु०) क्षमिता, दयालु, सहनशील।

क्षय तत्० (पु०) रोगविशेष यक्ष्मारोग, क्षई, विनाश, प्रलय, अपचय।—काल (पु०) प्रलयकाल। —कास (पु०) यक्ष्माकास, राजरोग।—पक्ष (पु०) कृष्णपक्ष।—मास, मलमास, अधिमास।

क्षरण तत्० (पु०) स्रवण, स्राव, चूना, झरन।

क्षान्त तत्० (गु०) सहनशील, सन्तोषी, धीर, सहिष्णु, क्षमान्वित।

क्षान्ति तत्० (स्त्री०) शक्ति रहने पर भी किसी का अपकार न करना।

क्षाम तत्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, निर्बल।—कण्ठ (गु०) सूखा कण्ठ, मन्दशब्द।

क्षार तत्० (पु०) खार, भस्म, नोना, लवणविशेष, समुद्रीलवण।—पत्र (पु०) बथुआ शाक विशेष। —भूमि (स्त्री०) खारी भूमि, ऊसर खेत। —मृत्तिका (स्त्री०) खारीमिट्टी।—श्रेष्ठ (पु०) ढांकवृक्ष, पलास।—सिन्धु (पु०) लवण समुद्र।

क्षालन तत्० (पु०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना।

क्षिति तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, मेदिनी, अवनि —ज (पु०) भौमासुर, मङ्गल ग्रह, धातु उपधातु आदि जो पृथिवी से निकलते हैं।—नाथ (पु०

राजा, शासक, रक्षक।—पाल (पु०) राजा, नृपति।—मण्डन (पु०) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष।

क्षितीश तत्० (पु०) राजा, नरेश, पृथ्वीपाल।

क्षितीश्वर तत्० (पु०) प्रभु, स्वामी, महीश।

क्षिप्त तत्० (पु०) रखी हुई वस्तु, फैलायी गयी।

क्षिप्र तत्० (पु०) शीघ्र, उतावल, अविलम्ब।

क्षीण तत्० (पु०) निर्बल, दुर्बल, कृश, दुबला पतला।—ङ्ग (पु०) दुर्बलाङ्ग।

क्षीर तत्० (पु०) दूध, दुग्ध, पय।—कण्ठ (पु०) बच्चा, दूधमुहां बालक।—नीर (वा०) अभेद-भाव, गाढ़मैत्री।—समुद्र (पु०) दूध का समुद्र।

क्षीरस्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संस्कृत कवि, ये कश्मीर के महाराज जयापीड़ के राज्यकाल में विद्यमान थे, राजतरङ्गिणी में जयापीड़ का समय ७०० शाके अर्थात् ७७६ ई० से लेकर सन् ८१३ ई० तक दिया गया है और यह भी लिखा है कि क्षीरस्वामी जयापीड़ के गुरु थे। क्षीर-स्वामी ने अमरकोष की टीका लिखी है तथा और भी व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे हैं।

क्षीरी तद्० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, खीरी, मन।

क्षीरोद तत्० (पु०) क्षीर समुद्र।—तनया (स्त्री०) लक्ष्मी।

क्षुण्ण तद्० (पु०) चूर्णीकृत, दुःखित, सन्तापयुक्त चित्त।

क्षुत्पिपासा तद्० (स्त्री०) भूख प्यास।

क्षुद्र तत्० (पु०) चावल के छोटे टुकड़े, अल्प, थोड़ा, नीच, अधम।—घण्टिका (स्त्री०) कटिभूषण, करधनी।—ता (स्त्री०) अल्पता, नीचता, अधमता।

क्षुधा तत्० (स्त्री०) बुभुक्षा, खाने की इच्छा, भूख।—तुर (पु०) क्षुधा से व्याकुल, क्षुधापीड़ित।—(पु०) क्षुधापीड़ित, भूखा।—वन्त (पु०) भूख्या, अत्यन्त भूखा।

क्षुधित तत्० (पु०) क्षुधान्वित, बुभुक्षित।

क्षुर तत्० (पु०) अस्तुरा, छुरा, खूर, मूंज।—क (पु०) गोखरू, वृक्ष विशेष।

क्षुल्लक तत्० (पु०) कौड़ी, नीच, क्षुद्र।

क्षेत्र तत्० (पु०) खेत, पुण्यभूमि, शरीर, तीर्थ, सिद्धस्थान, द्रव्य, प्रकृति, गृह, नगर।—ज (पु०) अपनी स्त्री से दूसरे के द्वारा उत्पादित पुत्र।—ज्ञ (पु०) आत्मा, जीव, शरीर का देवता।—देवता (पु०) खेतों के अधिष्ठाता देवता।—फल (पु०) खेत की लम्बाई चौड़ाई।—पाल (पु०) देवता विशेष, खेत रक्षक, किसान।—वित् (पु०) कृषिशास्त्र वेत्ता।—जीव (पु०) कृषक, कर्षक।—धिप (पु०) खेत के अधिष्ठाता देवता, मेष आदि, बारह राशियों के स्वामी, खेत का स्वामी ज़मींदार।

क्षेप तत्० (पु०) त्याग, फेंकना, छोड़ना, बीतना।

क्षेपक तत्० क्षेपकर्त्ता, त्यागी, प्रक्षेपकारक, ग्रन्थों में मिला हुआ भाग, ग्रन्थों का अतिरिक्त या अशुद्ध अंश।

क्षेपण तत्० (पु०) प्रेरण, भेजना, पठाना, पठान।

क्षेम तत्० (स्त्री०) कुशल, मङ्गल, भलाई, धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र।—कृत् (पु०) कल्याण कारक मङ्गलकर्त्ता।—कर (पु०) शुभकर मङ्गल कर।—कुशल (पु०) आरोग्य मङ्गल।

क्षेमेन्द्र तत्० (पु०) ये कश्मीर निवासी एक प्रसिद्ध कवि हैं, कश्मीर के राजा अनन्त देव के समय में ये कश्मीर में वर्तमान थे। इनका समय ११ ग्यारहवीं शताब्दी निश्चित हुआ है। कम से कम इनके बनाये २९—३० ग्रन्थ इस समय प्रसिद्ध हैं। इनकी कविताशक्ति और लौकिकज्ञान विलक्षण था। इनके ग्रन्थों में एक का नाम "अवदानकल्पलता" है। उसमें बौद्धमहात्माओं का हाल दिया गया है।

क्षोणि तत्० (स्त्री०) पृथिवी, मेदिनी, अवनी,—ग (पु०) क्षितिज, (पु०) मङ्गल।—प (पु०) राजा, नरपति।—देव (पु०) ब्राह्मण।

क्षोणी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि।

क्षोभ तत्० (पु०) क्रोध, पश्चात्ताप, उत्साह-भङ्ग।

क्षौणी तत्० (स्त्री०) देखो क्षोणी।

क्षौद्र (पु०) मधु, शहद।—ग (पु०) मधु से उत्पन्न पदार्थ।

क्षौम तत्० (पु०) अलसी, पट्टवस्त्र।

क्षौर तत्० (पु०) क्षुरकर्म, बाल बनाना, मुण्डन।

क्षौरक (पु०) तत्० क्षुरा, नाई, नापित।

क्ष्मा तत्० (स्त्री०) धरणी, धरा, पृथिवी।—तल (पु०) धरातल, भूतल पृथिवी तल।—भुक् (पु०) भूमिभोक्ता, राजा।—भृत् (०) राजा, नृपति, पर्वत, पहाड़।

ख

ख तत्० (पु०) आकाश, गगन मण्डल, शून्य, विन्दु, गृहछिद्र, देवलोक, इन्द्रिय, सुख।

खई तत्० (स्त्री०) मुर्चा, मैल, जङ्ग, लोहे की मलिनता।

खखारना दे० (क्रि०) खांसना, कफ़ निकालना।

खखोरना दे० (क्रि०) कुरचना, कोड़ना, खोदना।

खग तत्० (पु०) पक्षी, चिड़िया, आकाशगामी, वायु ग्रह, खचर।—केतु (पु०) गरुड़ध्वज, भगवान्, श्रीविष्णु।—नाथ—नायक (पु०) सूर्य, चन्द्रमा गरुड़।—नाह (पु०) वैनतेय, गरुड़, पक्षिराज।—पति (पु०) गरुड़, सूर्य, चन्द्रमा।—माला (स्त्री०) पक्षिसमूह।—हा (पु०) पक्षिघाती, गैंड़ा, बाज, व्याध।

खगेन्द्र तत्० (पु०) पक्षिराज, गरुड़।

खगेश तत्० (पु०) पक्षियों का स्वामी, गरुड़, चन्द्रमा।

खगोल तत्० (पु०) आकाश मण्डल।

खग्ग तद्० (पु०) शूर, वीर, बलवान्, तलवार।

खङ्गना दे० (क्रि०) कम होना, घटना, (पु०) न्यूनता, अल्पता।

खङ्कर दे० (पु०) झामा, लोहे का मैल, लोहचून।

खङ्गार या खकार दे० (पु०) थूक, कफ़।

खङ्गालना या खगारना दे० (क्रि०) धोना, वर्तन साफ़ करना, अचाँसना।

खङ्गैल (गु०) दँतैला, बड़े बड़े दाँत वाला।

खचना दे० (क्रि०) सम्मिलनकरना, जोड़ना, सटाना, रेखा करना।

खचर तत्० (पु०) आकाशगामी नभचर, पक्षि, नक्षत्र।

खच्चर दे० (पु०) पशुविशेष, गर्दभी और घोड़े के संयोग से उत्पन्न पशु।

खचाई दे० (स्त्री०) बनवाना, निर्मित कराना, खिचवाना, खिचवा कर।

खचा दे० (गु०) खचित, जड़ित, जड़ाऊ, जड़ा हुआ, खींचा हुआ।

खचित तत्० (गु०) जड़ित, जड़ाऊ, निर्मित।

खची दे० (स्त्री०) बनी, निर्मित।

खजरा दे० (गु०) मिलाहुआ, मिलावटी, मङ्गरा, बरहेरी, छप्पर के बीच का उठा हुआ भाग।

खजूर तद्० (पु०) छुहारे का एक भेद।

खजूरा दे० (पु०) गोजर, कनगोजर, विषैला कीट विशेष।

खजुरिया दे० (पु०) खजूर।

खज्योति तत्० (पु०) खद्योत, आकाश का प्रकाश, आकाश की ज्योति।

खञ्ज तत्० (गु०) लङ्गड़ा लूला, पङ्गु, विकलगति।—ता (स्त्री०) चरण का अभाव, पङ्गुत्व, लूलापन।

खञ्जन तत्० (पु०) खञ्जरीट, पक्षी विशेष, खड़ैचा, खड़लीच।

खञ्जर दे० (पु०) कटारी, अस्त्रविशेष, दाव।

खञ्जरी दे० (स्त्री०) वाद्यविशेष, खनड़ी।

खञ्जरीट तत्० (पु०) खञ्जन पक्षी।

खट दे० (स्त्री०) खाट, खट्वा, खट खट ध्वनि।

खटक दे० (पु०) खटका, शङ्का, सन्देह, संशय।

खटकना दे० (क्रि०) बजाना, झगड़ना, लड़ना, सन्देह हो जाना, शब्द होना, चिन्ता होना।

खटका तत्० (पु०) सन्देह, भय, सन्देह, भय, डर।

खटकाना दे० (क्रि०) आहट देना, शब्द करना, ध्वनि के द्वारा सूचना, चलना, ठुकराना।

खटखटाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, ठोंकना, खट खट ध्वनि करना।

खटछप्पर दे० (पु०) छप्पर खट, खाट का एक भेद, शय्या।

खटना दे० (क्रि०) चलना, ठहरना, टिक रहना। —खटाहिं (क्रि०) स्थिर रहते हैं।

खटपट दे० (पु०) झगड़ा, लड़ाई, विरोध।

खटमल दे० (पु०) खटकीरा, मत्कुण।

खटराग दे० (पु०) अनमेल, विरोध, बेजोड़।

खटवा तद्० (स्त्री०) खाट, खट्वा, पलङ्ग, शय्या।

खटाई दे० (स्त्री०) खट्टापन, अम्लता, अमचूर।

खटाका दे० (पु०) भयङ्कर ध्वनि, धड़ाका, चटाका।

खटापटी दे० (स्त्री०) अनबन, विरोध, बैर, झगड़ा, लड़ाई।

खटाव दे० (पु०) नांव बांधने का खूटा।

खटास दे० (पु०) खटाई, खट्टापन, चार पैर का जन्तु विशेष।

खटिका तद्० (स्त्री०) लड़कों के लिखने की खड़ी, खेलखड़ी।

खटिया दे० (स्त्री०) खाट, शय्या।

खटिक दे० (पु०) जाति विशेष, कूंजड़ा, बहेलिया।

खटोला दे० (पु०) पालना, मंझा, छोटी खटिया।

खट्ट दे० (स्त्री०) खाट, खट्वा।

खट्टा दे० (पु०) अम्ल, अम्लत, तुरसाई, अम्लता।

खट्टिक दे० (पु०) खटीक, बहेलिया।

खट्टू दे० (पु०) बनिहार, मजूर, चाकर।

खट्वा तद्० (स्त्री०) खाट, पलंग, खटवा।

खड़ दे० (स्त्री०) पलाल, पयाल, तृण।

खड़क दे० (पु०) गोशाला, गोष्ठ, गौ के रहने का स्थान।

खड़कना दे० (क्रि०) झनझनाना, बजाना, अव्यक्त ध्वनि।

खड़कड़ाना दे० (क्रि०) ठकठकाना, दांत पीसना, खड़ खड़ ध्वनि।

खड़खड़िया दे० (स्त्री०) पालकी, डोली,

खड़लीच तद्० (पु०) खञ्जरीट, खञ्जन।

खड़बड़ाहट दे० (स्त्री०) ध्वनि विशेष, आहट, सूचना विशेष।

खड़सान दे० (पु०) शान, पत्थर विशेष, अस्त्र तेज़ करने का पत्थर।

खड़ा दे० (पु०) उठा, सीधा, ऊपर को उठा हुआ।

खड़ाऊं दे० (पु०) पादुका।

खड़ी दे० (स्त्री०) श्वेतवर्ण मृत्तिका।

खड़िया दे० (स्त्री०) दुधिया मिट्टी, खेलखड़ी।

खड़ुवा दे० (पु०) बाला, वलय, कड़ा।

खड़े खड़े दे० (अ०) शीघ्र, तत्क्षण, तुरन्त, बेगि।

खड़ैचड़ दे० (पु०) पक्षिविशेष, खञ्जरीट, खञ्जन।

खड्ग तत्० (पु०) असि, तलवार, गैंड़ा, जन्तुविशेष।

खण्ड तत्० (पु०) टुकड़ा, खांड़, अध्याय, भाग, हिस्सा।—खण्ड (पु०) टुकड़ा टुकड़ा, भाग का भाग।

खण्डन तत्० (पु०) दूषण, तोड़ना, छिन्न भिन्न करना, अशुद्ध प्रमाणित करना।

खण्डना तद्० (स्त्री०) दूषण देना, खण्डन करना, काटना।

खण्डनार्थ तत्० (पु०) खण्डन करने के लिये, काटने [illegible] लिये।

खण्डप्रलय तत्० (पु०) छोटा प्रलय, किसी देश या खण्ड का नाश, महाकलह।

खण्डपरशुः तत्० (पु०) शिव, महादेव।

खण्डर दे० (पु०) उजाड़, वीरान, गड्हा, गड़ा, कतवार खाना,

खण्डरना दे० (क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना, खण्डन करना, काटना।

खण्डशः तत्० (अ०) खण्ड खण्ड, टुकड़ा टुकड़ा।

खण्डहर दे० (पु०) उजड़, फूटा टूटा मकान या गांव, वीरान।

खण्डित तत्० (पु०) तिरस्कृत, छेदित, भिन्न, अपूर्ण काटा गया।—करना बात काटना, खण्डन करना।

खण्डिता तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष, पति की अन्यासक्ति के कारण दुःखिता, यथा दोहा—

"पति तन औरै नार के रति के चिन्ह निहार;
दुःखित होय सो खण्डिता बरनत सुकवि विचार"।
—रसराज

खतरानी दे० (स्त्री०) खत्री जाति की स्त्री।

खतान दे० (स्त्री०) जमाख़र्च, लेखा, हिसाब।
खत्तिल दे० (पु०) पोस्त।
खतियान दे० (पु०) लेखा बही, हिसाब की बही।
खत्ता दे० (पु०) अन्न रखने का गढ़ा, या खत्ती।
खत्ती दे० (स्त्री०) अन्न रखने का छोटा खत्ता।
खत्री दे० (पु०) जाति विशेष, पञ्जाब के रहनेवाली क्षत्रधारी जाति।
खदिर तत्० (पु०) खैर, कत्था।
खदेड़ दे० (पु०) दौड़, अहेर।
खदेड़ना दे० (क्रि०) दौड़ाना, भगाना, रगेदना।
खद्योत तत्० (पु०) जुगनू, पटबीजना।
खन तद्० (पु०) खण्ड, भाग।
खनक तत्० (पु०) खोदने वाला मूँसा, चूहा।
खनकना दे० (क्रि०) खनखन शब्द करना, ठनठन ध्वनि।
खनन तत्० (पु०) विदारण, खानकरण, गढ़ा खोदना, खोदना।
खनना तद्० (क्रि०) खोदना, फोड़ना, खनन करना, गोड़ना।
खना तत्० (स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिःशास्त्र-विदुषी स्त्री, यह विक्रमादित्य के नवरत्न सभा के एक रत्न वराह मिहिर की स्त्री थी, यह मिहिर वररुचि के पुत्र नहीं थे किन्तु इनके पिता का नाम वराह था। वराह भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, खना ने लङ्का में राक्षसों से ज्योतिर्विद्या पढ़ी थी, इस विद्या में वह इतनी चढ़ी बढ़ी थी कि समय समय पर उसके पति और श्वशुर को भी नीचा देखना पड़ता था।
खनि तत्० (स्त्री०) धातुओं का उत्पत्तिस्थान, आकर, खान।
खनित्र तत् (पु०) अस्त्र विशेष, खोदने का अस्त्र, खन्ती।
खन्दान दे० (पु०) गर्त, गड़हा, गढ़ा, खाकड़।
खन्ती दे० (स्त्री०) खनित्र।
खपड़ा दे० (पु०) ठीकरा, खपरा, खपरे के टुकड़े।
खपत दे० (पु०) बिकाव, बिक गया, बिक्री।
खपती दे० (स्त्री०) कटत, बिकाव, बिक्री।
खपना दे० (क्रि०) बिकना, बिक्री होना, घटना, कम होना।
खपरा दे० (पु०) गृहाच्छादन की सामग्री, खपरा।
खपरी दे० (स्त्री०) घड़ा आदि का फूटा भाग, छोटा खपरा।
खपरैल दे० (पु०) खपरा से बना हुआ, खपरा निर्मित।
खपाच दे० (स्त्री०) चैला, काठ या बांस का टुकड़ा।
खपाना दे० (क्रि०) बेंचना, बिकवाना, समाप्त करना, घटाना।
खपित दे० (गु०) बिका हुआ।
खपुर तत्० (पु०) सुपारी का पेड़, खर्ग, आकाश।
खपुष्प तत्० (पु०) असम्भव, आकाश पुष्प, अप्रसिद्ध, मिथ्या।
खप्पर तद्० (पु०) साधुओं का पात्र विशेष, खोपड़ी, कपाल।
खबर दे० (स्त्री०) संवाद, समाचार, हाल चाल।
खबसा दे० (पु०) कौंदा, चहला, पङ्क।
खब्बा दे० (गु०) बौंयाहत्था।
खभार दे० (पु०) क्षोभ, मोह, हलचल।
खभारू दे० (पु०) पेटकी जलन, घबराहट, खड़बड़ाहट।
खम तद्० (पु०) ताल, भुजा, खम्भ।—ठोंकना ताल ठोंकना, पहलवानों की एक प्रकार की मुद्रा।
खमस दे० (पु०) निर्वात, वायुरहित, ग्रीष्म, उमस ऊष्म।
खमीलन दे० (पु०) थकावट, क्लान्ति, अवसाद श्रान्ति।
खम्बा तद्० (पु०) थम्भा, थुनि।

खम्भा तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्बा, थाम्भा।

खर तद्० (पु०) तीक्ष्ण, तेज़, कड़ा, तृण, घास, गर्दभ, उत्तम, एक राक्षस का नाम, यह रामायण की प्रसिद्ध सूपनखा का भाई था। सुमाली राक्षस की कन्या विश्रवामुनि से ब्याही गयी, उसीसे खर उत्पन्न हुआ, चौदह हज़ार राक्षसों को लेकर यह रावण की आज्ञा से जनस्थान की रक्षा करता था। सूपनखा के नाक कान कटने के बाद यह अपनी सेना के साथ रामचन्द्र जी से लड़ने गया, वहीं अपनी सेना और दूषण आदि वीर सेनापतियों के साथ मारा गया।

खरक दे० (पु०) गोशाला, खड़क।

खरकना दे० (क्रि०) खसकना, गिरना, स्खलित होना, धमकाना, भगाना।

खरखर दे० (गु०) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, द्रुत।

खरजा दे० (पु०) पटाव, पक्का बनाया हुआ, पक्की सड़क।

खरछरा दे० (गु०) खड़खड़, भड़भड़, दरदरा।

खरपा दे० (पु०) खराऊं, उर्मा, स्त्रियों के पहनने का जूता।

खरपत्र तद्० (पु०) सुगन्धित पौधा, मरुवा।

खरबर दे० (स्त्री०) खड़बड़ ध्वनि, खड़बड़।

खरभर दे० (स्त्री०) क्षोभ, अवसाद, खलबली, उथल पुथल।

खरमञ्जरी तद्० (स्त्री०) कंग, अपामार्ग।

खरयष्टिका तद्० (स्त्री०) खिरहटी, औषधि विशेष।

खरल दे० (पु०) औषध कूटने का पत्थर का पात्र।

खरबूज दे० (पु०) बड़ा खरबूजा, एक प्रकार का फल।

खरहरा दे० (पु०) घोड़ा आदि को साफ़ करने का कहा।

खरहा दे० (पु०) शशक, खरगोस।

खरहारना दे० (क्रि०) बुहारना, भाड़ना, बटोरना।

खरही दे० (पु०) कुन्दहा, टाल, ढेर, राशि।

खरा दे० (गु०) चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

खराई दे० (स्त्री०) सत्यता, सचाई, उत्तमता।

खराका दे० (पु०) धड़ाका, खड़खड़ाहट।

खरारि तद्० (पु०) खरदैत्य के शत्रु, श्रीरामचन्द्र।

खराहन्द दे० (स्त्री०) जली घास, दुर्गन्ध।

खरिक दे० (पु०) गोशाला, सड़क।

खरी दे० (स्त्री०) उत्तम, अच्छा, चोखी, भली, खड़ी, गर्दभी।

खरीद दे० (पु०) क्रय, कीनना।

खरीदा दे० (गु०) क्रयकिया, मूल्य देकर लिया।

खरीददार दे० (गु०) क्रेता, क्रयकर्ता।

खरे दे० (गु०) उत्तम, अच्छे, खड़े।

खरोंट दे० (स्त्री०) बकोट, खसोट।

खरोंचना दे० (क्रि०) नोचना, खसोटना, बकोटना।

खर्ज तद्० (पु०) षड्ज, राग उच्चारण का स्थान विशेष।

खर्जूर तद्० (पु०) खजूर, छुहारा।

खर्जूरिका तद्० (स्त्री०) पिण्डी खर्जूर, पिण्ड खजूर।

खर्जूरी तद्० (स्त्री०) मुसली, औषध विशेष।

खर्पर तद्० (पु०) खप्पर, खोंपरि, शिर, कपाल।

खर्व तद्० (पु०) कुबेर का धन विशेष, संख्या विशेष 10000000000 (गु०) क्षुद्र, वामन, छोटा, ह्रस्व।

खर्बूजा दे० (पु०) देखो, खरबूज।

खर्रा दे० (पु०) पाण्डुलिपि, मसविदा, टट्टर, खरखरा, चिट्ठा, खसरा।

खर्राटा दे० (पु०) सोने में घुर्राना, गाढ़निद्रा, शीघ्रता।

खल तद्० (गु०) दुष्ट, नीच, अधम, भूमिस्थान, दपटी से अन्न निकालने का स्थान, खलिहान, क्रूर, दुर्जन, औषधि कूटने का पात्र।—कथा (स्त्री०)

धूर्तों की कथा, चापलूसी बात ।—ता (स्त्री०) दुष्टता, नीचता, धूर्तता, क्रूरता ।

खलङ्गा दे० (पु०) उपवन, रमणीय बाग, मनोहर-वन ।

खलखल दे० (पु०) खलबल, खड़खड़, नदी के वेग की ध्वनि ।

खलड़ा दे० (पु०) चमड़ा, छाल, खाल ।

खलबल दे० (पु०) हलचल, कुतूहल, उत्सुकता, अधीरता ।

खलबलाना दे० (क्रि०) उफनना, ऊपर उठना, उबलना ।

खलबली दे० (स्त्री०) भीति, भय से घबड़ाहट ।

खला तत्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, अधमा, वेश्या, पातुर, पतरिया ।

खलान दे० (पु०) खलसमूह ।

खलार दे० (स्त्री०) नीची भूमि, नीचान ।

खलारि तत्० (पु०) नारायण, विष्णु, सज्जन ।

खलारु दे० (पु०) निचान, खलार ।

खलियान दे० (पु०) खता, खलियान, खल, अन्न साफ़ करने क स्थान ।

खलियाना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, रिक्त करना, ख़ाली करना ।

खलिहान दे० (पु०) खलियान ।

खली तद्० (स्त्री०) खल, नीच, अधम, सरसों तिल आदि का तैल रहित चूर्ण ।—कार (पु०) अपकार अनिष्ट ।

खलीन तत्० (पु०) कविका, लगाम ।

खलीता दे० (स्त्री०) थैली, पत्र, चिट्ठी, पत्री ।

खलु तत्० (अ०) निश्चय निःसन्देह, संशय रहित ।

खलेल दे० (पु०) फुलेल, गढ़ा ।

खलै दे० (क्रि०) अखरना, भारी मालूम होना, (पु०) दुष्टों को, खलों को, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है ॥

खल्लिव तद्० (पु०) चन्दला, गञ्जा, खल्वाट ।

खल्वाट तत्० (पु०) जिसके सिर पर बाल न हों, गञ्जा, चन्दला ।

खवा दे० (पु०) कन्धा, स्कन्ध, कांध ।

खश तत्० (पु०) एक प्रकार का सुगन्धित तृण, उशीर, देशविशेष, यह देश पर्वत प्रधान है और भारतवर्ष के उत्तर की ओर है । यहां के अधिवासी को भी खश कहते हैं ।

खसकन्त दे० (स्त्री०) चम्पत होना, गुम होना, भाग जाना ।

खसकना दे० (क्रि०) नीचे आना, गिरजाना, हटना, एक स्थान से हट जाना, चाहे नीचे या ऊपर ।

खसकाना दे० (क्रि०) सरकाना, हटाना, बढ़ाना ।

खसखस दे० (पु०) पोस्ता का दाना, उशीर, खश ।

खसखसा दे० (पु०) गला सूखना, गले की करकराहट ।

खसना दे० (क्रि०) धसना, गिर पड़ना, नीचे आना ।

खसटा दे० (पु०) बही, घाटा, खूटी, खुजली ।

खसाना दे० (क्रि०) गिराना, पदच्युत्पद करना ।

खसी दे० (स्त्री०) गिरी, सरकी, नीचे आयी ।

खसोटना दे० (क्रि०) निकालना, अन्याय से किसी का धन लेना, नोचना ।

खस्फटिक दे० (पु०) काच, सूर्य, मणि, आकाश की मणि ।

खांग दे० (पु०) बड़ा दाँत, नोकीली वस्तु ।

खांच दे० (पु०) कीचड़, काँदा ।

खांचा दे० (पु०) टोकरा ।

खांड दे० (पु०) शक्कर, गुड़, चीनी ।

खांडना दे० (क्रि०) छाटना, कूटना, आघात द्वारा अन्नादि को साफ़ करना, निस्तुषीकरण ।

खांडा दे० (पु०) खड्ग विशेष, अस्त्रविशेष, तेगा —खांडे की धार पर चलना (वा०) दुष्कर न्याय, अतिशय कठिन, उचित मार्ग पर चलना ।

खांसना तद्० (क्रि०) खोंखना, खखारना, खीखना, ठों ठों करना ।

खांसी तद्० (स्त्री०) रोग विशेष, कासरोग, खोंखी ।

खाइ दे० (क्रि०) खाकर, भोजनकर ।

खाइय दे० (क्रि०) खाइये, भोजन कीजिये ।

खाई दे० (क्रि०) खा लो, भोजन कर लिया। (स्त्री०) किले के या नगर के चारों ओर की नहर, गर्त, गड़हा, खात, नाला।

खाऊ दे० (पु०) पेटू, पेटार्थी, भोजनलोलुप, आलसी, खा जाने वाला।

खाग दे० गैंडे के सींग।

खाज दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, कण्डू।

खाजा दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई।

खाञ्चा दे० (पु०) काठ का बड़ा पात्र।

खाट तद्० (स्त्री०) खटुवा, पलङ्ग, चारपाई।

खाण्डव तद्० (पु०) वन विशेष, इन्द्र का वन, जिसे अर्जुन ने जलाया था और उसे जलाकर अग्नि का अजीर्णरोग दूर किया।

खात तद्० (पु०) पोखरा, गढ़ा, गड़हा, खाद, गोबर।

खातक तद्० (पु०) ऋणी, धरता, अधमर्ण।

खाता दे० (पु०) एक साथ बँधे हुए पत्र, हिसाब, बही, लेन देन।

खातिर दे० (पु०) आदर, कारण, लिये।

खातेऊ दे० (क्रि०) खाजाता, खाता, खालेता, मैं खालेता, खाते हुए भी, रामायण में इस शब्द का प्रयोग किया गया है।

खाती दे० (पु०) जाति विशेष, बढ़ई।

खाद दे० (पु०) गोबर, कतवार, सड़ीवस्तु मल आदि।

खादक तद्० (पु०) खाने वाला, खवैया, ऋणी, कर्ज़ी, अधमर्ण।

खादन तद्० (पु०) भोजन, भक्षण।

खादि दे० (पु०) वस्त्र विशेष।

खाद्य तद्० (पु०) भोजनीय वस्तु, भक्षणीय, खाने योग्य वस्तु।

खान तद्० (स्त्री०) खानि, आकर, आधार, उद्भव स्थान।

खानखर दे० (पु०) गर्त, सुरङ्ग, खोह।

खाना दे० (पु०) भोजन, भक्षण, आहार।

खानिक तद्० (पु०) खानि सम्बन्धी, खानि का, आकर का।

खानि तद्० (स्त्री०) खान, उत्पत्तिस्थान, आकर।

खानी तद्० (स्त्री०) खान, आकर, खोदी।

खाप दे० (स्त्री०) तलवार की खोल, म्यान, कोष।

खाबड़ दे० (पु०) ऊँच नीच, ऊबड़खाबड़।

खार तद्० (पु०) क्षार, लोना, सज्जी मिट्टी।

खारका दे० (पु०) छुहारा।

खारय दे० (क्रि०) खाली करें, खार निकालें, साफ करें।

खारा दे० (पु०) लोना, क्षार, तीखा।

खारी दे० (स्त्री०) कड़ुवा निमक, सीसानोन।

खारुवा दे० (पु०) एक प्रकार का लाल मोटा कपड़ा।

खाल दे० (स्त्री०) चमड़ा, धोकनी, भस्त्रा, चर्म।
—खींचना (क्रि०) शरीर पर का चमड़ा उतार लेना, खलड़ी उधेरना।

खाली दे० (पु०) रीता, रिक्त, शून्य, खावली।

खालु दे० (पु०) देह का चर्म, खोदना।

खाले दे० खोदे, पोला करें, नीचे, गढ़हे में।

खिंचावट दे० (पु०) ऐंचावट, तनाव, तानना, ऐंठना।

खिंदड़ी दे० (स्त्री०) योगी का आसन, योगी की खटिया।

खिचड़ी दे० (स्त्री०) खिचरी, मिश्रित भोजन विशेष, कृशर।

खिचना दे० (क्रि०) तानना, ऐंचना।

खिचाय दे० (क्रि०) खिचवाकर, तना कर, [इस शब्द का प्रयोग ब्रजभाषा में होता है]

खिचाव दे० (पु०) तनाव, खैंचाव, ऐंचाव।

खिजलाना दे० (क्रि०) कुपित होना, क्रुद्ध होना, सताना, चिढ़ाना।

खिजाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध करना, कुपित करना, दुख देना।

खिझ दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खिसियाहट।

खिझाना, खिझलाना दे० (क्रि०) खिजना, खिझाना।

खिड़की दे० (स्त्री०) झरोखा, गवाक्ष, गौख, दरीची।

खिण्डाना दे० (क्रि०) बिथराना, बिखेरना, छितराना।

खिन्न तत्० (गु०) खेदित, विषाद प्राप्त, उदास, दुःखित, दुःखी, दुःखिया।

खिरनी दे० (स्त्री०) फल विशेष, खिन्नी।

खिल दे० (पु०) आगल, अर्गल, धन्नी।

खिलखिलाना दे० (क्रि०) खूब ज़ोर से हंसना, ठट्ठा करना, हंसना।

खिलजाना दे० (क्रि०) विकसित होना, प्रफुल्ल होना, हर्षित होना।

खिलना दे० (क्रि०) विकसित होना, फूलना, पुष्पित होना।

खिलाईदाई दे० (स्त्री०) धात्री, धाय, खिलाने पिलाने वाली, प्रतिपालन करने वाली।

खिलाऊ दे० (गु०) खिलाने वाला, फूंकने वाला, अधिकव्ययी, अपव्ययी।

खिलाड़, खिलाड़ी दे० (पु०) चञ्चल, खेलने वाला, आवारा, उच्छृङ्खल।

खिलाना दे० (क्रि०) भोज करना, खिलाना।

खिलैया दे० (पु०) खेल करने वाला, खिलाड़, खिलाड़ी।

खिलौना दे० (क्रि०) गुड़िया, पुतली, खेलने की वस्तु।

खिल्ली दे० (स्त्री०) हंसी, ठठोली, परिहास, ठट्ठा, धान का लावा।

खिल्लू दे० (गु०) खिलाड़, खिलाड़ी।

खिसकना दे० (क्रि०) चम्पत होना, सरकना, चलाजाना, भागना।

खिसकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, टालना, सरकाना।

खिसना दे० (क्रि०) नम्र होना, नवना, झुकना, शरणागत होना।

खिसलना दे० (क्रि०) सरकना, फिसलना, बिछलना, गिरना।

खिसलहा दे० (गु०) चिकना, फिसलहा, चिक्कण।

खिसलाहट दे० (स्त्री०) खीझना, क्रोध, कोप।

खिसाना दे० (क्रि०) हटना, टालना, अनुत्साहित होना, क्रुद्ध होना।

खिसाय रहना दे० (क्रि०) अप्रसन्न होजाना, हिचकना, टलना।

खिसियाना दे० (क्रि०) चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खिसाना।

खिसयानि दे० (स्त्री०) लज्जित होना, लज्जा, लजाई।

खिसियाहट दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खीस, खीज।

खीच दे० (स्त्री०) अप्रसन्नता, अनबन।

खीज दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप।

खीजना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, कुपित होना।

खीन तद्० (गु०) क्षीण, दुर्बल, दुबला, पतला।

खीर तद्० (पु०) क्षीर, पायस, तसमई।

खीरा दे० (पु०) फलविशेष, ककड़ी।

खीरी दे० (स्त्री०) मेवाविशेष, पिस्ता।

खील, खीला दे० (स्त्री०) धान का लावा, मड़ुवाई लावा।

खीली दे० (स्त्री०) पान की बीड़ी।

खीस दे० (स्त्री०) टोटा, घाटा, न्यूनता, कमी, क्रोध, दांत का निकास।

खीसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, खीस निकालना।

खीसा दे० (पु०) खलीता, घाटा, उतरा, सरका, जेब।

खीह दे० (स्त्री०) रेह, सज्जी मट्टी।

खुंदलना दे० (क्रि०) कुचलना, रौंदना, पदाहत करना।

खुख दे० (गु०) अकिञ्चन, दरिद्र, दीन, कङ्गाल, भिक्षुक।

खुजलाना दे० (क्रि०) खजुआना, सुहलाना, सुहराना, चुलचुलाना।

खुजलाहट दे० (स्त्री०) खुजली, गुदगुदी, सुरसुरी।

खुजली दे० (स्त्री०) खाज, कण्डु।

खुफराहा दे० (गु०) कृपण, अर्ध पिशाच, कीचड़।

खुटकना दे० (क्रि०) सन्देह करना, कुतरना, संशयित होना।
खुटका दे० (पु०) सन्देह, शङ्का, व्यग्रचित्तता।
खुटाई दे० (स्त्री०) दुष्टता, अधमता, नटखटी।
खुटाना दे० (क्रि०) बराबर करना, तुल्य करना, समान करना, निःशेष होना, क्षीण होना, नष्ट होना।
खुट्टी दे० (स्त्री०) पूंजी, रोकड़, मूलधन।
खुडला दे० (पु०) पक्षियों के रहने का स्थान, मुर्गों का वास, बेहड़।
खुण्डला दे० (पु०) कोटर, वृक्ष का छिद्र, खोखर।
खुती दे० (स्त्री०) थैली, तोड़ा, रुपया रखने की कोथली।
खुदवाना दे० (क्रि०) कोड़वाना, माटी निकलवाना, गुड़वाना।
खुदी दे० (स्त्री०) कणिका, कणा, चावल का टुकड़ा।
खुद्द दे० (स्त्री०) अन्तर, व्यवधान।
खुनस, खुनुस दे० (पु०) क्रोध, कोप, रोष, लाग।
खुनसाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, डाह रखना, रिसाना, खिमाना।
खुनसी दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, रिसाहा।
खुन्दलना दे० (क्रि०) खुरचना, पैर से दबाना।
खुबना दे० (क्रि०) चुभना, विंधना, पैठना, प्रभाव जमाना।
खुवार दे० (गु०) बिगड़ा हुआ, नष्ट।
खुभना दे० (क्रि०) खुबना, चुभना, बिधना।
खुभी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण, कान का गहना।
खुर तत्० (पु०) गाय के पैर का नख।
खुरचना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना।
खुरण्ड दे० (पु०) खूंटी, पपड़ी।
खुरपा दे० (पु०) घास छीलने का अस्त्र, खुर्पा, खुर्पी।
खुरमा दे० (पु०) खजूर, एक प्रकार की मिठाई।
खुर्राट दे० (गु०) बहुत पुराना, जीर्ण, चालबाज़।
खुरिया दे० (पु०) घुटने की चकती, चोंटू।
खुरेरना दे० (क्रि०) खदेड़ना, भगाना, रगेदना, खेदना।
खुलना दे० (क्रि०) प्रकट होना, बिखरना, बादलों का बितर बितर होना।
खुलवाना दे० (क्रि०) खोल देना, छुड़ाना, मुक्त करना।
खुलेबन्द दे० (वा) प्रकट रूप से, प्रकाश रूप से, निर्भीकता।
खुल्लमखुल्ला दे० (वा) प्रकाश भाव से, निर्भीकता से।
खुश्की दे० (गु०) निर्जल मार्ग, सूखा, नीरस, पैदल मार्ग।
खुसुर, फुसुर दे० (पु०) कानाकानी।
खूंच दे० (स्त्री०) नाड़ी विशेष, जानु की नाड़ी।
खूंट दे० (पु०) कोन, कोना, कान का मैल।
खूंटना दे० (क्रि०) सङ्कुचित करना, सङ्कीर्ण करना, औषध विशेष, उद्यत होना।
खूंटला दे० (पु०) औषध विशेष।
खूंटा दे० (पु०) थम्भा, थम्भला, खम्भा, काठ का टेकना।
खूंटी दे० (स्त्री०) छोटा खूंटा।
खूंदना दे० (क्रि०) पैरों से खोदना, टाप मारना, खोदना, रौंदना, कुचलना।
खूभा दे० (पु०) तलछट, मल।
खूटना दे० (क्रि०) तोड़ना, खसोटना, उखाड़ना, उधेड़ना।
खूटी दे० (स्त्री०) खुटी, पपड़ी।
खूड दे० (पु०) रेघारी, अङ्क, खाई, खात।
खूद या खुद दे० (पु०) स्वयं, आप आप, रली, सीढ़ी।
खूदराना दे० (क्रि०) दुल्की चलना।
खूमना दे० (क्रि०) पुराना होना, जीर्ण होना।
खेकसा दे० (पु०) चिन्ह, पहिचान, लक्षण।
खेचर तत्० (पु०) आकाशगामी, ग्रिध, पक्षी, विद्याधर।

खेचारी तत्० (पु०) विद्याधर, पक्षी, नक्षत्र।

खेट तत्० (पु०) ग्रह, पक्षी, नीच, डर, अहेर, नक्षत्र, विद्याधर।

खेटक तत्० (पु०) ग्रामविशेष, छोटा नगर, गदा, बलराम की गदा, अहेर, अस्त्रविशेष, ढाल, कुत्सित, निन्दित।

खेटिक तत्० (पु०) बधिक, व्याध, बहेलिया।

खेड़ा दे० (पु०) गाव, ग्राम, पुरवा।

खेड़ी दे० (स्त्री०) लोहविशेष, कान्तिसार, इस्पात।

खेढी दे० (स्त्री०) गर्भावरण, झिल्ली।

खेत तद्० (पु०) क्षेत्रभूमि, पुण्यभूमि, पावनभूमि, समरभूमि, कृषिभूमि।—**छोड़ना** युद्ध से भाग जाना।—**रहना** लड़ाई में हत होना, मारा जाना।

खेतल तत्० (पु०) आकाशमण्डल।

खेती तद्० (स्त्री०) किसान का कर्म, जोताऊ, कृषि, कास्तकारी।—**बारी** (वा०) काम धन्धा, खेती का काम।

खेद तत्० (पु०) सन्ताप, दुःख, शोक, पश्चात्ताप, पछतावा, मनस्ताप।—**ान्वित** (गु०) शोकान्वित खेदयुक्त, दुःखी।

खेदना दे० (क्रि०) हाँकना, भगाना, सताना।

खेदा दे० (पु०) हाथी पकड़ने का स्थान।

खेदित तत्० (गु०) दुःखित, पीड़ित, क्लेशित, सताया गया।

खेप दे० (स्त्री०) भार, बोझ, जो एक बार उठाया जा सके, एक बार में उठाकर कहीं ले जाया जाय, जैसे "तुम कितनी खेपें लाये," "तुम एक दिनमें कै खेपें ढो सकते हो।"—**हारना** (व) हानि उठाना।

खेपा दे० (गु०) उन्मत्त पागल, वातुल, बकवादी।

खेरा दे० (पु०) ऊजड़ गाव, डीह।

खेरी दे० (स्त्री०) लौहविशेष, हल, हर।

खेल तद्० (पु०) क्रीड़ा, विहार, कौतुक, मनोरञ्जन, विनोद।

खेलना दे० (क्रि०) खेल करना, क्रीड़ा करना, विहार करना।

खेवक, खेवट तद्० (पु०) माझी, डाँडी, कर्णधार, मल्लाह।

खेवटिया दे० (पु०) नौका चलाने वाला, मल्लाह खेवट।

खेवना दे० (क्रि०) डाँड मारना, नाव चलाना।

खेवा दे० (पु) नाव का शुल्क, नाव की उतराई वा भाड़ा।

खेसारी दे० (स्त्री०) अन्नविशेष।

खेस, खेसड़ा दे० (पु०) कपड़ा विशेष।

खेह दे० (स्त्री०) राख, धूली, खाक, भस्म।

खैंच दे० (स्त्री०) उखाड़ा, ऐंच, टान।

खैंचना दे० (क्रि०) ऐंचना, कसना, टानना, तानना चित्र बनाना।

खैंचाखैंच दे० (वा०) विरोध, लड़ाई, खैंचातानी।—**ी** झगड़ा, विद्वेष।

खैर दे० (पु०) कथ, कत्था, खदिर (अ०) सूचक अव्यय, अस्तु।

खैरा दे० (पु०) भूरा रङ्ग, मछली विशेष।

खैला दे० (पु०) दोहान, बछड़ा, नया बैल।

खोआ दे० (पु०) कुरची, अधौटा दूध, दूध विकार विशेष।

खोआना दे० (क्रि०) हार जाना, ठगा जाना, भूल जाना।

खोई दे० (स्त्री०) छिलका, ऊख की सीठी।

खोखना दे० (क्रि०) काखना, खखारना, कफ निकालना।

खोऊ दे० (गु०) उड़ाऊ, खर्चीला, अपव्ययी।

खोखी दे० (पु०) खाँसी, कास, रोग विशेष।

खोच दे० (स्त्री०) चीर, खोंप, किसी चीज के का फट जाना, छेद होना।

खोचना दे० (क्रि०) घुसेड़ना, ठेलना।

खोचा दे० (पु०) चीरा, भराव, ठेस।

खोडकल दे० (पु०) गड़हा, गढ़ा, कोटर।

खोता दे० (पु०) खोंधा, घोंसला, नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान।

खोपा दे० (पु०) गाद, ताव, जूड़ा, अन्न रखने के लिये तृण निर्मित गृह विशेष।

खोंसना दे० (क्रि०) ठोसना, भरना, घुसेड़ना।
खोखला दे० (पु०) पोला, छूछा, शून्य, रिक्त, थोथा।
खोखा दे० (पु०) रुपये चुकी हुई हुण्डी, बालक, बच्चा।
खोज दे० (पु०) टोह, ढूंढना, अनुसन्धान करना, अन्वेषण, यत्न, चिन्ह।
खोट दे० (स्त्री०) दुर्गुण, अवगुण, भूल।
खोटा दे० (गु०) दुर्गुणी, झूठा, पापी, दुराचारी।
खोटाई दे० (स्त्री०) अधर्म, दुराचार, दुर्गुण।
खोण्डला दे० (गु०) पोपला, अदन्त, दाँत रहित।
खोडस तद्० (गु०) सोलह, सोरह, संख्या विशेष, १६।
खोद दे० (पु०) खोंच, खुदाव, झोंकड़, भोंक, कटा हुआ, खोदा हुआ।
खोदना दे० (क्रि०) खनन, गाड़ना, फोड़ना, गोड़ना।
खोदर दे० (गु०) खड़खड़, ऊंच नीच, अड़बड़, दपट, दौड़।
खोदरा दे० (गु०) दरदरा, अड़बड़।
खोदे दे० (क्रि०) खोद डाले, उखाड़े, नष्ट कर डाले, निर्मूल कर डाले।
खोना दे० (क्रि०) गँवा देना, उड़ा देना, नष्ट करना, नाशना।
खोप दे० (पु०) खोंच, छेद, छिद्र, चीर।
खोपरा दे० (पु०) नारियल की गरी, फल विशेष, श्रीफल।
खोपरी दे० (स्त्री०) सिर की हड्डी, कपाल।
खोपा दे० (पु०) मल, मैल, खूद।
खोंवार दे० (पु०) सूअरों के रहने का घर।
खोया दे० (पु०) नारियल का गोला, जूड़ा।
खोरि दे (स्त्री०) दोष, दुर्गुण, गली, सङ्कुचित मार्ग।
खोरे दे० (गु०) दुर्गुणी, दुष्ट, लङ्गड़ा।
खोल दे० (स्त्री०) खोलना, म्यान, रजाई, दोहर, शरीर।
खोलड़ा दे० (पु०) कोटर, खोखला, खोह, गड़हा, गढ़ा, गर्त।
खोलना दे० (क्रि०) छोड़ देना, मुक्त करना, फैलाना उघेड़ना।
खोली दे० (स्त्री०) भोगल, चोंगी, नलिका, अस्त्र रखने की वस्तु।
खोवै दे० (क्रि०) हरावै, विनाश करे, नष्ट करे।
खोह दे० (पु०) गुफा, गुहा, कन्दरा।
खौड़ दे० (पु०) तिलक, चन्दन करण, खौर।
खौर दे० (पु०) तिलक विशेष, लहरियादार चन्दन, यथा—"खौर भाल तव सोहत नीके"।
खौरा दे० (पु०) पशुओं का रोग विशेष, जिससे उनके बाल गिर जाते हैं।
खौलना दे० (क्रि०) उबलना, उफनना, अधिक उष्ण होना।
ख्यात तद्० (गु०) ख्यातियुक्त, कीर्तिमान्, प्रसिद्ध, यशस्वी।—व्य (गु०) प्रतिष्ठा योग्य, प्रशंसा योग्य।
ख्याति तद्० (स्त्री०) प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, नाम, यश, कीर्ति।—घ्न (गु०) दुर्नाम जनक, अपवादी। —मत्व (पु०) यशस्विता, विभूति, प्रतिष्ठा।
ख्यात्यापन्न तद्० (गु०) कीर्तिमान्, यशस्वी, प्रतिष्ठित।
ख्यापक तद्० (पु०) प्रकाशक, व्यञ्जक, द्योतक, फैलाने वाला।
ख्यापन तद्० (पु०) प्रकाश, विज्ञापन, प्रसिद्ध होना।
ख्याल दे० (पु०) कौतुक, स्वांग, खेल, तमाशा।
ख्रीष्ट दे० (पु०) ईसा, क्राइस्ट।
ख्रीष्टियान दे० (पु०) ईसाई।

ग

ग यह व्यञ्जन का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण कण्ठ से होता है।
ग तद्० (पु०) गीत, गणेश, गन्धर्व।
गइया दे० (स्त्री०) गाय, गौ, धेनु।

गई दे० (क्रि०) जानना क्रिया का स्त्रीलिङ्ग रूप, गमन किया, जाती रही।

गईबहोर दे० (गु०) गयी को लौटा ले आने वाला, बिगड़ी बात को बनाने वाला।

गठकटा (पु०) चोर, जेबकतरा, स्तेन।

गँवाऊ (गु०) उड़ाने वाला, खोने वाला, नाश करने वाला।

गवाँना (क्रि०) खोना, भ्रष्ट करना, विस्मृत होना, भूलना।

गवार (पु०) गवइया, जनपद, मूर्ख, असमझ।

गवी (स्त्री०) गाव, ग्राम, देहात, ग्राम्य।

गकार तत्० (पु०) कवर्ग का तीसरा वर्ण ग अक्षर।

गगन तत्० (पु०) आकाश, व्योम, शून्य, नभ। **—कुसुम** (पु०) खपुष्प, असम्भव, मिथ्या। **—गामी** (गु०) आकाशगामी, नक्षत्र आदि। **—चारी** (गु०) आकाशगामी। **—विहारी** (गु०) चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पक्षी। **—मण्डल** (पु०) आकाश मण्डल, खगोल।

गगनभेड़ दे० (पु०) हड़गीला, गिद्ध, गीध।

गगरी दे० (स्त्री०) घट, घड़ा, कलश।

गङ्ग तद्० (स्त्री०) गङ्गा नदी, देवनदी। **—कवि** हिन्दी में एक प्रसिद्ध कवि।

गङ्गा तत्० (पु०) जान्हवी, भागीरथी, सुरनदी, स्वनाम प्रसिद्ध नदी। **—जल** (पु०) गङ्गा का जल गङ्गोदक। **—जलिया** (पु०) गङ्गाजल स्पर्श करके शपथ खाने वाला। **—दास** (पु०) एक संस्कृत कवि का नाम, इन्होंने छन्दोमञ्जरीनामक छन्द शास्त्र की एक पुस्तक बनायी है, गोपालदास वैद्य के ये पुत्र थे, इनकी माता का नाम सन्तोषा था। छन्दोमञ्जरी के अतिरिक्त अच्युतचरित्र, कृष्णशतक और सूर्यशतक नाम के और भी ग्रन्थ बनाये हैं। ये कवि १२ शताब्दी के इधर ही के मालूम होते हैं यह कवि वैष्णव थे। **—धर** (पु०) शिव महादेव, समुद्र, इस नाम का एक संस्कृत कवि, गोविन्दपुर के शिला लेख से मालूम होता है कि सन् ११२१ ई० में यह कवि वर्तमान था। इसके प्रपितामह का नाम दमोदर, पितामह का नाम चक्रपाणि, पिता का नाम मनोरथ, चाचा का नाम दशरथ और भाइयों का नाम महीधर तथा पुरुषोत्तम था। यह नहीं कहा जा सकता कि विल्हण के समकालीन यही गङ्गाधर हैं या दूसरे। **—प्राप्ति** (पु०) गङ्गालाभ, मरण, मृत्यु। **—यमुनी** (गु०) श्वेत कृष्ण वर्ण का मिश्रण, दो वर्ण की धातुओं का सम्मिश्रण। **—सागर** (पु०) गङ्गा और समुद्र का सङ्गमस्थान, तीर्थ विशेष। **—स्नान** (पु०) गङ्गा की स्नान। **—सुत** (पु०) भीष्म, कार्तिकेय। **—स्नायी** (गु०) गङ्गास्नान शील।

गङ्गीभूत तत्० (गु०) पवित्र, पावन।

गङ्गोदक तत्० (पु०) गङ्गाजल।

गच दे० (पु०) पक्की छत, स्थूल, मोटा।

गचमीना दे० (गु०) ठोगना, छोटा मोटा।

गचपच दे० (स्त्री०) भीड़भाड़, गोलमाल, घनत उलट पलट।

गच्छ तद्० (पु०) स्थान, बौद्धों का स्थान, म विशेष, स्वीकुल, न्यास वन्धक वृक्ष।

गज तत्० (पु०) कुञ्जर, हाथी, दो हाथ का परिमा वास्तुस्थानभेद, धातु आदि जारने के लिये गढ़ा **—गमनी** (स्त्री०) हाथी के समान धीरे धी चलने वाली स्त्री, गजगौनी। **—गाह** (पु०) हा घोड़े का आभूषण। **—गौनी** (पु०) गजगामिनी **—चिभंटी** (पु०) इन्द्रवारुणी, इनारुन **—च्छाया** (स्त्री०) श्राद्ध का नियमितकाल, आ श्विन मास की मघा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी। — (स्त्री०) गज समूह, हाथी का यूथ। **—दन्त** (पु हस्ति सम्बन्धीदांत, हाथी के दाँत। **—दान** (पु हाथी का मद जल, हाथी के मस्तक से निक जल। **—पति** (पु०) हाथियों के यूथ का स्वाम राजा, गजस्वामी। **—पाटल** (पु०) कज्जल, काज सुरमा। **—पाल** (पु०) हाथीपाल, महाव फीलवान। **—पिप्पली** (स्त्री०) पीपर विशे गजपीपर। **—पुङ्गव** (पु०) मुख्य गज, प्रध हाथी। **—पुट** (पु०) औषध पकाने के लिये प्रकार का गढ़ा। **—भिषक्** (पु०) सोंठि। **—मु** (पु०) हाथी, गणेश। **—मुक्ता** (स्त्री०) हाथी मस्तक का मध्यस्थ मोती। **—मोती** (स्त्री०

गजमुक्ता।—यूथ (पु०) हाथियों की टोली, हाथियों का झुण्ड, हस्ति समूह।—राज (पु०) बड़ा हाथी।—वदन (पु०) गजमुख, हस्तिमुख, गणेश।—ग्रणी (पु०) बड़ा हाथी, ऐरावत।—ा ध्यक्ष (पु०) हाथी का अधिपति, हस्तिस्वामी।—ानन (पु०) गणेश, गजवदन।—ा रि (पु०) सिंह मृगराज, वृक्षविशेष।—ाशन (पु०) पीपल वृक्ष, पीलुवृक्ष।—ास्य (पु०) लम्बोदर, गणेश।—ाह्वय (पु०) नगर विशेष, हस्तिनापुर।—ेन्द्र (पु०) ऐरावत, दिग्गज।

गजर तद्० (पु०) गाजर, एक मूल विशेष।

गजरा तद्० (पु०) गाजर के पत्ते, मोटी फूलों की माला।

गजाना दे० (क्रि०) सड़ाना, पचाना, गन्ध देना, पसाना।

गजबुसा तद्० (पु०) कदली, कदलीवृक्ष, केले का पेड़।

गजा दे० (पु०) खुर्मा, खजूर, मिष्टान्न विशेष।

गज दे० (पु०) रोग विशेष, सिर का एक रोग जो सिर में होता है। राशि, ढेर, समूह, हाट, बज़ार, खज़ाना।

गजना दे० (क्रि०) यातना, वेदना, पीड़ा, दुःख, ग्लानिसूचक वाक्य।

गंजा तद्० (पु०) जिसके शिर में बाल न हों, रोग विशेष, गांजा, मद्यगृह।

गंजित दे० (पु०) अपमानित, कलङ्कित, दुःखित, लांछित, पीड़ित।

गंझा दे० (पु०) जय में प्राप्त धन, जीता धन।

गझीन दे० (पु०) घन, सघन, घना, निविड़।

गडयल दे० (पु०) परिहास में इस नाम से पुकारना, बानर का दूसरा नाम।

गटपट दे० (पु०) उलट पुलट, एकत्रित करना, खभड़ा।

गटी दे० (स्त्री०) समूह, राशि, यूथ, यथा—"सब जान फटी दुख की दुपटी, कपटी न रहै जहँ एक घटी, निघटी रुचि, मीच घटी हू घटी जगजीव यतीन की छूटी तटी, अब ओघ की बेरी कटी विकटी, निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुँ ओरन नाचत मुक्ति नटी, गुण धून जटी जटि पञ्चवटी।" —रामचन्द्रिका

गट्टा दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई, गुल्फ।

गट्ठा दे० (पु०) बड़ी गठरी, प्याज का गट्ठा।

गठन तद्० (पु०) निर्माण करण, रचन।

गठना तद्० (क्रि०) जुड़ना, मिलना, सम्मिलित होना, एकत्रित होना, परस्पर प्रेमी बनना।

गठर दे० (पु०) बड़ा गांठ, गठिला।

गठरी दे० (स्त्री०) गांठ, मोट, गठर, बोझ, भार।

गठवाना दे० (क्रि०) गठाना, गांठ बाँधना, बंधवाना, जूता गठवाना।

गठाना दे० (क्रि०) गठवाना, मिलवाना, पैबन्द लगवाना।

गठित तद्० (पु०) रचित।

गठिया दे० (स्त्री०) गठरी, ग्रन्थि, गाँठ, वात रोग विशेष, ग्रन्थियुक्त।

गठिहा दे० (पु०) गाठोंवाला, ग्रन्थियुक्त।

गठीला दे० (पु०) मस्त, पुष्ट, हृष्टपुष्ट, हट्टाकट्टा, सण्डमुसण्ड।

गठुवा दे० (पु०) कपड़ों की गाँठ, सूत की ग्रन्थि।

गडंथ दे० (पु०) गण्डा, टोना, एक खेल का नाम।

गडक दे० (पु०) एक प्रकार की मछली।

गड़गड़ाना दे० (क्रि०) गरजना, गर्जन करना, मेघ या नगारे की ध्वनि।

गड़गूदड़ दे० (पु०) चिथड़ा, फटा, पुराना कपड़ा।

गड़न दे० (पु०) धसान, दलदल, गढ़न, निर्माण, मूर्ति, आकार।

गड़ना दे० (क्रि०) धसना, धसजाना, रहजाना, पैठना, बाधक होना, छिदना।

गड़बड़ दे० (वा०) गटपट, उलट पुलट।

गड़बड़ा दे० (पु०) खलबली, मड़ोरा, मिलाव।

गड़बड़ाहट दे० (स्त्री०) खड़बड़ी, भय, डर, भीति, अनियमित, अनिश्चित।

गड़रिया दे० (पु०) मेषपाल, भेड़िहारा, जातिविशेष, भेड़ पालनेवाली जाति।

गड़लवण दे० (पु०) सांभर नोन।

गड़हा दे० (पु०) गर्त, गढ़ा, ताल।

गड़ाना दे० (क्रि०) बिधना, चुभाना, खोभना।

गड़ियार दे० (गु०) मगरा, मचला, अड़हठी, आलसी, अनुद्योगी, जड़ ।
गड़ी दे० (क्रि०) धसी, डूबी, धस गयी, डूब गयी ।
गडुआ दे० (पु०) टोंटीदार लोटा, हथहर ।
गडुर तद्० (पु०) गरुड़ पक्षीराज, वैनतेय ।
गडुवा दे० (पु०) जलपात्र विशेष, कलश, गडुआ ।
गड़रिया दे० (पु०) गड़रिया, चरवाहा, मेषपाल, भेड़ बकरी आदि पालने वाला ।
गड़ोना दे० (क्रि०) छेदना, खोंसना, चुभाना बिधना ।
गड्डालिका तद्० (स्त्री०) देखा देखी कार्य में प्रवृत्ति होना, अविचारित कर्म में प्रवृत्ति, भेड़िया धसान ।
गड्डी दे० (स्त्री०) आंटी, पुला, दसदस्ते काग़ज़ ।
गढ़ दे० (पु०) दुर्ग, कोट, क़िला, गढ़ी, राजमहल ।
गढ़न दे० (पु०) बनावट, रचना, निर्माण ।
गढ़ना दे० (क्रि०) निर्माण करना, बनाना, रचना, ठोंकना, सुधारना ।
गढ़नि दे० (स्त्री०) बनावट, रचना, गढ़ का बहु वचन ।
गढ़वार दे० (गु०) मोटा, स्थूल, गाढ़ा ।
गढ़वाल दे० (गु०) क़िले का रक्षक, गढ़ रक्षक, गाढ़ा, मोटा, एक नगर का नाम जो उत्तर भारत में है ।
गढ़ा दे० (पु०) गढ़हा, गर्त ।
गढ़ाई दे० (स्त्री०) गढ़ने की मजूरी, गढ़ने की बनाई, बनाने का परिश्रम ।
गढ़िया दे० (स्त्री०) भाला, बरछी, बल्लम, कुन्त, प्रास ।
गढ़ी दे० (स्त्री०) छोटा कोट, गढ़ ।
गढ़ेला दे० (गु०) गढ़हा, खड़हर, गढ़ा, गढ़ा हुआ, खोदा हुआ गढ़ा ।
गढ़ैया दे० (पु०) छोटा पोखर, तलाई ।
गण तद्० (पु०) समूह, थोक, जाति, झुण्ड, यूथ, रुद्र का अनुचर, प्रमथ रुद्र का गण, सेना, संख्या विशेष, २९ रथ, ८१ घोड़े, १३५ सिपाही इस सेना में होते हैं । छन्दःशास्त्र के आठ गण, १ भगण, २ जगण, ३ सगण, ४ रगण, ५ यगण, ६ तगण, ७ मगण, ८ नगण, इनका लक्षण ऐसा है "आदि मध्य अवसान में भजस होंहि गुरु जान यरत होंहि लघु क्रमहिं सो मन गुरु लघु सब मान ।
गणक तत० (पु०) गणना करने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, ज्योतिर्वेत्ता, गणनाकारी ।
गणता तत्० (स्त्री०) गण का धर्म, समूहत्व, पञ्चायतिता, धूर्तमण्डली ।
गणदेवता तत्० (पु०) मिलितदेवता, सहतदेवता, मिले हुए अनेक देव ।
गणन तत्० (पु०) संख्या करण ।
गणना तत्० (स्त्री०) संख्या, गिनना, पक्षपात ।
गणनाथ, गणनायक तत्० (पु०) गणस्वामी, गणेश ।
गणपति तत्० (पु०) गणेश, समाजपति, सन्निमिलित संस्था के मालिक ।
गणराऊ तद्० (पु०) गणराज, गणनाथ ।
गणाधिप तत्० (पु०) शिवपुत्र, गणेश, गजानन ।
गणिका तत्० (स्त्री) वाराङ्गना, वेश्या, पतुरिया पातुर, स्वैरिणी, कुलटा ।
गणित तत्० (पु०) अङ्कविद्या, ज्योतिःशास्त्र गणपात, गणना किया हुआ ।—कार (पु०) गणक, ज्योतिर्वेत्ता, अङ्कवेत्ता ।—ज्ञ (पु०) ज्योतिषी ।
गणेश तत्० (पु०) शिवपुत्र, हेरम्ब, लम्बोदर, नन, ये पार्वती के पुत्र हैं, इनका सम्पूर्ण देवों का सा परन्तु मुख हाथी का है । शिवजी आज्ञा से पार्वती ने पुण्यक व्रत का अनुष्ठान विष्णु को प्रसन्न किया, विष्णु ने पुत्र के वरदान दिया, जिसके फल से गणेश का हुआ, गणेश जी को देखने के लिये सभी उनमें शनिश्चर भी आये, शनिश्चर अपनी दृष्टि महिमा जानते थे इसी कारण गणेश को देखने उनकी इच्छा न थी, परन्तु पार्वती ने अनुरो किया, अतएव उन्होंने भी अनिच्छित अपनी उठायी, उनके देखते ही गणेश का मस्तक उड़ गया, देवताओंने विष्णु की, स्तुति विष्णु ने हाथी का माथा जोड़ दिया ।

गण्ड तत्० (पु०) कपोल, गाल, गजकुम्भ ।—माला (स्त्री०) रोगविशेष, कण्ठमाला ।—स्थल (पु०) गाल, कपोल ।

गण्डक तत्० (पु०) गेंडा, पशुविशेष, दुम्मा, संख्या-प्रभेद ।

गण्डकी तत्० (स्त्री०) स्वनामख्यात नदी, जो विहार में है और दक्षिण से आई है, जिसमें शालिग्राम निकलते हैं ।

गण्डशैल तत्० (पु०) पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर, छोटा पहाड़ ।

गण्डा दे० (पु०) संख्या विशेष, चारकौड़ी, चारपैसा चार रुपया, चार ग्राम आदि, तन्त्र मन्त्र किया हुआ सूत, भैरव का प्रसाद, गण्डा ।

गण्डासा दे० (पु०) फरसा, टांगी, अस्त्र विशेष ।

गण्डासी दे० (स्त्री०) छोटा गड़ांसा ।

गण्डिका तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, गण्डकी ।

गण्डि दे० (पु०) रोग विशेष, गण्डमाला ।

गण्डी दे० (स्त्री०) घेरा, रेखा आदि के द्वारा सीमा-बद्ध स्थान ।

गण्डीर तत्० (पु०) मेढ़ुंड वृक्ष, गन्ना, ऊख ।

गण्डेरी तद्० (स्त्री०) ऊख के टुकड़े, कटे हुए ऊख के गुल्ले ।

गण्डुल तद्० (पु०) प्रफुल्ल, विकसित ।

गण्डूष तत्० (स्त्री०) पानी का कुल्ला ।

गण्य तत्० (पु०) गणनीय, गणनार्ह, माननीय, संख्या करने योग्य ।

गत तत्० (पु०) अतीत, व्यतीत, विज्ञात, हत, नष्ट, मत, गति, गमन ।—क्लम (पु०) विश्रान्त, श्रम-रहित ।—त्रप (पु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित ।—प्रभ (पु०) प्रभाहीन, निष्प्रभ ।—वित्त (पु०) गत विभव, निर्धन, दरिद्र ।—वैर (पु०) निरु-पद्रव, शत्रुरहित, अजातशत्रु ।—व्यथ (पु०) अक्लेश, क्लेश रहित, सुखी ।—ा गत (पु०) याता-यात, गमनागमन, आना जाना, पक्षियों का गति-विशेष ।—ाधि (पु०) सुखी ।—ानुगतिक (पु०) अनुकरण करने वाला, अनुकारी, पिछलग्गू । —ायुः (पु०) व्यतीत आयु, जीवन का अव-सानकाल, मरणासन्न, मुमुर्षु ।—ार्थ (पु०) अभि-प्राय सिद्ध, एक से दूसरे का निष्प्रयोजन होना ।

गत दे० (स्त्री०) चालचलन, दशा, व्यवहार, यथा:— "तेरी गत लखि न परे दयानिधि" ।

गति तत्० (स्त्री०) गमन, यात्रा, मार्ग, पथ, दशा, ज्ञान, अवस्था, दया, व्यवहार ।—क्रिया (स्त्री०) विलम्ब, कालक्षेप, शिथिलता ।—विहीन (पु०) गति हीन, गमन शक्ति रहित ।

गते दे० (अ०) धीरे धीरे, शनैः शनैः, हौले हौले, धीमे धीमे ।

गद तत्० (पु०) व्याधि, रोग, वाक्य, भाषण, श्रीकृष्ण के एक भाई का नाम ।

गदका दे० (पु०) पटा, दण्ड विशेष ।

गदकारी तत्० (पु०) रोग उत्पन्न करने वाला (पदार्थ) ।

गद्गद तद्० (पु०) आनन्द, प्रफुल्लता, हर्ष, हर्ष से शब्द न निकलना ।

गदबदा दे० (पु०) मोटा, स्थूल, तुन्दिल, तोंदैला ।

गदला दे० (पु०) मैला, धमोला, मलिन, कलुषित ।

गदलाई दे० (स्त्री०) मैलापन, धमोलापन, कालुष्य ।

गदहा तद्० (पु०) गधा, गर्दभ, खर, (तत् पु०) वैद्य, रोग मिटाने वाला ।

गदशत्रु तत्० (पु०) वैद्य, औषध ।

गदा तत्० (स्त्री०) लोहे का अस्त्र विशेष, मोटे का मुग्दर या लाठी ।—धर (पु०) विष्णु, नारायण, श्रीकृष्ण ।—युध (पु०) यष्टि, लाठी, गदा ।—युद्ध (पु०) युद्ध विशेष ।—रि (पु०) रोगशत्रु, रोगनाशक वैद्य ।

गदाग्रज तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, भगवान् ।

गदित तत्० (पु०) उक्त, कथित, भाषित, कहा हुआ ।

गदी तत्० (पु०) विष्णु, नारायण, (पु०) गदा विशिष्ट, रोगयुक्त, रोगी ।

गदेल दे० (पु०) शिशु, बच्चा, मा का दूध पीने वाला बच्चा, कौंरे का बच्चा ।

गदेला दे० (पु०) मोटा बिछौना ।

गद्गद तत्० (पु०) अति अस्पष्ट वक्ता, आनन्द या दुःख से अव्यक्त कथन, आनन्द, हर्ष।

गद्दर दे० (पु०) अर्ध पक्व, अधपका, गदरा।

गद्दी दे० (स्त्री०) तकिया, विछौना, मोटा विछौना, सिंहासन।

गद्य तत्० (पु०) छन्द रहित वाक्य, प्रबन्ध।

गधा दे० (पु०) गदहा, गर्द्दभ, खर।

गन तद्० (पु०) समूह, यूथ, सजीवों का समूह।

गनई तद्० (स्त्री०) गिनता है, गिनती करता है।

गनना तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती, विवाह में वरवधू का ग्रह योग देखना।

गन्तव्य तत्० (पु०) गमन योग्य, सुगम, जाने का स्थान।

गन्दना दे० (पु०) कन्द मूल विशेष।

गन्ध तत्० (पु०) नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की बास, आमोद, सौरभ, घ्राण, सम्बन्ध, प्रणय।—**गर्भ** (पु०) वेलवृक्ष।—**द्रव्य** (पु०) सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य।—**द्विप** (पु०) उत्तम हस्ति।—**पुष्प** (पु०) चन्दन और फूल।—**प्रिय** (पु०) घ्राणलुब्ध, गन्धग्राही।—**वणिक्** (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, अत्तार।—**मादन** पर्वत विशेष, वानर सेनापति।—**राज** (पु०) चन्दन, सुगन्धित फूल।—**वह** (पु०) वायु, पवन। **वाह** (पु०) पवन, कस्तूरिया हरिन, नाक, नासिका।—**सार** (पु०) चन्दन, श्रीखण्ड।

गन्धर्व तत्० (पु०) स्वर्गगायक, यक्ष, देवयोनि-विशेष, घोड़ा, पशुयोनि विशेष, कस्तूरीमृग, गायक।—**विद्या** (स्त्री०) गीत, वाद्य, नृत्य।—**विवाह** (पु०) अष्टविवाह का एक भेद, उत्सव-हीन विवाह।—**वेद** (पु०) सङ्गीतविद्या, गीत शास्त्र।—**नगर** (पु०) अलका, गन्धर्वों का वास-स्थान, असत्य नगर, मिथ्या नगर, कल्पित नगर।

गन्धाना दे० (क्रि०) गधाता है, गन्ध देता है, बसाता है।

गन्धान तद्० (पु०) सुवर्ण, सोना।

गन्धाश्मा तत्० (पु०) गन्धक, उपधातु विशेष।

गन्धार तत्० (पु०) रागिनी विशेष, देश विशेष, कन्धार।

गन्धारी तद्० (स्त्री०) देखो गान्धारी, बाएँ नेत्र से निकलने वाला श्वास, यथाः—

> गन्धारी वामाक्ष निवासी,
> हयजिह्वा दक्षिण दिग्वासी"
>
> —ज्ञानतत्त्व

गन्धि तत्० (स्त्री०) गन्ध, बास, गन्धक।

गन्धिका तत्० (स्त्री०) आह्लूवेर, गन्धक।

गन्धकारिणी तत्० (स्त्री०) लजारु, औषधि विशेष लाजवन्ती।

गन्धिपर्ण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्तों में गन्ध हो, छतिवन वृक्ष।

गन्धिलुब्ध तत्० (पु०) सुगन्धाभिलाषी, सुगन्ध लोलुप।

गन्धी दे० (पु०) सुगन्धि वस्तु विक्रेता, अत्तार।

गप दे० (पु०) गपशप, इधर उधर की बातें, निरर्थक बातें, झूठी बातें, गपोड़ा।

गपकना दे० (क्रि०) खाजाना, शीघ्रता से खाजाना, निगल जाना।

गपड़ दे० (पु०) मिलावट, व्यर्थ, निरर्थक।—**चौथ** (वा०) अज्ञात, अनिश्चित, अनियमित।

गपशप दे० (वा०) झूठी सच्ची बात, मनोरञ्जन की बात।

गप्पी दे० (पु०) बकवादी, असत्यवादी, वातुल, अविश्वसनीय वक्ता।

गबरू दे० (पु०) जवान, युवा।

गबाशन दे० (पु०) चर्मकार, चण्डाल, म्लेच्छ।

गभस्ति तत्० (पु०) किरन, रश्मि, प्रकाश, सूर्य, (स्त्री०) स्वाहा, अग्नि की स्त्री।—**मत्** (पु०) सूर्य, पाताल विशेष, तलातल।

गभीर तत्० (पु०) गहरा, गम्भीर, अथाह, अगाध, सूक्ष्म।—**ता** (स्त्री०) अगाधता, नीचे की ओर का परिमाण।—**त्व** (पु०) गभीरता, निम्नता।

गभुआरे दे० (पु०) गर्भ शिशु, बालकों के बाल, अङ्कुठिया बाल, झुप्पेदार बाल, झंडूले केश, घूंघर वाले बाल।

गम तत्० (पु०) [गम्+अप्] गमन, चलना, गति, गम्य जानने की शक्ति, जाने का सामर्थ्य, शोक, दुःख।

गमक दे० (पु०) नगाड़े का शब्द, राग का स्वर विशेष।

गमकीला दे० (पु०) गन्धवान्, सुगन्धित, सुवास, गमकदार।

गमन तत्० (पु०) [गम्+अनट्] प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, घूमना, भ्रमण।—**ागमन** (पु०) आना जाना, यातायात।

गमना दे० (क्रि०) ढूढ़ना, खोजना, अनुसन्धान करना।

गमी तत्० (पु०) [गम्+ईन्] गमनकर्त्ता, जाने वाला, चलने वाला।

गमी दे० (पु०) गम करने वाला, शोक करने वाला।

गम्भारी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, गम्भार का वृक्ष।

गम्भीर तत्० (पु०) गभीर, अगाध, अतलस्पर्श, अथाह।—**ता** (स्त्री०) गाम्भीर्य, गभीरता। —**वेदी** (पु०) [गम्भीर+विद्+णिन्] मत्त-हस्ति, दुर्दमनीय हाथी, हस्ति विशेष, जो हस्तिपक की चिन्ता न माने।

गम्य तत्० (पु०) [गम्+य] प्राप्य, सम्भाव्य, गमन करने योग्य, जाने योग्य, शक्य।—**मान्** (पु०) अतिक्रान्त, गमन क्रिया का वर्तमान आश्रय।—**ागम्य** (पु०) साध्यासाध्य, मृदु-कठोर, स्वल्प कठिन, कर्तव्याकर्तव्य।

गयन्द तद्० (पु०) गजेन्द्र, प्रधान हस्ति, बड़ा हाथी।

गय तत्० (पु०) धर्मपरायण सत्कर्मी एक राजा का नाम, ये अमूर्तराय के पुत्र थे, इन्होंने १०० वर्ष तक यज्ञ का अन्न खाया था, अग्नि के वर से वेद पाठ का अधिकार इन्हें प्राप्त हुआ था, शत्रुनाश पूर्वक इन्होंने अपना राज्य विस्तार किया था। ये प्रतिदिन एक लाख साठ हज़ार गौ, दस हज़ार घोड़े और एक लाख निष्क (मुद्रा विशेष) दान करते थे। इन्होंने एक यज्ञ किया था, जिसकी वेदी की लम्बाई ३५ योजन थी, वह वेदी सोने की बनी थी।

(२) एक असुर का नाम, इसी असुर के नाम पर हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ गया स्थापित हुआ है। यह असुर होने पर भी विष्णुभक्त था, विष्णु की प्रसन्नता के लिये कोलाहल पर्वत पर इसने कठोर तपस्या की थी, इसके दर्शन मात्र से पापों के छूटने और स्वर्ग जाने का वर विष्णु ने इसको दिया था।

गया तत्० (स्त्री०) [गय+आ] गय नामक राजा की पुरी, तीर्थ विशेष।—**वाल** (पु०) गया के वासी, गया के पण्डा।—**सुर** (पु०) असुर विशेष।

ग्यारस तद्० (स्त्री०) व्रतविशेष, एकादशी, एकादशी तिथि।

ग्यारह तद्० (पु०) संख्या विशेष, दश और एक, एकादश ११।

गर तत्० (पु०) [गृ+अल्] एकादश करणों में का एक करण, रोग, विष, हलाहल, गरल, वत्सनाभ नामक विष का भेद, (तद्०) गला, कण्ठ—**घ्न** (पु०) [गर्+हन्+टक्] विषघ्न, रोगनाशक। —**द** (पु०) विषदाता।

गरई दे० (क्रि०) गल जाता है, सड़ता है, विनष्ट होता है, लज्जित होता है, नम्र होता है।

गरगराना दे० (क्रि०) गर्जन, कोलाहल करना, ज़ोर से बोलना।

गरज दे० (पु०) आवश्यक, प्रयोजन, कार्य, चिंघाड़, गर्ज, घोरनाद, भयानक शब्द, अवसर, आशय।

गरजना दे० (क्रि०) घड़घड़ाना, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद।

गरद दे० (स्त्री०) रज, धूर, गरदा।

गरदन दे० (पु०) गला, कण्ठ, ग्रीवा।

गरदा दे० (स्त्री०) गरद, रज, धूर, धूलि।

गरभ तद्० (पु०) गर्भ, कुक्षि, पेट, उदर, अन्तर, भीतर, अहङ्कार, अभिमान।

गरम दे० (पु०) उष्ण, तप्त, सन्तप्त, क्रुद्ध, क्रोध, कोप।

गरल तत्० (पु०) [गर+ल] विष, सर्प विष, परिमाण विशेष, कालकूट, जहर।—**रि** (पु०) मरकत मणि, पन्ना, ।

गरवा दे० (पु०) भारी, बोझदार, धीर, प्रतिष्ठित। —**पन** (पु०) बोझाई, मान्यता।

गरावन दे० (पु०) पगा, छांद, नौना।

गरागरी दे० (स्त्री०) देवदाली, देवदारुवृक्ष, देवताड़।

गरारी दे० (स्त्री०) रस्सी बटने का यन्त्र, चर्खी, टकुवा, कुए से जल निकालने के लिये काष्ठनिर्मित गोलाकार वस्तु विशेष, गिर्री।

गरिमा तत्० (स्त्री०) गुरुता, बड़ाई, दम्भ, अहङ्कार, योगी की आठ प्रकार की सिद्धियों में की एक सिद्धि।—**न्वित** (पु०) [गरिमा+अन्वित] दाम्भिक, अभिमानी।

गरिष्ठ तत्० (पु०) [गुरु+इष्ठ] अतिगुरु, भारी, बोझ, गरवा, अतिप्रतिष्ठायुक्त, अतिशय माननीय।

गरी दे० (स्त्री०) नारियल के मध्य का अंश, खोपरा, गोला।

गरीयान् तत्० (पु०) [गुरु+इयस्] अतिगुरु, गरिष्ठ, (स्त्री०) गरीयसी।

गरुआ दे० (पु०) भारी, बोझ, बोझीला, बोझवाला।

गरुआई दे० (स्त्री०) भार, बोझ।

गरुड़ तत्० (पु०) पक्षिराज, गरुत्मान्, वैनतेय, विष्णु का वाहन पक्षी, प्रजापति ऋषि, कश्यप के औरस और विनता के गर्भ से इनका जन्म हुआ था। इनके ज्येष्ठ भ्राता अरुण सूर्य के सारथी का काम करते हैं। गरुड़ ने स्वर्ग से अमृत लाकर अपनी माता का दासत्व छुड़ाया था। एक बार बुभुक्षित गरुड़ ने अपने पिता से भोजन के लिये कहा, एक तालाब में लड़ते हुए गज और कच्छप को खाने के लिये पिता ने प्रेरणा की, ये गज कच्छप पहले विभावसु और सुप्रतिक नामक सहोदर तपस्वी थे, परस्पर के शाप से इस योनि में आये थे, गरुड़ ने अपने चङ्गुल में उन्हें पकड़ लिया, और एक वरगद के पेड़ पर खाने की इच्छा से बैठे, उनके बैठते ही, उस पेड़ की डाल टूट गयी, गरुड़ चिन्तित हुए क्योंकि उसी डाल में समाधिनिरत बालखिल्य ऋषि थे, अतएव गरुड़ उस वृक्ष शाखा को लेकर अपने पिता के पास कर्तव्य स्थिर करने के लिये गये। पिता के अनुरोध से बालखिल्य वहां से दूसरी जगह गये, गरुड़ भी एक पर्वत पर जाकर सुख पूर्वक भोजन करने लगे।—महा भा० आदि प०। —**ध्वज** (पु०) विष्णु, नारायण।—**ाग्रज** (पु०) अरुण, सूर्य सारथि।—**ासन** (पु०) गरुड़ पर का आसन, विष्णु।

गरुत् तत्० (पु०) पक्ष, पाँख, पर।—**मान्** (पु०) गरुड़।

गरुता तत्० (स्त्री०) भारीपन, गुरुता, गौरव, बड़ाई।

गरुव दे० (पु०) भारी, बोझा।

गर्ग तत्० (पु०) मुनि विशेष, ब्रह्मा के पुत्र, विख्यात ज्योतिर्वेत्ता ऋषि, ये यदुवंशियों के कुल पुरोहित थे, गर्ग संहिता तथा ज्योतिष के और कई ग्रन्थ इनके बनाये हैं; इनके पुत्र का गार्ग्य और कन्या का गार्गी नाम था।

गर्गज दे० (पु०) दौंजा गढ़, गुमट, शिखर।

गर्गया दे० (पु०) पक्षि विशेष, गौरिया।

गर्गरी दे० (स्त्री०) झर्झर, झंझर।

गर्ज तत्० (पु०) [गर्ज+अल्] शब्दध्वनि, नाद, रव।

गर्जन तत्० (पु०) [गर्ज+अनट्] शब्द नाद, उत्कट ध्वनि, भर्त्सन कोप, युद्ध, मेघध्वनि, सर्पध्वनि, क्रुद्ध वीर की ध्वनि।

गर्जित तत्० (पु०) [गर्ज+क्त] मेघ शब्द, कुत्र शब्द, मत्त हस्ति।

गर्त तत्० (पु०) गड़हा, खड़हर, छिद्र, भूमिरन्ध्र, विवर, देश विशेष, त्रिगर्त देश, यह देश शतद्रु नदी के पूर्व की ओर था, आजकल के पटियाला से उत्तर है, इसे आज शतलज के नाम से पुकारते हैं।

गर्दभ तत्० (पु०) पशुविशेष, रासभ, खर, गदहा गधा।—**गर्दभी** (स्त्री०) गर्दभ स्त्री, गधी, क्षुद्र रोग विशेष।

गर्द्ध तत्० (पु०) [गृध्+अच्] लिप्सा, स्पृहा, वाञ्छा, औत्सुक्य, आग्रह।

गर्भ तत्० (पु०) भ्रूण, अन्तरापत्य, शिशुकुक्षि, मध्य, अन्तर, उदर, पेट।—कण्टक (पु०) पनसफल, कटहल।—कर (पु०) पुत्र, जीव, वृक्ष विशेष, पतिजिया।—गृह (पु०) सूतिका गृह, सौर। —घातिनी (स्त्री०) लाङ्गलिका वृक्ष, गर्भनाश कारिणी स्त्री।—च्युत (पु०) गर्भ से पतित, अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न।—ज (पु०) गर्भजात, औरस पुत्र विशेष।—दास (पु०) दासीपुत्र, जन्म से ही दास, गर्भ में से ही पराधीन।—धारिणी (स्त्री०) जननी, माता, गर्भवती।—पात (पु०) गर्भनाश, पेट गिरना।—वती (स्त्री०) गर्भधारिणी, गुर्विणी, ससत्वा, अन्तरपत्यसहिता, गाभिन, दुजीवा।—रूप (पु०) युवा के समान बच्चा, तरुण।—स्राव (पु०) गर्भपात, गर्भ गिरना। —ागार (पु०) गृह के मध्य का स्थान, वासगृह, सूतिकागृह, प्रसवगृह।—ाङ्क (पु०) [गर्भ+अङ्क] नाटक का अङ्क विशेष।—ाधान (पु०) गर्भ धारण करने के लिये संस्कार विशेष, प्रथमसंस्कार निषेक क्रिया।—ाशय (पु०) जरायु।—ाष्टम (पु०) गर्भ होने के दिन से आठवां मास या आठवां वर्ष।

गर्भिणी तत्० (स्त्री०) [गर्भ+इन्+ई] गर्भवती, गुर्विणी।

गर्भित तत्० (पु०) [गर्भ+क्त] गर्भस्थित, उदर मध्यस्थ।

गर्व तत्० (पु०) [गर्व+अच्] दर्प, अहङ्कार, दम्भ, अभिमान।—जनक (पु०) अहङ्कार जनक, दर्पान्वित।—ान्वित (पु०) अहङ्कारी, दर्पी, दम्भी।

गर्वित तत्० (पु०) [गर्व+इतच्] गर्वयुक्त, दर्पी अहङ्कृत, जातगर्व।

गर्वी तत्० (पु०) [गर्व+इन्] अहङ्कारी, दर्पित।

गर्हण तत्० (पु०) [गर्ह+अनट्] कुत्सन, निन्दन, दोषदान, निन्दाकरण।

गर्हणीय तत्० (पु०) [गर्ह+अनीय] निन्दनीय, तिरस्करणीय, दूषणीय, दूष्य।

गर्हा तत्० (स्त्री०) [गर्ह+इ] तिरस्कार, अपवाद, निन्दा, दुर्वचन।

गर्हित तत्० (पु०) [गर्ह+इतच्] निन्दित, तिरस्कृत, प्राप्तगर्हा, जुगुप्सित।

गर्ह्य तत्० (पु०) [गर्ह+य] अधम, नीच, निन्दनीय, निन्द्य।—वादी (पु०) निकृष्टवादी, अपभाषी, दुर्वचन वक्ता।—वृत्ति (स्त्री०) अधम जीवन, निन्दित जीविका।

गल दे० (पु०) फांसी, उद्बन्धन, गले का रोग। —बहियां (वा०) परस्पर कन्धे पर हाथ रखकर चलना, प्रणय का मुद्राविशेष।

गलका दे० (पु०) फोड़ा, रोग विशेष।

गलगण्ड तद्० (पु०) गण्डमाला, रोग विशेष, गले में अतिरिक्त मांस लटकना।

गलगल दे० (पु०) सकोतरा, पक्षी विशेष।

गलग्रह तत्० (पु०) अनध्याय तिथि विशेष, श्वासावरोध, कंठ रोध, उद्वेग जनक, उत्पात, उपद्रव, मत्स्याधस्त।

गलजन्दड़ा दे० (पु०) गलापटी।

गलपड़ा दे० (पु०) आह्वान, हांक, पुकार।

गलतनी दे० (स्त्री०) गलबन्धन।

गलना दे० (क्रि०) पिघलना, नरम होना, घुलना, घुल जाना।

गलन्दा दे० (पु०) कटुभाषी, मुखर, दुर्मुख।

गलफटाकी दे० (स्त्री०) बड़ाई, घमण्ड, अपने मुंह अपनी प्रशंसा।

गलफड़ा दे० (पु०) कपोल, गाल, जबड़ा, गालों पर का मांस।

गलबाह दे० (स्त्री०) गोदी, आलिङ्गन।

गलभड्ड दे० (पु०) स्वरभङ्ग, कण्ठ बैठा।

गलसुई दे० (स्त्री०) तकिया, सिरहाना, छोटी तकिया।

गलस्तनी दे० (स्त्री०) बकरी, अजा।

गलहड़ दे० (पु०) गलगाड़, रोग विशेष।

गलहस्त दे० (पु०) गलग्रहण, गला घोंटना, गला दबाना, गले में हाथ लगा कर निकाल देना।

गलही दे० (स्त्री०) नाव के आगे का भाग।

गला दे० (पु०) गल, गर, कण्ठ, शब्द, ध्वनि। **—पड़ना** (वा०) भारी शब्द होना, गला घन घनाना। **—फांसना** (वा०) उद्बन्धन करना, फांसी देना। **—बैठना** (वा०) शब्द का भारी होना, एक प्रकार का रोग। **—घोटना** (वा०) गला दबाकर मार डालना, फांसी देना।

गलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, द्रव करना, घुलाना।

गलाव दे० (पु०) पिघलन, बहाव, द्रव।

गलासी दे० (पु०) पशु बाधने की रस्सी, पगहा।

गलित तत्० (पु०) [गल् + क्तच्] पतित, भ्रष्ट, च्युत, द्रवीभूत, सड़ियल, गन्धा। **—कुष्ठ** (पु०) असाध्य रोग, महा व्याधि।

गलियाना दे० (क्रि०) गाली देना, बुरा कहना, अभिशाप देना, भोजन करने पर भोजन कराना, गले में ठूसना।

गलियारा दे० (पु०) छोटा गली, पैंडा, रथ्या।

गली दे० (स्त्री०) छोटा मार्ग। **—गली** (वा०) एक गली से दूसरी गली में, गली गली में, प्रत्येक गली में, यथा, "गली गली उत्सव हो रहा है, वह गली गली भाग गया"।

गले दे० (पु०) गले में, गर म। **—पड़ना** (वा०) खुशामद, बिलैया दण्डवत्, मिथ्या प्रशंसा। **—पड़ी बजाये सिद्ध** (वा०) अनिच्छा पूर्वक किसी काम को करना, अरुचि पूर्वक कर्म करण। **—का हार होना** (वा०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त प्यारा। **—लगना** (वा०) आलिङ्गन, अङ्कवार।

गल्प दे० (स्त्री०) उपन्यास, कल्पित कथा, उपकथा, कहानी।

गल्ला दे० (पु०) आटी, अन्न राशि।

गल्लाला दे० (पु०) कुल्ली का काढ़ा।

गँव दे० (पु०) घात, दाव, अवसर, मौका, गरज, प्रयोजन, औसर।

गवन दे० (पु०) गमन, चलन, गति।

गवना दे० (पु०) वधूप्रवेश, स्त्री का पति के घर आना।

गवनि दे० (स्त्री०) गमन करने वाली, चलने वाली, गई।

गवय तत्० (पु०) जङ्गली पशु विशेष, गाय के समान पशु।

गवर्नमेण्ट दे० (स्त्री०) राजकीय शासक शक्ति, बड़े लाट और छोटे लाट की समिति।

गवनो दे० (क्रि०) गयी, चली गयी।

गवहिं दे० (अ०) गौं से, प्रयोजन से, अवसर से।

गवाक्ष तत्० (पु०) [गव + अक्ष] झरोखा, मोखा खिड़की, एक वानर का नाम।

गवाना दे० (क्रि०) गान कराना, खोना, करना।

गवासा तद्० (पु०) गोभक्षक, कसाई आदि।

गवेधुका तत्० (स्त्री०) तृण, धान्य विशेष, गंगेरुआ।

गवैया दे० (पु०) गायक, गाने वाला।

गव्य तत्० (पु०) गोसम्बन्धी द्रव्य, दूध, घी, गोबर आदि।

गसना दे० (क्रि०) बाँधना, घेरना, रोकना।

गस्तान दे० (स्त्री०) कुपथगामिनी, कुलटा।

गहई दे० (क्रि०) पकड़ना, ग्रहण करना, करते हैं, धरते हैं।

गह दे० (स्त्री०) बेंट, हत्था, दयकड़ा, पकड़ी, कर।

गहक दे० (स्त्री०) मत्तता, उन्मत्तता, अमल।

गहनकर दे० (पु०) मत्त होना, उमगना, आनन्दित होना।

गहगह दे० (पु०) नगर का आनन्द शब्द, सर्व प्रसन्नता, यथा:—"इस समय यहां गहगह हो रहा है"।

गहगहाना दे० (क्रि०) लहकना, हिलोरना, उमगना।

गहन तद्० (पु०) ग्रहण, पकड़ना, दुःख। (तत्०) वन, कानन, दुर्गम।

गहना दे० (क्रि०) पकड़ लेना, ग्रहण करना, (पु० भूषण, अलङ्कार, गिरवी, बन्धक, न्यास।

गहनी दे० (स्त्री०) सन, पटास, काली पत्ती।

गह्वर तद्० (पु०) गह्वर, सघन, घना वन, वृक्षों से आच्छादित स्थान, बीरान जङ्गल, खोह, खाड़ी।

गहरा दे० (गु०) गभीर, गम्भीर, अगाध।

गहरु दे० (पु०) ढील, देर, विलम्ब, अतिकाल।

गहवा दे० (पु०) चिमटा, सरडासी, पकड़ने की वस्तु।

गहवार दे० (पु०) क्षत्रिय जाति का एक भेद, गहवार क्षत्री।

गहवारा दे० (पु०) झोलना, हिंडोलना।

गह्वर तत्० (पु०) गर्त, गुहा, वन, कानन।

गा दे० (क्रि०) गया, चला गया।

गाई दे० (स्त्री०) गौ, गाय, धेनु।

गाँऊ दे० (पु०) गांव, ग्राम, नगर, पुर, पुरवा, (क्रि०) गाऊं, गान करूं।

गाजना दे० (क्रि०) पूंजी करना, बिलोड़ना, राशि करना, एकत्रित करना, बटोरना।

गांजा दे० (पु०) भङ्ग की पत्तीं, गांझा, सन, भङ्ग, सबजी।

गांझा दे० (पु०) गांजा।

गांठ दे० (पु०) ग्रन्थि, जोड़, ग्रन्थ, गिरह, गिलटी, मोटरी।—**उखड़ना** (वा०) जोड़ खुल जाना, हड्डी या नस का बिचलना।—**पड़ना** (वा०) किसी के साथ विरोध होना, मनोमालिन्य बढ़ना।—**का पूरा** (वा०) धनी, धनवन्त, धनशाली।—**का खोना** (वा०) अपनी हानि करना।—**खोलना** (वा०) ख़र्च करना।—**गठीला** (वा०) हट्टा कट्टा, ख़ूब बलवान् और कठोर अङ्ग वाला मनुष्य।

गांठना दे० (क्रि०) बांधना, वश में करना, अपना प्रभुत्व जमाना, अधिकार करना।

गांडर दे० (पु०) कास, तृण विशेष।

गांड़ा दे० (पु०) ईक्षु, ईख, ऊख, गन्ना।

गांथना दे० (क्रि०) गूंथना, बनाना, श्रेणिबद्ध करना, भीत उठाना।

गांव दे० (पु०) बस्ती, बसती, पुरवा, नगर, ग्राम।

गांवना दे० (क्रि०) गान करना, महकना, प्रदीप्त होना।

गांसना दे० (क्रि०) बरमाना, छिद्र बन्द करना, पिरोना, गूंथना।

गांसी दे० (स्त्री०) शस्त्रों के आगे का भाग, धार, तीक्ष्णता।

गागर दे० (स्त्री०) घड़ा, गगरी, कलस, कलसी, घट।

गाङ्गेय तत्० (पु०) गङ्गापुत्र, भीष्म पितामह, सुवर्ण।

गाछ दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, तरु।—**मिर्च** (पु०) लालमिर्च।

गाज दे० (पु०) झाग, फेन, विद्युत्, बिजली।

गाजना दे० (क्रि०) गर्जना, सिंहनाद करना, हर्षित होना, गरजना।

गाजर दे० (पु०) गजरा, गृञ्जन, मूल विशेष, इसका खाना धर्मशास्त्र में निन्दित है।

गाजाबाजा दे० (पु०) बहुविधवाद्य, अनेक बाजे, सर्वाङ्ग पूर्ण उत्सव।

गाड दे० (पु०) गड़हा, गर्त, गढ़ा।—**तोप** (स्त्री०) मिट्टी देना, कबुर करना, अश्लील या निन्दित बात को छिपाना।

गाड़ना दे० (क्रि०) तोपना, मिट्टी देना, छिपाना।

गाड़र दे० (पु०) भेड़, मेष, भेड़ी।

गाड़रु तत्० (पु०) गारुड़, सर्प का विष झाड़ने का मन्त्र, (गु०) सर्प का विष उतारने वाला।

गाड़हीं दे० (क्रि०) गाड़ते हैं, गड़े में दबाते हैं।

गाड़ा दे० (पु०) खाई, दांव, गाड़ी, छोटी गाड़ी, गढ़ा, गर्त।

गाड़ी दे० (स्त्री०) शकट, रथ, हरकड़ा।

गाड़ीवान दे० (पु०) सारथि, बहलवान्, रथवाह।

गाढ़ तत्० (पु०) घन, तरल नहीं, गाढ़ा, अत्यन्त दृढ़, कष्ट, आपद, वेदना, विपत्ति, जञ्जाल, झंझट, विपत्ति।—**ता** (स्त्री०) घनता।

गाढ़ा दे० (गु०) कठिन, दृढ़, पांक के समान, मोटा, पोढ़ा, घना, गर्त।

गाढ़ालिङ्गन तत्० (पु०) आलिङ्गन, अकवार, भेंट।

गाणपत्य तत्० (पु०) गणेश के उपासक, गणेश के भक्त स्मार्त, उपासना का एक भेद।

गाणिका तत्० (पु०) गणिकासमूह, वेश्याओं का दल,

गाण्डीव तत्० (पु०) अर्जुन के धनुष का नाम, यह धनुष अर्जुन को अग्नि की प्रसन्नता से मिला था, चाप, कार्मुक।—धर (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव। —ी (पु०) अर्जुन, गाण्डीव नामक धनुष का धारण करनेवाला।

गात तद्० (स्त्री०) गात्र, देह, तन, शरीर, तनु, अङ्ग।

गाता तत्० (पु०) [गै + तृण्] गायक, गानकर्त्ता, गान कारक।

गाता दे० (पु०) पुठा, पिठौता, जिल्द।

गाती दे० (स्त्री०) चादर ओढ़ने की एक प्रक्रिया, जैसा साधु बांधा करते हैं, पट्टू, ऊर्णवस्त्र।

गानु दे० (पु०) गायक, गवैया, गानेवाला, कोकिल, भ्रमर, गन्धर्व सङ्गीतकारी।

गात्र तत्० (पु०) काय, देह, शरीर, वपु, गात, अङ्ग। —कण्डू (स्त्री०) शरीर की खुजलाहट।—वेदना (स्त्री०) शरीर की अथवा अङ्गपीड़ा।—भङ्गी (पु०) शरीर की विकृति, विकार, अङ्ग की बनावट। —लेपनी (स्त्री०) शरीर में लगाने का सुगन्धित द्रव्यविशेष, उबटन।—संवाहन (पु०) शरीर दबाना, अङ्गों की पीड़ा निकालना।

गाथक तत्० (पु०) [गै + थक] गायक, गानकारक, गवैया, कथक।

गाथना तद्० (क्रि०) ग्रन्थन करना, गूंथना, बनाना।

गाथा तत्० (स्त्री०) [गै + था] श्लोक, छन्द, गीत, पवारा, कहानी।

गाथैं तद्० (क्रि०) गुथें, पिरोये, इसका प्रयोग व्रजभाषा में किया जाता है और रामायण में भी।

गाद दे० (पु०) तरछट, मैल, कुईट।

गादना दे० (क्रि०) दृढ़ करना, स्थिर करना, दबाना, ठासना।

गादर दे० (पु०) राशि, थोक, ढेर, टाल।

गादा दे० (पु०) कच्चा अन्न, चना या मटर का कचरी।

गादी दे० (स्त्री०) सिंहासन, राज्यासन, गद्दी।—पति (पु०) सम्प्रदाय का बड़ा संन्यासी।

गादुर दे० (पु०) चमगीदड़, चमगादुर।

गाध तद्० (पु०) लिप्सा, स्पृहा, अभिला ष।

गाधि तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय कुशिक राजा के प्रसिद्ध तपस्वी विश्वामित्र के पिता। महा कुशिक की रानी पौरकुत्सी के गर्भ से देव गाधिरूप से उत्पन्न हुए थे, गाधि की क सत्यवती का विवाह महर्षि भृगु के साथ था। इसी सत्यवती के गर्भ से महर्षि जमदग्नि उ हुए थे।—ज (पु०) विश्वामित्र मुनि।—न (पु०) विश्वामित्र।—पुर (पु०) कान्यकुब्ज दे —सुवन (पु०) विश्वामित्र मुनि, राजा के पुत्र।

गाधेय तत्० (पु०) [गाधि + ढक्] विश्वा मुनि।

गान तत्० (पु०) [गै + णिच् + ल्युट्] गाना, गेय, कीर्तन, ध्वनि।

गाना दे० (क्रि०) आलापना, राग।

गान्धर्व तत्० (पु०) गन्धर्व सम्बन्धी (पु०) विवाह विशेष, स्त्री पुरुष की इच्छा के अनु विवाह।—विद्या (स्त्री०) सङ्गीतशास्त्र —विवाह (पु०) केवल वर कन्या की इच्छा विवाह।

गान्धार तत्० (पु०) सिन्दूर, स्वर विशेष, सन्धु का उत्तरीय भाग जिसकी प्रसिद्धि कान्धा नाम से है।—राज (पु०) शकुनि, दुर्योधन मामा।

गान्धारी तत्० (स्त्री०) [गान्धार + ई] जैनियों शासक देवता विशेष, यवासा, मादक द्रव्य वि राजा क्रोष्टु की पत्नी और अनमित्र की म मृत्तिकावती नगरी में रहने वाले राजाओं भोज कहते हैं। इसी भोजवंशीय राजा क्रो एक पत्नी का नाम।

२) राजा धृतराष्ट्र की रानी। गान्धार देश के राजा सुबल की कन्या और दुर्योधन की माता। इनके छोटे भाई का नाम शकुनि था। गान्धारी ने तपस्या द्वारा एकसौ पुत्र प्राप्त करने का वर पाया था, भीष्मपितामह ने धृतराष्ट्र से गान्धारी का विवाह कर देने के लिये राजा सुबल से अनुरोध किया। सुबल ने इसे स्वीकृत किया, यह बात गान्धारी को भी मालुम हुई। गान्धारी का भावी पति अन्धा था अतएव उन्होंने भी अपनी आंखों में पट्टी बांध ली, ये पतिव्रता थीं, इन्होंने श्रीकृष्ण को शाप दिया था, जो सच निकला।

ान्धिक तत्० (पु०) लेखक, सुगन्ध द्रव्य व्यवहारी, अत्तार, ।

ाफिल दे० (गु०) लापरवाह, असमोयोगी, अलस, जड़, आलसी।

ाभ दे० (पु०) गर्भ, पेट, हँदा।

ाभा दे० (पु०) नवीन पत्र, कोमल पत्र, भीर का पत्ता, केले की नयी पत्तियां।

ाभिन दे० (स्त्री०) गर्भिणी, अन्तरापत्य, गुर्विणी।

ाम तद्० (पु०) ग्राम, गांव, नगर।

ामिनि तद्० (स्त्री०) गमनकर्त्री, गमन करनेवाली, जानेवाली।

ामी तत्० (गु०) गम्+णिन्, गमनशील, गमन करने वाला, प्रस्थानकारी।

ामुक तत्० (गु०) चलने वाला, गमन कर्त्ता।

ाम्भीर्य तत्० (पु०) गम्भीरता, गभीरता, धीरता, गुरुता।

ाय दे० (पु०) गौ, गाय, धेनु, गैया, गऊ।—गोठ तद्० (पु०) गोशाला, गौओं के रहने का स्थान, गोष्ठ।—गोरु (पु०) गैया, गोरू, गौ समूह, गोशाला।

ायक तत्० (गु०) गवैया, गानेवाला।

ायत्री तत्० (स्त्री०) वेदमाता, मन्त्रविशेष, छन्दोविशेष, दुर्गा, भगवती, छः अक्षर के पादवाला छन्द, इसके तीन पाद होते हैं। वेदों में लिखा है कि बृहस्पति ने एक समय गायत्री का सिर फोड़ दिया, परन्तु इससे गायत्री की मृत्यु नहीं हुई; किन्तु गायत्री के मस्तक से वषट्कार नामक देवता की उत्पत्ति हुई। बहुत लोग इसको रूपक समझते हैं, गायत्री हिन्दूधर्म का बीजमन्त्र है। बृहस्पति या चार्वाक नास्तिक मत के प्रचारक थे, हिन्दूधर्म के नाश की उन्होंने बहुत चेष्टा की, परन्तु सफल नहीं हुए। पद्मपुराण में लिखा है कि गायत्री ब्रह्मा की स्त्री है।

गायन तत्० (गु०) [गै+अन्,] गायक, गानकारी, गान से जीनेवाला।

गार दे० (स्त्री०) गाली, अभिशाप, विरुद्धचिन्ता, यथा—जैसे परनत युद्ध में ज्यों विवाह में गार"
—वृन्द सतसई।

गारना दे० (क्रि०) निचोड़ना, दुहना, निकालना।

गारा दे० (पु०) चहला, सानी हुई मिट्टी, ईंटे जोड़ने के लिये गिलावा।

गारी दे० (स्त्री०) गाली, कुवाक्य, अपशब्द, अपभाषा।

गारुड़ तत्० (पु०) मरकतमणि, पन्ना, एक पुराण का नाम, गरुड़ पुराण, स्वर्ण, विषमन्त्र, विषवैद्य, कालबेलिया, सपेरा, सपहा।

गार्हपत्य तत्० (गु०) यज्ञीय अग्निविशेष, यज्ञ के त्रिविध अग्नियों में का एक अग्नि।

गार्हस्थ्य तत्० (पु०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ का धर्म, गृहस्थ सम्बन्धी।

गाल दे० (पु०) कपोल, गण्डदेश, कपट, छल।
—बजाई (स्त्री०) बकवाद करके, बात बनाकर, व्यर्थ की बहुतसी बातें बकना।

गालव तत्० (पु०) मुनि विशेष, गालवमुनि के पुत्र।

गाला दे० (पु०) रुई की फली, धुनी हुई रुई का गोला।

गाली तत्० (स्त्री०) अपमान बोधक शब्द, कुवाक्य।
—गलौज (वा) गाली।

गालु दे० (पु०) गाल, यथा—

एक संग नहिं होहिं भुआलु
हसब ठठाय फुलाउब गालु"
—रामायण।

गावघप्पू दे० (गु०) चापलूस, फुसलाऊ, स्वार्थी।

गावदी दे० (गु०) उजबक, भोला, गेगला, अजान।

गावहिं दे० (क्रि०) गाता है, गान करता है।

गाह तद्० (पु०) ग्राह, कुमीर, मगर, नक्र, जलजन्तु-विशेष ।

गाहक तद्० (पु०) ग्राहक, खरीददार, क्रेता, कीननेवाला ।

गाहना दे० (क्रि०) ढूढना, दावना, पकड़ना ।

गाहा तद् (स्त्री०) गाथा, कथा, कहानी, ग्रहण करना, लेना ।

गाहिगाहि दे० (गु०) ढूढ ढूढकर, खोज खोजकर, टोह लगाकर ।

गाही दे० (स्त्री०) पांच की संख्या, पांच संख्या परिमित ।

गिजाई दे० (स्त्री०) कीट विशेष ।

गिचपिच दे० (पु०) कचपच, भीड़भाड़ ।

गिचिपिचिया दे० (गु०) गिचपिच करनेवाला, भीड़भाड़ करने वाला ।

गिटकारी दे० (स्त्री०) गिड़गिडी, टुकड़े ।

गिटकौरी दे० (स्त्री०) पथरी, पत्थरनिर्मित, पत्थर के टुकड़े ।

गिडगिड़ाना दे० (क्रि०) अनुनय करना, विनती करना, घिघिआना ।

गिनती दे० (स्त्री०) गणित, गणना, संख्या, हिसाब ।

गिनना दे० (क्रि०) गणना करना, गिनती करना ।

गिद्ध तद्० (पु०) गीध, शकुनि, पक्षिविशेष ।

गिरगिट दे० (पु०) सरट, कृकलास, गिटगिटान ।

गिरत दे० (क्रि०) गिरतेही, गिरता है ।

गिरना दे० (क्रि०) पड़ना, खसना, झड़ना ।

गिरपड़ना दे० (क्रि०) कूद पड़ना, झुक पड़ना, फिसल जाना, पतित होना ।

गिरते पड़ते दे० (वा) बहुत कठिनता से, बहुत परिश्रम से ।

गिरा तद्० (स्त्री०) वचन, वाणी, वाक् । दे० गिरपड़ा, फिसल गया, खसा ।—ग्राम (पु०) ग्रामभाषा, गवाऊ बोली ।

गिराना दे० (क्रि०) औंधाना, पटकना, छलकाना ।

गिरि तत् (पु०) पर्वत, पहाड़, भूधर, अचल, सन्यासियों की एकजाति ।—कण्टक (पु०) वज्रअशनि ।—कद्रक (पु०) महा नीच, बहुत कदर्य ।—कदली (स्त्री०) कदली विशेष, पहाड़ी केला ।—ज (पु०) शिलाजीत, पर्वत से उत्पन्न धातु ।—जा (स्त्री०) पार्वती, पर्वत से उत्पन्न, ... की कन्या, भवानी ।—जानन्द (पु०) कार्तिकेय ।—धारी (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र, हनुमान् ।—न्द्र (पु०) गिरीन्द्र, पर्वतराज, हिमालय, सुमेरु ।—नन्दिनी (स्त्री०) पार्वती, गिरिजा भवानी ।—नाथ (पु०) शिव, महादेव, ... शङ्कर, हिमालय, पर्वतराज ।—राज (पु०) हिमालय, सुमेरु ।—वर (पु०) पर्वतश्रेष्ठ, सुमेरु, हिमालय, विन्ध्य ।—सुद्र (स्त्री०) गेरु, विशेष ।—साह्वय (पु०) शिलाजीत ।

गिरिर (पु०) लड़का, शिशु, बच्चा ।

गिरीन्द्र तत्० (पु०) गिरि इन्द्र पर्वतराज हिमालय ।

गिरीश तद्० (पु०) महादेव, शिव, कैलासपति, हिमालय, सुमेरु ।

गिलई दे० (क्रि०) निगल गयी, खा गयी ।

गिलटी दे० (स्त्री०) गाठ, ग्रन्थि, सूजन, फुंसी फोड़ा ।

गिलन तत्० (पु०) [गृ + अनट्,] निगरण, ... भक्षण ।

गिलन (या गेलन) दे० छः बोतल का परिमाण ।

गिलहरा दे० (पु०) पान का डब्बा ।

गिलहरी दे० (स्त्री०) रुखी, चोखुर, कुड़ी ।

गिलाफ दे० (पु०) आच्छादन, ढाकन, खोल ।

गिलित तत्० (गु०) [गृ + क्त] भुक्त, भक्षित खादित ।

गिलियर दे० (गु०) आलसी, श्रमकातर, ... ढीला ।

गिलोय दे० (स्त्री०) अमृत, अमृतलता, गुडूच, गुडूची

गिली दे० (स्त्री०) गिलोय, लता विशेष, गुडूच ।

गिलौरी दे० (स्त्री०) बीड़ी, खोली, पान की खीली

गिल्ली दे० (स्त्री०) मकई की ठुड्डी ।

गींज दे० (स्त्री०) मुसलमानी का भोजन ।

गींजना दे० (क्रि०) मलना, भोलदेना, मर्द्दन करना।

गीत तत्० (पु०) गान, ताल बाजे के अनुसार गाना।—वादन (पु०) गानकीर्तन।—मोदी (पु०) [गीत+मुद्+इन्] किन्नर, स्वर्ग गायक।

गीता तत् (स्त्री०) गान, अध्यात्म विद्या का ग्रन्थ, रामगीता, भगवद्गीता, गणेशगीता आदि।

गीति तत्० (स्त्री०) [गै+क्ति] गान, गीत, आर्या छन्द का एक भेद, यह मात्रावृत्त है।

गीदड़ दे० (पु०) शियाल, शृगाल, जम्बूक।—भभकी (वा०) घमण्ड, बड़ाई, रोब जमाना, दबाना।

गीध दे० (पु०) गिद्ध, गृद्ध, शकुनि, पक्षिविशेष।

गीर्वाण तत्०(पु०) [गीर्+बाण] देवता, देव, सुर, अमर।—कुसुम (पु०) मन्दार पुष्प, लवङ्गपुष्प।—वाणी (स्त्री०) संस्कृतभाषा, हिन्दुस्थान की प्राचीन भाषा, शास्त्रीय भाषा।

गीला दे० (पु०) भीगा, आर्द्र, भोदा।

गीष्पति तत्० (पु०) [गीः+पति] बृहस्पति, देवगुरु देवों के गुरु।

गुग्गुल तत्० (पु०) गुगल, गोंद विशेष, सुगन्धि द्रव्य विशेष।

गुच्छा तद्० (पु०) गुच्छक, स्तवक, भब्बा, भब्बा।—गुच्छे (बहु०) भब्बे, फुदना।

गुच्छेदार दे० (स्त्री०) भब्बेदार, गुच्छयुक्त।

गुजर दे० (पु०) जाट, अहीर, गोप, जाति विशेष, ग्वाला, निर्वाह।

गुजरात दे० (पु०) भारत के एक प्रान्त का नाम।—ी (पु०) गुजरात के वासी, गुजरात सम्बन्धी (पु०) एक रोग का नाम, यक्ष्मा।

गुजिया दे० (क्रि०) कर्णफूल, कान का भूषण विशेष।

गुञ्ज तत्० (पु०) गुच्छ, पुष्पस्तवक।

गुञ्जन तत्० (पु०) गुन गुन करना, भ्रमर आदि का शब्द।

गुञ्जा तत्० (स्त्री०) लता विशेष, घुङ्घची, लालरत्ती, परिमाण विशेष।

गुञ्जान तद्० (पु०) गाढ़ा, मोटा, घना।

गुञ्झा दे० (पु०) ढीला, शिथिल।

गुटकना दे० (क्रि०) गुटकूँ करना, निगल जाना, कबूतर का शब्द।

गुटका तद्० (स्त्री०) छोटे आकार की पुस्तक, औषध विशेष।

गुटिका तत्० (स्त्री०) वटिका, गोली, औषध की गोली।

गुठलाना दे० (स्त्री०) फलों में गुठली होना, दांत खट्टा होना।

गुठली दे० (स्त्री०) बीज, आम का बीज।

गुड़ तत्० (पु०) [गुड+अच्] ईख का विकार लाल शक्कर।

गुड़गुड़ाना दे० (क्रि०) गुड़गुड़ करना।

गुड़गुड़ी दे० (स्त्री०) छोटा हुक्का।

गुड़ाकू दे० (पु०) तमाकू, पीने का तमाकू।

गुडाकेश तत्० (पु०) अर्जुन, निद्रा को अपने वश में करने के कारण अर्जुन का यह नाम पड़ा है।

गुड़ाना दे० (क्रि०) खोदना, खुदवाना, खनना।

गुड़िया दे० (स्त्री०) खिलौना, गुड्डा, कपड़े की पुतली।

गुड़ी दे० (स्त्री०) गुड्डी, पतङ्ग, कनकौआ, गुड़िया।

गुडूची तत्० (स्त्री०) गुरच।

गुड्डी दे० (पु०) कनकौआ, पतङ्ग, तिलङ्ग।

गुद्दी दे० (स्त्री०) छिपने का स्थान।

गुण तत्० (पु०) स्वभाव विशेषण, सद्विद्या, विनय आदि, सत्व रज और तम, शुक्ल, कृष्ण, रक्त, पीत आदि, अप्रधानता, निपुणता, फल।—कथन (पु०) यशोवर्णन, स्तुति, प्रशंसा करना।—करना (क्रि०) भला करना, लाभ पहुंचाना।—का पलटा देना (वा०) प्रत्युपकार करना, भलाई के बदले भलाई करना।—गान (पु०) स्तुति, प्रशंसा।—गृह्य (पु०) सद्गुणयुक्त, गुणी।—ग्राम (पु०) गुण समूह, गुणाकार।—ग्राहक (पु०) गुणग्रहणकर्ता।—ज्ञ (पु०) गुणवेत्ता।—ज्ञान (पु०)

बुद्धिप्रभाव।—दर्शी (पु०) सारग्राही।—दाता (पु०) शिक्षक, गुरु। —धर्म (पु०) उत्तम पदार्थ, सार पदार्थ।—न (पु०) अङ्क वृद्धि करण, हिसाब विशेष।—निधि (पु०) गुणसिन्धु, गुणसागर।—वन्त (पु०) गुणवान्, गुणी, प्रवीण।—वान् (पु०) प्रवीण, निपुण, विद्वान्।

गुणाकर तत्० (पु०) गुणों का समुद्र, गुणनिधि।

गुणा तद्० (पु०) बार, बेर, पाला, गणित विशेष।

गुणागुण तत्० (पु०) गुण दोष, भला बुरा।

गुणाढ्य तत्० (पु०) एक संस्कृत का कवि, इस कवि ने बृहत्कथा नामक एक पिशाच भाषा का ग्रन्थ लिखा था। कथासरित्सागर में कात्यायन और व्याड़ी के समकालीन इनको बताया गया है। कात्यायन का समय सन् ३१५ ई० से पूर्व माना जाता है। अतएव गुणाढ्य का भी यही समय निश्चित होता है। बृहत्कथा को दूसरी बड्ढ कथा भी कहते हैं। ये कवि अति प्राचीन और सत्कवि थे। इस बात को गोवर्द्धनाचार्य ने अपनी आर्या सप्तशती में लिखा है।

गुणातीत तत्० (पु०) [गुण+अतीत,] निर्गुण, गुणशून्य, परब्रह्म।

गुणित तत्० (पु०) [गुण+क्त] पुरित, आहत, पूरण करना।—१ (स्त्री) गुणवत्ता, गुणयुक्ता।

गुणी तत्० (पु०) [गुण+ईन्] गुणविशेष, गुणशील, सद्गुणान्वित, पण्डित।—कृत (पु०) गुणित, पूरित,।—भूत (पु०) अप्रधान। —भूतव्यङ्ग (पु०) ध्वनि विशेष, काव्य विशेष।

गुणोत्कर्ष तत्० (पु०) [गुण+उत्कर्ष,] गुण की प्रधानता, गुण की सुन्दरता, गुणव्याख्या।

गुणोत्कीर्तन तत्० (पु०) [गुण+उत्कीर्तन,] गुण कथन, गुणगान, स्तुति, यशगान।

गुणौघ तत्० (पु०) [गुण+ओघ,] गुण समूह।

गुण्डा तत्० (पु०) लम्पट, दुष्ट, दुरात्मा, दुराचारी, निर्लज्ज, लुच्चा।

गुण्य तत्० (पु०) [गुण+य] गुण्यङ्क, गुणनीय, जो अङ्क गुणा किया जाय, पूरणीयाङ्क।

गुत दे० (पु०) उदासीन, मौन, गम्भीरता, चुपचाप, लापरवाही।

गुदगुदा दे० (पु०) कोमल, मोटा, पुष्ट।

गुदगुदाना दे० (क्रि०) सहलाना, चुलचुलाना, गुदगुदी करना।

गुदगुदाई दे० (स्त्री०) गुदराहट, सुहराना।

गुदड़ी दे० (स्त्री०) कन्था, कथड़ी, जीर्ण वस्त्र।

गुदरत दे० (क्रि०) जानता है, चलता है, यह शब्द रामायण में प्रयुक्त हुआ है।

गुदाम दे० (पु०) गोला, वस्तुओं का भण्डार, जहाँ बहुतसी वस्तु जमा रहें।

गुदारा दे० (पु०) घटहा, एक स्थान पर इस पार से उस पार लेजाने वाली नौका, खेवानाव।

गुदी दे० (स्त्री०) नाव बनाने का स्थान।

गुद्दा दे० (पु०) अन्तःसार, सारभाग, डाल, शाखा।

गुद्दी दे० (स्त्री०) घाड़, गर्दन, ग्रीवा, ग्रन्थि, अन्तःसार।

गुन तद्० (पु०) गुण, सुभाव, विशेषण, कला। —गुना (पु०) कुनकुना, थोड़ा गरम, सुखम। —ग्राहक (पु०) गुणग्राहक, गुण का आदर करने वाला, यथा—"गुन ना हिरानो गुणगाहक हिरानो है"—गुनाना (क्रि०) सुखम होना, गुनगुन करना, भ्रमर आदि का शब्द।—द (पु०) गुणदायक, लाभकारी।—ह (पु०) दोष, पाप, अपराध, यथा—

"गुनहु लखन कर हम पर रोषू
कतहुं सुधाई ते बड़ दोषू"

—रामायण।

—हु (क्रि०) विचारो, गुणन करो।

गुनिये दे० गुनिये, सोचिये, विचारिये, गुणन कीजिये।

गुनानि दे० (स्त्री०) मानसिक कल्पना, अभिलाष।

गुनी दे० (पु०) गुणी, गुणवान्।

गुप्त तत्० (पु०) [गुप्+क्त,] कृत रक्षण-रक्षित-गूढ़, छिपा हुआ, वैश्य और शूद्र जाति का अल्ल विशेष।
—गति (पु०) चर, चार, दूत, सन्देसी, वार्ताहारी।
—चर (पु०) गोपनीय दूत, गूढ़चर, खुफिया।—वेश (पु०) छली, कपटी।

गुप्तार दे० (पु०) छिपना, लुकना, लुकाव।—घाट (पु०) अयोध्या जी के एक घाट का नाम।

गुप्ती दे० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, एक प्रकार का डण्डा जिसमें छोटी तलवार छिपी रहती है।

गुफा दे० (स्त्री०) गुहा, खोह, कन्दरा, बिल, गह्वर।
—गुभाना दे० (क्रि०) चुभाना, गड़ाना, गाड़ना, बींधना।

गुमटा दे० (पु०) बड़ा फोड़ा, व्रण, गुमड़ा।

गुमटी दे० (स्त्री०) गुम्बट, लाट, कलस, शिखर, छोटी कोठरी, वस्त्रविशेष, यह मिथिला में बनता है, तथा अत्यन्त सम्मान सूचक समझा जाता है, प्रायः राजा की ओर से यह पण्डितों को दिया जाता है।

गुमान दे० (पु०) अभिमान, मान, अहङ्कार।—ी (पु०) अहङ्कारी, अभिमानी एक कवि का नाम, ये कवि कुमायूँ प्रदेश के रहने वाले थे और संस्कृत तथा भाषा के कवि थे।

गुमसना दे० (क्रि०) दुर्गन्ध होना, सड़ना।

गुम्फ तत्० (पु०) [गुम्फ+अल्.] ग्रन्थन, गाथना, गूथना, बाहुभूषण विशेष।

गुमसा दे० (पु०) सड़ा, गला।

गुम्फित तत्० (पु०) ग्रंथित, प्रणीत, गुहा हुआ।

गुरजना दे० (क्रि०) घुरटाना, घुड़कना, गर्जन करना।

गुरिया दे० (स्त्री०) मनिया, माला के दाने, दाने।

गुरु तत्० (पु०) [गर+उ] मन्त्रदाता, उपदेशक, शिक्षक, आचार्य, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, आ, ई, आदि, गुरु पांच प्रकार के होते हैं, पिता, उपनयन करने वाला, विद्यादाता, अन्नदाता, और भय से रक्षा करने वाला, (गु०) भारी, गहू, बोझिल।—कार्य (पु०) आवश्यक कार्य, फलवान् कार्य।—जन (पु०) उपदेष्टा, बड़े लोग, माननीय।—तर (गु०) बहुत बड़ा, बहुत भारी, माननीय।—तल्पग (पु०) सैातेली मा के साथ सम्बन्ध करने वाला, गुरु स्त्री का हरणकारी।
—तल्पव्रत (पु०) गुरु पत्नी हरण का प्रायश्चित्त।
—ता (स्त्री०) भारीपन, भार, गैारव।—दशा (स्त्री०) गुरु की दशा, बृहस्पति की दशा।—दार (स्त्री०) गुरु की स्त्री, वेदाध्यापक अथवा मन्त्रदाता की स्त्री।—देव (पु०) अभीष्ट देव, पिता, आचार्य।।
—दैवत (पु०) पुष्य नक्षत्र।—पत्नी (स्त्री०) गुरु की स्त्री।—पाक (गु०) दुष्पच, जिसका विलम्ब से परिपाक हो।—पाप (पु०) कठिन पाप, महापाप, अतिपातक।—प्रमोद (पु०) अतिशय आनन्द, अत्यन्त हर्ष।—मुख (गु०) लब्ध मन्त्र, दीक्षित, गृहीतमन्त्र।—मुखहोना (क्रि०) मन्त्र लेना, चेला होना, गुरु करना।—मन्त्र (पु०) इष्टमन्त्र, दीक्षा में प्राप्त मन्त्र।—लघु (गु०) मान्य, अमान्य, प्रधान, अप्रधान, ह्रस्व, दीर्घ।
—शुश्रूषा (स्त्री०) गुरु सेवा, गुरु की आराधना।
—सेवा (स्त्री०) गुरु पूजा।

गुरुवाइन तद्० (स्त्री०) गुरु पत्नी, माता।

गुरुवार तत्० (पु०) बृहस्पतिवार।

गुरूपदिष्ट तत्० (गु०) [गुरु+उपदिष्ट,] गुरु से शिक्षा या उपदेश ग्रहण।

गुरूपदेश तत्० (पु०) गुरु के समीप की शिक्षा।

गुर्गा दे० (पु०) बासन मांजने वाला, टहलुआ, भृत्य।

गुर्गाबी दे० (स्त्री०) जूती, पनही।

गुर्गेरी दे० (स्त्री०) कम्पज्वर, जूड़ी।

गुर्ज्जर तत्० (पु०) देशविशेष, गुजरात, गुजरात के वासी।

गुर्ज्जरी तत्० (स्त्री०) गुजरात की स्त्रियां, रागिनी विशेष।

गुर्री दे० (स्त्री०) भुंजा हुआ जव।

गुर्वङ्गना दे० (स्त्री०) गुरुपत्नी, सपत्नी, माता, सैातेली मां, माननीय स्त्री।

गुर्वादित्य दे० (पु०) योग विशेष, सूर्य और बृहस्पति के एक राशिस्थ होने पर यह योग होता है, इस योग में विवाह आदि मङ्गल कृत्य नहीं होते।

गुर्विणी तत्० (स्त्री०) गर्भवती, गर्भिणी।

गुर्वी तत्० (स्त्री०) गर्भवती, (गु०) भारी।

गुल दे० (पु०) अङ्गार का गोला, दीपक की बत्ती का अग्रभाग, बुझाना, पुष्प।—गुला (पु०) पकौड़ी, पकशानविशेष।—गुलाना (क्रि०) पिघलाना, नरमाना, नरम करना।—गूथना गाल फूला, रूठना, कोहाना।—झड़ी (स्त्री०) झंझट, घूंघची, आनन्द।—हली (स्त्री०) गीला भात, नये चावल का भात।

गुलाब दे० (पु०) पुष्पविशेष, गुलाब के फूलों का रस।

गुलाबजामन दे० (स्त्री०) मिठाई व फल विशेष।

गुलाल दे० (पु०) रङ्ग विशेष।

गुलिक दे० (पु०) मोती की माला के दाने।

गुलिया दे० (स्त्री०) सिर के पीछे का खड्ढा।

गुलेल दे० (पु०) एक प्रकार की धनुष।

गुल्फ तत्० (पु०) फीली, पैर की गाठ।

गुल्म तत्० (पु०) रोगविशेष, प्लीहा, सेना की संख्या विशेष।—शूल (पु०) रोग विशेष।

गुल्लर दे० (पु०) उडुम्बर, ऊमर।

गुल्ला दे० (पु०) गुलेल की गोली, माटी की छोटी गोली।

गुल्लाला दे० (पु०) फूल विशेष।

गुवा दे० (पु०) सुपारी, पूगी फल।

गुवाक दे० (पु०) सुपारी का वृक्ष।

गुवैया दे० (स्त्री०) सखी, सहेली, वयस्या।

गुवालियर दे० (पु०) मध्यभारत की एक राजधानी का नाम, ग्वालियर।

गुष्टि तद्० (स्त्री०) सम्मति, सलाह, मित्रता।

गुसाईं तद्० (पु०) स्वामी, संन्यासी, जितेन्द्रिय, सन्यासी, बङ्गाली और पञ्जाबी कुछ ब्राह्मणों की अल्ल।

गुह तत्० (पु०) [गुह + अच्] कार्तिकेय, निषाद, निषादाधिपति का नाम, कायस्थों की एक पद्धति का नाम, विष्ठा, मल।—षष्ठी (स्त्री०) अगहन मास की शुक्ला षष्ठी।

गुहक तत्० (पु०) एक अनार्य राजा का नाम, इसका अयोध्या के समीप राज्य था। इसकी राजधानी का नाम, शृङ्गवेरपुर था, यह महाराज दशरथ का मित्र था, इसी कारण रामचन्द्र जी भी इसका आदर करते थे। वनवास के समय इसी अनार्य राजा की सहायता से रामचन्द्र जी ने गङ्गा को पार किया था।

गुहर दे० (पु०) गुप्त, छिपा, ढका, लुका।

गुहनो दे० (क्रि०) गांथना, गूथना, पिरोना।

गुहराना दे० (क्रि०) पुकारना, समीप बुलाना, सहाय करना।

गुहाजनी दे० (स्त्री०) आँख पर फुड़िया।

गुहा तत्० (स्त्री०) गुफा, कन्दरा, खोह, पर्वत आदि का गहर।—गृह (पु०) कन्दरा, गर्त।—शय (पु०) विष्णु, व्याघ्र, सिंह।

गुहाना दे० (क्रि०) गुहवाना, ग्रंथित कराना।

गुहार दे० (पु०) सहायता के लिये आह्वान, पुकार।

गुहारी दे० (पु०) गुहार करने वाला, गुहरानेवाला।

गुहिल तत्० (पु०) धन, वित्त, विभव, निधि, मेवाड़ के प्रथम राज्य स्थापक का नाम, सिसोदिया कुल के राजाओं का पहला राजा, इसी राजा के नाम से सिसोदिया क्षत्री अपने को गुहिलोत कहते हैं।

गुह्यक तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, कुवेर के अनुचर, यक्ष।

गुह्यकेश्वर तत्० (पु०) कुवेर, यक्षराज।

गू दे० (पु०) गुह, मल, विष्ठा।

गूंगा दे० (पु०) मूक, मौन, अनबोल, बिना वाणी का, शब्द रहित।

गूंज दे० (पु०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द।

गूंजना दे० (क्रि०) गूँज करना, भिनभिनाना, भ्रमर आदि का शब्द करना।

गूंझा दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई।

गूंडा दे० (पु०) नाव का आड़ा काठ।

गूंथना दे० (क्रि०) गुहना, पिरोना।

गूंदना दे० (क्रि०) सानना, एकत्रित करना, गोला बनाना।

गूंदनी दे० (स्त्री०) गुंदेला वृक्ष विशेष, लसोर।
गूंधन दे० (पु०) लोई, पेड़ा।
गूंधना दे० (क्रि०) सानना, गूदना, बिनना।
गूंइया दे० (पु०) साथी, सङ्गी, साझी खेल का सङ्गी।
गूगल दे० (पु०) गोंदविशेष, सुगन्धितद्रव्य।
गूगला तद्० (स्त्री०) घोंघा, सीप।
गूजर तद्० (पु०) जाति विशेष, जाट अहोर का एक भेद।
गूजरी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के एक आभूषण का नाम।
गूढ़ तत्० (पु०) [गुह + क्त] गुप्त, गुह्य, अप्रकाश्य, कठिन, सूक्ष्म, एकान्त, गुहा, निर्जन स्थान। —चार (पु०) गूढ पुरुष, गोइन्दा।—ज (पु०) जारज पुत्र।—पत्र (पु०) करवीर वृक्ष, करील वृक्ष, नागफली।—पथ (पु०) अन्तःकरण, चित्त।—पाद (पु०) सर्प, भुजङ्ग, अहि।—पुरुष (पु०) चर, दूत, गुप्तचर।—भाषित (पु०) गूढ़वाद, गुप्त, विज्ञापन। —र्थ (पु०) गुप्त अर्थ, कठिन अर्थ।
गूथ दे० (पु०) सूत की लड़ी।
गूथना दे० (क्रि०) गाथना, गूंथना, तागना।
गूदड़ दे० (पु०) पुराना वस्त्र, कन्था, (पु०) कन्याधारी।
गूदड़ी दे० (स्त्री०) कन्था, रजाई, सूजनी।
गूदर दे० (पु०) मोटा, पलपल, गुदगुदा।
गूदा दे० (पु०) फलों का सारांश, मींगी, अन्तःसार, भेजा।
गूदिया दे० (पु०) लोभी, इच्छुक।
गूप तद्० (पु०) गुप्त, छिपा।
गूमड़ा दे० (पु०) फोड़ा, सूजन, गिलटी, व्रण।
गूमड़ी दे० (स्त्री०) गाठ।
गूलर दे० (पु०) डूमर, उदुम्बर, उमर।
गूहड़िया दे० (पु०) घूर, कूड़ा, कतवार, गोबर।
गृञ्जन तत् (पु०) गाजर, गजरा, लसुन, प्याज।
गृध्नु तत्० (पु०) लालची, लोभी, इच्छुक।—ता (स्त्री०) लोलुपता, लोभ, आकाङ्क्षा, अभिलाष।
गृध्र तत् (पु०) गीध, गिद्ध, पक्षि विशेष।—राज (पु०) जटायुपक्षी।
गृध्रा तद्० (पु०) मरभूखा, लोभी, लालची।

गृष्टी तत्० (स्त्री०) एकबार की ब्यायी गौ, लताविशेष, वराही कन्द।
गृह तत्० (पु०) ईंट आदि से बनाया हुआ स्थान, घर, गेह, भवन, निकेतन, आगार।—कन्या (स्त्री०) घृतकुमारी, घीकुआरि।—कर्म (पु०) गृह सम्बन्धी कार्य।—गोधिका (स्त्री०) विसतुइया, छिपकली।—छिद्र (पु०) गृहदोष, घर की गुप्त बातें, गृह कलह।—तटी (स्त्री०) गली, वीथी, घर के बाहर का चैतरा।—दास (पु०) गृह का भृत्य।—दाहक (पु०) आततायी, घर जलाने वाला, गृह नाशक।—निर्माता (पु०) घर बनाने वाला।—पति (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक। —पालक (पु०) कुकुर, गृह रक्षक।—वाटिका (स्त्री०) घर के समीप का बगीचा।—वासी (पु०) घर में रहने वाला।—भङ्ग (पु०) गृहभेदक, प्रवास।—भेदी (पु०) घर का दोष प्रकाशित करने वाला, दूत, सूचक।—मणि (पु०) प्रदीप, दीपक।—मेधी (पु०) गृही, गृहपति, घर वाला। —विच्छेद (पु०) कुटुम्ब कलह, परिवार के साथ विवाद।—स्थ (पु०) द्वितीयाश्रमी, ज्येष्ठाश्रमी, गृही, संसारी।—स्थता (स्त्री०) गृह व्यापार, गृहस्थ का धर्म।—स्थाश्रम (पु०) चार आश्रमों के अन्तर्गत दूसरा आश्रम।—गत (पु०) आगन्तुक, अतिथि, पाहुन।—र्थ (पु०) घर के लिये, गृह के निमित्त।
गृहिणी तत्० (स्त्री०) गृहस्वामिनी, भार्या, स्त्री, पत्नी।
गृही तत्० (पु०) गृहस्वामी, घर का मालिक, गृहस्थ।
गृहीत तत्० (पु०) पकड़ा हुआ, स्वीकृत, अङ्गीकृत, ग्रहण किया।
गृह्य तत्०(पु०) गृहासक्त, गृहस्थों के कर्तव्य कर्म, कर्मोपदेशक शास्त्र विशेष, ग्रहण करने योग्य। —ग्रन्थ (पु०) धर्म संहिता कर्मकाण्ड ग्रन्थ। —सूत्र (पु०) स्मृति शास्त्र।—ग्नि (पु०) गृह सम्बन्धी अग्नि, अग्निहोत्र का अग्नि, संस्कृत में अग्नि पुल्लिङ्ग है, किन्तु हिन्दी में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग मान लिया गया है।

गेंडक दे० (पु०) गेंदा, फूल विशेष।
गेंडा दे० (पु०) एक जन्तु का नाम, इसीके चमड़े की ढाल बनती है।
गेंद दे० (पु०) खेलने की एक वस्तु, गेंदा।
गेंदा दे० (पु०) पुष्प विशेष, गेंद।
गेंदी दे० (स्त्री०) खेलने की गोली।
गेंगरा दे० (पु०) केंकड़ा, कर्कट।
गे दे० (स्त्री०) गये, चले गये, बीत गये।
गेगली दे० (स्त्री०) बोदली, फूहर, कुरूप स्त्री।
गेडुआ दे० (पु०) तकिया, सिरहाना, उपधान, टोटीदार लोटा।
गेदरा दे० (पु०) अनबूझ, अज्ञान, भोंदू, अबोध।
गेदा दे० (पु०) पक्षरहित चिड़िया, पक्षहीन।
गेया दे० (पु०) मिठनी, बोटा, खण्ड।
गेय तत्० (पु०) [गै + य] गानयोग्य, सङ्गीत करने के उपयुक्त, जानेयोग्य।
गेरू दे० (पु०) गैरिक, पहाड़ की लालमट्टी, उपधातु।
गेरुआ दे० (पु०) गेरू से रंगा हुआ।
गेह तत्० (पु०) गृह, भवन, घर।—शूर (पु०) गृहप्रिय, गृहासक्त, घर ही में वीरता दिखानेवाला।
गेही तत्० (पु०) गृही, गृहस्थाश्रमी, गृहाश्रमी।
गेहूं दे० (पु०) गोहू, गोधूम, अन्नविशेष।
गेहुआं, गेहवा दे० (पु०) गेहू के रङ्ग का, गेहूवरन, सांवला।
गैंडा दे० (पु०) गेंडा, एक जन्तु, जिसकी पवित्र हड्डी की अगूठियां अर्घा आदि पितृतर्पण में काम आते हैं।
गैंत दे० (स्त्री०) कुदार, मिट्टी खोदने का अस्त्र विशेष।
गैना दे० (पु०) झाड़।
गैया दे० (स्त्री०) गाय, धेनु, गौ।
गैर दे० (पु०) अन्य, दूसरा।
गैरा दे० (पु०) घास का पूला, आँटी, मुट्ठा।
गैरिक तत्० (पु०) लाल रङ्ग की मिट्टी, गेरू।
गैरेय तत् (पु०) शिलाजतु, शिलाजीत।
गैल दे० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, गली, रथ्या, पथ।
गैहरी दे० (स्त्री०) दण्ड, रोकने का दण्ड, अर्गल, बेंडा।
गो तत् (स्त्री०) गौ, धेनु, गैया, पशु, बाण, दिशा, वचन, पृथिवी, माता। (पु०) सुवर्ण, किरण, प्रकार, सूर्य के दूसरे राशि पर जाने का समय, ऋषभ नामक ओषधि विशेष।
गोंठा दे० (पु०) उपला, उपरी, कण्डा, छाना, गोहरी।
गोंद दे० (पु०) लासा, लेंप, निर्यास।
गोंदनी दे० (स्त्री०) तृणविशेष, नरकट।
गोंदा दे० (पु०) पक्षी के खाने की लोई जिससे पक्षी फँसाए जाते हैं।
गोआल तद्० (पु०) गोवाला, गोप, अहीर।
गोंदी दे० (स्त्री०) वृक्षविशेष।
गोई दे० (पु०) गुप्त, छिपा, छिपाया।
गोए दे० गुप्त किये, छिपाये।
गोकर्ण तत्० (पु०) परिमाण विशेष, एक खचर, मृग विशेष, खच्चर, अश्वतर, सर्पविशेष, गणदेवता विशेष, तीर्थविशेष, पर्वतविशेष।—नाथ (पु०) एकतीर्थ का नाम, जिस के प्रधान देवता शिव हैं।
गोकुल तत्० (पु०) गौका समूह, व्रज, मथुरा के पास का एक गाव, यहीं नन्दजी रहते थे यहीं भगवान् श्री कृष्ण ने अपना बाल्यकाल बिताया था।
गोकुलेश तत्० (पु०) गोकुल का अधिपति, श्री कृष्णचन्द्र।
गोखरु तद्० (पु०) गोक्षुरक, एक ओषधि का नाम, भूषण विशेष।
गोखुर दे० (पु०) गौ का खुर, एक पौधे का नाम।
गोचना दे० (पु०) धरना, पकड़लेना, गेहू और चना।
गोचर तत्० (पु०) इन्द्रियों का विषय, प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, गौओं के चरने का स्थान, जन्मराशि से लेकर कतिपय राशियों के नाम।
गोचर्म तत्० (पु०) [गो + चर्मन्,] गौ का चमड़ा।
गोचा दे० (पु०) दबाना, धोखा देना।—गोची (स्त्री०) धोखे पर धोखा, दबाव पर दबाव, बलात्कार से धोखा देना।
गोचारण तत्० (पु०) गोपालन, गो को चराना।
गोचिकित्सा तत्० (स्त्री०) गौ का ओषधि, गौ की दवा।
गोछ दे० (पु०) मूछ, गोछ, गोछा।

गोजल तद्० (पु०) गोमूत्र।
गोजई दे० (पु०) मिश्रित अन्न, गेहूं और जव।
गोजर दे० (पु०) कनखजूरा, कांतर, कानसराई।
गोजिका दे० (स्त्री०) वृत्तविशेष, एक प्रकार का पौधा।
गोजिह्वा तद्० (स्त्री०) गोभी, कोवी।
गोट दे० (पु०) किनारा, मगजी, भोज, जातीय भोजन, खेलने की गोटी।
गोटा दे० (पु०) किनारा, किनारी, कोर, चांदी सोने के तारों से जो बनते हैं।
गोटी दे० (स्त्री०) चेचक, शीतला, छाले।
गोठ तद्० (पु०) गोष्ठ, पशुओं के रहने का स्थान, सभा, समूह।
गोड़ दे० (पु०) पाद, पांव, पिण्डली, टांग, पैर।
गोड़ना दे० (क्रि०) खोदना, खुरचना।
गोड़िया दे० (पु०) जाति विशेष, कहार।
गोड़ी दे० (स्त्री०) चोरी, अपहरण, छीनना।
गोण तद्० (पु०) बोरा, थैला, आधा, अन्न रखने का थैला।
गोणी तद्० (स्त्री०) अन्न आदि लेजाने का आधार विशेष, गोन, परिमाण विशेष।
गोत तद्० (पु०) गोत्र, वंश, जात, कुल।
गोतम तद्० (पु०) ऋषिविशेष, गोतम मुनि, न्याय-दर्शन कर्ता, अक्षपाद देखो।—न्वय (पु०) शाक्य-मुनि, बुद्धदेव,—नारी (स्त्री०) गोतम मुनि की स्त्री, अहल्या।
गोतमी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, कवच मुनि की भगिनी।
गोता तद्० (पु०) गोत्र, वंश, कुल जल में डुबकी लगाना।
गोतिया तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्ब, जातभाई, सम्बन्धी।
गोती तद्० (पु०) गोतज, वंशज, कुटुम्ब।
गोतीत तद्० (पु०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य, इन्द्रियातीत, यथा "गिराज्ञान गोतीत"।

—रामायण।

गोत्र तद्० (पु०) वंश, कुल, जाति, गोत, आदि पुरुष, पर्वत, पहाड़।—ज (पु०) गोत्र में उत्पन्न, ज्ञाति, कुलज, वंशीय, पर्वतीय धातु।—धन (पु०) पैतृक धन, पिता का धन।—भृत् (पु०) इन्द्र, देवराज, शक्र, वासव।—शत्रु (पु०) इन्द्र, शक्र, कुलाङ्गार।
गोद दे० (पु०) अंकवार, गोदी, सुजन, पैर का मोटा होना, दत्तक पुत्र लेना।—पसारना (वा०) मांगना, जांचना, याचना करना।—लेना (वा०) पोसना, पालना, दत्तक बनाना, पोस पूत करना।
गोदना दे० (क्रि०) चोंकना, चोंधाना, चिन्हित करना (पु०) चेचक का टीका लगाना।
गोदन्त दे० (पु०) हरिताल, पीले रङ्ग की एक धातु।
गोदा दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, पीपल व बड़ के पके फल।
गोदान तद्० (पु०) गोदान, गौ का अर्पण करना, पुण्य कर्म्म विशेष।
गोदावरी तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, इस नाम की प्रसिद्ध एक नदी, यह पवित्र नदियों में से है और दक्षिण में है।
गोंदी दे० (स्त्री०) अंकवार, गोद।
गोदोहन तद्० (पु०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना।
गोदोहनी तद्० (स्त्री०) गोदोहन पात्र, दुधेड़ी, दोहनी, घूना।
गोधन तद्० (पु०) गोसमूह, गोरूप धन, दीवाली के समय की एक पूजा, गोवर्द्धनपूजा।
गोधा तद्० (स्त्री०) धनुष के ज्या के आघात को रोकने के लिये चर्मपट्टिका, हाथ की कलाई पर बांधने का चमड़ा, जिसे धनुर्धारी लोग बांधते हैं।
गोधिका तद्० (स्त्री०) गोह, जल जन्तु विशेष।
गोधूम तद्० (पु०) शस्यविशेष, एक अन्न का नाम, नारङ्गी, गेहूं, औषधि विशेष।
गोधूली तद्० (स्त्री०) सूर्य के अस्त और उदय होने के इधर १ घड़ी और उधर १ घड़ी का समय।
गोधेनु तद्० (स्त्री०) दुग्धवती गौ, दुधार गाय।
गोधौरा दे० (स्त्री०) सायङ्काल सन्ध्याकाल।

गोनर्दीय तत्० (पु०) पतञ्जलि मुनि, व्याकरण महाभाष्यकार। (गु०) गोनर्द देश का, गोनर्द देश संबन्धी।

गोप तत्० (पु०) [गो + पा + ड] जातिविशेष, अहीर, ग्वाला, ग्वाल, राजा, ज़मीनदार, एक कीड़े का नाम।—**कन्या** (स्त्री०) अहिरिन।

गोपक तत्० (पु०) [गोप + क] बहुत ग्रामों का स्वामी।

गोपति तत्० (पु०) सांड़, वृष, बैल, गोरक्षक, अहीर, आभीर।

गोपद तत्० (पु०) गोष्पद, गाय का खुर।

गोपन तत्० (पु०) [गुप् + अनट्] छिपाव, लुकाव, अप्रकाश, रक्षण।—**ार्ह** (गु०) छिपाने योग्य, गोपनार्ह, गोप्य, गुह्य, —**ीय** (गु०) गोप्य, अप्रकाश्य—**पल्ली** (स्त्री०) गोपों का वासस्थान। —**वधू** (स्त्री०) गोप स्त्री, गोपाङ्गना।

गोपा तत्० (स्त्री०) [गोप + आ] लताविशेष, श्यामलता, सिद्धार्थ बुद्ध देव की स्त्री का नाम, कपिलवस्तु नगर के समीपस्थ, कलिराज्य के अधिपति की ये कन्या थीं, इन्हीं के गर्भ से बुद्ध देव का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, उस पुत्र का नाम राहुल था, गोपा असाधारण विदुषी और पतिभक्ता स्त्री थीं, पति के वनगमन के बाद गोपा ने भी पुत्र के साथ, बुद्धाश्रम में प्रवेश किया था, बुद्ध के मरने पर ये ही उनके आश्रम का सञ्चालन करती रहीं।

गोपाल तत्० (पु०) गोप, अहीर, विष्णु का पूर्ण अवतार, यह वसुदेव के पुत्र थे परन्तु व्रज में नन्द के यहां इनका बाल्य समय बीता था अतएव इन्हें *नन्दनन्दन* भी कहते हैं। पद्मपुराण में लिखा है कि यह सर्वदा बाल्यावस्था के समान गोप वेष ही में रहते थे।

गोपालक तत्० (पु०) } गोप, अहीर, ग्वाला,
गोपग्वाल दे० (पु०) } गोआला, गौपालनेवाला।

गोपालय तत्० (पु०) गोपगृह, ग्वालों का घर, व्रज।

गोपाष्टमी तत्० (स्त्री०) कार्तिक शुक्ल अष्टमी, इस दिन गौ की पूजा की जाती है।

गोपिका तत्० (स्त्री०) [गोप + इक् + आ] गोप स्त्री, गोपाङ्गना, अहीरिन।

गोपित तत्० (गु०) रक्षित, पालित, गुप्त, अप्रकाशित।

गोपी तत्० (स्त्री०) [गोप + ई] गोपस्त्री, गोपाङ्गना, ग्वालिन।—**नाथ** (पु०) श्रीकृष्ण, गोपियों के पति।

गोपीचन्दन तत्० (पु०) एक प्रकार का चन्दन पीत वर्ण चन्दन विशेष।

गोपुच्छ तत्० (पु०) हार विशेष, गौ की पूंछ समान बना हुआ हार।

गोपुर तत्० (पु०) नगर द्वार, शहर का फाटक पुरद्वार, क़िले का फाटक।

गोप्ता तत्० (पु०) [गुप् + तृण्] रक्षक, पालक रक्षाकर्ता, अप्रकाशक।

गोप्य तत्० (गु०) [गुप् + य] रक्षणीय, गोपनीय।

गोप्रकाण्ड तत्० (पु०) श्रेष्ठ गौ, उत्तम गौ प्रधान गौ।

गोफणा तत्० (स्त्री०) गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र विशेष, भिन्दिपाल, ढेलवास, गुफना।

गोफन तद्० (पु०) ढेलवास।

गोफिया दे० (स्त्री०) गोफन, ढेलवास।

गोबर दे० (पु०) गोमय, गौ का मल, गोविष्ठा —**गनेश** (पु०) अकर्मण्य, अलस, जड़, स्थूल।

गोबरी दे० (स्त्री०) गोबर का लिपाव, गोमयलेपन

गोबरौंदा दे० (पु०) गोबर का कीड़ा।

गोबरौदा दे० (पु०) गोबरौंदा।

गोभिल तत्० (पु०) मुनि विशेष, सामवेदी संध्या के सूत्रकार, गोभिलगृह्यसूत्र नाम का कर्मकाण्ड ग्रन्थ इन्हीं का बनाया है, इस ग्रन्थ का कर्मकाण्डी समाज में विशेषतः सामवेदियों में बड़ा आदर है।

गोभी दे० (स्त्री०) कली, अङ्कुर, नवोशाखा, पौधा विशेष, गोजिह्वा।

गोमका तत्० (पु०) कुम्हड़ा, कोहड़ा।

गोमती तत्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध नदी विशेष वैदिक मन्त्र विशेष।

गोमन्त तत्० (पु०) पर्वत विशेष, एक पहाड़ का नाम।

गोमय तत्० (पु०) [गो+मयट्,] गोबर।
गोमक्षिका तत्० (स्त्री०) दंश, डांस।
गोमायु तत्० (पु०) [गो+मा+उण्] शृगाल, सीयार, गीदड़।
गोमिथुन तत्० (पु०) दो गौ, गौ की जोड़ी।
गोमुख तत्० (पु०) सेंध, सुरङ्ग, चोरी करने के लिये एक प्रकार से मकान में बिल करना, गौ का मुख, जपमाला छिपाने के लिये एक प्रकार की वस्तु जो ऊनी वस्त्र से बनायी जाती है, यन्त्र विशेष।
गोमुखी तत्० (स्त्री०) [गोमुख+ई,] हिमालय पर्वत से गङ्गाजी के गिरने के कारण गोमुख के समान बना हुआ स्थान, तीर्थ विशेष, जपमाली, जपमाला रखने की झोली।
गोमूढ़ तत्० (पु०) गौ के समान मूर्ख, अतिशय, अज्ञान, अबोध।
गोमूत्र तत्० (पु०) गोमूत, गौ का मूत।
गोमूत्रिका तत्० (स्त्री०) तृणविशेष, काव्य का एक भेद, चित्रकाव्य विशेष, पद्य बनाने का एक प्रकार, एक बन्ध का नाम।
गोमेद तत्० (पु०) [गो+मिद्+अल्] पीले रङ्ग का गो के मस्तकस्थित पदार्थ विशेष।
गोमेध तत्० (पु०) [गो+मिध्+अल्] यज्ञविशेष।
गोर तद्० (पु०) गौर वर्ण, फरसा, कबर, समाधिस्थान।—**मदायन** इन्द्र धनु यथाः—
"धनु है यह गोरमदायन नाहीं शरधार बहै जलधार वृथाही"।
गोरस तत्० (पु०) गव्य, दूध, दही, मठा, तक्र, छाछ।
गोरक्ष तत्० (पु०) [गो+रक्ष्+अच्] गोपाल, गौ रखनेवाला।—**नाथ** (पु०) प्रसिद्ध सिद्ध और धर्मप्रवर्तक, खृष्टीय १४—वीं शताब्दी में ये महात्मा उत्तर पश्चिम प्रदेश में उत्पन्न हुए थे। ये कबीर साहब के समकालीन थे। इनके अनेकों शिष्य थे, शिष्य इनको गुरु गोरखनाथ या गुरु गोरखनाथ कहते थे। इनका कहना है कि सब से श्रेष्ठ संसार में योगी ही हैं। इन्होंने उदार धर्म का प्रचार किया है, सभी श्रेणी के मनुष्यों को ये अपने सम्प्रदाय में लेते थे। उदारवादी होने के कारण राजा रङ्क सभी इनका आदर करते थे। इन्होंने गोरक्षसंहिता नामक योग का ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा है।
गोरसदायन दे० (पु०) इन्द्र धनु, गोरमदायन।
गोरसी तद्० (स्त्री०) दोहनी, दूध, दुधहंड़ी।
गोरा तद्० (पु०) गौर वर्ण, गोर, उजला, फिरङ्गी पल्टन के जवान, (स्त्री०) **गोरी**।
गोरू दे० (पु०) गौ, गो, वृषभ, पशु।
गोरुत तत्० (पु०) दो कोश, क्रोशद्वय।
गोरोचना तत्० (स्त्री०) स्वनाम ख्यात पीतवर्ण द्रव्यविशेष, गोमस्तक स्थित शुष्कपित्त।
गोल तत्० (पु०) वर्तुल, गोलाकार, मटका, मण्डलाकार।
गोलक तत्० (पु०) पति के न रहने पर जार से उत्पन्न पुत्र, उपपति के द्वारा उत्पन्न विधवा पुत्र।
गोलचला दे० (पु०) गोलन्दाज, तोप चलानेवाला।
गोलमिर्च दे० (स्त्री०) काली मिर्च।
गोला दे० (पु०) घेरा, मण्डल, गोल, वृत्त, तोप का गोला, लोहे का गोलाकार पिण्डा, नारियल, अन्न रखने का स्थान, मण्डी, जहां अन्न बिकता है।
गोलाई दे० (स्त्री०) गोलापन।
गोलाकार तत्० (पु०) गोलरूप, गोल।
गोलाध्याय तत्० (पु०) ज्योतिष विद्या, ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम।
गोलार तद्० (पु०) गोलाई, गोलता।
गोली दे० (स्त्री०) छोटा गोला, बन्दूक की गोली।
—**मारना** (वा०) बन्दूक चलाना, बन्दूक मारना।
गोलोक तत्० (पु०) श्रीकृष्ण का स्थान, नित्यधाम, वैकुण्ठ।—**प्राप्ति** (स्त्री०) वल्लभाचार्य जी की मुक्ति, गतिविशेष।—**वासी** (पु०) भगवान्, श्रीकृष्ण, राजा।
गोलोमा तत्० (पु०) औषध विशेष, वच।
गोवना दे० (क्रि०) छिपाना, लुकाना, ढांकना।

गोवर्द्धन तत्० (पु०) वृन्दावन के एक पर्वत का नाम, स्वनाम प्रसिद्ध पर्वत, पूजा न पाने के कारण जब इन्द्र ने व्रज को वृष्टि से नष्ट करना चाहा था, तब श्रीकृष्ण ने इसी पर्वत को उठाकर व्रज-वासियों की रक्षा की थी। इस पर्वत को श्रीकृष्ण ने अपनी कनिष्ठा अङ्गुली पर धारण किया था, वल्लभाचार्य जी ने इसी पर्वत से श्रीनाथ जी का आविष्कार किया था।—धारी (पु०) गोवर्द्धन पर्वत को धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण।

गोवर्द्धनाचार्य तत्० (पु०) संस्कृत के कवि, शृङ्गार के प्रसिद्ध आर्यासप्तशती नामक ग्रन्थ का कर्त्ता, अपने गीतगोविन्द में जयदेव ने इनका उल्लेख और बड़ी प्रशंसा की है। शृङ्गाररस की कविता लिखने में यह सिद्ध हस्त थे। इनके पिता का नाम नीलाम्बर था। उमापतिधर के समसामयिक होने के कारण १२ वीं शताब्दी का प्रारम्भ और मध्य इनका समय सिद्ध होता है।

गोवशा तत्० (स्त्री०) वन्ध्या गौ, वहिला गाय।

गोविन्द तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, गोअधिपति, वृहस्पति।—ठक्कुर (पु०) यह मिथिलावासी संस्कृत पण्डित थे, काव्यप्रकाश की कारिकाओं की टीका इन्होंने लिखी है, जिसका नाम काव्यप्रदीप है। इनका समय अभीतक निश्चित नहीं हुआ है परन्तु अनुमान से १२-वीं सदी का अन्तिम भाग ही विद्वानों ने इनका समय सिद्ध किया है। —राज (पु०) मनुस्मृति के एक टीकाकार का नाम, इन्हीं की बनायी टीका का अवलम्बन कर के कुल्लूक भट्ट ने मन्वर्थमुक्तावली नाम की टीका बनायी है। इनके पिता का नाम माधव था। ग्यारहवीं सदी के अन्तिम भाग में इन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था।

गोशाला तत्० (स्त्री०) गोगृह, गाय बांधने का स्थान, गोसाल।

गोष्ठ तत्० (पु०) वाड़ा, गौओं के रहने का स्थान। —विहार (पु०) गौ चराने के समय श्रीकृष्ण की केलि।

गोष्ठी तत्० (स्त्री०) परिवार, सभा, कुटुम्ब, ज्ञाति।

गोष्पद तत्० (पु०) गौ के रहने का स्थान, गौ के खुर प्रमाण।

गोसद्दक्ष तत्० (पु०) चमरी गाय व वनगौ।

गोसाईं तद्० (पु०) संन्यासियों का श्रद्ध, ईश्वर, महन्त, गुरु।

गोसैंया दे० (पु०) ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु।

गोस्तन तत्० (पु०) गौ की थन, गुच्छ, घोंध, स्तबक।

गोस्तनी तत्० (पु०) द्राक्षा, दाख, अङ्गूर।

गोस्थान तत्० (पु०) [गो + स्था + अनट्] गोष्ठ, गोठ, गोकुल।

गोस्वामी तत्० (पु०) गोपति, गोरक्षक, वल्लभाचार्य के वंशीय।

गोह दे० (पु०) विषखोपरा, गोधा, विषखपरा।

गोहत्या तत्० (स्त्री०) गोवध, गोहिंसा।

गोहरी दे० (स्त्री०) उपरी, कण्डा।

गोहार दे० (पु०) हुल्लड़, रौला, गुल गपाड़, सहाय, सहायतार्थ आह्वान।

गोंहू दे० (पु०) गेहूं, गोधूम।

गोंहुवन दे० (पु०) सर्प विशेष, लाल रङ्ग का साँप।

गौं दे० (स्त्री०) दाव, सुभीता, अवसर, ठिकाना।

गौ दे० (स्त्री०) गाय, गौ, गैया, धेनु।

गौख दे० (पु०) गवाक्ष, खिड़की।

गौखा दे० (स्त्री०) ताक, आला, दिवारखा।

गौछई दे० (स्त्री०) अङ्कुर, कैन, फुनगी।

गौड तत्० (पु०) स्वनाम ख्यात देश, बङ्गाल का पूर्वी भाग, गौड देश का वासी, कायस्थ विशेष, दशविध ब्राह्मणों के अन्तर्गत एक ब्राह्मण।

गौडा दे० (पु०) उड़ीसा, कहार।

गौडिया दे० (पु०) गौड़ देश के वासी।

गौडी तत्० (स्त्री०) गुड़ की मदिरा, रागविशेष काव्यरीति विशेष।

गौण तत्० (पु०) अप्रधान, अधीन, गौणीवृत्ति के द्वारा बोधित अर्थ।—काल (पु०) अप्रधान काल।

गौणी तत्० (स्त्री०) अस्सी प्रकार की लक्षणाओं के अन्तर्गत एक लक्षण का नाम।

गौतम तत्० (पु०) बुद्ध देव का दूसरा नाम, ये कपिल वस्तु के राजा शुद्धोदन के पुत्र थे। इनकी माता का नाम माया देवी था। ये अपनी माता को ४५ वर्ष की अवस्था में उत्पन्न हुए थे, इनके जन्म के ७ दिन के बाद इनकी माता परलोक गामिनी हुईं। यह अपनी माता के एक मात्र पुत्र थे। ये स्वभाव से ही दयालु थे, संसार के दुःखों से उद्विग्न होकर इन्होंने राज्य छोड़ दिया और वन चले गये। पीछे येही बुद्ध नाम से प्रसिद्ध हुए।

(२) गोत्र प्रवर्तक भारद्वाज मुनि का नामान्तर, ये महर्षि गौतम के पुत्र थे।

(३) कृपाचार्य का नामान्तर, ये गौतमगोत्रीय शरद्वान के पुत्र थे। इसी कारण इनका गौतम नाम पड़ा था।

गौना दे० (पु०) द्विरागमन, वधू प्रवेश, पति के घर प्रथमवार आगमन।

गौनहार दे० (पु०) गौने के बराती, वधूप्रवेश में दुलहे के साथ जानेवाले।

गौर तत्० (गु०) गोरा, शुक्ल वर्ण, सुन्दर।

गौरव तत्० (पु०) [गुरु + ष्यञ्] गुरुता, प्रभाव, मर्यादा गुरुत्व, भार, आदर, सम्मान, पूज्यबुद्धि, प्रतिष्ठा। —जनक (गु०) मर्यादा जनक, सम्मान सूचक, —न्वित (गु०) प्रतिष्ठित, मान्य, गौरव युक्त, पूज्य, मान्य।

गौरा तत्० (स्त्री०) पारवती, दुर्गा, पक्षिविशेष।

गौराङ्ग तत्० (गु०) श्वेतवर्ण, सुन्दर, पीतवर्ण, यूरोपियन।

गौरिका तत्० (स्त्री०) [गौरी + कन् + आ] आठवर्ष की कन्या।

गौरिया दे० (स्त्री०) चटक, गौरा, मिट्टी का हुक्का।

गौरिला तत्० (स्त्री०) पृथिवी, धरणी, धरती।

गौरी तत्० (स्त्री०) [गौर + ई] पार्वती, अष्टवर्षीया कन्या, हरदी, दारूहरदी, गो रोचना, प्रियङ्गु वृक्ष पृथ्वी, नदी विशेष, वरुण की स्त्री, बुद्ध की एक शक्ति का नाम, श्वेतदूर्वा, रागिनी विशेष, मालव राग की पत्नी, जटामांसी। —पति (पु०) शिव, महादेव। —पुत्र (पु०) कार्तिकेय, गणेश।

गौरीश तत्० (स०) (पु०) शिव, महादेव, भवानीपति।

गौशाला तत्० (स्त्री०) गौओं के रहने का स्थान, या घर।

ग्यारस दे० (स्त्री०) एकादशी तिथि, व्रतविशेष।

ग्यारह दे० (पु०) एकादश संख्या, दश और एक, ११।

ग्रथित तत्० (गु०) [ग्रथ + क्त,] कृतग्रथन, गुथा हुआ, पिरोया हुआ।

ग्रन्थ तत्० (पु०) प्रबन्ध, शास्त्र, पुस्तक, सिक्खों की धर्मपुस्तक का नाम, अनुष्टुप्छन्द, श्लोक,। —कर्ता (पु०) [ग्रन्थ + कृ + तृण्,] ग्रन्थकारक, निबन्धकारक, शास्त्रकर्ता, ।—कार (पु०) [ग्रन्थ + कृ + अण,] ग्रन्थकारक, ग्रन्थकर्ता।

ग्रन्थक तत्० (पु०) [ग्रन्थ + अक्] निर्माण कर्ता, निबन्धकार, रचयिता, माला का सूत्र।

ग्रन्थन तत्० (पु०) ग्रन्थ + अनट्, गुम्फन, ग्रथित करण, गांथन, रचन, निर्माण।

ग्रन्थि तत् (स्त्री०) [ग्रन्थ + ई,] बाँस आदि की गिरह, गांठ।

ग्रन्थिक तत्० (पु०) दैवज्ञ, गणक, सहदेव नामक पाण्डव, पीपरामूल।

ग्रन्थित तत्० (गु०) [ग्रन्थ + इत,] ग्रथित, गांथा हुआ, रचित, निर्मित।

ग्रन्थिमान् तत्० (पु०) [ग्रन्थि + मत्] हरसिंगार, जड़, जोड़, वह औषधि जिससे टूटी हड्डी जुड़ जाती है।

ग्रन्थिल तत्० (पु०) पीपरामूल, अदरख, आदी, कांकई वृक्ष, करील।

ग्रसन तत्० (पु०) [ग्रस् + अनट्] भक्षण, खादन, निगलना, आक्रमण।

ग्रस्त तत्० (गु०) [ग्रस् + क्त] युक्त, खादित, आच्छादित, आक्रान्त, राहु ग्रास, सुप्त वर्णपद, असम्पूर्ण वाक्य, गृहीत, खाया गया।—स्त (पु०) चन्द्र सूर्य का ग्रहण के अनन्तर अस्त होना।—ोदय (पु०) [ग्रस्त + उदय] राहु ग्रस्त सूर्य और चन्द्र का उदय।

ग्रह तत्० (पु०) [ग्रह + अच्] सूर्य आदि नवग्रह, अनुग्रह, निर्बन्ध, आग्रह, हठ, अध्यवसाय।

—कल्लोल (पु०) आठवां ग्रह, राहू।

ग्रहण तत्० (पु०) [ग्रह+अनट्] स्वीकार लेना, उपलब्धि, प्राप्ति, चन्द्र और सूर्य का उपराग, ग्रहण।—न्त (पु०) ग्रहण की समाप्ति, मोक्ष, उग्रह।

ग्रहस्थापन तत्० (पु०) नवग्रहों की स्थापना, पूजा विशेष।

ग्रहणी तत्० (स्त्री०) अतिसार रोग, संग्रहणी रोग।

ग्रहणीय तत्० (गु०) [ग्रह+अनीय] ग्रहण करने योग्य, ग्राह्य।

ग्रहीता तत्० (गु०) ग्रहणकर्ता, ग्राहक, गाहक।

ग्राम तत्० (पु०) समूह, मनुष्यों का समूह, गांव, बस्ती, पुरवा, खेड़ा, यथा—

गिरि ग्राम लै लै हरि ग्राम मारै,
मनौ पद्मनीपत्र दन्ती विदारै।
—रामचन्द्रिका।

—कुक्कुट (पु०) पोसा मुर्गा।—कूट (पु०) शूद्र जाति।—गृह्य (गु०) गांव का बाहर।—तक्षा (पु०) गांव का बढ़ई।—याजक (पु०) गांव के पुरोहित।—वासी (गु०) गांव का रहने वाला।

ग्रामणी तत्० (गु०) ग्राम के मुखिया, (पु०) ग्रामाधिपति, गांव के स्वामी, विष्णु, मण्डल, नापित, यक्ष (स्त्री०) वेश्या।

ग्रामिक तत्० (गु०) ग्राम्य, दिहाती, गवइया।

ग्रामीण तत्० (गु०) [ग्राम+इन] ग्राम में उत्पन्न, गवांर, गवँइयां (पु०) गांव का सूकर, कूकुर आदि।

ग्रामपञ्च तत्० (पु०) गांव के झगड़े मिटाने वाले, गाँव के मुखिया।

ग्रामेश तत्० (पु०) [ग्राम+ईश] गांव का मालिक।

ग्राम्य तत्० (गु०) [ग्राम+य] ग्राम सम्बन्धी, ग्राम जात, मूर्ख, गवांर, छल कपट रहित।—देवता (पु०) ग्रामरक्षक देवता।

ग्राव तत्० (पु०) पर्वत, पत्थर, दृढ़, सख्त।

ग्रास तत्० (पु०) [ग्रस+घञ्] कवल, कौर।—च्छादन (पु०) अन्न वस्त्र, रोटी कपड़ा।

ग्रासक तत्० (गु०) भक्षक, खादक, घेरनेवाला, रोकने वाला।

ग्रासना तद्० (क्रि०) रोकना, घेरना, बिंधना।

ग्राह तत्० (पु०) [ग्रह+घञ्] ग्रहण, जल जन्तु विशेष, सूँस, मगरमच्छ।

ग्राहक तत्० (गु०) ग्रहण करनेवाला, गाहक, ग्राहग्राही, खरीदार।—ता (स्त्री०) लोभ, ग्रहण करने की अभिलाषा।

ग्राही तत्० (गु०) [ग्रह+णिन्,] मल रोधक, धारक, ग्रहण कर्ता।

ग्राह्य तत्० (गु०) [ग्रह+ध्यण्,] ग्रहण के योग्य, मनोनीत, अभिलषित।

ग्रीवा तत्० (स्त्री०) गला, गरदन, कण्ठ, गले के पीछे का भाग।—भरण (पु०) कण्ठ भूषण, कण्ठा।

ग्रीष्म तत्० (पु०) ऋतुविशेष, ऋतुओं के अन्तर्गत एक ऋतु का नाम, उष्ण, निदाघ, गरमी के दिन।—काल (पु०) निदाघ, उष्णकाल।

ग्रैवेय तत्० (पु०) [ग्रीवा+ढक्,] कण्ठभूषण, गले का गहना।

ग्लपित तत्० (गु०) [ग्लप्+क्त,] अवसन्न, थकित, श्रान्त।

ग्लह तत्० (पु०) जुए की बाजी, पण।

ग्लान तत्० (गु०) [ग्लै+क्त] रोग द्वारा दुर्बल शरीर, रोगी, खिन्न।

ग्लानि तत्० (स्त्री०) [ग्ल+क्ति,] श्रान्ति, निन्दा, मानसी व्यथा, मन की थकावट।

ग्वाला दे० (पु०) अहीर, गोपाल, गोप।

ग्वालिन दे० (स्त्री०) अहिरिन, गोपी।

ग्वैंडा दे० (अ) समीप, निकट, आस पास, नगर के समीप।

ग्वैंडे दे० (पु०) पास, समीप, निकट।

ग्लौ तत्० (पु०) चन्द्रमा, शशि, विष्णु, कपूर।

घ

घ तत्० (पु०) घण्टा, घर्घर शब्द, मेघ, धूप।

घंघोरना दे० (क्रि०) मलिन करना, कलुषित करना, फकझोरना।

घंच दे० (पु०) गला, कण्ठ, नरेटी, ग्रीवा।

घघरा दे० (स्त्री०) लहँगा, साया, घघराजक, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र।

घचाघच्च दे० (वा०) ठसाठस, अत्यन्त सङ्कीर्णता, लबालब भरा।

घट तत्० (पु०) कलश, कुम्भ, गगरी, घड़ा, परिमाण विशेष देह, मन।—ज (पु०) कुम्भज ऋषि, अगस्त्य-मुनि।—दासी (स्त्री०) कुटनी, दूती, सङ्गम-कारिणी।—योनि (पु०) अगस्त्यमुनि, कुम्भज।

घटक तत्० (पु०) योजक, योजनकारी, कुटना, दूत, मध्यस्थ, बिचवैया, बिचवनिया।—ता (स्त्री०) योजकता, दौत्य, कुटनापन।

घटकर्पर तत्० (पु०) राजा विक्रमादित्य की सभा के एक सभासद पण्डित, इनकी बनायी एक छोटी सी पुस्तिका है, जिसका नाम घटकर्पर है, इसके अतिरिक्त नीतिसार नामक एक और भी ग्रन्थ इनका बनाया है। घटकर्पर काव्य बनाकर इन्होंने अपनी यमकप्रियता का परिचय देना चाहा है, घटकर्पर के समान एक राक्षस काव्य भी यमकप्रधान है। सम्भव है वह भी इन्हीं प्रकाण्ड पण्डित का बनाया हो। विक्रमादित्य के समका-लीन होने से इनका समय भी छठवीं शताब्दी माना जाता है।

घटती तद्० (स्त्री०) कमी, न्यूनता, अल्पता।

घटना तत्० (स्त्री०) योजन, मिलन, संघटीकरण, अकस्मात्, प्रापण, कार्य, अद्भुत कर्म, विलक्षण दृश्य, दे० कम, न्यून।

घटनीय तत्० (पु०) [घटन+अनीय] योजनीय, सम्भाव्य, घटने योग्य, होने योग्य।

घटन्त दे० (स्त्री०) ह्रास, हीनता, उतार, अल्पता, न्यूनता।

घटब दे० (पु०) कम होना, क्षीण होना, न्यून होना, निर्माण करना।

घटवार दे० (पु०) घाट वाला, जो नदी के पार उतारने का काम करता है।

घटहा दे० (पु०) नौका, नदी के इस पार उस पार जाने वाली नियत नाव, अपराधी, दोषी।

घटा दे० (स्त्री०) मेघ, बादल, मेघों का उमड़ना, भीड़। (पु०) कम हुआ, घट गया, न्यून हुआ।

घटाटोप तत्० (पु०) [घट+आटोप] ओहार, पालकी का आच्छादन, पर्दा, जवनिका, दम्भ, अभिमान।

घटाना दे० (क्रि०) कम करना, न्यून करना।

घटाव दे० (पु०) उतार, कमती, न्यूनता।

घटिका तत्० (स्त्री०) घड़ी, मुहूर्त, दण्ड, गुल्फ, एड़ी के ऊपर का भाग।

घटित तत्० (पु०) [घट+इत] मिलित, योजित, संयुक्त।

घटिया दे० (पु०) निकृष्ट, अधम, अल्प मूल्य की वस्तु।

घटी तत्० (स्त्री०) [घट+ई] दण्ड, घड़ी, क्षुद्र घट।—कार (पु०) घड़ी बनाने वाला, घड़ीसाज़, कुम्हार।—यन्त्र (पु०) समय सूचक यन्त्र, घड़ी, जल निकालने का यन्त्र, दे० हानि, घाटा, टोटा।

घटोत्कच तत्० (पु०) राक्षस विशेष, हिडिम्बा राक्षसी का पुत्र, द्वितीय पाण्डव भीम के औरस से और हिडिम्बा के गर्भ से यह उत्पन्न हुआ था। महाभारत के रणक्षेत्र में इसने पाण्डवों की ओर से युद्ध किया था। कर्ण ने अर्जुन का वध करने के लिये जो शक्ति रक्षित की थी, उसी शक्ति से इसे कर्ण को मारना पड़ा, दूसरी गति ही नहीं थी। क्योंकि इसके पराक्रमानल में कौरव सेना दग्ध हो रही थी। यदि कर्ण उस शक्ति को काम में न लाते, तो समस्त कौरव सेना नष्ट भ्रष्ट हो जाती। परन्तु इससे अर्जुन दुर्जेय हो गये और

कर्ण के भी उसी समय यह निश्चय हो गया कि मैं अर्जुन के द्वारा अवश्य ही मारा जाऊंगा।

घटोत्कर्ण तत्० (पु०) शिव के एक अनुचर का नाम, यह मङ्गल का पुत्र था, इसकी माता का नाम मेधा था। इसका दूसरा नाम घटेश्वर था। शाप के कारण मनुष्ययोनि में इसे उत्पन्न होना पड़ा था, उज्जयिनी नगरी में इसका जन्म हुआ। विक्रमादित्य के नवरत्नों के परास्त करने की इच्छा से इसने तपस्या की थी, परन्तु कालिदास के अतिरिक्त अन्यरत्नों के जीतने का इसे वर मिला।

(२) हरिवंश में लिखा है कि घटोत्कर्ण विष्णुद्वेषी एक राक्षस था, हरि का नाम न सुन पड़े इसके लिये यह सर्वदा कानों में घण्टा बांध कर बजाया करता था। शिवजी की आज्ञा से बदरिकाश्रम में जाकर हरि रूपी श्रीकृष्ण की इसने स्तुति की और मुक्त हुआ।

घट्ट तत्० (पु०) घाट, नदी का या तालाब का किनारा, स्नान करने का स्थान।

घट्टा दे० (पु०) गिलटी, काम करने से चाम का मोटा होना।

घड़घड़ाना दे० (क्रि०) गरजना, तड़कना, घड़ घड़ करना।

घड़त दे० (स्त्री०) बनावट, मांचा, आकृति, डौल।

घड़ना दे० (क्रि०) गढ़ना, बनाना, निर्माण करना।

घड़ा तद्० (पु०) गगरा, कलस, घट।

घरिया दे० (स्त्री०) कुल्हिया, पुरवा, मिट्टी का छोटा बरतन।

घड़ियाल दे० (पु०) मगर, नक्र, जलजन्तु विशेष, घण्टा, वाद्य विशेष।

घड़ियाली दे० (पु०) घण्टा, बजाने और बनाने वाला।

घड़ी दे० (स्त्री०) समय का परिमाण, साठ पल, समय बतानेवाला यन्त्र।—**में तोला घड़ी में माशा** (वा०) अव्यवस्थितचित्त, जिसका चित्त क्षण क्षण बदलता रहे।

घड़ौंचा दे० (पु०) तिपाई।

घण्टा दे० (पु०) घड़ी, वाद्य विशेष, कांस्यनिर्मित, वाद्यविशेष, घड़ी, घड़ियाल।—**पथ** (पु०) गांव का प्रधान मार्ग।—**शब्द** (पु०) घण्टा का शब्द, समय सूचक ध्वनि।

घण्टालि तद्० (स्त्री०) छोटा घण्टा, वृक्ष विशेष, कोसातकी।

घण्टिका तत्० (स्त्री०) तालु के ऊपर की छोटी जीभ, चोटी, लोला।

घण्टी दे० (स्त्री०) घुटिया, छोटा घण्टा।

घण्टू दे० (पु०) हाथी का घण्टा, प्रताप, उत्ताप, घण्टामाला।

घण्टेश्वर तत्० (पु०) देवता विशेष, शिव का गण, घटोत्कर्ण, मङ्गल का पुत्र।

घतिया तद्० (पु०) घातक, नृशंस, क्रूरकर्मा, हत्यारा।

घन तत्० (पु०) तरलता रहित, गाढ़, सान्द, निविड़, अविरल, मेघ, बादल, ठोस, पोढ़ा, दृढ़, मोटा, अधिक, सजातीय, तीन अङ्कों का पूरण करना, गणित विशेष, हथौड़ा, निहाई।—**काल** (पु०) वर्षाऋतु।—**गोलक** (पु०) सोना और चाँदी का मिलान।—**गरज** (पु०) मेघ शब्द, मेघ गर्जन।—**घन** (पु०) सर्वदा, सदा।—**घनाना** (क्रि०) घन घन शब्द करना।—**घेरा** (पु०) घघरा, लहंगा।—**घोर** (पु०) गम्भीर मेघ।—**ज्वाला** (स्त्री०) विद्युत् बिजुली।—**ता** (स्त्री०) गाढ़ता, निविड़ता।—**ध्वनि** (पु०) मेघगर्जन, मेघ शब्द।—**निहार** (पु०) तुषारराशि, अधिक तुषार।—**नाद** (पु०) मेघ का शब्द, मेघनाद रावण का पुत्र इन्द्रजित्।—**पदवी** (स्त्री०) आकाश, अन्तरिक्ष, व्योम, नभ।—**फल** (पु०) अङ्क विद्या विशेष, गणित विशेष।—**मूल** (पु०) पूरण करने योग्य सजातीय तीन अङ्कों का मूल अङ्क।—**रस** (पु०) सघन, गाढ़ा अवलेह, सम्यक् पकाया रस।—**श्याम** (पु०) अधिक कृष्ण वर्ण, मेघ के सदृश काला, श्री कृष्ण।—**समय** (पु०) वर्षा ऋतु।—**सार** (पु०) कर्पूर, पारद विशेष।

घना दे० (गु०) गहरा, सघन, बहुत देर, अधिक, प्रचुर ।

घनासन दे० (पु०) भैंसा, महिष ।

घनाह्नु तत्० (पु०) [घन + आह्नु] औषध विशेष, नागरमोथा ।

घनेरा दे० (गु०) बहुत से बहुत, अधिक, (बहु व०) घनेरे (स्त्री०) घनेरी ।

घपची दे० (स्त्री०) लिपट, दो हाथ की चिपट ।

घबराना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, हड़बड़ाना, उद्विग्न होना ।

घबराहट दे० (स्त्री०) दुःख, क्लेश, उद्वेग, व्याकुलता ।

घवरी दे० (स्त्री०) गुच्छा, स्तबक ।

घमण्ड दे० (पु०) दर्प, अभिमान, अहङ्कार, गर्व ।

घमण्डी दे० (गु०) अहङ्कारी, अभिमानी, दाम्भिक ।

घमरौल दे० (स्त्री०) रोला, कोलाहल, भीड़भाड़ ।

घमस दे० (स्त्री०) निर्वात, वायु रहित, गुम्मट ।

घमसान दे० (पु०) भयङ्कर, घोर, भयानक, लड़ाई, युद्ध ।

घमाघम दे० (गु०) धमाधम, धमधम शब्द, आघात का शब्द, अधिक धूप, धूप ही धूप ।

घमाना दे० (क्रि०) धूप में बैठना, धूप दिखाना, तापना ।

घमासान दे० (पु०) घोर, भयङ्कर, युद्ध ।

घमोरी दे० (स्त्री०) अम्भोरी, अंधोरी ।

घर तद्० (पु०) गृह, मकान, वासस्थान ।—घालना (क्रि०) गृह में रखलेना, उपपत्नी करना, गृह नाश करना ।—चलाना (वा०) गृह का प्रबन्ध करना, घर का खर्चवर्च चलाना ।—जाना (वा०) घर पर किसी आपत्ति का पड़ना, उजड़ना, बिगड़ना ।—डुबोना (वा०) घर में कलह उत्पन्न करना, अन्य का या अपना घर नष्ट करना । —डूबना (वा०) नाश होना, घर का नाश होना । —बैठना (वा०) निकम्मा बैठना, काम काज न करना, घर का टूटना ।—बैठ जाना (वा०) निश्चिन्त होना, काम न रहने से घर बैठ जाना, घर का टूटना, विनष्ट होना ।—होना (वा०) स्त्री पुरुष में आपस का प्रणय होना ।

घरऊ दे० (गु०) घरेला घरुवा, घर संबन्धी, घर का ।

घरनई दे० (स्त्री०) चौघड़ा, बेड़ा, घेर, बाड़ा बनाना ।

घरना दे० (क्रि०) गढ़ना, बनाना, घर्षण करना, घिसना ।

घरनी दे० (स्त्री०) स्त्री, भार्या, पत्नी ।

घरखराब दे० (पु०) घर का घटाला ।

घरबार दे० (पु०) घराना, कुटुम्ब, परिवार ।

घरबारी दे० (गु०) गृहस्थी, कुटुम्बी ।

घररा दे० (पु०) घरघराहट, दुःख, पीड़ा ।

घरराटा दे० (पु०) ध्वनिविशेष, नासिका-ध्वनि ।

घरवाला दे० (पु०) गृही, गृहस्थी, गृहस्वामी ।

घराना दे० (पु०) कुटुम्ब, घर के लोग, परिवार वर्ग ।

घरामी दे० (पु०) छवैया, घर छाने वाला ।

घरिक दे० (अ०) एक घड़ी, घड़ी भर, थोड़ी देर ।

घरी दे० (स्त्री०) तह, चुनट, तहलगई, एक नियत समय, घड़ी ।

घरेला दे० (गु०) घर का पोसा, घर में उत्पन्न, घर सम्बन्धी, घर का ।

घरौंदा दे० (पु०) खेल के लिये लड़कों का बनाया घर, छोटा घर ।

घर्घर तत्० (पु०) शब्द विशेष, शूकर का शब्द, चक्की का शब्द ।

घर्घरा दे० (स्त्री०) घाघरा, एक नदी का नाम, सरयू ।

घर्म तत्० (पु०) घाम, धूप, गरमी, श्रमवारि, स्वेद, पसीना ।—द्युति (पु०) दिवाकर, सूर्य ।—बिन्दु (पु०) स्वेदबिन्दु, स्वेदकणिका, पसीना ।—क्ति (गु०) पसीना से भींगा, स्वेद से लदफद ।

घर्षण तत्० (पु०) [घृष् + अनट्,] मार्जन, मर्द्दन, घिसना ।

घर्षित तत्० (गु०) [घृष् + क्त] घृष्ट, घिसा हुआ ।

घलुवा दे० (पु०) सेंत, बिनादाम का, खरीदार जो दूकानदार से लेता है, फूँक ।

घसना दे० (क्रि०) घर्षण करना, रगड़ना ।

घसियारा दे० (पु०) घास काटने वाला, मजूर ।

घालित दे० (गु०) मारा हुआ, नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ।

घाली दे० (क्रि०) डाल दी, फेंक दी, मार दी, ये शब्द रामायण में प्रयुक्त हुए हैं, बुन्देलखण्ड की भाषा में इनका विशेषतः प्रयोग होता है।

घाव दे० (पु०) चोट, आघात, क्षत, क्षत।

घास दे० (पु०) तृण, खर, फूस, पशुओं के खाने का तृण।

घासी घासू दे० (गु०) घास वाला, घसियारा, घास बेंच कर पेट पालने वाला।

घिंघाना दे० (क्रि०) स्वरभङ्ग होना, अस्फुट शब्द बोलना, शब्द का विकार होना।

घिघियाना दे० (क्रि०) लड़खड़ाना, फुसलाना, आक्रन्दन करना, चिल्लाना, लल्लोचप्पो करना, अनुनय विनय करना।

घिघी बंधजाना दे० (क्रि०) अस्फुट बोलना, भय और लज्जा से शब्द न निकलना।

घिचपिच दे० (अ०) घना, सघन, पास पास, भीड़ भाड़, भीड़ भड़क्का।

घिन तद्० (स्त्री०) घृणा, घिनान, अरुचि, ग्लानि, अवज्ञा, बीभत्स।

घिनाना तद्० (क्रि०) कुढ़ना, घृणा करना, चिढ़ना, अरुचि होना।

घिनौना दे० (गु०) घृणाकारी, अरोचक, घृणाजनक।

घिया दे० (स्त्री०) घिया तुरई, एक तरकारी का नाम।

घिरना दे० (क्रि०) घिर जाना, घेरे में आना, रुकना, रुकाव जाना, परवश होना, मेघों का उमड़ना।

घिरनी दे० (स्त्री०) गरारी, कुए से जल निकालने की चरखी।—खाना घूम जाना, चक्कर खाना।

घिराना दे० (क्रि०) घेरा करवाना, बेड़ा बनाना, हदबन्दी करना।

घिसना दे० (क्रि०) रगड़ना, खियाना, मर्दना, मलना।

घिसाव दे० (पु०) रगड़, घर्षण।

घिसावट दे० (स्त्री०) रगड़, रगड़ाहट।

घिसियाना दे० (क्रि०) घसीटना, घर्षण।

घी तद्० (पु०) घृत, घीव, आज्य, सर्पि।

घीकुवार तद्० (स्त्री०) घृतकुमारी, घीग्वार, औषध विशेष, एक पौधे का नाम।

घुङ्घुना दे० (पु०) झुनझुना, घुनघुना, एक खिलौने का नाम।

घुटना दे० (पु०) ठेहुना, ठेहुन, गोड़, जानु, माँस रुकना।

घुटनों चलना दे० (वा०) ठेहुने से चलना जैसे बालक चलते हैं।

घुटाई दे० (स्त्री०) चिकनाहट, सफाई, गढ़ाई, उत्तमता।

घुटाना दे० (क्रि०) मुड़ाना, क्षौर कराना, चिकना करना, साफ करना।

घुड़ दे० (पु०) घोड़ा, घोटक, अश्व, हय।—चढ़ा (गु०) घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार, चाबुक सवार।—दौड़ (स्त्री०) घोड़ों को दौड़ाना, बाजी रख कर घोड़ा दौड़ाना।—बहल (स्त्री०) घोड़ों का रथ, चार पहिये का रथ, घोड़ा गाड़ी।—मुँहाँ (गु०) घोड़े के समान मुँह वाला, किन्नर विशेष,—साल (पु०) तबेला, अस्तबल, घोड़ों के रहने का स्थान।—सना (गु०) [illegible] देना।

घुड़कना दे० (क्रि०) [illegible] देना, रोब जमाना।

घुड़की दे० (स्त्री०) [illegible] स्कार।

घुणा तद्० (पु०) [illegible] [घुण+अक्षर [illegible] चलने से जो [illegible] विना प्रयत्न [illegible] प्राप्त।

घुण्डी दे० [illegible]

घुन तद्० (पु० [illegible]

घुना तद्० ([illegible] खोखना, [illegible]

घुनिया दे० (पु०) घुना, कपटी।
घुप दे० (पु०) अन्धकार, अंधियारा।
घुमघुमा दे० (पु०) घुमाव, टालना, फिर फिर वहीं।
घुमघुमाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, बात फेरना, बात उलटन ।
घुमण्ड दे० (स्त्री०) मेघों का घिर आना, दुर्दिन होना।
घुमरी दे० (स्त्री०) तिर्मिरी, चक्कर, घुर्नी, एक रोग, मूर्च्छा।
घुमाना दे० (क्रि०) फिराना, बहकाना, धोखा देते रहना, टहलाना।
घुरकना दे० (क्रि०) घुड़कना, धमकाना, दबाना।
घुरकी दे० (स्त्री०) धमकी, झिड़की, घुड़की।
घुरघुरा दे० (पु०) कीट विशेष, एक प्रकार का रोग, गलगण्ड का भेद।
घुरनाना दे० (क्रि०) खर्राटा मारना, नाक का खरखर शब्द।
घुरनी दे० (स्त्री०) घुमरी, तिरमरी, चक्कर।
घुरका तद्० (पु०) भीमसेन का एक पुत्र, (घटोत्कच देखो)।
घुलना दे० (क्रि०) गलना, पकना, पिघलना, सड़ना।
घुलमिल दे० मिल गया, घुल गया, पक गया।
घुलाऊ दे० (गु०) पिघलाऊ, गलाऊ, सड़ने योग्य।
घुलाना दे० (क्रि०) पिघलाना, गलाना, सड़ाना, नरम करना, पकाना।
घुलावट दे० (स्त्री०) पिघलावट।
घुवा दे० (पु०) सेमर की रूई।
घुसना दे० (क्रि०) पैठना, प्रविष्ट होना, भीतर जाना।
घुसपैठ दे० (पु०) आना जाना, पहुँच, पैसार, प्रवेश।
घुसाना दे० (क्रि०) पैठाना, घुसेड़ना, डालना, गाड़ना, लगाना।
घुसेड़ना दे० (क्रि०) ठेसना, पैठाना, खोसना।
घुस्की दे० (स्त्री०) कुलटा, दुराचारिणी, व्यभिचारिणी स्त्री।
घुसृण तत्० (पु०) गन्ध द्रव्य विशेष, कुङ्कुम।
घूघू दे० (पु०) पक्षि विशेष, पण्डुक, पेचापेचक।
घूङ्नी दे० (स्त्री०) उबला चावल, तला चना।
घूंङ्गर दे० (पु०) लहराया बाल, अङ्गुरिया बाल, मुड़े हुए बाल, सचक्रेदार बाल घुघराले बाल।
घूङ्ची दे० (स्त्री०) लाल रत्ती, इसकी माला श्रीकृष्ण को बड़ी प्रिय है।
घूघट दे० (पु०) स्त्रियों की ओढ़नी, लाज काढ़ना।
घूंघरू दे० (पु०) पैर का एक गहना जो झुमझुम शब्द करने के लिये नाचने के समय पहना जाता है।
घूंट दे० (पु०) एक बार में पीने योग्य पानी आदि, यथाः—एक घूट पीले, मैं खून का घूट पीकर रह गया।
घूंटना दे० (क्रि०) निगलना, घूटना, लील जाना पेट में करना।
घूंटी दे० (स्त्री०) छोटा घूंट, बालकों को औषध देने की मात्रा, बालकों की औषधि।
घूंस दे० (पु०) घूँसा, चूहा, मुषिक, रिशवत।
घून दे० (पु०) द्वेष, विरोध, द्रोह, अनबनाव, खटपट झगड़ा।
घूना दे० (गु०) कपटी, द्रोही, छली।
घूम दे० (पु०) घुमाव, घेर, फेर।
घूम दे० (वा०) घूमाला घेरा, बाड़ा, बेड़ा, चक्करदार।
घूमना दे० (क्रि०) टहलना, फिरना, घुड़कना, उद्योग करना।
घूर दे० (पु०) ताक, देख, निहार, कूड़ा, कतवार।
घूरची दे० (स्त्री०) उलझेड़ा, फसाव, उलझन।
घूरना दे० (क्रि०) ताकना, देखना, क्रोध से आँख दिखाना।
घूरा दे० (पु०) घूर, कूड़ा, कतवार।
घूरिया दे० (पु०) घूरा, कूड़ा।
घूर्णन तत्० (पु०) [घूर्ण+अनट्] भ्रमण, के समान घूमना भ्रम, भ्रान्ति, घेरा, हिलाना।
घूर्णित ... +क्त] भ्रमित, ... गया।

घूस दे० (पु०) बड़ा मूसा, घूस, रिशवत, उत्कोच।

घूसत दे० (पु०) उल्लू का बच्चा।

घूसा दे० (पु०) मुक्का, मुक्की, मुक्का।

घृणा तत्० (स्त्री०) जुगुप्सा, अत्यन्त अवहेला, अवज्ञा, घिन, ग्लानि।—र्ह (गु०) गर्हित, कुत्सित घृणा के योग्य।—स्पद (गु०) घृणाकर, घिनौना, कुत्सित, निन्दित।

घृणित तत्० (गु०) [घृण+क्त] अश्रद्धान्वित, अवज्ञात, निन्दित, कुत्सित।

घृण्य तत्० (गु०) [घृण्+य] गर्ह्य, गर्हणीय, तिरस्कार के योग्य।

घृत तत्० (पु०) [घृ+क्त] घीव, घी।—कुमारी (स्त्री०) घीकुवारी।—क्त (गु०) घृत सिञ्चित, घृत में डुबोया।

घृताची तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।

घृष्ट तत्० (गु०) [घृष्+क्त] चर्वित, घिसा हुआ।

घृष्टि तत्० (पु०) [घृष्+ति] घिसना, मारना, सूकर, सूअर (स्त्री०) विष्णुक्रान्ता नाम की ओषधि।

[illegible]टा दे० (पु०) सूकर का बच्चा।

[illegible]गा, घेघा दे० (पु०) गलगण्ड रोग, घेघुआ।

[illegible]तिला दे० (पु०) जूतीविशेष।

[illegible]नना दे० (क्रि०) मिलाना, मिश्रण करना।

[illegible]र दे० (पु०) मण्डल, रूंधा हुआ, घुमघुमाला।

[illegible]रना दे० (क्रि०) रूंधना, बेड़ा बांधना।

[illegible]नी दे० (स्त्री०) रहँट का हत्था।

[illegible]रा दे० (पु०) घेरा, कुण्डल, मण्डल।

[illegible]वर दे० (पु०) मिठाई विशेष, गुपचुप।

[illegible]घा दे० (पु०) शम्बूक, खोखला, सीप।

[illegible]टना दे० (क्रि०) रगड़ना, मलना, (पु०) मोटा [illegible]व लोढ़ा।

[illegible]सला दे० (पु०) खोंता, वासा, नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान।

[illegible]घी दे० (स्त्री०) जेब, थैली, झोली।

घोट दे० (स्त्री०) चिकनाहट, मसृणता।

घोटक तत्० (पु०) अश्व, घोड़ा, तुरङ्ग, वाजी।

घोटना दे० (क्रि०) परिश्रम करना, अभ्यास करना, मूड़ना।

घोटनी दे० (स्त्री०) लुढ़िया, लोढ़िया, लोढ़ा, घोटना।

घोटा दे० (पु०) घोटने की लकड़ी, पीसने का मोटा।

घोट्टू दे० (गु०) नम, मीठा, मधुर।

घोंटू दे० (पु०) गुदना, गिठुआ।

घोड़ा दे० (पु०) अश्व, घोटक, वाजी, तुरङ्ग।

घोपा दे० (पु०) ओढ़ने की एक चीज़, गुप्त स्थान।

घोर तत्० (गु०) [घुर+अच्] भयङ्कर, भयानक, विकट, अन्धकार।—तर (गु०) अत्यन्त भयानक, डरावना।—रूपी (गु०) भयानक, भीषण, भयङ्कर।

घोल दे० (पु०) मट्ठा, छाछ, मही, तक्र।

घोलघुमाव दे० (पु०) टालमटोल, बनावट, कृत्रिमता।

घोलना दे० (क्रि०) मिलाना।

घोला दे० (गु०) गदला, धुमिला, गादा, घोला हुआ।

घोष तत्० (पु०) अहीरों की बस्ती, अहीरों का गाँव।

घोषणा तत्० (स्त्री०) [घुष्+णिच्+अनट्+आ] उच्चैः शब्द प्रकाश, ढिंढोरा, विज्ञापन।

घोषणीय तत्० (गु०) [घुष+अनीय] प्रचारित करने योग्य, प्रकाशित करने योग्य।

घोषी तत्० (पु०) मुसलमान, अहीर।

घौंद, घौंर दे० (पु०) गुच्छा, स्तवक, घवरि।

घ्राण तत्० (पु०) नासिका, गन्धग्रहण, आघ्राण, सूँघना, वास।—तर्पण (पु०) सुगन्धि, सौरभ।

घ्राणेन्द्रिय तत्० (पु०) [घ्राण+इन्द्रिय] नासिका, नाक।

घ्रात तत्० (गु०) [घ्रा+क्त] गृहीत गन्ध, पुष्प आदि का गन्ध लेना।

घ्रायक तत्० (गु०) [घ्रा+णक्] गन्ध ग्राहक, गन्ध ग्रहण करनेवाला, सूँघनेवाला।

ङ

ङ कवर्ग का पञ्चम वर्ण, जिह्वामूल से इसका उच्चारण होता है, इस कारण उसे जिह्वामूलीय कहते हैं।

ङ तत्० (पु०) विषयस्पृहा, विषय, शिव, भैरव।

च

च यह चवर्ग का पहला वर्ण है, तालु से इसका उच्चारण होता है।

च तत्० (अ०) समाहार अन्योन्यार्थ, समुच्चय, पक्षान्तर, पादपूरण, अवधारण, हेतु।

चवँर तद्० (पु०) चामर, राजचिन्ह विशेष, चौंर।

चक तद्० (पु०) चकवा पक्षी, अपने अधिकार की भूमि, क्रयविक्रयस्थान, खेतों की सीमा का भेद।

चकई तद्० (स्त्री०) खिलाना, गोल काठ या टीन की बनी चकई में लम्बी डोरी बांध कर, ऐसे फेंकते हैं कि वह चकई अपने आप डोर लपेट लेती है, पक्षिविशेष, चकवा की स्त्री।

चकचका तद्० (गु०) गहरा उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, प्रकाश, प्रकाशमय।

चकचकी दे० (स्त्री०) कटार, झलाझल।

चकछुदी दे० (स्त्री०) छुछुंदरि, मुसिका, मूषिक भेद।

चकड़या दे० (पु०) चकल्लस, आनन्द।

चकता दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, चाह।

चकताना दे० (क्रि०) दुख चोरा बैठना।

चकती दे० (स्त्री०) गेंडे की खाल, फाक, पैबन्द।

चकनाचूर दे० (पु०) टूक टूक होना, चूर्ण होना, टूटना।

चकमा दे० (पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, मोज़ा, धोखा, जाति विशेष।

चकरचा दे० (पु०) धूमधाम, हल्ला गुल्ला।—मचाना (वा०) धूमधाम करना।

चकरा दे० (पु०) दाल का बड़ा, चौड़ा।

चकरानी दे० (स्त्री०) टहलुई, टहलनी, नौकरानी, दासी।

चकला दे० (पु०) पतुरियों का महाल, वेश्यालय, पाट और सूत से बना कपड़ा, देश का प्रान्त, प्रदेश, सूबा (गु०) चौड़ा।

चकलाई दे० (स्त्री०) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार।

चकलाना दे० (क्रि०) चौड़ा करना, चौड़ाना, फैलाना।

चकवा तद्० (पु०) चक्रवाक, हंस जाति का एक पक्षी।

चकवी तद्० (स्त्री०) चकवा की स्त्री।

चका तद्० (पु०) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक।

चकाचक दे० (स्त्री०) पूर्णता, पूर्ण, तृप्ति कारक, जैसेः—"चकाचक छनी है, चकाचक है।"

चकाचौंध दे० (स्त्री०) उजास, जगमगाहट, उजाला, तिलमिलाहट।

चकाची दे० (स्त्री०) भैंसिया दाद।

चकित तत्० (गु०) अचम्भित, विस्मित, आश्चर्यान्वित, व्याकुल।

चकेरा दे० (गु०) बड़ी आँख वाला, बड़आँखा।

चकोत्रा दे० (पु०) नीबू विशेष, बड़ा नीबू।

चकोर तत्० (पु०) पक्षि विशेष, तीतर का एक भेद यह चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है। यह आग खाता है। लोग कहते हैं कि यह पूर्णिमा के दिन यदि किसी तिजरा ज्वर रोगी की ओर प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका ज्वर छूट जाता है और पुनः ज्वर नहीं आता।

चकौंड दे० (पु०) चकौंदा, एक प्रकार का पौधा, जिससे दाद छूट जाती है।

चक्क तद्० (पु०) पहिया, चक्का, चाक, चक्कर, चक्र।

चक्कस दे० (पु०) चिड़ियों का अड्डा।

चक्का दे० (पु०) चक्र, गाड़ी का पहिया।

चक्कान दे० (गु०) गाढ़ा, थक्का, श्रमित, थकित।

चक्की दे० (स्त्री०) पाट, जात, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र।

चक्कू दे० (स्त्री०) छुरी।

चक्कवै दे० (पु०) चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज्य शासन करने वाला, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है।

चक्र तत्० (पु०) रथाङ्ग, रथ का पहिया, कुम्हार का चाक, अस्त्र विशेष, सुदर्शन चक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, व्यूहरचना विशेष, हस्त-रेखा विशेष, राष्ट्र देश।—धर विष्णु, सर्प।—पाणि (पु०) विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण।—वत् (अ०) चक्राकार अस्त्र, चक्र के समान।—वर्ती (पु०) सार्वभौम, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सम्राट्, वथुआ का साग।—वाक (पु०) पक्षि विशेष, चकवा।—वाल (पु०) लोकालोक पर्वत, मण्डलाकार, दिक् समूह।—वृद्धि (स्त्री०) वृद्धि पर वृद्धि, बाढ़ पर बाढ़, सूद दर सूद।—व्यूह (पु०) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना को सजाना, चक्रव्यूह के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरश्रेष्ठ अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था।—लक्षण, (स्त्री०) गुरुच, अमृतलता।

चक्रा तत्० (स्त्री०) समूह, गिरोह, टोली।—कार (गु०) गोलाकार, घेरा।—ङ्ग (पु०) हंस।

चकित तद्० (गु०) चकित, विस्मित।

चक्री तत्० (पु०) विष्णु, चक्रवाक पक्षी, कुम्भकार, कुम्हार, सर्प, तेली, क़िलेदार, मंत्री। (गु०) चक्रविशिष्ट।

चक्रीला तद्० (गु०) गोलाकार, चक्राकार, गोल वर्तुल।

चक्षु तत्० (पु०) आँख, नयन, नेत्र, लोचन।

चख तद्० (पु०) चक्षु, आँख।

चखन तद्० (पु०) आँख, चख, चक्षु, यथा—"चपल चखन वाला चाँदनी में खड़ा था" (खानखाना)।

चखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चीखना।

चखाचखी दे० (स्त्री०) वैर, विरोध, झगड़ा, टण्टा।

चखाना दे० (क्रि०) खिलाना, भोजन कराना, चस्का लगाना।

चगलाना दे० (क्रि०) चबलाना, दाँतों से पीस पीस कर खाना।

चङ्क्रमण तत्० (पु०) [चं + क्रम् + अनट्] पुनः पुनः भ्रमण, बारबार भ्रमण, चक्कर लगाना।

चङ्ग दे० (गु०) शोभन, सुन्दर, दक्ष, पटु, रोगहीन, सुस्थ, गुड्डी, पतङ्ग, कल्पित करना, दुरभिलाषा से मत्त होना। यथा—"वह चङ्ग पर चढ़ा है," "जब वह चङ्ग पर चढ़ेगा तो, आप ही उसकी दुर्गति हो जायगी।" "उसे तो मैंने चङ्ग पर चढ़ा लिया।"

चङ्गा दे० (गु०) भला, सुखी, नीरोग, स्वस्थ।

चङ्गेर दे० (गु०) उत्तम, श्रेष्ठ, सरस, चोखा, बढ़िया, मनोहर।

चङ्गेर दे० (पु०) बाँस आदि का बना छोटा पात्र, फूल रखने का पात्र।

चङ्गेरा दे० (पु०) खाँचा, टोकरा, दोरा।

चङ्गेरी दे० (स्त्री०) टोकरी, कठारी, तृण आदि का बना पात्र विशेष।

चचा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, ताऊ, पितृव्य, (स्त्री०) चची, चाचा की स्त्री, काकी।

चचीर दे० (पु०) रेखा, लकीर, लकीर।

चचुलाई दे० (स्त्री०) चचेड़ा, तरकारी विशेष।

चचेरा दे० (पु०) चाचा का, चाचा सम्बन्धी, अपने सम्बन्धी से सम्बन्ध रखने वाला।

चचोरना दे० (क्रि०) चूसना, निचोड़ना, निकालना।

चञ्चनाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चनचन करना, बकना।

चञ्चनाहट दे० (पु०) टीस, झुंझलाहट, चमक।

चञ्चरीक तत्० (पु०) [चञ्चरी + क,] भ्रमर, मधुकर, अलि।

चञ्चल तत्० (गु०) अस्थिर, तरल, उतावल, चपल। (गु०) लम्पट, गम्भीर।—ता (स्त्री०) अस्थिरता, चञ्चलत्व।

चञ्चला तत्० (स्त्री०) विद्युत्, चपला, बिजुली।

चञ्चलाई तद्० (स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई, उद्दण्डता, चपलता।

ङ

ङ कवर्ग का पञ्चम वर्ण, जिह्वामूल से इसका उच्चारण होता है, इस कारण उसे जिह्वामूलीय कहते हैं।

ङ तत्० (पु०) विषयस्पृहा, विषय, शिव, भैरव।

च

च यह चवर्ग का पहला वर्ण है, तालु से इसका उच्चारण होता है।

च तत्० (अ०) समाहार अन्योन्यार्थ, समुच्चय, पक्षान्तर, पादपूरण, अवधारण, हेतु।

चवँर तद्० (पु०) चामर, राजचिन्ह विशेष, चौंर।

चक तद्० (पु०) चकवा पक्षी, अपने अधिकार की भूमि, क्रयविक्रयस्थान, खेतों की सीमा का भेद।

चकई तद्० (स्त्री०) खिलाना, गोल काठ या टीन की बनी चकई में लम्बी डोरी बांध कर, ऐसे फेंकते हैं कि वह चकई अपने आप डोर लपेट लेती है, पक्षिविशेष, चकवा की स्त्री।

चकचका तद्० (गु०) गहरा उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, प्रकाश, प्रकाशमय।

चकचकी दे० (स्त्री०) कटार, झलाझल।

चकछुंदी दे० (स्त्री०) छुछुंदरि, मुषिका, मूषिक भेद।

चकड़वा दे० (पु०) चकव्यूह, आनन्द।

चकता दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, दाद।

चकताना दे० (क्रि०) दुख चौरा बैठना।

चकती दे० (स्त्री०) गेंडे की खाल, फांक, पैबन्द।

चकनाचूर दे० (पु०) टूक टूक होना, चूर्ण होना, टूटना।

चकमा दे० (पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, मोज़ा, धोखा, जाति विशेष।

चकरवा दे० (पु०) धूमधाम, बखा गुल्ला।—मचाना (वा०) धूमधाम करना।

चकरा दे० (पु०) दाल का बड़ा, चौड़ा।

चकरानी दे० (स्त्री०) टहलुई, टहलनी, नौकरानी, दासी।

चकला दे० (पु०) पतुरियों का महाल, वेश्यालय, पाट और सूत से बना कपड़ा, देश का प्रान्त, प्रदेश, सूबा (गु०) चौड़ा।

चकलाई दे० (स्त्री०) चौड़ाई, फैलाव, विस्तार।

चकलाना दे० (क्रि०) चौड़ा करना, चौड़ाना, फैलाना।

चकवा तद्० (पु०) चक्रवाक, हंस जाति का एक पक्षी।

चकवी तद्० (स्त्री०) चकवा की स्त्री।

चका तद्० (पु०) चक्र, पहिया, कुम्हार का चाक।

चकाचक दे० (स्त्री०) पूर्णता, पूर्ण, तृप्ति कारक, जैसेः—"चकाचक छनी है, चकाचक है।"

चकाचौंध दे० (स्त्री०) उजास, जगरमगर, उजाला, तिलमिलाहट।

चकावी दे० (स्त्री०) भैंसिया दाद।

चकित तत्० (गु०) अचम्भित, विस्मित, आश्चर्यान्वित, व्याकुल।

चकेरा दे० (गु०) बड़ी आँख वाला, बड़आँखा।

चकोत्रा दे० (पु०) नीबू विशेष, बड़ा नीबू।

चकोर तत्० (पु०) पक्षि विशेष, तीतर का एक भेद यह चन्द्रमा को देख बहुत प्रसन्न होता है। यह आग खाता है। लोग कहते हैं कि यह पूर्णिमा के दिन यदि किसी तिजरा ज्वर रोगी को प्रसन्नता से ताक दे, तो उसका ज्वर छूट जाता है और पुनः ज्वर नहीं आता।

चकौंड दे० (पु०) चकौंदा, एक प्रकार का पौधा जिससे दाद छूट जाती है।

चक्र तद्० (पु०) पहिया, चक्का, चाक, चक्कर, चक्र।

चक्कस दे० (पु०) चिड़ियों का अड्डा।

चक्का दे० (पु०) चक्र, गाड़ी का पहिया।

चक्कान दे० (गु०) गाढ़ा, पक्का, भ्रमित, थकित।

चकी दे० (स्त्री०) पाट, जात, आटा पीसने के लिये पत्थर का यन्त्र।
चक्कू दे० (स्त्री०) छुरी।
चक्कवै दे० (पु०) चक्रवर्ती राजा, उदयास्त पर्यन्त राज्य शासन करने वाला, इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया गया है।
चक्र तत्० (पु०) रथाङ्ग, रथ का पहिया, कुम्हार का चाक, अस्त्र विशेष, सुदर्शन चक्र, जल का घुमाव, तगर का फूल, मण्डल, व्यूहरचना विशेष, हस्त-रेखा विशेष, राष्ट्र देश।—धर विष्णु, सर्प।—पाणि (पु०) विष्णुनारायण, श्रीकृष्ण।—यत् (अ०) चक्राकार प्रस्त, चक्र के समान।—वर्ती (पु०) सार्वभौम, समुद्र पर्यन्त प्रजा पालन करने वाला, सम्राट्, वसुधा का साग।—वाक (पु०) पक्षि विशेष, चकवा।—वाल (पु०) लोकालोक पर्वत, मण्डलाकार, दिक् समूह।—वृद्धि (स्त्री०) वृद्धि पर वृद्धि, बाढ़ पर बाढ़, सूद दर सूद।—व्यूह (पु०) युद्ध के लिये मण्डलाकार सेना को सजाना, चक्राव्यूह के युद्ध ही में सोलह वर्ष के वीरश्रेष्ठ अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को नराधम दुर्योधन के पक्ष के राजाओं ने मिल कर मारा था।—लक्षण, (स्त्री०) गुडच, अमृतलता।
चक्रा तत्० (स्त्री०) समूह, गिरोह, टोली।—कार (पु०) गोलाकार, घेरा।—ङ्ग (पु०) हंस।
चक्रित तद्० (गु०) चकित, विस्मित।
चक्री तत्० (पु०) विष्णु, चक्रवाक पक्षी, कुम्भकार, कुम्हार, सर्प, तेली, फ़िरोदार, मंत्री। (गु०) चक्रविशिष्ट।
चक्रैला तद्० (गु०) गोलाकार, चक्राकार, गोल मटोल।
चक्षु तत्० (पु०) आँख, नयन, नेत्र, लोचन।
चख तद्० (पु०) चक्षु, आँख।
चखन तद्० (पु०) आँख, चख, चक्षु, यथा—"चखन चखन वाला चाँदनी में खड़ा था" (ख़ानख़ाना)।
चखना दे० (क्रि०) स्वाद लेना, चीखना।
चखाचखी दे० (स्त्री०) बैर, विरोध, झगड़ा, टण्टा।
चखाना दे० (क्रि०) खिलाना, भोजन कराना, चस्का लगाना।
चगलाना दे० (क्रि०) चबलाना, दाँतों में पीस पीस कर खाना।
चङ्क्रमण तत्० (पु०) [चं + क्रम् + अनट्] पुनः पुनः भ्रमण, बारबार भ्रमण, चक्कर लगाना।
चङ्ग दे० (गु०) शोभन, सुन्दर, दक्ष, पटु, रोगहीन, सुस्थ, गुड्डी, पतङ्ग, कल्पित करना, दुरभिलाषा से मस्त होना। यथा—"वह चङ्ग पर चढ़ा है," "जब वह चङ्ग पर चढ़ेगा तो, आप ही उसकी दुर्गति होजायगी।" "उसे तो मैंने चङ्ग पर चढ़ा लिया।"
चङ्गा दे० (गु०) भला, सुखी, नीरोग, स्वस्थ।
चङ्गूर दे० (गु०) उत्तम, श्रेष्ठ, मरस, चोखा, बढ़िया, मनोहर।
चङ्गेर दे० (पु०) बाँस आदि का बना छोटा पात्र, फूल रखने का पात्र।
चङ्गेरा दे० (पु०) खांचा, टोकरा, दौरी।
चङ्गेरी दे० (स्त्री०) टोकरी, कठारी, तृण आदि का बना पात्र विशेष।
चचा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, ताऊ, पितृव्य, (स्त्री०) चची, चाचा की स्त्री, काकी।
चचीर दे० (पु०) रेखा, लकीर, लकीर।
चचुलाई दे० (स्त्री०) चचेड़ा, तरकारी विशेष।
चचेरा दे० (पु०) चाचा का, चाचा सम्बन्धी, अपने सम्बन्धी से सम्बन्ध रखने वाला।
चचोरना दे० (क्रि०) चूसना, निचोड़ना, निकालना।
चञ्चनाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चनचन करना, बकना।
चञ्चनाहट दे० (पु०) टीस, झुंझुनाहट, चमक।
चञ्चरीक तत्० (पु०) [चञ्चरी + क] भ्रमर, मधुकर, अलि।
चञ्चल तत्० (गु०) अस्थिर, तरल, उतावल, चपल। (गु०) लम्पट, गम्भीर।—ता (स्त्री०) अस्थिरता, चञ्चलत्व।
चञ्चला तत्० (स्त्री०) विद्युत्, चपला, बिजली।
चञ्चलाई तद्० (स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई, उद्दण्डता, चपलता।

स्त्रियां थीं, मुरा के लड़के का नाम मौर्य, और सुनन्दा के नौ पुत्रों को नवनन्द कहते थे। पिता ने नवनन्दों को राज्यासन का भार सौंपा और मौर्य को उनका मन्त्री बनाया। मन्त्री मौर्य को अनेक पुत्र उत्पन्न हुए, उन्हें होनहार देख कर नवनन्द ईर्ष्या और अपनी आपत्ति की उत्प्रेक्षा कर के कांप गये, अतएव उन्होंने मौर्यों को बन्दी किया, परन्तु किसी कारणवश चन्द्रगुप्त को उन्होंने छोड़ दिया, चन्द्रगुप्त थोड़े ही दिनों में अपने सद्गुणों के कारण सर्वप्रिय हो गया। यह देख नवनन्द भयभीत हुए, उसे मारने की चेष्टा करने लगे, इसकी खबर पाते ही चन्द्रगुप्त ने बहुत सोच विचार कर अपनी रक्षा का उपाय ढूढ़ निकाला, वह दृढ़ प्रतिज्ञ अध्यवसायी और राजनीतिज्ञ चाणक्य को कौशल से अपने पक्ष में करके चन्द्रगुप्त राजा हुआ।—ग्रहण (पु०) चन्द्रमा का ग्रहण, राहुग्रास।—घण्टा (स्त्री०) देवी विशेष, नवदुर्गा के अन्तर्गत तीसरी दुर्गा।—चूड (पु०) शिव, महादेव।—प्रभा (स्त्री०) चन्द्रकिरण, ज्योत्स्ना। —भागा (स्त्री०) नदी विशेष, चिनाब नदी, पंजाब की एक नदी का नाम।—भाल (पु०) श्रीमहादेव, गणेशजी।—मणि (पु०) चन्द्रकान्त मणि, शिव।—मण्डल (पु०) चन्द्रबिम्ब, चन्द्रमा की परिधि।—मल्लिका (स्त्री०) पुष्प विशेष, लताविशेष, इलायची।—मुखी (स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुंह वाली, सुन्दरी सुमुखि, वरवर्णिनी। —मौलि (पु०) महादेव, शिव।—रेखा (स्त्री०) चन्द्रकला चन्द्रमा की एक कला।—रेणु (पु०) काव्य चोर, शब्द चोर, वाग्वहारी।—लोक (पु०) चन्द्रमा का लोक, चन्द्रमण्डल।—लौह ( ) चांदी, रूपा, रजत।—वंश (पु०) प्रसिद्ध सन्तान विशेष, चन्द्रमा के कुल में उत्पन्न पंक्ति।—वाला (स्त्री०) बड़ी इलायची।—व्रत (पु०) प्रायश्चित्तविशेष, व्रतविशेष, राजधर्म, राजधर्म का पालन रूप व्रत।—शाला (स्त्री०) अट्टालिका, अटारी।—शिखा (स्त्री०) चन्द्रशृङ्ग, चन्द्रमा की कला का अग्रभाग।—शेखर (पु०) शिव, महादेव, पर्वत विशेष।—सिता के (स्त्री०) कपूर। —सेन (पु०) प्राचीन भारत का एक पराक्रमी राजा का नाम, इनके पिता का नाम समुद्र सेन था, कुरुक्षेत्र के युद्ध में पाण्डवों की ओर से यह लड़ते थे, और उसी युद्ध में अश्वत्थामा द्वारा यह सदा के लिये रणभूमि में सोगये। (२) चम्पावती नगरी का एक राजा। यह शिकार खेलने वन में गया था और मृग के धोखे से एक मुनि पर इसने बाण छोड़ा। मालूम होने पर इसने मुनि का अनेक प्रकार अनुनय विनय किया, परन्तु किसी प्रकार मुनि का क्रोध कम नहीं हुआ, मुनि के शाप से राजा काला और बूढ़ा हो गया। शापमुक्त होने के लिये राजा ने अनेक यत्न किये, किन्तु सभी निष्फल हुए। अन्त में एक मुनि की सम्मति से बसन्तपुर (जयपुर राज्य के अन्तर्गत एक नगर) जाने से इनका शाप नष्ट हुआ, खृष्टाब्द की प्रथम शताब्दी में इन्होंने चन्द्रावती नगरी स्थापित की। यह नगरी चन्द्रभागा नदी के तीर पर है, यह झालावार की राजधानी है। (३) परशुराम के द्वारा यह राजा मारा गया था, इसकी गर्भवती रानी ने महर्षि दालभ्य के आश्रम में जाकर अपने प्राणों की रक्षा की थी।—हार (पु०) अलङ्कार विशेष।—हास (पु०) [चन्द्र+हस्+घञ्] खड्ग विशेष, रावण के खड्ग का नाम, एक धार्मिक राजा का नाम इनके माता पिता बाल्यावस्था ही में इन्हें इकेला छोड़ परलोक यात्री हुए। उस राज्य का प्रधान मन्त्री, षड्यन्त्र रचकर, इन्हें मरवाने की चेष्टा करने लगा। अतः चन्द्रहास को अपनी राजधानी छोड़ वन में जाकर छिपना पड़ा। इस समय भी स्वर्गीय-वात्सल्य-भाव-पूर्ण-हृदया इनकी उपमाता ने इनको नहीं छोड़ा, किन्तु उसी ने इन्हें वन में जाकर प्राणरक्षा करने का सत्परामर्श दिया और स्वयं भी यह साथ आयी। किसी अवसर पर राजमन्त्री से इनकी भेंट हुई। राजमन्त्री ने इन्हें पहचाना और इन्हें मारने के लिये इसने अपने गुप्तदूत उनके पीछे लगाये। भगवान् को चन्द्रहास का मारना उचित

नहीं मालूम होता था। इसी कारण मन्त्री के सभी प्रयत्न निष्फल हुए और यही राजा हुआ और मन्त्री अपने ही कर्मों से निःसन्तान होकर दुर्गति के साथ मर गया।

चन्द्रमा तत्‌० (पु०) चन्द्र, चन्द, चन्दा, निशाकर विधु।

चन्द्रा तत्‌० (गु०) सुफला, गङ्गा, बुद्धिमान्, इलायची।

चन्द्रातप तत्‌० (पु०) चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, आच्छादन विशेष, वितान, चँदवा।

चन्द्राना दे० (क्रि०) चूकना, मुरझाना, मूकना, पश्चात्ताप होना, परिताप होना।

चन्द्रापीड़ तत्‌० (पु०) वाणभट्टकृत संस्कृत गद्य काव्य कादम्बरी के नायक इनके पिता उज्जयिनी के राजा तारापीड़ थे, इनकी माता का नाम विलासवती था। कादम्बरी में लिखा है कि शाप के कारण चन्द्रमा ही को महारानी विलासवती के गर्भ से उत्पन्न होना पड़ा था, इनके मित्र और मन्त्रि पुत्र वैशम्पायन थे।

चन्द्रावली तत्‌० (स्त्री०) एक गोपी का नाम। यह राधा की चचेरी बहिन थी, राधा के पिता वृषभानु के जेठे भाई चन्द्रभानु की यह लड़की थी। चन्द्रावली गोवर्द्धन मल्ल से व्याही गयी थी, यह गोवर्द्धन मल्ल करला नामक गाँव का रहने वाला था।

चन्द्रिका तत्‌० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रमा की किरण, चांदनी, प्रकाश विशेष, व्याकरण की एक पुस्तक का नाम, चकोर।

चन्द्रोदय तत्‌० (पु०) चन्द्रमा का उदय, रात्रि का प्रथम प्रहर, औषधि विशेष।

चन्द्रोपल तत्‌० (पु०) [चन्द्र+उपल] चन्द्रकान्त मणि, माणिक्य विशेष।

चनसुर दे० (पु०) हालम।

चपकन दे० (पु०) एक प्रकार का अँगरखा, लम्बा अङ्गरखा।

चपकना दे० (क्रि०) चिपटना, जुड़ना, संयुक्त होना, मिलना, सटना।

चपकाना दे० (क्रि०) सटाना, जुड़ाना, मिलाना, जोड़ना, साटना।

चपटना दे० (क्रि०) चपटा होना, मिल जाना, सट जाना, लग जाना।

चपटा दे० (गु०) समान, बराबर, तुल्य, चौरस, चौड़ा, चौखूंटा।

चपटाना दे० (क्रि०) बैठाना, चपटा करना, मिलाना।

चपटी दे० (स्त्री०) बैठी वस्तु, चपटी वस्तु, मिली हुई स्त्रियां, संयुक्ता।

चपड़चपड़ दे० (पु०) खाने का शब्द।

चपड़ा दे० (पु०) एक प्रकार की लाल।

चपड़ाऊ दे० (गु०) निर्लज्ज, ढीठ, धृष्ट।

चपड़ाना दे० (क्रि०) खोटा करना, ढीठ करना, बहकाना।

चपड़ी दे० (स्त्री०) गोबरी, कण्डी।

चपना दे० (क्रि०) दबना, लज्जित होना, अधीन होना, दबना, मर्द्दित होना, मसल जाना।

चपनी दे० (पु०) ढकनी, ढपनी, ढक्कन।

चपरास दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चिन्ह जो स्वामी भृत्य और भृत्य के पद का सूचन करता है।

चपरासी दे० (पु०) नौकर, दूत, हरकारा।

चपरि दे० (अ०) शीघ्र, तुरत, दबकर, दबककर, भूमि से मिलकर।

चपल तत्‌० (गु०) चञ्चल, अस्थिर, तरल, विकल, उद्विग्न।—ता (स्त्री०) चञ्चलता चाञ्चल्य, चापल्य, अस्थिरता।

चपला तत्‌० (स्त्री०) लक्ष्मी, विद्युत, चञ्चला, पुंश्चली, वेश्या, अस्थिरा, कुलटा, व्यभिचारिणी।

चपलाई तद्‌० (स्त्री०) चञ्चलता, विलबिलापन, चुलबुलाहट।

चपाती दे० (स्त्री०) रोटी, फुलका।

चपाना दे० (क्रि०) दाबना, थोपना, लगाना, लज्जित करना।

चपेट तत्‌० (पु०) तमाचा, धप्पा, थप्पड़, हथेली, झोंक, धोखा।

चपेटा, चपेटिका तत्० (स्त्री०) धौल, थप्पड़, धौला ।

चपोटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की पगड़ी, पुरानी पगड़ी ।

चप्पन दे० (पु०) ढकना, ढक्कन, ढपना, चपनी ।

चप्पा दे० (पु०) चार अङ्गुलियों का निशान, किसी रङ्ग से दीवार या कपड़े पर बनाया जाता है ।

चप्पी दे० (स्त्री०) देह दबाना, अङ्ग मर्दन, शरीर दबाना ।

चप्पू दे० (पु०) डाँड़, दण्ड, नाव खेवने का डाँड़ा ।

चफाल दे० (स्त्री०) पङ्क परिवृत द्वीप, जिस द्वीप के चारों ओर दलदल हो ।

चबलाई दे० (स्त्री०) चबलाना, दाँतों से पीसना, कुचलना ।

चबलाना दे० (क्रि०) चबाना, कुचलना, पीसना ।

चबाई दे० (स्त्री०) कुचलाई, चर्वण ।

चबाउ दे० (पु०) चुगल, बातकहाउ, कहासुनी ।

चबाना दे० (क्रि०) चाबना, चिकलाना ।

चबूतरा दे० (पु०) चौतरा, चत्वर, अथाई, चौपाड़, बैठक, चौकी ।

चबेना दे० (पु०) भुंजा, भुना अन्न, भुजैना ।

चव्य तत्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, चाव ।

चभक दे० (पु०) डंक, डांक, काटा ।

चमक दे० (स्त्री०) चलक, भड़क, चटक, उज्वलता, प्रभा, दीप्ति, दमक, शोभा ।

चमकता दे० (गु०) उजागर, उजला, जगमग, जगरमगर ।

चमकना दे० (क्रि०) झलकना, लौकना, प्रकाश हो आना ।

चमकाना दे० (क्रि०) फैलाना, प्रकाश करना, झलकाना दिखाना ।

चमकाव दे० (गु०) चमक, उजार, उजागर ।

चमकाहट दे० (स्त्री०) झलक, झलझल ।

चमगादड़, चमगीदड़ दे० (पु०) दादुर, चमगादुर, गादुर ।

चमगुदड़ी दे० (स्त्री०) रात में चलने वाली चिड़िया ।

चमचड़क दे० (गु०) क्षीण, कृश, दुर्बल, मकरा, दुर्बल ।

चमचमाना दे० (क्रि०) शोभना, अधिक शोभा देना, चमकना ।

चमचमाहट दे० चमकाहट, शोभा, दीप्ति ।

चमड़ा दे० (पु०) चर्म, त्वच्, छाल, खाल,

चमत्कार तत्० (पु०) [चमत् + कृ + घञ्] विस्मय, आश्चर्य ज्ञान, चित्त विस्तार ।—ी (गु०) विस्मय जनक, विचित्र आश्चर्य ।

चमत्कृत तत्० (गु०) आश्चर्यान्वित, विस्मित ।

चमर तत्० (पु०) चवर, चामर, व्यालव्यजन, राज चिन्ह विशेष, चमर नामक पशु विशेष ।

चमरख दे० (पु०) रहटा की सामग्री, एक प्रकार का खट्टा फल ।

चमरी तत्० (स्त्री०) सुरा गौ, चमर नामक गौ, सुरागाय ।

चमस तत्० (पु०) [चम + अस] यज्ञपात्र विशेष, चमचा, कड़छी, दर्वी ।

चमाई दे० (स्त्री०) भौंल, पीला,

चमाऊ दे० (स्त्री०) खड़ाऊ, चरणपादुका ।

चमार तद्० (पु०) चर्मकार, मोची, जूता बनाने वाला ।

चमू तत्० (स्त्री०) सेना, दल, कटक, सेना विशेष, ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े, ३५४५ पैदल यह चमू है ।—चर (पु०) सेनाचर, युद्धजीवी योद्धा ।

चमूकन दे० (पु०) किलनी, पशुओं का जुंवा ।

चमरू तत्० (पु०) हरिण विशेष ।

चमेटा तद्० (पु०) चपेटा, थपेड़ा, धौल ।

चमोटा दे० (पु०) चमड़े की थैली जिसमें नाई अस्त्र रखता है ।

चम्पक तत्० (पु०) पुष्प विशेष, चम्पा का फूल ।—कलिका, (स्त्री०) चम्पा की कली ।

चम्पत दे० (गु०) छिपा, अदृश्य, अन्तर्द्धान, भगजाना ।—होना भगजाना, छिपजाना, चलाजाना, असचय होना ।

चम्पा तद्० (स्त्री०) कर्णपुरी, अङ्गदेश की राजधानी, भागलपुर का प्रदेश, चम्पारण्य, चम्पारन।—**धिप** (पु०) चम्पारण्य नामक प्रदेश के अधिपति कर्णराज। दे० एक फूल और वृक्ष का नाम।

चम्पाकली दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, यह गले में पहना जाता है।

चम्पावती तद्० (स्त्री०) नगरी विशेष, चम्पा नामक नगरी।

चम्पी दे० (स्त्री०) पीत रङ्ग, पीत वर्ण, पीले रङ्ग से रंगा हुआ।

चम्पू तद्० (स्त्री०) काव्य विशेष, गद्य पद्य मय काव्य।

चम्या दे० (पु०) मुंड़चिरा, एक भिक्षुकों की जाति।

चम्बू दे० (पु०) जल पात्र विशेष, टोंटीदार पात्र, यह देवपूजन के काम आता है।

चम्येली दे० (स्त्री०) एक प्रकार की लता और पुष्प, चमेली का फूल।

चम्मल दे० (पु०) चमला, तुम्बा, एक नदी का नाम।

चय तद्० (पु०) [चि+अल्] समूह, राशि, ढेर, प्राचीर, प्राकार, चार दीवारी।

चयन तद्० (पु०) संग्रह करण, आहरण, बटोरना, एकट्ठा करना। दे० आनन्द, कुशल, क्षेम, चैन।

चर तद् (पु०) उठाने योग्य, वालुका, टेक, छिप कर राजकीय बातों को जानने के लिये नियुक्त किया गया पुरुष, दूसरों की बात जानने के लिये घूमने वाला, कपट वेशधारी, दूत, खाना, भोजन, (गु०) चलने वाला, चलने योग्य, जङ्गम।

चरक तद्० (पु०) वैद्यक ग्रन्थ विशेष, कुष्ट रोग का भेद, मुनि विशेष, विख्यात वैद्यक ग्रन्थ चरक संहिता के रचयिता, अनन्त देव चर रूप से छिप कर पृथिवी पर आये और उन्होंने देखा कि यहां के वासी अनेक रोगों से अधिक कष्ट उठा रहे हैं। मनुष्यों का कष्ट देख कर उन्हें दया आयी और षड्ङ्ग वेद ज्ञाता महर्षि का रूप उन्होंने धारण किया तथा सांसारिक व्याधियों से मनुष्यों की रक्षा कर के प्रसिद्धि प्राप्त की। अनन्त देव चर रूप (गुप्त वेश) से पृथिवी पर अवतीर्ण हुए थे। इसी कारण उनका नाम चरक पड़ा। इन्होंने अत्रि के पुत्र भरद्वाज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की थी।

चरकटा दे० (पु०) चारा काटने वाला, घसियारा।

चरका दे० (पु०) कोढ़, कुष्ट रोग विशेष, श्वेत कुष्ट।

चरकी दे० (पु०) कुष्ट रोग वाला, श्वेत कोढ़ी।

चरख दे० (पु०) चक्र, चका, घेरा, चौफेर, पहिया।

चरखा दे० (पु०) सूत काटने का यन्त्र, रहँटा।

चरखी दे० (स्त्री०) रहँटी, उड़ंटा, चिरनी, एक प्रकार का यन्त्र जिस पर आदमी को बैठा कर घूमाया जाता है।

चरचना तद्० (क्रि०) लेपना, लेपन करना, अङ्गों में चन्दन लगाना।

चरचर, दे० (पु०) बकबक, गप, निरर्थक बोल।

चरचरा दे० (गु०) बक्की, बड़बड़िया, निरर्थक बोलने वाला।

चरचराना दे० (क्रि०) चटकना, कड़कड़ाना, क्रुद्ध होना, कुपित होना।

चरचेला दे० (गु०) गप्पी, झक्की, मुखर, बकबकहा।

चरचैत दे० (गु०) चरचा करने वाला, कीर्तिमान।

चरट तद्० (पु०) खञ्जन पक्षी, खञ्जरीट, खड़लीच।

चरण तद्० (पु०) पद, अङ्घ्रि, पैर, पशु पक्षी आदि के आहार के लिये घूमना, छन्द का चौथा हिस्सा।—**कमल** (पु०) कोमल चरण, कमल के समान चरण।—**दासी** (स्त्री०) चरण सेविका, स्त्री, भार्या, पैर पर गिरा हुआ जूता, खड़ाऊं। —**पदवी** (स्त्री०) पदाङ्क, चरण का चिन्ह।—**पीठ** (पु०) पादपीठ, चरण रखने का पीढ़ा, चरणासन। —**व्यूह** (पु०) एक ग्रन्थ का नाम, यह वेदव्यास का बनाया है इसमें वेदों का विवरण लिखा गया है। —**युगल** (पु०) पदयुगल, चरणयुग, दोनों पैर। —**सेवा** (स्त्री०) उपासना, आराधना, अर्चना सेवा, शुश्रूषा।—**मृत** (पु०) चरणोदक पादोदक,

मान्यो का पैर धोया हुआ जल।—ायुध (पु०) कुक्कुट, मुरगा।—ारविन्द (पु०) चरण कमल, पादपद्म।—ोदक (पु०) पादप्रक्षालन जल, चरणामृत, देवता आदि का चरण धोया हुआ जल।—ोपान्त (पु०) चरण के समीप, पदप्रान्त।

चरती दे० (गु०) व्रत न करने वाला, अव्रती।

चरना दे० (क्रि०) चुगना, घूमघूमकर घास खाना।

चरनी दे० (स्त्री०) कठरा, ठाव, स्थान, बैलों को घास खिलाने के लिये जो मिट्टी का बहुत लम्बा बनाया जाता है।

चरस्री दे० (स्त्री०) चार आने, चैाअन्नी, सूकी।

चरपरा दे० (गु०) तीता, खट्टा, कड़ुवा, तीखा, फुर्तीला साहसी।

चरपटाना दे० (स्त्री०) परपराना, वेदना मालूम होना, दर्द होना, झंझनाना।

चरपराहट दे० (क्रि०) परपराहट, झंझनाहट।

चरपरिया दे० (गु०) मनचला, सुन्दर, सुघर।

चरफर (पु०) प्रवीणता, निपुणता, दक्षता।

चरफरा दे० (गु०) दक्ष, निपुण, प्रवीण, कार्यकुशल।

चरफरादि दे० (क्रि०) चरचराते हैं, टूटते हैं, चर्राते हैं।

चरबरायगी दे० (स्त्री०) फुर्तीलापन, चतुरता, साहस, उत्साह।

चरथाना दे० (क्रि०) ढोल को रस्सी से कसना।

चरम तत्० (गु०) अन्तिम, शेष, अवसान, पश्चिम।—काल (पु०) शेष काल, अन्तिम समय, मरने का समय।—ाचल (पु०) अस्तपर्वत अस्तगिरि।—ाद्रि (पु०) अस्त पर्वत, अस्ताचल।

चरवाई दे० (स्त्री०) चराई का मूल्य, चराने का या रखने का मूल्य।

चरवाहा दे० (पु०) चराने वाला, रखने वाला, रखवारा, गड़रिया।

चरस दे० (पु०) मादक द्रव्य विशेष, पुरवट, मोंट, पानी निकालने का चमड़े का बड़ा एक प्रकार का बर्तन, चमड़े का बड़ा ढोल।

चरसा दे० (पु०) अधौड़ा, खाल, चमड़ा।

चराई दे० (स्त्री०) चराने की मजूरी।

चराक दे० (पु०) चरानेवाल, चरवाहा।

चराचर तत्० (गु०) [चर+अचर] स्थावरजङ्गम, चल। अचल (पु०) जगत्, आकाश, नभोमण्डल, जड़चेतन, सजीव निर्जीव।

चरान दे० (पु०) तराई, चैागान, पटपर, पशुओं के चरने का स्थान।

चराना दे० (क्रि०) पशुओं को घुमाकर घास खिलाना, चुगाना।

चराव दे० (पु०) चरने योग्य खेत।

चरित तत्० (गु०) [चर+क्त] गत, यात, प्राप्त, लब्ध, अधिगत। (पु०) चरित्र, व्यवहार, आचरण, रीति नीति, उपाख्यान।—ार्थ (गु०) प्राप्त प्रयोजन, जिसका इष्ट सिद्ध हो चुका है कृतकार्य, कृतार्थ।—ार्थता (स्त्री०) कृतार्थता, प्रयोजन सिद्धि, इष्ट लाभ।

चरित्र तत्० (पु०) [चर+इत्र] स्वभाव, आचरण, व्यवहार।—बन्धक (पु०) भाट, कवि, ग्रन्थकार, चरित्र लेखक।

चरी दे० (स्त्री०) नरी, अस्थिर, चलनीय, पशुओं के खाने योग्य।

चरु तत्० (पु०) यज्ञान्न, यज्ञ का शेष अन्न, खीर, होम करने की वस्तु।

चरु दे० (पु०) भांड़ा, हाड़ा, बर्तन।

चर्चक तत्० (गु०) चर्चा करने वाला।

चर्चना दे० (क्रि०) विचारना, ध्यान करना, सोचना।

चर्चर दे० (पु०) शब्द विशेष, टूटी गाड़ी के शब्द।

चर्चरी तत्० (स्त्री०) [चर्च+र+ई] वाद्य विशेष, रागविशेष, गानविशेष, केशरचना, महाकाल, शाक।

चर्चरीक तत्० (पु०) शिव, महादेव, महाकाल, केशविन्यास, शाक।

चर्चा तत्० (स्त्री०) विचारना, आलोचन, आन्दोलन, अनुशीलन, चिन्ता, विचार, प्रस्ताव, तर्क, वतकहाव।

चर्चित तत्० (गु०) [चर्च+क्त] चन्दन के द्वारा लेपन करना, लिप्त, सुगन्धित, निरूपित, निर्णीत।

चर्पट तत्० (पु०) चपेट, चपेटा, चापड़।

चर्म तत्० (पु०) छाल, त्वक, चाम, चमड़ा, खाल, अस्त्रविशेष, ढाल।—कार चमार, मोची, जूता बनाने वाला।—चटिका (स्त्री०) चमगुदड़ी। —ज (पु०) रुधिर, केश, बाल, पशम, ऊन। —दण्ड (पु०) कशा, चाबुक, कोड़ा।—पात्र (पु०) चमड़ा का ढोल। —पादुका (स्त्री०) चमड़े का जूता।—पुटक (पु०) चर्म निर्मित पात्र विशेष, कुप्पा जिसमें घी तेल आदि रखा जाता है।—वस्त्र (पु०) चमड़े का बना वस्त्र।

चर्मी तत्० (गु०) ढाल रखने वाला, चर्म धारी, ढाल वाला।

चर्या तत्० (स्त्री०) तपस्या में लीनता।

चर्वण तत्० (पु०) [चर्व+अनट्] दांतों से चूर किया या पीसा हुआ, चबाना।

चर्वित तत्० (गु०) कृत चर्वण, भक्षित, खाया हुआ।

चल तत्० (गु०) चञ्चल, अस्थिर, अस्थायी, गमन, कूंच, छिन्न भिन्न।—कर्ण (पु०) पृथिवी से ग्रहों की यथार्थ दूरी।—चलाव (पु०) यात्रा की तयारी।—चित्त (गु०) अस्थिर मन, चञ्चल। —देना (क्रि०) भागजाना, उपेक्षा करना। —निकलना (क्रि०) निकल चलना, सीमा का अतिक्रम करना।

चलत दे० चलते हैं, चलते ही हैं, चलते हो।

चलता दे० (पु०) फिरता, घूमता, चलना फिरना।

चलदल तत्० (पु०) पीपल का पेड़, अश्वत्थ।

चलन तत्० (पु०) [चल+अनट्] गमन, भ्रमण, कम्पन, सरण, वहन, आचरण, व्यवहार, धारा, प्रचार, रीति, चाल।—ता (स्त्री०) बिकनहार, बिकनेवाला, खपती।

चलना दे० (क्रि०) जाना, गमन करना।

चलनी दे० (स्त्री०) हांगा, रांगी, पीतल के सूत अथवा चमड़े से बना अनेक छेद वाला एक बर्तन, जिससे आटा चाला जाता है, आटा को छननी।

चलपत्र तत्० (पु०) अश्वत्थवृक्ष, चल दल, पीपल।

चलपूंजी तद्० (स्त्री०) चल धन, एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने लायक धन, सुवर्ण, सोना, रुपया पैसा आदि।

चलफेर दे० (पु०) घूम घाम, गमन गति, झुलाव।

चलविधरा दे० (गु०) अड़ियल, अचलन वाला, कालज्ञ, अवसर जानने वाला।

चलविचल दे० (गु०) भूल चूक भ्रम, सन्देह, धोखा।

चला तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, चञ्चला, कुलटा (क्रि०) चल निकला, चलपड़ा, प्रचलित हुआ, जाया चाहता है, मरा चाहता है।

चलाऊ दे० (गु०) अनित्य, काम चलने लायक, चला जाता है।

चलाचल तत्० (गु०) [चल+अचल] अस्थिर, चञ्चल, चलचलाव, डोलफिर, घूमघुमाव।

चलाचली दे० (स्त्री०) दौड़ धूप, साथ साथ चलना, अन्योन्यगमन।

चलान दे० (पु०) भेजाव, पहुंचाव, प्रेषित करण, मार्ग दिखाना।

चलाना दे० (क्रि०) दौड़ाना, हांकना, गमन कराना।

चलायमान तत्० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, (अनस्थिर नहीं) अस्थायी।

चलाव दे० (पु०) चलन, रीति, व्यवहार, चाल।

चलाया दे० (पु०) चलाया, हांका, प्रचलित किया।

चलित तत्० (गु०) [चल्+क्त] कम्पित गत, प्रचार, चलन, व्यवहारी, चपल, व्यवहारिक, हिलता हुआ।

चलितव्य तत्० (गु०) [चल+तव्य] चलने योग्य, गमन करने के उपयुक्त।

चलित्री दे० (गु०) खिलाड़ी, रसिक, चञ्चल।

चले दे० (क्रि०) चल निकले, प्रचलित हुए, जाने लगे।

चलेन्द्रिय तत्० (गु०) अजितेन्द्रिय, इन्द्रिय परवश, इन्द्रियाधीन, लम्पट, असदा-चारी, इन्द्रिय-सुखासक्त।

चलो दे० (क्रि०) जाव, उठो, दौड़ो, फिरो।

चलौना दे० (पु०) चरखे का डण्डा।

चवई दे० (क्रि०) चुये, चढ़े, टपके, टपकता है।

चवय दे० (क्रि०) चुवै, चढ़े, टपके। (इन दोनों शब्दों का प्रयोग रामायण में हुआ है)।

चवाई दे० (पु०) निन्दक, दुर्जन, पिशुन, सूचक, लयालुतरा, चुगलखोर।

चवाव दे० (पु०) निन्दा, दुर्यश, अपवाद, चुगली, झूठा कलङ्क ।

चष तत्० (पु०) भोजन, खाना, मारण, मारना ।

चषक तत्० (पु०) जलपात्र, आबख़ोरा, पीने का पात्र, मदिरा पीने का पात्र, गिलास ।

चषति तत्० (पु०) भोजन, खाना, मारण । (स्त्री०) मूर्च्छा, मदान्धता, क्षय, दुर्बलता, दुबलाई, वध, हत्या ।

चषाल तत्० (पु०) यज्ञ के खम्भे के ऊपर रखा हुआ एक प्रकार का काष्ठ, मधुस्थान, मधुकोष ।

चसक दे० (स्त्री०) टपक, पीड़ा, टीस, वेदना, व्यथा ।

चसकना दे० (क्रि०) टीसना, टपकना, व्यथा करना, बधना ।

चसका दे० (पु०) प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, अभिलाष, टेव ।

चसना दे० (क्रि०) मसकना, कसकना, गड़ना, फसकना ।

चस्सी दे० (स्त्री०) अपरस, रोगविशेष ।

चह तत्० (पु०) अहङ्कार, पाखण्ड, दम्भ । (गु०) अहङ्कारी, दम्भी, छली, कपटी ।

चहकना दे० (क्रि०) चमकना, चहचहाना, शोभित होना, चिड़ियों की चहचहाहट ।

चहका दे० (पु०) जलन, व्यथा, आगदेना ।

चहकार दे० (स्त्री०) चिचियाना, चहचहाहट, चिड़ियों का शब्द ।

चहकैट दे० (गु०) चौदन्त, सांड़, बलवान्, बलिष्ट ।

चहचहा दे० (गु०) ख़ूब गहरा रङ्गा हुआ, अति मनोहर ।

चहचहाना दे० (क्रि०) चिड़ियों का रव ।

चहचहाहट दे० (स्त्री०) पक्षि समूह का शब्द ।

चहटी दे० (स्त्री०) चुटकी काटना ।

चहलना दे० (क्रि०) कांड़ना, कूचना, श्रान्त होना, थकित होना ।

चहलपहल दे० (स्त्री०) आनन्द, हंसी ख़ुशी, हर्ष, उत्सव, मङ्गल ।

चहसि दे० (क्रि०) तू चाहता है ।

चहिय दे० (क्रि०) चाहिये, आवश्यकता है ।

चहला दे० (पु०) कीचड़, पांक, पङ्क, कांदा, कांदो, कींच ।

चहुं दे० (गु०) चारों ओर, चारों तरफ, चतुर्दिक् ।

चहुंचक दे० (गु०) चारों ओर, सब ओर, चहुंदिश, चारोखूंट ।

चहुंदिश दे० (अ०) सब ओर, चारों ओर, चहुं ओर ।

चहुंधा दे० (पु०) चारों ओर ।

चहुंयुग दे० (पु०) चारों युग, चारों युग में, चतुर्युग ।

चहूं दे० (गु०) चार, चतुः, चौथा ।

चहौं दे० (क्रि०) चाहता हूँ । इच्छा करता हूँ ।

चांई दे० (पु०) छोटी जात, कञ्जर । (बहुधा इस जाति को चोर जाति भी कहते हैं अतएव इस शब्द का अर्थ भी चोर ही हो गया है) ।

चांईचुई दे० (स्त्री०) गञ्जरोग ।

चांचर दे० (पु०) गीत विशेष, अरथी, जिस पर मुर्दा ले जाया जाता है ।

चांटना दे० (क्रि०) चापना, दाबना, चिन्ह करना ।

चांड दे० (स्त्री०) थूनि, थम्बा, खम्भा, टेकन, टेक ।

चांद तद्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सोम ।—**रात** (स्त्री०) पूर्णिमा की रात ।—**मारना** (क्रि०) लक्ष्यवेध, निशाना मारना ।—**ने खेत किया** (वा०) चन्द्र उदय हुआ ।

चांदना दे० (पु०) प्रकाश, ज्योति, तेज ।—**पक्ष** (पु०) शुक्ल पक्ष, सुदि, उजेला पाख ।

चांदनी दे० (स्त्री०) चन्द्रिका, उजियाली, अंजोरी रात, बिछाने की चादर, स्वच्छता ।—**चौक** (पु० चौड़ा बाज़ार, चौक ।

चांदी दे० (स्त्री०) रूपा, रजत ।

चांप दे० (स्त्री०) बन्दूक का फल, का[illegible] ...लन, ... तर्क, ...न के द्वारा ...र, निर्णीत ।

चांपना दे० (क्रि०) दाबना, दबा[illegible] ठाँसना, जुड़ाना ।

चा दे० (स्त्री०) पौधाविशेष, जिसकी पत्ती प्रातः और सन्ध्या पी जाती है। आसाम की ओर यह बहुत होती है।

चाक तद्० (पु०) चक्र, कुम्हार की चक्की, पाट, चक्की, चक्र।

चाकचक्य तद्० (पु०) दीप्ति, उज्ज्वलता, स्वच्छता।

चांकना दे० (क्रि०) चाकन, छापना, (रामायण में यह शब्द मिलता है)।

चाकर दे० (पु०) भृत्य, कर्मचारी, नौकर। (स्त्री०) चाकरानी।

चाका दे० (पु०) चक्र, रथ का पहिया।

चाकी दे० (स्त्री०) चक्की, पाट, जांत।

चाकू दे० (पु०) छुरी, असिपुत्रि, धेनुका, क़लम-तराश, चाकू।

चाखना दे० (क्रि०) स्वादलेना, परखना।

चाङ्गला दे० (पु०) घोड़े का रङ्गविशेष।

चाचा दे० (पु०) पिता का भाई, काका, चचा। (स्त्री०) काकी, चाची, चचा की स्त्री।

चाञ्चल्य तद्० (पु०) चञ्चलता, अस्थिरता, चपलता, चापल्य।

चाट दे० (स्त्री०) चसका, उत्सुकता, लालसा, लोभ, लालच, मादक पदार्थों में रुचि होने के लिये खाद्य वस्तु।

चाटक तद्० (पु०) मसखरी, विद्या, इन्द्रजाल।

चाटकी तद्० (पु०) चाटक विद्या जाननेवाला, ऐन्द्रजालिक।

चाटना दे० (क्रि०) चीखन, रस स्वादलेना।

चाटी दे० (स्त्री०) मथानि, मथनिया।

चाटु तद्० (पु०) प्रियवाक्य, मीठा वचन, स्तुति, प्रशंसा, लोह का पात्र विशेष।—कार (पु०) प्रियभाषी, अनुनय विनय करने वाला, चापलूस।—पटु (पु०) भण्ड, भांड, ठगनेवाला, मसखरा, जि...पक, खुशामदी।—वादी (पु०) स्तुति करने वाला, प्रशंसा करने वाला, खुशामदी।

चलपत्र त...

चलपूंजी तद्... स्त्री०) सहारा, आश्रय, आवश्यकता, ...स्थान में ले... ओट, ढँकली।

पैसा आदि

चाणक तद्० (पु०) मुनिविशेष, गोत्रविशेष, उभाड़ने वाली बात, क्रोध उत्पन्न करने वाली बात।

चाणक्य तद्० (पु०) एक नीति के ग्रन्थ का नाम, मुनिविशेष, नीति शास्त्र के प्रसिद्ध पण्डित, यह चणक गोत्र में उत्पन्न हुए थे अतएव उन्हें चाणक्य गोत्र कहते थे। इनका प्रकृत नाम विष्णुगुप्त था। इनका बनाया अर्थशास्त्र और चाणक्यनीति दो ग्रन्थ पाये जाते हैं। यह पाटलीपुत्र के चन्द्रगुप्त के मन्त्री थे। मुद्राराक्षस में इनकी नीति कुशलता का वर्णन है। गुणाढ्य ने बृहत्कथा में इनको स्मरण किया है। अतएव चन्द्रगुप्त का समय, ३२० ई० से पूर्व का मानना चाहिये।

चाणूर तद्० (पु०) दानवविशेष, कंसराज का योधा था।

चाण्डाल तद्० (पु०) वर्णसङ्कर जातिविशेष, चण्डाल, श्वपच, (स्त्री०) चाण्डाली चाण्डाल की स्त्री, चण्डाली, चण्डालिन।

चाण्डूल तद्० (पु०) पक्षी विशेष।

चातक तद्० (पु०) स्वनाम ख्यात पक्षी, पपीहा। —नन्द (पु०) मेघों के आने का समय, वर्षा ऋतु।

चातकिनी तद्० (स्त्री०) चातकी।

चातर दे० (पु०) महाजाल, दुर्जनों का जमाव, दुष्टरियों का समुदाय।

चातुर तद्० (पु०) चतुर, चालाक, धूर्त, प्रवीण, बुद्धिमान्, कुशल, चार, चौथा, प्रियभाषी, मियन्ता।

चातुराश्रम्य तद्० (पु०) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास, इन चार आश्रमों का धर्म।

चातुर्मास्य तद्० (पु०) चार मास में समाप्त होने वाला व्रत।

चातुरी तद्० (स्त्री०) दक्षता, नैपुण्य, कौशल, चतुरता, छल शठता।

चातुर्य तद्० (पु०) चतुराई, चतुरता, धूर्तता।

चातुर्वर्ण्य तद्० (पु०) चतुर्वर्ण के धर्म।

चातुर्वैद्य तत्० (पु०) चार वेदों के ज्ञाता, चतुर्वेदज्ञ, चतुर्वेदी ।

चात्वाल तत्० (पु०) गर्त, गढा, गह्वर, अग्निहोत्र की सामग्री ।

चातृक दे० (पु०) पपीहा, चातक ।

चादर दे० (स्त्री०) एकलाई, ओढ़ने का एक प्रकार का वस्त्र पिछौरा, पिछौरी ।

चान्द्र तत्० (गु०) चन्द्र सम्बन्धीय, चन्द्रमा का, सौम्य ।

चान्द्रमास तत्० (पु०) चन्द्रमा का महीना, कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा को समाप्त होने वाला मास ।

चान्द्रायण तत्० (पु०) व्रत विशेष, चन्द्रव्रत, एक प्रकार का प्रायश्चित्त । इस व्रत में चन्द्रमा की कला की घटती और बढ़ती के अनुसार भोजन में घटाव बढ़ाव किया जाता है । यह व्रत एक महीने का होता है ।

चाप तत्० (पु०) धनुष, कोदण्ड, धनुहीं । दाव, दबाव ।—खण्ड (पु०) धनुष के टुकड़े ।

चापत दे० (क्रि०) दबाता है, दबाते हो ।

चापन दे० (पु०) दबाना, दावन, ।

"मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई,
लगे चरण—चापन दोउ भाई" ।
—रामायण ।

चापल तत्० (पु०) चञ्चलाई, चपलाहट ।

चापलूस दे० (पु०) खुशामदी, प्रशंसक, स्तुतिकर्त्ता ।

चापलूसी दे० (स्त्री०) लल्लोपत्तो, फुसलाहट, खुशामद, अनुनय ।

चापल्य तत्० (पु०) चपलता, अधीरता, जल्दीबाज़ी ।

चापी दे० (स्त्री०) दबाई ।

चाफन्द दे० (पु०) जाल, मल्लाह जिससे मछली पकड़ते हैं ।

चाबना दे० (क्रि०) दांतों से कुचलना, पीसना ।

चाबी दे० (स्त्री०) कुञ्जी, ताली, कूची, ताले की कुंञ्जी ।

चाभर पाटना दे० (क्रि०) दांतों से होंठ काटना, दांत कटकटाना ।

चाम तद् (पु०) चर्म, चमड़ा, त्वक्, खाल ।

चामर तत्० (पु०) चमर, चवर, राजा का एक चिन्ह ।

चामीकर तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, सोना ।

चामुण्डा तत्० (स्त्री०) दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चण्डमुण्ड, राक्षसों को मारने वाली देवी । मातृका भेद ।

चाम्पेय तत्० (पु०) चम्पा पुष्प, चंपा का फूल, नागकेशर ।

चाय तत्० (पु०) [चि + घञ्] समूह, समूह, ढेर, स्वाद, आस्वाद, चोप, हर्ष, चाहत ।

चार तत्० (पु०) गूढ़ पुरुष, दूत, खोजी, अनुसन्धानकारी, चर कारागार, संख्या विशेष, ४ ।—कर्म (पु०) छिप कर देखना ।—चक्षु (पु०) राजा, नृपति ।—टुक (वा०) टुकड़े टुकड़े, साफ़ साफ़, छल रहित ।

चारक तत्० (पु०) माईस, चरवाहा, चराने वाला ।

चारण तत्० (पु०) जाति विशेष, भाट, बन्दी, स्तुति करने वाली जाति ।

चारा दे०(पु०) पौधे, छोटे वृक्ष, पशुओं के खाने की चीज़, घास आदि ।

चारी तत्० चलने वाला, गामी ।

चारु तत्० (गु०) सुन्दर, सुहावना, मनोहर, रमणीय, मनोज्ञ ।—ता (स्त्री०) सौन्दर्य, सुन्दरता, शोभा । —पर्णी (स्त्री०) गन्धप्रसारन औषधि विशेष । —फला (स्त्री०) दाख, अङ्गूर, किशमिश । —बाहु (पु०) श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम । —विक्रम (गु०) बलवान्, बली, बलिष्ठ, मनोहर, गति विशिष्ट ।—मति (स्त्री०) श्रीकृष्ण जी की कन्या का नाम, बुद्धिमान् ।—लोचन (गु०) सुन्दर आँख वाला । (पु०) हरिण, मृग ।—शिला (स्त्री०) मणि विशेष, हीरा ।—शील (गु०) सुरूप, सुन्दरस्वभाव ।

चारेक्षण तत्० (पु०) [चार + ईक्षण] राजमन्त्री, राजनीतिज्ञ ।

चारपाई दे० (स्त्री०) खाट, खटिया, पर्यङ्क, पलङ्ग ।

चार्वङ्गी तत्० (स्त्री०) सुन्दरी नारी, सुरूपा स्त्री, रूपलावण्य युक्ता ।

चार्वाक तद्० (पु०) तार्किक विशेष, लौकायतिक, नास्तिक भेद, नास्तिक मत प्रवर्तक ऋषि। किसी का कहना है कि यह देव गुरु बृहस्पति ही थे। किसी के मत से चार्वाक बृहस्पति के शिष्य थे। किसी किसी का कहना है कि चार्वाक इस नाम का कोई था ही नहीं। यह न्याय मत के समान एक दार्शनिक मत है। चार्वाक स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर आदि को नहीं मानते। ये लोग स्वर्ग, मुक्ति, यज्ञ, तप, दान, आदि का खण्डन किया करते हैं। वेद के विषय में इनकी सम्मति अत्यन्त निन्दित है। चार्वाक दर्शन का दूसरा नाम लोकायत दर्शन है, क्योंकि लौकिक विषय ही इस दर्शन का सर्वस्व है। चार्वाक के मत से परलोक एक असम्भव वस्तु है, अतएव वे उसे नहीं मानते। किसी समय इस मत का प्रचार हुआ था यह निश्चय करना कठिन है। विष्णुपुराण में भी इस मत का उल्लेख किया गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में चार्वाक को दुर्योधन का मित्र बतलाया गया है। वाल्मीकीय रामायण और तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी इस मत का पता चलता है।

चाल दे० (स्त्री०) चलना, चलन गति, रीति, व्यवहार, परिपाटी, छप्पर, छाँद।—पकड़ना (क्रि०) फैलना, चलना, प्रचलित होना, घोड़े की गति सिखाना।—चलना (क्रि०) निबाहना, व्यवहार करना, धोखा देना, धूर्तता करना।—ढाल (सं०) चाल चलन, रीति भांति, व्यवहार।

चालक तद्० (पु०) [चल्+णक्,] चालन कर्ता, भेदक, रेचक, सारक, हस्ति विशेष।

चालना तद्० (पु०) स्थानान्तर, गमन, प्रेरण, दूरीकरण, सारण।

चालना दे० (क्रि०) झाड़ना, पछोड़ना, छानना, आटा चालना, फटकना, देखना, झारना।

चालनी दे० (स्त्री०) चलनी, छनना, छाननेका पात्र, आटा आदि का मोटा भाग निकालने वाला पात्र, आटा छानने का पात्र।

चाला दे० (पु०) गति, यात्रा, प्रस्थान, आचरण, रीति, व्यवहार।

चालाक दे० (पु०) धूर्त, निपुण, दक्ष, कुशल।

चालाकी दे० (स्त्री०) धूर्तता, निपुणता, विचार।

चाली दे० (पु०) नटखट, चञ्चल, चपल, रसिया, रसिक।

चालीस दे० (पु०) दो बीस, चत्वारिंशत्, संख्या विशेष, ४०।

चालीसा दे० (पु०) चालीस वर्ष की अवस्था वाला।

चाव दे० (पु०) चार अङ्गुल, चाप, उत्कण्ठा, रुचि, अभिलाष।

चावल दे० (पु०) तण्डुल, चाबल, अन्न विशेष, शालि।

चाष तद्० (पु०) स्वर्ण चातक, महटोरया, नीलकण्ठ, यथा—

"चारा चाष, बाम दिशि लेई,
मनो सकल मङ्गल कहि देई।"
—रामायण।

चाषु तद्० (पु०) नीलकण्ठ।

चास तद्० (पु०) खेती, कृषि, जोताई।

चासा तद्० (पु०) किसान, खेतहा, हरवाह, जोतहा।

चाह दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष, प्रीति, मनोरथ, लालसा।

चाहक दे० (पु०) स्नेही, प्रणयी, हितकारी, हितू।

चाहत दे० (स्त्री०) चाह, इच्छा, प्रीति, अभिलाष, प्रेम।

चाहना दे० (क्रि०) प्रेम करना, इच्छा करना, अभिलाषा करना।

चाहा दे० (पु०) प्रेम, स्नेह, लालसा, अभिलाष, पक्षि विशेष।

चाहाचाही दे० (स्त्री०) परस्पर प्रीति, अन्योन्य मैत्री।

चाहि दे० (अ०) देखकर, निहार कर, इच्छा से, लालसा से, प्रेम से।

चाहिये दे० (अ०) उपयुक्त, उचित, योग्य।

चाहिहीता दे० (पु०) इच्छित, अभिलषित, प्रिय, मनभावन।—चाहिती (स्त्री०)।

चाही दे० (क्रि०) देखो, देखने की इच्छा की।

चाहो दे० (अ०) अथवा, किम्वा, वा, या, वाक्यान्तर सूचक।

चिक दे० (पु०) जवनिका, परदा, बांस का बना हुआ परदा, रोग विशेष, कण्ठाभरण विशेष, कण्ठा विशेष।

चिकटा दे० (पु०) वस्त्र विशेष, टसर का बना कपड़ा। (गु०) चिक्कट, तेल का मैल।

चिकठा दे० (पु०) तेली, तेल बनानेवाली एक जाति।

चिकन दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, कपड़ा जिस पर हाथ से बेल बूटे काढ़े जाते हैं।

चिकना दे० (गु०) साफ सुथरा, सुन्दर, स्निग्ध, मसृण, तेलहा, तेलौंस, घोंटा हुआ। निर्लज्ज, लम्पट, सुन्दर।—घड़ा बनाना, (वा०) दूसरे की न मानना और अपनी कहते रहना। अपराध करके निरपराध प्रमाणित करना।—चांदा (व०) सुन्दर, रमणीय, मनोहर, मनोज्ञ, सुहावना।

चिकनाई दे० (स्त्री०) चिकनापन, स्निग्धता, फिसलन, चर्बी, चञ्चलता, ओप, झलक।

चिकनाना दे० (क्रि०) उज्वल करना, साफ करना, चिकन बनाना, घोंटना, ओपना, झलकाना।

चिकनाहट दे० (स्त्री०) चिकनापन, चिकनाई।

चिकनिया दे० (पु०) छैला, बिसनी, शौकीन, लम्पट।

चिकलना दे० (क्रि०) मसलना, पीसना, चबाना, चूर करना।

चिकवा दे० (पु०) जाति विशेष, मांस बेचनेवाली जाति।

चिकार दे० (पु०) गुल, कोलाहल, चिल्लाहट।

चिकारना दे० (क्रि०) चें चें करना, नाकों देना, कोलाहल करना, गुल करना, शोर करना, चिल्लाना।

चिकारा दे० (पु०) हरिण, मृगा, बाघ विशेष एक प्रकार की सारङ्गी।

चिकारी दे० (स्त्री०) मसा, फूहड़ाई, फूहड़पन।

चिकित्सक तत्० (पु०) [कित्+सन्+अक्] चिकित्सा करने वाला, रोग दूर करने वाला, वैद्य, भिषक्।

चिकित्सा तत्० (स्त्री०) [कित्+सन्+आ] पीड़ा, प्रतीकार, व्याधि का अपनय, रोग हटाना, वैद्य कर्म, औषध करना, वैदाई।—लय (पु०) [चिकित्सा+आलय] चिकित्सा करने का स्थान, औषधालय, दवाख़ाना।—शास्त्र (पु०) आयुर्वेद विद्या, चिकित्सा करने का शास्त्र।

चिकित्सित तत्० (गु०) [चिकित्सा+इत] चिकित्सा किया हुआ।

चिकीर्षा तत्० (स्त्री०) [कृ+सन्+आ] करने की इच्छा, अभिलाष।

चिकीर्षित तत्० (गु०) [कृ+सन्+क्त] अभिलषित, वाञ्छित, अभिप्रेत, इष्ट, चाहा हुआ।

चिकीर्षु तत्० (पु०) करने की इच्छा रखनेवाला, अभिलाषी।

चिकुर तत्० (पु०) केश, कुन्तल, मूर्द्धज, बाल, पक्षिविशेष, वृक्षविशेष।—पाश (पु०) केश समूह।

चिकोरना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंच से बिलोरना चिल्होरना, खखोरना।

चिकोरा दे० (गु०) चञ्चल, चपल, तरल।

चिक्क दे० (पु०) छछुन्दर, बकरी, अजा, छाग, यथा—

"पाहो खेत चिक्क धन अरु बिटियन बढ़वारि,
येते पर जो नहि लसै तो जाइ करै अधवारि।"

चिक्कट दे० (गु०) चिकटा, मलीन, मैला, तेलहा।

चिक्कण तत्० (गु०) स्निग्ध, चिकना, चिक्कन, सचिक्कन, फिसलनेवाला।

चिक्कनी तद्० (स्त्री०) दक्खिनी सुपारी।

चिक्करहिं दे० (क्रि०) चिक्कारते हैं, चिङ्घारते। हाथी का शब्द करना।

चिक्कस दे० (पु०) आटा, जव का मैदा, जव। गेहूँ का महीन आटा।

चिक्कहा दे० (पु०) चिकवा, कसाई।

का दे० (स्त्री०) छुछुन्दरी, छूही, मूस की एक जाति ।
कार दे० (पु०) चिंघाड़, भयङ्कर शब्द, हाथी का शब्द ।
की दे० (स्त्री०) सड़ी सुपरी ।
ुरन दे० (पु०) जङ्गली घास, खेत जोतने निकली हुई घास ।
ुरना दे० (क्रि०) निकाना, सोहना ।
ड़ा, चिङ्गड़ी दे० (स्त्री०) कीटविशेष, पतिङ्गा, ींगा, झींगा मछली ।
नी दे० (स्त्री०) मुरगी का बच्चा ।
ा दे० (पु०) मुरगी का बच्चा ।
दे० (स्त्री०) चिङ्गारी, पतङ्ग, कीट ।
ड़ दे० (पु०) चिङ्कार, भयङ्कर शब्द, हाथी शब्द ।—मारना (वा०) भयङ्कर शब्द करना, ङ्गारना, हाथी का शब्द करना ।
ड़ना दे० (क्रि०) किलकारना, चिङ्घाड़ ना ।
ी दे० (स्त्री०) किलनी ।
ा दे० (पु०) तरकारी विशेष ।
ाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, पुकारना, ज़ोर से करना ।
(स्त्री०) टुकड़ा, यंत्र विशेष, एक छोटा चक्की ।
दे० (पु०) रेंटा, कीचड़, क्रुद्ध हुआ, कुपित
ा दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, दाग़, छींटा ।
दे० (स्त्री०) धूप, घाम, ताप, गर्मी ।
(गु०) गोरा, गौर वर्ण, श्वेत, सुन्दर, रुपया, मुद्रा ।
(पु०) प्रति दिन की कमाई, रोज़ाना ।
(स्त्री०) पाती, पत्री, ख़त, पत्र,—पत्री) लिखा पढ़ी, ख़तो किताबत करना ।
ी (स्त्री०) चिट्ठी का आना जाना, पत्र ।

चिड़ दे० (पु०) क्रोध, घृणा, ग्लानि ।
चिड़चिड़ा दे० (गु०) क्रोधी झुनसाह, चिटकने वाला ।
चिड़पिड़ा दे० (गु०) तीखा, चरपरा, तीक्ष्ण, कटु ।
चिड़ा दे० (पु०) चटक, पक्षि विशेष, गौरैया ।
चिड़ाना दे० (क्रि०) सताना, खिजाना, क्रुद्ध करना, छेड़ना ।
चिड़िया दे० (पु०) गौरैया, पक्षी, अण्डज ।
चिड़ीमार दे० (पु०) बहेलिया, व्याध, हत्याकारी, बधिक ।
चिण्डि दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष ।
चित तद्० (पु०) मन, चित्त, हृदय, अन्तःकरण, सुध, स्मरण ।—चाय (वा०) अभीष्ट, मनभावन, मन को अच्छा मालूम होने वाला ।—चेता (वा०) मनमाना, उचित मालूम होना, जंचना, पसन्द आना ।—चोर (वा०) मन हरनेवाला, अत्यन्त प्रिय ।—देना (वा०) ध्यान देना, मन लगाना, अधिक उत्सुकता से करना ।—लगना (वा०) मनोहर, सुहावना, मनभावन ।—लाना (वा०) सावधान हो जाना, सचेत हो जाना । (स्त्री०) दृष्टि, दीठ, अवलोकन, समझ बूझ । (गु०) अघटाचित, सीधा लेटना, मुँह ऊपर करके सोना, उतान पड़ना ।—करना (वा०) उलटना, उतान गिरना, जीतना, हराना, पराजित करना ।
चितकबरा दे० (गु०) चितला, सतरंगा, रङ्गबिरङ्गा, कबरा, कर्बुर, अबलक ।
चितना दे० (क्रि०) रङ्गा जाना, ताकना, देखना, अवलोकन करना ।
चितरना दे० (क्रि०) चित्रित करना, रङ्ग देना, रङ्गना, चित्र बनाना ।
चितला दे० (गु०) चितकबरा, कर्बुर ।
चितवन दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, झांकी, अवलोकन, कटाक्ष ।
चितवना दे० (क्रि०) देखना, दर्शन करना, कटाक्ष करना ।
चितहट दे० (स्त्री०) गौंच, अनिच्छा, घृणा ।

चिता तत्० (स्त्री०) शव दाह स्थान, जिस स्थान पर मुर्दा जलाया जाता है, श्मशान, मसान, मरघट।—**शायी** (गु०) मुर्दा, मरा हुआ।

चिताखा दे० (स्त्री०) चिता।

चिताङ्ग दे० (गु०) चित्तु उतान।

चिताना दे० (क्रि०) जनाना, जताना, सावधान करना, सूचित करना।

चितावना दे० (क्रि०) जताना, चौकस करना।

चितावनी दे० (स्त्री०) जतावनी, सावधान करने का उपदेश।

चितेरा तद्० (पु०) चित्रकार, चित्र बनानेवाला।

चितौना दे० (क्रि०) देखना, विलोकन करना, दर्शन करना।

चित्कार तत्० (पु०) चिल्लाना, चिचियाना, उच्च शब्द।

चित्त तत्० (पु०) [चित्+क्त] अनुसन्धान करने वाली अन्तःकरण की वृत्ति, मन, हृदय, ज्ञान, बुद्धि।—**ताप** (पु०) मन की पीड़ा, मानसिक दुःख।—**प्रसाद** (पु०) आह्लाद, हर्ष, चित्त के सात्विक भाव का प्रकाश।—**वान** (गु०) अनुग्राहक, कृपावान्, दयालु।—**विभ्रम** (पु०) उन्माद, चित का ज्ञान शून्य हो जाना।—**विक्षेप** (पु०) मन की चञ्चलता, उद्विग्नता, व्याकुलता। **वृति** (स्त्री०) चित्त का विकार।—**समुन्नति** (स्त्री०) दम्भ, अहङ्कार, मन का बढ़ना।

चित्ता तद्० (पु०) औषधि, पौधाविशेष।

चित्तोद्वेग तत्० (पु०) चित्त का उद्वेग, विरक्ति, व्याकुलता।

चित्तोन्नति तत्० (स्त्री०) गर्व, अभिमान, अहङ्कार।

चित्य तत्० (पु०) समाधि का स्थान।

चित्र तत्० (पु०) [चित्र्+अल्] तिलक, छवि, पट, आलेख्य, अद्भुत, विस्मय, मनोहर, अनेक प्रकार का रङ्ग तसवीर बेलबूटे।—**कण्ठ** (पु०) कबूतर, पारावत, परेवा।—**कन्दक** (पु०) ज़िमींकन्द।—**कार** (पु०) चित्र बनानेवाले, चितेरा।—**कारी** (स्त्री०) चित्रकार का काम, चितेरापन।—**काय** (पु०) बाघ, व्याघ्र, शेर, चीता।—**कूट** (पु०) पर्वत विशेष, बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत कामता पहाड़ के नाम से यह प्रसिद्ध है।—**केतु** (पु०) इस नाम के एक राजा हो गये हैं।—**गुप्त** (पु०) यमराज के लेखक का नाम, जो सब के पाप पुण्य लिखा करते हैं, कायस्थों के आदिपुरुष हैं। पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अङ्ग से हुई है। सृष्टि करने के पश्चात् जब ब्रह्मा ध्यान में मग्न थे उस समय क़लम दवात लिये अनेक वर्णों से चित्रित एक मनुष्य उत्पन्न हुआ। उसने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा से पूँछा "क्या करना है"? ब्रह्मा की आज्ञा पाकर ये प्राणियों के पाप पुण्य लिखने लगे। इनका लिखा हुआ विचित्र लेखा गुप्त रहता है, इस कारण इनका नाम चित्रगुप्त पड़ा। ब्रह्मा की आज्ञा ही से कायस्थ इनकी जाति निश्चित हुई। अम्बष्ठ, श्रीवास्तव माथुर, गौड़, भटनागर आदि नाम के नव पुत्र इनके थे। ये यमराज के मन्त्री हैं। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है।—**देवी** (स्त्री०) रक्त वारुणी।—**पक्ष** (पु०) तीतर नाम का पक्षी। —**पट** (पु०) प्रति, मूर्त्ति, फोटो।—**भानु** (पु०) सूर्य, अग्नि, अनल, दिवाकर।—**भेषज** (पु०) कठूमरी, एक औषधि का नाम।—**रथ** (पु०) गन्धर्व विशेष। इनका नाम अङ्गारपर्ण था इनके पास एक अनेक रत्नों से चित्रित रथ था इसी कारण इनको लोग चित्ररथ कहने लगे इनकी स्त्री का नाम कुम्भीनसी था। पाण्डवों के वनवास के समय में अर्जुन ने इनके उस रथ को जला डाला था। तब से इनका नाम दग्धरथ हो गया था। (२) धर्मरथ नामक राजा के पुत्र का नाम, बलि राज के क्षेत्रज पुत्र का नाम अङ्गनाम था, येही अङ्ग देश के राजा थे। राजा अङ्ग के पुत्र का नाम दधिवाहन था, धर्मरथ के पिता दिविरथ इन्हीके पुत्र थे। धर्मरथ ही के चित्ररथ पुत्र थे —**लिखित** (गु०) चित्र में लिखा हुआ, निश्चेष्ट चेष्टा हीन, चेष्टा रहित।—**लेखा** (स्त्री०) बाणासुर

विशेष, छन्दो विशेष। दैत्यराज बाणासुर की कन्या उषा की सखी का नाम। यह बाणासुर के मन्त्री कुष्माण्ड की कन्या थी। इसीने उषा की प्रार्थना और देवर्षि नारद की सहायता से अनिरुद्ध को श्रीकृष्ण के भवन से हर लिया था। —लोचना (स्त्री०) मदन पक्षी, मैना पक्षी। —विचित्र (पु०) नानावर्ण का, बहुरङ्गी, अनेक प्रकार, नानाविध।—शाला (स्त्री०) चित्र बनाने का स्थान, जिस स्थान में अधिक चित्र हों। शिखण्डिज।--(पु०) बृहस्पति, देवगुरु।—सारी (स्त्री०) नगाड़ख़ाना, अटारी, सजाया हुआ, गृह।—सेन (पु०) गन्धर्व विशेष। यद्वैत वन के एक सरोवर के निकट इनका वास था। पाण्डव भी निर्वासित हो कर, इसी वन में रहते । एक समय दुर्योधन अपनी सेना और मित्रों ...पने वैभव का दिखा कर, युधिष्ठिर आदि ...ने की इच्छा से चला। इस तालाब के ...न तब चित्रसेन को वहाँ से ...रहा। चित्रसेन ने भी ...पक्ष में युद्ध होने ..., कर्ण आदि ...न की महारानी ..., एक सेवक युधिष्ठिर ...ने अत्यन्त नम्रता से सहायता देने के बिलकुल ...धिष्ठिर ने समझा बुझाकर, और सहदेव को दुर्योधन की ...ए भेजा। इनके पराक्रम से गन्धर्व ... छूट गये। वह इधर उधर भागने ...न लोगों ने दुर्योधन, उनकी स्त्रियों तथा ...आदि रथियों को क़ैद से छुड़ाया। गन्धर्व...ं, दुर्योधन आदि को लेकर, युधिष्ठिर के समीप आये, और उन्होंने अपना अपराध क्षमा कराया। दुर्योधन ने भी "चौबे गये छब्बे बनने दूबे बन के घर आये"। की लोकोक्ति चरितार्थ की।

चित्रा तत्० (स्त्री०) ...) शोरमचाना, किकियाना, नाम, चौदहवां नक्षत्र, विशेष। ... भरा हुआ, धुयेंसा,

चित्राङ्ग तत्० (पु०) [चित्र + ... रक्त चित्रक, शृगाल। ...र्तन, जिसमें

चित्राङ्गद तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय रा...घरदार महाराज शन्तनु का राजकुमार, महावीर ...स्त्री०) पितामह का यह सौतेला भाई था। सत्यवती के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी। इसके छोटे भाई का नाम विचित्रवीर्य था। शन्तनु के अनन्तर यह राजा हुआ था। इससे प्रजा प्रसन्न थी। चित्राङ्गद नामक गन्धर्व के साथ इसका तीन वर्ष तक घोर युद्ध होता रहा, उसी युद्ध में शन्तनुकुमार चित्राङ्गद मारा गया।

चित्राङ्गदा तत्० (स्त्री०) अर्जुन की स्त्री, मनीपुर के राजा चित्रवाहन की यह कन्या थी। इसके गर्भ से बभ्रुवाहन नामक पराक्रमशाली पुत्र उत्पन्न हुआ था। अपने नाना के वंश में उनका कोई उत्तराधिकारी न रहने के कारण, उनके राज्य का मालिक हुआ।

चित्रिणी तत्० (स्त्री०) चार प्रकार की स्त्रियों में दूसरे प्रकार की स्त्री।

चिथड़ा दे० (पु०) फटा कपड़ा, गुदड़।

चिथड़िया दे० (पु०) गुदड़िया, गुदड़ावाला, चिरकुटिया।

चिथाड़ना दे० (क्रि०) फाड़ना, लताड़ना, लथाड़ना, चीरना।

चिदाकाश तत्० (पु०) चैतन्य आकाश, ब्रह्म, परमात्मा।

चिद् तत्० (पु०) चैतन्य, सजीव, जीवधारी।

चिदात्मा तत्० (पु०) ज्ञानमय आत्मा, ज्ञानस्वरूप, परमात्मा।

चिदानन्द तत्० (पु०) ज्ञान और आनन्दस्वरूप परमात्मा।

चिदाभास तत्० (पु०) ज्ञान, ज्ञान का प्रकाश।

चिद्रूप तत्० (पु०) ज्ञानमय, ज्ञानस्वरूप, स्फूर्तिमान्, मनोहर।

चिता तत्० (स्त्री०) शव …मय, परमात्मा ।
पर मुर्दा जलाया जाता…, मूत्रकृच्छ्र रोग ।
घट ।—शायी (…०) टीसना, जलन होना,

चिताखा दे० (…

चिताङ्ग दे० …चिनगी दे० (स्त्री०) लूका, अग्नि,

चिताना …। …चिनाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चीखना,
… आह मारना ।

चिन्त तद्० (स्त्री०) चिन्ता, स्मरण, सुध ।

चिन्तन तत्० (पु०) अभ्यास, ध्यान, स्मरण ।

चिन्तना तद्० (क्रि०) अभ्यास करना, मनन करना, ध्यान करना ।

चिन्ता तत्० (स्त्री०) चिन्तन, ध्यान, भावना, उद्वेग, उत्कण्ठा, विषाद, कातरता, भय, त्रास, सोच, हित वस्तु की प्राप्ति न होने का दुःख । —की मुद्रा (वा०) ध्यानमग्नता, सोच की अवस्था ।—कुल (गु०) [चिन्ता +] आकुल उद्विग्न, व्याकुल, चिन्तित।—न्वित (गु०) चिन्तायुक्त, उदास, उन्मनस्क ।—पर (गु०) भावनायुक्त, चिन्तित ।—मणि (पु०) शुभचिन्तक, ब्रह्मा, बुद्धि विशेष, मणि विशेष, कल्पित मणि ।

चिन्ताना तद्० (क्रि०) अभ्यास करना, मनन करना, पढ़े हुए को पुनः पढ़ाना ।

चिन्तित तत्० (गु०) [चिन्ता + इतच्] चिन्तान्वित, भावनायुक्त, सोची ।

चिन्ह तत्० (पु०) लक्षण, पहचान, अङ्क, दाग, परिचय, पताका ।

चिन्हार तद्० (पु०) परिचित, पहचाना हुआ, लक्षित, अङ्कित ।

चिन्हारी तद्० (स्त्री०) परिचय, जान पहिचान ।

चिन्हित तत्० (गु०) चिन्हयुक्त, अङ्कित, मनोनीत, सङ्केतित, दागी ।

चिपकना दे० (क्रि०) लगना, सटना, चिपकजाना, सटजाना, दो वस्तुओं का आपस में मिल जाना ।

चिपकाना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना ।

चिपचिपा दे० (गु०) लसदार, लसलसा, सटनेवाला, लिजलिजा ।

चिपचिपाना दे० (क्रि०) लसलसाना ।

चिपटना दे० (क्रि०) लिपटना, चिपकना, सटना ।

चिपटा दे० (गु०) सटा हुआ, चिपका, लिपटा ।

चिपटाना दे० (क्रि०) सटाना, लिपटाना, चिपकी लगाना ।

चिपडाहा दे० (गु०) किचड़ाई या किचराई हुई आँख ।

चिपड़ी दे० (स्त्री०) उपरी, गोहरी, उपला, कण्डा ।

चिपरा दे० (पु०) गोंद, लासा ।

चिप्पक दे० (गु०) छिछलाहा (पु०) पक्षि विशेष ।

चिप्पा दे० (पु०) थीप, पैबन्द, जोड़ ।

चिप्पी दे० (स्त्री०) टिकिया, पेगली, शिगरी, टिकरी, फूटी और फटी वस्तुओं में जो जोड़ी जाती है ।

चिधावला दे० (पु०) लड़कपन, लड़केखाला, छुलहपना ।

चिथिल्ला दे० (गु०) नटखट, चिचिल, चिलबिला ।

चिबुक तत्० (गु०) ओठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढ़ी, दाढ़ी, वृक्षविशेष, मुचकुन्द वृक्ष ।

चिमचिमा दे० (पु०) तेलछट, तेल का मैल, जला हुआ तेल ।

चिमटना दे० (क्रि०) चिपकना, चिपटना, लिपटना, सटना ।

चिमटा दे० (पु०) मोचना, चीमटा, आग उठाने के लिये लोहे या पीतल का एक प्रकार का बर्तन, सँड़सी ।

चिमटाना दे० (क्रि०) सूखना, लिपटाना, चिपटाना, गले लगाना ।

चिमटी दे० (स्त्री०) चुटकी, सँड़सी, चिमटी, छोटा चिमटा ।

चिमठा दे० (गु०) लचीला, कड़ा, चिमड़ा ।

चिमड़ी दे० (स्त्री०) चिमड़ा, सूखा हुआ, शुष्क ।

चिमसा दे० (पु०) पानी का सरेस, लासा, लसलसा ।

चिर तत्० (अ०) बहुत काल, दीर्घकाल, बहुत दिन का, बहुत दिन तक ।—कारी (गु०) विलम्ब से काम करने वाला, आलसी, दीर्घसूत्री, शिथिल, ढीला ।—काल (पु०) दीर्घकाल, अनेक दिन

सदा, सब समय।—जीवक (पु०) चिरजीवी, बहुत दिनों तक जीने वाला।—जीवी दीर्घजीवी, विष्णु, काक, जीवक वृक्ष, शाल्मली वृक्ष, मार्कण्डेय मुनि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृप, और परशुराम, ये चिरजीवी हैं।—स्थायी (पु०) नित्य, सर्वदा रहने वाला।

चिरञ्जी तद्० (पु०) चिरञ्जीव, दीर्घायु। यह आशीर्वाद के अर्थ में कहा जाता है।

चिरकुट दे० (पु०) चिट, चिथड़ा, फटा, पुराना।

चिरकुटिया दे० (पु०) चिरकुटिया, गुदड़िया, चिथड़िया, गूदड़ बाबा, योगियों का एक भेद।

चिरचिरा दे० (पु०) अपामार्ग, पौधा विशेष, एक औषध का नाम।

चिरचिराना दे० (क्रि०) चरचराना, चरचर शब्द होना, बकवाद करना, कटकटाना, कठकना।

चिरचिराहट दे० (स्त्री०) चरचरापन, झनझनाहट।

चिरजीव तद्० दीर्घ जीवन, दीर्घायु।

चिरण्टी तद्० (स्त्री०) युवती स्त्री, पिता के घर रहने वाली युवती, विवाहिता या अविवाहिता कन्या।

चिरन्तन तद्० (पु०) पुराना, प्राचीन।

चिरवाना दे० (क्रि०) चिराना, फड़वाना।

चिराद दे० (पु०) मांस भूनने की गन्ध।

चिराग दे० (पु०) दिया, दीपक, प्रदीप, यथा-"चिराग जलाओ"। "चिराग बुझ गया," "चिराग तले अन्धेरा।"

चिराना दे० (क्रि०) फड़वाना, चिरवाना।

चिरायु तद्० (पु०) देवता, (पु०) चिरजीवी, दीर्घजीवी।

चिरु तद्० (पु०) बाहु का जोड़।

चिरौंजी दे० (स्त्री०) पियाल, शुष्कफल विशेष।

चिरौरी दे० (स्त्री०) विनती, प्रार्थना, विनय, अनुनय, खुशामद।

चिल दे० (पु०) पक्षि विशेष, आतापि पक्षी, लहुड़ पक्षी।

चिलक दे० (स्त्री०) चमक, झलक, प्रकाश, दीप्ति।

चिलकना दे० (क्रि०) झलकना, प्रकाशित होना, चमकना।

चिलचिलाना दे० (क्रि०) शोरमचाना, किकियाना, चिल्लाना।

चिलड़ाहा दे० (पु०) जुओं से भरा हुआ, जुएँला, चिल्लर भरा।

चिलम दे० (पु०) मिट्टी का एक बर्तन, जिसमें तम्बाकू आग रख कर हुक्का पीते हैं।—बरदार (पु०) चिलम भरने वाला नौकर।—बरदारी (स्त्री०) चिलम भरना, चिलम पिलाना, चिलम पिलाने वाले का काम।—तमाकू (स्त्री०) चिलम भर तमाकू।—चट (पु०) अधिक चिलम पीने वाला।

चिलमची दे० (स्त्री०) हाथ आदि धोने का पात्र, झारी।

चिलवन दे० (स्त्री०) चिक, झंझरी। यथा—

दोहा।

"आओ पिया मेरे नैनन में पुतली देउँ बिछाय।
पलकन चिलवन डार दूं बैठे बीन बजाय।"

चिलहला दे० (पु०) पङ्किल, किचड़ाहा, पंकैला।

चिलहोरना दे० (क्रि०) ठेगाना, ठोकराना।

चिलिक दे० (स्त्री०) मोंच, ऐंच, मोचड़, व्यथा, दर्द।

चिलुड़ दे० (पु०) चीलर, जूँई, ढील।

चिल्ला दे० (पु०) धनुष का रोदा, ज्या, पगड़ी का छोर, जो कलाबत्तू का होता है।

चिल्लाना दे० (क्रि०) चिल्लाना, पुकारना।

चिल्लाहट दे० (स्त्री०) पुकार, चिल्लार।

चिल्ली दे० (स्त्री०) लोध्र, पत्रशाक विशेष, अण्डे का बना भोजन विशेष।

चिहटना दे० (क्रि०) चिपटना, लगना।

चिहाना दे० (क्रि०) चिंघारना, बघारना, अचम्भित होना।

चिहिकना दे० (क्रि०) लहकना, सनसनाना।

चिहुर तद्० (पु०) चिकुर, बाल, केश।

चीटी दे० (स्त्री०) चिवटी, चिऊटी, पिपीलिका।

चींथना दे० (क्रि०) फाड़ना, चिथड़ा करना, चिमचिमा होना।

चीऊटा दे० (पु०) कीट विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध कीट।

चीऊड़ा दे० (पु०) चुडुआ, चर्वण, चिपटा।
चीक दे० (पु०) कीच, कीचड़, पांक।
चीख दे० (पु०) चिल्लाड़, चिल्लाहट, स्वाद।
चीखना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चखना, स्वादलेना।
चीखुर दे० (पु०) गिलहरी, कठविल्ली।
चीतना दे० (क्रि०) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ करना। चित्र बनाना, चित्र करना, चितेरना।
चीतल दे० (पु०) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद।
चीता दे० (पु०) चाह, इच्छा, मनोरथ, बुद्धि। बाघ, व्याघ्र, शेर।
चीत्कार तत्० (पु०) चिल्लाहट, चिल्लाड़, पुकार।
चीथना दे० (क्रि०) चिथेड़ना, खसोटना, फाड़ना, खरोचना।
चीन तत्० (पु०) देश विशेष, भारत के उत्तर पूर्वस्थित देश, अन्न विशेष, जिसका माड़ी बनता है।
चीनी दे० (स्त्री०) खांड़, शक्कर, शर्करा, (गु०) चीन देश की वस्तु।
चीन्हना तद्० (क्रि०) पहचानना, परिचय (महावर) करना, जानना।
चीन्हा तद्० (गु०) जानकार, परिचित, पहचानता।
चीपड़ दे० (पु०) आँख का मल, आँख का कीचड़।
चीर तत्० (पु०) पेड़ की छाल, पुराने वस्त्र का टुकड़ा, कपड़ा, साड़ी, खोंच।
चीरना दे० (क्रि०) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर देना।
चीरम दे० (पु०) चिरौंजी।
चीरा दे० (स्त्री०) पगड़ी, फाड़ा, भोलापन, मुग्धापन।
चीरी दे० (स्त्री०) भींगुर, एक कीट विशेष।
चीरैता दे० (पु०) भूनिम्ब, औषधि विशेष।
चीर्ण तत्० (गु०) विदीर्ण, फटा हुआ, खण्डित। —पर्ण (पु०) निम्ब वृक्ष, पुराने पत्ते।
चील दे० (पु०) एक पखेरू का नाम।—झपट्टा मारना (वा०) बलात्कार से छीन लेना, झपट लेना।
चीलर दे० (पु०) ढोलजूंई, जूं, चीलड़।
चीवर तत्० (पु०) संन्यासी का वस्त्र, कौपीन।
चुआन दे० (स्त्री०) चरण, झरना, निकलना, जल निकलने की भूमि।
चुआना दे० (क्रि०) निकालना, टपकाना।
चुकती दे० (स्त्री०) निपटारा, समाप्ति, न्याय, फैसला।
चुकना दे० (स्त्री०) समाप्त होना, चुकता होना, अल्प होना, घटना, न्यून होना।
चुकाई दे० (स्त्री०) चुकौती, चुकती, चुकौता।
चुकाना दे० (क्रि०) निपटाना, मोल ठहराना।
चुकौता दे० (पु०) निपटारा, नियम।
चुकड़ दे० (पु०) कुल्हिया, पुरवा, भांड, कुल्ह।
चुकाड़ दे० (पु०) छोटी कुल्हिया।
चुक्की दे० (स्त्री०) छल, धूर्ताई, धोखा, चाईपन।
चुक्ती दे० (स्त्री०) नियम, निरूपण, परिमित, परिणाम, समाधान, निष्पत्ति, फैसला।
चुक्र तत्० (पु०) चूक, खट्टा, अम्लरस, खट्टारस अम्लशाक।
चुगन दे० (स्त्री०) चुनन, बिनन, चुनत।
चुगना दे० (क्रि०) दुगना, चुगना, बिनना।
चुङ्गी दे० (स्त्री०) बन्धन, अन्नदान, भिक्षा, एक प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आने वाली नई वस्तुओं पर लगता है।—घर (पु०) जहां चुङ्गी वसूल की जाती है।
चुचकारना दे० (क्रि०) आश्वासन करना, सान्त्वना देना, चुमकारना।
चुचकारी दे० (स्त्री०) चुमकारी, फुसलाई।
चुचाना दे० (क्रि०) चूना, टपकना, टपटपाना, गिरना, बहना।
चुच्चड़ दे० (पु०) बड़ी चूंची, मोटा स्तन।
चुञ्च तत्० (पु०) मुनि विशेष।
चुञ्चक तत्० (पु०) मेंड़, मेष।
चुटकी दे० (स्त्री०) नोंच, दो अङ्गुलियों के मिलाने से जो मुद्रा बनती है। मुट्ठी भर अन्न, पनारा रंगने के लिये बांध, जिससे कपड़ा सफेद हो

रह जाता है। एक प्रकार का गोटा, जिसे दिलियां भी कहते हैं। एक प्रकार का चूरन, सीए हुए कपड़े को फैलाना, स्त्रियों के अंगूठे में पहिनने की अङ्गूठी। यथाई, चुटकी बजाना।—चढ़ाना (वा०) रुपया परखना। अङ्गुलियों से कपड़ा चीरना।—लगाना (वा०) जेब काटना।—लेना (वा०) दबाना, नोंचना, आशा करना, गलाना, गरम करना, उपहास करना, काम करना, दिक करना।—में (वा०) शीघ्र, बहुत शीघ्र।—बजाते में (वा०) अत्यन्त शीघ्र।—यों में उड़ाना (वा०) हँसी में उड़ा देना।—यों में काम होना (वा०) शीघ्र काम होना।

चुटकुला दे० (पु०) संक्षिप्त, ठठोली हँसौड़ी।

चुटला दे० (पु०) चुटिया, जूड़ा, चोटी।

चुटाना दे० (क्रि०) घाव करना, चुटैल करना, चोट करना, आक्रमण करना।

चुटिया दे० (पु०) चोटी, चोरों का भेद जानने वाला।

चुटियाना दे० (क्रि०) घाव करना, आक्रमण करना, चोटिल करना।

चुटीला दे० (गु०) घायल, आहत, क्षत विक्षत।

चुड़ीहरा दे० (पु०) चूड़ी बनाने और बेचने वाला, चुड़िहार।

चुडुवा दे० (पु०) घोकड़ा, घर्षण, चोका।

चुड़ैल दे० (स्त्री०) प्रेतिनी, डाकिनी, फूहड़।

चुनचुनी दे० (स्त्री०) सुरसुराहट, कण्डू, कृमि, खर्जू।

चुनत दे० (स्त्री०) चुनन, तह, परत, सल।

चुनरी दे० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का रङ्गीन वस्त्र।

चुनाना दे० (क्रि०) टूंगाना, बिनवाना ईंटे जुड़वाना, ईंटें चुनवा कर दबा देना, गाड़ देना, तोपना।

चुनावट दे० (स्त्री०) चुनत, तह, परत।

चुनौटी दे० (स्त्री०) चूना रखने का पात्र, चूनादानी।

चुनौती दे० (स्त्री०) ढाढस, आश्वास, सेना का हर्ष, हुलास।

चुन्धला दे० (गु०) तिरमिरा, चकचौंधा, नेत्ररोगी।

चुन्धलाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, तिरमिरा होना।

चुन्धा दे० (गु०) नेत्र रोग विशेष।

चुन्ना दे० (क्रि०) चुगना, चुगलेना, चुनना, बिनना।

चुन्नी दे० (स्त्री०) छोटी पद्मराग मणि, लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े।

चुप दे० (गु०) निःशब्द, नीरव, मौन, अनबोल, गोपन, अवाक्।

चुपचाप दे० (गु०) निःशब्द, गुप्त, शब्द-रहित।

चुपड़ना दे० (क्रि०) चिकनाना, मलना, मसलना।

चुपाचुप दे० चुप होकर, गुप्तरूप से, अकस्मात्, सहसा।

चुप्पी दे० (स्त्री०) मौनता, निःशब्दता, शब्दहीनता।

चुभकी दे० (स्त्री०) डुबकी, बुड़की, गोता, अवगाहन।

चुभना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, बिधना, छिदना।

चुभाना दे० (क्रि०) घुसेड़ना, पैठालना, छेदना, बेंधना।

चुमा तद्० (पु०) चुम्बा, मच्छी, मिट्ठी, ओंठ से ओंठ छूना।

चुमाना तद्० (क्रि०) चूमना दिलवाना, विवाह की एक रीति।

चुमकार दे० (पु०) चुचकार शब्द, फुसलाना, आश्वासन देकर वश में करना।

चुमकारना दे० (क्रि०) टिटकारना, फुसलाना, उत्तेजन करना।

चुम्बक तत्० (पु०) एक प्रकार का लोहा, पत्थर विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु।

चुम्बन तत्० (पु०) मुखसंयोग, चुम्बा, चूमा।

चुम्बित तत्० (गु०) कृत चुम्बन, चुम्बा लिया हुआ।

चुरकी दे० (स्त्री०) चिकुर, शिखा, चोटी।

चुरकुट दे० (पु०) फटा कपड़ा, चूरचार, चूरन, बुकनी।

चीऊड़ा दे० (पु०) चुड़ुआ, चर्वण, चिपटा।
चीक दे० (पु०) कीच, कीचड़, पांक।
चीख दे० (पु०) चिङ्घाड़, चिल्लाहट, स्वाद।
चीखना दे० (क्रि०) चिल्लाना, चखना, स्वादलेना।
चीखुर दे० (पु०) गिलहरी, कठबिल्ली।
चीतना दे० (क्रि०) चाहना, इच्छा करना, मनोरथ करना। चित्र बनाना, चित्र करना, चितेरना।
चीतल दे० (पु०) तेंदुआ, चीता, बाघ, सर्प भेद।
चीता दे० (पु०) चाह, इच्छा, मनोरथ, बुद्धि। बाघ, व्याघ्र, शेर।
चीत्कार तद्० (पु०) चिल्लाहट, चिङ्घाड़, पुकार।
चीथना दे० (क्रि०) चिथेड़ना, खकोटना, फाड़ना, खरोचना।
चीन तद्० (पु०) देश विशेष, भारत के उत्तर पूर्वस्थित देश, वस्त्र विशेष, जिसका माहीं बनता है।
चीनी दे० (स्त्री०) खांड़, शक्कर, शर्करा, (गु०) चीन देश की वस्तु।
चीन्हना तद्० (क्रि०) पहचानना, परिचय (महावर) करना, जानना।
चीन्हा तद्० (गु०) जानकार, परिचित, पहचानता।
चीपड़ दे० (पु०) आँख का मल, आँख का कीचड़।
चीर तद्० (पु०) पेड़ की छाल, पुराने वस्त्र का टुकड़ा, कपड़ा, साड़ी, खोंच।
चीरना दे० (क्रि०) फाड़ना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े कर देना।
चीरम दे० (पु०) चिरौंजी।
चीरा दे० (स्त्री०) पगड़ी, फाड़ा, भोलापन, मुग्धापन।
चीरी दे० (स्त्री०) झींगुर, एक कीट विशेष।
चीरैता दे० (पु०) भूनिम्ब, औषधि विशेष।
चीर्ण तद्० (गु०) विदीर्ण, फटा हुआ, खण्डित। —पर्ण (पु०) निम्ब वृक्ष, पुराने पत्ते।
चील दे० (पु०) एक पखेरू का नाम।—झपट्टा मारना (वा०) बलात्कार से छीन लेना, झपट लेना।
चीलर दे० (पु०) ढीलजूंई, जूं, चीलड़।
चीवर तद्० (पु०) संन्यासी का वस्त्र, कौपीन।
चुआन दे० (स्त्री०) क्षरण, झरना, निकलना, जल निकलने की भूमि।
चुआना दे० (क्रि०) निकालना, टपकाना।
चुकती दे० (स्त्री०) निपटारा, समाप्ति, त्याग, फैसला।
चुकना दे० (स्त्री०) समाप्त होना, चुकता होना, अल्प होना, घटना, न्यून होना।
चुकाई दे० (स्त्री०) चुकौती, चूकती, चूकौता।
चुकाना दे० (क्रि०) निपटाना, मोल ठहराना।
चुकौता दे० (पु०) निपटारा, नियम।
चुक्कड़ दे० (पु०) कुल्हिया, पुरवा, भाड़, कुल्हड़।
चुक्काड़ दे० (पु०) छोटी कुल्हिया।
चुक्की दे० (स्त्री०) छल, धूर्ताई, धोखा, चाईपन।
चुक्ती दे० (स्त्री०) नियम, निरूपण, परिमित, परिणाम, समाधान, निष्पत्ति, फैसला।
चुक्र तद्० (पु०) चूक, खट्टा, अम्लरस, खट्टारस अम्लशाक।
चुगन दे० (स्त्री०) चुनन, बिनन, चुनत।
चुगना दे० (क्रि०) टूंगना, चुगना, बिनना।
चुङ्गी दे० (स्त्री०) बन्धन, अन्नदान, भिक्षा, एक प्रकार का सरकारी कर, जो दूसरी जगह से आने वाली नई वस्तुओं पर लगता है।—घर (पु०) जहां चुङ्गी वसूल की जाती है।
चुचकारना दे० (क्रि०) आश्वासन करना, ढाढ़स देना, चुमकारना।
चुचकारी दे० (स्त्री०) चुमकारी, फुसलाई।
चुचाना दे० (क्रि०) चूना, टपकना, टपटपाना, गिरना, बहना।
चुचुड़ दे० (पु०) बड़ी चूंची, मोटा स्तन।
चुञ्चु तद्० (पु०) मुनि विशेष।
चुञ्चुक तद्० (पु०) मेंड़, मेष।
चुटकी दे० (स्त्री०) नोंच, दो अङ्गुलियों के मिलाने से जो मुद्रा बनती है। मुट्ठी भर अन्न, चदर रँगने के लिये बांध, जिससे कपड़ा सफेद

रह जाता है। एक प्रकार का गोटा, जिसे चिलियां भी कहते हैं। एक प्रकार का चूरन, सीए हुए कपड़े को फैलाना, स्त्रियों के अंगूठे में पहिनने की अङ्गूठी। बधाई, चुटकी बजाना।—चढ़ाना (वा०) रुपया परखना। अङ्गुलियों से कपड़ा चीरना।—लगाना (वा०) जेब काटना।—लेना (वा०) दबाना, नोंचना, आशा करना, गलाना, गरम करना, उपहास करना, काम करना, दिक करना।—में (वा०) शीघ्र, बहुत शीघ्र।—बजाते में (वा०) अत्यन्त शीघ्र। —यों में उड़ाना (वा०) हँसी में उड़ा देना।—यों में काम होना (वा०) शीघ्र काम होना।

चुटकुला दे० (पु०) संक्षिप्त, ठठोली हँसौड़ी।

चुटला दे० (पु०) चुटिया, जूड़ा, चोटी।

चुटाना दे० (क्रि०) घाव करना, चुटैल करना, चोट करना, आक्रमण करना।

चुटिया दे० (पु०) चोटी, चोरों का भेद जानने वाला।

चुटियाना दे० (क्रि०) घाव करना, आक्रमण करना, चोटिल करना।

चुटीला दे० (पु०) घायल, आहत, क्षत विक्षत।

चुड़ीहरा दे० (पु०) चूड़ी बनाने और बेचने वाला, चुड़िहार।

चुड़ुवा दे० (पु०) चोकड़ा, चर्वण, चोटा।

चुड़ैल दे० (स्त्री०) प्रेतिनी, डाकिनी, फूहड़।

चुनचुनी दे० (स्त्री०) खुजलाहट, कण्डू, कृमि, खर्जू।

चुनत दे० (स्त्री०) चुनन, तह, परत, तल।

चुनरी दे० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का रङ्गीन वस्त्र।

चुनाना दे० (क्रि०) टूंगाना, बिनवाना ईंटे चुड़वाना, ईंटें चुनवा कर दबा देना, गाड़ देना, तोपना।

चुनावट दे० (स्त्री०) चुनत, तह, परत।

चुनौटी दे० (स्त्री०) चूना रखने का पात्र, चूनादानी।

चुनौती दे० (स्त्री०) साहस, आश्वास, सेना का हर्ष, हुलास।

चुन्धला दे० (पु०) तिरमिरा, चकचौंधा, नेत्ररोगी।

चुन्धलाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, तिरमिरा होना।

चुन्धा दे० (पु०) नेत्र रोग विशेष।

चुन्ना दे० (क्रि०) चुगना, चुगलेना, चुनना, बिनना।

चुन्नी दे० (स्त्री०) छोटी पद्मराग मणि, लकड़ी के छोटे छोटे टुकड़े।

चुप दे० (पु०) निःशब्द, नीरव, मौन, अनबोल, गोवम, अवाक्।

चुपचाप दे० (पु०) निःशब्द, गुप्त, शब्द-रहित।

चुपड़ना दे० (क्रि०) चिकनाना, मलना, मसलना।

चुपाचुप दे० चुप होकर, गुप्तरूप से, अकस्मात्, सहसा।

चुप्पी दे० (स्त्री०) मौनता, निःशब्दता, शब्दहीनता।

चुभकी दे० (स्त्री०) डुबकी, बुड़की, गोता, अवगाहन।

चुभना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, बिधना, छिदना।

चुभाना दे० (क्रि०) घुसेड़ना, पैठालना, छेदना, बेंधना।

चुमा तद्० (पु०) चुम्बा, मच्छी, मिट्ठी, ओठ से ओठ छूना।

चुमाना तद्० (क्रि०) चूमा दिलवाना, विवाह की एक रीति।

चुमकार दे० (पु०) चुचकार शब्द, फुसलाना, आश्वासन देकर वश में करना।

चुमकारना दे० (क्रि०) टिटकारना, फुसलाना, उत्तेजन करना।

चुम्बक तत्० (पु०) एक प्रकार का लोहा, पत्थर विशेष, लोहा खींचने वाली एक धातु।

चुम्बन तत्० (पु०) मुखसंयोग, चुम्बा, चूमा।

चुम्बित तत्० (पु०) कृत चुम्बन, चुम्बा लिया हुआ।

चुरकी दे० (स्त्री०) चिकुर, शिखा, चोटी।

चुरकुट दे० (पु०) फटा कपड़ा, चूरचार, चूरन, बुकनी।

चुरगाना दे० (क्रि०) बकना, चिल्लाना, चेंचें करना।
चुरमुरा दे० (गु०) चुर चुर करने वाला, चर्वण विशेष।
चुराना दे० (क्रि०) चोरी करना, अपहरण करना, हरना।
चुरी दे० (स्त्री०) चूड़ी, काच की कगनी।
चुरुगाना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, बकना।
चुर्त दे० (स्त्री०) तन्द्रा, आलस, ऊंघ, जंभाई।
चुल दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, खाज, कण्डू।
चुलकना दे० (क्रि०) चिलचिलाना, चुलचुल करना, खुजाना।
चुलचुल दे० (पु०) चञ्चलता, चपलता।
चुलचुलाना दे० (क्रि०) गुदगुदाना, कुलबुलाना, खुजलाना, चुलबुल करना।
चुलबुला दे० (गु०) चञ्चल, चतुर, चपल, देश-कालज्ञ।
चुलबुलाहट दे० (स्त्री०) चञ्चलता, छटपटिया।
चुलबुलिया दे० (गु०) चुलबुला, चञ्चल।
चुलहाई दे० (गु०) कामातुर, कामी, लम्पट, व्यभिचारी।
चुलहारा दे० (गु०) कामुक, कामातुर।
चुलाना दे० (क्रि०) टपकाना, गिराना।
चुल्ला दे० (गु०) चुन्धला, चुन्धा, तिरमिरा।
चुल्लू दे० (पु०) पसर, पसरभर, एक हाथ का सम्पुटाकार।
चुसकी दे० (स्त्री०) मुँह भर, मुँह भर पानी।
चुसक्कड़ दे० (गु०) पियक्कड़, खूब पीने वाला, अधिक चूसनेवाला।
चुस्सी दे० (स्त्री०) किसी फल का रस।
चुहचुहा दे० (गु०) शोभायमान, मनोहर, गहरा रङ्गा गया।
चुहचुहाना दे० (क्रि०) अधिक रङ्ग, पक्षियों का चुह चुह करना।
चुहल दे० (स्त्री०) चर्चा, चहल पहल, ठट्ठा, आनन्द मे उन्मत्तता।
चुहला दे० (गु०) मसखरा, ठठोला, हँसोड़।
चुहली दे० (गु०) देखो चुहला।
चूचहाट दे० (स्त्री०) चिड़ियों का शब्द।
चूची दे० (स्त्री०) कुच, स्तन, थन, भिटनी, पयोधर।
चूटा दे० (पु०) चींटा, कीड़ा विशेष जो ज़मीन में रहता है।
चूंठना दे० (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना, फोड़ना, चकोटना।
चूआना दे० (क्रि०) चुलाना, चुआना, निकालना, झारना।
चूक दे० (स्त्री०) भूल, भ्रम, अज्ञात, अपराध, खट्टा।
चूकना दे० (क्रि०) भूल जाना, भ्रम करना, भग्न भ्रष्ट होना।
चूका दे० (गु०) भूला, भ्रान्त, लक्ष्य भ्रष्ट। (पु०) इस नाम का एक खट्टा शाक।
चूड़ तद्० (पु०) आभरण विशेष, सोना या चांदी की चूड़ जिसे विधवा पहनती हैं। हाथी के दांतों में पहिनाने की चूड़ी, खाट की पाटी का सिरा या नोक।
चूडा तत्० (स्त्री०) मयूर शिखा, सिर के बीच की शिखा, बाहु भूषण, मस्तक, मस्तकस्थ, वन्याकेश। दशविध संस्कारान्तर्गत संस्कार विशेष, मुण्डन। यह संस्कार विषम वर्ष ही में होता है। यथा प्रथम तृतीय और पञ्चम।—करण (पु०) संस्कार विशेष, मुण्डन।—मणि (पु०) शिरोरत्न, शिरोभूषण, अलङ्कार विशेष। (गु०) प्रधान, श्रेष्ठ, मान्य। —मणियोग (पु०) जब रविवार को सूर्यग्रहण अथवा सोमवार को सूर्यग्रहण हो, तब यह योग लगता है।
चूड़ी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, इस अलङ्कार का पहनना सधवा का चिन्ह है।
चूतड़ दे० (पु०) नितम्ब, जंघा का ऊपरी भाग, पुट्ठा।
चूतिया दे० (पु०) उल्लू, उजबक, नासमझ।

चून दे० (पु०) गेहूं का चूरन, आटा, पिसान, पीसी वस्तु ।

चूना दे० (पु०) चूर्ण जो कङ्कड़ पत्थर या सीप को जला कर बनाते हैं, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है। (क्रि०) टपकना, झरना गिरना।—लगाना (वा०) निन्दा करना, लाञ्छन लगाना, अपवाद करना, दुष्कीर्ति करना ।

चूनी दे० (स्त्री०) अन्न की खुद्दी, केराई, चावल आदि की कणिका ।

चूभ दे० (पु०) टीस, व्यथा, चमक, वेदना, दर्द, पीड़ा ।

चूमना तद्० (क्रि०) चूमा लेना, मिट्टी लेना, प्रेम करना ।

चूमा तद्० (पु०) चुम्बन, चुम्मा, मिट्ठी, मच्छी ।

चूर तद्० (पु०) चूर्ण, बुकनी, भुरभुरा, खण्ड खण्ड किया हुआ—चूर (वा०) टूक टूक, खण्ड खण्ड। —रहना (वा०) मस्त रहना, मग्न रहना, डूबे रहना, अतिशय आसक्त होना ।—करना (वा०) टुकड़े टुकड़े करना, दबाना ।—होना (वा०) फसना, आसक्त होना ।

चूरण तद्० (पु०) चूर, चूर्ण, पाचक, पाचक की ओषधि ।

चूरा दे० (पु०) रेत, भुरभुरा, चूर, रेतन, बुरादा ।

चूरी दे० (स्त्री०) घी चुपड़ी हुई रोटी, चूड़ी, स्त्रियों का गहना विशेष ।

चूर्ण तत्० (पु०) चूर, बुकनी, रेणु, धूलि, रेत, चूना, आटा पिसान, चूरन, सक्तु, सत्तुआ ।—कार (पु०) चूना बनाने वाला, वर्णसङ्कर जाति विशेष । —कुन्तल (पु०) अलक, घुंघर, केश विन्यास विशेष ।

चूर्णी तद्० (पु०) बुकनी, रेणु, धूली, चूरन करना, बुकनी बनाना, बुकना ।

चूर्णिका तत्० (स्त्री०) पशु, सतुआ, चूरन, एक छन्द का नाम, संक्षेप, श्री मद्भागवत की एक टीका का नाम, फुटकल बातें, पुस्तिका कूट ।

चूर्मा दे० (पु०) मिठाई विशेष, घी चीनी मिलाया हुआ आटे का चूरा । चूर्मा लड्डू ।

चूल दे० (पु०) लकड़ी का जोड़ना, कील, लोहे का एक कीला जो किवाड़ को चौखट से सटाये रहता है ।

चूल्हा दे० (पु०) मिट्टी की बनी वह वस्तु जिसमें आग रखकर रसोई बनाते हैं ।

चूल्ही दे० (स्त्री०) छोटा चूल्हा ।

चूवना दे० (क्रि०) चूअना, झरना, टपकना, झड़ना ।

चूसना दे० (क्रि०) पीलेना, खींचलेना, चूसलेना ।

चूसनी दे० (स्त्री०) छनना, छानने का कपड़ा ।

चूहड़ दे० (पु०) छिपकर लक्ष्यवेध करना, ओट से शिकार करना ।

चूहड़ा दे० (पु०) मेहतर, भंगी, अधम जाति, (स्त्री०) चूहड़ी भङ्गिन ।

चूहना दे० (क्रि०) चूसना, चूसलेना, चचोड़ना ।

चूहा दे० (पु०) मूषिक, मूसा, इन्दुर ।—चूही छोटा मूस, मुषिका, मूसे की स्त्री ।

चेंचपेंच दे० (वा०) कचकच, चिचपिच, शोरगुल ।

चेंची दे० (स्त्री०) रूई रखने का घर ।

चेंचें दे० (वा०) बुदबुदाना, चेंचें करना, चूँ चाँ, पक्षियों का शब्द ।

चेंचपड़ दे० (वा०) नाकरनुकर, स्पष्ट नहीं कहना, चिचपिचाना, धोखा देना, दोलायित चित्त । 'क्या चेंचपड़ करने से क्या लाभ", "सच्ची बात कह दो, अभी तो यह चेंचपड़ कर रहा है ।" "उसका चेंचपड़ अब न चलेगा ।"

चेंडा दे० (पु०) यौवन, युवा अवस्था, छोटा, जवान, युवा ।

चेंप दे० (पु०) गोंद, लासा, चिप, चिपकने वाली वस्तु, लसलसा वृक्ष का फल ।

चेट तत्० (पु०) क्रीतदास, दास, भृत्य, कर्मकर, नौकर, सेवक, चेला, लौंडा, मकर, नाटकों में मसखरे को चेट कहते हैं ।

चेटक तत्० (पु०) दास, भृत्य, उपपति, नायक विशेष, इन्द्रजाल विद्या, ठगने की विद्या ।

चेड़ा तद्० (पु०) दास, भृत्य, चेला ।

चेत तत्० (पु०) चित्त, अन्तःकरण, मन, बुद्धि, स्मरण, सुध, सुधि ।

चुरगाना दे० (क्रि०) बकना, चिल्लाना, चेंचें करना।

चुरमुरा दे० (गु०) चुर चुर करने वाला, चर्वण विशेष।

चुराना दे० (क्रि०) चोरी करना, अपहरण करना, हरना।

चुरी दे० (स्त्री०) चूड़ी, काच की कंगनी।

चुरगना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, बकना।

चुर्त दे० (स्त्री०) तन्द्रा, आलस, ऊंघ, ऊंचाई।

चुल दे० (स्त्री०) खुजलाहट, खुजली, खाज, कण्डू।

चुलकना दे० (क्रि०) बिलबिलाना, चुलचुल करना, खुजाना।

चुलचुल दे० (पु०) चञ्चलता, चपलता।

चुलचुलाना दे० (क्रि०) गुदगुदाना, कुलबुलाना, खुजलाना, चुलचुल करना।

चुलबुला दे० (गु०) चञ्चल, चतुर, चपल, देश-कालज्ञ।

चुलबुलाहट दे० (स्त्री०) चञ्चलता, छटपटिया।

चुलबुलिया दे० (गु०) चुलबुला, चञ्चल।

चुलहाई दे० (गु०) कामातुर, कामी, लम्पट, व्यभिचारी।

चुलहारा दे० (गु०) कामुक, कामातुर।

चुलाना दे० (क्रि०) टपकाना, गिराना।

चुल्ला दे० (गु०) चुन्धला, चुन्धा, तिरमिरा।

चुल्लू दे० (पु०) पसर, पसरभर, एक हाथ का सम्पुटाकार।

चुसकी दे० (स्त्री०) मुँह भर, मुँह भर पानी।

चुसक्कड़ दे० (गु०) पियक्कड़, खूब पीने वाला, अधिक चूसनेवाला।

चुस्सी दे० (स्त्री०) किसी फल का रस।

चुहचुहा दे० (गु०) शोभायमान, मनोहर, गहरा रङ्गा गया।

चुहचुहाना दे० (क्रि०) अधिक रङ्ग, पक्षियों का चुह चुह करना।

चुहल दे० (स्त्री०) चर्चा, चहल पहल, ठट्ठा, आनन्द मे उन्मत्तता।

चुहला दे० (गु०) मसखरा, ठठोला, हँसोड़।

चुहली दे० (गु०) देखो चुहला।

चूंचहाट दे० (स्त्री०) चिड़ियों का शब्द।

चूंची दे० (स्त्री०) कुच, स्तन, थन, भिटनी, पयोधर।

चूटा दे० (पु०) चाटा, कोड़ा विशेष जो ज़मीन में रहता है।

चूंठना दे० (क्रि०) तोड़ना, नष्ट करना, फोड़ना, बकोटना।

चूआना दे० (क्रि०) चुलाना, चुआना, निकालना, झारना।

चूक दे० (स्त्री०) भूल, भ्रम, अज्ञान, अपराध, खट्टा।

चूकना दे० (क्रि०) भूल जाना, भ्रम करना, भ्रष्ट होना।

चूका दे० (गु०) भूला, भ्रान्त, लक्ष्य भ्रष्ट। (पु०) इस नाम का एक खट्टा शाक।

चूड़ तद्० (पु०) आभरण विशेष, सोना या चांदी की चूड़ जिसे विधवा पहनती हैं। हाथी के दांतों में पहिनाने की चूड़ी, खाट की पाटी का सिरा या नोक।

चूड़ा तत्० (स्त्री०) मयूर शिखा, सिर के बीच की शिखा, बाहु भूषण, मस्तक, मस्तकस्थ, बन्धकेश। दशविध संस्कारान्तर्गत संस्कार विशेष, मुण्डन। यह संस्कार विषम वर्ष ही में होता है। यथा प्रथम तृतीय और पञ्चम।—करण (पु०) संस्कार विशेष, मुण्डन।—मणि (पु०) शिरोरत्न, शिरोभूषण, अलङ्कार विशेष। (गु०) प्रधान, श्रेष्ठ, मान्य। —मणियोग (पु०) जब रविवार को सूर्यग्रहण, अथवा सोमवार को सूर्यग्रहण हो, तब यह योग लगता है।

चूड़ी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, इस अलङ्कार का पहनना सधवा का चिन्ह है।

चूतड़ दे० (पु०) नितम्ब, जंघा का ऊपरी भाग, पुट्ठा।

चूतिया दे० (पु०) उल्लू, उजबक, नासमझ।

चून दे० (पु०) गेहूं का चूरन, आटा, पिसान, पीसी वस्तु।

चूना दे० (पु०) चूर्ण जो कड्डड़ पत्थर या सीप को जला कर बनाते हैं, जो मकान बनाने या पोतने के काम में आता है। (क्रि०) टपकना, झरना गिरना।—लगाना (वा०) निन्दा करना, लाञ्छन लगाना, अपवाद करना, दुष्कीर्ति करना।

चूनी दे० (स्त्री०) अन्न की छुद्दी, केराई, चावल आदि की कणिका।

चूम दे० (पु०) टीस, व्यथा, चमक, वेदना, दर्द, पीड़ा।

चूमना तद्० (क्रि०) चूमा लेना, मिट्ठी लेना, प्रेम करना।

चूमा तद्० (पु०) चुम्बन, चुम्मा, मिट्ठी, मच्छी।

चूर तद्० (पु०) चूर्ण, बुकनी, भुरभुरा, खण्ड खण्ड किया हुआ—चूर (वा०) टूक टूक, खण्ड खण्ड। —रहना (वा०) मस्त रहना, मग्न रहना, डूबे रहना, अतिशय आसक्त होना।—करना (वा०) टुकड़े टुकड़े करना, दबाना।—होना (वा०) फसना, आसक्त होना।

चूरण तद्० (पु०) चूर, चूर्ण, पाचक, पाचक की औषधि।

चूरा दे० (पु०) रेत, भुरभुरा, चूर, रेतन, बुरादा।

चूरी दे० (स्त्री०) घी चुपड़ी हुई रोटी, चूड़ी, स्त्रियों का गहना विशेष।

चूर्ण तद्० (पु०) चूर, बुकनी, रेणु, धूलि, रेत, चूना, आटा पिसान, चूरन, सत्तु, सतुआ।—कार (पु०) चूना बनाने वाला, वर्णसङ्कर जाति विशेष। —कुन्तल (पु०) अलक, जुल्फ, केश विन्यास विशेष।

चूर्णा तद्० (पु०) बुकनी, रेणु, धूली, चूरन करना, बुकनी बनाना, बुकना।

चूर्णिका तद्० (स्त्री०) सत्तु, सतुआ, चूरन, एक छन्द का नाम, संक्षेप, श्री मद्भागवत की एक टीका का नाम, फुटकल बातें, पुष्ठिका कूट।

चूर्मा दे० (पु०) मिठाई विशेष, घी चीनी मिलाया हुआ आटी का चूरा। चूर्मा लड्डू।

चूल दे० (पु०) लकड़ी का जोड़ना, कील, लोहे का एक कीला जो किवाड़ को चौखट से सटाये रहता है।

चूल्हा दे० (पु०) मिट्टी की बनी वह वस्तु जिसमें आग रखकर रसोई बनाते हैं।

चूल्ही दे० (स्त्री०) छोटा चूल्हा।

चूवना दे० (क्रि०) चूअना, झरना, टपकना, झड़ना।

चूसना दे० (क्रि०) पीलेना, खींचलेना, चूसलेना।

चूसनी दे० (स्त्री०) छनना, छानने का कपड़ा।

चूहड़ दे० (पु०) छिपकर लक्ष्यवेध करना, ओट से शिकार करना।

चूहड़ा दे० (पु०) मेहतर, भंगी, अधम जाति, (स्त्री०) चूहड़ी भङ्गिन।

चूहना दे० (क्रि०) चूसना, चूसलेना, चचोड़ना।

चूहा दे० (पु०) मूषिक, मूसा, इन्दुर।—चूही छोटा मूस, मूषिका, मूसे की स्त्री।

चेंचपेंच दे० (वा०) कचवच, चिचपिच, शोरगुल।

चेंची दे० (स्त्री०) सूई रखने का घर।

चेंचें दे० (वा०) बुदबुदाना, चेंचें करना, चूँचा, पक्षियों का शब्द।

चेंचपड़ दे० (वा०) नाकारकुकर, स्पष्ट नहीं कहना, चिचपिचाना, धोखा देना, दोलायित चित्त। "क्या चेंचपड़ करने से क्या लाभ", "सभी बात कह दो, अभी तो वह चेंचपड़ कर रहा है।" "उसका चेंचपड़ एक न चलेगा।"

चेंडा दे० (पु०) यौवन, युवा अवस्था, छोटा, जवान, युवा।

चेंप दे० (पु०) गोंद, लासा, चिप, चिपकने वाली वस्तु, लसलसा वृक्ष का फल।

चेट तत्० (पु०) क्रीतदास, दास, भृत्य, कर्मकर, नौकर, सेवक, चेला, लौंडा, नफर, नाटकों में मसखरे को चेट कहते हैं।

चेटक तत्० (पु०) दास, भृत्य, उपपति, नायक विशेष, इन्द्रजाल विद्या, ठगने की विद्या।

चेड़ा तद्० (पु०) दास, भृत्य, चेला।

चेत तत्० (पु०) चित्त, अन्तःकरण, मन, बुद्धि, स्मरण, सुध, सुधि।

से और भी उद्धृत श्लोक पाये जाते हैं, इसीसे विद्वानों का अनुमान है कि इन्होंने और भी कोई ग्रन्थ बनाये होंगे। चौरपञ्चाशिका निर्माण का हेतु बड़ा ही अद्भुत सुना जाता है। गुजरात के राजा वीरसिंह की पुत्री शशिकला को यह पढ़ाते थे, उसकी सुन्दरता पर यह मोहित हो गये। इनका गान्धर्व विवाह भी हो गया। इसको सुन कर राजा ने इनको वध करने की आज्ञा दी। वध्य स्थान तक पहुँचते पहुँचते, अपनी प्रेमिका के वर्णन में इन्होंने पचास श्लोक बना डाले। इनकी काव्य रचना का हाल सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। इस अद्भुत शक्ति और शुद्ध प्रेम को देख कर राजा ने अपनी लड़की विल्हण को ब्याह दी। ये कल्याण के राजा विक्रमादित्य की सभा के पण्डित थे। इनका समय ११ वीं सदी का अन्तिम और बारहवीं सदी का आदिम काल निश्चित जान पड़ता है।

चोरी तद्० (स्त्री०) चोर की स्त्री, चोरी करने वाली स्त्री, अपहरण, हरना, चोरी करना।

चोल तद्० (पु०) औषध विशेष, मजीठ, एक देश का नाम, यह देश कावेरी नदी के किनारे पर है। इस समय मैसूर राज्य का दक्षिण भाग। चोल देश को कर्नाटक भी कहते हैं।

चोला दे० (पु०) अङ्गा, अँगरखा, वस्त्र विशेष, काय, शरीर, यथा—यमुनादास ने चोला बदल दिया, अर्थात् उनका शरीरान्त हो गया, अथवा उन्होंने कपड़े बदल दिये।

चोली दे० (स्त्री०) अँगिया, कुरता, झूला।

चोवा दे० (पु०) चोआ, अर्गजा, सुगन्धित द्रव्य विशेष।

चोषण तद्० (पु०) [चुष् + अनट्] चूसना, चाभना, रस का स्वाद लेना।

चोष्य तद्० (पु०) [चुष्+य] चूसने योग्य, चाभने योग्य, रस लेने योग्य, छः प्रकार के भोजन के अन्तर्गत एक प्रकार का भोजन।

चोहड दे० (पु०) जबड़ा, हनु, ठोढ़ी, गले का ऊपरी भाग।

चोहला दे० (पु०) खोंचा, चोभा, कोंचा, कील।

चोहाड दे० (पु०) एक पहाड़ में रहने वाली जाति।

चौ दे० (पु०) चार संख्या, ४, पिछले दांत, चहू, हल का फाल।

चौअन्नी दे० (स्त्री०) चोअन्नी, चार आना, ।) मुकी, रुपये का चौथाई भाग।

चौंक दे० (स्त्री०) झिझक, भटक, आपड़ना, एक एकाएक जानना, अचम्भा।

चौंकना दे० (क्रि०) झिझकना, ठिठकना, अचम्भा करना, अचरज करना, आश्चर्यित होना।

चौंकेल दे० (गु०) झिझकने वाला, भड़कने वाला, बनैला, जङ्गली।

चौंगा दे० (पु०) कपट, छल, ब्याज, फुसलाहट।

चौंगी दे० (स्त्री०) फुसलाहट, छल, कपट।

चौंड़ दे० (पु०) मूढ़, निर्बोध, नासमझ, बेसमझ।

चौंतरा दे० (पु०) चबूतरा, ओटा, थाना, अथाई, चौपाड़।

चौंतीस दे० (गु०) संख्या विशेष, चार अधिक तीस, ३४।

चौंध दे० (पु०) आंख, तिरमिराना, साफ साफ नहीं दीखना।

चौंधियाना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना, उद्विग्न होना।

चौंरा दे० (पु०) अन्न का तलघर, खाद, अन्न रखने के लिये ज़मीन में किया हुआ गड्ढा।

चौंरी दे० (स्त्री०) चवरी, छोटा चँवर, चामर, राजचिन्ह विशेष।

चौंसर दे० (पु०) खेल विशेष, चौपड़, यह खेल पासों से खेला जाता है, सुर का एक भेद, फूलों की माला।

चौक दे० (पु०) बाज़ार, हाट, पैठ, चौराहा, आंगन, अँगना, चौहट्टा, गुदड़ी।

चौकड दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, उत्तम, रमणीय, श्रेष्ठ, भला, बली, बलवान्, हृष्ट पुष्ट।

चौकडा दे० (पु०) भूषण विशेष, दो मोतियों का बाला, जिसे लड़के कानों में पहनते हैं। कर्णभूषण।

चौकड़ी दे० (स्त्री०) उछल कूद, फलांग, उछाल। —भरना (वा०) कूद कूद कर चलना, जैसे हरिण चलते हैं। उछलना, कूदना।—भूलना (वा०) अपना काम भूलना, मोह में पड़ जाना, किसी काम से हाथ खींच लेना, कर्तव्यच्युत होना, छिन्नित हो जाना। मार बैठना (वा०) चारों पैर मोड़ कर बैठना, पशुओं का सुखासन, सङ्कुचित हो कर बैठना, सिमिट कर बैठना।

चौकन्ना दे० (गु०) सतर्क, सावधान, चौकस, सचेत, निपुण, जाग्रत, जागा हुआ, सचेष्ट, उद्योगी।

चौकपूरना दे० (वा०) वेदी बनाना, कुल परम्परा के व्यवहारानुसार वेदी पर बेल बूटे बनाना।

चौकभरना दे० (वा०) विवाह आदि मङ्गल कार्यों में चौक बनाना, चौक को मिठाई से भरना।

चौकस दे० (गु०) सावधान, चौकन्ना, सतर्क, लगा रहना। यथा "दोनोँ अपने काम में चौकस हैं"।

चौकसाई दे० (स्त्री०) सावधानी, सतर्कता।

चौकसी दे० (स्त्री०) धुन, रक्षा, कर्तव्यज्ञान।

चौका दे० (पु०) लीपा हुआ स्थान जहां रसोई बनायी जाती है, चौखूंटा स्थान, चौकोनी भूमि, रसोई बनाने या ब्राह्मणों के सन्ध्या करने का स्थान।

चौकी दे० (स्त्री०) चौकोनी काठ की बनी हुई वस्तु, रक्षा, पहरा, चौकसी, चौकीदारों के रहने का स्थान, भूषण विशेष जिसे लड़के या स्त्रियां गले में पहनते हैं।—दार (पु०) चौकी देने वाला, रक्षा करने वाला, पहरुआ।—दारी (स्त्री०) चौकीदारी की मजूरी, चौकीदार की तनख़ाह। —देना (क्रि०) रखवारी करना, रक्षा करना, पहरा देना।—मारना (क्रि०) छिपकर महसूली को न चुकाना, महसूल मारना।

चौकोना दे० (गु०) चतुष्कोण, चौखूंटा, चार कोने का।

चौकोर दे० (गु०) चौकोना।

चौखट दे० (पु०) द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढांचा।

चौखूटा दे० (गु०) चौकोना, चौकोरा, चारकोना, चतुष्कोण।

चौगड़ा दे० (पु०) खरहा, शशक, खरगोश, शश।

चौगान दे० (पु०) बगीचा, उद्यान, जनहीन स्थान, निर्जन भूमि, एक खेल विशेष, गेंद खेलने का स्थान।

चौगानी दे० (स्त्री०) हुक्के की नली जो सीधी होती है।

चौगुना, चारगुना दे० (गु०) एक को चार बार करना, चतुर्गुण।

चौघड़ा दे० (पु०) पात्र विशेष, जिसमें चार घर या चार खूंट हों।

चोड़ दे० (गु०) नष्ट, सड़ा, बिगड़ा हुआ, उतरा हुआ।—चपेट (गु०) निकाला हुआ, दुष्ट, त्यक्त, सब समाज बहिष्कृत।

चौड़ा दे० (गु०) विस्तार, फैलाव, लम्बाई, चौड़ाई, प्रस्थ, चकला।

चौड़ाई दे० (स्त्री०) पाट, चकलाई, फैलाव, विस्तार, विस्तृति।

चौड़ान दे० (पु०) विस्तार, फैलाव।

चौड़ाना दे० (क्रि०) चकलाना, फैलाना, विस्तृत करना, चौड़ा करना।

चौडोल दे० (पु०) पालकी विशेष, चौपलिया पालकी।

चौतनी दे० (स्त्री०) चौखूटी टोपी।

चौतरफा दे० (पु०) पट मण्डप, वस्त्र गृह, तम्बू, पाल, रावटी।

चौतरा दे० (पु०) चौंतरा, चबूतरा।

चौतारा दे० (पु०) बाद्य विशेष, चार तार का बाजा, यह तम्बूरे के समान होता है।

चौताल दे० (पु०) रागिनी विशेष।

चौथ दे० (पु०) चतुर्थांश, चौथा हिस्सा, ख़िराज, एक प्रकार का कर जो मराठों के ज़माने में लिया जाता था।

चौथा दे० (गु०) चतुर्थ, चार संख्या की पूर्ति, चौठा।—पन (पु०) चौथी अवस्था, बुढ़ाई।

चौथाई दे० (स्त्री०) चौथा हिस्सा, चौथा भाग।

चौथि दे० (स्त्री०) चतुर्थी तिथि।

चौथिया दे० (पु०) चौथे भाग का मालिक, चौथ लेने वाला।—ज्वर (पु०) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चातुर्थीक ज्वर।

चौथी दे० (गु०) चौथा भाग, चतुर्थी तिथि।

चौदन्त दे० (गु०) चार दांत का बच्चा, पशुओं की अवस्था विशेष, बली, हृष्ट, पुष्ट।

चौदन्ती दे० (स्त्री०) शूरता, वीरता, दक्षता, निपुणता।

चौदस तद्० (स्त्री०) चतुर्दशी, चौदहवीं तिथि।

चौदह दे० (गु०) चतुर्दश, संख्या विशेष, १४।

चौदानिया, चौदानी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण विशेष, जिसमें चार मोती लगाये जाते हैं।

चौधर दे० (गु०) बलवान्, बली, मोटा ताज़ा, हृष्ट पुष्ट।

चौधराई दे० (स्त्री०) चौधरी का काम, प्रधानता, मेठी, मेठपन, मुखियापन, अगुआपन, नेतृत्व।

चौधरी दे० (पु०) समाज का अगुआ, नेता, प्रधान, सरपञ्च, बाज़ार का मुखिया, अड्डे का मुखिया।

चौपट दे० (गु०) उजाड़, नष्ट, बरबाद, टूटा फूटा।—करना (वा०) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट करना, बिगाड़ना।

चौपड़ दे० (पु०) चौसर, खेल विशेष, पाँसों का खेल, द्यूत।

चौपतिया, चौपत्ती दे० (स्त्री०) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी कांपी, हथबही।

चौपहला दे० (गु०) चौपाला, चारो ओर से समान, वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो।

चौपाई दे० (स्त्री०) हिन्दी का एक छन्द, इसमें चार पाद होते हैं। यथा—"मङ्गलभवन, अमङ्गलहारी, द्रवहु सुदशरथ अजिरविहारी।"

—रामायण

चौपाड़ दे० (पु०) बैठक, बैठका, गृह विशेष।

चौपाया दे० (पु०) पशु जन्तु, चार पैर के जन्तु, खट्वा, खटिया।

चौपाला दे० (पु०) पालकी, चौडोला, यान विशेष।

चौबच्चा दे० (पु०) चोकोना गड़ा, कुण्ड, कृत्रिम कुण्ड।

चौबारा दे० (पु०) उसारा, दावा।

चौबीस दे० (गु०) चार अधिक बीस, चार और बीस, २४।

चौबे दे० (पु०) चतुर्वेदी, चतुर्वेदज्ञाता, ब्राह्मणों की एक अल्ल, माथुर ब्राह्मण।

चौमासा दे० (पु०) पावस, वर्षाऋतु, चतुर्मास, आषाढ से कुआर तक के चार महीने।

चौमुख दे० (गु०) चार मुंह वाला, चौमुहा, चार बत्तियों का दिया, वह मकान जिसमें चारो ओर द्वार हों।

चौमुखी दे० (स्त्री०) रुद्राक्ष का फल, देवी, चार मुख वाली दुर्गा।

चौर तत्० (पु०) चोर, चोरी करने वाला।—कर्म (पु०) चोर का काम, चोरी करना, अपहरण करना।—भय (पु०) चोर का भय, चोर से डर।

चौरङ्ग दे० (पु०) चित्त, उतान, चार अङ्ग, दाँव पेच।

चौरस दे० (गु०) समान, तुल्य, समभूमि, बराबर, एकता, एक सूध, एक सूत में, सीधा।

चौरसाई दे० (स्त्री०) समता, बराबरी, तुल्यता, सीधाई।

चौरा दे० (पु०) चबूतरा, सती की चिता, वीरों की चिता, ग्राम, देवता का स्थान।

चौरानवे दे० (गु०) नब्बे और चार, चार अधिक नब्बे, ९४।

चौरासी दे० (गु०) अस्सी चार ८४, चार अधिक अस्सी।

चौराहा दे० (पु०) चारो ओर जाने का मार्ग, चौक, चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहट्टा।

चौरी दे० (स्त्री०) चार बार धोई हुई लाख, चौपाड़, चौवार, छोटा चँवर।

चौलड़ा दे० (गु०) चार लर वाला, चार लर की माला।

चौला दे० (पु०) अन्न विशेष, बोड़ा, बोरो।

चौलाई दे० (स्त्री०) शाक विशेष, चौराई का शाक।

चौवर दे० (गु०) बलवान, साहसी, उद्योगी, उत्साही।

चौवा दे० (पु०) पशु, चारपाया, चौपाया।

चौवाई दे० (स्त्री०) आन्धी, झक्कड़, अन्ध, चारो तरफ से चलने वाली हवा।

चौवार दे० (पु०) सर्वसाधारण का वह स्थान जहां किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे होते हैं। पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक।

चौसा दे० (पु०) आटा, मैदा, पिसान।

चौसर दे० (पु०) चौसर, चौपड़, खेल विशेष।

चौसठ दे० (गु०) चार और साठ, ६४, चार अधिक साठ।

चौहट दे० (पु०) चौराहा, चौमुखा पथ।

चौहट्टा दे० (पु०) चौराहा बाज़ार, चौक बाज़ार।

चौहत्तर दे० (गु०) सत्तर और चार, ७४, चार अधिक सत्तर।

चौहान दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति, किसी समय ये भारत के सम्राट थे, इनका पहला चतुर्बाहु और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे।

च्यवन तत्० (पु०) प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि, पुलोमा के गर्भ और भृगु के औरस से इनका जन्म हुआ था। गर्भवती पुलोमा को कोई राक्षस बलात्कार पूर्वक हर कर लिये जाता था, इस अत्याचार से पीड़ित गर्भ गिर पड़ा। अतएव उसका नाम च्यवन पड़ा क्योंकि संस्कृत च्यु धातु का अर्थ गिरना है। च्यवन एक दिन देवसभा में बैठे थे, कथोपकथन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज कुशिक के वंश से हमारा वंश संयुक्त हुआ है। इससे कुशिकराज को नष्ट करने की वे चेष्टा करने लगे। परन्तु महाराज की असीम योग्यता और सहनशीलता देख इनको अपने विचार बदलने पड़े। च्यवन के पौत्र ऋचीक से कुशिक की पौत्री ब्याही गयी थी।

किसी सरोवर के तीर पर च्यवन तपस्या कर रहे थे, उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था, केवल दो आँखें दीखती थीं। शर्याति की पुत्री सुकन्या को बड़ा कुतूहल हुआ। उसने उनकी आँखें फोड़ डालीं। च्यवन के क्रोध से शर्याति की सेना का मलमूत्र बन्द होगया। बहुत अनुसन्धान करने पर इसका कारण मालूम हुआ। शर्याति की प्रार्थना से मुनि प्रसन्न हुए, राजा ने सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया। यह सुकन्या प्रसिद्ध पतिव्रताओं में से हैं।

च्युत तत्० (गु०) पतित, पड़ा, भ्रष्ट, गिरा, नष्ट।

च्युति तत्० (स्त्री०) पतन, स्खलन, गिरन, हानि, खिन्नता।

छ

छ व्यञ्जन का सातवां वर्ण, इसका स्थान तालु है, अर्थात् तालु के द्वारा इसका उच्चारण होता है। अतएव इसे तालव्य कहते हैं।

छ तत्० (पु०) छेदन, काटना, (गु०) निर्मल तरल, (दे०) छः, संख्या विशेष, षट्, ६।

छई तद्० (स्त्री०) क्षयी, रोगविशेष, राजरोग, नाव का छप्पर, गद्दी।

छकड़ा दे० (पु०) गाड़ी, बैलगाड़ी, शकट, लद्दू, लद्दू।

छकड़ाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, घबड़ाना, चकराना।

छकना दे० (क्रि०) अघाना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, सशङ्कित होना।

छकाई दे० (स्त्री०) अघाई, तृप्ति, सन्तुष्टता।

छकाना दे० (क्रि०) सन्तुष्ट करना, खिलाना, तृप्त करना, अघवाना, निरुत्तर करना, अचम्भित करना, शङ्कित करना।

छकड़ दे० (पु०) धौल, थप्पड़, पेटू, खाने वाला।

छक्का दे० (पु०) छःका समूह, वह समूह जिसमें छःहों। एक प्रकार का पिंजड़ा जिसमें जाली लगी रहती है। जुए का एक दाव।—पंजा

चौथिया दे० (पु०) चौथे भाग का मालिक, चौथ लेने वाला।—ज्वर (पु०) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चातुर्थीक ज्वर।

चौथी दे० (पु०) चौथा भाग, चतुर्थी तिथि।

चौदन्त दे० (गु०) चार दांत का बच्चा, पशुओं की अवस्था विशेष, बली, हृष्ट, पुष्ट।

चौदन्ती दे० (स्त्री०) शूरता, वीरता, दक्षता, निपुणता।

चौदस तद्० (स्त्री०) चतुर्दशी, चौदहवीं तिथि।

चौदह दे० (गु०) चतुर्दश, संख्या विशेष, १४।

चौदानिया, चौदानी दे० (स्त्री०) कर्णभूषण विशेष, जिसमें चार मोती लगाये जाते हैं।

चौधर दे० (गु०) बलवान्, बली, मोटा ताज़ा, हृष्ट पुष्ट।

चौधराई दे० (स्त्री०) चौधरी का काम, प्रधानता, मेठी, मेठपन, मुखियापन, अगुआपन, नेतृत्व।

चौधरी दे० (पु०) समाज का अगुआ, नेता, प्रधान, सरपञ्च, बाज़ार का मुखिया, अड्डे का मुखिया।

चौपट दे० (गु०) उजाड़, नष्ट, बरबाद, टूटा फूटा। —करना (वा०) उजाड़ना, उजाड़ देना, नष्ट करना, बिगाड़ना।

चौपड़ दे० (पु०) चौसर, खेल विशेष, पाँसों का खेल, द्यूत।

चौपतिया, चौपत्ती दे० (स्त्री०) छोटी पुस्तक, लिखने की छोटी कांपी, हथबही।

चौपहला दे० (गु०) चौपाला, चारों ओर से समान, वह वस्तु जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो।

चौपाई दे० (स्त्री०) हिन्दी का एक छन्द, इसमें चार पाद होते हैं। यथा—"मङ्गलभवन, अमङ्गलहारी, द्रवहु सुदशरथ अजिरविहारी।"
—रामायण

चौपाड़ दे० (पु०) बैठक, बैठका, गृह विशेष।

चौपाया दे० (पु०) पशु जन्तु, चार पैर के जन्तु, खट्वा, खटिया।

चौपाला दे० (पु०) पालकी, चौडोला, यान विशेष।

चौबच्चा दे० (पु०) चौकोना गड़ा, कुण्ड, कृत्रिम कुण्ड।

चौबारा दे० (पु०) उसारा, दावा।

चौबीस दे० (गु०) चार अधिक बीस, चार और बीस, २४।

चौबे दे० (पु०) चतुर्वेदी, चतुर्वेदज्ञाता, ब्राह्मणों की एक अल्ल, माथुर ब्राह्मण।

चौमासा दे० (पु०) पावस, वर्षाऋतु, चतुर्मास, आषाढ़ से कुआर तक के चार महीने।

चौमुख दे० (गु०) चार मुँह वाला, चौमुहा, चार बत्तियों का दिया, वह मकान जिसमें चारों ओर द्वार हों।

चौमुखी दे० (स्त्री०) रुद्राक्ष का फल, देवी, चार मुख वाली दुर्गा।

चौर तत्० (पु०) चोर, चोरी करने वाला।—कर्म (पु०) चोर का काम, चोरी करना, अपहरण करना।—भय (पु०) चोर का भय, चोर के डर।

चौरङ्ग दे० (पु०) चित्त, उतान, चार अङ्ग, दाँव पेच।

चौरस दे० (गु०) समान, तुल्य, समभूमि, बराबर, यकसा, एक सूध, एक सूत में, सीधा।

चौरसाई दे० (स्त्री०) समता, बराबरी, तुल्यता, सीधाई।

चौरा दे० (पु०) चबूतरा, सती की चिता, वीरों की चिता, ग्राम, देवता का स्थान।

चौरानवे दे० (गु०) नब्बे और चार, चार अधिक नब्बे, ९४।

चौरासी दे० (गु०) अस्सी चार ८४, चार अधिक अस्सी।

चौराहा दे० (पु०) चारों ओर जाने का मार्ग, चौक, चतुष्पथ, चौमुखापथ, चौहट्टा।

चौरी दे० (स्त्री०) चार बार धोई हुई लाख, चौपाड़ चौवार, छोटा चँवर।

चौलड़ा दे० (गु०) चार लर वाला, चार लर की माला।

चौला दे० (पु०) अन्न विशेष, लोबा, लोरो।

चौलाई दे० (स्त्री०) शाक विशेष, चौराई का शाक

चौवर दे० (पु०) बलवान, साहसी, उद्योगी, उत्साही।
चौवा दे० (पु०) पशु, चारपाया, चौपाया।
चौवाई दे० (स्त्री०) आन्धी, झक्कड़, अन्ध, चारो तरफ से चलने वाली हवा।
चौवार दे० (पु०) सर्वसाधारण का वह स्थान जहां किसी उत्सव या विचार के लिये लोग इकट्ठे होते हैं। पञ्चायती घर, सर्वसाधारण की बैठक।
चौस दे० (पु०) आटा, मैदा, पिसान।
चौसर दे० (पु०) चौसर, चौपड़, खेल विशेष।
चौसठ दे० (पु०) चार और साठ, ६४, चार अधिक साठ।
चौहट दे० (पु०) चौराहा, चौमुहा पथ।
चौहट्टा दे० (पु०) चौराहा बाज़ार, चौक बाज़ार।
चौहत्तर दे० (पु०) सत्तर और चार, ७४, चार अधिक सत्तर।
चौहान दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति, किसी समय ये भारत के सम्राट थे, इनका पहला सम्राट और अन्तिम राजा सम्राट् पृथ्वीराज थे।
च्यवन तत्० (पु०) प्रसिद्ध एक प्राचीन ऋषि, पुलोमा के गर्भ और भृगु के औरस से इनका जन्म हुआ था। गर्भवती पुलोमा को कोई राक्षस बलात्कार पूर्वक हर कर लिये जाता था, इस अत्याचार से पीड़ित गर्भ गिर पड़ा। अतएव उसका नाम च्यवन पड़ा क्योंकि संस्कृत च्यु धातु का अर्थ गिरना है। च्यवन एक दिन देवसभा में बैठे थे, कथोपकथन में इन्हें मालूम हुआ कि महाराज कुशिक के वंश से हमारा वंश संयुक्त हुआ है। इससे कुशिकराज को नष्ट करने की ये चेष्टा करने लगे। परन्तु महाराज की असीम योग्यता और सहनशीलता देख इनको अपने विचार बदलने पड़े। च्यवन के पौत्र ऋचीक से कुशिक की पौत्री ब्याही गयी थी।

किसी सरोवर के तीर पर च्यवन तपस्या कर रहे थे, उनका शरीर मिट्टी से ढका हुआ था, केवल दो आंखें दीखती थीं। शर्याति की पुत्री सुकन्या को बड़ा कुतूहल हुआ। उसने उनकी आँखें फोड़ डालीं। च्यवन के क्रोध से शर्याति की सेना का मलमूत्र बन्द होगया। बहुत अनुसन्धान करने पर इसका कारण मालूम हुआ। शर्याति की प्रार्थना से मुनि प्रसन्न हुए, राजा ने सुकन्या का विवाह च्यवन से कर दिया। यह सुकन्या प्रसिद्ध पतिव्रताओं में से है।

च्युत तत्० (पु०) पतित, पड़ा, भ्रष्ट, गिरा, नष्ट।
च्युति तत्० (स्त्री०) पतन, स्खलन, गिरन, हानि, खिन्नता।

छ

छ व्यञ्जन का सातवां वर्ण, इसका स्थान तालु है, अर्थात् तालु के द्वारा इसका उच्चारण होता है। अतएव इसे तालव्य कहते हैं।
छ तत्० (पु०) छेदन, काटना, (पु०) निर्मल तरल, (दे०) छः, संख्या विशेष, षट्, ६।
छई तद्० (स्त्री०) क्षयी, रोगविशेष, राजरोग, नाव का छप्पर, गद्दी।
छकड़ा दे० (पु०) गाड़ी, बैलगाड़ी, शकट, रहडू, लहडू।
छकड़ाना दे० (क्रि०) चौंधियाना, घबड़ाना, चकराना।
छकना दे० (क्रि०) अघाना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, शङ्कित होना।
छकाई दे० (स्त्री०) खवाई, तृप्ति, सन्तुष्टता।
छकाना दे० (क्रि०) सन्तुष्ट करना, खिलाना, तृप्त करना, अघवाना, निरुत्तर करना, अवम्भित करना, शङ्कित करना।
छकड़ दे० (पु०) धौल, थप्पड़, पेटू, खाने वाला।
छका दे० (पु०) छःका समूह, वह समूह जिसमें छः हों। एक प्रकार का पिंजड़ा जिसमें जाली लगी रहती है। जुए का एक दाव।—पंजा

करन। (वा०) इधर उधर करना, छलना ठगना, धोखा देना, प्रतारणा।

छक्के-छूट जाना दे० (वा०) हताश हो जाना, निराश होना, घबड़ाना।

छग तत्० (पु०) छाग, बकरा, अज, भेंड़ा।

छगरी तद्० (स्त्री०) बकरी, छेरी, छिरिया।

छगल तत्० (पु०) नीला वस्त्र, बकरी, छेरी, अजा, छाग।

छगुनी दे० (स्त्री०) चुसनी, शोषणी, छनना।

छँगुली दे० (स्त्री०) छ अङ्गुलिया।

छछुन्दर दे० (स्त्री०) मूसे की एक जाति, प्राय यह रात को निकलती है। इसकी दुर्गन्धि दूर दूर तक फैलती है। कहते हैं कि इसे रात ही को सूझता है दिन को नहीं।

छज दे० (गु०) झाड़खपड़ी, झाड़ पताई, घना जङ्गल।

छज्जा दे० (पु०) बरामन्दा, उसारा, द्वार के ऊपर की लकड़ी, खम्भों के ऊपर की पटरी।

छनछनाना दे० (क्रि०) सनसनाना, गरम घी का शब्द, कड़कना।

छटना दे० (पु०) एक प्रकार की चलनी, पृथक् होना, समूह से अलग होना, न्यून होना, घटना, न्यून होना, बिछुड़ना।

छटपटाना दे० (क्रि०) छटपट करना, तलफना, विवश होकर लोटना, मूर्च्छित होकर भूमि में लोटपोट करना।

छटवाँ दे० (गु०) निकृष्ट, अलग किया हुआ, बीछा बराया, समाजच्युत, समाज से निकाला हुआ।

छटहा दे० (गु०) चिड़चिड़ा, कड़ुआ, एकान्त अनुरागी, विलक्षण प्रकृति का।

छटाक दे० (स्त्री०) सेर का सोलहवा भाग, मान विशेष, पाच तोला, कनवा, तोल विशेष।

छटा तत्० (स्त्री०) उजाल, उजास, शोभा, दीप्ति, प्रकाश, समूह, समाहार, समूह, चुना हुआ, बना हुआ, चालाक।—फल (पु०) नारियल वृक्ष, ताल वृक्ष, सुपारी का पेड़।—या (स्त्री०) विद्युत बिजली, तड़ित्, सौदामिनी।

छटाना दे० (क्रि०) छटवाना, अलग करवाना चुनवाना, बिछवाना, बरवाना।

छटे दे० (पु०) चुने हुए, बने हुए, पृथक् हुए, चतुर चालाक, अपना मतलब साधने वाले।

छट्ठ दे० (स्त्री०) षष्ठी, छठ षष्ठी तिथि।

छट्ठी दे० (स्त्री०) छठवी, षष्ठी, लड़के के जन्म से छठवाँ दिन, संस्कार विशेष, जो जन्म के छठे दिन होता है, तिथि विशेष, व्रत विशेष, इस व्रत में सूर्य देव की उपासना की जाती है।

छठ दे० (स्त्री०) षष्ठी, छठ।

छठी दे० (स्त्री०) छठी, षष्ठी।

छठे दे० (गु०) छठवें, छठयें, षष्ठ, छठवा।

छड दे० (स्त्री०) चर्खे की लकड़ी, लोहे की छड़ लोटे का सिकचा, उठा, छाठी, तिनका, इ ख रस का एक दाग, जो श्वेत होता है।

छड़ना दे० (क्रि०) धान के छिलके निकालना छाटना, चावल छाँटना।

छड़ा दे० (पु०) मोतियों की माला, पैर में पहनने का गहना।

छड़ाना दे० (क्रि०) चावल साफ करना। छुड़ाना।

छड़िया दे० (पु०) पहरेदार, दरबान, आसाबरदार, कञ्चुकि, राजा का परिचारक, छड़ीबरदार कोलिया।

छड़ियाना दे० (क्रि०) छड़ी मारना, छड़ी के समान करना, मार करके लम्बा करना।

छड़ी दे० (स्त्री०) बेंत, छड़ी, लकड़ी, डण्डा, हाथ में रखने का डण्डा, छड़ी के आकार की एक वस्तु जो फूलों से बनायी जाती है। गुलछड़ी, फूल छड़ी, घास की सूखी लकड़ी, छिकुनी, छाकुन।

छड़ीला दे० (पु०) जटामासी, पुष्प विशेष, एक प्रकार का सुगन्धित सेवार, काई, कोंहार की मिट्टी, एकाकी, अकेला।

छण तद्० (पु०) क्षण, पल, मुहूर्त, छिन, अल्पकाल

छण्टना दे० (क्रि०) दुर्बल होना, कम होना, होना, घटना।

छण्टवाना दे० (क्रि०) बकला उतरवाना, छिकला उतरवाना, साफ करवाना, छटवाना।
छण्टाई दे० (स्त्री०) छांटने की मजूरी, छांटने का काम।
छण्टाव दे० (पु०) धान की कूटाई, कुटना, बकला निकलाई।
छण्डना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना, तजना, छुड़ाना।
छण्डित दे० (पु०) छोड़ा हुआ, त्यक्त, तजा हुआ।
छण्डुआ दे० (पु०) छूट, छोड़, त्याग, परित्याग।
छण्डौती दे० (स्त्री०) छुट्टी, छोड़ना, अवकाश।
छत तद्० (पु०) घत, फोड़ा, घाव, चिन्ह (स्त्री०) गच, छात, पटान, पाटन।—कुम्भक (पु०) कनेर, करवीर, कन्देल।—ज (पु०) रक्त, रुधिर, लोहू।
छतना दे० (पु०) छत्ता, छत्र, आतपवारण।
छतनार दे० (पु०) फैला हुआ, विस्तृत, सघन, छायादार।
छति तद्० (स्त्री०) चति, हानि, घाटा, नुकसान, टोटा।
छत्तर तद्० (पु०) छत्र, भोजन स्थान, सत्र, अन्न छत्र, छत्ता।
छत्ता दे० (पु०) मधुमक्खी का घर, मधुमक्खियों का छाता या छत्ता, चाक, महार, छाता।
छत्तीस दे० (पु०) तीस छः ३६, छः अधिक तीस।
छत्तीसी दे० (स्त्री०) छिनाल, व्यभिचारिणी, दुराचारिणी, परपुरुषरताखी।
छत्र तद्० (पु०) वृष्टि और धूप रोकने के लिये आवरण विशेष, आतपत्र, छाता, छतरी, राजाओं के लगाने का खास छत्ता जो राजचिन्ह समझा जाता है।—चक्र (पु०) चक्रविशेष, नक्षत्र मण्डल।—धर (पु०) छत्रपति राजा, महाराज।—पति (पु०) टिकैत राजा, महाराज, स्वाधीन नरपति।—भङ्ग (पु०) वैधव्य, रण्डापा, नृपनाश, राजनाश, अराजक।—बन्धु (पु०) नीच क्षत्रिय, क्षत्रियाधम, क्षत्रिय के समान।
छत्रक तद् (पु०) तृण विशेष, भुई फोर, धरती का फूल।
छत्रा तद्० (स्त्री०) धनिया, धरती का फूल।
छत्री तद्०(पु०) छत्ता वाला, छत्र विशिष्ट, छत्रयुक्त, (पु०) क्षत्रिय, दूसरा वर्ण, वीर जाति, राज जाति, (स्त्री०) छोटा छत्ता, मृत मनुष्यों का एक प्रकार का स्मारक, श्मशान में निर्मित गृह विशेष, भारत की पुरानी प्रथा के अनुसार ये अभी भी पुराने हिन्दू राज्यों में बनायी जाती हैं।
छत्वर तद्० (पु०) घर, गृह, कुञ्ज, लताच्छादित गृह, कुटीर, पर्णकुटी।
छदुर दे० (पु०) एक स्थान पर राशीकृत अन्न, अन्न की राशि, गोला, ढेर।
छद तद्० (पु०) पत्र, पत्ता, पत्ती, पताई, पक्ष, पंख, आच्छादन, ढकना, छपना, तमाल वृक्ष, पुनर्नवा औषध, गदहपूरना, द्वार, चाल, रीति।
छदन तद्० (पु०) पत्र, पत्ता, पक्ष, तमाल वृक्ष, तेजपात, आच्छादन, ढकना, छान, छत, खोल, गिलाफ।
छदाम दे० (पु०) टुकड़ा, दो दमड़ी, छदाम, पैसे का चौथा भाग।
छदि तद्० (स्त्री०) छपार, छानि, गृहाच्छादन, पाटन।
छदिकारिपु तद्० (पु०) छोटी इलायची, वमन रोकने की औषधि।
छद्म तद्० (पु०) कपट, छल, धोखा, स्वरूपाच्छादन, अपने को छिपाना, अन्य वेश।—तापस (पु०) झूठा तपस्वी, कपटी मुनि।—वेश (पु०) गुप्तरूप, दूसरा रूप।
छद्मिका तद्० (स्त्री०) गुडूची, मजीठ।
छनना दे० (क्रि०) निथुराना, गलना, साफ होना, बनना। यथा—झरने से छनछन कर पानी आता है। पुड़ियां छन रही हैं।
छनकाना दे० (क्रि०) छनवाना, गलवाना, निथुरवाना, सचेत करना, सावधान करना।—"बैठा तो अचेत था परन्तु हमलोगों ने उसे छनका दिया"।
छनाक दे० (पु०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द, गरम घी या तेल में पानी पड़ने का शब्द।

छमाका दे० (पु०) शीघ्र चल जाना, पानी या घुंघरू का शब्द में शीघ्र चलना।

छलिक सं० (पु०) छलिक, उपरूपविशेष, उपरूपक, विचार जाना।

छनेक सं० (पु०) क्षणिक, एक क्षण, एक मुहूर्त।

छन्द सं० (पु०) श्लोक, पद्य, काव्य, वेद, इच्छा, अभिप्राय, रचना, अनुष्टुप् आदि।—गति (स्त्री०) छन्दों की चाल, छन्द बनाने की रीति।—शास्त्र (पु०) पिङ्गल मुनि प्रणीत शास्त्र, जिसमें छन्दों का वर्णन किया है।

छन्दना दे० (क्रि०) फँसना, बन्धना, उलझना, उलझन में पड़ना।

छन्दपातन सं० (पु०) कपटी, तपस्वी, छद्म तापस, धूर्त तपस्वी। तापस वेशधारी धूर्त।

छन्दबन्द दे० (पु०) छलबल, कपट, छल, प्रतारण, फरेब।

छन्दानुवर्ती सं० (पु०) आज्ञानुवर्ती, आज्ञाधीन, आज्ञापालक।

छन्दी दे० (पु०) कपटी, धूर्त, प्रतारक, छली, [illegible]।

छन्दोग सं० (पु०) सामवेदी, सामवेदवेत्ता, सामगान करनेवालेब्राह्मण।—परिशिष्ट (पु०) सामवेदी गोभिल आदि मुनियों का परिशिष्ट ग्रन्थ, जिसे ऋषि कात्यायन ने बनाया है। इसमें सामवेदियों के कर्म वर्णन किये हैं। सामवेद सम्बन्धी ग्रन्थ विशेष।

छन्न सं० (पु०) [छद् + क्त] आच्छादित, ढका, [illegible], गुप्त, रहस्य, छिपा हुआ, एकान्त।

छपाक दे० (पु०) जल आदि छलकने का शब्द, [illegible]।

छपकी दे० (स्त्री०) छोटा झटका, [illegible] विशेष

छपट दे० (पु०) [illegible]

छपरा दे० (पु०) ग्राम विशेष, [illegible] यह जगह [illegible] है।

छपरी दे० (स्त्री०) [illegible]

[illegible]

छपकली दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, छिपकली।

छपकाना दे० (क्रि०) पानी डालना, या छींटे डालना।

छपकी दे० (स्त्री०) एक जन्तु का नाम, जो [illegible] कर मारता है।

छपना दे० (क्रि०) छापा होना, मुद्रित होना, छापा जाना, छिपाना।

छपरा दे० (पु०) छप्पर, घर छाने का छप्पर।

छपरिया दे० (स्त्री०) छोटा छप्पर।

छपरी दे० (स्त्री०) छप्पर, छपरा।

छपवाना दे० (क्रि०) छापा कराना, अङ्कित कराना, लिखवाना, मुद्रित कराना।

छपाई दे० (स्त्री०) छापने की मजूरी, छापने का काम।

छपाका दे० (पु०) शब्द विशेष जो जल इत्यादि में होता है।

छप्पन दे० (पु०) पचास छः ५६, छः अधिक पचास

छप्पय दे० (पु०) छः पद का छन्द, [illegible] छन्द।

छप्पर दे० (पु०) आच्छादन, छान छानी।—खट (पु०) पलङ्ग, खाट, मसहरीदार पलङ्ग।

छप्परबन्द दे० (पु०) छप्पर बनाने वाला, छप्पर बांधने वाला।

छब दे० (स्त्री०) शोभा, आकृति, आकार, रूप, सौन्दर्य, शोभा, प्रभा।

छबि दे० (पु०) आकार, शोभा, शरीर, चित्र।

छबीला दे० (पु०) रसिक, रंगीला, [illegible]

छब्बीस दे० (पु०) बीस छः, २६।

[illegible] सं० (पु०) [illegible]

[illegible]

छय तद्० (पु०) क्षय, रोग विशेष, छई।—रोग (पु०) छई।

छर दे० (पु०) जटामाँसी, कड़दफा।

छरछवि दे० (स्त्री०) झाड़े फिरने का स्थान, शौच-स्थान, पोखरा, पाख़ाना।

छरस दे० (पु०) छः रस, षट् रस।

छरिन्दा दे० (पु०) एकाकी, असहाय, अकेला, रिक्त-हस्त, शून्य हाथ, रीते हाथ।

छरी दे० (स्त्री०) देखो छड़ी।

छरे दे० (पु०) छटे, चुने हुए, बराये हुए, उत्तम उत्तम, अलग किये हुये, बीने हुए।

छर्दन तद्० (पु०) [छर्द+अनट्] छांट, क्षय, वमन, उलटी।

छर्दायन तद्० [छर्द+आयन] खीरा, ककरी।

छर्दि तद्० (स्त्री०) वमन, छांट, खांसी।

छर्रा दे० (पु०) छोटी छोटी गोली, जो बन्दूक में भरी जाती हैं।

छल तद्० (पु०) छद्म, व्याज, कपट, शठता, प्रतारणा, ठगई, चातुरी।—कारी (पु०) छल करने वाला, ठग, धूर्त, धोखेबाज़।—ग्राही (पु०) छल ढूंढने वाला, प्रतारक, शठ, धूर्त।

छलक दे० (स्त्री०) उछाल, उफान, उमड़, आघात से जल आदि द्रव पदार्थों का पात्र से बाहर निकलना।

छलकना दे० (क्रि०) उमड़ना, ढलकना, उछलना बाहर निकलना जल आदि का।

छलकाना दे० (क्रि०) उफनाना, उड़ेलना।

छलङ्गना दे० (क्रि०) कूदना, फांदना, उछलना, छलांग मारना।

छलछलाना दे० (क्रि०) जल की गति, बे रोक टोक गति, सशब्द गति, भरी हुई गङ्गा आदि नदियों का शीघ्र गामी प्रवाह।

छलछिद्र तद्० (पु०) छलबल, कपट, धोखा।—ी (पु०) कपटी, छली।

छलबल तद्० (पु०) कपट, धोखा, शठता, शाठ्य।

छलविनय तद्० (पु०) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिये प्रशंसा।

छलना तद्० (क्रि०) छल करना, ठगना, भटकना।

छलनी दे० (स्त्री०) चलनी, आटा चालने का छेददार पात्र।

छलांग दे० (स्त्री०) कुदाव, फलांग, उछाल, फांद।—मारना दे० उछलना, कूदना, कुलाच मारना, हर्षित होना, आनन्दित होना।

छलावा दे० (पु०) लू, लूक, लुका, अग्निलूक।

छलिया दे० (पु०) धूर्त, छलकारी, धोखा देनेवाला।

छली तद्० (पु०) कपटी, धूर्त, शठ।

छल्ला दे० (पु०) आभरण विशेष, अंगूठी, मुन्दरी, अङ्गुलीयक।

छवड़ा दे० (पु०) बांस आदि की बनी टोकरी, दौरा, खाँचा।

छवैया दे० (पु०) छप्पर छाने वाला, छप्पर बनाने वाला।

छहरछहर दे० (पु०) शब्द विशेष, अधिक वृष्टि होने का शब्द।

छहराना दे० (क्रि०) छितराना, बिखराना, टूटना, फैलना। यथा—

कञ्चुक चूर चूर भई तानी।
टूटी तार मोती छहरानी॥
—पद्मावत।

छाई दे० (स्त्री०) मुँह पर का लहसन, छीप, रोग विशेष जिससे मुँह का चमड़ा काला हो जाता है।

छां दे० (स्त्री०) छांह, छाया, प्रतिबिम्ब।

छांट दे० (स्त्री०) सीठी, वान्ति, उबकाई, खूद, छिल्का।—करना (वा०) उगाल करना, वमन करना, कै करना।—लेना (वा०) बीछ लेना, बरायलेना, चुनना, चुनलेना।

छांटन दे० (स्त्री०) उलटी करना, वमन करना, मूसे से धान निकलना, कतरन, फाटकूट, फटकना, साफ करना, सुधारना, अलग करना, चुनना, टुकड़ा, छिलका।

छांटना दे० (क्रि०) वमन करना, कूटना, कतरना।

छांड़ना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्यागना, उगलना, तजना।

छांद दे० (स्त्री०) पगहा, पशुओं के पैर बान्धने को रस्सी, पैकड़ा, जाल।

छांदना दे० (क्रि०) बान्धना, गतिरोकना, रोकना, जकड़ना।

छांदा दे० (पु०) भाग, अंश, खण्ड, टुकड़ा, हिस्सा।

छांह दे० (स्त्री०) छाया, परछाई, प्रतिबिम्ब, छां यथा —

"कीन्हेसि, धूप सेव औ छांहा।
कीन्हेसि, मेघ बीजु तेहि मांहा॥"

—पद्मावत।

छांहारा दे० (पु०) छायावान्, छायेला, छायायुक्त, छायान्वित।

छाई दे० (स्त्री०) छाय गयी, छा गयी, फैल गयी, व्याप्त हो गयी, विस्तृत हो गयी, फैल गयी।

छाक दे० (पु०) कलेवा, जलपान, जलखावा, कल्य।

छाकना दे० (क्रि०) फटकना, निर्मल करना, साफ करना, शुद्ध करना, मल दूर करना, मल हटाना।

छाके दे० (पु०) मतवाला, उन्मत्त, पियक्कड़, पिया हुआ।

छाग तद्० (पु०) बकरा, अज, पशु विशेष। —वाहन (पु०) अग्नि, वह्नि, अनल देवता। —भोजी (पु०) छाग भक्षक, बकरा खानेवाला, बघेरा, भेड़िया। —मांस (पु०) बकरे का मांस। —रथ (पु०) अग्नि, अनल, वह्नि।

छागल तद्० (पु०) छाग, अज, पाठा। —गोत्री (पु०) व्यभिचारी, वह कामुक जिसे गम्या-गम्य का कुछ भी विचार न हो।

छागी तद्० (स्त्री०) बकरी, छेरी, पाठी, अजा।

छांछ और छाछी दे० (पु०) तक्र, मट्ठा, मही, यथा— "अपनी छांछ को कौन खट्टा कहता है।"

छाज दे० (पु०) सोहा, शोभा, शोभित हुआ, सजा, सूप, डगर, छप्पर, छांद। यथा:—

"मुकतानि की झालरनि मिलि, मनिलाल छज्जा छाजहिं।
सन्ध्या समै मानहु नखतगन, लाल अम्बर राजहिं।
जहं तहां उरध उठे, हीरा किरन घन समुदाय है।
मानौ गगन तंबू तन्यौ, ताके सपेत तनाय है॥"

—भूषण।

"छाज बोले तो बोले, चलनी भी बोले जिसमें बहत्तर सौ छेद।"

छाजना दे० (क्रि०) छाना, शोभना, फबना, सजना, खुलना, उचित मालूम होना, योग्य होना।

छाड़ दे० (स्त्री०) त्याग, त्याग कर, तज के, छाड़ कर, नदी का छोड़ा हुआ स्थान, भिन्न, बिना।

छाड़े दे० (पु०) छोड़े, त्यागे, छोड़े हुए।

छात दे० (स्त्री०) क्षत, दुबला, दुर्बल, सुकटा।

छाता दे० (पु०) छत्र, छत्ता, आतपत्र, मधुमक्खियों का छत्ता। पहलवानों की छाती, विशाल वक्षस्थल।

छाती दे० (स्त्री०) छोटा छाता, उर, हृदय वक्षःस्थल सीना। —पर धर के कोई नहीं ले जायगा (वा०) अर्थात् आप क्यों घबड़ाते हैं, इस वस्तु को कोई ले नहीं जा सकता, अथवा यह वस्तु ऐसी अच्छी नहीं है जिसे कोई लेजाय। (तुच्छ सी वस्तु का ज्यादे आदर करते देख इस वाक्य का प्रयोग किया जाता है।)—पर तो हाथ रखो (वा०) इस बात की सत्यता या औचित्य को तुम्हारा हृदय स्वीकार करता है। —पर चढ़ कर कौन पी जायगा (वा०) किसी वस्तु के रक्षित होने के विषय में यह कहा जाता है। —पर पत्थर रखना (वा०) सन्तोष करना, किसी वस्तु की अभिलाषा छोड़ देना, धीरज बांधना, धैर्य धरना। —पर मूंग दलना (वा०) दुःख देने के अभिप्राय से उसके सामने ही अप्रिय काम करना। चिढ़ाना, कुढ़ाना, मर्म वेधना। —फटना (वा०) चिन्ता से घबराना। —पीटना (वा०) विलाप करना, दुखित होना, शोकित होना, बिलबिलाना, यथा — "राम के वियोग से सीता छाती पीट पीट कर रह जाती है"। —ठोकना (वा०) उत्साहित होना, साहस

प्रकाश करना, भरोसा देना, अभय देना, यथाः—"छाती ठोक कर भीम अखाड़े में उतर गये" "मैं छाती ठोक कर इसके लिये प्रतिज्ञा करता हूँ।" —ठण्डी होना (वा०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना, "तुमको देख कर छाती ठंढी हुई" फिर हमारी छाती कब ठंढी होगी।—का पत्थर (वा०) दुःखद, शत्रु, कण्टक, "छाती का पत्थर हटाना ही उचित है।" आज कल तो वह हमारी छाती का पत्थर हो गया है।—खोलकर मिलना (वा०) प्रेम से मिलना, उत्साह से मिलना, यथा—"लङ्का से लौट कर श्रीरामचन्द्र जी छाती खोल कर भरत से मिले"।—लगाना—से लगाना (वा०) प्रीति करना, प्रेम करना, प्रेम से मिलना, छोटों के प्रति बड़ों में प्रेम, "जनक ने रामचन्द्र को छाती से लगाया, पिता ने पुत्र को छाती से लगाया"।—निकाल कर चलना (वा०) अकड़ना, अकड़ कर चलना, अहङ्कार से चलना, ऐंठ कर चलना।—भर (वा०) परिमाण विशेष, छाती के बराबर, छाती जितना, "वह पेड़ छाती भर का हो गया, छाती भर पानी में नहाओ"।—भर आना (वा०) कहते कहते कण्ठ रुक जाना, आँसू निकल पड़ना, मुग्ध हो जाना, मोह के विवश होने से बात का न निकलना।—पर बाल होना (वा०) साहस वीरता और दृढ़ता का अनुमान होना, सामुद्रिक का चिन्ह विशेष, यथाः—

"जिसके छाती एक न बार
मी पैदों का वह सरदार।"

[छा]त्र तद्० (पु०) शिष्य, अन्तेवासी, शिक्षार्थी, विद्यार्थी, चेला।—वृत्ति (स्त्री०) पढ़ने के लिये खर्चा, वह वृत्ति जो विद्या अर्जन के निमित्त दी जाती है। पारितोषिक, प्रशंसा पूर्वक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को जो दिया जाता है।

[छा]दन तद्० (पु०) ढपना, ढकना, ढक्कन, आच्छादन, ढांकने का वस्त्र।

[छा]दान दे० (पु०) जल रखने का पात्र विशेष, मशक, जल रखने के लिये चमड़े का बनाया पात्र, जल थैली।

छान दे० (स्त्री०) छप्पर, छांद, छाज, छत।—विनान (वा०) खोज, अनुसन्धान, जांच।—बीन (वा०) विचार, विवेचना, अनुसन्धान क्रम, अनुशीलन, अन्वेषण, तदारुक करना, तहकीकात करना।—मारना (वा०) खोजना, ढूढना, ढूढ़ मारना।

छानबे दे० (गु०) नब्बे और छ, ९६, छः अधिक नब्बे।

छानस दे० (स्त्री०) भूसी, चोकर, तुष, अन्न की भुस्सी, केरायी।

छाना दे० (क्रि०) छाया करना, पाटना, पाट करना, ढकना।

छाजाना दे० (क्रि०) ढकजाना, छाया होना, पट जाना, घिर जाना, विस्तृत होना, व्याप्त होना, फैलना।

छालेना दे० (क्रि०) ढकलेना, छाजाना, अंधेरा करना, ढक लेना।

छाना दे० (क्रि०) निखारना, मारना, ढूंढना खोजना।

छाप दे० (स्त्री०) टिकट, दाग, अगूंठे का चिन्ह, छपाई, मुद्रण नकल करना, मोहर, चिन्ह, अङ्क, हस्ताक्षरी कार्यालय की मोहर, थांट का चिन्ह विशेष जिसमें उसके विषय की बातें छपी रहती हैं। धार्मिक चिन्ह विशेष, तिलक। यथा—

जयमाला छापा तिलक सरें न एको काम।
मन काँचें नाचें वृथा, साँचे राचे राम॥
—बिहारी।

छापना दे० (क्रि०) छापा करना, अङ्कित करना, मोहर लगाना, मुद्रित करना।

छापा दे० (पु०) छपाई, चिन्ह, मुद्रा, तिलक।—खाना (पु०) प्रेस, छापने की कल जिसमें किताबें छापी जाती हैं।—मारना (वा०) धावा करना, डाका डालना।—लगाना (क्रि०) टिकट लगाना, मोहर लगाना, चिन्ह विशेष से अङ्कित करना।—हासिल कपड़े छापने वालों का कर,

छोड़ावना दे० (क्रि०) छुटकारा करना, मुक्ति कराना, किसी प्रकार बन्धन कटवाना।

छोड़ौती दे० (स्त्री०) छुटकारे का दाम, छुड़ौती, उतराई, उतारे का दाम।

छोनिय तद्० (पु०) चोणिय, भूपति, भूमिपति, पृथिवीपति, भूप, भुआल।

छोनी तद्० (स्त्री०) चोणी, पृथिवी, धरती, भूमि, यथाः—"छोनी में के छोनीपति छाजे जिन्ह छत्र छाया, छोनी छोनी, छाये छिति आये निमि राज के; प्रबल प्रचण्ड बरवण्ड बरबेष बपु बरबे को बोली बैदेही बर काज के; बोले बन्दी बिरद बजाये बर बाजनऊ, बाजे बाजे बीरबाहु धुनत समाज के; तुलसी मुदित मन पुरनर नारी जेते, बार बार हेरें मुख अवध मृगराज के।" कवित्त-रामायण।

छोप दे० (पु०) एक बार का किया हुआ रङ्ग, किसी वस्तु पर एक बार रङ्ग चढ़ाना, रङ्ग भरना।

छोपना दे० (क्रि०) भरना, रङ्गना, रङ्ग देना।

छोभ तद्० (पु०) चोभ, घबराहट, मन की चञ्चलता, अस्थिरता।

छोर दे० (पु०) किनारा, प्रान्त, कगर, एक किनारा, इधर उधर का सिरा।

छोरना दे० (क्रि०) खोलना, छोड़ना, मुक्त करना।

छोरा दे० (स्त्री०) लड़का, छोकरा, बालक।

छोरा छोरी दे० (स्त्री०) लड़का, लड़की, पुत्र, पुत्री।

छोरी दे० (स्त्री०) कन्या, पुत्री, बालिका।

छोलना दे० (क्रि०) छीलना, छाल उतारना।

छोला दे० (पु०) घास, कटी घास।

छोलनी दे० (स्त्री०) खुर्पी, घास काटने का औज़ार।

छोह दे० (पु०) स्नेह, मोह, प्रेम, प्रीति।

छोहू दे० (पु०) प्यार, प्रीति, प्रेम।

छोहरा दे० (पु०) नया, नवीन, लड़का, बाल, जवान, स्त्री।—**छोहरी** बालिका, वयस्क बालिका।

छोही दे० (पु०) प्रेमी, प्रणयी, अनुरागी, अभिलाषी।

छौंकन दे० (पु०) बघार, छौंक।

छौंकना दे० (क्रि०) बघारना, छौंकना।

छौकन दे० (पु०) छीना छीनी, झपटा, झपटा।

छौकना दे० (क्रि०) झपटा झपटी करना, छीना छीनी करना।

छौकल दे० (पु०) झपटा झपटी करना।

छौना दे० (पु०) शावक, शिशु, बच्चा, जानवर का बच्चा, लड़का, छोरा, बालक, छोटा बच्चा। यथाः—

"भूप मण्डली प्रचण्ड चण्डीश कोदण्ड खण्ड्यो,
चण्डबाहु दण्ड जाको ताहीसों कहत हैं।
कठिन कुठार धार धरिवे को धीर ताहि,
बीरता विदित ताको देखिये चहत हौं।
तुलसी समाज राज तजि सो विराजै अजु,
गाज्यो मृगराज गजराज ज्यों गहत हौं।
छोनी में न छाँड्यो छप्यो छोनिय को छौनो,
छोटो छोनिय छपन ताकों बीरद बहत हौं।
—कवित्त रामायण।

छौर तद्० (पु०) मुण्डन, माथा मुँड़वाना, बाल बनवाना।

छौलिया दे० (पु०) हर्षित, प्रसन्न, रसिक, विलासी, आनन्दी।

ज

ज, व्यञ्जन का आठवां अक्षर, इसका उच्चारण तालु द्वारा होता है। अतएव यह तालव्य वर्ण कहा जाता है।

ज तद्० (पु०) किसी शब्द के साथ संयुक्त होने पर यह उत्पत्ति अर्थ का वाचक हो जाता है। यथाः—मित्रज, आत्मज, देशज, इत्यादि।

जक दे० (पु०) रक्षित, धन का रक्षक, गाड़े धन का रखवारा।

जकड़ना दे० (क्रि०) कसना, बांधना, खींच खींच कर बाँधना, दृढ़ बाँधना।

जकड़बन्द दे० (पु०) अकड़बाय, रोग विशेष, वायु जनित रोग।

जक्ष तद्० (पु०) यक्ष, देव योनि विशेष।

जखनाचार्य दे० (पु०) यह राजवंशीय प्रधान शिल्पी थे, मैसूर के राजघराने में इनकी उत्पत्ति हुई थी, खृ० बारहवीं शताब्दी में यह विद्यमान थे। चित्ररचना की निपुणता इनमें अलौकिक थी। कहते हैं इस समय मैसूर राज्य में जो बड़े बड़े प्रधान मन्दिर वर्तमान हैं, वे सब इन्हीं के बनाये हैं।

जखम दे० (पु०) घाव, क्षत, चोट।

जग तद्० (पु०) जगत्, भुवन, संसार, जङ्गम, चलने वाले, वायु।

जगच्चक्षु तत्० (पु०) सूर्य, दिवाकर, भानु, मार्त्तण्ड, सूरज।

जगजगा दे० (पु०) दीप्ति, सुन्दरता, प्रकाश, शोभा, पीतल का मुलम्मा।

जगजगाहट दे० (स्त्री०) चमक, प्रकाश, उजलाई, लावण्य।

जगजागी दे० (स्त्री०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, संसार में विदित।

जगज्जीवन तद्० (पु०) जगत् का आधार, जगत् का प्राण, रक्षक, पानी, ईश्वर, मेघ, वायु।

जगण तत्० (पु०) गणविशेष, पद्यरचना विषयक रीति विशेष, छन्दों का सन्निवेश और पहचान कराने वाले अष्टविध गणों में का एक गण। जगण में बीच का अक्षर गुरु और आदि अन्त के लघु होने चाहिये। इसका देवता जल है।

जगत् तत्० (पु०) संसार, जग, टेक, झाड़। —कर्ता (पु०) ब्रह्मा, विधाता, सृष्टिकर्ता, परमात्मा।—त्राता (पु०) जगत्तारक, जगद्रक्षक। —प्राण (पु०) वायु, अनिल, वात।—साक्षी (पु०) सूर्य, दिनमणि, भास्कर, दिवाकर, भानु।

जगती तद्० (स्त्री०) भुवन, लोक, पृथिवी, धरती, भूमि।—तल संसार, ब्रह्माण्ड, समस्त भूमण्डल, पृथ्वीतल।

जगत्सेठ दे० (पु०) इतिहास प्रसिद्ध मुर्शिदाबाद निवासी एक धनकुबेर, इनका नाम फतेचन्द था। १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने इनको जगत्-सेठ की उपाधि दी थी, यह जैनी थे, इनके पुरखा मारवाड़ से बङ्गाल आये थे। इनके पिता का नाम उदयचन्द, और माता का नाम धनबाई था। धनबाई के भाई माणिकचन्द्र को कोई लड़का नहीं था, अतएव उन्होंने अपनी बहिन के लड़के फतेचन्द को गोद लिया। प्रसिद्ध धनी माणिकचन्द के अतुल ऐश्वर्य के मालिक फतेचन्द हुए थे। बङ्गाल के नवाब मीर क़ासिम के क्रोध में पड़कर जगत्सेठ को अन्त में अपने प्राण गँवाने पड़े। जिस धन के लिये उन्होंने कितना छल कपट किया, कितने षड़यन्त्र रचे, परन्तु मौके पर धन से उनको कुछ भी सहायता नहीं मिली।

जगदम्बा तत्० (स्त्री०) जगन्माता, वैष्णवी शक्ति, आदिशक्ति, भवानी।

जगदादि तत्० (पु०) जगत् का आरम्भ समय, सृष्टि का प्रारम्भ।

जगदाधार तत्० (पु०) जगत् के आधार, अनन्त, शेषनाग, संसार का अवलम्ब, वायु, परमात्मा, धर्म।

जगदीश तत्० (पु०) जगत् का स्वामी, परमात्मा, जगन्नाथ।

(२) नवद्वीप निवासी न्यायशास्त्र के एक विख्यात विद्वान्, १७-वीं सदी के प्रारम्भ में यह उत्पन्न हुए थे। इनका बाल्यकाल खेलने ही में बीत गया। अट्ठारह वर्ष की अवस्था में एक संन्यासी से इनकी भेंट हुई। वे संन्यासी इनकी बुद्धिमानी देख प्रसन्न हुए और इनको पढ़ाने लगे। जगदीश बड़े दरिद्र के पुत्र थे, तथापि अनेक कष्टों को सह कर भी विद्योपार्जन इन्होंने किया। इनकी बुद्धि तीव्र थी ही, यह एक बड़े भारी विद्वान् हो गये। न्याय शास्त्र के १५-उपादेय ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं।

जगद्धर तत्० (पु०) संस्कृत के एक पण्डित, न्याय वैशेषिक और व्याकरण के बड़े पण्डित थे। वेणीसंहार, वासवदत्ता, मालती माधव आदि

गाज्योति तद्० (स्त्री०) जगजगाहट, प्रकाशमान, प्रकाशशील, सर्वदा प्रकाशित रहनेवाली ज्योति, अखण्डदीप, प्रभाव शाली देव।

गाना दे० (क्रि०) उठाना, सचेत करना, सोते से उठाना, जागृत करना।

गावहु दे० (क्रि०) जगाओ, उठाओ, जागृत करो।

गेसर तद्० (पु०) यज्ञेश्वर, यज्ञपुरुष, यज्ञ स्वामी, विष्णु।

घन तद्० (पु०) कमर के आगे का भाग, कमरकटि, उरुस्थल, कटिदेश।—चपला (स्त्री०) नृत्य विशेष, नृत्य का एक भेद, व्यभिचारिणी दुराचारिणी, वेश्या।

घन्य तद्० (पु०) अन्तिम, चरम, पीछे का, निन्दित, गर्हित, कुत्सित, अधम, नीच, अन्त्यज।—ज (पु०) छोटा, कनिष्ठ, शूद्र, चौथा वर्ण।

ङ्गम तद्० (पु०) चलने वाला, अस्थावर, गति शक्ति विशिष्ट, चरिष्णु। जैनों का एक भेद।—कुटी (स्त्री०) छत्र, आतपत्र।—ता (स्त्री०) जङ्गम का धर्म या स्वभाव, चाञ्चल्य, चपलता, अस्थिरता।

ङ्गल तद्० (पु०) वन, कानन, अरण्य, बिना जल का देश, निर्जन स्थान, वृक्षों का समूह।—सेतु (पु०) चलनेवाला सेतु, जो बाँध चल सके, हटने वाला पुल।

ङ्गला तद्० (पु०) उजाड़, वन्य, पटपर, रागिनी विशेष, गवाक्ष, गौख, खिड़की।

ङ्गलात् तद्० (पु०) वनसमूह, घोरवन, वन्य, वनमय।

ङ्गली तद्० (पु०) वन्य, वनोद्भव, वनैला, वन में उत्पन्न, वनवासी।

ङ्गाल तद्० (पु०) रोध विशेष, एक प्रकार की रुकावट, बान्ध, सेतु, पुल, डांड़, पगार, भौंगना, कड़ादार बड़ा तख्ता।

ङ्घा तद्० (स्त्री०) जांघ, गुल्फ के ऊपर और ठेहुना के बीच का भाग, जानु के नीचे का भाग।

ङ्घिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, जिसे कसरत करने के समय पहलवान पहनते हैं। आच्छादन वस्त्र, कटिपट, जङ्घा ढकने का वस्त्र।

जचना दे० (क्रि०) पसन्द होना, अटकल होना, अटकला जाना, किसी वस्तु की अच्छाई बुराई और दाम का मालूम होना, परीक्षित होना।

जचाना दे० (क्रि०) अटकल कराना, परीक्षा कराना, खोटे खरे की परीक्षा कराना, पहचानना, अनुसन्धान करना।

जचावट दे० (स्त्री०) जाँच, परीक्षा, अनुसन्धान।

जञ्जाल दे० (पु०) उलझन, झंझट, प्रपञ्च, दुःख, क्लेश, उलझाव, उद्विग्नता, व्याकुलता, घबराहट, कठिनता।

जञ्जालिया दे० (पु०) उत्पाती, उपद्रवी, झँझटिया।

जञ्जाली दे० (पु०) क्लेशी, दुखी, घबराया, प्रपञ्ची, उलझन में फँसा हुआ।

जञोपवीत तद्० (पु०) यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र, जनेऊ, उपवीत, संस्कार विशेष, बरुआ, व्रतबन्ध, इस संस्कार के अधिकारी त्रिवर्ण हैं। यथाक्रम ८-११ और १२ वर्ष की अवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार होता है।

जञाति तद्० (पु०) ययाति, एक राजा का नाम, एक चन्द्रवंशी राजा (ययाति देखो)।

जट तद्० (स्त्री०) जटा, मिले हुए बाल, बालों की लटूरी।

जटना दे० (क्रि०) मूँड़ना, मूँसना, मूँछना, ठगना, धोखा देकर ले लेना।

जटला दे० (पु०) समूह, समुदाय, भीड़, बैठका, जमात।

जटा तद्० (स्त्री०) एक में सटे हुए बहुत से बाल, साधुओं की जटा, जड़ितकेश, जटामाँसी नामक औषधि विशेष, शतावरि, कपास, मूल।—जूट (पु०) जटा का समूह, संहत बहुत केश, शिव की जटा।—ज्वाल (पु०) प्रदीप, दीपक, महादेव का तीसरा नेत्र।—टङ्क (पु०) महेश, महादेव, रुद्र।—धर (पु०) महादेव, बालक, योगी। एक कोशकार का नाम, बुद्धभेद।—वल्ली (स्त्री०) महादेव की जटा, गन्धमासी नामक एक औषध।—भार (पु०) जटा का भार, जटा समूह,

जटा समुदाय, बहुत लम्बी लम्बी जटा।—मांसी (स्त्री०) ओषधि विशेष, सुगन्ध द्रव्य विशेष, बालछड़।

जटायु तत्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पक्षि विशेष, सम्पाति नामक पक्षिराज का छोटा भाई, महाराज दशरथ का मित्र, सूर्य सारथि अरुण के पुत्र, यह महाराज अयोध्याधिपति दशरथ के मित्र थे। जब पञ्चवटी से रावण सीता जी को हर ले जाता था तब जटायु ने सीता का विलाप सुन कर उनको रावण के हाथ से छुड़ाने के बहुत यत्न किये थे, जटायु ने बड़ी वीरता से युद्ध किया रावण का रथ टूट गया; परन्तु अन्त में रावण के अस्त्रप्रहार से जटायु के पंख कट गये, वे भूमि पर गिर गये। जब राम लक्ष्मण सीता को ढूंढने निकले थे, तब उनकी भेंट जटायु से हुई थी। सीता का समाचार सुना कर जटायु परलोकगामी हुए। श्रीरामचन्द्र ने अपने पिता के मित्र की अन्तिम क्रिया की।

जटाल तत्० (गु०) जटायुक्त, जटाधर, जटाधारी, (पु०) कचूर, वटवृक्ष, बरगद, बर का पेड़, गुग्गुल।

जटाला तत्० (स्त्री०) जटावती, जटावाली, जटामासी, छड़, छर।

जटासुर तत्० (पु०) एक राक्षस का नाम, युधिष्ठिर आदि जब बदरिकाश्रम में रहते थे उस समय यह राक्षस द्रौपदी का हरण करने की इच्छा से वहां आया, और अपने को बड़ा बुद्धिमान् पण्डित बता कर रहने लगा। एक दिन भीमसेन शिकार के लिये वन गये हुए थे। राक्षस युधिष्ठिर, नकुल, और सहदेव के साथ द्रौपदी को बाँध कर ले जाने लगा। संयोगवश भीमसेन से मार्ग में भेंट हो गयी, उन्होंने राक्षस को मार कर अपने भाई और द्रौपदी का उद्धार किया।

जटित तत्० (गु०) जड़ित, जड़ा हुआ, संघट्ट, जड़ाऊ, जटायुक्त।

जटिया दे० (गु०) जटायुक्त, जटाविशिष्ट, जटाधारी।

जटिल तत्० (गु०) जटाविशिष्ट, ज[illegible]धारी, सरलतापूर्वक न समझा जाय, कठिन, कठोर, उलझन की बातें। वटवृक्ष, ब्रह्मचारी, [illegible] एक विष्णुभक्त बालक, इसके विषय में [illegible] बात कही जाती है। यह पाठशाला जाता था। इसकी माता गोविन्द गोविन्द भजन को कहा करती थी। माता के उपदेशानुसार वे गोविन्द नाम का स्मरण करता हुआ [illegible] लगा। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर [illegible] बालक के रूप में उसके साथ खेला करते थे। [illegible] दिन जटिल पाठशाले में ठीक समय [illegible] सामका। गुरु के कारण पूँछने पर उसने [illegible] बता दिया, परन्तु उन्होंने उसकी [illegible] विश्वास नहीं किया, उसको बेंत से पीटा, उसके देह पर बेंत का दाग़ नहीं पड़ा। [illegible] गुरु को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन [illegible] उत्सव था, उन्होंने दही ले आने [illegible] को कह रखा था। ब्राह्मण भोजन [illegible] कुँड़िया दही लेकर बालक पहुँच[illegible] झिड़की सुनाने लगे। उसने कहा [illegible] गोविन्द ने कहा है कि चाहे कित[illegible] इसमें से खायँ परन्तु दही में घ[illegible]गी नहीं [illegible] ऐसा ही हुआ। अब लोगों को [illegible] जटिल के साथ गोविन्द के दर्शन [illegible] प्रमाणुग, गुरु वन में गये।

जटिला तत्० (स्त्री०) राधा की सा[illegible]। यह आयन घोष की माता थी। दुर्म[illegible], एक और इसको पुत्र था और एक [illegible] जिसका नाम कुटिला था। कृष्णप्रणयि[illegible] के चरित्र को यह अत्यन्त कलङ्कित [illegible]

जटी तत्० (पु०) वटवृक्ष, बरगद का पेड़, महादेव।

जटुल दे० (पु०) तिल, मसा, लहसन, शरीर एक चिन्ह।

जठर तत्० (पु०) उदर, पेट, (गु०) बद्ध, कठोर।—ाग्नि (पु०) पेट की आग, अन्न पाला, अग्नि, क्षुधा, बुभुक्षा।—ानल (पु०)

ा, गुभुचा।—मय (पु०) रोग विशेष, जलोदर, ोदररोगी।

तद्० (गु) सख़, दृढ़, कठिन, कठोर।

म तद्० (पु०) जलोदर, जठरामय, जलन्धर।

दे० (पु०) बड़ा, जेठा, अग्रज, (स्त्री०) जठेरी ।, बूढ़ी, मान्या, पूज्या।

त्० (पु०) मूल, कारण, नींव, मूक, मूढ़, ींव, निर्बुद्धि, चलन शक्ति हीन, दुष्ट, अकार्य- ी, पेड़, पर्वत।—क्रिय (गु०) दीर्घसूत्री, ससो, आलस, निरुत्साही।—ता (स्त्री०) ता, अकड़पन, मूढ़ता, मूर्खता।—जन्तु) मूढ़जीव, मूर्ख, निर्बोध, पशु पक्षी, आदि। बुद्धि (गु०) अज्ञान, निर्बोध, मूर्ख, मूढ़। मति (गु०) निर्बुद्धि, मूर्ख।

०० (पु०) गहने जड़ने का काम, गहनों में नि पत्थर आदि जड़ना।

े ०० (क्रि०) जड़ना, लगाना, बैठाना, कट- का पीटना, डाटना, नग बैठाना।

रता ।, (स्त्री०) मूल सहित पेड़, समस्त पेड़, ंत्० (ड।—से उखाड़ना (वा०) जड़मूल से ाय, नि, समूल नष्ट कर देना, निर्मूल कर देना, बतने र उखाड़ डालना।

ुन तद्० (स्त्री०) शून्य, ठूसहा, ठूठा।

त, तद्० (पु०) शालग्राम नामक स्थान के त् ामक राजा किसी वन में वानप्रस्थ आश्रम रख करके रहते थे। एक दिन गङ्गा के निकट, दुःखी मृगशिशु को इन्होंने देखा। दया परवश यह उसे अपने आश्रम में ले आये। उसको ने पोसने लगे। यौंहीं थोड़े दिन बीत गये। त का प्रेम उस मृगशिशु से बहुत अधिक हो । यहां तक कि मरते समय तक भी भरत नहीं भूल सके। उसीका स्मरण करते करते त का प्राण छूट गया। मृगयोनि में भरत का हुआ। परन्तु इनको अपने पूर्व की बातें रण थीं। अतएव अपने पूर्व आश्रम में जा कर ी घास आदि से इन्होंने अपना जीवन बिताया। दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए। विषयोप- भोग आदि सांसारिक विषयों में न फसने के लिये, यह उन्मत्त के वेश में रहने लगे। अपनी विद्या या बुद्धि का परिचय यह किसी को नहीं देते थे। अतएव इनको मूर्ख समझ कर, गाँव वाले काम करा लिया करते थे और कुछ भोजन के लिये इन्हें दे दिया करते थे। पिता की मृत्यु के बाद भाइयों के व्यवहार से यह वन में जाकर भगवद्भजन करने लगे।

जड़हन दे० (पु०) अगहनिया धान, कातिक में कटने वाला धान।

जड़हनिया दे० (पु०) कतिका धान।

जड़ाई दे० (स्त्री०) जड़ने का काम, जड़ने की मजूरी, पच्चीकारी।

जड़ाऊ दे० (गु०) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई किया हुआ। पच्ची किया हुआ, नग जड़ा हुआ, खचित प्रथित, संलग्न।

जड़ाना दे० (क्रि०) जड़ाई कराना, जड़वाना, पच्ची का काम कराना।

जड़ाव दे० (पु०) जड़ने का काम, पच्ची कारी।

जड़ावर दे० (स्त्री०) जाड़े की सामग्री, जाड़े के कपड़े।

जड़ित दे० (गु०) जड़ा हुआ, जड़ित, जड़ाई का काम किया हुआ।

जड़िनी दे० (स्त्री०) जड़ स्त्री, दुष्टा, मूर्खा।

जड़िया दे० (पु०) जड़ने वाला, जौहरी, सुनार।

जड़ी दे० (स्त्री०) मूल, मूरि, बूटि, जड़ी हुई, जड़ दी गयी।—बूटी (स्त्री०) दवाई, औषध, औषधि, दवारी, मूल।

जड़ीभूत तत्० (गु०) स्तम्भित, चकित, आश्चर्यित, हतबुद्धि कृत।

जत दे० (स्त्री०) रीति, आकृति, डौल, ढोल, जो, जितने, जैसे, चाल, रीति, भाँति।

जतन तद्० (पु०) यत्न, उपाय, उद्योग, परिश्रम।

जतनी तद्० (गु०) यत्नी, उद्योगी, उपायी, परिश्रमी।

जताना दे० (क्रि०) सुझाना, चेताना, बताना, समझाना, सुध करना।

जती तद्० (पु०) यती, सन्यासी, शान्त, योगी, भिखारी।

जतु तत्० (स्त्री०) लाख, लाचा, अलक्तक, लाह, पीपल का गोंद।

जतुक तत्० (पु०) लाख, हींग, जतुल।

जतुगृह तत्० (पु०) लाक्षागृह, लाह का गृह, जतुगृह ही में दुर्योधन ने पाण्डवों को बन्द करके आग लगा दी थी।

जत्रु तत्० (पु०) गले की हड्डी, कण्ठला, गले के उपरी भाग की हड्डी, कन्धे की जड़।

जथा तत्० (अ०) यथा, जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों।

जत्था तद्० (पु०) यूथ, मण्डली, दल, समूह, समाज, टोली, झुंड।—**बांधना** (वा०) यूथ बनाना, दल बाँधना, दलबन्दी करना।

जथाथित तद्० (अ०) यथास्थित, ज्यों का त्यों, समुचित, योग्य, पूर्ववत्, जैसा का तैसा।

जथार्थ तद्० (अ०) यथार्थ, ठीक ठीक, बिलकुल ठीक बहुतही ठीक, उचित, बहुत उत्तम।

जथोचित तद्० (अ०) यथायोग्य, यथोचित, जैसा उचित हो, उचित, योग्य, जैसा योग्य हो।

जद तद्० (अ०) जब, यदा।

जदपि तद्० (अ०) यद्यपि, पूर्व कथित वाक्य के अर्थ में कुछ विशेष अर्थ इसके द्वारा कहा जाता है। यद्यपि वे पण्डित हैं, तथापि क्रियावान् न होने के कारण जन समाज में उनका आदर नहीं है।

"मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिले विरञ्चि सम।
फूले फरे न बेंत, जदपि सुधा बरषहि जलद"॥
—रामायण।

जदु तद्० (पु०) चन्द्र वंशी राजा, यादव वंश के प्रवर्तक।

जदुनाथ तद्०, **जदुनायक** तद्०, **जदुपति** तद्० } भगवान् श्री कृष्णचन्द्र।

जदुवंशी तद्० (पु०) यदुवंशी, यादव, यदुकुल के।

जद्यपि तद्० (अ०) जदपि, यद्यपि।

जन तत्० (पु०) मनुष्य, मानव, आदमी, व्यक्ति, लोक, महर्लोक के उपर का लोक।

जनक तत्० (पु०) पिता, जन्मदाता, उत्पन्न करने वाला, मिथिला पुरी के राजा, विदेह का राजा, जनकवंश के पूर्वपुरुष का नाम निमि था। निमि के पुत्र का नाम मिथि। मिथि के राजत्व-काल में विदेह का नाम मिथिला पड़ा था। जनक मिथि के पुत्र थे। इन्हीं जनक के नाम पर कुल का नाम जनक पड़ा। सीता के पिता का नाम सीरध्वज जनक था। सीरध्वज के छोटे भाई का नाम कुशध्वज था।—**तनया** (स्त्री०) जनक की कन्या, सीता, जानकी।—**पुर** (पु०) जनक की राजधानी, मिथिला।—**नन्दिनी** (स्त्री०) सीता —**सुता** (स्त्री०) सीता, जानकी।

जनकौरा तद्० (पु०) जनक राजा के संबन्धी, जनक के कुटुम्बी, जनक के पक्ष का।

जनङ्गम तद्० (पु०) चाण्डाल, अधम जाति, नीच जाति।

जनता तत्० (स्त्री०) लोक, समूह, जनसमुदाय, जनमय।

जनन तत्० [जन् + अनट्] जन्म, उत्पत्ति, वंश, कुल।

जनना दे० (क्रि०) जन्म होना, उत्पन्न होना।

जननी तत्० (स्त्री०) माता, मा, अम्बा, जन्म देने वाली, मैया।

जनपद तत्० (पु०) देश, प्रान्त, प्रदेश, बसतिस्थान, जनस्थान, लोकालय, मनुष्यों की वासभूमि।

जनप्रवाद तत्० (पु०) लोकापवाद, निन्दा फैलाव, निन्दा की चर्चा, तिरस्कार।

जनमेजय तत्० (पु०) राजा परीक्षित के पुत्र, राजा के पुत्र।

जनपिता तत्० (पु०) पिता जनक, बाप,

जनयित्री तत्० (स्त्री०) माता, जननी, अम्बा।

जनरव तत्० (पु०) लोकापवाद, जनप्रवाद, जनश्रुति, ख्याति, प्रसिद्धि, किसी भी बात की चर्चा।

ालोक तत्० (पु०) लोकविशेष, ऊर्ध्वस्थ सप्त पवित्र लोकों में से एक लोक, स्वर्गभेद ।

ावाद तत्० (पु०) सम्वाद, समाचार, घर घर की चर्चा ।

ावासा तद्० (पु०) बरातियों के रहने का स्थान ।

ाश्रुति तत्० (स्त्री०) किंवदन्ती, सन्देशा समाचार ।

ास्थान तद्० (पु०) दण्डकारण्य, दण्डकारण्य के समीपस्थ एक स्थान, जहाँ श्रीरामचन्द्र रहते थे ।

ाहाई दे० (अ०) मनुष्य सहित, प्रत्येक मनुष्य, प्रतिमनुष्य, हर एक, प्रत्येक ।

ा दे० (पु०) जन, मनुष्य लोग ।

ाई दे० (स्त्री०) प्रसूता स्त्री, बच्चा जनने वाली स्त्री, धाय, धात्री ।

ाजात दे० (अ०) जनहाई, परस्पर, अन्योन्य, एक एक से ।

ातिग तत्० (पु०) अतिमानुष, मनुष्य से अधिक, मनुष्य की शक्ति से बाहर की ।

ाधिनाथ तत्० (पु०) नरपति, राजा, विष्णु ।

ना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न करना, जनाना, बेताना, (स्त्री०) स्त्री, नारी, कामिनी ।

ान्तिक तत्० (पु०) अप्रकाश, गोपन, छिपा सम्वाद । नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा । हस्तसङ्केत से केवल एक मनुष्य को अपने पास बुला कर धीरे धीरे बात करना जनान्तिक कहा जाता है ।

ाव दे० (पु०) सैन, सङ्केत, लखाव, चेताव, सूचना, जनाव ।

ाब दे० (पु०) सम्बोधन, श्रीमान्, माननीय, श्रेष्ठ, मान्य, पूज्य ।

ार्दन तत्० (पु०) विष्णु, भगवान्, नारायण, श्रीकृष्ण ।

नि तत्० (स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, उद्भव । दे० नहीं, मत, निषेधार्थक ।

जनिका दे० (स्त्री०) छेकोक्ति, दोहरावा, दो अर्थ कहने वाले शब्द ।

जनित तत्० (पु०) जन्मा, उत्पन्न ।

जनी दे० (स्त्री०) स्त्री, दासी, बहू, वधू, ब्याई हुई ।

जनु तत्० (पु०) जनन, उत्पत्ति, जन्म ।

जनुक दे० (अ०) मानो, जानो, विशेषतः, उपमार्थक ।

जनेऊ दे० (पु०) यज्ञोपवीत, रत्न का दोष, यज्ञसूत्र ।

जनेत दे० (स्त्री०) बरात, बराती, विवाहयात्री ।

जनोदाहरण तत्० (पु०) यश, गौरव, कीर्ति, मान, प्रतिष्ठा ।

जन्ता दे० (पु०) तार खींचने का यन्त्र ।

जन्ताना दे० (क्रि०) निचोड़ना, चापना, दबाना ।

जन्तु तत्० (पु०) प्राणी, जीव, देही, पशु ।

जन्द्रा दे० (पु०) खेती का एक यन्त्र ।

जन्मा दे० (पु०) जन्मना, उपजना, उत्पन्न होना ।

जन्त्र तद्० (पु०) कल, यन्त्र, बाजा, गण्डा, ताबीज, मन्तर, टोटका ।

जन्म तत्० (पु०) उत्पत्ति, जनम, उद्भव ।—द (पु०) जन्मदाता, पिता, जनक ।—दिन (पु०) वर्षगाँठ वर्ष दिन, जन्म की तिथि ।—पत्री (स्त्री०) जन्मकुण्डली, जन्मकुण्डली ।—भूमि (स्त्री०) उत्पत्तिस्थान ।—शोध (पु०) मरण, मृत्यु, जीव धर्म की समाप्ति ।—स्थान (पु०) उत्पत्तिस्थान, स्वदेश ।

जन्माना दे० (क्रि०) उपजाना, उत्पन्न करना ।

जन्मान्तर तत्० (पु०) दूसरा जन्म, द्वितीय जन्म, अन्य जन्म ।

जन्मान्तरीय तत्० (गु०) दूसरे जन्म का, अन्य जन्म सम्बन्धी ।

जन्मान्ध तत्० (गु०) [जन्म+अन्ध] जन्म से अन्धा, आजन्म नेत्रहीन, जन्मावधि दृष्टिविहीन ।

जन्माष्टमी तत्० (स्त्री०) [जन्म+अष्टमी] श्रीकृष्ण की जन्मतिथि, भादों कृष्ण पक्ष की अष्टमी, मतान्तर में श्रावण की कृष्णाष्टमी ।

जन्मोत्सव तत्० (पु०) [जन्म+उत्सव] जन्म दिन का उत्सव, उछाह, वर्षगाँठ ।

जन्य तत्० (गु०) उत्पत्तिशील, उत्पन्न होनेवाला, जाति पुत्र ।—जनकभाव (पु०) उत्पाद्य-

(ज)महाई तद्० (स्त्री०) आलस से हाथ पैर तोड़ना, अङ्गभङ्ग करना, जृम्भा आना।

(ज)महाना तद्० (क्रि०) जमहाई लेना, गात्रविक्षेप, गात्रप्रसारण।

(ज)माई तद्० (पु०) जामाता, दामाद, कन्यापति।

(ज)मात दे० (स्त्री०) समूह, साधुओं का समूह, अखाड़ा, "पवहारी बाबा की जमात"।

(ज)मानत दे० (स्त्री०) ज़िम्मेदारी।

(ज)माना दे० (क्रि०) एकट्ठा करना, राशि करना, बाँधना, यथास्थान रखना, अपने अपने स्थान पर रखना, उत्पन्न करना, प्रभाव फैलाना, प्रभाव जमाना।

(ज)मालगोटा दे० (पु०) एक औषध का नाम, रेचक औषध।

(ज)माव दे० (पु०) भीड़भाड़, समूह, समुदाय।

(ज)मावट दे० (पु०) जुड़ाई, बन्धान, सङ्गठन।

(ज)मीन दे० (स्त्री०) भूमि, पृथिवी, स्थान, सम्पत्ति।

(ज)मीदार दे० (पु०) भूम्यधिकारी, भूस्वामी।

(ज)मुना तद्० (स्त्री०) यमुना नदी, यह नदी गढ़वाल के प्रान्तवर्ती कलिन्द पर्वत से निकली है, दक्षिण की ओर बहती हुई दिल्ली की परिक्रमा करती मथुरा इटावा कालपी होती हुई प्रयाग में गङ्गा से मिली है। चम्बल केन बेतवा ये तीन नदियाँ इस में मिली हैं। महाभारत के समय में इस नदी की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यह सर्वाधिक पुण्य नदी समझी जाती थी। यह नदी गङ्गा की सबसे बड़ी सहायिका है।

(ज)मोगना दे० (क्रि०) सहेजना, सहजाना, अधिकारी को अधिकार सम्भला देना, विश्वासी होना, स्वीकार कराना, जमानत देना।

(ज)मा दे० (क्रि०) बढ़ना, जमना, पनपना, अङ्कुर होना।

(ज)म्पति तद्० (पु०) दम्पति, जायापति, स्त्री पुरुष, नरनारी।

(ज)याल तद्० (पु०) पङ्क, कर्दम, कीचड़, सेवाल, सेयाल।

जम्बीर तद्० (पु०) नींबू, जम्भीरी नींबू।

जम्बुक तत्० (पु०) गीदड़, शृगाल, सियार।

जम्बुमाली तत्० (पु०) राक्षसविशेष, रावण के सेनापति प्रहस्त का पुत्र।

जम्बू तत्० (पु०) जामुन का पेड़ या फल, जम्बू फल। काश्मीर के अन्तर्गत एक नगर, काश्मीर की राजधानी।—द्वीप (पु०) सात द्वीपों में मुख्य द्वीप। इसमें नौ खण्ड हैं, जिसका एक खण्ड यह भारत वर्ष है।

जम्भभेदी तत्० (पु०) जम्भ नामक राक्षस का भेदन करनेवाला, इन्द्र, महेन्द्र।

जम्भीर तद्० (पु०) जम्बीरी, नींबू, मरुवा, मरुवक।

जय तत्० (पु०) जीतना, पराभव करना, पराजित करना, जीत, हराना, आशीर्वाद, प्रार्थना। विष्णु भगवान् के द्वाररक्षक का नाम, जय के छोटे भाई का नाम विजय था। ये दोनों भगवान् विष्णु के द्वाररक्षक थे। एक बार सनक आदि ऋषियों को इन लोगों ने विष्णु दर्शन करने जाने नहीं दिया, जिस कारण महर्षियों ने शाप दिया। पुनः इनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर महर्षियों ने कहा कि "हमारा शाप व्यर्थ नहीं हो सकता, तथापि तुम लोग विष्णु से शत्रुता या मित्रता करके मुक्त हो सकते हो। महर्षियों के शाप से जय, सत्ययुग में हिरण्याक्ष, त्रेता में रावण और द्वापर में शिशुपाल हुआ था; विजय सत्ययुग में हिरण्यकशिपु, त्रेता में कुम्भकर्ण और द्वापर में दन्तवक्र हुआ था। इन लोगों ने तीनों जन्म में भगवान् से शत्रुता की और भगवान् के द्वारा मारे जाकर मुक्त हुए।—जयकार (पु०) जीत, अभ्युदय, आशीर्वादार्थक।—पताका (स्त्री०) जयध्वनि, जय का झण्डा, जयका निशान, जय ध्वजा।—पत्र (पु०) अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के सिर पर बंधा हुआ लेख, विवाद में जयबोधक पत्र, जीतपत्र।—मङ्गल (पु०) राज वाहन नामक हस्ती, ज्वरनाशक औषधि, व्रतविशेष।

उत्पादक भाव, पिता पुत्र भाव, नैयायिकों का एक सम्बन्ध विशेष।

जप तद्० (पु०) पुनः पुनः कथन, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार बार देवता का नाम स्मरण करना, जप करना, जपना।—**कारी** (पु०) जापक, जप करने वाला।—**तप** (पु०) पूजा, अर्चा, भजन, सदाचार, पूजा पाठ।—**नीय** (गु०) जप करने योग्य, जप्य, मन्त्र।—**परायण** (गु०) जपासक्त, जापक, जप करनेवाला, जपनशील। —**माला** (स्त्री०) जप करने की माला, अक्षमाला, जपसूत्र, स्मरणी, सुमिरनी, १०८ दाने की माला।—**माली** (स्त्री०) गोमुखी, एक प्रकार की थैली जिसमें माला रखकर जप किया जाता है।

जपत तद्० (पु०) जपता हुआ, जप करता हुआ, माला जपता हुआ।

जपन तद्० (पु०) देवता का नाम स्मरण, जप।

जपना तद्० (क्रि०) जप करना, मन्त्र का उच्चारण करना।

जपन्ता तद्० (गु०) जप करने वाला, जापक।

जपा तद्० (स्त्री०) जवा पुष्प का वृक्ष, गुड़हल का फूल।

जपीतपी तद्० (पु०) पूजक, अर्चक, भजनानन्द, जपतपपरायण, तपसी, तपस्वी।

जप्त तद्० (गु०) [जप्+त] जपित, जप किया हुआ।

जब दे० (अ०) यदा, जिस समय, जिस काल। —**तक** (अ०) यावत्, जिस समय तक। —**तलक** (अ०) जब तक।

जबड़ा दे० (पु०) जभा, चौहड़, जभड़ा।

जबदना दे० (क्रि०) पूर्ण होना, भर जाना, भरा रहना, सुन न पड़ना, कान का जबदना।

जबद्दा दे० (गु०) अनाड़ी, भोंदू, नासमझ, जड़।

जबह्यिा दे० (गु०) कुरूप, असुन्दर, भद्दा, कुश्री, कुत्सित आकार वाला।

जब न तब दे० (अ०) अनियमित, विना समय से, सदा, सर्वदा।

जब लग दे० (अ०) जिस समय तक, जब जब लौं।

जभा दे० (पु०) जबड़ा, चौहड़।

जमकना दे० (क्रि०) जम जाना, सख्त बना रहना, निभना, निबहना, ठहरना।

जमकाना दे० (क्रि०) एकट्ठा करना, एकत्रित करना, राशि करना।

जमघट दे० (पु०) भीड़, मण्डली, युथ, झुण्ड।

जमजम दे० (अ०) सदा, निरन्तर, ठहर ठहर रह रह कर।

जमदग्नि तद्० (पु०) एक ऋषि का नाम, परशुराम का पिता। महर्षि ऋचीक के पुत्र, वैदिक ऋषि थे। ऋग्वेद के सूक्तों से जाना जाता कि जमदग्नि और विश्वामित्र, महर्षि वशिष्ठ विपक्षी थे। इनका विवाह राजा प्रसेनजित् कन्या रेणुका से हुआ था। जमदग्नि के पाँच थे। रूमण्वान्, सुषेण, वसु, विश्वावसु, और यही राम परशु धारण करने के कारण परशुराम नाम से प्रसिद्ध हुए थे। परशुराम सब से छोटे थे, तथापि इनके गुण सब से बड़े महर्षि जमदग्नि कार्तवीर्य के हाथ मारे गये।

जमदूत तद्० (पु०) यमदूत, मृत्यु के दूत, चिन्ह, जो मरने के पहले होते हैं।

जमदीया तद्० (पु०) यमदीपक, अर्थात् कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो जम के नाम से घर बाहर जलाया जाता है।

जमधर तद्० (पु०) कटार, बिछुआ, अत्यन्त तीखी नोक वाली एक प्रकार की छुरी।

जमना दे० (क्रि०) उत्पन्न होना, निकलना, उगना, अङ्कुरित होना। बढ़ना। दृढ़ होना, गाढ़ा घन होना, दही का जमना, पानी का आदि।

जमराज तद्० (पु०) यमराज, धर्मराज, पाप पुण्य के व्यवस्थापक एक देवता। विशेष, दक्षिण दिशा के स्वामी।

छोड़ कर अन्य पाण्डवों को तुम जीत सकते हो। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु वध के समय, चक्रव्यूह के रक्षक जयद्रथ ही थे, उसी वर के प्रभाव से इन्होंने युधिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया। अर्जुन येही नहीं, वह संशप्तक के साथ लड़ रहे थे। पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शन-चक्र से सूर्य को छिपा लिया। कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी, अब अर्जुन स्वयं मर जायगा। परन्तु थोड़ीही देर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया, सूर्य की किरणें चमकने लगीं, अर्जुन ने जयद्रथ का शिर काट डाला। जयद्रथ के पिता ने वर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का सिर भूमि पर गिरावेगा उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का सिर उनके पिता वृद्धक्षत्र की गोद में रख दिया, उस समय वृद्धक्षत्र कुरुक्षेत्र के पास स्यमन्तपञ्चक स्थान में तपस्या करते थे। जयद्रथ का सिर उन्हीं से भूमि पर गिरा, अतएव उनका भी सिर खण्ड खण्ड हो गया। जयद्रथ के पुत्र का नाम सुरथ था।

जयनगर तत्० (पु०) राजपूताने की पुरानी राजधानी।

जयन्त तत्० (पु०) १—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम।

२—इन्द्र का पुत्र, पारिजातहरण के समय इसने और कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से युद्ध हुआ था। इसीने सीता के चोंच मारी थी।

जयन्ती तत्० (स्त्री०) गौरी, इन्द्रपुत्री, पताका, वृक्षविशेष, दुर्गा देवी, अपराजिता, योगविशेष, नागविशेष, किसी प्रसिद्ध देव-चरित मनुष्य की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में उत्सव, भगवान् के अवतारों के जन्म की तिथि का महोत्सव।

जयन्तीपुर तत्० (पु०) सिलहट से दश कोस की दूरी पर का एक नगर, जिसे जयन्ता भी कहते हैं।

जयपाल तत्० १—(पु०) लाहौर का प्रसिद्ध हिन्दू राजा ९७७ ई० में गज़नी का सुबक्तगिन इन पर चढ़ आया। उसने पेशावर को अपने अधीन कर लिया। ५० हाथी और १० लाख रुपया दण्ड लेकर पुनः लौट गया। पुनः १००१ में उसके पुत्र महमूद ने जयपाल पर चढ़ाई की, इस युद्ध में यह क़ैद भी हो गये थे, परन्तु वार्षिक कर देने की प्रतिज्ञा कर छूट गये। दो बार इस प्रकार की हार से यह दुःखी हो कर अग्नि में प्रवेश कर मर गये। इन्होंने अपने पुत्र अनङ्गपाल को राजगद्दी दे दी थी।

(२) अनङ्गपाल का पुत्र और पहले जयपाल का पौत्र। १०१३ ई० में पिता के मरने के बाद यह लाहौर के सिंहासन पर बैठे थे। १०२२ ई० में इनको भी महमूद गज़नवी ने पराजित कर के लाहौर को अपने अधीन कर लिया। यही मुसल्मानों के भारत में भावी साम्राज्य की नींव थी। मालूम होता है पिता के चरित्रों को खूब जानने पर भी अनङ्गपाल ने अपने पुत्र का नाम हारने के लिये ही जयपाल रक्खा था।

जयबेर दे० (अ०) कै बार, कितने बार, कितनी दफे।

जयमल (पु०) १—प्रसिद्ध राजपूत वीर। यह बदनौर के राजा थे, बदनौर मेवाड़ का एक सामन्त राज्य है, राणा साँगा के पुत्र कहाने वाले, क्षत्रिय-कलङ्क उदयसिंह जब अकबर के डर से चित्तौर छोड़ कर भग गये, तब वीर श्रेष्ठ जयमल और वीरवर पुत्त ने मातृभूमि की रक्षा करने के लिये बड़ी वीरता से लड़े थे। इनकी युद्ध-कुशलता देखकर मोगलों के छक्के छूट गये। परन्तु असंख्य सेना के सामने दो आदमी क्या वस्तु होते हैं। १५६८ ई० में देश के लिये वीर श्रेष्ठ जयमल रण भूमि में सर्वदा के लिये सोगये। यद्यपि अकबर ने स्वार्थ-साधन के लिये अति निन्दित उपाय से इस वीर को मारा था, तथापि इनकी वीरता की प्रशंसा उसे करनी ही पड़ी, इनकी पत्थर की मूर्ति बना कर उसने दिल्ली में स्थापित की थी। (२) भाग-

जयचन्द्र तत्० (पु०) कन्नौज का अन्तिम राजा। यह विजयचन्द्र का पुत्र था। दिल्ली के राजा अनङ्गपाल की पुत्री से विजयचन्द्र और अजमेर के राजा सोमेश्वर का विवाह हुआ था। सोमेश्वर के पुत्र का नाम पृथ्वीराज, पृथ्वीराज और जयचन्द्र दोनों दिल्लीपति अनङ्गपाल के दौहित्र थे। अनङ्गपाल पृथ्वीराज को अधिक चाहते थे। उनके कोई पुत्र नहीं था, अतएव उन्होंने दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को दिया। इससे जयचन्द को बड़ा दुःख हुआ। इन्होंने पृथ्वीराज को राज्यच्युत करने का दृढ़ सङ्कल्प कर लिया। जयचन्द प्रतापी राजा थे, उन्होंने नर्मदा नदी के किनारे तक अपना राज्य फैलाया था। अपनी कन्या संयोगिता के विवाह के लिये उन्होंने स्वयम्बर रचा, स्वयम्बर में सभी राजाओं को निमन्त्रण भेजा गया, परन्तु पृथ्वीराज और इनके बहनोई मेवाड़ के महाराणा समरसिंह को निमन्त्रण नहीं भेजा गया। पृथ्वीराज का तिरस्कार करने के लिये उनकी मूर्ति को पहरुआ बना कर द्वार पर जयचन्दने खड़ा कर दिया था। दैवयोग से संयोगिता ने उसी पीतल की मूर्ति को ही जयमाला पहना दी। यह सुन कर पृथ्वीराज संयोगिता को ले गया। जयचन्द ने इसका बदला लेने के लिये गज़नी के शहाबुद्दीन-ग़ोरी को ११९१ ई० में दिल्ली पर आक्रमण करने को बुलाया। उनका पानीपत के समीप पृथ्वीराज से युद्ध हुआ, पृथ्वीराज विजयी हुए, गज़नी का लुटेरा हूँछे हाथ फिर गया। दो वर्ष के बाद पुनः उसने दिल्ली पर चढ़ाई की। अब की बार भी वहीं लड़ाई हुई, इस युद्ध में पृथ्वीराज हार गये। जयचन्द भी पृथ्वीराज से बदला लेकर सुखी नहीं हुआ। उस पर भी मुसल्मानों ने चढ़ाई की, वह हार कर भगा, नाव पर चढ़ कर नदी पार करता था कि नाव डूब गयी, साथ ही साथ जयचन्द भी डूब गया; परन्तु उसका अधर्म नहीं डूबा।

जयत दे० (पु०) वृषविशेष।

जयति तत्० (क्रि०) यह संस्कृत की एक क्रिया। इसका अर्थ है जीतना, हिन्दी में भी प्रयोग रामायण आदि में पाया जाता है।

जयदेव तत्० (पु०) १—यह एक प्रसिद्ध भक्त हैं। संस्कृत का गीतगोविन्द नामक गीत इन्हीं का बनाया है, बङ्गाल में मानभूमि जिले केन्दुलि (किन्दुबिल्व) नामक गाँव के रहने वाले थे। इनकी माता का नाम वामादेवी और पिता का नाम भोजदेव था। यह बङ्गाल के [illegible] राजा लक्ष्मणसेन की सभा में रहते थे। [illegible] लक्ष्मणसेन का सन् १११६ ई० माना जाता है। अतः उनके साथी जयदेव के समय के विषय में सन्देह करने का कोई कारण नहीं है।—

२—यह प्रसन्नराघव नामक नाटक के रचयिता हैं। यह विलक्षण कवि और नैयायिक थे। इनकी माता का नाम सुमित्रा और पिता का नाम महादेव था। इन्होंने अपने को कौण्डिन्य लिखा है। कौण्डिन्य का अर्थ कौण्डिन्य गोत्र, अथवा कुण्डिनपुर निवासी है, इसका निश्चय करना कठिन है। परन्तु कौण्डिन्य गोत्र ही उसका ठीक अर्थ जान पड़ता है। इनका दूसरा नाम पक्षधरमिश्र और पीयूषवर्ष भी था। चन्द्रालोक नामक अलङ्कार ग्रन्थ भी इन्हीं का बनाया है। इनके [illegible] समय का अभीतक ठीक पता नहीं है। [illegible] १५-वीं शताब्दी में इनका होना अनुमान किया जाता है।

जयद्रथ तत्० (पु०) सिन्धु देश के राजा, दुर्योधन की बहिन दुःशला इनको ब्याही थी। इनके पिता का नाम वृहद्रथ था। जब पाण्डव [illegible] वन में रहते थे, उस समय इन्होंने द्रौपदी को कुटी में अकेली देख हरना चाहा था, परन्तु उसी समय कहीं से भीमसेन पहुँच गये। उन्होंने जयद्रथ की बड़ी अप्रतिष्ठा की, जयद्रथ का सिर मुंड़ कर वहां से निकाल दिया। जयद्रथ ने घोर तपस्या की, शिव जी ने प्रसन्न होकर वर माँगने के लिये कहा तो उसने एकही समय पाँचों पाण्डवों को जीतने की इच्छा प्रकट की। शिव जी ने कहा, अर्जुन [illegible]

छोड़ कर अन्य पाण्डवों को तुम जीत सकते हो। महाभारत के युद्ध में अभिमन्यु वध के समय, चक्रव्यूह के रक्षक जयद्रथ ही थे, उसी वर के प्रभाव से इन्होंने युधिष्ठिर आदि को भीतर नहीं जाने दिया। अर्जुन येही नहीं, वह संसप्तक के साथ लड़ रहे थे। पुत्रवध सुन के अर्जुन ने सूर्यास्त के पहले ही जयद्रथ का वध करने की प्रतिज्ञा की। दुर्योधन के वीरों ने जयद्रथ की रक्षा करने की चेष्टा की, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण ने सुदर्शन-चक्र से सूर्य को छिपा लिया। कौरवों ने समझा कि सन्ध्या हो गयी, अब अर्जुन स्वयं मर जायगा। परन्तु थोड़ीही देर में उनका विश्वास नष्ट हो गया, सुदर्शनचक्र को भगवान् ने हटा लिया, सूर्य की किरणें चमकने लगीं, अर्जुन ने जयद्रथ का शिर काट डाला। जयद्रथ के पिता ने वर दिया था कि जो कोई हमारे पुत्र का सिर भूमि पर गिरावेगा उसका सिर टुकड़े टुकड़े हो जायगा। इसी कारण अर्जुन ने जयद्रथ का सिर उनके पिता वृद्धक्षत्र की गोद में रख दिया, उस समय वृद्धक्षत्र कुरुक्षेत्र के पास स्यमन्तपञ्चक स्थान में तपस्या करते थे। जयद्रथ का सिर उन्हीं से भूमि पर गिरा, अतएव उनका भी सिर खण्ड खण्ड हो गया। जयद्रथ के पुत्र का नाम सुरथ था।

जयनगर तद्० (पु०) राजपूताने की पुरानी राजधानी।

जयन्त तद्० (पु०) १—अयोध्याराज के एक मन्त्री का नाम।

२—इन्द्र का पुत्र, पारिजातहरण के समय इससे और कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न से युद्ध हुआ था। इसीने सीता के चोंच मारी थी।

जयन्ती तद्० (स्त्री०) गौरी, इन्द्रपुत्री, पताका, वृक्षविशेष, दुर्गा देवी, अपराजिता, योगविशेष, नगरविशेष, किसी प्रसिद्ध देव-चरित मनुष्य की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में उत्सव, भगवान् के अवतारों के जन्म की तिथि का महोत्सव।

जयन्तीपुर तद्० (पु०) सिलहट से दश कोस की दूरी पर का एक नगर, जिसे जयन्ता भी कहते हैं।

जयपाल तद्० १—(पु०) लाहौर का प्रसिद्ध हिन्दू राजा ९७७ ई० में गज़नी का सुबुक्तगिन इन पर चढ़ आया। उसने पेशावर को अपने अधीन कर लिया। ५० हाथी और १० लाख रुपया घूस लेकर पुनः लौट गया। पुनः १००१ में उसके पुत्र महमूद ने जयपाल पर चढ़ाई की, इस युद्ध में यह क़ैद भी हो गये थे, परन्तु वार्षिक कर देने की प्रतिज्ञा कर छूट गये। दो बार इस प्रकार की हार से यह दुखी हो कर अग्नि में प्रवेश कर मर गये। इन्होंने अपने पुत्र अनङ्गपाल को राजगद्दी दे दी थी।

(२) अनङ्गपाल का पुत्र और पहले जयपाल का पौत्र। १०१३ ई० में पिता के मरने के बाद यह लाहौर के सिंहासन पर बैठे थे। १०२२ ई० में इनको भी महमूद गज़नवी ने पराजित कर के लाहौर को अपने अधीन कर लिया। यही मुसल्मानों के भारत में भावी साम्राज्य की नींव थी। मालूम होता है पिता के चरित्रों को खूब जानने पर भी अनङ्गपाल ने अपने पुत्र का नाम हारने के लिये ही जयपाल रक्खा था।

जयफेर दे० (अ०) जै बार, जितने बार, जितनी दफे।

जयमल (पु०) १—प्रसिद्ध राजपूत वीर। यह बदनौर के राजा थे, बदनौर मेवाड़ का एक सामन्त राज्य है, राणा साँगा के पुत्र कहाने वाले, क्षत्रिय-कलङ्क उदयसिंह जब अकबर के डर से चित्तौर छोड़ कर भग गये, तब वीर श्रेष्ठ जयमल और वीरवर पुत्त ने मातृभूमि की रक्षा करने के लिये बड़ी वीरता से लड़े थे। इनकी युद्ध-कुशलता देखकर मोगलों के छक्के छूट गये। परन्तु असंख्य सेना के सामने दो आदमी क्या वस्तु होते हैं। १५६८ ई० में देश के लिये वीर श्रेष्ठ जयमल रण भूमि में सर्वदा के लिये सोगये। यद्यपि अकबर ने स्वार्थ-साधन के लिये अति निन्दित उपाय से इस वीर को मारा था, तथापि इनकी वीरता की प्रशंसा उसे करनी ही पड़ी, इनकी पत्थर की मूर्ति बना कर उसने दिल्ली में स्थापित की थी। (२) भक्त-

माल में भी एक जयमल राजा की कथा लिखी है। यह विष्णु-भक्त थे। बड़ी आपत्ति के समय भी यह विष्णु-पूजन नहीं छोड़ते थे। किसी राजा ने इन पर चढ़ाई की, उस समय यह विष्णु पूजन कर रहे थे। यह लड़ने नहीं गये, उस राजा की सेना छिन्न भिन्न होने लगी। देखते देखते ही केवल एक वही राजा ही बच गये। उन्होंने जयमल से इन सब का कारण पूछा। अन्त में वह भी विष्णु भक्त हो गया।

जयवन्त तद्० (पु०) जय करने वाला, जीतने वाला, जयी।

जयवती तत्० (स्त्री०) अग्नि की सप्त जिह्वा के अन्तर्गत एक जिह्वा (गु०) जीतने वाली, जय करने वाली।

जया तत्० (स्त्री०) दुर्गा, जयन्ती वृक्ष, तिथि विशेष, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी, हरीतकी, दुर्गा की सखी, विजया, अग्निमन्थवृक्ष, नीलदूर्वा, पताका विशेष।—न्तराय (पु०) [जय+अन्तराय] जय का विघ्न, जय का विरोधी।—वह (गु०) [जय+आवह] जय देने वाला, जीत कराने वाला।

जयी तत्० (गु०) जेता, विजयी, शत्रु-पराभव-कर्ता, पराजयकर्ता, जयवान्।

जय्य तत्० (गु०) जय करने के योग्य, जय करने के समर्थ, जयोपयुक्त, जिसका जय किया जा सके।

जर तद्० (स्त्री०) ज्वर, तप, ताप, बुखार।

जरठ तद्० (पु०) कठिन, निठुर, प्राचीन, पुराना, बुड्ढा, कठोर।

जरण तत्० (पु०) हिङ्गु, जीरा, जलन, बुढ़ापा, कुष्ठरोग की औषधि, कूट, काला जीरा, कृष्ण-जीरक। (गु०) जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बुड्ढा।

जरत तत्० (पु०) बूढ़ा, वृद्ध, पुराना, जीर्ण, डोकरा, प्राचीन।

जरती तत्० (स्त्री०) वृद्धा, बुड्ढी, प्राचीना, डोकरी।

जरत् तत्० (गु०) वृद्ध, प्राचीन, पुरातन, जीर्ण।

जरत्कारु तत्० (पु०) मुनि विशेष। नागराज वासुकी के भगिनीपति, वासुकी की भगिनी का नाम भी जरत्कारु ही था। (आस्तिक देखो) एक दिन स्त्री जरत्कारु ने पति जरत्कारु को निद्रा से उठाया, इसी कारण क्रुद्ध होकर जरत्कारु घर से निकल पड़े। उनके जाने के समय उनकी स्त्री विलाप करने लगी, उन्होंने कहा "अस्ति" अर्थात् तुम्हारे गर्भ में पुत्र है। इसी से उनके पुत्र का नाम आस्तिक पड़ा।

जरद्गव तद्० (पु०) बूढ़ा बैल।

जरना दे० (क्रि०) जलना, दग्ध होना, भस्म होना, झुलसना।

जरा तत्० (स्त्री०) १—अधिक अवस्था होने से, बालों का गिरना, शरीर के मांस का शिथिल होना, वृद्धावस्था, चौथावयस, चौथापन। एक राक्षसी का नाम, इस ने मगध के राजा जरासन्ध के शरीर को जोड़ दिया था ब्रह्मा ने इसका नाम गृह देवी रखा था इसी को लोग षष्ठी देवी के नाम से पूजते हैं।

२—(पु०) एक व्याध, यादववंश लोप होने पर वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न श्रीकृष्ण को इसी व्याध ने मृग समझ कर मारा था। लोग कहते हैं यह व्याध पूर्व जन्म का वालिपुत्र अङ्गद था।

जरांश तद्० (पु०) ज्वरांश, ज्वर का भाव, ज्वर की पूर्वावस्था, सामान्यज्वर, हुरारत, जूड़ी, बुखार।

जरातुर तत्० (गु०) [जरा+आतुर] जीर्ण, दुर्बल, बूढ़ा, डोकरा, जरारोगग्रस्त।

जराना दे० (क्रि०) जराना, जारना, बालना, जलावना, दग्ध करना, भस्म करना।

जरायु तत्० (पु०) गर्भवेष्टन चर्म, गर्भाशय, गर्भस्थान, झिल्ली।

जरायुज तत्० (गु०) [जरायु+जन्+ड] गर्भजात, गर्भोत्पन्न, पिण्डज, मनुष्य आदि, चतुर्विध जीवों में श्रेष्ठ जीव।

जरावस्था तत्० (स्त्री०) [जरा+अवस्था] वार्द्धक्यावस्था, वृद्धावस्था, जीर्णावस्था, बुढ़ाई।

जरासन्ध तत्० (पु०) [जरा+सन्ध] मगध का प्रसिद्ध और पराक्रमी राजा। इसके पिता का नाम

बृहद्रथ था, राजा बृहद्रथ ने पुत्र के लिये तपस्या की थी, । प्रसन्न होकर देवता ने उनको एक फल दिया और कहा कि यह फल अपनी रानी को खिला दो, अवश्य ही पुत्र होगा। बृहद्रथ की दोनों रानियों ने उस फल को आधा आधा चीर कर खाया, अतएव उनके आधा २ अर्थात् शरीर का एक २ भाग पृथक् पृथक् उत्पन्न हुआ। राजा बृहद्रथ ने उन फाँकों को फिकवा दिया। जरा नाम की एक राक्षसी वहाँ रहती थी, उसने उन टुकड़ों को जोड़ कर एक शरीर बना दिया, और वह पुत्र राजा को देकर उसने कहा आप का यह पुत्र पराक्रमी होगा । जरासन्ध की अस्ति और प्राप्ति नाम की दो कन्यायें कंस को ब्याही गयी थीं, कंस के मरने पर इसने मथुरा पर चढ़ाई की थी। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय यह भीम के द्वारा मारा गया।

ी दे० (स्त्री०) कारचोबी, सुनहले तारों का काम, कामदानी।

ीब दे० (स्त्री०) एक प्रकार की बर्छी या भाला, जो लकड़ी की होती है। ज़मीन नापने की डोरी जो प्रायः ६० गज़ अथवा इससे भी अधिक लम्बी होती है।

ःथ दे० (पु०) मांस, पल, विशित, चमड़खाई।

ःर दे० (अ०) आवश्यक, अवश्य, प्रयोजन।

ंर तत्० (पु०) जरातुर, जीर्ण, विदीर्ण, क्षय, विलयुक्त, सरन्ध्र, विभक्त, बँटा|हुआ, जौजर,। (पु०) शैलज नामक औषधि विशेष, इन्द्रध्वज, इन्द्र का झण्डा।

ंरी तत्० (स्त्री०) लहसन, तिल।—का (गु०) बहु छिद्र युक्त वस्तु, झांझर, जीर्ण, जर्जर, जरातुर, खर्खरा, खड़बड़, ठमड़-खाबड़।—कृत (गु०) नष्ट-शक्ति, क्षीण-शक्ति, सामर्थ्य-रहित, क्षीण-सामर्थ्य।

ं तत्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, वृक्ष। (गु०) जीर्ण, पुराना, सड़ागला, फटा पुराना।

ंतिल तत्० (पु०) वनैला तिल, वन में उत्पन्न हुआ तिल, वनतिल, वनजात तिल।

जर्दा दे० (गु०) पीतवर्ण, पीलारङ्ग, खाने की तम्बाकू।

जल तत्० (न०) पानी, अप् वारि, पञ्चभूत के अन्तर्गत भूत विशेष, सलिल। (गु०) जड़, हिताहित ज्ञानशून्य।—अलि (पु०) पानी का भ्रमर, पानी का भौंरा।—कण्टक (पु०) पानीफल, सिंघाड़ा।—कन्द (पु०) सिंघाड़ा।—कपि (न०) जलजन्तु विशेष, शिशुमार, सूस।—कमल (पु०) उत्पल, पद्म।—करङ्क (पु०) नारिकेल फल, पद्म पुष्प, कमल, शङ्ख, घोंघा, कौड़ी, वराटिका, मेघ, तरङ्ग।—कल्मष (पु०) जल का विष, समुद्र मन्थन से उत्पन्न विष।—कष्ट (पु०) सूखा, अनावृष्टि, अल्पजल।—काक (पु०) पक्षि विशेष। कामा (स्त्री०) कंधाहोली, वृक्षविशेष।—किराट (पु०) हिंस्र जलजन्तु।—कुक्कुट (पु०) जल विहङ्गम, जलमुर्गा।—कूकड़ (पु०) पनडूबा, पंडुक, पक्षिविशेष। कूपी (स्त्री०) कूप, गर्त, गढ़ा, पोखरा, पुष्करिणी, भँवर, तलाव।—कूर्म (पु०) जल जन्तु विशेष, जल कपि, शिशुमार, सूस, सूसमार।—क्रिया (स्त्री०) देवता के लिये जल प्रदान, उदकतर्पण।—क्रीड़ा (स्त्री०) जलाशय में बराबर वालों के साथ जल छिड़कना रूप खेल। —खानि (पु०) मेघ, समुद्र, नदी।—गुल्म (पु०) भंवर, कछुआ, तलाव।—चर (पु०) जलजन्तु, जल में रहने वाले प्राणी।—चरकेतु (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ, मीनध्वज, कामदेव की ध्वजा पर मछली का निशान है इसी कारण उनको जलचरकेतु मीनध्वज आदि कहते हैं। —चारी (पु०) मत्स्य, जलजन्तु।—छत्र (पु०) प्रपा, पनशाल, प्याऊ, जहाँ पथिकों को जल पिलाया जाता है। जलदानस्थान।—ज (पु०) पद्म, शङ्ख, कमल, अम्भोज (गु०) जल में उत्पन्न होने वाले पदार्थ।—जला (गु०) क्रोधी, कुँभलिया, पिलपिल।—जलाना (क्रि०) कुँभलाना, रिसाना, क्रोध करना।—जात (गु०) जल में उत्पन्न, सलिलजात।—डिम्ब (पु०) शम्बूक, सीप, दो कपाटी कौड़ी।—तरङ्ग (पु०)

ऊर्मि, वीचि, लहर, धातुमय वाद्य यन्त्र विशेष, —तरण (पु०) तैरना, नाव या जहाज से पार जाना, नाव या जहाज चलाने की विद्या।—त्र (पु०) जल से बचाने वाला, छाता, छत्र। -थल (पु०) जल और स्थल।—द (पु०) मेघ, जलधर, घटा, बादल, घन, वारिद, मोथा, घास, कपूर, घड़ा। (गु०) जलदान कर्ता, जल देने वाला। —दागम (पु०) वर्षाकाल प्रावृट् काल, पावस ऋतु।—दाभ (गु०) मेघतुल्य, मेघ के समान, मेघोपम।—देवता (पु०) वरुण, जल के अधिष्ठाता देवता।—दोष (पु०) पानी की विकृति से रोग होना, कोषवृद्धि रोग, अण्डवृद्धि, पानी लगना, जल विकार।—धर (पु०) मेघ, समुद्र, सागर, एक प्रकार की घास। (गु०) पानी रखने वाला।—धारा (स्त्री०) झरना, प्रवाह, सोता, स्रोत, पानी का गिरना।—धि (पु०) समुद्र, सागर, दश शङ्कु संख्या, शतलक्ष, कोटि।—धिजा (स्त्री०) कमला, लक्ष्मी, विष्णुप्रिया।—निकास (पु०) जल निकलने का स्थान, जहां से होकर जल निकलता है, मोरी, पनाला।—निधि (पु०) समुद्र, सागर, वारिधि।--निर्गम (पु०) गृह आदि से जल निकलने का मार्ग, मोरी, पनाला, पानी का निकास।—नीम (पु०) ब्रह्मी, औषध विशेष। —न्धर (पु०) असुरराज, राक्षसराज। इन्द्र एक बार शिव के दर्शन करने गये। वहां एक वृहदाकार मनुष्य बैठा हुआ था। इन्द्र ने उससे शिवजी के विषय में पूछा। कुछ उत्तर न पाने से रुष्ट होकर इन्द्र ने उस मनुष्य के सिर पर वज्र मारा, मारते के साथ हीं अग्निकण उसके मस्तक से निकलने लगे, इन्द्र व्याकुल हो गये, उन्हें मालूम हुआ कि मैंने शिव को ही मारा है। अतएव उन्होंने स्तुति की, स्तुति से प्रसन्न होकर शिव ने उस अग्नि को समुद्र में फेंक दिया। उसी अग्नि से एक लड़का उत्पन्न हुआ। जिसके रोने से संसार वधिर होने लगा। इसका समाचार सुन ब्रह्मा वहां आये, समुद्र ने उस बालक को ब्रह्मा के हाथ समर्पित [illegible] और उसको पालन करने के लिये लड़का ब्रह्मा की गोद में खेला करता था, एक दिन उसने ब्रह्मा की मूछें पकड़ कर खींची। ब्रह्मा की आँखों से जल धारा निकल पड़ी, इसी कारण ब्रह्मा ने उस लड़के का नाम जालन्धर रख दिया। ब्रह्मा ने उस लड़के को वर दिया, कि शिव के अतिरिक्त दूसरा कोई उसको नहीं मार सकता। ब्रह्मा ने उसको असुरों का राजा बनाया। उसने इन्द्र को राज्यच्युत कर इन्द्रासन को अपने अधिकार में कर लिया। इन्द्र शिव की शरण गये। शिव ने उसका बध कर के इन्द्र को स्वर्ग राज्य दिला दिया।--पति (पु०) वरुण, समुद्र, सागर।—पाई (पु०) वृक्ष और फल विशेष।—पात्र (पु०) लोटा, घड़ा। —पान (पु०) कलेवा, कल्प, सबेरे का भोजन। —प्राय (पु०) जलमय, जलस्थ।—प्लुव (पु०) जलनकुल, उदबिलाव।—पल (गु०) दग्ध, भस्म, आग से नष्ट।—बही (स्त्री०) पैराव, तैराव, हेलाव।—मय (पु०) जलामई, जलप्रलय, पानी पानी।—मानुष (पु०) जलजात मनुष्य, जल और स्थल में चलने वाला मनुष्य। —मार्जार (पु०) जलबिडाल, उदबिलाव। —लता (स्त्री०) तरङ्ग, लहर।—रङ्ग (पु०) वक, बगुला।—विडाल (पु०) उदबिलाव। —विषुव (पु०) तुलासंक्रान्ति। -शयन (पु०) जल में सोना, विष्णु का जल शयन।—सूत (स्त्री०) नहारवा, जलजन्तु विशेष।—सैनी (स्त्री०) जलशयिनी, एकादशी, जिस दिन भगवान् विष्णु शयन करते हैं, ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी।—हरी (स्त्री०) जलधरी, महादेव पर जल धारा चढ़ाना।

जलक तद्० (पु०) वराटिका, कौड़ी, शुक्तिका, सीप, घोंघा।

जलन दे० (पु०) ज्वलन, तप।

जलना दे० (क्रि०) बरना, दग्ध होना, दहना।

जलवैया दे० (पु०) जलने वाला, दग्ध।

जल [illegible] दे० (वा०) जल जाना, भड़क उठना, [illegible] जाना।

जलबुझना दे० (वा०) राख हो जाना, क्रोध से अंगार हो जाना। प्रतीकार न कर सकने के कारण अत्यन्त दुःखी होना।

जला दे० (पु०) झील, तालाब, सर, सरोवर, पोखरा।

जलाकर तत्० (पु०) [जल + आकर] सोत, स्रोत, झरना, नाव बाँधने का लोहा।

जलाखु तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, जल नकुल, ऊदबिलाव, जल बिलाई।

जलाञ्चल तत्० (पु०) झरना, नाला, सोता, स्रोत।

जलाञ्जलि तत्० (स्त्री०) तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल, करपुट-गृहीत-जल, मृतक के उद्देश्य से जलदान।

जलाधार तत्० (पु०) पुष्करिणी, वापी, तड़ाग, जलाशय।

जलाना दे० (क्रि०) बालना, दाहना, दग्ध करना, भस्म करना।

जलाबला दे० (गु०) खाक हुआ, चिड़चिड़ा, क्रोधी, दग्ध।

जलामय तत्० (गु०) जलभरा, जलमय, जल में डूबा हुआ, भींगा, आला, आर्द्र, ओदा, गीला।

जलावन दे० (पु०) ईंधन, काष्ठ, जलाने की लकड़ी, काठ।

जलावर्त दे० (पु०) जल का घुमाव, चक्कोह, जलचक्र, भँवर।

जलाशय तत्० (पु०) तड़ाग, सरोवर, सर, दह, झील, तालाब।

जलिका तत्० (स्त्री०) जलौका, जोंक, जलुका।

जलिया दे० (पु०) धीवर, मच्छीमार, कैवर्त।

जलेचर तत्० (पु०) जल में चलने या चरने वाले प्राणी, हंस आदि जलचर पक्षी।

जलेन्धन तत्० (पु०) बाड़वाग्नि, बाड़वानल, जल की आग।

जले पर नोन लगाना दे० (वा०) दुःख पर दुःख देना, दुःखी को दुःख देना, सताये को सताना।

जलेबी दे० (स्त्री०) मिठाई, एक प्रकार की मिठाई।

जलेश्वर तत्० (पु०) जलाधिपति, वरुण, समुद्र, जलपति।

जलोदर तत्० (पु०) जलन्धर रोग, जठराम, पेट की बीमारी।

जलौका तत्० (स्त्री०) [जल + ओकस्] जोंक, जलिका, जल का कीड़ा।

जल्दी दे० (अ०) शीघ्र, त्वरा, तुरन्त।

जल्प तत्० (पु०) वृथा बकवाद, झूठा झगड़ा, विजयी की कथा, दूसरे के सिद्धान्त का खण्डन कर के अपना मत स्थापित करने की व्यवस्था, वाद, कथा, शास्त्रार्थ।

जल्पक तत्० (पु०) वावदूक, वाचाल, गप्पी, बकवादी।

जल्पना तद्० (क्रि०) बकना, बिना प्रयोजन की बातें कहना, आप अपनी बड़ाई करना।

जल्पाक तत्० (पु०) बहुत बोलने वाला, बकवादी, बक्की।

जल्पित तत्० (गु०) उक्त, कथित।

जल्लाद दे० (पु०) हत्या करने वाला, बध करने वाला, घातक।

जव तद्० (पु०) यव, एक अन्न का नाम, यह देवान्न समझा जाता है।

जवन तत्० (पु०) वेग, दौड़।

जवनिका तत्० (स्त्री०) आवरण, आच्छादन, पर्दा, कनात।

जवा दे० (पु०) अङ्गुली की एक रेखा जिसके अनुसार शुभाशुभ का ज्ञान सामुद्रिक शास्त्र वाले करते हैं।

जवाखार दे० (पु०) जव से निकाला हुआ एक प्रकार का खार शोरा विशेष।

जवान तद्० (पु०) युवा, तरुण।

जवार दे० (पु०) समुद्र की बाढ़, समुद्र का उफनना। —भाटा (दे० पु०) समुद्र का उतार चढ़ाव।

जवारा दे० (पु०) भुट्टा, जव, मई, अन्न विशेष।

जवाला दे० (पु०) गोजई, बेझर मिला हुआ जव और गेहूं।

जवासा दे० (पु०) कटीली घास, तृण विशेष, गरमी के दिनों में इसकी टट्टी बनाई जाती है इसका स्वभाव है कि पानी पड़ने से सूख जाता है।

जस तद्० (पु०) यश, कीर्ति, नामवरी, भलमंसी, जैसे, जिस प्रकार से, जिस रीति से।

जसत जसता दे० (पु०) धातु विशेष, जस्ता, राँगा।

जसयत, यशवन्त तद्० (गु०) कीर्तिवान्, कीर्तिशाली।

जसवन्त तद्० (पु०) विख्यात तुकाजीराव होल्कर के पुत्र, इनका पूरा नाम था जसवन्त राव होलकर, तुकाजी राव के चार पुत्र थे, उनमें यह छोटे थे, पिता के मरने के अनन्तर राज्य के लिये चारों में विवाद हुआ, अन्त में जसवन्त राव ही की जीत हुई। यह राजा बने, इन्होंने अपने बड़े भाई काशी राव और भतीजे खण्डेराव की गुप्त हत्या की थी, जिसके फल से थोड़े ही दिनों में ये पागल हो गये। बहुत दिनों तक दुःख भोग कर सन् १८११ ई० में ये मर गये।

(२)—विख्यात महाराष्ट्र साधु, इनका जन्म १८१५ ई० में पूना में हुआ था, पहले १० रु० वेतन की एक सरकारी नौकरी इन्होंने कर ली थी। धीरे धीरे इनकी उन्नति होती गई। अन्त में यह तहसीलदार बनाये गये। ११५) रुपये इनको वेतन भी मिलने लगा, सिपाही-विद्रोह के समय इन्होंने सरकार की बहुत मदत की थी, अतएव इनकी इज्जत भी बहुत बढ़ गयी थी। इनको लोग देवता कहा करते थे। एक बार यह कमिश्नर साहब से मिलने सतारा गये थे, वहाँ इनके दर्शकों की भीड़ लग गयी। यह देख कमिश्नर साहब ने कलक्टर से इसका कारण पूछा। कलक्टर साहब ने कहा कि "इनको लोग देवता समझते हैं" कमिश्नर साहब ने कहा कि "इनको पेंशन दे दो"। साधु जसवन्त ने अब भजन में अपना मन लगाया, होल्कर, सेन्धिया आदि राजा इनका बड़ा आदर करते थे।

(३)—माड़वार (जोधपुर) के राजा, ये सम्राट् शाहजहाँ के एक प्रधान सेनापति थे। इनकी वीरता देख औरङ्गजे़ब इनसे भीतर शत्रुता करता था। इनके पुत्र पृथ्वी सिंह को औरङ्गजेब ने धोखे से मार डाला, और भी इनके दो पुत्र-काबुल की लड़ाई में मारे गये। पुत्र शोक से पिड़ित राजा जसवन्त को १५४२ ई० में औरङ्गज़ेब ने विष द्वारा मार डाला।

जसस्वी तद्० (गु०) यशस्वी, कीर्तिवान्।

जसी दे० (गु०) कीर्तिमान्, यशस्वी।

जसुमती तद्० (स्त्री०) नन्द की रानी, यशोदा, यशोमति, कृष्ण की माता। यथाः—

"चलत देखि जसुमति सुख पावै,
ठुमुक ठुमुक धरनीधर रेंगत जननी देख दिखावै"।
—सूर सङ्गीतसार।

जसोदा तद्० (स्त्री०) जसुमति, नन्दरानी, कृष्ण की माता, यथाः—"सिखावत चलत यशोदा मैया"।

जसोमती तद्० (स्त्री०) जसुमती, जसोदा, नन्दरानी, यथाः—"जसोमति लटकति पाइ परे"।

जहर दे० (पु०) विष, गरल।

जहत्स्वार्था तत्० (स्त्री०) गौणार्थ, अप्रसिद्धार्थ।

जहाँ दे० (अ०) यत्र, जिस स्थान में, जिधर।

जहीं दे० (अ०) जहाँ ही, जिस किसी स्थान में।

जहाज़ दे० (पु०) बड़ी नौका, पोतयान, समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव।

जहानक तद्० (पु०) प्रलय, समस्त संसार का प्रलय, जगत् का महाप्रलय।

जन्हु तत्० (पु०) एक राजर्षि का नाम, गङ्गा नदी के पीने से इनकी प्रसिद्धि हुई है। इनके पिता का नाम सुहोत्र और माता का नाम केशिनी था। सुहोत्र प्रसिद्ध राजा पुरूरवा के वंशज हैं। जन्हु सर्वमेध नामक यज्ञ करते थे, गङ्गा उस स्थान को डुबाने लगी, जन्हु ने गङ्गा को पी लिया। तभी से गङ्गा का नाम जान्हवी पड़ा है। युवनाश्व की कन्या कावेरी से इनका विवाह हुआ था। ... का नाम सुनह था।—**तनया** (स्त्री०) भागीरथी, त्रिपथगा।—**सप्तमी** (स्त्री०) शुक्ल सप्तमी।

जा दे० (स०) जिस, कोई, चला जा, दूर हो।

ाई दे० (स्त्री०) जनी, बेटी, दुहिता, कन्या, पुत्री।
ांगर दे० (पु०) पसलों समेत जांघ, अङ्ग, गात्र, शरीर।
ांघ तद्० (पु०) जङ्घा, जानु, ऊरुदेश।
ांघल दे० (पु०) बड़ा बगुला, बक पक्षि विशेष।
ांघिया दे० (पु०) कछना, लँगोटी, एक प्रकार का पहलवानों का लँगोटा।
ांच दे० (पु०) परख, परखाव, परीक्षा, अनुसन्धान, खरे खोटे की पहचान।
ांचना दे० (क्रि०) जांच करना, परखना, कसौटी कसना, अनुसन्धान, यथार्थ पता लगाने के लिये उपाय, उद्योग करना, दुहराना, किसी के किये हुए काम को देखना, ठीक करना।
ांत दे० (स्त्री०) डोल, जल भरने का डोल। (पु०) दबाव, चाप बढ़ाना, पर्याय।
ांता दे० (स्त्री०) चक्की, पेषणी, पीसने का यन्त्र।
ाउर दे० (पु०) मीठा भात।
ाकड़ दे० (पु०) बन्धक, धरोहर, न्यास, किसी नियम पर वस्तु लेना, पुराना माल।
ाकर दे० (पु०) जिसका, जिसका सम्बन्धी।
ाका दे० (सर्व०) जिसका।
ाग दे० (पु०) जागरण, जागना, प्रबोध, निद्रा-त्याग।
ागत तद्० (स्त्री०) जागृत, सावधानी, सचेत, चौकसाई।
ागतिज्योत तद्० (पु०) पराक्रमी, प्रतापी, भाग्यवान्।
ागना दे० (क्रि०) निद्रात्याग करना, नींद से उठना, सचेत होना, सावधान होना।
ागरण तद्० (पु०) निद्रा त्याग, जागन, एकादशी आदि का रात्रि जागरण, रात जगा।
ागवलिक तद्० (पु०) याज्ञवल्क्य मुनि।
ागरुक तद्० (पु०) जागरणशील, जागरण कर्त्ता, जागने वाला, सावधान, कार्यतत्पर।
ागा दे० (पु०) जाति विशेष।
ागःबन्दी दे० (स्त्री०) हदबन्दी, सीमानिर्देश, नींद, ऊँघ, ऊँघाई।

जागा जागी दे० (स्त्री०) निद्रात्याग, जागरण, जागने के लिये होड़ लगाना।
जागू दे० (पु०) जागने वाला, जागरण कर्त्ता।
जाग्रत तद्० (पु०) जागना, अनिद्रित, सावधान, जागरण विशिष्ट, नींद से उठा हुआ।
जाङ्गल तद्० (पु०) जङ्गल का उत्पन्न, एक प्रकार का स्थल पशु, निर्जल प्रदेश। (पु०) टिटिहरी पक्षी, कपिञ्जल पक्षी।
जाङ्गलिक तद्० (पु०) विषवैद्य, विषचिकित्सक, साँप के काटने की चिकित्सा करने वाला, काल-बेलिया।
जाङ्गुल तद्० (पु०) विष, कालकूट, हालाहल, गरल, फल विशेष।
जाङ्गुलि तद्० (पु०) विषवैद्य, सर्पक्षत चिकित्सक, सँपेला सँपेरा, विष झड़वैया।
जाचक तद्० (पु०) याचक, प्रार्थी, माँगने वाला, भिक्षुक, मंगन, भिखारी, बन्दी, मागध, भाट।
जाचत तद्० (क्रि०) याचता है, माँगता है, भिक्षाटन करता है।
जाचना तद्० (क्रि०) माँगना, याचना, परखना, परीक्षा करना।
जाचा तद्० (पु०) माँगा, चाहा, अभिलषित, ईप्सित, प्रार्थित।
जाच्यमान तद्० (पु०) याच्यमान, प्रार्थ्यमान, प्रार्थित, चाहा हुआ, माँगा हुआ।
जाजक तद् (पु०) याजक, पुरोहित, यज्ञ कराने वाला।
जाजम दे० (पु०) बिछौना, शतरञ्जी, दरी, गलीचा, चित्रविचित्र आसन विशेष, जाजिम।
जाजलि दे० (पु०) अथर्व वेदश गोत्र प्रवर्तक ऋषि, यह कुछ दिनों तक दाम्भिक हो गये थे, इनको अपनी तपस्या का अभिमान हो गया था। पुनः काशी के एक वैश्य (तुलाधार) से धर्मशास्त्र का उपदेश सुनकर इनका चित्त ठिकाने हुआ।
जाजा दे० (स्त्री०) कलौंजी।
जाजामन्ती दे० (स्त्री०) जय जयवन्ती।

जादू दे० (पु०) माया कुहुक, टोना, जन्तर, मन्तर।

जादूगर दे० (पु०) कुहकी, मायावी, टोनहा।

जान तद्० (पु०) ज्ञानी, होशमन्द, ओझा, मायावी, सर्वज्ञ, देवज्ञ, । (पु०) यान, सवारी, विमान, वाहन । (स्त्री०) प्राण, आत्मा, अतिप्रिय, प्रियतम।

जानकी तद्० (स्त्री०) जनक राजा की लड़की, जनक-राज-तनया, जनकसुता, सीता, श्रीराम चन्द्र की धर्मपत्नी (देखो सीता)।

जानत तद्० (पु०) ज्ञानी, बुद्धिमान, ज्ञान से, जानता है, समझता है।

जानना तद्० (क्रि०) समझना, पहचानना, परिचय करना।

जाननी दे० (क्रि०) जानना, चिन्हना, पहचाना, समझना।

जानपद तद्० (पु०) जनस्थान, देश, परगना, ज़िला, चकला।

जानव दे० (क्रि०) जानना, समझना, जानो, समझो।

जानपहचान दे० (पु०) चिन्हार, परिचित, चिन्हा पहचान।

जानवर दे० (पु०) जन्तु, प्राणी, पशु पक्षी, आदि।

जानहार दे० (पु०) जवैया, जानेवाला, गमनशील।

जाना दे० (क्रि०) चलना, गमन करना।

जानि दे० (क्रि०) समझ कर, जानकर।

जानी दे० जानली, समझली, पहचान ली।

जानु तद्० (पु०) घुटना, घोंटू, जानू, ठेवना, खाटना, उरु, जङ्घा का मध्यभाग।

जानु फलक तद्० (पु०) खुटिया, चकति, मोटा घुटना, पटरे के समान जानु।

जानो दे० (अ०) मानो, समझा।

जाप्ना दे० (क्रि०) पहचानना, समझना।

जाप तद्० (पु०) जप, रटन, माला फेरन, बार बार पढ़ना।

जापक तद्० (पु०) जप करने वाला, भजन करने वाला, जपने वाला, सदा स्मरण करने वाला, जपी, जपकर्त्ता, सर्वदा मन्त्रोच्चारण कारी।

जाफरान दे० (पु०) कुङ्कुम, केशर।

जाफ़रअली ख़ां, दे० इनका प्रसिद्ध नाम मीर जाफर था, इन्होंको विश्वासघातकता के कारण सिराजुद्दौला गद्दी से उतारा गया था, सिराजके सिंहासन च्युत होने पर यह बङ्गाल के सिंहासन के अधिकारी हुए, परन्तु १६६० ई० में इनकी विलासिता अकर्मण्यता देख अङ्गरेजों ने इन्हें गद्दी से उतार दिया।

जाफ़र ख़ां, इनका प्रसिद्ध नाम मुर्शिद कुली ख़ां था। दिल्ली के बादशाह आलमगीर ने १७०४ ई० में इनको बङ्गाल की नवाबी दी थी। इन्होंने अपने नाम पर प्रसिद्ध नगर मुर्शिदाबाद बसाया था।

जाब दे० (पु०) ठाठी, जाल विशेष, गमन करना, जाना।

जाबाली तद्० (पु०) एक ऋषि का नाम।

जाम तद्० (पु०) प्रहर, याम, चार घड़ी, दिन रात का आठवां भाग, तीन घण्टा, प्याला, चषक, मदिरा का प्याला,—"फना का जाम ऐसा कि मैं पी पी लूं तू भर भर दे"।

जामदग्न्य तद्० (पु०) जमदग्नि का पुत्र (परशुराम देखो)।

जामन दे० (स्त्री०) वृक्ष और फल विशेष, जोरन, जोड़न, जिससे दही जमाया जाता है, जो दही जमाने के काम में आता है।

जामवन्त तद्० (पु०) ऋक्षराज, रामचन्द्र की सेना का प्रधान।

जामवन्ती तद्० (स्त्री०) जामवान की पुत्री, श्रीकृष्ण चन्द्र की प्रधान रानियों में से एक रानी, श्रीकृष्ण के श्वशुर सत्राजित् के पास एक मणि था, श्रीकृष्ण ने उस मणि को मांगा था, परन्तु उन्होंने नहीं दिया। सत्राजित् के छोटे भाई प्रसेन उस मणि को धारण कर शिकार खेलने गये थे। वहां उनको एक सिंह ने मार डाला और मणि ले लिया। सत्राजित् ने समझा कि कृष्ण ही ने मणि लेलिया है। अतः इस कलङ्क को दूर करने के लिये कृष्ण वन में गये। उन्होंने एक जगह देखा कि प्रसेन और सिंह मरे पड़े हैं। अपने साथियों को वहीं

छोड़ कर वह एक पर्वत की गुहा में घुस गये, वहां उन्होंने देखा एक बालिका उस मणि को लिये खेल रही है। श्रीकृष्ण को देख कर बालिका और उसकी धाय दोनों चिल्ला उठीं, उनका चिल्लाना सुन कर जाम्बवान् निकला, और कृष्ण को सामान्य मनुष्य समझ कर उनसे लड़ने लगा। जब वह हार गया, तब उसने श्रीकृष्ण की स्तुति की, और मणि तथा अपनी कन्या श्रीकृष्ण को अर्पित की। जामवन्ती से ब्याह करके श्रीकृष्ण मथुरा लौट आये।

जामा दे० (पु०) अङ्गरखा विशेष घेरदार अङ्गा।

जामता, जामातृ तत्० (पु०) कन्या का पति, जमाई, दामाद।

जामिनी तद्० (स्त्री०) यामिनी, रात्रि, रात, चार पहर की रात, यवनों की भाषा, अरबी, फारसी।

जामिन, जामिनी दे० ज़मानत, संरक्षण, प्रातिभव, ज़मानत करना, बिचवान होना।

जाम्बवान् तत्० (पु०) भालपति यह ब्रह्मा के पुत्र थे। त्रेतायुग में यह सुग्रीव के सेनापति होकर सीता जी को ढूंढने में रामचन्द्रजी के सहायक बने थे। द्वापर के अन्त में स्यमन्तकमणि के कारण इन्होंने श्रीकृष्णचन्द्र से लड़ाई की थी, अन्त में मणि और अपनी कन्या को श्रीकृष्ण को इन्होंने दे दी। खोजियों (अनुसन्धान कारियों) का कहना है कि यह जाम्बवान् भालू नहीं थे, किन्तु अनार्य राजा था।

जाम्बुवत तद्० (पु०) कल्पित भालू।

जाम्बूनद तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्मय, काञ्चन।

जायफल तद्० (पु०) फल विशेष, जातीफल, एक गर्म मसाला।

जाया तत्० (स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, वनिता। —**जीव** (पु०) नट, चारण, वेश्यापति। —**नुजीवी** (पु०) [जाया + अनुजीवी] नट, वेश्यापति स्त्री की कमाई खाने वाला। स्त्री से जीने वाला।—**पति** (पु०) दम्पति, जम्पति, स्त्री पुरुष, नर नारी, पति पत्नी।

जार तत्० (पु०) उपपति, गुप्त, धिंगड़ा, लगवा, यार, दूसरा पति, भंडुआ।—**गर्भ** (पु०) चोरी, लम्पट।—**ज** (गु०) उपपति से सन्तान, जारोत्पन्न, व्यभिचारजात सन्तान।

जारण तत्० (पु०) [जॄ + अनट्] जलाना, शोध करना, क्षय करना, धातु आदि का फूकना।

जारना तद्० (क्रि०) जलाना, बालना, लहकना, दग्ध करना।

जारुल दे० (पु०) काष्ठ विशेष, एक प्रकार की लकड़ी।

जाल तत्० (पु०) सूत आदि का बना हुआ मछली पकड़ने का फन्दा, पाश, फन्दा, जालीदार खिड़की, झरोखा, इन्द्रजाल, कुहक, कृत्रिम।

जा लगि दे० (सर्व०) जिसके लिये, जिस कारण, जिस हेतु।

जालगोणिका तत्० (स्त्री०) दधिमन्थन भाण्ड, मथेनी, मथनी।

जालन्धर तत्० (पु०) त्रिगर्त देश, त्रिगर्त देशस्थ, राक्षस विशेष, (देखो जलन्धर)।

जालरन्ध्र तत्० (पु०) जाली का झरोखा।

जाला तद्० (पु०) मकड़ी का फांद, जल रखने का बड़ा पात्र, मटका।

जालिक तत्० (पु०) मछुआ, कैवर्त, धीवर, मछीमार, मकड़ी, मकड़ा, जाड़े का मकड़ा। (गु०) जाल से जीने वाला।

जालिया तद्० (पु०) कपटी, छली, मायावी, धूर्त, ठग।

जाली तत्० (पु०) जाल करने वाला, मायावी, वञ्चक, धीवर, व्याध, झंझरी, झरोखा।

जाल्म तत्० (पु०) पामर, क्रूर, असमीक्ष्यकारी, मूर्ख, धूर्त, अधम, कुटिल, निठुर, नृशंस।

जावक तद्० (पु०) यावक, अलक्तक, अलता, स्त्रियों के पैर रङ्गने का एक रङ्ग।

जावका तद्० (स्त्री०) लौंग, लौंग का फूल।

जावनी तद्० (स्त्री०) अजवायन।

जावा दे० (पु०) उपद्वीप विशेष, हिन्द महासागर का उपद्वीप, यह द्वीप उच जाति की अधीनता में

है। यहां की बस्ती खूब घनी है। इसकी राजधानी बटाविया है। लङ्का में जो वस्तु उत्पन्न होती है, वे ही यहाँ भी उत्पन्न होती हैं।

जावां दे० (पु०) यमज, यमल, एक साथ दो सन्तान की उत्पत्ति।

जासु दे० (सर्व०) जिससे, जिसको, जिनसे, जिनको।

जाह दे० (पु०) घबड़ाहट, आपत्ति, विपत्ति, धसमस, फंसाव।

जाहा दे० (पु०) देखा, निरीक्षण किया। यथाः—

"पारवती पुनि सत्य सराहा,
औ फिर मुख महेस कर जाहा"।
—पद्मावत।

जहांगीर दे० (पु०) भारत का मुगल सम्राट् यह अकबर का पुत्र था, जयपुर की राजकन्या मरियम से यह उत्पन्न हुआ था, इसका पहले सलीम नाम था। यह युवराज की अवस्था में महाराणा प्रताप के विरुद्ध लड़ने को भेजा गया था, हलदी घाटी के युद्ध में मरते मरते बचा था। इसने अपने पिता के मित्र अबुलफजल को विष देकर मार डाला था। इसका विवाह जोधा बाई से हुआ था। यह भी अन्य बादशाहों के समान दुराचारी और विलासी था। जिससे इसे जीवन के अन्त-काल में दुख झेलना पड़ा था। अकबर की मृत्यु के अनन्तर, १६०५ ई० के १२-वीं अक्टूबर को ३८ वर्ष की अवस्था में सलीम का आगरे के क़िले में राज्याभिषेक हुआ और इसका जहांगीर नाम रखा गया। तमघा और मीरबाड़ी ये दो कर इसने माफ कर दिये थे। जगह जगह अस्पताल सराय और कुआं इसने बनवाये थे। इसके शासनकाल में बृहस्पतिवार और रविवार को पशुहत्या नहीं होने पाती थी। मिर्जा ग्यास की कन्या से यह पहले ही से विवाह करना चाहता था, परन्तु अकबर की इच्छा न रहने से उनके जीवनकाल में जहांगीर का मनोर्थ पूर्ण नहीं हो सका था। उस लड़की का विवाह अकबर ने किसी दूसरे से करा दिया था। राज्य पाकर भारत के सम्राट् ने एक स्त्री के लोभ में पड़ कर एक निरपराधि अपनी प्रजा का वध करने के लिये सेना भेजी थी, और उसको मरवा कर उसकी स्त्री को मँगवा लिया था।

जाहि दे० (सर्व) जिसको, जिस किसी को।

जाहिर दे० (पु०) प्रकाश करण, प्रचार करण।

जान्हवी तत्० (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गा, (देखो जन्हु)।

जिअत दे० (क्रि०) जीता है, जीवित है।

जिआउ दे० (पु०) जिलाव, जीवन दान, रोग से छुटकारा।

जिआन दे० (पु०) नुकसान, हानि, क्षति।

जिआये दे० पालित, जिलाये हुए, पाला पोसा।

जिगजिगिया दे० (गु०) चापलूस, खुशामदी, मिथ्या प्रशंसक, चिरौरिया।

जिगजिगी दे० (स्त्री०) चिरौरी, खुशामद, अनुनय, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा।

जिगना दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

जिगमिषा तत्० (स्त्री०) गमनेच्छा, गमन करने की इच्छा, जाने का अभिलाष।

जिगमिषु तत्० (गु०) गमनेच्छुक, जाना चाहने वाला, जाने की इच्छा वाला।

जिगीषा तत्० (स्त्री०) जीतने की इच्छा, जयेच्छा, पराभव करने की इच्छा, व्यवसाय, प्रकर्ष, चसका।

जिगीषु तत्० (गु०) जयेच्छु, जय चाहने वाला, जय का अभिलाष करने वाला।

जिघासा तत्० (स्त्री०) [अद्+सन्+आ] क्षुधा, भूख, भोजन करने की इच्छा, बुभुक्षा।

जिघत्सु तत्० (गु०) [अद्+सन्+उ] बुभुक्षु, भोजन करने की इच्छा रखने वाला, क्षुधित, भूखा।

जिघत्सा तत्० (स्त्री०) [अद्+सन्+आ] मारने की इच्छा, वध करने की इच्छा, वध करने की चेष्टा, नाश करने का अभिलाष।

जिघांसु तत्० (गु०) वध-करणेच्छुक, घातक, मारुक, नृशंस, क्रूर, वधोद्यत।

जिजिया दे० (स्त्री०) ज्येष्ठा भगिनी, बड़ी बहिन, स्तन, चूँची।

जिजीविषु तत्० (गु०) जीने की इच्छा करने वाले, जीवनेच्छुक।

जिज्ञासन तत्० (पु०) [ज्ञा+सन्+अनट्] प्रश्न करना, पूछना जानने की इच्छा प्रकाशित करना।

जिज्ञासा तत्० (स्त्री०) प्रश्न, मनोगत, भावकथन, मन की बात कहना, पूछना, जानने की इच्छा।

जिज्ञासु तत्० (गु०) प्रश्न करने वाला, पूँछने वाला, प्रच्छक।

जिज्ञास्य तत्० (गु०) पूँछने योग्य, प्रश्न करने योग्य, जिज्ञासितव्य, जिज्ञासनीय।

जिञ्जीर दे० (पु०) बेड़ी, सिकड़, शृङ्खल।

जिठानी दे० (स्त्री०) पति के जेठे भाई की स्त्री।

जित तत्० (गु०) [जि+क्त] पराभूत, पराभव प्राप्त, पराजित, पराजयी, वशीभूत, अधीन। जिधर, जहां। (पु०) अर्हदुपासक, जैनविशेष।

जितना दे० } (गु०) परिमाण, अवधि, और
जितेक दे० } संख्यार्थक।

जितनी दे० (स्त्री०) परिमाणार्थक, खेत की जोताई, वाजों की जोत।

जितयोनि तत्० (पु०) हिरन, हरिण, मृगा।

जित शत्रु तत्० (पु०) कृत शत्रु पराजय, विजयी।

जितामित्र तत्० (पु०) [जित+अमित्र] विष्णु नारायण। (गु०) विजयी, जिसने शत्रु जीत लिये हैं।

जिताहार तत्० (गु०) [जित+आहार] अन्न जयी, जिसने अन्न को अधीन कर लिया है।

जितेन्द्रिय तत्० } (पु०) [जित+इन्द्रिय] इन्द्रिय
जितेन्द्री तद्० } जीत, जिसने इन्द्रियों को वश कर लिया है, शान्त, वशी, अकामी।

जिधर दे० (अ०) जिधर, जहां, यत्र, जिस स्थान में।

जिन तत्० (पु०) जैन धर्म प्रवर्त्तक, आचार्य, जैनियों के तीर्थङ्कर, इनके तीर्थङ्कर २४ हैं, यद्यपि सभी का स्वतन्त्र नाम भिन्न है, तथापि केवल जिन पद से भी उनका व्यवहार होता है। जिन ही को कोई कोई बौद्ध बतलाते हैं और जैन धर्म को बौद्ध धर्म की शाखा मानते हैं, उनका ऐसे समझना निष्कारण नहीं है। कोषों में बौद्ध जैन का नाम प्रायः एक ही साथ आना ही कारण है। परन्तु इससे अतिशय भिन्न इन दोनों धर्ममतों की एकता की कल्पना अनुचित है। इनके सिद्धान्त, धार्मिक प्रक्रियायें, तथा आचार आदि अत्यन्त भिन्न हैं। जैन धर्म प्राचीन है, बौद्ध धर्म नवीन।

जिनकेरे दे० (गु०) जिनके, जिस किसी के।

जिन्स दे० (पु०) द्रव्य, वस्तु, पदार्थ, जात, प्रकार।

जिन्दगानी दे० (स्त्री०) जीवन, जिन्दगी, जन्म।

जिम दे० (अ०) यथा, जैसा, यादृश—

"जिम दशनन महँ जीभ बिचारी"

—रामायण

जिमाना दे० (क्रि०) भोजन कराना, खिलाना अतिथि सत्कार करना।

जिय तद्० (पु०) जीव, प्राण, आत्मा, हृदय।

जियरा तद्० (पु०) प्रिय।

जियाना तद्० (क्रि०) जिलाना, प्राण दान देना, जीवित करना, पालना पोसना।

जियोर दे० (गु०) साहसी, उत्साही, वीर, योद्धा, जीवन्त।

जिला दे० (पु०) उपप्रान्त, प्रदेश के किसी भाग प्रधान स्थान जहां राजकर्मचारी राज्य व्यवस्था करते हैं, जहाँ कलक्टर साहब रहते हैं।

जिलाना दे० (क्रि०) जीता करना, सजीव जीवित करना, जिला देना।

जिल्द दे० (स्त्री०) पुस्तक की बँधाई बाँधने वाला, पुस्तक बन्धन कर्त्ता।

जिव तद्० (पु०) जिय, प्राण, आत्मा, जीव, चेत यथाः—

"सुमिरहुं आदि एक करतारू।
जे जिव दीन्ह कीन्ह संसारू"॥

—पद्मावत

जिवनमूरी तत्० (स्त्री०) संजीवन औषध, जिलाने वाली बूटी।

जिष्णु तद्० (पु०) अर्जुन, किरीटी, इन्द्र, जीतने वाला, जयी, विजयी।

जिंवाना दे० (क्रि०) जिमाना, भोजन कराना।

जिसु दे० (सर्व०) जिसका, सम्बन्धार्थ वाची।

जिहिं दे० (सर्व०) जो, जिस, जिसको।

जिह्म तद्० (पु०) कपट, कुटिलाई, छल, धूर्तता, मूढ़ता।—कर (गु०) कपटी, छली, धूर्त।—ग (पु०) साँप, सर्प, टेढ़े चलने वाले, वक्रगामी, बाण, तीर।

जिह्वल तद्० (गु०) चटोर, लोलुप, लोभी, लुब्ध, जिभोर।

जिह्वा तद्० (स्त्री०) रसना, जीभा, जीभ, रसनेन्द्रिय।—स्वाद (पु०) [जिह्वा+आस्वाद] चाटना, लेहन करना।—ग्र (पु०) मुखाग्र, कण्ठस्थ, ज़बानी।

जी दे० (पु०) प्राण, मन, हृदय।—उठाना (वा०) उदासीनता, मन खींचना, मित्रता में बाधा। —बुरा करना (वा०) जी मिचलाना, उबकाई आना, अप्रीति करना, उदासीनता दिखलाना। —बढ़ाना (वा०) उत्साहित होना, मन को उन्नत करना, बड़े बड़े कामों को करने का अभिलाष होना, किसी बड़े काम को करने की प्रबल इच्छा।—बिखरना (वा०) मन में भेद होना, अचेत होना, मूर्च्छा आना।—भर जाना (वा०) सन्तोष होना, तृप्ति होना, सन्देह रहित होना, संशय दूर करना, अघाना, अघा जाना। —भा जाना (वा०) किसी वस्तु की चाह होना, किसी वस्तु का पसन्द हो जाना।—भर आना (वा०) दया आना, दया युक्त होना, दया हर्ष अथवा शोक से गला रुक जाना, किसी के दुःख से दुखी होना।—बहलाना (वा०) मन बहलाना, मनोरञ्जन करना। मनो विनोद करना।—पाना (वा०) किसी के स्वभाव से परिचित होना, किसी को पहचानना।—पानी करना (वा०) लज्जित करना, दुःखित करना, दुःख देना, चिढ़ाना, खिझाना।—पर खेलना (वा०) किसी उद्देश्य से अपने को सङ्कट में डालना। अपने को सङ्कट में डाल कर भी किसी काम को करना।—पिघलना (वा०) दया आना, किसी के दुःख से दुःखित होना। मोह आना।—पकड़ा जाना (वा०) शोक ग्रस्त होना, शोक आना, उदासीन होना।—फटना (वा०) प्रेम टूटना।—फिर जाना (वा०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, अघाना, अनिच्छा होना।—जलना (वा०) मन का दुखित होना, पीड़ा, वेदना, व्यथा।—जलाना (वा०) सताना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना। दूसरों के कार्य के लिये अपने को जलाना, स्वयं कष्ट उठा कर भी दूसरों को सुखी करना, निष्काम परोपकार करना। —चाहना (वा०) किसी वस्तु की इच्छा। —चुराना छिपाना (वा०) आलस करना, शक्ति के अनुसार काम न करना।—चलना (वा०) इन्द्रिय के विषयों की ओर मन का जाना। चाह, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।—चलाना (वा०) शक्ति प्रदर्शन करना, सामर्थ्य दिखाना, कार्यपटुता।—दान करना (वा०) अपराधी को क्षमा करना।—धड़कना (वा०) शङ्कित होना, घबड़ाना।—डूब जाना (वा०) शोकित होना, मूर्च्छित होना।—रखना (वा०) प्रसन्न करना, अन्य के इच्छानुसार काम करना, इच्छापूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, बात रख लेना।—से उतर जाना (वा०) अप्रिय हो जाना, अनीप्सित होना, चाह नहीं रहना। —से मारना (वा०) वध करना, जान से मारना, मार डालना।—करना (वा०) चाहना, इच्छा करना, अभिलाष करना।—खोल कर करना (वा०) उत्साह से करना, प्रसन्नता से करना, किसी काम को सामर्थ्य भर करना। —खोलकर कहना (वा०) स्पष्ट कहना, साफ साफ कहना, यथार्थ कहना, उत्साह से कहना। —पर आना (वा०) कष्ट में पड़ना, आफत में फसना, अनन्यगतिक होना, किसी से लाचार हो जाना।—घट जाना (वा०) अनुत्साहित, होना, हताश होना।—लगाना (वा०) प्रीति

करना, प्रेम होना ।—लगाना (वा०) प्रेम लगाना, प्रणय उत्पन्न करना ।—लेना (वा०) मार डालना ।—मारना (वा०) निराश करना, मन तोड़ना ।—मिलाना (वा०) मिलता करना ।—में आना (वा०) स्मरण आना । —में जलजाना (वा०) ईर्षा से दुःखित होना, कुढ़ना ।—में जी आना (वा०) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के अनन्तर सुखी होना । भय का कारण दूर होने से निर्भय होना । —में घर करना (वा०) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना ।—निकलना (वा०) मरना, मर जाना, बेकल होना, भयभीत होना, घबड़ाना ।—हारना (वा०) अधीर होजाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुत्साही हो जाना ।—हटजाना (वा०) मन हट जाना, प्रेम टूट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना ।

जी दे० (अ०) सम्मान पूर्वक स्वीकारार्थक, हां, जी ।

जीका तद्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, वन्धान।

जीकुराना दे० (क्रि०) सिकोड़ना, समेटना, सङ्कुचित करना ।

जीत दे० (स्त्री०) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रु-पराभव ।

जीति दे० (अ०) जीत करके, जय प्राप्त करके ।

जीतना दे० (क्रि०) जय करना, अपने अधीन करना, वश करना, हराना ।

जीतव दे० (पु०) जीवन, जीना, ज़िन्दगी, स्थिति-काल ।

जीतवना तद्० (पु०) जयी, विजयी, जयमान, जितवैया ।

जीतवैया दे० (पु०) जेता, विजयी ।

जीता दे० (गु०) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ ।

जीतिया दे० (स्त्री०) व्रत विशेष, जीवत्पुत्रिका व्रत, आश्विन शुक्ला अष्टमी का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः स्त्रियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं ।

जीतू दे० (पु०) जयी, विजयी, योद्धा, महाबली, जितवैया ।

जीते जी दे० (वा०) जब तक जीता है, जीते तक ।

जीन दे० (पु०) चारजामा, काठी, घोड़े की कसने की वस्तु, खोगीर ।

जीना दे० (क्रि०) जीता रहना, जीवित रहना।

जीभ दे० (स्त्री०) जिह्वा, रसना, स्वनेन्द्रिय —चाटना (वा०) लालायित होना, उत्सुक होना किसी के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित होना —निकालना (वा०) थक जाना, श्रान्त हो थकने से अचेत होना ।—पकड़ना (वा०) बो न देना, बोली बन्द करना, बात काटना, बा का दोष दिखाना ।—चढ़ाना (वा०) चटोर हो हानि लाभ का ध्यान न करके खाते जाना, बि करना, बकबक करना ।

जीभारा दे० (गु०) चटोर, लोभी, लुब्ध, बका बक्की, मुँहफट ।

जीभी दे० (स्त्री०) जीभ का मैल साफ करने वस्तु ।

जीमना दे० (क्रि०) भोजन करना, जीमना, ख

जीमार दे० (गु०) घातक, नृशंस, मारने वाला।

जीमूत तत्० (पु०) मेघ, बादल, घन, घटा, प पर्वत, मोथा, मुस्ता ।—वाहन (पु०) प्र स्मार्त पण्डित । ये ग्यारहवीं सदी के प्रथम में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति का भ बनाया है ।

जीयत दे० (पु०) जीवित, जीते हुए, इस शब्द प्रयोग रामायण में किया गया है ।

जीरक तत्० (पु०) जीरा, वणिक् द्रव्य विशे मसाला ।

जीरा तद्० (पु०) जीरा, जीरक, स्वनाम प्र मसाला ।

जीर्ण तत्० (गु०) पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, जरा, वि परिपक्व, जर्जरीभूत, पाक विशिष्ट ।—ता (स्त्री) अशक्तता, दुर्बलता दौर्बल्य, निर्बलता ।—व (पु०) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कपड़ा ।

जीर्णि तत्० (स्त्री०) जीर्णता, वृद्धावस्था, परिपाक, पचाव, पाचक, हजम, अन्नपाक।

जीर्णोद्धार तत्० (पु०) पुरानी वस्तुओं की मरम्मत, जीर्ण का उद्धार, पुरानी वस्तुओं को पुनः दृढ़ीकरण।

जील दे० (स्त्री०) उच्चस्वर से गाना, तीक्ष्ण स्वर, उच्च-स्वर, तानपूरा या सारङ्गी आदि का तार।

जीव तत्० (पु०) प्राण आत्मा जीव, जिय, जी, प्राणधारी, चेतन, जानदार जन्तु, प्राणी, वृहस्पति, देवगुरु।—**दान** (पु०) अभयदान, प्राणदान। —**धारी** (पु०) प्राणी, चेतन।

जीवक तत्० (पु०) सेवक, किङ्कर, कृपण।

जीवखानि तद्० (पु०) परमात्मा, ईश्वर, अनादि पुरुष जीवों का आश्रय, प्राणियों का आधार।

जीवगर तद्० (पु०) सूर्मा, वीर, योद्धा, निर्भय।

जीवड़ा दे० (पु०) प्राणी, जन्तु, जानवर।

जीवत् तत्० (पु०) वर्तमान, सजीव, चेतन। —**पतिका** (स्त्री०) सधवा, जिसका पति जीता हो।—**पितृक** (पु०) जिसका पिता वर्तमान हो।

जीवन तत्० (पु०) [जीव+अनट्] जीविका, आयुष्य, प्राण धारण, प्राणवृत्ति, अन्न, मक्खन। —**भास** (पु०) जीवन का भय, न जीने का डर। —**मृत** (पु०) जीते जी मरा, जीता हुआ भी मृत के समान।—**योनि** (पु०) रत्न विशेष, शरीर में प्राण संचार करने वाला एक प्रकार का रत्न।

जीवता तद्० (स्त्री०) मेदौषध, (क्रि०) जीना, जीते रहना।

जीवनी तत्० (स्त्री०) संजीवन बूटी, जीवन वृत्तान्त, जीवन घटना या वृत्तान्त।

जीवनोपाय तत्० (पु०) उपजीविका, वृत्ति, जीने का उपाय।

जीवनौषध तत्० (पु०) जिस औषधि से मरे हुए भी जी जाते हैं। जीवन रक्षाकारी, जीवनोपाय, उपजीविका, रक्षा, वृत्ति।

जीवन्त तद्० (पु०) जीता, जीवित. सचेत, जीव-युक्त।

जीवन्ती तत्० (स्त्री०) संजीवन बूटी, जीव रक्षा करने वाली महौषधि।

जीवमन्दिर तत्० (पु०) शरीर, देह, काय, तन।

जीवन्मुक्त तत्० (पु०) [जीवत्+मुक्त] जीवन दशा ही में ज्ञानार्जन की सहायता से ब्रह्म साक्षात्कार किये, इस जन्म ही में संसार बन्ध से मुक्त महात्मा।

जीवा तद्० (स्त्री०) जीवन्ती, औषध विशेष, ज्या, धनुष की डोरी, जो एक छोर से दूसरे छोर तक बँधी रहती है, रोदा।

जीवात्मा तत्० (पु०) आत्मा, प्राण, देही, जीव।

जीवान्तक तत्० (पु०) जीवनाशक, जीमारने वाला, बहेलिया, व्याध, घातक, क्रूर।

जीविका तत्० (स्त्री०) वृत्ति, निर्वाह जीवनोपाय, धन्धा।

जीवित तत्० (पु०) जीवन, आयुष्य, आयु।

जीवित्रा तत्० (पु०) जीने वाले, सजीव, प्राण धारी।

जीवी तत्० (पु०) जीवधारी, प्राणी।

जीह, जीहा तद्० (स्त्री०) जीभ, जिव्हा, रसना।

जुआ दे० (पु०) द्यूतक्रीड़ा, बाजी लगा कर पाशा खेलना, छलकर्म, कपट कर्म, कीट विशेष, जो बालों में रहता है।

जुआरि दे० (स्त्री०) अन्न विशेष, अगहन में होने वाला एक प्रकार का अन्न, मक्का, छोटी मकई, जोन्हरी।

जुआरी दे० (पु०) जुआ खेलने वाला, द्यूतक्रीड़ा कर्ता, कपटी, छलकारी।

जुग तद्० (पु०) युग, बारह वर्ष की अवधि, सत्य, त्रेता द्वापर और कलि, ये चार युग, युगल, युग्म, जोड़ा।

जुगत तद्० (स्त्री०) युक्ति, चतुराई, अपने पक्ष को पुष्ट करने वाली उपपत्ति, अनुभव की हुई सर्व-मान्य बातें। अनुमान, रीति।

जुगनी दे० (स्त्री०) खद्योत, ज्योति, रिङ्गण, भगजुगनी।

करना, प्रेम होना।—**लगाना** (वा०) प्रेम लगाना, प्रणय उत्पन्न करना।—**लेना** (वा०) मार डालना।—**मारना** (वा०) निराश करना, मन तोड़ना।—**मिलाना** (वा०) मिलता करना।—**में आना** (वा०) स्मरण आना। —**में जलजाना** (वा०) ईर्षा से दुःखित होना, कुढ़ना।—**में जी आना** (वा०) आपत्ति से छुटकारा पाना, दुःख के अनन्तर सुखी होना। भय का कारण दूर होने से निर्भय होना। —**में घर करना** (वा०) हृदय को अपने अधीन करना, अपना प्रेम दूसरे के हृदय में स्थापित करना।—**निकलना** (वा०) मरना, मर जाना, बेकल होना, भयभीत होना, घबड़ाना।—**हारना** (वा०) अधीर होजाना, व्याकुल होना, निराश हो जाना, घबड़ा कर काम छोड़ना, अनुत्साही हो जाना।—**हटजाना** (वा०) मन हट जाना, प्रेम टूट जाना, विरोध हो जाना, उदासीन हो जाना।

जी दे० (अ०) सम्मान पूर्वक स्वीकारार्थक, हां, जी।

जीका तद्० (स्त्री०) जीविका, वृत्ति, बन्धान।

जीकुराना दे० (क्रि०) सिकोड़ना, समेटना, सङ्कुचित करना।

जीत दे० (स्त्री०) जय, विजय, शत्रुपराजय, शत्रु-पराभव।

जीति दे० (अ०) जीत करके, जय प्राप्त करके।

जीतना दे० (क्रि०) जय करना, अपने अधीन करना, वश करना, हराना।

जीतव दे० (पु०) जीवन, जीना, ज़िन्दगी, स्थिति-काल।

जीतवना तद्० (पु०) जयी, विजयी, जयमान, जितवैया।

जीतवैया दे० (पु०) जेता, विजयी।

जीता दे० (गु०) प्राणधारी, चेतन, जीता हुआ।

जीतिया दे० (स्त्री०) व्रत विशेष, जीवत्पुत्रिका व्रत, आश्विन शुक्ला अष्टमी का महालक्ष्मी का व्रत, यह व्रत प्रायः स्त्रियाँ सन्तान जीवित रहने के हेतु किया करती हैं।

जीतू दे० (पु०) जयी, विजयी, योद्धा, [illegible] जितवैया।

जीते जी दे० (वा०) जब तक जीता है, जीते [illegible] तक।

जीन दे० (पु०) चारजामा, काठी, घोड़े की पीठ कसने की वस्तु, खोगीर।

जीना दे० (क्रि०) जीता रहना, जीवित रहना

जीभ दे० (स्त्री०) जिह्वा, रसना, रसेन्द्रि —**चाटना** (वा०) लालायित होना, उत्सुक किसी के लिये अत्यन्त उत्कण्ठित हो —**निकालना** (वा०) थक जाना, श्रान्त थकने से अचेत होना।—**पकड़ना** (वा०) न देना, बोली बन्द करना, बात काटना का दोष दिखाना।—**चढ़ाना** (वा०) चटो हानि लाभ का ध्यान न करके खाते जाना, करना, बकबक करना।

जीभारा दे० (गु०) चटोर, लोभी, लुब्ध, [illegible] बक्की, मुँहफट।

जीभी दे० (स्त्री०) जीभ का मैल साफ [illegible] वस्तु।

जीमना दे० (क्रि०) भोजन करना, जीमना,

जीमार दे० (गु०) घातक, नृशंस, मारने व

जीमूत तत्० (पु०) मेघ, बादल, घन, घ पर्वत, मोथा, मुस्ता।—**वाहन** (पु० स्मार्त पण्डित। ये ग्यारहवीं सदी के [illegible] में उत्पन्न हुए थे, इन्होंने मनुस्मृति [illegible] बनाया है।

जीयत दे० (पु०) जीवित, जीते हुए, इस प्रयोग रामायण में किया गया है।

जीरक तत्० (पु०) जीरा, पवित्र [illegible] मसाला।

जीरा तद्० (पु०) जीरा, जीरक, स्वन [illegible] मसाला।

जीर्ण तत्० (गु०) पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, जर परिपक्व, जर्जरीभूत, पाक विशिष्ट।—[illegible] अशक्तता, दुर्बलता दौर्बल्य, निर्बलत [illegible] (पु०) फटा पुराना वस्त्र, सड़ा गला कप

जुन्हैया दे० (स्त्री०) चांदनी, तारा, तारका, चन्द्रमा।

जुरना दे० (क्रि०) मिलना, उपलब्ध होना, प्राप्त होना।

जुरा देना दे० (क्रि०) पाना, प्राप्त करना, दिलवाना, दिलवादेना, प्राप्त कराना।

जुराना दे० (क्रि०) शीतल होना, शीतल करना, मिलना, जोड़ना, एकत्रित होना, बटोरना।

जुरावना दे० (क्रि०) पाने योग्य, मिलने योग्य, मिलनहार, लभ्य, उपलब्धि योग्य।

जुरुआ दे० (स्त्री०) भार्या, पत्नी, स्त्री, मेहरारू, जोरू।

जुरै, दे० मिले, प्राप्त हो, लब्ध हो, मिल जाय।

जुल दे० (पु०) बढ़ावा, उत्साह देना, छल, कपट।

जुवती तद्० (स्त्री०) युवती, युवा स्त्री, जवान स्त्री।

जुवराज तद्० (पु०) युवराज, राजकुमार, राज्य का अधिकारी, राजकुमार, उपराजा।

जुवा तद्० (पु०) युवा, युवावस्था प्राप्त, जवान, तरुण।

जुवार दे० (पु०) अन्न विशेष, जुन्हरी।

जुवारी दे० (पु०) जुआरी, द्यूतकर्ता, छली, कपटी।

जुहार दे० (पु०) युद्धार्थ यात्रा की विदाई, वीरों के अभिवादन की रीति, युद्ध का अभिवादन, राजपूतों के प्रणाम करने की शैली, प्रणाम, नमस्कार, दण्डवत, पालागन, यथाः—

आप आपमहं करहिं जोहारू,
यह समता सब कहँ त्योहारू।
—पद्मावत।

जू दे० (अ०) सम्मान सूचक, माननीयों के आदर-प्रदर्शन के लिये यह शब्द उनके नाम के अन्त में जोड़ा जाता है। यथाः—श्री कृष्णचन्द्र जू, श्री रामचन्द्र जू इत्यादि।

जूआ दे० (पु०) जुआ, द्यूत, पाशक्रीड़ा, जुआठ।

जूआठ दे० (पु०) जुअड़, जूआ, जूआठ, उस लकड़ी की बनी हुई वस्तु को कहते हैं, जो बैलों के कन्धे पर रखी जाती है, जिसमें हल बाँध कर खेत जोता जाता है।

जूआरी दे० (पु०) जूआ खेलने वाला, द्यूतकर्ता, जूए का खिलाड़ी, छली, कपटी।

जूआर दे० (पु०) समुद्र का जल उफनना, समुद्र का जल बढ़ना, समुद्र में उफान आना, चन्द्रमा की पूर्ण वृद्धि होने पर समुद्र में उफान आता है।

जूं दे० (स्त्री०) चिल्लर, चीलड़, एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो कपड़ों की मैल से उत्पन्न होता है।

जूझ दे० (पु०) युद्ध, लड़ाई, समर, संग्राम।—मरना (वा०) लड़कर मरना, जान दे देना, प्राण देना।

जूझना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई करना, मरना, मरने के समान कष्ट उठाना।

जूट दे० (पु०) समूह, यूथ, झुण्ड, दल।

जूठ दे० (पु०) भोजन से बचा हुआ, उच्छिष्ट।

जूठन दे० (पु०) भोजन का अवशेष, जूठा, गुरु पिता आदि मान्यों का जूठा।

जूठा दे० (पु०) सखरी, सखारी अन्न वर्तन आदि।

जूड़ दे० (पु०) शीत, शीतल, ठंढा, सर्दि, जुकाम।

जूड़ा दे० (पु०) ठण्ढा, शीतल, बन्धे हुए बाल, खोपा।

जूड़ी दे० (स्त्री०) ज्वर विशेष, शीतज्वर, कम्प-ज्वर।

जूता दे० (पु०) पगरखी, पनही, पैर में पहनने की चर्म पादुका, जूती।

जूती दे० (स्त्री०) सुन्दर और छोटा जूता, खूबसूरत जूता।

जूथ तद्० (पु०) यूथ, दल, झुण्ड, समूह, सेना।—प (पु०) यूथपति, सेनापति, सेनाध्यक्ष, दल का नायक, झुण्ड का मालिक।

जूदा दे० (अ०) पृथक्, भिन्न, अलग, फरक, अलहदा।

जून दे० (पु०) जुन, समय, काल, वेर, बेला, अवसर।

जूना दे० (पु०) घास का बना रस्सा, बीड़ा, गेडुरी।

जूप तद्० (पु०) यूप, जूआ, यज्ञस्तम्भ।

जूपी दे० (पु०) जूआरी।

जूरा दे० (पु०) बालों की गाँठ, बन्धे हुए बाल, जूड़ा, खोंपा।

जुगनू दे० (पु०) कण्ठ भूषण, आभूषण विशेष जो गले में पहना जाता है।

जुगल तद्० (पु०) जोड़ा, युगल, दो, युग्म, युग, द्वई।

जुगवत दे० प्रतीक्षा करते, पालन करते, आसरा देखते, यत्न करते, परखते २।

जुगवना दे० (क्रि०) जुगवना, रक्षा करना, रुचना।

जुगविधि तद्० (स्त्री०) दोनों प्रकार से, दोनों रीति से।

जुगवैया दे० जुगवने वाला, रक्षक, रुचने वाला।

जुगानजुग तद्० (वा०) युगानुयुग, अनेक युग, कई वर्ष, बहुत वर्ष तक, बहुत दिनों तक।

जुगाना दे० (क्रि०) यत्न करना, उपाय करना, रक्षा करना, दुख से उबारना, बचाना।

जुगालना दे० (क्रि०) पगुराना, पागुर करना, रोमन्थ करना, एक बार चबा कर खाये हुए को पुनः निकाल कर चबाना, जैसे बैल आदि करते हैं।

जुगाली दे० (स्त्री०) पागुर, रोमन्थ, चर्वित चर्वण।

जुगुप्सा तद्० (स्त्री०) [गुप्+सन्+आ] निन्दा, तिरस्कार, कुत्सा, ग्लानि, घृणा।

जुगुप्सित तद्० (गु०) [गुप्+सन्+क्त] निन्दित, गर्हित, घृणित, तिरस्कृत।

जुङ्ग दे० (स्त्री०) उमङ्ग, साहस, उत्साह।

जुङ्गित दे० (गु०) जाति पतित, जाति बहिष्कृत।

जुज्जु दे० (पु०) भयङ्कर मूर्ति विशेष, भयङ्कर कल्पित मूर्ति, कल्पित भूत योनि।

जुझाऊ दे० (गु०) युद्ध सम्बन्धी, युद्ध के लिये, युद्ध की सामग्री, लड़ाका शूर, वीर।—बाजा (पु०) युद्ध के लिये प्रस्तुत होने का वाद्य विशेष, रणभेरी, योद्धाओं को उत्साहित करने वाला बाजा।

जुझार दे० (पु०) लड़ाका, वीर भट, रणबाँकुर भट।

जुझावट दे० (स्त्री०) युद्ध, समर, कलह, युद्ध के लिये उभड़ाव।

जुझावना दे० (क्रि०) मरवा डालना, मरवा डालने के लिये उपदेश, असदुपदेश, प्रबल से विरोध खड़ा करके मरवा डालना।

जुटना दे० (क्रि०) मिलना, जुड़ना, एकत्रित होना, एकट्ठा होना, लड़ना, लड़ने के लिये सामने आना, अपेक्षा करना, राह देखना, आसरा ताकना, बाट देखना।

जुटाना दे० (क्रि०) जुड़ाना, एकत्रित करना, मिला देना, जमाना, जमा करना, मिलाना।

जुटैया दे० (पु०) जुट जाने वाला, भिड़ने वाला, मिलने वाला, लड़ाका, लड़ने वाला।

जुठारना दे० (क्रि०) जूठा करना, उच्छिष्ट करना।

जुठारि दे० जूठा करके, उच्छिष्ट करके।

जुड़ना दे० (क्रि०) मिलना, मिलजाना, जुटजाना, सटना, एकत्रित होना।

जुड़हा दे० (पु०) यमल, युग्म, जुगुल, जोड़ा।

जुड़ाई दे० (स्त्री०) जोड़ने की मजूरी, जुड़ने का दाम, जोड़ाई का काम, जुकाम, सर्दी, रोग विशेष।

जुड़ाना दे० (क्रि०) मिलाना, मिलवाना, भिड़ाना, एकत्रित करना, जोड़ देना, विश्राम करना, थकावट उतारना, ठण्डाना ठण्डा होना, आराम करना, सर्दियाना, जुकाम हो जाना।

जुड़िया, जुड़िहा दे० (पु०) यमज, एक साथ उत्पन्न दो लड़के।

जुताई दे० (स्त्री०) खेत जोतने का काम, खेत जोतना, खेत जोतने की मजूरी।

जुताना दे० (क्रि०) खेत जोतवाना, खेत को जोत कर बनाना।

जुतियाना दे० (क्रि०) जूतों से मारना, अप्रतिष्ठा करना।

जुद्ध तद्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, रण।

जुधिष्ठिर तद्० (पु०) युधिष्ठिर, स्वनाम प्रसिद्ध चन्द्रवंशीयराजा, यह अपनी सत्यवादिता के कारण देव चरित्र हो गये हैं। पाण्डवों में यह सब से बड़े थे। (देखो युधिष्ठिर)।

जुन दे० (पु०) समय, काल, अवसर, मौका।

जुन्हरी दे० (स्त्री०) जुआर, अन्न विशेष।

जुन्हाई दे० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, (स्त्री०) चाँदनी, प्रकाश।

माला तद्० (स्त्री०) जयमाला, स्वयम्वर माला, जीत की माला।

मिनि तद्० (पु०) मुनि विशेष, प्रसिद्ध हिन्दू दर्शन प्रणेता, इनके बनाये दर्शन का नाम पूर्व मीमांसा है। इस दर्शन को जैमिनि दर्शन भी कहते हैं। आस्तिक षट् दर्शनों के अन्तर्गत मीमांसा दर्शन भी है। श्रुति और स्मृति का जहां विरोध है, उनका विचार इस दर्शन में किया गया है। यह मंत्र रूप ही देवता मानते हैं। इनके मत से सृष्टि अनादि है, ईश्वर सत्ता के अस्तित्व आदि के ऊपर इसमें कुछ भी विचार नहीं किया गया है। यह कृष्ण द्वैपायन व्यास के शिष्य थे। जैमिनि ने सामवेद और महाभारत इनसे पढ़े थे। मीमांसा दर्शन के अतिरिक्त एक संहिता भी इन्होंने बनायी है, जिसका नाम जैमिनि भारत है। सुमन्तु और सुत्वान नाम के इनके दो पुत्र थे। इनके दोनों पुत्र अनुभवी विद्वान् थे। इनके पुत्रों ने भी वेद की संहितायें बनायी हैं।

मिनी तद्० (पु०) ब्रह्मवादी, ब्रह्मवेत्ता, आत्मज्ञानी।

सा दे० (अ०) यथा, जिस प्रकार, उपमानवाची।

हैं दे० (क्रि०) जायँगे।

ा दे० (सर्व०) जो कोई, यदा, यदि, सम्बन्धार्थक।

ां दे० (अ०) जो, जैसा, यदि, जब।

ांक दे० (पु०) जलौका, रक्तपान करने वाला एक जल जन्तु।

ोकर दे० (अ०) जिस प्रकार, जैसा, यादृश।

ांही दे० (अ०) जिस समय में, जिस काल में, जभी।

ाख दे० (स्त्री०) तौल, माप, नाप, भार, परिमाण, वज़न।

खना दे० (क्रि०) तौलना, तौल करना, वजन करना, नापना, मापना।

ाखिम दे० (स्त्री०) दायित्व, भार, रक्षा का भार, चिन्ता, शङ्का, उत्तर दातृत्व, धन, सोना, चांदी, रत्न।—उठाना (वा०) दायित्व लेना, रक्षा का भार ग्रहण करना, साहस, किसी भयङ्कर काम करने को उत्साहित होना।

जोखों दे० (स्त्री०) जोखिम, घाटा, बीमा।

जोग तद्० (पु०) योग, चित्त की वृत्तियों को बाहरी वस्तुओं से हटाना, चित्त को अन्तर्मुख करना, ज्ञान प्राप्त करने का साधन, भगवान का उचित भक्त बनने का उपाय।—माया (स्त्री०) भगवान की एक शक्ति।

जोगवत दे० (क्रि०) परीक्षा करते, रखते, रक्षा करते।

जोगाभ्यास तद्० (पु०) योगाभ्यास, योग साधन, योग की क्रियाओं का साधन करना।

जोगी तद्० (पु०) योगी, योगाभ्यासी, महात्मा।

जोगिनो तद्० (स्त्री०) योगिनी, देवी की सहचरी (देखो योगिनी)।

जोगिया दे० (पु०) यतिय, संन्यासियों का रङ्ग, एक रागिनी विशेष।

जोगेश्वर तद्० (पु०) योगियों के उपास्य देव, भगवान्, नारायण, श्रीकृष्ण, "यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्द्धरः, तत्र श्री र्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम"।

—गीता।

जोग्य तद्० (गु०) योग्य, अच्छा, उत्तम, समर्थ, श्रेष्ठ।

जोजन तद्० (पु०) योजन, चार कोस, चार कोस का मार्ग।

जोट दे० (पु०) जोड़ा, साथी, सङ्गी, सहचर।

जोटा दे० (पु०) बराबरी के, तुल्य, समान, साथी, सहचर।

जोड़ दे० (पु०) मेल, ग्रन्थि, जोड़ाई, गांठ, टोटल, मीजान।

जोड़ती दे० (स्त्री०) लेखा, गणित, हिसाब, गिनती, संख्या।

जोड़न दे० (पु०) जामन, सोहागा।

जोड़ना दे० (क्रि०) मिलाना, मिलान करना, एकत्रित करना, गांठना, गांठ लगाना, पैवन्द

जूरी दे० (स्त्री०) एकत्रित, समूह, झुण्ड, दल, यथाः—
"बाँध तपा आनी जहं जूरी,
जूरी आय सब सिंहल पूरी"।
—पद्मावत।

जूस दे० (पु०) परेह, कढ़ी, रोग के लिये पथ्य।

जूह जूहा दे० (पु०) समूह, जूथा, यूथ सेना, पद्मावत में इस शब्द को स्त्रीलिङ्ग माना है, यथाः—
हस्ति की जूह आय अंग सारी,
हनुमत तबै लंगूर पसारी"।
—पद्मावत।

जूही तद्० (स्त्री०) यूथिका, पुष्प विशेष।
"जूही में कन्हैया बसे,
गुलनारी में राधा प्यारी"।

जृम्भण तत् (पु०) [जृम्भ+अनट्] जँभाई, अङ्ग तोड़ना, मरोड़ना।

जृम्भा तत्० (स्त्री०) मुखविकाश, जँभाई, जृम्भण।

जे दे० (सर्व०) जो, जो लोग, सब।

जेई दे० जो कोई, भोजन करके, खाकर।

जेऊ दे० जो कोई भी, अनिर्द्धारित मनुष्य।

जेट दे० (पु०) राशि, एकत्रित, एकट्ठा, बटोरा।

जेठ तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, अग्रज, पति का बड़ा भाई, ज्येष्ठ महीना, जेठ मास।

जेठरा तद्० (पु०) ज्येष्ठ, बड़ा, पहलौठा, प्रथम उत्पन्न पुत्र, जेठ, ज्येष्ठ, अग्रज।

जेठा तद्० (पु०) बड़ा, जेठ, ज्येष्ठ, पहलौठा, प्रथम उत्पन्न।

जेठानी तद्० (स्त्री०) जेठ की स्त्री, पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेठी तद्० (स्त्री०) बड़ी, श्रेष्ठ, प्रधाना।—मधु (पु०) औषध विशेष, एक प्रकार का पौधा, मुलहठी।

जेठौत तद्० (पु०) ज्येष्ठोत्पन्न, जेठ का पुत्र, पति के बड़े भाई का पुत्र।

जेता दे० (गु०) जितना, परिमाण और संख्यार्थ वाची।

जेब दे० (पु०) खलीता, पाकेट, थैली, कपड़े में लगी हुई थैली।—कतरा (गु०) जेब काटने वाला, चोर, उचक्का।

जेमन तत्० (पु०) भोजन, खाना, खाने की भोजन की सामग्री।

जेया दे० (गु०) जीत जाने योग्य, जीने के

जेर दे० (पु०) गर्भ बन्धन, जरायु, खेड़ी, झिल्ली

जेल दे० (पु०) कारागार, बड़ा घर, बँधुओं के रहने का घर, बँधुओं की पंक्ति।—खाना (पु०) कारागार, बँधनागार बन्दीगृह।

जेवड़ा दे० (पु०) रस्सा, डोर।

जेवड़ि दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरि, छोटा रस्सा।

जेवना तद्० (क्रि०) खाना, भोजन करना।

जेवनार तद्० (पु०) जेमन, भोजन, खान

जेवरी दे० (स्त्री०) रस्सी, डोरी, रसरी।

जेहड़ दे० (स्त्री०) सुप पर रखा घड़ा।

जेहर दे० (पु०) मटकी, मिट्टी का पात्र, विशेष, स्त्रियों के एक गहने का नाम जो पहना जाता है।

जेहि दे० (स०) जिसको, जिसने, जिससे।

जै दे० (गु०) जितना, संख्या और [illegible] वाची।

जै दे० (स्त्री०) जय, जीत, विजय।—[illegible] (वा०) जय शब्द का उच्चारण पूर्वक आशीष देना, अभ्युदय चाहना, मङ्गल मनाना।

जैगीषव्य तत्० (पु०) ऋषि विशेष, यह [illegible] असित देवल के गुरु थे। पहिले असित नामक एक ऋषि गृहस्थ के धर्मों का [illegible] हुए आदित्य तीर्थ पर वास करते थे। [illegible] दिनों के बाद जैगीषव्य मुनि भी वहाँ आये, उन्होंने योगाभ्यास के द्वारा सिद्धि प्राप्त की महर्षि देवल जैगीषव्य की योग सिद्धि [illegible] शिष्य हो गये।

जैत दे० (पु०) वृक्ष विशेष, रागिनी विशेष।

जैन तत्० (पु०) जिनके धर्म को मानने जिनके बताये धर्म के अनुसार चलने वाला, धर्मी।

जैनी तत्० (गु०) जैन मत वाला, श्रावक, जिनोपासक।

जोहना दे० (क्रि०) बाट देखना, प्रतीक्षा करना, ताकना, खोजना, ढूढ़ना, पता लगाना, मालूम करना, अनुसन्धान करना।

जोही दे० (गु०) खोजी, ढूंढ़वैया, अनुसन्धानी।

जौं दे० (पु०) जो, यदि, जब,—लग (अ०) जबतक, जिस समय तक, जितनी देर तक,—लौं (अ०) जबतक।

जौ तद्० (पु०) यव, अन्नविशेष, स्वनामप्रसिद्ध अन्न।

जौंकना दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना, कुवाक्य कहना।

जौन दे० (सर्व०) जो, जिस।

जौनार दे० (पु०) जेवनार, भोजन, भोज खाना, उत्सव का भोज।

ज्ञ तद्० (पु०) बुध, पण्डित, ब्रह्मा, मङ्गल, (गु०) अभिज्ञ, विदग्ध, चतुर।

ज्ञात तद्० (गु०) ज्ञा+क्त, कृतज्ञान, जाना हुआ, विदित, प्रतीत, अवगत,—सार (अ०) विदित, मालूम,—सिद्धान्त (गु०) शास्त्रतत्त्वज्ञ, शास्त्र का यथार्थ मर्म जानने वाला।

ज्ञातव्य तद्० (गु०) ज्ञा+तव्य, ज्ञान का विषय, जानने योग्य, अवगन्तव्य, बोध्य।

ज्ञाता तद्० (पु०) ज्ञा+तृ, ज्ञानशील, बोद्धा, ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार।

ज्ञाति तद्० (पु०) सपिण्ड, भाई बन्धु, कुटुम्ब परिवार, बान्धव।

ज्ञान तद्० (पु०) [ज्ञा+अनट्,] बोध, चैतन्य, चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगम, आत्मा का एक गुण विशेष, समझ।—काण्ड (पु०) वेद का एक काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें उपनिषद् आदि की आज्ञा है।—गम्य (गु०) ज्ञेय, ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य।—द (गु०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिताहित समझाने वाला।—दीप (पु०) ज्ञान रूप दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता है।—पूर्वक (गु०) सज्ञान, ज्ञान के सहित, जानकर, समझ कर।—वान् (पु०) ज्ञानवान् पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण।—वापी (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ का नाम, कहते हैं उद्दण्ड प्रकृति, धर्मद्रोही, मुहम्मद गोरी जिस समय काशी के मन्दिरों को तोड़ फोड़ कर भारत का धन लूट रहा था, उस समय काशी के प्रधान देवता विश्वनाथ जी मन्दिर छोड़ एक कूप में कूद गये। विश्वनाथ के मन्दिर के स्थान ही पर मसजिद बनी हुई पूर्व घटना का स्मारक हो रही है।—विहीन (गु०) ज्ञान हीन, ज्ञान रहित, मूढ़, मूर्ख, अज्ञान।—मय (गु०) ज्ञानविशिष्ट ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवान्।—मार्ग (पु०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का मनन, ज्ञानाभ्यास।—मूल (गु०) सत्यज्ञान, ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न।

ज्ञानी तद्० (गु०) [ज्ञान+इन्] बोद्धा, ज्ञान युक्त, बुद्धिमान्, प्राज्ञ, (पु०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, ब्रह्मवेत्ता।

ज्ञानेन्द्रिय तद्० (पु०) [ज्ञान+इन्द्रिय] जिन इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वक्।

ज्ञापन तद्० (पु०) [ज्ञा+णिच्+युच्] बोधन, जनाना, विदित करना, प्रचारण, प्रकाशन।

ज्ञापित तद्० (गु०) [ज्ञा+णिच्+क्त] विज्ञापित, जनाया, विदित किया, मालूम कराया।

ज्ञेय तद्० (गु०) [ज्ञा+य] बोधगम्य, जानने योग्य, जानने के उपयोगी।

ज्या तद्० (स्त्री०) माता, मा, जननी, पृथिवी, पृथ्वी, रोदा, धनुष का चिल्ला, मौर्वी।—घोष (पु०) धनुष का टङ्कार, धनुष का शब्द।

ज्यानौ (ना०) दे० (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना, रक्षा करना।

ज्यायान् तद्० (गु०) [वृद्ध+ईयस] अग्रज, बड़ा, जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतिवृद्ध, वर्षीयान्।

ज्येष्ठ तद्० (गु०) [वृद्ध+इष्ठ] श्रेष्ठ, अतिवृद्ध। (पु०) अग्रज, अधिक वयस्क, बड़ा, अधिक उमर वाला, पहलौठा, प्रथम पुत्र, जेठमास, इस महीने की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूर्ण चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता है।—तात (पु०) पिता का बड़ा भाई।

लगाना, गणन करना, सङ्कलन करना, धन बटोरना, लगाना, सटाना, चिपटाना, जोड़ देना।

जोड़ा दे० (पु०) युग्म, युगल, स्त्री पुरुष, जूता, एक बार पहनने योग्य कपड़े।

जोड़ाई दे० (स्त्री०) जोड़ाई का काम, जोड़ना, जोड़ने की मजूरी।

जोड़ी दे० (स्त्री०) दो, युगल।

जोत तद्० (पु०) खेत की जुताई, हल चलना, चासना, (स्त्री०) ज्योति, प्रकाश, किरण।

जोतना दे० (क्रि०) हल से जोतना, चासना, चास करना, हल चलाना, हल से खेत को बोने योग्य बनाना।

जोतमान तद्० (पु०) ज्योतिष्मान्, चमकदार, प्रकाश शील।

जोतार दे० (पु०) हरवाहा, हलवाह, जोतने वाला, चासा।

जोति तद्० (स्त्री०) ज्योति, चमक, प्रकाश, तारा, द्युति, कान्ति, शोभा, छवि।—स्वरूप (पु०) भगवान्, सब योगियों के ध्येय आत्मा, आत्मा का प्रकाश, जिसका लय योगी ध्यान करते हैं।

जोतिष तद्० (पु०) ग्रहनक्षत्र आदि के विषय की बातें बताने वाला शास्त्र, काल ज्ञान शास्त्र, इसके प्रधानतः फलित और गणित ये दो भेद हैं।

जोतिषी तद्० (पु०) दैवज्ञ, ज्योतिषी, शास्त्र वेत्ता, गणितज्ञ, ज्योतिष् विद्या जानने वाला।

जोती दे० (स्त्री०) तराजू के पलड़े बाँधने की रस्सी, जुआठ, हल जोड़ने वाली रस्सी, जोत।

जोत्स्ना तद्० (स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिकायुक्त रात्रि, प्रकाशयुक्त रात, उजेली रात, चन्द्रिका, चाँदनी, प्रकाश।

ज्योत्स्नी तद्० (स्त्री०) रात्रि, रात, शुक्लपक्ष की रात, उजेली रात।

जोधन तद्० (पु०) आयोधन, लड़ाई, संग्राम, समर।

जोधा तद्० (पु०) योधा, वीर, लड़ाका, लड़नेवाला, भट, सेना का सिपाही।

जोनराज तद्० (पु०) कश्मीर के विख्यात ऐतिहासिक पण्डित, काश्मीर के एक मात्र इतिहास राजतरङ्गिणी के ये कर्ता हैं। कल्हण राजतरङ्गिणी पूरी नहीं कर सके थे, उनके बनाने का शेषांश पण्डित जोनराज ने पूरा किया, कल्हण ने ११४८ ई० में राजतरङ्गिणी लिखी थी। जोनराज ने अपनी बनायी राजतरङ्गिणी में लिखा है कि "पण्डित जोनराज महाशय, ३५ संवत् में राजतरङ्गिणी बनाकर शिवसायुज्य प्राप्त हुए" इसी आधार पर यह बात निश्चित हुई है कि जोनराज का समय १४-वीं सदी है। इनकी बनायी राजतरङ्गिणी दूसरी राजतरङ्गिणी के नाम से प्रसिद्ध है। भारविकृत राजतरङ्गिणी की टीका भी इन्होंने बनायी थी। इनके शिष्य का नाम श्रीवर पण्डित था, इन्होंने, १४-वीं और १५-वीं सदी के मध्य में तीसरी राजतरङ्गिणी बनायी है।

जोनि तद्० (स्त्री०) योनि, स्त्री का विशेष चिह्न, भग, उत्पत्ति स्थान, उद्गम स्थान, खनि, आकर, खान, कारण, हेतु।

जोन्ह दे० (पु०) चन्द्रमा, चाँदनी।

जोबन तद्० (पु०) यौवन, युवावस्था, तरुणाई, स्तन, पयोधर, छाती, चूँची।

जोबनवती तद्० (स्त्री०) यौवनवती, युवती, तरुणी, युवावस्थावाली स्त्री, युवा स्त्री, जवान स्त्री।

जोबनवा, जोबना तद्० (पु०) जोबन, यौवन, तारुण्य।

जोय, जोरु, तद्० (स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी, स्त्री, कुटुम्बिनी।

जोरी दे० (स्त्री०) जोड़ा, जोड़ी, बांधकर।

जोला दे० (पु०) कपट, छल, धोखा, धूर्तता, ठगाई, ठगी।

जोवत दे० (क्रि०) अभिलाष करते, चाहते, देखते।

जोवना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, खोजना, ढूँढ़ना, अनुसन्धान करना, चितवना।

जोषित् तद्० (स्त्री०) योषित्, सीमन्तिनी, स्त्री, कामिनी।

जोषी, जोसी, दे० (पु०) ज्योतिषी, ज्योतिः शास्त्र वेत्ता, दैवज्ञ।

जोहना दे० (क्रि०) बाट देखना, प्रतीक्षा करना, ताकना, खोजना, ढूंढना, पता लगाना, मालूम करना, अनुसन्धान करना।

जोही दे० (गु०) खोजी, ढूंढैया, अनुसन्धानी।

जौं दे० (पु०) जो, यदि, जब,—लग (अ०) जबतक, जिस समय तक, जितनी देर तक,—लौं (अ०) जबतक।

जौ तद्० (पु०) यव, अन्नविशेष, स्वनामप्रसिद्ध अन्न।

जौंकना दे० (क्रि०) गाली देना, बकना, बड़बड़ाना, कुवाक्य कहना।

जौन दे० (सर्व०) जो, जिस।

जौनार दे० (पु०) जेवनार, भोजन, भोज खाना, उत्सव का भोज।

ज्ञ तद्० (पु०) बुध, पण्डित, ब्रह्मा, महीसुत, मङ्गल, (गु०) अभिज्ञ, विदग्ध, चतुर।

ज्ञात तद्० (गु०) ज्ञा+क्त, कृतज्ञान, जाना हुआ, विदित, प्रतीत, अवगत,—सार (अ०) विदित, मालूम,—सिद्धान्त (पु०) शास्त्रतत्त्वज्ञ, शास्त्र का यथार्थ मर्म जानने वाला।

ज्ञातव्य तद्० (गु०) ज्ञा+तव्य, ज्ञान का विषय, जानने योग्य, अवगन्तव्य, बोध्य।

ज्ञाता तद् (पु०) ज्ञा+तृ, ज्ञानशील, बोद्धा, ज्ञान प्राप्त, जानने वाला, जानकार।

ज्ञाति तद्० (पु०) सपिण्ड, भाई बन्धु, कुटुम्ब परिवार, बान्धव।

ज्ञान तद्० (पु०) [ज्ञा+अनट्] बोध, चैतन्य, चेतनता, बुद्धि, अनुमान, अवगम, आत्मा का एक गुण विशेष, समझ।—काण्ड (पु०) वेद का वह काण्ड जिसमें ज्ञान प्राप्त करने की रीति है, जिसमें उपनिषद् आदि की आज्ञा है।—गम्य (गु०) ज्ञेय, ज्ञातव्य, ज्ञान की सहायता से जानने योग्य।—द (गु०) ज्ञानदाता, ज्ञान देने वाला, हिताहित समझाने वाला।—दीप (पु०) ज्ञान रूप दीप, ज्ञान का प्रकाश, जिससे अज्ञान दूर होता है।—पूर्वक (गु०) सज्ञान, ज्ञान के सहित, जानकर, समझ कर।—वान् (पु०) ज्ञानवान् पण्डित, प्राज्ञ, विचक्षण।—वापी (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ का नाम, कहते हैं उद्दण्ड प्रकृति, धर्मद्रोही, *मुहम्मद गोरी जिस समय काशी के मन्दिरों को* तोड़ फोड़ कर भारत का धन लूट रहा था, उस समय काशी के प्रधान देवता विश्वनाथ जी मन्दिर छोड़ एक कूप में कूद गये। विश्वनाथ के मन्दिर के स्थान ही पर मसजिद बनी हुई पूर्व घटना का स्मारक हो रही है।—विहीन (गु०) ज्ञान हीन, ज्ञान रहित, मूढ़, मूर्ख, अज्ञान।—मय (गु०) ज्ञानविशिष्ट ज्ञानमय, ज्ञानयुक्त, ज्ञानी, ज्ञानवान्।—मार्ग (पु०) निवृत्तिमार्ग, उपनिषदों का मनन, ज्ञानाभ्यास।—मूल (गु०) सत्यज्ञान, ज्ञान जनित, ज्ञानोत्पन्न।

ज्ञानी तद्० (गु०) [ज्ञान+इन्] बोद्धा, ज्ञान युक्त, बुद्धिमान्, प्राज्ञ, (पु०) दैवज्ञ, महाप्राज्ञ, ब्रह्मवेत्ता।

ज्ञानेन्द्रिय तद्० (पु०) [ज्ञान+इन्द्रिय] जिन इन्द्रियों से ज्ञान होता है, बुद्धि, मन, चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा, त्वक्।

ज्ञापन तद्० (गु०) [ज्ञा+णिच्+युक्] बोधन, जनाना, विदित करना, प्रचारण, प्रकाशन।

ज्ञापित तद्० (गु०) [ज्ञा+णिच्+क्त] विज्ञापित, जनाया, विदित किया, मालूम कराया।

ज्ञेय तद्० (गु०) [ज्ञा+य] बोधगम्य, जानने योग्य, जानने के उपयोगी।

ज्या तद्० (स्त्री०) माता, मा, जननी, पृथिवी, पृथ्वी, रोदा, धनुष का चिल्ला, मौर्वी।—घोष (पु०) धनुष का टङ्कार, धनुष का शब्द।

ज्यानो (ना०) दे० (क्रि०) जिलाना, पालना, पोसना, रक्षण करना।

ज्यायान् तद्० (गु०) [वृद्ध+ईयस्] अग्रज, बड़ा, जेठा, ज्येष्ठ, प्रधान, अतिवृद्ध, वर्षीयान्।

ज्येष्ठ तद्० (गु०) [वृद्ध+इष्ठ] श्रेष्ठ, अतिवृद्ध। (पु०) अग्रज, अधिक वयस्क, बड़ा, अधिक उमर वाला, पहलौठा, प्रथम पुत्र, जेठमास, इस महीने की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूर्ण चन्द्रमा इसी नक्षत्र के पास रहता है।—तात (पु०) पिता का बड़ा भाई।

ज्येष्ठा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, अठारहवाँ नक्षत्र।

ज्येष्ठाश्रम तत्० (पु०) [ज्येष्ठ+आश्रम] गार्हस्थ्य, गृहस्थाश्रम, दूसरा आश्रम।—ी (पु०) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी, गृही।

ज्यों का त्यों दे० (अ०) यथार्थ, ठीक वैसा ही, अपरिवर्तित।

ज्योतिः तत्० (स्त्री०) दृष्टि, नक्षत्र, प्रकाश, दीप्ति, उजाला, चमक, जोत।—शास्त्र (पु०) ग्रह, राशि, नक्षत्र आदि की विद्या खगोल विद्या, ज्योतिष।

ज्योतिरिङ्गण तत्० (पु०) कीट विशेष, खद्योत।

ज्योतिर्गण तत्० (पु०) [ज्योतिस्+गण] आकाश-स्थित पदार्थ।

ज्योतिर्विद् तत्० (पु०) [ज्योतिर् विद्+क्विप्] गणक, दैवज्ञ, ज्योतिः शास्त्र वेत्ता।

ज्योतिर्विद्या तत्० (स्त्री०) [ज्योतिष्+विद्या] ज्योतिः शास्त्र, खगोल।

ज्योतिर्वेत्ता, तत्० (पु०) [ज्योतिष्+वेत्ता] गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ज्योतिश्चक्र तत्० (पु०) राशिचक्र, राशि समूह, बारह राशियों का चक्र।

ज्योतिष् तत्० (पु०) वेदाङ्ग, शास्त्र विशेष, ग्रहण आदि गणन करने का शास्त्र, ग्रहादि विषयक शास्त्र।

ज्योतिषी तत्० (पु०) गणक, दैवज्ञ, जोशी।

ज्योतिष्टोम तत्० (पु०) [ज्योतिस्+स्तोम] यज्ञ विशेष, स्वर्ग फलक यज्ञ।

ज्योतिष्मती तत्० (स्त्री०) मालकंगनी, लता विशेष, रात्रि, रजनी, प्रकाशयुक्त रात्रि।

ज्योतिष्मान् तत्० (पु०) ज्योतियुक्त, तेजस्वी, प्रतापी।

ज्योतीरथ तत्० (पु०) [ज्योतिस्+रथ] ध्रुव तारा, ध्रुवनक्षत्र।

ज्योत्स्ना तत्० (स्त्री०) चन्द्रमा की ज्योति, प्रकाश, चाँदनी, चन्द्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना युक्त रात्रि।

ज्वर तत्० (पु०) [ज्वर+अल्] रोग विशेष, ताप, स्वनाम प्रसिद्ध रोग। राक्षस विशेष, दैत्यराज बाणासुर के सेनापति का नाम, इसके तीन पैर, तीन सिर, छः हाथ और नौ नेत्र थे। इसकी सृष्टि महादेव जी ने की थी, और उन्होंने बाण की सहायता के लिये इसे भेजा था। एक बार बलराम और प्रद्युम्न के साथ श्रीकृष्ण बाण की राजधानी में गये थे, बाण ने अनिरुद्ध को क़ैद कर लिया था, अतएव श्रीकृष्ण का वहाँ जाना आवश्यक था। बाणसेनापति ज्वर ने वहाँ श्रीकृष्ण को पीड़ित किया। श्रीकृष्ण ने दूसरे ज्वर की सृष्टि की, उसने बाण के सेनापति को पराजित किया और उसे बाँध कर श्रीकृष्ण के हाथों समर्पित कर दिया। उसने शरण चाहा, श्रीकृष्ण ने प्रसन्न हो कर उसके इच्छानुसार जगत् में अन्य ज्वरों को न रहने का वर दिया। (हरिवंश)—विनाशिनी (स्त्री०) ज्वरनाशक औषध।

ज्वलन तत्० (पु०) अग्निदाह, तपन उद्दीपन, कातर होना, अग्नि।

ज्वार दे० (पु०) जुआर, समुद्र का उफान।

ज्वाला तत्० (स्त्री०) आँच, लौ, लपट, दाह, प्रकाश, ताप जन्य पीड़ा।—मुखी (स्त्री०) पीठस्थान विशेष, महाविद्या विशेष, देश विशेष, जिस स्थान से ज्वाला निकलती हो।

झ

झ व्यञ्जन का नवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण तालु से होता है, अतएव इसे भी तालव्यवर्ण कहते हैं।

झङ्कार तत्० (पु०) [झं+कृ+घञ्] झन झन शब्द, झनकार।

झंखना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, पश्चात्ताप करना, अनुताप करना।

झख तत्० (पु०) मीन, मत्स्य, मछली।—केतु (पु०) मीन केतु, मीनध्वज, मछली के निशान वाला, कामदेव, मदन।

झंखाड़ दे० (पु०) पुरातन वृक्ष, बहुत पुराना वृक्ष, पुराना, जीर्ण।

झँगा दे० (पु०) झंगा, पहिनने का एक वस्त्र, अङ्गा, कुरता।

झँझकार दे० (पु०) झं झं शब्द, झींगुर आदि कीड़ों के शब्द।

झँझट दे० (पु०) घबड़ाहट, खटपट, झगड़ा, तकरार, व्यग्रता।

झँझटी दे० (पु०) व्यग्र, झगड़ालू।

झँझना दे० (पु०) कड़वा, चिड़चिड़ा, खीझू, चिड़कहा।

झँझनाना दे० (क्रि०) झंझन शब्द करना, झणत्कार, आभूषण आदि का शब्द।

झँझनाहट दे० (स्त्री०) झनकार, घुंघरू शब्द, नूपुरध्वनि, चिड़चिड़ाहट।

झँझरी दे० (स्त्री०) जाली, झरोखा।

झँवाना दे० (क्रि०) किसी हेतु से मनस्ताप होना, मुरझाना, झुलसना, ग्लानि होना, झाँवर होना, विवर्ण होना, फिट्टु पड़ना।

झक दे० (पु०) क्रोध, रिस, कोप, बान, लत, सनक, बकबकाय।—झोरी (वा०) छीनाछीनी, झपटा झपटी, खैंचा खैंची, लूटपाट, आक्रमण। —मारना (वा०) व्यर्थ श्रम, बिना प्रयोजन का काम करना, व्यर्थ समय गवाना।

झकना दे० (क्रि०) बकबक करना, निष्फल बोलते रहना, विलाप करना।

झकरी दे० (स्त्री०) पात्र विशेष, जिसमें दूध दुहा जाता है, दोहनी, दोहन पात्र।

झकाझक दे० (पु०) बहुत स्वच्छ, चमकता हुआ स्वच्छ, साफ सुथरा।

झकोर दे० (पु०) झोंक, टोटा, घाटा, हिलोड़, कम्प, कम्पन।

झकोरना दे० (क्रि०) हिलोड़ना, कंपाना, कम्पित करना, चलाना, स्थान च्युत करना।

झकोरा दे० (पु०) अन्धड़, आँधी और पानी, बौछार।

झकोलना दे० (क्रि०) डुलाना, हिलाना, कंपाना।

झक्कड़ दे० (पु०) आँधी, अन्धड़, चौवाई, बयार, गरम प्रकृति का मनुष्य, बहुत बकने वाला मनुष्य।

झक्की दे० (पु०) उन्मत्त, पागल, सक्की, बकवादी, प्रलापी, लहरी, तरङ्गी।

झखना दे० (क्रि०) झंखना, पश्चात्ताप करना, प्रलाप करना।

झगड़ना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई करना, खटपट करना, विवाद करना, विरोध उठाना, कलह करना। भिड़ना, सामना करना।

झगड़ा दे० (पु०) लड़ाई, दंगा, फसाद, बैर, विरोध, विक्षेप।

झगड़ाना दे० (क्रि०) लड़ाई कराना, विरोध कराना, कलह कराना।

झगड़ालिन दे० (स्त्री०) झगड़ा करने वाली स्त्री, लड़ाकू स्त्री।

झगड़ालू दे० (पु०) लड़ने वाला, लड़ाई करने वाला, लड़ाका।

झगा दे० (पु०) अङ्गा, जामा, कुरता, पहिरन, झंगा।

झगुला दे० (पु०) छोटा झगा, बालक का जामा।

झगुलिया दे० (पु०) झुलवा, चोलना, बालकों का कुरता।

झझ दे० (पु०) लम्बी दाढ़ी, बृहत्कूर्च।

झझकारना दे० (क्रि०) धमकाना, तिरस्कार करना, डपटना, डांटना, दबाना।

झझला दे० (पु०) एक प्रकार की मिठाई।

झझर दे० (पु०) सुराही, जल पात्र, कूजा, मिट्टी का बना जल रखने का एक प्रकार का पात्र जिसमें जल ठंडा रहता है।

झझरी दे० (स्त्री०) जाली, जालीदार झरोखा, कटाव।

झञ्झा तत्० (स्त्री०) झड़, आँधी, वृष्टि के साथ आंधी पानी।—निल (पु०) [झञ्झा + अनिल] बड़ी आंधी, प्रबलवात्या, भयानक बवण्डल। —वात (पु०) झड़ी, बवण्डल, पानी और आंधी, अन्धड़, जिसमें पानी भी बरसता हो।

झट तद्० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, बेगि, झटिति, त्वरा से, द्रुत।—पट (वा०) बहुत शीघ्र, अति

शीघ्रता से, बहुत जल्दी।—से (वा०) तुरन्त, शीघ्र, जल्दी।

झटक दे० (पु०) लूट खसोट, लूटतराज, लूटना, हरण करना, चुराना, उखाड़, कुदाव।

झटकना दे० (क्रि०) लूटना, अपहरण करना, चुराना, धोखे से ले लेना, भुलावा देकर लेना, दुबलाना, उतरना, फीका पड़ना, सूखना।

झटका दे० (पु०) खींच, खिचाव, लूट, हरण, झटके से मारने का शब्द। (गु०) झटके से मरा हुआ।

झटास दे० (स्त्री०) बौछार, पानी का छींटा, वायु के झोंके से पानी इधर उधर जाना, झड़ाक।

झटि दे० (पु०) झाड़, वन झाड़ी, अपने से उत्पन्न कतिपय वृक्षों का समूह, झखड़, आंधी।

झटिति तद्० (अ०) द्रुत, शीघ्र, त्वरित, वेगि, तुरन्त, जल्दी।

झड़ दे० (स्त्री०) अंधड़, प्रचण्ड वायु, झड़ी, आंच, एक प्रकार का ताला, ताले की कल।

झड़न दे० (स्त्री०) पतन, गिरन, पके फल आदि का पतन, झरन, बकी की गुल या टेम।

झड़ना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, पतन होना, झरना, चूना, पके फल आदि का चूना, बजना शहनाई, नौबत आदि का।

झड़प दे० (स्त्री०) तिक्तता, कड़ुआपन, कड़ुआहट, आक्रमण, हमला।

झड़पना दे० (स्त्री०) लड़ना, आक्रमण करना, हमला करना, मारामारी करना, झपटना, झपट मारना।

झड़पाझड़पी दे० (स्त्री०) लड़ाई, दङ्गा, फसाद, डपटा डपटी।

झड़पाना दे० (क्रि०) लड़ाना, क्रोध कराना, चिढ़ाना, खिजाना।

झड़बरना दे० (वा०) सब का सब जल जाना, सभी नष्ट होना, समस्त जलना।

झड़बेर दे० (पु०) } जङ्गली बेर, झाड़ की बेर।
झड़बेरी दे० (स्त्री०) }

झड़वाना दे० (क्रि०) झड़ाना, साफ करना, मैल हटवाना।

झड़ाक दे० (पु०) उतावली, शीघ्रता, फुर्ती, हड़बड़ी, जल्दी।

झड़ाका दे० (पु०) शीघ्रता, जल्दी।

झड़ाझड़ दे० (अ०) चटपट, झटपट, शीघ्र, क्रमिक, धारा प्रवाह।

झड़ाना दे० (क्रि०) साफ कराना, झाड़ू दिलवाना, झड़वाना, झाड़ फूंक कराना, मन्त्र तन्त्र करवाना।

झड़ी दे० (स्त्री०) लगातार वृष्टि, बराबर पानी बरसते रहना, अविच्छिन्नवृष्टि, बाहरी आमदनी, वार्षिक या मासिक आमद से अतिरिक्त लाभ, ऊपरी आमद।

झड़ौता दे० (पु०) फल के समय की समाप्ति, फल की समाप्ति का समय, फल झार।

झण्डा दे० (पु०) ध्वजा, पताका, कीर्ति, ध्वजा, पत. पताका, राज चिन्ह विशेष, सत्कर्म सूचक चिन्ह, विशेष कठिन अथवा उपयोगी काम करने वालों का सम्मान सूचक चिन्ह, किसी उत्तम कामका स्मारक, सीमा निर्देशक।

झण्डूला दे० (गु०) बहु पत्र, अधिक पत्तों से घना, बहुकेशी, बहुत बाल वाला लड़का, छोटा लड़का जिसके सिर पर बाल बहुत हों, बिना मुण्डन किया हुआ लड़का।

झन तद्० (पु०) झणत्, अनुकरण शब्द, कङ्कण नूपुर आदि की ध्वनि।

झनक तद्० (पु०) ध्वनि विशेष, धातु निर्मित बर्तनों का शब्द।

झनकना तद्० (क्रि०) झन झनाना, झनझन करना, झणत्कार करना।

झनकार तद्० (पु०) झंकार, भ्रमर आदि की ध्वनि।

झनकारना तद्० (क्रि०) बजाना, शब्द करना, झन झन बजाना।

झनवां दे० (पु०) धान्य विशेष, एक प्रकार का धान।

झप दे० (अ०) झट, शीघ्र, तुरन्त, शीघ्र, त्वरित, वेगी।—से (वा०) शीघ्रता पूर्वक, त्वरा पूर्वक, झटपट, झट से।

झपकना दे० (क्रि०) निद्रा लेना, पलक मारना, झपकी आना, झलना, पंखा करना, पंखा झलना, लपकना, झपटना, झपट लेना।

झपकाना दे० (क्रि०) पलक मारना, मटकाना, लपकना, उंघाना।

झपकी दे० (स्त्री०) पलक, मटकी, लपकी, ऊंघ, उंघाई।

झपट दे० (स्त्री०) लपक, आक्रमण, चढ़ाई, छीना छीनी, लूट खसोट, खींचने के लिये वेग से आगे बढ़ना, लेने के लिये आक्रमण करना।—लेना (क्रि०) छीन लेना, बलात्कार से लेलेना, जबरदस्ती छीनना।

झपटना दे० (क्रि०) लपकना, आगे बढ़ना, बुरी इच्छा से किसी की ओर आगे बढ़ना, चढ़ आना, चढ़ दौड़ना, छीनना।

झपट्टा दे० (पु०) धावा, आक्रमण, बलात्कार, दौड़, चढ़ाई, छीन, लूट।—मारना (क्रि०) झपटना, झपट कर छीन लेना, बलात्कार से छीनना, झपटलेना।

झपलाना दे० (क्रि०) खंगालना, धोना, खूब पानी में धोना।

झपाझपी दे० (स्त्री०) हड़बड़ी, शीघ्रता, अतित्वरा।

झपाट दे० (त०) (स्त्री०) स्फूर्ती, फुर्ती, शीघ्र, जल्दी, झटपट।

झपाना दे० (क्रि०) झपकी लेना, उंघाना, निद्रा लेना, आलस वश अपने आप निद्रा आना।

झपास दे० (स्त्री०) झीसी, फूंही, छोटी छोटी बून्द, झड़ी, ठगाई, धूर्तता, धूर्ताई। (पु०) धूर्त, धोखा बाज, ठग।

झपासिया दे० (गु०) छली, कपटी, धूर्त, अधर्मी, ठग।

झबकाना दे० (क्रि०) घबड़वाना, चकित करना, अचम्भित करना, आश्चर्यित करना।

झबिया दे० (पु०) भूषण विशेष, स्त्रियों का एक गहना।

झबुआ दे० (गु०) लोमश, झबरा, बहुकेश, रोंवरा, बड़े बड़े बाल वाला, जिसके बाल बड़े बड़े हों।

झब्बा दे० (पु०) गुच्छा, लटकन, स्तवक, बड़ा जामा, लबादा, फूंदा, गुच्छा।

झम तत्० (पु०) भोक्ता, भोजन कर्ता, खादक।

झमक दे० (स्त्री०) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा, झलक।

झमकड़ा दे० (पु०) चटक, जगमग, चमकीला, भड़कदार, चिलक, दीप्तिमान्, प्रकाशशील।

झमकना दे० (क्रि०) चमकना, चिलकना, चमचमाना, नाचना, क्रोध से इधर उधर हाथ फेंकना।

झमका दे० (पु०) प्रताप, तेज, प्रभाव, शान।

झमकी दे० (स्त्री०) झमक, झलक, चमक, चकचक, शोभा।

झमझम दे० (अ०) लगातार, सतत, अविरत, अनारत, अश्रान्त, एक के बाद एक, ध्वनि विशेष।

झमझमाना दे० (क्रि०) चमकाना, चिलकना।

झमरझमर दे० (अ०) सहसा वृष्टि आना, बूंद बूंद से।

झमाका दे० (पु०) झड़ी, वृष्टि प्रपात।

झमाझम दे० (अ०) झमझम, लगातार, सतत, अनारत।

झम्पा दे० (गु०) झपा हुआ, ढका हुआ, आच्छादित।

झर तत्० (पु०) निर्झर झरना, पर्वत से निकला हुआ जल प्रवाह, स्रोत, सोता, झरना। (स्त्री०) झड़ी, वर्षा, आंच, जलन।

झरझर दे० (पु०) झज्झर, सुराही, अन्न आदि के गिरने का शब्द।

झरना दे० (स्त्री०) सोता, पर्वत के जलका सोता, छोटी नदी, निर्झर।

झरहिं दे० (क्रि०) झरते हैं, बहते हैं, गिरते हैं, टपकते हैं, चूते हैं, निकलते हैं।

झरि दे० (स्त्री०) निरन्तर जल वृष्टि, झर कर, चूकर।

झरोखा दे० (पु०) झंझरी, खिड़की, जालीदार खिड़की।

झर्झरा तत्० (पु०) वेश्या, पतुरिया, कुलटा, वाराङ्गना।

झर्झरी तत्० (स्त्री०) खजरी, डफली, बाजा विशेष।

झर्ना दे० (पु०) सूप विशेष, जिसमें बहुत छेद होते हैं और उससे मिले अन्न पृथक् पृथक् किये जाते हैं। (क्रि०) झड़ना, गिरना, टपकना।

झल दे० (स्त्री०) ज्वाला, क्रोध, कोप, जलजलाहट, उष्णता।

झलक दे० (स्त्री०) चिलक चमक, जगमग, आभा, उजाला।

झलकत दे० (क्रि०) चमकते हैं, जगमगाते हैं, आभा देते हैं, दीख पड़ते हैं, साफ साफ मालूम होते हैं।

झलकना दे० (क्रि०) प्रकाशित होना, चमकना, साफ साफ दीख पड़ना, उज्ज्वल होना।

झलका दे० (पु०) फफोला, फोला।

झलकार दे० (पु०) जलन, झलक, आब, आभा, प्रकाश।

झलकी दे० (स्त्री०) दृष्टि कटाक्ष, झाँयली, अपाङ्ग दृष्टि।

झलझल दे० (पु०) चमकता हुआ, बहुत ही साफ, अत्यन्त स्वच्छ, पतला, सूक्ष्म, तेज, तीक्ष्ण, लहक।

झलझलाना दे० (क्रि०) चमकना, चमकित होना, झलझल करना, टीसना, पीड़ा करना, क्रोध, करना।

झलझलाहट दे० (स्त्री०) चमक, झलक, प्रकाश।

झलना दे० (क्रि०) हिलाना, डुलाना, झपकाना, सुधारना, पखा करना या हाँकना।

झलमल दे० (पु०) चमचम, चमक।

झलहाया दे० (गु०) शङ्कित, सन्देही, संशयी, धोखा खाया हुआ, ठगा गया, वञ्चित।

झलाझल दे० (गु०) ज्योतिष्मान्, प्रकाशयुक्त, ज्योति विशिष्ट।

झलाना दे० (क्रि०) सुधारना, साफ कराना, टाका लगाना।

झलाबार दे० (गु०) चमकीला, भड़कीला, सुशोभित, चमत्कार।

झलार दे० (पु०) झाड़ी, गहन, कानन, घना जङ्गल।

झष तत्० [झष्+अच्] मत्स्य, मीन, मछली, मच्छ, बड़ी मछली, पाठीन।—केतन (पु० मदन कामदेव, मीन ध्वज।—ाङ्क (पु० [झष+अङ्क] अनिरुद्ध उषापति, श्रीकृष्ण पौत्र कामदेव का दूसरा रूप।—ाशन (पु० [झष+अशन] मत्स्यभोगी, मीनभक्षी, शिशुमार सूस, जलजन्तु विशेष।—ोदरी (स्त्री०) झष+उदरी, व्यासदेव की माता, मत्स्य गन्धा, योजन गन्धा।

झाँई दे० (पु०) परछाईं, लहलह, प्रतिबिम्ब झलक, छाया, यथा—'मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ। जातन की झाईं परे श्याम हरित दुति होइ।' (बिहारी की सतसई)

झाँऊ दे० (पु०) वृक्ष विशेष, झाऊ, बेतस।

झाँक दे० (स्त्री०) ताक, झुण्ड, यूथ, समूह, पाल।

झाँकड़ दे० (पु०) झाड़ी, सघनवन, सघन [illegible] कानन।

झाँकना दे० (क्रि०) छिप कर देखना, ताकना ओट से देखना, निहारना, कनखी से देखना।

झाँकाझाँकी दे० (स्त्री०) ताका ताकी, देखा देखी परस्पर निरीक्षण, परस्परावलोकन।

झाँरा दे० (पु०) जन्तु विशेष, वन्य जन्तु, बारा सिंघा, हरिण विशेष।

झाँझ दे० (स्त्री०) मजीरा, एक प्रकार का बाजन।

झाँझट दे० (स्त्री०) झगड़ा, कलह, विरोध, टण्टा।

झाँझर दे० (गु०) बहुछिद्रयुक्त, जिसमें अनेक छिद्र या हो गये हों।

झाँझरी दे० (स्त्री०) बहुत छेद वाली [illegible] झरना।

झाँझा दे० (पु०) झींगुर, कीड़ा विशेष, जो [illegible] के दिन में प्राय विशेष होते हैं।

झाँझिया दे० (गु०) क्रोधी, कोपी, [illegible] खिज्जू।

झाँझी दे० (स्त्री०) खेल विशेष।—कौड़ी (वा फूटी कौड़ी कुछ नहीं, निरर्थक, बिना प्रयोजन

झाँप दे० (पु०) ढप्पन, ढक्कन, बाँस या तृण का बना हुआ गृहावरण विशेष, दीवार की रक्षा के लिये टट्टर, सिरकी की टाटी।

झाँपना दे० (क्रि०) ढपना, बन्द करना, आच्छादन करना, आवृत करना, तोपना, दाब लेना।

झाँवरा दे० (पु०) काला, कृष्ण, कृष्णवर्ण का।

झाँवली दे० (स्त्री०) नखरा, चोचला, हाव भाव।

झाँवा दे० (पु०) पक्की ईंट, अधिक पकने से दो सीन या अधिक सटी हुई ईंट।

झाँसना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, फुसलाना, खुशामद करके रास्ते पर ले आना, असत्य लाभ का लोभ दिखा कर कुछ लेलेना, धोखा देना।

झाँसा दे० (पु०) फुसलावा, धोखा, असत्य लोभ।

झाँसू दे० (पु०) फुसलाऊ, धोखाबाज, धूर्त, ठग, बिगाड़ू।

झाऊ दे० (पु०) झाऊ वृक्ष विशेष, बेतस।

झाग दे० (पु०) फैन, झाग, उबाल, पानी में अधिक तरङ्ग उठने से या और किसी प्रकार रगड़ पहुँचने से जो सफेद फैन निकलता है।

झाझा दे० (पु०) गाँजा, भाँग, एक प्रकार की नशीली पत्ती जिसका आज कल के महात्मा बड़ा आदर करते हैं, मादक वस्तु विशेष।

झाट दे० (पु०) निकुञ्ज, लता आदि से घिरा हुआ स्थान, मँड़वा।

झाड़ दे० (पु०) कटीला बन, झाड़ी, एक प्रकार का दीपक, जो वृक्ष के आकार का पीतल आदि का बनाया जाता है, जिस में शीशे के ग्लास लगाये जाते हैं, बत्तियों का झाड़, पञ्चशाख, अनवरत वृष्टि।—खण्ड (पु०) एक बन का नाम, जो बिहार के पूर्व भाग में है, जहां वैद्यनाथ नामक महादेव हैं। पुरी के पास के बन का नाम भी झाड़-खण्ड ही है, यथा—"झाड़खण्ड में भले विराजो जी, औरैया जगन्नाथ पुरी में ठाकुर भले विराजो जी" —झंखाड़ (वा०) कटीली तथा सूखी झाड़ी, बीहड़ बन, बीरान जङ्गल।—झटक (वा०) झाड़ना, बहारना, साफ सुथरा करना।—झूड़ (वा०) झाड़न, बहारन, सफाई संशोधन, ऊपरी आमदनी, नियमित आय से अधिक आय, बचा खुचा।—डालना (वा०) साफ कर देना, लपटा, मोड़देना, स्पष्ट कहदेना, तिरस्कार करना, अनादर करना, अनुचित कड़े शब्द का प्रयोग करना। —पछाड़ कर देखना (वा०) खूब देखना, खूब जांच करना, परखना, अनुसन्धान करना, परीक्षा करना, जांचना, कसौटी कसना।—बांधना (वा०) अविरत वृष्टि होना, सर्वदा पानी बरसना, किसी वस्तु का तांता बाध देना, निरर्गल बोलते जाना।

झाड़न दे० (स्त्री०) बहारन, बुहारन, कूड़ा, कचरा, कतवार, साफ करने वाला कपड़ा, वह कपड़ा जिससे वस्तु साफ की जाती है।

झाड़ना दे० (क्रि०) साफ करना, बुहारी लगाना, झाड़ू लगाना, बुहारना, साफ करने की कूँची, या कपड़े से साफ करना, बुन्दिया झाड़ना, सेव झाड़ना, गिराना, टपकाना, चुआना, उतारना। —फूँकना (वा०) भूत उतारना, टोटका करना मन्त्र करना।

झाड़न्त दे० (अ०) सभी, समस्त, सम्पूर्ण, अखिल, सब के सब, समस्त रूप से, पूर्ण रूप से।

झाड़ा दे० (पु०) गुह, विष्ठा, मल, मलत्याग, हगना, पुरीषोत्सर्ग।

झाड़ी दे० (स्त्री०) बन जङ्गली, घना बन, छोटा और घना बन।

झाड़ा झपटा लेना दे० (वा०) ढूढ़ना, खोजना, अन्वेषण करना, मार्गण करना, तलाशी लेना।

झाड़ा देना दे० (वा०) तलाशी देना।

झाड़े झपटे जाना दे० (वा०) मलत्यागकरनेजाना, पाखाने जाना।

झाड़ू दे० (पु०) बढ़नी, शोधनी, सम्मार्जिनी, बुहारी, कूँचा।—कश मेहतर, भङ्गी, हलालखोर।

झापा दे० (पु०) टोकरी, बड़ी टोकरी, दौरी।

झाबर दे० (पु०) पङ्किल भूमि, दलदल।

झाबा दे० (पु०) चर्मपात्र, चामका एक प्रकार का पात्र, जिससे तेल या घी नापा जाता है। कुप्पा, कुप्पी।

झामर दे० (पु०) शान, शाण, सिलो, पथरी, एक प्रकार का पत्थर जिस पर अस्त्र तीखे किये जाते हैं।

झामा दे० (पु०) झावा, पक्की ईंट।

झार दे० (पु०) आग की लव, अग्निकण, विस्फुलिङ्ग, प्रकाश।

झारि दे० (क्रि०) झारकर, गिराकर, झरझराकर, झाड़कर।

झारी दे० (स्त्री०) जलपात्र विशेष, गडुवा, करवा, टोंटीदार जलपात्र, सुराही, समूह, झाड़ी, वृक्ष समूह, वृक्ष जाल, कमण्डलु।

झाल दे० (पु०) तीव्ररस, कटु, तीखारस, कडुवा, बड़ा टोकरा, धातुमय टूटे बरतनों का जोड़ना, टूटा बरतन सुधारना।

झालना दे० (पु०) घोटना, जोड़ना, चिकनाना, स्निग्ध करना, पालिश करना, साफ करना, टूटे धातु पात्र का छिद्र रोकना।

झालर दे० (स्त्री०) जालीदार किनारा, गच्छेदार किनार, गोट।

झालरा दे० (पु०) सोताझरना, कुण्ड, बड़ा कुण्ड।

झापा दे० (पु०) झांका, झांपा, बड़ा जालीदार टोकरा।

झिझक दे० (स्त्री०) चौंक, भय, डर, भड़क, अचम्भा।

झिझकना दे० (क्रि०) भड़कना, डरना, चौंकना, आश्चर्यित होना, अचम्भित होना।

झिझका दे० (गु०) चौंका हुआ, डरा हुआ, भयभीत, अचम्भित।

झिझकाना दे० (क्रि०) भड़काना चौंकाना, डरपाना, भयदिखाना।

झिझकी दे० (स्त्री०) भड़क, चौंक, डर, भय।

झिञ्झा दे० (स्त्री०) फूटी कौड़ी, कानी कौड़ी, जिगना नामक एक वृक्ष।

झिञ्झायी दे० (स्त्री०) जिगना वृक्ष।

झिड़क दे० (स्त्री०) धमकी, घुड़की, फटकार।

झिड़कना दे० (क्रि०) धमकी देना, धमकाना, घुड़की देना, फटकारना, दबाना, दपकाना, झटका देना।

झिड़काझिड़की दे० (स्त्री०) झगड़ा, रगड़ा, दंगा बखेड़ा, वैर, विरोध।

झिड़की दे० (स्त्री०) घुड़की, दबाव, धमकी।

झिड़झिड़ाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, अधिक क्रोधित होना।

झिनहड्डा दे० (गु०) दुर्बल, पतली हड्डी वाला, मुखट, मुकटा।

झिनझिनी दे० (स्त्री०) सनसनी, झनझनी, पैर का सोजाना। किसी अङ्ग की नस दब जाने से उसमें एक प्रकार की सनसनी हो जाना।

झिरझिर दे० (पु०) पतला प्रवाह, धीरे धीरे बहना, छोटी धारा।

झिरझिरा दे० (गु०) मन्दतर प्रवाह, मन्दवेगवाली नदी।

झिरी दे० (स्त्री०) झिल्ली, झींगुर, कीटविशेष।

झिरझिराना दे० (क्रि०) झरना, टपकना, गिरना, बहना।

झिलगा दे० (पु०) पुरानी खाट, टूटी खाट, जिस खाट की बिनावट टूट गयी हो।

झिलङ्गा दे० (पु०) एक प्रकार के सिपाही, सैनिक विशेष।

झिलम दे० (स्त्री०) कवच, सन्नाह, लोहे का अङ्ग जो युद्ध में शस्त्रों से शरीर की रक्षा के निमित्त पहना जाता है। बख़्तर, सिर पर लोहे के कड़ों के समान पहिनाव।

झिलमिल दे० (पु०) झझरी, जालीदार खिड़की दरवाजे की झझरी।

झिलमिलाना दे० (क्रि०) चमकना, क्षीणप्रभ होना, प्रकाश का न्यून होना, बीच बीच में एक बार चमक जाना, कभी चमकना कभी क्षीण होना।

झिल्लिका तत्० (स्त्री०) झींगुर, कीट विशेष।

झिल्ली तत्० (स्त्री०) अति सूक्ष्म चमड़ा, चर्म, झींगुर, झिल्लिका।

झींकना दे० (क्रि०) पश्चात्ताप करना, [illegible] करना, पछताना, शोकित होना, दुःखित होना, अफीम की पीनक में आना, दुखड़ा रोना।

ींखना दे० (क्रि०) झिकझिक करना, दुविधा करना, दुखित होना।

ींगट दे० (पु०) मल्लाह, केवट, कैवर्त, दास, धीवर, माझी, कर्णधार।

ींगा दे० (स्त्री०) चिंगड़ी मछली, एक प्रकार की मछली।

ींगुर दे० (पु०) कीट विशेष, झिल्ली, घुरघुरा।

ीन दे० (पु०) झीना, महीन, सूक्ष्म, पतला, पतील, दुर्बल, बारीक। (स्त्री०) झीनी हलकी, महीन, पतली, यथा:—

दर मोरी झीनी, सूरत मैल कर दीनी।
चादर मोर कबिरा ओढ़े ज्यों के त्यों धर दीनी॥
—कबीर साहब।

ीरुका दे० (स्त्री०) झींगुर कीट।

ील दे० (स्त्री०) सरोवर, ह्रद, जलाशय, ताल, बहुत बड़ा तालाब, प्राकृतिक जलाशय, धारा रहित बड़ा सरोवर।

ीसी दे० (स्त्री०) फूही, छोटी छोटी बून्दें, फुहारा, भपास।

ुकना दे० (क्रि०) नम्र होना, गिरना, निहुरना, नवना, लचना, सिर नीचा करना, लज्जा से सिर अवनत करना, अभिवादन करना, बड़े को प्रणाम करना, नीचे की ओर आना, क्रोध करना, क्रोधित होना। यथा:—

"झुकी रानि अब्रहू अरगानी"।
—रामायण।

ुकाना दे० (क्रि०) नवाना, नीचा दिखाना, नम्र करना, प्रणत करना, क्रोध कराना।

ुकावट दे० (स्त्री०) निहुराव, नवता, लचाव, लटकाव, चलावट।

ुझुलाना दे० (क्रि०) क्रोध करना, रिस करना, चिढ़चिढ़ाना, शीघ्र क्रोध करना, खिसियाना।

ुठलाना दे० (क्रि०) झूठा करना, झूठ साबित करना, मिथ्या सिद्ध करना, अशुद्ध करना।

ुठाई दे० (स्त्री०) झूठापन, मिथ्या, असत्य। (क्रि०) झूठा करके, मिथ्या बताकर।

झुठालना दे० (क्रि०) अशुद्ध बताना, मिथ्या होना सिद्ध करना, प्रमाणों के द्वारा मिथ्यात्व प्रतिपादन करना, झूठा ठहराना, झूठा करके बताना, उच्छिष्ट करना, जूठा करना।—मुँह झुठालना (वा०) कुछ खाना, नाम मात्र के खाने के लिये बैठना, स्वल्प खाना।—मुँहा मुँह झुठालना (वा०) मुँह पर झूठा बनाना, सामने झूठा साबित करना।

झुंड, झुण्ट, (पु०) स्तवक, गुच्छा, झाँप, छोटा झाड़।

झुण्ड दे० (पु०) यूथ, समूह, समुदाय, दल, भीड़भाड़, ठट्ट, मण्डल, साधुओं का अखाड़ा, साधुओं का समूह विशेष, जिसमें निश्चित संख्या के साधु रहते हैं।

झुण्डा दे० (पु०) पताका, वैजयन्ती, झण्डा।

झुण्डी दे० (स्त्री०) झाड़ी वृक्ष का समूह, झनझपड़, गुच्छा, साधुओं का एक दल विशेष, झुण्ड के अधीनस्थ रहने वाला साधुदल, इसमें भी साधुओं की एक नियत संख्या रहती है।

झुन दे० (स्त्री०) सादृश्य, समानता, लगाव, झुकाव।

झुनझुना दे० (पु०) खिलौना, लड़कों के खेल की एक वस्तु।

झुनझुनी दे० (स्त्री०) नूपुर, पैंजनी, घूघरू, झनझनी।

झुमका दे० (पु०) गुच्छा, स्तवक, गुच्छा के आकार का एक गहना, कर्णभूषण, कनफूल, फूल या फल का गुच्छा, ढेंढ़ी, फल विशेष।

झुरना दे० (क्रि०) सुखाना, सूख जाना, सूखा होजाना, कुम्हलाना, मुरझाना।

झुरमुट दे० (पु०) भीड़, मण्डली, समूह, समुदाय, भीड़भाड़, हौहल्ला, हुल्लड़, गुलगपाड़ा।

झुराना दे० (क्रि०) सुखाना, शुष्क करना, मुरझाना, (पु०) सूखा हुआ।

झुराने दे० (पु०) सूखे, सूखे हुए, मुरझाये हुए, (विशेषण 'झुराना' का बहुवचन)।

झुरियाना दे० (क्रि०) बीनना, बीझना, बराना, सोहना, निकाना, खेत की घास निकाल देना।

झुरी दे० (स्त्री०) समेट, सिकोड़, सिकुड़न, शरीर के माँस का सिकुड़ाव, ढीला पड़ना।

झुर्ना दे० (क्रि०) कुम्हलाना, मुरझाना।

झुलकाना दे० (क्रि०) दग्ध करना, भस्म करना, जलाना, जला देना।

झुलना दे० (क्रि०) डुलना, हिलना, लटकना, हिंडोले पर चढ़ कर हिल्ना, लटक जाना।

झुलझुली दे० (स्त्री०) कान के पात, स्त्रियों के कान में पहनने के लिये, पत्ता के आकार का गहना विशेष।

झुलसना दे० (क्रि०) भुनना, जलना, अर्ध दग्ध होना, अधजला होना।

झुलसाना दे० (क्रि०) जलाना, जला देना, अधजला करना, अर्ध दग्ध करना।

झुलाना दे० (क्रि०) लटकाना, डुलाना, हिलाना, हिंडोला झुलाना।

झुल्ला दे० (स्त्री०) पहनने का कपड़ा, झंगा, चोला, जनाना कुर्ता।

झूँझ दे० (पु०) घोंसला, खोंता, बासा, नीड़, पक्षियों के रहने का स्थान, खोता।

झूँझल दे० (पु०) क्रोध, गुस्सा, क्रोधावेश, क्रोध चढ़ना, रिस, चिड़चिड़ाहट, कोपावेग।

झूँटर दे० (स्त्री०) दोफसली भूमि, दो अन्न बोयी जाने वाली भूमि, जिस भूमि में दो अन्न बोये जाते हैं।

झूँठन झाँठन दे० (पु०) जूठ, झूठ, उच्छिष्ट, भोजन से बचा खुचा।

झूठ दे० (गु०) मिथ्या, अशुद्ध, असत्य, निरर्थक। —मूठ (वा०) झूठ, सरासर झूठ, बिलकुल झूठा, निरा असत्य।

झूठा दे० (गु०) मिथ्यावादी, असत्यवादी, झूठ बोलने वाला, उच्छिष्ट, भोजन का बचा भाग, जूठा, भोजनावशेष।—झाठा (वा०) जूठ, उच्छिष्ट।

झूना दे० (पु०) पक्का नारियल, सूखा नारियल का फल, सूक्ष्म वस्त्र, महीन कपड़ा, चूल्हे में आग जलाना।

झूमक दे० (स्त्री०) भीड़, समूह, समुदाय, [illegible] भूषण विशेष, कनफूल, (गु०) हिलने वाला, [illegible] वाला।

झूमझूम दे० (पु०) मेघ, घन, बादलों का उमड़ना, हिलहिल कर, अहङ्कार के साथ हिल्ना।

झूमना दे० (क्रि०) हिलना डोलना, लहराना, ऊंघना।

झूरना दे० (क्रि०) कूटना, चूर्ण करना, झाड़ना, पेड़ से फल उतारना, सूखना, किसी कारण वश दुर्बल होना, कलपना, पछताना, पश्चात्ताप करना, दुःखित होना, शोक करना।

झूरा दे० (गु०) सूखा, मुरझाया, कुम्हलाया, अन[illegible] वृष्टि, अकाल पड़ना, महँगी पड़ना, वृष्टि न होना।

झूल दे० (स्त्री०) ढीला ढाला वस्त्र, ओहार, हाथी का ओढ़ना, बैल घोड़े आदि पशुओं के ओढ़ने [illegible] वस्त्र, सवारी का पर्दा, ओहार, थैली, टोपी।

झूलना दे० (क्रि०) डोलना, हिलना, लटकना। [illegible] छन्दोविशेष। कविता बनाने की एक रीति।

झूला दे० (पु०) हिंडोला, पालना, डोला, हिंडो[illegible] रस्सी के सहारे बधा हुआ पाट जिस पर [illegible] हैं। वृक्ष विशेष, बांस वृक्ष।

झूँसी दे० (स्त्री०) फूही, भीसी, झटास, [illegible] एक नगर का नाम, यह प्रयाग के सामने है। बहुत ही पुराना है। भारत के चन्द्रवंशी राज[illegible] की राजधानी, इसका पुराना नाम प्रतिष्ठानपु[illegible] इसे ही राजा पुरूरवा ने अपनी राजधानी बन[illegible] था, इसी स्थान पर प्रसिद्ध मीमांसक बौद्धवि[illegible] स्वधर्मप्रचारक कुमारिलभट्ट तुषदग्ध हुए थे। [illegible] हैं यहीं के परवर्ती किसी राजा का नाम च[illegible] था, इस नगरी का नाम उस समय अन्धेर न[illegible] पड़गया था। जो हो यह नगर पुराना है इ[illegible] सन्देह नहीं।

झोंक दे० (स्त्री०) धक्का, आघात, ढकेल, [illegible] झकोरा, बल के साथ खींचना, झटका [illegible] (क्रि०) आग में लगाना, नष्ट करना, भस्म कर[illegible] जराना, जलादेना, फेंकना, आपत्ति में डाल[illegible] खतरे में डालना।

झोंकना दे० (क्रि०) फेंकना, ढकेलना, घुसेड़ना, लगाना, डालना, चूल्हे में लकड़ी लगाना, बिना विचारे करना, निरर्थक करना ।

झोंटा दे० } (पु०) सिर के बड़े बड़े बाल, बिखरे
झोंटी दे० } (स्त्री०) या उलझे बाल, लट, पिछले बाल, चोटी, हिंडोले का झोंका ।

झोंपड़ा दे० (पु०) मढ़ी, छप्पर का छोटा घर, तृण निर्मित गृह, घास फूस का घर, कुटी, आश्रम ।

झोंपड़ी दे० (स्त्री०) छोटा झोपड़ा, कुटी ।

झोंपा दे० (पु०) गुच्छा, स्तबक, फल या फूल का झोंप, झोंटा, घेर घिराव, परिधि ।

झोंरा दे० (पु०) गुच्छा ।

झोक दे० (स्त्री०) धक्का, ठोकर, अकस्मात् झिझकना, सहसा चक्कर आना, घुमरी, कड़ी बीमारी, मरने के समान दुख देने वाले रोग, मरते मरते बच जाना, आफत आना, दुःख आना, किसी प्रकार का उपद्रव ।

झोका दे० (पु०) ठोकर, ठेस, ठसक, धक्का, आघात, झकोरा, बलात्कार से खिंचाव, झटका देकर खींचना, झोंटा पकड़ कर ज़बरदस्ती खींचना, गिराने की इच्छा से खींचना, सहसा खींचना, अचानक अपनी ओर खींच लेना ।

झोझ दे० (पु०) खोंता, ओझ, बड़ा पेट, लम्बोदर, फलों का बड़ा घवद, केले का घवद, केले का झोझ, एक गुच्छे में लगे हुए बहुत से फल ।

झोझा दे० (पु०) बड़पेटा, बड़ा पेट वाला, तुन्दिल, स्थूलोदर ।

झोटिंग दे० (पु०) प्रेतभेद, प्रेतों का भेद विशेष, झोंका देकर, झोंटा पकड़ कर लटकाना, केश पकड़ कर खींचना, झोटिया कर खींचना ।

झोटियाना दे० (क्रि०) बाल पकड़ के खींचना, झोंटा खींचना, झोंटा पकड़ कर मारना, क्रोध से झोंटा खींचना ।

झोटी दे० (स्त्री०) छोटा झोंटा, चोटी, पिछली बाल, लट, केश समूह, जटा समूह, तृण आदि का समूह, पूला ।

झोल दे० (पु०) कपड़े की सिकुड़न, ढील ढाल, कपड़े का ठीक न होना, ढीला होना, शरीर में बड़ा होना, कपड़े का ठीक नहीं बैठना, यूष, तरकारी का रसा, मसालेदार तरकारी का रस, बच्चे, लड़के ।

झोला दे० (पु०) थैला, बड़ी झोली, रोग विशेष, अर्द्धांग, लकवा, वायु विकार से आधे अङ्ग का पड़ जाना, उसका अचेतन हो जाना, लकवा, पतला । (पु०) लटका, सिकुड़ा हुआ, झप हुआ ।

झोली दे० (स्त्री०) कोथली, थैली, जेब, झोटा, झोला ।

झौंरा दे० (पु०) साँवर, झांवर, काला, कृष्ण वर्ण, सांवला, गेहूंआरङ्ग, न काला न गोरा ।

झौंसना दे० (क्रि०) जलाना, खूब जलादेना, अच्छी तरह जलाना ।

झौंसा दे० (पु०) जला हुआ, भस्म किया हुआ, दग्ध, झुलसा हुआ, जलाया हुआ ।

झौड़ दे० (स्त्री०) झगड़ा, टण्टा, लड़ाई ।

झौरी दे० (स्त्री०) खेत की घास ।

ञ

ञ यह व्यञ्जन का दसवां वर्ण है, तालव्य वर्ण है, क्योंकि तालु से इसका उच्चारण होता है । नासिका से उच्चारण होने के कारण इसको नासिक्य भी कहते हैं ।

ट

ट व्यञ्जन का ग्यारहवां वर्ण, यह मूर्द्धन्य है । क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।

ट तत्० (पु०) वामन, शब्द, नाद, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अङ्कुश, बुढ़ाई, वृद्धावस्था, जरा ।

टक दे० (स्त्री०) ताक, देख, निरन्तर दर्शन, लगातार देखना, अनिमिषप्रेक्षण, बिना पलक गिराये देखना ।—टकी (स्त्री०) लगातार देखते ही रहना, निरन्तर देखना, अविरत दृष्टि से देखना ।

टङ्कोर दे० (स्त्री०) धनुष के रोदे का शब्द, धनुष टङ्कार, भयानक धनुष ध्वनि।

टङ्कोरना दे० (क्रि०) झाड़ना, धनुष के रोदे को झाड़ना, ज्या को खींचना, उसे साफ करने के लिये खींच कर छोड़ना।

टङ्कना तद्० (क्रि०) टांकना, सीना, लटकना, झूलना।

टङ्गड़ी दे० (स्त्री०) पैर, पाद, टगरी, गोड़, फिल्ली।

टञ्च दे० (पु०) कृपण, सूम, सूमड़ा, कञ्जूस, मक्खी चूस।

टटका दे० (गु०) नया, नवीन, अभिनव, ताजा, अभी का तुरन्त बना हुआ। (गु०) उतरा तुतरा, (स्त्री०) टटकी नयी, नवीना, ताज़ी।

टटड़ी दे० (स्त्री०) घेरा, मेंड़, थाला, आलवाल, वृक्षों के मूल में पानी सींचने के लिये जो घेरा बनाया जाता है।

टटपूंजिया दे० (गु०) थोड़ी पूंजी वाला, अल्प मूल धन वाला, जिसके पास स्वल्प धन हो।

टटवानी दे० (स्त्री०) छोटी घोड़ी।

टटिया दे० (स्त्री०) झांप, द्वार बन्द करने और वृष्टि से दीवार की रक्षा करने के लिये तृणादि निर्मित टट्टर।

टटीहरी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, टिट्टिभ।

टटुआ दे० (पु०) घोड़ा, छोटा घोड़ा।

टटुई दे० (स्त्री०) टटवानी, छोटी घोड़ी।

टटोलना दे० (क्रि०) ढूढ़ना, हाथों से ढूढ़ना, छू छू कर के पहचानना, टोया टोई करना।

टट्टर दे० (पु०) झांप, बड़ी टट्टी, टटिया।

टट्टरी दे० (स्त्री०) झूठ, वाद्य विशेष, ढोलक, ढोल।

टट्टी दे० (स्त्री०) झांप, टट्टर, टटिया, छोटा टट्टर।

टट्टू दे० (पु०) छोटा घोड़ा, टटुआ।

टण्टा दे० (पु०) लड़ाई झगड़ा बखेड़ा, उपद्रव।

टन दे० (पु०) टङ्कोर, धनुष का शब्द, अहङ्कार, ध्वनि विशेष, परिमाण विशेष, सत्ताईस मन का एक टन होता है।

टनक दे० (स्त्री०) टीस, कर्कश शब्द, गम्भीर शब्द, तीक्ष्ण स्वर।

टनाना दे० (क्रि०) विस्तार करना, विस्तृत करना, फैलाना, पसारना, बान्धना, खींच कर बान्धना, कसकर बान्धना।

टप दे० (पु०) कूद फांद, उछाल, बड़ा बर्तन जिसमें स्नान किया जाता है, अथवा जल रखा जाता है, बांस की बनी बड़ी टोरी जिससे चिड़ियों के बच्चे आदि ढके जाते हैं।

टपक दे० (पु०) पीड़ा, वेदना, जल आदि के बूंद गिरने का शब्द।

टपकना दे० (क्रि०) टपटपाना, टपक टपक गिरना, चूना, गिरना, फूटे बर्तन से जल आदि द्रव पदार्थों का गिरना, टूट पड़ना, गिर पड़ना।

टपका दे० (पु०) पानी की बूंद अलग अलग होकर गिरना, पक्के फलों का वृक्ष से आपही आप गिरना, आप से गिरा हुआ पक्का फल।

टपकाना दे० (क्रि०) चुआना, छानना, निकालना, रक्त आदि निकालना, छानना।

टपकी दे० (स्त्री०) छोटी बूंदें, टपटप।

टपजाना दे० (क्रि०) कूद जाना, उछल जाना, आगे बढ़ जाना, अग्रसर होना, पीछे की बात भूल जाना, पहले की बात को भूल जाना।

टपना दे० (क्रि०) नांघना लांघना, कूद कर जाना, फांद कर निकल जाना।

टपपड़ना दे० (क्रि०) बीच में कूद पड़ना, हाथ बढाना, दूसरों के काम के बीच आपड़ना, अविचार से किसी काम को उठा लेना, किसी काम की गुरुता या हानि लाभकारिता बिना सोचे ही उसमें लग जाना।

टपाना दे० (क्रि०) कुदा देना, नँघवाना कुदवाना, फँदाना, फँदवा देना।

टप्पा दे० (पु०) डाक घर, डाकखाना, पोस्ट आफिस, घरनाई, पालकी ढोने वाले कहारों की डाक, बीच बीच में उनका पड़ाव, रागिनी विशेष, एक प्रकार के गीत का नाम। गेंद का उछाल, एक

प्रकार काटा।—खाना (वा०) गोली या गेंद को उछालते हुए चलना।

टव्वर दे० (पु०) परिवार, कुल, वंश, कुटुम्ब।

टभक दे० (स्त्री०) पीड़ा, यातना, वेदना, कष्ट, टीस, ध्वनि विशेष, पानी में पानी गिरने का शब्द।

टभकना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, चूना, टमक होना, व्रण में वेदना होना।

टर दे० (स्त्री०) अहङ्कार, गुमान, अकड़, ऐंठ, (गु०) मतवाला, उन्मत्त, अचेत, असावधान।—**टर** (स्त्री०) बकबक, बड़बड़।—**टराना** (क्रि०) बकबक करना, टरटर करना, निरर्थक बहुत बोलना, बकवाद करना।—**टरी** (गु०) बकवादी, बहुभाषी, बड़बड़िया।

टरई दे० (क्रि०) हटती है, टलती है, हटजाना।

टरना दे० (क्रि०) हटना, टल जाना, खिसक जाना, दूर हो जाना, भगजाना।

टराना दे० (क्रि०) हटाना, हटा देना, टाल देना, भगा देना, हटवाना।

टर्रा दे० (गु०) क्रोधी, बकवादी, बक्की, बली, गुस्हा।

टर्राना दे० (क्रि०) बकबक करना, चिड़चिड़ाना, क्रोध में आकर बकना, गाली देना।

टलना दे० (क्रि०) हटना, चम्पत होना, भगजाना, चला जाना, सरकना, दूर होना, जाता रहना, नष्ट हो जाना।

टलप दे० (स्त्री०) छाँट, टुकड़ा, कतरन, खण्ड, भाग, अंश।

टलमलाना दे० (क्रि०) डगमगाना, स्थिति का अनिश्चित होना, सन्दिग्ध स्थिति का होना, ललचना।

टलाटली दे० (स्त्री०) बहाना, मिस, व्याज, हीला-हवाला।

टलाना दे० (क्रि०) छिपाना, ढकना, लुकाना, हटवा देना, हटवा कर छिपा देना, सरका देना, लुकवा देना।

टल्ला दे० (पु०) झूठमूठ, असत्य, मिथ्या, निरर्थक, सारहीन वस्तु।

टवर्ग तत्० (पु०) टका वर्ग, "ट" के समान अक्षर, ट ठ ड ढ ण, टकारादि पांच अक्षर।

टसक दे० (स्त्री०) टीस, चमक, दर्द, व्यथा पीड़ा।

टसकना दे० (क्रि०) टीस देना, व्यथा होना, घटना हटना, हिलना।

टसकाना दे० (क्रि०) हिलाना, चलाना, खसकाना, दूर हटाना।

टसना दे० (क्रि०) मसकना, फटना, चीरना, फट जाना।

टस से मस दे० (वा०) इधर से उधर, इस बात से उस बात पर, एक विषय को छोड़ कर दूसरे विषय पर, पूर्व स्थिति को छोड़ कर दूसरी स्थिति पर।

टहक दे० (स्त्री०) गाँठ की पीड़ा, व्रण की वेदना।

टहकना दे० (क्रि०) दुखना, दर्द करना, व्यथा होना, पिराना, पिघलना, द्रव होना।

टहटह, टहटहा दे० (गु०) सुन्दरता, नवीनता, ताज़ापन, मनोहरता, रमणीयता।

टहना दे० (पु०) शाखा, शाख, डाल, विटप।

टहनी दे० (स्त्री०) छोटी शाखा, छोटी डाली।

टहल दे० (पु०) सेवा शुश्रूषा, घर का काम काज, यथा:—

> "नीच टहल सब गृह के करि हौं,
> पद विलोकि भवसागर तरि हौं"।
>
> —रामायण।

—**टकोर** (वा०) शुश्रूषा, काम काज, गृह कर्म।
—**टकोर करना** (वा०) सेवा करना, अधीनता बजाना।

टहलना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, हवा खाने जाना, सन्ध्या को भ्रमण करना।

टहलनी दे० (स्त्री०) दासी, सेविका, सेवा करने वाली स्त्री, घर का काम काज करने वाली स्त्री, मजूरिन, नौकरानी।

टहलाना दे० (क्रि०) घुमाना, फिराना, चलाना, हवा खिलाना, सन्ध्या भ्रमण कराना।

टहलुआ दे० (पु०) सेवक, चाकर, नौकर, कर्म करने वाला, दास, टहल करने वाला।

लुई दे० (स्त्री०) लौंडी, दासी, चाकरानी, काम करने वाली, टहल करने वाले की स्त्री; टहलुई नहीं है किन्तु टहल करने वाली को टहलुई कहते हैं।

ाँ दे० (पु०) बालक का शब्द, बालक की रुलाई, जन्मते बालक का शब्द।

ोक दे० (पु०) घूंसा, चपेटा, थप्पड़।

क तद्० (पु०) टङ्क, चार मासे का परिमाण, सीने का साधन, एक प्रकार की सुई, सिलाई, सीवन।

कना दे० (क्रि०) सीना, सिलाई करना, गुरथना, टांका चलाना।

फर दे० (पु०) लम्पट, लुच्चा, बदमाश, गुण्डा, उच्छृङ्खल।

का दे० (पु०) सीवन, जुड़ाई, जोड़, जोड़न, सन्धान।

की दे० (स्त्री०) पत्थर काटने का अस्त्र, छेनी, रुखानी, नाखूर, फोड़ा, खर्बूजा या अन्य किसी फल का चौकोना टुकड़ा, जिससे फलका अच्छा बुरा होना पहचानते हैं। कुल्हाड़ी, खाटा।

कू दे० (गु०) टांकने वाला, पत्थर काटने वाला।

ग दे० (स्त्री०) टंगड़ी, गोड़, पैर, एँड़ी से घुटने तक का भाग, लटकाव, टंगाव।

गन दे० (पु०) एक प्रकार का घोड़ा, पहाड़ी घोड़ा।

गना दे० (क्रि०) लटकाना, ऊपर चढ़ाना, लम्बा करना।

गी दे० (स्त्री०) कुल्हाड़ी, फरसा, लकड़ी काटने का एक अस्त्र विशेष, टांकी।

च - दे० } (गु०) हठीला, हठी, वक्र, टेढ़ा, (पु०)
चड़ा दे० } (गु०) पेच, दवाव।

ट दे० (स्त्री०) सिर के बीच का भाग, चांदी, तालु, टटड़ी, खोपरी।

ठा दे० (गु०) पोढ़ा, ठोस, सचार, सार युक्त, कड़ा, उत्साही, उद्योगी, उत्साहशील।

ठाई दे० (स्त्री०) पोढ़ापन, उत्साह, ठोसाई, प्रगल्भता।

टांड़ दे० (स्त्री०) मञ्च, मचान, बैठाने के लिये बाँस आदि का बना ऊँचा आसन।

टांड़ा दे० (पु०) खेप, एक मनुष्य का बोझ, एक बार के उठाने योग्य वस्तु, बनजारे की वस्तु।

टाट दे० (पु०) सनका बना हुआ एक प्रकार का बिछावन, भजाड़।

टाटक दे० (गु०) टटका, नया, नवीन, ताज़ा।

टाटी दे० (स्त्री०) टटिया, टट्टी, झांप, टट्टर।

टाड़ी दे० (स्त्री०) लकड़ी काटने का अस्त्र विशेष, छोटी कुल्हाड़ी, फरसी, छोटा फरसा।

टानना दे० (क्रि०) फैलाना, विस्तार करना, खेंचना, खींचना।

टाप दे० (पु०) घोड़े के चलते पैर का शब्द, घोड़े के दौड़ने में उसके पैरों का शब्द, बांस का बना हुआ एक प्रकार का यन्त्र, जिससे मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

टापना दे० (क्रि०) टाप मारना, ढूढ़ना, खोजना, ताकते रह जाना, निराश हो जाना, निराश बैठे ताकते रहना, भूखा रह जाना।

टापा दे० (पु०) खांचा, बाँस का बना टोरा, बड़ा पिंजरा।

टापू दे० (पु०) द्वीप, उपद्वीप, दोआब, जिस मैदान में चारों ओर जल भरा हुआ हो, (देखो द्वीप)।

टावर दे० (स्त्री०) छोटी झील, तालाब, अकृत्रिम छोटा ताल।

टार दे० (अ०) टारकर, हटाकर, नांघकर, उल्लङ्घन कर।

टारन दे० (पु०) उल्लङ्घन, हटावन, टालन।

टारना दे० (क्रि०) हटाना, सटकाना, दूर करना, टालना।

टारी दे० (स्त्री०) दूर, अन्तर, फासिला, व्यवधान।

टाल दे० (स्त्री०) टालमटोल, व्याज से काल काटना, बहाना करके समय निकालते जाना। लकड़ी अन्न आदि के बेचने का स्थान, लकड़ी की ढेर, अन्नराशि, पहलवानों की लड़ाई का धोखा।

टोलाटोल दे० (पु०) व्याज, बहाना, मिथ्या मिस, टालमटोल।

ठिठुरा दे० (गु०) ठिठरा हुआ, जकड़ा हुआ, पाले का मारा हुआ।

ठिनकना दे० (क्रि०) धीरे धीरे रोना, शनैः शनैः रोना, सिसकना, सिसकी लेना, ठुनकना।

ठिरना दे० (क्रि०) जमना, घन होना, सख़्त होना, बँधजाना, जमजाना, एकत्रित होना, कठिन होना।

ठिलिया दे० (स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा, मटकी, मटकनी।

ठीक दे० (गु०) उचित, योग्य, यथार्थ, पूरा, शुद्ध, बराबर, सत्य, यथोचित, यथायोग्य, जोड़। —आना (क्रि०) मिलना, बराबर होना, उचित घटना, जितना चाहिये उतना होना।—करना (क्रि०) शुद्ध करना, निश्चित करना, निश्चित कर लेना, दण्ड देकर सुधारना, मारना, पीटना, सुधारना।—ठाक (गु०) शुद्ध, सत्य, कृत-प्रबन्ध, कृतव्यवस्था, जिसकी व्यवस्था हो गयी हो, निश्चित, निर्णीत।—ठाक करना (वा०) निश्चित करना, प्रबन्ध करना।—मठीक (अ०) यथार्थ, शुद्धता से, यथार्थता से, जोड़तोड़, बिल्कुल ठीक।

ठीकरा दे० (पु०) ठिकरा, मिट्टी के फूटे बर्तन का टुकड़ा।

ठीकरी दे० (स्त्री०) छोटा ठीकरा, गिटकी, कङ्कड़।

ठीका दे० (स्त्री०) निश्चय, ठीक, उचित, यथार्थ, काम का, तात्कालिक वेतन, रोजाना मजूरी, चुकता, चुकौता, इजारा, काम करने के पहले ही उसके लिये मजूरी आदि का निश्चय कर लेना।

ठीप दे० (स्त्री०) एक प्रकार की अङ्गीठी।

ठुकराना दे० (क्रि०) लतियाना, लात से मारना, ठोकर से मारना, ठोकर मारना।

ठुड्डी दे० (स्त्री०) ठोढ़ी, दाढ़ी, चिबुक, भुँजा चबेना जिसमें लावा न हो, बिना लावा का चबेना।

ठुनुक दे० (स्त्री०) सिसक, ठिनक, धीरे धीरे रोदन।

ठुनुकना दे० (क्रि०) सिसकना, ठिनकना, धीरे धीरे रोना।

ठुमकना दे० (क्रि०) सुडौल चलना, स्वाभाविक ऐंठन से चलना। यथा—"ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया।"

ठुमका दे० (गु०) छोटा, नाटा, ठिङ्गना, खर्व, बौना, वामन।

ठुमकी दे० (गु०) आलसी, शिथिल, ढीला, दीर्घ सूत्री, पतंग की डोरी हिलाना।

ठुसकना दे० (क्रि०) पादना, अपानवायु का त्याग, धीरे धीरे रोना, दूसरों के कथोपकथन में कोई बात कह देना, एक न एक अड़ङ्गा लगाते रहना।

ठुसकी दे० (स्त्री०) शब्दरहित वायुत्याग, ठुसकी, पाद।

ठुसाना दे० (क्रि०) भराना, भरवाना, ठुसवाना, ठसाना।

ठूँठ दे० (पु०) ठुंडा, बिना पत्ते की डाल, पत्ता डाल रहित वृक्ष, शून्य, थूणा, स्थाणु, कटा हाथ, हथकटा मनुष्य।

ठूँठिया दे० (गु०) ठूँठ वृक्ष जिसकी शाखा काट दी गयी हो।

ठूँठी दे० (स्त्री०) खूँटी, छोटी, अन्न का डाँठ।

ठेंउना, ठेवना (पु०) घुटना, ठेवना।

ठेंगना दे० (गु०) खर्व, छोटा, नाटा, ठिङ्गना।

ठेंगा दे० (पु०) लाठी, लट्ठ।—ठेंगी (अ०) लाठ लाठी, परस्पर में मारामारी।—बाजना (क्रि०) लाठी चलाना, मारामारी करना।

ठेंठ (गु०) शुद्ध, केवल, अमिश्रित, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध।

ठेंठी दे० (स्त्री०) कान का मैल, ठट्ठा।

ठेक दे० (स्त्री०) टेकनी, सहारा, अवलम्ब, अन्न से भरा हुआ बड़ा बोरा।

ठेका दे० (पु०) डट्टा, रोक, ठेपी, ठेंठो, बोतलआदि का मुँह बन्द करने के लिये ठेपी, रुकावट। —धिकारी (गु०) ठीकादार।

ठेकी दे० (स्त्री०) विश्राम का स्थान, जहाँ सिर का बोझा उतारने के लिये सुविधा हो।

ठेठ दे० (गु०) ठेंठ, स्वभाव शुद्धि, अमिश्रित, अनमिल, बेमेल।

ठेपी दे० (स्त्री०) ठेंठी, डट्टा, डांट, काग।—मुँह में देना (वा०) अवाक् रहना, चुपचाप रहना, कुछ भी न बोलना।

ठेलना दे० (क्रि०) ढकेलना, रेलना, पेलना, धक्का देना, झोंकना, हटाना, आगे बढ़ाना।

ठेला दे० (पु०) धक्का, ढकेल, झोंक, एक प्रकार की माल लादने की गाड़ी, जिसे आदमी खींचते हैं।—ठेली (अ०) धक्कम धक्का, रेलपेल।

ठेवना दे० (पु०) घुटना, जानु, ठेउना।

ठेस दे० (पु०) ठोकर, चपेट, चोट।

ठेसना दे० (क्रि०) छेदना, ठोकराना, ठूँसना, भरना।

ठेसरा दे० (पु०) नकचढ़ी, मेहना।

ठोंकना दे० (क्रि०) मारना, पीटना, गाड़ना, अङ्गुली से बजाना, थपथपाना।

ठोंग दे० (स्त्री०) चोंच अथवा अङ्गुली की मार।

ठोंगना दे० (क्रि०) चोंचियाना, चोंच से बिखेरना, बिखोरना।

ठोंगाना दे० (क्रि०) चोंचियाना, ठोंगना।

ठोंठ दे० (स्त्री०) चोंच, ठोर, ओठ, पक्षियों का ओठ।

ठोक दे० (स्त्री०) मारकूट, मारने का शब्द, ठोकने का शब्द।

ठोकर दे० (स्त्री०) ठेस, पैर की मार, लतियाना, बाधा, पैर में चोट लग जाना।—खाना (क्रि०) गिर पड़ना, चूकना, भूल करना, भूल जाना, चूकना, हानि उठाना, घटी सहना।—लगना (क्रि०) पैर में चोट लगना।

ठोकरा दे० (पु०) चुटकी, कड़ा, कर्रा, कठिन, कठोर, मज़बूत।

ठोकराना दे० (क्रि०) आप आप ठोकर खाना, घोड़ा आदि का ठोकर खाना।

ठोढ़ी दे० (स्त्री०) ठुड्ढी, चिबुक, दाढ़ी।

ठोर दे० (स्त्री०) चोंच, चञ्चु, पक्षियों का ठोंठ।

ठोल दे० (स्त्री०) ठोर।

ठोला दे० (पु०) कुल्हिया, चिड़ियों का भोजन पात्र, छोटे छोटे बर्तन, जिनमें चिड़ियों को खाना और पानी देते हैं। अङ्गुलियों का पर्व, गाँठ।

ठोस दे० (गु०) ठाँठा, पोढ़ा, असार, कठोर, दृढ़, घना, अन्तःसारयुक्त, भीतर से भरा हुआ, भीतर से खोखला नहीं।

ठोसना दे० (क्रि०) ठाँसना, दबाना, भरना, दबा दबा के भरना।

ठोसा दे० (पु०) ठेंगा या अङ्गूठा दिखाना, सोने या चाँदी की गोली, जिस पर देवता का आवाहन और पूजन किया जाता है।

ठौर दे० (स्त्री०) स्थान, ठाँव, ठिकाना, स्थल, जगह, भूमि, प्रबन्ध, जीविका का स्थान।—रहना (क्रि०) वहीं रहना, खेत रहना, मारा जाना, मारा पड़ना।

ड

ड यह व्यञ्जन का तेरहवाँ वर्ण है, मूर्द्धा से उच्चारण होने के कारण इसे मूर्द्धन्य कहते हैं।

डँ तत्० (पु०) शिव, महादेव, पशुपति, भय, डर, शब्द, ध्वनि, नाद, वाड़वाग्नि, वाड़वानल।

डकरा दे० (पु०) विष, एक प्रकार की औषधि, (गु०) तीक्ष्ण, तीखा, कटु, प्रसारि गन्धि, जिसका गन्ध फैलने वाला हो, तीक्ष्णगन्धि, कटुगन्धि।

डकराना दे० (क्रि०) चीख मार के रुलाना, कलपाना, विलाप करवाना, सताना।

डकार दे० (स्त्री०) उद्गार, हिचकी, हुचकी, डकार, भोजन से तृप्ति का सूचक पेट का एक शब्द विशेष।—जाना (क्रि०) खा जाना, पचा जाना, हजम करना, किसीसे कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।—बैठना (क्रि०) पचा लेना, पचा कर निश्चिन्त बैठना, किसी से लिये हुए को भूल जाना।—लेना (क्रि०) डकारना, डकार लाना, हस्तगत कर लेना, अधीन करना।

डकारना दे० (क्रि०) टिकारना, डकार लेना, रोंभना, हुंकार करना, गर्जना, भोंकरना, पचा जाना।

डकैत दे० (पु०) डाँकू, चोर, बटमार, लुटेरा, असहाय पर आक्रमण करके उसकी वस्तुओं को छीन लेने वाला।

डकैता दे० (पु०) डाँकू, डकैत, डकैतों का दल, डकैत समूह।

डकैती दे० (स्त्री०) डाँका, लूटतराज, चोरी, डकैत का काम, बटमारी।

डकौत } दे० (पु०) भड़रिया, भड्डरी के वंशज,
डकौतिया } दे० (पु०) एक सङ्कर जाति, ये ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं और शनि आदि का निकृष्ट दान लेते हैं। कहते हैं, एक भड्डरी नाम के ब्राह्मण ज्योतिष विद्या के पारङ्गत विद्वान् थे, वह कहीं बाहर गये हुए थे, उनके विचार में एक ऐसा मुहूर्त दो दिन के बाद आने वाला था, जिस मुहूर्त के गर्भ से बड़े भारी विद्वान् का उत्पन्न होना निश्चित होता था। वह गृह के लिये प्रस्थित हुए परन्तु वन का मार्ग भूल जाने से ठीक समय अपने घर नहीं पहुँच सके। मुहूर्त आ पहुँचा, परन्तु भड्डरी जी अभी वन में ही हैं। वह बड़े चिन्तित थे। उसी समय एक ग्वालिन जो कहीं जा रही थी वहाँ उपस्थित हुई। ज्योतिषी जी ने उससे सब बातें कह कर इस विषय में सम्मति पूछी। उसने कहा मुहूर्त निकट है, आप किसी प्रकार घर पहुँच नहीं सकते, ऐसे मुहूर्त का निकल जाना, जिसमें एक बड़े विद्वान् के उत्पन्न होने की सम्भावना है उचित नहीं है। मैं यहाँ उपस्थित हूँ। यद्यपि मैं आपके समान वर्ण की नहीं हूँ। अतएव यह सम्भव है कि आपके औरस और मेरे गर्भ से उतनी वीर्यशाली सन्तति न हो, तथापि यह निश्चित है कि सामान्य की अपेक्षा वह अधिक वीर्यवान् होगा, क्योंकि मुहूर्त का भी तो कुछ बल है। भड्डरी जी इस बात पर सहमत हुए। उन्हीं से उत्पन्न डकौतिया हैं।

डग दे० (स्त्री०) चलावा, लम्बी चाल, डेग, पद-विन्यास।

डगडगाना दे० (क्रि०) हिलना, हिलते डुलते चलना, कम्पित होकर चलना, काँपते चलना, भलमल करना।

डगना दे० (क्रि०) हिलना, चञ्चल होना, स्थिर नहीं रहना, फिसल जाना, काँपना, कम्पित होना, डिगना।

डगमग दे० (गु०) चञ्चल, अस्थिर, काँपने वाला, स्थिर न रहने वाला, चलायमान, डाँवाडोल।

डगमगाना दे० (क्रि०) चञ्चल होना, डाँवाडोल होना, काँपना।

डगमगानि दे० (स्त्री०) चञ्चल हुई, डगमग हुई, डाँवाडोल हुई।

डगर दे० (स्त्री०) मार्ग, रास्ता, राह, पथ, पद्धति, पैंड़ा, यथा—"प्रेमनगर की **डगर** कठिन है नां रँगरेज़ सयाना।"

डगरना दे० (क्रि०) हिलना, फिरना, फिसल जाना, ढालवी भूमि से लुढ़क जाना, रास्ते घूमना।

डगरा दे० (पु०) बाँस का बना हुआ बर्तन जो गोल और छिछला होता है। छीटा, छीतना, छीतनी।

डगरिया दे० (पु०) डगर, रास्ता, राह, मार्ग, पथ, यथा—"कहाँ गये मनमोहन श्याम, डगरिया हू न पड़ी"—(सूर०)

डगा दे० (पु०) दुर्बल घोड़ा, अस्थिपञ्जरावशिष्ट घोड़ा, डङ्गीला घोड़ा।

डगी दे० (गु०) हिली, खसकी, टसकी, कम्पित हो, चलायमान हो।

डङ्क दे० (पु०) चभक, बिच्छू का काँटा जो ज़हरीला होता है, विषैला काँटा।—**मारना** (क्रि०) बिच्छू का काटना।

डङ्का दे० (पु०) वाद्यविशेष, दुन्दुभि बाजा, नगारा धौंसा, नगाड़ा, युद्धयात्रा विवाहयात्रा आदि में यह बजाया जाता है।

डङ्किनी दे० (स्त्री०) डाकिन, भूत प्रेत की जानने वाली स्त्री।

डङ्कियाना दे० (क्रि०) डङ्क से मारना, डङ्क से करना, डङ्क मारना, ज़हरीला काँटा घुसाना।

डङ्कीला दे० (गु०) डङ्कवाला, ज़हरीले वाला।

डटना दे० (क्रि०) उद्यत रहना, तैयार रहना, प्रस्तुत रहना, थमना, रुकना, जमजाना, प्रस्तुत होकर खड़ा रहना।

डटैया दे० (पु०) डटने वाला, उद्यत, प्रस्तुत।

डट्टा दे० (पु०) वट्टा, ठेपी, ठेंठी, डाट, रुकावट, बोतल आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु।

डठा दे० (पु०) डांटी भेंटी, दपटी, डौंड, अन्न या फल आदि का डौंड, जिस लकड़ी के सहारे से वृक्ष में लगे रहते हैं।

डढ़मुण्डा दे० (पु०) दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मूँड़ दी गयी हो।

डढ़ियल दे० (पु०) दाढ़ी वाला, लम्बी दाढ़ी वाला।

डढुआ, डढ़ोई, दे० (पु०) जला हुआ, दग्ध, भस्मीभूत, तेल विशेष जो जला के निकाला जाता है, पाताल यन्त्र से निकाला हुआ तेल।

डण्ड तद्० (पु०) दण्ड, अपराध का प्रायश्चित्त, अपराधी को उसके अपराध की गुरुता और लघुता के अनुसार सज़ा देना, जिसके अर्थदण्ड, शरीरदण्ड आदि कई भेद हैं। व्यायामविशेष, एक प्रकार की कसरत, जिसमें दोनों हाथ और पैरों के बल पर शरीर का सञ्चालन किया जाता है। दण्डपेल, छड़ी, लकड़ी।

डण्डवत् तद्० (पु०) दण्डवत्, दण्ड के समान समस्त अङ्गों से गिरना, भूमिष्ठ होकर प्रणाम करना, अष्टाङ्ग प्रणाम करना।

डण्डा तद्० (पु०) दण्ड, दण्डा, लट्ठ, लाठी, सोंटा, पताका की लकड़ी, झण्डे की लकड़ी।

डण्डिया दे० (पु०) स्त्री का वस्त्र विशेष, स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, दुपट्टा, ओढ़नी, बाज़ार का कर उगाहने वाला।

डण्डी तद्० (स्त्री०) बेंट, डंडा, कुल्हाड़ी, फरसा आदि अस्त्रों में लगायी हुई लकड़ी पकड़ने की लकड़ी। काष्ठविशेष, जो तराजू के पलड़ों में लगाया जाता है। (पु०) दण्डी संन्यासी जो दण्ड धारण करते हैं। पगदण्डी, चिन्ह, पदचिन्ह, गुप्त मार्ग, चोर गली।

डण्डीर दे० (स्त्री०) धारी, रेखा, चिन्ह, लकीर, लीक।

डपटना दे० (क्रि०) पुकारना, डाँटना, दबाना, कड़े शब्दों से तिरस्कार करना, सुधारने के लिये डाँट बताना।

डफ दे० (पु०) खञ्जरी, एक प्रकार के बाजे का नाम।

डफारना दे० (क्रि०) कूक मारना, चीख मारना, विलाप करना, बिलखना, भयानक कष्ट से रोना।

डफाली दे० (पु०) डफ बजाने वाला, खञ्जरी पर चमड़ा चढ़ाने वाला, चोक, डफ बजा कर भीख माँगने वाला, एक प्रकार का मुसल्मान फ़क़ीर।

डब दे० (पु०) बल, सामर्थ्य, शक्ति, पराक्रम, जेब, पतला चमड़ा जो कुप्पा आदि बनाने के काम आता है।

डबकना दे० (क्रि०) चमत्कार होना, शोभित होना, जगमगाना, चमकना।

डबका दे० (पु०) ताजा, कुए का टटका जल। (पु०) मोटा, स्थूल।

डबगर दे० (पु०) चर्मकार, मोची, चमड़े को साफ करने वाला, चमड़ा कमाने वाला।

डबडबाना दे० (क्रि०) आँख भर आना, आँसू आना, कण्ठ रुक जाना, अधिक हर्ष या शोक से शब्द न निकलना।

डबरा दे० (पु०) गीली भूमि, पङ्किल भूमि, लिवाड़, छपरी, गन्दे जल का छोटा तालाब, गड़हा, गँवई का वह छोटा तालाब, जिसमें भैंस या सुअर बैठ कर पानी गन्दा कर देते हैं।

डबरिया दे० (पु०) लतरहत्था, बायाँ हाथ, बायें हाथ से काम करना।

डबस दे० (पु०) रक्षण, चिन्ता, व्यवस्था, तैयारी, जलयात्रा के उपयुक्त वस्तुओं का भाण्डार, समुद्र यात्रा के उपयोगी वस्तु।

डबोना दे० (क्रि०) डुबाना, बोरना, जल में गोता दिलाना, उजाड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना, बिगाड़ना।

डब्बा दे० (पु०) बड़ी डिबिया, खन्दा, कुप्पा, रेलगाड़ी का ख़ाना।

डब्बू, डबुआ दे० (पु०) लोहे या पीतल का कड़छा, जिससे दाल आदि परोसी जाती है।

डमर तत्० (पु०) डर से भागना, भय के कारण भागना, राजा को अपने समान अन्य राजा का भय, अन्तःकलह।

डमरुआ दे० (पु०) घुटने की गाँठ।

डमरु तत्० (पु०) वाद्य विशेष, शिवजी के बजाने का बाजा, कापालिक योगियों के बजाने का बाजा, चमत्कार, आश्चर्य, अद्भुत।—मध्य (पु०) दो द्वीपों का आपस में जोड़ने वाला, एक प्रकार का भूमिखण्डविशेष, वह भूमि जिससे दो टापू आपस में मिले रहते हैं।

डम्फ दे० (पु०) खञ्जरी के आकार का एक प्रकार का बाजा।

डयन तत्० (पु०) [डि + अनट्] नभोगमन, आकाशमार्ग में चलना, उड़ना, उड़कर चलना, पक्षी की गति।

डर तद्० (पु०) डर, भय, त्रास, भीति, शङ्का, आतङ्क।

डरना तद्० (क्रि०) भय करना, त्रास पाना, शङ्का करना।

डरपना तद्० (क्रि०) भयखाना, डरना, त्रस्त होना।

डरपोक तद्० (गु०) डरने वाला, भीरु, डरवैया।

डरपोकना तद्० (गु०) डरनेवाला, भीरु, डरपोक।

डरवैया तद्० (गु०) भयभीत, भीरु, डरपोक।

डराऊ तद्० (गु०) डराने वाला, भयङ्कर, भयानक, भयावना।

डराक तद्० (गु०) डरने वाला, भीरु, भीत।

डराना तद्० (क्रि०) भयदेना, डरवाना, भय दिखाना, भीत करना।

डरालू तद्० (गु०) भीरु, डरपोक।

डरावना तद्० (गु०) भयदायक, भयानक, भयङ्कर।

डारी दे० (स्त्री०) मांस के छोटे छोटे टुकड़े, मांस-पिण्ड।

डरीला दे० (गु०) मांस-पिण्डवाला, मांस की बोटियों वाला।

डरौना दे० (गु०) डराऊ, डरावना, भयानक।

डलवा दे० (पु०) टोकरा, दौरा।

डलवाना दे० (क्रि०) झोंकवाना, गिरवाना, भरवाना, फेंकवाना।

डला दे० (पु०) डलवा, टोकरा, बड़ा टुकड़ा, ढेला, खण्ड।

डलिया दे० (स्त्री०) छोटी टोकरी, बाँस की बनी फूल रखने की छोटी टोकरी।

डली (स्त्री०) टुकड़ा, छोटा टुकड़ा, टूक, खण्ड।

डस दे० (स्त्री०) तराजू की रस्सी, जिसमें पलड़े डंडी में बाँधे जाते हैं। सूत, सूत की डोरी।

डसना दे० (क्रि०) डङ्क मारना, छेदना, काटना, पतली धार वाली चीज़ से काटना, साँप का काटना, डङ्कियाना, चुभाना, गड़ाना।

डसौना दे० (पु०) डसाने की वस्तु, बिछौना, बिस्तर, बिस्तरा।

डहक दे० (पु०) गुफा, कन्दरा, खोह, छिपने की जगह।

डहकना दे० (क्रि०) ढाँकना, लालच करना, बिलखना, निराशा से दुःखित होना, बिगड़ना।

डहकाना दे० (क्रि०) निराश करना, निराश लौटना, बिगाड़ना, धोखा देना, ठगना, सताना।

डहडहा दे० (गु०) लहलहा, प्रफुल्ल, खिला हुआ, प्रफुल्लित।

डहडहाना दे० (क्रि०) खिलना, विकसना, विकसित होना, खिल जाना, प्रफुल्ल होना।

डहर दे० (स्त्री०) डगर, मार्ग, रास्ता, राह, पथ।

डहरिया दे० (स्त्री०) डहर, डगर, मार्ग।

डाँक दे० (पु०) तीखा, तोदण, जगजगा, डङ्क बिच्छू आदि का।

डाँग दे० (स्त्री०) लाठी, पर्वत के ऊपर की भूमि, शिखर।

डाँगर दे० (पु०) पशु, बलहीन पशु, दुर्बल पशु, सूली की पत्ती।

डाँट डपट दे० (स्त्री०) तिरस्कार, अपराधी को सावधान करने के लिये तिरस्कार।

डाँटना दे० (क्रि०) ताड़ना, दबाना, घुड़कना, भर्त्सन करना।

डँठल दे० (पु०) दण्डी, डण्डी, डाँटी।
डँठी दे० (स्त्री०) डण्टा, डाली, डाँठ, डण्डी।
डँड़ दे० (पु०) दण्ड, बदला, अपराधी को सज़ा, वाग्दण्ड, धिग्दण्ड, अर्थ दण्ड, शरीर दण्ड, समान दण्ड आदि इसके भेद हैं। नाव चलाने वाली बाँस की बल्ली, डाँड़ा, रीढ़, पीठ की हड्डी, लकड़ी, लाठी, लट्ठ।—भरना (क्रि०) जुर्माना देना, दण्ड देना।—लेना (क्रि०) जुर्माना वसूल करना।
डँड़ना दे० (क्रि०) बदला लेना, सज़ा करना, दण्ड देना, शासित देना।
डँड़ा दे० (पु०) मेंड़, सिवाना, सीमा, किसी देश ग्राम आदि की अवधि, खेत की सीमा।
डँड़ी दे० (स्त्री०) कर्णधार, खेवैया, नाव चलाने वाला, माँझी।
डमाडोल दे० (पु०) अनिश्चित, अव्यवस्थित, इधर से उधर।
डँवरु दे० (पु०) बाघ का बच्चा, बच्चा जो बहुत बड़ा न हो।
डँस दे० (पु०) डाँस, मक्खी, मच्छड़, बड़ी मक्खी।
डाक दे० (पु०) आह्वान, शब्द, चीत्कार, चीख, हाँक, टप्पा, घोड़े आदि के बदलने या विश्राम का स्थान, चौकी। (स्त्री०) चिट्ठी पत्री आदि को शीघ्र भेजने का उपाय, समतवमन, उग्र गन्ध।—खाना, घर (पु०) पत्रादि के आने जाने का दफ़्तर।
डाकना दे० (क्रि०) पुकारना, आह्वान करना, वमन करना, ओकाना, उग्र गन्ध देना।
डाका दे० (पु०) बलात्कार से अपहरण, ज़बरदस्ती छीन लेना, चोरों का धावा, छापा, आक्रमण।—पड़ना (क्रि०) लुट जाना, डाके से चोरी हो जाना, बलात्कार से अपहरण हो जाना, छापा पड़ना।—डालना (क्रि०) रास्ते चलते हुए का माल बलात्कार से छीन लेना, बलपूर्वक आक्रमण करना।—देना (क्रि०) लूटना, छीनना, हस्तगत कर लेना।
डाकिन, डाकिनी दे० (स्त्री०) डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी, जन्तर मन्तर जानने वाली स्त्री, योगिनी।
डाकिया दे० (पु०) डाकू, डाका डालने वाला, डाक लेजाने वाला, पियन, पोस्टमैन, चिट्ठीरसाँ।
डाकी दे० (गु०) खाऊ, पेटू, बहुत खाने वाला, औदरिक, शक्ति से अधिक काम करने वाला।
डाकू दे० (पु०) डकैत, बलात्कार पूर्वक अपहरण करने वाला, दस्यु, साहसी, चोर, बटमार, लुटेरा।
डाट दे० (स्त्री०) घुड़की, धमकी, तिरस्कार, भर्त्सन, अनादरसूचक शब्दों का प्रयोग, झिड़की, डपट।
डाटना दे० (क्रि०) धमकाना, घुड़कना, झिड़कना, डपटना।
डाढ़ दे० (स्त्री०) दाँत, चौ, पिछले बड़े दांत जिनसे भोजन पीसा और चबाया जाता है।
डाढ़ी दे० (स्त्री०) दाढ़ी, डाढ़ का दूसरा भाग, ठुड्डी, गालों पर के बाल।
डाब दे० (पु०) नारियल का कच्चा फल। परतला, जिसमें तलवार लटकायी जाती है। डाभ, दर्भ, कुश।
डाबर दे० (पु०) पात्र विशेष जिसमें हाथ धोया जाता है, चिलमची, गड़हा, गोल तालाब। (गु०) गन्दला, मैला, कलुषित, आबर।
डाभ तद्० (पु०) दर्भ, डाब, कुश, दाभ, जङ्गल, वन, कानन।
डामर तद्० (पु०) शिवोक्त शास्त्रविशेष, तन्त्रभेद, समान राष्ट्र का भय, परचक्रभय, धूना, राल, सर्जरस।
डायन दे० (स्त्री०) डाकिन, चुड़ैल।
डायरी दे० (स्त्री०) दिनचर्या, दैनिक व्यवहार लिखना, रोज़नामचा।
डार दे० (स्त्री०) शाखा, साख, डाल, डाली, पाँत, पंक्ति, सीधी रेखा, क़तार।—की डार (वा०) झुंड का झुंड, दल का दल, पंक्ति की पंक्ति। टोली, जत्था, समूह।
डारना दे० (क्रि०) डालना, लगाना, फेंकना, पहनाना, उड़ेलना, उभकना।

डारिय तद्० (पु०) दाड़िम, अनार, अनार का फल।

डाल दे० (स्त्री०) शाखा, टहनी, डाली।

डालना दे० (क्रि०) डारना, लगाना, फेंकना।

डाला दे० (पु०) डोला, बड़ी डाली, दौरा, बड़ी डलिया।

डालिय तद्० (पु०) दाड़िम, अनार का फल।

डाली दे० (स्त्री०) भेंट, उपहार, फल आदि उपहार में भेजना, फलों की टोकरी, शाखा, फूल रखने का पात्र, जो प्रायः बाँस का बनता है।

डासन दे० (पु०) बिछौना, डसौना।

डासना दे० (क्रि०) बिछाना, बिस्तर बिछाना, बिछौना करना।

डासी दे० (स्त्री०) बिछाई हुई।

डाह तद्० (स्त्री०) दाह, वैर, विद्वेष, द्रोह, लाग, अनबन, गाँठ।

डाहना तद्० (क्रि०) वैर करना, डाह रखना, दुःख देना, घी पिघलाना, धातु पिघलाना।

डाही तद्० (गु०) द्रोही, दाही, ईर्षी, क्रोधी, मन्दाग्नि रोगी।

डिगना दे० (क्रि०) हिलना, डगमगाना, अस्थिर होना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट होना, शर्त से बदल जाना, हटना, थरथराना, काँपना।

डिगाना दे० (क्रि०) हिलाना, कँपाना, चलायमान करना, प्रतिज्ञाभ्रष्ट करा देना, विचलित करना।

डिङ्गर दे० (पु०) मोटा, स्थूल, धूर्त, ठग, धोखाबाज़, दास, सेवक, नौकर।

डिठियारा तद्० (गु०) दृष्टिवाद, आँखवाला, दृष्टि, शक्तियुक्त।

डिण्डिम तत्० (पु०) डुगडुगी, डुग्गी, ढिंढोरा।

डिण्डिर तद्० (पु०) समुद्र का फेन, समुद्र की झाग।

डिबिया दे० (स्त्री) ढक्कनदार काठ का एक प्रकार का गोल पात्र, डब्बा, डिब्बी।

डिब्बा दे० (पु०) बड़ी डिबिया।

डिब्बी दे० (स्त्री०) डिबिया, टोटा रखने का पात्र।

डिभ तत्० (पु०) संग्राम, पाखण्ड, दम्भी, धूर्त, प्रलय।

डिभी तत्० (गु०) पाखण्डी, दम्भी।

डिम तत्० (पु०) संग्राम, प्रलय।

डिम्ब तत्० (पु०) पाखण्ड, भय, त्रास, लूटपाट, बिना हथियार की लड़ाई, अण्डा फुण्डा, फुफ्फुस।

डिम्बक तत्० (पु०) शाल्व नगर के राजा प्रद्युम्न का पुत्र, इसके सौतेले भाई का नाम था हंस। महादेव ने इसको अवध्य बनाया था, देवता असुर दानव गन्धर्व आदि कोई इसको मार नहीं सकता था। विरूपाक्ष और कुण्डोदर नामक दो महादेव के गण इसकी रक्षा के लिये सर्वदा इसके पास रहा करते थे। इन लोगों ने एक बार दुर्वासा ऋषि को बड़ा तङ्ग किया, उनके दण्ड कमण्डलु आदि तोड़ फोड़ दिये। दुर्वासा ने अपने तिरस्कार का हाल श्रीकृष्ण से कहा, श्रीकृष्ण हंस और डिम्बक के साथ युद्ध करने के लिये उद्यत हुए। श्रीकृष्ण हंस के साथ युद्ध करते करते उसको बड़ी दूर तक भगा ले गये, डिम्बक सात्यकि से युद्ध करता था। डिम्बक ने समझा श्रीकृष्ण द्वारा हंस मारा गया, ऐसा समझ कर वह यमुना में घुस गया, अपनी जिह्वा उखाड़ कर उसने आत्महत्या कर ली। कहते हैं आत्म-हत्या के पाप से डिम्बक को बहुत दिनों तक नरकवास का दुःख भोगना पड़ा।

डिम्बिका तत्० (स्त्री०) कामिनी, कामुकी, जल बिम्ब, वृक्षविशेष।

डिम्भ तत्० (पु०) [डिम्भ + अच्] शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी, अज्ञान, डिम्ब, अण्ड, पशुशावक, बछड़ा।—चक्र (पु०) मनुष्यों का शुभाशुभ बताने वाला एक प्रकार का चक्र।—ज (गु०) अण्डज, द्विज, द्विजन्मा पक्षी, चिड़िया, शकुन्त।

डिम्भक तत्० (पु०) बालक, शिशु।

डिम्भा तत्० (स्त्री०) बच्चा, गदेला, अतिशिशु, दुधमुँहा बच्चा।

डींग दे० (पु०) बड़ाई, अहङ्कार, दर्प, अभिमान, गर्व।—मारना (क्रि०) घमण्ड करना, बड़ा

हाँकना, अपनी बड़ाई आप करना, स्वयं अपनी प्रशंसा करना ।—हाँकना (क्रि०) डींग मारना, अभिमान करना, अपनी प्रशंसा करना ।

डीठ तद्० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, आँख, नेत्र, नयन । —बन्दी (वा०) इन्द्रजाल से देखने की शक्ति को नष्ट कर देना, नज़रबन्दी, माया, इन्द्रजाल, नटविद्या ।

ीठना तद्० (क्रि०) देखना, दर्शन करना, ताकना ।

ीठि तद्० (स्त्री०) दृष्टि, डीठ, दर्शन ।

ीठियारा तद्० (गु०) दृष्टिवान्, अच्छी आँख वाला, देखने वाला, ताकने वाला, दर्शक, टकटकिया ।

ीन तद्० (पु०) [डी + क्त] पक्षी का गमन, आकाश पथ में विचरण, उड़ना, आगमशास्त्र-विशेष ।

ील दे० (पु०) आकार, आकृति, काय, शरीर, देह, सीस, मट्टी का ऊँचा ढूह ।

ीला दे० (पु०) ढेला, मिट्टी का टुकड़ा ।

ीह दे० (पु०) वास, बसति, वास-स्थान, वह स्थान जहाँ गाँव आदि बसते हैं ।—पड़ना (क्रि०) खँडहर हो जाना, उजड़ होना, उजाड़ हो जाना ।

ीहा दे० (पु०) टीला, मट्टी का पहाड़ ।

क दे० (पु०) मुक्का घूसा, मार ।

करा दे० (पु०) वृद्ध, बूढ़ा, पुराना, जीर्ण ।

करिया दे० (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, वृद्धा स्त्री ।

ा डुगाना दे० (क्रि०) डुग डुग करना, डङ्का बजाना, डङ्का पीटना ।

गी दे० (स्त्री०) तबला, वाद्यविशेष ।

ण्डु, डुण्डुभ तत्० (पु०) सर्पविशेष, जल का साँप ।

की दे० (स्त्री०) बुड़की, गोता, अवगाहन ।

ाना दे० (क्रि०) बुड़ाना, बोरना, गोता खिलाना, डुबोना, नष्ट भ्रष्ट कर देना, उजाड़ना ।

ाव दे० (पु०) अथाह जल, अधिक जल, अगाध जल, डूबने योग्य जल ।

ोना दे० (क्रि०) डुबाना, बोरना, बुड़ाना ।

र तद्० (पु०) उदुम्बर, गूलर का वृक्ष, फल ।

डुरियाना दे० (क्रि०) चलाना, फिराना, रस्सी में बाँध कर घुमाना, बागडोर पर घोड़े को लेचलना ।

डुलना दे० (क्रि०) हिलना, चलना, कँपना, कम्पित होना, झूलना, झूले पर झूलना ।

डुलाना दे० (क्रि०) हिलाना, झुलाना, भगवान् को हिण्डोले पर झुलाना, कँपाना ।

डूंगर दे० (पु०) पहाड़, पहाड़ी, धूह, छोटी पहाड़ी । यथाः—

"जनहीं में सब खोदि बहावैं,
डूँगर को घर नाम मिटावैं ।

—व्रजविलास ।

डूब दे० (पु०) डुबकी, गोता, बुड़की ।

डूबना दे० (क्रि०) अवगाहन करना, मग्न होना, डुबकी लगाना, बूड़ना, जलमग्न होना, अस्तमित होना, सूर्यास्त होना, छिप जाना, नष्ट होना, बिगड़ जाना, नष्ट भ्रष्ट होना, लीन होना, ध्यान-मग्न होना, लौ लग जाना, अत्यन्त आसक्त हो जाना, विवश होना, मूर्छित होना ।

डूबा दे० (गु०) बूड़ा हुआ, जल मग्न हुआ । (पु०) जल का अधिक आना, बाढ़ ।

डेग दे० (पु०) फलांग, चलावा, पद, पग, एक पैर रखने और दूसरे पैर रखने के बीच की भूमि ।

डेढ़ दे० (गु०) एक और आधा, आधा मिला हुआ एक, १½ ।—गत (स्त्री०) एक प्रकार का नाच । —पाव (पु०) एक पाव और आधा पाव, छः छटाँक ।—पवा (पु०) बाँट, जो डेढ़ पाव का हो, डेढ़ पाव की तौल ।

डेना दे० (पु०) परखना ।

डेरा दे० (पु०) विदेश का वास-स्थान, कुछ दिनों रहने का स्थान, घर, तम्बू, पटमण्डप, कपड़े का मकान ।

डेल, डेला दे० (पु०) ढेला, लौंदा, टुकड़ा ।

डेवढ़ा दे० (गु०) डेढ़गुना, एक और आधा गुना, सार्द्धगुणित ।

डेवढ़ी दे० (स्त्री०) दरवाज़ा, सदर दरवाज़ा, फाटक, द्वार ।

डेउड़ दे० (स्त्री०) बन्दूक की बाढ़ ।
डेउढ़ी दे० (स्त्री०) ड्योढ़ी, दरवाजा, द्वार, श्रोसारा ।
डैन तद्० (पु०) डयन, उड़ने का साधन, पङ्ख, पक्ष, पाख, चिड़ियों के पर ।
डैना दे० (पु०) डाल, शाखा, टहनी ।
डोई दे० (स्त्री०) काठ की कलछी ।
डोंगर दे० (पु०) डूँगर, पर्वत, टीला ।
डोंगा दे० (पु०) नावविशेष, छोटी नाव, कठरा, उडुप ।
डोंगी दे० (स्त्री०) अति छोटी नाव, कलछी ।
डोंड़ी दे० (स्त्री०) ढिंढोरा, डुगडुगी, मनादी । —फिराना (क्रि०) एक प्रकार के बाजे के सहारे से किसी बात को प्रकाशित कराना, राजकीय आज्ञाको प्रचारित करना ।
डोंर, डोंरा दे० (पु०) सर्पविशेष, दो मुँहा साँप ।
डोकना दे० (क्रि०) श्रोकना, वमन करना, उलटी करना, उबकाई आना ।
डोकरा दे० (पु०) वृद्ध, जरठ, जीर्ण, बुड्ढा, बूढ़ा, । —डोकरी (स्त्री०) वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया ।
डोब दे० (पु०) डूब, डुबकी, बुड़की, गोता, रङ्गना । —देना (क्रि०) रङ्गदेना, रङ्गचढाना, गोता देना ।
डोबा दे० (पु०) ताल, तालाब, सर, पोखरा, सरोवर, मूर्छा ।
डोम, डोमड़ा दे० (पु०) जातिविशेष, अन्त्यज जाति, जो सूप आदि बनाने का रोज़गार करते हैं ।—डोमनी (स्त्री०) डोम की स्त्री "मुसल्मान जाति के लोग जिनकी स्त्रियाँ केवल स्त्रियों ही के सामने गाती और नाचती हैं और मर्द गवैये और बजनिये होते हैं" (श्रीधर) ।
डोर दे० (स्त्री०) रस्सी, जेवर, सुतली, कूए से पानी निकालने की रस्सी ।
डोरक तत्० (पु०) डोर, सूत, सूत्र, गण्डा, रक्षासूत्र ।
डोरा दे० (पु०) सूत, सूत्र, सीने का सूत, धागा, लीक, लकीर, रेखा, तलवार की धार, आँख की धार, आँखों में जो लाल रङ्ग की लकीर सी होती है ।
डोरिया दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा ।
डोरी दे० (स्त्री०) सुतरी, रस्सी, डोर, पानी निकालने की रस्सी ।
डोल दे० (पु०) उदश्चन, पानी निकालने का पात्र जो लोहा या चमड़े का बनता है ।
डोलची दे० (स्त्री०) छोटा डोल, कपड़े का बना छोटा डोल ।
डोल डोल दे० (पु०) भ्रमणकारी, फिरैया ।
डोलना दे० (क्रि०) डोलन, झूलना, हिलना, टलना, फिरना, भटकना ।
डोला दे० (पु०) एक प्रकार की पालकी जिस पर स्त्रियाँ चढ़ती हैं ।—देना (क्रि०) सामान्य कुल की स्त्री का विवाह के लिये उच्चकुल के घराने में जाना, अविवाहिता लड़की को विवाहार्थ भेजना, शूद्र आदि जातियों का अपनी विधवा पुत्री को दूसरे पति के यहाँ भेजना, लड़की ब्याह देना, विवाहार्थ अपनी लड़की या बहिन आदि राजा को समर्पित करना , मुसल्मानी बादशाह के समय में राजपूताने के कतिपय पेटू कुलकलङ्क राजाओं ने अपनी बहिन और बेटियों का डोला मुसल्मानों को दिया था, इस पक्ष के क्षत्रिय, आमेर के राजा भगवानदास और मानसिंह थे ।
डोली दे० (स्त्री०) पालकीविशेष, जो स्त्रियों के चढ़ने के लिये है, चौपाला, स्त्रियों की पालकी ।
डौंगा दे० (पु०) मञ्च, मचान, ऊँचा आसन, गरगज ।
डौंड़ी दे० (स्त्री०) डौंड़ी, मनादी, ढिंढोरा ।
डौढ़ी दे० (स्त्री०) ड्योढ़ी, द्वार, दरवाजा, उसारा । (गु०) डेढ़गुना, उच्चस्वर से गाना ।
डौल दे० (पु०) प्रकार, रीति, ढङ्ग, ढब, भाँति, तरह, भाँति ।
ड्योढ़ा, दे० (गु०) डेवढ़ा, डेढ़गुना ।
ड्योढ़ी दे० (स्त्री०) डेयढ़ी, डौढ़ी, द्वार, दरवाजा, फाटक ।—दार (पु०) द्वार की रक्षा करने वाला, दरबान, द्वारपाल, प्रतिहार, द्वारपालक ।

ढ

व्यञ्जन का चौदहवाँ वर्ण है, यह भी मूर्द्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

ढक्क तद्० (पु०) बड़ा ढोल, ध्वनि, नाद, गम्भीर शब्द।

ढकेना दे० (क्रि०) प्रायोपवेशन से कुछ पाना, धरना देकर न्योता पाना, किसी प्रकार का भय दिखा कर अपना कार्य सिद्ध करना।

ढक दे० (पु०) तौल विशेष, तौलने का मान, बटखरा, बाँट, पत्थर या लोहे का गोला जिससे तौला जाता है।

ढकना दे० (क्रि०) ढपना, छिपना, लुकाना, गुप्त करना, तोपना (पु०) ढाँपने की वस्तु, सराव।

ढकनी दे० (स्त्री०) छोटा ढकना, ढकने के लिये छोटी वस्तु।

ढकार तत्स० (पु०) ढ अक्षर, ढ वर्ण, ट वर्ग का चौथा वर्ण, व्यञ्जन का चौदहवाँ अक्षर। (स्त्री०) डकार, उद्गार, एक प्रकार का शब्द जो भोजन के बाद तृप्ति की सूचना करता है।

ढकेल दे० (पु०) धक्का, ठेल, रेल, पेल।

ढकेलना (क्रि०) ठेलना, धक्का देना, रेलना पेलना।

ढकेलू दे० (पु०) धक्का देने वाला, ठेलने वाला, ढकेलने वाला, हटाने वाला, भगाने वाला।

ढकन दे० (पु०) ढकना, ढपना, लुकावन, छिपावन।

ढक्का तद्० (पु०) [ढक्क+आ] वाद्य विशेष, पटह, नगारा, भेरी, दुन्दुभी, डमरू।—री (स्त्री०) देवी विशेष, दुर्गा का एक नाम।

ढंग दे० (पु०) रीति, प्रकार, प्रथा, लक्षण, चालचलन, रहन सहन।

ढंगिया दे० (स्त्री०) दट्टी, बागडोर, घोड़े की एक प्रकार की लगाम।

ढंगा दे० (पु०) ठेंघी, ठेंठी, रोक, बजरी आदि अन्नों की डंडी।

ढंकौआ दे० (पु०) एक प्रकार का भयानक कौआ, जङ्गली कौआ।

ढडवा दे० (पु०) पक्षी-विशेष, एक प्रकार की चिड़िया जो मैना की जाति की होती है।

ढँढोरना दे० (क्रि०) खोजना, ढूँढ़ना, पता लगाना, जल में भूली हुई वस्तु को ढूँढ़ना।

ढँढोरा दे० (पु०) ढिंढोरा, डौंड़ी, डुगडुगी, बाजे के साथ राजाज्ञा सुनाना।

ढँढोरिया दे० (पु०) ढढोरा फेरने वाला।

ढनमनाना दे० (क्रि०) गिर पड़ना, फिसल जाना, झुक जाना, लुढ़कना।

ढनमनी दे० (स्त्री०) झुलकी, लुढ़क गयी, गिर पड़ी, फिसल गयी।

ढपढपाना दे० (क्रि०) ढोल बजाना, ढोलक पीटना, बिना ताल के ढोलक बजाना।

ढपना दे० (क्रि०) ढकना, छिपना, लुकना, अपने को छिपाना। (पु०) ढकना, ढकने की वस्तु।

ढब दे० (पु०) डौल, आकार, आकृति, डीलडौल, गढ़न, गठन।

ढबरा दे० (गु०) कलुष, आविल, गँदला, मैला, मलीन, मिट्टी मिला हुआ जल।

ढबीला दे० (गु०) ढबदार, सुडौल, सजीला, रूपवान्।

ढबुआ दे० (पु०) पैसा, ताँबे का सिक्का।

ढमलाना दे० (क्रि०) ढगरना, लुढ़कना, पड़ना, गिरना, फिसलना।

ढरक दे० (स्त्री०) ढालू, लुढ़काव, नीचे की ओर झुकी हुई भूमि।

ढरी दे० (स्त्री०) ढली, लुढ़की, पिघली, ओर था गयी, प्रसन्न हुई, अनुरक्त हुई।

ढलक दे० (स्त्री०) ढरक, बहाव, ढालू, लुढ़कन, फिसलन।

ढलकना दे० (क्रि०) ढरक कर जाना, पानी आदि द्रव पदार्थों का गिर जाना, लुढ़कना, पड़ना, गिरना।

ढलका दे० (गु०) चुन्धना, चौंधना, झुका, छलका ।

ढलकाना दे० (क्रि०) गिराना, लुढकाना, औंधा कर गिराना, उलट कर गिराना, औंधा करना ।

ढलना दे० (क्रि०) गिरना, फिसलना, बीतना, बीत जाना, व्यतीत होना, झलकना, ढगरना, झुकना, भर जाना, साँचे में पिघले धातुओं को भरना, ढलकना ।

ढलती फिरती छाँव दे० (वा०) सांसारिक पदार्थों का परिवर्तन, पदार्थों की अनित्यता, फेरबदल, अस्थिरता ।

ढलमलाना दे० (क्रि०) चञ्चल होना, डगमगाना, अस्थिर होना, काँपना, कम्पित होना ।

ढलाना दे० (क्रि०) साँचे से बनाना, साँचे में ढालना ।

ढलुवा दे० (गु०) उतार, नीचा, लुढ़काव, ढालू ।

ढलैत दे० (पु०) वीर, अस्त्रधारी, योद्धा, ढाल तलवार बाँधने वाला, साहसी योद्धा ।

ढवाना दे० (क्रि०) ढहाना, गिरवाना, पड़वाना, तुड़वाना ।

ढहना दे० (क्रि०) गिरना, पड़ना, गिर पड़ना, पतित होना, टूट जाना, टूट कर गिर पड़ना ।

ढहाए दे० (क्रि०) गिराए, गिरादिये, तुड़वाए ।

ढहावहिं दे० (क्रि०) गिरवाते हैं, तुड़वाते हैं, उजड़वाते हैं ।

ढाई दे० (गु०) अढ़ाई, दो और आधा, सार्द्धद्वय, आधा और दुगुना, २½ ।

ढाँकना दे० (क्रि०) छिपाना, ढापना, छिपाना, लुकाना ।

ढाँग दे० (स्त्री०) कन्दरा, शिखर, शृङ्ग, पहाड़ की चोटी, पर्वत का ऊपरी भाग ।

ढाँचा दे० (पु०) ठाँठ, साँचा, घर, डौल, बनाये जाने वाले का प्रथम रूपसङ्गठन, प्राक्रूपनिर्माण, अधबनी वस्तु, खाट का घेरा ।

ढाँपना दे० (क्रि०) ढाँकना, छिपाना, लुकाना, छुपाना ।

ढाँसना दे० (क्रि०) दोष देना, कलङ्क लगाना अपवाद करना ।

ढाँसा दे० (पु०) दोष, कलङ्क, अपवाद ।

ढाक दे० (स्त्री०) पलाश वृक्ष, ओक का पेड़, प्रभाव, तेज, प्रताप, एक प्रकार का बाजा जो साँप के विष उतारने के काम आता है ।

ढाटा दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जो दाढ़ी बाँधने के काम में आता है । एक प्रकार की बड़ी पगड़ी जो राजपूताने के क्षत्रिय बाँधते हैं ।

ढाठी दे० (स्त्री०) घोड़े का मुँह बाँधने की रस्सी, कसन, मुँहबन्धना, घोड़े के मुँहपर बाँधा जाने वाला फंदा ।

ढाढस तद्० (पु०) दार्ढ्य, दृढ़ता, स्थिरता, मानसिक दृढ़ता, भरोसा, साहस, धीरता, धैर्य ।
—देना (क्रि०) भरोसा देना, धैर्य देना ।
—बँधाना (क्रि०) धैर्य रखने का उपदेश देना साहस देना, धीरज देना, दृढ़ता देना, दृढ़ होने के लिये उपदेश देना । शान्ति धराना ।

ढाढिन दे० (स्त्री०) ढाढ़ी की स्त्री ।

ढाढ़ी दे० (पु०) जाति विशेष, गाने बजाने का व्यवसाय करने वाली जाति ।**—लीला** (स्त्री०) एक खेल, भगवान् कृष्ण की बाल लीला का अभिनय ।

ढान दे० (पु०) घेरा, बेड़ा, बाड़ा, हाता ।

ढाना दे० (क्रि०) ढाहना, गिराना, उजाड़ना ।

ढाबर दे० (गु०) गहरा, गँदला, मैला, मलिन ।

ढाबा दे० (पु०) ओसारा, ओरी, बरण्डा, ओलती ।

ढार दे० (स्त्री०) प्रकार, भाँति, भेद, भेष, कर्णभूषण विशेष ।

ढारना दे० (क्रि०) ढालना, उलटना, औंधाना ।

ढारी दे० (स्त्री०) ढार, ढाल, ढलकाव, ढार दई ढरका दी ।

ढाल दे० (पु०) उतार, ढलाव, ढलाऊ, झुकाव (स्त्री०) फरी, फलक, चर्म ।

ढालना दे० (क्रि०) साँचे में उतारना, बिगाड़ना नीचे गिराना, किसी धातु को पिघला कर साँचे में उतारना, बहाना, बिगाड़ना ।

ढालया दे० (गु०) उतराव, उतार, ढुलकाव, ढला हुआ, साँचे से ढाल कर निकाला हुआ।

ढालू दे० (गु०) बिगाड़ू, बिगाड़ने वाला, ढाँढा।

ढाहति दे० (क्रि०) ढाहती है, गिराती है, नाश करती है।

ढाहा दे० (पु०) नदी का किनारा, करार, ऊँचा करार।

ढिंग दे० (पु०) समीप, पास, निकट, नगीच।

ढिठाई तद्० (स्त्री०) चञ्चलता, निर्लज्जता, साहस, साहसिकता, धृष्टता।

ढिढिम दे० (पु०) टिटिहरी पक्षी, टिट्टिभ।

ढिबका दे० (पु०) गुमड़ा, गिलटी, फोड़े का गड़ा।

ढिमढिमी दे० (स्त्री०) डमरू, खँजरी आदि बाजों का शब्द।

ढिल्लड़ दे० (गु०) आलसी, अकर्मण्य, सुस्त, शिथिल।

ढीठ तद्० (गु०) धृष्ट, चञ्चल, बेधड़क, निडर।

ढीठा तद्० (पु०) धृष्ट, लगरा।

ढीठाई दे० (गु०) धींगाधींगी, धूर्तता, चञ्चलता।

ढील दे० (स्त्री०) आलस, असावधानी, अचेती, देरी, विलम्ब, कालक्षेप।

ढीला दे० (गु०) मुक्त, छुटा हुआ, शिथिल, आलसी, असावधान, अचेत, मन्द, मन्दा।

ढीलाई दे० (स्त्री०) शिथिलता, छुटकारा, मुक्ति, मोचन, विलम्ब, कालक्षेप।

ढीहा दे० (पु०) टीला, ढील, डूँगर, पहाड़, पहाड़ी।

ढुकना दे० (क्रि०) घुसना, प्रवेश करना, भीतर जाना, मिल जाना, शामिल होना, झुकना, सिर झुकाना।

ढुकी दे० (स्त्री०) ताक, पीछा करना, किसी के चरित्र का गुप्त अनुसन्धान करना।

ढुरना दे० (क्रि०) नख़रे से चलना, नाचना, कबूतर की गति।

ढुलना दे० (क्रि०) ढुरना, ढलना, गिरना, लुढ़कना।

ढुलवाना दे० (क्रि०) उठवाना, गठरी उठवाना, गिराना।

ढुलाई दे० (स्त्री०) ढुलाने की मजूरी, गठरी उठाने की मजूरी।

ढुलाना दे० (क्रि०) ढुराना, ढलवाना, गिरवाना, लुढ़कवाना।

ढूआ दे० (पु०) मेड़, मिट्टी का छोटा बाँध जो वृक्षों की जड़ में पानी डालने के लिये बनाया जाता है।

ढूँढढाँढ दे० (क्रि०) पूँछ ताछ, खोज, अनुसन्धान, टोह।

ढूँढन दे० (पु०) खोज, टोह, सन्धान।

ढूँढना दे० (पु०) खोजना, टोह लगाना, पता लगाना।—ढाँढना (क्रि०) खोजना, हेरना, तलाश करना, प्रयत्नपूर्वक ढूँढना।

ढूँढार दे० (पु०) राजपूताने के अन्तर्गत एक प्रान्त-विशेष, जयपुर राज्य का प्रान्त।

ढूँढिया दे० (पु०) जैन संन्यासी, जैन धर्म के भिक्षुक। (गु०) ढूँढने वाला, टोह लगाने वाला, अनुसन्धानी।

ढूक दे० (स्त्री०) ढुकी, ताक।

ढूकना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, पास आना, बन्ध कटना।

ढूका दे० (पु०) घात, ढेस, किसी की ताक में छिपना।

ढूसर दे० (पु०) जातिविशेष, वैश्यों की एक जाति।

ढेऊ दे० (पु०) तरङ्ग, लहर, वीचि।

ढेक दे० (पु०) सारस पक्षी।

ढेकली दे० (स्त्री०) कुआँ से जल निकालने का एक यन्त्र।

ढेंका दे० (पु०) धान आदि का छिलका छुटाने का यन्त्र।

ढेंकी दे० (स्त्री०) कूटने का यन्त्र।

ढेंड़स दे० (पु०) तरकारी-विशेष।

ढेंडी दे० (स्त्री०) पोस्ता का फूल, कर्णभूषण-विशेष।

ढेंढा दे० (पु०) गर्भ, लम्बोदर, बड़ा पेट, लम्बा उदर, लंबी नाभि, पैरों का मध्य भाग।

ढेढ दे० (पु०) जातिविशेष, चर्मकार, चमार, चमड़े का काम करने वाला।

ढेढी दे० (स्त्री०) कान का एक प्रकार का गहना, फली, फनियाँ।

ढेर दे० (स्त्री०) राशि, गोना, टाला।

ढेरा दे० (पु०) मेंगा, रस्सी ऐंठने की कल, चिन्हविशेष।

ढेरा दे० (स्त्री०) राशि, टाल, बोझ, ढेर।

ढेला दे० (पु०) मिट्टी का टुकड़ा, पिण्डा, लौंदा। —चौथ (स्त्री०) भादों शुक्ल की चतुर्थी। इस दिन की रात्रि को अशिक्षित हिन्दू दूसरों के घरों में ढेला फेंकते हैं और उसके बदले में गाल सुनते हैं। कहा जाता है कि ऐसा करने वाले मनुष्य साल भर कलङ्की नहीं होते। परन्तु शास्त्रों में ढेला फेंकना कहीं नहीं लिखा है। किन्तु स्यमन्तक मणि के विषय वाली कथा सुनने को लिखा है। (देखो, जाम्बवान्, और स्यमन्तक)।

ढैया दे० (स्त्री०) अढ़ैया, अढ़ाई सेर का मान, तौल। —टेकर (गु०) जन शून्य, उजाड़, ऊजड़, शून्य, रिक्त।

ढोआ दे० (पु०) भेंट, उपहार, उत्सवविशेष में आश्रितों का मालिकों को दिया हुआ उपहार।

ढोंड़ दे० (स्त्री०) ढेड़ी, फली, बीजकोष।

ढोक दे० (पु०) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन। राजपूताना प्रान्त में प्रणाम नमस्कार के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। दण्डवत्।

ढोकना दे० (क्रि०) पीना, घूँटना, निगलना, निगल जाना।

ढोका दे० (पु०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, पाँच की संख्या, आम आदि ख़रीदने में इसका उपयोग किया जाता है।

ढोटा दे० (पु०) बालक, छोकड़ा, बाल, पुत्र, सन्तान। —"तुम हो ढोटा नन्द बबा के हम वृषभानु-दुलारी"।

ढोना दे० (क्रि०) लेजाना, उठा कर लेजाना, उठाना, एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखना।

ढोर दे० (पु०) गाय, गोरू, पशु, गौ भैंस आ[दि] पशु।

ढोरा दे० (पु०) मुसल्मानों का ताजिया।

ढोरी दे० (स्त्री०) दाह, ताप, दहक।

ढोल दे० (पु०) वाद्यविशेष, ढोलक।

ढोलक दे० (पु०) छोटी ढोल।

ढोलकिया दे० (पु०) ढोलक बजाने वाला, ढो[लक] बजाने में निपुण।

ढोलकी दे० (स्त्री०) छोटी ढोल, ढोलक, जि[से] वाली स्त्रियाँ बजाती हैं।

ढोलन दे० (पु०) प्रियतम, रसिक, रसिया।

ढोलना दे० (पु०) एक प्रकार का बाजा जो ढोल[क] समान होता है।

ढोला दे० (पु०) छोकरा, बालक, रागविशेष [...] प्राचीन शृङ्गार का एक प्रसिद्ध प्रेमी, ढोला म[ारू] की कथा उस समाज में प्रसिद्ध है। शायद [...] कथा की पुस्तक भी छप गई है। गाने वालों [की] जाति।

ढोलिन दे० (स्त्री०) ढोला जाति की स्त्री, इस [जाति] के लोग मारवाड़ में अधिकता से पाये जाते [हैं।] इनका धन्धा गाना बजाना है।

ढोलिया दे० (पु०) ढोल बजाने वाले, ढोल[िया] सजासजाया पलँग, बिछाया हुआ पलँग।

ढोली दे० (पु०) ढोल बजाने वाला, ढोल[ी] जातिविशेष, ढोला। (स्त्री०) दो सौ पान [की] आँटी, दो सौ पान की एक ढाँली।

ढोलैत दे० (पु०) ढोल वाला, ढोल बजाने वा[ला,] ढोलकिया।

ढौंचा दे० (गु०) साढ़े चार, साढ़े चार गुना साढ़े चार से गुणित।

ढौकन तत्० (पु०) [ढौक+अनट्] घूँस, [...] डाली, नज़र, किसी प्रकार का लोभ [...] अपने मतलब का काम कराने का उपाय।

ढौरी दे० (स्त्री०) ताप, दाह, दहक, चौंप।

ण

ण व्यञ्जन का पन्द्रहवां वर्ण, यह भी मूर्द्धन्य है।

ण तत्० (पु०) बिन्दु देव, भूषण, निर्गुण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान, बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, भक्ष, उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्मोल, त्रिगुण कार।

त

त व्यञ्जन का सोलहवाँ वर्ण, यह दन्त्य कहा जाता है, क्योंकि इसके उच्चारण का स्थान दन्त है।

त तत्० (पु०) चोर, अमृतपुच्छ, क्रोड़, गोद, म्लेच्छ, गर्भ, शठ, शियालपूँछ, पूँछ, रत्न, पुण्य, बौद्ध योद्धा, कुटिल, तोम, तैरना। (स्त्री०) उदर, तक्षण।

तई देο (अ०) तक, पर्यन्त, वास्ते, सौंपा, लिये, वास्ते, तदर्थ। (स्त्री०) ताक दृष्टि।

तई देο (स्त्री०) कड़ाही, लोहे की कड़ाही, जिसमें जलेबी मालपुआ आदि बनाये जाते हैं।

तऊ देο (अ०) तथापि, तौ भी, तदपि।

तक देο (अ०) तलक, तईं, पर्यन्त, अवधि। (स्त्री०) दृष्टि, ताक, तराजू, लकड़ी।—तक (पु०) पशु आदि को हाँकने का शब्द।

तकना देο (क्रि०) ताक लगाना, दृष्टि रखना, देखा करना, एकटक देखना, चितवना, सस्पृह दृष्टि।

तकला देο (पु०) तकुआ, सूत कातने का यन्त्र, चरखा।

तकली देο (स्त्री०) छोटा तकला, घटेन, परेता, चर्खी।

तकवा ा देο (पु०) ताकनेवाला, रक्षक, चौकीदार, पहरुआ, पहरेवाला।

तकवा ी देο (स्त्री०) रखा, चौकीदारी, पहरा, पहरेवाले का काम, चौकीदारी।

तकहु देο (क्रि०) ताको, देखो, अवलोकन करो, दृष्टि रखो।

तकान देο (पु०) भावभङ्गी, ढब।

तकाना देο (क्रि०) ताक रखना, दृष्टि रखना, लक्ष्य रखना।

तकार देο दधि मथने का दण्ड।

तकि देο (अ०) ताक कर, लक्ष्य कर, देखकर।

तकिया देο (स्त्री०) सिरहाने रखने की वस्तु, बालिश, उपधान, सिरहाना।

तकीनो देο (स्त्री०) छोटा उसीसा।

तकुआ देο (पु० सूत कातने की लोहशलाका जो चर्खे में लगायी जाती है, तकला।

तक्र तत्० (पु०) छाँछ, मट्ठा, मही।

तक्ष तत्० (पु०) [तक्ष+अच्] आच्छादन, कर्तन, काटना, चमड़ा, चर्म, विज्ञानतत्त्व।—शिला (पु०) प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, यह पञ्जाब में था, इसका उल्लेख पुरानियों के इतिहास में आया है।

तक्षक तत्० (पु०) [तक्ष+अक] बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, सर्पविशेष, सर्पराज, विश्वकर्मा, सूत्रधार, वृक्षविशेष।

तखड़ी देο } (स्त्री०) पलड़ा, तराजू, अन्न आदि तखरो देο } तौलने की तुला।

तखान तद्० (पु०) तक्षक, बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, खाती।

तगण तत्० (पु०) कविता का गणविशेष जिसके अन्त का अक्षर लघु हो यथा जीतुत।

तगना देο (क्रि० सीना, सिलाई करना, तागा चलाना।

तगर तत्० (पु०) पुष्पविशेष, सुगन्धित काष्ठविशेष, मदन वृक्ष, मदन वृक्ष।

तगाई देο (स्त्री०) सिलाई, तागने का काम, तागने की मजूरी।

तगाना देο (स्त्री०) तागा डालना, सिलवाना।

तगा देο (पु०) सूत, बटा हुआ सूत जिससे तागा जाता है।

तगड़ी देο (स्त्री०) करधनी, कटिसूत्र।

तक्का देο (पु०) दो पैसे, टका।

तचना दे० (क्रि०) सन्तप्त होना, दुःखी होना, गरम होना।

तचाना दे० (क्रि०) गरम करना, तपाना, झुलसाना।

तज दे० (पु०) तेजपात, तेजपात का वृक्ष।

तजई दे० (क्रि०) छोड़ देता है, त्यागता है, त्याग देता है।

तजन दे० (स्त्री०) छोड़न, त्यागन, त्याग।

तजना दे० (क्रि०) त्यागना, छोड़ना, सम्बन्ध छोड़ देना।

तजि दे० (अ०) छोड़ कर, तजकर, त्याग कर।

तजिये दे० (क्रि०) छोड़ो, छोड़ दो, छोड़िये। यथा—"जाको प्रिय न राम वैदेही, तजिये ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही।"

तज्ञ तत्० (पु०) तत्वज्ञाता, ज्ञानी आत्मज्ञ, पण्डित।

तजरुबत दे० तजरुबा, अनुभव, विचार, यथार्थ ज्ञान।

तट तत्० (पु०) [तट+अच्] तीर, कूल, किनारा, नदी का कछार।—स्थ (गु०) तीर पर रहने वाला, तीरवासी, चमत्कृत, सङ्कुचित, मध्यस्थ, उदासीन, बीचबचाव कराने वाला। (पु०) लक्षण-स्वरूप, स्वरूपलक्षण के अतिरिक्त लक्षण, पारमार्थिकता, अपक्षपातिता।

तटाक तत्० (पु०) तड़ाग, बड़ा सरोवर, वृहत् जलाशय, जिस सरोवर में कमलपुष्प हों।

तटिनी तत्० (स्त्री०) [तट+इन्] नदी।

तटी तत्० (पु०) नदीकूल, तीर, तट, किनारा, तटवाला, तीरवाला।

तड़ दे० (पु०) दल, पक्ष, गिरोह, जथा, टोली, अव्यक्त शब्द।—तड़ (पु०) लकड़ी आदि के टूटने का अव्यक्त शब्द।

तड़क दे० (स्त्री०) तर्क, टेई, एक लकड़ी जिस पर से छाजन होती है।

तड़कना दे० (क्रि०) टूटना, फूटना, टूट जाना, फटना।

तड़का दे० (पु०) प्रातः काल, भोर, विहान, भिनसार, सबेरा।

तड़के दे० (अ०) सबेरे, प्रातःकाल, प्रातःकाल के समय।

तड़तड़ाना दे० (क्रि०) झिटकना, क्रोधित होना, रिसाना, किरकिराना।

तड़प दे० (स्त्री०) चटक, झपट, शीघ्रता, उतावली, उचक।

तड़पड़ा दे० (पु०) वृष्टि गिरने का शब्द।

तड़पना दे० (क्रि०) तलफना, दुःख से छटपटाना, धड़कना, तड़फना, हाथ पैर धुनना।

तड़पाना दे० (क्रि०) तलफाना, दुःख देना।

तड़पीला दे० (गु०) प्रभावशाली, फुर्तीला, चटपटिया।

तड़फ दे० (स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट, अत्यन्त, दुःखदायी, उद्विग्नता, अधिक दुःख से अधीरता। यथा—"ज्वर से तड़फ रहा है" "बिना जल के मछलियाँ तड़फ रही है।" "तड़फ तड़फ कर उसने प्राण दे दिये।"

तड़फड़ाना दे० (क्रि०) तड़पना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना, धड़कना, छटपटाना।

तड़फड़ाहट दे० (स्त्री०) धुकधुकी, धड़क, भड़क।

तड़फड़ी दे० (स्त्री०) छटपटी, धुकधुकी, शङ्का से छटपटी।

तड़फना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, तड़पना, व्याकुल होना।

तड़फाना दे० (क्रि०) तड़फाना, तड़पाना, व्याकुल करना, उद्विग्न होना।

तड़ा दे० (पु०) टापू, द्वीप, उपद्वीप, दोआब।

तड़ाक दे० (गु०) चमत्कार, भड़कीला, चटकीला, दीप्यमान, शीघ्र, तुरन्त।—पड़ाक (अ०) अति शीघ्र, बहुत जल्दी, अत्यन्त शीघ्रता से, शीघ्रतापूर्वक।

तड़ाका तत्० (स्त्री०) समुद्र का किनारा, समुद्रतट, बड़ी बड़ी नदियों का तीर—(पु०) मारने का शब्द, टूटने की ध्वनि।

तड़ाग तत्० (पु०) तालाब, पोखरा, सरवर, सरोवर, जलाशय, पाँच सौ धनुष के परिमाण का जलाशय।

तडाघात तत्० (पु०) [तड़ा+आघात] ऊपर उठे हुए हस्तिशुण्ड का आघात।

ड़ाड़ा दे० (पु०) जल की तीव्र धारा, तरेड़ा, तरखा।

ड़ाया दे० (पु०) रसिकता, छैलापन, चटक मटक, तड़क भड़क।

ड़ावा दे० (पु०) दर्प, अभिमान, गर्व।

ड़ित् तत्० (स्त्री०) विद्युत्, बिजली, सौदामिनी, चञ्चला, चपला।—**समाचार** (पु०) बिजली के द्वारा समाचार भेजना, टेलीग्राफ, तारबर्की, तार।

ड़ित्वान् तत्० (पु०) [तड़ित्+वत्] मेघ, जलधर, वारिद, बादल।

ड़िल्लता तत्० (स्त्री०) [तड़ित्+लता] विद्युल्लता, बिजली।

तड़क तत्० (पु०) खञ्जन पक्षी, खड़ैचा, खंडलीच, भारद्वाज पक्षी, फेन, अधिक समास वाला वाक्य, छान की लकड़ी, धरन, धन्नी, कड़ी, तरुस्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखें फूटती हैं। साफ़, सुथरा, निर्मल। (गु०) मायाबहुल, मायावी, छली, प्रपञ्ची।

तड्डु तत्० (पु०) शिव का द्वारपाल, अनुकर्म-विधायक, कर्तव्य कर्मों का उपदेशक।

तण्डुल तत्० (पु०) चावल, चाउर, बिना छकले का धान, कूटा धान, तन्दुल।

तद् तत्० (अ०) बुद्धिस्थ, परामर्शक, सर्वनाम, वह, वही, ब्रह्म का विशेषण, प्रसिद्धार्थक।—**कन्द** (पु०) अदरक, वाराहीकन्द।—**कर्तृक** (गु०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ।—**कर्म** (पु०) वह कर्म, वही कर्म, जाना हुआ कार्य, प्रसिद्ध कार्य।—**कार्य** (पु०) वह कार्य, सो काम।—**काल** (पु०) उसी काल में, उसी समय में, उसी क्षण।—**कालिक** (गु०) उस समय का, तदानीन्तन।—**कालीन** (गु०) उसी काल का, उसी समय का।—**कालोत्पन्न** (गु०) उस समय का उत्पन्न।—**कृत** (गु०) उसका बनाया, उसके द्वारा बनाया हुआ।—**क्षण** (पु०) उसी क्षण, उसी समय, उसी काल में।—**तुल्य** उसके समान, उसके सदृश, उसके ऐसा।—**पर** (गु०) उद्युक्त, अनलस, सुनिपुण, आसक्त, लगा हुआ, उद्योगी, तदनन्तर, उसके पश्चात्।—**परायण** (गु०) तदासक्त, उसके अनुरक्त, उसके अनुवर्ती।—**पुरुष** (पु०) समासविशेष, इस समास में उत्तर पद की प्रधानता रहती है, यथा—कृष्ण का दास, कृष्ण दास, कर्मधारय इसीके अन्तर्गत है।—**फल** (पु०) पीलु वृक्ष, गजपीपल, जामुन वृक्ष, बदरी वृक्ष, बेर, श्वेत कमल।

ततछन तद्० (अ०) तत्क्षण, उसी समय, तत्काल, बहुत शीघ्र। यथाः—

"ततछन हार बेगि उतराना,
पावा सखहिं चन्द्र बिहसाना।" —पद्मावत।

ततरी दे० (स्त्री०) अठखेलन, चपला युवती।

ततवा दे० (पु०) जातिविशेष, कपड़ा बीनने वाली हिन्दू जाति।

ततहरा दे० (पु०) गर्म करने का हण्डा।

तताना दे० (क्रि०) गरम करना, उष्ण करना, तपाना, सेंकना।

ततार दे० (स्त्री०) सेंक, गरम, टकोर, प्रक्षालन।

ततेड़ा दे० (पु०) पानी आदि गरम करने का स्थान, पानी गरम करने का पात्र, हण्डा।

तत्ता दे० (गु०) उष्ण, गरम, क्रोध, उग्र, प्रखर, तेज़, तीक्ष्ण।

तत्र तत्० (अ०) तहाँ, वहाँ, उस स्थान में, उस विषय में।—**स्थ** (गु०) तत्स्थानीय, उस स्थान का, उस स्थान सम्बन्धी।—**भवती** (स्त्री०) आर्या, मान्या, माननीया, पूज्या, पूजनीया, पूज्य, स्त्री सम्बोधन।—**भवान्** (पु०) पूज्य, मान्य, श्लाघ्य, श्रद्धेय, गुरु आदि माननीय पुरुषों का सम्बोधन।—**स्थ** (गु०) तत्स्थानीय, वहाँ रहने वाला, वहाँ का निवासी, वहाँ का।—**अपि** (अ०) बिना नाम के स्थान का सूचन करने वाला शब्द, उस पर भी, वहाँ पर भी।

तत्त्व तत्० (पु०) यथार्थ, सुख, सत्य, सार, मूल अवस्था, सूक्ष्मज्ञान, सूक्ष्मबोध, धर्म, स्वरूप, ब्रह्मभाव, अनुसन्धान, उद्देश्य अन्वेषण।—**कारक** (पु०) परिडत, यथार्थ वितर्क करने वाला, अनुसन्धान करने वाला।—**ज्ञान** (पु०) ब्रह्मज्ञान,

परमार्थज्ञान, अध्यात्मविद्या, तत्त्वविद्या। —ज्ञानी (गु०) ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मज्ञ।—तः (अ०) यथार्थ, सम्यक्, ठीक ठीक, सच सच।—वादी (गु०) यथार्थवक्ता, सत्यवादी, ब्रह्मवादी। —वार्ता (स्त्री०) अनुसन्धान, अन्वेषण। —वित् (गु०) सत्यवित्, ब्रह्मज्ञ, ब्रह्मज्ञानी। —विज्ञान (पु०) तत्त्वज्ञान, यथार्थज्ञान, रहस्यज्ञान।—वेत्ता (गु०) ब्रह्मज्ञानी।—ानुसन्धान (पु०) यथार्थ, अन्वेषण, सारवस्तु का जाँच, यथार्थ अन्वेषण, विशेष वृत्तान्त का सन्धान। —ावधारक (पु०) रक्षक, रखवाली करने वाला, अभिभावक, देखरेख रखने वाला।—ावधारण (पु०) रक्षणवेक्षण, देखरेख, अध्यक्षता। —ार्थवित् (गु०) तत्त्वज्ञानी।—ाभियोग=जन-वृत्तविशेष।

तथ तद्० (पु०) तथ्य सत्य, यथार्थ, सच।

तथा तत्० (अ०) वैसे, उस प्रकार, उस तरह, उस भाँति।—गत (पु०) बौद्ध, बुद्ध भगवान्, जिन, जैन।—च (अ०) जैसे।—पि (अ०) [तथा+अपि], तौभी, वैसा होने पर भी, उस पर भी। —स्तु (अ०) वैसा हो, वैसा ही हो स्वीकारोक्ति।

तथेति तत्० (अ०) वैसा, तादृश।

तथैव तत्० (अ०) वैसा ही, उसी प्रकार, यथा के साथ का अर्थ बोधक, वैसा।

तथ्य तत्० (पु०) [तथा+य], सत्य, तथार्थ, यथार्थ वचन, याथार्थ्य, (गु०) सत्य, यथार्थ। —ानुसन्धान (पु०) तत्त्व का अन्वेषण, सत्य का अनुसन्धान, यथार्थ की जांच करना, सत्य-सन्धान।

तद् तत्० (गु०) तत्, वह, सो। —अंश (पु०) वह अंश, उसका अंश।—अकरण (पु०) वैसा नहीं करना, उसको नहीं करना।—अतिपात (पु०) उसका अतिक्रम करना, उल्लङ्घन करना।—अधिक (गु०) उसके अतिरिक्त, उससे अधिक, ततोऽधिक। —अनन्तर (पु०) उसके पश्चात्, उसके बाद। —अनुग (गु०) उसके पीछे चलने वाला, तत्पश्चाद्गामी, उसके पश्चात् चलने वाला; (गु०) उसके अनुगत, उसके अनुगामी। —अनुयायी (गु०) उसके अनुगामी; (गु०) उसके समान, तादृश, तत्तुल्य।—अनुसार (अ०) तदनुरूप, उसके समान।—अन्त (पु०) शेष, समाप्त, अवधि।—अन्तः (अ०) उसके मध्य, उसके अभ्यन्तर। - अन्तःपाति (गु०) तन्मध्यवर्ती, उसके बीच में का।—अपि (अ०) तथापि, तो भी।—अवधि (अ०) उस समय से, तब से, उसी समय से।—अवस्थ (गु०) उसी प्रकार की अवस्था को प्राप्त, एक प्रकार की अवस्था वाले। —अर्थ (अ०) तन्निमित्त, तद्धेतु, उस कारण। (पु०) तदभिप्राय, वह अभिप्राय।—अनु (अ०) उसके बाद, उसके अनन्तर, उसके पश्चात्।—गत (गु०) उसमें लिप्त, उसमें आसक्त।—गति (स्त्री०) उसकी दशा, उसकी अवस्था।—गुणविशिष्ट (गु०) उस गुण से युक्त।—भावद्योतक (गु०) उस भाव का द्योतक, उस भाव का सूचक।

तदा तत्० (अ०) उस समय, उस काल।—त्व (पु०) वह काल, वह समय।—दि (अ०) तदवधि, तत्प्रभृति, तब से, उस समय से।

तदानीम् तत्० (अ०) उस समय, उस काल।

तदीय तत्० (गु०) तत्सम्बन्धी, उसका।

तदुक्ति तत्० (स्त्री०) उसका वचन, उसकी उक्ति।

तदुत्तम तत्० (गु०) उससे अपेक्षा उत्तम।

तदुत्तर तत्० (पु०) उसका उत्तर, प्रत्युत्तर, उत्तर, उसके बाद उसके अनन्तर।

तदुपरि तत्० (अ०) उसके ऊपर, उसके मध्य।

तदेकचित्त तत्० (गु०) समानस्वभाव, उसका अनुरक्त, उसका भक्त, उसका अनुवर्ती।

तदेव तत्० (अ०) वही।

तद्धन तत्० (गु०) [तत्+धन] कृपण, कम खर्च करने वाला, वही धन, उतना ही धन।

तद्धित तत्० (पु०) [तत्+हित] उसका उसका हितकर, व्याकरण का प्रत्ययविशेष।

तधी दे० (अ०) तभी, तब ही, त्यों ही।

तन तद्० (पु०) तनु, शरीर, काय, देह, अङ्ग।—देना (क्रि०) ध्यान देना, अत्यन्त परिश्रम सह कर भी काम करना, शक्ति से बाहर का काम करना।

तनक दे० (गु०) थोड़ा, अल्प, अंश, टुकड़ा, छोटा, सूक्ष्म, अल्प।

तनख़ाह, दे० वेतन, मासिक, वृत्ति, महीने भर की मजूरी।

तनना दे० (क्रि०) फैलना, खिंचना, विस्तार करना।

तनय तद्० (पु०) पुत्र, सन्तान, आत्मज, सुत, बेटा, तनया (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता, सुता।

तनहा दे० (गु०) एकाकी, अकेला, असहाय, सहायताहीन, निरालम्ब, आश्रयरहित।

तनादि तद्० (पु०) [तन्+आदि] दशविध धातुओं के अन्तर्गत अष्टम धातु।

तनापा दे० (पु०) जवानी, युवावस्था, तारुण्य, तरुणाई।

तनिक दे० (गु०) तनक, थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म।

तनिष्ठ तद्० (गु०) [तनु+इष्ठ] क्षुद्र, अत्यल्प, न्यून, क्षीण, अति सूक्ष्म।

तनी दे० (स्त्री०) अँगरखे का बन्द, अँगरखा बाँधने की तनी, तनया, पुत्री, कन्या।

तनीयान् तद्० (गु०) [तनु+ईयस्] सूक्ष्मतर, अल्पतर, बहुत थोड़ा, क्षुद्र, छोटा, लघु।

तनु तद्० (पु०) तन्+उ, शरीर, देह, त्वक्, चर्म, तन।—कूप (पु०) रोमकूप, रोमछिद्र।—च्छद् (पु०) वर्म, कवच, बख़तर, सन्नाह, युद्ध में जाने के उपयोगी परिच्छद।—ज (पु०) पुत्र, आत्मज, सुत, सूनु।—जा (स्त्री०) कन्या, पुत्री, तनया, दुहिता।—ता (स्त्री०) क्षीणता, सूक्ष्मता।—त्व (पु०) क्षीणत्व, सूक्ष्मत्व।—त्र (पु०) कवच, शरीररक्षाकारी, सन्नाह।—त्राण (पु०) तनुत्र, शरीररक्षण।—त्याग (पु०)मृत्यु, देहत्याग, शरीरपात, मरण।—घत (पु०) एक प्रकार के नरक का नाम।—व्रण (पु०) वाल्मीक रोग, छोटे घाव।—मध्या (स्त्री०) क्षीण कटि की, पतली कमर वाली स्त्री।—रुहा (पु०) रोम, लोम, बाल, केश।

तनुक दे० (गु०) अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म।

तनू तद्० (पु०) देह, तन, काया, शरीर।—ज (पु०) पुत्र, आत्मज।—जा (स्त्री०) कन्या।—नपात् (पु०) अग्नि, वन्हि, अनल।—भृत् (पु०) मनुष्य, देही, देहधारी।

तन्त दे० (पु०) तारवार, प्रबन्ध, व्यवस्था, सुप्रसिद्धि, तुरन्त, शीघ्र, सन्तान, औषधि, उपाय।

तन्तनाना दे० (क्रि०) पिनपिनाना, तनना, तीक्ष्ण होना, गरम होना, भन्नाना, क्रोध से बकना।

तन्तनाहट दे० (स्त्री०) पिनपिनाहट, जलने की पीड़ा।

तन्ति तद्० (पु०) तन्तुवाय, ततवा, कपड़ा बिनने वाली एक हिन्दू जाति।

तन्तु तद्० (पु०) सूत, सूत्र, तागा, धागा, डाङ्कर, वंश, सन्तान।—काष्ठ (पु०) ताँत का काठ। —कीट (पु०) रेशम का कीड़ा, पाटकीट। —निर्यास (पु०) तालवृक्ष।—वाय (पु०) कपड़ा बिनने वाला, जुलाहा, ताँती, ततवा, कोरी। —शाला (स्त्री०) कपड़ा बिनने का घर, ताँतघर। —सन्तान (पु०) अतिसूक्ष्म सूत, पतले बहुत सूत।

तन्तुना दे० (पु०) तनुता, तार।

तन्त्र तद्० (पु०) सिद्धान्त, परिवार का काम, औषधि, प्रधान, मुख्य, श्रुति की एक शाखा का नाम, हेतु, अर्थक, दोतरफ़ी बात, राष्ट्र, अर्थसाधक, उपाय, अपने राज्य की चिन्ता, प्रबन्ध, शपथ, धनगृह, वपन, बोना, साधन, कुल, शिवपार्वतीकथित शास्त्र, इस शास्त्र के दो भेद हैं, एक का नाम दक्षिण तन्त्र, और दूसरे का नाम वामतन्त्र है। दक्षिणतन्त्र में पशुदेव की उपासना सात्विक मनुष्यों के लिये सात्विक रीति पर वर्णित है। वामतन्त्र राजसी प्रकृति के मनुष्यों के लिये है। तन्त्र के इसी भाग के उपासकों में पञ्चमकारसेवन की विधि प्रचलित है। इस शास्त्र के बहुत से ग्रन्थ अब भी उपलब्ध होते हैं।

तन्त्रावाप तद्० (पु०) [तन्त्र+आवाप] अपने राज्य की व्यवस्था और शत्रु राज्य की दशा तथा स्वराष्ट्र परराष्ट्र का ज्ञान।

तन्त्रि तत्० (स्त्री०) निद्रा, नींद, घूम, ऊँघाई, आलस्य, आलस।—पालक (पु०) राजा जयद्रथ।

तन्त्री तत्० (स्त्री०) [तन्त्र+ई] वीणागुण, बीन का तार, गुड़ूची, शरीर की नाड़ियाँ, नदीभेद, युवतीभेद। (पु०) एक प्रकार का बाजा, सितार, तन्त्रशास्त्री, तन्त्रशास्त्रवेत्ता।

तन्द्रा तत्० (स्त्री०) [तन्द्र+आ,]ईषत्‌निद्रा, थकावट, भ्रान्ति।

तन्द्रालु तत् (पु०) [तन्द्र+आलु] क्लान्त, श्रान्त, थकित, निद्रातुर, आलस, निद्रालु।

तन्द्री तत्० (स्त्री०) अत्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियों की अपटुता, सर्वाङ्गशैथिल्य।

तन्ना दे० (क्रि०) खींचना, फैलाना, विस्तार करना।

तन्नाना दे० (क्रि०) तननाना, पिनपिनाना, कड़ा हो जाना, मिजाज गरम करना।

तन्निमित्त तत्० (अ०) [तद्+निमित्त] तदर्थ, तद्धेतु, उसके लिए, उसके कारण, उसके हेतु।

तन्निष्ठ तत्० (पु०) [तद्+निष्ठ] तत्रस्थ, तद्वर्ती, वहाँ स्थित।

तन्मय तत्० (पु०) [तद्+मय] निर्दिष्ट, वस्तु की प्रधानता से पूर्ण, अधिक अनुराग से उसका स्वरूप, उसका आधिपत्य।

तन्मात्र तत्० (पु०) [तत्+मात्र] केवल वही, केवल, एक, अद्वितीय।

तन्वी तत्० (स्त्री०) [तनु+ई] क्षीणा, कृशाङ्गी, सुन्दरी, कामिनी।

तप तत्० (पु०) [तप्+अल्] गर्मी, उष्णता, गर्मी की ऋतु, उष्णकाल, तपस्या, शरीर कष्ट, शरीर संयम करने के उपाय, माघ महीने का नाम।

तपत दे० (स्त्री०) गर्मी, उष्णता।

तपती तत्० (स्त्री०) सूर्य की पुत्री का नाम, यह सूर्यपत्नी छाया के गर्भ से उत्पन्न हुई थीं, कुरुवंशीय अच नामक एक प्रसिद्ध राजा थे, जिन का सवरण बड़ा सूर्य-भक्त था, सवरण की तपस्या उपासना से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने मवरण को व्याह दी।

तपन तत्० (पु०) [तप्+अनट्] ग्रीष्म, ताप, सूर्य, सूर्यकान्तमणि, नरक-विशेष, जहाँ पाप फल का भोग करने के लिए अग्नि से पापी जलाये जाते हैं। मदार तक वृक्ष, भिलावाँ का पेड़।—तनया (स्त्री०) सूर्यपुत्री, शमीवृक्ष, यमुना नदी।—मणि (पु०) सूर्यकान्तमणि।—त्मजा (स्त्री०) गोदावरी नदी, यमुना नदी।

तपना तद्० (क्रि०) गरम होना, दहकना, जलना, प्रभाववान् होना अतितेजयुक्त होना, तेजस्वी होना।

तपनीय तत्० (पु०) उत्तापनीय, तपाने योग्य, सुवर्ण, स्वर्ण, काञ्चन।

तपरी दे० (स्त्री०) मेंड़, डीह, धूहा, बाँध, छोटा बाँध।

तपलोक तद्० (पु०) तपोलोक, स्वर्गविशेष, ऊर्ध्व स्थित सप्तलोकों के अन्तर्गत छठा लोक।

तपसाल तद्० (पु०) तपस्वी, तपसी, तप करने वाला, तपी।

तपसी तद्० (पु०) तपस्वी, तप करने वाला।

तपस्क तत्० (पु०) तपस्वी, योगी।

तपस्य तत्० (पु०) फागुन का महीना, फाल्गुन मास, मध्यमपाण्डव, अर्जुन।

तपस्या तत्० (स्त्री०) तप, साधना, योगसाधन ईश्वरभजन।

तपस्विनी तत्० (स्त्री०) [तपस्+विन्+ई] तपश्चारिणी, व्रतनिष्ठनियमधारिणी, तपस्या वाली स्त्री।

तपस्वी तत्० (पु०) (तपस्+विन्) तपश्चारी ऋषि, मुनि।

तपा दे० (पु०) पूजक, आराधक, अर्चक।

तपाना दे० (क्रि०) गर्म करना, उष्ण करना, करना, आग दिखाना।

) वर्षाकाल, प्रावृट् काल,

खोज, सन्धान,

तपित तत्० (पु०) [तप्+इत्] तप्त, उष्ण, उत्ताप-युक्त।

तपी तद्० (पु०) तपस्वी, तपस्या करने वाला, आत्म संयमी, नियमयुक्त।

तपेश्वर, तपेश्वरी तद्० (पु०) तपस्वी, तपश्चर्या-परायण, तपी।

तपे दे० (क्रि०) तप जावे, गरम हो जावे, तपस्या करे।

तपोधन तत्० (पु०) तपस्वी, मुनि, ऋषि, जिनके तपस्या ही धन है, जिनके धन के द्वारा होने वाले कार्य तपस्या के द्वारा होते हैं।—तपोधना (स्त्री०) तपश्चारिणी, तपस्विनी, नियम परायण स्त्री, योगसाधनतत्परा।

तपोवन तत्० (पु०) तपस्वियों का आश्रम, वन का प्रदेशविशेष, जहाँ तप करने वाले रहते हों।

तपोमूर्ति तत्० (पु०) [तपस्+मूर्ति] तपस्वी, तपस्याशील।

तपोराशि तत्० (पु०) [तपस्+राशि] तपस्वी, बड़ा तपस्वी, जिसकी तपस्या अधिककाल व्यापिनी हो।

तप्त तत्० (पु०) (तप्+क्त) उष्ण, सन्तापयुक्त, तपा हुआ।—कुम्भ (पु०) नरकविशेष, तपा हुआ घड़ा।—कृच्छ्र (पु०) व्रतविशेष, प्रायश्चित्त विशेष।—वालुक (पु०) नरकविशेष, जो तपी बालुका से बना हुआ है।—माषक (पु०) एक प्रकार की परीक्षा।—मुद्रा (स्त्री०) शरीर पर ग्रहण किये जाने योग्य अग्नितप्त धातुमय भगवान् के आयुधों का चिन्ह।

तप्पा दे० (पु०) चकला, पुरवा, पुरा, पट्टी, गाँव, ग्राम, गवई।

तफ़सील दे० विवरण।

तफावत, दे० अन्तर, व्यवधान, भेद, पार्थक्य, विशेषता।

तब दे० (अ०) तदा, उस समय, उस काल, उस क्षण, ऐसी दशा में, ऐसी स्थिति में।

तबहीं दे० (अ०) ठीक उसी समय।

तभी दे० (अ०) तबही, तदैव, उसी समय।

तम तद् (पु०) विशेषण शब्दों के अन्त में आने से अनेकों के बीच एक का उत्कर्षबोधक, अन्धकार, तमोगुण, अहङ्कार, तमालवृक्ष, तेजपात का वृक्ष।

तमः तत्० (पु०) प्रकृति का गुण, त्रिगुण के अन्तर्गत एक गुण का नाम, तमोगुण, अन्धकार, शोक, पाप, अहङ्कार।

तमक दे० (स्त्री०) घमण्ड, अभिमान, अहङ्कार, शेख़ी।

तमकना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, क्रोध से लाल मुख होना।

तमका दे० (पु०) बहुत गर्मी, अधिक उष्णता।

तमचुर तद् (पु०) ताम्रचूड़, मुरगा, कुक्कुट।

तमत दे० (पु०) अभिलाषी, इच्छुक, आकांक्षी, प्रार्थी।

तमतमाना दे० (क्रि०) लाल होना, अधिक क्रोध करना।

तमप्रभ तत्० (पु०) नरकविशेष, अन्धकार मय नरक का नाम।

तमस तत्० (पु०) अन्धकार, तमोगुण, नगर, नदी-विशेष, कूप, नरकविशेष, राहु, मनुविशेष।

तमसा तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि रहते थे।

तमस्सुक दे० (पु०) ऋणपत्र, क़र्ज़ पत्र, वह पत्र जो क़र्ज़ लेने वाले धनीको लिखते हैं। दस्तावेज़, ख़त।

तमस्तति तत्० (स्त्री०) [तमस्+तति] अन्धकार-समूह, घोर अन्धकार।

तमस्विनी तत्० (स्त्री०) [तमस्+विन्+ई] रात्रि, रजनी, निशा, अंधेरी रात।

तमाकू दे० (पु०) सुरती, स्वनामप्रसिद्ध पत्र विशेष। धूम पान करने योग्य पत्रविशेष, खाने की सुरती, देशी तमाखू।

तमाम दे० (पु०) सकल, समस्त, समग्र, समुदाय।

तमारि तत्० (पु०) तमोनाशक, सूर्य, मार्तण्ड, दिवाकर।

तमाल तत्० (पु०) वृक्षविशेष, तिलक, पत्रक, वरुण, वृक्ष, काला खैर, काली पत्तियों वाला वृक्ष, तमाकू, मोरपंख।—पत्र (पु०) तिलक, तेजपत्र।

तमिस्र तत्० (पु०) [तमिस् + र] तिमिर, अन्धकार, ६शान्त ।—पक्ष कृष्णपक्ष, बदी पक्ष ।

तमिस्रा तत्० (स्त्री०) [तमिस्र + आ] अन्धकारमय रात्रि, तामसी निशा, कृष्णपक्ष की अँधेरी रात ।

तमी तत्० (स्त्री०) [तम + ई] अन्धकारमय रात्रि, निशा, तमिस्रा ।—चर (पु०) राक्षस, निशाचर, चोर, व्यभिचारी, लम्पट ।

तमोगुण तत्० (पु०) [तमस् + गुण] प्रकृति के त्रिविध गुणों के अन्तर्गत एक गुणविशेष । मोह, क्रोध आदि को उत्पन्न करने वाला गुणविशेष ।

तमोगुणी तत्० (पु०) अहङ्कारी, अभिमानी दर्पी, गर्वी ।

तमोघ्न तत्० (पु०) तमोनाशक, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, बुद्ध, विष्णु, केशव, शम्भु, ज्ञान ।

तमोज्योति तत्० (पु०) [तमस् + ज्योति] ज्योतिरिङ्गण, खद्योत, जुगनू ।

तमोनुद तत्० (पु०) [तमस् + नुद् + अच्] सूर्य, रवि, दिनकर, चन्द्र, बुद्ध, अग्नि, अज्ञाननाशक गुरु ।

तमोपह तत्० (पु०) [तमस् + अप् + हन् + ड] अन्धकारनाशक, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, दीप, दीपक, बुद्ध ।

तमोल तद्० (पु०) ताम्बूल, पान, नागर बेल की पत्ती ।

तमोलिन दे० (स्त्री०) तमोली की स्त्री, पान बेचने वाली स्त्री ।

तमोली तद्० (पु०) ताम्बूलिक, जातिविशेष, जो पान का व्यवसाय करती है ।

तम्बालु, तम्बिया दे० (पु०) ताँबे का बर्तन, ताँबे का हण्डा ।

तम्बू दे० (पु०) पटमण्डप, वस्त्रगृह, रावटी, छोलदारी ।

तम्बूरा दे० (पु०) वाद्य विशेष, तानपूरा, तीन तार की बीन ।

तम्बेरम तद्० (पु०) स्तम्बेरम, हाथी, कुञ्जर, दन्ती ।

तम्बोली तद्० (पु०) ताम्बूलिक, पान का व्यवसायी ।

तर तत्० (पु०) [तृ + अप्] तरना, पार होना, अग्नि, वृक्ष, विशेषण शब्दों के अन्त में आने से यह दो के बीच एक की उत्कृष्टता बतलाता है । तद्० तल, तले, नीचे ।

तरई तद्० (स्त्री०) तारा, नक्षत्र, तरैया ।

तरक दे० (स्त्री०) तड़क, धरण, कड़ी, तर्क, विचार परम्परा, चटक कर, टूट कर ।—करना (क्रि०) अलग करना, पृथक् करना ।

तरकऊ दे० (अ०) तर्क भी, विचार भी ।

तरकना दे० (क्रि०) उछलना, कूदना, अपने स्वार्थ के विरुद्ध बातें सुनकर उछलना, चकित होना विस्मित होना ।

तरकस दे० (पु०) तूनीर, तूणीर, नौण, बाण रखने का भाथा, एक प्रकार का बाँस का चोगा जिसमें बाण रखे जाते हैं ।

तरकारी तद्० (स्त्री०) तृप्तिकारी, व्यञ्जन बनाने योग्य फल मूल आदि, साग, भाजी ।

तरङ्ग तत्० (स्त्री०) लहर, ऊर्मि, वीचि, ढेऊ, हिलोरा, (पु०) उमङ्ग, मौज, मानसिक उमङ्ग ।

तरङ्गिणी तत्० (स्त्री०) नदी, सरिता ।

तरङ्गित तत्० (गु०) [तरङ्ग + इत] ऊर्मिवान, लहरीयुक्त ।

तरङ्गी तत्० (गु०) लहरी, चञ्चलमना, उत्साही, उत्साहवाला ।

तरण तत्० (पु०) [तृ + अनट्] उत्तरण, उतरना पार जाना, तैरना, उद्धार, बचाव, डोंगा, नाव स्वर्ग । (गु०) पार होने वाला, उतरने वाला, तरने वाला, मुक्त होने वाला ।

तरणि तत्० (स्त्री०) [तृ + अनि] नौका, नाव, घँकुआरि, घृतकुमारी । (पु०) सूर्य किरण, अर्कवृक्ष, आकवन वृक्ष ।—रत्न (पु०) माणिक्य, मणि, सूर्यकान्त मणि ।—सुत (पु०) यम शनि, कर्ण । —सुता (स्त्री०) यमुना, कालिन्दी नदी ।

तरणी तत्० (स्त्री०) [तरण + ई] नौका नाव तरणि, तरी । घृतकुमारी, तरनी, पद्मचारिणी ।

तरज तद्० (पु०) तर्ज, डपट, डपेट, डाँट, तर्जन, गाने की रीति, गान का प्रकार, रीति, प्रकार, ढग ।

तरजत तद्० (क्रि०) तर्जत, तड़पता है, डाँटता है।
तरजन तद् (पु०) तर्जन, गर्जन, तड़प,डपेट, डाँट।
तरतरा दे० (पु०) एक प्रकार का घास।
तरन तद्० (पु०) तरण, तारनेवाला, तैर जाने वाला, पार होने वाला, मुक्त होजाने वाला।—तारन (गु०) अपने साथियों के सहित मुक्त होने वाला, स्वयं तरै, और दूसरों को भी तारे।
तरना दे० (क्रि०) पार होना, उद्धार पाना, तर जाना।
तरनि तद्० (पु०) तरणि, सूर्य, रवि, भानु, दिवाकर।
तरनी तद्० (स्त्री०) तरणी, नौका, नाव।
तरन्त तद्० (पु०) भेक, मेढक, कुदाला, आसार, झड़।
तरन्ती तद्० (स्त्री०) नौका, तरणी, तरी।
तरपन तद्० (पु०) तर्पण, तृप्ति, मनःप्रसाद, मन की प्रसन्नता, मन्त्रों के द्वारा पितरों के उद्देश्य से जलप्रदान।
तरपहिं तद्० (क्रि०) तरपते हैं, तरपन करते हैं।
तरफ़ दे० (स्त्री०) पार्श्व, दिक्, धार, पक्ष, ओर।—दार (गु०) पक्षपाती, पक्षवाला, सहायक।
तरफना दे० (क्रि०) तड़पना, व्याकुल होना।
तरबूज़ दे० (पु०) कलिंगड़ा, स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष।
तरल तद्० (पु०) हार के बीच का मणि, तल, चञ्चल, द्रवीभूत, पतला, दीप्तियुक्त। (गु०) चञ्चल, अस्थिर, अभिश्चितचित्त, पतला, द्रवीभूत पदार्थ।—ता (स्त्री०) चञ्चलता, प्रखरता, तीक्ष्णता, तेज़ी।—लोचना (स्त्री०) चञ्चलनयनी, चपलनेत्रा नारी, मृगी।
तरला तद्० (स्त्री०) [तरल+आ] जाउर, यवागू, मधुमक्षिका, बाँस विशेष (गु०) सबसे नीचे वाला, नीचे वाला।
तरलाई तद्० (स्त्री०) तारल्य, तरलता।
तरलायित तद्० (गु०) जाततारल्य, जिसमें तरलता उत्पन्न हुई हो। (पु०) उच्च तरङ्ग, बड़े तरङ्ग।
तरलित तद्० (गु०) [तरल+इत] चाञ्चल्यान्वित, कम्पित, विचलित, आन्दोलित, द्रवीभूत।
तरव तद्० (पु०) तरु, वृक्ष, पेड़, रूख, गाछ।
तरवर तद्० (पु०) तरुवर, बड़ा वृक्ष, उपयोगी वृक्ष, प्रिय वृक्ष,
तरवरिया दे० (पु०) तरवार धारण करने वाला, खड्गधारी, तलवार।
तरवार तद्० (स्त्री०) तरवारि, तलवार, खड्ग, खाँड़ा।
तरस दे० (स्त्री०) शीघ्र, कृपा, दया।
तरसना दे० (क्रि०) बहुत चाहना, उत्कण्ठित होना, जी लगा रहना, दया दिखाने की इच्छा रखने पर भी दया नहीं दिखा सकना, केवल उत्कण्ठित होना।
तराई दे० (स्त्री०) दलदल, जलभूमि, पहाड़ या नदी आदि के पास की भूमि, पटिहर, पर्यन्त भूमि, मैदान, चरने की भूमि।
तराज़ू दे० (स्त्री०) तुला, पलड़ा, जो अन्न आदि के तौलने के काम में आता है।
तरान दे० (पु०) उद्धारण, उगाहन, प्राप्त किया हुआ, तहसीला गया, वसूल किया गया राज कर चन्दा आदि।
तराना दे० (क्रि०) पार कराना, उद्धार करना, बचाना।
तरास तद्० (पु०) त्रास, भय, शङ्का, डर, पिपासा, प्यास, तृषा।
तरि तद्० } (स्त्री०) [तृ+इ] नौका, तरी, तरणी,
तरी तद्० } (स्त्री०) [तृ+अल्+ई]
तरीक़ा दे० (पु०) ढङ्ग, प्रकार, उपयोग की रीति।
तरु तद्० (पु०) वृक्ष, द्रुम, गाछ।—ज (गु०) वृक्ष से उत्पन्न फल फूल आदि।—जीवन (पु०) वृक्ष, मूल।
तरुण तद्० (गु०) नवीन, नूतन, युवा।—ज्वर (पु०) सात दिन के भीतर का ज्वर, नवज्वर, नवीन ज्वर।—दधि (पु०) ताज़ा दही, पाँच दिन का बासी दही।
तरुणाई तद्० (स्त्री०) यौवन, युवावस्था, युवाकाल, तारुण्य।
तरुणी तद्० (स्त्री०) युवती, युवावस्था की स्त्री, षोडशवर्षीया स्त्री, नवयौवना, रमणी, कामिनी,

गृहकन्या, दन्ती नामक वृक्ष विशेष, पुष्प विशेष, सेवती का फूल।

तरेड़ा दे० (पु०) टोंटी से पानी का गिरना, धार बाँध कर पानी गिरना।

तरेरना दे० (क्रि०) त्योरी चढ़ाना, आँख दिखाना, आँख बदलना।

तरेत दे० (पु०) बया, लङ्गर का चिन्ह।

तरैया तद्० (स्त्री०) तारका, तारा नक्षत्र, तरिया। यथाः—
"यथा तरैया प्रात के सब नृप भये उदास।
लखि दिन मणि कर राम छवि, सकुचाने चहुँ पास"
—कवि वाक्य।

तरोस दे० (पु०) तटोस, तीर पर का जल, पेंदे पर का जल। यथाः—
"श्याम सुरति करि राधिका तकति तरनिजा तीर,
अँसुवन करति तरोस को खिनक खरोहो नीर"
—सतसई।

तरौना दे० (पु०) कर्णभूषण विशेष, एक प्रकार का गहना, जिसे स्त्रियाँ कानों में पहनती हैं। यथा—
लसत श्वेत सारी दिप्यो, तरल तरौना कान
पर्यो मनो सुरसरि सलिल रवि प्रतिबिम्ब विहान।"
—सतसई।

तर्क तत्० (पु०) [तर्क + अल्] तर्क, ऊहापोह, बुद्धि-द्वारा विवेचना, न्यायशास्त्रसम्बन्धी विचार, अनुमान, कल्पना, अनुमानोक्ति।—वितर्क (पु०) शङ्का, सन्देह, अनिश्चित सिद्धान्त को निश्चित करने के लिए विवाद।—विद्या (स्त्री०) आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या।—शास्त्र (पु०) षट् दर्शन के अन्तर्गत एक दर्शन विशेष, गौतम और वैशेषिक का बनाया शास्त्र।

तर्कक तत्० (पु०) [तर्क + अक्] याचक, आकांक्षी, तर्ककारक।

तर्कन तत्० (पु०) तर्ककरण, शङ्का करना, सन्देह करना।

तर्कित तत्० (गु०) [तर्क + इत] विवेचित, आलोचित, शङ्कित, सन्देहान्वित, सन्देहयुक्त।

तर्की तत्० (गु०) [तर्क + इन्] तर्ककारक, नैयायिक, न्यायशास्त्रवेत्ता, विवेचक। (दे०) कर्णभूषण विशेष।

तर्कु तत्० (स्त्री०) सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला।

तर्कुटी तत्० (स्त्री०) [तर्कुट + ई] सूत्र निर्माणयन्त्र, सूत बनाने की कल, तकुआ, फिरकी।

तर्कुल दे० (पु०) ताड़ का वृक्ष, ताड़ फल, तालीफल।

तर्खा दे० (पु०) तीक्ष्णधारा, प्रखर धारा, वेग से चलने वाली धारा, शीघ्रवाहिनी धारा।

तर्जन तत्० (पु०) [तर्ज + अनट्] भर्त्सन, ताड़न, गर्जन, धमकन, क्रोध से भयानक शब्द करना।

तर्जनी तत्० (स्त्री०) अँगूठे के पास की अँगुली, निर्देश करने वाली अँगुली, बतलाने वाली, प्रादेशिकी। यथा—
"इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं।
जो तर्जनि देखत मरि जाहीं।" —रामायण।

तर्जित तत्० (गु०) [तर्ज + त] भर्त्सित, ताड़ित, धमकाया गया।

तर्जुमा दे० (पु०) अनुवाद, उल्था, एक भाषा में लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में करना।

तर्णक तत्० (पु०) नवीनवत्स, तत्काल बछड़ा।

तर्तराता दे० (गु०) स्निग्ध, अति चिक्कन।

तर्तराना दे० (क्रि०) चञ्चलता, करना, गलफटाकी करना, सन्नाटा भरना।

तर्तराहट दे० (स्त्री०) सन्नाटा, गीदड़ भभकी, गलफटाकी, डलाचा।

तर्पण तत्० (पु०) [तृप् + अनट्] तृप्ति, तृप्तिकरण, प्रीणन, यज्ञकाष्ठ, महायज्ञविशेष, पितृ यज्ञ, देव ऋषि और पितरों को जलाञ्जलि द्वारा परितृप्त करना। मन्त्रों द्वारा पितृ पितामह के उद्देश्य से जलदान।

तर्व दे० (स्त्री०) वाद्य की लय, स्वर, ध्वनि।

तर्राना दे० (क्रि०) बड़बड़ाना, बकबक करना, चिढ़ना।

तर्ष तत्० (पु०) [तृष् + अल्] अभिलाष, तृष्णा, इच्छा, समुद्रप्लवन, तरणी, सूर्य।

र्पण तद्० (पु०) [तृप्+अनट्] तृषा, पिपासा, तृष्णा, प्यास।

र्षित तद्० (गु०) तृषित, पिपासित, तृषान्वित, प्यासा हुआ।

र्वरिया दे० (पु०) तलवार बाँधने वाला, खड्गधारी।

र्स दे० (स्त्री०) दया, कृपा, करुणा, अनुकम्पा। —खाना (क्रि०) दया करना, कृपा करना।

र्साना दे० (क्रि०) ललचाना, लुभाना।

र्सो दे० (अ०) परसों का पिछला दिन, परसों के आगे का दिन, वर्तमान दिन से पहला वा पिछला तीसरा दिन।

ल तद्० (पु०) [तल्+अल्] स्वरूप, महीतल, अनूर्ध्व, नीचे, अधोभाग, गड्ढा, कानन, वन, तला, नीचे का भाग, तलवा, तली।—घर (पु०) नीचे का घर, तहख़ाना।—छट (पु०) मैल, निचोड़, घुदघुदरा, नीचे बैठी हुई मैल।—पट (पु०) मलमेट, मटियामेट, चौपट, विनष्ट।—फोर (अ०) तल फोड़कर निकला हुआ।

लक दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि।

लना दे० (क्रि०) भूनना, भुंजना, तेल में भूनना।

लफना दे० (क्रि०) तड़पना, छटपटाना, व्याकुल होना।

लमलाना दे० (क्रि०) ललचना, लोभना, विकृत गति से चलना, दुर्बलता से रुक रुककर चलना, हिलते डोलते चलना।

लब दे० (पु०) बुलाना, आह्वानपत्र, प्रभुतापूर्वक बुलाना, महीना, मासिक, वेतन, वृत्ति।

लबरिया दे० (गु०) तरवार धारण करने वाला।

लवार दे० (स्त्री०) खड्ग।

लवासना दे० (क्रि०) पैर खिसाना।

ला दे० (स्त्री०) पेंदा, अधोभाग, निम्नस्थान, थाह, जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला।

लातल दे० (पु०) लोकविशेष, रसातल, पाताल, नीचे के सात लोकों में का एक लोक।

लाव दे० (पु०) पुष्करिणी, पोखरा, सरोवर, तड़ाग।

तलाश दे० (पु०) अनुसन्धान, खोज, सन्धान, पतला गाना, अन्वेषण, मार्गण।

तलित दे० (गु०) तला हुआ, भुना मांस, तला मांस।

तलिन तद्० (पु०) शय्या, (गु०) विरल, दुर्बल, स्तोक, स्वच्छ, अल्प, निर्मल।

तली दे० (स्त्री०) तला, नीचा, पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा।

तलुआ दे० } (पु०) पाँव के नीचे का भाग।
तलवा दे० } (पु०)—चाटना (वा) हताश होना, निराश होना, हतमनोरथ होना।

तलुवे तले हाथ धरना (वा) स्वार्थ सिद्धि के लिए अनुगत बनना, लल्लोपत्तो करना, लल्लो चप्पो करना, खुशामद करना, अनुनय करना।

तले दे० (अ०) नीचे, अधोभाग में, नीचे की ओर, उतर के, घट के, कुछ कम।—ऊपर (वा) उलट पुलट, नीचे ऊपर, दोनों तरफ़।

तलैया दे० (स्त्री०) छोटा तालाब, पल्वल, अल्प जलाशय।

तल्प तद्० (पु०) शय्या, पलँग, बिछौना, अट्टालिका।—कीट (पु०) बिछौने का कीट, उड़िस, माकड़, मत्कुण, खिलुआ, छुआँ।

तल्लज तद्० (पु०) प्रशस्त, उत्तम, प्रधान, उत्कृष्ट।

तल्लिका तद्० (स्त्री०) ताली, कुँची, कुञ्जी, चाभी।

तव तद्० (सर्व०) तुम्हारा, तेरा।

तवना दे० (क्रि०) भाग देना, बाँटना, भाग करना।

तवरी दे० (स्त्री०) पात्रविशेष, ताँबे का एक बर्तन जिसमें तर्पण आदि का जल गिराया जाता है।

तसर तद्० (पु०) त्रसर, पट्टवस्त्र विशेष, एक प्रकार का रेशम।

तसला दे० (पु०) बटुई, बटलोई, पीतल की हंडी। जिसमें भात वग़ैरा बनाया जाता है।

तस्कर तद्० (पु०) चोर, चोट्टा, अपहर्ता, दूसरे का धन अपहरण करने वाला।—ता (स्त्री०) चोरपन, चोट्टई।

तस्करी तद्० (स्त्री०) कोपना नारी, क्रोध स्वभाव की स्त्री, क्रोधिनी, क्रोधयुक्ता नारी, चोरी, चौर्य।

तस्म दे० (पु०) चमोटा, चमोटी।

तस्मई दे० (स्त्री०) खीर, हविष्य।

तस्मिन् तत्० (सर्व०) उसमें, वहाँ पर।

तस्मै तत्० (सर्व०) उसके लिए, उसको।

तस्य तत्० (सर्व०) उसका।

तस्सू दे० (पु०) मापविशेष, इंच।

तहसनहस दे० (अ०) नष्ट भ्रष्ट, तितर बितर।

तहसील दे० (पु०) ख़ज़ाना, कोष, वसूली, करग्रहण, राजकर।—दार (पु०) ख़ज़ाना रखने वाला, राजकर ग्रहण करने वाला।—दारी (स्त्री०) तहसील दार का पद, राज कर वसूल करने का काम।

तहाँ दे० (अ०) उस स्थान पर, उस स्थान में, उस ठाँव, उस भूमि पर।

तहाना दे०लपेटना, चौपतना, चौपरत करना, गड्डी करना, मड़ना, चुनना, चुनत करना।

तहिया दे० (पु०) उस दिन, पहले के दिन, पहले।

तहीं दे० (अ०) वहां, वहीं, उस स्थान, उसी स्थान।

ता दे० (सर्व०) उसे, उसको। (पु०) कपड़े से बच्चा निकालना, कपड़े को गर्म करना।

ताँगा दे० (पु०) गाड़ी विशेष, एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी, एक्का।

ताँत दे० (स्त्री०) चमड़े की रस्सी, कपड़ा बिनने का यंत्र।—बाँधना (क्रि०) चकचकी को चुपाना, चमड़े की रस्सी से बाँधना।

ताँता दे० (स्त्री०) पंक्ति, श्रेणी, तार, क़तार।

ताँती दे० (पु०) जातिविशेष, ततवा, कोरिया, पटवा, कपड़ा बीनने वाली एक हिन्दू जाति।

तांबड़ा दे० (पु०) ताँबे का वर्ण, ताँबे की वस्तु, झूठी चुन्नी।

ताँबा दे० (पु०) धातुविशेष, ताम्र, स्वनामप्रसिद्ध धातु।

ताइत दे० (पु०) चर्मरज्जु, चर्मबन्धनी, तन्त्री, ताँत, यन्त्र, जन्तर, गण्डा, टोटका।

ताई दे० (स्त्री०) चाची, काकी, चाचा की स्त्री, की स्त्री, पिता के बड़े भाई की स्त्री, जिसमें जलेबी आदि बनाई जाती है।

ताऊ दे० (पु०) बड़ा चचा, पिता का बड़ा भाई, पितृव्य।

ताक दे० (स्त्री०) डीठ, दृष्टि, दर्शन, लक्ष्य, दृष्टिपात, अवलोकन, सन्धान करण।—धाक (स्त्री०) ठीक समय।

ताकना दे० (क्रि०) झाँकना, देखना, घूरना, दृष्टिपात करना।

ताग दे० (पु०) डोरा, सूत, सूत्र, धागा।—तोड़ (पु०) गोटा, किनारी, धारी।

तागना दे० (क्रि०) सीना, डोरा चलाना, टाँका, टाँका लगाना, सुई में धागा लगाना, सुई में धागा पिरोना।

तागा दे० (पु०) धागा, सूत, सुतली, मोटा धागा।

ताज दे० (पु०) मस्तकावरण विशेष, राजा के सिर की पगड़ी, मुकुट, किरीट।

ताजक तत्० (पु०) ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।

ताजन दे० (पु०) कोड़ा, कशा।

ताज़गी दे० (स्त्री०) नवीनता, सरलता, सरसता, अच्छापन, टटकापन।

ताज़ा दे० (पु०) टटका, टाटका, अम्लान, रसा, नवीन।

ताज़ी दे० (पु०) क्षुद्र अश्व विशेष, पहाड़ी घोड़े की एक जाति, तेज़ घोड़ा, कुत्ते की एक जाति।

ताटङ्क तत्० (पु०) कर्णभूषण विशेष, कान का एक गहना, कर्नफूल।

ताटस्थ्य तत्० (पु०) उदासीनता, सामीप्य।

ताड़ दे० (पु०) जान पहचान, परिचय, समझ, बोध, अवगम, ताल, ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़।

ताड़क दे० (पु०) ताड़ने वाला, समझने जानने वाला।

ताड़का तत्० (स्त्री०) सुकेतु नामक यक्ष की कन्या, [सुकेतु निःसन्तान था, सन्तान प्राप्ति के लिये उसने ब्रह्मा की आराधना की, ब्रह्मा के वर से ताड़का का जन्म हुआ। यह जम्भ के पुत्र सुन्द को ब्याही गई थी। किसी कारणवश सुन्द अगस्त्य के शाप से मारा गया। स्वामी की मृत्यु का बदला लेने के लिए ताड़का और उसका पुत्र दोनों अगस्त्य के आश्रम में पहुँचे। अगस्त्य के शाप से ये माता पुत्र राक्षस भावापन्न हुए। इससे ताड़का का क्रोध और भी द्विगुणित हुआ, और ये ब्राह्मण जाति के शत्रु बन बैठे। ब्राह्मण को देखते ही ये आग बबूला होकर उन पर आक्रमण करने लगे। इनके अत्याचार से अगस्त्य का आश्रम जन-शून्य हो गया। अपनी रक्षा के लिये महर्षि उस आश्रम को छोड़कर भग गये। उस वन का नाम ही ताड़कावन हो गया। गङ्गा यमुना के दक्षिण तट पर जो आरा ज़िला है वही ताड़का का वन है। ताड़का और उसके पुत्र के अत्याचार से महर्षिवृन्द बड़ा दुःखी हुआ। इनसे रक्षा पाने के लिये विश्वामित्र अयोध्या पहुँचे, महाराज दशरथ से राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र ने माँगा। यद्यपि पुत्रप्रेम के वशवर्ती महाराज दशरथ, राम लक्ष्मण को देना नहीं चाहते थे, तथापि राजधर्म की गुरुता की ओर देख उन्होंने राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ कर दिया। विश्वामित्र के तपोवन में वे दोनों भाई आये, रामचन्द्र ने ताड़का को मार डाला और मारीच को बाणों द्वारा दूर फेंक दिया। ताड़का को मारने से स्त्रीवध के दोष की आशङ्का रामचन्द्र पर नहीं की जा सकती है, क्योंकि जो ताल ठोंक कर रण में लड़ने को तैयार है, जिसने स्त्री जनोचित लज्जा और कोमलता छोड़ दी है उसे स्त्री कहना ही किस परिभाषा के अनुसार न्याय सङ्गत हो सकता है।]

ताड़ङ्क तत्० (पु०) ताटङ्क, कर्णभूषण विशेष, कान का एक गहना।

ताड़न तत्० (पु०) [तड़ + णिच् + अनट्] धमकाना, मारना, प्रहार करना, आघात पहुँचाना।

ताड़ना दे० (क्रि०) पहचानना, जानना, समझ लेना। (स्त्री०) डाँट, धमकी, दण्ड, भर्त्सन।

ताड़नी तत्० (स्त्री०) [ताड़न + ई] घोड़े आदि को मारने की छड़ी, चाबुक, कोड़ा, कशा।

ताड़नीय तत्० (गु०) [तड् + णिच् + अनीय] ताड़ने योग्य, ताड़न करने के उपयुक्त, मारने योग्य, अपराधी।

ताड़ित तत्० (गु०) [तड् + णिच् + क्त] आघातप्राप्त, जिसका ताड़न किया गया हो, मारा हुआ।

ताड़ी दे० (स्त्री०) ताल, रस, नशीला ताड़ का रस, मादक द्रव्यविशेष, कटार की मूठ।

ताड्यमान तत्० (गु०) [तड् + णिच् + शान्] पीड्यमान, हटाया गया, पीटा गया, आघातप्राप्त, बजने के लिए मृदङ्ग आदि को आहत करना।

ताण्डव तत्० (पु०) नृत्य, नटन, नाच, उद्धत नृत्य, कोमलता विवर्जित नृत्य। कहते हैं तण्डि नामक एक ऋषि ने इस विद्या का सर्वप्रथम मनुष्यों में प्रचार किया, इसी कारण इसको ताण्डव कहते हैं। महादेव और उनके गण इसी नृत्य के पक्षपाती हैं।

तात तत्० (पु०) भद्र, मान्य, माननीय, श्रद्धेय, पूज्य, श्लाघ्य, पिता, चाचा, प्रियभाई, प्रियमित्र "यथा—"तात प्रणाम तात सन कहेऊ" —रामायण। यहाँ पहला तात शब्द प्रियमित्रवाची है और दूसरा पितावाची। प्रिय सम्बोधन, पुत्र शिष्य आदि का सम्बोधन, "कहहु तात जननी बलिहारी" —रामायण (गु०) गरम, उष्ण, तप्त, तपाया हुआ।

तातनी, तातनौ दे० (गु०) उसकी, उसका।

तातल दे० (गु०) ताता, गर्म, गरमीला, उष्ण, उष्णतायुक्त।

ताते दे० (सर्व०) उससे, उस कारण से, उस हेतु से।

तात्कालिक तत्० (गु०) तत्कालोत्पन्न, उसी समय का उत्पन्न हुआ, तत्कालोद्भूत, तत्कालीन।

तात्पर्य तत्० (पु०) अभिप्राय, अर्थ, मर्म, आशय।

तादवस्थ्य तत्० (पु०) तद्रूपता, उसी प्रकार से स्थित, वही भाव।

तादर्थ्य तत्० (पु०) समान अभिप्राय, उसके प्रयोजन, उसके लिये।

तादात्म्य तत्० (पु०) तत्स्वरूप, अभेदसम्बन्ध, भेद रहने पर भी अभेद-प्रतीति।

तादृश तत्० (गु०) तद्रूप, उसी प्रकार, उसीके समान, वैसाही, उस जैसा।—तादृशी (स्त्री०) तद्रूप, तत्समान।

तान तत्० (स्त्री०) [तन्+घञ्] विस्तार, ज्ञान-विशेष, राग, स्वर। (पु०) गान का एक अङ्ग-विशेष।—तोड़ना (क्रि०) परिहास करना, तान की समाप्ति करना।—पूरा (पु०) वाद्य विशेष, वीणा के ऐसा एक बाजा।—सेन (पु०) नामी गवैया, यह गौड़ ब्राह्मण थे, इन्होंने गान विद्या में अद्भुत पारदर्शिता प्राप्त को थी। कहते हैं एक समय अपने प्रतिद्वन्द्वी बैजू बावरे के साथ शास्त्रार्थ करते हुए इन्होंने दीपक राग गाया। दीपक राग गाते ही चारो ओर वे दीपक आकर इनके शरीर में चिपट गये। शर्त यह थी कि तानसेन के शरीर में जब दीपक चिपटने लगेंगे, उसी समय बैजू-बावरा मेघ राग गाकर पानी बरसावेंगे, परन्तु बैजू बावरे ने ऐसा नहीं किया। अतएव तानसेन का शरीर दग्ध हो गया। इस अन्याय से दुःखित होकर इन्होंने अपने जन्मस्थान को छोड़कर गुजरात की यात्रा की। घटनाक्रम से यह एक गाँव में पहुँचे वहाँ ताना और नाना नामकी दो स्त्रियाँ जो इस विद्या में बड़ी निपुणता रखती थीं उन्होंने इनको अच्छा किया। तभी से तानसेनी राग का गाना ताना नाना से शुरू करते हैं।

तानव तत्० (पु०) तनुता, क्षीणता, कृशता।

ताना दे० (पु०) फैलाया हुआ सूत, कपड़े बिनने के लिये फैलाया हुआ सूत, ओत, तानासूत, तानी। यथाः—

"ताना नाचे बाना नाचे नाचे सूत पुराना,
करिगह भीतर कबिरा नाचे, यह सत्गुरु कर बाना"
—कबीर साहब।

तानी दे० (स्त्री०) ताना बिनने का सूत। (गु०) रागी, गवैया।

तान्त्रिक तत्० (पु०) तन्त्रशास्त्रज्ञ, तन्त्रशास्त्रवेत्ता, शास्त्रतत्त्वज्ञ, ज्ञातसिद्धान्त, सुपण्डित।

तान्ना दे० (क्रि०) खींचना, कसना, तम्बू तानना, टानना, फैलाना।

ताप तत्० (पु०) [तप्+घञ्] सन्ताप, उष्णता, ज्वाला, मन की पीड़ा, व्याधि।—जनक (पु०) उष्णजनक, क्लेशकर, पीड़ादायक।

तापक तत्० (गु०) तापकर्त्ता, ताप देने वाला, दुःखदायी, दुःखदाता। (पु०) ज्वर, बुखार।

तापन तत्० (पु०) [तप्+णिच्+ल्युट्] ... करण, तपाना, जलाना, शोकयुक्त होना, पीड़न।

तापना दे० (क्रि०) चमाना, गर्माना, देह सेंकना, आग के पास बैठना।

तापतिल्ली दे० (स्त्री०) प्लीहा, पिलही रोग, पेट का रोग।

तापस तत्० (गु०) तपस्वी, योगी, तपश्चरणशाली। तरु (पु०) इङ्गुदीवृक्ष, एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फल से तेल निकलता है।

तापहीन तत्० (गु०) उष्णतारहित, पीड़ारहित।

तापिच्छ तत्० (पु०) वृक्षविशेष, तमाल का पेड़।

तापित तत्० (गु०) दुःखित, तापयुक्त।

तापी तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, यह विन्ध्य पर्वत के दक्षिण की ओर है, ... नाम से प्रसिद्ध है।

तापीय दे० (पु०) सोनामाखी, औषधविशेष।

तापूस तद्० (पु०) तमालपत्र, तेजपात।

ताप्य तत्० (पु०) धातुमाक्षिक, सोनामाखी, तापीय।

ताफ़ता दे० (पु०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, धूपछाँह भी कहते हैं।

ताबड़तोड़ दे० (अ०) एक पर एक, लगातार, निरन्तर।

तामचीनी तद्० (स्त्री०) धातुविशेष, ताँबा ... हुआ धातु।

तामड़ा दे० (पु०) ताँबे के रङ्ग का एक मणि।

तामरस तत्० (पु०) कमल, पद्म, ताँबा, सोना, सुवर्ण।

तामल तद्० (पु०) देशविशेष।

तामलकी तद्० (स्त्री०) भूमिका, आँवला, एक प्रकार का पौधा।

तामलिप्ती तद्० (स्त्री०) ताम्रलिप्ती, एक नगर का नाम, जो दक्षिण बङ्गाल में है, तामलूक।

तामस तत्० (पु०) तामसिक, तमोगुणयुक्त, मूढ़, जड़, दुष्ट, खल। (पु०) क्रोध, अहङ्कार, तमोगुण।

तामसिक तत्० (पु०) तामस, तमोगुण का कार्य, तमोगुणयुक्त, धर्मविवर्जित कृत्य, तमोगुणी, तामसी।

तामसी तत्० (स्त्री०) निशा, रात्रि, कालरात्रि, दुर्गा, जटामासी, (पु०) क्रोधी, आलसी, तमोगुणी, रिसहा, कोपी, कोपन स्वभाववाला।

तामह दे० (अ०) तत्र, उसमें, उस मध्य में, उस बीच में।

तामा तद्० (पु०) ताम्र, ताँबा, स्वनामप्रसिद्ध धातुविशेष।

तामील दे० (पु०) सम्पादन करना, आज्ञानुसार काम कर देना, मालिक की आज्ञा का पालन करना, देश विशेष।

तामीली दे० (स्त्री०) सम्पादन, आज्ञापालन, आज्ञा पालन करने वाले को जो दिया जाता है। अदालत के अधवासियों को सम्मन तामील करने के लिये वादी और प्रतिवादी पक्ष से जो मिलता है, अथवा वे स्वयं दबाव डालकर ले लेते हैं। देश-भाषा विशेष, तामिल देश की भाषा।

ताम्रेश्वर तत्० (पु०) औषधविशेष, अपने नाम से प्रसिद्ध औषध, ताँबे का भस्म।

ताम्बूल तत्० (पु०) तमोल, नागरबेल का पात, पान।

ताम्बूली तत्० (पु०) ताम्बूल की लता, नागरबेल।

ताम्बूलिक तत्० (पु०) तमोली, पान बेचने वाला।

ताम्र तत्० (पु०) धातुद्रव्यविशेष, ताँबा।—कर (पु०) कसेरा, ठठेरा, ताँबे का व्यापार करने वाला।—गर्भ (पु०) तूतिया, नीलाथोथा, ताँबा इनसे निकाला जाता है।—चूड़ (पु०) कुक्कुट, मुरग़ा।—पत्र (पु०) ताँबा का बना पत्र, पहले जिस पर राजाज्ञा लिखी जाती थी।

तायफ़ा दे० (पु०) नर्तकीसम्प्रदाय, रंडियों का समूह, वेश्या, वेश्यासमुदाय।

तार दे० (पु०) लोहे आदि धातुओं का खिंचा हुआ सूत, धातु का धागा।—बाँधना (वा०) लगातार जारी रखना, किसी काम को लगातार करना, ताँता बाँध देना।—टूटना (वा०) अलग होना, छूट जाना, बंद होना।

तारक तत्० (पु०) मन्त्रविशेष, उद्धारकर्त्ता मन्त्र, रामतारक मन्त्र, तारा, सितारा, नक्षत्र, आँख की पुतली, तारा, एक राक्षस का नाम, दैत्यराज। इसने तपस्या से ब्रह्मा को प्रसन्न करके दो वर पाये थे। पहला वर यह था कि इस संसार में उससे बलवान् दूसरा कोई उत्पन्न न हो, और दूसरा वर यह था कि महादेव के पुत्र से ही वह मारा जाय। ब्रह्मा का वर पाकर वह देवताओं को दुःख देने लगा। देवताओं के कष्ट की सीमा न रही। उसका वध साधन करने के लिये देवताओं ने प्रयत्न करना प्रारम्भ किया। महादेव के पुत्र उत्पन्न होने के लिये देवताओं ने षड्यन्त्र रचा। क्योंकि योगिराज महादेव विवाह करना ही नहीं चाहते थे। अतएव उन लोगों ने कामदेव को इसका भार सौंपा। कामदेव जाकर महादेव की क्रोधाग्नि में भस्म हो गया। इससे देवताओं के कष्ट की सीमा न रही। हिमाद्रितनया पार्वती शिव को पतिवरण करने के लिये उन दिनों उसी पर्वत पर तपस्या कर रही थीं। घोर तपस्या करने के अनन्तर महादेव प्रसन्न हुए और उनसे विवाह किया। उनके गर्भ से कार्तिकेय उत्पन्न हुए। देवताओं ने इनको अपना सेनापति बनाया। युद्ध में इन्होंने तारकासुर को मार डाला। (२) इन्द्र का शत्रु राक्षस, इसने इन्द्र को बड़ा कष्ट दिया, इन्द्र विष्णु की शरण में गये, विष्णु ने नपुंसक का रूप धारण करके इसे मार डाला।

तारकारि तत्० (पु०) [तारक+अरि] तारकासुर का शत्रु कार्तिकेय, स्वामिकार्तिक, षड़ानन।
तारकी तत्० (गु०) तारकायुक्त, तारासहित।
तारकूट तद्० (पु०)ताम्रकूट, रूपा, पीतल।
तारकेश्वर तत्० (पु०) सदाशिव, महादेव, इस नाम का तीर्थविशेष।
तारटूटना दे० (क्रि०) टिड्डी उड़ाना, कारबार नष्ट हो जाना, प्रवेश बन्द होना, भुलावा देकर अपने वश में लाये हुए का छिटक जाना।
तारण तत्० (पु०) [तृ+णिच्+अनट्] उद्धारण, पारकरण, पार उतारना, उद्धार करना। —**तरण** (पु०) पार करने वाला, उद्धार करने वाला, स्वयं उद्धार होनेवाला।
तारणा दे० (क्रि०) पार करना, उद्धार करना, त्राण करना, उबारना।
तारणीय तत्० (गु०) [तृ+णिच्+अनीय] तारण करने योग्य, उद्धारणीय, उद्धार करने योग्य, पार करने योग्य।
तारतम्य तत्० (पु०) न्यूनाधिक्य, मामान्य प्रभेद, दो पदार्थों में एक की अधिकता और दूसरे की न्यूनता, थोड़ा बहुत भेद।
तारतोड़ दे० (पु०) कारचोबी विशेष, एक प्रकार का सोने के तारों का काम, बूटेकारी, बूटा निकालने का काम।
तारना दे० (क्रि०) उद्धार करना, उबारना, पार करना, मुक्त करना।
तारपतार दे० (गु०) तितरबितर, छिन्नभिन्न, फटाटूटा।
तारा तत्० (स्त्री०) ताड़का, नक्षत्र, आँखों की पुतली। (१) कपिराज बालि की स्त्री, यह सुषेण नामक कपिराज की कन्या और अङ्गद की माता थी। बाली के मारे जाने के अनन्तर इसने सुग्रीव को अपना पति बनाया था। यह पञ्चकन्याओं में है जिनका प्रातः स्मरण करना शास्त्रकारों ने बताया है।
(२) दश महाविद्या के अन्तर्गत एक विद्या, यह काली का दूसरा रूप है, इसका आकार—काली के समान तो नहीं—परन्तु तौभी भयङ्कर है। इनका वर्ण नील है, जीभ लम्बी और लपलपाती हुई है, पाँच मस्तक जिन पर अर्द्धचन्द्र है, तीन आँखें हैं, चार हाथ, और व्याघ्र इनका वाहन है।
(३) देवगुरु बृहस्पति की स्त्री, चन्द्रमा इनकी सुन्दरता पर मोहित होकर एक दिन इनको हर ले गये, बृहस्पति ने चन्द्रमा का अत्याचार देवताओं से कह सुनाया, देवता और ऋषियों ने तारा को दे देने के लिये चन्द्रमा से कहा, परन्तु चन्द्रमा ने किसी का कहना नहीं सुना। यह देख रुद्र बृहस्पति की ओर से लड़ने के लिये प्रस्तुत हुए। ब्रह्मा ने बात को अधिक बढ़ते देख चन्द्रमा को समझा बुझाकर उनसे तारा दिलवादी, उस समय तारा के गर्भ था, बृहस्पति ने गर्भ निकाल कर अपने पास आने का अनुरोध किया, तारा ने उस गर्भ को सरपत पर निकाल कर रख दिया। उस लड़के का नाम रक्खा गया दस्युसुत्तम, परन्तु जब चन्द्रमा को यह मालूम हुआ कि मेरे वीर्य से उसकी उत्पत्ति हुई है तब चन्द्रमा ने उसे ले लिया, और उसका नाम रक्खा बुध।
—**गण** (पु०) नक्षत्रसमुदाय, नक्षत्रों का समूह। —**पति** (पु०) चन्द्रमा, बृहस्पति, बाली। —**पथ** (पु०) आकाश, गगन मण्डल, नभोमण्डल। —**पीड़** (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, निशाकर। —**मण्डल** (पु०) नक्षत्रमण्डल, नक्षत्रसमुदाय।
ताराबाई दे० (स्त्री०) प्रसिद्ध सीसोदिया वीर पृथ्वीराज की वीरपत्नी। यह सोलङ्की राजाराव सुरतान की कन्या थी। ताराबाई के पिता पितामह आदि थोड़ा में राज्य करते थे। एक बार लायला नामक अफ़ग़ान ने इन पर चढ़ाई की, सुरतान वहाँ से भाग कर राजपूताना आरावल्ली के पाददेशस्थ बेदनौर में आकर रहने लगे। उस समय ताराबाई युवती थी, युद्ध के साज में रहना उन्हें बहुत अधिक अच्छा मालूम होता था। उनकी प्रतिज्ञा थी कि जो मुसल्मानों से थोड़ा का उद्धार करेगा उसीसे मैं अपना विवाह करूँगी। मेवाड़ के राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज को इन्होंने

अपना पति बनाया। पुनः इस दम्पति ने राजपूत सेना लेकर तोड़ा पर चढ़ाई की, और उस पर अपना अधिकार फैला लिया। पृथ्वीराज प्रभुराय की विश्वासघातकता से मारे गये, उन्हींके साथ वीरबाला ताराबाई का भी अन्त हो गया।

(२) प्रसिद्ध महाराष्ट्रवीर शिवाजी की पुत्रवधू, और राजाराम की पत्नी। १७०० ई० में पति की मृत्यु होने पर सिंहगढ़ पर औरङ्गज़ेब की सेना की चढ़ाई रोकने के लिये ताराबाई ने योद्धाओं का वेष धारण कर लड़ाई की थी। तीन बरस तक लगातार लड़ाई होने के बाद सिंहगढ़ औरङ्गज़ेब के अधिकार में आया था, किन्तु ज्योंही औरङ्गज़ेब वहाँ से लौटा त्योंहीं ताराबाई ने सिंहगढ़ को अपने अधिकार में कर लिया। मरहठों के अनेक युद्ध और राजनीति में ताराबाई की विलक्षण बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है। १७५२ ई० में ताराबाई ने परलोकयात्रा की।

तारिका तत्० (स्त्री०) तालीरस, ताड़ी, (तद्व०) आँखों की पुतली।

तारिणी तत्० (स्त्री०) दूसरी महाविद्या, उद्धारकर्त्री, उद्धार करने वाली स्त्री।

तारी दे० (स्त्री०) ताड़ी, मादकद्रव्य, तार का बना हुआ। तेल नापने का बर्तन जिसमें पाँच सेर तेल आता है।

तारीख़ दे० (स्त्री०) दिवस, दिन, तिथि।

तारीफ़ दे० (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, स्तव।

तारुण्य तत्० (पु०) यौवन, युवत्व, यौवनावस्था, जवानी।

तारू तद्० (पु०) तालु।

तारे गिनना दे० (वा०) नींद न आना, निठल्ले बैठे रहना, निकम्मा रहना।

तार्किक तत्० (पु०) तर्कशास्त्रवेत्ता, नैयायिक, न्यायशास्त्री।

ताल तत्० (पु०) हरिताल, तालीपत्र, दुर्गा का सिंहासन, तालाब, गान का परिमाण, दो हाथ का शब्द, ताली बजाने का शब्द, ताड़ का पेड़, खजूर का पेड़।—**खजूही** (स्त्री०) वृक्षविशेष, दुपहरिया वृक्ष।—**मारना—ठोंकना** (वा) युद्धार्थ आह्वान करना, चेष्टाविशेष से मल्लयुद्ध करने के लिए बुलाना, एक भुजा को मोड़ कर दूसरे हाथ से उसे ठोंकना।—**ध्वज** (पु०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।—**पत्री—मूलिका** (स्त्री०) औषधविशेष, मूसली।—**वृन्त** (पु०) पंखा, तालपत्र निर्मित पंखा, व्यजन, बेना, बेनिया।—**वृन्तक** (पु०) पंखा, व्यजन।

तालक दे० (पु०) फाटक, खिड़की, खिटकिनी।

तालमखाना दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध पौधा, फल।

तालव्य तत्० (पु०) तालू के द्वारा उच्चारित वर्ण, तालुजात।

ताला दे० (पु०) द्वार बन्द करने की कल, द्वार का अवरोधक यन्त्र, कोठे का खपड़।

तालाङ्क तत्० (पु०) बलदेव, हलधर।

ताली दे० (स्त्री०) चाभी, कुञ्जी, ताला बन्द करने की चाभी, दोनों हाथ बजाने का शब्द, ताल वृक्षविशेष।—**एक हाथ से बजाना** (वा०) अनहोनी बात, असम्भव।—**बजाना—मारना** (वा०) हाथ पर हाथ पटकना, ठट्ठा करना, ठहाका मारना, परिहास करना, धुतकारना, दुतकारना, धिक्कारना।

तालीम दे० (पु०) शिक्षा, सिखावन, उपदेश, अध्ययन।

तालीस तत्० (पु०) वृक्षविशेष।

तालू तत्० (पु०) तालु, मुँह के ऊपर का भाग, तलुआ।

ताव तद्० (पु०) ताप, सन्ताप, क्रोध, ऐंठ, अकड़, अकड़न, तमक, बल, शक्ति, सामर्थ्य, काग़ज़ का तख़्ता, परख, परीक्षा, उतावली, शीघ्रता, हड़बड़ी।—**देना** (क्रि०) मरोड़ना, ऐंठना, बढ़ना, बलदेना, मूछों पर हाथ रखकर अपनी शक्ति बतलाना, चाशनी बनाना।—**पेंचखाना** (वा०) गरम होना, क्रोधित होना।

तावत् तत्० (अ०) तब तक, वहाँ तक, इतना तक, अवधिवाची अव्यय।

तावना तद्० (क्रि०) तापन, गरम करना, गरम करके खराई खोटाई की जाँच करना, ताव देना, परखना, कसना, जाँचना, बल देना, भ्रकड़ाना, मरोड़ना, ऐंठना।

तावीज़ दे० (पु०) अलङ्कारविशेष, गण्डा, यन्त्र।

तावेदार दे० (पु०) अधीन, वशतापन्न, नौकर, सेवक, भृत्य।

ता (श) स, दे० गञ्जीफा, बूटेदार पट्टू, एक प्रकार का खेल खेलने के लिये कई प्रकार के चित्रित पत्ते।

तासा दे० (पु०) वाद्यविशेष, एक प्रकार का देशी बाजा।

तासु दे० (सर्व०) उसको, उसका, तत्संबन्धी।

तासो दे० (सर्व०) उससे।

ताहि दे० (सर्व०) उसको, उसे।

ताहिरी दे० (स्त्री०) भोजनविशेष, एक प्रकार का भोजन, पीले चाँवल और बरी।

तिकतिक दे० (पु०) गाड़ी आदि के बैल चलाने का शब्द।

तिकुरी दे० (स्त्री०) तिहाई, तीसरा, एक प्रकार का यन्त्र जिससे यज्ञोपवीत का सूत बटा जाता है।

तिकोनिया तद्० (गु०) त्रिकोण, तीन कोण का पदार्थ, तिखूँटा।

तिक्का दे० (पु०) मांस का छोटा टुकड़ा।

तिक्त तत्० (पु०) [तिज्+क्त] रसविशेष, तीव्ररस, तीखा, तीखा, चिरायता, तिक्तरसयुक्त, तीता, कड़ुआ, चरपटा।—**तण्डुला** (स्त्री०) औषधविशेष, पिप्पली, पीपल।—**चक्रा** (स्त्री०) कुटकी।

तिक्तक तत्० (पु०) पटोल, परवर, चिरतिक्त, चिरायता।

तिक्तका तत्० (स्त्री०) कटुतुम्बी, चिरपोटा।

तिखरा दे० (गु०) तिबारा, तिहारा, तिहरा, तीनफेर।—**करना** (क्रि०) तीन बार खेत को जोतना, तीन बार स्वीकार करना।

तिखारना दे० (क्रि०) दो बार जोते हुए खेत को जोतना, किसी बात की सत्यता जाँचने के लिए तीन बार पूछना, परखना।

तिगुन तद्० (गु०) त्रिगुण, तिनगुना, तिहारा।

तिग्म तत्० (गु०) [तिज्+म] तीक्ष्ण, उग्र, खर, कटु, पैना, तेज।

तिग्मांशु तत्० (पु०) [तिग्म+अंशु] सूर्य, रवि, भानु।

तिच्छन तद्० (गु०) तीक्ष्ण, तेज, कठोर।

तिजारी दे० (स्त्री०) अन्तरिया, कम्पज्वर, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।

तिजिल तत्० (पु०) [तिज+इल] चन्द्रमा, राक्षस।

तिणका तद्० (पु०) तृण, घास, तिनका, घास का टुकड़ा।

तित दे० (अ०) तत्र, तहाँ, तहीं।

तितना दे० (गु०) उतना, परिमाणवाची।

तितरबितर दे० (अ०) छिन्नभिन्न, इधर उधर, छितरा।

तितरी दे० (स्त्री०) कीटविशेष, लघुकीट।
तितली दे० (स्त्री०)

तितिक्षक तत्० (पु०) सहनशील, सहिष्णु, क्षमी, क्षमावान्। धैर्यवान्, धीरतायुक्त।

तितिक्षा तत्० (स्त्री०) धैर्य, धीरज, क्षमा, सहनशीलता।

तितिक्षु तत्० (पु०) [तिज्+सन्+उ] सहिष्णु, तितिक्षक।

तितिम्मा दे० (पु०) अटक, धोखा, धाँधल, ढकोसला, अनुकरण।

तितीर्षु तत्० (गु०) [तृ+सन्+उ] तरनेच्छुक, तरना चाहनेवाला।

तितिर तत्० (पु०) तितिरपक्षी, पक्षिविशेष।

तिथि तत्० (स्त्री०) प्रतिपदा आदि पन्द्रह चन्द्रकला की क्रिया, चन्द्रकला का उतराव, चढ़ाव, चन्द्रकला से युक्त काल, दिन, तारीख। (पु०) पञ्चाङ्ग, जन्त्री पत्रा। –**क्षय** (पु०) तिथि की हानि।

तिदरा दे० (पु०) तीन द्वार का स्थान, घर, जिसमें तीन द्वार हों, बैठक।

तिदरी दे० (स्त्री०) तीन द्वार का छोटा घर, छोटी बैठक, छतरी।

तिधर दे० (सर्व०) उस स्थान पर, उस स्थान की ओर।

तिधारा दे० (पु०) पौधाविशेष, तीन धारे का सहुम।

तिनकना दे० (क्रि०) टीसना, फड़फड़ाना, चिढ़ना।

तिनका दे० (पु०) खर, डांठी, घास का टुकड़ा, तृण।—दाँतों में लेना (वा०) शरण जाने की एक मुद्रा, अधीन होना, जी का दान माँगना, अपराध क्षमा कराना।

तिन्तिड़ी तत्० (स्त्री०) इमली, कुचिया।

तिन्नी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चावल, जो फलाहार में गिना जाता और ऋषिपञ्चमी के दिन खाया जाता है।

तिन्द तद्० (पु०) वृक्ष और फल विशेष।

तिन्दुक तत्० (पु०) तमालवृक्ष, तेंदुआ।

तिन्दुला तत्० (स्त्री०) औषधविशेष, पीपर।

तिबारा दे० (गु०) तीनबेर, तीसरी बार।

तिब्बत दे० (पु०) देशविशेष, हिमालय के उत्तर-स्थित एक देश का नाम।

तिमि तत्० (पु०) शतयोजनविस्तृत मत्स्य, बृहत् मत्स्यविशेष।

तिमिङ्गिल तत्० (पु०) तिमि से भी बड़ा मत्स्य, सुबृहत् मछली, एक प्रकार का भयङ्कर जीव।

तिमित तद्० (गु०) स्तिमित, स्थिर, अचञ्चल, अचल।

तिमिर तत्० (पु०) अन्धकार, अँधेरा, अँधियारा।—हर (पु०) सूर्य, रवि, चन्द्रमा, अग्नि।

तिय, तिया दे० (स्त्री०) स्त्री, योषित्, नारी, अबला।

तिरकोना तद्० (गु०) त्रिकोण, तिनकोनिया, तीन कोने की वस्तु।

तिरखा तद्० (स्त्री०) तृषा, पिपासा, प्यास।

तिरखूँटी दे० (स्त्री०) त्रिकोण अस्त्रविशेष, तीन कोने का अस्त्र।

तिरछा तद्० (गु०) तिर्यञ्च, टेढ़ा, बाँका, वक्र।—देखना कनखियों से देखना, तिरछी चितवन से देखना।

तिरछाना तद्० (क्रि०) टेढ़ा करना, बाँका करना, हठीला होना, हठ करना।

तिरछी तद्० (गु०) टेढ़ी, बाँकी।

तिरतिराना दे० (क्रि०) रिसाना, झिरझिराना।

तिरना दे० (क्रि०) तैरना, उतराना, पैरना, हेलना।

तिरपद तद्० (पु०)
तिरपदी तद्० (स्त्री०) } तिपाई, तीन पैर के आसन।

तिरपन दे० (गु०) पचास और तीन, ५३, तीन अधिक पचास।

तिरपौलिया दे० (पु०) सिंहद्वार, राजमहल का वह द्वार जो धनुष के आकार का बना हुआ हो।

तिरफल तद्० (पु०) त्रिफला, तीन फल का समुदाय, आँवला, हर्र और बहेड़ा, तीन फल।

तिरभंगा दे० (गु०) टेढ़ामेढ़ा, ऊभड़ खाभड़, तिरछा, बाँका।

तिरभंगी तद्० (पु०) छन्दविशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम।

तिरस् तत्० (गु०) टेढ़ापन से, वक्रता से।

तिरसठ दे० (गु०) साठ तीन, ६३, तीन अधिक साठ।

तिरस्कार तत्० (पु०) निन्दा, अवमान, अपमान, अप्रतिष्ठा।

तिरस्कृत तत्० (गु०) अपमानित, निन्दित, अवज्ञात।

तिरस्क्रिया तत्० (स्त्री०) अनादर, अप्रतिष्ठा, अवहेला।

तिरहुत दे० (पु०) देशविशेष, विहार का एक प्रान्त, मिथिला।

तिराना दे० (क्रि०) तैरना, पार होना, पैरना, लाभ लेना।

तिरानबे दे० (गु०) नब्बे और तीन, ९३, तीन अधिक नब्बे।

तिराव दे० (पु०) पैराव, हेलाव, थाह, तरने योग्य।

तिरासी दे० (गु०) अस्सी तीन, ८३, तीन अधिक अस्सी।

तिरिया दे० (स्त्री०) स्त्री, नारी, लुगाई, कामिनी, योषित्।—चरित्र (पु०) स्त्रियों का छल प्रपञ्च, स्त्री का मक्कर।

तिरीविरी दे० (अ०) तितर बितर, छिन्नभिन्न, उथलपुथल।

तिरेन्दा दे० (पु०) तरेन, तिरौंदा।

तिरोधान तत्० (पु०) [तिरस् + धा + अनट्] अन्तर्द्धान, लुकान, छिपान, ढकाव, व्यवधान, आच्छादन।

तिरोहित तत्० (गु०) [तिरस् + धा + क्त] अन्तर्हित, गुप्त, आच्छादित।

तिर्मिरा दे० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, उष्णता से व्याकुल, उद्विग्नचित्त।

तिर्मिराना दे० (क्रि०) झुराना, लहकना, चैाधियाना, व्याकुलतासे हाथ पैर धुनना, पानी पर तेल की बूँदों का फैलना।

तिर्मिरी दे० (स्त्री०) चक्कर, घुमड़ी, भँवर।

तिर्यक् तत्० (गु०) [तिरस् + अञ्च् + क्विप्] टेढ़ा, बाँका, तिरछा, वक्र, कुटिल, प्राणिविशेष।—पति (पु०) सिंह, शार्दूल।—स्रोता (पु०) पशु पक्षी आदि, ब्रह्मा का आठवाँ सर्ग।—योनि (पु०) पशु पक्षी आदि।

तिरहुत दे० (पु०) प्रान्तविशेष, विहार का प्रान्त, मिथिला।

तिल तत्० (पु०) शस्यविशेष, स्वनाम प्रसिद्ध अन्नविशेष, शरीर का चिन्ह, काले काले शरीर के दाग, अत्यल्पकाल, बहुत थोड़ा समय, निमेषमात्र समय।—कुट (पु०) तिलकी मिठाई, तिल की बनाई एक प्रकार की मिठाई।—चट्टा (पु०) कीटविशेष, तैलचा, तैलचोरिका।—चावली (स्त्री०) मिला हुआ तिल और चावल, एक प्रकार का चबेना, काली और श्वेत वस्तुओं का मिलाव।—चूरी (स्त्री०) तिलकुट, मोदकविशेष, कुटा हुआ तेल।—तैल (पु०) तिलका तेल, तिलका ही तेल।—धेनु (स्त्री०) तिल की बनी हुई गाय, जो दान करने के लिये प्राय माघ महीने में बनाई जाती है।—पर्णी (स्त्री०) चन्दन।—पिञ्ज (पु०) तिलका पछोड़।—पिष्टक (पु०) तिलकी खली, तिल का उबटन।—वर (पु०) पक्षिविशेष।—भेद (पु०) पोस्त का पैाधा, पोस्त का बिरवा।

तिलक तत्० (पु०) टीका, चन्दन आदिका मस्तकस्थित चिन्ह, अश्वकभेद, पुष्पवृक्षविशेष, शरीरस्थ तिल, अश्वभेद, रोगभेद। (गु०) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, यह शब्द विशेषण शब्दों के अन्त में लगने से उनकी उत्कृष्टता—अधिकता बतलाता है। यथा:—

"रघुकुलतिलक सदा तुम उथपन थापन"

—जानकीमङ्गल।

तिलङ्गा दे० (पु०) सिपाही, सैनिक, तैलङ्गदेश के रहने वाले, कहते हैं सबसे पहले अँग्रेजी सेना में तैलङ्गदेश के ही वासी भर्ती किये गये थे, इस कारण अँग्रेजी सैनिकों का नाम ही तिलङ्गा हो गया

तिलङ्गी दे० (स्त्री०) गुड्डी, पतङ्ग, चङ्ग।

तिलड़ा दे० (स्त्री०) तिनलरा हार, तीन लर का हार।

तिलहा दे० (गु०) तेल के समान चिकना, चिकना, तेलिया, तेली।

तिला दे० (पु०) सोना, पगड़ी का छोर, जिसमें सोने के तारों का काम किया होता है।

तिलाई दे० (स्त्री०) सोनहला, छोटी कड़ाही।

तिलुवा दे० (पु०) तिल का लड्डू, तिल का बना लड्डू।

तिलैहा दे० (पु०) पक्षिविशेष, घुघ्घू, पण्डुकी।

तिलोत्तमा तत्० (स्त्री०) स्वर्ग की अङ्गना, ... स्वर्गीय अप्सरा। पहले दैत्यराज हिरणकशिपु के ... में निकुम्भ नामक एक दैत्य उत्पन्न हुआ था। ... सुन्द और उपसुन्द नामक दो पुत्र थे। इन ... ने त्रिलोक जीतने की इच्छा से कठोर तपस्या ... ब्रह्मा ने इन्हें वर दिया कि त्रिलोक में कोई भी ... तुम लोगों को मार नहीं सकेगा, हाँ यदि ... किसी कारण आपस में विवाद करोगे, तभी दोनों की परस्पर के आघात से मृत्यु होगी। ... क्या था, वे उपद्रव करने लगे, देवता ... चार से अत्यन्त पीड़ित हुए। मिलकर सभी ब्रह्मा के पास गये, ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को ...

और मर्वाङ्ग सुन्दरी रमणी की सृष्टि करने के लिये उनसे कहा, उन्होंने संसार के सभी उत्तम पदार्थों से तिल तिल संग्रह करके एक रमणी की सृष्टि की, जिसका नाम तिलोत्तमा रखा गया। ब्रह्मा की आज्ञा से वह सुन्द उपसुन्द के समीप गयी। उसको देख उन असुरों के हृदय में आप ही आप विवादानल भड़क उठा। वे तिलोत्तमा के लिये आपस में लड़ने लगे और आपस ही में कट मर गये। यही तिलोत्तमा दुर्वासा के शाप से बाणासुर के यहाँ उत्पन्न हुई थी।

तिलोदक तद्० [तिल+उदक] तिल और जल मिलाकर तर्पण, पितरों का तर्पण, पितृतर्पण।

तिलौदन तद्० (पु०) [तिल+ओदन] मिला हुआ तिल और ओदन, खिचड़ी, कृशरान्न।

तिवारा तद्० (पु०) तिहरी त्रिगुणित, तीसरे बार।

तिवासी दे० (पु०) तीन दिन का बासी।

तिष् तद्० (स्त्री०) तृषा, तृष्णा, पिपासा, प्यास।

तिष्ठना तद्० (क्रि०) ठहरना, स्थिर होना, विराजना, खड़ा होना, गति शून्य होना।

तिष्ठित तद्० (गु०) ठहरा हुआ, बैठा हुआ।

तिष्य तद्० (पु०) [तिष्+य] पुष्यनक्षत्र, आठवाँ नक्षत्र, पौष मास, कलियुग।

तिसका दे० (सर्व०) उसका, उसके सम्बन्धी।

तिसरायत दे० (पु०) वादी और प्रतिवादी से दूसरा, मध्यस्थ, मध्यवर्ती, उदासीन, बिचवई।

तिसूत दे० (पु०) औषध विशेष।

तिहत्तर दे० (गु०) सत्तर और तीन, ७३, तीन और सत्तर।

तिहरा दे० (पु०) तिलड़ा, तीनलड़ा। (गु०) त्रिगुणित, तिगुना।

तिहराना दे० (क्रि०) तिहरा करना, तीन बार बटना, तीन बार बनदेना, त्रिगुणित करना, तीन तह करना।

तिहरावट दे० (स्त्री०) तिगुनाव, तिगुना करने का काम।

तिहारे दे० (सर्व०) तिहारे, तुम्हारा।

तिहाई दे० (स्त्री०) तीसरा हिस्सा, तीसरा भाग।

तिहायत दे० (पु०) तीसरा, उदासीन, मध्यस्थ, पक्षपात रहित।

तिहारी दे० (स्त्री०) तुम्हारी, तुम्हारे सम्बन्ध की।

तिहारे दे० (पु०) तुम्हारे, तिहारे, तुम्हारे सम्बन्ध का।

तिहारो दे० (पु०) तुम्हारा।

तिहु दे० (गु०) तीनों, तीन।—पुर (पु०) त्रिपुर, दैत्यों का एक प्रधान नगर, इस नगर का नाश महादेव ने किया था।—लोक (पु०) त्रिलोक, तीनों लोक, पाताल, मर्त्य और स्वर्ग।

तीकट दे० (पु०) नितम्ब, पश्चाद्देश, कटि का पिछला भाग।

तीक्ष्ण तद्० (पु०) तेज, तीखा, पैना, चोखा, चोखा, क्रोधी, गरम प्रकृति, तीता, कड़ुआ, उत्साही, क्षिप्रकारी, चतुर, दक्ष, प्रवीण, निपुण, विष, लोह, युद्ध, मरण, शस्त्र, समुद्र का नोन, यवक्षार, श्वेतकुष्ठ, तीक्ष्णगण, यथाः—अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल। (गु०) निरालस, सुबुद्धि योगी।—कण्टक (पु०) धतूर, बबूल, इगुदी, करीर।—कन्द (पु०) प्याज, पलाण्डु।—कर्मा (पु०) निपुण, दक्ष, चतुर, कुशल।—ता (स्त्री०) तेज, उग्रता, प्रखरता।—दंष्ट्र (पु०) शार्दूल, व्याघ्र, बाघ।

तीखा तद्० (गु०) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, तेज़, धारदार।

तीखी तद्० (स्त्री०) सूक्ष्मस्वर, पतला शब्द।

तीखुर दे० (पु०) वृक्षविशेष का सत, आटा विशेष, फलाहार विशेष।

तीछन तद्० (गु०) तीक्ष्ण, तेज, धारदार, चोखा, पैना।

तीज दे० (स्त्री०) तृतीया, तीसरी तिथि, पक्ष का तीसरा दिन।

तीजा दे० (गु०) तीसरा, मृतक के तीसरे दिन का कर्म।

तीजिया दे० (स्त्री०) श्रावण शुक्ल तृतीया का पर्व, त्योहार विशेष।

तीजी दे० (गु०) तीसरा।

तीत दे० (गु०) तीखा, कड़ुआ, तीव्र।

तीतर दे० (पु०) तित्तिर, पक्षिविशेष।—**के मुँह में लछिमी** (वा०) अयोग्य सङ्गम, जो जिस काम के योग्य नहीं है उस पर वह काम सौंपना। —**के मुँह में कुशल** (वा०) अयोग्य के काम से अपनी रक्षा की आशा, जो जिसके लिये सर्वथा अयोग्य है उससे आशा रखना।

तीतरी दे० (स्त्री०) कीट विशेष, तितली, पतङ्ग, पतिङ्गा।

तीता दे० (गु०) तीत कडुआ, कटु, तीव्र, तीक्ष्ण।

तीन दे० (गु०) संख्या विशेष, त्रि, ३।—**तेरह** (गु०) तितर बितर, डावाँडोल, छिटफुट, छिन्न-भिन्न, दल का नाश, समूह भ्रंश।

तीय दे० (स्त्री०) अबला, स्त्री, नारी, यथा:—

सवैया—

पीय पहारनि पास न जाहु यों,
तीय बहादुर सों कह सोयें।
कौन बचे है नवाब तुम्हें,
भनै भूषन भोसिला भूप के रोषें॥
बन्दि कियो इहां शाइस्तखां,
जसवन्त से भाउ करन्न से दोये।
सिंह सिवाजी के वीर सों,
जो अमीरनि बाचि गुनीजन ओयें।
शिवराज भूषण।

तीयल दे० (पु०) स्त्रियों के पहनने के तीन कपड़े।

तीयन दे० (पु०) तरकारी विशेष, एक प्रकार की बन हुई तरकारी।

तीर तत्० (पु०) नदी का किनारा, तट, कूल, बाण, सर, समीप, निकट, पास।—**स्थ** (पु०) तीर-स्थित, तटस्थित, तीर पर का।

तीरथ तद्० (पु०) तीर्थ, देवयात्रा, देव दर्शनार्थ यात्रा।—**राज** (पु०) प्रयाग क्षेत्र सब तीर्थों का राजा, प्रयाग, यथा:—

वट विश्वास अचल निज धर्मा,
तीरथराज प्रयाग सुकर्मा। —रामायण

तीरन्दाज़ दे० (पु०) तीरक्षेपक, तीर चलानेवाला, बाण चलाने में निपुण।

तीर्ण तत्० (गु०) [तृ+क्त] उत्तीर्ण, पारङ्गत, पार हुआ।

तीर्थ तत्० (पु०) शास्त्र, याग, क्षेत्र, पुण्यस्थान, उपाय, नारीरज, अवतार, घाट, ऋषि सेवित जल, पात्र, बर्तन, उपाध्याय, उपदेशक, योनि दर्शन, विप्र आगम, निदान, संन्यासियों की उपाधि विशेष, ब्राह्मण का दहिना कान।—**ङ्कर** (पु०) जैनियों के चौबीस धर्माचार्य अवश अवतार।—**ध्वांक्ष** (पु०) तीर्थकाक, तीर्थ में रहने वाले काक प्रकृति के मनुष्य। मिथ्या यात्री श्रद्धाभक्ति हीन तीर्थयात्री।—**पर्यटन** (पु०) पुण्यस्थानों का घूमना।—**राज** (पु०) तीर्थाधिप तीर्थस्वामी, महान् तीर्थ प्रयाग।—**सेवी** (पु०) पुण्यक्षेत्र में वास करने वाले, वानप्रस्थाश्रमी।

तीली दे० (स्त्री०) तूली, सलाई, पिण्डली।

तीवर दे० (पु०) वर्णसङ्कर, जाति विशेष, बहेलिया, व्याध।

तीव्र तत्० (गु०) अधिक तेज, कटु कडुआ, प्रचण्ड।—**गन्धा** (स्त्री०) जवाइन, अजवाइन, अजमोदा।—**वेदना** (स्त्री०) अत्यन्त अधिक कष्ट, महायातना।

तीस दे० (गु०) संख्या विशेष, बीस और दश, तीन दश, ३०।

तीसरा दे० (गु०) तृतीय, तिहायत।

तीसी दे० (स्त्री०) अन्नविशेष, अलसी, अतसी, अलसी, पसीना, (गु०) तीस संख्या से परिमित।

तुक दे० (पु०) पद, छन्द, भाग, यमक, समान अक्षरों की योजना, यथा—निहारी, तिहारी, आदि। चौपाई आदि के अन्त में जिस प्रकार के पद रखे जाते हैं। यथा:—

दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी
उग्ग नाचे दुग्ग पर रुंडमुंड फरके।
भूषन भनत बाजे जीत के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंघल को सरके।
मारे सुनि सुभट पनारे उदभट तारे,
तारे लागे फिरन सितारे गढधर के।
बीजापुर बीरन के गोलकुण्डा धीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके।
—शिवाबावनी।

—**बन्दी** (स्त्री०) कविता विशेष, जिसमें पद हैं।

तुङ्ग तत्० (पु०) पुन्नागवृक्ष, पर्वत, बुधग्रह, नारिकेल, योगभेद, (गु०) उन्नत, उच्च, ऊंचा, प्रधान, उग्र, तन्त्र।—भद्रा (स्त्री०) दक्षिण देश की प्रसिद्ध नदी, मैसूर प्रान्त की एक नदी का नाम।—वृक्ष (पु०) नारियल का पेड़।

तुच्छ तत्० (गु०) पतन, थोड़ा, बहुत थोड़ा, अपमान, तिरस्कृत, हेय, नीच, हीन, अधम, निठल्ला, निकम्मा।—त्व (पु०) हेयज्ञान, अनादर, असारता।—ता (स्त्री०) अधमता, हेयता, नीचता, अधमता।—द्रुम (पु०) नीच वृक्ष, एरण्ड वृक्ष।

तुद तत्० (पु०) संग्राम, युद्ध, रण।

तुड़ाना दे० (क्रि०) बैल आदि पशुओं का पगहा तोड़ कर भागना, तोड़ना।

तुण्ड तत्० (पु०) मुख, वदन, आहार, चोंच, ठोर।

तुतरा (ला) दे० (पु०) अस्पष्ट उच्चारण करने वाला, अटक अटक के बोलने वाला, हकला कर बोलने वाला।

तुतरा (ला) ना दे० (क्रि०) अस्पष्ट उच्चारण करना, अटक अटक कर बोलना।

तुतिया दे० (स्त्री०) उपधातु विशेष, विषविशेष, तुत्थ।

तुत्थ तत्० (पु०) तूतिया, नीलाथोथा।

तुन दे० (पु०) वृक्षविशेष, नन्दीवृक्ष।

तुनकी दे० (स्त्री०) पतली, एक प्रकार की रोटी।

तुनतुनाना दे० (क्रि०) तुनतुन स्वर से बजाना, सितार आदि बजाना।

तुन्द तत्० (पु०) जठर, पेट, उदर।—परिमृज (गु०) आलसी, आलसी, अकर्मा, पेट पर हाथ फेरते रहने वाला, निकम्मा।

तुन्दिल तत्० (गु०) तोंदैल, लम्बोदर, बड़ा पेटवाला, लम्बे पेटवाला मनुष्य।

तुन्न दे० (पु०) तुन वृक्षविशेष।—वाय (पु०) दर्जी, सूचीकार, कपड़े सीनेवाला।

तुपक दे० (स्त्री०) बन्दूक, छोटा बन्दूक, पिस्तौल।

तुकला दे० } (पु०) कीटविशेष, छोटी पतङ्ग, छोटी
तुकली (स्त्री०) } गुड्डी।

तुकाजी होलकर दे० (पु०) जगत् प्रसिद्ध महारानी अहल्याबाई के सेनापति, अहल्याबाई का इन पर बड़ा ही स्नेह था, उसी स्नेह का फल स्वरूप राजप्रतिष्ठा सूचक "होलकर" की उपाधि महारानी अहल्याबाई ने इन्हें दी थी।

तुकाराम दे० (पु०) एक महाराष्ट्र साधु, १५५८ ई० में पूना के समीपस्थ देहुक नामक ग्राम में इनका जन्म हुआ था। यह जाति के शूद्र थे, तथापि दक्षिण देश के सभी श्रेणी के लोग इनका आदर करते थे। १५ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हुआ था; परन्तु बाल्यकाल ही से इनकी प्रवृत्ति धर्म की ओर झुकी हुई थी। २० वर्ष की अवस्था में इनके पिता और माता परलोकवासी हुए, उसी समय इनके बड़े भाई भी विरक्त होकर घर से चले गये। संयोगवश उसी समय दक्षिणदेश में अकाल भी पड़ा हुआ था, इन्हीं सब घटनाओं से तुकाराम ने संसार का यथार्थ स्वरूप देख लिया। उन्होंने संसार छोड़कर भजन करना ही अपने लिये उत्तमकार्य विचार लिया। इनकी बनाई कविता का नाम अभङ्ग है। आठ हज़ार से भी अधिक इनकी बनायी कविता हैं। इनकी कविता दक्षिण देश में आदर की वस्तु समझी जाती है। एक समय छत्रपति शिवाजी इनसे उपदेश लेने गये थे, और उपदेश लेकर वे वन में जाकर तपस्या करने लगे। उन्होंने संसारचिन्ता बिलकुल छोड़ दी। यह देख शिवाजी की माता ने तुकाराम को यह समाचार सुनाया। पुनः तुकाराम ने उन्हें तात्विक उपदेश देकर शिवाजी को कार्य में लगाया। तुकाराम की मृत्यु का समय प्रायः अनिश्चित है; तथापि अनुमान किया जाता है कि संवत् १६५९ में उन्होंने परलोकयात्रा की।

तुक्का दे० (पु०) माँस के टुकड़े, मुड़ा बाण, मोथरतीर, पहाड़ी छोटा पर्वत।

तुगा तत्० (स्त्री०) तुगाक्षीरी, वंशरोचन।—क्षीरी—वंशी (स्त्री०) वंशलोचन।

तुपकिया दे० (स्त्री०) छोटी तुपक। (पु०) बन्दूक चलानेवाला।

तुफ़ान दे० (पु०) आँधी, अँधड़, पानी, झड़, आँधी पानी।

तुम दे० (सर्व०) मध्यम पुरुष का बहुवचन।—तनौ (सर्व०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का।

तुमड़ी दे० (स्त्री०) सँपेरे का बंसी, एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाते हैं। पुङ्गली, साधुओं का काष्ठ निर्मित जलपात्र।

तुमाई दे० (स्त्री०) धुनाई, तुमाने का पैसा, तुमाने की मजूरी।

तुमाना दे० (क्रि०) धुनवाना, पिंजाना, रुई धुनाना।

तुमुल तत्० (पु०) रण संकुल, सङ्कीर्णयुद्ध, अत्यन्त लोमहर्षण युद्ध, घोरयुद्ध, भयानक युद्ध, शोर, गुल।

तुम्बरी तत्० (स्त्री०) वीणा, बीन।

तुम्बा दे० (पु०) लौका, लाबु, लाऊ, अलाबु, एक प्रकार का लौका, जिसकी तुमड़ी साधु लोग बनाते हैं।

तुम्बिका तत्० (स्त्री०) कद्दू, लावू, लौका।

तुम्बिया तत्० (स्त्री०) कमण्डल, करवा।

तुम्बी तत्० (स्त्री०) लौकी, मदारी की बंसी।

तुम्बूर तत्० (पु०) वाद्यविशेष, तंबूरा, तानपूरा।

तुम्बुरु तत्० (पु०) गन्धर्व विशेष, स्वर्गगायक, जिनोपासक विशेष, वृक्षभेद।

तुरई दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष।

तुरक तद्० तुर्क, देशविशेष, उस देश के वासी मुसल्मान हैं। जाति विशेष, जो तुरकदेश में रहती है, तुरक देशवासी।

तुरग तत्० (पु०) तुरङ्ग, अश्व, घोटक, घोड़ा, चित्त, मन, अन्तःकरण।—ब्रह्मचर्यक (पु०) न मिलने के कारण स्त्रीत्याग।—रोही (पु०) अश्वारोही, घोड़सवार।

तुरगी तत्० (पु०) घुड़चढ़ा, घुड़सवार।

तुरङ्ग तत्० } (पु०) तुरङ्ग, अश्व, घोड़ा।
तुरङ्गम तत्० } (पु०)

तुरङ्गाह्वा तत्० (स्त्री०) औषधविशेष, असगन्ध, अश्वगन्धा।

तुरत दे० } (अ०) शीघ्र, त्वरित, तूर्ण, झटपट, जल्दी, अभी।
तुरन्त दे० } (अ०)

तुरपन दे० (स्त्री०) टाँका, टेप, सिलाई, नगाई, तागा चलाना, एक प्रकार का छोटा टाँका चलाना।

तुरपना दे० (क्रि०) सीना, टाकना, टाका लगाना।

तुरमती दे० (स्त्री०) बाज पक्षी विशेष, शूरपक्षी।

तुरही दे० (स्त्री०) एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाते हैं, रणसिंगा, साधुओं के बजाने की तुरी।

तुराई दे० (स्त्री०) तोषक, बिछावन, सेज, शय्या। (पु०) त्वरा, वेग।

तुराना दे० (क्रि०) छूट जाना, छुड़ाना, बैल आदि पशुओं का बन्धन तोड़कर भागना।

तुरापाट् तत्० (पु०) देवराज, इन्द्र, सुरेन्द्र।

तुरिय दे० (पु०) घोड़ा, अश्व।

तुरी तत्० (स्त्री०) कपड़े बीनने का उपकरण विशेष, तन्त्रकाष्ठ, विसेरा, ताँती की कूची, रणसिंगा, नरसिंहा।

तुरीय तत्० (गु०) चतुर्थ, चौथा, चार संख्या का पूरण करने वाली संख्या। (पु०) ब्रह्म, ब्रह्मज्ञान से प्राप्त चेतनता का आधार अनुपस्थित चैतन्य, मुक्तावस्था। (स्त्री०) एक अवस्था, जीव की अवस्था विशेष।—वर्ण (पु०) चौथावर्ण, शूद्र, चतुर्थ वर्ण।—आश्रम (पु०) चतुर्थ आश्रम, चौथा आश्रम, संन्यास आश्रम।

तुरुक तद्० (पु०) तुरुष्क, मुसल्मान, तुर्किस्तान का वासी।

तुरुम दे० (पु०) पैकड़ा, रिकाब, बेड़ी, पादबन्धिनी रज्जु पैर बाँधने की रस्सी।

तुरुष्क तत्० (पु०) देशविशेष, तुरुक, तुर्किस्तान तुर्की देश। गन्ध द्रव्यविशेष, शिलारस, पुष्प लोहबान।

तुत दे० (अ०) तुरन्त, तुरत, शीघ्र।—फुर्त (गु०) बहुत ही शीघ्र, बात की बात में।

तुर्ताव दे० (अ०) शीघ्र, तुरन्त, तुर्त।

तुर्ती फुर्ती दे० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, शीघ्रता से।

तुरा दे० (गु०) सतर्क, सावधान, वेगवान्, तेज, प्रखर।

तुल तद्० (गु०) तुल्य, सदृश, समान, बराबर। —कर खड़े होना (व०) तुलाना (क्रि०) मिलमिलाना, नरमाना, नरम होना।

तुलना तद्० (क्रि०) तौलना, परिमाण करना, कूतना, तौलना, मान करना (स्त्री०) दृष्टान्त, सादृश, उपमा, सादृशकरण, समीकरण, बराबरी, करना, एक को दूसरे से समानता।

तुलसिका तद्० (स्त्री०) हरिप्रिया, वृन्दा, तुलसी, एक पवित्र और पूजनीय देववृक्ष, इसके पत्र भगवान् विष्णु की पूजा में काम आते हैं।

तुलसी तद्० (स्त्री०) तुलसिका, हरिप्रिया, स्वनाम प्रसिद्ध देववृक्ष।

तुलसीदास तद्० (पु०) भारत के प्रसिद्ध भक्त कवि, यह सरयूपारी ब्राह्मण थे। यमुना के किनारे राजापुर नामक गाँव में यह उत्पन्न हुए थे। हिन्दी भाषा में इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "मानस रामायण" है। कहते हैं भगवान् श्रीरामचन्द्र ने रामायण बनाने के लिये इनको स्वप्न में आदेश दिया था। उनका दार्शनिक सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत था। रामानन्द स्वामी के समान यह भी विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारक थे। कहते हैं तुलसदास बड़े ही स्त्रीपरायण थे। एक दिन उनकी स्त्री रत्नावली अपने पिता के घर जा रही थी, तुलसदास को जब पता लगा तो वह दौड़े दौड़े अपने श्वसुर के घर गये, उनकी स्त्री से भेंट हुई, स्त्री ने कहा कि—इस चर्ममय शरीर में जितनी तुम्हारी अनुरक्ति है, यदि उतनी राम में होती तो तुम्हारा संसार-कष्ट छूट जाता। स्त्री की इन बातों का तुलसीदास पर बड़ा प्रभाव पड़ा, वह उसी क्षण से संसार से विरक्त हो गये। वह तीर्थयात्रा को निकले, काशी, मथुरा अयोध्या आदि अनेक तीर्थों में बहुत दिनों तक घूमते रहे, अब वे अपनी स्त्री आदि को स्मरण नहीं करते थे। घूमते घूमते संयोग वश एक दिन वह अपने श्वसुर के घर पहुँचे। उनकी वृद्धा स्त्री उनका सत्कार करने लगी। थोड़ी देर के बाद उसने अपने पति को पहचाना। स्त्री ने कहा—खटाईलाऊ, तुलसीदास ने कहा—झोरी में है, स्त्री ने कहा—कपूरलाऊ, तुलसीदास ने कहा—झोरी में है। यह सुनकर उनकी स्त्री ने कहा—महाराज जब सभी वस्तु आपकी झोरी में है तब एक बिचारी स्त्री का क्या आदर है? तुलसीदास ने अब समझा कि उनकी स्त्री उनसे अधिक ज्ञानी है। झोली उन्होंने उसी समय फेंक दी। समर के राजा उनके बड़ा भक्ति करते थे। बालकाण्ड तक रामायण की रचना उन्होंने अयोध्या में की थी, जब वहाँ के वैरागियों से कुछ झगड़ा होगया तब वह वहाँ से काशी आगये और वहाँ आपने अपनी रामायण की पूर्ति की। तुलसीदास जिस स्थान पर रहते थे वह आज तक भी तुलसीघाट के नाम से प्रसिद्ध है। इनकी परलोक यात्रा के विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है।

संवत सोलह सौ असी, (१६८०) असी गङ्ग के तीर,
श्रावनशुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।

तुला द० (स्त्री०) तराजू, तखरी, तौलने का साधन, बराबर, समान, उपमा, सप्तमराशि।—दान (पु०) दानविशेष, अपने शरीर के बराबर किसी वस्तु का दान।—धार (पु०) काशी निवासी एक धर्मपरायण और ब्रह्मतत्त्वज्ञ, वणिक्, इसने महर्षि जाजलि को मोक्षधर्म का उपदेश किया था।

(२) वाराणसी निवासी एक व्याध, इसने मातापिता की सेवा के प्रभाव से सर्वदर्शिता प्राप्त की थी। सभी का जीवन वृत्तान्त यह अनायास ही जान सकता था।

तुलाना तद्० (क्रि०) तौलाना, तौल कराना, तुला पर चढ़ाना।

तुलित तद्० (गु०) तुला हुआ, तौल किया गया, बराबर, समान।

तुली तद्० (स्त्री०) तूलिका, चित्र बनाने की कलम, बर्ती, बत्ती।

तुल्य तद्० (पु०) समान, बराबर, सदृश।—ता (स्त्री०) समानता बराबरी, समता।

तुवर दे० (पु०) अरहर, अन्नविशेष, जिसकी दाल होती है।

तुवरी दे० (स्त्री०) फिटकरी, औषध विशेष।

तुष तद्० (पु०) भूसी चोकर, धान आदि का छिलका।

तुषार तद्० (पु०) शीत, पाला, हिम, बर्फ।

तुषित तद्० (पु०) उपदेवता विशेष।

तुष्ट तद्० (गु०) [तुष्+क] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न।

तुष्टि तद्० (स्त्री०) [तुष्+क्ति] आनन्द, हर्ष, तृप्ति, प्रसन्नता।

तुष्णीभूत तद्० (गु०) चुपचाप, अकुवचन, नीरव, निःशब्द, मौनी।

तुसार तद्० (पु०) तुषार, हिम, पाला, बर्फ।

तुहिन तद्० (पु०) तुषार, तुसार, शबनम।

तुही दे० (सर्व०) तुम्हीं, तुम भी, तुमको। (स्त्री०) कोकिल का शब्द, कोयल को कूक।

तू दे० (सर्व०) मध्यम पुरुष का एक वचन, नीच सम्बोधन।

तूतू दे० (पु०) कुत्ते को बुलाने का शब्द, अनादर के साथ बुलाना।

तूता करना दे० (वा०) झगड़ना, अपमानित करना, तुकारना।

तूबा तद्० (पु०) लौकी, कडू, साधु का जलपात्र विशेष।

तूकारना दे० (क्रि०) अबे तबे करना, अभिशाप देना, गाली देना, अपमानित करना, अनादर करने की इच्छा से तू ■ कहना।

तूढ्यौ दे० (गु०) सन्तुष्ट, सन्तोष प्राप्त, तृप्त, तृष्णा-रहित।

तूण तद्० / तूणीर तद्० (स्त्री०) तरकस, इषुधि, निषङ्ग, भाथा, जिसमें वीर लोग लड़ाई के समय बाण रखकर पीठ की ओर लटकाये रहते हैं।

तूतई दे० (स्त्री०) करई, करवा, मिट्टी ■ प्रकार का बर्तन, जिसमें टोटी लगी रहती है।

तूतक दे० (स्त्री०) तुत्थ, नीलाथोथा, तूतिया।

तूतन दे० (पु०) कतरन, फटाकुटा, रेतन।

तूतिया दे० (स्त्री०) तूतिया, नीलाथोथा।

तून दे० (पु०) एक पेड़ का नाम, एक प्रकार ■ लकड़ी, जिससे मेज कुर्सी आदि बनाई जाती है।

तूनना दे० (क्रि०) धुनना, तुनना।

तूयर तद्० (पु०) रसविशेष, कषाय, कसैला।

तूयरी दे० (स्त्री०) तुम्बी।

तूमना दे० (क्रि०) तूनना, रुई धुनना, हाथ ■ ■ को साफ करना, बिनौला निकालना।

तूमरी दे० (स्त्री०) कुम्भीर का कपाल, मगर ■ खोपड़ी।

तूमिया दे० (पु०) धुनी हुई रुई का सूत, ■ धुन वाला।

तूम्ना दे० (क्रि०) हाथ से रुई सुधारना।

तूर्ण तद्० (गु०) शीघ्र, तुरत, तुरन्त, ■ जल्दी।

तूर्य तद्० (पु०) नगाड़ा, भेरी, दुन्दुभी, ■ वाद्यविशेष। (गु०) चौथा, चार की संख्या ■ करने वाली संख्या, तृतीय, चतुर्थ।

तूल तद्० (पु०) बिनौला निकाला हुई रुई, ■ रहित कपास, रुआ। (दे०) आयोजन, तैयारी। त खींच (वा०) छोटी वस्तु को बड़ी समझ सामान्य बात को बड़ी समझ कर उसके ■ बड़ी तैयारियाँ करना।

तूल्लीय तद्० (पु०) कदम्बवृक्ष, कदम का पेड़।

तूलिना तद्० (पु०) रुईवाला वृक्ष, सेमर का पे■

तूली तद्० (स्त्री०) तुरी, तसवीर बनाने का ■ एक प्रकार की कलम जिससे चित्रकार तस■ पर रङ्ग चढ़ाते हैं।

तूवर दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति, ■ तूवर भी कहते हैं।

तूष्णीम् तद्० (अ०) चुपचाप, मौन, वचनरहित।

तृण तत्० (पु०) घास, खड़, खर, घासफूस, तिनका। —**कुटी** (स्त्री०) घास की बनी झोंपड़ी, तृणाच्छादित लघु गृह। —**राज** (पु०) नारियल, नारियल का पेड़, खजूर, तालवृक्ष। —**वत्** (गु०) तृण के समान, लघु, तुच्छ, साररहित, निकम्मा, उठल्लू।

तृणबिन्दु तत्० (पु०) ऋषिविशेष, द्वापर के वेदव्यास, इन्होंने २४ द्वापरयुगों में वेदों का विभाग किया था, अतएव इनको वेदव्यास की उपाधि मिली थी।

तृणावर्त तत्० (पु०) दैत्यविशेष, कंस का अनुचर दानव। इसको श्रीकृष्ण का वध करने के लिये कंस ने गोकुल भेजा था, बवण्डर बन करके यह श्रीकृष्ण को लेकर ऊपर उड़ गया, परन्तु श्रीकृष्ण बहुत भारी हो गये, इस कारण उनको यह ले जा नहीं सका, और श्रीकृष्ण ने इसका गला पकड़ लिया। अतएव यह भाग भी नहीं सका, दानव बेहोश होकर भूमि पर गिर पड़ा और मर गया।

तृणोदक तत्० (पु०) घास और पानी, पशुओं का भोजन।

तृतीय तत्० (गु०) तीसरा, तृतीय की पूर्तिवाली संख्या। —**प्रकृति** (स्त्री०) तीसरी प्रकृति, स्त्री और पुरुष से विलक्षण स्वभाव, नपुंसक।

तृतीया तत्० (स्त्री०) पक्ष का तीसरा दिन, तीसरी तिथि, गौरी इस तिथि की स्वामिनी हैं। —**न्त** (गु०) [तृतीया+अन्त] जिसके अन्त में तृतीया विभक्ति का चिन्ह हो। —**ंश** (पु०) [तृतीया+अंश] तीसरा भाग, तीसरा हिस्सा।

तृप्त तत्० (गु०) [तृप्+क्त] परितोषान्वित, सन्तुष्ट, हर्षित, आप्यायित, प्रसन्न, हृष्ट।

तृप्ति तत्० (स्त्री०) [तृप्+क्ति] तुष्टिवृत्ति, परितोष, आह्लाद, सन्तोष। —**कर** (गु०) सन्तोषजनक, तृप्ति करने वाला। —**जनक** (गु०) तृप्तिकर, आह्लादजनक।

तृपुण्ड तद्० (पु०) त्रिपुण्ड, तिलक विशेष, तीन धारी का खेड़ा तिलक जैसा शैव लगाते हैं।

तृपुर तद्० (पु०) त्रिपुर एक दैत्य के नगर का नाम, (देखो त्रिपुरासुर)।

तृफला तद्० (स्त्री०) त्रिफला, तीनफल, आँवला, हरीतकी और बहेड़ा।

तृविक्रम तद्० (पु०) त्रिविक्रम, भगवान का वामन अवतार, वामन।

तृवेनी तद्० (स्त्री०) त्रिवेणी, गङ्गा यमुना और सरस्वती का सङ्गम।

तृभुवन तद्० (पु०) त्रिभुवन, तीनलोक, त्रिलोक, स्वर्ग मर्त्य और पाताल।

तृमुहानी दे० (स्त्री०) तिमुहानी, तीन मार्गों का योग, त्रिमार्ग।

तृय दे० (स्त्री०) स्त्री, युवती, त्रिया।

तृलोक तद्० (पु०) त्रिलोक, तीनलोक।

तृविध तद्० (पु०) त्रिविध, तीन प्रकार का, तीन रङ्ग का।

तृवृत्, तृवृता तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, निशोथ, निशोत।

तृषा तत्० (स्त्री) [तृष्+आ] तृष्णा, पिपासा, प्यास। —**र्त** (गु०) [तृषा+आर्त] पिपासा से पीड़ित, प्यास से व्याकुल।

तृषावन्त तद्० (गु०) प्यासा, पिपासित।

तृषित तत्० (गु०) [तृष्+क्त] तृष्णायुक्त, पिपासित, प्यासा।

तृष्णा तत्० (स्त्री०) [तृष्+न+आ] पिपासा, पीने की इच्छा, उत्कण्ठा, अत्यन्त अभिलाष, अधिक उत्सुकता, लोलुपता, लोभ। —**क्षय** (पु०) तृषा निवृत्ति, पिपासा, शान्ति, वासनानाश, लोलुपता की निवृत्ति।

तृसङ्कु तद्० (पु०) त्रिशंकु, एक सूर्यवंशी राजा, राजा हरिश्चन्द्र के पिता (देखो त्रिशंकु)।

तृसूल तद्० (पु०) त्रिशूल, महादेव का मुख्य अस्त्र।

ते दे० (अ०) से, लेकर, (सर्व०) वे।

तैंतालीस दे० (गु०) चालीस और तीन, ४३, तीन अधिक चालीस, त्रयश्चत्वारिंशत्।

तैंतीस दे० (गु०) तीस और तीन, ३३, तीन अधिक तीस, त्रयस्त्रिंशत्।

तेंदुआ दे० (पु०) बाघ, चीता, छोटा बाघ।

तेंदू दे० (पु०) फलविशेष, वृक्ष और फल।

तेईस दे० (गु०) बीस तीन, २३, तीन अधिक बीस, त्रयोविंशति।

तेकाला दे० (पु०) अस्त्रविशेष त्रिशूल के आकार का एक अस्त्र, मछली पकड़ने का यन्त्र।

तेगबहादुर दे० (पु०) सिक्खों का नवाँ गुरु, १६७५ ई० में औरङ्गज़ेब की आज्ञा से इनका सिर काटा गया था। इनके पिता का नाम हरगोविन्द था यह सिक्खों के छठवें गुरु थे। इनकी माता का नाम नानकी था। सम्राट् औरङ्गज़ेब ने इन्हें पकड़ कर दिल्ली मँगवाया था। मुसलमान होने के लिये सम्राट् ने इन्हें बड़े कष्ट दिये, परन्तु इन्होंने मुसल्मान होना न चाहा। तेगबहादुर ने अपने गले में एक कागज़ का टुकड़ा बाँधकर सम्राट् से कहा कि हमारे गले में जो यन्त्र बँधा है उसके प्रभाव से कटा सिर जुड़ जाता है। उस समय सम्राट् ने सिर कटवा लिया, परन्तु सिर न जुटा। उनके गले से कागज़ खोलकर देखा गया तो उसमें लिखा था कि "सिर दिया, सर नहीं दिया" अर्थात् सिर तो दिया परन्तु मन की बातें नहीं दीं"।

तेगा दे० (पु०) तलवार, खड्ग।

तेज तद्० (पु०) तेजस्, प्रभाव, प्रताप, बल, चमक, प्रकाश।

तेजपात दे० (पु०) तज का पत्ता, एक गरम मसाला, तमालपत्र।

तेजमान् तद्० (गु०) प्रतापी, तेजस्वी, चमत्कारी, बली।

तेजवन्त तद्० (गु०) प्रतापी, चमकीला, चमत्कारी।

तेजबल तद्० (पु०) औषध विशेष।

तेजस् तत्० (स्त्री०) दीप्ति, ताप, प्रताप, प्रखरता, तीक्ष्णता, उग्रता, वेग, बल, वीर्य, सत्वरता, पराक्रम, तीव्रता, प्रभाव अग्नि, सुवर्ण।

तेजस्कर तत्० (गु०) तेज बढ़ानेवाले पदार्थ, पुष्टिकर।

तेजस्विनी तत्० (स्त्री०) महाज्योतिष्मती, महा प्रतापान्विता, तेजोयुक्ता।

तेजस्वी तत्० (गु०) प्रतापान्वित, प्रभाववाले, बलवान्, दीप्तिमान्।

तेजोमय तत्० (गु०) अग्निपुञ्ज, ज्योतिर्मय, मय, प्रकाशस्वरूप।

तेताला दे० (पु०) तिमहला, तीन खण्ड का तीन खण्ड की अटारी।

तेता दे० (गु०) तावत्, तितना, उस परिमाण का।

तेतो दे० (गु०) तितना।

तेपची दे० (स्त्री०) टाँका टीप।

तेमन तत्० (गु०) आर्द्रीकरण, ओदा, विशेष।

तेरस दे० (स्त्री०) त्रयोदशी तिथि।

तेरह दे० (गु०) दस तीन, १३, संख्याविशेष, अधिक दश।

तेरुस दे० (पु०) तीसरा वर्ष।

तेल तद्० (पु०) तैल, तिलविकार, स्निग्धद्रव्य। —चढ़ना (क्रि०) ब्याह की एक रीति, दूल्हा और दुलहिन के देह में हल्दी और तेल लगाना।

तेलिन दे० (स्त्री०) तेली की स्त्री, तेल बेचने वर्णसङ्कर जाति विशेष की स्त्री।

तेलिया दे० (पु०) एक रङ्ग विशेष, तेल का सा रङ्ग विषविशेष।

तेली दे० (पु०) जातिविशेष, वर्णसङ्करजाति, तैलकार।

तेवर दे० (पु०) घूमरी, चक्कर, तिर्मिरी।

तेवरस दे० (पु०) तेरुस, तीसरा वर्ष।

तेवराना दे० (क्रि०) घूमना, घूमराना, आना।

तेवरी दे० (स्त्री०) घुड़की, धमकी, झिड़की, और कड़ी कर के घुड़कना। —चढ़ाना (वा०) घुड़कना, आँखें दिखाना, भौं चढ़ाना, धमकाना।

तेवहार दे० (पु०) पर्व, उत्सव, उछाह।

ी दे० (श्र०) तैसा, सादृश्य, उस प्रकार, वैसा।
ंधा दे० (गु०) चूंधा, धुंधला, त्योंधा, अन्धा, ात का अन्धा।
दे० (पु०) क्रोध, कोप, भौंक, साहस, घमण्ड, अहङ्कार।
र दे० (स्त्री०) स्त्रियों के पैर के एक गहने का नाम।
दे० (पु०) तेह, क्रोध, कोप।
दे० (सर्व०) उसको, उसीको।
० (अ०) जितना, उतना, उस परिमाण में।
ल तद्० (पु०) कारण विशेष।
र तद्० (पु०) पक्षिविशेष, तित्तिरपक्षी, तित्तिर क्षियों का झुण्ड।
रीय तद्० (गु०) यजुर्वेदीय शाखाविशेष, यजु- द का विद्वान्, यजुर्वेदज्ञ।
रीयक तद्० (गु०) यजुर्वेद की एक शाखा का विद्वान्।
र दे० (गु०) उद्यत, प्रस्तुत।
ा दे० (क्रि०) पैरना, तरना, हेलना, पार ाना।
तद्० (पु०) तेल, तिल आदि से उत्पन्न चिक्कन दार्थ। —कार (पु०) वर्णसङ्कर जातिविशेष, ली। —किट्ट (पु०) तैलमल, तेल का मैल, तेल ा कीट।
तद्० (पु०) देशविशेष कर्णाटक देश का एक ान्त विशेष, उस देश के वासी, दशविध ब्राह्मणों अन्तर्गत एक ब्राह्मण विशेष।
ा दे० (पु०) तैलङ्गदेश निवासी, अँग्रेजी सेना सिपाही।
ारिका तद्० (स्त्री०) तिलचट्टा, तैलपा, पत- विशेष।
ाली तद्० (स्त्री०) पलीता, तैलिनी।
नी तद्० (स्त्री०) पलीता, बत्ती।
तद्० (पु०) तैलकार, तेली। (गु०) तेल सम्बन्धी, लमय।
तद्० (पु०) पौषमास, पूस का महीना।
तद्० (स्त्री०) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पूर्णिमा, पौषी र्णमासी, पूस की पूर्णिमा।

तैसा दे० (अ०) उसके समान, उसके सदृश।
तो दे० (अ०) तब, तदा, निसन्देह।
तों दे० (अ०) त्यों, इस प्रकार।
तोंद तद्० (स्त्री०) तुन्द, बड़ा पेट, जठर, लम्बा पेट।
तोंदी तद्० (स्त्री०) तुन्दिका, तोंद का मध्य, नाभि, नाभिकुहर।
तोंदैल तद्० (गु०) }
तोंदैला तद्० (गु०) } तुन्दिला, मोटा, स्थूलकाय, बड़ा पेटवाला।
तोंही दे० (अ०) उसी क्षण में, उसी काल में, उसी समय में।
तोक तद्० (पु०) सन्तति, सन्तान, पुत्र, कन्या।
तोकहं दे० (सर्व०) तुमको, तुझको।
तोटक तद्० (पु०) छन्दविशेष, द्वादशाक्षर छन्द, एक छन्द का नाम जिसके प्रतिपाद में बारह अक्षर होते हैं।
तोड़ दे० (पु०) टूट, फूट, खण्डन, भञ्जन, नदी का वेग, नदी का तेज, प्रवाह की प्रबलता, धारा की तीव्रता। दूध का या दही का पानी, तक, लों, तलक, पर्यन्त। —जोड़ (अ०) ठीक ठीक, नाप जोख, बहुत ही ठीक, यथार्थ, यथायोग्य, उचित। —डालना (क्रि०) विनाश करना, नष्ट करना, फोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना। —देना (क्रि०) खींचना, नोचना, फल फूल आदि का तोड़ना।
तोड़ना दे० (क्रि०) फोड़ना, टुकड़ा करना, रुपया भुनाना, रुपये के पैसे बदलाना।
तोड़ल दे० (पु०) बाला, कड़ा, कङ्कण, हाथ में पह- नने का गहना।
तो(तु)ड़वाई दे० (स्त्री०) बट्टा, कुड़ाई, रुपया भुनाने का दाम।
तो(तु)ड़वाना दे० (क्रि०) रुपया भुनाना, फोड़ाना, पुनः बनवाने के लिये गहने आदि का तुड़वाना।
तोड़ा दे० (पु०) रुपयों से भरी थैली, हज़ार रुपयों की थैली, चटका, पलीता, बत्तीसी, बत्ती जिससे तोप आदि में आग लगाई जाती है। सिकड़ी, गले की सीकरी, पैर में पहनने का चाँदी का एक भूषण।

तो(तु)डाना दे० (क्रि०) तोड़वाना तुड़वाना।

तोड़ी दे० (स्त्री०) सर्सों राई, अन्नविशेष।

तोतना दे० (क्रि०) निवार, दरी आदि बुनना, गूथना।

तो(तु)तला दे० (गु०) अस्फुटवाक्, अस्पष्टवक्ता, लड़बड़हा।

तोतलाना दे० (क्रि०) हकलाना, अस्पष्ट बोलना।

तोता दे० (पु०) पक्षिविशेष, शुक, सुआ, सुग्गा।

तोपड़ा दे० (पु०) मक्षिका, मक्खी, पक्षिविशेष।

तोपना दे० (क्रि०) ढाँकना, छिपाना, लुकाना, आच्छादित करना।

तोपाना दे० (क्रि०) गड़वाना, छिपवाना, लुकवाना।

तोबड़ा दे० (पु०) एक प्रकार की थैली, जिसमें घोड़ों को दाना खिलाया जाता है। चमड़े की थैली।

तोमड़ी या तुमड़िया दे० (स्त्री०) तुमड़ी, तूम्बी, साधुओं का जलपात्र।

तोमर तत्० (पु०) अस्त्रविशेष, बरछी, साग, भाला, यह अस्त्र हाथ से चलाया जाता है, एक लम्बे डण्डे में शूल लगा हुआ होता है। छन्द विशेष कविता का एक छन्द।—ग्रह (पु०) योद्धा, जो भाले से लड़ाई करते हैं।—धर (पु०) अग्नि, अनल, हुताशन।

तोय तत्० (पु०) जल, सलिल, वारि, नीर।—काम (पु०) परिव्याध जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का बेत, (गु०) जलाभिलाषी, जलप्रार्थी, जल चाहनेवाला।—द (गु०) जल देने वाला, तर्पण कर्त्ता। (पु०) मेघ, वारिद, घटा।—धर (पु०) वारिद, तोयद, मेघ, जलद।—धि (पु०) जलधि, समुद्र, सागर।—निधि (पु०) समुद्र, सागर, जलधि।—पिप्पली (स्त्री०) जलपीपल, जलज, शाकविशेष।—प्रसादन (पु०) कतकफल, निर्मली फल, शीतलचीनी जिसको पीस कर जल में डालने से जल साफ हो जाता है।—सूचक (पु०) भेक, वर्षाभू, मेंढक, जिसके बोलने से वृष्टि होने की सूचना मिलती है।

तोयाधिवासिनी तत्० (स्त्री०) [तोय वासिनी] लक्ष्मी, पाटला वृक्ष।

तोयाशय तत्० (पु०) जलस्थान, तड़ागादि।

तोर दे० (स्त्री०) दलहन विशेष। (सर्व०) तेरा।

तोरण तत्० (पु०) [तुर+अनट्] बहिर्द्वार, द्वार, उत्सव आदि में बाह्यद्वार लगाने का निर्मित वस्तुविशेष, वन्दनवार, [illegible] माला जो उत्सव में लटकायी जाती है, कण्ठी।

तोरी दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष, सरसों, राई।

तोल दे० (स्त्री०) तौल, जोख, नाप, परिमाण।

तोलक तत्० (पु०) अस्सी रत्ती भर, तोला। (गु०) बटखरा, बाँट तौलने वाला, तुलैया।

तोला तद्० (पु०) तोला, परिमाण विशेष, माशा, अस्सी रत्ती।

तोशक दे० (पु०) आस्तरण विशेष, [illegible] का गद्दा।

तोष तत्० (पु०) [तुष्+अल्] तुष्टि, तृप्ति, आनन्द, आह्लाद।

तोषक तत्० (गु०) [तुष्+णक्] हर्षजनक, तोषक, आनन्दक, परितोषकारक, धीरजदाता।

तोषण तत्० (पु०) [तुष्+अनट्] [illegible] आनन्दितकरण।

तोषित तत्० (गु०) हर्षित, धीरजवान्।

तोसखाना दे० (पु०) कोशागार, खजाना, आदि रखने का स्थान।

तोहि दे० (सर्व०) तुमको, तुझको।

तौसना दे० (क्रि०) गरमी से शिथिल होना, जन्य शिथिलता।

तौतातिक तत्० (पु०) तुतात भट्टकृत [illegible] विशेष।

तौर्य तत्० (पु०) मुरज आदि वाद्य विशेष, आदि बाजा।

तौर्यत्रिक तत्० (पु०) नृत्य, गीत और ये तीन।

तौल तत्० (पु०) तुला, परिमाण क्रिया, रीति, मापनदण्ड, जोख, तोल।

लना दे० (क्रि०) जोखना, परिमाण करना, तोलना।
लवाई तद्० (स्त्री०) तौलना, तौल करने का काम, तौलाई।
लाई तद्० (स्त्री०) तौल की मजूरी, बयाई।
लाना दे० (क्रि०) जोखवाना, तौल कराना।
लिया दे० (स्त्री०) छोटी अँगौछी, शरीर पोछने की अँगौछी।
ली दे० (स्त्री०) पात्रविशेष, बटलोही, जिसमें भात आदि बनाये जाते हैं।
ही दे० (अ०) तौभी, तब भी, तथापि, इस पर भी।
हू दे० (अ०) तथापि, तौभी, तौही।
क तद्० (गु०) [त्यज् + क्त] कृतत्याग, उज्झित, विसर्जित, छोड़ा हुआ, त्याग किया हुआ, विरक्त, विक्षिप्तचित्त।—जीवन (पु०) गतप्राण, मृत।
काग्नि तद्० (पु०) अग्नि रहित ब्राह्मण, अग्निहोत्र रहित।
ाग तद्० (पु०) [त्यज् + घञ्] दान, वर्जन, उत्सर्ग, विरक्त, वैराग्य।—पत्र (पु०) वर्ज्जनपत्र, फारखती।—शील (पु०) दाता, दानशील।
ागन दे० (पु०) त्यजन, त्याग, विराग।
ागना दे० (क्रि०) छोड़ना, तजना, त्याग करना।
ागी तद्० (गु०) दाता, शूर, वर्जनशील, त्यागकारी, विसर्जक, कर्मफल को त्यागने वाला, वैरागी, छोड़ने वाला।
ाजित तद्० (गु०) त्यक्त, विसर्जित, छोड़ा हुआ।
ाज्य तद्० (गु०) त्यागयोग्य, वर्जनीय, परित्याग करने के उपयुक्त, त्याग करने योग्य, छोड़ने योग्य।
ों दे० (अ०) उस प्रकार से, उसी रीति से।
ोंधा दे० (गु०) रात का अन्धा, रतौंधिया, चुन्धला।
ोनार दे० (स्त्री०) निपुणता, दक्षता, कुशलता, चतुराई।
त्योनारी दे० (स्त्री०) कर्म निपुण स्त्री, अपने काम को चतुरता पूर्वक स्वच्छ बनानेवाली स्त्री।
त्योरी दे० (स्त्री०) शरीर के चमड़ों पर सिकुड़न, घुड़की, धमकी।—चढ़ाना (क्रि०) क्रुद्ध होना, आँखें बदलना।
त्योरुस दे० (पु०) वर्तमान वर्ष से दो वर्ष पहले या पीछे।
त्रपा तद्० (स्त्री०) [त्रप् + आ] व्रीडा, लज्जा, लाज —कर (पु०) लज्जाकर, व्रीड़ाशील।—न्वित (गु०) त्रपान्वित, सलज्ज, व्रीडायुक्त, लज्जालु।—भर (पु०) पूर्णलज्जा, अधिक लज्जा।—वान् (गु०) त्रपायुक्त, त्रपान्वित, लज्जायुक्त।
त्रपित तद्० (गु०) [त्रप + क्त] लज्जित, लज्जाप्राप्त, सलज्ज।
त्रपिष्ठ तद्० (गु०) अत्यन्त लज्जित, अतिशय व्रीड़ान्वित, सलज्ज।
त्रपु तद्० (पु०) सीसा, राँगा।
त्रपुरी तद्० (स्त्री०) छोटी इलायची।
त्रय तद्० (गु०) तीन, तीन की संख्या, ३।—गङ्गा (स्त्री०) तीन गङ्गा, यथाः—मन्दाकिनी, भागीरथी और प्रभावती।—ताप (स्त्री०) तीन ताप, दैहिक, दैविक, और भौतिक।—पावक (पु०) तीन अग्नि, आहवनीय, दक्षिणाग्नि और गार्हपत्याग्नि, अथवा जठरानल, दावानल, और बड़वानल।—रेखा (स्त्री०) तीन लकीर।—रोग (पु०) वातपित्त और कफ से उत्पन्न।
त्रयी तद्० (स्त्री०) [त्रय + ई] वेदत्रय, ऋग्, यजुः और साम ये तीन वेद, पुरन्ध्री, गृहिणी, सुमन्ती, सोमराजी वृक्ष।—तनु (पु०) सूर्य, भास्कर, रवि।—धर्म (पु०) वेदोक्तधर्म, कर्मकाण्ड।—मय (पु०) ईश्वरीय, ईश्वर।—मुख (पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र।
त्रयोदश तद्० (गु०) संख्या विशेष, तेरह की संख्या, तेरह संख्या की पूर्ति करने वाली संख्या, १३।
त्रयोदशी तद्० (स्त्री०) तिथिविशेष, चन्द्रमा की तेरहवीं कला के बढ़ने या क्षय होने का समय, तेरस, तेरहवीं तिथि।

त्रसरेणु तत्० (पु०) तीस परमाणुओं का परिमाण, अणु परिमाण, गवाक्ष के सूक्ष्म छिद्रों से जो सूर्य की किरणें आती हैं उनमें जो कण कण सा दीख पड़ता है उसके साठवें भाग को परमाणु कहते हैं तीन परमाणुओं का त्रसरेणु होता है।

त्रसित तद्० (गु०) त्रस्त, डरा हुआ, भयभीत, भीत, शङ्कित, शङ्कान्वित।

त्रस्त तत्० (गु०) शङ्कित, त्रासप्राप्त, भीत।

त्राण तत्० (पु०) [त्रै + अनट्] रक्षण, उद्धारकरण, निस्तार, उद्धार।—कर्त्ता (गु०) रक्षक, उद्धारकर्त्ता, रक्षा करने वाला।

त्राणी तत्० (गु०) त्राणकर्त्ता, रक्षक।

त्रात तत्० (गु०) [त्रै + क्त] रक्षित, कृतरक्षा, उद्धृत, परित्रात।

त्राता तत्० (पु०) [त्रै + तृण्] रक्षाकर्त्ता, त्राणकर्त्ता, उद्धारक, बचाने वाला, रक्षा करनेवाला।

त्रायमाण तत्० (गु०) [त्रै + शान] रक्ष्यमाण, प्राप्तरक्षण, रक्षित।

त्रास तत्० (पु०) [त्रस + घञ्] भय, शङ्का, डर, हीरा आदि मणियों का एक प्रकार का दोष। —दायी (गु०) [त्रास + दा + णिन्] भयदाता, शङ्कादायक, भयप्रदर्शक, भयदायक, भयप्रद।

त्रासक तत्० (गु०) त्रासदायी, भयदायक, भयदाता।

त्रासा तद्० (गु०) शङ्कित, भीत, भयमान।

त्रासित तत्० (गु०) [त्रस् + णिच् + क्त] भयान्वित, डरपाया गया।

त्राह तद्० (क्रि०) त्राहि, बचाओ, रक्षा करो, त्राण करो —करना (वा०) रक्षा करने के लिये पुकारना, दुःख से व्याकुल होकर रक्षक को पुकारना।

त्राहि तत्० (क्रि०) रक्षा करो, बचाओ, त्राण करो।

त्रि तत्० (गु०) संख्या विशेष वाचक, तीन संख्या का वाचक, ३, इसका योग अन्य शब्दों के साथ आदि और अन्त में किया जाता है। जब यह शब्दों के आदि में आता है, तब इसका ठीक रूप रहता है, परन्तु जब यह शब्दों में आता है तब त्रि के स्थान में त्रय हो जाता। यथा—त्रिभुवन, त्रिदण्ड, त्रिमूर्ति, त्रिदेव तापत्रय, वेदत्रय, भुवनत्रय, दण्डत्रय आदि।

त्रिंश तत्० (गु०) तीसवाँ, तीस संख्या को करने वाली संख्या।

त्रिंशति तत्० (गु०) तीस, ३०।

त्रिक तत्० (पु०) तीन संख्या, त्रिपथ स्थान, सुहानी, त्रिफला, त्रिकटु, तिरछी, पेड़ सीनवस।

त्रिककुत् तत्० (पु०) पर्वत विशेष, त्रिकूट पर्वत

त्रिकच्छ तत्० (पु०) धोती पहनने की रीति, के अनुसार धोती पहनना, तीन काँछ।

त्रिकट तत्० (पु०) गोक्षुरीलता, गोखरू।

त्रिकटु तत्० (पु०) मिर्च, सोंठ, पीपल मिश्रण।

त्रिकाल तत्० (पु०) भूत, भविष्यत्, वर्तमान प्रातः, मध्याह्न, संध्या काल।—ज्ञ (पु० (गु०) सर्वज्ञ, त्रिकालवेत्ता।—दर्शी (पु०) मुनि, (गु०) त्रिकालज्ञ।

त्रिकुट तत्० (पु०) सिंघाड़ा।

त्रिकुटा तत्० (पु०) सोंठ, मिर्च, पीपर।

त्रिकूट तत्० (पु०) पर्वत विशेष, इसी पर्वत लङ्का नगरी बसी है।—यथाः—

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका,
तहँ रह रावण सहज अशङ्का।

—तु

त्रिकोण तत्० (गु०) तीन कोण, त्रिकोण क्षि जो स्थान त्रिकोण रेखा के अन्तर्गत है। योनि, भग, लग्न से पाचवीं और नवाँलग्न को कहते हैं।—मिति (स्त्री०) त्रिकोण वस्तु मापनेवाली विद्या।

त्रिगण तत्० (पु०) त्रिवर्ग, धर्म, अर्थ, ये तीन।

त्रिगर्त तत्० (पु०) देशविशेष, जालन्धर, पञ्जाब का एक प्रान्त विशेष।

त्रिगुण तत्० (पु०) सत्व, रज, और तमोगुण। (गु०) तीन से गुणित जो तीन संख्या से गुणा गया हो। —**कृत** (वि०) तीन बार जोता हुआ खेत, तीन चासा। —**तीत** (पु०) ब्रह्म, परम पुरुष। (गु०) निर्गुण, जीवनमुक्त, ज्ञानी। —**त्मक** (गु०) गुणत्रयविशिष्ट, संसार के पदार्थ।

त्रिचतुर तत्० (गु०) तीन या चार, अनिश्चित।

त्रिजगत् तत्० (पु०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल।

त्रिजग तत्० (पु०) त्रिजगत्, तीनलोक, त्रिभुवन। —**योनि** (पु०) त्रिभुवनकर्त्ता, त्रिजग को बनाने वाला।

त्रिजटा तत्० (स्त्री०) लङ्केश्वर रावण के अन्तःपुर की एक राक्षसी, यह सीता की रक्षा करने के लिये नियुक्त की गयी थी। दूसरी राक्षसियों का व्यवहार सीता के साथ अत्यन्त निष्ठुर और क्रूर था। परन्तु त्रिजटा के हृदय में सीता की अलौकिता अङ्कित हो गयी थी, त्रिजटा सीता के प्रति दयापूर्ण व्यवहार करती थी।

त्रिज्या तत्० (स्त्री०) व्यासार्द्ध रेखा, आधे विस्तार की रेखा।

त्रिणता तत्० (स्त्री०) धनुष, धनुष्य, कार्मुक, कमान।

त्रिणाचिकेत तत्० (पु०) यजुर्वेद का एक अध्याय, यजुर्वेद का एक भाग, यजुर्वेदाध्यायी।

त्रित तत्० (पु०) गौतम मुनि का पुत्र, एकत और द्वित नामक इनके दो भाई और थे। ये तीनों अत्यन्त तपस्वी थे। त्रित अपने अन्य दो भाइयों की अपेक्षा अधिक विद्वान् और कर्मी थे। एक समय ये तीनों भाई पशु-संग्रह करने के लिये किसी गाँव में गये। पशुसंग्रह हो जाने के पश्चात् त्रित को वन में छोड़कर दोनों भाई घर चले आये। वहाँ एक भेड़िया त्रित की ओर बढ़ा, उससे डर कर यह भागे। भागते भागते यह एक कुए में गिर गये। उसी कूप में त्रित ने सोम यज्ञ किया। कहते हैं उस यज्ञ में देवगण उपस्थित हुए थे और उसी कूप में सरस्वती नदी का भी आविर्भाव हुआ था। इसी कारण उस कूप का उदपानतीर्थ नाम पड़ा। उस कूप का जल पीने से सोमरस पीने का फल होता है। त्रित के शाप से इनके दोनों भाई भेड़िया होगये, और वे वन में घूमने लगे।

त्रितय तत्० (पु०) तीन की पूरक संख्या, तीन संख्या, ३।

त्रिदण्ड तत्० (पु०) संन्यासाश्रम, चौथा आश्रम, यति, आश्रम। —**धारण** (पु०) संन्यासियों का दण्डग्रहण विशेष, संन्यास आश्रम ग्रहण करते समय कायदण्ड, वाग्दण्ड और मनोदण्ड का ग्रहण करना। दण्ड ग्रहणविधि।

त्रिदण्डी तत्० (पु०) [त्रिदण्ड+इन्] त्रिदण्डधारी-यति, संन्यासी विशेष, त्रिदण्ड धारण करने वाले संन्यासी, यज्ञोपवीत, उपवीत, जनेऊ।

त्रिदश तत्० (पु०) देवता, सुर, अमर। —**दीर्घिका** (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, मन्दाकिनी, गङ्गा। —**नदी** (स्त्री०) मन्दाकिनी, स्वर्गगङ्गा। —**वधू** (स्त्री०) देव स्त्री, त्रिदश वनिता, देवाङ्गना, अप्सरा। —**मञ्जरी** (स्त्री०) तुलसी, बहुमञ्जरी। —**ङ्कुश** (पु०) [त्रिदश+अङ्कुश] अशनि, वज्र। —**चार्य** (पु०) [त्रिदश+आचार्य] देवगुरु, बृहस्पति। —**युध** (पु०) [त्रिदश+आयुध] वज्र, अशनि। —**रि** (पु०) [त्रिदश+अरि] दनुज, दानव, दैत्य। —**लय** (पु०) [त्रिदश+आलय] स्वर्ग, त्रिविष्टप, सुमेरुपर्वत। —**वास** (पु०) स्वर्ग, सुरपुरी, देवलोक, सुमेरुपर्वत। —**हार** (पु०) [त्रिदश+आहार] अमृत, सुधा, पीयूष। —**श्वरी** (स्त्री०) [त्रिदश+ईश्वरी] देवी, दुर्गा।

त्रिदिव तत्० (पु०) स्वर्ग, आकाश, अन्तरिक्ष। —**वाद** (पु०) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष।

त्रिदिवौकस् तत्० (पु०) [त्रिदिव+ओकस्] स्वर्गस्थ, स्वर्ग में रहनेवाले देवता, अमर।

त्रिदोष तत्० (पु०) वात पित्त और कफ का विकार, दोषत्रय। —**घ्न** (पु०) औषध विशेष, जिससे

त्रिदोष अच्छा होता है। त्रिदोष नाशक औषध।
—ज (पु०) त्रिदोष जनित रोग, सन्निपात रोग।

त्रिधा तत्० (पु०) तीन प्रकार, त्रिविध।

त्रिधातु तत्० (पु०) गणेश, हेरम्ब, गणेश की मूर्ति तीन धातु की अधिक प्रशस्त है अतएव गणेश को त्रिधातु कहते हैं। धातुत्रय, तीनधातु, सोना, चाँदी और ताँबा।

त्रिधामा तत्० (पु०) शिव, विष्णु, और अग्नि, धामत्रय।

त्रिधारा तत्० (स्त्री०) तीनधारा, स्रोतत्रय।

त्रिध्वनि तत्० (स्त्री०) तीन प्रकार की ध्वनि, मधुर, मन्द और गम्भीर।

त्रिनयन तत्० (पु०) शिव, शम्भु, महादेव (पु०)। नयनत्रय।

त्रिनयना तत्० (स्त्री०) दुर्गा, भगवती।

त्रिनेत्र तत्० (पु०) शम्भु, महादेव।—चूडामणि (पु०) शशधर, चन्द्र, चन्द्रमा।

त्रिपञ्चाशत् तत्० (पु०) संख्या विशेष, तिरपन तीन अधिक पचास, ५३।

त्रिपताक तत्० (पु०) रेखा त्रयाङ्कित कपाल, नाटक के अभिनय की एक मुद्रा, तीन अँगुलियों के सङ्केत से दूसरे को रोककर एक आदमी के साथ रहस्य भाषण करना।

त्रिपथगा तत्० (स्त्री०) गङ्गा, भागीरथी।

त्रिपद तत्० (पु०) पदत्रय, त्रिरेखायुक्त।

त्रिपदा तत्० (स्त्री०) वृक्षविशेष, हसपदी वृक्ष, गायत्री छन्द।

त्रिपदिका तत्० (स्त्री०) धातुनिर्मित शङ्ख रखने की तिपाई।

त्रिपदी तत्० (स्त्री०) हाथी के बाँधने की रस्सी, भाषा कविता का एक छन्द।

त्रिपर्णी तत्० (स्त्री०) शालपर्णी, वनकपासी।

त्रिपाट तत्० (पु०) क्षेत्रविद्या भेद।

त्रिपाद् तत्० (पु०) विष्णु, नारायण, ज्वर, छन्द विशेष, गायत्री छन्द।

त्रिपादिका तत्० (स्त्री०) हसपदी लता।

त्रिपु दे० (पु०) सीसा, धातु विशेष, राँगा।

त्रिपुसी दे० (स्त्री०) इन्द्र, वरुण, इनारुन।

त्रिपुरा तत्० (स्त्री०) [त्रिपुर+आ] हंसपदी, मल्लिका, त्रिवृत्।

त्रिपुण्ड तद्० (पु०) तिलक विशेष, जिसमें तीन रेखाएँ होती हैं।

त्रिपुण्ड्र तत्० (पु०) तीन रेखा का तिलक, भस्म आदि से मस्तक पर बनायी टेढ़ी लकीर, तीन रेखा, त्रिपुण्ड, दैत्यविशेष।

त्रिपुर तत्० (पु०) मय दानव निर्मित पुरत्रय, दैत्य विशेष।—दहन (पु०) त्रिपुरान्तक, महादेव, शिव, त्रिपुरारि।

त्रिपुरा तत्० (स्त्री०) देवी विशेष, एक देवी का नाम।

त्रिपुरान्तक तत्० (पु०) त्रिपुर दहन, शिवमहादेव, शम्भु।

त्रिपुरारि तत्० (पु०) महादेव का एक नाम, पुरत्रय के नाश करने से महादेव ने यह नाम पाया है। तारकासुर के तीन पुत्र थे, जिनका नाम तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली था। इन तीनों ने तपस्या करके ब्रह्मा से वर पाया था कि—"तुम लोग तीन नगर में वास करो। हजार वर्ष के बाद वे नगर आपस में मिलेंगे, उस समय जो बाण से उन नगरों का नाश कर सके उसीके द्वारा तुम लोगों का वध होगा। यह वर पाकर उन्होंने मय दानव को तीन नगर बनाने का आदेश दिया, मय ने अपने तपोबल से स्वर्ग में सोने का, अन्तरिक्ष में रजत का, और मर्त्यलोक में लोहे के तीन नगर बनाये। कमलाक्ष, स्वर्ग में तारकाक्ष अन्तरिक्ष में और विद्युन्माली मर्त्यलोक में वास करता था। तारकाक्ष के हरि नाम पुत्र ने भी तपस्या की और उसने भी ब्रह्मा से वर पाया कि उसके नगर के एक सरोवर में उसके द्वारा मृतव्यक्ति को डुबाने से वह उसी समय जीवित हो उठेगा। ब्रह्मा के ऐसे वर पाकर

असुरों का अत्याचार बहुत ही बढ़ गया। उनके अत्याचार से पीड़ित होकर देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने विचारा कि बिना महादेव के इन असुरों का विनाश दूसरे से नहीं होगा। अतएव देवताओं को साथ लेकर ब्रह्मा महादेव के पास गये। ब्रह्मा के मुख से असुरों के अत्याचार की बात सुनकर महादेव को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने देवताओं के कल्याण के लिये असुरों के विनाश करने का सङ्कल्प किया। वह दिव्य रथ पर आरूढ़ हुए। ब्रह्मा सारथि बने। थोड़ी दूर जाकर वह घोड़े पर चढ़े, पुनः बैल पर चढ़कर उन्होंने असुरों के नगर देखे। उसी समय उन्होंने अश्वों का स्तन काटा और बैल के खुर बीच से फाड़ दिये। महादेव धनुष पर पाशुपत अस्त्र चढ़ाकर तीनों नगरों के मिलान की प्रतीक्षा करने लगे। जब वे पुर मिलने लगे उसी समय महादेव ने बाण छोड़कर उन तीनों नगरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। पुर के वासी चिल्लाने लगे, महादेव ने उन सभी को जलाकर पश्चिम समुद्र में फेंक दिया। देवता निष्कण्टक होगये।

त्रपुस दे० (पु०) खीरा, फलविशेष।

त्रिपौलिया दे० (पु०) सिंहद्वार, राजमहल का पहला द्वार, तीन द्वार का मकान।

त्रिफला तत्० (स्त्री०) समभाग मिश्रित आँवला, हर्र, और बहेड़ा फल।

त्रिभङ्ग तत्० (पु०) तीन अङ्ग का भङ्ग, मूर्ति विशेष।

त्रिभङ्गा तद्० (पु०) टेढ़ा खड़ा होना।

त्रिभङ्गी तत्० (पु०) छन्दविशेष, श्रीकृष्ण की एक मूर्ति विशेष।

त्रिभुज तत्० (पु०) त्रिकोण रेखा, तीन भुजा का तिनकोना।

त्रिभुजात्मक तत्० (पु०) [त्रिभुज + आत्मक] त्रिभुज, त्रिकोण।

त्रिभुवन तत्० (पु०) त्रिलोकी, त्रैलोक्य, तीनलोक, स्वर्ग मर्त्य और पाताल।

त्रिमधु तत्० (पु०) ऋग्वेद का एक भाग, मधुवाता आदि तीन ऋचाओं का वेत्ता।

त्रिमुखा तत्० (स्त्री०) बुद्ध देवता भेद, मायादेवी।

त्रिमूर्ति तत्० (पु०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्ति।

त्रिमुहानी दे० (स्त्री०) तीन मार्गों का मिलान, जहाँ तीन मार्ग मिले हों।

त्रिया दे० (स्त्री०) नारी, स्त्री, कामिनी, वनिता।

त्रियामा तत्० (स्त्री०) [त्रि + याम + आ] रात्रि, रजनी, निशा, यमुना।

त्रियुग तत्० (पु०) विष्णु, नारायण।

त्रियोनि तत्० (पु०) लोभ आदि से उत्पन्न कलह।

त्रिलोक तत्० (पु०) तीन लोक, त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल।

त्रिलोकी तत्० (स्त्री०) तीन लोकों का समूह, यथा— भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक, त्रिभुवन, त्रिजगत्।—नाथ (पु०) तीनों लोकों के नाथ, विष्णु, ईश्वर, भगवान्।

त्रिलोचन तत्० (पु०) त्रिनेत्र, त्रिनयन, महादेव, शम्भु।

त्रिलोहक तत्० (पु०) सोना, चाँदी और ताँबा ये तीन धातु।

त्रिवर्ग तत्० (पु०) धर्म अर्थ और काम, त्रिगुण सत्व रज और तम।

त्रिवर्षात्मक तत्० (पु०) त्रैवार्षिक, तीन वर्ष का, तीन साल का।

त्रिवर्षिका तत्० (स्त्री०) त्रिहायणी, त्रिवर्षागौ, तीन वर्ष की गौ।

त्रिवली तत्० (स्त्री०) जठर का अवयव विशेष, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएं।

त्रिविक्रम तत्० (पु०) वामनावतार विष्णु, वामन भगवान्, इनकी कथा प्रसिद्ध है।

त्रिविक्रमभट्ट तत्० (पु०) संस्कृत के एक कवि का नाम, ये कवि प्रसिद्ध विद्वान् देवादित्य शर्मा के पुत्र थे। बाल्यावस्था में पढ़ने लिखने की ओर इनकी विशेष रुचि नहीं थी, इनके पिता ग्रामान्तर गये। उसी समय एक विदेशी पण्डित राजा के यहाँ आये और उन्होंने शास्त्रार्थ करने के लिये राजा से कहा। तब राजा का राजपण्डित त्रिवि-

क्रमभट्ट के पिता ही थे। राजा ने उन्हें बुलवाया, उनके उपस्थित न रहने के कारण त्रिविक्रमजी राजा के समाप गये, राजा ने उनका शास्त्रार्थ करने को कहा, और दिन भी नियत कर दिये। विद्या में विशेष परिचय न होने के कारण वह चिन्तित हुए और सरस्वती के मन्दिर में जाकर भगवती की आराधना करने लगे। भगवती प्रसन्न हुईं और पिता के न आने तक सब शास्त्र के ज्ञान होने का इन्हें वर दिया। इन्होंने शास्त्रार्थ में वादी को जीता, और ये नलचम्पू नामक ग्रन्थ बनाने लगे। सात उछ्वास तक इन्होंने बनाया था कि इनके पिता बाहर से चले आये, अतएव विवश होकर नलचम्पू इन्हें अधूरा ही छोड़ देना पड़ा। खृष्टीय आठवीं शताब्दी इनका समय अनुमान से सिद्ध किया गया है।

त्रिविधि तद्० (पु०) तीन प्रकार, तीन धारा, त्रिधा।

त्रिवेणी तद्० (स्त्री०) स्थान विशेष, गङ्गा और यमुना का सङ्गम स्थान।

त्रिवेद तद्० (पु०) ऋक् यजु और साम ये तीन वेद।

त्रिशङ्कु तद्० (पु०) बिडाल, शलभ, चातक, पक्षी, खद्योत, राजाविशेष, सूर्य वंशीयराजा, इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिये इन्होंने महर्षि वशिष्ठ को यज्ञ कराने के लिये कहा था। इनकी अभिलाषा पूर्ति को वशिष्ठ ने असम्भव बतलाया। तब ये वशिष्ठजी के पुत्रों के पास गये और उनसे अपनी अभिलाषा कह सुनायी। उन्होंने कहा कि जिस काम के विषय में पिता की असम्मति है उस काम को करना हम लोगों को उचित नहीं है। तब त्रिशङ्कु ने कहा कि जब तुम लोग यज्ञ नहीं कराओगे तब मैं दूसरा गुरु करलूँगा। वशिष्ठ के पुत्रों न उन्हें शाप दिया, तदनुसार वह चाण्डाल हो गये। तदनन्तर विश्वामित्र के पास त्रिशङ्कु गये, और अपना मनोरथ कह सुनाया। विश्वामित्र ने अपने योगबल से सभी बातें जानली और वह यज्ञ कराने के लिये प्रस्तुत हो गये। उस यज्ञ में ऋषि और देवताओं को निमन्त्रित किया, केवल वशिष्ठ पुत्र और महोदय नामक ऋषि निमन्त्रित नहीं किये गये थे। वशिष्ठ के पुत्रों ने आपत्ति की कि जिस यज्ञ में क्षत्रिय अध्वर्यु और चाण्डाल यजमान है, उस यज्ञ में देवता और ऋषिगण क्योंकर जा सकते हैं। यह सुन विश्वामित्र को बड़ा क्रोध हुआ। विश्वामित्र ने वशिष्ठ के पुत्रों को कुक्कुर माँस भोजी डोम और महोदय को निषाद हो जाने का शाप दिया। विश्वामित्र के अनुरोध से अन्यान्य महर्षियों ने यज्ञ प्रारम्भ किया, परन्तु कोई भी देवता नहीं आये। इससे विश्वामित्र का क्रोध और भी बढ़ा और वे अपनी तपस्या के बल से उसे स्वर्ग भेजने का प्रयत्न करने लगे। इन्द्र ने उनको ऐसा नहीं करने दिया। फिर क्या था विश्वामित्र एक नयी सृष्टि रचने लगे। सप्तऋषि मण्डल और नक्षत्रों की उन्होंने सृष्टि की, यह देखकर देवों ने विश्वामित्र को समझाया, विश्वामित्र ने कहा त्रिशङ्कु को नीचे नहीं गिरने देंगे। देवों ने यह मान लिया, तबसे त्रिशंकु अन्तरिक्ष में सिर नीचे किये हुए लटका हुआ है।

(२) हरिवंश में एक दूसरे त्रिशङ्कु की कथा लिखी मिलती है। यह ऐय्यावरुण के पुत्र थे। इनका पहला नाम सत्यव्रत था। इन्होंने दूसरे की ब्याही स्त्री को हर लिया था। इससे इनके पिता अप्रसन्न हुए थे। तदनन्तर गुरु वशिष्ठ की धुधा गौ मार कर इसने गोमांस खाया, इन्हीं तीन पापों के कारण इसका त्रिशङ्कु नाम पड़ा था। इसकी अधार्मिकता के कारण पिता ने उसे अपने राज्य से निकाल दिया था। इसकी दुर्दशा देखकर विश्वामित्र को दया आई। उन्होंने त्रिशङ्कु को पिता का राज्य दिलवा दिया। इसी शरीर से स्वर्ग भेजने के लिये विश्वामित्र ने यज्ञ कराया था। देवताओं ने इसे स्वर्ग में स्थान दिया, इसकी स्त्री का नाम सत्यरथा था। सत्यरथा के गर्भ से हरिश्चन्द्र नामक त्रिशङ्कु का एक पुत्र हुआ था। यह पुण्यात्मा हरिश्चन्द्र त्रैशङ्कव नाम से पुकारा जाता है।

त्रशूल तत्० (पु०) अस्त्र विशेष, महादेव का अस्त्र।
—धारी (पु०) शिवास्त्रधारी, महादेव, शम्भु।
—पाणि (पु०) महादेव।

त्रशूली तत्० (पु०) शिव, महादेव, महेश।

त्रिशृङ्ग तत्० (पु०) त्रिकूट पर्वत, त्रिकोण।

ष्टुप् तत्० (स्त्री०) छन्दोविशेष, एक वैदिक छन्द का नाम।

सन्धि तत्० (स्त्री०) पुष्प विशेष।

सन्ध्य तत्० (पु०) सायं, प्रातः और मध्यान्ह काल।
—व्यापिनी (स्त्री०) त्रिसन्ध्या के अन्तर्गत कियत् क्षण व्यापिनी तिथि।

सन्ध्या तत्० (स्त्री०) प्रातः, सायं और मध्यान्ह काल।

टि तत्० (स्त्री०) क्षति, हानि, अपचय, नाश, न्यूनता, आज्ञालङ्घन, प्रतिज्ञा का अन्यथा करना, भ्रम, अपराध, संशय, कालभेद मुहूर्त, क्षण द्वया-त्मक काल, अल्प, संशय। —कारक (पु०) क्षति-कारक, हानिकारी, दोषी, अपराधी।

टित तत्० (गु०) खण्डित, भग्न, क्षत, टूटा हुआ।

टी तत्० (स्त्री०) त्रुटि देखो।

ता तत्० (स्त्री०) युग विशेष, दूसरा युग, इस युग का मान १२९६००० वर्ष का है। यज्ञाग्नि विशेष, यज्ञ के तीन दक्षिणाग्नि गार्हपत्य, और आहवनीय अग्नि। —ग्नि (पु०) [त्रेता+अग्नि] यज्ञ के अग्नित्र का रक्षा करने वाला, आहिताग्नि।
—युगाद्या (स्त्री०) त्रेतायुग की आरम्भ तिथि, कार्तिक शुक्ला नवमी।

धा तत्० (अ०) [त्रि+धा] त्रिधा, तीन प्रकार।

गुण्य तत्० (पु०) त्रिगुण का धर्म, त्रिगुण का, स्वभाव, सत्वरज और तम इनका समुदाय।

गिक तत्० (गु०) त्रिवर्ग सम्बन्धी।

र्षिक तत्० (गु०) वर्ष त्रयात्मक, तीन वर्ष का त्रिसांवत्सरिक।

द्य तत्० (पु०) त्रिवेदज्ञ, वेदत्रयवेत्ता।

ध्य तत्० (गु०) प्रकारत्रय, तीन प्रकार।

त्रैमासिक तत्० (गु०) त्रिमासी, तीन मास सम्बन्धी, तीन मास का।

त्रैराशिक तत्० (पु०) अङ्क प्रकरण विशेष, जिसमें एक वस्तु का मूल्य जानने से तीन वस्तुओं का मूल्य जाना जाता है। तीन की संख्या का गणित सम्बन्धी नियम।

त्रैलिङ्गस्वामी तत्० (पु०) इन महात्मा का जन्म दाक्षिणात्य ब्राह्मण वंश में हुआ था। सन् १५२९ ई० के पूस महीने में विजिना ज़िला के होलिया ग्राम में इनका जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम नृसिंहधर था, यह बड़े धनी थे। इनकी दो स्त्री थीं। बड़ी स्त्री के गर्भ से त्रैलिङ्गधर उत्पन्न हुए थे। यही त्रैलिङ्गधर पीछे त्रैलिङ्ग स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए। त्रैलिङ्ग की ४० वर्ष की अवस्था में उनके पिता का स्वर्गवास हुआ। पिता के वियोग के अनन्तर इन्होंने अपनी माता से शास्त्रों का अध्ययन और योगाभ्यास की शिक्षा पायी। इनकी ५२ वर्ष की अवस्था में इनकी माता का परलोकवास हुआ। माता के अन्तिम संस्कार के बाद पुनः ये घर नहीं लौटे। इनके छोटे भाई ने घर चलने के लिये बहुत विनय किया, परन्तु इन्होंने कुछ नहीं सुना। तदनन्तर इनके छोटे भाई ने इनके लिये वहीं मकान बनवा दिये, और भोजन की भी व्यवस्था कर दी। इसी समय भगीरथ स्वामी नामक योगी के साथ इनका परिचय हुआ। त्रैलिङ्ग इन्हीं स्वामीजी के साथ पुष्कर तीर्थ को गये, और वहाँ इन्होंने योग के गूढ़तत्वों का ज्ञान प्राप्त किया। इन्होंने उन्हींसे मन्त्रग्रहण भी किया। कुछ दिनों के बाद भगीरथ स्वामी, अनेक तीर्थों में घूमते हुए सेतुबन्ध रामेश्वर पहुँचे। वहाँ से स्वामीजी सुदामापुरी की ओर आगे बढ़े। वहाँ स्वामीजी के वर से एक दरिद्र ब्राह्मण धनी और पुत्रवान् हुआ था। स्वामीजी का अलौकिक प्रभाव देखकर लोग बेटा धन आदि के लिये उन्हें सताने लगे। अतएव विवश होकर स्वामीजी वहाँ से हिमालय की ओर नैपाल राज्य में गये, और कुछ दिनों तक वहीं योगाभ्यास करते रहे। वहाँ सर्दी की अधिकता के कारण स्वामीजी, पुनः

ैला दे० (पु०) स्तन का रोग विशेष, स्तन का घाव।

ेश्वरी तद्० (पु०) कुरुक्षेत्र के रहनेवाले ब्राह्मण।

क दे० (पु०) थाप, ठोक, थुमकार।

ड़ा दे० (पु०) थपत, चपेटा, थप्पड़।

ड़ी दे० (स्त्री०) करतालो, हाथों से ताली देना।

ना तद्० (क्रि०) स्थापना, बैठाना, स्थापित करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना।

ा तद्० (पु०) स्थापित, प्रतिष्ठापित, स्थापना किया हुआ।

ाना तद्० (क्रि०) स्थापना कराना, प्रतिष्ठित कराना।

ड़ा दे० (पु०) थौल, चपेटा, थपड़ा।

पड़ दे० (पु०) थपत, चपेटा, थाप।

तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भ, पाया।

ड़ा दे० (पु०) तुन्दिल, तोंदैल, बड़े पेटवाले।

ना, थंभना दे० (क्रि०) रुकना, थंभना ठहरना।

दे० (पु०) सिंह बाघ का खोह, बीहड़ जङ्गल, बीरान वन।

थर दे० (पु०) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प, बहुत कम्प, यथा—"जाड़े से थरथर कांपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्नान करने गया।"

थराना दे० (क्रि०) काँपना, कम्पित होना, भय से काँपना।

थराहट दे० (स्त्री०) कम्प।

थरी दे० (स्त्री०) कपकपी।

दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भयभीत आगामी भय की चिन्ता से काँपना।

हराना दे० (क्रि०) चिन्ता से काँपना।

ाना दे० (क्रि०) कम्पित होना, कम्पित करना, कँपा देना, शङ्कित करना।

तद्० (पु०) स्थल, जगह, ज़मीन, ठाँव, धरती, स्थान।

कना दे० (क्रि०) धड़कना, फड़कना, तलफना, उथल पुथल होना।

थलथलाना दे० (क्रि०) सामान्य आघात से भी हिलने लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मोटे आदमियों का माँस हिलता है।

थलचर तद्० (पु०) स्थलचारी, भूमि पर चलनेवाले मनुष्य आदि।

थलबेड़ा दे० (पु०) घर, वासस्थान, रहने का मकान।

थलिया दे० (स्त्री०) थाल, भोजन करने का बर्तन।

थली दे० (स्त्री०) घर, पाण्डुर, पर्वत या वन की प्रान्त भूमि।

थवई दे० (पु०) राज, थई, मकान बनाने वाला।

थहराना दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भीत होना।

थांग दे० (स्त्री०) चोरों का गुप्त गृह, माँद, वह बीहड़ स्थान जहाँ चोर चोरी करने के लिये आक्रमण करते हैं।

थांगी दे० (पु०) चोर, तस्कर, बटमार।

थांभ दे० (पु०) खम्भा, स्तम्भ।

थांभना दे० (क्रि०) अवलम्बन करना, रोकना, अटकाना, थाम्हना, सहायता करना, विलम्ब करना।

थांवला दे० (पु०) क्यारी, आलवाल।

थाकना दे० (क्रि०) थकना, श्रान्त होना, क्लान्त होना।

थाती, थाथी (स्त्री०) गिरो, धरोहर, न्यास, अमानत, बन्धक, नाकड़।

थान दे० (पु०) कपड़े का थान, स्थान, जगह, पशु बाँधने का स्थान।

थाना दे० (पु०) चौकी, सिपाही के रहने का स्थान, कोतवाली।

थानी दे० (पु०) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान, मुख्य।

थाप दे० (स्त्री०) चौल, थप्पड़, पशु का पाँव, मर्याद, बैठक, छोटे ढोल के बजने का शब्द।

भारत में लौटकर नर्मदा के तीर पर मार्कण्डेय मुनि के आश्रम में रहने लगे। अनन्तर इन्होंने काशी में रहना स्थिर किया। स्वामीजी का प्रभाव चारों ओर फैल गया, लोग दूर दूर से इनके दर्शनों के लिये आते थे। काशी के वासी विश्वनाथ के समान भक्ति करते थे। १८० वर्ष की अवस्था में ये विनाशी शरीर के छोड़कर मुक्त हुए।

त्रैलोक्य तत्० (पु०) त्रिभुवन, त्रिलोकी, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल, ब्रह्माण्ड।

त्रोटक तत्० (पु०) संस्कृत का एक छन्द विशेष।

त्रोटी तत्० (स्त्री०) चञ्चु, चोंच, ओठ, ठोंठ।

त्रोण दे० (पु०) तूण, तरकश, इषुधि, बाण रखने का घर।

त्र्यधीश तत्० (पु०) त्रिकालाधिपति, त्रिलोकेश, सूर्य।

त्र्यम्बक तत्० (पु०) शिव, महादेव, त्रिलोचन। —सखा (पु०) कुबेर, यक्षराज, धनाधिप।

त्र्याहिक तत्० (गु०) तीसरे दिन होनेवाला, तीसरे दिन का, दो दिन के बाद होने वाले रोग आदि।

त्वक् तत्० (स्त्री०) स्पर्शेन्द्रिय, छाल, वल्कल। —क्षत (पु०) व्रण, स्फोटक, घाव, क्षत।—पत्र (पु०) तेजपात।—सार (पु०) बाँस।

त्वचा तत्० (स्त्री०) चर्म, वल्कल, छाल।

त्वदङ्घ्रि तत्० (पु०) आपके चरण।

त्वदीय तत्० (गु०) तुम्हारा, तुम्हारा सम्बन्धी

त्वरा तत्० (स्त्री०) वेग, शीघ्रता, द्रुत, —कारक (गु०) शीघ्रकारक, द्रुतकारी।

(गु०) [त्वरा+अन्वित] तुर्ण, त्वरित।

त्वरित तत्० (गु०) त्वरान्वित, (पु०) शीघ्र

त्वरितोदित तत्० (गु०) [त्वरित+उदित] कथित वाक्य, जल्दी से कहा गया वाक्य।

त्वष्टा तत्० (पु०) [त्वक्ष्+तृच्] सूर्य, विश्वकर्मा, वर्णसङ्कर बढ़ई।

त्वाष्ट्र तत्० वृत्रासुर, वृत्र नामक असुर।

त्वाष्ट्री तत्० (स्त्री०) चित्रा नक्षत्र, संज्ञा सूर्य की स्त्री।

त्विष तत्० (स्त्री०) शोभा, प्रभा, कान्ति, छवि, वाक्य, व्यवसाय, जिगीषा, इच्छा।

त्विषा तत्० (स्त्री०) दीप्ति, शोभा राशि, किरण।

त्विषाम्पति तत्० (पु०) सूर्य, रवि, भानु।

त्विषि तत्० (पु०) किरण, रश्मि, तेज, प्रभा।

थ

थ व्यञ्जन का सत्तरहवाँ अक्षर, दन्तस्थान से उच्चारण होने के कारण इसे दन्त्य कहते हैं।

थ, तत्० (पु०) पहाड़, रक्षक, व्याधि विशेष, भय-चिन्ह, भक्षण, मङ्गलध्वंस।

थई दे० (स्त्री०) कपड़ों की राशि, वस्त्रसमूह, ईंटों की बनी अटारी, गृहनिर्माता, घर बनानेवाला राज, थवई।

थंब, थंबा, थंभ तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भा, खम्भ, थूनी, पाया।

थंभना दे० (क्रि०) ठहरना, रुकना, सम्हलना, स्थिर होना।

थक दे० (पु०) थक्का, चक्का, चक्कान, ढेला।—थक (गु०) लथपथ, तरबतर, सिक्त, आर्द्र।

थकना दे० (क्रि०) श्रान्त होना, हारना, अधिक परिश्रम से इन्द्रियों का अवयव और आदि की शिथिलता।

थका दे० (गु०) श्रान्त, थका हुआ, थकित,

थकाना दे० (क्रि०) श्रान्त करना, परिश्रम शिथिल करना।

थकार तत्० (पु०) थ अक्षर, तवर्ग

थकित दे० (गु०) थका, श्रान्त, शिथिल,

थक्का दे० (पु०) थोक, चक्कान, लोंदा, पदार्थ, जमा हुआ, जमावट।

थन तद्० (पु०) स्तन, गौआदि की चूँची, लेवा।

थनी दे० (स्त्री०) घोड़े का एक दोष।

ेला दे० (पु०) स्तन का रोग विशेष, स्तन का घाव।

ेश्वरी तद्० (पु०) कुरुक्षेत्र के रहनेवाले ब्राह्मण।

क दे० (पु०) थाप, ठेक, घुमकार।

ड़ा दे० (पु०) चपत, चपेटा, थप्पड़।

ड़ी दे० (स्त्री०) करताली, हाथों से ताली देना।

ना तद्० (क्रि०) स्थापना, बैठाना, स्थापित करना, देवता आदि की प्रतिष्ठा करना।

ा तद्० (गु०) स्थापित प्रतिष्ठापित, स्थापना किया हुआ।

ाना तद्० (क्रि०) स्थापना कराना, प्रतिष्ठित कराना।

ड़ा दे० (पु०) धौल, चपेटा, थपड़ा।

पड़ दे० (पु०) चपत, चपेटा, थाप।

तद्० (पु०) स्तम्भ, खम्भ, पाया।

ड़ा दे० (गु०) तुन्दिल, तोंदैल, बड़े पेटवाले।

ना, थंभना दे० (क्रि०) रुकना, थंभना ठहरना।

दे० (पु०) सिंह बाघ का खोह, बीहड़ जङ्गल, बीरान वन।

थर दे० (गु०) कम्प, डगमग, हलचल, एक प्रकार का कम्प, बहुत कम्प, यथा—"जाड़े से थरथर काँपता हुआ भी प्रातःकाल गङ्गास्नान करने गया।"

थराना दे० (क्रि०) काँपना, कम्पित होना, भय से काँपना।

थराहट दे० (स्त्री०) कम्प।

थरी दे० (स्त्री०) कपकपी।

दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भयभीत आगामी भय की चिन्ता से काँपना।

हराना दे० (क्रि०) चिन्ता से काँपना।

ाना दे० (क्रि०) कम्पित होना, कम्पित करना, कँपा देना, शङ्कित करना।

तद्० (पु०) स्थल, जगह, ज़मीन, ठाँव, धरती, स्थान।

ाकना दे० (क्रि०) धड़कना, फड़कना, तलफना, उथल पुथल होना।

थलथलाना दे० (क्रि०) सामान्य आघात से भी हिलने लगना, कम्पित होना, जिस प्रकार मोटे आदमियों का माँस हिलता है।

थलचर तद्० (गु०) स्थलचारी, भूमि पर चलनेवाले मनुष्य आदि।

थलबेड़ा दे० (पु०) घर, वासस्थान, रहने का मकान।

थलिया दे० (स्त्री०) थाल, भोजन करने का बर्तन।

थली दे० (स्त्री०) घर, पाण्डुर, पर्वत या वन की प्रान्त भूमि।

थवई दे० (पु०) राज, थई, मकान बनाने वाला।

थहराना दे० (क्रि०) काँपना, शङ्कित होना, भीत होना।

थांग दे० (स्त्री०) चोरों का गुप्त गृह, माँद, वह बीहड़ स्थान जहाँ चोर चोरी करने के लिये आगमन करते हैं।

थांगी दे० (पु०) चोर, तस्कर, बटमार।

थांभ दे० (पु०) खम्भा, स्तम्भ।

थांभना दे० (क्रि०) अवलम्बन करना, रोकना, अटकाना, आड़ना, सहायता करना, विलम्ब करना।

थांवला दे० (पु०) क्यारी, आलबाल।

थाकना दे० (क्रि०) थकना, आन्त होना, क्लान्त होना।

थाती, थाथी (स्त्री०) गिरो, धरोहर, न्यास, अमानत, बन्धक, आकड़।

थान दे० (पु०) कपड़े का थान, स्थान, जगह, पशु बाँधने का स्थान।

थाना दे० (पु०) चौकी, सिपाही के रहने का स्थान, कोतवाली।

थानी दे० (पु०) स्थानी, स्थान का स्वामी, स्थान का प्रधान, मुख्य।

थाप दे० (स्त्री०) धौल, थप्पड़, पशु का पाँव, मर्याद, ठेक, छोटे ढोल के बजने का शब्द।

थापना दे० (क्रि०) थोपना, थोलियाना, गोबर पाथना, उपरी बनाना, थपथपाना, ठोकना, रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना, कलश स्थापन की पूजा।

थापा दे० (पु०) पशु के पाँव का चिन्ह, हाथ का चिन्ह।

थापित दे० (गु०) स्थापित, प्रतिष्ठापित, बैठाया गया।

थापी दे० (स्त्री०) थापने का शब्द, काठ की बनी हुई थापी, जिससे छत आदि पीटते हैं।

थाम दे० (पु०) थम्भ, थूनी, टेक।

थामना दे० (क्रि०) रोकना, पकड़ना, अटकाना, रोकना।

थाम्भना दे० (स्त्री०) सम्भालना, रोकना, विलम्ब करना।

थार, थाल दे० (पु०) बड़ी थाली, भोजन करने का बड़ा पात्र।

थाला दे० (पु०) आलवाल, थाँवला।

थाली दे० (स्त्री०) थलिया, भोजन करने का पात्र।

थावर तद्‌० (पु०) स्थावर, प्राणिविशेष, अचल, वृक्षादि।

थाह दे० (स्त्री०) तला, पेंदा, पानी के नीचे की भूमि, उताराघाट।

थाहा दे० (पु०) नदी का उथला स्थान, जहाँ अधिक जल न हो।

थाही दे० (स्त्री०) उथली नदी, नदी विशेष, जो गहरी न हो।

थिति तद्‌० (स्त्री०) स्थिति, स्थिरता, निश्चितयास।

थिर तद्‌० (गु०) स्थिर, अचल, निश्चित।

थिरकना दे० (क्रि०) निपुणतापूर्वक नाचना।

थिरकी दे० (स्त्री०) चमत्कार, विशेषता, घूमने की रीति।

थिरता तद्‌० (स्त्री०) स्थिरता, अचञ्चलत्व।

थिरा तद्‌० (स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी, पृथिवी, धरती।

थिराना दे० (क्रि०) स्थिर होना, बैठाना, ठहराना, मिट्टी के बैठ जाने से पानी का साफ़ होना।

थीर दे० (गु०) सुखी, स्थिर।

थुकथुकाना दे० (क्रि०) थूकना, घृणायोग्य देख कर थूकना।

थुकाना दे० (क्रि०) निन्दा कराना, कराना।

थुतकारना दे० (क्रि०)
थुथकारना दे० (क्रि०) } अनादर के साथ नि लना, अपमानित निकाल देना।

थुथनी दे० (स्त्री०) शूकर का मुँह।

थुथाना दे० (क्रि०) भौं चढ़ाना, तेवरी चढ़ाना, लटकाना।

थूक दे० (पु०) मुँह का पानी, कफ़, खखार।

थूकना दे० (क्रि०) थूक फेंकना, खखारना।

थूणी तद्‌० (स्त्री०) स्थूण, स्तम्भ, खम्भा, की लकड़ी जो छप्परों से लगायी जाती थुनकिया।

थूथड़ा दे० (पु०) शूकर आदि पशुओं का थूथनी, (गु०) बुरा, ख़राब।

थूथन थूथना दे० (पु०) थूथड़ा, पशुओं का मुँ

थूनी तद्‌० (स्त्री०) थूणी, स्थूण, स्तम्भ, धरन।

थूरन दे० (पु०) पीटन, कूचन, कूचना, कूटना।

थूरना दे० (क्रि०) मारना, पीटना, रस्सी बन लिये मूँज या नारियल के छूभे को पतला बनाना।

थूहर दे० (पु०) पौधा विशेष, सीज, सेहुड, यह कटीला पौधा होता है।

थेईथेई दे० (स्त्री०) आनन्द, हर्ष, नृत्य आनन्द, बाजे के अनुकरण का शब्द विशेष।

थेगली दे० (स्त्री०) टिकड़ी, जोड़ पैबन्द, की चिप्पी।

थेवा दे० (पु०) नग, हीरा, अँगूठी या और गहने में जड़े जाने वाला बहुमूल्य पत्थर।

थैथै दे० (अ०) वाद्यानुकरण शब्द, बाजे के नाचने वाले अपने घुँघरू से जो शब्द लते हैं।

थैला दे० (पु०) बोरा, गोन, लोया।
थैलिया थैली दे० (स्त्री०) छोटा थैला, कोथली, बटुआ।
थोक दे० (पु०) एकत्र, समुदाय, राशि, समूह, ढेर, एक देश, भाग, टोला, महल्ला।
थोड़ दे० (पु०) फले हुए केले का गाभा, फलित कदली वृक्ष का गर्भ, केले का मध्यदेश।
थोड़ा दे० (गु०) अल्प, किञ्चित, कम, न्यून, तनिक। —थोड़ा (अ०) कुछ कुछ, अल्प अल्प, शनैः शनैः, धीरे धीरे, कम कम।—थोड़ा होना (वा०) लज्जित होना, घटना, धीरे धीरे आगे बढ़ना, क्रमशः अग्रसर होना।—बहुत (वा०) घाटबाढ़, न्यूनाधिक, कमोवेश।—से थोड़ा (वा०) अत्यल्प, बहुत कम।
थोतरा दे० (गु०) भोंथर, भोंथरा, कुण्ठित, तेज नहीं।
थोथला दे० (गु०) अतीक्ष्ण, कुण्ठित, बिना धार का।
थोथा दे० (पु०) औषधि विशेष, फलहीन तीर, बिना धार का बाण, मोथड़ अस्त्र, (गु०) छूंछा, रीता, रिक्त।
थोथीबात दे० (वा०) अनर्थक वाक्य, बिना प्रयोजन का वाक्य, अर्थहीन वचन, ऊटपटांग बात।
थोप दे० (पु०) पालकी के बाँस का मुखड़ा, टोप, दाँप, छाप, मुहर, भूषण, अलङ्कार।
थोपना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, सँभालना, थापना, लेपना, गोंजना, बटोरना।
थोपियाना दे० (क्रि०) चूना, बूँद बूँद गिरना, झिरझिराना, बुँदियाना।
थोपी दे० (स्त्री०) चपेटा, थपत, धक्का, मुक्का।
थोब, थोभ दे० (स्त्री०) धरन की थूनी, लरही का टेकन, लड़ी का टेकन।
थोहर दे० (पु०) थूहर, सेहुंड, सीन।
थौना दे० (पु०) गौने के बाद की स्त्री की बिदाई।

द

द यह व्यञ्जन का अट्ठारहवाँ वर्ण है यह दन्त्य वर्ण है क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है।
द तत्० (गु०) दाता, देनेवाला, पर्वत, दान, दत्त, खण्डन, रक्षण, भार्या, पत्नी, संस्करण, सुधारन, किसी शब्द के अन्त में आने से यह देने वाले का बोधन करता है। यथा—धनद, जलद, पयोद, आदि। इसका काटना अर्थ हिन्दी में अप्रसिद्ध है।
दई तद्० (पु०) दैव, भाग्य, दिष्ट, अदृष्ट, ईश्वर, देवता।—मारा (गु०) भाग्यहत, भाग्य का मारा, दुर्भागी, अभागी।
दंश तत्० (पु०) दाँत, डङ्क, डाँस, वन की मकड़ी, असुर विशेष, भृगुमुनि के शाप से अलर्क नामक कीट की योनि इसने पाई थी।—भीरु (पु०) महिष, भैंसा।
दंशक तत्० (पु०) कीट विशेष, वन मकड़ी, (गु०) दन्ताघातकारी, डङ्क मारने वाला, सर्प आदि।
दंशन तत्० (पु०) [दंश+अनट्] काटना, दन्ताघात करना, दाँतकाटना।
दंशित तत्० (गु०) [दंश्+क्त] दष्ट, दन्त द्वारा काटा हुआ, खण्डित।
दंशी तत्० (स्त्री०) क्षुद्रदंश, छोटा डाँस।
दंष्ट्र तत्० (पु०) [दंश+त्र] दन्त, रदन, दाँत।
दंष्ट्रा तत्० (स्त्री०) [दंष्ट्र+आ] विशाल दन्त, बड़ा दाँत, सिंह आदि हिंस्र जन्तुओं के नुकीले दाँत।
दंष्ट्री तत्० (गु०) वृहद्दन्त विशिष्ट, शूकर, हिंसक-जन्तु।
दंश तत्० (पु०) सिंह, कुत्ता, दंष्ट्री।
दक तत्० (पु०) उदक, पानी, जल, रस।
दक्ष तत्० (गु०) निपुण, कुशल, प्रवीण, पटु, दाहिना हाथ, (पु०) मुनि विशेष, शिव का बैल, वृष-विशेष, अग्नि, शिव, प्रिय, प्रजापति विशेष। यह ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक थे। इनका

विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था। इनकी १६ कन्याएं थी। इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक पितृगण को और एक शिव को ब्याही गई थी। शिव को ब्याही कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दक्ष का अभ्युत्थान नहीं किया इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजच्युत करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दक्ष सब प्रजापतियों के अधिपति बनाये गये, इससे दक्ष का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। पिता के यज्ञ करने का समाचार सुनकर सती ने पिता के यहाँ जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति देदी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुई। सती के सामने दर्पान्धदक्ष शिव की निन्दा करने लगे। पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग किया। इसकी खबर नारद ने शिव तक पहुँचायी। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटकी। उसमें से वीरभद्र की उत्पत्ति हुई, वीरभद्र शिव के अनुचरों के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट भ्रष्ट करके दक्ष का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुन. ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर शिव ने बकरे का सिर दक्ष के कबन्ध में जोड़ने की अनुमति दी। दक्ष जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की स्तुति की।

—श्रीमद्भागवत

—**कन्या** (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, सती।—**जा** (स्त्री०) उमा, सती, दुर्गा, सत्ताइस नक्षत्र। —**जापति** (पु०) चन्द्र, शिव, कश्यप, धर्म, अग्नि, रुद्र।—**ता** (स्त्री०) चतुरता, पटुता, नैपुण्य, निपुणता।—**सावर्णि** (पु०) नवम मनु। —**सुता** (स्त्री०) सती, उमा।

दक्षन दे० (पु०) दक्ष शब्द का ब्रजभाषा के नियमानुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन, लोक, लोकन। नायक विशेष। यथा—

"एक भाँति सब तियन सो जाको होय सनेह,
सो दक्षन मतिराम बरनत है मति गेह।"
—रसरा

दक्षिण तत्० (गु०) सरल, उदार, अनुकूल, परछन्दानुवर्ती, अन्यचित्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपसव्य, दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पति में से एक पति, अनेक नायिकाओं को समान भाव से देखने वाला। देखो दक्षन।—**कालिका** (स्त्री०) महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति।—**केन्द्र** व... वानल, बड़वाग्नि।—**खण्ड** (पु०) विन्ध्याचल के दक्षिण का देश।—**ता** (स्त्री०) अनुकूलता, स... लता, सारल्य।—**पथ** दक्षिन दिशा।—**पू...** (स्त्री०) दक्खिन और पूरब का कोन।—**पश्चि...** (स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।—**है...** (पु०) दाहिना हाथ।

दक्षिणा तत्० (स्त्री०) दक्षिण दिशा, धर्म कर्म... पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की पूर्ति के लि... दान, नायिका विशेष।—**ग्नि** (पु०) द... +अग्नि] यज्ञाग्निविशेष।—**चल** (... [दक्षिण+अचल] मलय पर्वत, दक्षिण दिशा... पर्वत विशेष।—**पथ** (पु०) दक्षिण दिश...—**वर्त** (पु०) [दक्षिण+आवर्त] शङ्खवि... दहिनी ओर से मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुमूल्य... मङ्गलसूचक अग्नि।—**भिमुख** (पु०) [दक्षिण... अभिमुख] दक्षिण ओर का रुख।—**मुख** (... दक्षिणास्य, दक्षिण दिशा में कृतमुख।—**र्ह** (... [दक्षिण+अर्ह] दक्षिणायोग्य, दक्षिणा के अ... कारी।—**शा** (स्त्री०) दक्षिणा की आ... दक्षिण दिशा

दक्षिणायन तत्० (पु०) सूर्य का दक्षिण दिश... गमन, कर्क की सक्रान्ति से धन की सक्रा... तक का काल, जब सूर्य की दक्षिणगति रहती

दक्षणीय तत्० (गु०) दक्षिण देश का मह... दक्षिण देशवासी, दान योग्य, दान पाने... अधिकारी।

दखन तद्० (पु०) दक्खन, दक्षिण दिशा।

दखनी तद्० (गु०) दक्षिण देशवासी, दक्षिणदेश का।

दखल दे० (पु०) अधिकार, सत्ता, अधिकृति।

दखिनी तद्० (गु०) दक्षिण देशवासी, दक्षिण देश सम्बन्धी।

दगड़ दे० (पु०) धक्का दक्का, नगारा, दुन्दुभी।

दगड़ना दे० (क्रि०) अविश्वास करना, अप्रत्यय करना।

दगड़ा दे० (पु०) डगर, मार्ग, राह, रास्ता, पथ।

दगड़ाना दे० (क्रि०) डगराना, दौड़ाना, भगाना, चलाना।

दगदगा दे० (गु०) चमकीला, स्वच्छ, साफ़, सुथरा।

दगदगाना दे० (क्रि०) चमकाना, चहकना, प्रकाशित होना।

दगदगाहट दे० (स्त्री०) चमक, चमत्कार, प्रकाश।

दगधना दे० (क्रि०) जलाना, छेड़ना, सताना, दुःख देना, मानसिक कष्ट पहुँचाना।

दगला दे० (पु०) बड़ा अङ्गा, चोगा, रुई भरा बड़ा अँगरखा।

दग्ध तत्० (गु०) [दह्+क्त] भस्मीकृत, भस्म किया हुआ, जलाया हुआ, ज्वलित, अग्नितापित। —काक (पु०) भंड़काक, डुड़कौआ।—योनि (गु०) नष्टबीज, मूलध्वंस, उत्पादन शक्तिहीन। *—रथ (पु०) गन्धर्व विशेष, इनका नाम था* अङ्गारवर्ण, अनेक रङ्गों का एक रथ इनके पास था इसी कारण इनको लोग चित्ररथ भी कहते थे। जिस समय युधिष्ठिर अपने भाइयों को लेकर वनवास करते थे उसी समय कारण विशेष से अर्जुन और चित्ररथ में घोर युद्ध हुआ, चित्ररथ हार गये, इसी कारण दुःखित होकर उन्होंने अपना रथ जला डाला, तभी से उनको दग्धरथ कहने लगे।

दग्धा तत्० (स्त्री०) अमङ्गलतिथि, सूर्यस्थितिदशा, *तिथि विशेष, वारविशेष।*

दग्धिका तत्० (स्त्री०) दग्ध अन्न, जलाभात, भुँजा अन्न, भृष्टधान्य।

दग्धोदर तत्० (गु०) [दग्ध+उदर] क्षुधार्त, क्षुधा पीड़ित। (पु०) भोजन की अभिलाषा, भोजन वाञ्छा।

दङ्गल दे० (पु०) एक प्रकार की चौकी, काष्ठनिर्मित आसन विशेष, मल्लयुद्ध, बदाबदी का युद्ध, पण-बन्धयुद्ध।

दङ्गा दे० (पु०) झगड़ा, रौला, हुल्लड़, बखेड़ा।

दङ्गैत दे० (पु०) दङ्गा करने वाला, झगड़ालु।

दय तत्० (पु०) त्याग, हिंसा, नाश।

दच्छ तद्० (गु०) दक्ष, निपुण, कुशल।

दच्छिना तद्० (स्त्री०) दक्षिणा।

दटना दे० (क्रि०) डटना, धीरता के साथ सामना करना, अड़ना, खड़ा रहना, पीछे पैर नहीं देना।

दड़कना दे० (क्रि०) दरकना, फटना, चिरना, तड़कना।

दड़ेरा दे० (पु०) प्रबल झड़, भारीवृष्टि, धक्का, दरेरा।

दढ़मुड़ा दे० (गु०) बिना दाढ़ी का, दाढ़ी रहित, जिसकी दाढ़ी मूड़ दी गई हो।

दढ़ियल दे० (पु०) लम्बी दाढ़ीवाला।

दण्ड तत्० (पु०) [दण्ड+अच्] साठ पल परमित *काल, घड़ी, लाठी, यष्टि, दमन, निग्रह, शासन,* अपराधी को उसके अपराध के अनुसार शरीर या अर्थ सम्बन्धी सज़ा, ऊर्ध्वस्थिति, संन्यास धर्म, सैन्य, व्यूहभेद, शत्रु दमन करने वाली राजशक्ति, व्यूह रचना विशेष, चक्रव्यूह, प्रकाण्ड, बड़ा, अश्व, कोन, कोण, मानविशेष, भूमि नापने की लाठी जिसको काठा कहते हैं। यम, यमराज, अभिमान, ग्रह भेद, इक्ष्वाकु राजा का पुत्र।

दण्डक तत्० (पु०) वन विशेष, छन्द विशेष, एक राजा का नाम।

दण्डकारण्य तत्० (पु०) दण्डक नाम राजा का देश, शुक्राचार्य किसी कारणवश राजा से रुष्ट हो गये और उन्होंने उसके देश को जङ्गल होने का शाप

विवाह मनु की कन्या प्रसूति से हुआ था। इनकी १६ कन्यायें थी। इनमें से तेरह कन्याएं धर्म को, एक अग्नि को, एक पितृगण को और एक शिव को ब्याही गई थी। शिव को ब्याही कन्या का नाम सती था। एक समय शिव ने दक्ष का अभ्युत्थान नहीं किया इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने शिव की बड़ी निन्दा की और उन्होंने शिव को समाजच्युत करके उनका यज्ञभाग रोक दिया। कुछ दिनों के बाद दक्ष सब प्रजापतियों के अधिपति बनाये गये, इससे दक्ष का अहङ्कार और भी बढ़ गया। उन्होंने बृहस्पति नामक यज्ञ का अनुष्ठान प्रारम्भ किया, उस यज्ञ में सभी निमन्त्रित किये गये, परन्तु शिव और सती नहीं। पिता के यज्ञ करने का समाचार सुनकर सती ने पिता के यहाँ जाने की शिव की अनुमति चाही, शिव ने अनुमति देदी। सती पिता के यज्ञ में उपस्थित हुई। सती के सामने दर्पान्धदक्ष शिव की निन्दा करने लगे। पति की निन्दा न सुनने के लिये सती ने वहीं शरीर त्याग किया। इसकी ख़बर नारद ने शिव तक पहुँचायी। शिव क्रोध से अधीर हो गये। उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटकी। उसमें से वीरभद्र की उत्पत्ति हुई, वीरभद्र शिव के अनुचरों के साथ यज्ञभूमि में पहुँचे और उन्होंने यज्ञ नष्ट भ्रष्ट करके दक्ष का सिर उतार लिया और उसे जला डाला। पुन ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर शिव ने बकरे का सिर दक्ष के कबन्ध में जोड़ने की अनुमति दी। दक्ष जीवित हुए। तब यज्ञ समाप्त करके उन्होंने अनेक प्रकार से महादेव की स्तुति की।

—श्रीमद्भागवत

—कन्या (स्त्री०) दुर्गा, भगवती, सती।—जा (स्त्री०) उमा, सती, दुर्गा, सप्तादस नक्षत्र। —जापति (पु०) चन्द्र, शिव, कश्यप, धर्म, अग्नि, रुद्र।—ता (स्त्री०) चातुरता, पटुता, नैपुण्य, निपुणता।—सावर्णि (पु०) नवम मनु। —सुता (स्त्री०) सती, उमा।

दक्षन दे० (पु०) दक्ष शब्द का ब्रजभाषा के नियमानुसार बहुवचन, यथा—देव, देवन, लोक, लोकन, नायक विशेष। यथा—

"एक भाँति सब तियन सों जाको होय सनेह,
सो दक्षन मतिराम बरनत है मति गेह।"

—रसराज

दक्षिण तत्० (गु०) सरल, उदार, अनुकूल, परछन्दानुवर्ती, अन्यचित्तानुवर्ती, चतुर, प्रवीण, अपसव्य, दक्षिण दिशा, दहिनाभाग, चार प्रकार के पतियों में से एक पति, अनेक नायिकाओं को समानभाव से देखने वाला। देखो दक्षन।—कालिका (स्त्री०) महाविद्या विशेष, आद्या शक्ति।—केन्द्र वा वानल, दक्षवाग्नि।—खण्ड (पु०) विन्ध्याचल के दक्षिण का देश।—ता (स्त्री०) अनुकूलता, सरलता, सारल्य।—पथ दखिन दिशा।—पूर्व (स्त्री०) दक्खिन और पूरब का कोन।—पश्चिम (स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम का कोन।—हस्त (पु०) दाहिना हाथ।

दक्षिणा तत्० (स्त्री०) दक्षिण दिशा, धर्म कर्म का पारितोषिक, भेंट, पूजा। कर्म की पूर्ति के लिये दान, नायिका विशेष।—ग्नि (पु०) [दक्षिण +अग्नि] यज्ञाग्निविशेष।—चल (पु०) [दक्षिण+अचल] मलय पर्वत, दक्षिण दिशा का पर्वत विशेष।—पथ (पु०) दक्षिण दिशा। —वर्त (पु०) [दक्षिण+आवर्त] शङ्खविशेष, दहिनी ओर से मुड़ा हुआ शङ्ख, बहुमूल्य शङ्ख, मङ्गलसूचक अग्नि।—भिमुख (गु०) [दक्षिण+ अभिमुख] दक्षिण ओर का रुख।—मुख (गु०) दक्षिणास्य, दक्षिण दिशा में कृतमुख।—र्ह (गु०) [दक्षिणा+अर्ह] दक्षिणायोग्य, दक्षिणा के अधिकारी।—शा (स्त्री०) दक्षिणा की आशा, दक्षिण दिशा

दक्षिणायन तत्० (पु०) सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन, कर्क की सक्रान्ति से धन की सक्रान्ति तक का काल, जब सूर्य की दक्षिणगति रहती है।

दक्षणीय तत्० (गु०) दक्षिण देश का मनुष्य, दक्षिण देशवासी, दान योग्य, दान पाने के अधिकारी।

ना दे० (क्रि०) डाटना, सामना करना।

वन दे० } (स्त्री०) दतून, दन्तधावन, दाँत साफ़ करने की लकड़ी।
तून दे० } (स्त्री०)

तूना दे० (पु०) पौधा विशेष।

तुली दे० (स्त्री०) छोटे छोटे दाँत, बच्चों के दाँत।

तौन दे० (स्त्री०) दतून, दन्तधावन।

त तत्० (पु०) [दा + क्त] रक्षित, कृतदान, वितृष्ट, जो दिया गया है। (पु०) दान, राजा विशेष, भगवान् का एक अवतार, दत्तात्रेय अवतार (देखो दत्तात्रेय) उपाधि विशेष। द्वादश विध पुत्र के अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्त्रिम कहते हैं। आपत्ति काल में सद्रूप पूर्वक जिस पुत्र को स्नेही और अपने समान व्यक्ति को दें वह पुत्र। वैश्यों की उपाधि, यथा—बालदत्त, धर्मदत्त, आदि।—पुत्र (पु०) अनसूया और अत्रि के पुत्र (देखो दत्तात्रेय)।

तकपुत्र तत्० (पु०) दत्तक, द्वादश विध पुत्रान्तर्गत पुत्र विशेष, माता पिता द्वारा दिया हुआ पुत्र, पोष्यपुत्र।

ा तत्० (स्त्री०) [दत्त + आ] विवाहिता कन्या, वाग्दत्ता, कृतावर को दी गई कन्या।—त्मा (पु०) [दत्त + आत्मा] स्वयं दत्त पुत्र, जो दूसरे का पुत्र होने के लिये स्वयं अपने को दान करे। अनुगत, जिसने अपने को समर्पित कर दिया है।—त्रेय (पु०) [दत्त + आत्रेय] दत्तनामक अत्रिपुत्र। भगवान् विष्णु अत्रिपत्नी अनसूया के गर्भ में दत्तात्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे। कुशिकवंशी कुष्ठ रोगी एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान झूँसी) में रहता था। उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों से उसकी सेवा शुश्रूषा किया करती थी, एक दिन वह ब्राह्मण किसी वेश्या पर अनुरक्त हुआ और उसके घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा। वो उसको कन्धे पर बिठा कर वेश्या के घर ले चली। रात अँधेरी थी, जाते हुए कुष्ठी ब्राह्मण का पैर अणिमाण्डव्य नामक ऋषि की देह में लगा। जिससे क्रुद्ध होकर मुनि ने शाप दिया कि जिसका पैर मेरे लगा है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा। मुनि का शाप सुनकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई, पुनः वह दृढ़ता पूर्वक बोली, "अब सूर्योदय नहीं होगा" पतिव्रता का कहना झूठा नहीं हो सकता, रात बीत गयी परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए। उससे देवता बड़े चिन्तित हुए, बहुत विचार के अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता को शान्त करना पतिव्रता ही का काम है। अतएव देवता अनसूया की शरण गये। अनसूया उस पतिव्रता स्त्री के पास गयीं और उन्होंने कहा कि सूर्योदय होने दो, तुम्हारा पति मर जायगा तो उसे मैं जिला दूँगी। उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि अब सूर्योदय हो, उधर सूर्योदय हुआ, इधर उसका पति मर गया, अनसूया ने उसके पति को जिला दिया। अनसूया से वर माँगने के लिये देवों ने कहा, अनसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिये, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हों। देवताओं ने यही वर दिया। यही त्रिदेव का अवतार दत्तात्रेय हैं।

—दत्त (पु०) [दत्त + आदत्त] दत्त अपहृत, दिया हुआ ले लेना।—दर (पु०) [दत्त + आदर] सत्कृत, सेवित, सेव्यमान्।—नयकर्म (पु०) दान करके पुनः नहीं लेना।—पहृत (पु०) दान करके छीन लेना, देकर ले लेना।—प्रदानिक (पु०) [दत्त + अप्रदानिक] अष्टादश विवाद के अन्तर्गत विवाद विशेष, दिये हुए धन का शोध कराने के लिये विवाद।—वधान (पु०) [दत्त + अवधान] कृतावधान, अभिनिविष्ट, आसक्त, आसक्तचित्त।

दत्त्रिम तत्० (पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र, पोष्यपुत्र।

ददन तत्० (पु०) [दद् + अनट्] दान, वितरण, त्याग, देना।

ददरीक्षेत्र दे० (पु०) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कातिक की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह स्थान बलिया के पास है।

ददलाना दे० (क्रि०) डाँटना, मेरना, भर्त्सन करना।

दिया। तभी से यह देश वन होगया और उसका दण्डकारण्य नाम पड़ा। यह हिन्दुस्तान के दक्षिण भाग में है। वनवास का कुछ समय श्रीरामचन्द्रजी ने यहीं बिताया था।

दण्डदास तत्० (पु०) दण्ड देनेवाला कर्मचारी, व्याध, हिंसक।

दण्डधर तत्० (पु०) यमराज, धर्मराज, पुण्य पाप का फलदाता, कुलाल, कुम्हार, लगुड़धारी, दण्ड धारण करने वाला, दण्डी, संन्यासी, द्वारपाल, दरवान, सिपाही।

दण्डन तत्० (पु०) [दण्ड+अनट्] अनुशासन, निग्रह, सजा।

दण्डनायक तत्० (पु०) सेनानी, सेनापति, चतुरङ्गिणी सेना का सञ्चालक, दण्डदाता, अपराध-विचार कर्त्ता।

दण्डनीति तत्० (स्त्री०) अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दण्ड-व्यवस्था, अनुशासन।

दण्डनीय तत्० (गु०) [दण्ड+अनीय] शासन करने योग्य, शास्ति देने योग्य।

दण्डपांशुल तत्० (पु०) द्वारपाल द्वाररक्षक, दरवान, चौकीदार।

दण्डपाणि तत्० (पु०) शिव के एक गण का नाम, दण्डधारी।

दण्डपाशिक तत्० (पु०) घातुक पुरुष, वध कर्माधिकारी, फाँसी चढ़ाने वाला, जल्लाद।

दण्डप्रणेता तत्० (पु०) दण्डकर्त्ता, दण्डदाता।

दण्डमान तत्० (गु०) दण्ड्यमान, दण्डित, प्राप्त-दण्ड।

दण्डवत् तत्० (स्त्री०) दण्ड के समान पतित होकर प्रणाम, सर्वाङ्ग पातपूर्वक प्रणाम, साष्टांग प्रणाम्।

दण्डयोग्य तत्० (गु०) दण्डार्ह, दण्डनीय, दण्ड पाने के योग्य, अपराधी।

दण्डाजिन तत्० (पु०) [दण्ड+अजिन] दण्ड और मृगचर्म।

दण्डादण्डी तत्० (स्त्री०) लाठी की लड़ाई, डंडा सोटी, लाठी पाठी।

दण्डायमान तत्० (गु०) उत्थान, उठना, दण्ड के समान सीधे खड़े होना।

दण्डाश्रम तत्० (पु०) संन्यास धर्म, दण्डी आश्रम, संन्यासी का आचार।

दण्डाश्रमी तत्० (पु०) संसार त्यागी, विरागी, संन्यासी, दण्डी।

दण्डित तत्० (गु०) [दण्ड+इत] दण्डप्राप्त, शासित, सजायाफ़्ता।

दण्डी तत्० (गु०) दण्डयुक्त, लठैल, लठवान। (पु०) चतुर्थाश्रमी, यती, योगी, संन्यासी, दण्डधारी संन्यासी।

संस्कृत के एक कवि का नाम, यह बड़े प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। यह आलङ्कारिक भी थे। इनके बनाये ग्रन्थों का संस्कृत साहित्य में [illegible] है। काव्यादर्श, दशकुमारचरित, [illegible] और कलापरिच्छेद ये चार ग्रन्थ इनके अभी तक मालूम हुए हैं। काव्यादर्श और दशकुमारचरित प्रसिद्ध ही हैं परन्तु छन्दोविचिति कलापरिच्छेद अभी तक प्रकाशित नहीं हुए हैं। इनके स्थान का कुछ ठीक ठिकाना नहीं मिलता। ईश्वरचन्द्रविद्यासागर कहते हैं कि ये [illegible] सन्यासी कहीं एक जगह घर बनाकर [illegible] रहा करते थे। संन्यासियों को दण्डी भी कहते हैं। अतएव विद्यासागर का कहना ठीक मालूम [illegible] है, एक तो संस्कृत कवियों के समय निरूपण योंही झमेला होता है। उसमें भी इन रमते [illegible] का समय निरूपण करना बड़ा ही कठिन है। तथापि ऐसा अनुमान किया जाता है कि मृच्छकटिककार शूद्रक से ये प्राचीन नहीं थे। इनकी लेखशैली के अनुसार इन्हें कालिदास के कुछ पीछे का मान सकते हैं। अतएव ५वीं सदी का [illegible] भाग यदि इनका समय माना जाय तो बहुत झगड़े निपट जाँयगे।

दण्ड्य तत्० (गु०) [दण्ड+य] दण्डार्ह, दण्डयोग्य, दण्डनीय।

ना दे० (क्रि०) डाटना, सामना करना।

चन दे० } (स्त्री०) दतून, दन्तधावन, दाँत साफ़ करने की लकड़ी।
न दे० } (स्त्री०)

ला दे० (पु०) पौधा विशेष।

ली दे० (स्त्री०) छोटे छोटे दाँत, बच्चों के दाँत।

न दे० (स्त्री०) दतून, दन्तधावन।

तत्० (पु०) [दा+क्त] रक्षित, कृतदान, विसृष्ट, जो दिया गया है। (पु०) दान, राजा विशेष, भगवान् का एक अवतार, दत्तात्रेय अवतार (देखो दत्तात्रेय) उपाधि विशेष। द्वादश विध पुत्र के अन्तर्गत एक पुत्र, जिसे दत्तिम कहते हैं। आपत्ति काल में सद्भूपत्र पूर्वक जिस पुत्र को स्नेही और अपने समान व्यक्ति को दें वह पुत्र। वैश्यों की उपाधि, यथा—भावदत्त, अर्थदत्त, आदि।—गुप्त (पु०) अनसूया और अत्रि के पुत्र (देखो दत्तात्रेय)।

कपुत्र तत्० (पु०) दत्तक, द्वादश विध पुत्रान्तर्गत पुत्र विशेष, माता पिता द्वारा दिया हुआ पुत्र, पोष्यपुत्र।

तत्० (स्त्री०) [दत्त+आ] विवाहिता कन्या, वाग्दत्ता वर को दी गई कन्या।—त्मा (पु०) [दत्त+आत्मा] स्वयं दत्त पुत्र, जो दूसरे का पुत्र होने के लिये स्वयं अपने को दान करे। अनुगत, जिसने अपने को समर्पित कर दिया है।—त्रेय (पु०) [दत्त+आत्रेय] दत्तनामक अत्रिपुत्र। भगवान् विष्णु अत्रिपत्नी अनसूया के गर्भ में दत्तात्रेय के रूप में उत्पन्न हुए थे। कुशिकवंशी कुष्ट रोगी एक ब्राह्मण प्रतिष्ठानपुर (वर्तमान झूँसी) में रहता था। उसकी पतिव्रता स्त्री अनेक प्रकारों से उसकी सेवा शुश्रूषा किया करती थी, एक दिन वह ब्राह्मण किसी वेश्या पर अनुरक्त हुआ और उसके घर ले चलने के लिये अपनी स्त्री से कहा। स्त्री उसको कन्धे पर बिठा कर वेश्या के घर ले चली। रात अँधेरी थी, जाते हुए कुष्ठी ब्राह्मण का पैर अणिमाण्डव्य नामक ऋषि की देह में लगा। उससे क्रुद्ध होकर मुनि ने शाप दिया कि जिसका पैर मेरे लगा है वह सूर्योदय होते ही मर जायगा। मुनि का शाप सुनकर वह स्त्री बहुत चिन्तित हुई, पुनः वह दृढ़ता पूर्वक बोली, "अब सूर्योदय नहीं होगा" पतिव्रता का कहना झूठा नहीं हो सकता, रात बीत गयी परन्तु सूर्य के दर्शन नहीं हुए। उससे देवता बड़े चिन्तित हुए, बहुत विचार के अनन्तर देवताओं ने यह स्थिर किया कि पतिव्रता को शान्त करना पतिव्रता ही का काम है। अतएव देवता अनसूया की शरण गये। अनसूया उस पतिव्रता स्त्री के पास गयीं और उन्होंने कहा कि सूर्योदय होने दो, तुम्हारा पति मर जायगा तो उसे मैं जिला दूँगी। उस पतिव्रता स्त्री ने कहा कि अब सूर्योदय हो, उधर सूर्योदय हुआ, इधर उसका पति मर गया, अनसूया ने उसके पति को जिला दिया। अनसूया से वर माँगने के लिये देवों ने कहा, अनसूया ने कहा, मुझे कुछ नहीं चाहिये, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर हमारे पुत्र हों। देवताओं ने यही वर दिया। यही त्रिदेव का अवतार दत्तात्रेय हैं।

—दत्त (पु०) [दत्त+आदत्त] दत्त अपहृत, दिया हुआ ले लेना।—दर (पु०) [दत्त+आदर] सत्कृत, सेवित, सेव्यमान्।—नयकर्म (पु०) दान करके पुनः नहीं लेना।—पहृत (पु०) दान करके छीन लेना, देकर ले लेना।—प्रदानिक (पु०) [दत्त+अप्रदानिक] अष्टादश विवाद के अन्तर्गत विवाद विशेष, दिये हुए ऋण का शोध कराने के लिये विवाद।—वधान (पु०) [दत्त+अवधान] कृतावधान, अभिनिविष्ट, आसक्त, आसक्तचित्त।

दत्त्रिम तत्० (पु०) दत्तक पुत्र, दिया हुआ पुत्र, गृहीत पुत्र, पोष्यपुत्र।

ददन तत्० (पु०) [दद्+अनट्] दान, वितरण, त्याग, देना।

ददरीक्षेत्र दे० (पु०) भृगुमुनि का स्थान, जहाँ कातिक की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह स्थान बलिया के पास है।

दद्लाना दे० (क्रि०) डाँटना, साँसना, भर्त्सन करना।

—मूल (पु०) ओषधि विशेष दश ओषधियों के मूल। —ये गमङ्ग (पु०) सम्भव कम जन्म नक्षत्र वेध विशेष। —रथ (पु०) इक्ष्वाकु कुलोत्पन्न राजाविशेष, सूर्यवंशीय राजा, यह अज के पुत्र और श्रीरामचन्द्र तथा उनके तीन भाइयों के पिता थे। इनकी राजधानी का नाम अयोध्या था, इनकी तीन प्रधान रानियां कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी थीं। परन्तु बहुत वर्ष बीत गये उनमें से किसी के पुत्र नहीं हुआ, अतः वशिष्ठ की अनुमति से उन्होंने पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करना स्थिर रा और उस यज्ञ को सम्पन्न करने के लिये विभाण्डक ऋषि के पुत्र ऋष्यशृङ्ग को बुलाया। उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया, और यज्ञशेष तीन रानियों को खाने के लिये भिजवाया। कौशल्या ने राम को, सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को और कैकेयी ने भरत को यथा समय उत्पन्न किया। यज्ञ करने के पहले दशरथ मृगया करने वन में गये थे। वहाँ किसी का शब्द सुनकर इन्होंने शब्दभेदी बाण मारा। उस बाण से अन्ध मुनि का पुत्र मारा गया। अन्ध मुनि पुत्र वियोग से मरने लगे। उन्होंने मरते मरते राजा को शाप दिया कि तुम भी पुत्र वियोग से मरोगे। दशरथ जब अपने पुत्र श्रीराम का राज्याभिषेक करने को तयारी करते थे, उस समय मन्थरा के कुचक्र से कैकयी ने राजा के पहले दिये दो वरों में एक तो राम का वनवास और दूसरा भरत का राज्याभिषेक माँगा। इसी धर्मसंकट में पड़ कर राजा दशरथ को अपने प्राण देने पड़े थे। —शीस (पु०) दशानन, रावण। —हरा (स्त्री०) ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, इसे गङ्गादशहरा कहते हैं। क्योंकि यह गङ्गा की जन्मतिथि है। आश्विन शुक्ला दशमी। कहते हैं इस दिन रामचन्द्र ने रावण को मारा था, पर यह ठीक नहीं है। इसे विजयदशमी भी कहते हैं।

दशन तत्० (पु०) दाँत, दन्त, कवच, शिखर। —च्छद (पु०) ओष्ठ, अधर। —रुच् (पु०) दशन शोभा, दन्तरुचि।

दशम तत्० (गु०) दश संख्या को पूरण करने वाली संख्या, दशवां। —लव (पु०) दशमांश, दशवां हिस्सा।

दशमी तत्० (स्त्री०) पक्ष का दशवां दिन, दशवीं तिथि।

दशा तत्० (स्त्री०) अवस्था, भाव, गति, वृत्ति, स्थिति, दीपवर्त्ति, दिया की बत्ती।

दशांस तत्० (पु०) दशवाँ भाग, दशवाँ हिस्सा।

दशांगुल तत्० (गु०) दश अंगुल का परिमाण।

दशानन तत्० (पु०) रावण, दशकण्ठ।

दशावतार तत्० (पु०) चारों युगों में विष्णु के दस अवतार।

दशाविपाक तत्० (पु०) दुःख की अन्तिम अवस्था।

दशार्ण तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत के पूर्व और दक्षिण भाग का देश, मालवा का पश्चिम भाग, इस देश की राजधानी का नाम विदिशा है।

दशार्ह तत्० (पु०) बुद्ध, देश विशेष, यदुदेश, यदु देश के रहने वाले।

दशास्य तत्० (पु०) दशमुख, रावण, दशानन। —जित् (पु०) रामजी, श्रीरघुनाथजी।

दशाह तत्० (पु०) दश दिन में किये जाने वाले कर्म, दश दिन साध्य कार्य।

दशाहीन तत्० (गु०) दुर्भाग्य, दुरवस्थ, दुर्गत, दुरवस्थापन्न।

दशोला दे० (गु०) सुखी, सुभाग्य, श्रीमान्।

दस तत्० (गु०) दश, संख्या विशेष, पाँच की दूनी संख्या।

दसन तत्० (पु०) उत्क्षेपण, प्रस्थापन।

दसी तत्० (पु०) दशा, धागा, सूत, सूत्र।

दसौखा दे० (पु०) पङ्खा का झलना।

दसौद्वार तत्० (पु०) दस द्वार, शरीर के दस मार्ग, विजयादशमी के बाद का समय।

दसौंधी दे० (पु०) भाटबन्दी, स्तुतिकर्ता, गुणगानकार, प्रशंसक, राय, चारण।

दस्त तत्० (गु०) प्रक्षिप्त, प्रस्थापित, नष्ट। (दे०) हस्त, हाथ, कर, पाखाना।

स्तख़त दे० (पु०) स्वाक्षर, सही, अपने नाम की सही करना ।

स्ता दे० (पु०) धातुविशेष, तामचीनि, राँगा कलई ।

स्यु तत्० (पु०) साहसिक, चोर, तस्कर, डाँकू, डँकैत, दुर्वृत्त ।—वृत्ति (स्त्री०) चोरी, डँकैती ।

स्त्र तत्० (पु०) शिशिर, गर्दभ, अश्विनीकुमार, अश्विनीसुत ।—देवता (स्त्री०) अश्विनी नामक नक्षत्र ।

स्रौ तत्० (पु०) अश्विनीकुमारद्वय, देववैद्य ।

ह दे० (पु०) गह्वर, गर्त, गहरा, आवर्त, जलकुण्ड ।

हक दे० (स्त्री०) दाह, चमक, चिलक, प्रकाश ।

हकना दे० (क्रि०) जलना, पश्चात्ताप करना, पछताना, अनुताप करना, जलना ।

हकाना दे० (क्रि०) जगाना, बिगाड़ना, पश्चात्ताप कराना, अनुताप कराना, पछतवाना ।

हदहड़ दे० (अ०) वेग से, ज़ोरसे, प्रखरता से, तीव्रता से ।—जलना (वा०) बड़े वेग से जलना । बहुत वेग से आग का लहकना ।

हन तत्० (पु०) [दह + अनट्] दाह, जलन, भस्मीकरण, भस्म होना, अग्नि, अनल, पावक, आग, चित्रकवृक्ष, भल्लातक, भिलावा । (गु०) दुष्टचित्त, दुर्जन, जलाने वाला, दुःख देनेवाला ।—केतन (पु०) धूम, धुआँ ।—प्रिया (स्त्री०) स्वाहा और स्वधा, अग्नि की भार्या ।

हना दे० (क्रि०) जलना, बलना, भस्म होना, दहना, कलङ्काश्रित होना ।—(गु०) दक्षिण भाग, दहिना ।

हनाराति तत्० (पु०) [दहन + अराति] जल, सलिल, तोय, पानी ।

हनीय तत्० (गु०) [दह + अनीय] दाह्य, दाहार्ह, दग्ध करने योग्य, जलाने के उपयुक्त ।

हनोपम तत्० (पु०) [दहन + उपम] सूर्यकान्त मणि, अग्नितुल्य ।

हनोपल तत्० (पु०) [दहन + उपल] अग्निमय पत्थर, सूर्यकान्तमणि, आतशी शीशा ।

दहय तत्० (क्रि०) जलावे, नाश करे, भस्म करे, सतावे ।

दहर तत्० (पु०) मूषिक, मूसा, चूहा, भ्राता, भाई, बालक, स्वल्प, सूक्ष्म, गह्वरस्थ, आकाश, हृदयाकाश, हृदयमध्यवर्ती आकाश ।

दहलना दे० (क्रि०) दबना, शङ्कित, शङ्काक्रान्त, काँपना, डरना, भयभीत होना ।

दहलाना दे० (क्रि०) दबाना, कँपाना, कम्पित करना ।

दहसेरा दे० (पु०) दस सेर का तौल, परिमाण विशेष ।

दहाड़ना दे० (क्रि०) गरजना, ललकारना ।

दहाना दे० (क्रि०) जलाना, भस्म करना, बलना ।

दहिना दे० (गु०) दक्षिण, दहिना, दक्षिण भाग ।

दही तद्० (पु०) दधि, दूध का विकार ।

दहेड़, दहेल दे० (पु०) पक्षिविशेष ।

दहेंड़ी दे० (स्त्री०) दही की हाँड़ी, जिसमें दही रखी या बनाई जाती है ।

दह्यमान तत्० (गु०) [दह + मान] दग्ध, दुष्ट, ज्वलित, जलाया हुआ ।

दह्यो दे० (पु०) दही, दधि । (क्रि०) जलाया, भस्म किया ।

दा तत्० (गु०) देनेवाला, दाता, दानी, दानकर्ता ।

दाइज दे० (पु०) यौतुक, दैजा, दान, कन्याप्रदाता की देयवस्तु, जो कन्या का पिता कन्यादान के उपलक्ष में वर को देता है ।

दाई तद्० (गु०) दायी, दाता, देनेवाला, यह जिस शब्द के अन्त में आता है उसका देनेवाला अर्थ होता है । सुखदाई, दुखदाई आदि । (स्त्री०) धाय, धात्री, बच्चे को दूध पिलानेवाली, दासी, चाकरानी, नौकरानी, फ़ारसी का दायह शब्द से यह शब्द निकला है ।

दाऊ दे० (पु०) बड़ा भाई, बड़ा भ्राता, बलदेव जी का नाम ।

दाऊदी दे० (स्त्री०) एक झाड़ अथवा उसका फूल, एक प्रकार की आतशबाजी, सफेदी, यह शब्द अरबी के दावदी शब्द से निकला है यथा—अ०—गुल-दावदी, हि०—गुलदाउदी।

दाँड़ तद्० (पु०) दण्ड, सजा, ताड़न, शासन, नाव खेवने की डाँड़ी।

दाँड़ा दे० (पु०) सीमा, सींव, मेंड़, सिवाना।—**मेड़ा** (पु०) सिवाना, सीमा, छोर, दो ग्राम या खेतों के विभाग का चिन्हविशेष।

दाँड़ी दे० (पु०) खेवक, नाव खेवने के लिये लकड़ी का बना हुआ डाँड़।

दाँत तद्० (पु०) दन्त, रदन, दाढ़, दशन।—**उँगली काटना** (वा०) अचम्भे में आना, आश्चर्यित होना विस्मित होना, विस्मय करना।—**कचकचाना** (वा०) क्रोध करना, क्रोध से दाँत पीसना।—**कटकटाना** (वा०) अपकारी का बदला न चुका सकने के कारण क्रोध से जलना।—**काटी रोटी खाना** (वा०) घनिष्ट मित्रता करना, दिली दोस्ती।—**खट्टे करना** (वा०) दूसरे के प्रयत्न को विफल करना, अपने पराक्रम से शत्रु को नीचा दिखाना।—**तले उँगली दबाना** (वा०) अचम्भा करना, विस्मित होना, भौचक रह जाना।—**निकालना** (वा०) हार जाना, अपनी अयोग्यता और विवशता जतलाना।—**पर चढ़ाना** (वा०) कलङ्कित करना, अपमानित करना।—**पीसना** (वा०) क्रोध करना, क्रोध बतलाने के लिये दाँत कटकटाना।—**बजना** (वा०) कटकटाना, क्रोध करना, झगड़ना, बक बक करना।—**रखना** (वा०) किसी के लिये उत्कण्ठित होना, स्पर्धा करना, अवज्ञा करना, तुच्छ जानना।

दाँतन दे० (पु०) दतवन, दन्तधावन, दाँत साफ करने की लकड़ी।

दाँताकिलकिल तद्० (स्त्री०) दन्तकिचाकिचा, बकझक, झगड़ा।

दाँती तद्० (स्त्री०) दाती, आरा के दाँत।

दाँव दे० (पु०) घात, अवसर, मौका, पारी, अपने अनुकूल समय।—**चलना** (वा०) जय करना, सरस होना, आगे बढ़ना, चलना, शतरंज आदि खेलों में गोटी आगे बढ़ना।—**चलाना** (वा०) अधिकार चलाना, करना, चोट पहुँचाना।—**पकड़ना** (वा०) मल्लयुद्ध करना, कुश्ती लड़ना, कुश्ती में करना।—**बैठना** (वा०) अवसर होना, मौक़ा चला जाना।

दाँतन दे० (पु०) डाँठी, जलावन, नारा।

दाक्षायण तद्० (गु०) दक्षसम्बन्धी, दक्ष के पुत्र आदि, सुवर्णालङ्कार।

दाक्षायणी तद्० (स्त्री०) दुर्गा, सती, रोहिणी नक्षत्र अश्विनी आदि सप्तविंशति नक्षत्र, दन्ती जमालगोटा का वृक्ष।—**पति** (पु०) शिव, चन्द्रमा, धर्म।

दाक्षाय तद्० (पु०) गृध्रपक्षी।

दाक्षिण तद्० (पु०) कथन, उपाय, अधिकार, देशीय, दक्षिण सम्बन्धी।

दाक्षिणात्य तद्० (गु०) दक्षिणदेशजात, देशीय। (पु०) नारिकेल वृक्ष।

दाक्षिण्य तद्० (पु०) उदारता, अनुकूलता, भावविशेष, दक्षिणाचाररूप। (गु०) दक्षिणा पाने योग्य।

दाक्ष्य तद्० (पु०) दक्षता, निपुणता, नैपुण्य।

दाख तद्० (पु०) द्राक्षा, अंगूर, मुनक्का।

दाख़िल दे० (पु०) अर्पण, परिशोधकरण, वस्तु को लौटाना, जमा करना।—**दफ्तर** दबा देना, रख देना।

दाग़ दे० (पु०) चिन्ह, अङ्क, कलङ्क, दोष, जलने का चिन्ह।—**चढ़ाना** (वा०) लगाना।—**देना** (वा०) तपे लोहे से चिन्ह दागना, जलाना, अङ्कित करना, कलङ्क।—**लगाना** (वा०) अपयशी होना, पाप से होना।—**लाना** (वा०) दाग़ लगना, होना।

[दा]गना दे० (क्रि०) चिन्ह करना, दाग़ देना, तपाये लोहे से शरीर जलाना, अङ्कित करना। तोप या बन्दूक छोड़ना, तोप को वाढ़ दागना।

[दा]गी दे० (गु०) चिन्हित, अङ्कित, कलङ्कित, दण्डित।

[द]ाघ तत्० (गु०) जला हुआ, दग्ध।

[दा]ड़िम तत्० (पु०) अनार, बीजपूरक, फल-विशेष।

[दा]ढ़ दे० (स्त्री०) चौंढ़, पिछले दाँत, पीसने के दाँत।

[दा]ढ़ा दे० (स्त्री०) बड़ा दाँत, बीरखाँग, दन्त-विशेष।

[दा]ढ़ी दे० (स्त्री०) मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, चिबुक, ठुड्डी।—बनाना (क्रि०) क्षौर कराना, हजामत बनवाना।

[दा]त तत्० (गु०) छिन्न, कर्तित, छेदन किया हुआ, काटा हुआ, (पु०) दातृत्व, वदान्यता।

[दा]तन दे० (पु०) दतून, दन्तकाष्ठ।

[दा]तव्य तत्० (गु०) देने योग्य, दानार्ह, दान करने का पात्र।

[दा]ता तत्० (पु०) देनेवाला, दानी, दानशील, दानकर्त्ता, वदान्य।

[दा]तार तद्० (गु०) दाता, दानी।

[दा]तृत्व तत्० (पु०) दातृता, वदान्यता, दानशीलता, दानशक्ति, अकृपणता, दान करने की शक्ति।

[दा]त्यूह तत्० (पु०) पक्षिविशेष।

[दा]त्र तत्० (पु०) [दा+त्र] अस्त्रविशेष, लवित्र, दाव, काता।

[दा]त्री तत्० (स्त्री०) [दातृ+ई] दानकर्त्री, दान करने वाली स्त्री।

[दा]द दे० (पु०) रोगविशेष, दद्रु, खर्जू।—मर्दन (पु०) दद्रुमर्दन, औषधविशेष, चकवड़।

[दा]दा दे० (पु०) पितामह, पिता का पिता, बड़ा भाई, (स्त्री०)। दादी पितामह की स्त्री, पिता की माता।

दादुर तद्० (पु०) दर्दुर, मेंढक, बेंग।

दादू दे० (पु०) पुत्र आदि का प्रिय सम्बोधन, एक महात्मा का नाम, इन्होंने अपना एक नया पन्थ चलाया है। इनका पूरा नाम दादूदयाल है। इनका चलाया धर्ममत दादूपन्थ के नाम से प्रसिद्ध है, इनके शिष्य दादूपन्थी कह कर अपना परिचय देते हैं। यह धर्ममत भक्तिप्रधान है।

दाधना दे० (क्रि०) दग्धना, जलाना, बालना।

दाधिक तत्० (गु०) दधिसंस्कृत वस्तु, दधि-मिश्रित मिष्टान्न, दहीबड़ा।

दान तत्० (पु०) [दा+अनट्] पुण्यार्थ धनत्याग, उत्सर्ग, त्याग, वितरण, हाथी का मदजल। —पति (पु०) नित्य दानकर्ता, सततदाता। —पत्र (पु०) भूमिदानलिपि, दान की हुई वस्तु पर सम्प्रदान का स्वत्व बतलाने के लिये लेख।—यज्ञ (पु०) दान के लिये यज्ञ के समान, वैश्य।—वीर (पु०) अति दानकर्ता, प्रसिद्ध दानी।—शाली (गु०) दाता, वदान्य।—शील (गु०) दाता, दानकर्ता, वदान्य।

दानव तत्० (पु०) असुर, दैत्य, दनुज, कश्यपपत्नी, दनु की सन्तान।—अरि (पु०) देवता, सुर, असुरशत्रु।

दाना दे० (गु०) अनुभवी, बुद्धिमान, ज्ञाता, अभिज्ञ। (पु०) अन्न, अनाज, शस्य, धान्य, घोड़े का बँधा हुआ चना।—पानी (वा) अन्नजल, संयोग, समय।

दानी तत्० (गु०) दाता, दानशील, दान देनेवाला, सततदाता।

दानीय तत्० (गु०) [दा+अनीय] सम्प्रदान, दातव्य, दान के उपयुक्त।

दान्त तत्० (गु०) [दम्+क्त] सुशंसित, वशी-भूत, जितेन्द्रिय, तपस्या के क्लेश सहने योग्य।

दान्ति तत्० (स्त्री०) [दम्+क्ति] तपःक्लेश सहि-ष्णुता, तपस्या के कष्टों के सहन करने की शक्ति, इन्द्रियनिग्रह, दमन।

दाप दे० (पु०) प्रताप, दर्प, गर्व, अभिमान, अहङ्कार।

दापक दे० (पु०) अभिमानी, अहङ्कार, प्रतापी।

दवाना दे० (क्रि०) दवाना, वश में रखना, दमन करना, अधीन करना, चापना।

दाय रखना दे० (वा०) छिपाना, छिपालेना, लुकाना, ढकना।

दाम तत्० (स्त्री०) गोवन्धन रज्जु, रस्सी, माला। (पु०) रुपया पैसा, मोल, भाव, मूल्य। (पु०) एक पैसे का चैाबीसवाँ भाग।

दामन दे० (स्त्री०) आँचल, अञ्चल, वस्त्रप्रान्तभाग, कपड़े का छोर, शरण, आश्रय, अवलम्ब।

दामलिप्त तत्० (पु०) ताम्रलिप्त देश, (देखो ताम्रलिप्त)।

दामवती तत्० (स्त्री०) माला, स्रक्, फूलों की माला।

दामाञ्चन तत्० (पु०) अश्वादि का पादबन्धन रज्जु, पिछाड़ी, घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी।

दामासाही दे० (स्त्री०) यथार्थभाग, उचित भाग के कार्य।

दामिनी तत्० (स्त्री०) बिजली, तड़ित, विद्युत्। यथा:—

दोहा।

दामिनि दमकि रही घनमाहीं।
खल की प्रीति यथा थिर नाहीं॥

—रामायण।

दामी दे० (स्त्री०) कर, बाज़, लगती, लगान, राजदेय कर।—**लगाना** (क्रि०) कर लगाना, कर ठहराना।—**वासिलात** (पु०) गाँव के प्रधान ऋणदाता।

दामीयात दे० (पु०) वस्तुविशेष, जिससे रक्त विकार होता है।

दामोदर तत्० (पु०) [दाम + उदर] जैन, भूताई-द्विशेष, श्रीकृष्ण का एक नाम। कहते हैं श्रीकृष्ण लड़कई में बड़े चञ्चल थे। घर की वस्तुओं के वह तोड़ फोड़ डालते थे, इसी कारण यशोदा (कृष्ण की पालिका माता) ने कृष्ण की कमर में रस्सी बाँधकर उन्हें ओखल से बाँध दिया और स्वयं निश्चिन्त होकर काम करने लगी। इधर कृष्ण भी समय पाकर वैसेही घर से निकल पड़े, उनके के पास ही दे। पेड़ थे। उन्हीं के बीच से निकलने लगे, परन्तु ओखल बँधी रहने के निकल न सके, उन्होंने निकलने के लिये ज़ोर लगाया त्योंही वे दोनें पेड़ टूट ... से श्रीकृष्ण का नाम दामोदर हुआ है।

दामोदरगुप्त तत्० (पु०) संस्कृत का एक कवि, ... कवि कश्मीरनिवासी थे। कुट्टनीमत नामक ... ग्रन्थ इनका बनाया संस्कृत साहित्य में पाया जा... है। कश्मीर के इतिहास राजतरङ्गिणी से मालू... पड़ता है कि यह कवि महाराजा जयापीड़ ... मन्त्री थे, इनका समय सन् ७७२ से ८०१ ... विद्वानों ने अनुमान किया है अतएव दामोद... गुप्त का भी यही समय मानना चाहिये। क्षेमे... का समयमातृका और इनका कुट्टनीमत में दो... एक ही प्रकार के और एकही उद्देश से लिखे ग... हैं। वेश्याओं के फन्दे से बचाने के लिये ... इन्होंने कुट्टनीमत नामक ग्रन्थ लिखा है। वेश्या... की चालाकियाँ इसमें ख़ूब और साफ़ दिखा... गई हैं। यद्यपि इसका विषय अश्लील है, तथा... इसकी उपयोगिता की ओर ध्यान देने से इस... उत्तमता माननी पड़ती है। मेरी समझ से ... विद्या में न सही, परन्तु कविता में पण्डितरा... जगन्नाथ से इनकी तुलना कई अंशों में की ... सकती है।

दामोदर मिश्र तत्० (पु०) ये कवि भोजराज ... समकालीन हैं, इन्होंही ने हनुमन्नाटक का ... किया है। इस ग्रन्थ के संग्रह करने के अ... रिक्त और कोई इनका उल्लेखयोग्य गुण ... है। ग्यारहवीं सदी इनका समय बत... जाता है।

दाम्पत्य तत्० (पु०) परिणयावस्था, विवाह ... अवस्था, स्त्रीपुरुषसम्बन्धी।—**मुक्तिपत्र** (पु... तलाक़नामा, जिस पत्र के लिख स्त्री ... आपस का सम्बन्ध तोड़ देते हैं। यह ... हिन्दुओंकी नहीं, किन्तु आधुनिक ... जातियों की है।

म्भिक तत्० (पु०) दम्भयुक्त, अहङ्कारी, आत्मश्लाघी, आत्मप्रशंसा करने वाला। पाखण्डी, धूर्त। (पु०) बकपक्षी।

य तत्० (पु०) [दा+क] यौतुक आदि देयधन, कन्यादान के अनन्तर वर या वर के पिता को दिया जानेवाला धन, पैतृकधन, पिता के धन का भाग, वैवाहिक धन, बपौती, दायज, विपत्ति, आपद्। —बन्धु (पु०) भ्राता, दायाद, साथ रहनेवाले पिता के धनाधिकारी।—भाग (पु०) मृत पिता आदि का धनविभाग, ग्रन्थविशेष, धर्मशास्त्र का ग्रन्थ, जिसमें धनाधिकारियों का निरूपण है। स्वत्व-निरूपक, धर्मशास्त्र का अङ्ग विशेष।

यक तत्० (पु०) दाता, देनेवाला, दान करने वाला।

यजा तत्० (पु०) दाय, दायज, व्याहसम्बन्धी दान, यौतुक।

या तत्० (पु०) दावा, दावी, अभियोग, वाद।

याद तत्० (पु०) पुत्र, ज्ञाति, सपिण्ड, उत्तराधिकारी, कुटुम्ब। परिवार, धनाधिकारी।

यादी तत्० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, उत्तराधिकारिणी।

यार्ह तत्० (पु०) [दाय+अर्ह] पिता के धन पाने के अधिकारी।

यित तत्० (पु०) निश्चित अपराधी, जिसका दोषी होना निश्चित हो चुका है।

यी तत्० (पु०) दानशील, ऋणग्रस्त, भारग्रस्त, दोषयुक्त, प्रतिवादी, किसी काम के बनने या बिगड़ने के उत्तरदाता।

यित्व तत्० (पु०) उत्तरदातृत्व, कार्यभार।

र तत्० (पु०) पत्नी, जाया, भार्या, स्त्री।—कर्म (पु०) विवाह, पाणिग्रहण, व्याह।—त्यागी (पु०) स्वपत्नी त्यागी, अपनी स्त्री को छोड़ देनेवाला। —संग्रह (पु०) विवाह, पाणिग्रहण।

दारक तत्० (पु०) अस्त्रविशेष, काटने का अस्त्र, पुत्र, शिशु, बालक।

दारचीनी तत्० (स्त्री०) दारुचीनीय, चीन देश की लकड़ी, दालचीनी।

दारण तत्० (पु०) विदीर्ण करना, फाड़ना, बिहरना, बीच से फटना।

दारद तत्० (पु०) विषविशेष, पारा, हिंगुल।

दारा तत्० (स्त्री०) जाया, भार्या, स्त्री, पत्नी। —धिगमन (पु०) [दारा+अधिगमन] पाणिग्रहण, विवाह, दाराप्राप्ति।—पत्य (पु०) [दारा+अपत्य] स्त्री पुत्र।

दारिका तत्० (स्त्री०) कन्या, पुत्री, दुहिता, तनया।

दारित तत्० (पु०) कृतविदारण, कृतभग्न, तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ।

दारिद तद्० (पु०) दारिद्र्य, दीनता, निर्धनता, कंगाली।

दारिद्र, दारिद्य तत्० (पु०) दरिद्रता, दीनता, दुःख, दैन्य, अन्न आदि का कष्ट, निर्धनता।

दारी तत्० (पु०) बहु दारविशिष्ट, परदारागामी, व्यभिचारी, लम्पटता, क्षुद्ररोगविशेष, विवाह, पति। (स्त्री०) युद्ध में पकड़ी हुई दासी।

दारु तत्० (पु०) काष्ठ, लकड़ी, देवदारु वृक्ष। —कदली (स्त्री०) वनकदली, वनकेला।—गन्धा (स्त्री०) गन्धद्रव्यविशेष।—गर्भा (स्त्री०) दारुमयी स्त्री, काष्ठ निर्मित पुत्तलिका, गुड़िया, पुतली, कठपुतली।—चीनी (स्त्री०) एक वृक्ष की छाल, दालचीनी।—ज (पु०) काष्ठमय, काठ का बना।—जचित्र (पु०) काठ की पुतली, कठपुतली।—निशा (स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारुहरदी।—फल (पु०) चिलगोज़ा।—मय (पु०) काष्ठमय, काष्ठनिर्मित, काठ का बना हुआ मकान आदि।—हरिद्रा (स्त्री०) दारुहल्दी।—हस्तक (पु०) काठ का बना हाथा, काठ की कलछी।

दारुक तत्० (पु०) देवदारु, वृक्षविशेष, श्रीकृष्ण के एक सारथि का नाम, सुभद्राहरण के समय इसने

अर्जुन से कहा था कि मैं यादवों के विरुद्ध रथ नहीं हाँक सकता इस कारण आप मुझे बाँधकर जहाँ चाहें वहाँ जा सकते हैं। मृत्यु के समय का श्रीकृष्ण का सम्वाद इसने अर्जुन को सुनाया और दुखी होकर स्वयं वन में चला गया।

दारुण तत्० (पु०) चित्रक (गु०) भयानक, घोर, कठोर, कठिन असह्य।—**वीर्य** (गु०) भयानक, घोर, दारुण, भीम।

दारू दे० (स्त्री०) मद, शराब, मदिरा बारूद।

दारूडा दे० (पु०) मद, शराब।

दारूडी दे० (स्त्री०) मद, मदिरा, शराब।

दारयो दे० (पु०) दाड़िम, अनार, यथा —

दोहा।

सुभर भरयो तव गुनकननु पाकयो कुबल कुचाल।
क्यो धौं दारयो ज्यों हियो दरकत नाहिन लाल॥
—बिहारीसतसई।

दार्ढ्य तत्० (पु०) दृढ़ता, कठिनता, काठिन्य।

दार्वा तत्० (स्त्री०) औषधविशेष, रसोत।

दार्वी तत्० (स्त्री०) दारुहरिद्रा, दारुहरदी।

दार्शनिक तत्० (गु०) दर्शनशास्त्रवेत्ता, दर्शनशास्त्रज्ञ।

दार्ष्टान्त तत्० (गु०) उपमिति, उपमेय, आदर्श आदर्शित।

दाल दे० (स्त्री०) दला हुआ चना अरहर मूँग आदि, दलहन।—**गलना** (वा०) प्रभाव होना, पूँछ-तौंछ।

दालिद्र तद्० (पु०) दारिद्र्य।

दाव तत्० (पु०) जङ्गल, वन, उपताप, दावानल, वनाग्नि।

दावन दे० (पु०) पीडन, मर्दन, मीसना, डाँठ से अन्न अलगाना।

दावना दे० (क्रि०) दबाना, अन्न निकालना डाठ से अन्न निकालना।

दावरि दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रस्सी, जिससे कतार से बैल बाँधे जाते हैं और उन्हीं से रौंदवा कर भूसा और अन्न पृथक् करते हैं।

दावा दे० (पु०) हक, स्वत्व, स्वत्वप्राप्ति के लिये निवेदन।

दावानल तत्० (पु०) दावाग्नि, दाववह्नि, वन को आग, वनाग्नि, वनोद्भव अग्नि।

दावी दे० (स्त्री०) याचना, प्रार्थना, नालिश।

दाश तत्० (पु०) मछली पकड़ने वाला, मल्लाह, कर्णधार, मछुआ, धीवर।

दाशरथि तत्० (पु०) दशरथापत्य, दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र आदि।

दाशार्ह तत्० (पु०) विष्णु, नारायण।

दाश्व तत्० (पु०) दानकर्ता, दाता, दानशील।

दास तत्० (पु०) भृत्य, किङ्कर, कैवर्त, धीवर, शूद्र, टहलुआ। उपनामविशेष, साधुओं की एक पद्धति।—**ता** (स्त्री०) पराधीनता, परतन्त्रता, सेवकाई, पराधीनभाव, सेवकभाव।—**त्व** (पु०) दास्य, सेवकभाव।—**नन्दिनी** (स्त्री०) व्यासमाता, सत्यवती।—**वृत्ति** (स्त्री०) पराधीन जीवन, नौकरी, दासता।

दासा दे० (पु०) एक प्रकार का काष्ठ, जो ,कड़ी के नीचे दीवार पर रखते हैं।

दासी तत्० (स्त्री०) भजिष्या, कर्मकरी, किङ्करी, भृत्यस्त्री, शूद्रा, परिचारिणी, परिचारिका।

दास्य तत्० (पु०) दासत्व, सेवा-जीविका, भृत्यता, नौकरी।

दाह तत्० (पु०) दहन, भस्मीकरण, ज्वाला, ताप।—**जनक** ज्वालाकार।—**देना** (वा०) दग्ध करना, अन्त्येष्टि संस्कार करना, मुर्दा जलाना।—**सर** (पु०) प्रेतावास, श्मशान, शवदाह स्थान, चिताभूमि।—**हरण** (पु०) औषध विशेष, वीरण मूल।

दाहक तत्० (पु०) दाहकर्ता, दाह करने वाला, जलाने वाला, ताप देनेवाला।

दाहना दे० (क्रि०) जलाना, बालना, भस्म करना, (गु०) दहिना, दक्षिण, दक्षिणभाग।

दाहात्मक तत्० (गु०) दाहस्वरूप, दाहप्रद।

दाहिना दे० (गु०) दहना, दक्षिण, दहिना।

दाह्य तत्० (गु०) दाह करने के उपयुक्त, जलाने योग्य, दाहार्ह।

दिक् तत्० (पु०) दिशा, दिग्, ओर।—पति (पु०) दशाध्यक्ष, दिक्पाल, दश दिशाओं के अधिपति। क्रम से वे ये हैं पूर्व का इन्द्र, अग्निकोण का अग्नि, दक्षिण का यमराज, नैर्ऋत्य कोण का नैर्ऋत्य, पश्चिम का वरुण, वायव्य कोण का पवन, उत्तर का कुबेर, ईशान कोण के महादेव, ऊपर की दिशा के ब्रह्मा और नीचे की दिशा के अनन्त या विष्णु पति हैं।—शूल (पु०) दिशाविशेष में जाने का निषिद्ध दिन। शनि और सोमवार पूर्व का, बृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का, और मङ्गल बुध उत्तर का दिक्शूल है। अर्थात् निर्दिष्ट दिनों में निर्दिष्ट दिशा की यात्रा निषिद्ध है।

दिक दे० (गु०) दुखी, व्याधित, कष्टयुक्त, क्लेशी।

दिक़दार दे० (गु०) रोगपीड़ित, व्याधित, रोगी, दुखी, दीन, कष्टग्रस्त, क्लेशयुक्त।

दिखलाना दे० (क्रि०) समझाना, सुझाना, दरसाना, बताना, बतलाना।
दिखाना दे० (क्रि०) प्रकटित करना, प्रकाशित करना, प्रकाश करना, लखाना, लक्षित कराना, प्रत्यक्ष कराना, साक्षात्कार कराना।

दिखलावा दे० (पु०) ठूहा, धूमधाम, बाहरी साज-बाज।

दिखाई देना दे० (क्रि०) मालूम होना, मालूम पड़ना।

दिखाऊ दे० (गु०) सुन्दर, दिखावटी, सुन्दर, सजीला, सुहावना, बाहरी सुन्दरता।

दिखाना दे० (क्रि०) बतलाना, सुझाना, प्रत्यक्ष कराना, दरसाना।

दिखाव दे० (पु०) बाहरी चटकमटक, टीमटाम, फोटफाट।

दिग् तत्० (स्त्री०) दिशा, दिक्।—अन्त (पु०) दिग्मण्डल, चक्रवाल, दिशाओं की परिधि।—अन्तर, अन्तराल (पु०) शून्य, आकाश, व्योम, नभ।—अम्बर (पु०) विवस्त्र, वस्त्ररहित, नग्न, नंगा। (पु०) शिव। संन्यासी।—गज (पु०) दिशाओं के हस्ती, आठ दिग्गज हैं उनके नाम ये हैं ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अञ्जन, पुष्पदन्त, सार्वभौम, सुप्रतीक।—दर्शन बहुदर्शन, सर्वभावलोकन, इङ्गितमात्र से दिखाना।—दाह (पु०) देशदाह, अग्नि का उत्पात।—ध (गु०) विषाक्तबाण, विष से बुझाया हुआ बाण।—वासाः (गु०) नग्न, विवस्त्र, नङ्गा।—विजय (पु०) विद्या अथवा युद्ध के द्वारा देशविजय।—विजयी (गु०) देशजयी, विश्वजेता, सर्वत्र-जयशील।—विदिक् (स्त्री०) सकल दिशा में, चारों ओर।—भ्रम (पु०) दिशाओं का अन्यथा ज्ञान, दूसरी दिशा को दूसरी दिशा समझना।—भ्रमण (पु०) सर्वत्र भ्रमण, दिक्पर्यटन।—मण्डल (पु०) चक्रवाल, दिगन्त।—मुख (पु०) दिगाभिमुख।

दिग्गी दे० (स्त्री०) दिघी, तालाव, वापी, पोखरा।

दिघी दे० (स्त्री०) दीर्घिका, तालाब, पोखरा, बावी, तड़ाग।

दिङ्नाग तत्० (पु०) एक बौद्ध दार्शनिक पण्डित का नाम, ये बौद्धमत के आचार्य भी थे। ये काञ्ची में रहते थे। इनका कालिदास के समकालीन होना पण्डित लोग बतलाते हैं अतः कालिदास का ६०० ई० इनका भी समय माना जाता है।

दिठौना दे० (पु०) बच्चों का तिलक जो दृष्टिदोष हटाने के लिये किया जाता है।

दिण्ड दे० (पु०) नृत्यविशेष।

दिढ़ाना तद्० (क्रि०) दृढ़ करना, ठहराना।

दिति तत्० (स्त्री०) प्रजापति दक्ष की कन्या कश्यप की स्त्री और दैत्यों की माता का नाम, देवताओं की लड़ाई में दैत्यों के नाश होने पर दिति ने एक दिन अपने पति से इन्द्र को परास्त करने वाले एक पुत्र की प्रार्थना की. कश्यप दिति को

प्रार्थना पूर्ण करके बोले, तुमको हज़ार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही शुद्धतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानी से पति के बताये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए, वह मौक़ा देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति सो गई, उसी अवसर पर इन्द्र ने वज्र से गर्भ को ४९ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुत् है।

दिदृक्षा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिक्षा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।

दिधिषु तत्० (स्त्री०) द्विरूढ़ा, दो बार ब्याही स्त्री। **—पति** (पु०) द्विरूढ़ापति, दो बार ब्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घस्र, अहः। **—कर** (पु०) दिनपति, दिनमणि, सूर्य, रवि। **—काटना** (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना। **—केशव** (पु०) तम, अन्धकार। **—का दिन** (वा०) समस्त दिन, सपूरा दिन। **—खुलना** (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना। **—गँवाना** (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खोना। **—चढ़ना** (वा०) अधिक समय बिताना, विलम्ब होना, स्त्रियों के रजोधर्म होने में विलम्ब होना। **चढ़ाना** (वा०) विलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना, आलस से काम का समय बिता देना। **—ज्योतिः** (पु०) आतप, धूप, घाम। **—ढलना** (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना। **—दानी** (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन दानकर्ता। **—दिन** (पु०) प्रतिदिन। **—दुःखित** (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा। (पु०) दिनहीन, दरिद्र, निःस्व, निर्धन। **—नाथ** (पु०) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य। **—पड़ना** (वा०) सन्ध्या होना, दिन बीतना, दुःख पड़ना, दुःख आना। **—फिरना** (वा०) भाग्य खुलना, बुरे दिनों का चला जाना और अच्छे दिनों का आना। **—बदिन** (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन। **—बल** (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश राशि। **—भरना** (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना। **—मणि** (पु०) दिवाकर भानु, सूर्य। **—मान** (पु०) दिवस काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त से नियमित काल। **—मुदना** (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना। **—मुख** (पु०) प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार, बिहान। **—मूर्द्धा** (पु०) उदयाचल, पूर्व-पर्वत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि, इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी थी। ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये बौद्ध-धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य करके मल्लिनाथ ने "दुर्व्याख्या विषमूर्छिता" कहा है। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग ही माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था। (२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि ज़िला के देवतर ग्राम में १८१९ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राव था। इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राव था। दिनकर राव चार पीढ़ियों से गवालियर में रहते थे। वहाँ इनके पूर्वपुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राव संस्कृत और फारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिसाबनवीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह गवालियर राज्य के दीवान बनाये गये। उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी ख़ज़ाने में रुपये नहीं थे। इन्होंने पाँच हज़ार के स्थान में दो हज़ार अपना मासिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया। सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्ग्रेज़ी सरकार की बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े लाट ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के ज़िले में एक बड़ी ज़मीदारी दी। सन् १८५९ ई० में इन्होंने गवालियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिंटेंडेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड डफरिन ने इनकी राजा उपाधि को वंशगत कर दिया। वृद्ध अवस्था में उन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्भजन में मन लगाया। सन् १८९६ ई० में एक भारतीय प्रभुभक्त की जीवन लीला समाप्त हुई।

दिनाइ दे० (स्त्री०) दाद, दद्रु, रोग विशेष।

दिनांश तत्० (पु०) पूर्वान्ह, मध्यान्ह, सायान्हादि, दिन का भाग।

दिनादि तत्० (पु०) [दिन + आदि] प्रभात, प्रातःकाल, सबेरा।

दिनान्त तत्० [दिन + अन्त] दिवसावसान, सन्ध्या, दिनक्षय।

दिनामार दे० (पु०) डेनमार्क देश के वासी।

दिनालोक तत्० (पु०) [दिन + आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (गु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तत्० (पु०) [दिन + ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भानु।

दिनैला दे० (गु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिया दे० (पु०) दीपक, दीप, चिराग़।—सलाई (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध, दीप बालने की एक वस्तु।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दान कराना।

दिलवाली दे० (गु०) दिल्ली का वासी, दिल्ली का बना।

दिलवैया दे० (गु०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलीप तत्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। इन्होंने ९९ अश्वमेध यज्ञ किये थे, कालिदास का रघुवंश इन्हींके चरित्र से प्रारम्भ किया गया है।

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी।

दिव तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिवा, दिन।

दिवस तत्० (पु०) दिन, दिवा, वस, अहः।—मुख (पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तत्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सन्ध्या।

दिवस्पति तत्० (पु०) [दिवस + पति] इन्द्र, देवराज, सुरपति।

दिवा तत्० (पु०) दिन, दिवस, वासर।—कर (पु०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के अधीश्वर हर्षवर्द्धन के सभासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा पण्डित दिवाकर का भी वही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्ष वर्द्धन की सभा में बाणभट्ट आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है:—

> अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः,
> श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समो बाणमयूरयोः॥

इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भरद्वाज गोत्रोत्पन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था, शिव दैवज्ञ इनके चचा और विद्यादाता गुरु थे। पं० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शाके १५२८ या

प्रार्थना पूर्ण करके बोले, तुमको हज़ार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही शुद्धतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानी से पति के बताये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए, वह मौक़ा देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति सो गई, उसी अवसर पर इन्द्र ने वज्र से गर्भ को ४९ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुत् है।

दिदृक्षा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिक्षा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।

दिधिषु तत्० (स्त्री०) द्विरूढ़ा, दो बार ब्याही स्त्री। —**पति** (पु०) द्विरूढ़ापति, दो बार ब्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घस्र, अहः। —**कर** (पु०) दिनपति, दिनमणि, सूर्य, रवि। —**काटना** (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना। —**केशव** (पु०) तम, अन्धकार। —**का दिन** (वा०) समस्त दिन, समूचा दिन। —**खुलना** (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना। —**गँवाना** (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खोना। —**चढ़ना** (वा०) अधिक समय बिताना, विलम्ब होना, स्त्रियों के रजोधर्म होने में विलम्ब होना। **चढ़ाना** (वा०) विलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना, आलस से काम का समय बिता देना। —**ज्योतिः** (पु०) आतप, धूप, घाम। —**ढलना** (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना। —**दानी** (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन दानकर्ता। —**दिन** (पु०) प्रतिदिन। —**दुःखित** (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा। (पु०) दिनहीन, दरिद्र, निःस्व, निर्धन। —**नाथ** (पु०) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य। —**पड़ना** (वा०) सन्ध्या होना, दिन बीतना, दुःख पड़ना, दुःख होना। —**फिरना** (वा०) भाग्य खुलना, बुरे दिनों का चला जाना और अच्छे दिनों का आना। —**बदिन** (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन। —**बल** (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश राशि। —**भरना** (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना। —**मणि** (पु०) दिवाकर भानु, सूर्य। —**मान** (पु०) दिवस मान, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त से नियमित काल। —**मुदना** (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना। —**मुख** (पु०) प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार, बिहान। —**मूर्द्धा** (पु०) उदयाचल, पूर्व-पर्वत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि, इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी थी। ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये बौद्ध-धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य करके मल्लिनाथ ने "दुर्व्याख्या विषमूर्छिता" कहा है। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग ही माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था। (२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि ज़िला के देवतर ग्राम में १८१९ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राव था। इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राहू था। दिनकर राव चार पीढ़ियों से ग्वालियर में रहते थे। वहाँ इनके पूर्वपुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राव संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिसाबनवीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह ग्वालियर राज्य के दीवान बनाये गये। उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी ख़ज़ाने में रुपये नहीं थे। इन्होंने पाँच हज़ार के स्थान में दो हज़ार अपना मासिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया। सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्गरेज़ी सरकार की बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े लाट ने इनको सहायता के बदले में इन्हें काशी के ज़िले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५९ ई० में इन्होंने गवालियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिंटें-डेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड डफरिन ने इनकी राजा उपाधि को वंशगत कर दिया। वृद्धावस्था में उन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्-भजन में मन लगाया। सन् १८९६ ई० में एक भारतीय प्रभुभक्त की जीवन लीला समाप्त हुई।

दिनाइ दे० (स्त्री०) दाद, दद्रु, रोग विशेष।

दिनांश तत्० (पु०) पूर्वाह्न, मध्याह्न, सायाह्नादि, *दिन का भाग।*

दिनादि तत्० (पु०) [दिन + आदि] प्रभात, प्रातः काल, सवेरा।

दिनान्त तत्० [दिन + अन्त] दिवसावसान, सन्ध्या, दिनक्षय।

दिनामार दे० (पु०) डेनमार्क देश के वासी।

दिनालोक तत्० (पु०) [दिन + आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (गु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तत्० (पु०) [दिन + ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भानु।

दिनैला दे० (गु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिया दे० (पु०) दीपक, दीप, चिराग।—सलाई (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध, दीप बालने की एक वस्तु।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दान कराना।

दिलवाली दे० (गु०) दिल्ली का वासी, दिल्ली का बना।

दिलवैया दे० (गु०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलीप तत्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। इन्होंने ९९ अश्वमेध यज्ञ किये थे, कालिदास का रघुवंश इन्हींके चरित्र से प्रारम्भ किया गया है।

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी।

दिव तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिवा, दिन।

दिवस तत्० (पु०) दिन, दिवा, वस्त्र, अहः।—मुख (पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तत्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सन्ध्या।

दिवस्पति तत्० (पु०) [दिवस + पति] इन्द्र, देवराज, सुरपति।

दिवा तत्० (पु०) दिन, दिवस, वासर।—कर (पु०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के अधीश्वर हर्षवर्द्धन के सभासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा पण्डित दिवाकर का भी वही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्ष वर्द्धन की सभा में बाणभट्ट आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक है:—

> अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः ,
> श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समो बाणमयूरयोः ॥

इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भरद्वाज गोत्रोत्पन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था, शिव दैवज्ञ इनके चचा और विद्यादाता गुरु थे। पं० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शाके १५२८ या

प्रार्थना पूर्ण करके बोले, तुमको हज़ार वर्ष तक गर्भ धारण करना होगा, और प्रसव होने तक बहुत ही गुह्यतापूर्वक रहना होगा, दिति भी बड़ी सावधानी से पति के बताये नियमों का पालन करने लगी। इस समाचार को पाकर इन्द्र व्यथित हुए वह मौक़ा देखने लगे। एक दिन बिना पैर धोये दिति सो गई, उसी अवसर पर इन्द्र ने वज्र से गर्भ को ४९ खण्ड कर दिया। उसी गर्भ से उत्पन्न पुत्रों का नाम मरुत् है।

दिदृक्षा तत्० (स्त्री०) दर्शनेच्छा, देखने की इच्छा।

दिधिक्षा तत्० (स्त्री०) दहनेच्छा, दहन करने की इच्छा, जलाने की इच्छा।

दिधिषु तत्० (स्त्री०) द्विरूढ़ा, दो बार ब्याही स्त्री। —**पति** (पु०) द्विरूढ़ापति, दो बार ब्याही स्त्री का पति, विधवापति।

दिन तत्० (पु०) सूर्यज्योति से नियमित काल, वासर, दिवस, घस्र, अहः।—**कर** (पु०) दिनपति, दिनमणि, सूर्य, रवि।—**काटना** (वा०) समय बिताना, गुज़र करना, दुःख या आलस्य से दिन बिताना।—**केशव** (पु०) तम, अन्धकार। —**का दिन** (वा०) समस्त दिन, सपूचा दिन। —**खुलना** (वा०) अच्छे दिन आना, सुख का समय, उन्नति होना, वृद्धि होना, बढ़ती होना। —**गँवाना** (वा०) आलस में पड़कर बैठे रहना, वृथा समय खोना।—**चढ़ना** (वा०) अधिक समय बिताना, विलम्ब होना, स्त्रियों के रजोधर्म होने में विलम्ब होना। **चढ़ाना** (वा०) विलम्ब करना, अति काल करके किसी काम को प्रारम्भ करना, आलस से काम का समय बिता देना।—**ज्योतिः** (पु०) आतप, धूप, घाम।—**ढलना** (वा०) दिन घटना, दिन चला जाना, दिन पलटना, अच्छा या बुरा दिन आना, समय का परिवर्तन होना। —**दानी** (पु०) प्रतिदिन दाता, प्रतिदिन दानकर्ता।—**दिन** (पु०) प्रतिदिन।—**दुःखित** (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा। (पु०) दिनहीन, दरिद्र, निःस्व, निर्धन।—**नाथ** (पु०) दिनकर, दिवाधिपति, सूर्य।—**पड़ना** (वा०) सन्ध्या होना, दिन बीतना, दुःख पड़ना, दुःख आना। —**फिरना** (वा०) भाग्य खुलना, बुरे दिनों का चला जाना और अच्छे दिनों का आना। —**बदिन** (वा०) प्रति दिन, दिन पर दिन। —**बल** (पु०) पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश राशि।—**भरना** (वा०) दुःख और कष्ट में समय बिताना।—**मणि** (पु०) दिवाकर, भानु, सूर्य।—**मान** (पु०) दिवस काल, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, सूर्योदय और सूर्यास्त के नियमित काल।—**मुदना** (वा०) दिन छिपना, सूर्यास्त होना, सन्ध्या होना।—**मुख** (पु०) प्रातःकाल, सबेरा, भिनसार, बिहान।—**मूर्द्धा** (पु०) उदयाचल, पूर्व-पर्वत।

दिनकर तत्० (पु०) संस्कृत के पण्डित और कवि, इन्होंने कालिदास के रघुवंश की टीका बनायी थी। १३८५ ई० में रघुवंश की टीका इन्होंने बनायी थी। ऐसा कुछ लोगों का कहना है। ये बौद्ध-धर्मावलम्बी थे, सम्भव है इन्हीं की टीका को लक्ष्य करके मल्लिनाथ ने "दुर्व्याख्या विषमूर्छिता" कहा हो। यह दिनकर वेदभाष्यकर्ता सायण और सर्वदर्शनसंग्रहकर्ता माधव से प्राचीन जँचते हैं। इनका समय चौदहवीं सदी का पिछला भाग ही माना जा सकता है। इन्हें मिश्र की उपाधि थी, इनका पूरा नाम दिनकर मिश्र था। (२) यह बम्बई प्रदेश के रत्नगिरि ज़िला के देवतर ग्राम में १८१९ ई० में उत्पन्न हुए थे। इनका नाम दिनकर राव था। इनके पिता महाराष्ट्र ब्राह्मण थे उनका नाम राघव राहू था। दिनकर राव चार पीढ़ियों से गवालियर में रहते थे। वहाँ इनके पूर्वपुरुष ऊँचे ऊँचे पदों पर थे। दिनकर राव संस्कृत और फ़ारसी के विद्वान् थे। पहले पहल इनको हिसाबनवीस का काम दिया गया। इनकी योग्यता और प्रभुभक्ति के कारण इनका पद बढ़ता ही गया। अन्त में यह गवालियर राज्य के दीवान बनाये गये। उस समय राज्य की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी ख़ज़ाने में रुपये नहीं थे। इन्होंने पाँच हज़ार के स्थान में दो हज़ार अपना मासिक कर दिया था, राज्य के कामों पर

उपयुक्त मनुष्यों को रख कर राज्य का उत्तम प्रबन्ध किया। सिपाही विद्रोह के समय इन्होंने अङ्गरेज़ी सरकार की बड़ी सहायता की थी, उस समय के बड़े लाट ने इनकी सहायता के बदले में इन्हें काशी के ज़िले में एक बड़ी ज़मींदारी दी। सन् १८५९ ई० में इन्होंने गवालियर का मन्त्रिपद त्याग दिया और कुछ दिनों तक धौलपुर में राज के सुपरिंटेंडेंट का काम करते रहे, तदनन्तर बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा के सभ्य बनाये गये। सन् १८६४ ई० में इन्हें के० सी० एस० आई० की पदवी गवर्नमेंट ने दी। पुनः ये राजा बनाये गये, लार्ड रुफरिन ने इनकी राजा उपाधि को वंशगत कर दिया। वृद्ध अवस्था में उन्होंने सभी कामों को छोड़कर भगवद्भजन में मन लगाया। सन् १८९६ ई० में एक भारतीय प्रभुभक्त की जीवन लीला समाप्त हुई।

दिनाइ दे० (स्त्री०) दाद, दद्रु, रोग विशेष।

दिनांश तत्० (पु०) पूर्वाह्न, मध्याह्न, सायाह्नादि, दिन का भाग।

दिनादि तत्० (पु०) [दिन+आदि] प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा।

दिनान्त तत्० [दिन+अन्त] दिवसावसान, सन्ध्या, दिनक्षय।

दिनामार दे० (पु०) डेनमार्क देश के वासी।

दिनालोक तत्० (पु०) [दिन+आलोक] सूर्य का प्रकाश, सूर्यकिरण, धूप।

दिनी दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिनेश तत्० (पु०) [दिन+ईश] दिनपति, दिनकर, सूर्य, भानु।

दिनैला दे० (पु०) दिनी, पुराना, बहुत दिनों का।

दिया दे० (पु०) दीपक, दीप, चिराग़।—सलाई (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध, दीप बालने की एक वस्तु।

दिलवाना दे० (क्रि०) दिलाना, देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दान कराना।

दिलवाली दे० (पु०) दिल्ली का वासी, दिल्ली का बना।

दिलवैया दे० (पु०) दिलाने वाला, दान कराने वाला, प्रेरणा करके दान कराने वाला।

दिलाना दे० (क्रि०) दिलवाना, दान कराना।

दिलीप तत्० (पु०) सूर्यवंशी राजा, यह रघु राजा के पिता थे। इन्होंने ९९ अश्वमेध यज्ञ किये थे, कालिदास का रघुवंश इन्हींके चरित्र से प्रारम्भ किया गया है।

दिल्ली दे० (पु०) एक प्रसिद्ध नगर का नाम, भारत की पुरानी राजधानी।

दिव तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, आकाश, वन, दिवा, दिन।

दिवस तत्० (पु०) दिन, दिवा, घस्र, अहः।—मुख (पु०) प्रभात, प्रातःकाल।

दिवसात्यय तत्० (पु०) दिन की समाप्ति, सायं, सायंकाल, सन्ध्या।

दिवस्पति तत्० (पु०) [दिवस+पति] इन्द्र, देवराज, सुरपति।

दिवा तत्० (पु०) दिन, दिवस, वासर।—कर (पु०) सूर्य, दिनकर, दिनमणि, संस्कृत के एक कवि का नाम, राजशेखर ने अपने पूर्व के कवियों में इनका भी नाम लिया है। ये कन्नौज के अधीश्वर हर्षवर्द्धन के सभासदों में से थे। श्रीहर्ष का समय ६०० ई० के लगभग निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभा पण्डित दिवाकर का भी यही समय मानना चाहिये। यद्यपि ये नीच जाति के थे, तथापि इस कारण इनकी विद्या का अनादर नहीं किया जाता था। हर्ष वर्द्धन की सभा में बाणभट्ट आदि के समान इनकी प्रतिष्ठा थी इनके विषय में एक संस्कृत का श्लोक हैः—

अहो प्रभावो वाग्देव्या यन्मातङ्गदिवाकरः,
श्रीहर्षस्याभवत्सभ्यः समो बाणमयूरयोः॥

इनका पूरा नाम मातङ्गदिवाकर था।

(२) भरद्वाज गोत्रोत्पन्न एक प्रसिद्ध ज्योतिषि ब्राह्मण। इनके पिता का नाम नृसिंह था, शिव दैवज्ञ इनके चचा और विद्यादाता गुरु थे। पं० सुधाकर द्विवेदीजी इनका जन्मकाल शाके १५२८

१६०८ ई० बतलाते हैं। इनके बनाये कई एक ग्रन्थ हैं उनमें जातक पद्धति नामक सन् १५१६ ई० में प्रकाशित हुआ था। गोदावरी नदी के तीर पर गोल नामक ग्राम में इनका निवास-स्थान था। —न्ध (गु०) दिन का अन्धा, जिसे दिन में नहीं सूझता हो। (पु०) उलूक, उल्लू।—भीत (पु०) पेचक, उल्लू, उल्लू, चोर, तस्कर।—मणि (पु०) सूर्य, दिनकर।—मध्य (पु०) मध्याह्न, दिन का मध्यभाग, द्वितीय प्रहर।

दिवाला दे० (पु०) ऋण चुकाने की अशक्ति, न्यास किये हुए धन को न देना।

दिवाली तद्० (स्त्री०) दीपावलि, कार्तिक मास की अमावस्या का त्योहार, जिस दिन लक्ष्मी पूजन तथा दीप दान किया जाता है।

दिविज तत्० (गु०) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक।

दिविरथ तत्० (पु०) राजाविशेष, महाराजा अङ्ग के पुत्र और दधिवाहन का पुत्र, दिविरथ का पुत्र धर्मरथ और पौत्र चित्ररथ थे।

दिविषद् तत्० (पु०) देवता, अमर, देव।

दिवेश तत्० (पु०) इन्द्र, देवराज।

दिवोदास तत्० (पु०) वध्र्यश्व के पुत्र, मेनका के गर्भ से यह उत्पन्न हुए थे। इनकी बहिन का नाम अहल्या था।

(२) काशिराज मनुवंशीय रिपुञ्जय के पुत्र, इन्होंने तपस्या द्वारा ब्रह्मा को प्रसन्न किया था और वर पाया था। ब्रह्मा के वर से नागराज की कन्या अनङ्गमोहिनी से इनका विवाह हुआ था और स्वर्ग से कुसुम और रत्न इनको मिले थे। इसी कारण इनका दिवोदास नाम पड़ा था। इन्होंने बहुत दिन तक काशी का राज्य किया था।

(३) इनको प्रतर्दन नाम का एक पुत्र था, इनके पिता का नाम था सुदेव। आयुवंशीय सुहोत्र पुत्र काश्य प्रथम राजा, इनके पुत्र काशिराज, या काश्य ही से उस राज्य का काशी नाम पड़ा। इसी वंश में हर्यश्व नामक एक राजा उत्पन्न हुए। यदुवंशीय हैहय के पुत्रों ने इन्हें मार डाला। उसके बाद सुदेव काशी के राजा हुए, यह भी हैहय वंशियों के द्वारा मारे गये, तदनन्तर उनके पुत्र दिवोदास काशी के राजा हुए और इन्होंने काशी को खूब यत्न पूर्वक सुरक्षित किया, उस समय काशी गङ्गा के उत्तर तीर और गोमती के दक्षिण तीर तक विस्तृत थी। भद्रश्रेण्य के पुत्र ने काशी पर चढ़ाई की और उसने युद्ध में दिवोदास को हरा दिया। तदनन्तर भद्रश्रेण्य के पुत्र दुर्दम को दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने हराया।

दिवौकस तत्० (पु०) स्वर्ग निवासी, देवता, देव, अमर।

दिव्य तत्० (गु०) स्वर्गीय, सुन्दर, मनोज्ञ, ऐश्वरिक ईश्वर सम्बन्धी। (पु०) शपथ।—कारी (गु०) कोषग्राही, शपथकर्ता।—कुण्ड (पु०) कामरूपी सोमक नाम पर्वत के पूर्व भागस्थ पुष्करिणी विशेष।—गन्ध (पु०) लवङ्ग, लौंग।—गायन (पु०) स्वर्गीय गायक, गन्धर्व।—चक्षु (पु०) ज्ञानचक्षु, उपचक्षु।—दोहद (पु०) अयाचित, उपस्थित, बिना माँगे प्राप्त।—दृष्टि (गु०) अलौकिक ज्ञान सम्पन्न, सर्वज्ञ।—धर्मी (गु०) धार्मिक, धर्मात्मा, मनोज्ञ, मनोहर, रम्य।—रत्न (पु०) चिन्तामणि।—रथ (पु०) व्योमयान, देवता का विमान।—लता (स्त्री०) दूर्वा।—वसन, वस्त्र, (पु०) सुन्दर वस्त्र, मनोहर वस्त्र, स्वर्गीय कपड़े।—वाक्य (पु०) देववाणी।—ज्ञान (पु०) उज्ज्वलज्ञान, अलौकिकज्ञान, ब्रह्मज्ञान।—स्थान (पु०) सुन्दर गृह, स्वर्गीय गृह, उत्तम वासस्थान।

दिव्याङ्गना तत्० (स्त्री०) सुन्दरी, वराङ्गना, मनोहरा स्त्री, उत्तमा, सुन्दरी, स्वर्गीया स्त्री।

दिव्यादिव्य तत्० (पु०) [दिव्य + अदिव्य] अलौकिक मनुष्य, देव तुल्य मनुष्य, नायक विशेष।

दिव्योदक तत्० (पु०) [दिव्य + उदक] आकाश जल, तुषार, हिम।

दिश् तत्० (स्त्री०) दिक्, पूर्व आदि दस दिशायें।

दिशा तद्० (स्त्री०) दिश्, दिशा, दिङ् ।—शूल (पु०) दिक्शूल ।

दिशि तद्० (स्त्री०) दिशा ।—नाथ (पु०) दिक्पाल, दिशाओं के स्वामी ।—प, पाल (पु०) दिक्पाल, दिशानाथ, लोकपाल ।

दिश्य तद्० (गु०) दिग्भव वस्तु, दिग्जात, दिशाओं में उत्पन्न होनेवाली वस्तु, दिशा सम्बन्धी ।

दिष्ट तद्० (प०) भाग्य, दैव, नियति । (गु०) उपदिष्ट, उपदेश पाया हुआ ।—भुक् (गु०) भाग्याधीन, भाग्यफल का भोग करने वाला ।

दिष्ट्या तद्० (अ०) हर्ष, अतिशय आनन्द सूचक अव्यय ।

दिसावर तद्० (पु०) अपर देश, अन्य देश, विदेश, परदेश ।

दिसावरी या दिसावरी तद्० (गु०) अपर देशीय, अन्य देशी, दूसरे देश का, दूसरे देश का माल । (पु०) एक प्रकार का पान ।

दिहरा दे० (पु०) देवालय, देवस्थान, मन्दिर ।

दिहली तद्० (स्त्री०) देहली, देवढ़ी, दोनों किवाड़ों के नीचे की लकड़ी ।

दीक्षक तद्० (पु०) दीक्षादाता, मन्त्रोपदेशकर्ता, गुरु, उपदेशक, मन्त्रदाता, धर्मोपदेशक ।

दीक्षा तद्० (स्त्री०) भजन, पूजन, व्रत संग्रह, गुरु मुख से अपने इष्टदेव का मन्त्र ग्रहण ।—कर्ता (पु०) गुरु, उपदेशक, दीक्षा कारक ।

दीक्षित तद्० (गु०) उपदिष्ट, गृहीत मन्त्र, भजन करने में प्रवृत्त, ब्राह्मणों की एक अल्ल, उपाधि ।

दीखना दे० (क्रि०) दिखाई देना, सूझना, दीख पड़ना, दीठ पड़ना ।

दीठ तद्० (स्त्री०) दृष्टि, आँख, नेत्र, नयन, चक्षु ।

दीठा तद्० (गु०) द्रष्टा, दर्शक, देखने वाला ।

दीठि तद्० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, नेत्र, नयन ।

दीदी दे० (स्त्री०) बड़ी बहिन, बड़ी ननद, पति की बड़ी बहिन ।

दीधिति तद्० (स्त्री०) किरण, रश्मि, तेज, न्याय के एक ग्रन्थ का नाम, पक्षधर मिश्र कृत न्यायग्रन्थ ।

दीन तद्० (गु०) दरिद्र, निर्धन, निरन्न, दुःखी, म्लान, भीत ।—चेतन (गु०) विपन्न, असन्न, उद्विग्नचित्त, व्याकुल मानस ।—चेता (गु०) निरहङ्कार, अभिमान शून्य, सीधा सादा ।—ता, ताई (स्त्री०) दरिद्रता, दुःख, अधीनता ।—दयालु (गु०) दीनों पर दया करने वाले, दीनपालक, दुखियों का दुःख दूर करने वाला ।—नाथ (पु०) दीनपालक, दीनरक्षक ।—बन्धु (पु०) दीन पर कृपा करने वाले भगवान् ।—वत्सल (गु०) करुणात्मा, कृपालु, दयालु ।

दीनानाथ तद्० (पु०) दीनरक्षक, दीनस्वामी, भगवान् ।

दीनार तद्० (पु०) स्वर्णालङ्कार, मुद्रा, निष्क परिमाण, दो कर्ष परिमित सुवर्ण, व्यवहार की सुगमता के लिये मान करने की वस्तु, बत्तिस रत्ती भर सोना, सोने के पुराने सिक्के का नाम ।

दीप तद्० (पु०) प्रदीप, दिया, आलोक, जलती हुई बत्ती की अग्निशिखा ।—क तद्० (गु०) [दीप + वक्] प्रकाशक, द्योतक, शोभाकर, शोभाकारक । (पु०) दीप, दिया, काव्यालङ्कार विशेष, जहाँ उपमान और उपमेय दोनों का एकही धर्म वर्णन किया जाय, वह दीपक अलङ्कार है । इसके दो भेद हैं दीपक और आवृत्त दीपक । यथाः—

दोहा ।

वर्ण्य अवर्ण्यन को धरमु जहँ बरनत हैं एक ।
दीपक ताको कहत हैं भूषन सुकवि विवेक ॥

उदाहरण—

कामिनी कंत सों, जामिनी चंद सों,
दामिनी पावस मेघ घटासों ।
कीरति दान सों, सूरति ज्ञान सों,
प्रीति बड़ी सनमान महासों ॥
भूषन भूषन सों तरुनी,
नलिनी नव पूषन देव प्रभासों ।

परन्तु अनगिनत मुसलमान सेना से गढ़ बचाना कठिन समझ कर उसने मुसलमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहिषी दुर्गावती ने मुसलमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७०० सौ, राजपूत स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपूत महोबा के राजा की कन्या। महोबा हमीरपुर ज़िला का एक मुख्य जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गौंड जाति के राजपूत राजा दलपत् शाह ने इसके साथ विवाह करने का पैगाम पठाया, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दलपत्शाह सेना लेकर चढ़ आये, और महोबा के राजा को पराहत करके उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दलपत्शाह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। रानी अपने पुत्र को रक्षक होकर वह गढ़ मण्डल राज्य का शासन करने लगी। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह सुख भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। अर्थलोलुप अकबर की आज्ञा से मध्यभारत के उनके सेनापति आसफ़ख़ाँ ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजय लक्ष्मी महारानी की ओर रही। परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी आहत हुईं। उनके शरीर में दो बाण लगे। उनकी यह अवस्था देखकर उनकी सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से अंकुश लेकर उसीके द्वारा युद्ध-भूमि में प्राणत्याग किया।

दुर्घट तत्० (गु०) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, कठिन, कठोर, जिसकी सिद्धि अति कष्ट से हो।

दुर्घटना तत्० (स्त्री०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्पात।

दुर्जन तत्० (गु०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित आचार वाला, अधम, नीच।—ता (स्त्री०) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, खलता।

दुर्जनताई तद्० (स्त्री०) दुर्जन का कर्म, क्रूरता।

दुर्जय तत्० (गु०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्दम। (पु०) प्रबल शत्रु।

दुर्दम तत्० (गु०) दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रबल, पराक्रमी, अवश।

दुर्दशा तत्० (स्त्री०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था।

दुर्दिन तत्० (पु०) कुदिन, पानी बादल का दिन, मेघावृत दिन।

दुर्दैव तत्० (पु०) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग।

दुर्दान्त तत्० (गु०) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर, भयानक।

दुर्द्धर्ष तत्० (गु०) निर्लज्ज, दुष्ट।

दुर्नाम तत्० (पु०) अकीर्ति, अयश, अपयश, कुख्या, निन्दा, अप्रशंसा।

दुर्नामा तत्० (पु०) अर्श रोग, बवासीर।

दुर्नामी तत्० (गु०) अपयशी।

दुर्निवार तत्० (गु०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय।

दुर्नीति तत्० (स्त्री०) अन्याय, कुनीति, कुव्यवहार, भ्रष्टचरित्र, कुचरित्र, कुस्वभाव।

दुर्बल तत्० (गु०) दुबला, बल रहित, निर्बल, असमर्थ, बलहीन।—ता (स्त्री०) बलहीनता, असामर्थ्य, निर्बलता।

दुर्भगा तत्० (स्त्री०) पति स्नेह रहिता, भाग्यहीना स्त्री, अप्रिय भार्या।

दुर्भाग्य तत्० (पु०) दुरदृष्ट, अभाग्य, मन्दभाग्य।

दुर्भाव तत्० (पु० दुष्टभाव, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव।

दुर्भिक्ष तत्० (पु०) अकाल, कुसमय, महँगी।

दुर्मति तत्० (स्त्री०) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि, अज्ञान, मूर्खता।

पोली सरसो ।—आप (गु०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ, दु.ख से पाने योग्य ।—आरोह (गु०) दुःख से आरोहण करने योग्य, ऊँचा पेड़, जिस पर दुःख से चढ़ा जाय ।—आलाप (पु०) कटुवाक्य, बुरी बात, गाली ।—आलोक (गु०) दुर्निरीक्ष्य, दुर्दर्श, अति कष्ट से देखने योग्य ।—आशय (गु०) क्रूर, दुष्ट मानस । आशा (स्त्री०) बुरी आशा, नहीं पूर्ण होने योग्य आशा ।—आसद (गु०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ ।

दुरना दे० (क्रि०) छिपना, लुकना, भागना, पलाना, पलायन करना ।

दुराना दे० (क्रि०) छिपाना, गुप्त रखना, लुकाना, भेद भाव रखना ।

दुराव दे० (पु०) लुकाव, छिपाव, छल, कपट ।

दुरित तत्० (पु०) पाप, अपराध, दोष, अधर्म ।

दुरिष्ट तत्० (गु०) अतिमन्द, अतिशय निन्दित, महापापी, पापिष्ठ, दुष्ट ।

दुरी दे० (स्त्री०) खेल में दो पड़ना, जुए के खेल का एक दाव, दुआ ।

दुरुक्त तत्० (पु०) शाप, गाली दुर्वचन ।

दुरूक्ति तत्० (स्त्री०) दुबारा कथन, बार बार कहना, एक बात के दो बार कहना । अनुचित रीति से कहना, जैसे गँवार बोलते हैं भोजन वोजन, दूध ऊध आदि ।

दुरुखा दे० (गु०) जिस वस्तु का दोनों बाजू एक समान हो ।

दुरुत्तर तत्० (गु०) दुरतिक्रम, दुर्लंघ्य, दु.ख से तरने योग्य ।

दुरेफ तद्० (पु०) द्विरेफ, भ्रमर, भौंरा ।

दुरोदर तत्० (पु०) जुआ, जुआ का खेल ।

दुर्ग तत्० (पु०) गढ़, कोट, घाट ।

दुर्गत तत्० (गु०) विपन्न, दुरवस्थ, दुखी, दरिद्र ।

दुर्गति तत्० (स्त्री०) विपत्ति, दु.ख, कुगति, बुरी अवस्था, क्लेश, दुरवस्था, दुर्दशा, दरिद्रता ।—नाशिनी (स्त्री०) दुःख हारिणी भगवती, दुर्गा ।

दुर्गन्ध तत्० } (स्त्री०) दुष्ट गन्ध, बुरी बास ।
दुर्गन्धि तत्० } (स्त्री०)

दुर्गन्धा तत्० (स्त्री०) पलाण्डु, प्याज ।

दुर्गम तत्० (गु०) कष्टगम्य, दुःख से जाने योग्य औघट, बीहड़, वीरान ।—ता (स्त्री०) गम्भीरता, कठिनता, औघटपन ।

दुर्गा तत्० (स्त्री०) हिमालय की कन्या, भगवती, शक्ति विशेष, आद्याशक्ति, दुर्ग नामक असुर के विनाश करने से इनका दुर्गा नाम पड़ा है। देवताओं के स्वर्ग से निकाल कर महिषासुर स्वर्ग का राजा बन बैठा । इससे दुखी होकर देवता ब्रह्मा के निकट गये, ब्रह्मा देवताओं के साथ लेकर महादेव के पास गये, देवताओं की दुःख कहानी सुनकर महादेव ने क्रोध किया और उनके मुख से एक ज्योति प्रकट हुई, इसी प्रकार सभी देवों के शरीर से एक एक ज्योति प्रकट हुई और उन ज्योति समुदाय ने एक स्त्री का रूप धारण किया। देवों ने अपने अपने अस्त्र शस्त्र उस रमणी के दिये, उसी स्त्री ने महिषासुर का नाश किया था। आद्याशक्ति देवी महिषासुर के सामने जब लड़ने के उपस्थित हुई थी, तब उससे महिषासुर ने कहा था—देवि ! आप मुझको मारेंगी, इसका मुझे कुछ भी कष्ट नहीं है, परन्तु आपके साथ साथ मेरी भी संसार में पूजा हो इसकी व्यवस्था आपको करनी चाहिये । देवि ने "तथास्तु" कहा ।

—ध्यक्ष (पु०) [दुर्ग + अध्यक्ष] दुर्ग रक्षक, गढ़ का रखवारा, किलादार ।—नवमी (स्त्री०) तिथि विशेष, पर्व विशेष, कार्तिक शुक्लपक्ष की नवमी ।

दुर्गामी तत्० (गु०) कुमार्गी, कुमार्गगामी, दुराचारी ।

दुर्गावती दे० (स्त्री०) चित्तौर के महाराणा सांगा की कन्या, बेसिन के राजा सिलोढ़ी के यह ब्याही गयी थी । गुजरात के सूबेदार बहादुरशाह ने १५३१ ई० में सिलोढ़ी के पकड़ कर मुसलमान बना दिया । सिलोढ़ी के छोटे भाई लक्ष्मण ने कुछ दिनों तक बड़ी वीरता से लड़ कर गढ़ की रक्षा की थी,

परन्तु अनगिनत मुसलमान सेना से गढ़ बचाना कठिन समझ कर उसने मुसलमानों को गढ़ दे देना स्थिर कर लिया। राजमहिषी दुर्गावती ने मुसलमानों के हाथ पड़ने से मर जाना ही अच्छा समझ कर ७०० सौ, राजपूत स्त्रियों के साथ अग्निकुण्ड में शरीर भस्म कर दिया।

(२) चन्देल राजपूत महोबा के राजा की कन्या। महोबा हमीरपुर ज़िला का एक मुख्य जनपद है। दुर्गावती के रूप तथा गुण की प्रशंसा सुनकर गोंड़ जाति के राजपूत राजा दलपत् शाह ने इसके साथ विवाह करने का पैगाम भेजा, परन्तु महोबा के राजा ने उसे स्वीकार नहीं किया। दलपत्शाह सेना लेकर चढ़ आये, और महोबा के राजा को पराजित करके उन्होंने दुर्गावती के साथ अपना विवाह किया। परन्तु दलपत्शाह बहुत दिन तक दुर्गावती के साथ नहीं रह सके विवाह होने के ४ वर्ष के बाद ही दुर्गावती विधवा हो गयी। उस समय उनके ३ वर्ष का एक पुत्र था। रानी अपने पुत्र को रक्षक होकर वह गढ़ मण्डल राज्य का शासन करने लगी। उनके शासन काल में राजा और प्रजा दोनों सुखी हुए। दुर्गावती का यह सुख भी विधि से नहीं देखा गया, इनके राज्य के सुखी होने का समाचार दिल्ली के बादशाह अकबर ने सुना। धर्मलोलुप अकबर की आज्ञा से मध्यभारत के उनके सेनापति आसफ़ख़ां ने १८००० सेना लेकर गढ़मण्डल की राजधानी सिंहगढ़ पर चढ़ाई की। प्रथम दिन के युद्ध में विजय लक्ष्मी महारानी की ओर रही। परन्तु दूसरे दिन के युद्ध में हाथी पर चढ़ी हुई रानी आहत हुईं। उनके शरीर में दो बाण लगे। उनकी यह अवस्था देखकर उनकी सेना भागने लगी। युद्ध में जय की आशा न देखकर महारानी ने महावत से अंकुश लेकर उसीके द्वारा युद्ध-भूमि में प्राणत्याग किया।

दुर्घट तत्० (गु०) कष्टसाध्य, दुःसाध्य, कठिन, कठोर, जिसकी सिद्धि अति कष्ट से हो।

दुर्घटना तत्० (स्त्री०) दुष्ट घटना, दुःख की घटना, विपत्पात।

दुर्जन तत्० (गु०) क्रूर, दुष्ट, खल, कुत्सित आचार वाला, अधम, नीच।—ता (स्त्री०) क्रूरता, दुष्टता, अधमता, शत्रुता।

दुर्जनताई तद्० (स्त्री०) दुर्जन का कर्म, क्रूरता।

दुर्जय तत्० (गु०) दुःख से जीतने योग्य, दुर्दम। (पु०) प्रबल शत्रु।

दुर्दम तत्० (गु०) दुर्दमनीय, दुःख से दमन करने योग्य, प्रबल, पराक्रमी, अवश।

दुर्दशा तत्० (स्त्री०) दुर्गति, विपत्ति, हीन अवस्था।

दुर्दिन तत्० (पु०) कुदिन, पानी बादल का दिन, मेघावृत दिन।

दुर्दैव तत्० (पु०) दुर्भाग्य, कुभाग्य, अभाग।

दुर्दान्त तत्० (गु०) दुरन्त, अशान्त, प्रबल, भयङ्कर, भयानक।

दुर्द्धर्ष तत्० (गु०) निर्लज्ज, दुष्ट।

दुर्नाम तत्० (पु०) अकीर्ति, अयश, अपयश, कुख्या, निन्दा, अप्रशंसा।

दुर्नामा तत्० (पु०) अर्श रोग, बवासीर।

दुर्नामी तत्० (गु०) अपयशी।

दुर्निवार तत्० (गु०) जो बहुत कष्ट से निवारण किया जाय।

दुर्नीति तत्० (स्त्री०) अन्याय, कुनीति, कुव्यवहार, असच्चरित्र, कुचरित्र, कुस्वभाव।

दुर्बल तत्० (गु०) दुबला, बल रहित, निर्बल, असमर्थ, बलहत।—ता (स्त्री०) बलहीनता, असामर्थ्य, निर्बलता।

दुर्भगा तत्० (स्त्री०) पति स्नेह रहिता, भाग्यहीना स्त्री, अप्रिय भार्या।

दुर्भाग्य तत्० (पु०) दुरदृष्ट, अभाग्य, मन्दभाग्य।

दुर्भाव तत्० (पु० दुष्टभाव, दुष्ट अभिप्राय, निन्दित स्वभाव।

दुर्भिक्ष तत्० (पु०) अकाल, कुसमय, महँगी।

दुर्मति तत्० (स्त्री०) कुबुद्धि, मन्दबुद्धि, अज्ञान, मूर्खता।

दुर्मद तत्० (गु०) मस्त, अहङ्कारी, घमण्डी, तमोगुण युक्त, मतवाला।

दुर्मना तत्० (गु०) उद्विग्नचित्त, अन्यमनस्क चिन्तित, भावित।

दुर्मुख तत्० (पु०) वानर विशेष, घोटक, महिषासुर का सेनापति विशेष। (गु०) दुर्भाषी, कठोर वचन बोलने वाला।

दुर्मुट तद्० (पु०) दुरमी, मुगरा, मुगदर।

दुर्मूल्य तत्० (गु०) महँगा, बहुमूल्य, बहुत मूल्य का।

दुर्मेधा तत्० (गु०) मेधाहीन, दुर्बुद्धि, अज्ञानी।

दुर्योग तत्० (पु०) बुरा समय, मेघाच्छन्न दिन, अनेक अशुभ सूचक बाधक योगों का मेल।

दुर्योनि तत्० (गु०) नीच वंशोद्भव, नीच वंश में उत्पन्न।

दुर्योधन तत्० (पु०) [दुर्+युध्+अनट्] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र, महाभारत के युद्ध में ये ही कौरव दल के नेता थे। यह भीम के समवय के थे, भीम के बलवीर्य आदि देखकर ये जला करते थे। बाल्यकाल में खेल में दुर्योधन ने भीम को विष देकर समुद्र में फेंकवा दिया था, वासुकी के प्रयत्न से भीम के प्राणों की रक्षा हुई थी। राजा धृतराष्ट्र ने अपने ज्येष्ठ भतीजे युधिष्ठिर को युवराज बनाना चाहा था परन्तु दुर्योधन के विरोध करने से वह नहीं हो सका। दुर्योधन की सम्मति से धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को हस्तिनापुर से निकाल कर वारणावत नामक नगर में भेज दिया। वारणावत में पाण्डवों को जला देने की इच्छा से दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाया था, परन्तु उसकी इच्छा सफल न हुई। वहाँ से भागकर पाण्डव पाञ्चाल राज्य में चले गये। इस राज्य के राजा द्रुपद थे, द्रुपद के साथ कौरवों की पुरानी शत्रुता थी, द्रुपद की कन्या द्रौपदी का पाण्डवों के साथ विवाह होने पर यह शत्रुता और भी बढ़ गई। द्रौपदी के स्वयम्वर में अनेक छोटे बड़े राजा निमन्त्रित हुए थे। कौरव भी गये थे। एक एक करके कौरवों ने लक्ष्य वेध करने का प्रयत्न किया परन्तु विफल हुए। पाण्डव भी ब्राह्मण वेष में वहाँ उपस्थित थे अन्त में ब्रह्मवेषधारी अर्जुन ने लक्ष्यभेद किया और द्रौपदी उन्हीं को मिली। धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को बुला कर उन्हें आधा राज्य दे दिया और इन्द्रप्रस्थ में उनकी राजधानी बना दी। वहाँ पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ किया, उनका यज्ञ बड़ी धूमधाम से समाप्त हुआ। दुष्ट दुर्योधन से यह नहीं देखा गया। उसने शकुनि से मिलकर धर्मात्मा युधिष्ठिर को जुआ खेलने के लिये बुलाया। शकुनि के छल से युधिष्ठिर राज्य हार गये, पुन द्रौपदी दाँव पर रखी गयी उसे भी हार गये। दुर्योधन ने भरी सभा में द्रौपदी को अपमानित किया। द्रौपदी का अपमान देखकर भीम ने दुःशासन का वक्षस्थल और दुर्योधन का उरु तोड़ने की प्रतिज्ञा की, वीर भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। दुर्योधन ने पाण्डवों को १२ वर्ष के लिये वन में भेज दिया। एक समय पाण्डवों को अपनी प्रभुता दिखाने के लिये दुर्योधन ने घोषयात्रा की परन्तु वहाँ चित्रसेन नामक गन्धर्व के द्वारा बन्दी हुए। इसका समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने भीम और अर्जुन को उनकी रक्षा के लिये भेजा। इन लोगों ने दुर्योधन को कैद से छुड़ाया। दुर्योधन इससे बहुत लज्जित हुआ। परन्तु उसने पाण्डवों के इस उपकार का बदला अपकार के द्वारा चुकाना निश्चित किया। पाण्डवों के वनवास की अवधि समाप्त हुई। उन्होंने श्रीकृष्ण को दुर्योधन के पास आधा राज्य लौटा देने का प्रस्ताव करने के लिये भेजा। परन्तु अभिमानी दुष्ट दुर्योधन ने बिना युद्ध के एक तिनके के बराबर भी भूमि देना न चाही। अतः युद्ध हुआ युद्ध में कौरवों का सर्वनाश हुआ। एक एक करके कौरव मारे गये। १८ दिन में दुर्योधन की आहुति देकर यह युद्ध यज्ञ समाप्त किया गया।

दुर्लक्षण तत्० (पु०) अशुभ चिन्ह, अशकुन, बुरे लक्षण अलक्षण, कुलक्षण।

दुर्लोभ तत्० (पु०) मन्दवासना, दुर्लालसा, अनुचित अभिलाष, अप्राप्य वस्तु की अभिलाषा।

दुर्लभ तत्० (पु०) दुष्प्राप्य, अति प्रशस्त, प्रिय।

दुर्लभ्य तत्० (पु०) अप्राप्य, कष्ट से प्राप्त होने योग्य।

दुर्वचन तत्० (पु०) दुर्वाक्य, कुत्सित कथा, कुकथा, निन्दित वचन, गाली।

दुर्वर्त्म तत्० (पु०) कुपथ, असन्मार्ग, कुत्सित, आचार।

दुर्वह तत्० (पु०) वहन करने के अयोग्य, भारी, बोझील।

दुर्वाक्य तत्० (पु०) कुवाक्य, दुर्वचन, गाली, निन्दित बात।

दुर्वाद तत्० (पु०) निन्दित वचन, अकीर्ति, अयश, अपयश, दुर्नाम।

दुर्वार तत्० (पु०) अप्रतिकार्य, अनिवार्य, जो निवारण नहीं किया जा सके, अथवा जो दुःख से निवारित हो।

दुर्वासना तत्० (स्त्री०) बुरी वासना, असत् अभिलाष, दुष्ट इच्छा।

दुर्वासा तत्० (पु०) अत्रि मुनि के पुत्र, अनसूया के गर्भ से इनका जन्म हुआ था। ये महादेव के अंश से अनसूया के गर्भ में जनमे थे। दुर्वासा बड़े क्रोधी थे। और्व मुनि की कन्या कन्दली के साथ इनका विवाह हुआ था। इनके शाप से देवराज इन्द्र राज्यभ्रष्ट हो गये थे। इन्हींके शाप से पति परित्यक्ता शकुन्तला को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे। एक समय गरम खीर खाते खाते इन्होंने श्रीकृष्ण को कहा था कि इसे तुम अपने सब शरीर में लगा लो। श्रीकृष्ण ने भी वैसा ही किया, परन्तु ब्राह्मण का अनादर न हो इस कारण उन्होंने पायस को अपने पैरों में नहीं लगाया। यह देख दुर्वासा ने कहा तुमने पैर में पायस नहीं लगाया, अतएव पैर के अतिरिक्त तुम्हारा और सब अङ्ग अवध्य होगा। इसी कारण मृत्यु के समय श्रीकृष्ण के पैर ही में व्याध का बाण लगा था। दुर्वासा के शाप से श्रीकृष्ण के पुत्र के मुसल उत्पन्न हुआ था, जिससे यदुवंश का नाश हुआ। यह कुन्ती की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न थे, और प्रसन्न होकर इन्होंने कुन्ती को एक मन्त्र बताया था जिसके प्रभाव से कर्ण और पाण्डवों की उत्पत्ति हुई। इनकी क्रोध कहानी अद्भुत है और इनकी प्रकृति विलक्षण थी।

दुर्विनीत तत्० (पु०) अविनीत, दुष्ट, अशिष्ट, अशिक्षित, उजड्ड, गवाँर।

दुर्विपाक तत्० (पु०) बुरा फल, अशुभ परिणाम, दुर्दैव, दुर्भाग्य।

दुर्विषह तत्० (पु०) असह्य, कठिन, कठोर।

दुर्बुद्धि तत्० (स्त्री०) मन्दबुद्धि, कुमति, अज्ञान।

दुर्बुद्धी तत्० (पु०) अबोध, मूढ़, दुष्ट, अनाचारी।

दुर्बोध्य तत्० (पु०) कुमति, अबोध, मूढ़, दुःख से समझाने योग्य।

दुर्वृत्त तत्० (पु०) दुर्जन, दुरात्मा, उपद्रवी, कुमार्गी।

दुलकी दे० (स्त्री०) कुकर की चाल, अश्वगति विशेष, घोड़े की एक प्रकार की चाल।

दुलड़ा दे० (पु०) दो लड़ की माला। (पु०) दोहरा, दुगुना।

दुलड़ी दे० (स्त्री०) स्त्रियों के एक गहने का नाम जो दो लड़ों का होता है।

दुलत्ती दे० (स्त्री०) पशुओं के पिछले दो पैरों का मार।—झाड़ना (वा०) लात मारना, पास नहीं आने देना, कड़ी बातें सुनाकर हटकाना।—मारना (वा०) पिछिले दोनों पैरों से मारना, किसीको अपमानित करना।

दुलहन दे० (स्त्री०) दुलहैया, नव परिणीता वधू, नयी ब्याही बहू।

दुलहा दे० (पु०) वर, विवाहार्थ प्रस्तुत पुरुष।

दुलहिन दे० (स्त्री०) दुलहन, नवोढ़ा, वधू।

दुलाई दे० (स्त्री०) ओढ़ने का वस्त्र विशेष, रुईदार ओढ़ना, जो जाड़े के दिन में ओढ़ने के काम में आता है, फर्द।

दुलार दे० (पु०) प्यार, स्नेह, लाड़, प्रेम।

दुलारा दे० (गु०) प्यारा, स्नेहपात्र, प्रिय, लाड़ला।

दुलारी दे० (स्त्री०) प्यारी, प्रिया, लाड़िली, लाड़ की, प्यार की।

दुवार तद्० (पु०) द्वार, दुआर, कपाट, किवाड़।

दुविद तद्० (पु०) द्विविद, एक बानर का नाम, यह लङ्का के युद्ध में रामचन्द्रजी की सेना में था।

दुबे दे० (पु०) ब्राह्मणों की एक अल्ल, पञ्चगौड़ ब्राह्मणों की अल्ल।

दुशमन दे० (पु०) शत्रु, वैरी, विपक्षी, अरि, रिपु।

दुशाला दे० (पु०) शाल का जोड़ा, महा कम्बल, ऊनी बहुमूल्य वस्त्र विशेष जो ओढ़ने के काम में आता है।

दुश्चरित्र तत्० (पु०) मन्द प्रकृति, कुरीति, कुचलन, कुव्यवहार।

दुश्चिकित्स्य (गु०) असाध्य रोगी, जिसकी दुःख से चिकित्सा की जा सके, चिकित्सा के लिये असाध्य।

दुष्कर तत्० (गु०) कष्टसाध्य, क्लेशकर, दुःख से करने योग्य।

दुष्कर्म तत्० (पु०) कुकर्म, नीच क्रिया, अधम व्यवहार।

दुष्कर्मी तत्० (पु०) दुष्कृतकारी, कुक्रियान्वित, पापी, दुराचारी।

दुष्कुलीन तत्० (गु०) दुष्कुलोद्भव, कुवंशजात, अधम कुल में उत्पन्न।

दुष्कृत तत्० (पु०) पाप, कुक्रिया, अपराध, दोष।

दुष्कृती तत्० (गु०) पापी, पापाचारी।

दुष्ट तत्० (गु०) बुरा, नीच, उपद्रवी, अधम, पापिष्ठ, निर्लज्ज, विरुद्धाचरण करण।—चारी (गु०) अधार्मिक, खल, दुर्जन।—ता (स्त्री०) दौरात्म्य, खलता, दुर्जनता।

दुष्टा तत्० (स्त्री०) भ्रष्टा, पुंश्चली, व्यभिचारिणी, असती, छिनाल, दुराचारिणी।

दुष्प्रवेश तत्० (पु०) दुर्गम प्रवेश, अति परिश्रम साध्य प्रवेश।

दुष्प्राप्य तत्० (गु०) दुर्लभ, अप्राप्य, अगम्य।

दुष्यन्त तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय एक राजा, इनको दुष्मन्त भी कहते हैं। एक समय अहेर खेलते दुष्यन्त वन में गये थे। जाते जाते वह कण्व मुनि के आश्रम में पहुंचे। अपने परिजनों को बाहर ही छोड़कर राजा आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने तापस-वेष-धारिणी एक अविवाहिता युवती देखी, उसका नाम शकुन्तला था। राजा ने उसीके मुँह से उसकी उत्पत्ति तथा नाम आदि सुने थे। दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह किया, और किसी कार्यवश अपनी राजधानी को लौट गये। राजधानी में जाकर शकुन्तला को बुलवाने की राजा ने प्रतिज्ञा की थी, परन्तु वहाँ जाकर वे भूल गये। शकुन्तला के एक पुत्र हुआ। उस बालक की तीन वर्ष की अवस्था होने पर महर्षि कण्व ने जातकर्म आदि संस्कार करके शकुन्तला को राजा के पास भेजा। राजा ने शकुन्तला के विवाह की बातें भूलकर उसका प्रत्याख्यान किया। तेजस्विनी शकुन्तला ने भी बड़ी कड़ी बातें राजा को सुनाईं, इसी समय देववाणी हुई "राजा तुम अपनी पत्नी और पुत्र को ग्रहण करो"। (महा भा० आदि पर्व) (कालिदास ने अपने शकुन्तला नामक नाटक में इस कथा को कुछ उलट दिया है)।

दुसूती दे० (स्त्री०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा जो बिछाने के काम में आता है।

दुस्तर तत्० (गु०) दुष्पार, अतरणीय, दुस्तरणीय, पार होने के अयोग्य।

दुस्त्यज तत्० (गु०) अपरिहरणीय, दुःख से त्यागने योग्य।

दुस्थ तत्० (गु०) दुरवस्थान्वित, दुःखी, दरिद्र क्लेशयुक्त, अस्वस्थ।—ता (स्त्री०) दारिद्र्य, दैन्य दौर्भाग्य, क्लेश, दुर्गति।

दुहना दे० (क्रि०) दोहना, गारना, गौ के स्तनों से दूध निकालना।

दुहराना दे० (क्रि०) दूना करना, दो बार करना, या कहना, द्विरुक्ति।

दुहाई दे० (स्त्री०) गुहार, पुकार, दुःख से उबारने के लिये पुकार, शरणागत होना।—तिहाई करना (वा०) बार बार पुकारना, व्याकुल होकर रक्षक को पुकारना।

दुहाना दे० (क्रि०) दुहवाना, दूध निकलवाना।

दुहार दे० (पु०) दूध दुहनेवाला।

दुहिता तत्० (स्त्री०) कन्या, कुंआरी, पुत्री, लड़की, बेटी।—पति (पु०) जामाता, जमाई, दामाद।

दुहितपति तद्० (पु०) दुहितृःपति, जामाता, जमाई।

दुहेला दे० (गु०) कठिन, भारी, बेचैन।

दहूं दे० (अ०) दोउ. दोनों।

दुह्य तत्० (गु०) दोहने के योग्य, दोहने के उपयोगी।

दुह्यमान तत्० (पु०) जिससे दुहा जाय, दोहन विशिष्ट।

दूआ दे० (पु०) दो का अङ्क।

दूज दे० (स्त्री०) द्वितीया तिथि, पक्ष का दूसरा दिन।

दूजावर दे० (पु०) द्वितीयवर, दूसरा वर, जिसके दो विवाह हुए हों।

दूजा दे० (गु०) द्वितीय, दूसरा।

दूत तत्० (पु०) वार्त्ताहर, चर, संवाददाता, सन्देशी, निसृष्टार्थ, मितार्थ और सन्देश हारक-दूत के ये तीन भेद होते हैं। कार्य की सिद्धि असिद्धि आदि का भार जिस दूत पर हो वह निसृष्टार्थ दूत कहा जाता है। जितने के लिये स्वामी का आदेश हो उतना ही काम करने वाला दूत मितार्थ कहा जाता है और जो केवल सम्वाद कहने वाला दूत है उसे सन्देशहारक कहते हैं।—ता (स्त्री०) दूत का काम, दूतकर्म।

दूतिका तत्० (स्त्री०) दूती, नायिका की सखी समाचार पहुँचाने वाली, कुट्टिनी।

दूती तद्० (स्त्री०) दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार हारिणी, कुट्टिनी, कुटनी। यथा:—

दोहा।

"निपुन दूतता में सदा दूती ताहि बखान,
उत्तम, मध्यम, अधम यों तीन भाँति सो जान।
(उत्तम दूती)
मोहै जो मृदु बोलिके मधुर वचन अभिराम।
ताहि कहत कविराज हैं उत्तम दूती नाम॥
(मध्यम दूती)
कछु वचन हित के कहै, कै से अहित कछूक।
मध्यम दूती कहत हैं तातें सुकवि अचूक।
(अधम दूती)
अधम दूतिका जानिये वचन कहत सतराय।
ग्रन्थन को मति देखिकै बरनत सब कविराय॥
—रसराज।

दूध तद्० (पु०) दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस।

दूधाधारी तद्० (गु०) दूध पीके जीनेवाला, केवल दूध के आहार पर रहने वाला, दुग्धाहारी।

दूधाभाती दे० (स्त्री०) दूध और भात, विवाह की एक रीति, विवाह के चौथे दिन का वर का भोजन।

दूधिया दे० (पु०) एक प्रकार के पौधे जिनका रस दूध के समान होता है।

दूधी दे० (गु०) दूध का, दुधैला। (पु०) मोंगी, दूधिया पौधा।

दूना दे० (गु०) दोहरा, दुगुना, द्विगुण।

दूब तद्० (पु०) दूर्वा, तृण विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध तृण, यह तृण गणेश जी पर चढ़ाने के काम में आता है।

दूबर तद्० (गु०) दुर्बल, निर्बल, बल रहित।

दूबिया दे० (स्त्री०) रङ्ग विशेष, दूब के समान रङ्ग, दूब की हरियाली।

दूर तत्० (गु०) अनिकट, असन्निकृष्ट, अन्तर, बीच, व्यवधान, परे, न्यारा।—गामी (पु०) दूर गमन

कारी, दूर जानेवाला। (पु०) तीर, वायु, पवन। —गाम (पु०) गधा, रासभ।—तर (गु०) अधिक दूर, अत्यन्त दूर।—दर्शक (पु०) दूरबीन, देखने का एक यन्त्र, जिसकी सहायता से बहुत दूर की वस्तु देखी जाती है। (गु०) दूर देखने वाला, अग्रसोची। —दर्शिता (स्त्री०) विवेक, विवेकिता, दूरन्देशी। —दर्शी (गु०) विवेकी, ज्ञानी, गीध, दूरन्देश। —दृष्टि (स्त्री०) दूरदर्शन, विवेक।—भागना (वा०) घृणा करना, अपमान करना, सम्बन्ध तोड़ना।—वीन (पु०) दूरवीक्षण, दूर देखने का यन्त्र।—वीक्षण (पु०) दूरबीन, दूरदर्शक यन्त्र। —मूल (पु०) जवासा।—स्थ (पु०) दूरस्थित, दूरवर्ती।

दूरीकरण तत्० (पु०) दूर कर देना, हटा देना, अन्तर कर देना, भगा देना।

दूरीकृत तत्० (गु०) दूरीभूत, भगाया हुआ, निकाला गया।

दूर्वा तत्० (स्त्री०) तृण विशेष, दूब, घास। –ष्टमी (स्त्री०) [दूर्वा+अष्टमी] भादों शुक्लपक्ष की अष्टमी।

दूषक तत्० (गु०) [दुष्+णक्] निन्दक, निंदा करने वाला, कलङ्कित करने वाला, दूषयिता।

दूषण तत्० (पु०) निन्दा, दोष, त्रुटि, दोषप्रकाशन, भर्त्सन, कुलक्षण, राक्षस विशेष, लङ्केश्वर रावण के एक सेनापति का नाम, इसके दूसरे भाई का नाम खर था। रावण का राज्य गोदावरी तीरस्थ दण्डकारण्य तक विस्तृत था। उसकी रक्षा के लिये खर और दूषण नामक दो सेनापति १४ हज़ार सेना के साथ वहाँ रहते थे। रावण की बहन शूर्पनखा भी उसी वन में रहती थी। सीता और लक्ष्मण के साथ जिस समय रामचन्द्र इस वन में रहते थे उस समय शूर्पनखा ने अपना ब्याह रामचन्द्र से करने की इच्छा प्रकट की थी। इससे क्रुद्ध होकर लक्ष्मण ने उसकी नाक और कान काट डाले। शूर्पनखा की ऐसी दशा देखकर खर और दूषण ने रामचन्द्र पर चढ़ाई की पाँच हज़ार सेना का मालिक दूषण था। खर और दूषण दोनों ही राम के हाथ मारे गये। केवल अकम्पन नामक एक राक्षस इस समाचार को रावण के पास पहुँचाने के लिये बचा हुआ था।

दूषित तत्० (गु०) दोष प्राप्त, अभिशप्त, निन्दित, दोषयुक्त, भ्रष्ट, कलङ्कित।

दूषीका तत्० (स्त्री०) कीचड़, चीपट, कीचड़, आँखों का मल।

दूष्य तत्० (गु०) दूषणीय, दूषण करने योग्य, निन्दनीय, कुत्सित, गर्हित।

दूसर, दूसरा दे० (गु०) द्वितीय, दूजा, और, अन्य।

दूल्हिया दे० (पु०) दो मुँहा पुल्हा।

दृग तद्० (पु०) दृक्, आँख, चक्षु, नेत्र, नयन, दृग। —अञ्चल तद्० (पु०) कटाक्ष, नयनकोर, पलक की चाल।

दृढ़ तत्० (गु०) पोढ़ा, मज़बूत, कड़ा, कठोर, अतिशय, प्रगाढ़, बलवान, कठिन।—तम (गु०) अत्यन्त कठिन, अतिशय कठोर।—तर (गु०) अधिक कठिन।—ता (स्त्री०) काठिन्य, कठिनता, स्थिरता।—त्व (पु०) काठिन्य, कठोरता। धन्वा (पु०) समर्थ धनुर्धारी, उत्तम धन्वी। —प्रतिज्ञ (गु०) स्थिर प्रतिज्ञ, सत्य प्रतिज्ञ, सत्यसन्ध।—व्रत (गु०) धर्म कर्म में एकाग्रचित्त, धर्मपरायण।—मुष्टि (पु०) खड्ग, कृपाण, तलवार, कृपाण।

दृढ़ाङ्ग तत्० (पु०) हीरक, हीरा। (गु०) कठिन अङ्ग विशेष।

दृढ़ाना दे० (क्रि०) पोढ़ा करना, मज़बूत करना, सबल बनाना।

दृढ़ार्ति तत्० (स्त्री०) धनुष का अग्रभाग, कोटी।

दृप्त तत्० (गु०) [दृप्+क्त] गर्वित, अहंकृत, अभिमानी, अहङ्कारी।

दृश्य तत्० (गु०) देखने योग्य, देखने की वस्तु, रमणीय, मनोहर।

दृश्यमान तत्० (पु०) देखने योग्य, दर्शनीय, देखने के उपयोगी।

दृषद्वती तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, यह नदी आर्यावर्त देश की पूर्वी सीमा पर बहती है।

दृष्ट तत्० (पु०) देखित, आलोकित।—**कूट** (पु०) कूटप्रश्न, पहेलिका, पहेली।

दृष्टान्त तत्० (पु०) [दृष्ट+अन्त] उदाहरण, उपमा, निदर्शन, समानता करण, तुलना करण।

दृष्टि तत्० (स्त्री०) आलोकन, निरीक्षण, दर्शन, चक्षु, नेत्र, नयन, बुद्धि, विवेक, विचार।—**गोचर** (पु०) नयनगोचर, साक्षात्, प्रत्यक्ष।—**पात** (पु०) दर्शन, ताक, कटाक्ष, चितवन।—**शीश** (पु०) शिव, महादेव।

देखाड़ दे० (पु०) दीमक का बना हुआ घर, वल्मीक।

देखना दे० (क्रि०) पेखना, लखना, ताकना, निहारना।—**भालना** (वा०) ध्यान से देखना, विचार पूर्वक देखना, ताकना, निहारना, लखना।

देखवैया दे० (पु०) दर्शक, देखने वाला।

देखा दे० (पु०) दृष्टि, दर्शन, अवलोकन, साक्षात्कार।—**देखी** (स्त्री०) दृष्टानुसरण, देख के अनुसरण करना।—**सुना** (वा०) साक्षात् सन्दर्शन, विचार पूर्वक निश्चय किया हुआ।

देजा दे० (पु०) दायजा, दहेज, यौतुक, कन्यादेय द्रव्य।

देढ़ दे० (पु०) सार्द्धैक, आधा अधिक एक, एक और आधा।

देदीप्यमान तत्० (पु०) जाज्वल्यमान, अतिशय दीप्ति विशिष्ट, चमकीला, चमकदार, प्रकाशशील।

देन दे० (पु०) ऋण, उधार, देय।—**दार** (पु०) अधमर्ण, ऋणी, क़र्ज़खोर, ऋण लेनेवाला।—**लेन** (पु०) व्यवहार, व्यापार, वनिज, देना लेना।

देना दे० (क्रि०) दे देना, दे डालना, सौंपना, त्यागना, अर्पित करना। (पु०) ऋण, देय, देन, उधार, क़र्ज़।—**पाना** (वा०) देन लेन, दिया धन पाना।

देमारना दे० (क्रि०) पटकना, पटक देना, पछाड़ डालना।

देय तत्० (पु०) दानयोग्य, देने योग्य, परिशोधनीय।

देर दे० (स्त्री०) विलम्ब, अबेर, ढील।

देरी दे (स्त्री०) विलम्ब, गौण, देर।

देव तत्० (पु०) [दिव्+अच्] अमर, सुर, देवता, नाटकोक्ति में राजा।—**कली** (स्त्री०) एक रागिनी का नाम।—**काण्डार** (पु०) असुर, एक पौधे का नाम।—**काष्ठ** (पु०) देवदारु काष्ठ।—**कुण्ड** (पु०) बिना बनाया हुआ कुण्ड, स्वयं बना हुआ जल कुण्ड देव खात।—**कुसुम** (पु०) लवङ्गलता, लवङ्ग।—**खात** (पु०) अकृत्रिम जलाशय।—**गायन** (पु०) गन्धर्व, देव योनि विशेष।—**गिरि** (पु०) हिमालय पर्वत, (स्त्री०) रागिनी विशेष।—**गुरु** (पु०) बृहस्पति, सुराचार्य।—**गृह** (पु०) देवालय, देव मन्दिर, ठाकुरबाड़ी, चन्द्रमा और सूर्य का ज्योतिर्मण्डल।—**चिकित्सक** (पु०) अश्विनी कुमार।—**ठान** (पु०) देवोत्थान, व्रतविशेष, कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। इसी दिन भगवान् विष्णु निद्रा त्याग करते हैं।—**तरु** (पु०) मन्दार वृक्ष, पारिजात, कल्पवृक्ष।—**ता** (पु०) अमरदेव, सुर।—**ताधिप** (पु०) देवराज, देवस्वामी इन्द्र।—**तीर्थ** (पु०) अंगुलि का अग्रभाग, जिससे देव तर्पण किया जाता है।—**तुल्य** (पु०) देवता के समान, अमर सदृश।—**त्व** (पु०) देवताओं के धर्म, देवपद, देवता का आविर्भाव।—**त्र** (पु०) देवस्व, देवता को अर्पित धन आदि।—**दत्त** (पु०) बुद्ध का छोटा भाई, अर्जुन के शङ्ख का नाम, शरीर धारण करने वाले पञ्च प्राणों के अन्तर्गत एक प्राण विशेष। (पु०) देव प्रसाद, देवता का दिया हुआ।—**दारु** (पु०) वृक्षविशेष, पारिभद्रक, देवकाष्ठ।—**दासी** (स्त्री०) अप्सरा, स्वर्वेश्या, देवता को भेंट की हुई स्त्री, जाति विशेष की स्त्री।—**दूत** (पु०) देवता का भेजा हुआ भूत आदि, पवन, वायु।—**देव** (पु०) महादेव, ब्रह्मा।—**द्रष्टा** (पु०) देव शत्रु, देव निन्दक, नास्तिक, पाखण्डी।—**धान्य** (पु०) देवता का धान्य, हविष्य आदि बनाने योग्य, सात्विक धान्य।—**धुनि** (स्त्री०) देवनदी, गङ्गा,

भागीरथी ।—धूप (पु०) गुग्गुल, धूप विशेष। —नागर (पु०) देव समान विद्वानों की लिपि, हिन्दी भाषा का वर्णमाला ।—निन्दक (पु०) ईश्वर निन्दाकारी, नास्तिक, पाखण्डी ।—निष्ठ (पु०) ईश्वर वादी, ईश्वर भक्त ।—पति (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति ।—पथ (पु०) देवमार्ग, छायापथ, आकाशमार्ग, परिवहपथ ।—पूजक (पु०) देवोपासक, देवार्चक, देवाराधन कर्ता। —पूजा (स्त्री०) देवता की पूजन, देवत की आराधना ।—प्रतिमा (स्त्री०) देवप्रतिमूर्ति, भगवान् की मूर्ति ।—वधू (स्त्री०) देव स्त्री, महारानी, यथा—

"देववधू जबहिं हरिल्यायो ।
क्यों तबहीं तजि ताहि न आयो ॥

—रामचन्द्रिका।

—ब्रह्मा (पु०) देवर्षि, नारद मुनि ।—ब्राह्मण (पु०) देव पूजित ब्राह्मण, देव मुख्य ब्राह्मण। —भवन (पु०) अश्वत्थ वृक्ष, पीपल का पेड़ स्वर्ग। —मणि (पु०) सूर्य, कौस्तुभ मणि, घोड़े की भँवरी ।—माता (स्त्री०) अदिति, कश्यप की स्त्री। —मातृक (पु०) वृष्टि के जल से पालित देश। —मास (पु०) गर्भ का आठवाँ महीना, देवों का महीना, मनुष्य के परिमाण से तीस वर्ष का समय ।—मुनि (पु०) नारद ।—यज्ञ (पु०) होम हवन, मन्त्रोच्चारण पूर्वक अग्नि में घृताहुति प्रदान। —योनि (पु०) उपदेवता, भूत प्रेत पिशाच आदि, गन्धर्व ।—रथ (पु०) देवयान, देवताओं का विमान, पुष्पक रथ राज (पु०) इन्द्र, सुरपति । —रात (पु०) राजा परीक्षित् ।—लोक (पु०) देवों का वासस्थान, स्वर्ग ।—वाणी (स्त्री०) संस्कृत भाषा —वृक्ष (पु०) कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम। —वर्णिनी (स्त्री०) भारद्वाज मुनि की कन्या और विश्रवा की पत्नी, इनके गर्भ से विश्रवा ने वैश्रवण नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था, वैश्रवण का दूसरा नाम कुबेर था। ये देवों के धनाध्यक्ष हैं, पहले लङ्कापुरी इनकी राजधानी थी। परन्तु अपने सौतेले भाई रावण को इन्होंने लङ्का दे दी, और स्वयं हिमालय के उत्तर अलकापुरी को अपनी राजधानी बनाया ।—श्रेणि (स्त्री०) मूर्वा, मुद्दरि, देवों की सभा ।—सर (पु०) मानसरोवर। सेना (स्त्री०) सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या इनका दूसरा नाम षष्ठी था, देवसेनापति कार्तिकेय से इनका विवाह हुआ था, इनकी दूसरी बहिन का नाम दैत्यसेना है। —स्त्री (स्त्री०) देवाङ्गना, देवपत्नी ।—स्थान (पु०) देवालय, देवगृह, देवमन्दिर ।—स्व (पु०) देवधन, देवपूजा के लिये स्थापित धन ।—हिंसक (पु०) असुर, दैत्य, दानव, सुरारि ।

देवक तत्० (पु०) भोजवंशीय राजा विशेष, भोज वंशीय राजा आहुक के पुत्र, इनके भाई का नाम उग्रसेन और कन्या का नाम देवकी था, देवक श्रीकृष्ण के नाना थे।

देवकी तत्० (स्त्री०) देवक, राजकन्या, श्रीकृष्ण की माता। —नन्दन (पु०) श्रीकृष्ण।

देवन तत्० (पु०) [दिव् + अनट्] क्रीड़ा, व्यवहार, जिगीषा, लोलोद्यान, द्युति, स्तुति, द्यूत, छुया।

देवयानी तत्० (स्त्री०) दैत्यगुरु शुक्राचार्य की कन्या और राजा ययाति की कन्या। दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या शर्मिष्ठा के साथ इनका बड़ा प्रेम था। एक दिन दोनों स्नान करने गयीं। भूल से शर्मिष्ठा ने देवयानी के कपड़े पहन लिये, इससे उन दोनों में विवाद हुआ। शर्मिष्ठा ने देवयानी के पिता को अपने पिता का स्तुतिपाठक कहा और देवयानी को कुएँ में फेंककर स्वयं घर चली गई। भाग्यवश उसी वन में राजा ययाति आखेट खेलने आये थे, उन्होंने कुएँ में से स्त्री की चिल्लाहट सुनकर उसे कुएँ से निकलवाया। कुएँ से निकलकर देवयानी अपने घर नहीं गयी, उसने एक दासी से अपना वृत्तान्त अपने पिता के निकट कहलवाया। पिता शुक्राचार्य सब बातें सुनकर वृषपर्वा के निकट गये और उसके राज्य से अपने जाने की इच्छा, कारण के साथ कही। इससे वृषपर्वा बहुत घबड़ाया, और वह देवयानी के

समीप आकर उनको प्रसन्न करना चाहा। देवयानी ने कहा कि यदि हज़ार दासियों के साथ तुम्हारी कन्या शर्मिष्ठा मेरी दासी बने तो मैं तुम्हारे नगर में आ सकती हूँ। वृषपर्वा ने यह स्वीकार किया। शर्मिष्ठा ने अपने पिता की आज्ञा को सादर और सहर्ष स्वीकार किया, और वह हज़ार दासियों के साथ देवयानी की सेवा करने लगी। एक समय देवयानी शर्मिष्ठा और उनकी दासियाँ किसी वन में विचर रही थीं, उसी समय राजा ययाति भी संयोग से उस वन में उपस्थित हुए। प्रथम दर्शन ही से राजा ययाति और देवयानी का प्रेम हो गया था। देवयानी ने उनको पति बनाना चाहा, शुक्राचार्य ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। देवयानी का ब्याह होगया। उनके साथ शर्मिष्ठा भी देवयानी की ससुराल गयी।

देवर दे० (पु०) पति का छोटा भाई।

देवरानी दे० (स्त्री०) देवर की स्त्री, देवताओं की रानी, देवराज की स्त्री। यथाः—

देवराजा लिये देवरानी मनो,
पुत्र संयुक्त भूलोक में सोहियो।
—रामचन्द्रिका।

देवल तत्० (पु०) महर्षि विशेष, असित मुनि के पुत्र और व्यासदेव के शिष्य, एक समय रम्भा नामक स्वर्ग की अप्सरा इन पर आसक्त हुई, परन्तु इन्होंने उसका प्रत्याख्यान किया। इससे चिढ़कर रम्भा ने शाप दिया कि तुम्हारी यह सुन्दरता व्यर्थ है तुम इसके योग्य नहीं हो, तुम कुरूप हो जाओ। रम्भा के शाप से देवल अष्टावक्र हो गये थे।

देवल तत्० (पु०) देव पूजोपजीवी, पुजारी ब्राह्मण, धार्मिक, नारद मुनि, धार्मिक, धर्मशास्त्र वक्ता मुनि विशेष। (दे०) मन्दिर, ठाकुरद्वारा, देवस्थान, यथा:—

तुलसी देवल देव को लागे लाख करोर।
काग अभागे हगि भरयो महिमा भई न थोर॥

देवहूति तत्० (स्त्री०) स्वायम्भुव मनु की कन्या तथा कर्द्दम प्रजापति की भार्या, इन्हींके गर्भ से सांख्यदर्शन प्रणेता महर्षि कपिल का जन्म हुआ था। कपिल के अतिरिक्त इनके नौ और कन्याएँ भी थीं।

देवा तद्० (पु०) देव, देवता, अमर, सुर।

देवाङ्गना तत्० (स्त्री०) देवस्त्री, देवभार्या, अप्सरा।

देवान दे० (पु०) कर्मसचिव, राजा के शासन में योग देनेवाला मन्त्री, सचिव।

देवारि तत्० (पु०) दैत्य, निशाचर।

देवाल दे० (पु०) चारदिवारी, प्राचीर, चारों ओर की भीत, देनेवाला।

देवालय तत्० (पु०) देवस्थान, देवल, देवगृह।

देवाला दे० (पु०) दिवाला, व्यापार बिगड़ना, लेन देन का मारा पड़ना।

देवालिया दे० (गु०) जिसका दिवाला निकल गया, गतसर्वस्व, निर्धन, दरिद्र।

देवाली दे० (स्त्री०) दिवाली का त्योहार।

देवालेई दे० (स्त्री०) देनलेन।

देवी तत्० (स्त्री०) दुर्गा, वाल्मीकि में कृताभिषेका रानी, सामन्य देवपत्नी, ब्राह्मणी, आदित्यभक्ता, श्यामा नामक एक पक्षि विशेष।

देवेन्द्र तत्० (पु०) देवाधिप, देवराज, इन्द्र।

देवोत्थान तत्० (पु०) कार्तिक सुदी एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु निद्रा का त्याग करते हैं।

देवोद्यान तत्० (पु०) देवता का उपवन, सुन्दर वाटिका, विहार स्थान।

देवोपासना तत्० (स्त्री०) देवाराधन, देवपूजा।

देश तत्० (पु०) पृथिवी का खण्ड, मण्डल, चक्र, प्रदेश।—दशाभिज्ञ (पु०) देश की अवस्था जानने वाला, देश-वृत्तान्त-वेत्ता।—निकाला (पु०) दण्ड विशेष, किसी अपराध के कारण अपना देश छोड़कर बाहर हो जाने की जो राजाज्ञा होती है।—भक्त (पु०) देश की सेवा करने वाला, देश को कष्टों से छुड़ाने वाला।—भाषा (स्त्री०) देश की भाषा, देश की बोली, राष्ट्रभाषा, देश की बोली।—मय (गु०) देश में व्याप्त, देश में

सर्वत्र विस्तृत ।—रूप (पु०) उचित, योग्य, न्याय ।—स्थ (गु०) देश में स्थिति, देश में वर्तमान, देश में ठहरा हुआ । (पु०) महाराष्ट्र ब्राह्मण का एक भेद ।

देशाचार तत्० (पु०) देश का आचार, व्यवहार, देश की रीति भाँति ।

देशाटन तत्० (पु०) देशपरिभ्रमण, देश को यात्रा ।

देशाधिप तत्० (पु०) अधिराज, देशाधिपति, राज्याधिकारी ।

देशाधीश तत्० (पु०) देश का स्वामी, राजा, देशाधिप ।

देशान्त तत्० (पु०) देश की सीमा, देश का सिवाना ।

देशान्तर तत्० (पु०) विदेश, सुमेरु और लङ्का का मध्यवर्ती भूमिखण्ड, मध्यान्ह रेखा से पूर्व या पश्चिम किसी स्थान को दूरी, भारत के ज्योतिषी लङ्का से और यूरप के ज्योतिषी ग्रीनिच नामक नगर से देशान्तर का गणित करते हैं।

देशावर दे० (पु०) दूसरा देश, अन्यदेश, परदेश ।

देशिक तत्० (पु०) गुरु, आचार्य, मंत्रज्ञान के उपदेशक गुरू ।

देशी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, दीपक राग की भार्या । (गु०) देश का, देश सम्बन्धी, देश में उत्पन्न ।

देशोन्नति तत्० (स्त्री०) देश की बढ़ती, देश की वृद्धि, देश में सुकाल होना, देशवासियों की सुख समृद्धि पूर्णता ।

देह तत्० (स्त्री०) शरीर, तन, काय, गात्र ।—ज (गु०) देहोत्पन्न, देहजात ।—त्याग (पु०) मरण, मृत्यु, प्राणत्याग ।—दुराना (धा०) गुप्त अङ्गों का ढाँकना ।—पात (पु०) शरीरपतन, मृत्यु ।—भृत् (पु०) जीव, प्राण, आत्मा ।—यात्रा (स्त्री०) शरीर धारण, भोजन, संसार, निर्वाह, मरण, देहत्याग ।—हीन (पु०) देह रहित, अशरीर ।

देहरा दे० (पु०) देवघर, धौहरा, देवालय ।

देहली दे० (स्त्री०) चौखट, ड्योढ़ी, द्वार के नीचे की लकड़ी ।

देहात्मवादी तत्० (पु०) चार्वाक, नास्तिक विशेष, जो देह ही को आत्मा कहते हैं । इनके सिद्धान्त से देहातिरिक्त दूसरा पदार्थ नहीं है, आत्मा परमात्मा आदि इनके सिद्धान्त में नहीं माने जाते। जिस प्रकार अन्न को सड़ाने से उसमें मादकशक्ति उत्पन्न हो जाती है उसी प्रकार पञ्चभूतों के एक भी करण से उसमें एक प्रकार की चेतना उत्पन्न हो जाती है और जब पञ्चभूतों का विश्लेषण होता है तब चेतनता भी अवयवनाश के साथ ही साथ नष्ट होती है । इनके मत में कर्म धर्म आदि कुछ पदार्थ ही नहीं हैं और परलोक मानने की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु पञ्चभूतों के एक भी करण और विश्लेषण में हेतु क्या है इस प्रश्न का उत्तर अभी तक देहात्मवादियों को देते नहीं बना।

देही तत्० (गु०) शरीर युक्त, शरीर, जीव, आत्मा।

दैजा दे० (पु०) दायजा, कन्या को देयद्रव्य, यौतुक।

दैतेय तत्० (पु०) दैत्य, असुर, दानव, दिति के पुत्र।

दैत्य तत्० (पु०) असुर, दिति पुत्र ।—गुरु (पु०) शुक्राचार्य, भार्गव ।—निसूदन (पु०) विष्णु, नारायण ।—पुरोधा (पु०) शुक्राचार्य ।—माता (स्त्री०) दिति, कश्यप की स्त्री ।—पूज्य (पु०) दैत्यों के पूजनीय, दैत्य पुरोहित, शुक्राचार्य । —सेना (स्त्री०) प्रजापति की कन्या और देवसेना की भगिनी, यह केशी नामक दानव की स्त्री थी, केशी ने इसे बल पूर्वक हरण करके इससे ब्याह किया था ।

दैत्याचार्य तत्० (पु०) [दैत्य + आचार्य] शुक्राचार्य, दैत्य पुरोहित ।

दैत्यारि तत्० (पु०) [दैत्य + अरि] विष्णु, नारायण ।

दैनंदिन तत्० (पु०) प्रत्याहिक, प्रति वासर सम्बन्धी, जो प्रति दिन हो ।—प्रलय (पु०) ब्रह्मा का दैनिक प्रलय विशेष, प्रति दिन का अपचय, जो प्रति

दिन पदार्थों में एक प्रकार की विकृति होती है।

दैनिक तत्० (गु०) प्रात्यहिक, दिनभव, दिन का, प्रति दिन होनेवाला।—पत्र (पु०) प्रति दिन प्रकाशित होनेवाला, समाचार पत्र।—वेतन (पु०) प्रति दिन का वेतन, प्रत्येक दिन की मँजूरी।

दैनिकी तत्० (स्त्री०) एक दिन का वेतन।

दैन्य तत्० (पु०) दीनता, दरिद्रता, कृपणता, कातरता, कातर्य, कंगालपन।

दैया दे० (स्त्री०) माँ, माता, आश्चर्य या आर्त होने पर यह शब्द मुँह से निकलता है।

दैर्घ्य तत्० (पु०) दीर्घता, लम्बाई।

दैव तत्० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, विधाता, प्रारब्ध, ललाट, अंगुलि का अग्रभाग, अष्ट विधविवाहान्तर्गत, विवाह विशेष।—ज्ञ (पु०) गणक, आचार्य, ज्योतिषी।—दुर्विपाक (पु०) दुरदृष्ट, दुर्भाग्य, दैव, दुर्घटना।—वाणी (स्त्री०) आकाशवाणी, अमानुषी वचन, संस्कृत वाक्य।—युग (पु०) देवताओं का युग, देवताओं के परिमाण के अनुसार बारह हज़ार वर्ष परिमित काल और मनुष्यों की गणना के अनुसार चार युग।—योग (पु०) दैवात्, हठात्, अकस्मात्, अचानक।—वादी (पु०) आलसी, भाग्याधीन।

दैवत तत्० (पु०) देव समूह। (गु०) देव सम्बन्धी।

दैवलक तत्० (पु०) भीत, भूतभक्त, भूत सेवक।

दैवागत तत्० (पु०) भाग्य से प्राप्त सुख या दुःख, अकस्मात्, हठात्।

दैवात् तत्० (अ०) हठात्, अकस्मात्, दैवाधीन।

दैवाधीन तत्० (पु०) दैवायत्त, ईश्वराधीन, हठात्कार।

दैवानुरागी तत्० (पु०) ईश्वर का प्रेमी, ईश्वर भक्त, भगवद्भक्त, भाग्य में प्रेम करने वाला, भाग्यानुसार काम करने वाला।

दैवानुरोधी तत्० (गु०) दैव वशीभूत, दैवायत्त, भाग्यानुवर्ती।

दैवायत्त तत्० (पु०) दैवाधीन, भाग्यानुसार, अकस्मात्, हठात्, ईश्वराधीन।

दैविक तत्० (गु०) देव सम्बन्धी, भाग्य से उत्पन्न व्याधि, पीड़ा विशेष, भूतादि उपद्रव जनित पीड़ा। यथाः—

> दैहिक दैविक भौतिक तापा।
> रामराज काहू नहिं व्यापा॥
>
> —रामायण।

दैवी तत्० (स्त्री०) हठात् घटना, आपद्, सम्पत्ति विशेष, मानसिक सम्पत्ति, जो इह तथा परलोक के कार्यों में सहायक हो जिसका उपदेश गीता में भगवान् ने किया है।

दैव्य तत्० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, दैव, पूर्व कर्म।

दैशिक तत्० (गु०) देश सम्बन्धी, नैयायिकों के मत से एक सम्बन्ध, समान देश जात वस्तुओं में यह सम्बन्ध माना जाता है। देशनिष्ठ विशेषणता।

दैहिक तत्० (गु०) देह सम्बन्धी, कायिक, शारीरिक।

दैहौं दे० (क्रि०) दानार्थक देना धातु की भविष्य कालिक क्रिया दूँगा। यथाः—

> जिन भुज बल मैं बैर बढ़ावा।
> दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा॥
>
> —रामायण।

दो दे० (गु०) द्वि, दूसरी संख्या, दो की संख्या।

दोऊ दे० (गु०) दोनों, द्वौ, उभय।

दोंकना दे० (क्रि०) गर्जना, गर्जन करना, घुरघुराना, घूरना।

दोक दे० (पु०) बछेड़ा, दो दाँत का बछेड़ा।

दोगाड़ा दे० (पु०) दोनाली बन्दूक, आग्नेयास्त्र, जिसमें दो नलिकाएँ हों।

दोगाना दे० (गु०) दोहरा, द्विगुण, द्विगुणित, दोलड़ा।

दोचर दे० (गु०) दुहरा, दूसरा।

दोजीवा तत्० (स्त्री०) द्विजीवा, गर्भिणी, अन्तःसत्त्वा, आपन्नसत्त्वा।

दो जी से होना दे० (वा०) गर्भ रहना, गर्भवती होना।

दोजा दे० (पु०) दुजायर, दो विवाहकर्ता, दूसरे विवाह का वर, एक विवाह के पश्चात् दूसरा विवाह करने वाला।

दोदना दे० (क्रि०) झुठाना, मुकरना, बात कहकर पलटना।

दोधक तत्० (पु०) छन्द विशेष।

दोधूयमान तत्० (गु०) पुन: पुन: कम्पन विशिष्ट बराबर काँपने वाला।

दोना दे० (पु०) दौना, पत्तों का बना हुआ बरतन, एक प्रकार का पत्रपात्र, पुष्प विशेष।

दोनाली दे० (स्त्री०) दो नल की बन्दूक।

दोनों दे० (गु०) दोऊ, उभय, दो।

दोबर दे० (गु०) दुहरा, दो तह, दोहरा।

दोबे दे० (पु०) दुबे, ब्राह्मणों की एक पदवी।

दोमुहा तद्० (पु०) द्विमुख, दो मुँह का साँप, करवा, गडुवा।

दोय दे० (गु०) दो, दो की संख्या, २।

दोरक तत्० (पु०) सितार का तार अनन्त चतुर्दशी के दिन का सूत्र, रूपप्रसाद, जिसे अनन्त कहते हैं।

दोर्दण्ड तत्० (पु०) बाहुरूपी दण्ड।

दोल तत्० (पु०) दोलोत्सव, श्रीकृष्ण का झूलन, हिंडोला।

दोलन तत्० [दुल्+अनट्] झूलन, हिलन।

दोला तत्० (पु०) हिंडोला, झूलना।

दोलिका तत्० (स्त्री०) हिंडोला, झूलन, जिस पर झूलते हैं।

दोष तत्० (पु०) [दुष्+अच्] दूषण, त्रुटि, कलङ्क, भ्रम, पाप, अपराध, निन्दा, अनिष्ट, वात, पित्त और कफ।—कर (पु०) दूषणावह, अनिष्टकर, निन्दाकर।—खण्डन (पु०) अपराध मार्जन, कलङ्क मार्जन, दोषापनयन।—गायक (पु०) निन्दक।—ग्राहक (पु०) दोष ग्रहणकर्ता, अपवाद कारक, निन्दक, खल।—ज्ञ (पु०) पण्डित चिकित्सक, दोषवेत्ता।—त्रय (पु०) वात, पित्त, कफ।—नाश (पु०) पापमोचन, अपवादहरण।—भाक् (गु०) अपराधी, निन्दार्ह, निन्दा के योग्य।

दोषक तत्० (पु०) निन्दक, अपराधी, दोषी, पापी।

दोषना दे० (क्रि०) दोष देना, दोष लगाना, अपराध लगाना।

दोषा तत्० (स्त्री०) रात्रि, निशा, रात।(अ०) प्रदोष, निशामुख, सन्ध्या।—तन (पु०) निशाजात, रात्रिभव, रात में उत्पन्न।

दोषादोष तत्० (पु०) भलाई बुराई, उत्तम निकृष्ट।

दोषारोपण तत्० (पु०) दोष लगाना, अपराध लगाना।

दोषावह तत्० (गु०) [दोष+आवह] दोषोत्पादक जिससे दोष की उत्पत्ति हो।

दोषी तत्० (गु०) कलङ्की, अपराधी, पापी, दुष्ट, अशुद्ध।

दोषैकदृक् तत्० (गु०) दोषमात्रदर्शी, जो गुणों को छोड़कर केवल दोष ही देखा करता है।

दोसरा दे० (गु०) दूसरा, द्वितीय, सङ्गी, सहचर।

दोसाद दे० (पु०) धानुक, नीच जाति विशेष।

दोस्त दे० (पु०) मित्र, बन्धु, सुहृद।

दोहड़िका दे० (स्त्री०) भाषा का एक छन्द विशेष।

दोहत्थड़ दे० (स्त्री०) दोनों हाथों का चपेट, थप्पड़।

दोहता तद्० (पु०) दौहित्र, बेटी का बेटा, नाती।

दोहती तद्० (स्त्री०) दौहित्री, नातिनी, बेटी की बेटी।

दोहद तत्० (पु०) इच्छा, स्पृहा, गर्भ, गर्भिणी का अभिलाष, गर्भिणी की लालसा, साध।—लक्षण (पु०) गर्भ के लक्षण, गर्भचिन्ह।

दोहदवती तत्० (स्त्री०) अन्नपानादि पदार्थों की अभिलाष रखने वाली, गर्भवती स्त्री।

दोहन तत्० (पु०) दुग्ध निस्सारण, दूध निकालना, दुहना।

दोहनी तत्० (पु०) दोहनपात्र, दूध दुहने का पात्र।

दोहर दे० (स्त्री०) दोहरावस्त्र, जो ओढ़ने के काम में आता है, गलेफ, लाद।

दोहरा दे० (पु०) द्विगुण, द्विगुणित, दुगुना, पद्य-विशेष, पहेली का छन्द।

दोहराव दे० (पु०) दोहराया हुआ, दोहराने का काम, तह करना।

दोहा दे० (पु०) दो चरण का श्लोक, पद्यविशेष, यह ४८ मात्राओं का होता है। प्रथम तृतीय चरण में तेरह तेरह मात्राएं और द्वितीय चतुर्थ चरणों में ग्यारह ग्यारह मात्राएं होती हैं।

दोहाई दे० (स्त्री०) दुहाई, पुकार, गुहार, विचार के लिये प्रार्थना करना, शपथ, सौगन्द।

दोहान तद्० (पु०) द्विहायन, दो वर्ष का बच्चा।

दौंगड़ा दे० (पु०) भारी वर्षा।

दौड़ दे० (स्त्री०) धावा, सरपट, अति वेग से गमन, शीघ्र गमन।—धूप (स्त्री०) यत्न, परिश्रम, उद्योग, चेष्टा।—धूप करना (वा०) बहुत उद्योग करना, बड़ा परिश्रम करना।

दौड़ना दे० (क्रि०) धावना, सरपट लगाना, वेग से चलना।

दौड़ा दे० (पु०) घुड़चढ़ा, घुड़ सवार, बटमार।

दौड़ाक दे० (पु०) दौड़ने वाला, धावक, दौड़ाहा।

दौड़ादौड़ी दे० (वा०) धावाधाई, वेग पूर्वक गमन आगमन।

दौड़ाना दे० (क्रि०) वेग से चलाना, शीघ्र चलाना।

दौड़ाहा दे० (पु०) दौड़ने वाला, सन्देसिया, हरकारा।

दौत्य तत्० (पु०) दूत्य, दूत का धर्म, दूत का कर्म, वार्तावहता।

दौना दे० (पु०) दोना, पत्ता का बना हुआ पात्र।

दौरा दे० (पु०) टोकरा, टोकना, दौरी से बड़ा।

दौरात्म्य तत्० (पु०) दुरात्मा का कार्य, परपीड़न, उत्पात, दुष्टता, अनिष्टकर, दुर्जनता।

दौरी दे० (स्त्री०) चंगेरी, टोकरी।

दौहित्र तत्० (पु०) दुहिता पुत्र, दोहता, कन्या तनय, नाती, बेटी का बेटा।

दौहित्री तत्० (स्त्री०) कन्या की कन्या, दुहिता पुत्री, नतिनी, बेटी की बेटी।

द्युति तत्० (स्त्री०) प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, शोभा, किरण, तेज।

द्युतित तत्० (गु०) दीप्ति विशिष्ट, शोभान्वित।

द्युमणि तत्० (पु०) सूर्य, रवि, भानु, अकौआ का पेड़, अर्कवृक्ष।

द्युमत्सेन तत्० (पु०) शाल्वदेश के राजा, इनके पुत्र का नाम सत्यवान् और पुत्रवधू का नाम सावित्री था। राजा द्युमत्सेन किसी विशेष कारण से अन्धे हो गये थे। कतिपय अधम कर्मचारियों ने मिलकर राजा द्युमत्सेन को राज्यच्युत कर दिया। तब महारानी शैव्या और पुत्र सत्यवान् को लेकर राजा द्युमत्सेन वन में गये, एक समय मद्रदेश के राजा उसी वन में गये और उन्होंने, अपनी कन्या का विवाह सत्यवान् से करना ठीक किया। मद्र देश की राजकुमारी का ब्याह सत्यवान् से होगया। सत्यवान् अल्पायु थे, थोड़े ही दिनों में उनकी आयु पूर्ण होगयी। सावित्री ने अपने पातिव्रत के प्रभाव से यमराज को मोहित करके उनसे कितने ही वर पाये थे। उन्हीं वरों के प्रभाव से राजा द्युमत्सेन ने नेत्र और राज्य पुनः पाये और मृत सत्यवान् भी पुनः जीवित होगये। राजा द्युमत्सेन योग्य पुत्र सत्यवान् को राज्य का भार देकर और उचित समय पर वानप्रस्थ व्रत ग्रहण करके पुनः वन में चले गये।

द्युसद् तत्० (पु०) स्वर्गवासी, स्वर्ग में रहने वाला, देवता, देव, सुर।

द्यूत तत्० (पु०) जुआ, पासा, स्वनाम प्रसिद्ध क्रीड़ा विशेष।—कार (पु०) जुआड़ी, जुआ खेलनेवाला।—क्रीड़ा (स्त्री०) जुए का खेल।

द्यो तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश।

द्योत तत्० (पु०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, किरण।

द्योतक तत्० (पु०) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्तिमान्।

द्योतन तत्० (पु०) प्रकाशन, प्रकाश करण, दर्शन, प्रदीप।

द्योतित तत्० (गु०) प्रकाशित, प्रकटित, व्यक्तीकृत।

द्योरानी दे० (स्त्री०) देवरानी, पति के छोटे भाई की स्त्री।

द्रम्म तत्० (पु०) मान विशेष, सोलह १६ पण का मान।

द्रव तत्० (पु०) स्नेह द्रव्य, रस, पलायन, गतिवेग। —भाव (पु०) तरलभाव, गलना, पिघलना।

द्रविड़ तत्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, देश विशेष, दक्षिण देश का एक प्रान्त, वहाँ के रहने वाले ब्राह्मण भी द्रविड़ कहे जाते हैं।

द्रविण तत्० (पु०) धन, द्रव्य काञ्चन, सोना, रुपया, पैसा।

द्रवित तत्० (गु०) बहता हुआ, पिघला हुआ, कृपायुक्त, नम्र।

द्रवीकरण तत्० (पु०) कठिन द्रव्य को तरल करना, पिघलाना, गलाना।

द्रवीभूत तत्० (पु०) गलित, मिश्रित।

द्रवौ, द्रवहु दे० (क्रि०) दया करो, कृपा करो, दया युक्त हो।

द्रव्य तत्० (पु०) वित्त, धन, नैयायिकों के मत से पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन ये नव द्रव्य हैं। —जन्मभाव (पु०) वस्तु और वस्तु जन्य पदार्थ का सम्बन्ध विशेष।

द्रष्टव्य तत्० (गु०) दर्शनीय, दर्शन योग्य, मनोहर रमणीय।

द्रष्टा तत्० (पु०) द्रष्टा, दर्शक, दर्शनकारी, दिदृक्षु, देखने वाला।

द्राक्षा तत्० (स्त्री०) दाख, अंगूर। —रस (पु०) मदिरा, मद्य। —लता (स्त्री०) अंगूर की लता, अंगूर की टहनी।

द्राघिमा तत्० (स्त्री०) दीर्घता, लम्बाई, दीर्घांश, दैर्घ्य।

द्रावक तत्० (पु०) द्रवकारक, गलाने वाला, प्रस्तर भेद, सोहागा।

द्रावण तत्० (पु०) द्रवकरण, गलाना, निर्मली।

द्राविड़ तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत की दक्षिण दिशा का देश, द्राविड़ देशवासी, ब्राह्मण विशेष, कपूर।

द्राविड़ी तत्० (स्त्री०) द्राविड़ देशोत्पन्न वस्तु, छोटी एलायची, द्राविड़ देश की भाषा।

द्रुत तत्० (गु०) पिघला हुआ सुवर्ण आदि, शीघ्र, तुरन्त, त्वरित। (पु०) नृत्य विषयक शीघ्र गमन। —गामी (पु०) शीघ्र गामी, द्रुतगमनकर्ता, जल्दी चलने वाला।

द्रुपद तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय पृषत् नामक राजा का पुत्र, राजा पृषत् के साथ भरद्वाज ऋषि की मित्रता थी। पृषत् के पुत्र द्रुपद और भरद्वाज के पुत्र द्रोण दोनों समान वय के थे अतएव इनमें भी मित्रता होगयी। राजा पृषत् के मरने पर द्रुपद राजा बनाये गये। भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या करने लगे। द्रुपद राजा होकर अपने बाल्यमित्र को भूल गये थे। एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दरिद्र ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही। कुछ दिनों के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अस्त्रशिक्षक नियत हुए। द्रोण द्रुपद के अपमान को भूले नहीं थे। भीम अर्जुन आदि जब अस्त्र शिक्षा में निपुण हो गये तब द्रोण ने द्रुपद पर चढ़ाई करके उसे बाँध कर अपने समीप लाने के लिये अर्जुन को आज्ञा दी, अर्जुन ने पाञ्चाल राज्य पर चढ़ाई की और अमात्यों के साथ राजा द्रुपद को बाँधकर वे ले आये। द्रोण ने अपने पूर्व अपमान की बात का स्मरण दिलाकर द्रुपद से मैत्री की, परन्तु

इस दबाव की मैत्री को मैत्री नहीं कह सकते । द्रुपद को इससे बड़ा दुःख हुआ । इसका बदला लेने के लिये द्रुपद एक पुत्र प्राप्ति की कामना से यज्ञ करने लगे । गङ्गातीरवासी याज और उपयाज नामक दो स्नातक ब्राह्मणों को द्रुपद ने अपना पुरोहित बनाया और उन्हींके द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया । इसी यज्ञ से द्रोणहन्ता धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी, उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अथवा कृष्ण वर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं । महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये । द्रुपद का एक नपुंसक सन्तान शिखण्डी था जिसके द्वारा भीष्म मारे गये ।

पदी तद्० (स्त्री०) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (देखो द्रौपदी) ।

म तद्० (पु०) [द्रु + म] वृक्ष, पारिजात, पेड़, रूख, तरुवर ।—व्याधि (स्त्री०) लाक्षा, लाख, लाही ।—श्रेष्ठ (पु०) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़ । (पु०) उत्तम वृक्ष, श्रेष्ठ पेड़ ।

लिक तद्० (पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम ।

मारि तद्० (पु०) [द्रुम + अरि] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, करी । (पु०) कुठार, कुल्हाड़ी, अन्धड़, प्रचण्ड वायु ।

माश्रय तद्० (पु०) [द्रुम + आश्रय] गरट, कृकलास, गिरगिट । (पु०) वृक्ष पर रहने वाले, प्राणिमात्र ।

मेश्वर तद्० (पु०) [द्रुम + ईश्वर] तालवृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपल का पेड़, चन्द्रमा, निशाकर ।

हिण तद्० (पु०) विधाता, विधि, ब्रह्मा, प्रजापति ।

काण तद्० (पु०) लग्न के तीसरे भाग का एक भाग ।

ण तद्० (पु०) परिमाण विशेष, चार आढ़क का परिमाण, आढ़क चतुष्टय । ३२ सेर प्रचलित परिमाण । द्रोणाचार्य, कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या गुरु, (देखो द्रोणाचार्य) कृष्ण काक, वृश्चिक, बिच्छू चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय । श्वेतवर्ण छोटा फूल ।—काक (पु०) बनैला कौवा, वन्यवायस, दाड़ काक ।—पुष्पी (स्त्री०) पौधा विशेष, गोशीर्षक वृक्ष, यह औषध के काम में आती है ।—मुख (पु०) चार सौ गावों में से सुन्दर गाँव ।

द्रोणाचार्य तद्० (पु०) [द्रोण + आचार्य] भरद्वाज ऋषि के पुत्र, भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था । एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने विवस्त्रा घृताची नामकी अप्सरा को देखा । उसको देखने से काम विवश महर्षि का रेतःपात हुआ । घृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ । महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा । भरद्वाज ने अग्निवेश्य नामक ऋषि को आग्नेयास्त्र की शिक्षा दी थी । द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयास्त्र की शिक्षा उन्हीं अग्निवेश्य से पायी । द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था । (द्रुपद देखो) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी । पिता की आज्ञा से शरद्वान की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अपना ब्याह किया । उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था । अस्त्र विद्या सीखने के लिये द्रोण महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के निकट गये और वहाँ उन्होंने अस्त्र विद्या सीखी । पाण्डव और कौरवों को पढ़ाने के लिये भीष्मपितामह ने इन्हें नियुक्त किया । अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था । अर्जुन ने जब गुरुदक्षिणा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—"अर्जुन जब कभी हम तुमसे युद्ध करें उस समय तुम भी मेरे साथ खूब युद्ध करना । उस समय किसी प्रकार का सङ्कोच मत करना ।" इसी कारण महाभारत युद्ध के अर्जुन ने गुरु के साथ घोर संग्राम किया था । नहीं तो द्रोण का सबसे अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी गुरु के साथ युद्ध

द्यो तत्० (पु०) स्वर्ग, अन्तरिक्ष, सुरलोक, आकाश।

द्योत तत्० (पु०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, किरण।

द्योतक तत्० (पु०) प्रकाशक, प्रकाशशील, दीप्तिमान्।

द्योतन तत्० (पु०) प्रकाशन, प्रकाश करण, दर्शन, प्रदीप।

द्योतित तत्० (गु०) प्रकाशित, प्रकटित, व्यक्तीकृत।

द्योरानी दे० (स्त्री०) देवरानी, पति के छोटे भाई की स्त्री।

द्रम्म तत्० (पु०) मान विशेष, सोलह १६ पण का मान।

द्रव तत्० (पु०) स्नेह द्रव्य, रस, पलायन, गतिवेग। —भाव (पु०) तरलभाव, गलना, पिघलना।

द्रविड तत्० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष, देश विशेष, दक्षिण देश का एक प्रान्त, वहाँ के रहने वाले ब्राह्मण भी द्रविड़ कहे जाते हैं।

द्रविण तत्० (पु०) धन, द्रव्य, काञ्चन, सोना, रुपया, पैसा।

द्रवित तत्० (गु०) बहता हुआ, पिघला हुआ, कृपायुक्त, नम्र।

द्रवीकरण तत्० (पु०) कठिन द्रव्य को तरल करना, पिघलाना, गलाना।

द्रवीभूत तत्० (पु०) गलित, मिश्रित।

द्रवौ, द्रवहु दे० (क्रि०) दया करो, कृपा करो, दया युक्त हो।

द्रव्य तत्० (पु०) वित्त, धन, नैयायिकों के मत से पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन ये नव द्रव्य हैं। —जन्मभाव (पु०) वस्तु और वस्तु जन्य पदार्थ का सम्बन्ध विशेष।

द्रष्टव्य तत्० (गु०) दर्शनीय, दर्शन योग्य, मनोहर रमणीय।

द्रष्टा तत्० (पु०) द्रष्टा, दर्शक, दर्शनकारी, दिदृक्षिया, देखने वाला।

द्राक्षा तत्० (स्त्री०) दाख, अंगूर। —रस (पु०) मदिरा, मद्य। —लता (स्त्री०) अंगूर की लता, अंगूर की टहनी।

द्राघिमा तत्० (स्त्री०) दीर्घता, लम्बाई, दीर्घत्व, दैर्घ्य।

द्रावक तत्० (पु०) द्रवकारक, गलाने वाला, प्रस्तरभेद, सोहागा।

द्रावण तत्० (पु०) द्रवकरण, गलाना, निर्मली।

द्राविड तत्० (पु०) देश विशेष, विन्ध्य पर्वत की दक्षिण दिशा का देश, द्राविड देशवासी, ब्राह्मण विशेष, कचूर।

द्राविड़ी तत्० (स्त्री०) द्राविड देशोत्पन्न वस्तु, छोटी एलायची, द्राविड देश की भाषा।

द्रुत तत्० (गु०) पिघला हुआ सुवर्ण आदि, शीघ्र, तुरन्त, त्वरित। (पु०) नृत्य विषयक शीघ्र गमन। —गामी (पु०) शीघ्र गामी, द्रुतगमनकर्ता, जल्दी चलने वाला।

द्रुपद तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय पृषत् नामक राजा का पुत्र, राजा पृषत् के साथ भरद्वाज ऋषि की मित्रता थी। पृषत् के पुत्र द्रुपद और भरद्वाज के पुत्र द्रोण दोनों समान वय के थे अतएव इनमें भी मित्रता होगयी। राजा पृषत् के मरने पर द्रुपद राजा बनाये गये। भरद्वाज के मरने के बाद द्रोण तपस्या करने लगे। द्रुपद राजा होकर अपने बाल्यमित्र को भूल गये थे। एक समय द्रोण पूर्व मैत्री स्मरण करके राजा के पास गये, परन्तु राजा ने दरिद्र ब्राह्मण पुत्र से मैत्री करनी न चाही। कुछ दिनों के बाद द्रोण कौरव और पाण्डवों के अस्त्रशिक्षक नियत हुए। द्रोण द्रुपद के अपमान को भूले नहीं थे। भीम अर्जुन आदि जब अस्त्र शिक्षा में निपुण हो गये तब द्रोण ने द्रुपद पर चढ़ाई करके उसे बाँध कर अपने समीप लाने के लिये अर्जुन को आज्ञा दी, अर्जुन ने पाञ्चाल राज्य पर चढ़ाई की और आमात्यों के साथ राजा द्रुपद को बाँधकर ले ले आये। द्रोण ने अपने पूर्व अपमान की बात का स्मरण दिलाकर द्रुपद से मैत्री की; परन्तु

इस दबाव की मैत्री को मैत्री नहीं कह सकते। द्रुपद को इससे बड़ा दुःख हुआ। इसका बदला लेने के लिये द्रुपद एक पुत्र प्राप्ति की कामना से यज्ञ करने लगे। गङ्गातीरवासी याज और उपयाज नामक दो स्नातक ब्राह्मणों को द्रुपद ने अपना पुरोहित बनाया और उन्हींके द्वारा यज्ञ सम्पन्न किया। इसी यज्ञ से द्रोणहन्ता धृष्टद्युम्न की उत्पत्ति हुई थी, उसी यज्ञवेदी से एक कन्या उत्पन्न हुई थी, जिसे द्रौपदी अथवा कृष्ण वर्ण होने के कारण कृष्णा कहते हैं। महाभारत के युद्ध में द्रोण ने द्रुपद को मारा था, परन्तु द्रुपद पुत्र धृष्टद्युम्न के द्वारा द्रोणाचार्य मारे गये। द्रुपद का एक नपुंसक सन्तान शिखण्डी था जिसके द्वारा भीष्म मारे गये।

द्रुपदी तद्० (स्त्री०) राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (देखो द्रौपदी)।

द्रुम तत्० (पु०) [द्रु + म] वृक्ष, पारिजात, पेड़, रूख, तरुवर।—व्याधि (स्त्री०) लाख, लाक्ष, लाही।—श्रेष्ठ (पु०) तालवृक्ष, ताड़ का पेड़। (पु०) उत्तम वृक्ष, श्रेष्ठ पेड़।

द्रुमलिक तत्० (पु०) राक्षस विशेष, एक राक्षस का नाम।

द्रुमारि तत्० (पु०) [द्रुम + अरि] वृक्षों का शत्रु, हाथी, गज, करी। (पु०) कुठार, कुल्हाड़ी, अन्धड़, प्रचण्ड वायु।

द्रुमाश्रय तत्० (पु०) [द्रुम + आश्रय] सरट, कृकलास, गिरगिट। (पु०) वृक्ष पर रहने वाले, प्राणिमात्र।

द्रुमेश्वर तत्० (पु०) [द्रुम + ईश्वर] तालवृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपल का पेड़, चन्द्रमा, निशाकर।

द्रुहिण तत्० (पु०) विधाता, विधि, ब्रह्मा, प्रजापति।

द्रेकाण तत्० (पु०) लग्न के तीसरे भाग का एक भाग।

द्रोण तत्० (पु०) परिमाण विशेष, चार आढ़क का परिमाण, आढ़क चतुष्टय। ३२ सेर प्रचलित परिमाण। द्रोणाचार्य, कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या गुरु, (देखो द्रोणाचार्य) कृष्ण काक, वृश्चिक, बिच्छू चार सौ धनुष परिमाण का जलाशय। श्वेतवर्ण छोटा फूल।—काक (पु०) वनैला कौवा, वन्यवायस, दाड़ काक।—पुष्पी (स्त्री०) पौधा विशेष, गोशीर्षक वृक्ष, यह औषध के काम में आती है।—मुख (पु०) चार सौ गावों में से सुन्दर गाँव।

द्रोणाचार्य तत्० (पु०) [द्रोण + आचार्य] भरद्वाज ऋषि के पुत्र, भरद्वाज का आश्रम गङ्गा तट पर था। एक दिन गङ्गास्नान के समय भरद्वाज ने विवस्त्रा घृताची नामकी अप्सरा को देखा। उसके देखने से काम विवश महर्षि का रेतःपात हुआ। घृताची ने उसको द्रोण नामक यज्ञ के पात्र में रख दिया कुछ दिनों के बाद उस यज्ञपात्र से एक लड़का उत्पन्न हुआ। महर्षि ने उसका नाम भी द्रोण ही रखा। भरद्वाज ने अग्निवेश्य नामक ऋषि को आग्नेयास्त्र की शिक्षा दी थी। द्रोण ने भी धनुर्विद्या और आग्नेयास्त्र की शिक्षा उन्हीं अग्निवेश्य से पायी। द्रोण का मित्र द्रुपद नामक राजा था। (द्रुपद देखो) परन्तु किसी विशेष कारण से इनकी मित्रता नष्ट हो गयी। पिता की आज्ञा से शरद्वान की कन्या कृपी से द्रोणाचार्य ने अपना ब्याह किया। उसी विवाह से द्रोण के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम अश्वत्थामा था। अस्त्र विद्या सीखने के लिये द्रोण महेन्द्र पर्वत पर परशुराम के निकट गये और वहाँ उन्होंने अस्त्र विद्या सीखी। पाण्डव और कौरवों को पढ़ाने के लिये भीष्मपितामह ने इन्हें नियुक्त किया। अर्जुन इनका प्रिय शिष्य था। अर्जुन ने जब गुरुदक्षिणा देने की इच्छा प्रकट की तब द्रोणाचार्य ने कहा था—"अर्जुन जब कभी हम तुमसे युद्ध करें उस समय तुम भी मेरे साथ खूब युद्ध करना। उस समय किसी प्रकार का सङ्कोच मत करना।" इसी कारण महाभारत युद्ध के अर्जुन ने गुरु के, घोर संग्राम किया था। नहीं तो द्रोण का अधिक प्रिय शिष्य अर्जुन कभी गुरु के

करने का साहस नहीं करता। उसी युद्ध में अश्वत्थामा के मरने का संवाद सुनकर द्रोण मूर्छित हुए। इसी अवसर पर धृष्टद्युम्न ने तलवार से उनका सिर काट डाला।

द्रोणी तत्० (स्त्री०) [द्रोण+ई] देश विशेष, नदी विशेष, डोंगी, छोटी नौका, पर्वत विशेष, दो वृक्षों की सन्धि।

द्रोह तत्० (पु०) [द्रुह+अल्] जिघांसा, अनिष्ट चिन्तन, अपकार, क्षति, हानि पहुँचाने की इच्छा। वैर, द्वेष, विरोध, त्याग।—**कारी** (पु०) [द्रोह+कृ+णिन्]। हिंसक, द्वेषी, वैरी, विरोधी। —**चिन्तन** (पु०) दूसरों का अनिष्ट करने की चिन्ता, किसी की अनभलाई सोचना।

द्रोहिया तद्० (गु०) द्रोही, द्वेषी, वैरी, विरोधी।

द्रोही तत्० (पु०) [द्रुह+इन्] अनिष्टकारी, खल, पिशुन, स्वभाव से वैरी, विरोधी, द्वेषी।

द्रौणायन तत्० (पु०) [द्रोण+आयन] द्रोणाचार्य का पुत्र, अश्वत्थामा, यह सप्त चिरजीवियों में से हैं।

द्रौपदी तत्० (स्त्री०) पाञ्चालराज द्रुपद की यज्ञवेदी से उत्पन्न कन्या। इसका वर्ण काला था इस कारण इसका दूसरा नाम कृष्णा था। स्वयंवर स्थान में लक्ष्यभेद करके अर्जुन ने इसे पाया था। परन्तु पाँचों भाइयों का इससे ब्याह हुआ। यह अपने पतियों के साथ वन वन घूमती फिरती थी, अज्ञातवास के समय विराट के घर इसने सैरिन्ध्री, (दासी) का काम किया था। दुःशासन और दुर्योधन ने भरी सभा में इसका अपमान किया था। इसीका बदला भीम ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में लिया था। महाभारत युद्ध समाप्त होने पर कुछ दिनों तक यह सुख शान्ति से राज्यभोग करती थी, पुनः जब इसके पति महाप्रस्थान के लिये उद्यत हुए तब द्रौपदी भी अपने पतियों के साथ चली, हिमपर्वत पर चढ़ने के समय सबसे पहले यही गिर गयी।

द्वन्द्व तत्० (पु०) युग्म, जोड़ी, युगल, मिथुन, रहस्य, कलह, स्त्री पुरुष की जोड़ी विवाद, कलह, रोग विशेष, षड्विध समास के अन्तर्गत एक समास का नाम। द्वन्द्व समास, सुख दुःख, राग द्वेष, शीत आतप आदि।—**कारी** (पु०) कलह कारक, झगड़ालू, विवादी।—**चर** (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा।—**ज** (पु०) [द्वन्द्व+जन्+ड] दो दोषों से उत्पन्न रोग, कलहजन्य, कलह से उत्पन्न।

द्वाचत्वारिंशत् तत्० (गु०) दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस।

द्वात्रिंशत् तत्० (गु०) दो अधिक तीस, ३२, बत्तीस। —**अक्षरी** (पु०) ग्रन्थ, पुस्तक।—**लक्षण** (पु०) बत्तीस लक्षण, जो महापुरुषों में होते हैं, वे ये हैं— सुकुल, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुचिता, अभ्यास, वर विद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, गुप्त विद्या, प्रियवाद, सत्संग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रियत्व, दातृत्व, धर्म, देवपूजन, अल्प निद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धैर्य इति, ३२।

द्वादश तत्० (गु०) [द्वादश+डट्] दो अधिक दश, १२ बारह, बारहवीं संख्या।—**उपवन** (पु०) साङ्केतिक बारह उपवन यथाः—ग्वालकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, सकेत, नन्दघाट, वीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगाँव, गोकुल, चन्दनवन।—**कर** (पु०) बृहस्पति, कार्त्तिकेय।—**पत्र** (पु०) योनि विशेष।—**भानु** (पु०) बारह सूर्य।—**भानुकला** (स्त्री०) सूर्य की बारह कलाएं उनके नाम ये हैं। तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिम्ना, भोगदा, विश्वबोधिनी, धारिणी, क्षमा, शोषिणी। —**लोचन** (पु०) कार्त्तिकेय, कुमार, देव सेनापति —**वन** (पु०) बारह वन, जो ब्रज में हैं। मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर वन।

द्वादशांशु तत्० (पु०) [द्वादश+अंशु] बृहस्पति सुराचार्य, देवगुरु।

द्वादशाक्ष तत्० (पु०) [द्वादश + अक्षि] कार्तिकेय, गुह, षडानन।

द्वादशांगुल तत्० (पु०) [द्वादश + अंगुल] वितस्ति परिमाण, एक बीता, आधा हाथ।

द्वादशात्मा तत्० (पु०) [द्वादश + आत्मा] सूर्य, भानु दिवाकर, अकवन का पेड़।

द्वादशी तत्० (स्त्री०) [द्वादश + डट् + ई] तिथि विशेष, पक्ष की बारहवीं तिथि, चन्द्रमा की बारहवीं कला का समय।

द्वापर तत्० (पु०) युग विशेष, तीसरा युग, इसका मान ८६४००० वर्ष का होता है। श्रीकृष्ण और बौद्ध दो अवतार हुए थे, सन्देह, अनिश्चय।

द्वापञ्चाशत् तत्० (गु०) संख्या विशेष, दो अधिक पचास, ५२, बावन।

द्वार तत्० (पु०) निकलने का मार्ग, घर में से निकलने का पथ, दरवाज़ा।—**कण्टक** (पु०) किवाड़, कपाट।—**पाल** (पु०) द्वार रक्षक, दरवान।—**पालक** (पु०) द्वाररक्षक, द्वारवान, पहरुआ, प्रहरी।—**वती** (स्त्री०) द्वारकापुरी, श्रीकृष्ण की पुरी, यह प्रसिद्ध सप्तपुरियों में से है।—**यन्त्र** (पु०) द्वार बन्द करने का यन्त्र, ताला, कुलुफ।

द्वारका तत्० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पुरी, श्रीकृष्ण का नगरी।

द्वारकेश तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, द्वारका के अधिपति।

द्वारा तत्० (अ०) कारण से, हेतु से, सहायता से।

द्वारावती तत्० (स्त्री०) द्वारवती, द्वारका, जिसको श्रीकृष्ण ने बसाया था, जो सुवर्णमयी द्वारका के नाम से प्रसिद्ध है।

द्वारिका तत्० (स्त्री०) द्वारका, द्वारावती, चार धाम के अन्तर्गत तीर्थ विशेष।—**धीश** (पु०) [द्वारिका + अधीश] श्रीकृष्णजी।

द्वारी तत्० (पु०) [द्वार + इन्] द्वारपाल, द्वार रक्षक, दरवान, पौरिया।

द्वाषष्ठी तत्० (गु०) दो अधिक साठ, ६२, बासठ।

द्वासप्तति तत्० (गु०) संख्या विशेष, दो अधिक सत्तर, ७२, बहत्तर।

द्वास्थ तत्० (पु०) द्वाररक्षक, द्वारपाल, द्वारी, दरवान।

द्विः तत्० (अ०) वारद्वय, दो बार।—**श्रुतिधर** (पु०) [द्विःश्रुति + धृ + अच्] किसी बात को दो बार सुनने ही से जो स्मरण रखते हों।

द्विगु तत्० (पु०) समास विशेष, यह समास तत्पुरुष समास के अन्तर्गत है।

द्विगुण तत्० (गु०) दुगुना, दोहरा, दुबारा, दो संख्या द्वारा गुणित।

द्विगुणित तत्० (गु०) द्विगुणीकृत, दुगुना किया हुआ।

द्विचत्वारिंशत् तत्० (गु०) संख्या विशेष, दो अधिक चालीस, ४२, बयालीस।

द्विज तत्० (पु०) [द्वि + जन् + ड] दो बार में उत्पन्न, ब्राह्मणादि त्रिवर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, इन वर्णों की उत्पत्ति जन्म और संस्कार से होती है अतएव ये द्विज कहे जाते हैं। अण्डज, पक्षी, दाँत, दन्त।—**पति** (पु०) चन्द्रमा, शशाङ्क, चन्द्रमा ब्राह्मणों के स्वामी हैं। श्रुति में लिखा है "सोमोऽस्माकं राजा" अर्थात् सोम हम लोगों का राजा, शासक है।—**प्रपा** (स्त्री०) आलवाल, वृक्ष मूल में जल देने के लिये बनाया हुआ थाला।—**प्रिया** (स्त्री०) सोमलता, सोम नाम की वल्ली। (गु०) त्रिवर्ण की प्रिय वस्तु।—**बन्धु** (पु०) ब्राह्मण के समान, अब्राह्मण, कुत्सित ब्राह्मण।—**वर्य** (पु०) श्रेष्ठ ब्राह्मण, उत्तम ब्राह्मण।—**ब्रुव** (पु०) जातिमात्र का ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण।—**राज** (पु०) चन्द्रमा, शशधर, शशाङ्क।

द्विजन्मा तत्० (पु०) [द्वि + जन् + मन्] विप्र, ब्राह्मण, दन्त, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य। (गु०) दो बार उत्पन्न होने वाला।

द्विजाति तत्० (पु०) ब्राह्मण, अण्डज, पक्षी, क्षत्रिय, वैश्य।

द्विजातीय तत्० (गु०) त्रिवर्ण सम्बन्धी।

द्विजालय तत्० (पु०) [द्विज + आलय] वृक्ष कोटर, ब्राह्मण गृह, पक्षियों का स्थान, घोंसला, खोंता।

द्विजिह्व तत्० (पु०) [द्वि + जिह्वा] सर्प, सूचक, पिशुन, खल, इधर की बात उधर कहने वाला।

द्विजोत्तम तत्० (पु०) [द्विज + उत्तम] ब्राह्मण, श्रेष्ठ पक्षी, गरुड़ ।

द्विज्या तत्० (स्त्री०) [द्वि + ज्या] गोला अध्याय की एक रेखा विशेष।

द्वितय तत्० (गु०) [द्वि + तय] युग्म, दो।

द्वितीय तत्० (गु०) [द्वि + तीय] दो के पूरण करने वाली संख्या, दूसरा, दूजा, द्वय।

द्वितीया तत्० (स्त्री०) [द्वितीय + आ] गेहिनी, भार्या, तिथि विशेष, चन्द्रमा का दूसरी तथा सत्रहवीं कला की क्रिया का समय।

द्वितीयान्त तत्० (गु०) जिसके अन्त में द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो।

द्वित्रा तत्० (स्त्री०) दो या तीन की पूरण करने वाली संख्या।

द्वित्व तत्० (पु०) [द्वि + त्व] दो संख्या, बार द्वय करण, एक के दोबार करना, दोहराना।

द्विदैवत्या तत्० (स्त्री०) विशाखा नक्षत्र, इसके दो देवता हैं।

द्विधा तत्० (अ०) दो प्रकार, द्व्यर्थ, सन्देह, अनिश्चित, द्विविध, दो भाँति।—कल्प (पु०) सन्देह का विषय, अनिश्चित विषय।

द्विप तत्० (पु०) [द्वि + पा + उ] द्विरद, हस्ति, हाथी, दन्ती।

द्विपञ्चाशत् तत्० (गु०) संख्या विशेष, दो अधिक पचास, ५२, बावन।

द्विपथ तत्० (पु०) दो मार्ग, दो ओर का मार्ग।

द्विपद तत्० (गु०) दो पैर वाला, द्विपाद विशिष्ट। (पु०) मनुष्य, देवता, पक्षी, राक्षस।—राशि (पु०) मिथुन, तुला, कुम्भ कन्या और धनु का पूर्वभाग।

द्विमुख तत्० (पु०) एक प्रकार का साँप, दुमुँहा साँप, राजसर्प।

द्विरद तत्० (पु०) [द्वि + रद] हाथी, दन्ती, करी, वारण, गज।

द्विरदान्तक तत्० (पु०) सिंह, केसरी।

द्विरसन तत्० (पु०) [द्वि + रसना] सर्प, अहि, विषधर।

द्विरागमन तत्० (पु०) [द्विर् + आगमन] पुनरागमन, बहू का पति के घर दूसरी बार आना, गौना।

द्विरुक्त तत्० (गु०) [द्विर् + उक्त] बारद्वय कथित, दो बार कहा हुआ।

द्विरुक्ति तत्० (स्त्री०) [द्विर् + उक्ति] पुनः पुनः कथन, एक बात के दो बार कहना, काव्य का एक दोष, यह शब्द गतदोष कहा जाता है, एक पद्य में एक ही अर्थ का वाचक शब्द यदि दोबार आ जाय तो द्विरुक्तिदोष होता है।

द्विरूपी तत्० (पु०) [द्विरूप + इन्] द्विमूर्ति, दूसरा रूप धारण करने वाला।

द्विरेफ तत्० (पु०) भ्रमर, भृङ्ग, अलि, भँवरा।

द्विर्भोजन तत्० (पु०) दोबार भोजन।

द्विवचन तत्० (पु०) दो संख्या की वाचक विभक्ति, दूसरा वचन।

द्विविद तत्० (पु०) वानर विशेष, देवताओं के शत्रु नरकासुर से इसकी मैत्री थी, बलदेव ने इस वानर के मारा था।

द्विविध तत्० (अ०) दो प्रकार, दो भाँति, द्विधा।

द्विस्वभाव तत्० (पु०) ज्योतिष में प्रसिद्ध लग्न विशेष।

द्विहायनी तत्० (स्त्री०) [द्वि + हायन + ई] द्विवर्षीया, दो वर्ष की अवस्था वाली बालिका।

द्वीप तत्० (पु०) व्याघ्रचर्म, व्याघ्र, जल मध्यस्थ पृथिवी का खण्ड, जिसके चारों ओर जल भरा हुआ हो। हिन्दू शास्त्रानुसार सात द्वीप हैं ये सातों द्वीप सात समुद्रों से वेष्टित हैं। उन द्वीपों के नाम ये हैं:—

जम्बुद्वीप, कुशद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलीद्वीप, क्रौञ्चद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वीपवती तत्० (स्त्री०) नदी, भूमि।

द्वीपवान् तत्० (पु०) समुद्र, सागर।

द्वीपशत्रु तत्० (पु०) सतावर, सतावर, औषध विशेष, शतावरि।

द्वीप सम्भवा तत्० (स्त्री०) पिण्डी, खजूर।

द्वीपस्थ तत्० (पु०) [द्वीप + स्था + ड] द्वीप में रहने वाला, द्वीपवासी।

द्वीपिका तत्० (स्त्री०) सतावर, शतावरि।

द्वीपी तत्० (पु०) व्याघ्र, चित्रक व्याघ्र, चीता बाघ।

द्वीप्य तत्० (गु०) [द्वीप + य] द्वीप में उत्पन्न होने वाला।

द्वेष तत्० (पु०) हिंसा, शत्रुता, विरोध, ईर्ष्या, वैर, लाग, द्रोह।

द्वेषी तत्० (गु०) [द्विष् + इन्] शत्रु, वैरि, हिंसक।

द्वेष्टा तत्० (गु०) [द्विष् + तृच्] विद्वेषक, द्वेषकर्ता।

द्वेष्य तत्० (गु०) [द्विष् + य] द्वेष का विषय, द्वेष करने के योग्य।

द्वै तद्० (गु०) दो संख्यावाचक।

द्वैत तत्० (पु०) दो, दो प्रकार, भेद, सन्देह।—क (पु०) [द्वैत + चा + क] द्वैतवादी, भिन्नेश्वरवादी। —ज्ञान (पु०) द्वैतवाद, भिन्न ईश्वर का ज्ञान। —वादी (पु०) [द्वैत + वद् + णिच्] जीव और ईश्वर का भेद जानने वाला, ईश्वर से जीव की पृथक् सत्ता मानने वाला सिद्धान्त, माध्व आदि।

द्वैध तत्० (न०) सन्देह, संशय, द्विप्रकार, व्यङ्ग्योक्ति, दो खण्ड।

द्वैधीकरण तत्० (पु०) छेदन, खण्ड करण, भेदन।

द्वैधीभाव तत्० (पु०) विश्लेष, अलगाव, पार्थक्य, परस्पर का विरोध।

द्वैपायन तत्० (पु०) व्यासदेव।

द्वैमातुर तत्० (पु०) गणेश, जरासन्ध राजा। (गु०) दो माताओं से उत्पन्न, भगीरथ।

द्वैमातृक तत्० (पु०) [द्विमातृ + कन्] नदी ताल आदि के जलद्वारा जिस देश में धान्य उत्पन्न होते हों। दो माताओं के पुत्र, भगीरथ।

द्वैरथ तत्० (पु०) दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।

द्वैप तद्० (पु०) द्वेष, हिंसा, वैर, विरोध।

द्व्यंगुल तत्० (गु०) [द्वि + अंगुल] अंगुलि द्वय परिमित, दो अंगुलियों के बराबर की वस्तु।

द्व्यञ्जलि तत्० (गु०) [द्वि + अंजलि] दो अञ्जलि परिमाण, अञ्जलिद्वय, दो अञ्जलियों से मापी हुई वस्तु।

द्व्यक्षर तत्० (पु०) [द्वि + अक्षर] वर्णद्वय, दो अक्षर, मन्त्रविशेष, दो अक्षर का मन्त्र।

द्व्यणुक तत्० (पु०) [द्वि + अणुक] परमाणुद्वय, दो परमाणु।

द्व्यर्थ तत्० (गु०) [द्व + अर्थ] अर्थ द्वययुक्त, दो प्रकार के अर्थों का वाचक, वे वाक्य या शब्द जिनके दो अर्थ हों, व्यंगोक्ति।

द्व्यात्मक तत्० (पु०) [द्वि + आत्मक] मिथुन, कन्या, धनु, मीनराशि, द्विविध, दो प्रकार।

द्व्याहिक तत्० (गु०) दो दिन के अनन्तर उत्पन्न होने वाला, दिनद्वय जन्य।

ध

ध यह व्यञ्जन का उन्नीसवाँ अक्षर है, इसे दन्त्यवर्ण कहते हैं क्योंकि इसका उच्चारणस्थान दन्त है।

ध तत्० (पु०) धन, ब्रह्मा, कुबेर, धर्म।

धंधला दे० (पु०) धोखा, छल, कपट, चकमा, प्रतारणा।

धंधलाना दे० (क्रि०) धोखा देना, चकमा देना, ठगना, प्रतारित करना।

धंधक दे० (गु०) उद्यमी, परिश्रमी, कामकाजी, धंधावाला, व्यवसायी, व्यापारी।

धंधा दे० (पु०) काम, उद्यम, व्यवसाय, व्यापार।

धंधार दे० (गु०) उदास, बेलाग रहने वाला, निकम्मा।

धंधारी दे० (स्त्री०) उदासी, शिथिलता, किसी काम में चित्त न देना।

धंसना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना, गड़ना बेबस पड़ना, फँसना।

धकधक दे० (पु०) द्योतमान, प्रकाशमान, उज्ज्वल, दीप्तिशील, धड़क, कम्प, कँपकपी, थरथर।

धकधकाना दे० (क्रि०) धड़कना, थरथराना, काँपना, कम्पित होना।

धकधकी दे० (स्त्री०) कँपकपी, थरथराहट, कम्प, वेपथु, थरथरी, घबराहट, हड़बड़ी।

धकेलना दे० (क्रि०) धक्का देना, ढकेलना, ठेलना, धक्का देकर हटाना।

धकेलदेना दे० (क्रि०) धक्का देना, आघात से पीछे हटाना, झोंकदेना, ठेल देना।

धक्का दे० (पु०) आघात, अभिघात, रेला, झोंका, ठेलाव।—**देना** (क्रि०) आघात देना, रेलना, झौंका देना।

धक्कमधक्का दे० (पु०) रेलपेल, ठेलाठेली, दबोचा-दबोची।

धक्काधक्की दे० (स्त्री०) धक्कमधक्का, रेलापेल, ठेला-ठेली।

धगड़ा दे० (पु०) उपपति, ज़ार, विट, भड़ुआ।

धगोलना दे० (क्रि०) लोटना, लोट पोट करना, करवट बदलना, छटपटाना।

धज दे० (पु०) डीलडौल, ठाठबाठ, साजबाज, आकार, आकृति, व्यवहार, चालचलन, दशा, अवस्था, रूप।

धजभङ्ग तद्‌० (पु०) ध्वजभङ्ग, रोगविशेष, नपुंसकता का एक भेद विशेष।

धजा तद्‌० (स्त्री०) ध्वजा, पताका, कपड़े की झंडी।

धजीला दे० (गु०) रूपवान्, सुरूप, सुन्दर, सुडौल, सुस्वरूप।

धज्जियाँ उड़ाना दे० (वा०) अपमानित करना, अप्रतिष्ठा करना, दुर्नाम करना, अयश करना।

धज्जियाँ करना दे० (वा०) टुकड़े टुकड़े कर देना।

धज्जी दे० (स्त्री०) चीर, कतरन, टुकड़ा, कागज या कपड़े का कटका।

धड़ दे० (पु०) देह, काय, शरीर, गले से नीचे का शरीर। यथाः—

सिर धड़ से अलग होगया, वीरों की तलवारें अपनी चकाचकाहट से शत्रुओं की चौंधियाती हुई धड़ से सिर अलग करने लगीं।

धड़क दे० (स्त्री०) भय, डर, भय से उत्पन्न व्याकुलता, हृदय का क्षोभ, धुकधुकी, कम्प, वहम।

धड़कना दे० (क्रि०) भय करना, डरना, काँपना, भय से व्याकुल होना, थरथराना, धुकधुकाना, धड़धड़ाना, फड़कना।

धड़का दे० (पु०) भय, सन्देह, दुविधा, दुचिता, दहल।

धड़काना दे० (क्रि०) भय दिखाना, डरवाना, व्याकुल करना, कँपाना, चिन्तित करना, सन्दिग्ध करना, दुविधा में डालना।

धड़धड़ाना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, छटपटाना, पक्षियों का पर झाड़ना।

धड़क्का दे० (पु०) गम्भीर ध्वनि, ठनक, डर, भय।

धड़ा दे० (पु०) जथा, समूह, डाकुओं का समूह, डाँका डालना, पल्ला, तौल, बोझ, रुख, ओर।

धड़ाका दे० (पु०) धमक, शब्द, भारी शब्द, कड़क।

धड़ी दे० (स्त्री०) पाँच सेर की तौल, रेखा।

धड़वा दे० (पु०) पक्षि विशेष, मैना, सारिका।

धत दे० (स्त्री०) हाथी हाँकने का शब्द, चलने के लिये हाथियों को सङ्केतार्थक शब्द, तिरस्कारार्थ शब्द, दुतकार।

धतीनगर दे० (गु०) कुजात, नीच, अधम।

धतूरा तद्‌० (पु०) धत्तूर, एक वृक्ष और उसके पुष्प का नाम, यह विषैला होता है, कहते हैं यह महादेव को बड़ा प्रिय है।

धतूरिया दे० (पु०) कपटी, छली, बहुरूपिया।

धधकना दे० (क्रि०) प्रज्वलित होना, भभक उठना, जल उठना, एकबार ही खुल जाना।

धधच्छर तद्० (पु०) दग्धाक्षर, कविता का एक दोष, कविता के आदि मध्य या अन्त में अशुभ-फलदायी अक्षरों का आना दग्धाक्षर या धधच्छर कहा जाता है। आदि में ह, ग, न, मध्य में र, ज, स, और अन्त में क, ट, ब, अशुभ हैं।

धन तत्० (पु०) जीवन का उपाय, वित्त, विभव, स्थावर जङ्गम सम्पत्ति, गणित में जोड़ का चिन्ह, + ।—**केलि** (पु०) कुबेर, धनाधिप। —**गर्वित** (पु०) धनगर्वी, धन से अहङ्कारी, धन उन्मत्त।—**चेष्टा** (स्त्री०) अर्थचिन्ता, धन पाने की इच्छा।

धनक दे० (स्त्री०) कारचोबी, सोना या चाँदी के तार से बनी वस्तु, जुड़ाव, गोटे का सामान।

धनकटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा, धान काटने का समय।

धनञ्जय तत्० (पु०) अर्जुन, अग्नि, वायु विशेष, शरीरस्थित वायु, वृक्ष विशेष, चित्रक वृक्ष, नाग भेद, जलाशयाधिपति।

एक संस्कृत कवि का नाम। यह धारानगरी के राजा भोजराज के पितृव्य मुञ्जराज के सभा पण्डित थे। इनका बनाया हुआ संस्कृत में एक ग्रन्थ है जिसका नाम "दशरूपक" है। इस ग्रन्थ में केवल नाटक के लक्षणों ही का वर्णन है। इनके पिता का नाम विष्णु था। महाराज मुञ्ज का समय १० वीं सदी का अन्तभाग माना जा सकता है, तदनुसार उनके सभा पण्डित धनञ्जय का भी वही समय मानना होगा।

धनत्तर दे० (पु०) धनी, धनवान, धनिक, प्रतापी।

धनन्तर तद्० (पु०) धन्वन्तरि, देववैद्य, चिकित्सक, समुद्र से निकाले हुए चौदह रत्नों में का एक रत्न।

धनद तत्० (पु०) [धन+दा+ड] धनपति, कुबेर, धनाधिप।—**नुज** (पु०) [धनद+अनुज] रावण, दशानन।

धनपति तत्० (पु०) कुबेर, धनाधिप, धन का देवता, कुबेर का दूसरा नाम, शरीरस्थित वायु विशेष, कहते हैं यह वायु ब्रह्मा के मुख से निकला और उन्हींकी आज्ञा से मूर्ति धारण करके धनपति नाम से परिचित हुआ। तदनन्तर उसी मूर्ति से ब्रह्मा को आज्ञा पाकर देवताओं के धन की रक्षा करने लगा।

—वामन पुराण।

धनपिशाचिका तत्० (स्त्री०) धनाशा, धनतृष्णा, धनप्राप्त करने की व्यर्थ तृष्णा।

धनबाहुल्य तत्० (पु०) अर्थाधिक्य, धन की अधिकता, धनवान्।

धनमद तत्० (पु०) विभव, गर्व, धन होने के कारण अहङ्कार।

धनलुब्ध तत्० (पु०) धनलिप्सु, अर्थलोभी, धन का लोभी।

धनवती तत्० (स्त्री०) [धन+वत्+ई] धनिष्ठा नक्षत्र, धनान्विता, स्त्री, धनी स्त्री।

धनवन्त तद्० (पु०) धनवान्, धनी, मालदार, धनिक, लक्ष्मीपात्र, धनाढ्य।

धनहीन तत्० (पु०) धनरहित, धनशून्य, दरिद्र, कंगाल, निर्धन।

धनागम तत्० (पु०) [धन+आगम] आय, धन का आना।

धनागार तत्० (पु०) [धन+आगार] धन रखने का स्थान, ख़ज़ाना, भाण्डार।

धनाढ्य तत्० (पु०) [धन+आढ्य] धन विशिष्ट, अर्थशाली, धनी, ऐश्वर्यशाली, धन सम्पन्न।

धनान्ध तत्० (पु०) [धन+अन्ध] अहङ्कारी, धन गर्वित।

धनाधार तत्० (पु०) [धन+आधार] धन रखने का स्थान, धनागार, भाण्डार, बाक्स, सन्दूक, आदि।

धनाधिकृत तत्० (पु०) [धन+अधिकृत] कोषाध्यक्ष, ख़ज़ांची।

—पति (पु०) भूपति, महिपाल, राजा ।—पाल (पु०) राजा, महीपति ।—सुता (स्त्री०) सीता, जानकी ।

धरती दे० (स्त्री०) पृथ्वी, पृथिवी, भूमि ।

धरना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, पकड़ना, रखना, अधीन करना ।—देना (वा०) एक प्रकार का अभियोग, जब कोई बली मनुष्य दुर्बल मनुष्य को किसी कारण से दुःख देता है, उस समय दुर्बल मनुष्य प्राण देने के लिये अथवा दुःख से त्राण पाने के लिये बली मनुष्य के घर पर बैठ जाता है, और खाना पीना बिलकुल छोड़ देता है, इसे ही धरना देना कहते हैं ।

धरनैत दे० (पु०) धरना देने वाला, हठी, दुराग्रही ।

धरषना तद्० (क्रि०) धर्षण, भर्त्सन, डाँटना, दबाना, क्रोध करना ।

धरहर दे० (स्त्री०) सहाय, अवलम्ब, आश्रय, यथाः—

यहि संसार असार महँ राम नाम भुतिसार ।
रवि सुतपुर धरहर करे नरहरि नाम उदार ॥
—प्रह्लाद चरित्र ।

धरा तद्० (स्त्री०) [धृ+अच्+आ] पृथिवी, भूमि, गर्भाशय, मेद, नाड़ी, महादान विशेष ।—तल (पु०) भूतल, मर्त्यलोक, पृथिवीतल ।—धर (पु०) विष्णु, कूर्म, पर्वत ।—मर (पु०) [धरा+अमर] विप्र, ब्राह्मण, भूदेव ।

धराना दे० (क्रि०) ऋणी होना, अधीन होना, धरना ।

धरित्री तद्० (स्त्री०) पृथ्वी, धरणी, भूमि ।

धरोहर दे० (पु०) न्यास, थाती, गिरों, रखा हुआ द्रव्य, बन्धक, रक्षा के लिये रखा धन ।

धरौना दे० (पु०) पुनर्विवाह ।

धर्तव्य तद्० (गु०) [धृ+तव्य] धारणीय, ग्राह्य, स्थातव्य, ग्रहण करने योग्य ।

धर्ता तद्० (पु०) धारण करने वाला, ऋणी ।

धर्म तद्० (पु०) [धृ+मन्] शुभकर्म, पुण्य, श्रेय, सुकृत, न्याय, आचार, उपमा, यज्ञ, अहिंसा, उपनिषद्, उत्तम आचार, स्वभाव, रीति, जाति व्यवहार ।—कर्म (पु०) शुभ भाग्य बनाने वाली क्रिया, धर्मकार्य ।—काय (पु०) बुद्ध ।—कृत्य (पु०) धर्म कर्म, शास्त्रविहित कर्म ।—कोष (पु०) धर्मसंचय ।—चारिणी (स्त्री०) सहधर्मिणी, जाया, भार्या, वनिता, पत्नी, स्त्री, लता विशेष ।—चिन्ता (स्त्री०) पुण्यभावना, सत्कर्म की चिंता । —जीवन (पु०) धर्ममय जीवन, धर्मानुयायी ब्राह्मण ।—ज्ञ (गु०) धर्मज्ञानयुक्त, धर्मिष्ठ, धार्मिक ।—ज्ञान (पु०) परलोक सम्बन्धी शुभाशुभ ज्ञान, कर्तव्यज्ञान, धर्मबोध ।—तत्त्व (पु०) धर्म की यथार्थता, धर्मरहस्य ।—द्रोही (गु०) धर्मघाती, पापिष्ठ, पापी, वेदनिन्दक, शास्त्रनिन्दक । —धुरन्धर (गु०) धार्मिकनेता, धर्म के कार्यों में आगे रहने वाला, धर्मात्मा, धर्माचार्य । —ध्वजी (गु०) दाम्भिक, पाखण्डी, कपटी, किसी स्वार्थ के कारण धर्म करने वाला, दिखावे का धर्मात्मा ।—निष्ठ (गु०) धर्मिष्ठ, पुण्यवान्, धर्मस्थापक ।—पत्नी (स्त्री०) अपने गोत्र की विवाहिता स्त्री, शास्त्रविधि के अनुसार विवाहिता पत्नी, धर्म की स्त्री, दक्ष की कन्या ।—भ्राता (पु०) समपाठाध्यायी, साथ पढ़ने वाला ।—मूर्ति (पु०) धर्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार ।—याजक (पु०) पुरोहित, पुराण बाचने वाला, यज्ञ कराने वाला ।—राज (पु०) धर्म से राज्य चलाने वाला, न्यायी राजा, यमराज, युधिष्ठिर का दूसरा नाम । —शाला (स्त्री०) उपासना गृह, पूजा करने का घर, दानगृह, दान करने के लिये बनाया हुआ घर, अतिथिशाला, धर्मार्थगृह, विश्राम स्थान । —शास्त्र (पु०) मनु आदि महर्षियों के बनाये शास्त्र व्यवस्था शास्त्र, स्मृतिशास्त्र, मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत, याज्ञवल्क्य, उशना, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, शङ्ख, लिखित, दक्ष, गौतम, शातातप, वशिष्ठ इन महर्षियों के बनाये ग्रन्थ धर्मशास्त्र कहे जाते हैं ।—शील (गु०) धार्मिक, पुण्यशील, पुण्यात्मा ।—संहिता (स्त्री०) स्मृतिशास्त्र, धर्मशास्त्र

धर्म तत्० (पु०) देव विशेष, ब्रह्मा के दक्षिण अङ्ग से इनकी उत्पत्ति हुई है, वाराह पुराण में लिखा है कि सृष्टि उत्पन्न करते समय ब्रह्मा को बड़ी चिन्ता हुई थी, उसी समय उनके दक्षिण अङ्ग से एक मनुष्य उत्पन्न हुआ जिसका नाम धर्म था। यह पुरुष कानों में श्वेत कुण्डल कण्ठ में श्वेतमाला और अङ्गों में चन्दन लगाये हुए था। ब्रह्मा ने कहा—तुम चतुष्पाद वृषभ के समान हो अतएव तुम ही ज्येष्ठ होकर इस सृष्टि का पालन करो। इसी कारण सत्ययुग में धर्म चतुष्पाद, त्रेता में त्रिपाद, द्वापर में द्विपाद, और कलि में केवल एक पाद होकर प्रजा की रक्षा कर रहा है। गुण द्रव्य, क्रिया और जाति ये ही धर्म के चार पाद हैं, वेद में धर्म का त्रिशृङ्ग नाम भी पाया जाता है इसके दो सिर और सात हाथ हैं। एकादशी तिथि में धर्म का वास है इसी कारण एकादशी तिथि को उपवास करने वालों का पातक दूर होता है।

धर्मदास तत्० (पु०) यह एक संस्कृत के कवि थे। इनका बनाया विदग्धमुखमण्डन नामक ग्रन्थ पाया जाता है। लोगों का अनुमान है कि ये बौद्धधर्म के पक्षपाती थे। इनके स्थान और समय के विषय में किसी को भी कुछ ठीक पता नहीं है। तथापि कतिपय विद्वानों का अनुमान है कि ये कवि मगध देश के वासी थे क्योंकि मगध देश में बौद्ध-धर्म का विशेष प्रचार था और इनका समय खृष्टीय ८वीं सदी के पूर्व ही होना चाहिये, क्योंकि इसके बाद का समय शङ्कराचार्य का है जो बौद्धद्वेषी थे। कतिपय विद्वानों की सम्मति है कि धर्मदास भोजराज से बहुत अर्वाचीन हैं क्योंकि इनकी लेखनशैली पुरानी नहीं मालूम होती।

धर्मध्वज तत्० (पु०) मिथिला के जनकवंशी एक राजा का नाम, दण्डनीति, वेद और उपनिषत् में इनका अगाध पाण्डित्य था, एक समय सुलभा नाम की एक संन्यासिनी योगधर्म की चर्चा करती हुई और धर्मध्वज की विद्वत्ता की प्रशंसा करती हुई मिथिला में उपस्थित हुई। धर्मध्वज के मोक्ष शास्त्र सम्बन्धी-ज्ञान की परीक्षा लेने के हेतु उसने अपना रूप छोड़ कर एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण किया और वह भिक्षा माँगने के ब्याज से राजा के निकट उपस्थित हुई। बहुत देर तक राजा उस संन्यासिनी से धर्म-सम्बन्धी बातें करते रहे। अन्त में उस स्त्री का मोक्षशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ।

धर्मव्याध तत्० (पु०) मिथिलावासी एक व्याध का नाम, यह पूर्व जन्म में श्रोत्रिय ब्राह्मण था। एक समय किसी राजा के साथ यह वन में अहेर खेलने गया था, वहाँ उस श्रोत्रिय ब्राह्मण ने मृग-रूपधारी किसी तपस्वी के बाण मारा। उसीके शाप से उसे शूद्र योनि में जन्म लेना पड़ा। धर्म-व्याध अपनी जाति के अनुरूप माँस विक्रय आदि काम करता था, परन्तु उसका धर्मज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा था। बहुत दूर दूर के विद्वान् ब्राह्मण उससे धर्मज्ञान सीखने आते थे।

धर्मात्मा तत्० (पु०) [धर्म + आत्मा] साधु, पुण्य-शील, धार्मिक, धर्मनिष्ठ।

धर्माधिकरण तत्० (पु०) [धर्म + अधिकरण] राजा का विचार स्थान, न्यायालय, विचारागार, धर्मालय।

धर्माधिकारी तत्० (पु०) [धर्म + अधिकारिन्] विचारकर्ता, विचारक, धर्माध्यक्ष, धार्मिक, व्यव-स्थादाता, दक्षिणी ब्राह्मणों की उपाधि विशेष।

धर्माध्यक्ष तत्० (पु०) [धर्म + अध्यक्ष] विचार कर्ता, न्यायमूर्ति, विचारक, न्यायाधिप।

धर्मानुसार तत्० (पु०) [धर्म + अनुसार] धर्म के अनुसार, धर्म की रीति से।

धर्मारण्य तत्० (पु०) [धर्म + अरण्य] पुण्य स्थान विशेष, तपोवन, महर्षियों के आश्रम, पवित्र वन।

धर्मावतार (पु०) [धर्म + अवतार] धर्म का अव-तार, धर्म का स्वरूप, बड़ा धार्मिक।

धर्मासन तत्० (पु०) [धर्म + आसन] विचार का आसन, न्यायकर्ता के बैठने का आसन।

धर्मिष्ठ तत्० (पु०) [धर्म + इष्ठ] साधु पुण्यशील, पुण्यवान्, धर्मात्मा, धार्मिक।

धर्मोपदेशक तत्० (पु०) [धर्म + उपदेशक] गुरु, आचार्य, धर्म के विषय का उपदेश देने वाला।

धर्म्य तत्० (गु०) न्याय्य, धर्मयुक्त, उचित।

धर्ष तत्० (पु०) [धृष् + अल्] प्रगल्भता, प्रागल्भ्य, अमर्ष, साहस, धृष्टता।

धर्षक तत्० (गु०) [धृष + अक] साहसी, अहङ्कारी, गर्वित, धीर।

धर्षण तत्० (पु०) [धृष् + अनट्] साहस करण, पराभव करण, दुष्टता का व्यवहार, रति।

धर्षित तत्० (पु०) [धृष् + णिच् + क्त] परिभूत, पराजय प्राप्त।

धव तत्० (पु०) पति, स्वामी, भर्ता, स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष।

धवल तत्० (पु०) श्वेतवर्ण, शुक्ल, धौला, वृक्ष विशेष। (गु०) सुन्दर, श्वेतगुणयुक्त।

धवलाख्य दे० (पु०) विवाह।

धवलागिरि तद्० (पु०) पर्वत विशेष।

धवा दे० (पु०) जाति विशेष, कहार जाति, जो पानी भरते हैं।

धसकना दे० (क्रि०) धसना, धस जाना, गिरना, पैठना।

धसन दे० (स्त्री०) पोली भूमि, दलदल भूमि, धसने योग्य स्थान।

धसना दे० (क्रि०) घुसना, घुसना, खुभना, गड़ना।

धसान, धसाव दे० (पु०) दलदल, पङ्किल भूमि।

धसाना दे० (क्रि०) घुसाना, पैठाना, गड़वाना, गड़ाना।

धँगर दे० (पु०) एक हिन्दू जाति विशेष, जो प्रायः किसानी और कुलीगीरी करती है।

धँधना दे० (क्रि०) छिन्नभिन्न करना, निकम्मा बना देना, भकोसना, चकरना, अनुचित रीति से खाना।

धँधल दे० (स्त्री०) निष्प्रयोजन झगड़ा, नटखटी, बिना कारण की लड़ाई। (स्त्री०) अन्धाधुन्धी। (गु०) झगड़ालू, लड़ाका, कलहकारी।

धाँयधाँय दे० (स्त्री०) शब्द विशेष, तोप आदि की ध्वनि, धड़ाका।

धाँसना दे० (क्रि०) खाँसना खोंखना।

धाँसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, खाँसी, खोंखी, घास की बीमारी।

धाई तद्० (स्त्री०) धात्री, उपमाता, दूध पिलाने वाली माता, दाई।

धाक दे० (स्त्री०) डर भय, धमकी, प्रभाव, आतङ्क, रोब, ठाठबाठ, धूमधाम, नाम, प्रताप, कीर्ति।

धाकर दे० (पु०) वर्णसङ्कर जाति विशेष।

धाखा दे० (पु०) धूला, पलाश वृक्ष।

धागा दे० (पु०) तागा, सूत, डोरा, सूत्र।

धाता तत्० (पु०) [धा + तृण] ब्रह्मा, विधाता, विष्णु, सूर्य। (गु०) पालक, रक्षक, धारक, भृगु मुनि के पुत्र।

धातु तत्० (पु०) शरीर धारक वस्तु, कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र, महाभूत यथा:—

पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश। तद्गुण—गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द, गेरु, मनशिल आदि, शब्दयोनि, प्रकृति, व्याकरण के धातु, भू, पच्, पठ् आदि। अष्टधातु—सोना, रूपा, काँसा, ताँबा, सीसा, राँगा, लोहा और पारा। —माक्षिक (पु०) सोनामाखी।—वादी (पु०) धातु परीक्षक।—वेदी (पु०) धातु-विद्यावेत्ता, धातुद्रव्य-परीक्षक।—साधित् (गु०) धातु द्वारा प्रस्तुत, जिसके बनाने में धातु का प्रयोग किया गया हो। ओषधि विशेष।

धात्वितर तत्० (गु०) [धातु + इतर] बिना धातु का, धातु रहित।

धात्री तत्० (स्त्री०) [धा+तृण्+ई] धाई, उपमाता, दाई, पृथिवी, आमलकी वृक्ष।—पत्र (पु०) नट, तालीशपत्र, आमलकी पत्र।—पुत्र (पु०) उपमाता का पुत्र, नट, नर्तक।—फल (पु०) अमलकी, आँवला।

धान तद्० (पु०) धान्य, सतुष, तण्डुल, बकला सहित तण्डुल, चाउल, चावल, बिन कूटा चावल।

धाना दे० (क्रि०) दौड़ना, काम करना, टहल करना, परिश्रम करना, पूजा करना, अर्जन करना।

धानाचूर्ण तत्० (पु०) भुंजे जव का चूर्ण, सत्तु, सतुआ।

धानी दे० (स्त्री०) धान विशेष, धान के समान एक प्रकार का धान, रङ्ग विशेष, हरे और पीले रङ्ग के मिलाने से जो रङ्ग होता है।

धानुक तद्० (पु०) धानुष्क, धनुर्द्धर, तीरन्दाज़।

धान्य तत् (पु०) अन्न, बिना कूटा चावल, चार तिल का परिमाण, धनिया।—कोष्ठक (पु०) धान रखने का गृह, गोला।—चमस (पु०) चिपिटक, चिड़वा।—धेनु (पु०) दान करने के लिये अन्न की बनी धेनु।—बीज (पु०) बीज का धान, बोने के लिये धान।—राज (पु०) शस्य विशेष, यव, जौ।—राशि (पु०) धान की राशि।

धाप दे० (पु०) एक फुट का माँप, एक साँस में जितनी दूर तक दौड़ा जा सके, ऊपर चढ़ने की पैड़ियाँ, जिन पर पैर रखा जाता है।

धाभाई दे० (पु०) कोका, दूधभाई, अपनी धाय का लड़का।

धाम तत्० (पु०) धामन्, गृहवसति स्थान, घर, स्थान, गेह, देह, स्थान, आश्रय, अवलम्ब, प्रभा, दीप्ति, राशी, प्रभाव।—निधि (पु०) सूर्य, रवि, दिवाकर।

धामा दे० (पु०) बेतनिर्मित पात्र विशेष, बेंत का टोकरा, चङ्गेरा।

धामिन दे० (पु०) सर्प की एक जाति, इस जाति के सर्प दौड़ने में बड़े तेज़ होते हैं।

धाय दे० (स्त्री०) दूध पिलाने वाली, धात्री, उपमाता, धाई।—मारना दे० (वा०) पुकार के रोना, रुदन, न मिलने के कारण रोना, हाय हाय करके रोना।

धार तत्० (पु०) [धृ+घञ्] देना, ऋण, जलधारा, तीर, तट, किनारा, अस्त्र के आगे का भाग, प्रखरता, तीक्ष्णता।

धारक तत्० (गु०) [धृ+णक्] धारणकर्ता। (दे०) ऋणी, अधमर्ण, धरता।

धारण तत्० (पु०) [धृ+णिच्+अनट्] ग्रहण, अवलम्बन, रक्षण, रखना, परिधान करना, ऋण लेना।

धारणा तत्० (स्त्री०) [धारण+आ] बुद्धि, विषय ग्रहण करने वाली बुद्धि, उचित मार्ग पर स्थिति, मन की स्थिरता, विश्वास, उत्साह, स्मरण, चेत।

धारना दे० (क्रि०) रखना, स्मरण करना, चेत करना।

धारस दे० (स्त्री०) ढाढ़स, धैर्य, धीरता।

धारा तत्० (स्त्री०) रीति, व्यवहार, आचरण, प्रकार, प्रणाली, प्रकरण, प्रवाह जलपात, सोता, स्रोत।—वाहिक (गु०) परम्परागत, क्रमागत, अविच्छिन्न प्रचलित, बिना विच्छेद का, लगातार आया हुआ।—यन्त्र (पु०) जल की कल, फौव्वारा, जल फेंकने का यन्त्र (पु०)।—सार (पु०) [धारा+आसार] भारी वर्षा, मूसलाधार वर्षा।

धारि दे० (स्त्री०) धाड़ा डालने वालों का समूह, डाकुओं की सेना।

धारित तद्० (गु०) धृत, धारण किया हुआ।

धारी दे० (स्त्री०) रेखा, लकीर, एक पौधे का नाम। (गु०) रखने वाला, ऋणी।—दार (गु०) कपड़ा विशेष जिसमें लकीर हो।

धार्तराष्ट्र तत्० (पु०) धृतराष्ट्र राजा के पुत्र दुर्योधन आदि, काला पैर और चोचवाला, हंस, कलहंस, एक प्रकार का सर्प।

धार्मिक तत्० (गु०) पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मनिष्ठ, धर्माचरण करने वाला।—**ता** (स्त्री०) धार्मिकत्व, धर्मशीलता, धर्मभाव।

धार्य तत्० (गु०) धारणीय, धारण करने योग्य, ग्राह्य।

धाव दे० (पु०) दौड़, वृक्ष विशेष।

धावक तत्० (गु०) धावनकर्त्ता, दौड़नेवाला, द्रुतगामी, हरकारा, दूत। (पु०) संस्कृत के एक कवि का नाम। ये कवि बहुत ही प्राचीन और प्रसिद्ध हैं। ये कविराभिल सैामिल के समकालीन हैं। इनके विषय में विलक्षण विलक्षण दन्तकथाएँ प्रचलित हैं। कोई कहता है श्रीहर्ष के नाम से इन्होंने नाटिका बनायी थी, और बहुत धन भी पाया था। परन्तु इस दन्तकथा में प्रमाण कुछ भी नहीं है। हाँ काव्यप्रकाश की "श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिवधनम्" यह पंक्ति प्रमाण में कही जा सकती है। परन्तु यह पाठ ठीक नहीं है क्योंकि इस पाठ को पुष्ट करने वाला प्रमाण कहीं ढूंढने पर भी नहीं मिलता है। अतएव "श्रीहर्षादेर्बाणादीनामिवधनम्" काव्यप्रकाश का, यही ठीक पाठ मानना चाहिये। इस बात को सिद्ध करने के लिये प्रमाण भी बहुत हैं। अभिनन्दन कवि ने कहा है "श्रीहर्षोवितनार गद्यकवये बाणाय वाणी फलम्" इति, इसी प्रकार और भी प्रमाण उद्धृत किये जा सकते हैं। अतएव इनको श्रीहर्ष से सम्बन्धयुक्त न करके कालिदास से प्राचीन और भास, या राभिल सैामिल के समकालीन मानना ही युक्तियुक्त प्रतीत होता है।

धावन तत्० (पु०) [धाव+अनट्] वेग पूर्वक गमन, दौड़ना, गति, फिराव। (दे०) दूत, सन्देशिया, हरकारा।

धावना दे० (क्रि०) दौड़ना, इधर उधर घूमना, रगेदना, अर्चना।

धावनी दे० (स्त्री०) दूती, परिचारिका।

धावमान तत्० (गु०) दौड़ता हुआ, भागता, द्रुतगामी, शीघ्रयायी।

धावा दे० (पु०) दौड़, चढ़ाई, आक्रमण, छापा। —**मारना** (वा०) चढ़ाई करना, आक्रमण करना, छापा मारना।

धाह दे० (स्त्री०) चीख, दुःख का शब्द, कूक, हाय की ध्वनि।

धिक् तत्० (अ०) निन्दार्थ सूचक अव्यय।

धिक्कार तत्० (पु०) फटकार, तिरस्कार।

धिक्कारना दे० (क्रि०) निन्दा करना, फटकारना, तिरस्कार करना।

धिक्कारी दे० (गु०) शापित, निन्दित, गर्हित, अपमानित।

धिंगाना दे० (पु०) हाँक, पुकार, उपद्रव।

धिया दे० (स्त्री०) बेटी, पुत्री, कन्या, तनया।

धिरयो दे० (क्रि०) धमकाया, डाँटा, फटकारा।

धिराना दे० (क्रि०) धमकाना, ताड़ना देना, हानि पहुँचाने की धमकी देना।

धिषण तत्० (पु०) बृहस्पति, देवगुरु, देवाचार्य।

धिषणा तत्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मति।

धी तत्० (स्त्री०) मति, बुद्धि, ज्ञान।

धींग, धींगड़ा दे० (पु०) उपपति, जार, लगुआ।

धींगाधींगी दे० (स्त्री०) उच्छृङ्खल व्यवहार, अनुचित रीति, असभ्य कार्य।

धीति तत्० (स्त्री०) पिपासा, तृष्णा, प्रतीति, विश्वास, यथा:—

मोहि द्वार बैठाय सखि, तू कित जात हित जाय।
—धीति लाल तेरो कहाँ, दधि चुराय ब्रज खाय।
—कवि वाक्य

धीम दे० (पु०) सुस्त, शिथिल, आलसी, धीर।

धीमत् तत्० (गु०) बुद्धिमान्, बुद्धियुक्त।

धीमर दे० (पु०) एक जाति विशेष, कहार जाति।

धीमा दे० (गु०) सुस्त, शिथिल, आलसी, कोमल धीर।

धीमाई दे० (स्त्री०) धीरता, धैर्य, शिथिलता।

धीमान् तत्० (पु०) बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल।

धीमे धीमे दे० (अ०) शनैः शनैः, धीरे धीरे।

धीय दे० (स्त्री०) बुद्धि, मति, कन्या, पुत्री, तनया।

धीर तत्० (पु०) धैर्यान्वित, पण्डित, बलवान्, अचञ्चल, सुस्थिर, शान्त, स्थिरमता, विनीत, शिष्ट। —ता (स्त्री०) धीरस्वभाव, शिष्टता, प्राज्ञता, धैर्य। —त्व (पु०) शान्त स्वभाव। —प्रशान्त (पु०) नाटकोक्ति में सर्वगुण युक्त मनुष्य। —ललित (पु०) अति साहसी मनुष्य, इस शब्द का प्रयोग प्रायः नाटक में ही किया जाता है। —स्कन्ध (पु०) महिष, वीर, वृषभ।

धीरज तत्० (पु०) धैर्य, धीरता, स्थिरता, बहुत विघ्नों से भी नहीं घबड़ाना।

धीरा तत्० (स्त्री०) शिष्टा, विनीता, नायिका विशेष, मानिनी प्रगल्भा मध्या नायिका, मध्या और प्रौढ़ा नायिकाओं का धीरा एक भेद है यथा—
"वचननि की रचनानि सों, पियहि जनावत कोप,
मध्या धीरा कहत हैं, ताहि सुमति रस चोप"
—रसराज।

धीराधरा तत्० (स्त्री०) [धीरा+अधीरा] मानिनी मध्या प्रगल्भा नायिका यथा—
"रति उदास ह्वै नाहकों, डर दिखरावे वाम,
प्रौढ़ अधीरा धीरतिय, बरनत कवि मतिराम"
—रसराज।

धीरिया दे० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, बेटी।

धीरी दे० (स्त्री०) कनीनिका, तारा, आँखों में की पुतली।

धीरे दे० (अ०) शनैः, मन्द, धीरता से, स्थिरता से।

धीरेधीरे दे० (अ०) कोमलता से, मन्दमन्द, शनैः शनैः।

धीरोदात्त तत्० (पु०) [धीर+उदात्त] नायकविशेष, अति साहस तथा दया से युक्त जिसके व्यवहार हों।

धीरोद्धत तत्० (पु०) [धीर+उद्धत] नायकभेद, नाटक का नायक, जो साहसी हो वीर हो, अपनी प्रशंसा आप करने वाला हो।

धीवर तत्० (पु०) मत्स्यजीवी जाति विशेष, कैवर्त, जालजीवी, मच्छीमार।

धीशक्ति तत्० (स्त्री०) बुद्धिसामर्थ्य, ज्ञानशक्ति, बुद्धि की तीक्ष्णता।

धीसचिव तत्० (पु०) मन्त्री, अमात्य, बुद्धिजीवी, राजकीय कार्यों में सम्मति देने वाला मन्त्री।

धुआँ तद्० (पु०) धूम, अग्निपताका, अग्निचिन्ह, वाष्पविशेष, चिताधूम। यथा—
"धुआँ देखि खर दूषण केरा
जाइ सुपनखा रावण प्रेरा"

धुंगार दे० (पु०) छौंक, बघार, छौंकन।

धुंगारना दे० (क्रि०) बघारना, छौंकना।

धुंध दे० (पु०) उदर की उष्णता, गरमी, धौंधलाई, अंधेरा, अप्रकाश।

धुंधकार दे० (पु०) अंधेरा, अन्धकार, तम, अप्रकाश।

धुंधला दे० (गु०) अंधला, समल, अस्वच्छ, अप्रकाश।

धुंधलाई दे० (स्त्री०) अन्धेरा, धुन्धलाई।

धुंधु तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह प्रसिद्ध मधु राक्षस का पुत्र था यह राक्षस उतङ्क मुनि के आश्रम के पास रेतीली समभूमि में रहा करता था। जलसंहार करने के लिये इस राक्षस ने बहुत दिनों तक मरुक्षेत्र में चित सोकर तपस्या की। धीरे धीरे यह एक वर्ष तक श्वास बन्द कर लेता एक वर्ष के बाद जब एक दिन वह श्वास लेता था तब वन पर्वत सब काँप जाते थे। यह देखकर देवता भी भयभीत हो जाते थे। वृहदश्व के पुत्र कुवलयाश्व ने इसे मारा था।

धुंधेला दे० (गु०) छली, कपटी, हठी, दुराग्रही।

धुकड़पुकड़ दे० (पु०) धड़क, हृत्कम्प, कँपकपी, थरथरी, थरथराहट, घबड़ाहट, दुलाव, हिलाव।

धुकड़ी दे० (स्त्री०) थैली, तोड़ा, रुपये रखने की थैली।

धुकधुकी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गहना जो गले में पहना जाता है। व्याकुलता, सोच, घबड़ाहट।

धुत्ता दे० (पु०) धूर्तता, छल, कपट, धोखा। —देना (वा०) धोखा देना, छलना, कपट करना।

धुन दे० (स्त्री०) लौ, अभिलाष, मनोरथ, अभ्यास, चसका।

धुनकना दे० (क्रि०) तुनना, धुनना रुई धुनना।

धुनकी दे० (स्त्री०) छोटा धनु, धनुष, धनुही।

धुनिया दे० (पु०) जाति विशेष, बेहना, तुमने वाला।

धुनिहाव दे० (पु०) हड़फूटन, हड्डी की पीड़ा, शरीर की पीड़ा।

धुनेहा दे० (प०) तुमने वाला, धुनियाँ।

धुन्ना दे० (क्रि०) धुनना, शिर हिलाना, सिर धुनना।

धुन्धुमार तत्० (पु०) कुवलयाश्वराजा, बृहदश्व का पुत्र, शक्रगोप, गृहधूम, गोलमाल, कुहराम, कोलाहल।

धुघला दे० (पु०) लहँगा घाँघरा, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा।

धुमला दे० (पु०) अप्रकाश, अँधेरा, बहुत स्वच्छ नहीं।

धुमलाई दे० (स्त्री०) अँधियारा, अस्वच्छता।

धुर तत्० (पु०) भार बोझा, जुआ, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं। आदि, आरम्भ, अन्त, किनारा, छोर।—से धुरतक (वा०) इस सिरे से उस सिरे तक, आदि से अन्त तक।

धुरपद दे० (पु०) एक प्रकार के गीत का नाम।

धुरसाँझ दे० (स्त्री०) सन्ध्या समय, गोधूली का समय।

धुरन्धर तत्० (पु०) [धुर+धृ+ख] धुरीण, भारवाहक, गाड़ी हल आदि खींचनेवाला। (गु०) बड़े कामों का प्रबन्ध करने वाला, प्रधान, नेता, मुखिया, अगुआ।

धुरवा दे० (पु०) मेघ, बादल, यथा—
"धु धुआरे धुरवा चहुँ पासा
समुझि परै नहिं पवनि अकासा।"

धुरव्य दे० (पु०) मेघ, बादल।

धुरा तत्० (स्त्री०) भार, बोझा, चिन्ता, रथ की धुरी।

धुरियाना दे० (क्रि०) मटियाना, माटी लगाना, धूल लगाना, धूल उड़ाना।

धुरी दे० (स्त्री०) लकड़ी या लोहे का डण्डा जिस पर गाड़ी के पहिये लगाये जाते हैं।

धुरीण तत्० (गु०) [धुर+ईन] भार वहन करने वाला, प्रधान, श्रेष्ठ, धुरन्धर, साहसी, मुखिया, अगुआ।

धुर्य तत्० (गु०) धुरन्धर, धुरीण, बोझ उठाने वाला, भारवाही। (पु०) ऋषभ नामक औषधि वृक्ष, बैल, प्रधान, श्रेष्ठ, मुखिया, अगुआ।

धुलना दे० (क्रि०) साफ़ होना, निर्मल होना, स्वच्छ होना, धोया जाना, पवित्र होना।

धुलवाना दे० (क्रि०) साफ़ करना, स्वच्छ करना, धुलाना।

धुलाई दे० (स्त्री०) कपड़े धोने का काम, वस्त्र धोना, वस्त्र साफ़ करना, कपड़े साफ़ करने की मजूरी।

धुलाना दे० (क्रि०) निर्मल कराना, साफ़ कराना, कपड़े साफ़ कराना।

धुलेंडी दे० (स्त्री०) त्योहार विशेष, होली का दूसरा दिन, जिस दिन लोग धूल उड़ाते हैं।

धुस्सा दे० (पु०) लोई, ऊर्णा वस्त्र विशेष, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा जो जाड़े के दिनों में ओढ़ने के काम में आता है।

धूआँ दे० (पु०) धूम, धुआँ।

धूआँधार दे० (पु०) बहुत धुआँ। (गु०) धूआँदार, भगाया, हराया, सजाया हुआ, बनाया हुआ, सवारा हुआ।

धुँवारा दे० (पु०) धूआँ निकलने का मार्ग, मोखा, जिससे धूआँ निकाला जाता है।

धुधरा दे० (पु०) अन्धेरा, अन्धकार।

धूत तत्० (गु०) [धू+क्त] कम्पित, कपाया हुआ, (दे०) धूर्त, छली, छलिया, कपटी।

धूति दे० (स्त्री०) धूर्तता, ठगई, छल, कपट, यथा—
"तुलसी रघुवर सेवकहि सकै न कलियुग धूति"।

धूना दे० (पु०) राल एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, यह एक वृक्ष का गोंद होता है।

धूनी दे० (स्त्री०) धूआँ, आग, अग्निकुण्ड, जिसमें साधु लोग आग रखते हैं और अपने भक्तों के उसी धूनी से भस्म निकाल कर दिया करते हैं। भूतबाधा दूर करने के लिये कतिपय ओषधियों का धूम।—देना (वा०) जला देना, समाधि देना, मृत साधु का अन्तिम संस्कार करना।—रमाना (वा०) साधु होना, घर छोड़ के निकल जाना, योगी का वेष धरना।—लगाना (वा०) स्थिर होना, डट जाना, हठ करना।—लेना (वा०) आग तापना, पञ्चाग्नि लेना।

धूप दे० (स्त्री०) रौद्र. घाम, तपिश, किरण, रश्मि, धर्म। (पु०) सुगन्ध काष्ठ विशेष, जो देवपूजा में जलाया जाता है। गुग्गुल।—काल (पु०) गर्मी का समय, ग्रीष्मकाल, सराना, भगवान् के सामने नैवेद्य अर्पण करना।

धूपना दे० (क्रि०) धूप देना, धूप जलाना।

धूपित दे० (गु०) धूप दिया हुआ, धूप से वासा गया, धूप से सुगन्धित किया हुआ।

धूम तत्० (पु०) भीगी लकड़ी के संयोग से अग्नि से निकले परमाणु, धुँआ, अग्निचिन्ह।—केतन (पु०) अग्नि, अनल, केतुग्रह।—केतु (पु०) अग्नि, उत्पात का चिन्ह विशेष, उत्पात का प्राकृतिक चिन्ह, शिखायुक्त धूम के आकार का तारा, ग्रह-भेद।—ध्वज (पु०) अग्नि, अनल, वन्हि।—पान (पु०) तमाखू का धूम पीना, बीड़ी आदि का पीना।—प्रभा (स्त्री०) धूमान्धकार नामक एक नरक विशेष।—यन्त्र (पु०) इञ्जिन, जो वाष्प के सहारे चलता हो।—वाहिनी (स्त्री०) रेलगाड़ी। (दे०) रेला, हलचल, कोलाहल।—धाम (स्त्री०) उत्सव की भीड़।

धूमावती तत्० (स्त्री०) दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक महाविद्या। तन्त्रशास्त्रों में इनकी उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है। एक समय पार्वती ने भूख से व्याकुल होकर, महादेव से खाने की वस्तु माँगी, परन्तु महादेव नहीं दे सके। इसी कारण पार्वती ने महादेव ही को खा डाला। परन्तु इससे पार्वती के शरीर से धूम निकलने लगा। तभी से पार्वती का नाम धूमावती प्रसिद्ध हुआ। पुनः महादेव ने अपना शरीर कल्पित करके कहा "देवि! जब तुमने मुझको खालिया है तब तुम विधवा होगई अत-एव अब से तुमको विधवा वेश से रहना चाहिये इसी वेश में लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और अब से तुम्हारा नाम धूमावती हुआ। पुरश्चरणसिद्धि के लिये कृष्णचतुर्दशी को धूमावती का जप किया जाता है।

धूमरा, धूमल, धूमला दे० (गु०) मटमैला. धूएँ का सा रङ्ग, धुमैल।

धूमा दे० (गु०) धूमैला, धूमला, मटमैला, धुएँ का सा रङ्ग।

धूमी दे० (गु०) उत्पाती, उपद्रवी।

धूम्र तत्० (पु०) कृष्ण रक्त मिश्रित वर्ण, कृष्ण लोहित वर्ण, बैंगनी।—पान (पु०) धूआँ पीना।—पानयन्त्र (पु०) हुक्का।

धूम्रलोचनतत्० (पु०) एक राक्षस का नाम, दानवेन्द्र शुम्भ का सेनापति, शुम्भ ने इसीको ६० हज़ार सेना के साथ, भुवनमोहिनी महामाया को पकड़ने के लिये भेजा था। महामाया के हुङ्कार से ६० हज़ार सेना के साथ धूम्रलोचन भस्म होगया।

धूम्राक्ष तत्० (पु०) एक राक्षस का नाम।

धूर दे० (स्त्री०) धूल, रज, रेत।

धूरा दे० (पु०) चूर्ण, सफूफ।

धूरि दे० (स्त्री०) धूलि।

धूरी दे० (स्त्री०) धुरी, धूलि।

धूर्जटि तत्० (पु०) महेश्वर, महादेव, शिव।

धूर्त तत्० (पु०) वञ्चक, प्रतारक, शठ, ठग।—ता (स्त्री०) शठता, चलता, प्रवञ्चना।

धूल, धूलि दे० (स्त्री०) रज, रेणु, धूरि।

धूसना दे० (क्रि०) निन्दित करना, अपमान करना, कोसना।

धूसर तत्० (पु०) ईषत् पाण्डुवर्ण, हलका पीला रङ्ग, मटिया रङ्ग।

धूहा दे० (पु०) धोखा, एक प्रकार के खेत का मध्य-स्थान, चञ्चापुरुष जो खेत में गाड़ते हैं।

धृत तत्० (पु०) [धृ+क्त] धारण विशिष्ट, धारण किया हुआ। अवगाधो, पकड़ा हुआ, गृहीत, धारित।—कामुकेष (पु०) धनुर्बाणधारी, योद्धा, वीर।—धृतपट (पु०) गृहीत वस्त्र, वस्त्रावृत, कपड़ा पहना हुआ।—त्मन् (पु०) [धृत+आत्मन] जितेन्द्रिय, वशी, सुस्थिर।

धृतराष्ट्र तत्० (पु०) शान्तनुनन्दन विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, इनकी माता काशिराज की पुत्री अम्बिका थी, काशिराज को दूसरी कन्या अम्बालिका भी विचित्रवीर्य ही से व्याही गई थी, अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु उत्पन्न हुए थे। धृतराष्ट्र का विवाह गान्धारराज सुवल की कन्या गान्धारी से हुआ था। गान्धारी के गर्भ से धृतराष्ट्र के एक सौ पुत्र हुए थे और एक कन्या। दुर्योधन आदि इन्हींके पुत्र थे। कन्या का नाम दुःशला था। यह सिन्धुराज जयद्रथ को व्याही गई थी। महाभारत के युद्ध में इनके सभी पुत्र मारे गये। गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र वन में चले गये। ६ महीने वहाँ रहने पाये थे कि इतने में उस वन में आग लगी, अन्धराज धृतराष्ट्र दौड़ नहीं सकते थे, अतएव वहीं जल गये।

(२) नागविशेष, यह कद्रु का पुत्र था, इसके साथ पाण्डवों का विरोध था। अश्वमेध का घोड़ा लेकर अर्जुन मणिपुर गये। वहाँ अर्जुन पुत्र बभ्रुवाहन ने घोड़ा पकड़ लिया। पिता पुत्र में लड़ाई हुई, अर्जुन मारे गये। बभ्रुवाहन की माता चित्राङ्गदा और अर्जुन को पत्नी उलूपी वहाँ आकर विलाप करने लगी। उलूपी की सम्मति और माता की आज्ञा से बभ्रुवाहन सञ्जीवन मणि लेने के लिये पाताल गये। वहाँ धृतराष्ट्र नामक नाग के कहने से वासुकी ने मणि देना अस्वीकार किया अतएव बभ्रुवाहन और वासुकी में लड़ाई हुई। लड़ाई में वासुकी हार गया और उसने सञ्जीवन मणि बभ्रुवाहन को दे दिया। यह देखकर धृतराष्ट्र ने अपने दो पुत्रों को अर्जुन के पास भेजा। अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उन्होंने अर्जुन का सिर काट कर एक वन में फेंक दिया। इधर अर्जुन का शरीर मस्तक शून्य देखकर वहाँ हाहाकार मच गया। अन्त में श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के दोनों पुत्रों को मारकर अर्जुन का मस्तक ले आये। वह मस्तक अर्जुन के शरीर से जोड़ दिया गया और सञ्जीवनमणि के स्पर्श से अर्जुन पुनः जी उठे।

धृति तत्० (स्त्री०) [धृ+क्ति] धैर्य, मन की स्थिरता, धारणा, सुख, योग विशेष।

धृतिमान् तत्० (पु०) स्थिरचित्त, स्थिरात्मा, धैर्यावलम्बी, धीर, गम्भीर।

धृष्ट तत्० (पु०) [धृष+क्त] प्रगल्भ, साहसी, उत्साही, निर्लज्ज चतुर्विध नायक के अन्तर्गत एक नायक विशेष। यथाः—

"करै दोष निरसंक जो डरे न तिय के मान।
लाज धरै मन में नहीं नायक धृष्ट निदान॥"

रसराज।

—ता (स्त्री०) ढिठाई, प्रगल्भता, निर्लज्जता, धूर्तता, चपलाहट, साहस।

धृष्णु तत्० (पु०) [धृष+नु] धृष्ट, प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्टद्युम्न तत्० (पु०) पाञ्चालराज द्रुपद का पुत्र और पृषत का पौत्र, महाभारत युद्ध में इसने पुत्र शोकातुर द्रोणाचार्य का सिर काटा था और युद्ध के अन्तिम दिन रात को द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने छिप कर पाण्डवों के शिविर में घुस कर अपने पितृघाती धृष्टद्युम्न को मार डाला था।

धेंगामुष्टि दे० (स्त्री०) मुक्कामुक्की, घुस्साघुस्सी।

धेनु तत्० (स्त्री०) सवत्सा गौ, नवप्रसूता गौ, दुधार गाय।

धेनुक तत्० (पु०) दैत्यविशेष, असुर विशेष, यह गर्दभ के आकार का था। नरमांस लोलुप इस राक्षस को बलराम ने मारा था। एक समय श्रीकृष्ण और बलराम गौ चराते चराते ताल

वन में चले गये और वहाँ ताल तोड़ने लगे। उसी वन में धेनुक रहा करता था। ताल गिरने का शब्द सुनकर धेनुक इनकी ओर दौड़ा। बलराम ने उसके दोनों पैर पकड़ कर ताल के पेड़ पर उसे पटक दिया इसीसे उसकी मृत्यु हुई।

धेनुमती तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, गोमती।

धेला दे० (पु०) अधेला, आधा पैसा, एक प्रकार का सिक्का, जिसका दाम आधा पैसा होता है।

धेली दे० (स्त्री०) अधेली, आधा रुपया।

धैर्य तत्० (पु०) धीरता, स्थिरता, अचाञ्चल्य, क्षमा, सहिष्णुता।—**कलित** (पु०) धैर्यशाली, धीर।—**च्युत** (पु०) अस्थिर, चञ्चल, अधीर, असहिष्णु।—**शाली** (पु०) स्थिरता विशिष्ट, धीर, शान्त।

धैवत तत्० (पु०) गाने का एक स्वर विशेष।

धोआ दे० (पु०) फल की भेंट, उपहार, उपायन।

धोई दे० (स्त्री०) बिना छिलके की मूँग या उड़द की दाल।

धोंधा दे० (पु०) टीला, मट्टी का ढेर, मट्टी का गोला।

धोंवाला दे० (पु०) धूमार, धुआँ निकलने की राह।

धोक दे० (पु०) देवता या गुरु को प्रणाम करना, दण्डवत करना।

धोकड़ दे० (पु०) बलशाली, महाबली, पराक्रमी।

धोखा दे० (पु०) छल, कपट, भ्रम, भुलावा, छलना, प्रतारणा, प्रवञ्चना।—**खाना** (वा०) छला जाना, वञ्चित होना, ठगा जाना।—**देना** (वा०) ठगना, छलना, बहकाना, भुलावा देना।

धोता दे० (पु०) धूर्त, छली, कपटी।

धोती दे० (स्त्री०) पहनने का वस्त्र, धौतवस्त्र, कमर में पहिनने का वस्त्र।

धोना दे० (क्रि०) पखारना, प्रक्षालन करना, साफ करना।

धोप दे० (स्त्री०) एक प्रकार की तलवार।

धोब दे० (पु०) कपड़े साफ करने का काम, धोने का काम।

धोबिन दे० (स्त्री०) धोबी की स्त्री, रजकी।

धोबी दे० (पु०) रजक, कपड़े धोनेवाली जाति।

धोयी तत्० (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि, "पवनदूत" नामक एक ग्रन्थ, इन्होंने संस्कृत भाषा में बनाया है जो मेघदूत के समान है। ये कवि वङ्गदेश के निवासी थे। बङ्गाल के राजा लक्ष्मणसेन के ये सभासद थे। ये कवि जयदेव कवि के समकालीन थे। जयदेव का समय खृष्टीय १२वीं सदी का पूर्वभाग निर्णीत हो चुका है। उसीके अनुसार धोयी कवि का भी समय मानना चाहिये। जयदेव ने इन्हें "कविक्ष्मापति" कहा है।

धोरिणी तत्० (स्त्री०) परम्परागत बात, क्रमागत रीति।

धौ दे० (पु०) वृक्ष विशेष, धाववृक्ष।

धौं दे० (पु०) धैान, आध मन, बीस सेर, एक मन का आधा।

धौंक दे० (स्त्री०) रोग विशेष, कासश्वास।

धौंकना दे० (क्रि०) फूँकना, भाथी चलाना, हौंकना।

धौंकनी दे० (स्त्री०) भस्त्रा, भाथी, चमड़े का एक यन्त्र जिससे हवा निकालते हैं।

धौंका दे० (स्त्री०) धौंकनी, भस्त्रा।

धौंज दे० (स्त्री०) विवेचना, विचार, परिशीलन।

धौंस दे० (पु०) धमकी, भुलावा, चढ़ाई, आक्रमण, भभकी, दौड़।

धौंसा दे० (पु०) नगारा, दुन्दुभि, बड़ा नगारा।

धौंसिया दे० (पु०) प्रधान, अगुआ, नेता, दल का प्रधान, दौड़ के दल का प्रधान।

धौत तत्० (पु०) प्रक्षालित, धोया हुआ, श्वेत, परिष्कृत।

धौमक तत्० (पु०) देश विशेष।

धौम्य तत्० (पु०) पाण्डवों के पुरोहित का नाम, इनके ज्येष्ठ भ्राता का नाम देवल था। चित्ररथ की सम्मति से पाण्डवों ने धौम्य को अपना पुरोहित बनाया था। नारद ने प्रसन्नता पूर्वक इनको सूर्य-देव का एक स्तोत्र दिया था। उसी स्तोत्र की

शिक्षा धौम्य ने युधिष्ठिर को दी थी। और उसी स्तोत्र के प्रभाव से युधिष्ठिर को अक्षय स्थाली मिली थी।

धौर दे० (पु०) कपोत विशेष कबूतर की एक जाति, जङ्गली कबूतर।

धौरा दे० (गु०) धवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र।

धौल दे० (स्त्री०) थप्पड़, चपत, धप्पा, थाप। —जड़ना (वा०) पीटना, मुक्का मारना। —मारना (वा०)।—लगाना (वा०) थप्पड़ मारना, धौल जड़ना।—लगना (वा०) हानि उठाना, घटी सहना, हतश होना, मनोरथ भङ्ग होना, निराश होना।—धप्पा (वा०) मारपीट, मार कूट, चोट चपेट।

धौला दे० (गु०) धौरा, धवल, श्वेत, शुक्ल, शुभ्र। —गिरि (पु०) धवला गिरि, हिमालय पर्वत।

धौलाना दे० (क्रि०) धौलियाना, थप्पड़ मारना, चपत जमाना।

ध्यात तत्० (गु०) [ध्यै+क्त] विचारित, चिन्तित, सोचा हुआ।

ध्यातव्य तत्० (गु०) [ध्यै+तव्य] ध्यान के योग्य, ध्यान देने योग्य, अत्यन्त उपयोगी, अतिशय प्रिय।

ध्याता तत्० (पु०) [ध्यै+तृण] ध्यानकर्ता, विचारक।

ध्यान तत्० (पु०) [ध्यै+अनट्] सोच, विचार, चिन्ता, उत्कण्ठा पूर्वक स्मरण, अनुध्यान, ज्ञात वस्तु का पुनः स्मरण, लौ लगाना।

ध्यानसिंह-दे० (पु०) पञ्जाब केसरी रणजीत सिंह का प्रधान मन्त्री, इन पर रणजीत सिंह बड़ा भरोसा रखते थे। ध्यानसिंह के बड़े भाई का नाम गुलाब सिंह था और इनके छोटे भाई का नाम सुचित सिंह था। इन तीनों भाइयों पर महाराज बड़ी प्रीति रखते थे। इनको राजा की उपाधि मिली थी। इसके बाद राजा की आज्ञा से राजकीय पत्रों में "राजा कलान बहादुर" लिखे जाते थे। महाराज रणजीत सिंह ने अपने अन्तिम समय में अपने पुत्र खड्गसिंह को राज्य का उत्तराधिकारी और उनका अभिभावक ध्यानसिंह को नियत किया। परन्तु खड्गसिंह के उत्तराधिकारी होने के योग्य नहीं था। दुष्टों के परामर्श से वह ध्यानसिंह पर अविश्वास करने लगा, अन्त में ध्यानसिंह और उनके पुत्र का महल में आना भी उसने रोक दिया। इस समाचार का फुफल ध्यानसिंह को बहुत ही शीघ्र मिला। खड्गसिंह बन्दी होकर जेल भेज दिये गये। उनके पुत्र नवनिहालसिंह को पञ्जाब की गद्दी मिली। खड्गसिंह की मृत्यु जेलखाने में हुई, उसी दिन नवनिहालसिंह भी तोरण द्वार के गिरजाने से दबकर मर गये। इनके बाद खड्गसिंह की स्त्री ने राज्य का कारभार ग्रहण किया, राजसिंहासन पर बैठ कर रानी चाँदकुमारी ने ध्यानसिंह से बदला चुकाने का प्रण किया। ध्यानसिंह भी उसे पदच्युत करने की चेष्टा करने लगे। अन्त में वह अपनी चेष्टा में सफल हुए, रानी चाँदकुमारी गद्दी से उतार दी गयी और रणजीतसिंह की उपपत्नी के गर्भ से उत्पन्न शेरसिंह राजगद्दी पर बैठाये गये। शेरसिंह ने रानी चाँदकुमारी से ब्याह करना चाहा, परन्तु उसने इसे अस्वीकार किया। तदनन्तर इनमें लड़ाई हुई परन्तु अन्त में सन्धि हुई (और ९ नौ लाख रुपये वार्षिक रानी को देना निश्चित हुआ। ध्यानसिंह और शेरसिंह दोनों ने मिल कर रानी को मरवा डाला। सिन्धवाला सरदार पञ्जाब में बड़े प्रतिष्ठित थे वे राजकुल के थे। उन्होंने इन सब बातों को देख ध्यानसिंह और शेरसिंह का काम तमाम कर देना ही उचित समझा। इसी विचार से प्रेरित होकर वे एक दिन कुछ सेना लेकर चढ़ आये। दोनों दल में लड़ाई हुई, अन्त में शेरसिंह और ध्यानसिंह दोनों मारे गये। इसी लड़ाई में शेरसिंह का १२ वर्ष का लड़का भी मारा गया।

ध्याना दे० (क्रि०) ध्यान करना, ध्यान लगाना।

ध्यानी तद्० (गु०) ध्यानकर्ता, ध्यान करने वाला ध्यान लगाने वाला, जपी, योगी।

ध्यानीय तद्० (गु०) ध्यान योग्य, ध्यान करने के योग्य स्मरणीय।

ध्यापक तत्० (पु०) चिन्तक, विचारक, ध्यानकर्ता ध्याता।

ध्यावना दे० (क्रि०) ध्यान करना, ध्यान लगाना, भजन करना।

ध्येय तत्० (पु०) ध्यानार्ह, ध्यानयोग्य, स्मरणीय; (पु०) विष्णु, नारायण।

ध्रुव तत्० (पु०) निश्चित, स्थिर, दृढ़, अचल, अटल, नित्य, (पु०) विष्णु, एकतारा जो दक्षिण उत्तर केन्द्र में प्रायः स्थिर है, ध्रुव का तारा, उत्तरकेन्द्र, भगवान का भक्त यह राजा उत्तानपाद का पुत्र था। एक समय अपनी विमाता से अपमानित होकर बालक ध्रुव, रोता हुआ अपनी माता सुनीति के पास गया। माता ने रोने का कारण पूछा, ध्रुव ने कहा—"मैं पिता की गोद में बैठा था सुरुचि ने मुझे झिड़क कर उतार दिया और कहा राज्यासन पर बैठने के लिये तुझे मेरे गर्भ से उत्पन्न होना चाहिये था। ध्रुव की माता इससे दुःखित तो हुई, परन्तु हृदय का भाव छिपा कर उसने कहा यदि तुम सचमुच राज्यासन पर बैठना चाहते हो तो तपस्या करके भगवान् को प्रसन्न करो, वह तुझे राज्यासन पर बैठा देंगे। बालक ध्रुव तपस्या करने के लिये घर से निकल पड़ा। मार्ग में नारद जी ने उसे उपदेश दिया। ध्रुव की तपस्या से भगवान् ने प्रसन्न होकर उसे वर दिया। वर पाकर ध्रुव घर लौट आये, पिता ने उनको राज्य दे दिया, राज्य पाकर ध्रुव ने शिशुमार पुत्री भ्रमि से विवाह किया। ध्रुव का सौतेला भाई एक यक्ष के द्वारा मारा गया। ध्रुव यक्षों से लड़ने लगे, परन्तु पितामह मनु के अनुरोध से उन्होंने युद्ध बन्द कर दिया। ध्रुव ने बहुत दिनों तक राज्य किया अन्त में उन्हें ध्रुवलोक प्राप्त हुआ।

ध्रुवा दे० (पु०) एक पौधे का नाम, ध्रुव का।

ध्वंस तत्० (पु०) नाश, क्षय, हानि, क्षति।

ध्वजा तत्० (स्त्री०) पताका, झण्डी, केतु।

ध्वनि तत्० (पु०) शब्द, नाद, निनाद, स्वर।

ध्वान्त तत्० (पु०) अन्धकार, तम, अँधेरा, अँधियारा।

न

न व्यञ्जन वर्ण का यह बीसवाँ अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान दन्त होने से दन्त्यवर्ण कहते हैं।

न तत्० (अ०) निषेधार्थक अव्यय, नहीं, अभाव, मत, जनि, जिन, ब्रज भाषा में यह बहुवचन का चिन्ह समझा जाता है यथा—"बेगि करहु किन आँखिन ओटा"— रामायण। "इन अँखियाँ दुखियान को सुख सिरजोई नाँय" आदि।

नङ्गा दे० (पु०) नग्न, नङ्गा, विवस्त्र, वस्त्र रहित, वस्त्रहीन, उघड़।

नङ्गधड़ङ्ग दे० (पु०) दिगम्बर, बिलकुल नङ्गा।

नंगा दे० (पु०) उघारा, बिन कपड़े का, नंगटा। —नंगा-मुनंगा (वा०) बिलकुल नङ्गा, नङ्गधड़ङ्ग, वस्त्रहीन।

नंगे सिर दे० (वा०) खुले सिर, उघारे सिर।

नक दे० (स्त्री०) नाक, नासिका, नासा।—चढ़ा (पु०) क्रोधी, चिड़चिड़ा, उग्र, तीक्ष्ण।—घिसनी (वा०) चिरौरी करना, विनती करना, दण्डवत करना।—टा (पु०) नकटा, निर्लज्ज, ठग, जिसकी नाक कट गयी हो।—ड़ा (पु०) नाक का रोग विशेष।—तोड़ा (पु०) हँसोड़, परिहासशील, रसिक।—सीर (स्त्री०) नाक की सीरा।—सीर फूटना या बहना नाक से रुधिर निकलना, एक प्रकार का रोग।

नकार तत्० (पु०) [न+कृ+घञ्] नहीं, नहीं मानना, अस्वीकार, प्रतिषेध, निषेध करना। "न" अक्षर।

नकारना दे० (क्रि०) नहीं मानना, अस्वीकार करना, टोड़ना, फुड़ाना, मुकरना, स्वीकार करके पुनः नहीं स्वीकार करना।

नकुल तत्० (पु०) न्योला, नेवला, चौथा पाण्डव, पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र, पाण्डु की स्त्री माद्री के गर्भ से और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था। यह अज्ञात बनवास के समय मत्स्य (जयपुर) राज के यहाँ अपना तन्त्रीपाल

नाम रख कर गौ चराते थे। युधिष्ठिर के राजसूय नामक यज्ञ के समय ये दशार्ण (छत्तीसगढ़) मालव देश तथा समुद्र तीरवर्ती आभीर देश को जीतकर पञ्जाब में उपस्थित हुए। उसके बाद पञ्जाब अमर पर्वत, द्वारपाल आदि देशों को इन्होंने जीता। तदनन्तर इन्होंने द्वारका में वासुदेव के पास दूत भेजा था। यादवों के युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार करने पर भारत के उत्तर पश्चिम प्रदेशों में रहने वाले म्लेच्छ पल्हव आदि असभ्य जातियों को जीत कर ये इन्द्रप्रस्थ लौट आये। चेदिराज की कन्या करेणुमती से इनका ब्याह हुआ था। करेणुमती के गर्भ से नकुल को निरमित्र नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

नकुआ दे० (पु०) नोक, अणि।

नकेल दे० (स्त्री०) काठ की बनी एक प्रकार की सलाई जो ऊँट की नाक में लगाते हैं।

नक्का दे० (पु०) ताश का इक्का, खेल के ताश में का इक्का।

नक्की दे० (स्त्री०) नासिका से उच्चारण करना, सानुनासिक उच्चारण करना, निश्चय, स्थिर, दृढ़। —मूठ (पु०) जुए का एक दाँव।

नक्कू दे० (पु०) अकीर्तिमान, अपयशी, अपयशी, दुर्नामी।

नक्त तत्० (पु०) रात, रात्रि, रजनी, निशा।

नक्तक तत्० (पु०) लघुवस्त्र, मलिन, धूम्रवर्ण, धूमैला वस्त्र।

नक्षत्र तत्० (पु०) जिसका नाश न हो, तारागण, २७ नक्षत्र, अश्वनी, भरणी आदि। —नाथ, —पति-प-राज (पु०) चन्द्रमा। —चक्र (पु०) तारामण्डल, ताराचक्र। —पुरुष (पु०) नक्षत्र मध्यवर्ती, पुरुष विशेष, नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता। —विद्या (स्त्री०) ज्योतिष विद्या। —सूचक (पु०) निन्दित ज्योतिषी, मूर्ख ज्योतिर्वित्। नक्षत्र सूचक का लक्षण वृहत्संहिता में इस प्रकार लिखा हुआ है। यथा—

"तिथ्युत्पत्तिं न जानन्ति ग्रहाणां नैवसाधनम्,
परवाक्येन वर्तन्ते ते वै नक्षत्रसूचकाः"
"अविदित्वैव यः शास्त्रं दैवज्ञत्वं प्रपद्यते,
सपंक्ति दूषकः पापो ज्ञेयो नक्षत्रसूचकः"।

नक्षत्री दे० (पु०) भाग्यवान, प्रतापी, भाग्यशाली।

नक्षत्रेश तत्० (पु०) नक्षत्र ईश, चन्द्रमा।

नक्र तत्० (पु०) मगर, कुम्भीर, नाका। (पु०) हांगर, ग्राह।

नख तत्० (पु०) नाखून, नाखर, हाथ और पैर अङ्गुलियों के अग्रभाग स्थित कठिन चर्म विशे —रेखा (स्त्री०) नख का चिन्ह, बकोट। —शिख सिख तक (अ०) समस्त, सिर से पैर तक, सर शरीर।

नखत तद्० (पु०) नक्षत्र, तारा।

नखर तत्० (पु०) नह, नख, कड़े नख।

नखायुध तत्० (पु०) बाघ, कुक्कुट, मुर्गा, मोर, मयूर, नृसिंह।

नखियाना दे० (क्रि०) नख से बकोटना, खखोरना, नखाघात करना, खसोटना।

नखी तत्० (पु०) नख विशिष्ट, नखधारी, नखवाला, नखैल, वे जन्तु जो नख से आक्रमण करते हैं।

नग तत्० (पु०) पहाड़, पर्वत, वृक्ष, जड़ पदार्थ मात्र, सात की संख्या। (दे०) नगीना, अँगूठी आदि गहनों पर जड़ने के पत्थर। —पति (पु०) पर्वत स्वामी, पहाड़ों का मालिक, हिमालय पर्वत।

नगचाई दे० (स्त्री०) समीप, निकट, निकटागमन नगचाई।

नगचाना दे० (क्रि०) पास आना, समीप आना पहुँचना।

नगचाहट दे० (स्त्री०) सामीप्य, निकटता, नगचाई

नगदौना तद्० (पु०) नागदमन, औषध विशेष एक जड़ी।

नगन तद्० (पु०) नग्न, नङ्गा, वस्त्रहीन, दिगम्बर वस्त्रावृत।

नगभिन्नक तत्० (पु०) पाषाणभेद, एक प्रकार का पत्थर।

नगर तत्० (पु०) पुर, ग्राम, बड़ा ग्राम। —कोट (पु०) कोट कांगड़ा, नगर के बाहर की भीत

—नारी (स्त्री०) गणिका, वेश्या, वाराङ्गना, नगर की साधारण स्त्री।—वर्ती (पु०) नगर के मध्यस्थित, नगरवासी, नगर में रहने वाले।—वासी (पु०) नागरिक, नगर के वासी।

नगरी तत्० (स्त्री०) बसती, ग्राम, गाँव, छोटा नगर।

नगरोपान्त तत्० (पु०) नगर का परिसर, नगर का निकास।

नङ्ग नङ्गा दे० (पु०) दिगम्बर, वस्त्रहीन, संन्यासियों का सम्प्रदाय विशेष, नरनारी समुदाय के एकत्रित होने पर नङ्गा रहना ही इनका धर्म बताया जाता है। ये बड़े धनी हैं और घर घर ये कपड़े वग़ैरह पहनते हैं।

नग्न तत्० (पु०) नङ्गा, वस्त्रहीन।

नङ्गी दे० (स्त्री०) दिगम्बर स्त्री।

नचवाना दे० (क्रि०) नाच कराना, नचाना, नृत्य कराना।

नचवैया दे० (पु०) नाचनेवाला, नर्तक, नृत्यकर्ता, नाच करने वाला।

नचहिं दे० (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है।

नचाना दे० (क्रि०) नचवाना, नाच कराना, नृत्य कराना।

नचावत दे० (क्रि०) नचाता है, नृत्य कराता है, नाच कराता है।
यथा:—
सबहिं नचावत राम गुसाईं।
नट नाचहिं मरकट की नाईं॥
—रामायण।

नट तत्० (पु०) नर्तकों की एक जाति, नर्तक, नचवैया, भाँड़, कौतुकी, मायावी।—नागर (पु०) नटशिरोमणि, श्रीकृष्णचन्द्र, टोनहा, जादूगर।—भूषण (पु०) हरताल।—धर (पु०) महादेव।

नटखट दे० (पु०) धूर्त, कपटी, छली, पाखण्डी।

नटखटी दे० (स्त्री०) धूर्तता, कपट, छल।

नटत दे० (क्रि०) न करता है, नहीं करता है, अस्वीकार करता है।

नटना दे० (क्रि०) न मानना, टोकना, न करना।

नटमाया तत्० (स्त्री०) छलविद्या, इन्द्रजाल, नट का खेल, छल प्रपञ्च।

नटवा दे० (पु०) टोनहा, मायावी।

नटसाल दे० (पु०) टूटाकाँटा।

नटिन दे० (स्त्री०) नट की स्त्री, नटी, जादू करने वाली स्त्री, टोनही।

नटी तत्० (स्त्री०) नट की स्त्री, नाटकों में सूत्रधार की स्त्री, वेश्या, गणिका।

नटुआ, नटुवा (पु०) नट, नटवा, नट की एक जाति विशेष।

नटना दे० (क्रि०) नशना, नष्ट होना, बिगड़ना, ख़राब होना।

नड दे० (पु०) जाति विशेष, जो सुड़ी, आदि बनाते हैं।

नत तत्० (पु०) [नि+क्त] नम्र, विनयी, विनीत।

नतरु दे० (अ०) नहीं तो, ऐसा नहीं हुआ तब, अन्यथा।

नताङ्गी तत्० (स्त्री०) [नत+अङ्ग+ई] युवती, सुन्दरी, बाला, नारी।

नति तत्० (स्त्री०) [नि+क्ति] नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

नतिनी दे० (स्त्री०) दौहित्री, पुत्री की पुत्री, नातिन, बेटी की बेटी।

नतैत दे० (पु०) नातेदार, सगा, सम्बन्धी।

नथ दे० (पु०) नाक में पहनने का गहना, बड़ी नथुनी।

नथना दे० (क्रि०) नाक छेदना, नथ पहनने के लिये नाक छिदाना।

नथनी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का अस्त्र, जिससे नाथा जाता है।

नथी दे० (स्त्री०) छिदी, फँसी, नाथी गयी।

नथुआ दे० (पु०) नाथने वाला, छिदुआ।

नथुई दे० (स्त्री०) छिदुई।

नथुना दे० (पु०) नाक का अग्रभाग।

नद तत्० (पु०) बड़ी नदियाँ, जिनकी धारा उत्तर

या पश्चिम की ओर जाती हो; यथा—शोण, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि।

नदित तत्० (पु०) शब्दित, कृतशब्द, जातशब्द।

नदी तत्० (स्त्री०) पर्वतों से निकला वह स्रोत जो समुद्र में जाकर मिले, गङ्गा, सरयू, यमुना आदि। —कान्ता (स्त्री०) काकजङ्घा नामक बूटी।

नदेश तत्० (पु०) समुद्र, सागर, महोदधि।

नदोला दे० (पु०) बड़ा नाद, जिसमें बैल आदि को खिलाया जाता है, जो मिट्टी का बना होता है।

ननका दे० (पु०) छोटा बच्चा लड़का, लाड़ला।

ननद तद्० (स्त्री०) पति की बहिन, ननदी।

ननदिया, ननदी दे० (स्त्री०) ननद, पति कीभगिनी।

ननिहाल दे० (पु०) नाना का घर, माता के पिता का घर, नाना का गाँव।

ननु तत्० (अ०) निश्चय, अवधारण, अनुज्ञा, सम्मतिदान, अनुमति, अनुनय, आमन्त्रण, आक्षेप, विरोधोक्ति, उत्प्रेक्षा।

नन्द तत्० (पु०) श्रीकृष्ण का पालने वाला पिता, यमुना के दूसरे तीर पर पहले एक गोकुल नामक गाँव था वहाँ गोप बसते थे। नन्द उन्हीं गोपों के अधिपति थे। उस समय कंस मथुरा का राजा था। नन्द मथुरा के राजा के करद सामन्त थे। भगवान् श्रीकृष्ण गोकुल में ही पले थे। यहीं उन्होंने कंस के द्वारा भेजे हुए राक्षसों का वध किया था। यहीं से कंस के धनुर्यज्ञ में निमन्त्रित होकर श्रीकृष्ण मथुरा गये और वहाँ कंस को मारकर अपने माता पिता के यहाँ रहने लगे। पुनः वे वृन्दावन नहीं लौटे कृष्ण के चले जाने के बाद ही से नन्द का जीवन एक प्रकार का बोझ हो गया था। हंस और डिम्भक को मारने के लिये एक बार श्रीकृष्ण वृन्दावन गये थे और वहीं नन्द और यशोदा से भेंट भी हुई थी, नन्द और यशोदा को समझाकर श्रीकृष्ण पुनः मथुरा लौट आये। इसके बाद एक बार और भी श्रीकृष्ण से इनकी भेंट हुई थी वह भेंट प्रभास क्षेत्र में हुई थी जो अन्तिम भेंट थी। नन्द पहले जन्म में द्रोण नामक वसु थे।

(२) मगध का राजा, इस नाम के नौ राजा पाटलीपुत्र के सिंहासन पर आरूढ़ हुए थे। इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार की बातें देखी जाती हैं। पुराणों में लिखा है कि ये एक शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम नन्दी था। परन्तु बौद्ध ग्रन्थकार कहते हैं कि नन्द वेश्या के गर्भ और नाई के औरस से उत्पन्न हुए थे। जो हो ये भाग्यशाली थे इसमें सन्देह नहीं। पाटलीपुत्र का राजा अपुत्रक मर गया था। राजमन्त्री यही विचारते थे कि किसका अभिषेक किया जाय, यही सोच कर उस समय की प्रथा के अनुसार वे नगर के बाहर राजहस्ति, छत्र कुम्भ और चामर आदि राजसामग्री लेकर उपस्थित थे। उसी समय नन्द वहाँ उपस्थित हुए। राजहस्ति ने उन्हीं पर घड़े के जल से अभिषेक किया, और सूँड से उनको अपनी पीठ पर रख लिया, चारों ओर मङ्गलध्वनि होने लगी, नन्द ४६६ ई० में राजा हुए थे। इनके वंश में क्रमशः सात नन्द राजा हुए थे। कल्पक नामक एक महा पण्डित नन्द के मन्त्री थे। अन्त में नवें नन्द राजगद्दी पर बैठे, जिन्हें महानन्द भी कहते हैं। इनके मन्त्री कल्पक के पुत्र शकडाल थे। इनकी सभापण्डित विख्यात वररुचि थे। प्रसिद्ध राजनीति कुशल चाणक्य ने इसी नन्द वंश को विध्वंस करके चन्द्रगुप्त को राजासन दिया था। जिस घटना का अवलम्बन करके विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नामक नाटक बनाया था।

नन्दकुमार तत्० (पु०) ये कश्यप गोत्रज वंश के वंशधर थे। महाराज आदिशूर ने कन्नौज से पाँच ब्राह्मण विद्वान् बुलाए थे। इस उन्हीं में से एक थे। नन्दकुमार के पूर्व पुरुष मुर्शिदाबाद जिले के जब्रून गाँव में रहते थे। महाराज नन्दकुमार के पिता का नाम पद्मनाभ था। नन्दकुमार के पूर्व पुरुष पीतमुण्डी नामक गाँव में रहते थे इसी कारण इनका वंश पीतमुण्डी ब्राह्मण नाम से विख्यात था। बङ्गाल के नवाब अलीवर्दी खाँ के समय में नन्दकुमार ने अमीनी के पद पर रह कर बहुत धन कमाया था। परन्तु वहाँ के दीवान से

कुछ खटपट हो जाने के कारण इन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा, अलीवर्दी के मरने के अनन्तर सिराजुद्दौला बङ्गाल के नवाब हुए। नन्दकुमार नौकरी के लिये सिराज के यहाँ आने जाने लगे। सिराज ने नन्दकुमार को दीवानी का काम दिया। अङ्गरेज़ों के साथ अनबनाव होने के कारण सिराज के पदच्युत होने के अनन्तर नन्दकुमार लार्ड क्लाइव के मुंशी के पद पर नियुक्त हुए। क्लाइव के विलायत चले जाने पर, वेरेलष्ट साहब बङ्गाल के गवर्नर हुए। ये पहिले तो नन्दकुमार को बड़ी प्रीति से देखते थे परन्तु पीछे किसी कारण से इन दोनों में परस्पर विरोध हो गया। वेरेलष्ट के बाद कार्टियार बङ्गाल के गवर्नर हुए, ये भी अपना समय पूरा करके चले गये। नन्दकुमार को एक मुकद्दमे में उस समय के जज सर इलाइजा इम्पे ने प्राणान्त दण्ड की आज्ञा दी। नन्दकुमार मरने के समय ५२ लाख रुपये और भूमि सम्पत्ति छोड़ गये थे। एक बार इन्होंने एक लाख ब्राह्मणों को इच्छा भोजन कराया था।

नन्दन तत्० (पु०) [नन्द + ल्यु] पुत्र, बेटा, आनन्द-दायक, सुखदायक, मदारक, प्रसन्न करने वाला, सन्तान, विष्णु, नारायण, पर्वत विशेष, इन्द्र का उपवन। (गु०) हर्षजनक, आह्लाद जनक।—ज (पु०) हरिचन्दन।

नन्दनन्दन तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु।

नन्दा तत्० (स्त्री०) [नन्द + अ] तिथि-विशेष, दोनों पक्षों की प्रतिपद्, षष्ठी और एकादशी तिथि। सम्पत्ति। भगवती का दूसरा नाम। वाराह पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा ने देवी से कहा था कि देवि! आपने देवों के बहुत बड़े काम किये हैं, परन्तु आपको एक और देवताओं का काम करना चाहिये, आपको महिषासुर का विनाश करना होगा। ब्रह्मा के यह कहने के अनन्तर देवताओं ने भगवती को हिमालय में स्थापना की और वे इससे बहुत प्रसन्न हुईं, इसी कारण भगवती का नाम नन्दा पड़ा। दूसरी पुस्तकों में लिखा हुआ है कि भगवती देवलोक नन्दनकानन और पवित्र हिमालय में रहकर बहुत आनन्दित हुई थीं इसी कारण उनका नन्दा नाम पड़ा है।

नन्दात्मज तत्० (पु०) [नन्द + आत्मज] श्रीकृष्ण, विष्णु।

नन्दि तत्० (पु०) शिव का द्वारपाल, द्यूत क्रीड़ा, जुआ का खेल।

नन्दिग्राम तत्० (पु०) ग्राम विशेष, जहाँ रामचन्द्र के वनवास के समय भरतजी तपस्या और राज की व्यवस्था करते थे।

नन्दिघोष तत्० (पु०) अर्जुन के रथ का नाम, आनन्द देने वाला नन्दियों का शब्द, भाटों की स्तुति। मङ्गल घोषणा।

नन्दिनी तत्० (स्त्री०) [नन्द + इन् + ई] कन्या, पुत्री, उमा, गङ्गा, वशिष्ठ की धेनु। कामधेनु की कन्या नन्दिनी, महर्षि वशिष्ठ ने इसी धेनु का पालन किया था। सेवा से प्रसन्न करके इसी नन्दिनी के प्रसाद से अयोध्याधिपति राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र पाया था।

नन्दी तत्० (पु०) [नन्द + इन्] शिव का अनुचर, महादेव ने इसको द्वाररक्षक का काम दिया था। वृक्षविशेष, वटवृक्ष; शालङ्कायन मुनि, यह शिव के अंश थे।

नन्दोई, नन्दोसी दे० (पु०) ननद का पति, पति की भगिनी का पति।

नन्दोला दे० (पु०) नाँद, मट्टी का माँड़ा।

नन्हा दे० (गु०) छोटा, नाटा, लघु, छोटा लड़का, शिशु, बालक।

नपुंसक तत्० क्लीब, हिजड़ा, पुंसत्वहीन, पुरुषत्व-हीन।—लिङ्ग (पु०) तीसरा लिङ्ग।

नप्ता तत्० (पु०) कन्या का पुत्र, नाती।

नफर दे० (पु०) नौकर, चाकर, सेवक, भृत्य।

नफीरी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष, तुरही, सहनाई।

नभः तत्० (पु०) आकाश, गगन, श्रावण का महीना।

नभग तत्० (पु०) पक्षी, नक्षत्र, ग्रह, पखेरू, चिड़िया। **—नाथ** (पु०) गरुड़, चन्द्रमा।

नभगामी तत्० (पु०) नभग, पक्षी, नक्षत्र।

नभगेश तत्० (पु०) नभगनाथ, गरुड़, चन्द्र।

नभचर तद्० (पु०) पखेरू, पक्षी, विद्याधर, मेघ, वायु, पवन। (गु०) आकाश में घूमने वाला, आकाशचारी, खेचर।

नभश्चर तत्० (पु०) आकाश में उड़ने वाले, आकाशचारी, पक्षी, तारा, ग्रहदेवता, विद्याधर, सिद्ध, गन्धर्व।

नभस्य तत्० (पु०) भाद्रपद, भादों का महीना, भाद्रमास।

नभस्वान् तत्० (पु०) [नभस्+वत्] वायु, अनिल, पवन।

नभोगति तत्० (स्त्री०) [नभस्+गति] आकाश गमन, उड़ना, उड्डयन।

नभोधूम तत्० (पु०) [नभस्+धूम] वारिद, मेघ। घन।

नमः तत्० (अ०) नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

नमकीन दे० (गु०) नोन की वस्तु, पक्वान, जिसमें नमक पड़ा हो, लवणाक्त।

नमत तद्० (क्रि०) नमस्कार करता है, प्रणाम करता है, अभिवादन करता है, नम्र होता है, नवता है, झुकता है।

नमन तत्० (पु०) [नम्+अनट्] अधोगमन, नम्र होना, प्रणाम करना, विनीत होना, नत होना।

नमस्कार तत्० (पु०) [नमस्+कार] प्रणाम, सम्मान प्रदर्शन करना।

नमाज दे० (पु०) मुसल्मानों की स्तुति, मुसल्मानों की ईश्वर वन्दना की रीति।

नमित तत्० (गु०) [नम्+क्त] कृत नमस्कार विनम्र, कृतविनय, प्रह्वीभूत।

नमुचि तत्० (पु०) कामदेव, मदन, कन्दर्प, दैत्य विशेष, प्रसिद्ध दानव, महासुर शुम्भ का तीसरा भाई, शुम्भ से छोटा निशुम्भ और निशुम्भ से छोटा नमुचि था।

(२) विख्यात दानवराज, इसके साथ इन्द्र की मित्रता थी। तथापि इन्द्र ने नमुचि को मार डाला, नमुचि के मारने से इन्द्र को ब्रह्महत्या का दोष लगा था। इस दोष को दूर करने के लिये इन्द्र ने अरुणा नामक नदी में स्नान किया था। अरुणा नदी सरस्वती नदी की प्रधान शाखा है। एक समय दानवराज नमुचि इन्द्र के भय से सूर्य की किरणों में छिपा हुआ था, यह देखकर इन्द्र ने उससे मित्रता की, और बोले, मित्र! मैं सच कहता हूँ दिन में या रात में भीगे या शुष्क वस्त्र द्वारा मैं तुम्हारा विनाश करने की चेष्टा नहीं करूँगा। एक दिन नीहार से दिशाएँ आच्छन्न थीं उसी समय जलफेन द्वारा इन्द्र ने नमुचि का सिर छेदन किया। उस समय वह छिन्न मुण्ड बोला अरे पापी! तुमने मित्रवध किया, यह कह कर दानवराज के सिर ने इन्द्र को दौड़ाया, डर कर इन्द्र ब्रह्मा के शरण गये, ब्रह्मा के उपदेश से इन्द्र अरुणा नदी में स्नान तथा यज्ञ करके पापमुक्त हुए। अनन्तर वह दानवराज का सिर भी अरुणा तीर्थ में स्नान कर अक्षयधाम को गया।

नम्र तत्० (गु०) [नम्+र] कृतप्रणाम, विनयी, विनीत, मिलनसार। **—ता** (स्त्री०) नम्रता, विनय, विनीतत्व, मृदुता, विनीतभाव।

नय तत्० (पु०) नीति, न्याय, धर्म, द्यूत विशेष। (गु०) न्याय्य, औचित्य, नेता। (दे०) नौ की संख्या, निषेध, अस्वीकार।

नयन तत्० (पु०) लोचन, नेत्र, आँख, चक्षु। **—गोचर** (पु०) दृष्टि गोचर, नेत्रपथ, आँखों का सामना। **—विशारद** (पु०) नीतिकुशल, नीतिशास्त्र पण्डित।

नथना तद्० (स्त्री०) आँखों का तारा, पुतली, तारका, कनीनिका।

नया दे० (गु०) नवीन, नूतन, अभिनव, ताज़ा, आधुनिक, नव, टटका।

नर तत्० (पु०) मानव, मनुष्य, मानुष, पुरुष, भागवत में विष्णु का चौथा अवतार नर का बतलाया गया है। यह धर्म की पत्नी मूर्ति के गर्भ से उत्पन्न हुई है। नर और नारायण ये दो मूर्त्ति थीं, परन्तु दोनों की आकृति समान थी। महाभारत में लिखा है कि नर नारायण बदरिकाश्रम में कठोर तपस्या करते थे। नारद जी वहाँ गये, उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिनकी उपासना संसार कर रहा है, देवता आदि भी जिनका सर्वदा ध्यान करते हैं वे किसकी उपासना करते हैं। नारद ने पूँछा भगवन्! आप लोग किसकी उपासना कर रहे हैं। भगवान् बोले—जो सूक्ष्म, अविज्ञेय, कार्यविहीन, अचल नित्य तथा त्रिगुणातीत हैं, जिनसे सत्त्व आदि गुण उत्पन्न होते हैं, जो वास्तव में अव्यक्त होने पर भी व्यक्तरूप से अवस्थान करके प्रकृति नाम से परिचित हैं, वे परमात्मा ही हम लोगों के भी कारण हैं। हम लोग उन्हींकी उपासना करते थे। नर नारायण की कठिन तपस्या देख देवता डर गये, इनकी तपस्या में विघ्न करने के अर्थ इन्द्रादि देवों ने अप्सरायें भेजीं, परन्तु यहाँ अप्सराओं के किये कुछ न हुआ। उर्वशी की सृष्टि करके नारायण ने अप्सरा और देवों के मनोरथ पर पानी फेर दिया। यही नर नारायण द्वापर के अन्त में अर्जुन और श्रीकृष्ण के रूप में अवतीर्ण हुए थे।—देव (पु०) राजा, नृपति, ब्राह्मण, विप्र।—नारायण (पु०) दो ऋषियों का नाम, भगवान् का चौथा अवतार, श्रीकृष्ण, अर्जुन।—पति (पु०) राजा, नृपति, नरेन्द्र।—पुर (पु०) मर्त्यलोक, नृलोक, भूलोक।—मेध (पु०) यज्ञ विशेष, जिस यज्ञ में मनुष्य का वध करके बलि दी जाती है। किसी समय में नरमेध शब्द से ब्राह्मण भोजन कराना समझा जाता था, परन्तु अब यह अर्थ गौण हो गया है।—लोक (पु०) नरपुर मर्त्यधाम, मर्त्य लोक।—वाहन (पु०) कुबेर, यक्षराज, उदयन का पुत्र, गन्धर्व चक्रवर्ती।—सिंह (पु०) भगवान् का अवतार।

नरक तत्० (पु०) देवरात्रिप्रभेद, दैत्य विशेष, भूमि का पुत्र, कष्टजनकस्थान पापभोगस्थान, निरय। पुराणों में नरकों के नाम दस प्रकार गिनाये गये हैं। तामिस्र, अन्धतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, शूकरमुख, अन्धकूप, कृमिभोजन, सन्दंश, तप्तभूमि वज्रकण्टक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचिरयःपान, क्षारकर्दम, रक्षोगण, भोजन, शूलप्रोत, दन्तशूक, अवनिरोधन, पर्यावर्तन, सूचीमुख, आदि।—कुण्ड (पु०) कष्टदायक कुण्ड, पाप का फल भोगने का कुण्ड, ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि नरक कुण्ड ८६ हैं।

नरकट दे० (पु०) तृणविशेष, सरकंडा।

नरकासुर तत्० (पु०) एक राक्षस का नाम, यह श्रीकृष्ण का मित्र था।

नरकेसरी तत्० (पु०) नरसिंह, भगवान् का चौथा अवतार (पु०) नरश्रेष्ठ, प्रधान मनुष्य।

नरकान्तक तत्० (पु०) [नरक+अन्तक] विष्णु, श्रीकृष्ण।

नरकामय तत्० (पु०) [नरक+आमय] प्रेत, पिशाच, नरक का रोग, कुष्ठरोग।

नरकी तद्० (पु०) नरकयोग, दुःखी, पापी।

नरङ्ग तत्० (पु०) नारङ्गी, नारङ्ग, संतरा, नारङ्गी, नीबू।

नरम दे० (गु०) मृदु, कोमल, अकठिन, आर्द्र, शीतल।

नरमाना दे० (क्रि०) नरम करना, कोमल करना, मृदु बनाना।

नरसिंगा दे० (पु०) एक प्रकार का बाजा, तुरही, सींगा।

नरसिंगिया दे० (पु०) नरसिंगा बजाने वाला।

नरसों दे० (पु०) बीता हुआ या आने वाला चौथा दिन।

नरहड दे० (पु०) पिण्डली की हड्डी, पिण्डारी।

नरहरि तत्० (पु०) नरसिंह, विष्णु का अवतार। **—दास** (पु०) तुलसीदास के गुरु का नाम, कवि विशेष।

नराधम तत्० (पु०) [नर+अधम] अधम, नीच, पापी, दुराचारी, असत्कर्मी।

नराधिप तत्० (पु०) [नर+अधिप] राजा, नरपति, नृपति, भूपति, भूपाल।

नरिया दे० (पु०) खपरा, छोटी नाली, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं।

नरी तत्० (स्त्री०) नर जातीया स्त्री, चर्म विशेष, चाम, चमड़ा, लौह यन्त्र विशेष, जिसमें कपड़े बुनने के लिये सूत रखते हैं।

नरुख दे० (पु०) पुल्लिङ्ग, पुरुष।

नरेट दे० (पु०) घाँटी, नली, नलिका, नटई, गला, घाँटी।

नरेटी दे० (स्त्री०) ग्रीवा, गला, गटई, गर्दन, टेंटुआ। **—दवाना** (वा०) गला घोंटना, मारना, जान से मार डालना।

नरेन्द्र तत्० (पु०) [नर+इन्द्र] नरेश्वर, बहु-देशाधिपति, राजा, नरपति, विषवैद्य, विष चिकित्सक।

नरेश तत्० (पु०) [नर+ईश] राजा, नरपति।

नरेश्वर तत्० (पु०) [नर+ईश्वर] देशाधिपति, राजा, नरेन्द्र, नरपति।

नरोत्तम तत्० (पु०) [नर+उत्तम] श्रेष्ठ मनुष्य, उत्तम मनुष्य, समाजपति, किसी दल का अगुआ। (पु०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

नर्तक तत्० (पु०) [नृत+अक] नृत्यकारी, नाचने वाला, नट, चारण।

नर्तकी तत्० (स्त्री०) [नर्तक+ई] नृत्यकारिणी, नटी, वेश्या, वाराङ्गना।

नर्तन तत्० (पु०) [नृत+अनट्] नृत्य, नाच, अङ्ग-भङ्गी। **—प्रिय** (पु०) शिखी, मयूर, मोर।

नर्दक तत्० (पु०) [नर्द+अक] बोलने वाला, शब्द करने वाला।

नर्म तत्० (पु०) [नृ+मङ्] कौतुक, लीला, क्रीड़ा।

नर्मद तत्० (पु०) [नर्म+दा+ड] केलि सचिव, क्रीड़ा विशेष के सहायक, आनन्दकारी, सुख दायक।

नर्मदा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, यह नदी दक्षिण में है। रेवा, मेकल, कन्यका।

नर्मसचिव तत्० (पु०) [नर्म+सचिव] राजा के साथी, क्रीड़ामित्र, मुसाहिब।

नल तत्० (पु०) तृण विशेष, बाँस, नेजा, नालो, प्रणाली, पनाली, खस, पितृदेव, दैत्य विशेष, नैषधराज, स्वयम्बर विधि से इन्होंने विदर्भराज भीम की कन्या दमयन्ती से विवाह किया था। दमयन्ती के रूप और गुण की प्रशंसा सुनकर नल उस पर आसक्त हुए थे। एक दिन राजा नल ने उद्यान में घूमते घूमते एक हंस पकड़ा था। हंस मनुष्य की बोली में राजा से कहने लगा आप हमको छोड़ दें, हम आपका बहुत उपकार करेंगे। राजा भीम की कन्या दमयन्ती के सामने तुम्हारे गुण वर्णन करेंगे, जिससे वह आपके साथ अपना विवाह कर लेगी। नल ने हंस को छोड़ दिया। दमयन्ती के समीप जाकर हंस ने नल के गुणों का वर्णन किया दमयन्ती नल पर अनुरक्त होगई। कन्या को विवाह योग्य देख भीम ने स्वयम्वर सभा जोड़ी, उसमें देवताओं को छोड़कर दमयन्ती ने नल को ही वरण किया।

नलकूबर तत्० (पु०) यक्षराज कुबेर का पुत्र, इनके भाई का नाम मणिग्रीव था। एक समय दोनों भाई मदोन्मत्त होकर कैलाश के पास गङ्गातीर के तपोवन में स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करते थे। यह देख नारद जी को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने शाप दिया। नारद के शाप से नलकूबर और मणिग्रीव दोनों भाई यमलार्जुन वृक्ष हो गये थे। बङ्गाल के प्रसिद्ध कवि गुणाकर भारतचन्द्रराय ने एक स्थान पर लिखा है कि नारद के शाप से नलकूबर का जन्म,

बङ्गदेश में भवानन्द मजूमदार के रूप में हुआ था।

नलद तत्० (पु०) पुष्परस, मकरन्द, उशीर, योरण-मूल, खस।

नलपुरद्दिक दे० (पु०) कलिहारी।

नला तद्० (स्त्री०) उदरस्थ नाड़ी विशेष।

नलिका तत्० (स्त्री०) [नलिक+आ] नाड़ी, नली, शिरा, सुगन्धि द्रव्य विशेष।

नलिन तत्० (स्त्री०) पद्म, कमल, पानी, जल, पक्षि विशेष, सारस पक्षी।

नलिनी तत्० (स्त्री०) [नलिन+ई] पद्मयुक्त देश, पद्मसमूह, पद्मलता, कमलिनी, कुमुदिनी, कोई, कमलाकर।—रुह (पु०) मृणाल, कमल की डंडी।

नलिया दे० (पु०) बहेलिया, व्याध, निषाद, चिड़ीमार।

नली तत्० (स्त्री०) [नल+ई] नरेटी, ग्रीवा, गहुंन, गला, घाँटी, लोहे का एक यन्त्र, जिसमें सूत रख कर कपड़े बिनते हैं।

नलुआ दे० (पु०) बाँस का चोंगा, जिसमें पशु आदि रखते हैं, या साधु लोग पानी पीते हैं।

नव तत्० (गु०) नया, नवीन, नूतन, अभिनव, संख्या विशेष। एक कम दश, ९, नौ।—खण्ड (पु०) पृथिवी के नौ भाग, प्राचीन भूगोल वेत्ताओं ने पृथ्वी को नौ भागों में बाँटा था वे ये हैं:—भरत, इलावर्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरु।—ग्रह (पु०) सूर्य आदि नौ ग्रह। —दुर्गा (स्त्री०) दुर्गा की नौ मूर्ति, शैलपुत्री आदि।—द्वार (पु०) शरीर के नौ मार्ग, यथा— "नवद्वार का पींजरा तामें पंछी पौन"—कबीर। —निधि (पु०) कुबेर का ख़ज़ाना।—वधू (स्त्री०) नई बहू, दुलहिन, युवती।—बाला (स्त्री०) नव-यौवना, युवती।—यौवना (स्त्री०) युवती स्त्री। —रत्न (पु०) मुक्ता आदि नव प्रकार के मणि। यथा—हीरा, पन्ना, माणिक, नीलम, लहसनिया, पुखराज, गजमुक्ता, मोती, मूंगा, विक्रमादित्य राजा की राजसभा के नौ पण्डित, यथा—धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शङ्कु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि, आभूषण विशेष, जिसमें नौरत्न जड़े हों। —रात्र (पु०) आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त नौ दिन तक किया जाने वाला व्रत।—रस (पु०) नव प्रकार के रस, यथा— शृङ्गार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र और शान्त।—भक्ति (स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति, नवीनभक्ति, भक्ति के नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवा, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेद।—शिक्षक (पु०) नवीन शिक्षक, नूतन अध्यापक, नया पढ़ाने वाला।

नवनी तद्० (स्त्री०) नवनीत, माखन, नैनू, नौनी।

नवनीत तत्० (पु०) माखन, मक्खन, नैनू।

नवम तत्० (गु०) नवाँ, नव संख्या को पूर्ण करने वाली संख्या।

नवमांश तत्० (पु०) नवाँ भाग, नव, हिस्सा, नव भाग में का एक भाग, $\frac{1}{9}$।

नवमी तत्० (स्त्री०) [नवम+ई] तिथि विशेष, चन्द्रमा की नवीं कला का क्रिया काल।

नवल दे० (गु०) नया, नवा, नवीन, सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर, (पु०) एक पौधे का नाम।

नवा दे० (गु०) नवीन, नूतन, नया।

नवांश तत्० (पु०) नवम, नवाँ।

नवाड़ा दे० (पु०) नाव विशेष, छोटी नाव, डोंगी।

नवाना दे० (क्रि०) झुकाना, निहुराना, नम्र करना, नवा देना, विनीत करना।

नवान्न तत्० (पु०) [नव+अन्न] नवीन अन्न, सम्व-त्सर का प्रथम अन्न।

नवारना दे० (क्रि०) रमना, भटकना, घूमना, फिरना।

नवारी दे० (स्त्री०) पुष्प विशेष, उसका वृक्ष, नवारी का फूल, जो चैत में फूलता है।

नवासा दे० (पु०) नाति, नप्ता, दौहित्र, दोहिता, पुत्री का पुत्र, बेटी का बेटा।

नवासी दे० (स्त्री०) नातिन, नतिनी, बेटी की बेटी, दौहित्री, संख्या विशेष, ८६।

नवी दे० (स्त्री०) नरांयन, नौना, पगा, भविष्यद्वक्ता।

नवीन तत्० (गु०) नव्य, नूतन, तात्कालिक, तत्क्षण उत्पन्न।

नवोढ़ा तत्० (स्त्री०) [नव+ऊढ़ा] नूतन विवाहिता स्त्री, नवयौवना, मुग्धा नायिका विशेष। यथा—
"मुग्धा जो भय लाज युत, रतिहि चहत पतिसङ्ग।
ताहि नवोढ़ा कहत हैं, जो प्रवीन रस रङ्ग॥"
—रसराज।

नव्वे दे० (गु०) नवति, ९०, नवदहाई, १० कम १००।

नव्य तत्० (गु०) नूतन, नवीन, आधुनिक।

नश्वर तत्० (गु०) नाशवान, विनाशी, विनसनशील, मिथ्या।

नष्ट तत्० (गु०) [नश्+क्त] नाशप्राप्त, ध्वस्त, पराजित, मृत, अपचित, भ्रष्ट, दुष्ट, शठ। (गु०) अदर्शन विशिष्ट, तिरोहित, नाशाश्रय।—चित्त (गु०) मूढ़, हतबुद्धि, अज्ञान, अविवेकी।—चेष्ट (गु०) [नष्ट+चेष्टा] स्पन्दहीन, निस्तब्ध, चेष्टा हीन।—चेष्टता (स्त्री०) प्रलय, शोक आदि के द्वारा शरीर की चेष्टा शून्यता, संज्ञाहीनता, कुकर्म विकुर्वत्व, पाप करने की इच्छा।—ता (स्त्री०) भ्रष्टता, दुष्टता, शठता।—संस्मृति (गु०) विस्मरणशील, स्मरण शक्ति विहीन।

नष्टा तत्० (स्त्री०) भ्रष्टा, दुष्टा, व्यभिचारिणी, कुलटा।

नस दे० (स्त्री०) नाड़ी, रग, शिरा।

नसाना दे० (क्रि०) नाश करना, बिगाड़ना, नष्ट करना, तितर बितर करना।

नसी दे० (स्त्री०) हल का फाल, चौ, तोड़ा, फाले का अग्रभाग।

नसीब दे० (पु०) भाग्य, अदृष्ट, कपाल।

नसीठ दे० (पु०) अभाग्य, दुर्भाग्य, अशुभ, असगुन।

नस्ता दे० (स्त्री०) नाक का छेद, नथना।

नस्य तत्० (पु०) ताम्रकूटचूर्ण, नस, सानुनासिक।

नह दे० (पु०) नख, नखर, नाखून।

नहक दे० (गु०) दुर्बल, क्षीणतम, पतला, मूकट।

नहछू दे० (पु०) नखक्षत, नखाघात, नखोट, खरोंट।

नहनी दे० (स्त्री०) नख काटने का अस्त्र विशेष।

नहरनी दे० (स्त्री०) नहनी, नखकटनी, नख काटने का अस्त्र।

नहलाना दे० (क्रि०) स्नान कराना, नहाना, नहवाना।

नहवाना दे० (क्रि०) नहलाना, स्नान करना।

नहान दे० (पु०) स्नान, अवगाहन, शौच।

नहाना दे० (क्रि०) स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अवगाहन करना, न्हाना।

नहानी दे० (स्त्री०) स्त्रियों का रजोदर्शन के समय का स्नान, सूतक स्नान।

नहारहमुह दे० (अ०) विना भोजन, विना खाये, उपवास।

नहारवा, नहारू, नहारुआ दे० (पु०) रोग विशेष, नार निकलना, इस रोग में शरीर के किसी स्थान से सूत के समान निकलता है। यह रोग राजपुताने के प्रान्तों में विशेष होता है।

नहियर दे० (पु०) पीहर, मैका, स्त्री का अपने पिता का घर।

नहीं दे० (अ०) निषेध, मना, मत, न, नकारना।

नहुष तत्० (पु०) चन्द्रवंशीय आयु नामक राजा के पुत्र। इन्होंने तपस्या और यज्ञ आदि के अनुष्ठान द्वारा इन्द्र का पद पाया था। महर्षि अगस्त्य के शाप से इन्द्रपद से भ्रष्ट होकर पृथ्वी पर दस हज़ार वर्ष तक साँप होकर इन्हें रहना पड़ा था। नहुष के बहुत प्रार्थना करने पर अगस्त्य ने अनुग्रह करके कहा था कि तुम्हारे वंश में युधिष्ठिर नामक राजा होंगे उन्हींकी प्रसन्नता से तुम्हारी गति होगी। वनवास के समय भीम एक दिन अहेर को गये थे, वहीं भीम को नहुषरूपी अजगर ने पकड़ लिया। भीम के आने में विलम्ब देखकर उनको

ढूढ़ने के लिये युधिष्ठिर भी निकले । यहाँ की अवस्था देखकर युधिष्ठिर ने सर्प का परिचय पूँछा और साथ ही भीम की रक्षा का उपाय भी। सर्प अपना परिचय देकर उसी समय शाप मुक्त हुआ और दिव्य शरीर धारण करके यथास्थान चला गया ।

ना दे० (अ०) नहीं, अभाव, निषेध, निषेधार्थक अव्यय ।

नाईं दे० (अ०) सदृश, समान, तुल्य, प्रकार ।

नाइन दे० (स्त्री०) नापित की स्त्री, नाई की स्त्री ।

नाई दे० (पु०) नापित, नाऊ, क्षौरकार, स्वनाम ख्यात जाति विशेष ।

नाऊ दे० (पु०) नाई, नापित ।

नाँदिया दे० (पु०) महादेव का वाहन, बैल, वृषभ, जो महादेव का वाहन है ।

नाँव, नाँउ दे० (पु०) नाम, संज्ञा, अभिधान, कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा ।

नाँह दे० (अ०) निषेधार्थक अव्यय ।

नाक तद्० (पु०) [न+अक] स्वर्ग, जहाँ दुःख न हो, स्वर्ग लोक (दे०) (स्त्री०) नासिका, नासा ।—पति (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरेन्द्र ।—नटी (स्त्री०) अप्सरा, देवाङ्गना, स्वर्गवेश्या ।—कटाना (वा०) अपमानित होना, अनादर करना ।—कटी होना (वा०) स्वयं अपनी प्रतिष्ठा गवाँना, अपना मान खोना अपयशी होना ।—का बाल (वा०) रत्न, अत्यन्त प्रिय, ईप्सित ।—चढ़ाना (वा०) अप्रसन्न होना, विरक्त होना, क्रुद्ध होना ।—रखना (वा०) प्रतिष्ठा रखना, मान रक्षित रखना ।—सकोड़ना (वा०) नाक चढ़ाना अप्रसन्न होना । अप्रसन्नता जताने की एक मुद्राविशेष ।

नाकड़ा दे० (पु०) रोग विशेष, नाक का एक रोग ।

नाका दे० (पु०) मार्ग का अन्त, एक मार्ग का अन्त और दूसरे का प्रारम्भ, सुई का छेद, मगर, घरियार, हांगर ।

नाकिन दे० (स्त्री०) दने वाली स्त्री, वह स्त्री जो नाक से बोले ।

नाग तद्० (पु०) सर्प, साँप, अहि, पन्नग, हाथी, दन्ती वृक्ष वायु भेद ।—उरग (पु०) धातु विशेष, सीसा ।—कन्या (स्त्री०) नागों की कन्या, पातालवासी, देवताओं की कन्या ।—केशर (पु०) पुष्प विशेष, एक प्रकार के फूलों का वृक्ष ।—गर्भ (पु०) सिन्दूर ।—चाम्पेय (पु०) नागकेशर वृक्ष ।—ज (पु०) सिन्दूर, रङ्ग ।—दन्त (पु०) गजदन्त, हाथी का दाँत, घर की दिवालों में गाड़े हुए, खूँटी ।—दन्तक (पु०) घर की भीत में लगे हुए, खूँटी, आला, ताक ।—दन्ती (स्त्री०) श्रीहस्तिनी, विशल्या, इन्द्रवारुणी ।—दमनी (स्त्री०) छोटा पौधा विशेष ।—पञ्चमी (स्त्री०) श्रावण शुक्ल की पञ्चमी, जिस दिन नाग की पूजा होती है ।—पाश (पु०) अस्त्र विशेष, वरुणास्त्र, फाँस, फन्दा, फाँसी ।—फाँस (पु०) वरुण का अस्त्र, पाश, फाँसी, फन्दा ।—बेल (पु०) पान, ताम्बूल ।—भाषा (स्त्री०) प्राकृतभाषा, वह भाषा जो पाताल वासी बोलते हैं ।—माता (स्त्री०) कश्यप ऋषि की स्त्री, कद्रू ।—रिपु (पु०) नकुल, न्योला, मोर, मयूर ।—लोक (पु०) पाताल, नागों का वासस्थान ।

नागदौन दे० (पु०) पौधा विशेष, मरुआ, सुगन्धयुक्त पौधा ।

नागन, नागनी दे० (स्त्री०) सर्पिणी, साँपिन ।

नागर तद्० (पु०) नगरवासी, चतुर, दक्ष, निपुण, कुशल, ब्राह्मण विशेष, इस जाति के ब्राह्मण गुजरात में विशेषता से पाये जाते हैं ।

नागरङ्ग तद्० (पु०) नारङ्गी, कैवला नीबू ।

नागरमुस्ता तद्० (स्त्री०) मोथा विशेष, जड़ विशेष ।

नागरमोथा तद्० (पु०) सुगन्धितृण विशेष का मूल, नागरमुस्ता ।

नागरि तद्० } (स्त्री०) चतुर स्त्री, नगर की स्त्री ।
नागरिन् तद्० }

नागरी तद्० (स्त्री०) लिपि विशेष, एक प्रकार के अक्षर, संस्कृत अक्षर, शिक्षितों की लिपि, सभ्यों की लिपि ।

नागल तद्० (पु०) हल, जिससे खेत जोता जाता है, लाङ्गल।

नागा दे० (पु०) नग्न, संन्यासियों की एक शाखा।

नागाह्वा तत्० (स्त्री०) नागदौन, महुआ।

नागारि तत्० (पु०) [नाग+अरि] गरुड़, नागशत्रु, वैनतेय, मयूर, मोर।

नागार्जुन तत्० (पु०) सहस्रबाहु, कार्तवीर्य, इसी महाप्रतापी राजा को परशुराम ने मारा था।

नागिन } तद्० (स्त्री०) नाग की स्त्री, सर्पिणी,
नागिनी } साँपिन।

नागोजीभट्ट तद्० (पु०) एक संस्कृत वैयाकरण का नाम, ये काशीनिवासी महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम शिवभट्ट और माता का नाम सती था। ये शृङ्गवेरपुर (सिंगरौर) के राजा रामसिंह के आश्रित थे। इन्होंने बहुत ग्रन्थ रचे हैं। परिभाषेन्दुशेखर, लघुशब्देन्दुशेखर बृहन्मञ्जूषा, लघुमञ्जूषा आदि व्याकरण के ग्रन्थ प्रायश्चित्तेन्दुशेखर, तीर्थेन्दुशेखर आदि शेखरान्त धर्मशास्त्र के बारह ग्रन्थ तथा बहुत से ग्रन्थों की टीका इनकी बनाई हुई हैं। कहते हैं सोलह वर्ष तक ये कुछ नहीं पढ़ते थे, पीछे किसी के उपदेश से इन्होंने वागीश्वरी के मन्त्र का जप किया, जिससे इनकी असीम शास्त्रक्षमता हुई। विद्वान् इनका समय १७वीं सदी स्थिर करते हैं।

नागोद दे० (पु०) छाती पर रखने का कवच, उरस्त्राण।

नागौर दे० (पु०) एक नगर का नाम।

नाघना दे० (क्रि०) लांघना, पार जाना, पार उतरना, तरजाना, डाकना, डाक जाना, उतरना।

नाच दे० (पु०) नृत्य, नाट्य, नाचना।—नचाना (वा०) सताना, पीड़ित करना, दिकदिकाना, विवश करना।

नाचना दे० (क्रि०) नृत्य करना, नाच करना, कूदना।

नाचहिं दे० (क्रि०) नाचता है, नृत्य करता है, कूदता है।

नाचिकेता तत्० (पु०) प्रसिद्ध तपस्वी उद्दालक के पुत्र, एक समय महर्षि उद्दालक पूजन सामग्री नदी तीर पर छोड़कर चले आये। घर आकर उन्होंने अपने पुत्र नाचिकेता को उन सामग्रियों को लेने के लिए भेजा, परन्तु उन्हें वे वहाँ न मिलीं, अतएव नाचिकेता रीते हाथ चले आये, उनको देख पिता अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने कहा तुम यमराज का दर्शन करो। पिता के ऐसा कहते ही नाचिकेता गिर कर मर गये। उद्दालक की दशा बहुत होगई वह भी मूर्छित होगये। शव वहीं पड़ा था, दूसरे दिन देखा गया उस शव में कुछ चेष्टा होने लगी। उद्दालक ने अपने पुत्र को यह कह कर प्रणाम किया कि तुमने अपने प्रभाव से देवलोक का दर्शन किया है। तुम्हारा शरीर मनुष्य का शरीर नहीं है। पुनः नाचिकेता ने अपनी यात्रा का हाल वर्णन किया। कठोपनिषत् में नाचिकेता का वृत्तान्त दूसरे प्रकार से कहा गया है। वहाँ इनको राजपुत्र लिखा गया है।

नाज दे० (पु०) अनाज, अन्न, नखरा, घमण्ड, मान।

नाट दे० (पु०) वासा, वासस्थान, रहने की भूमि, कर्णाट, देश विशेष, नृत्य, नाच।

नाटक तत्० (पु०) गद्यपद्यमयकाव्य विशेष, रङ्गशाला में खेलने के उपयुक्त काव्य, दृश्यकाव्य का एक भेद। (गु०) नर्तक, नचवैया, नाचने वाला।

नाटन दे० (पु०) नर्तन, नांच, नाच करना।

नाटा दे० (गु०) ह्रस्वखर्व, ह्रस्वाकृति, ठिंगना, बवना, छोटे कद का।

नाटिका तत्० (स्त्री०) नाड़ी, दृश्यकाव्य विशेष, उपरूपक का एक भेद।

नाटी दे० (स्त्री०) छोटी, ठिगनी, छोटे कद की, ह्रस्वाकृति स्त्री।

नाटेय तत्० (पु०) नटी का पुत्र, वेश्या पुत्र।

नाद्य तत्० (पु०) नृत्य गीत और वाद्य, तौर्यत्रिक, नट समूह, नाद्य आरम्भ करने के नक्षत्र, यथा— अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती,

ज्येष्ठा, शतभिषा और रेवती ।—शाला (स्त्री०) नाट्य मन्दिर, नाच घर, अटारी के द्वार के समीप का घर ।

नाट्योक्ति तत्० (स्त्री०) [नाट्य+उक्ति] नाटक विषयक वाक्य ।

नाठ दे० (पु०) अभाव, नास्ति, शून्य, रहित, वर्जित ।

नाड़ दे० (स्त्री०) टोंटा, घाँटी, गरेटी, गला, गर्दन ।

नाड़िका तत्० (स्त्री०) एक घड़ी, आठ पल, घटिका, घड़ी ।

नाड़िमण्डल तत्० (पु०) स्वर्गीय रेखा विशेष, निरक्षदेश ।

नाड़ी तत्० (स्त्री०) धमनी, उदरस्थशिरा, हाथ की मुख्य नस, नली ।—तिक्त (पु०) औषध विशेष, चिरायता ।—धम (पु०) सोनार, स्वर्णकार । —मण्डल (पु०) नाड़ियों का समूह, नाड़ी समुदाय ।—ज्ञान (पु०) रोग परीक्षा, निदान ज्ञान । —व्रण (पु०) नसों का घाव, नासूर ।

नात दे० (पु०) सम्बन्ध, बिरादरी ।

नातर तद्० (अ०) नान्यतर, निश्चित, सन्देह रहित संशय शून्य ।

नाता दे० (पु०) सम्बन्ध, नाता, नातैती, अपनायत ।

नातिन दे० (स्त्री०) नतिनी, नवासी, पुत्री की पुत्री ।

नाती दे० (पु०) बेटी का बेटा, दोहता, दौहित्र । यथा:—

उत्तम कुल पुलस्त्य के नाती ।
शिव विरंचि पूजेहु बहुभाँती ॥

—रामायण ।

नाथ तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, नियन्ता, कर्ता, प्रतिपालक, नाक की रस्सी, जो दुष्ट बैल आदि को पहनाते हैं । एक सम्प्रदाय विशेष, गोरखनाथ का चलाया कनफटा सम्प्रदाय का दूसरा नाम नाथ सम्प्रदाय है । इनके अनुयायियों के नाम के अन्त में नाथ लगा दिया जाता है । यथा—गोरखनाथ, गम्भीरनाथ, मुछन्दरनाथ आदि ।

नाथवान् तत्० (पु०) पराधीन, प्रभु विशिष्ट, मालिक के साथ, सस्वामिक ।

नाथना दे० (क्रि०) सताना, पीड़ित करना, दुःख देना, नाक छेदकर नाथ पहनाना, नाथ पहनाने के लिए नाक छेदना ।

नाद तत्० (पु०) [नद+घञ्] ध्वनि, शब्द, गर्जन, अर्द्धचन्द्राकार का वर्ण, जिसका उच्चारण अनुस्वार के समान होता है । ब्रह्मस्वरूप विशेष । (दे०) मिट्टी का बर्तन, गमला ।

नादन तत्० (पु०) [नद्+णिच्+अनट्] शब्द करना, गर्जना, गर्ज्जन करना, ध्वनि करना, नाद करना, पुकारना, बुलाना ।

नादना दे० (क्रि०) आरम्भ करना ।

नादबिन्दु तत्० (पु०) बिन्दु सहित, अर्द्धचन्द्र, योगियों के ध्यान करने का तत्त्व ।

नादाहा दे० (पु०) पनाला, नाली, खाई, जल निकलने का मार्ग ।

नादित तत्० (पु०) क्वणित, ध्वनित, संजात शब्द ।

नाधना दे० (क्रि०) युक्त करना, जोतना, बैल को हल या गाड़ी खींचने के लिये जुए में लगाना ।

नाधा दे० (पु०) पानी निकालने का मार्ग, पाट या चमड़े की बनी रस्सी जिससे बैल जुए में जोते जाते हैं ।

नानक दे० (पु०) सिक्खों का गुरु, १४६६ ई० में ईरावती नदी के तीरस्थ पञ्जाब के तलवन्डी नामक गाँव में नानक का जन्म हुआ था । नानक के पिता का नाम कालू था । सात वर्ष की अवस्था में कालू ने अपने पुत्र को विद्यालय में पढ़ने के लिये भेजा। नौ वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र को यज्ञोपवीत देने के लिए कालु प्रबन्ध करने लगे, यह देख नानक ने अपनी असम्मति प्रकाशित करके कहा इस लौकिक यज्ञोपवीत से क्या लाभ परमात्मा का नाम उपवीत है । कालु सामान्य स्थिति के गृहस्थ थे, उन्होंने एक दिन कुछ पैसे नानक को बाज़ार से सामान ले आने के लिए दिये । परन्तु नानक ग़रीबों को पैसे बाँट कर घर लौट आये ।

उनके पिता ताड़ना देने लगे, उस समय नानक ने कहा कि मनुष्यों के साथ बेचने खरीदने में जो लाभ होता है। उससे अधिक लाभ ईश्वर के साथ बेचने खरीदने में होता है। उस समय नानक की अवस्था १५ वर्ष की थी। एक दिन नानक सोते थे, उनके पैर किसी देव मन्दिर की ओर थे। इससे लोगों को आश्चर्य हुआ, किसी के पूँछने पर नानक ने कहा जिधर मैं पैर फैलाऊँ उधर ही तेरा ईश्वर के मन्दिर हैं, इस प्रकार भावी सिख गुरु का हृदय धर्मभाव से पूर्ण था।

नानक एकेश्वरवादी थे। इन्होंने बड़े परिश्रम से अपना धर्म सम्प्रदाय प्रचरित किया था। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम "ग्रन्थसाहब" है। इस सम्प्रदाय के साधु उदासी कहे जाते हैं। नानक के हिन्दू और मुसल्मान दोनों शिष्य थे। लोग कहते हैं कि हिन्दू और मुसल्मान इन दोनों जातियों में प्रेम स्थापित करना ही नानक का उद्देश्य था। ४० वर्ष की अवस्था में ये शिष्यों के गुरु हुए। कहते हैं उनके मृत शरीर को मुसल्मान चेले कबर देना चाहते थे और हिन्दू जलाना। इसलिये दोनों में खूब झगड़ा हुआ, अन्त में देखा गया कि नानक का शरीर वहाँ नहीं था, इस कारण कफन को दो टुकड़े करके चेलों ने अपना अपना मनोरथ पूर्ण किया। —पन्थ दे० (पु०) सिख सम्प्रदाय, गुरु नानक प्रचारित धर्ममत, एकेश्वरवाद।—पन्थी दे० (पु०) गुरु नानक के सम्प्रदाय के अनुयायी, सिख।—शाही दे० (पु०) नानकपन्थी, अर्थात् सिख।

नाना तत्० (अ०) अनेकार्थक, उभयार्थ, विविध। (दे०) (पु०) मातामह, माता के पिता।—कार (पु०) [नाना+आकार] अनेक रूप के, विविध भाँति के।—कारण (पु०) भाँति भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु।—जातीय (पु०) अनेक प्रकार, अनेक तरह।—त्मा (पु०) [नाना +आत्मा] आत्मभेद, पृथक् पृथक् आत्मा।—ध्वनि (पु०) अनेक प्रकार के शब्द, विविध ध्वनि।—प्रकार (पु०) बहुत भाँति, अनेक रीति।—भाँति (पु०) भाँति भाँति, तरह तरह।—मत (पु०) भिन्न भिन्न मत, बहुविधि सिद्धान्त।—रूप (पु०) अनेक प्रकार।—र्थ (पु०) [नाना+अर्थ] अनेक अर्थ, बहुत अर्थ।—विधि (पु०) अनेक प्रकार, अनेक उपाय।—शास्त्रज्ञ (पु०) विविध विद्या विशारद, पटु शास्त्री।

नानी दे० (स्त्री०) मातामही, माता की माता।

नान्द दे० (पु०) मट्टी का बड़ा पात्र।

नान्दिया दे० (पु०) शिववाहन, वृषभ, धातुमयी शिववाहन की मूर्ति।

नान्दीमुख तत्० (पु०) श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म विवाह आदि उत्सव कृत्यों में किया जाता है। यथा.—

तब नान्दीमुख श्राद्ध करि जातकर्म सब कीन।
— रामायण।

नाप दे० (पु०) माप, परिमाण, तौल, वजन तौल।

नापना दे० (क्रि०) मापना, परिमाण करना, तौलना, जोखना।

नापित तत्० (पु०) नाई, क्षौरकार, बाल बनाने वाला, नाऊ।

नाभि तत्० (स्त्री०) पेट का मध्य स्थान, चक्र का मध्य, ढोंढी, नाभ।—जन्मा (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता।—वर्ष (पु०) भारत वर्ष, हिन्दुस्तान।

नाम तत्० (पु०) नाव, संज्ञा, अभिधान, यश, ख्याति, प्रसिद्ध।—करण (पु०) संस्कार विशेष, नाम रखना, जन्म के दसवें दिन यह संस्कार किया जाता है।—करना (वा०) प्रसिद्धि करना, यश फैलाना, विख्यात होना।—डुबोना (वा०) दुर्नाम करना, उपनाम करना।—देना (वा०) नाम रखना।—धरना (वा०) नाम रखना, नाम ठहराना।—धेय (पु०) संज्ञा, नाम। निकालना (वा०) नामी होना, यशस्वी होना।

—लेकर माँग खाना (वा०) दूसरे की प्रतिष्ठा से आप प्रतिष्ठित बनना, किसी प्रतिष्ठित से अपना सम्बन्ध बताकर धन कमाना।—लेना (वा०) स्तुति करना, मन्त्र का जप करना, स्मरण करना, स्मरण करते रहना।—होना (वा०) यश होना, कीर्ति बढ़ना प्रतिष्ठा बढ़ना।—शेष तद्० (पु०) नष्ट, मृत्यु प्राप्त, मृत, मरा हुआ।

नामाङ्कित तद्० (पु०) [नाम + अङ्कित] नाम-चिन्हित, नाम मुद्रित, खुदा हुआ नाम। (पु०) प्रसिद्ध, विख्यात, प्रतिष्ठित, यशस्वी।

नामावली दे० (स्त्री०) [नाम + अवली] देवनामाङ्कित उत्तरीय, रामनामी, नामश्रेणी, नामसूची, नामों की सूची।

नामी दे० (पु०) विख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी, कीर्तिमान्।—होना (वा०) प्रसिद्धि पाना, विख्यात होना।

नायक तद्० (पु०) [नी + णक] अग्रगण्य, नेता, श्रेष्ठ, अग्रगामी, प्रधान, हार के मध्य का मणि, माला का सुमेरु, सेनापति, अध्यक्ष, प्रेमाभिलाषी पुरुष, शृङ्गार साधक पुरुष।—यथा—दोहा "सकल सुघर सुन्दर सुकल काम कलानि प्रवीन, नायक सो मतिराम कहि कवित गीत रसलीन" —रसराज।

नायन दे० (स्त्री०) नाइन, नापित की स्त्री।

नायब दे० (पु०) प्रतिनिधि।

नायिका तद्० (स्त्री०) प्रेमासक्ता युवती, सामान्य वनिता सती, भगवती की एक शक्ति विशेष, शृङ्गार रस का आलम्बन। यथा दोहा—"उपजत जाहि विलोकि के चित्त बीच रसभाव, ताहि बखानत नायिका जे प्रवीन कविराय।" —रसराज।

स्वकीया परकीया और सामान्य भेद से नायिका तीन प्रकार की हैं। यथा:—

"स्वकीया, व्याही नायिका, परकीया परवास, सो सामान्या नायिका जाको धन सों काम" पुनः आठ अवस्था के भेद से इन प्रत्येक में आठ भेद होते हैं।

नायकी तद्० (स्त्री०) नायकी स्त्री, तीय, त्रिया, कुट्टनी, दूती, वेश्या, नर्तकी, नाचने वाली।

नार तद्० (पु०) नर समूह, बहुत मनुष्य। (दे० स्त्री०) स्त्री, लुगाई।

नारक तद्० (पु०) नरक सम्बन्धी, नरक में रहने वाले जीव।

नारकी तद्० (पु०) नरकस्थ, नरकवासी, नरकभोगी, पापी, दुराचारी, दुराचार।

नारङ्ग तद्० (पु०) फल वृक्ष विशेष, कागजी नीबू। संतरा, एक प्रकार का खटमिट्ठा फल।

नारद तद्० (पु०) देवर्षि, मुनि विशेष, नारद के विषय में श्रीमद्भागवत में इस प्रकार लिखा है। नारद वेदज्ञ ब्राह्मणों की एक दासी के पुत्र थे। बाल्यकाल में ये उन ब्राह्मणों की सेवा करते थे। ब्राह्मण भी इनसे बहुत प्रेम करते थे। एक दिन नारद ने ब्राह्मणों का उच्छिष्टान्न खा लिया, इससे उनका चित्त शुद्ध हो गया और वे हरिगुण गान करने लगे, इस समय उनकी अवस्था पाँच वर्ष की थी। इसके कुछ ही दिनों के बाद साँप के काटने से इनकी माता का वियोग हुआ। अब नारद स्वाधीन हो गये। आश्रम छोड़ कर उत्तर दिशा की ओर वे प्रस्थित हुए। घूमते घूमते यह एक जङ्गल में पहुँचे। भूख प्यास से सताये हुए वे ही एक तालाब में स्नान जलपान करके उसीके तीर पर एक बड़ के पेड़ की छाया में बैठ गये और भगवान् का स्मरण करने लगे। भगवान् ने उनको हृदय में दर्शन दिया। परन्तु नारद भगवान् का दर्शन बहुत समय तक नहीं कर सके। इससे नारद को बड़ा कष्ट हुआ। भगवान् ने नारद को आकाशवाणी द्वारा समझाया। नारद, इस जन्म में तुम हमारा सतत दर्शन नहीं कर सकते, हमने तुम्हारी अनुरागवृद्धि के लिये ही तुमको दर्शन दिया है। तुम साधु सेवा करो, उसीसे तुम हमारे पास आ सकते हो। इसके अनन्तर नारद इस शरीर को छोड़ परमधाम पहुँचे। पुनः युगसृष्टि के समय नारद मरीचि भृगु आदि ब्रह्मा के मानस पुत्र हुए। ब्रह्मवैवर्त पुराण में नारद को ब्रह्मा का पुत्र बतलाया है।

नारविवार दे० (पु०) भिल्ली, खेती।
नारा दे० (पु०) नाला, लाल धागा, मौली, कमरबन्द, पाजामा में लगाने वाला सूत।
नाराच तत्० (पु०) लौहमय बाण, विशिख, तीर।
नाराज दे० (पु०) क्रोध, कोप, क्रोधजनित दुःख, धनाह्लादित, असन्तुष्ट।
नारायण तत्० (पु०) विष्णु, (नर देखो) संस्कृत का एक ज्योतिषी, इन्होंने मुहूर्तमार्तण्ड नामक ज्योतिष का एक ग्रन्थ संस्कृत में लिखा है और मार्तण्डवल्लभा नामक उसकी टीका भी आप ही ने लिखी है। पण्डित सुधाकर द्विवेदी के मत से इन ग्रन्थों का निर्माणकाल सन् १५७१-१५७२ ई० है, नारायण ने भी अपने ग्रन्थ में यही अपना समय लिखा है। मुहूर्तमार्तण्ड के अन्त में इन्होंने अपना कुछ परिचय दिया है, जो यह है। इनके पिता का नाम अनन्त था। देवगिरि से कुछ दूर पर टापर नामक गाँव में ये रहते थे। इनका समय १६ वीं, शताब्दी मानना ही उचित है। —तैल (पु०) औषध विशेष, पका हुआ तेल। —बलि (स्त्री०) मृत पतितों के उद्धार के लिये प्रायश्चित विशेष।
नारायणी तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, नारायण की स्त्री, दुर्गा, गङ्गा, मुद्गल मुनि की पत्नी, शतावरी, शतावर, नारायण सम्बन्धिनी ज्योति विशेष।
नारि दे० (स्त्री०) नारी, अबला, नाड़ी, कपड़े बुनने के समय जिसमें सूत रखा जाता है। बाँस का टुकड़ा, जिसमें मट्ठा आदि भर कर बछड़ों या बैलों को दिया जाता है।
नारिकेर, नारिकेल तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध फल विशेष, नारियल, श्रीफल।
नारियल दे० (पु०) नारिकेल फल।
नारी तत्० (स्त्री०) पुरुष धर्मयुक्ता स्त्री, स्त्री, अबला, महिला, ललना, कुटुम्बिनी।—दूषण (पु०) स्त्रियों के मद्यपान कुसङ्ग आदि छः दोष यथा पान (नशा आदि का) दुर्जन संसर्ग, विरह, घूमना (तीर्थयात्रा आदि) परगृह में और वास ये छः नारियों [illegible] —धर्म (पु०) स्त्रियों का धर्म, पति सेवा पुत्रपालन आदि। पतिव्रता धर्म, मासिक होना, रजोदर्शन।
नारु दे० (पु०) (देखो नहारुआ)।
नाल तत्० (पु०) कमल आदि की डंठी, हरिताल नाड़। (दे०) फोंफी, नस, नली, नल के आकार की बनी हुई वस्तु, घोड़ा बैल आदि के खुर में जड़ी जाने वाली वस्तु, जो लोहे की बनी हुई होती है।
नालकी दे० (स्त्री०) शिबिका, पालकी, यानविशेष जिसे मनुष्य ढोते हैं।
नाला दे० (पु०) जल निकलने का मार्ग, मोरी पनाला।
नालायक दे० (पु०) अनुपयुक्त, अयोग्य, भोंदू।
नालिक तत्० (पु०) आग्नेयास्त्र, बन्दूक, भुशुण्डी।
नालिसिदुक दे० (पु०) समालु।
नाली दे० (स्त्री०) छोटा नाला, मुहारी, मुहरी।
नाव तद्० (स्त्री०) नौ, नौका, तरनी, डोंगी बोट।
नावना दे० (क्रि०) नमन, नवना, झुकना, प्रणत होना।
नावरि दे० (स्त्री०) निवारा, जलक्रीड़ा, नाव पर जलक्रीड़ा, नाव भुवाना, नावफेरना।
नाविक तत्० (पु०) कर्णधार, माँझी, नाव खेने वाला, केवट, कैवर्त।
नाश तत्० (पु०) [नश् + घञ्] क्षय, ध्वंस, लय, क्षति, हानि, अपचय, अदर्शन।
नाशक तत्० (पु०) नाशकर्ता, ध्वंसक, क्षयकारी, क्षतिकर, हानिकर्ता।
नाशन तत्० (पु०) [नाश + अनट्] ध्वंसकरण, हनन, मारण।
नाशपाति दे० (पु०) फल विशेष, शीत में उत्पन्न होने वाला फल।
[illegible] तत्० [illegible] + णिच् + क्त] ध्वंसित, [illegible]
[illegible] + णिच् + तव्य] नाश [illegible]

ास दे० (स्त्री०) नस्य, सुंघनी, हुलास, तमाकू का चूर्ण।—दानी (स्त्री०) नास रखने की डिबिया।

ासना दे० (क्रि०) भागना, पलाना, पीठ देना।

ासत्य तत्० (पु०) अश्विनी कुमार, देववैद्य।

ासमझ दे० (गु०) बुद्धिहीन, अबोध, अज्ञान, मूढ़, मूर्ख।

ासा तत्० (स्त्री०) [नस+घञ्+आ] नासिका, नाक, द्वारपर की लकड़ी, रोग विशेष, नाकड़ा, नासिकाद्वार पर निकला हुआ माँस।—सभेदन (पु०) नकछिंकनी घास।—ग्रामावर्त (पु०) नाम नासिका में पहनने के गहने, नथ, बेसर आदि। —मल (पु०) नाक का मैल।

ासिका तत्० (स्त्री०) घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा। —मल (पु०) नाक का मैल।

ासीर तत्० (पु०) अग्रसर, अग्रगामी, सेनापति के आगे चलने वाली सेना।

ास्ति तत्० (क्रि०) नहीं है, अविद्यमानता, अभाव।

ास्तिक तत्० (पु०) [नास्ति+ठक्] अनीश्वरवादी, ईश्वर नास्तित्ववादी, ईश्वर की सत्ता न मानने वाला, जो वेद का प्रमाण नहीं मानते हैं। पाखण्ड, चार्वाक, लौकायतिक।—ता (स्त्री०) नास्तिकंय कर्मफल आदि कुछ नहीं, इस प्रकार का ज्ञान, मिथ्या दृष्टि।—वाद (पु०) परलोक न मानने वाला सिद्धान्त।

ास्तित्व तत्० (पु०) अभाव, असम्भव, असत्व, शून्यता।

ास्य तत्० (गु०) नासिका में उत्पन्न होने वाला, रोग विशेष, बैल की नाक में लगाई जाने वाली रस्सी।

ाह दे० (पु०) स्वामी, मालिक, नाथ, पति।

ाहक दे० (पु०) व्यर्थ, बिना प्रयोजन का, मिथ्या, अन्याय, अयथार्थ, अनुचित।

ाहर दे० (पु०) व्याघ्र, बाघ, शेर, शार्दूल।

ाहल दे० (पु०) म्लेच्छों की एक जाति विशेष।

ाहिं दे० (अ०) नहीं, निषेध, अस्वीकारार्थक अव्यय।

नाहीं दे० (अ०) नहीं, न, मत, निषेध बोधक अव्यय।

नाहुषि तत्० (पु०) [नहुष+इञ्] राजा नहुष का पुत्र, राजा ययाति।

निः तत्० (अ०) उपसर्ग विशेष, निषेधार्थक, निश्चयार्थक, निवेश, भृशार्थक, अतिशयार्थक, संशय, आक्षेप, कौशल, उपरम, सामीप्य, आश्रय, दान-मोक्ष, अन्तर्भाव, बन्धन, विन्यास। यह उपसर्ग जिन शब्दों के पहले आता है उनको विपरीत कर देता है। यथा—निरुद्योगी, उद्योग शून्य।—कण्टक (गु०) सुखी, आनन्दी, बाधा रहित, निःशत्रु। —पाप (गु०) अदोष, पापरहित, निरपराध। —शङ्क (गु०) निडर, अभय, भयशून्य, साहसी। —प्रभ (गु०) प्रभाहीन, तेजहीन, दीप्ति रहित। —शब्द (पु०) नीरव, शब्दहीन, मौनी, वाक्य रहित, अवाक्।—शलाक (गु०) निर्जन, एकान्त, रहस्य, गोपन, गुप्तस्थान।—शेष (गु०) समाप्त, सम्पूर्ण, शेष रहित।—श्रेणी (स्त्री०) सीढ़ी, नसेनी, अधिरोहिणी, काष्ठमय सोपान। काठ की सीढ़ी।—श्रेयः (पु०) कुशल, शुभ, अनुभव, भक्ति, मोक्ष, मुक्ति, विद्या।—श्वसित (गु०) दीर्घनिश्वासी।—श्वास (पु०) प्राणवायु, प्रश्वास। —सङ्ग (गु०) सङ्ग रहित, सङ्गच्युत, वासनाहीन। —संशय (गु०) निःसन्देह, निश्चय, संशय रहित। —सन्देह (गु०) असंशय, निश्चय, ध्रुव। —सम्पर्क (पु०) असम्बन्ध, उदासीन।—सरण (पु०) उपाय, निकलना, निकलने का मार्ग, मृत्यु, निर्वाण, बहिर्गमन, निर्गमन, चरण, सरकना, झरना, चूना।—सहाय (गु०) सहायहीन, असहाय, एकाकी, अकेला, निरालम्ब, दुःखी, अनाथ।—सार (गु०) असार, सारहीन, तेजरहित, छूँछा, रिक्त, ख़ाली।—सारण (पु०) बहिष्करण, निर्गत करण, निकालना।—सृत (गु०) चरित, झरा हुआ, गिरा हुआ, निकला हुआ, निर्गत। —स्नेह (पु०) प्रेमशून्य, रूखा, निर्दय।—स्पृह (गु०) स्पृहाहीन, इच्छा रहित, अनिच्छुक। —स्व (गु०) दरिद्र, निर्धन।

निकट तत्० (गु०) समीप, अदूर, आसन्न, सन्निकृष्ट, उपकण्ठ, उपान्त, सन्निहित ।—वर्ती (पु०) निकटस्थ, समीपस्थ ।—स्थ (पु०) पास रहने वाला ।

निकन्द तद्० (गु०) निःस्कन्ध, स्कन्धरहित, उजड़ा ।

निकन्दन तत्० (पु०) निर्मूलन, उत्पाटन, उजाड़न।

निकम्मा दे० (गु०) निठल्ला, बिनाकाम का, निर्गुणी आलसी, शिथिल ।

निकर तत्० (पु०) [नि+कृ+अल्] समूह, राशि, सार, न्याय, देवधन, निधि, निश्चय, कररहित,

निकरना दे० (क्रि०) निकलना, निर्गत होना, बहिर्गत होना, निकसना ।

निकरम्ब तत्० (पु०) समूह यूथ, दल, गिरोह ।

निकल दे० (स्त्री०) निकास, निर्गम ।—चलना (धा०) बाहर हो जाना, भाग जाना, चला जाना, अधिक होना, हद के बोलना ।—पड़ना (क्रि०) बाहर आना, तैयार होना ।

निकलना दे० (क्रि०) निकसना, निःसृत होना, आगे जाना, भागना, भाग उठना ।

निकसना दे० (क्रि०) निकलना ।

निकषा तत्० (स्त्री०) राक्षस माता । (अ०) निकट, समीप, अन्तिक ।

निकाना दे० (क्रि०) बोये हुए खेत से घास निकालना, निराना, सोहनी करना ।

निकाम तद्० (गु०) निष्काम, जिसको किसी बात की इच्छा शेष न हो, इच्छारहित, निस्पृह, कामनारहित ।

निकाय तत्० (पु०) [नि+चि+घञ्], निलय, निवास, लक्ष्य, सधर्मिप्राणि समूह, समूहों की एकता, परमात्मा ।

निकार तत्० (पु०) [नि+कृ+घञ्] अपकार, धिक्कार, निन्दा, अनादर ।

निकारना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर करना, घुसने न देना, निषेध करना, अस्वीकार करना ।

निकाल दे० (पु०) निसार, निकास, बाहर आना, बचने की युक्ति, उपाय, जोड़ तोड़ ।—डालना (धा०) बाहर कर देना, स्थानान्तरित करना। पृथक् करना ।—देना (धा०) उघारना, बाहर करना, अलगाना ।—लाना (धा०) बचा लेना, दूर निकालना ।—लेना (धा०) उखाड़ देना, खींच लेना, काढ़ लेना ।

निकालना दे० (धा०) उखाड़ना, उतारना, प्रकट करना, काढ़ना ।

निकास दे० (पु०) निकाल, निकलने का मार्ग, द्वार कगार, गाँव का परिसर, नगर के आस पास का भाग ।

निकासना दे० (क्रि०) निकालना, बाहर कर देना।

निकासी दे० (स्त्री०) कर, महसूल, गाँव से निकलने का मासूल, निकलने का आज्ञापत्र, परवाना ।

निकासू दे० (गु०) निकाला हुआ, निष्कासित बहिष्कृत ।

निकास्ता दे० (पु०) थूनी, थम्भला, स्तम्भ, खम्भा, थाम ।

निकुच दे० (पु०) बड़हल ।

निकुञ्ज तत्० (पु०) लता, गुल्मयुक्त स्थान, निबिड़ स्थान, लताच्छादित स्थान, क्रीड़ा स्थान, कुञ्ज ।—विहारी (पु०) श्रीकृष्ण ।

निकुटी तत्० (स्त्री०) छोटी इलायची ।

निकुम्भ तत्० (पु०) दैत्य विशेष, यह दैत्य श्रीकृष्ण के हाथों से मारा गया था (२) कुम्भकर्ण का पुत्र, यह रावण का मन्त्री था । लङ्का के युद्ध में यह मारा गया था इसके भाई का नाम कुम्भ था ।

निकुम्भिला तत्० (स्त्री०) राक्षसों का देवघर, मेघनाद का यज्ञस्थान ।

निकृष्ट तत्० (गु०) [नि+कृष्+क्त] अधम, नीच, निन्दित, अवज्ञात, तुच्छ ।—ता (स्त्री०) मन्दता कदराई, अधमता, नीचता, निचाई ।

निकेतन तत्० (पु०) गृह, आलय, आगार ।

निक्कि दे० (स्त्री०) सोने तौलने का छोटा तराजू, काँटा ।

निकोसना दे० (क्रि०) खोसना, खिसियाना, दाँत दिखाना, अपमान करना।

निक्वाण तत्० (पु०) वीणाशब्द, सितार आदि का शब्द।

निक्षिप्त तत्० (गु०) [नि + क्षिप् + क्त] त्यक्त, अर्पित, न्यस्त, स्थापित, बन्धक रखा हुआ, थाती।

निक्षेप तत्० (पु०) [नि + क्षिप् + घञ्] क्षेपण, फेंकना, त्याग, समर्पित वस्तु, रखा हुआ धन, उपनिधि, न्यास, समर्पण, स्थापन, थाती, गिरो।

निक्षेपक तत्० [नि + क्षिप् + अक्] स्थापनकर्त्ता, समर्पक, न्यास रखने वाला, थाती धरने वाला, गिरो रखने वाला, त्यागकर्त्ता।

निक्षेपण तत्० (पु०) [नि + क्षिप् + अनट्] स्थापन, समर्पण, त्याग करण।

निखट्टू दे० (गु०) आलसी, निकम्मा, निठुर, निर्दय, कठोर, उड़ाऊ, लुटाऊ।

निखण्ड दे० (गु०) मध्य, बीच, बीच का भाग, माँझ, मझारी।

निखनन तत्० (पु०) [नि + खन + अनट्] खोदना, खनना, फाड़ना।

निखरना दे० (क्रि०) श्वेत होना, साफ़ होना, चमकना, उजला होना, स्थिर होना, थिराना, छिलका उतारना।

निखराना दे० (क्रि०) थिराना, साफ़ कराना, चमकना, उजला होना।

निखर्व तत्० (पु०) संख्या विशेष, दशखर्व संख्या, दश हज़ार कोटि, १००००००००००००।

निखात तत्० (पु०) [नि + खन + क्त] गर्त्त, परिखा, गढ़ा, खाईं।

निखारना दे० (क्रि०) उजला करना, साफ़ करना, कपड़े धोना।

निखिल तत्० (गु०) समग्र, समस्त, समुदाय, सकल, अखिल, सब, सर्व।

निखोट दे० (गु०) सीधा, सरल, उदार, साधु, खोट रहित, छल कपट शून्य।

निखोड़ना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, छिलका निकालना।

निगड़ तत्० (पु०) लोहनिर्मित शृङ्खला, बेड़ी, पैकड़ी, काठ।

निगड़ित तत्० (गु०) [निगड़ + इत] बँधा हुआ, बद्ध, बेड़ी पहनाया हुआ।

निगद तत्० (पु०) [नि + गद + अल्] कथन, भाषण, कहना, औषधि विशेष।

निगदित तत्० (पु०) [नि + गद् + क्त] कथित, भाषित, उल्लेख किया हुआ, उक्त, वर्णित, कहा हुआ।

निगत दे० (गु०) नङ्गा, लङ्गटा, नग्न, दिगम्बर।

निगन्दना दे० (क्रि०) तागना, टाँकना, सीना, पिरोना।

निगन्दाई दे० (स्त्री०) सीने का काम, सीना।

निगम तत्० (पु०) [नि + गम + अच्] शास्त्र विशेष, वेद की शाखा, नगर ग्राम आदि, वाणिज्य, पुरी, वेद, बाजार की राह, निश्चय मार्ग।—ज्ञ (पु०) निगमशास्त्रवेत्ता, निगमशास्त्रज्ञाता, निगमवित्त।—नदी (स्त्री०) भागीरथी, गङ्गानदी।—निवासी (पु०) वेदों में निवास करने वाला, विष्णु, ब्रह्मा।

निगलना दे० (क्रि०) घूँटना, लीलना, गले उतार जाना, खा जाना, गट कर जाना।

निगाली दे० (स्त्री०) हुक्का पीने की नली।

निगुण तद्० (गु०) निर्गुण, गुणशून्य, गुण रहित।

निगूढ़ तत्० (गु०) [नि + गुह + क्त] दुर्ज्ञेय, अप्रकाश्य, गुप्त, लुका हुआ, छिपा हुआ, अति कठिन, अप्रकट।

निगोड़ा दे० (पु०) अकर्मी, दुराचारी, दुष्कर्मी।

निग्गर दे० (गु०) ठोस, दृढ़, पोढ़।

निग्रह तत्० (पु०) [नि + ग्रह + अल्] ताड़ना, प्रहार, यन्त्रणा, क्लेश, बन्धन, सीमा, चिकित्सा, इन्द्रियादि दमन, शासन।

निग्रहण तत्० (पु०) [नि+ग्रह+अनट्] पराजय, आक्रमण, विरोध, कलह, युद्ध, मानखण्डन, हठ, बन्धन, घुड़की, धमकी, रोष, कोप, क्रोध।

निग्राही तत्० (पु०) [नि+ग्रह+णिनि] क्लेशदायक, निग्रहकर्ता, दण्डदायक।

निघटत दे० (क्रि०) निघटते ही, न्यून होते ही, कम होते ही।

निघटना दे० (क्रि०) घटना, कम होना, न्यून होना।

निघटाना दे० (क्रि०) घटवाना, कम कराना।

निघटी दे० (क्रि०) घटी, घट गई, कमती हुई।

निघण्ट तद्० (पु०) निघण्ट, कोश, अभिधान, नाम-संग्रह।

निघण्टु तत्० (पु०) अभिधान, नामकोष।

निघरघटा दे० (पु०) दुलखाना, धृष्टता करना, ढूकता करना, ढिठाई करना।

निघ्न तत्० (गु०) अधीन, वशीभूत, निष्ठ, आयत्त।

निचय तत्० (पु०) [नि+चि+अल्] संघ, गण, समूह, दल, यूथ।

निचिन्त तद्० (गु०) निश्चिन्त, चिन्ताशून्य, बेफिक्र, अशोच, अचिन्त, शोक रहित।

निचिन्ताई दे० (स्त्री०) अनवधानता, असवधानी, प्रमाद।

निचित होना दे० (वा०) निबटना, अवकाश पाना, अपना काम पूरा करना।

निचाई दे० (स्त्री०) नीचता, अधमता, तुच्छता, कुटिलता, ओछापन, नीचापन।

निचोड़ दे० (पु०) सार, निष्कर्ष, निष्पत्ति, आशय।

निचोड़ना दे० (क्रि०) दबाना, गारना, चूस लेना, कपड़े से पानी निकालना।

निचोड़ (गु०) लुटेरा, लोभी, घातक।

निछावर दे० (स्त्री०) उतारा, हर्षदान, किसी प्रिय के लिये दान।

निछिद्र तत्० (गु०) छिद्रहीन, रन्ध्रशून्य, सर्वाङ्ग सम्पूर्ण।

निज तत्० (गु०) [नि+जन्+ड] स्वीय, स्वकीय, आत्मीय।—तन्त्र (गु०) स्वाधीन स्वतन्त्र। —मतावलम्बी (गु०) आत्म मतावलम्बी, अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला।—स्व (पु०) स्वकीय धन, अपने अधिकार का धन।

निजखाल दे० (पु०) निर्विवाद, कलहशून्य, निरापद, निश्चिन्त।

निझरिक दे० (स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता, योग्यता।

निझाना दे० (क्रि०) निरखना, झाँकना, ठहराना, बुझाना, निर्वापित होना, अग्नि का बुझाना।

निझोटना दे० (क्रि०) खसोटना, झटकना, झाड़ना, बुहारी, काढ़ना, झारना, साफ़ करना।

निझोल दे० (गु०) झोल रहित, कसा हुआ, सुडौल।

निटिलाक्ष तत्० (पु०) [निटिल+अक्ष] शिव, महादेव, शम्भु।

निठल्ला दे० (पु०) निकम्मा, आलसी।

निठुर तद्० (गु०) निष्ठुर, कठोर, कठिन हृदय, निर्दय, स्नेहशून्य, बिन प्रीति।—ता (स्त्री०) निर्दयता, कठिनता, कड़ाई।

निठुराई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, हृदय की क्रूरता।

निडर दे० (गु०) निर्भय, निःशङ्क, भयशून्य, अशङ्क, धृष्ट।

निढाल / निढोल दे० (गु०) ज्ञानशून्य, जड़, स्थावर, अचल।

नित दे० (अ०) नित्य, प्रतिदिन, सदा, सर्वदा। —उठ (अ०) प्रति दिन उठकर, नियमित, सदा, निरन्तर।—नव (गु०) नित्य नया, प्रति दिन नया, नित्य नित्य, दूसरा।—नित (अ०) दिन दिन, प्रति दिन।—प्रति (अ०) नित्य, प्रतिदिन, सतत, सदा, सर्वदा।

नितम्ब (पु०) स्त्रियों के कटि के पीछे का भाग, चूतड़, पुट्ठा, कूल्हा, पर्वत का प्रान्त भाग।

नितम्बिनी तत्० (स्त्री०) [नितम्ब+इन्+ई] प्रशस्त नितम्ब विशिष्ट स्त्री, अबला, नारी, कामिनी।

नितान्त तत्० (पु०) अतिशय, अत्यन्त, अधिक (गु०) एकान्त, अवश्य, अतिशय विशिष्ट ।

नित्य तत्० (गु०) कालत्रयव्यापी, तीनों काल में रहने वाला, शाश्वत, ध्रुव, सनातन, जिसका कभी नाश न हो। (पु०) समुद्र, स्थिर, निश्चित, जन्म मृत्यु रहित, सदातन, सनातन, प्रतिदिन। सतत, अनारत, अश्रान्त, अनिश, अजस्र।—कर्म (पु०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य कर्म, प्रतिदिन अनुष्ठेय कर्म, आवश्यक क्रिया। प्रात्यहिक व्यापार। —कृत्य (पु०) नित्यकर्म।—क्रिया (स्त्री०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य कर्म, प्रात्यहिक व्यापार। —गति (पु०) वायु, अनिल, पवन।—ता (स्त्री०) चिरकालीनत्व, सनातनता।—दान (पु०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य दान।—नैमित्तिक (पु०) नित्य और नैमित्तिक कर्म, सन्ध्योपासन और ग्रहण स्नानादि।—प्रलय (पु०) चतुर्विध प्रलयान्तर्गत, प्रलय विशेष, जीव का प्रतिदिन का नाश।—मुक्त (गु०) क्रियावाद् धर्मनिष्ठ, चिरमुक्त, जीवन्मुक्त। —यौवन (गु०) स्थिर यौवन, सदा युवा रहने वाला।—यौवना (स्त्री०) स्थिर यौवना, चिरयौवना, द्रौपदी, कुन्ती आदि।—शः (अ०) प्रत्यह, अनवरत, सदा, सर्वदा।—सम (पु०) निर्विकार, अप्रशस्त उत्तर।

नित्यानित्यविवेक तत्० (पु०) नित्य और अनित्य वस्तु का विचार।

नित्यानन्द तत्० (पु०) सदानन्द, जिसका आनन्द सर्वदा वर्तमान रहे। अद्वैत के गोस्वामी वंश के आदि पुरुष, ये पहिले संन्यासी हो गये थे, परन्तु पीछे किसी कारण से गृहस्थ हो गये थे, ये चैतन्य महाप्रभु के साथी थे।

निथम्भ दे० (पु०) स्तम्भ, खम्भा, पीलपाया।

निथरा दे० (पु०) स्वच्छ हुआ जल, मिट्टी के बैठ जाने से निर्मल जल।

निथारना दे० (क्रि०) निखारना, साफ करना, स्वच्छ करना, टारना।

निदग्धिका तत्० (स्त्री०) श्वेत, छोटी कटाई।

निदरहिं दे० (क्रि०) निन्दा करते हैं, नहीं मानते, प्रतिष्ठा नहीं करते।

निदरना दे० (क्रि०) निन्दा करना, अपमान करना।

निदरि दे० (अ०) निरादर करके, अपमान करके, निन्दा करके।

निदर्शन तत्० (पु०) [नि+दृश+अनट्] दृष्टान्त, उदाहरण।—पत्र (पु०) दृष्टान्तपत्र।—मुद्रा (स्त्री०) प्रतिष्ठामुद्रा, मान सूचक मुद्रा।

निदर्शना तत्० (स्त्री०) [निदर्शन+आ] काव्यालङ्कार विशेष, इसका लक्षण इस प्रकार है। यथाः—

> सदृश वाक्य जुग अरथ को, करिये एक अरोप।
> भूषन ताहि निदर्शना, कहत बुद्धि दे ओप॥

(उदाहरण)

दोहा।

> औरनि को जो जनम है सो जाको एक रोज।
> औरनि को जो राज सो, सिवसर्जा की मौज॥
> साहिन सों रन माँहि कै कीनो सुकवि निहाल।
> सिव रस जाको ख्याल है, औरनि को जञ्जाल॥
>
> —शिवराज भूषण।

निदाघ तत्० (पु०) ग्रीष्मकाल, उष्ण, घर्म।—कर (पु०) सूर्य, दिवाकर।—काल (पु०) ग्रीष्मऋतु, तपति का समय, ज्येष्ठ और अषाढ़ का महीना।

निदान तत्० (पु०) मूल कारण, आदि कारण, कारण, रोग निर्णय, रोग का मूलानुसन्धान, वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम (अ०) अन्त में, पीछे, निष्कर्ष, सारांश।

निदिध्यासन तत्० (पु०) [नि+ध्यै+सन्+अनट्] पुनः पुनः स्मरण, परमार्थ चिन्ता विशेष।

निदेश तत्० (पु०) [नि+दिश्+अल्] आज्ञा, आदेश, अनुमति, नियोग, कथन, कथा, अनुशासन। यथाः—

> "कीन्हेसि मोर निदेश निमेह।
> देउ दबाय नागतर पेहु।"
>
> —प्रह्लाद चरित्र।

निद्रा तत्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, मनुष्य की एक अवस्था, मेध्या नामक नाड़ी से मन का संयोग, सुषुप्ति की अवस्था, शयन, सोना।

निद्रालु तत्० (गु०) निद्राशील, निद्रायुक्त, सोने वाला, सुवैया ।

निद्रित तत्० (गु०) प्राप्तनिद्रा, निद्रागत, सोयाहुआ, शयित ।

निधड़क दे० (गु०) निर्भय, निडर अशङ्क, साहसी, उद्योगी उत्साही, (अ०) अचानक, सहसा, एकाएक, अकस्मात् ।

निधन तत्० (गु०) धनहीन (पु०) मृत्यु, मरण नाश, ध्वंस ।—ता (स्त्री०) कगाली, दरिद्रता, निर्धनता ।

निधान तत्० (पु०) निधि, आधार, पात्र, स्थापन, खजाना ।

निधि तत्० (स्त्री०) कुबेर का भाण्डार, सम्पत्ति रत्न विशेष, आधार, समुद्र, माबड ।—जात (पु०) समुद्र से उत्पन्न रत्न आदि ।—नाथ (पु०) कुबेर, धनाधिप ।—प्रभु (पु०) कुबेर, अधीश, स्वामी, राजा ।—सुता (स्त्री०) लक्ष्मी ।

निनाद तत्० (पु०) [नि + नद् + घञ्] शब्द, रव, गर्जन, ध्वनि ।

निनादित तत्० (गु०) [नि + नद् + णिच् + क्त] ध्वनित, शब्दित ।

निनाया दे० (पु०) खटमल, मत्कुण, उद्भिज, कृमि विशेष ।

निनायी दे० (पु०) रोग विशेष, मुख का एक रोग ।

निनावा दे० (पु०) छाला रोग ।

निनीषा तत्० (स्त्री०) [नी + सन् + आ] ग्रहणेच्छा, लेने की इच्छा, ग्रहण करने का अभिलाष ।

निनीषु तत्० ग्रहणेच्छु, ग्रहण करने का अभिलाषी ।

निनेता तत्० (पु०) नायक, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, नेता ।

निन्दक तत्० (गु०) दूसरे का दोष ढूंढने वाला, परदोषानुसन्धानी वाला ।

निन्दकाई दे० (स्त्री०) निन्दकता, निन्दा करने का स्वभाव ।

निन्दना दे० (क्रि०) कलङ्क लगाना, दोष लगाना ।

निन्दनीय तत्० (गु०) निन्दा के पात्र, निन्दा के योग्य, गर्ह्य, निन्द्य ।

निन्दा तत्० (स्त्री०) कुत्सा, गर्हा, अपवाद, दुर्नाम अयश, मिथ्या, कलङ्क ।—स्तुति (स्त्री०) स्तुति, मृषावाद, मिथ्यास्तुति, अन्यथा स्तोत्र ।

निन्दास दे० (स्त्री०) ऊँघास, झपकी, निद्रालुता ।

निन्दासा दे० ऊँघासा, निन्द्रालु ।

निन्दित तत्० (गु०) उपेक्षित, अवज्ञात, जुगुप्सित, गर्हित, कुत्सित, अधम, दूषित, कलङ्कित ।

निन्द्य तत्० (गु०) निन्दनीय, हेय, तुच्छ ।—कर्म (पु०) कुत्सित कर्म, निन्दित काम ।

निन्नानवे दे० (गु०) नौ अधिक नब्बे, ९९ ।—के फेर में पड़ना (वा०) धन जोड़ने में लगना, कृपणता ।

निपट दे० (गु०) बहुत, अधिक अत्यन्त अतिशय ।

निपटना दे० (क्रि०) पूरा होना खतम होना समाप्त होना, सम्पूर्ण होना ।

निपटाना दे० (क्रि०) ठहराना, पूरा करना, समाप्त करना ।

निपटारा दे० (पु०) निबेरा, फैसला, निर्णय ।

निपटारू दे० (पु०) निबेरू, निर्णायक ।

निपतन तत्० (पु०) [नि + पत् + अनट्] अधःपतन, मरण, नष्ट होना, मारा जाना, नीचे गिरना ।

निपतित तत्० (पु०) पतित, च्युत, भ्रष्ट स्खलित, गिरा हुआ ।

निपात तत्० (पु०) मृत्यु, पतन, गिरना, मरण, नाश, निधन, अधःपतन, व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय को निपात कहते हैं ।

निपातक तत्० (पु०) नाशक, उजाड़ने वाला, गिराने वाला, ढाहने वाला ।

निपातना दे० (क्रि०) गिराना, ढाहना, नाश करना, मारना ।

निपातित तत्० (गु०) [नि + पत् + णिच् + क्त] अधःक्षिप्त, नीचे गिराया हुआ ।

निपान तत्० (पु०) कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिये बनाया हुआ जलकुण्ड, आहाव, कठरा, हौदी ।

निपीडन तत्० (पु०) [नि + पीड् + अनट्] मर्दन, व्यथा, पीड़ा देना, दुःख देना, मसलना ।

निपीड़ित तत्० (गु०) मर्दित, व्यथित, दुखित।

निपुण तत्० (गु०) कार्यक्षम, अभिज्ञ, पटु, योग्य, प्रवीण, कुशल, दक्ष।—ता (स्त्री०) कार्यक्षमता, योग्यता, प्रवीणता।

निपुणाई दे० (स्त्री०) बुद्धिमानी, चतुराई, कुशलाई, दक्षता।

निपूता दे० (गु०) पुत्रहीन, निःसन्तान, अपुत्री।

निपोड़ना दे० } (क्रि०) दाँत दिखाना, निकोसना,
निपोरना } निर्लज्जता की एक मुद्रा।

निफल तत्० (गु०) निष्फल, निरर्थक, फल रहित।

निबटेरा दे० (पु०) सफाई, निर्णय, छुटकारा।

निबड़ना दे० (क्रि०) हो जाना, समाप्त होना, सम्पूर्ण होना।

निबटना दे० (क्रि०) व्यय होना, खर्च होना।

निबन्ध तत्० (पु०) ग्रन्थ सन्दर्भ, ग्रन्थों की वृत्ति, स्थिर जीविका, रोग विशेष।

निबन्धन तत्० (पु०) ठहराव, पण, समय, शर्त, हेतु, कारण, निमित्त, वीणा आदि का ऊर्ध्वभाग।

निबन्धित तत्० (गु०) बद्ध, संगृहीत।

निबल तत्० (गु०) निर्बल, दुबला, दुर्बल, बलहीन, सामर्थ्यहीन।

निबाह तत्० (पु०) निर्वाह, पूरा करना, समाप्त करना, दिन काटना।

निबाहना दे० (क्रि०) पूरा करना, सिद्ध करना, योग्यता पूर्वक समाप्त करना, रक्षा करना।

निबाहू दे० (गु०) टिकाऊ, स्थायी, चिरस्थायी, बहुत दिनों तक ठहरने वाला।

निबेड़ना दे० (क्रि०) निपटाना, पूरा करना, चुकाना, साफ़ करना।

निबेड़ा दे० (पु०) निपटारा, निबटेरा, सफ़ाई।

निबेड़ि दे० (गु०) निबाहू, निपटाव।

निभ तत्० (गु०) तुल्य, सदृश, समान, प्रकाश।

निभना दे० (क्रि०) पार लगना, पार पड़ना, समाप्त होना, बन जाना।

निभाना दे० (क्रि०) निबाहना, पार करना, रक्षा करना।

निभृत तत्० (गु०) नम्र, विनीत, निर्जन, विरल, गुप्त, अव्यक्त, निश्चल, अस्तमित, एकान्त, रहस्य।

निम तत्० (पु०) शलाका, शंकु, सूची, कतरनी। (दे०) थोड़ा, न्यून, कम।

निमक दे० (पु०) लवण, नोन, लोन, नून।—हराम (गु०) अविश्वस्त, विश्वासघातक।

निमकी दे० (स्त्री०) अचार विशेष, नींबू का अचार।

निमकौड़ी दे० (स्त्री०) नीम वृक्ष का फल, निंबौरी।

निमन दे० (गु०) सुन्दर, दर्शनीय, मनोहर, मनोरम, रमणीय।

निमनाई दे० (स्त्री०) थोड़ाई, सुन्दरताई, अच्छापन।

निमनाना दे० (क्रि०) थोड़ा बनाना, सुन्दर करना, अच्छा बनाना।

निमन्त्रण तत्० (पु०) आमन्त्रण, आह्वान, आवाहन, नेवता, बुलाहट।

निमन्त्रित तत्० (गु०) नेवता गया, बुलाया गया, आहूत।

निमन्त्रयिता तत्० (गु०) आह्वानकर्ता, आमन्त्रण-कर्ता, आमन्त्रण भेजने वाला, यजमान या उत्सव-कर्ता जो आमन्त्रण भेज कर बुलाता है।

निमय तत्० (पु०) [नि + मि + अल्] विनिमय, परिवर्त्त, एक पदार्थ देकर दूसरा पदार्थ लेना, बदला।

निमि तत्० (पु०) सीता के पिता कुशध्वज जनक के पूर्वपुरुष, इनके पुत्र का नाम मिथि था और इनके नाम के अनुसार उस राज्य को भी मिथिला कहते हैं। मिथि के पुत्र का नाम जनक था। जनक के अनन्तर उनके वंशधर "जनक" इस उपनाम से परिचित होते थे। सीताजी के पिता का नाम जनक न था।

निमित्त तत्० (पु०) कारण, हेतु, निदान। (अ०) प्रयोजन, वास्ते, लिये।—कारण (पु०) प्रयोजन, हेतु, निमित्त, न्याय के मत से उत्पादक त्रिविध कारण के अन्तर्गत कारण विशेष।

निमीलन तत्० (पु०) [नि + मील + अनट्] मुद्रित करना, आँख मूँदना, आँख मीचना।

निमीलित तत्० (गु०) मुद्रित, मूँदा हुआ, बन्द हुआ।

निमेष तत्० (पु०) [नि + मिष् + अल] नेत्रों के पलक का स्पन्दन काल, पलक, अति सूक्ष्म काल, विपल, क्षण, लव।

निम्न तत्० (गु०) अध, नीचे, नीचे की ओर, नीचा-स्थान, गभीर, गढा, गर्त। —गा (स्त्री०) नदी, स्रोतस्विनी। —ता (स्त्री०) गम्भीरत्व, अधोगतत्व।

निम्ब तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वृक्ष विशेष, नीम का पेड़।

निम्बक तत्० (पु०) नीम का पेड़, नींबू।

निम्बरक तत्० (पु०) नीम या नीम का वृक्ष।

निम्बादित्य तत्० (पु०) एक वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य। इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया है। इनका निम्बादित्य नाम पड़ने का कारण सुनने में यह आता है कि ये किसी जैन साधु से शास्त्रार्थ करते थे। शास्त्रार्थ करते ही करते सन्ध्या हो गई। अब सन्ध्या होने के कारण जैन साधु तो भोजन कर ही नहीं सकता है, इसी असुविधा को मिटाने के लिये इन्होंने एक नीम के पेड़ पर सूर्य को रोक दिया और उस साधु से भोजन करने के लिये कहा। सूर्य देव तब तक उस पेड़ पर थे जब तक उस साधु ने भोजन नहीं कर लिया। यही कारण है कि इनका नाम निम्बादित्य या निम्बार्क पड़ा। इनके बनाये ग्रन्थ का नाम धर्माब्धिबोध है। इनका समय १०वीं सदी मानी जाती है।

निम्बू दे० (पु०) वृक्ष विशेष, नीबू, कागजी नीबू के वृक्ष, कागजी नीबू।

नियत तत्० (गु०) [नि + यम् + क्त] नियम विशिष्ट, नित्य, सर्वदा, निर्णीत, निर्दिष्ट, स्थिरीकृत, बद्ध दमित, शासित, निश्चित, नियुक्त, ठहराया हुआ। —मानस (गु०) प्रशान्त चित्त, जितेन्द्रिय।

नियतात्मा तत्० (गु०) [नियत + आत्मा] आत्मवशीभूत, वशी, यमी, व्रती।

नियताहार तत्० (गु०) [नियत + आहार] परिमित भोजन, मितभुक्, मिताशन, अल्पाहार।

नियति तत्० (स्त्री०) [नि + यम् + क्ति] नियम दैव, विधि, भाग्य, अदृष्ट, विधाता।

नियतेन्द्रिय तत्० (गु०) [नियत + इन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रियदमनशील, संयत शरीर, प्रशान्त चित्त।

नियन्ता तत्० (पु०) [नि + यम् + तृच्] शास्ता, शासनकर्ता, प्रभु, नियामक, सारथि नियम करने वाला, शासन करने वाला, रथवाह।

नियन्त्रित तत्० (गु०) संयमित, नियमित, निगृहीत, यन्त्रित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ, निवारण किया हुआ, रोका गया।

नियम तत्० (पु०) [नि + यम् + अप्] निश्चय, अवधारण, निर्णय, निरूपण, प्रकार, धारा, दमन, निरोध, योगी, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान इनको नियम कहते हैं। प्रतिज्ञा, अङ्गीकार, स्वीकार, उपवासादि व्रत कर्तव्य कर्म।

नियमन तत्० (पु०) [नि + यम् + अनट्] नियम, बन्धन, दमन, वारण, रुकावट, निवारण।

नियमशाली तत्० (गु०) [नियम + शाली] नियम युक्त, रीत्यानुयायी, नियमित कार्यकर्ता, नियम पूर्वक कार्य करने वाला।

नियमसेवा तत्० (स्त्री०) नियमपालन, कार्तिक मास में नियम पूर्वक भगवान् का आराधन।

नियमित तत्० (गु०) [नि + यम + क्त] कृतनियम, नियमबद्ध, निश्चित, विधिबद्ध।

नियर दे० (अ०) समीप, निकट, पास, नजदीक।

नियराई दे० (क्रि०) समीप आगई, निकटाई (स्त्री०) समीपता, निकटता।

नियराना दे० (क्रि०) पास आना, नगचाना, निकट आना, समीप पहुँचना।

नियरे दे० (अ०) समीप, समीप में, निकट में।

नियामक तत्० (पु०) नियमकर्ता, नियन्ता, निश्चायक, पोतवाहक, कर्णधार, नाविक।

नियाय तद्० (पु०) न्याय, धर्म, उचित व्यवहार।

नियार दे० (पु०) कहीं, घर, सेहना, बहू आदि को उनके पिता के घर से बुलाने के लिये दिन कहला भेजना।

नियारा दे० (गु०) पृथक्, अलग, न्यारा, असंबद्ध, धातु की खाद।

नियारिया दे० (पु०) सुनार, सुवर्णकार।

नियुक्त तद्० (गु०) [नि+युज्+क्त] नियोग विशिष्ट, नियोजित, जिसका नियोग किया जाय, जिस पर किसी कार्य का भार दिया जाय, आज्ञा प्राप्त, अवधारित, ज्ञात।

नियुत तद्० (गु०) [नि+यु+क्त] संख्या विशेष, दस लाख, १०,००००० ।

नियुद्ध तद्० (पु०) [नि+युध्+क्त] बाहुयुद्ध, मल्लयुद्ध, पहलवानों की कुश्ती।

नियोग तद्० (पु०) [नि+युज्+घञ्] अवधारण, आज्ञा, नियोजन, अनुमति, शासन, प्रेषण, भारार्पण, मनोनिवेश, प्रवृत्ति, निश्चय, अधिकार। —कर्ता (पु०) नियोग करने वाला, भार अर्पण-कर्ता। —धर्म (पु०) पति की मृत्यु होने पर पति के छोटे भाई से पुत्र उत्पन्न कराना। यह प्रथा कलियुग में वर्जित है।

नियोगी तद्० (गु०) नियोग विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञाप्राप्त, व्याप्त, किसी व्यापार में लगा हुआ।

नियोजन तद्० (पु०) [नि+युज्+अनट्] नियुक्त करना, प्रेरण, आदेशन, आज्ञा देकर किसी कार्य में लगाना।

नियोजित तद्० (गु०) नियुक्त, संयोजित, स्थापित, आदिष्ट, किसी कार्य में नियुक्त किया हुआ।

निर् तद्० (उपसर्ग) नहीं, विना, निश्चय, बाहर, बाहर, उचित।

निरङ्कार तद्० (गु०) निराकार, आकार रहित, आकार शून्य, प्राकृतिक आकार, मनुष्यों के आकार से रहित, (पु०) परमेश्वर, परमात्मा, विष्णु भगवान्।

निरङ्कुश तद्० (गु०) [निर्+अङ्कुश] बाधा शून्य, अनिवार्य, स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी, नियमनिरादर पूर्वक कार्यकर्ता।

निरखना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, निरीक्षण करना।

निरञ्जन तद्० (गु०) निष्कलङ्क, अञ्जन रहित, निर्मल, तेजोमय।

निरत तद्० (गु०) [नि+रम्+क्त] अतिशय, अनुरक्त, आसक्त, लगा हुआ, तत्पर, किसी कार्य में निरन्तर लगा हुआ।

निरति तद्० (स्त्री०) अप्रीति, अप्रेम, अस्नेह।

निरधार तद्० (पु०) निर्द्धार, निश्चय, निर्णय।

निरन्त तद्० (गु०) अन्त रहित, अन्त शून्य, अनन्त, अपार।

निरन्तर तद्० (गु०) निविड़, घन, अनवकाश, सर्वदा, अविच्छेद, अनवरत, असीम, अपरिधान, अभेद, सदृश, समान, सघन, सटा हुआ।

निरन्तरभ्यास तद्० (पु०) [निरन्तर+अभ्यास] स्वाध्याय, वेदाध्ययन, पठित शास्त्रों का अभ्यास।

निरन्तराल तद्० (गु०) [निर्+अन्तराल] अविच्छेद, निरवकाश, अवकाश शून्य।

निरन्न तद्० (गु०) [निर्+अन्न] अन्नाभाव, आहार-शून्य।

निरपत्य तद्० (गु०) [निर्+अपत्य] निःसन्तान, पुत्र कन्याविहीन।

निरपराध तद्० (गु०) [निर्+अपराध] अपराध शून्य, दोष रहित, निष्पाप, निर्दोष।

निरपाय तद्० (पु०) [निर्+अपाय] रक्षा, निर्विघ्न, अनुद्वेग।

निरपेक्ष तद्० (गु०) [निर्+अपेक्षा] स्वाधीन, अनपेक्ष, उदासीन, लापरवाह।

निरय तद्० (पु०) नरक, दुःख भोगस्थान।

निरर्गल तद्० (गु०) [निर्+अर्गल] अबाध, अप्रतिबन्धक, बेरोकटोक।

निरर्थक तत्० (गु०) [निर् + अर्थक] अनर्थक, अप्रयोजन, व्यर्थ, विफल।

निरस तद्० (पु०) नीरस, रसहीन, रसाभाव, शुष्क।

निरसन तत्० (पु०) [निर् + अस + अनट्] प्रत्याख्यान, निराकरण, खण्डन, निक्षेप, विसर्जन।

निरस्त तत्० (गु०) [निर् + अस् + क्त] प्रत्याख्यात, निराकृत, निवारित, हटाया हुआ, हराया गया।

निरस्त्र तत्० (गु०) [निर् + अस्त्र] अस्त्रशून्य।

निरा दे० (अ०) केवल, मात्र, असहाय, अन्य रहित, एकाकी।

निराकार तत्० (गु०) [निर् + आकार] आकार रहित, अशरीर। (पु०) आकाश, परमेश्वर, विष्णु, ब्रह्म, शिव।

निराकांक्षी तत्० (गु०) निस्पृह, सन्तुष्ट, शान्त।

निराचार तत्० (गु०) [निर् + आचार] अनाचार, आचारभ्रष्ट।

निरातङ्क तत्० (गु०) [निर् + आतङ्क] निःशङ्क, निर्भावना, निर्भय।

निरादर तत्० (गु०) [निर् + आदर] आदरहीन, अपमान, अप्रतिष्ठा।

निराधार तत्० (गु०) [निर् + आधार] आधार शून्य, अनाश्रय, आश्रय रहित, शून्यस्थित।

निरानन्द तत्० (गु०) [निर् + आनन्द] आनन्द रहित, आनन्द शून्य, दुःखी।

निरापद तत्० (पु०) [निर् + आपद] अनापद, निर्विघ्न।

निरामय तत्० (गु०) [निर् + आमय] रोग रहित, नीरोग, स्वस्थ।

निरामिष तत्० (गु०) [निर् + आमिष] आमिष शून्य, मांस रहित, व्रत विशेष।

निरायुध तत्० (गु०) [निर् + आयुध] आयुध रहित, निरस्त्र, अस्त्रशून्य।

निरालम्ब तत्० (गु०) [निर् + आलम्ब] अवलम्बन शून्य, अनाश्रय, विना आश्रय का।

निरालय तत्० (गु०) [निर् + आलय] उदाहरण आलय रहित, विना मकान, एकान्त, निर्जन, अनियतवास।

निरालस्य तत्० (गु०) [निर् + आलस्य] आलस्य शून्य, कर्मिष्ठ, उद्योगी।

निराला दे० (गु०) एकान्त, निर्जन स्थान, जन शून्य स्थान।

निरावना दे० (क्रि०) निराना, खेत से घास निकलना।

निराश तत्० (गु०) आशाहीन, बेभरोस, हताश।

निराश्रय तत्० (गु०) [निर् + आश्रय] आश्रय शून्य, निराश्र, निरालम्ब।

निरास तत्० (पु०) [निर् + अस् + घञ्] निराकरण, दूरीकरण, खण्डन, निक्षेप, त्याग।

निराहार तत्० (गु०) [निर् + आहार] अभोजन अनशन, भोजनाभाव।

निरिन्द्रिय तत्० (गु०) [निर् + इन्द्रिय] इन्द्रिय शून्य, इन्द्रिय रहित, अन्ध, पङ्गु प्रभृति।

निरीक्षण तत्० (पु०) [निर् + ईक्ष् + अनट्] अवलोकन, देखन, देखना, दर्शन, ईक्षण।

निरीक्षदेश तत्० (पु०) निरक्षदेश, देश विशेष, समता शून्य स्थान, पूर्व दिशा में भद्राश्ववर्ष में यमकोटि नामक स्थान। दक्षिण भारत में लङ्का, पश्चिम दिशा में केतुमालवर्ष में रोमकनामक स्थान, उत्तरकुरुवर्ष में सिद्धपुरी।

निरीश्वर तत्० (पु०) [निर् + ईश्वर] ईश्वराभाववादी, नास्तिक। —दर्शन (पु०) ईश्वर सत्ता न मानने वाले शास्त्र, साँख्य जैन आदि। —वाद (पु०) परमेश्वर की सत्ता न मानने वाला सिद्धान्त, नास्तिक सिद्धान्त।

निरीह तत्० (पु०) [निर् + ईहा] ईहा शून्य, निश्चेष्ट, निस्पृह, स्थिर, धीर, शिष्ट। वासना रहित, निरभिलाष, इस शब्द का प्रयोग निरपराध के अर्थ में करना अत्यन्त भूल है।

निरुक्त तत्० (पु०) वेदाङ्ग शास्त्र विशेष, इसमें वैदिक शब्दों के कई प्रकार के अर्थ लिखे गये हैं। यास्क मुनि विरचित एक ग्रन्थ का नाम।

निरुत्तर तत्० (गु०) [निर्+उत्तर] उत्तर हीन, अवाक्, उत्तर देने में असमर्थ।

निरुत्साह तत्० (गु०) [निर्+उत्साह] उत्साह हीन, निश्चेष्ट, जो कोई काम उत्साह पूर्वक न करे।

निरुत्सुक तत्० (गु०) [निर्+उत्सुक] अकुण्ठित, निरुद्वेग, अनाकुल, उत्सुकता रहित।

निरुद्योग तत्० (गु०) [निर्+उद्योग] उद्यम हीन, उद्यमाभाव विशिष्ट, निश्चेष्ट, निकम्मा, निकाम।

निरुपद्रव तत्० (गु०) [निर्+उपद्रव] उत्पात रहित, दौरात्म्यहीन, शान्त, अक्षुब्ध।

निरुपम तत्० (गु०) [निर्+उपमा] अतुल, उपमा शून्य, अनुपम।

निरुपाधि तत्० (गु०) [निर्+उपाधि] उपाधि हीन, अव्याज, अकपट, निर्मल, शुद्ध।

निरुपाय तत्० (गु०) [निर्+उपाय] उपाय रहित, निराश्रय।

निरूप तत्० (गु०) अवयवहीन, काल्पनिक, निराकार, अस्वरूप, अरूप।

निरूपण तत्० (पु०) [नि+रूप+अनट्] निर्णय करना, वितर्क करना, स्थिर करना, अवधारण।

निरूपित तत्० (गु०) [नि+रूप+क्त] कृतनिरूपण, निर्णय किया हुआ, विस्तार पूर्वक कथित, निर्णीत।

निरेखना दे० (क्रि०) निरीक्षण करना, देखना, ताकना, अवलोकन करना।

निरोग तत्० (गु०) रोग रहित, सुस्थ, आरोग्य।

निरोध तत्० (पु०) [नि+रुध्+अल्] वेष्टन, अवरोध, घेरा, फाँस।

निर्गत तत्० (गु०) [निर्+गम्+क्त] निस्सृत, निकला हुआ।

निर्गता तद्० (गु०) निकल कर।

निर्गन्ध तत्० (गु०) गन्धशून्य, गन्धहीन।

निर्गम तत्० (पु०) [निर्+गम्+अल्] वहिर्गमन, निःसरण।

निर्गमन तत्० (पु०) वहिर्गमन, बाहर जाना, निकलना, प्रस्थान करना, पलायन।

निर्गुण तत्० (पु०) त्रिगुणातीत, सत्व रज और तम इन तीन गुणों के अतीत, परमेश्वर, विद्या आदि सद्गुणों से शून्य।

निर्गुण्डी तत्० (स्त्री०) नीलशेफालिकापुष्प, पुष्प विशेष, एक औषध का नाम, संभालू।

निर्घण्ट तद्० (पु०) कोश, शब्दार्थ निरूपक पुस्तक, सूची।

निर्जन तत्० (गु०) एकान्त, जनशून्य, जनहीन, विजन, निभृत।

निर्जर तत्० (पु०) अमर देवता, देव। (गु०) अजर, जरा रहित।

निर्जल तत्० (गु०) जलशून्य देश आदि। मरुभूमि। —एकादशी (स्त्री०) जेठ की शुक्ला एकादशी।

निर्जित तत्० (गु०) प्राप्त पराजित, पराहत, पराजित, वशीभूत।

निर्जीव तत्० (गु०) जीवात्मा रहित, प्राणशून्य, मरा हुआ, मृत, दुर्बल, श्रान्त।

निर्झर तत्० (पु०) पर्वत से गिरने वाला जल प्रवाह, पहाड़ का झरना, सूर्य का घोड़ा।

निर्झरिणी तत्० (स्त्री०) नदी, स्रोतस्विनी।

निर्णय तत्० (पु०) निश्चय, अवधारण, स्थिरीकरण, विचार, तर्क, चर्चा, विरोध परिहार, सिद्धान्त। —कर्ता (पु०) निश्चयकर्ता, निर्णयकारक अवधारक।

निर्णीत तत्० (गु०) कृतनिश्चय, स्थिरीकृत।

निर्णेता तत्० (पु०) निश्चयकारक, अवधारणकर्ता।

निर्दय तत्० (गु०) निठुर, कठिन, दयाशून्य। —ता (स्त्री०) निठुरता, दयाशून्यता।

निर्दई दे० (स्त्री०) कठोर अन्तःकरण वाला, निर्दय, दयाहीन, दयाशून्य।

निर्दिष्ट तत्० (गु०) निरूपित, स्थिरीकृत, निश्चित, कथित।

निवर्तन तत्० (पु०) लौटाना, रोकना, वापस आना।

निवात कवच तत्० (पु०) दैत्य विशेष, यह दैत्य प्रह्लाद का पुत्र और दैत्यवंश हिरण्यकशिपु का पौत्र था। इसके वंशज दानव निवातकवच के नाम से प्रसिद्ध हैं। महाभारत में इनकी संख्या तीन कोटि लिखी हुई है। यह दानवों का दल देवों का प्रबल शत्रु है। पाण्डवों के वनवास के समय अर्जुन इन्द्र से अस्त्रविद्या सीखने के लिये स्वर्ग गये थे। इन्द्रादि देवों से और अस्त्र विद्या में निपुण यक्ष तथा गन्धर्वों से उन्होंने अस्त्रविद्या सीखी। अस्त्रविद्या की शिक्षा समाप्त होने पर अर्जुन से गुरुदक्षिणा देने के लिये इन्द्र ने कहा। जब अर्जुन ने गुरुदक्षिणा देना स्वीकार किया, तब निवातकवच राक्षसों का वध ही गुरुदक्षिणा में माँगा। मातली परिचालित दिव्य रथ पर चढ़कर निवातकवच राक्षसों के वासस्थान पर पहुँचे। उनके साथ अर्जुन का घोर युद्ध हुआ। उस युद्ध में निवातकवच का समूल विनाश हुआ। इन दानवों का वासस्थान रसातल में था।

निवान दे० (पु०) नीचान, गहराई निम्नता तला।

निवाना दे० (क्रि०) झुकाना, निहुराना, मोड़ना, दोहर करना।

निवार दे० (पु०) कोर, पट्टी, जिससे पलँग बिने जाते हैं।

निवारण तत्० (पु०) रोक, रुकावट, अटकाव, बाधा दूर करना, निवारना, हटाना, प्रशमित करना, उपाय मत करना।

निवारना दे० (क्रि०) रोकना, बचाना, बर्जना, हटाना, दूरकरना।

निवारत दे० (क्रि०) बचावत, बचाता है, रक्षा करता है, रोकता है।

निवारि दे० (क्रि०) बचाय कर, रोक कर, रक्षाकर।

निवारित तत्० (पु०) बचाया हुआ, रोका हुआ, रक्षित किया हुआ।

निवास तत्० (पु०) [नि+वस्+घञ्] वासस्थान, डेरा, मकान, जगह, घर, गृह, निलय।

निवासी तत्० (पु०) रहने वाला, बसने वाला, वासकर्ता।

निविड़ तत्० (पु०) सघन, घना, बहुत सटा हुआ एक से एक मिला हुआ।

निवुक दे० (क्रि०) निपट कर, अवकाश पाकर।

निवृत्ति तत्० (स्त्री०) अवकाश, बन्धन मुक्ति, विश्राम।

निवेदन तत्० (पु०) प्रार्थना, विनती, अभिप्राय प्रकाश, मनोरथ कथन।—पत्र (पु०) प्रार्थनापत्र।

निवेदित तत्० (पु०) अर्पित, अर्पित, समर्पित।

निशङ्क तत्० (पु०) शङ्का रहित, शङ्का शून्य, निर्भय, निडर, निःसन्देह, निःसंशय।

निशा तत्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, शर्वरी, यामिनी, रात, हरिद्रा, हल्दी।—कर (पु०) चन्द्रमा, विधु इन्दु।—गम (पु०) [निशा+आगम] रात्रि का आगम सन्ध्या, सन्ध्याकाल, साँझ।—चर (पु०) राक्षस, चोर, शृगाल, उल्लूक, उल्लू सर्प, चक्रवाक, चकवा पक्षी।—चरी (स्त्री०) राक्षसी, वेश्या, कुलटा।—टन (पु०) [निशा+अटन] उल्लूक, उल्लू।—न्त (पु०) [निशा+अन्त] रात्रि का अन्तकाल, प्रभात, प्रातःकाल, ब्राह्म मुहूर्त।—पति (पु०) चन्द्र, विधु शशधर, कर्पूर, कपूर।—वसान (पु०) [निशा+अवसान] रात्रि शेष, प्रभातकाल, उषा।

निशात तत्० (पु०) शाणित, तीक्ष्णीकृत, शान दिया हुआ।

निशान दे० (पु०) बड़ी ध्वजा, जो राजाओं का राजचिन्ह है।

निशि तत्० (स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।—चर (पु०) निशाचर, चन्द्रमा।—नाथ (पु०) चन्द्रमा, चाँद।—मुख (पु०) प्रदोष, सन्ध्याकाल।—भानु चन्द्रमा।

निशित तत्० (पु०) तीखा, तीक्ष्ण, पैना, पैनी।

निशीथ तत्० (पु०) अर्द्धरात्रि, आधीरात, रात्रि मध्य।

निशीथिनी तत्० (स्त्री०) रात, रात्रि, रजनी।

निशुम्भ तत्० (पु०) विख्यात दानव, यह कश्यप के औरस और उनकी पत्नी दनु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसके ज्येष्ठ भाई का नाम शुम्भ और छोटे का नाम नमुचि था। नमुचि को इन्द्र ने मारा था। छोटे भाई की मृत्यु से शुम्भ और निशुम्भ ये दोनों अत्यन्त क्रोधित हुए और इन दोनों महावीरों ने इन्द्र पर चढ़ाई की, देवताओं को स्वर्ग से निकाल कर ये स्वयं स्वर्ग के अधीश्वर बन बैठे। एक समय महिषासुर के मन्त्री रक्तवीज नामक प्रसिद्ध दानव से इनकी भेंट हुई। इन दोनों ने रक्तवीज से सुना कि विन्ध्य पर्वत पर कात्यायनी देवी के हाथ महिषासुर मारा गया और उसके सेनापति चण्ड और मुण्ड भय से जल में छिपे हुए हैं। इन्होंने कात्यायनी देवी का नाश करने के लिये सङ्कल्प किया, और चण्ड मुण्ड से भी साक्षात् किया। अब इन लोगों ने सुग्रीव नामक दूत को देवी के निकट भेजा। दूत देवी के निकट जाकर कहने लगा—पृथिवी में शुम्भ और निशुम्भ से बढ़ कर दूसरा वीर नहीं है और तुम भी इस संसार में सर्वोत्तम सुन्दरी हो, अतएव तुमको उचित है कि इन दोनों में जिससे चाहो तुम अपना विवाह कर लो। देवी ने कहा—तुम जो कहते हो वह बहुत ठीक है परन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है कि जो युद्ध में मुझ को हरा देगा उसीसे मैं अपना ब्याह करूँगी। शुम्भ निशुम्भ के पास जाकर दूत ने ये बातें कहीं। धूम्रलोचन नामक दैत्य को उन लोगों ने देवी को पकड़ लाने के लिये भेजा। धूम्रलोचन को देवी ने मार डाला। तब चण्ड और मुण्ड को शुम्भ ने देवी के पास भेजा। चण्डमुण्ड की भी यही दशा हुई। चण्डमुण्ड के मारे जाने पर तीस कोटि अक्षौहिणी सेना के साथ रक्तवीज भेजा गया। देवी के साथ रक्तवीज बड़ी वीरता से लड़ा, परन्तु अन्त में वह भी मारा गया। अब अगत्या शुम्भ और निशुम्भ युद्धक्षेत्र में उपस्थित हुए और मन भर लड़ कर, इन्होंने भी वीरों के समान गति पाई।

निश्चय तत्० (पु०) स्थिर, अवश्य, असंशय, निर्णय, सिद्धान्त, अवधारण, विश्वास, प्रतिज्ञा, स्पष्ट, अवश्य।—ज्ञान (पु०) दृढ़प्रत्यय, श्रद्धा।

निश्चल तत्० (पु०) अचल, स्थिर, पर्वत, वृक्ष, स्थावर।

निश्चला तत्० (स्त्री०) अचला, स्थिरा, पृथिवी, भूमि।

निश्चित तत्० (गु०) निर्णीत, स्थिरीकृत, सिद्धान्तित निश्चय किया हुआ।—कर्मा (पु०) स्थिरकर्मा, दृढ़कर्मा।

निश्चिन्त तत्० (गु०) चिन्ता हीन, सुस्थिर, उद्वेग शून्य, चिन्ता रहित।

निश्चेष्ट तत्० (गु०) चेष्टा रहित, अनुद्योग, मूर्छित, निरुपाय।

निश्छिद्र तत्० (गु०) छिद्र रहित, दोष रहित।

निश्वास तत्० (पु०) [नि+श्वस्+ +घञ्] बहिः श्वास, प्राणवायु, निसाँस।—संहिता (स्त्री०) शिव प्रणीत शास्त्र विशेष।

निषङ्ग तत्० (पु०) तूण, बाण रखने की थैली, भाथा, तूणीर, तरकस।

निषण्ण तत्० (गु०) सुप्त, विषण्ण, उपविष्ट, बैठा हुआ।

निषध तत्० (पु०) पर्वत विशेष, देशविशेष, निषध देश का राजा, निषादस्वर।

निषाद तत्० (पु०) स्वर विशेष, पहला स्वर, चाण्डाल, धीवर विशेष।

निषिद्ध तत्० (गु०) निषेध का विषय, वर्जित, निवारित, रोका, प्रतिषेधित, मना किया हुआ।

निषिद्धाचरण तत्० (गु०) प्रतिषिद्धाचरण, अकर्मकरण, शास्त्र विरुद्ध आचरण।

निषेक तत्० (पु०) संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार

निषेध तत्० (पु०) प्रतिषेध, निवृत्ति, निवारण, वारण, मना करना।

निषेधक तत्० (पु०) निषेधकर्ता, निवारणकर्ता, रोकने वाला।

निष्क तत्० (पु०) एक सौ आठ रत्ती भर सोना, सुवर्ण, हेम, एक प्रकार का गले का गहना, धुकधुकी । शास्त्रीय परिमाण विशेष । अशरफी, दीनार ।

निष्कण्टक तत्० (गु०) अकण्टक, कण्टक शून्य, निरुद्वेग ।

निष्कपट तत्० (गु०) कपट शून्य, अकपट, सीधा, सरल ।

निष्कर तत्० (गु०) कर रहित, राजस्व रहित, वृत्ति, ।

निष्कर्ष तत्० (पु०) निश्चय, निष्पत्ति, स्थिरीकृत व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रत्यक्ष, सिद्धान्त ।

निष्कलङ्क तत्० (गु०) निर्दोष, अदोष, अपराधहीन, शुद्ध दीप्तिशील ।

निष्काम तत्० (गु०) कामना रहित, इच्छा शून्य, फल की अनिच्छा सहित काम, जिस काम का फल भगवान् को अर्पित किया जाय ।

निष्कारण तत्० (गु०) कारणहीन, हेतुशून्य, निष्प्रयोजन, अहेतुक ।

निष्क्रमण तत्० (पु०) संस्कार विशेष, बहिर्गमन, निःसरण ।

निष्क्रान्त तत्० (गु०) निर्गत, प्रस्थित, बहिर्गत, निःसृत ।

निष्क्रिय तत्० (पु०) ब्रह्म, निरञ्जन । (गु०) क्रिया शून्य, अकर्मा, जड़ ।

निष्ठ तत्० (गु०) स्थित, स्थिर, तत्पर, अभिनिविष्ट, तत्रस्थ ।

निष्ठा तत्० (स्त्री०) निष्पत्ति, नाश, अन्त, निर्वहण, याञ्चा, दृढ़भक्ति, धर्मविश्वास, धर्मतत्परता, विश्वास, स्थिरता ।

निष्ठुर तत्० (गु०) परुष, कठोर, निर्दय, कठिन, क्रूर, दुराचार ।

निष्णात तत्० (गु०) प्रवीण, विज्ञ, पण्डित, अभिज्ञ, पारङ्गत, पारदर्शी ।

निष्पत्ति तत्० (स्त्री०) समाप्ति, शेष, अवधारण, निश्चय ।

निष्पन्द तत्० (गु०) स्पन्द रहित, अचलन, स्थिर, दृढ़ ।

निष्पन्न तत्० (गु०) समाप्त, शेष, सम्पन्न, आकुल, सिद्ध ।

निष्परिग्रह तत्० (पु०) योगी, तपस्वी, वैरागी संन्यासी ।

निष्पादन तत्० (पु०) सम्पादन साधन, निष्पत्ति करण, शेष करना, सिद्धान्त करना, समाधान करना, प्रतिज्ञा पूरण करना, निष्पत्ति, निवृत्ति ।

निष्पाप तत्० (गु०) निरपराध, निर्दोष, पापहीन ।

निष्प्रतिभ तत्० (गु०) अज्ञ, जड़, मूर्ख, निर्बोध हतबुद्धि ।

निष्प्रत्यूह तत्० (गु०) निर्विघ्न, बाधाहीन, निरापद ।

निष्प्रभ तत्० (गु०) दीप्तिरहित, प्रभाहीन, मलिन, हतमनोरथ ।

निष्प्रयोजन तत्० (गु०) प्रयोजन रहित, निरर्थक, अहेतुक, अकारण ।

निष्फल तत्० (गु०) विफल, निरर्थक, व्यर्थ, फल रहित ।

निसङ्कट तद्० (गु०) निःसङ्कट, सङ्कटमुक्त, सङ्कट रहित, अनायास ।

निसन्धाई दे० (स्त्री०) सन्धि रहित, निश्छिद्र, ठोस, पोढ़ा ।

निसक तद्० (गु०) निःशक्य, अशक्त, पुरुषार्थहीन ।

निसरना दे० (क्रि०) निकलना, निकसना, बाहर होना ।

निसर्ग तत्० (पु०) प्रकृति, स्वभाव, रूप, स्वर्ग, सृष्टि, त्याग, परिवर्त, स्वाभाविक, प्राकृतिक । —ज (गु०) सहजात, स्वभावज, नैसर्गिक ।

निसाँस दे० (गु०) आह भरना, विलाप करना ।

निसाँसी दे० (गु०) दुःखी, व्यस्त, उद्विग्न ।

निसान दे० (पु०) नगारा, दुन्दुभी, तूर्य ।

निसास तद्० (पु०) निःश्वास, साँस, प्राणवायु ।

निसित तद्० (गु०) पैनी, तीक्ष्ण, धारदार, निशित ।

निसृष्ट तत्० (गु०) मध्यस्थ, न्यस्त, अर्पित, छोड़ा हुआ, त्यक्त ।

सृष्टार्थ तत्० (पु०) दूत विशेष, धन का आय व्यय और पालन आदि के विषय में नियुक्त किया हुआ।
सेनी तद्० (स्त्री०) निश्रेणि, सीढ़ी, जीना, सोपान।
सोत दे० (पु०) एक औषधि का नाम।
स्तरण तत्० (पु०) पार होना, तरना, उद्धार करना, मुक्ति पाना, छुटकारा होना, उपाय।
निस्तल तत्० (गु०) तल रहित, गोलाकार, गोल, वर्तुल।
स्तार तत्० (पु०) [निस्+तृ+घञ्] रक्षा, उद्धार, त्राण, मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा, बचाव।
स्तारना दे० (क्रि०) बचाना, उबारना, उद्धार करना, छुटकारा देना, त्राण करना, रक्षा करना।
स्तारा दे० (पु०) छुटकारा, बचाव, मोक्ष, मुक्ति।
स्तेज तद्० (गु०) निस्तेजा, तेजहीन, प्रताप रहित, भोथा।
त्रप तत्० निर्लज्ज, अशिष्ट, निलज्ज, लज्जा-रहित।
स्त्रिंश तत्० (पु०) असि, खड्ग, तलवार।
स्पन्द तत्० (गु०) स्पन्दन शून्य, कम्प शून्य, निश्चेष्ट, अटल, स्थिर।
स्पृह तत्० (गु०) स्पृहा शून्य, वाञ्छा रहित, निरभिलाष।
स्व तत्० (गु०) निर्धन, दरिद्र, दुखी, अर्थहीन।
स्वन तत्० (पु०) शब्द, ध्वनि, निनाद।
हङ्ग दे० (गु०) नङ्गा, नग्न, चिन्ता रहित, फक्कड़।
हत तत्० (गु०) आहत, निपातित, मारा गया, वध किया हुआ।
हत्था दे० (गु०) शस्त्रहीन, अस्त्ररहित, अहस्त, बिना हाथ का।
हाई दे० (स्त्री०) धन, लोहे की बनी एक प्रकार की वस्तु जिस पर तपे हुए सोने चाँदी आदि को गढ़ते हैं। अयोधन, निहाली।
हानी दे० (स्त्री०) स्त्री का रज, ऋतु, कपड़े होना।
हायत दे० (अ०) अत्यन्त, अधिक, अतिशय, अपरिमित।
निहार तत्० (पु०) कुहर, कुहिरा, अन्धकार, शिशिर, हिम, यथा—

"जिमि निहार में दिनकर दूरा"।
(रामायण)

निहारना दे० (क्रि०) देखना, विलोकन करना, दर्शन करना, अवलोकन करना, निरीक्षण करना, ध्यान पूर्वक देखना।
निहारा दे० (क्रि०) देखा, निरीक्षण किया, अवलोकन किया।
निहाल दे० (गु०) प्रसन्न, सुखी, आनन्दित, हर्षित, तृप्त, अभिलाषपूर्ण होने से तृप्त, मनोरथ सिद्धि।
निहाली दे० (स्त्री०) धन, निहाई, अयोधन।
निहित तत्० (पु०) [नि+धा+क्त] स्थापित, अर्पित, न्यस्त, रखा हुआ, रक्षा पूर्वक रखने के लिये रखा हुआ।
निहुरना दे० (क्रि०) झुकना, दबना, नवना, नम्र होना, प्रणत होना।
निहुराना दे० (क्रि०) झुकाना, नवाना, प्रणत करना, नम्र करना।
निहोर दे० (पु०) कृपा, उपकार, विनती, विनय।
निहोरा दे० (पु०) चिरौरी, विनती, अनुनय, विनय, नम्रता।
ह्नव तत्० (पु०) [नि+ह्नु+अप्] अपलाप, अपह्नव, गोपन, छुकाना, छिपना, अविश्वास, न मानना।
निह्राद तत्० (पु०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद।
नींद तद्० (स्त्री०) निद्रा, अपकी, उँघाई, आलस।
—उचाट होना (वा०) नींद न आना, नींद टूटना।—भर सोना (वा०) खूब सोना, गहरी निद्रा से सोना।
नींदना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना।
नींदू दे० (पु०) सुवैया, निद्रालु, शयालु।
नींब दे० (पु०) वृक्ष विशेष, निम्ब वृक्ष।
नींबू दे० (पु०) निबुआ, जँभीरी नीबू, फल विशेष।
नीक दे० (गु०) भला, अच्छा, उत्तम, सुन्दर।
नीच तत्० (गु०) अधः, निम्न, अपकृष्ट, अधम, इतर, जघन्य, वामन, खर्व।—गा (गु०) नीच-

गामी, पामर, अधम।—गा (स्त्री०) नदी, ह्रादिनी, निम्नगामिनी।—गामी (गु०) नीचे की ओर से चलने वाला, निम्नगामी।—ता (स्त्री०) अधमता, अपकृष्टता, जघन्यता।

नीचा दे० (गु०) नीच, अधम, छोटा। (पु०) तला, तल।—ऊँचा (या०) ऊबड़खाबड़, उद्घातिनी भूमि।

नीचाई दे० (स्त्री०) नीचता, नीचपन, छुटाई।

नीचाशय तत्० (गु०) [नीच + आशय] क्षुद्राशय, क्षुद्रान्तःकरण, लघुहृदय।

नीचू दे० (पु०) अधस्तल, वृक्षविशेष, एक वृक्ष का नाम।

नीचे दे० (अ०) तले।

नीठ दे० (गु०) तुम्हारा, तुम्हारे सम्बन्ध का।

नीड तत्० (पु०) पक्षि का वासस्थान, विहगावास, कुलाय, वासस्थान, घोसला, खोता।

नीत तत्० (गु०) [नी + क्त] प्राप्त, गृहीत, लिया हुआ।

नीति तत्० (स्त्री०) [नी + क्ति] न्याय्य व्यवहार, शास्त्र विशेष, नय।—कथा (स्त्री०) ग्रन्थ विशेष, हितोपदेश, सुहृदुपाख्यान।—ज्ञ (गु०) नीतिशास्त्रवेत्ता, नीतिशास्त्र विशारद, राजमन्त्री।—विद्या (स्त्री०) नीतिशास्त्र, हितोपदेश देनेवाला शास्त्र।—सार (पु०) नीतिशास्त्र विशेष।

नींद दे० (स्त्री०) निद्रा, नींद, शयन, सोना।

नीप तत्० (पु०) कदम्ब वृक्ष, कदम का पेड़।

नीवी तत्० (स्त्री०) व्यापार करने वालों का मूलधन, स्त्रियों का कटिवस्त्र।

नीबू दे० (पु०) निम्बू, एक प्रकार का खट्टा फल जिसका रस विशेष करके काम में लाया जाता है।

नीम दे० (पु०) नींब।

नीमन दे० (गु०) अच्छा, भला, उत्तम, सुन्दर, मनोरम।

नीमावत दे० (पु०) एक धर्मपथ, जिसे नीमानन्द सरस्वती ने चलाया था। यह धर्मपथ बिलकुल आधुनिक है।

नीर तत्० (पु०) पानी, जल, रस, सलिल, पय।—ज (पु०) पद्म, कमल। (गु०) जल से उत्पन्न वस्तु मात्र, निर्धूली देश, अरजस्का स्त्री, कुमारी कन्या।

नीरथ दे० (गु०) निरर्थक, निष्फल, वृथा, व्यर्थ।

नीरद तत्० (पु०) [नीर + दा + ड] जलद, मेघ, मुस्तक, मोथा।

नीरधि तत्० (पु०) सागर, समुद्र, पयोनिधि, तोयनिधि।

नीरनिधि तत्० (पु०) सागर, समुद्र, जलधि।

नीरमय तत्० (गु०) [नीर + मयट्] जलमय, जलवेष्टित, जल में डूबा।

नीरस तत्० (गु०) [नीर + रस] रसहीन, शुष्क, विस्वाद, स्वाद रहित।

नीराजन तत्० (पु०) विसर्जन, आरती, आरती उतारना।

नीरुज तत्० (गु०) स्वस्थ, रोग का अभाव।

नीरोगी तत्० (गु०) रोग शून्य, पीड़ा रहित, सुस्थ।

नील तत्० (पु०) कृष्णवर्ण, नील रङ्गयुक्त वृक्ष तालीशपत्र, विष गरल, १०८ नृत्य के भेदों के अन्तर्गत एक प्रकार का नृत्य। पर्वत विशेष, मणि विशेष, नदी विशेष, यह नदी मिसर देश में बहती है। निधि विशेष, कुबेर का एक ख़जाने का नाम वानर विशेष, यह रामचन्द्र की सेना में था और इसने सेतु बनाने में रामचन्द्र की बड़ी सहायता की थी।

(२) माहिष्मती पुरी के एक राजा, इनकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या के रूप पर मोहित हो अग्नि ने उससे अपना व्याह किया। अग्नि ने राजा नील को यह वर दिया था कि जो कोई इस नगर पर चढ़ाई करेगा, वह भस्म हो जायगा। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय सहदेव ने इस नगर पर चढ़ाई की थी, उस समय सहदेव ने देखा कि उनकी सेना आग से घिरी हुई है, तब सहदेव ने अग्नि की स्तुति और उपासना की, अग्नि ने प्रसन्न हो

नीलराज की पूजा लेकर सहदेव से लौट जाने के लिये कहा। अग्नि की आज्ञा से नीलराज ने सहदेव की पूजा की। सहदेव भी कर लेकर वहाँ से दक्षिण की ओर चले गये।

नीलक तत्० (पु०) नील रङ्ग का मृग विशेष, बीज गणित का प्रमाण विशेष।

नीलकण्ठ तत्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु, मोर, मयूर, शिखी, संस्कृत ज्योतिःशास्त्रवेत्ता, इनकी बनाई "ताजिक नीलकण्ठी" नाम की पुस्तक का ज्योतिषी समाज में विशेष आदर है। इनके पिता का नाम अनन्त और पितामह का नाम चिन्तामणि था। मुहूर्तचिन्तामणि नामक ग्रन्थ के कर्ता रामदैवज्ञ इन्हींके छोटे भाई थे। नीलकण्ठ के पुत्र भी प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने भी मुहूर्तचिन्तामणि की टीका पीयूषधारा बनाई है। इन्होंने अपने ग्रन्थ के आरम्भ में अपने पिता का कुछ वृत्तान्त लिखा है जिससे मालूम होता है कि नीलकण्ठ मीमांसक, नैयायिक, ज्योतिषी और वैयाकरण थे और ये अकबर के सभासद भी थे। ये विदर्भ देश के रहने वाले थे। इनकी स्त्री का नाम पद्मा था। ये अकबर बादशाह के समकालीन थे, इसलिये इनका समय खृष्टीय १६वीं सदी का पिछला भाग ही मानना चाहिये।

नीलकमल तत्० (पु०) नीलवर्ण का पद्म, कृष्ण कमल, नीलपङ्कज।

नीलगवय तत्० (पु०) नील गौ, रोझ, गौ के समान एक जङ्गली जन्तु।

नीलगाव दे० (पु०) नील गौ, रोझ, नीलगाय।

नीलग्रीव तत्० (पु०) महादेव, शिव, नीलकण्ठ, विष पान करने के कारण महादेव का कण्ठ काला पड़ गया है, इसीसे इन्हें नीलकण्ठ कहते हैं।

नीलवड़ी दे० (स्त्री०) नील का टुकड़ा, नीलरङ्ग।

नीलम दे० (पु०) नीलकान्त मणि, रत्न विशेष, नीलम।

नीलमणि तत्० (पु०) नीलम, नीलकान्तमणि, रत्न विशेष।

नीलमाधव तत्० (पु०) विष्णु, नारायण, जगन्नाथ देव, जगदीश।

नीललोहित तत्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु, नीलकण्ठ, नील और रक्त मिश्रित वर्ण, बैंगनी रङ्ग।

नीलवर्ण तत्० (पु०) श्याम रंग, आकाशी रङ्ग, आसमानी रङ्ग।

नीला दे० (पु०) नीले रङ्ग वाला, नील रङ्ग में रँगा हुआ।

नीलाई दे० (स्त्री०) श्यामता, नीलता, नीलापन।

नीलाथोथा दे० (पु०) नीलाञ्जन, तूतिया, उपधातु विशेष।

नीलाम दे० (पु०) बिक्री, बिकाव, बेचना। यह शब्द पुर्तगाली, "लेलाम" शब्द का अपभ्रंश है। किसी वस्तु को मोल लेने वाले—चाहे वे कितने ही हों—मोल बोलते जाते हैं, उनमें जो सबसे अधिक मोल देना स्वीकार करता है, और उसके बाद दूसरा नहीं बोलता, तो वह वस्तु सबसे अधिक मोल देने वाले के हाथ बेची जाती है।

नीलाम्बर तत्० (पु०) बलदेव, शनैश्चर।

नीलार्त तत्० (पु०) पौधा विशेष, कटीला, एक वृक्ष जिसमें पीले फूल लगते हैं, प्रियवासा, प्रियावांसा।

नीलोत्पल तत्० (पु०) नीलकमल, नील पङ्कज, इन्दीवर।

नीलोपल तत्० (पु०) नीलाम, नीलमणि।

नीषा दे० (पु०) मुनाहद, मन्दाई, मन्दता।

नीवार तत्० (पु०) तिन्नी का वृक्ष, एक प्रकार का धान्य जो तालाबों में होता है।

नीवी तत्० (स्त्री०) बनियों का मूलधन, पूँजी, नारा, इजारबन्द।

नीवृत् तत्० (पु०) देश, जनपद, जनस्थान।

नीशार तत्० (पु०) शीत निवारण करने वाला, आच्छादन, शामियाना, कनात, तम्बू, पटमण्डप, वसनगृह।

नीसारना दे० (क्रि०) निकालना, निकासना।

नीहार तत्० (पु०) घनीभूत शिशिर, बरफ़, हिम, तुषार, श्रोस, कुहर, कुहासा।

नुहट्टा दे० (पु०) नख का खसोट, नख का खकोट।

नुति तत्० (स्त्री०) [नु + क्ति] स्तुति, स्तव, पूजा।

नूतन, नूत्न तत्० (गु०) नया, नवीन, अभिनव।

नूधा दे० (पु०) तमाकू विशेष।

नून दे० (गु०) लोन, नोन, नमक।

नूनी दे० (स्त्री०) लिङ्ग, बच्चों का लिङ्ग, व्यञ्जन।

नूपुर तत्० (पु०) भूषण विशेष, यह भूषण पैर में पहना जाता है, पायजेब।

नृग तत्० (पु०) एक राजा का नाम, ये बहुत दानी थे, दान में व्यतिक्रम होने से इन्हें सरट की योनि प्राप्त हुई। पुनः श्रीकृष्णजी ने इनका उद्धार किया।

नृत्य तत्० (पु०) नर्तन, नाँच, नाचना।—कारी (गु०) नाचने वाला, नचैया, नट।

नृदेव तत्० } (पु०) राजा, नृप, महाराज।
नृदेवता }

नृप तत्० (पु०) राजा, भूपाल, भूपति, नरपति, राजा।—घाती (पु०) राजवंश नाशक, परशुराम भार्गव।

नृपति तत्० (पु०) नरपति, राजा, नृपाल।

नृपाल तत्० (पु०) राजा, भूपति, नरपति नृपति।

नृवराह तत्० (पु०) शूर, वीर, योद्धा, बराह रूपधारी भगवान् का अवतार विशेष।

नृशंस तत्० (गु०) घातक, क्रूर, दुष्ट, व्याध, हत्यारा, परद्रोही।

नृसिंह तत्० (पु०) प्रधान मनुष्य, नरश्रेष्ठ, रतिबन्ध-विशेष, भगवान् का एक अवतार विशेष, जिनका रूप मनुष्य और सिंह के समान था।—चतुर्दशी (स्त्री०) वैशाखमास की शुक्ल चतुर्दशी, इसी दिन भगवान् नृसिंह प्रकट हुए थे, इस कारण इसको नृसिंह जयन्ती भी कहते हैं।

नृहरि तत्० (पु०) नरसिंह अवतार, भगवान् का नृसिंहावतार।

नेऊन दे० (पु०) मक्खन, नवनीत।

नेक, नेकु दे० (गु०) कुछ, थोड़ा, अल्प, स्वल्प, तनक, अच्छा, भला, उत्तम, मनोहर, मनोरम, रमणीय।

नेकनाम दे० (गु०) नामी, कीर्तिमान्, यशस्वी।

नेक्ता तत्० (पु०) पोषक, पालक, पोषणकर्ता।

नेग दे० (पु०) विवाह में का दान, जो बँधा रहता है।—चार (पु०) नातेदार आदि को विवाह आदि उत्सवों में देना।

नेगी दे० (गु०) नेग पाने के अधिकारी, नेग में हिस्सा बटाने वाला, परजा, मँगता, अधिकारी।

नेजक तत्० (पु०) धोबी, रजक, परिष्कारक, शुद्ध करने वाला, कपड़ा धोने वाला।

नेजन तत्० (पु०) परिष्करण, शोधन।

नेटा दे० (पु०) पोटा, नाक का मल।

नेठमी दे० (गु०) स्थिर, स्थायी, एक स्थान पर रहने वाला।

नेतक दे० (पु०) नकफुल, नरकट।

नेता तत्० (पु०) नीम का वृक्ष, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, अगुआ।

नेति तत्० (अ०) नहीं, ऐसा नहीं।

नेती दे० (स्त्री०) मथानी की रस्सी, मथानी घुमाने की रस्सी। एक प्रकार का मोटा डोरा, जिसको हठयोगी नाक में डाल कर साफ़ करते हैं, योगो की क्रिया विशेष।

नेत्र तत्० (पु०) चक्षु, नयन, अक्षि, आँख।—च्छद (पु०) नेत्रपिधायक चर्मपुट, नेत्र बन्द करने वाली पपनी।

नेत्रलोत दे० (पु०) बन्धवा, बन्दी, दण्डित, अपराधी।

नेत्राम्बु तत्० (पु०) अश्रु, चक्षु का जल।

नेपथ्य तत्० (पु०) वेश, अलङ्कार, भूषण, रङ्गभूमि, जहाँ नाटक के पात्र सजते हैं।

नेपाल तत्० (पु०) देश विशेष।

नेपुर तद्० (पु०) नूपुर, पादभूषण, पायजेब।

नेम तद्० (पु०) नियम, संयम, धर्म में हठ, व्रत, प्रतिज्ञा, वचन, सङ्कल्प।—धर्म (पु०) शुद्ध व्यवहार।

नेमि तत्० (स्त्री०) चक्रपरिधि, रथ के पहियों का वह भाग जो भूमि में लगा रहता है। चक्र का प्रान्त भाग, कूप के समीप बना हुआ चौरस चौतरा, कुएँ के पास रस्सी रखने के लिये रखी हुई तिपायी लकड़ी।

नेमी तद्० (गु०) नियमी, नियम करने वाले, नियम पालक।

नेरवा दे० (पु०) पयाल, नेरुवी, डाँठी।

नेरे, नेरौ दे० (अ०) निकट, समीप, नियरा।

नेव दे० (स्त्री०) भीत की जड़, नींव, मूल।

नेवतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, बुलाने के लिये पत्र भेजना।

नेवता दे० (पु०) बुलाहट, निमन्त्रण, न्योता।

नेवना दे० (क्रि०) नवना, नम्र होना, निहुरना।

नेवर दे० (स्त्री०) घोड़े के एक रोग का नाम, यह रोग घोड़े के पैर में होता है। कहीं इसे नेवल भी कहते हैं।

नेवल, नेवला दे० (पु०) नकुल, न्योला, यह साँपों का स्वाभाविक शत्रु है।

नेह तद्० (पु०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाहट, चिक्कणता।

नेही तद्० (गु०) स्नेह, प्रिय, प्रेमी, मित्र, सुहृद, शुभचिन्तक।

नैऋत तत्० (पु०) राक्षस विशेष, निऋति नामक राक्षस के वंशज। यह दक्षिण और पश्चिम के कोने का अधीश्वर है।

नैऋत्य तत्० (पु०) दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, इस दिशा के अधिपति निऋति हैं इस कारण इसको नैऋत्य कहते हैं।

नैकट्य तत्० (गु०) निकटभाव, सामीप्य, समीपता, निकटता, निकटत्व।

नैगम तत्० (पु०) उपनिषद्, वणिक, नागर, नय, नायक, पथ।

नैज तत्० (गु०) आत्मीय, आत्म सम्बन्धी।

नैजाना दे० (क्रि०) झुकना, निहुरना, नवना, नत होना।

नैन, नैना तद्० (पु०) नयन, आँख, पगहा, गरावन, छाँद, पशु बाँधने की रस्सी।

नैपाल तद्० (पु०) ताँबा, देश विशेष, नीति रक्षा, नय रक्षा।

नैपाली तद्० (पु०) मनशिल नामक धातु, नैपाल-वासी।

नैपुण्य तत्० (पु०) निपुणता, चतुरता, दक्षता, कुशलता।

नैमित्तिक तत्० (गु०) निमित्त सम्बन्धी, किसी हेतु से आया, त्योहार आदि का उत्सव, किसी कारण विशेष से किया जाने वाला काम।

नैमिष तत्० (पु०) तीर्थ विशेष, एक तीर्थ का नाम जो हरिद्वार के पास है।

नैमिषारण्य तत्० (पु०) वह वन जहाँ सूतजी पौराणिक रहते थे तथा और भी अनेक महर्षि रहा करते थे।

नैया दे० (पु०) नौ, नौका, नाव, तरणी।

नैयायिक तत्० (पु०) न्यायशास्त्र विशारद, तर्कशास्त्र विशारद, न्याय पढ़ने या पढ़ाने वाला।

नैराश्य तत्० (पु०) निराशा, आशा शून्यता, आशा का अभाव।

नैर्मल्य तत्० (पु०) निर्मलता, शुद्धता, स्वच्छता, मलाभाव।

नैवेद्य तत्० (पु०) अर्पण, उत्सर्ग, देवता का भोग, प्रसाद, चढ़ावा।

नैसर्गिक तत्० (पु०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वभाव-सिद्ध, स्वतः उत्पन्न।

नैष्ठिक तत्० (पु०) यावज्जीवन, गुरु के गृह में ब्रह्मचर्य व्रत पालने वाला, धार्मिक, विश्वासी।

नैहर दे० (पु०) पीहर, मयका, स्त्री के पिता का घर।

नोकचोक दे० (स्त्री०) सङ्केत से बातें करना, लागडाट।

नोकझोंक दे० (स्त्री०) खैंचाखैंची, खैंचातानी, उपरा चढ़ी, अनवनाव, खटपट, पारस्परिक द्वेष।

नोच दे० (पु०) चुटकी, वकोट, खसोट।

नोचना दे० (क्रि०) वकोटना, खसोटना।

नोन दे० (पु०) निमक, नून, नोन।

नोना दे० (क्रि०) गाय भैंस आदि का दूध दुहने के लिये पैर बाँधना (पु०) फल विशेष, सीताफल, मट्टी का गलना।—पानी (पु०) लवणयुक्त जल, खारा पानी, लवणाम्बु, समुद्र का जल।

नोनिया दे० (पु०) जाति विशेष, जो नून बनाने का काम करती है, लुनियाँ।

नोय दे० (पु०) एक प्रकार की रस्सी जिससे गाय का पैर बाँधते हैं।

नौकर दे० (पु०) चाकर, सेवक, भृत्य, महीना लेकर सेवा करने वाला।

नौकरी दे० (स्त्री०) चाकरी, सेवा, नौकर का काम।

नौका तत्० (स्त्री०) नाव, नौ तरणी।

नौखण्ड तद्० (पु०) (नवखण्ड देखो)।

नौगरी दे० (स्त्री०) आभूषण विशेष, पहुँची, कंगना।

नौची दे० (स्त्री०) छोटी अवस्था की वेश्या, वेश्या की शिष्या, जो उसके बाद उसके पद की अधिकारिणी होती है।

नौछावर दे० (पु०) निछावर, उतारा।

नौढनो दे० (क्रि०) निहुरना नम्र होना, प्रणत होना।

नौतना दे० (क्रि०) निमन्त्रण देना, नेवता देना, आदर पूर्वक बुलाना।

नौता दे० (पु०) निमन्त्रण, नेवता।

नौना दे० (क्रि०) नवना, निहुरना, नौढना।

नौबत दे० (स्त्री०) समय, अवसर, वाद्ययन्त्र अर्थात् नगाड़ा नफीरी और झाँझ।—खाना (पु०) वाद्यगृह।

नौमासा तत्० (पु०) गर्भ के नवें मास का उत्सव, संस्कार विशेष, पुंसवन।

नौमी तद्० (स्त्री०) नवमी, तिथि विशेष, पक्ष की नवी तिथि।

नौरतन तद्० (पु०) नवरत्न।

नौल दे० (पु०) नवल, सुन्दर।

नौशिख तद्० (पु०) नव शिक्षित, छात्र, विद्यार्थी।

नौसादर दे० (पु०) एक प्रकार का क्षार।

न्यक्कार तत्० (पु०) तिरस्कार, कुत्सा, निन्दा, गर्हा, अवज्ञा, घृणा।

न्यग्रोध तत्० (पु०) वट वृक्ष, बरगद।

न्यस्त तत्० (पु०) समर्पित, दत्त, सञ्चित, स्थापित, रक्षित।

न्याय तत्० (पु०) नीति, युक्ति, यथार्थ, उचित, तर्कशास्त्र, विचार, वितर्क, विवेचना।—कर्ता (पु०) विचारक, तर्कशास्त्रवेत्ता, गौतम मुनि।—शास्त्र (पु०) तर्कशास्त्र।-लय (पु०) [न्याय + आलय] धर्माधिकरण, विचार गृह।

न्यायक तत्० (पु०) विचारक न्यायकारी, न्यायकर्ता।

न्यायी तत्० (पु०) मध्यस्थ, न्यायकर्ता, उचित करने वाला।

न्याय्य तत्० (गु०) उचित, यथार्थ, प्रशस्त।

न्यारा दे० (गु०) अलग, पृथक्, भिन्न, अतिरिक्त।

न्यास तत्० (पु०) रखने योग्य धन आदि, अर्पण त्याग, तान्त्रिक क्रिया विशेष।

न्याव तद्० (पु०) न्याय, उचित, यथार्थ विचार।

न्यून तत्० (गु०) असम्पूर्ण, किञ्चित, थोड़ा, कम, अल्प।—ता (स्त्री०) छुटाई, नीचता नीचापन।

प

प हल् वर्ण का इक्कीसवाँ अक्षर है। इसका उच्चारण ओंठ से होता है, इस कारण इसे ओष्ठ्य कहते हैं।

प तत्० (पु०) पवन, वायु, पर्ण, पत्र, पात।

पवाँर दे० (पु०) चकोड़, राजपूतों की एक जाति विशेष, परमार क्षत्रिय, अग्निवंशीय क्षत्रिय।

पवाँरा दे० (पु०) कहानी, कथा, इतिहास।

पवाँरिया दे० (पु०) भाट, कहानी कहने वाली एक जाति जो नाचती और गाती है।

पकड़ दे० (स्त्री०) ग्रहण, धरन, रोक।

पकड़ना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, रोकना, धरना, गहना, अशुद्धि बताना।

पकड़ाना दे० (क्रि०) धरवा देना, पकड़वा देना ग्रहण कराना।

पकना दे० (क्रि०) सीझना, रँधाना, पक्व होना।

पकला दे० (पु०) व्रण, घाव, फोड़ा, फुन्सी।

पकवाई दे० (स्त्री०) पकाने का काम, सिद्ध करने का काम, पकाने की मजूरी।

पकवान दे० (पु०) पक्वान्न, मिठाई, घी में बनी हुई सामग्री।

पकवाना दे० (क्रि०) सीझाना, बनवाना, पकवाना, रँधाना।

पका दे० (गु०) पक्व, पका हुआ, सिद्ध।—पकाया (वा०) पक्व, बना हुआ, तैयार, सिद्ध, पकाकर रखा हुआ, तैयार किया हुआ।—ई दे० (स्त्री०) पकाने का दाम, पकाने की मजूरी, सिद्धता, तैयारी।—ना दे० (क्रि०) पकवाना, पक्का करना, राँधना, सुराना, सीझाना।

पकाव दे० (पु०) दृढ़ता, स्थिरता, पुख्तापन।

पकोड़ा दे० (गु०) पकौड़ी (स्त्री०) पाक विशेष, बरा, फुलवरी, पकौड़ी, बजका।

पक्का दे० (गु०) राँधा हुआ, पकाया हुआ, निपुण, चतुर, दक्ष, सावधान, दृढ़, पोढ़ा, प्रौढ़, सिद्ध, बनाया हुआ।

पक्ति तत्० (स्त्री०) [पच्+क्तिन्] पाक, पकाना, पकना, पाक करना, सिद्धि, पकाई।

पक्व तत्० (गु०) परिणत, तैयार हुआ, सिद्ध हुआ, सुदृढ़, निपुण, विनाश के लिये उन्मुख, निकट विनाश।

पक्वान्न तत्० (गु०) [पक्व+अन्न] पकाया तण्डुल आदि, राँधा भात, मिठाई आदि, केवल घी में बनी हुई वस्तु।

पक्वाशय तत्० (पु०) [पक्व+आशय] नाभि का अधोभाग, पक्वाशस्थान, अन्न पचने का स्थान, अन्नकोष।

पक्ष तत्० (पु०) पन्द्रह दिन रात, पाख, आधा महीना, अँधेरा और उजेला पाख, पक्षियों का अवयव विशेष, पर, पङ्ख, पाँख, डयन, डैना। सहायक, बल, सखा, मण्डली, दल, समूह, पार्श्व पाँजर, राजकुञ्जर, विहँग, पक्षी, वलय, देह का अवयव, देहाङ्ग।—द्वार (पु०) पार्श्वद्वार, खिड़की का द्वार।—धर (पु०) चन्द्र, शशधर, संस्कृत के एक प्रसिद्ध पण्डित का नाम (देखो जयदेव) (गु०) पक्ष धारण करने वाले, सहायक, साहाय्यदाता।—पात (पु०) अनुचित सहायता दान, एक ओर झुकाव।—पाती (पु०) पक्षपात कर्ता, अनुचित साहाय्यदाता, अन्याय से पक्ष वस की सहायता करने वाला।

पक्षक तत्० (पु०) मित्र, सुहृद, सहायक, खिड़की।

पक्षाघात तत्० (गु०) स्वनाम प्रसिद्ध रोग विशेष, किसी किसी अङ्ग का अवश हो जाना।

पक्षान्त तत्० (पु०) [पक्ष+अन्त] पूर्णिमा, अमावस्या, पञ्चदशी पर्व।

पक्षान्तर तत्० (पु०) भिन्नपक्ष, दूसरा पक्ष, विपयान्तर।

पक्षिराज तत्० (पु०) गरुड़, मयूर, एक प्रकार का घोड़ा।

पक्षिशावक तत्० (पु०) पक्षी की सन्तान, पक्षी के लड़के।

पच्छी तत्० (पु०) पक्ष विशिष्ट, विहङ्गम, चिड़िया, पखेरू, बाण, तीर, विशिख, सहायक।

पक्षीय तत्० (गु०) पक्ष का, दल का, समूह का, ओर का, हिमायती, तरफ़दार।

पक्ष्म तत्० (पु०) अक्षिलोम, बरवनी, आँख के बाल, किञ्जल्क, केशर, सूत आदि का अत्यल्प भाग, पलक।

पख तद्० (पु०) पक्ष, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन।

पखड़ी तद्० (स्त्री०) पुष्प की पत्ती।

पखरौटा दे० (पु०) तबक, सोने या रूपे का पत्र, जो पान के बीड़े पर लगाया जाता है।

पखवारा दे० (पु०) पक्ष, मासार्द्ध, पन्द्रह दिन।

पखा दे० (पु०) पङ्ख, पाँख, पर। यथा—

"पखा मोर धारे जटा शीश सोहै,"

(ज्ञानदीपक)।

पखान तद्० (पु०) पषाण, पत्थर, उपल, यथा—दोहा।

"ज्यों पनिहारी जेवरी, खैंचत कटत पखान।
तुलसी रसना राम कहु, पाप कितिक अनुमान॥"

पखारना दे० (क्रि०) प्रक्षालन करना, धोना, संचालना, साफ़ करना, शुद्ध करना।

पखारे दे० (क्रि०) धोये, प्रक्षालन किये, शुद्ध किये।

पखाल दे० (स्त्री०) पुर, मसक, बड़ी मसक, चर्म निर्मित जलपात्र, यह एक प्रकार का चाम का बड़ा थैला होता है जिसमें जल लाते हैं। मारवाड़ आदि देशों में जहाँ जल की महँगी है वहाँ ऐसे थैले विशेष पाये जाते हैं।

पखावज दे० (पु०) मृदङ्ग, ढोलक एक प्रकार का बाजा।

पखावजी दे० (पु०) पखावज बजाने वाला।

पखेरू दे० (पु०) पक्षी, चिड़िया, पच्छी।

पखेस दे० (पु०) छापा, चिन्ह, मुद्रा, अङ्क, छाप।

पखोर दे० (पु०) ठोकर, लात की ठोकर।

पखोरन दे० (पु०) ठोकरें, यह पखोर शब्द का बहुवचन है।

पखोरना दे० (क्रि०) ठोकर मारना, लात का धक्का मारना, लात से मारना।

पखौड़ा दे० (पु०) पार्श्व की हड्डी, पाँजर की हड्डी, कन्धे की हड्डी।

पग दे० (पु०) पद, पाँव, पैर, चरण, डेग।—**डण्डी दण्डी** (स्त्री०) छोटा मार्ग, बिना बनाया हुआ मार्ग, पदचिन्ह, लीक, गुप्तमार्ग।—**धारना** (क्रि०) पधारना, आना, जाना।—**पर ताल बजाना** (क्रि०) नाचना और पैर से ताल बजाते जाना।

पगड़ी दे० (स्त्री०) पाग, पगिया, सिरबन्धा, सिर बाँधने का वस्त्र विशेष, उष्णीष, चीरा।

पगना दे० (क्रि०) निमज्जित होना, डूबना, डूब जाना, रस में डूबना, मग्न होना।

पगला दे० (पु०) पागल, उन्मत्त, मूर्ख, सिड़ी।

पगहा दे० (पु०) बड़ी रस्सी, जिससे बैल भैंस आदि बाँधे जाते हैं।

पगहिया, पगही दे० (स्त्री०) छोटा पगहा।

पगा दे० (गु०) रस से डुबाया हुआ, चीनी के रस में डुबाया गया।

पगार दे० (पु०) भीत बनाने के लिये गीली मिट्टी, गारा, गीली मिट्टी।

पगारनि दे० (स्त्री०) मुड़ेरा, छत की चारों ओर जो कुछ ऊँचा बना होता है। यथा:—

"अति उच्च अगारनि बनी पगारनि
जनु चिन्तामणिनार।"

—रामचन्द्रिका।

पगिया दे० (स्त्री०) पगड़ी, पाग, चीरा।

पगु दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण।

पगुराना दे० (क्रि०) रोमन्थ करना, चबाये हुए को पुनः चबाना, जुगाली करना।

पङ्क तत्० (पु०) कर्द्दम, काँदा, काँदो, पाँक, कीचड़।—**ज** (पु०) कमल, पद्म, सरोरुह, पुण्डरीक।—**निधि** (पु०) समुद्र, सागर।—**रुह** (पु०) कमल, पद्म, सरोरुह।

पङ्किल तत्० (गु०) कर्दममय, पङ्कयुक्त।

पङ्केरुह तत्० (पु०) पद्म, कमल, सारस नामक पक्षि विशेष।

पंक्ति तत्० (स्त्री०) सजातीय संस्थान विशेष, एक समाज के मनुष्यों की बैठक, पाँति, पाँत, पङ्गत, धारी, लकीर, श्रेणि, कतार, पद्य का छन्द विशेष, दस की संख्या, पृथिवी, गौरव, प्रतिष्ठा, पाक, जन समूह, सभा।—दूषक (पु०) अपाङ्क्तेय, श्राद्ध भोजी ब्राह्मण, श्राद्ध में भोजन करने वाला ब्राह्मण, पतित ब्राह्मण, अधम ब्राह्मण।—पावन (पु०) पंक्ति को पवित्र करने वाला, श्रोत्रिय ब्राह्मण।

पङ्ख दे० (पु०) पाँख, पत्र, डयन, डैना।

पङ्खड़ी दे० (स्त्री०) पखड़ी, कली, फूल की पत्ती।

पङ्खा दे० (पु०) बीजना, व्यजन, बेना, पङ्खा।

पङ्खिया दे० (गु०) भगड़ालू, बखेड़िया, दुराचारी, कुकर्मी।

पङ्खी दे० (स्त्री०) छोटा पङ्खा, चिड़िया, पच्छी।

पङ्गत दे० (स्त्री०) पाँति, धारी, श्रेणि, कतार।

पङ्गुला दे० (गु०) लँगड़ा, पंगु।

पङ्गा दे० (गु०) पतला, पानीला, पनिहा, एक प्रकार का कृत्रिम नून।

पङ्गास दे० (पु०) मछली का एक भेद।

पंगुल तत्० (पु०) श्वेताश्व, शुक्लवर्ण का घोड़ा, श्वेत काँच के समान घोड़ा।

पंगु तत्० (गु०) पाद विकल, चलने में असमर्थ, लङ्गड़ा, लँगड़ा, लङ्घा हीन। (पु०) शनिग्रह।

पचक दे० (स्त्री०) शुष्कता, सुखाई, उतार।

पचकना दे० (क्रि०) सूखना, शुष्क होना, गलना, सूख कर गल जाना।

पचखना दे० (गु०) पाँच खण्ड वाला, जिसमें पाँच विभाग हों। (क्रि०) अंकुरित होना, पौधों में नई शाख निकलना।

पचघरा दे० (गु०) पाँच घर वाले मकान।

पचतोलिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, ओढ़नी की सारी।

पचना दे० (क्रि०) सड़ना, गलना, यत्न करना, उद्योग करना, परिश्रम करना, अधिक परिश्रम से थक जाना।

पचपचाना दे० (क्रि०) अत्यन्त सड़ना, पसीजना।

पचपन दे० (गु०) संख्या विशेष, पचास और पाँच, ५५।

पचमहला दे० (गु०) पचखना, पाँच महल का मकान।

पचमान तत्० (पु०) पकाने वाला, पकाता हुआ।

पचमिल दे० (गु०) मिलित, मिश्रित।

पचमेल दे० (गु०) पचमिल, पाँच वस्तुओं की मिलावट।

पचलड़ी दे० (स्त्री०) पाँच लर का हार, जिस हार में पाँच लर हों।

पचलोना दे० (पु०) औषध विशेष, एक औषधि का नाम।

पचा डालना दे० (क्रि०) पचाना, खाजाना, जीर्ण कर देना, हड़प जाना, दबा लेना।

पचानवे दे० (गु०) संख्या विशेष, नब्बे पाँच, ९५।

पचाना दे० (क्रि०) पकाना, जीर्ण करना, हज़म करना, सड़ाना।

पचाव दे० (पु०) जीर्ण, पकाव, पचना, पक्व हो जाना।

पचास दे० (गु०) संख्या विशेष, पाँच दहाई, ५०।

पचासी दे० (गु०) संख्या विशेष, अस्सी पाँच, ८५, पाँच अधिक अस्सी।

पचीस दे० (गु०) संख्या विशेष, बीस पाँच, २५, पाँच अधिक बीस।

पचीसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार के खेल का नाम, यह खेल सात कौड़ियों से खेला जाता है।

पचूका दे० (पु०) पिचकारी, दमकला।

पचोतर दे० } (पु०) पञ्चोतर, पाँच अधिक सौ, पाँच
पचोतरा } रुपये सैकड़ा।

पचौनी दे० (स्त्री०) पाकाशय, आमाशय, अन्न पचने का स्थान।

पखर दे० (पु०) कील, खूँटी, मेख, बड़ा खूँटा।
—मारना (वा०) खिझाना, सताना, दुःख देना,

आड़ देना, होते हुए किसी काम में विघ्न डालना, किसी का काम अड़ा देना।

पची दे० (गु०) लगा हुआ, संलग्न, संयुक्त, आसक्त, सटा हुआ।—होना (वा०) दो वस्तुओं को सटाना, किसी चीज़ से दो वस्तुओं को जोड़ देना। बहुत प्रेम करना। अतिशय प्रेम होना।—कारी (स्त्री०) जड़ाई, खुदाई, गहनों पर नग आदि जोड़ने का काम, जड़ाऊ गहने बनाना, रफ़ू करना, टाँका मारना, सुधारना।

पच्छम, पच्छिम तद्० (पु०) पश्चिम, वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होते हैं।

पच्छी तद्० (पु०) पक्षी, चिड़िया, पखेरू।

पछड़ना दे० (क्रि०) गिरना, गिर जाना, लपट जाना।

पछताना दे० (क्रि०) पश्चात्ताप करना, दुःख करना शोक करना, खेद करना, अनुताप, वश न रहने के कारण अप्रिय किसी कार्य के हो जाने से जो दुःख होता है वह पश्चाताप कहा जाता है।

पछतावा दे० (पु०) पश्चात्ताप, शोक, खेद, अनुताप।

पछनी दे० (पु०) एक अस्त्र का नाम, जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं।

पछनी दे० (स्त्री०) नहरनी, अस्त्र विशेष।

पछवा दे० (स्त्री०) पश्चिमवात, पच्छिम की हवा, जो पवन पच्छिम की ओर से आती है।

पछाड़ दे० (स्त्री०) पटकन, धकृकन, गिराना। —खाना (वा०) सिर के बल गिरना, बेलाग गिरना, चित गिरना।

पछाड़ना दे० (क्रि०) गिराना, पटकना, भूमि में गिरा देना।

पछाह दे० (पु०) पश्चिम दिशा, पश्चिमदेश, पश्चिम दिशा के देश।

पछियाव दे० (स्त्री०) पश्चिम वात, पछवा बयार।

पछोड़ना } पछोरना } (क्रि०) फटकना, बीनना, बराना, सूप से फटक कर साफ करना।

पजावा दे० (पु०) भट्ठा जहाँ ईंटें आदि पकायी जाती हैं।

पजेब दे० (स्त्री०) घूँघरू, पाँव का गहना, नूपुर।

पजोड़ा दे० (गु०) निकम्मा, दुष्ट, दुश्चरित्र, अधम, नीच।

पञ्च तद्० (गु०) संख्या विशेष, पाँच, ५। (पु०) चौधरी, समाज का अगुआ, पञ्चायत में बैठक विचार करने वाला, मध्यस्थ विचारकर्ता। —कपाल (पु०) यज्ञ विशेष।—कषाय (पु०) औषध विशेष।—कोश (पु०) अन्नमय प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय ये पाँच कोश। —गव्य (पु०) गौके पाँच पदार्थ, दही, दूध, गोमूत्र, गोमय, गोघृत।—चामर (पु०) छन्द विशेष, यह छन्द सोलह अक्षरों का होता है इसमें एक अक्षर लघु, और एक अक्षर गुरु होता है। —चूड़ा (स्त्री०) अप्सरा विशेष, स्वर्गीय वेश्या विशेष।—जन (पु०) दैत्य विशेष, असुर विशेष, यह असुर पाताल में रहता था, भगवान् श्रीकृष्ण ने इसे मारा था, इसकी हड्डी से जो शङ्ख बना है उसे पाञ्चजन्य कहते हैं, वह भगवान् कृष्ण का प्रिय शङ्ख है।—ज्योंनार (पु०) पाँच प्रकार का भोजन, भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय।—तत्व (पु०) पञ्चभूत, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथिवी। —तन्त्र (पु०) पाँच प्रकार के तन्त्र, मारण मोहन, वशीकरण, उच्चाटन और आकर्षण, इस नाम की एक पुस्तक।—तन्मात्र (पु०) पृथिवी आदि सूक्ष्म पञ्चभूत, रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श। —ता (स्त्री०) मृत्यु, मरण, निधन, काल, धर्म, पञ्चत्व।—दश (गु०) पन्द्रहवीं संख्या, पन्द्रह को पूर्ण करने वाली संख्या।—दशानार्थ (पु०) पन्द्रह प्रकार के अनर्थ, यथा—चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मरण वैर, अप्रतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, लोभ, गर्व, स्पर्द्धा। —धा (अ०) पाँच प्रकार, पञ्चविधि।—नख (पु०) मनुष्य, वानर, हस्ती, कूर्म, व्याघ्र, शशक, शल्लकी, गोधा, गैंडा कूर्म।—नद (पु०) देश विशेष, पंजाब देश, वह देश जहाँ पाँच नदी हैं। सतलज, व्यास, रावी, चनाब, झेलम।—पाण्डव (पु०) पाण्डु राजा के पाँच पुत्र, यथा—युधिष्ठिर,

भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ।—पात्र (पु०) पूजा का पात्र विशेष, पाँच पात्रों से किया जाने वाला, पार्वण श्राद्ध विशेष ।—प्राण (पु०) शरीरस्थ, प्राणादि पाँच वायु, यथा—प्राण अपान, व्यान, उदान, समान ।—भूत (पु०) पञ्चतत्त्व, पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश । —भूतात्मा (पु०) देही, प्राणी, शरीरी । —मकार (पु०) वाममार्गियों की उपासना, मद्य, माँस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन ।—महायज्ञ (पु०) गृहस्थों के पाँच प्रकार के नित्यकर्म, यथा—ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ, और भूतयज्ञ, अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन अतिथिसेवा और पूजा ।—मुख (पु०) श्रीमहादेव ।—मुद्रा (स्त्री०) देव पूजा में नित्य की जाने वाली पाँच मुद्रा, यथा—आवाहनी, स्थापनी, सन्निधानी, सम्बोधनी, और सम्मुखीकरणी ।—रङ्गी (गु०) विचित्र वर्ण, अनेक प्रकार के रङ्गों से रंगा । —रत्न (पु०) सुवर्ण आदि पाँच प्रकार के रत्न, यथा—सुवर्ण, रौप्य, मुक्ता, स्फटिक, ताँबा । —रात्र (पु०) ग्रन्थ विशेष, श्रीवैष्णवशास्त्र का ग्रन्थ ।—वक्त्र (पु०) शिव, महादेव ।—वटी (स्त्री०) पाँच प्रकार के वृक्षों का समूह, एक स्थान का नाम, जो गोदावरी नदी के तीर पर है वनवास के समय श्रीरामचन्द्र जी यहीं रहते थे । —शर (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ ।—शाख (पु०) हाथ, कर, हस्त ।—शिख (पु०) सिंह, केशरी, ऋषि विशेष, ये विख्यात दार्शनिक आसुरि के शिष्य थे । आसुरी प्रसिद्ध साङ्ख्य दर्शन के रचयिता महर्षि कपिलदेव के शिष्य थे । पञ्चशिख ने ही सांख्य दर्शन का प्रचार किया है । आसुरी की स्त्री का नाम कपिला था । पञ्चशिख ने पुत्रभाव से गुरुपत्नी कपिला के स्तन्यपान किये थे, इसी कारण इनको बहुत लोग कपिला पुत्र भी कहते हैं ।—सूना (स्त्री०) प्राणियों के वध के पाँचस्थान, यथा—चूल्हा, चक्की, झाड़ू, बढ़नी और घड़ा रखने का स्थान ।

पञ्चक तत्० (पु०) धनिष्ठा से लेकर रेवती तक पाँच नक्षत्र, पाँच संख्या, पञ्चम सम्बन्धीय ।

पञ्चक्की दे० (स्त्री०) पानी चक्की, जलयन्त्र, एक प्रकार का यन्त्र जो पानी के धक्के से चलता है, इससे आटा आदि पीसा जाता है ।

पञ्चम तत्० (गु०) पाँच की संख्या को पूरण करने वाली संख्या, वीणा आदि से उत्पन्न स्वर विशेष ।

पञ्चमी तत्० (स्त्री०) चन्द्रमा की पाँचवीं कला की क्रिया का काल, तिथि विशेष, पाँचवीं तिथि, पक्ष की पाँचवीं तिथि ।

पञ्चाङ्ग तत्० (पु०) पत्रा, पत्रिका, ग्रह नक्षत्र, तिथि आदि देखने का पत्रा, जंत्री ।

पञ्चामृत तत्० (पु०) दुग्ध आदि पाँच वस्तुओं से बना जिससे भगवान् को स्नान कराते हैं ।

पञ्चाङ्गुल तत्० (गु०) पाँच अङ्गुलि परिमाण युक्त ।

पञ्चाङ्गुली तत्० (स्त्री०) पांच अङ्गुलियाँ, पाँचों अङ्गुली, अङ्गुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अनामिका और कनिष्ठा ।

पञ्चाध्यायी तत्० (स्त्री०) श्रीमद्भागवत के रासमण्डल के पाँच अध्यायों का समुदाय, रासपञ्चाध्यायी ।

पञ्चानन तत्० (पु०) सिंह, केशरी, शेर, महादेव, शिव ।

पञ्चामृत तत्० (पु०) शर्करा, दुग्ध, घृत, दधि, और मधु, इन पाँचों वस्तुओं के मेल से बनी हुई वस्तु, यह वस्तु देवताओं के लिये बनाई जाती है ।—योग (पु०) औषध विशेष, गुरुच, गोखुर, मूसली मुण्डिका और शतावरी इनके योग से बनी औषध ।

पञ्चाम्नाय तत्० (पु०) शिव के पाँच मुख से निकला हुआ पाँच प्रकार का शैवशास्त्र, तन्त्रशास्त्र ।

पञ्चायत दे० (स्त्री०) जातीय सभा, जो किसी विवाद को शान्त करने के लिये होती है, विचार करने की सभा ।

पञ्चाल तत्० (पु०) देश विशेष, पञ्जाब देश ।

पञ्चालिका तत्० (स्त्री०) वस्त्र आदि की बनायी

हुई पुतरी, कठपुतली, गुड़िया गीत विशेष, द्रौपदी, पञ्चाल देश की राजकन्या।

पञ्चावस्था तत्० (स्त्री०) मनुष्यों की पाँच अवस्थाएँ, यथा—बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा और वृद्ध।

पञ्चीकरण तत्० (पु०) पञ्चभूत के भागों का मिलाना, सृष्टि प्रकरण का एक सिद्धान्त।

पञ्चेन्द्रिय तत्० (पु०) पाँच इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय।

पञ्जी दे० (पु०) साथी, सङ्गी, मित्रमण्डल।

पञ्छाला दे० (पु०) गुड्डी को वृक्ष।

पञ्छी दे० (पु०) पक्षी, पखेरू, विहँग, चिड़िया।

पञ्जर तत्० (पु०) शरीर की हड्डियों का समूह, पाँजर, पसली, ठठरी, पिंजड़ा, पक्षियों के रहने के स्थान, पिंजरा।

पञ्जिका तत्० (स्त्री०) पुस्तक विशेष, जिससे तिथि, वार आदि जाने जाते हैं, पञ्चाङ्ग, तिथिपत्र।

पञ्जीरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का देवता का प्रसाद।

पट तत्० (पु०) वस्त्र, वसन, कपड़ा, कपड़े पर बना हुआ चित्र, पर्दा, यवनिका, शब्द विशेष जो आघात से उत्पन्न होता है, गिरने या मारने का शब्द, किवाड़, देवमन्दिर का किवाड़, तिर्यक, सीधा।—**कार** (पु०) तन्तुवाय, वस्त्र निर्माण।—**कुटी** (स्त्री०) कपड़े का घर, तम्बू, कनात।—**मञ्जरी** (स्त्री०) एक रागिनी का नाम।—**मण्डप** (पु०) वस्त्रगृह, कनात।—**वेश्म** (पु०) कपड़े का घर, डेरा, शामियाना।

पटक तत्० (पु०) डेरा, कनात, पड़ाव, छावनी, शिविर, सेना के रहने का स्थान।

पटकन दे० (स्त्री०) पछाड़, पटकी, चोट।—**खाना** (धा०) पछाड़ खाना, गिरना।

पटकना दे० (क्रि०) पछाड़ना, गिराना, नीचे गिराना।

पटका दे० (पु०) कमर बन्धा, कमर बाँधने का वस्त्र, करधनी।—**जाना** (क्रि०) पछाड़ा जाना, गिराया जाना।

पटकाना दे० (क्रि०) पछाड़ खाना, गिराया जाना, पछाड़ा जाना।

पटूका दे० (पु०) पटका, कमरबन्द, कटिवस्त्र, कमर बाँधने का कपड़ा।

पटड़ा दे० (पु०) सिल्ली, तख़ता, पटरी, पीढ़ा।

पटतर दे० (पु०) तुल्य, सदृश, समान, बराबर।

पटन दे० (पु०) पाटन, छावन, कोठा आदि का पटरी से पाटना, छत पाटना, छत बनाना।

पटना दे० (क्रि०) पाटना, पाटन करना, छाजना, भर जाना, वसूल हो जाना, हुंडी आदि के रुपये मिल जाना, सींचना, पानी सींचना, भरना, छाया जाना। (पु०) नगर विशेष, पाटलीपुत्र, यह नगर किसी समय विहार की राजधानी था।

पटनी दे० (स्त्री०) नैया, मांझी, कर्णधार, केवट।

पटपट दे० (पु०) शब्द विशेष, पटपट शब्द जो चने आदि के भूनने से या मारने से होता है।

पटरा दे० (पु०) पटड़ा, तख़ता।

पटरानी दे० (स्त्री०) बड़ी रानी, महिषी, महारानी, राजा की वह स्त्री जिसका राजा के साथ अभिषेक हुआ हो।

पटरी दे० (स्त्री०) छोटा पटरा, तख़्ता।

पटवा दे० (पु०) जाति विशेष, जो कपड़े बीनने का व्यवसाय करती है, पटकार।

पटवाना दे० (क्रि०) रुपये भरवाना, रुपये वसूल कर लेना, सिंचवाना।

पटवारी दे० (पु०) गाँव का हिसाब रखने वाला, भूमि का लेखा रखने वाला, गुमाश्ता।

पटह तत्० (पु०) आनकवाद्य, वाद्य विशेष, ढक्का विशेष, युद्ध के उपयोगी ढक्का, भेरी, दुन्दुभि, नगारा।

पटा दे० (पु०) पाट, काष्ठासन, जिस पर बैठ कर भोजन या देव पूजन आदि किया जाता है, गदका, पीढ़ा।

पटाका दे०, **पटाखा** } (पु०) छड़ाका, शब्द विशेष, एक प्रकार की आतशबाज़ी, अग्निक्रीड़ा, छछूँदर।

पटाना दे० (क्रि०) सींचना, पानी देना, चौका देना, लीपना, गोबर से या मिट्टी से लीपना, पोतना। कड़ी और पटरी से छत को पटवाना। हुंडी के रुपये भरना, विवाद मिट जाना। विस्तृत होना, फैल जाना।

पटापट दे० (पु०) मारने का शब्द, धड़ाधड़, अव्यक्त शब्द विशेष।

पटाव दे० (पु०) सिंचाई, छवाई, द्वार के ऊपर का काठ।

पटिया दे० (स्त्री०) पटरी, पट्टा, सिली, सिर की बनाई चोटी, स्लेट, पट्टी। (पु०) एक गहना, जो गले में पहना जाता है, पाटिया।

पटीना दे० (पु०) एक प्रकार के पक्षी का नाम।

पटीमा दे० (पु०) छापने का पटरा, जिस तख्ते पर कपड़े रख कर छीपी लोग छापते हैं।

पटीर तत्० (पु०) चलनी, चालनी, कियारी, खेत, वारिद, मेघ, वेणुवार, गोरोचन, वात रोग विशेष, चन्दन, खदिर, खैर, उदर, जठर, पेट, कन्दर्प।

पटीलना दे० (क्रि०) निचोड़ना, घूमना, मार निकाल लेना, मारना, पीटना।

पटु तत्० (पु०) दक्ष, निपुण, नीरोग, चतुर, कुशल, तीक्ष्ण, स्फुट, निष्ठुर, दया हीन, धूर्त, शठ। (पु०) पटोल, परोरा, परवर, करेला।—ता (स्त्री०)। —त्व (पु०) चतुराई, दक्षता, कुशलता, निपुणता।

पटुआ दे० (पु०) रेशम का काम करने वाला, रेशम से माला आदि गूथने का काम करने वाला।

पटूका दे० (पु०) पटका, कमरबन्द।

पटूत दे० (पु०) पुरुषत्व, पुरुषार्थ, पटुता, चतुरता।

पटूवा दे० (पु०) पाट, सन विशेष जिसके रस्सी तथा कपड़े कम्बल आदि बनते हैं।

पटेर दे० (पु०) एक पौधे का नाम, गोंदी।

पटेरा दे० (पु०) एक तरह का खूटा।

पटेल दे० (पु०) लठयाजी का काम, प्रभुत्व, अधिकार, जाति विशेष, कुरमी, जाति का सरपञ्च, अगुवा, गुजरात महाराष्ट्र आदि प्रान्तों की एक पदवी।

पटेला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, बजरा।

पटेली दे० (स्त्री०) छोटा पटेला, छोटी नाव।

पटैत दे० (पु०) लठैत, ठँगैत, लठ चलाने की क्रिया में कुशल।

पटोतन दे० (पु०) पटन, पाटन, तख्ते से घर पाटना।

पटोर दे० (पु०) रेशमी वस्त्र, पाट के बने कपड़े।

पटोल तत्० (पु०) परवर, परोरा, परवल।

पटोहिया दे० (पु०) उल्लू, पेंचा, उलूक।

पटौनी दे० (पु०) पटेली नाव, नैया।

पट्ट तत्० (पु०) पाटी, रेशमी, सन के कपड़े, कौषेय वस्त्र, पगड़ी।—**महिषी** (स्त्री०) प्रधान महारानी।

पट्टन तत्० (पु०) नगर, पत्तन, बड़ा ग्राम, शहर।

पट्टा दे० (पु०) घोड़े की पेटी, कुत्ते के गले में बाँधने का चमड़ा, कानों के पास रखे हुए बाल, सनदनामा, किसी प्रकार का अधिकार पत्र।

पट्टी दे० (स्त्री०) पाटी, व्रण बाँधने का कपड़ा, किसी वस्तु का भाग।

पट्टू दे० (पु०) एक प्रकार का गरम कपड़ा जो ऊन का होता है, लोई, कम्बल।

पट्ठा दे० (पु०) नवयुवा, पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला, पाठा, जवान हाथी, नस, शिरा।

पठन तत्० (पु०) पाठ, पढ़ना, अध्ययन।

पठाना दे० (क्रि०) भेजना, रवाना करना, पठवाना।

पठिया दे० (स्त्री०) युवती, तरुणी, जवान स्त्री, छोटी बकरी।

पठौना दे० (क्रि०) पठाना, भेजना, पठवाना।

पठौनी दे० (स्त्री०) पठाने की मजूरी, भेजने का दाम।

पड़ जाना दे० (क्रि०) पटका जाना, पछाड़ खा जाना, गिरना।

पडना दे० (क्रि०) गिरना पटकना, घटना, घट जाना, ठहर जाना, डेरा करना।

पडपडाना दे० (क्रि०) बडबडाना, बिना प्रयोजन की बातें करना, बकना, पीटना, खूब पीटना।

पडरहना दे० (वा०) सो रहना, काम छोड देना, हताश होना, निराश हो जाना।

पडापड दे० (अ०) बार बार मार के, खूब मार के, धमाधम पीटकर।

पडापाना दे० (क्रि०) अनायास पाना, सहज से पाना, बिना परिश्रम पा लेना।

पडाव दे० (पु०) शिविर सन्निवेश, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी, डेरा क्षुद्र, मार्ग का वास-स्थान।

पडिया दे० (स्त्री०) भैंस का बच्चा, पाडी।

पडोस दे० (पु०) प्रतिवास, समीपवास, सन्निकट वास।

पडोसी दे० (पु०) प्रतिवासी, समीप वासी, पास पास रहने वाले आपस में पडोसी हैं।

पढन दे० (स्त्री०) पढने की चाल, अध्ययन की रीति, अभ्यास।

पढना दे० (क्रि०) पाठ पढना, अध्ययन करना, अभ्यास करना, बाँचना, सीखना, रटना, घोखना।

पढन्त दे० (स्त्री०) अध्ययन, पाठ, सन्था, सबक।

पढा दे० (गु०) पण्डित, पढा हुआ।—**गुना** (गु०)।—**लिखा** (गु०) पढा हुआ, प्रवीण, अभिज्ञ।

पढाना दे० (क्रि०) सिखाना, सिखलाना शिक्षा देना, विद्या अध्ययन कराना, पाठ पढाना, सन्था देना।

पढिन दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली।

पण तत्० (पु०) प्रतिज्ञा, वचन, होड, शर्त, बीस गण्डे कौडी का परिमाण, व्यवहार, लेनदेन का व्यापार, मूल्य, वेतन।

—**न** तत्० (पु०) बेचना, विक्रय करना, दूकान चलाना।

पणित तत्० (गु०) बेचा गया, बेचा हुआ, विक्रय स्तुत, स्तुति किया हुआ।

पण्डा दे० (पु०) पुजारी, देवपूजक, तीर्थ पुरोहित। (स्त्री०) मति, बुद्धि।

पण्डित तत्० (पु०) विद्वान्, पढा हुआ, अध्यापक, पढाने वाला।—**मन्य** (पु०) पण्डिताभिमानी, विद्याभिमानी, मूर्ख।

पण्डिताई दे० (स्त्री०) पण्डित का काम, पढाना आदि।

पण्डितायन दे० (स्त्री०) पण्डित की स्त्री।

पण्डुक् दे० (पु०) पक्षी विशेष, घुग्घू।

पण्डवी दे० (स्त्री०) जल का पक्षि विशेष।

पण्य (पु०) बेचने योग्य वस्तु, व्यवहार की वस्तु बेचने के लिये बाजार में रखी हुई वस्तु।—**शाला** (स्त्री०) दूकान, हाट, बाजार।—**स्त्री** (स्त्री०) वेश्या, वाराङ्गना, पतुरिया।

पत दे० (स्त्री०) सुख्याति, बडाई, प्रतिष्ठा, कीर्ति, यश।

पतग तद्० (पु०) आकाशचारी, पक्षी, सूर्य, सर्प, मौर।

पतङ्ग तत्० (पु०) सूर्य, पक्षी, फतिङ्गा टिड्डी, उडने वाला कीडा, एक प्रकार की लकडी, जिससे रङ्ग निकाला जाता है।

पतङ्गा दे० (पु०) चिनगारी, चिनगी, स्फुलिङ्ग, अग्नि के छोटे छोटे कण।

पतञ्जलि तत्० (पु०) व्याकरण महाभाष्यकर्ता ऋषि इन्होंने पाणिनि के सूत्रों पर भाष्य बनाया है योग दर्शन का पतञ्जलि और व्याकरण महाभाष्यकार पतञ्जलि दोनों एकही व्यक्ति थे। कात्यायन पाणिनि के सूत्रों का खण्डन किया और पाणिनि के पक्षपाती पतञ्जलि ने कात्यायन के वार्तिकों का अपने भाष्य में खण्डन किया। इन्होंने एक वैद्यक भी ग्रन्थ बनाया है। भारत के पूर्वभाग में गोन

प्रदेश के ये वासी थे, इनकी माता का नाम गोणिका था। पुरातत्ववेत्ता पण्डितों ने महाभाष्य के शब्दों और वाक्यों के आधार पर पतञ्जलि का समय निर्णय कर दिया है "मौर्यैर्हिरण्यार्थिभिरर्चाः प्रकल्पिता" इस वाक्य के टुकड़े से यह अवश्य मानना होगा कि चन्द्रगुप्त के पीछे पतञ्जलि हुए हैं। अतएव उन विद्वानों ने ईसवी सन् के १५० वर्ष पूर्व पतञ्जलि का समय माना है। इसी प्रकार और प्रमाणों के आधार पर यूनानी मिनिन्डर और पाटलीपुत्र (पटना) के राजा पुष्पमित्र के समकालीन वे पतञ्जलि को मानते हैं।

पतझड़ दे० (पु०) एक ऋतु का नाम, जिस ऋतु में वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं।

पतन तत्० (पु०) [पत्+अनट्] पछाड़, पटकन, पड़न, पड़ना, गिरना, स्खलित होना।

पतत्र तत्० (पु०) पक्ष, पंख, पर, पाँख।

पतद्ग्रह तत्० (पु०) पीकदान, पीकदानी, ष्ठीवनपात्र।

पतला दे० (गु०) सूक्ष्म, झीना, कृश, दुर्बल, महीन।

पतलाई दे० (स्त्री०) दुर्बलता, दुबलापन।

पतलो दे० (पु०) मूर्खावस्था, झड़पन।

पतवार दे० (स्त्री०) कन्हर, नाव के पीछे का डाँड़ जिससे नाव चलाई जाती है।

पता दे० (पु०) चिन्ह, खोज, सन्धान, ठिकाना।

पताका तत्० (स्त्री०) ध्वजा, झण्डा, निशान, फरहरा।

पताकी तत्० (पु०) पताकाधारी, ध्वजाधारी, ध्वजैल, ध्वजा वाला।

पति तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, भर्त्ता, रक्षक, धव। —देव—देवता (स्त्री०) पति को देवता के समान समझने वाली स्त्री, देवबुद्धि से पति ही की सेवा करने वाली, पतिव्रता। यथा :—

> तू पतिदेवन की गुरु बेटी।
> तेरो यश मृत्यु कहावत चेटी॥
> —रामचन्द्रिका।

—व्रता (स्त्री०) कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पति की सेवा करने वाली स्त्री।

पतित तत्० (गु०) भ्रष्ट, दोषी, कलङ्की, जातिच्युत, समाजच्युत, अधर्मी। —पावन (पु०) पतितों को पवित्र करने वाला, परमात्मा, परमेश्वर।

पतिमा तद्० (स्त्री०) प्रतिमा, मूर्त्ति, किसी वस्तु की बनी हुई मूर्त्ति।

पतिया दे० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र, प्रतीति पत्र, विश्वास का पत्र।

पतियाना दे० (क्रि०) भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना।

पतियारा दे० (पु०) भरोसा, विश्वास, प्रतीति।

पतिंवरा तत्० (स्त्री०) पतिवरण करने के योग्य स्त्री, विवाह योग्य अवस्था वाली।

पतीरी दे० (स्त्री०) चटाई विशेष, एक प्रकार की चटाई।

पतील दे० (गु०) पतला, झीना, मिही।

पतीला दे० (पु०) बटुवा, बटुई, बटलोही।

पतुकी दे० (स्त्री०) मिट्टी की हँड़िया, छोटी कड़ाही।

पतुरिया दे० (स्त्री०) वेश्या, नर्त्तकी, वाराङ्गना।

पतोहू दे० (स्त्री०) बेटा की स्त्री, पुत्रवधू, बहू।

पतौवा दे० (पु०) पत्तो, पत्ता, पल्लव, पात।

पत्तन तत्० (पु०) नगर, ग्राम, पुर, शहर।

पत्तर दे० (पु०) पत्र, पत्ता, चिट्ठी, सोने चाँदी या ताँबे का पत्र, जिसमें दान आदि की बातें लिखी जाती हैं।

पत्तल दे० (स्त्री०) पतवार, पतरी, पत्ता।

पत्ता दे० (पु०) पाता, पत्र, पत्ती। —होना (वा०) भाग जाना, निकल जाना, चंपत होना।

पत्ति तत्० (पु०) पैदल चलने वाली सेना, एक प्रकार की सेना का नाम। एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल जिस सेना में हों उसका नाम पत्ति है।

पत्ती दे० (स्त्री०) पाती, पत्र, पंखड़ी, भांग, बूटी।

पत्थर दे० (पु०) पाषाण, शिला, पाथर, उपल। —छाती पर रखना (वा०) सन्तोष करना, सह लेना, वश न चलने से चुप रह जाना। बहुत बड़ी

आपत्ति को धीरता पूर्वक सहना ।—पसीजना (वा०) कोमल चित्त होना, सदय होना, दयावान् होना, दुःखी पर दया करना ।—पानी हो जाना (वा०) कठोर चित्त का भी कोमल हो जाना, क्रूर चित्त में भी दया उत्पन्न होना ।—सा फेंक मारना (वा०) बिना समझे बूझे कहना, बात बिना जाने ही उत्तर देना, कठोर बातें कहना, कड़ी बात कहना ।—से सिर फोड़ना (वा०) कठिन काम करने के लिये उद्यत होना, मूर्ख को सिखाना, नासमझ को समझाना ।—होना (वा०) भारी होना, ठिठक जाना, अचल होना, निर्दय होना ।—कला (स्त्री०) बन्दूक, तुपक ।

पत्नी तत्० (स्त्री०) भार्या, स्त्री, दारा, कुटुम्बिनी ।

पत्यारो दे० (पु०) पतियारा ।

पत्र तत्० (पु०) पाती, चिट्ठी ।—रथ (पु०) पक्षी, चिड़िया ।—रेखा (स्त्री०) तिलक की रेखा, चन्दन लगाना ।—दाता (पु०) चिट्ठी देने वाला, चिट्ठी बाँटने वाला, चिट्ठीरसा ।—वाहक (पु०) अश्रु, आँसू, बालक, वायु ।—परशु (पु०) सोने के पत्र काटने वाली कैंची ।—पाश्या (स्त्री०) सोने का टीका, गहना विशेष, जो मस्तक पर लगाया जाता है ।—रंजन (पु०) पत्र लिखना, चित्र बनाना, रङ्ग चढ़ाना ।

पत्रा दे० (पु०) तिथिपत्र, पञ्चाङ्ग, पत्रिका, पन्ना, पृष्ठ ।

पत्रालय तत्० (पु०) डाकख़ाना ।

पत्राङ्क तत्० (पु०) पृष्ठ संख्या, पत्रों पर के अङ्क ।

पत्रिका तत्० (स्त्री०) चिट्ठी, पत्र ।

पथ तत्० (पु०) मार्ग, राह, रास्ता, बाट, पैंडा, डगर ।

पथर दे० (पु०) पत्थर, पखान ।—कला (पु०) बन्दूक, तुपक ।—चटा (पु०) शाक विशेष, कृपण ।—फोड़ (पु०) कठफोड़वा, पक्षि विशेष ।

पथराना दे० (क्रि०) पत्थर के समान हो जाना, कड़ा होना, व्रण आदि का कड़ा होना, पत्थर से मलना, पत्थर मारना ।

पथरी दे० (स्त्री०) आँकड़, कंकरी, एक प्रकार का रोग जिसमें मांस ऊपर चढ़ जाती है । छोटी चिड़ि पक्षियों के भीतर का अङ्ग ।

पथरीली दे० (गु०) कङ्करीली, जहाँ बहुत कङ्कड़ हों, प्रस्तरमय भूमि ।

पथिक तत्० (पु०) यात्री, अध्वग, राही, रास्ता चलने वाला ।

पथ्य तत्० (पु०) रोगी का आहार, रोगी का हित कारी आहार ।

पथ्या तत्० (स्त्री०) हड़, हर्र, हरीतकी ।

पद तत्० (पु०) पाँव, पैर, चरण, पैर का चिन्ह पदाङ्क, स्थान, प्रतिष्ठा, मान, आदर, अधिका महिमा, शब्द, स्वरूप, विभक्ति के साथ का शब्द —क्रम (पु०) पाँव का काम, डेग ।—ग (पु पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला ।—चर (पु पदगामी, मनुष्य ।—च्युत (गु०) अधिकार पदभ्रष्ट ।—ज (पु०) पाँव की अँगुलियाँ ।—त्या (पु०) अधिकारत्याग, स्थानत्याग ।—त्रा (पु०) पद की रक्षा करने वाले, जूता, पनह पनही ।

पदना दे० (पु०) पदक्कड़, पादने वाला, अधिक पा वाला, डरपोकना, डरू ।

पदनी दे० (स्त्री०) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी ।

पदपटी दे० (स्त्री०) नृत्य विशेष, एक प्रकार नाच ।

पदपत्र तत्० (पु०) पुष्करमूल, पुष्करमूल, क का पत्र, कमलपत्ता, अधिकारपत्र, पद की नियु का अधिकारपत्र ।

पदपीठ तत्० (पु०) खड़ाऊँ, जूता ।

पदम तद्० (पु०) पद्म, कमल, सरोरुह ।

पदवी तत्० (स्त्री०) पद्धति, उपाधि, मार्ग, मम सूचक पद, स्वरूप द्योतक शब्द, मन्या, पथ, मा

पदवृत्त तत्० (पु०) युक्त शब्द, व्युत्पन्न शब्द, शब्दों के मिलाने से बना हुआ शब्द, छन्द जिन शब्दों में अक्षरों का नियम रहता है वे वृत्त या अक्षरवृत्त कहे जाते हैं ।

पदस्थ तत्० (पु०) पदारूढ़, पद पर वर्तमान।

पदाङ्क तत्० (पु०) पद चिन्ह, पैर का दाग़। —**अनुसरण करना** (वा०) पीछे पीछे चलना, अनुयायी बनना, अनुकरण करना।

पदाघात तत्० (पु०) लात का आघात, पैर से मारना।

पदाति तत्० (पु०) पदातिक, पैदल चलने वाली सेना।

पदाना दे० (क्रि०) तङ्ग करना, दुःख देना, धमकाना, डरवाना, हैरान करना।

पदाम्भोज तत्० (पु०) चरण कमल, कमल के समान चरण, कमल तुल्य पद।

पदारविन्द तत्० (पु०) [पद + अरविन्द] पदपद्म, कमल तुल्य चरण।

पदार्थ तत्० (पु०) वस्तु, सामग्री, सामान, तत्व, पद के अर्थ, शब्दों का प्रतिपाद्य वैशेषिक न्याय के मत से सात वस्तुओं की पदार्थ संज्ञा है द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव, नैयायिकों के मत से सोलह पदार्थ हैं।

पदासन तत्० (पु०) पादपीठ, पीढ़ा, बैठने का पीढ़ा, काष्ठासन विशेष।

पदोड़ा दे० (पु०) पदना, पादने वाला, पदक्कड़, पद्दू।

पद्धति तत्० (स्त्री०) पदवी, मार्ग, पैंड़ा, डगर, परिपाटी, क्रम।

पद्म तत्० (पु०) उत्पल, पङ्कज, कमल, संख्या विशेष, सौ नील, १०००००००००००००००, व्यूह विशेष, दाशरथ, श्रीराम, नाग विशेष, पद्मोत्तर के पुत्र, बलदेव, रतिबन्ध विशेष। —**काष्ठ** (पु०) ओषधि विशेष, पद्मवृक्ष। —**गर्भ** (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता, विधि। —**जन्मा** (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, पद्म से उत्पन्न। —**तन्तु** (पु०) मृणाल, पद्म की डंडी। —**नाभ** (पु०) विष्णु, नारायण। —**नेत्र** (पु०) पद्मपत्र के समान नेत्र विशिष्ट, कमल पुष्प के पत्र के समान जिसकी आँख हो। —**पत्र** (०) पुष्करमूल, कमलदल, पद्मपत्र। —**पलाश—लोचन** (पु०) श्रीकृष्ण, विष्णु, पद्म पत्र के समान विस्तृत लोचन। —**योनि** (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, हिरण्यगर्भ। —**राग** (पु०) रक्तवर्ण, मणि विशेष। —**रेखा** (स्त्री०) हस्तरेखा विशेष। —**लाञ्छन** (पु०) सूर्य, कुबेर, राजा, प्रजापति। —**लोचन** (पु०) पद्म समान चक्षु विशिष्ट। —**स्नुषा** (स्त्री०) लक्ष्मी, दुर्गा, गङ्गा।

पद्मगुप्त तत्० (पु०) संस्कृत के एक विख्यात और महा कवि, ये धारा के राजा और भोजदेव के चचा राजा मुञ्ज के सभासद थे। भोजदेव के पिता के वर्णन में इन्होंने एक काव्य रचा है, जिसका नाम नवसाहसाङ्क है। रचनाशैली तथा मधुरिमा में ये कालिदास की बराबरी करते हैं। इनका नवसाहसाङ्क, कुमारदास का जानकीहरण, अश्वघोष का बुद्धिचरित, कालिदास का रघुवंश ये तीन समान श्रेणी के काव्य हैं। इनका दूसरा नाम परिमल था। दसवीं शताब्दी ही इनका समय है।

पद्मवर्ण तत्० (पु०) महाराज यदु के पुत्र, ये नाग कन्या के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनकी माता का नाम मधुकुन्दरा था।

पद्मा तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, कमला, लवङ्ग, पद्मचारिणी, पद्मगी, मनसादेवी, बृहद्रथ राजा की कन्या। एक नदी का नाम। —**कर** (पु०) जलाशय विशेष, दीर्घिका, वापी, तड़ाग, कमल युक्त पुष्करिणी। —**वती** (स्त्री०) मनसादेवी, नदी विशेष, पद्मानदी, पद्मचारिणी नामक एक वृक्ष, गीतगोविन्दकर्ता जयदेव कवि की स्त्री का नाम। —**लया** (स्त्री०) [पद्म + आलया] लक्ष्मी, कमला जिसका कमल ही गृह है। —**सन** (पु०) [पद्म + आसन] योगासन विशेष, ब्रह्मा, प्रजापति। —**ह्ट** (स्त्री०) [पद्मा + आह्वा] पद्मचारिणी, वृक्ष विशेष। —**क्ष** (पु०) [पद्म + अक्षि] पद्मतुल्य नेत्र।

पद्मिनी तत्० (स्त्री०) पद्मयुक्त देश, पद्म समूह, पद्मलता, कमलिनी, नलिनी, सुलक्षणा स्त्री, उत्तमा स्त्री, सरवर्तिनी, स्त्रियों के चार भेद में का एक भेद,

एक महारानी का नाम। महाराणा भीमसिंह की प्रधान महिषी। १२७५ ई० में लक्ष्मणसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर बैठे, परन्तु उनके अप्राप्तवयस्क होने के कारण उनके पितृव्य भीमसिंह राज्य व्यवसाय करते थे। पद्मिनी बड़ी सुन्दरी स्त्री थी, उसका सौन्दर्य ही उसके लिये काल हो गया, उसकी सुन्दरता की आग में मेवाड़ की राजधानी जलभुन गई। खिलजी वंश के सम्राट् ने पद्मावती के रूप गुण की प्रशंसा सुनी। पद्मिनी के मिलने की आशा से छल कपट रच कर दिल्ली के सम्राट् ने भीमसिंह को क़ैद कर लिया। खिलजी अलाउद्दीन ने सोचा था कि इस उपाय से पद्मिनी अपने हाथ लग जायगी, परन्तु उनका सोच विचार पानी में पड़ गया। पद्मिनी ने अपनी चतुरता से उनके कान काट लिये। पद्मिनी ने सम्राट् के यहाँ कहवाया कि मैं आपके यहाँ आने को प्रस्तुत हूँ, परन्तु उसके पहले आप अपनी सेना यहाँ से हटा लें, क्योंकि हमारे साथ हमको विदा करने के लिये बहुत सी स्त्रियाँ आवेंगी, किसी प्रकार उनकी प्रतिष्ठा में बाधा न हो, और उन बड़े घर की स्त्रियों के साथ आदर का बर्ताव हो, इसका प्रबन्ध आपको करना होगा, और अन्तिम विदाई होने के लिये एक बार हमारे पति से भेंट करा देनी होगी। कामान्ध अलाउद्दीन ने सब बातें मान लीं। नियत दिन हजारों वीर राजपूत पर्दे ओहारी पालकी पर चढ़ कर अलाउद्दीन के डेरे में जमा होने लगे, भीमसिंह के लिये पद्मिनी से थोड़ी देर के लिये भेंट करने की भी व्यवस्था हुई थी। अपनी पालकी में भीमसिंह को बैठा कर पद्मिनी लौटी, पद्मिनी की सहेलियाँ जा रही हैं यह समझ कर किसी ने रोका टोका नहीं। अभी तक पद्मिनी नहीं आई इससे खिलजी अलाउद्दीन बहुत घबड़ाया, शीघ्र ही उसने पालकियों के ओहार उठवाये, ओहार उठाने पर जो उसने देखा उससे उसका क्रोध और निराशा अधिक बढ़ गई। पालकी से उतर कर राजपूत वीरों ने शीघ्र ही सम्राट् की सेना पर धावा किया। सम्राट् की सेना वहाँ ही लड़ने में जुझ गई, इधर भीमसिंह एक घोड़े पर सवार होकर चित्तौर के क़िले में पहुँचे। परन्तु इतना करने पर भी पद्मिनी अपने स्वामी की रक्षा नहीं कर सकी। अलाउद्दीन ने बड़े समारोह से चित्तौर पर चढ़ाई की, राजपूत वीर भी जी खोल कर क़िले की रक्षा करने लगे। पद्मिनी का चाचा गोरा और उसका भतीजा बादल ये दोनों बड़ी वीरता से अनेक शत्रुओं को मार अन्त में उसी युद्ध में काम आये। स्वयं भीमसिंह युद्ध क्षेत्र में उपस्थित हुए, इधर राजपूत वीराङ्गनाओं ने चिता में प्रवेश किया। भीमसिंह युद्ध में मारे गये, चित्तौर की भूमि वीरशून्या हो गई। परन्तु अलाउद्दीन को पद्मिनी नहीं मिली, अलाउद्दीन ने देखा था कि चिता से धूम निकल रहा है। वह स्थान एक पवित्र तीर्थ समझा जाता है।

पद्य तत्० (पु०) छन्द, कवि की कृति, काव्य, श्लोक, कविता, शाठ्य, शठता।—**रचना** (स्त्री०) श्लोक बनाना, कविता करना, पद्यप्रणयन।

पधारना दे० (क्रि०) आना, जाना, विदा होना, पूज्यों के आने के या जाने के समय इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

पन तद्० (पु०) पण, होड़, ठहराव, शर्त, प्रतिज्ञा, वचन, भाव, वाचक, भावार्थ द्योतक। यथा :—लड़कपन, भोलापन, आदि।—**कपड़ा** (पु०) भीगा कपड़ा जो व्रण आदि के बाँधने के लिये होता है।—**गोटी** (स्त्री०) छोटी वसन्त, चेचक का एक भेद।—**घट** (पु०) जलावतार, पानी भरने का घाट।—**च** (पु०) प्रत्यञ्चा, रोदा, चिल्ला, धनुष का गुण।—**चक्की** (स्त्री०) एक प्रकार की चक्की जो पानी के वेग से चलती है।—**पना** (क्रि०) मोटा होना, बढ़ना, परिवृद्ध होना।—**पनाहट** (स्त्री०) सनसनाहट, ज़ोर से हवा के चलने का शब्द।—**डब्बा** (पु०) पान रखने का डब्बा।—**भात** (पु०) पानी में भिगाया हुआ भात।—**बाड़ी** (स्त्री०) पान की बारी, पान का

बग़ीचा, जहाँ पान बोया जाता है।—धार (पु०) पौधा विशेष, राजपूतों की एक शाखा।—वारा (पु०) पत्तल, पतरी।—शाला (स्त्री०) प्याऊ, पौशाल।—सा (गु०) फीका, अलोना, खाने की किसी वस्तु में अधिक पानी पड़ जाने के कारण पानी का सा स्वाद होना।—सारी (पु०) पसारी, गन्ध वणिक्, औषध आदि किराना बेचने वाला बनिया।—साल (पु०) प्याऊ, पनशाला, पानी पिलाने का स्थान, प्रपा।—सोई (स्त्री०) छोटी नाव, डोंगी।—हा (पु०) पता, चिन्ह, सुराग, चोरी गई वस्तु का पता बताने के लिये कुछ ठहराव करना, वस्त्र का चौड़ान, कपड़े की चौड़ाई।—पनहाना (क्रि०) गौ भैंस आदि का दूध दुहने के लिये उनका स्तन सुहराना।—हारा (पु०) भरा, पानी भरने वाला, नौकर।—हारिन (स्त्री०) पानी भरने वाली, मजूरिन।—हारी (स्त्री०) पानी भरने वाली स्त्री, पनहारिन।

पनस तद्० (पु०) फल विशेष, कटहर का फल।

पनही दे० (स्त्री०) जूता, पगरखी, उपानह।

पनाली तद्० (स्त्री०) प्रणाली, जल निकलने का मार्ग, नाली, मोरी।

पनिया दे० (पु०) पानी, जल। (गु०) पानी का सर्प।

पनियाना दे० (क्रि०) पानी लगाना, पानी भरना।

पनियाला दे० (पु०) पनियार, एक प्रकार के फल का नाम।

पनीर दे० (पु०) खाद्य विशेष, खाने की एक वस्तु का नाम, अम्ल संयोग से दूध को फाड़ डालने से जो खाद्य बनता है।

पनीहा दे० (पु०) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु जलजन्तु, जल में उत्पन्न होने वाले जीव।

पन्थ दे० (पु०) धर्म मार्ग, मत, मार्ग, पदवी, कबीर पन्थ, दादू पन्थ।

पन्था दे० (पु०) मार्ग, बाट, पैंडा, पन्थ, मार्ग, रास्ता, राह।

पन्थी दे० (पु०) किसी धर्मपंथ के अनुयायी, पन्थाई, यथाः—दादूपन्थी, कबीर पन्थी, पथिक, यात्री, बटोही, अध्वग, मार्ग चलने वाला।

पन्थाई दे० (पु०) पन्थी, पन्थ का अनुयायी, मतावलम्बी।

पन्नग तद्० (पु०) [पद+न+गम्+ड] सर्प, उरग, अहि, औषध विशेष।—पति (पु०) शेष, सर्पराज, अनन्त।

पन्नगारि तद्० (गु०) सर्पशत्रु, गरुड़, विष्णु का वाहन।

पन्नगासन तद्० (पु०) [पन्नग+अशन] पन्नगारी, गरुड़ पक्षी।

पन्नगी तद्० (स्त्री०) सर्पिणी, मनसादेवी।

पन्ना दे० (पु०) रत्न विशेष, हरे रङ्ग का मणि, *हरिन्मणि*।

पन्नी दे० (स्त्री०) सुवर्ण, आदि का पतला पत्र, तबक।

पपड़ा दे० (पु०) टुकड़ा, चूर्ण, *छिलका*।

पपड़िया दे० (स्त्री०) छोटा पपड़ा।

पपड़ियाकत्था दे० (पु०) श्वेतकत्था, सफ़ेद खैर।

पपड़ी दे० (स्त्री०) देवली, दिवाली, छिलका, परत, त्वक्।

पपड़ीला दे० (गु०) पड़तीला, अधिक छिलके वाला।

पपनी दे० *(स्त्री०) बरनी, बरवनी, पक्ष्म।*

पपरा दे० (पु०) पपड़ा, छिलका, त्वक्, वृक्ष आदि का त्वक्।

पपरी दे० (स्त्री०) छोटी पपड़ी, पतला छिलका।

पपीहा दे० (पु०) पक्षि विशेष, चातक, इस पक्षी का स्वभाव है कि नदी आदि का पानी कभी नहीं पीता, किन्तु स्वाँती नक्षत्र के मेघों का ही पानी पीता है।

पपैया दे० (पु०) खिलौना विशेष, एक प्रकार का फल, पक्षि विशेष।

पपोटा दे० (पु०) पलक, आँख का पलक, अक्षिपुट।

पय तद्० (पु०) पानी, नीर, जल, दूध।—निधि

परमायु तत्० (पु०) [परम + आयु] जीवित काल, आयु, उमर, अवस्था, बड़ी अवस्था।

परमेश्वर तत्० (पु०) [परम + ईश्वर] परब्रह्म, शिव, विष्णु, परमात्मा, सर्वैश्वर्य सम्पन्न, ईश्वर, भगवान्।

परमेश्वरी तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, भगवती, दुर्गा, पार्वती, सरस्वती।

परमेष्ठी तत्० (पु०) ब्रह्मा, पितामह, जिन विशेष, शालग्राम विशेष, गुरु विशेष।

परम्पर तत्० (पु०) प्रपौत्रादि, क्रमागत, उत्तरोत्तर, मृग विशेष।

परम्परा तत्० (स्त्री०) अन्वय, वंश, कुल, सन्तान, परिपाटी, अनुक्रम, क्रमशः, आनुपूर्वी।—गत (गु०) [परम्परा + आगत] क्रमागत, यथानुक्रम से आया हुआ, पीढ़ी दर पीढ़ी से आया हुआ।

परला दे० (गु०) दूसरी ओर का, उधर का, उस ओर का।

परलोक तत्० (पु०) अन्यलोक, दूसरा लोक, स्वर्गादिलोक, लोकान्तर, उत्तर काल, जन्मान्तर। —गम (पु०) मृत्यु, मरण निधन, परलोक गमन, लोकान्तर गमन।

परवल दे० (पु०) पलवल, स्वनाम ख्यात फल, जिसकी तरकारी होती है।

परवान् तत्० (गु०) परतन्त्र, पराधीन, परवश। (पु०) पाल का कपड़ा।

परवश तत्० (गु०) पराधीन, अन्यवश, अन्याधीन, परवान।

परश तत्० (पु०) रत्न विशेष, पारसमणि।

परशु तत्० (पु०) अस्त्र विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी।—धर (पु०) गणेश, कुठारधारी।

परशुराम तत्० (पु०) महर्षि जमदग्नि के पुत्र, इनकी माता का नाम रेणुका था। इनके पितामह महर्षि ऋचिक ब्राह्मण थे, परन्तु, इनकी पितामही सत्यवती क्षत्रिया थीं। परशुराम का नाम केवल राम ही था, परन्तु गन्धमादन पर्वत पर इन्होंने तपस्या के द्वारा महादेव को सन्तुष्ट किया और उनसे तेजोमय परशु पाया, इसी कारण इनका नाम परशुराम हुआ था। परशुराम ने अपनी माता रेणुका का सिर काट डाला था, और इक्कीस बार क्षत्रियों का समूल नाश करने की चेष्टा की। तब भी परशुराम पृथिवी को निःक्षत्रिय नहीं कर सके थे। महर्षि पराशर ने सौदास पुत्र सर्वकर्मा की रक्षा की थी, और भी अनेक राजकुमारों की जहाँ तहाँ रक्षा हुई थी, महर्षि कश्यप ने इन समस्त क्षत्रिय राजकुमारों को ले आकर राज्याभिषेक कराया।

परश्व तत्० (अ०) परसों, आने वाला तीसरा दिन, एक दिन के अनन्तर।

परस दे० (पु०) स्पर्श, छूत।

परसत दे० (क्रि०) छूते ही, स्पर्श करते ही, स्पर्श करते ही से।

परसना दे० (क्रि०) स्पर्श करना, छूना।

परसिया दे० (पु०) हँसिया, हँसुआ, दाँती, दराती।

परसूत दे० (पु०) रोग विशेष, परसूत का रोग, लड़का होने के बाद जो स्त्रियों को रोग होता है।

परसूती दे० (स्त्री०) लड़के वाली, जिसके तुरन्त लड़के हुए हों, परसूत रोग वाली स्त्री।

परसों दे० (अ०) आगे या पीछे का तीसरा दिन, एक दिन के अनन्तर का पहला या पीछे का दिन।

परस्थो दे० (पु०) रहना, वास करना, ठहरना, स्थित होना।

परस्पर तत्० (अ०) अन्योन्य, इतरेतर, आपस में।

परस्मैपद तत्० (पु०) व्याकरण में क्रिया का एक प्रकार का चिन्ह।

परा तत्० (अ०) विमोक्ष, मुक्ति, प्राधान्य, प्रतिलोम्य, वैपरित्य, भृशार्थ, आभिमुख्य, विक्रमगति, (उपसर्ग) भङ्ग, अहङ्कार, अनादर, प्रत्यावृत्ति, तिरस्कार, शब्द का स्वरूप विशेष। नाभिरूप मूलाधार से उत्पन्न प्रथम उक्त, नाद स्वरूप वर्ण, शब्द का आदि स्वरूप।

पराव तत्० (पु०) व्रत विशेष, प्रायश्चित विशेष, खड्ग, क्षुद्र, रोग विशेष, जन्तु भेद।

पराक्रम तत्० (पु०) शक्ति, वीर्य, विक्रम, प्रताप, उद्योग, निष्क्रमण ।—शून्य (गु०) शक्तिहीन, निर्वीर्य, प्रताप रहित, दुर्बल ।

पराक्रमी तत्० (गु०) वीर्यवान्, विक्रमी, प्रतापान्वित, प्रतापी, बलवान्, साहसी, शूर, वीर, योद्धा ।

पराग तत्० (पु०) पुष्परेणु, पुष्पधूली, स्नानोपद्रव्य, गिरि विशेष, विख्याति, उपराग, चन्दन, स्वच्छन्द गमन, स्वेच्छापूर्वक गमन ।

पराङ्मुख तत्० (गु०) विमुख, बहिर्मुख, लौटा हुआ, उदासीन ।

पराजय तत्० (पु०) पराभव, तिरस्कार, हार ।

पराजित तत्० (गु०) कृत पराजय, पराभूत, विजित, निर्जित, हारा हुआ, रणभग्न ।

पराजिता तत्० (स्त्री०) लता विशेष, विष्णुक्रान्ता ।

पराजेता तत्० (गु०) पराजयकर्ता, विजयी, जीतने वाला ।

पराठा दे० (पु०) एक प्रकार की रोटी, स्वनाम प्रसिद्ध रोटी ।

परात दे० (पु०) थाल, बड़ी थाली ।

परातिका तत्० (स्त्री०) ओषधि विशेष, लाल पुनर्नवा ।

पराती दे० (स्त्री०) परात, थाली (पु०) प्रातःकाल गाने योग्य भजन, प्रभाती ।

पराधीन तत्० (गु०) अस्वतन्त्र, परवश, परतन्त्र ।

पराना दे० (क्रि०) भागना, भागजाना, उठजाना होना ।

परानी तद्० (पु०) प्राणी, जीवधारी, चेतन ।

परान्न तत्० [पर + अन्न] अन्य का अन्न, दूसरे का अन्न, दूसरे का दिया हुआ अन्न ।

पराभव तत्० (पु०) पराजय, हराना, परिभव, तिरस्कार, उत्पतन, विनाश, उजाड़ना ।

पराभूत तत्० (गु०) पराजित, परास्त, निर्जित, हारा ।

परामर्श तत्० (पु०) मन्त्रणा, युक्ति, विवेचना, वितर्क, सम्मति, सलाह ।

परामर्ष तत्० (पु०) निवृत्ति, तितिक्षा, क्षमा, सहना, क्षमा करना ।

परामोध दे० (पु०) फुसलाना, फुनाना, भाँसा ।

परायण तत्० (पु०) आसक्तचित्त, अत्यासक्त, आश्रय, निपुण, तत्पर, अभीष्ट ।

पराया दे० (गु०) अन्यदीय, अन्य संबन्धी, दूसरे का, और का ।

परारि तत्० (गु०) पूर्वतर वर्ष, गया हुआ या आने वाला तीसरा वर्ष ।

परार्थ तत्० (पु०) अन्यार्थ, दूसरे के निमित्त, स्वार्थ भिन्न ।

परार्द्ध तत्० (गु०) सहस्र कोटि, अन्तिम संख्या, संख्या का शेष, ब्रह्मा की आधी आयु ।

परार्द्ध्य तत्० (गु०) प्रधान, श्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।

पराल दे० (पु०) पलाल, घास, तृण ।

पराशर तत्० (पु०) महर्षि वशिष्ठ का पौत्र और शक्ति का पुत्र, इनकी माता का नाम अदृश्यन्ती था। इनके विषय में महाभारत में लिखा है कि एक समय अयोध्या का राजा कल्माषपाद अहेर खेल कर आ रहा था और इधर से वशिष्ठ के ज्येष्ठ पुत्र शक्ति आ रहे थे, राजा ने इन्हें मार्ग छोड़ने के लिये कहा परन्तु इन्होंने उस पर कुछ ध्यान न दिया। इस कारण कल्माषपाद ने शक्ति के कोड़ा लगाया। शक्ति ने राक्षस हो जाने का राजा को शाप दिया, तुरन्त राक्षस बनकर राजा ने शक्ति को खाडाला और पुनः धीरे धीरे वशिष्ठ के अन्यान्य पुत्रों को भी मार डाला। इसमें विश्वामित्र की भी सम्मति थी। वशिष्ठपुत्र शोक से कातर होकर प्राण देने को उद्यत हुए। वे पर्वत से कूद पड़े, अग्नि में कूदे। परन्तु किसी प्रकार उनके प्राण नहीं निकले, अन्त में हताश होकर वे अपने आश्रम को लौटे आते थे। उसी समय पीछे से वेदध्वनि सुनायी पड़ी। वशिष्ठ ने पूछा कौन है ? उत्तर मिला आपकी ज्येष्ठ पुत्रवधू अदृश्यन्ती, अदृश्यन्ती ने कहा—"मेरे गर्भ में आपका पौत्र वर्तमान है, बारह वर्ष से यह वेदाध्ययन कर रहा है।" यह सुनकर

वशिष्ठ प्रसन्न हुए उन्होंने देखा कि हमारा वंश चलाने वाला वर्तमान है, उसी समय एक राक्षस खाने के लिये अदृश्यन्ती की ओर लपका। वशिष्ठ ने मन्त्रबल से उसका राक्षसत्व दूर किया। यह राक्षस राजा कल्माषपाद था। वशिष्ठ ने अयोध्या जाकर उसे राज्यशासन करने का आदेश दिया। पराशर बड़े होने पर अपने पिता की मृत्यु का संवाद सुनकर एक यज्ञ करने को उद्यत हुए। राक्षसकुल का नाश करना ही उस यज्ञ का उद्देश्य था। परन्तु पुलस्त्य पुलह आदि ऋषियों ने उन्हें समझाया कि तुम्हारे पिता की मृत्यु राक्षसों से नहीं हुई, किन्तु अपनी मृत्यु का प्रधान कारण तुम्हारे पिता ही हैं। यह सुनकर पराशर ने यज्ञ करना छोड़ दिया। मत्स्यगन्धा नामक धीवर कन्या से पराशर का एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम द्वैपायन था। पराशर ने एक संहिता बनाई थी, जिसका नाम "पराशरसंहिता" या पाराशरस्मृति है।

पराश्रय तत्० (गु०) पराधीन, परवश।

परास्त तत्० (गु०) पराजित, पराभूत, हारा।

पराह दे० (पु०) भागाभाग, भगाड़, देशत्याग।

पराह्न तत्० (पु०) दिन का दूसरा भाग, अपराह्न।

परि तत्० (उपसर्ग) सर्वतोभाव, वर्जन, अवधि, शेष, इस प्रकार, आख्यान, भाग, वीप्सा, आलिङ्गन, लक्षण, दोषाख्यान, दोषकथन, निरसन, पूजा, व्यापकता, विस्मृति, भूषण, उपरम, शोक, सन्तोषभाषण।

परिकर तत्० (पु०) कटिबन्धन, कमरबन्द, पर्यङ्क, खट्वा, खाट, परिवार, समारम्भ, वृन्द, समूह, सहकारी, विवेक।

परिकर्म तत्० (पु०) कुङ्कुम आदि के द्वारा अङ्ग संस्कार, स्नान उबटन लगाना आदि। शरीर संस्कार मात्र।

परिकल्पना तत्० (स्त्री०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया।

परिकीर्तन तत्० (पु०) प्रस्ताव, स्तुति, बड़ाई, प्रतिष्ठा करण, सब प्रकार से प्रशंसा करना।

परिक्रमा तत्० (स्त्री०) क्रीड़ार्थ पैदल चलना, विहार, देवपरिक्रमा, प्रदक्षिण।

परिखा तत्० (स्त्री०) राजधानी के चारों ओर की खाई, खाल, नाला।

परिगणन तत्० (पु०) मापना, गिनना, गणनकार्य, संख्या करना।

परिगणित तत्० (गु०) ठीक ठीक गणना किया हुआ, संख्याकृत।

परिगत तत्० (गु०) प्राप्त, लब्ध, विदित, ज्ञात, विस्मृत, वेष्टित गत वेष्टित।

परिग्रह तत्० (पु०) प्रतिग्रह, स्वीकार, सेना के पीछे का भाग, पत्नी, भार्या, परिजन, भृत्य, सेवक, परिवार, आदान, ग्रहण, स्वीकार, शाप, शपथ, राहु के द्वारा सूर्य का ग्रास, सूर्य ग्रहण।

परिघ तत्० (पु०) लोहा जड़ी लाठी, लौहमय यष्टि, गदा, मुद्गर, शूल।

परिघोष तत्० (पु०) शब्द विशेष, मेघगर्जन, मेघ ध्वनि।

परिचय तत्० (पु०) विशेष रूप से ज्ञान, जानपहचान, मेल, मित्रता।

परिचर तत्० (पु०) युद्ध के समय शत्रु के प्रहार से रथ की रक्षा करने वाला, सेना की व्यवस्था करने वाला, दण्डनायक, सहायक।

परिचर्या तत्० (स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा, उपासना।

परिचायक तत्० (गु०) ज्ञापक, बोधक, जिससे द्वारा परिचय प्राप्त हो, जान पहचान कराने वाला, मध्यस्थ।

परिचारक तत्० (गु०) भृत्य, सेवक, नौकर, चाकर, शुश्रूषाकारी।

परिचारिका तत्० (स्त्री०) दासी, चाकरी, सेविका।

परिचित तत्० (गु०) परिचय विशिष्ट, ज्ञात, चीन्हा, जाना।

परिच्छद तत्० (पु०) वेश, वसन भूषण आदि, परिधान, आच्छादन, पोशाक, परिवार, हस्ति, अश्व, वस्त्र।

परिच्छिन्न तद्० (गु०) परिच्छेद विशिष्ट, अवधि प्राप्त, सीमाबद्ध, परिमित।

परिच्छेद तद्० (पु०) ग्रन्थ विच्छेद, ग्रन्थ के अध्याय, सीमा, अवधि, विभाग, प्रकरण, अवसान, पर्व।

परिजन तद्० (पु०) परिवार, कुटुम्ब, पुत्रकलत्र आदि पालनीय वर्ग, स्वजन, सम्बन्धी, अनुचर, अनुगामी।

परिज्ञान तद्० (पु०) निपुण बोध, सब प्रकार से जाना हुआ, विशेष रूप से ज्ञान।

परिणत तद्० (गु०) [परि+नम्+क्त] परिणाम, प्राप्त, पक्व, पका हुआ, टेढ़ा चलने वाला हाथी, नम्र, नया हुआ।

परिणति तद्० (स्त्री०) [परि+नम्+क्ति] परिणाम, निष्पत्ति, नमता से, शेष होना, भिन्नभाव।

परिणय तद्० (पु०) विवाह, दारपरिग्रह, ब्याह।

परिणाम तद्० (पु०) [परि+नम्+घञ्] विकार, प्रकृति का दूसरे रूप में बदल जाना, अवस्थान्तर प्राप्ति, भावान्तर लाभ, उत्तर काल, शेष।—दर्शी (गु०) दूरदर्शी, विज्ञ, अभिज्ञ, परकालदर्शी, दूरन्देशी।

परिणायक तद्० (पु०) पति, वर, धव, पाँसा खेलने वाला।

परिणाह तद्० (पु०) परिसर, विस्तार, विस्तृत, विशालता, चौड़ाई, आकार, आकृति।

परिणीता तद्० (स्त्री०) [परि+नी+क्त+आ] विवाहिता, ऊढ़ा, पाणिगृहीता।

परितः तद्० (अ०) सर्वतः, चतुर्दिशा में व्याप्त, चारों तरफ से, चारों ओर से।

परिताप तद्० (पु०) [परि+तप्+घञ्] मनस्ताप, सन्ताप, क्लेश, दुःख, शोक, भय।

परितुष्ट तद्० (गु०) [परि+तुष्+क्त] सन्तुष्ट, आह्लादित, आनन्दित, हृष्ट।

परितुष्टि तद्० (स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष।

परितृप्त तद्० (गु०) [परि+तृप्+क्त] सम्यक् तृप्त, अतिशय तृप्त, अधिक तृप्त।

परितोष तद्० (पु०) हर्ष, तृप्ति, सन्तोष, आह्लाद।

परित्यक्त तद्० (गु०) परित्याज्य, छोड़ने योग्य, परिहृत, त्यक्त, सब प्रकार से छोड़ा हुआ।

परित्याग तद्० (पु०) सब प्रकार से त्याग, विसर्जन, वर्जन।

परित्राण तद्० (पु०) मृत्यु से रक्षा, रक्षण, मोचन, निष्कृति।

परित्रात तद्० (गु०) रक्षित, पालित, पाला हुआ।—तद्० (गु०) निस्तारक, परित्राणकर्ता, रक्षक।

परिदान तद्० (पु०) परिवर्त, विनिमय, बदला, लेनदेन।

परिदेवक तद्० (गु०) विलापकर्ता, दुःखकर्ता, द्यूतकारी, जुआरी, जुआ खेलने वाला।

परिदेवन तद्० (पु०) अनुशोचन, अनुताप, पश्चात्ताप, विलाप, पछतावा, द्यूतक्रीड़ा, जुए का खेल।

परिधन } तद्० (पु०) वस्त्रादिधारण, परिधेयवसन,
परिधान } यथा—

"जटा, मुकुट परधन मुनिचीरा"
—रामायण।

परिधि तद्० (स्त्री०) परिवेष, वेष्टन, घेड़, मण्डलाकार रेखा, चन्द्र सूर्य मण्डल, चन्द्रसूर्य मण्डल के चारों ओर जो कभी कभी मण्डल दीख पड़ता है।

परिधेय तद्० (गु०) पहनने योग्य वस्त्र आदि, पहनने के योग्य, धारण योग्य।

परिध्वंस तद्० (पु०) अपध्वंस, नाश, हानि, क्षति, वर्णसङ्कर जाति विशेष।

परिनिष्ठित तद्० (गु०) परिज्ञात, ज्ञानी, प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा प्राप्त।

परिपक्व तद्० (गु०) सुपक्व, पका हुआ, पटु, निपुण, उपयुक्त, योग्य, दक्ष, कुशल, चतुर, कार्यदक्ष, कार्यकुशल।

परिपन्थी तद्० (गु०) शत्रु, वैरी, विपक्ष, चोर, लुटेरा, ठग।

परिपाक तद्० (पु०) जीर्णता, पक्वता, परिणाम, नैपुण्य, निपुणता, फल, निष्कर्ष, उत्तर काल।

परिपाटी तद्० (स्त्री०) रीति, प्रथा, चाल, अनुक्रम, यथाक्रम, प्रणाली, अङ्कविद्या।

परिपालन तत्० (पु०) प्रतिपालन, पोषण, रक्षण, रक्षा करना।

परिपालक तत्० (पु०) प्रतिपालक, रक्षाकर्ता, रक्षक, पोषणकारी।

परिपालित तत्० (गु०) रक्षित, प्रतिपालित, आश्रित।

परिपिष्टक तत्० (पु०) सीसक, सीसा, धातु विशेष।

परिपूत तत्० (गु०) पवित्र, शुद्ध, बिना छिलके का धान।

परिपूरन तत्० (गु०) समस्त, सकल, सम्पूर्ण।

परिपूर्ण तत्० (गु०) परिपूरन, समस्त, सकल, सम्पूर्ण, पूरित, भरा हुआ, पूर्ण, प्रचुर, यथेष्ट।

परिभव तत्० (पु०) पराजय, पराभव, परास्त, अवज्ञा, अनादर, हेयबुद्धि।—पद (पु०) दुर्नाम, दुष्कृति, दुर्यश।

परिभाव तत्० (पु०) अवज्ञा, अनादर, पराभव, पराजय।

परिभाषा तत्० (स्त्री०) परिष्कृतभाषा, प्रज्ञप्ति, ग्रन्थ संक्षेप करने के लिये साङ्केतिक नियम।

परिभ्रमण तत्० (पु०) पर्यटन, अनवरत भ्रमण, सतत घूमना, सर्वदा घूमते रहना।

परिमण्डल तत्० (गु०) वर्तुल, गोलाकार, चक्र, गोल, ग्रहमार्ग।—चक्र (पु०) ग्रहपथ, ग्रहचक्र।

परिमल तत्० (पु०) विमर्दजन्य गन्ध कुङ्कुमादि मर्दन, मर्दनोत्थित मनोहर गन्ध, सुगन्ध, सुवास, सौरभ।

परिमान तत्० (पु०) माप, वजन, तौल, जोख।

परिमार्जित तत्० (गु०) परिशोधित, शुद्ध, साफ।

परिमित तत्० (गु०) नापा हुआ, मापा हुआ, नियमित।—व्यय (पु०) व्यय में सङ्कोच, मितव्यय, स्वल्प व्यय, व्यय पराङ्मुखता, परिमितत्व कृपणत्व।

परिमिति तत्० (स्त्री०) परिमाण, किनारा, अवधि।

परिरम्भ तत्० (पु०) आलिङ्गन, भेंटना, श्लेष, अँकवारा भेंट।

परिवर्जन तत्० (पु०) त्याग, परिहार।

परिवर्त तत्० (पु०) बदला, लेन देन, क्रय विक्रय।

परिवर्तन तत्० (पु०) पलटाव, पलटना, हेरफेर करना।

परिवाद तत्० (पु०) गाली, उलहना, निन्दा, अपनिन्दा।

परिवादक तत्० (पु०) निन्दक, निन्दा करने वाला, द्वेषी।

परिवार तत्० (पु०) कुटुम्बी, कुटुम्ब के मनुष्य, पुत्रादि।

परिवारण तत्० (पु०) माँगना, रोकना, रुकावट डालना, बाधा डालना।

परिवाह तत्० (पु०) जल की उछाल, बहाव, मेघपथ, मेघमार्ग।

परिवृत तत्० (पु०) रक्षित, आच्छादित, घिरा हुआ, वेष्टित।

परिवेषण तत्० (पु०) परोसना, भोजन परसना,

परिवेष्टन तत्० (पु०) चतुर्दिक् से आच्छादन, मण्डलाकार वेष्टन, आच्छादन।

परिव्राजक तत्० (पु०) सन्यासी, मुनि, चतुर्थाश्रमी।

परिव्राट् तत्० (पु०) सन्यासी, यती, योगी।

परिशिष्ट तत्० (पु०) अवशेष विशिष्ट, अवशिष्टांश प्रकाशक, ग्रन्थ भाग, बाकी, अवशिष्ट।

परिशुद्ध तत्० (गु०) परिशोधित, परिष्कृत, साफ सुथरा, पवित्र, शुद्ध, उज्ज्वल।

परिशुष्क तत्० (गु०) अतिशय शुष्क, बहुत सूखा हुआ।

परिशेष तत्० (पु०) अन्त, सीमा, विच्छेद, समाप्ति

परिशोध तत्० (पु०) परिशोधन, सर्वतोभाव शुद्ध। ऋणापनयन, ऋण चुकाना, प्रतिकार प्रतिदान।

परिश्रम तत्० (पु०) आयास, श्रम, उद्योग, चेष्टा क्लेश, क्लान्ति, थकावट।

परिश्रमी तत्० (पु०) उद्योगी, श्रमकर्ता, चेष्टान्वित

परिश्रान्त तत्० (गु०) श्रमयुक्त, सब प्रकार से परि-श्रमयुक्त, क्लान्त, अवसन्न।

परिषद् तत्० (स्त्री०) सभा, संसद्, समिति, बहुत लोगों के एकत्रित होने का स्थान।

परिष्कार तत्० (पु०) निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध, भूषणयुक्त, स्पष्ट ।

परिष्कृत तत्० (पु०) भूषित, अलङ्कृत, भूषणयुक्त, निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, वेष्टित, प्राप्त संस्कार ।

परिष्वङ्ग तत्० (पु०) आलिङ्गन, रमण ।

परिसंख्या तत्० (स्त्री०) गणना, शोमार, काव्यालङ्कार विशेष, यथा—

"अवर वरनि कछु वस्तु जहँ, वरनत एकहि ठौर ।
ताहि कहत परिसंख्य हैं, भूषन कवि दिलदौर ॥"

गुण आदि का किसी वस्तु विशेष में जहाँ नियम किया जाता है वहाँ ही परिसंख्यालङ्कार होता है. यथा—"अति मतवारे जहाँ हिरदै निहारियतु, तुरगन मैंही चञ्चलाई परकीति है । भूषन भनत जहाँ पर लगैं बानन मैं, कोक पच्छिनिहि माँह विछुरन रीति है, गुनिगन चोर जहाँ एक चित्तही के लोक, बँधै जहँ एक सरजाकी गुन प्रीति है, कंपु कदली में बैर बृत्त बदली में सिवराज अदली के राज में यों राजनीति है।"

—शिवराजभूषण।

परिहरना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्याग करना, त्यागना, परिहार करना ।

परिहार तत्० (पु०) अवज्ञा, अनादर, मोचन, छोड़ना, त्यागना, हटाना, त्याग, एक जाति विशेष, राजपूतों की एक शाखा ।

परिहास तत्० (पु०) उपहास, ठट्ठा, कौतुक, कुतूहल ।

परिहास्य तत्० (पु०) हसने के योग्य, हास्य के उपयुक्त, हँसी का पात्र ।

परिहित तत्० (पु०) परिधान किया हुआ, आच्छादित, वेष्टित ।

परी दे० (स्त्री०) मांड़े से तेल निकालने का पात्र, पैरी, अप्सरा, देवाङ्गना, स्वर्ग की वेश्या ।

परिच्छिन्न तत्० (पु०) अन्याश्रित, दूसरे का दास ।

परीक्षक तत्० (पु०) परीक्षा करने वाला, जाँच करने वाला, प्रश्नों के उत्तरपत्र देखने वाला ।

परीक्षा तत्० (स्त्री०) प्रमाण रीति से गुण का विवेचन ।

परीक्षित तत्० (पु०) जिनका गुण विवेचित हुआ है, अभिमन्यु के पुत्र। ये मत्स्यराज विराट की कन्या उत्तरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । एक समय कुरु नामक स्थान में वास के समय राजा परीक्षित ने सुना कि उनके राज्य में कलि घुस आया है, वे कलि को दमन करने के लिये सरस्वती नदी के तीर पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि राजोचित वस्त्र पहन कर एक शूद्र एक गौ और एक बैल को डण्डे से पीट रहा है । उस बैल के केवल एक ही पैर था । राजा परीक्षित ने समझा ये ही धर्म है और वह शूद्र कलि था । कलि को मारने के लिये राजा ने तलवार उठायी । उस समय कलिराज वेष उतार कर राजा के पैरों पर गिर पड़ा और उसने शरण ग्रहण किया । शरणागत समझ कर राजा ने उसे छोड़ दिया और जुआ, मद्य, हिंसा और स्त्री ये चार स्थान उसके रहने के लिये उन्होंने बताये। एक समय राजा अहेर खेलने गये थे। समय अधिक हो जाने के कारण राजा क्षुधातुर हो गये थे। वे एक आश्रम में एक महर्षि के पास गये । मुनि मौनी थे, इसी कारण उन्होंने राजा के प्रश्नों के उत्तर नहीं दिये। इसने क्रुद्ध होकर एक मरा साँप राजा ने उस मुनि के गले में लगा दिया । उस मुनि के शृङ्गी नामक एक पुत्र था, उन्होंने किसी से यह घटना सुनी, और उन्होंने शाप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में साँप लगाया है, उसको सातवें दिन तक्षक साँप काटेगा । मुनि ने जब अपने पुत्र से ये बातें सुनी तो वे बड़े दुखी हुए और राजा को शाप की बात कहवा भेजी जिससे वे सावधान हो जाँय । देखते देखते सातवाँ दिन भी आगया, तक्षक राजा को काटने के लिये आ रहा था उसे एक ब्राह्मण मिला, जो राजा की चिकित्सा करने जाता था । तक्षक ने उसकी परीक्षा की, जिससे उसकी विद्वत्ता से भीत होकर तक्षक ने बहुत रुपये देकर उस ब्राह्मण को लौटा दिया । ठीक समय तक्षक ने राजा को काटा, और राजा का जीवन समाप्त हुआ ।

परु दे० (पु०) पोर, पर्व, ग्रन्थि, गाँठ, बाँस आदि की गाँठ ।

(वा०) फिरना, उलटना।—लेना (वा०) सौटा लेना, बदला लेना, बैर शोध करना, बैर चुकाना।

पलटाना दे० (क्रि०) बदलाना, फिराना, लौटाना, परिवर्तन कराना, अपने किये हुए का फल ले लेना।

पलटाव दे० (पु०) फिराव, लौटाव।

पलड़ा दे० (पु०) पल्ला, तुला, तराजू का पल्ला।

पलाण्डु तत्० (पु०) प्याज।

पलथा दे० (पु०) लोट पोट।—मारना (वा०) लोटना, पोटना, पैर समेट कर बैठना, पलथी मार कर बैठना।

पलथी दे० (स्त्री०) आसन विशेष, स्वस्तिक आसन, बायें पैर को दहिने जङ्घे पर और दहिने पैर को बायें जङ्घे से मिला कर बैठना।

पलना दे० (क्रि०) प्रति पालित होना, बढ़ना, वृद्धि-पाना, पनपना।

पलल तत्० (पु०) माँस, आमिष, खली जो पशुओं को खिलाते हैं।

पलवल दे० (पु०) परवल, परोरा।

पलवाना दे० (क्रि०) पोसवाना, पालन कराना, रक्षा कराना।

पलवार दे० (पु०) नाव विशेष, बड़ी नाव।

पलवारी दे० (पु०) पतवार, नाव के चलाने वाला, केवट, मल्लाह।

पला दे० (पु०) बड़ा चमचा, कर्छी, डब्बू, परी, तेल घी आदि निकालने का बर्तन।

पलान दे० (पु०) घोड़े की जीन।

पलाना दे० (क्रि०) भागना, भय से एक स्थान छोड़-कर दूसरे स्थान को जाना, छाना, छाजाना।

पलानी दे० (स्त्री०) छावनी, छौंद, तृण निर्मित, छौंद।

पलाना दे० (क्रि०) जीन बाँधना, घोड़े पर जीन कसना।

पलायन तत्० (पु०) भय के कारण दूसरे स्थान में जाना, प्रस्थान, भागना।

पलायमान तत्० (पु०) भगोड़ा, भागु प्रस्थान कारक।

पलायित तत्० (गु०) पलायन विशिष्ट, प्रस्थित भागा हुआ।

पलाव दे० (पु०) पलाती, छावनी।

पलाश तत्० (पु०) वृक्ष विशेष किंशुक वृक्ष, ढाक का पेड़, हरित वर्ण, मगध देश, राक्षस, पत्र, पत्ता पत्ती।—पापड़ा (पु०) पलाश का बीज।

पलास दे० (पु०) पालकरन, पालने का काम रक्षा करना।

पलित तत्० (गु०) किसी कारण से केशों का पक जाना, केशपाक, ताप, कर्दम, वृद्ध, शिथिल।

पली दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चम्मच, घी, तेल आदि निकालने की कर्छी।

पलीत दे० (पु०) भूत, प्रेत पिशाच, योनि विशेष, भूत योनि।

पलीता दे० (पु०) बत्ती, बाती, बन्दूक का तोड़ा।

पलुआ दे० (पु०) पालित, पला हुआ, पोसा हुआ, पाला पोसा।

पलेथन दे० (पु०) सूखा आटा, जिसके सहारे रोटी बेली जाती है।—निकालना (वा०) पीटना, पीट कर बेदम कर देना।

पलेव दे० (पु०) परेह, कढ़ी, जूरा।

पलोटना दे० (क्रि०) दबाना, सेवना, सेवा करना धीरे धीरे पाँव दबाना।

पलोठा दे० (गु०) प्रथम पुत्र, प्रथम उत्पन्न पुत्र पहिलौंठा।

पल्ल तत्० (पु०) धान रखने का स्थान गोला बाजार।

पल्लव तत्० (पु०) नये पत्तों सहित शाखा का अग्र भाग, पत्र, शाखा, अङ्कुर, नवीन पत्तों का गुच्छ किसलय, विटप।—ग्राहि पाण्डित्य (वा०) जिस विद्या का फल न देखा जाय, निष्फल विद्या व्यर्थ अनाप शनाप बकना।

पल्लवित तत्० (गु०) पल्लवयुक्त, सपल्लव, विस्तृत बहुलीकृत, नवीन पल्लयुक्त।

पल्ला दे० (पु०) अन्तर, व्यवधान, दूरी, सहायता, कपड़े का छोर, आँचर, पल्लू, तीन मन का भार। —दार (पु०) मजूर, बोझ ढोने वाला, कुली।

पल्ली तद्० (स्त्री०) छोटा गाँव, गँवई।

पल्लू दे० (पु०) वस्त्र का घूँट, कपड़े का छोर। —दार (पु०) जरी के काम वाला कपड़ा, जरीदार कपड़ा।

पल्वल तद्० (पु०) अल्प जलाशय, वापी, तड़ाग।

पवँइएडा दे० (पु०) पनहरखा, तिपाई, पानी भरे घड़े रखने का स्थान।

पवन तद्० (पु०) वायु, हवा, बतास, वायु कोण का स्वामी, देवता विशेष।—कुमार (पु०) हनुमान, भीम।—तनय (पु०) हनुमान, भीम।—सखा (पु०) अग्नि, आग।—रेखा (स्त्री०) यदुवंशी उग्रसेन की स्त्री का नाम, कंस इन्हींका बेटा था। —सुत (पु०) पवन का पुत्र, हनुमान, भीम।

पवनायन तद्० (पु०) वातायन, भरोखा, खिड़की।

पवनावती तद्० (स्त्री०) महर्षि कश्यप की एक स्त्री का नाम।

पवनाशन तद्० (पु०) वायु भक्षक, वायु का आहार करने वाला, सर्प, साँप।

पवाई दे० (स्त्री०) घोड़े के पैर की साँकर, पैकड़ी, पैकड़ा, एक जूता, एक पल्ला।

पवाऊ दे० (पु०) गँवरया, ग्रामीण, गँवार, नीच, अधम।

पवाँर दे० (पु०) जाति विशेष, क्षत्रियों की एक जाति, क्षत्रिय जाति की एक शाखा, परमार।

पवाँरना दे० (क्रि०) फेंकना, डालना, चलाना, हटाना।

पवि तद्० (पु०) वज्र, इन्द्र का अस्त्र विशेष, कुलिश। —पात (पु०) वज्र पड़ना, बिजली गिरना।

पवित्र तद्० (पु०) शुद्ध, स्वच्छ, पाप रहित, साफ, विमल, निर्मल, दोष रहित, निर्दोष, निष्कलङ्क। —ता (स्त्री०) शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलङ्कता, निर्दोषता, निर्मलता, विमलता।

पवित्रा तद्० (स्त्री०) यज्ञोपवीत, तुलसी, एक प्रकार की रेशम की माला, जो पवित्रा एकादशी को भगवान् को समर्पित की जाती है।

पवित्री तद्० (स्त्री०) कुश मुद्रिका, पैंता, यह कुश की बनाई जाती है, केवल सुवर्ण अथवा अष्टधातु से भी यह बनती है। पूजा तर्पण आदि में इसके धारण करने की विधि है।

पशम दे० (पु०) ऊर्णा, लोम, ऊन।

पशमी दे० (गु०) ऊर्ण निर्मित, लोमरचित, पशम के बने कपड़े दुशाला आदि।

पशु तद्० (पु०) जन्तु विशेष, सींग पूँछ वाला, प्राणी, चतुष्पाद, प्राणिमात्र, संसारियों का आत्मा, साधकों के विभाग में का एक भाव।—ता (स्त्री०) पशुभाव, मूर्खता।—तुल्य (गु०) पशु सदृश, निर्बोध, अबूझ, मूर्ख, मूढ़।—पति (पु०) शिव, महादेव, त्रिलोचन, ब्रह्मा आदि स्थावर पर्यन्त सभी पशु कहे जाते हैं, महादेव इन सब के पति हैं इस कारण महादेव को पशुपति कहते हैं। —पाल (पु०) पशुपालनकर्ता, पशुरक्षक।—राज (पु०) सिंह, मृगेन्द्र, केसरी।

पश्चात् तद्० (अ०) चरम, शेष, पीछे, पश्चिम दिक् अनन्तर, व्यवधान, बाद।

पश्चात्ताप तद्० (पु०) कर्मान्तर सन्ताप, पश्चात् शोक, अनुशोचन, पछतावा।

पश्चाद्वर्ती तद्० (गु०) अनुवर्ती, पश्चाद्गामी, पश्चात् संस्थित, पीछे चलने वाला, पश्चात्स्थित।

पश्चादर्द्ध तद्० (गु०) शेषार्द्ध, अपरार्द्ध, शरीर का अपर भाग।

पश्चिम तद्० (पु०) पश्चिम दिशा, पछाँह।

पश्यतोहर तद्० (पु०) चोर, चोर, जो देखते देखते चुरा ले, उठाईगीरा, स्वर्णकार, सुनार।

पश्वाचार तद्० (पु०) आचार विशेष, वाममार्गियों की क्रिया विशेष।

पसरना दे० (क्रि०) फैलना, विस्तृत होना, अधिक दूर तक व्याप्त होना।

पसली दे० (स्त्री०) पाँजर की हड्डी, पञ्जर।

पसा दे० (पु०) मुट्ठी भर, दो मुट्ठी भर।

पसाई दे० (स्त्री०) चावल विशेष।

पसाना दे० (क्रि०) माँड़ निकालना, काढ़ना।

पसार तद्व० (पु०) प्रसार, फैलाव, विस्तृत, व्यापकता।

पसारना दे० (क्रि०) फैलाना, सुखाने के लिये धूप में फैलाना, बिछाना।

पसारी दे० (पु०) पंसारी, गन्धवणिक्।

पसीजना दे० (क्रि०) पिघलना, पानी छूटना, नरम होना, प्रस्वेद निकलना, दयालु होना, दयार्द्र होना।

पसीना दे० (पु०) प्रस्वेद, स्वेद, पसेव।

पसेव दे० (पु०) पसीना, प्रस्वेद, स्वेद।

पसूज दे० (स्त्री०) सीवन, सुर्पन।

पसूजना दे० (क्रि०) सुर्पना, सीना, डोरा डालना।

पसेव दे० (पु०) प्रस्वेद, पसीना, पसीव, प्रसन्नता, हर्ष।

पस्ताना दे० (क्रि०) पछताना, पछतावा करना, पश्चात्ताप करना, अनुताप करना, अनुशोचन करना।

पह दे० (स्त्री०) प्रभा, प्रात, तड़का, पौ, भिनसार। —फटना (क्रि०) प्रातःकाल होना, सवेरा होना, सूर्योदय होना।

पहचान दे० (स्त्री०) परिचय, ज्ञान, भेंट, मुलाक़ात, चिन्हार।

पहचानना दे० (क्रि०) जानना, चीन्हना, परिचय करना।

पहनना दे० (क्रि०) पहिरना, परिधान करना, कपड़ा पहनना, वस्त्र धारण करना।

पहनावा दे० (पु०) वस्त्र, कपड़ा, पहनने योग्य वस्तु।

पहर तद्व० (पु०) प्रहर, समय का परिमाण, दिन का चतुर्थांश, एक पहर प्रायः तीन घण्टे का होता है।

पहरा दे० (पु०) चौकी, रक्षा।

पहराना दे० (क्रि०) पहनाना, पहिराना, वस्त्र धारण कराना, वस्त्र परिधान कराना।

पहरा देना दे० (वा०) चौकी देना, रक्षा करना, रखवाली करना।

पहरे में डालना दे० (वा०) रक्षा में रखना, हवालात में देना, पहरुए को सौंपना।

पहरे में पड़ना दे० (वा०) हवालात में रहना, किसी अपराध के विचारार्थ हवालात में रखा जाना।

पहरावनी दे० (स्त्री०) वस्त्र, वसन, कपड़े का जोड़, जो विवाह आदि उत्सव के समय दिया जाता है।

पहरिया, पहरुआ दे० (पु०) पहरा देने वाला, चौकी करने वाला, चौकीदार।

पहरू दे० (पु०) प्रहरी, पहरा देने वाला, पहरुआ।

पहल दे० (स्त्री०) रुई का पर्त, मास, भाग, एक ओर का, खेत की भुजा।

पहला दे० (गु०) प्रथम, आद्य, प्रारम्भ का।

पहाड़ दे० (पु०) पर्वत, शैल, गिरि। —सी रातें (वा०) बड़ी रात, दीर्घ रजनी, कष्ट की रात्रि, दुःख की रात।

पहाड़ा दे० (पु०) जोड़नी, गुणन, संकलन।

पहाड़िया दे० (गु०) पर्वतवासी, पहाड़ का रहने वाला, पर्वती।

पहाड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पहाड़, टीला, टेकरी। पहाड़ पर रहने वाला।

पहिनना दे० (क्रि०) पहनना, परिधान करना, धारण करना।

पहिया दे० (पु०) चक्र, रथचक्र, गाड़ी का चक्का, पहिया।

पहिरना दे० (क्रि०) पहनना, परिधान करना।

पहिरावन दे० (पु०) वस्त्र, वसन, पहरावनी।

पहिला दे० (गु०) प्राथमिक, प्रारम्भिक, पहले का, आगे का, अगला।

पहिले दे० (अ०) आगे, प्रथम, आदि।

पहिलौठा दे० (पु०) प्रथम पुत्र, ज्येष्ठ पुत्र।
पहुँच दे० (स्त्री०) आना, आगमन, शक्ति, सामर्थ्य, पैठार, प्रवेश, पैठ, प्राप्ति सूचक पत्र, रसीद।
पहुँचना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, पहुँच जाना, चला जाना, बढ़ जाना, पुगना, पास आना।
पहुँचा दे० (पु०) मणिबन्ध, कलाई, पहुँचा।
पहुँचाना दे० (क्रि०) प्राप्त कराना, मिलाना, पुगाना।
पहुँची दे० (स्त्री०) कङ्कण, कङ्क, आभूषण विशेष।
पहुड़ना दे० (क्रि०) लेटना, सोना, शयन करना, पौढ़ना।
पहुड़ाना दे० (क्रि०) लेटाना, सुलाना, शयन कराना, पौढ़ाना।
पहुनाई दे० (स्त्री०) मेहमानी, आदर, सम्मान, आतिथ्य।
पहुप तद्० (पु०) पुष्प, कुसुम, फूल।
पहेली दे० (स्त्री०) प्रहेलिका, हूहफूट, कहानी, गूढ़ प्रश्न, यह काव्य का एक गुण है। इसमें एक सामान्य अर्थ प्रकाशित किया जाता है, परन्तु असली अर्थ छिपा रहता है, इस प्रकार जहाँ एक वाक्य से दो अर्थ प्रकाशित किये जाते हैं उसे प्रहेलिका या पहेली कहते हैं।
पा दे० (पु०) पाँव, पैर, पद, चरण।
पाई दे० (स्त्री०) पैसा, पैसे का तीसरा भाग, एक प्रकार की पतली छड़ी जिस पर बाना लपेटा जाता है।
पाँक दे० (पु०) कीचड़, पङ्क, कर्दम, दलदल।
पाँगा दे० (पु०) एक प्रकार का नून, जो बनाया जाता है।
पाँच दे० (गु०) पञ्च, संख्या विशेष, ५।—सात (वा०) झंझट, उलझन, व्याकुलता, उद्विग्नता, उद्वेग।
पाँचवाँ दे० (गु०) पञ्चम, पाँच को पूर्ण करने वाली संख्या।
पाँजर दे० (पु०) पसली, पार्श्व, पञ्जर, पाँजर की हड्डी।
पाँड़े दे० (पु०) पाठक, अध्यापक, ब्राह्मण, ब्राह्मणों की एक उपाधि, पढ़ाने वाला, पांडेय।
पाँत, पाँती दे० (स्त्री०) श्रेणी, कतार, पंक्ति, पंक्ति।
पाँतर दे० (पु०) उजाड़, निर्जन स्थान, प्रान्तर, वीरान।
पाँयती दे० (स्त्री०) पैताना, पैर की ओर, पैर की ओर का बिछौना।
पाँव दे० (पु०) पैर, चरण, पद, गोड़।—उठाना (वा०) शीघ्र शीघ्र चलना, वेग से चलना।—उतरना (वा०) पाँव का टूट जाना, पाँव का फूलना।—काँपना (वा०) डरना, किसी काम के करते भय मालूम होना।—किसी का उखाड़ना (वा०) किसी स्थान पर ठहरने नहीं देना, किसी को जमने नहीं देना।—किसी के गले में डालना (वा०) तर्क के द्वारा उसीकी बातों से उसे दोषी ठहराना।—चल जाना (वा०) डगमगाना, अस्थिर होना।—जमाना (वा०) दृढ़ होना, दृढ़ता पूर्वक ठहरना।—ज़मीन पर न ठहरना (वा०) अत्यन्त प्रसन्न होना, अतिशय हर्ष से फूल जाना, अभिमान करना, अहङ्कार करना।—डालना (वा०) किसी काम को प्रारम्भ करना, किसी काम को करने के लिये उद्यत होना।—डिगना (वा०) फिसलना, रपटना, किसी काम से निराश होना।—तले मलना (वा०) पीड़ा देना, दुःख देना, पीड़ित करना।—तोड़ना (वा०) किसी के काम में बाधा डालना, किसी की हानि पहुँचाना, आलस में बैठे रहना, अधिक चलना।—धो धो पीना (वा०) अधिक आदर करना, [illegible] भक्ति करना, अनुनय करना, विनती करना।—निकालना (वा०) मर्यादा तोड़ना, [illegible] रीति को लाँघ जाना।—पकड़ना (वा०) शरण में आना, विनती करना, विनती [illegible]।—पर पाँव रखना (वा०) अनुकरण करना, दूसरे [illegible] चाल पर चलना, अनुयायी, [illegible]—पाँव (वा०) पैदल।—[illegible] होना, घबड़ा जाना, [illegible] निष्फल उद्योग करना [illegible] करना, चलता रहना, [illegible]

रखना (वा०) सावधान होना सावधानी से चलना विचार पूर्वक किसी काम को करना।—फैलाकर सोना (वा०) निश्चिन्त रहना, बिना चिन्ता के रहना, निडर रहना, निर्भय रहना।—फैलाना (वा०) अपना अधिकार बढ़ाना, पैठ करना, पसार करना।—भर जाना (वा०) थक जाना, श्रान्त होना।—रगड़ना (वा०) निष्फल काम करना, निरर्थक उद्योग करना। शोक करना, दुःख प्रकाश करना।—लगना (वा०) प्रणाम करना, नमस्कार करना।—से पाव बाँधना (वा०) सर्वदा किसी के पीछे लगा रहना, रक्षा करना, एक क्षण के लिये भी नहीं छोड़ना।—से पाँव भिड़ाना (वा०) बराबरी करना, तुल्यता करना।—सोना (वा०) पाँव शून्य होना, पाँव में झिनझिनी उठाना।—दबे आना (वा०) धीरे धीरे आना, शनैः शनैः आना।

पाँवड़ा दे० (पु०) टाट या नारियल की जटा की बनी चटाई का टुकड़ा जो पैर पोंछने के लिये ड्योढ़ी पर बिछाया जाता है, पाँयंदाज़।

पाँशव तत्० (पु०) पाँगा, निमक।

पाँशु तत्० (पु०) धूलि, रेणु, रेणुका, स्त्री का मासिक धर्म।

पाँशुका तत्० (स्त्री०) धूलि, रज, रेणु, रजस्वला स्त्री।

पाँशुल तत्० (गु०) धूलि युक्त, धूलि धूसरित, धूलि विशिष्ट। (पु०) शिव, महादेव, खाकी बाबा।

पाँशुला तत्० (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा, वेश्या।

पाँस दे० (पु०) खाद, सार, धूर।

पाँसना दे० (क्रि०) खाद देना, खाद डालना।

पाँसु दे० (पु०) पसली, पाँजर की हड्डी।

पाई दे० (स्त्री०) चर्खे का काँटा, चर्खे की सुई।

पाक तत्० (पु०) [पच्+घञ्] पचन, पकाना, राँधना, सीझना, पुटपाक आदि, वार्द्धक्य के कारण केशों की शुक्लता, उलूक, पेचक, भयभीति, एक दैत्य का नाम।—कर्ता (गु०) पाचक, सूपकार, रन्धनकारी, रसोई बनाने वाला।—गृह (पु०) रन्धनालय, रसोई घर।—पात्र (पु०) बटलोई, हाँडी।—पुटी (स्त्री०) स्थाली, कुम्हार का भट्ठी, पजावा।—यज्ञ (पु०) वृषोत्सर्ग, गृह प्रतिष्ठा आदि के लिये हवन।—शाला (स्त्री०) रन्धनगृह, पाकस्थान, रसोईघर।—शासन (पु०) इन्द्र, देवराज।—स्थाली (स्त्री०) हाँडी, कड़ाई, पाक पात्र विशेष।

पाकड़ दे० (पु०) वृक्ष विशेष, पकड़ी वृक्ष।

पाकना दे० (क्रि०) उबलना, सीझना।

पाकरी दे० (स्त्री०) पाकड़िया वृक्ष।

पाकलड्डी दे० (स्त्री०) गहवा, सड़सी।

पाकुक दे० (पु०) पाचक, पाककर्ता।

पाकृशा दे० (पु०) सज्जीखार।

पाक्षिक तत्० (गु०) सहायक, सहायदाता, पक्ष में उत्पन्न होने वाला, पक्ष में प्रकाश होने वाला।

पाख दे० (पु०) पक्ष, पन्द्रह दिन, भीति, दीवार।

पाखण्ड तत्० (गु०) दम्भ, कपट, धूर्तता, छल, नास्तिकता, लोक में पूजा पाने के लिये ढोंग रचना, दाम्भिक, कपटी, धूर्त, छली, नास्तिक, लोक में पूजा लेने के लिये ढोंग रचने वाला।

पाखर दे० (पु०) घोड़ा और हाथी की झूल, जो लोहे के तारों की बनती है।

पाखा दे० (पु०) उसारा, बरामदा।

पाग दे० (स्त्री०) पगड़ी, पगिया।

पागना दे० (क्रि०) रस में पकाना, रस चढ़ाना।

पागल दे० (पु०) उन्मत्त, विक्षिप्त, सिड़ी।

पागा दे० (पु०) घोड़ों का समूह।

पागुर दे० (स्त्री०) चबाई, उगाल, जुगाली, रोमन्थ, चबाए हुए को पुनः चबाना।

पागुराना दे० (क्रि०) जुगाली करना, जुगालना, चबाना, रोमन्थ करना।

पाचक तत्० (पु०) सूपकार, रन्धनकर्ता, पाककर्ता, रसोईयादार।—ता (स्त्री०) रसोई बनाना, राँधने का काम, रसोई बनाने का गुण।

पाचिका तत्० (स्त्री०) पाककर्त्री, रसोई बनाने वाली स्त्री।

प्राचीर तत्० (पु०) दीवार, भीत, चारदीवारी।

पाछ दे० (पु०) टीका, गोटी, शस्त्र-औषध आदि से शरीर का दुष्ट रुधिर निकलवाना।

पाछना दे० (क्रि०) टीका लगाना, गोटी खोदना, पाछ मारना।

पाछे दे० (अ०) अनन्तर, पीछे।

पाजी दे० (गु०) अधम, दुष्ट, दुराचारी, दुर्विनीत।

पाञ्चजन्य तत्० (पु०) नारायण के शङ्ख का नाम जो पञ्चजन नामक राक्षस की अस्थि से बना था।

पाञ्चभौतिक तत्० (पु०) पञ्चभूत द्वारा निर्मित, पञ्चभूतमय, पञ्चभूतों का विकार।

पाञ्चाल तत्० (पु०) देश विशेष, पञ्जाब देश, पञ्जाब, द्रुपद राजा का देश।

पाञ्चाली तत्० (स्त्री०) पाञ्चाल देशोद्भवा राजकन्या, पाण्डवपत्नी, याज्ञसेनी, द्रौपदी।

पाट दे० (पु०) पटुआ, एक प्रकार का सन, चौड़ाई, नदी का पाट।

पाटकृमि तत्० (पु०) रेशम का कीड़ा।

पाटन दे० (पु०) छाना, छत पटवाना, चाँद छाना।

पाटना दे० (क्रि०) छवाना, छत सनवाना, पूर्ण करना, भरना, भर देना।

पाटमहिषी तद्० (स्त्री) पट्ट महिषी, प्रधान रानी, महारानी।

पाटम्बर तद्० (पु०) रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़े, पट्टाम्बर।

पाटरानी तद्० (स्त्री०) पट्टरानी, पटरानी, महारानी, प्रधान रानी।

पाटल तत्० (पु०) पाटली पुष्प, गुलाब का फूल, सामान्य लाल रंग, गुलाबी रङ्ग। (गु०) श्वेत और लाल रङ्ग का मिश्रण।

पाटला तत्० (स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, भगवती, पुष्प वृक्ष विशेष, लाल लोध।

पाटलिपुत्र तत्० (पु०) पटना नगर, विहार प्रदेश का प्रधान नगर, प्रसिद्ध महाराज अशोक की राजधानी यहीं थी।

पाटव तत्० (पु०) पटुता, विज्ञता, नैपुण्य, आरोग्य, स्वास्थ्य, सुस्थता।

पाटा दे० (पु०) पटरा, पट्टा, धोबी का तख्ता जिस पर वे कपड़े धोते हैं, पीढ़ा, पीठ।

पाटी दे० (स्त्री०) खाट की पटिया, पटरी जिस पर लड़के लिखते हैं, बालकों के लिखने की पट्टी, चटाई, सीतलपाटी।

पाटीर तत्० (पु०) चन्दन, मलय, द्रुम।

पाठ तत्० (पु०) अध्ययन, पठन, विद्याभ्यास। —क्रम (पु०) क्रम से अध्ययन, पढ़ने की रीति, अध्ययन का क्रम। —शाला (स्त्री) अध्ययन गृह, विद्यालय।

पाठक तत्० (पु०) उपाध्याय, अध्यापक, पढ़ाने वाला, गुरु।

पाठन तत्० (पु०) पढ़ाना, अध्ययन कराना, अभ्यास कराना, विद्या पढ़ाना।

पाठा दे० (पु०) जवान, हृष्ट पुष्ट, मस्त, योद्धा, पहलवान।

पाठी दे० (पु०) युवा बकरी, छागी।

पाठीन तत्० (पु०) मत्स्य विशेष, मछली का एक भेद।

पाठ्य तत्० (गु०) पाठोपयुक्त, पढ़ने के योग्य।

पाड़ दे० (पु०) गरगज, धौरा, मञ्च, मचान।

पाड़ना दे० (क्रि०) गिराना, पछाड़ना, पटकना, कागज बनाना।

पाड़ा दे० (पु०) भैंस का बच्चा।

पाढ़ा दे० (पु०) मृग विशेष।

पाढ़ी दे० (स्त्री०) नदी पार होना।

पाण दे० (स्त्री०) पीना, पना, कपड़े की माँड़ी, माँड़ल।

पाणि तत्० (पु०) हाथ, हस्त, कर। —ग्रहण (पु०) ब्याह, विवाह, परिणय। —तल (पु०) करतल, हस्ततल।

पाणिघ तत्० (पु०) हाथ के द्वारा बजाया जाने वाला मृदङ्ग आदि बाजा, पाणिवाद्य, हाथ से बजाये जाने वाला बाजा।

पाणिनि तत्० (पु०) मुनि विशेष, इन्होंने संस्कृत का व्याकरण बनाया था, इनके पिता का नाम

देवल और माता का नाम दाची था। माता के नामानुसार इनको भी दाची पुत्र या दाक्षेय कहते हैं। गान्धार देश के अन्तर्गत शलातुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था इस कारण ये शालातुरीय भी कहे जाते हैं। शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनि शिव की आराधना करने लगे, महेश्वर प्रसन्न हुए, और उनकी इष्टसिद्धि के लिये उन्होंने वर दिये। महेश्वर के प्रसाद से पाणिनि ने एक व्याकरण बनाया जिसका नाम अष्टाध्यायी या पाणिनिदर्शन है। यह आठ अध्यायों में विभक्त है। इस कारण इसे अष्टाध्यायी कहते हैं। सोमदेव रचित कथासरित्सागर के अनुसार वररुचि और कात्यायन के ये समकालीन थे। परन्तु यह बात प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। क्योंकि यास्क रचित निरुक्त पढ़ने वाले इस बात को कभी नहीं मान सकते। क्योंकि निरुक्तकार ने अनेक स्थानों में सादर पाणिनि का नाम लिया है। यास्क मुनि बहुत ही प्राचीन हैं; और पाणिनि उनसे भी प्राचीन हैं। व्याकरण के अतिरिक्त एक काव्य भी पाणिनि का बनाया हुआ है; जिसका नाम जाम्बवतीजय है। कतिपय विद्वान् व्याकरण-कर्ता और काव्य-कर्ता को भिन्न भिन्न पाणिनि मानते हैं। परन्तु क्षेमेन्द्र के इस श्लोक से वे अपनी भ्रान्ति समझ सकते हैं।

"नमः पाणिनये तस्मै यस्य रुद्रप्रसादतः।
आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्॥"

उस पाणिनि को नमस्कार, जिसने रुद्र प्रसाद से पहले व्याकरण और तदनन्तर जाम्बवतीजय काव्य बनाया।

पाणिनीय तत्० (पु०) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ।

पाणिपाद तत्० (पु०) हाथ पैर, कर चरण, हाथ और पाँव।

पाणिपीडन तत्० (पु०) पाणिग्रहण, विवाह।

पाण्डर तत्० (पु०) कुन्द पुष्प, गैरिक धातु विशेष, (गु०) श्वेत वर्ण युक्त।

पाण्डव तत्० (पु०) पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु राजा के पुत्र, पञ्चपाण्डव।

पाण्डित्य तत्० (पु०) पण्डित का धर्म और कर्म नैपुण्य, दक्षता, विद्या, पण्डिताई, विद्वत्त्व।

पाण्डु तत्० (पु०) शुक्ल और पीत मिश्रित वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, कुरुवंशीय एक राजा का नाम, विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के औरस और विचित्रवीर्य की विधवा पत्नी अम्बालिका के गर्भ से उत्पन्न। इनकी दो स्त्रियाँ थीं। कुन्ती और माद्री। भोजकन्या कुन्ती ने पाण्डु को स्वयम्वर में वरण किया था। इसके अनन्तर भीष्मपितामह ने मद्र देश के राजा की पुत्री माद्री को पाण्डु से ब्याह दिया। भीष्मपितामह ही धृतराष्ट्र पाण्डु और विदुर के रक्षक थे, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। माद्री के गर्भ से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे। पाण्डु के क्षेत्रज पुत्र पाण्डव कहे जाते हैं। पाण्डु ने शान्तनु की नष्ट कीर्ति का उद्धार किया था, अनेक राजाओं को जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया था, और उसी धन से पाँच यज्ञ किये थे। यज्ञ करने के अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन में गये। वहाँ उन्होंने काममोहित एक मृग का वध किया, उसने शाप दिया कि तुम भी सङ्ग करते ही मर जाओगे। मरने के भय से पाण्डु ने स्त्रीसङ्ग करना ही छोड़ दिया। दुर्वासा ने कुन्ती को जिस मन्त्र का उपदेश दिया था, उसीसे कुन्ती ने देवों का आह्वान करके तीन पुत्र उत्पन्न किये। पाण्डु के अनुरोध से कुन्ती ने उस मन्त्र का उपदेश माद्री को भी दिया, माद्री ने भी अपने दो पुत्र उत्पन्न किये। एक दिन पाण्डु ने कामार्त हो कर माद्री का सङ्ग किया, जिससे उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु का मृत शरीर हस्तिनापुर लाया गया था और उसका अन्तिम संस्कार विदुर ने किया।

पाण्डुर तत्० (पु०) शुक्ल पीत मिश्रित वर्ण।

पाण्डुरा तत्० (स्त्री०) मषपर्णी, लता विशेष, शुक्ल पीत वर्ण वाली स्त्री, माषपर्णीलता।

पाण्डेय तत्० (पु०) ब्राह्मणों की एक जाति विशेष, अध्यापक, पाठक।

ात तत्० (पु०) [पत्+घञ्] पतन, गिरना पड़ना। (दे०) पुलाश के पत्र, वृक्ष आदि के पत्ते, कर्ण-भूषण, एक प्रकार का कान का गहना।

ातक तत्० (पु०) नरक साधन, पाप, अघ, किल्बिष, कलुष, अशुभ, अपराध, दोष।

पातकी तत्० (पु०) पापी, दोषी, अपराधी।

पातञ्जल तत्० (पु०) शास्त्र विशेष, योग शास्त्र, पतञ्जलि निर्मित योग दर्शन।

पातर दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, गणिका, (पु०) पतला, दुर्बल, निर्बल।

पाता तत्० (पु०) रक्षिता, त्राण कर्ता, रक्षक, रक्षण कर्ता, (दे०) पत्र, पत्ता, पत्ती।

पाताल तत्० (पु०) सप्त में चौथा स्थान, स्वनाम प्रसिद्ध गंगा, रसातल, नागलोक, अधोभुवन, नरक, विवर, बड़वानल, एक यन्त्र विशेष जिससे औषधि बनाते हैं। पाताल के सात भेद हैं, यथा—अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, नितल, रसातल।

ातित्य तत्० (पु०) पातक, पाप, दुराचार, दुष्कृत, जाति भ्रष्ट होने का कारण।

ातिव्रत्य तत्० (पु०) पतिव्रता का धर्म, साध्वी धर्म, सतीत्व, पतिव्रता का लक्षण।

ाती दे० (स्त्री) चिट्ठी, पत्री, पत्र, पत्ता, पत्ती।

ात्र तत्० (पु०) जिसके द्वारा जल आदि पिया जाय, आधार, भाजन, भाण्ड, योग्य, उचित, राजमन्त्री, सचिव, दो तीर का अन्तर, पर्ण, पत्र, पत्ता, नाटक खेलने वाला, नट, अनुकरणकारी, वर जिसको कन्या दी जाय। विद्या आदि गुणों से युक्त, योग्य, दानीय व्यक्ति, पारलौकिक कल्याण के लिये जिसको दान दिया जाय।

ाथ तत्० (पु०) जल, पानी, पानीय, तोय।

ाथना दे० (क्रि०) थोपना, कंडे बनाना, उपरी बनाना।

ाथर दे० (पु०) पत्थर, प्रस्तर, पाषाण, पाषाण, शिला।

ाथेय तत्० (पु०) पथ में व्यय करने की सामग्री, पथिकों के खर्च करने का द्रव्य, रास्ते का खर्च, रास्ते में करने का भोजन।

पाथोज तत्० (पु०) कमल, पद्म, पुण्डरीक।

पाथोद तत्० (पु०) मेघ, घन, वारिद, बादर, बादल, समुद्र।

पाथोधि तत्० (पु०) [पायस्+धा+कि], समुद्र, सागर, जलधि, तोयनिधि।

पाथोनिधि तत्० (पु०) [पायस्+नि+धा+कि] समुद्र, सागर, पाथोधि।

पाद तत्० (पु०) [पद्+घञ्] चरण, पैर, पाँव, ऋग्वेदीय मन्त्रों का चतुर्थांश, श्लोक का चतुर्थांश, चतुर्थ भाग, चौथा भाग, बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत।—कटक (पु०) बिछुआ।—कृच्छ्र (पु०) व्रत विशेष, प्रायश्चित विशेष।—ग्रहण (पु०) पादस्पर्श पूर्वक प्रणाम, अभिवादन।—चारी (पु०) प्यादा, पदाति। (पु०) पैदल चलने वाला, पैर से चलने वाला।—ज (पु०) अवर वर्ण, शूद्र जाति।—त्राण (पु०) जूता, खड़ाऊँ, पद रक्षक, पैर के मोज़े।—दारी (स्त्री०) पादस्फोट, बिवाई, शीत से पैर का फटना।—प (पु०) वृक्ष, द्रुम, तरु, रूख, पेड़।—पद्म (पु०) पद्म सदृश चरण, चरण कमल।—पीठ (पु०) पाद स्थापनार्थ आसन, पदासन, पैर रखने का पीढ़ा।—प्रक्षालन (पु०) पैर धोना, पाँव धोना।—प्रहार (पु०) पदाघात, लात मारना।—संवाहन (पु०) पैर दबाना, पदचम्पी करना।

पादना दे० (क्रि०) पाद मारना, अधोवायु त्याग करना।

पादनोन दे० (पु०) काला निमक।

पादार्घ्य तत्० (पु०) अतिथि के पैर धोने का जल।

पादार्पण तत् (पु०) प्रवेश करना, पैर देना।

पादुका तत्० (स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता, पनही, पगरखी।

पादोदक तत्० (पु०) पाँव धोवन, देवता या गुरु के पैर का धोया जल, चरणामृत, पाद्य, पाँव धोने के लिये जल।

देवल और माता का नाम दाक्षी था। माता के नामानुसार इनको भी दाक्षी पुत्र या दाक्षेय कहते हैं। गान्धार देश के अन्तर्गत शलातुर नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था इस कारण ये शालातुरीय भी कहे जाते हैं। शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के लिये पाणिनि शिव की आराधना करने लगे, महेश्वर प्रसन्न हुए, और उनकी इष्टसिद्धि के लिये उन्होंने वर दिये। महेश्वर के प्रसाद से पाणिनि ने एक व्याकरण बनाया जिसका नाम अष्टाध्यायी या पाणिनिदर्शन है। यह आठ अध्यायों में विभक्त है। इस कारण इसे अष्टाध्यायी कहते हैं। सोमदेव रचित कथासरित्सागर के अनुसार वररुचि और कात्यायन के ये समकालीन थे। परन्तु यह बात प्रामाणिक नहीं मानी जा सकती। क्योंकि यास्क रचित निरुक्त पढ़ने वाले इस बात को कभी नहीं मान सकते। क्योंकि निरुक्तकार ने अनेक स्थानों में सादर पाणिनि का नाम लिया है। यास्क मुनि बहुत ही प्राचीन हैं, और पाणिनि उनसे भी प्राचीन हैं। व्याकरण के अतिरिक्त एक काव्य भी पाणिनि का बनाया हुआ है; जिसका नाम जाम्बवतीजय है। कतिपय विद्वान् व्याकरण-कर्ता और काव्य-कर्ता को भिन्न भिन्न पाणिनि मानते हैं। परन्तु क्षेमेन्द्र के इस श्लोक से वे अपनी भ्रान्ति समझ सकते हैं।

"नमः पाणिनये तस्मै यस्य रुद्रप्रसादतः।
आदौ व्याकरणं काव्यमनुजाम्बवतीजयम्॥"

उस पाणिनि को नमस्कार, जिसने रुद्र प्रसाद से पहले व्याकरण और तदनन्तर जाम्बवतीजय काव्य बनाया।

पाणिनीय तत्० (पु०) पाणिनि मुनि निर्मित ग्रन्थ।

पाणिपाद तत्० (पु०) हाथ पैर, कर चरण, हाथ और पाँव।

पाणिपीडन तत्० (पु०) पाणिग्रहण, विवाह।

पाण्डर तत्० (पु०) कुन्द पुष्प, गैरिक धातु विशेष, (गु०) श्वेत वर्ण युक्त।

पाण्डव तत्० (पु०) पाण्डुनन्दन, पाण्डुपुत्र, पाण्डु राजा के पुत्र, पञ्चपाण्डव।

पाण्डित्य तत्० (पु०) पण्डित का धर्म और [illegible] नैपुण्य, दक्षता, विद्या, पण्डिताई, विद्वत्व।

पाण्डु तत्० (पु०) शुक्ल और पीत मिश्रित वर्ण, [illegible] पीत मिश्रित वर्ण, कुरुवंशीय एक राजा का [illegible] विचित्रवीर्य का क्षेत्रज पुत्र, महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास के औरस और विचित्रवीर्य की [illegible] पत्नी अम्बालिका के गर्भ से उत्पन्न। इनकी [illegible] स्त्रियाँ थीं। कुन्ती और माद्री। भोजकन्या कुन्ती [illegible] पाण्डु को स्वयम्वर में वरण किया था। [illegible] अनन्तर भीष्मपितामह ने मद्र देश के राजा [illegible] पुत्री माद्री को पाण्डु से ब्याह दिया। भीष्मपितामह ही धृतराष्ट्र पाण्डु और विदुर के रक्षक [illegible] युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन कुन्ती के गर्भ [illegible] उत्पन्न हुए थे। माद्री के गर्भ से नकुल [illegible] सहदेव उत्पन्न हुए थे। पाण्डु के क्षेत्रज पु[illegible] पाण्डव कहे जाते हैं। पाण्डु ने शान्तनु की [illegible] कीर्ति का उद्धार किया था, अनेक राजाओं [illegible] जीत कर उन्होंने अधिक धन एकत्रित किया [illegible] और उसी धन से पाँच यज्ञ किये थे। यज्ञ करने [illegible] अनन्तर पाण्डु अपनी पत्नियों के साथ वन में गये [illegible] वहाँ उन्होंने काममोहित एक मृग का वध किया [illegible] उसने शाप दिया कि तुम भी सङ्ग करते ही [illegible] जावोगे। मरने के भय से पाण्डु ने स्त्रीसङ्ग [illegible] ही छोड़ दिया। दुर्वासा ने कुन्ती को शिव [illegible] का उपदेश दिया था, उसीसे कुन्ती ने देवों [illegible] आह्वान करके तीन पुत्र उत्पन्न किये। पाण्डु [illegible] अनुरोध से कुन्ती ने उस मन्त्र का उपदेश मा[illegible] को भी दिया, माद्री ने भी अपने दो पुत्र उत्प[illegible] किये। एक दिन पाण्डु ने कामार्त हो कर मा[illegible] का सङ्ग किया, जिससे उनकी मृत्यु हुई, पाण्डु [illegible] मृत शरीर हस्तिनापुर लाया गया था और उ[illegible] का अन्तिम संस्कार विदुर ने किया।

पाण्डुर तत्० (पु०) शुक्ल पीत मिश्रित वर्ण।

पाण्डुरा तत्० (स्त्री०) मसुरान्न, लता विशेष, [illegible] पीत वर्ण वाली स्त्री, माषपर्णीलता।

पाण्डेय तत्० (पु०) ब्राह्मणों की एक जाति विशे[illegible] अध्यापक, पाठक।

पायक दे० (पु०) पियादा, पैदल, पदाति, सेवक, यथा—"हनुमान से पायक हैं जिन केरे।" —तुलसीदास।

पायड़ दे० (पु०) मञ्च, मचान, मञ्च, मांच।

पायजामा दे० (पु०) वस्त्राच्छादन विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र।

पायन्ती दे० (स्त्री०) पैर की ओर की खाट, पैताना, पदतल, खाट का वह भाग जिधर पैर रहता है।

पायल दे० (स्त्री०) पैर का भूषण, पैरी, पायजेब। (पु०) सुचाल, सुन्दर गति, बांस की सीढ़ी।

पायस तद्० (पु०) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न, परमान्न, तसमई, खाउर, खीर।

पाया दे० (पु०) खाट आदि के पाए, ईंटा या पत्थर के बने खम्भे।

पायिक दे० (पु०) दूत, पियादा, पदातिक, हरकारा।

पायी तद्० (पु०) पान-कर्ता, पीने वाला, पान करने वाला।

पार तद्० (पु०) पर, तीर, दूसरा तट, नदी नांघ कर जिस स्थान पर जाया जाय। समाप्ति, शेष, पूर्णता, प्रान्त, महुन, तरण, उद्धार्ण, मोचन। —क तद्० (पु०) समर्थ, कर्म समाप्ति-कर्ता, पारग, प्रीति कारक, पालक, प्रीतिकारक, उपयामकारी। —करना दे० (क्रि०) पार जाना, पार उतरना, नांघना, किसी काम को पूरा करना, निबाहना, पूर्ण करना।

पारख दे० (पु०) परखने वाला, परीक्षक, जाँचने वाला, परखैया।

पारखी दे० (पु०) पारख, परखैया।

पारग तद्० (पु०) [पार+गम्+ड] समर्थ, पारगामी, निपुण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार उतरने वाला।

पारण तद्० (पु०) व्रत के दूसरे दिन का भोजन उपवास के दूसरे दिन का विहित भोजन।

पारतन्त्र्य तद्० (पु०) परतन्त्रता, पराधीनता, अस्वाधीनता, पारवश्य।

पारत्रिक तद्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक, परलोक का विषय।

पारद तद्० धातु विशेष, पारा, रस धातु, म्लेच्छ जाति विशेष।

पारदर्शी तद्० (पु०) पारगामी, निपुण, दक्ष, निष्णात, अभिज्ञ।

पारदारिक तद्० (पु०) कामुक, परस्त्री रत, दूसरी स्त्री पर आसक्त।

पारन तद्० (पु०) पारण, उपवास के दूसरे दिन का भोजन।

पारना दे० (पु०) पारण करना, पूर्ण करना, पूर्ति करना।

पारमार्थिक तद्० (पु०) परमार्थ सम्बन्धी, परकाल विषयक, पारलौकिक, मोक्षप्रापक, मुख्य, प्रधान।

पारम्पर्य तद्० (पु०) परम्परागत, कुलक्रम, आनुक्रम, परम्परा से आया, कुल रीति, कुल परम्परा।

पारस दे० (पु०) पौधा विशेष।

पारलौकिक तद्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, परलोक के उपयोगी, परलोक का विषय।

पारशव तद्० (पु०) शूद्रा के गर्भ और ब्राह्मण के औरस से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर स्त्री तनय, शस्त्र, लोहास्त्र।

पारस दे० (पु०) स्पर्श मणि, मणि विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। देश विशेष, ईरान, फारस देश। —नाथ (पु०) पार्श्वनाथ, जिन विशेष, तेईसवाँ जिन। —पीपल (पु०) वृक्ष विशेष।

पारसाल दे० (पु०) गत या आगामी वर्ष।

पारसी तद्० (स्त्री०) भाषा विशेष, पारस देश की भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी।

पारसीक तद्० (पु०) पारस्य देशीय, पारस देश के वासी या वस्तु।

पारा दे० (पु०) धातु विशेष, पारद, रस धातु।

पारायण तद्० (पु०) पुराण पाठ विशेष, नियम पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन, सम्पूर्णता समाप्ति।

पाद्य तत् (पु०) पद प्रक्षालनार्थ जल, पैर धोने के लिये पानी।

पाधा दे० (पु०) उपाध्याय, पुरोहित, शिक्षक, गुरु।

पान तत्० (पु०) पीना, द्रव द्रव्य जल आदि का घूंट जाना, भाजन, रक्षण, (दे०) ताम्बूल, पत्ता। —पात्र (पु०) पियाला, जल पात्र, पानी पीने का पात्र, पनडब्बा।—गोष्ठ (पु०) अतिशय मद्यपायी, मतवाला।

पाना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, मिलना, एकत्रित करना, लाभ होना। (स्त्री०) खिचि वंश में उत्पन्न एक राजपूत स्त्री। ये चित्तौर के महाराणा संग्रामसिंह के यहाँ उनके बालक पुत्र उदयसिंह की धाय थीं। इन्होंने अपने पुत्र के प्राण खो कर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की थी। पाना का स्वार्थत्याग और प्रभु भक्ति संसार के इतिहास में सोने के अक्षरों से लिखा गया है। इनकी अत्युज्ज्वल कीर्ति संसार में अटल रहेगी।

पानात्यय तत्० (पु०) [पान+अत्यय] मदात्यय रोग, अधिक नशा होने का रोग, जो प्रायः मत वालों को हुआ करता है।

पानासक्त तत्० (गु०) [पान+आसक्त] मद्य प्रिय, मद्य पीने में अनुरक्त।

पानाहार तत्० (पु०) [पान+आहार] खाना पीना, अन्न जल।

पानी दे० (पु०) जल, तोय, पानीय, नीर, वीर्य सामर्थ्य, शक्ति, लावण्य, चमक, शोभा, बनावट की सुन्दरता।—करना (वा०) नष्ट करना, खराब कर देना, लज्जित करना, लजवाना, सहज करना, सुगम करना।—का बुलबुला (वा०) अस्थिरता नश्वरता, क्षणभंगुरता, चाञ्चल्य।—देना (वा०) तर्पण करना, पितरों को जल देना।—न मांगना (वा०) ऐसा मारना जिससे तुरन्त मर जाय। —पड़ना (वा०) मेघ बरसना, वृष्टि होना, लज्जित होना, शरमाना।—पीपी कोसना (वा०) सर्वदा बुरा मनाना, अत्यन्त अशुभ चाहना।—भरना या अधीन होना, अधीनता स्वीकार करना, फिट पड़ना, मुग्ध होना।—में आग लगाना (वा०) असम्भव काम करना। मिटे झगड़े को फिर उठाना।—पतला करना (वा०) पीड़ा पहुंचाना, दुःख देना, दुःखित करना।

पानी फल दे० (पु०) सिंघाड़ा, पानी में उत्पन्न होने वाला फल विशेष।

पान्थ तत्० (गु०) पथिक, राही, यात्री, बटोही।

पाप तत्० (पु०) अधर्म, दुरित, कलुष, अघ, अपराध।—खण्डन (पु०) पाप नाशक, मंत्र विशेष, व्रत विशेष जो पाप दूर करने के लिये किये जाते हैं।—ग्रह (पु०) क्षीणचन्द्र, मङ्गल, राहु, शनि, बुध, रवि, अनिष्टकारक ग्रह, अशुभ ग्रह। —चेला (पु०) पापात्मा, पापी।—जनक (पु०) पापोत्पादक।—नापित (पु०) धूर्त नापित। —रूपी (गु०) पाप की मूर्ति, पापात्मा, अधम। —रोग (पु०) कुष्ठ रोग, चेचक।

पापड़ दे० (पु०) मूंग या उर्द की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी।—बेलना (वा०) पापड़ बनाना, बहुत परिश्रम करना, बहुत मिहनत का काम करना उत्पात खड़ा करना।—खार दे० (पु०) केले की राख, केले के वृक्ष को जला कर एक प्रकार का बनाया हुआ खार।

पापात्मा तत्० (गु०) पापिष्ठ, अधर्मी, अपराधी, पापी।

पापिन दे० (स्त्री०) पापीयसी, पापिन स्त्री, अधर्मचारिणी, यथा—

"मैं पापिन ऐसी जली, कोयला हुई न राख।"

पापिया दे० (गु०) पपीता, अण्डकाकिनी, वृक्ष विशेष जिसमें फल लगते हैं। यह वृक्ष पपीते के नाम से प्रसिद्ध है।

पापी तत्० (गु०) पापात्मा, पापिष्ठ, अपराधी, दुष्कर्मी, दुराचारी।

पामर तत्० (गु०) अधम, नीच, पापिष्ठ, दुष्ट।

पामरी तत्० (स्त्री०) अधमा स्त्री, रेशमी वस्त्र।

पामा तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, खुजली, खाज, खजु, कण्डू।

पामारि तत्० (पु०) गन्धक, खुजली नाशक।

पायक दे० (पु०) पियादा, पैदल, पदाति, सेवक, यथा—"हनुमान से पायक हैं जिन केरे।" —तुलसीदास।

पायड़ दे० (पु०) मञ्च, मचान, मञ्च, मांच।

पायजामा दे० (पु०) वस्त्राच्छादन विशेष, एक प्रकार का कपड़ा जो पैर में पहना जाता है, स्वनाम प्रसिद्ध वस्त्र।

पायन्ती दे० (स्त्री०) पैर की ओर की खाट, पैताना, पदतल, खाट का वह भाग जिधर पैर रहता है।

पायल दे० (स्त्री०) पैर का भूषण, पैरी, पायजेब। (पु०) सुचाल, सुन्दर गति, बांस की सीढ़ी।

पायस तत्० (पु०) दुग्ध आदि के द्वारा बनाया अन्न, परमान्न, तसमई, जाउर, खीर।

पाया दे० (पु०) खाट आदि के पार, ईंटा या पत्थर के बने खम्भे।

पायिक दे० (पु०) दूत, पियादा, पदातिक, हरकारा।

पायी तत्० (पु०) पान-कर्ता, पीने वाला, पान करने वाला।

पार तत्० (पु०) पर, तीर, दूसरा तट, नदी लांघ कर जिस स्थान पर जाया जाय। समाप्ति, शेष, पूर्णता, मात्रा, तहुत, तरण, उद्धरण, मोचन। —क तत्० (पु०) समर्थ, कर्म समाप्ति-कर्ता, पारग, पूर्तिकारक, पालक, प्रीतिकारक, व्यवसायकारी। —करना दे० (क्रि०) पार जाना, पार उतरना, लांघना, किसी काम को पूरा करना, निबाहना, पूर्ण करना।

पारख दे० (पु०) परखने वाला, परीक्षक, जाँचने वाला, परखैया।

पारखी दे० (पु०) पारख, परखैया।

पारग तत्० (पु०) [पार+गम्+ड] समर्थ, पारगामी, निपुण, कर्मदक्ष, नदी समुद्र आदि के पार उतरने वाला।

पारण तत्० (पु०) व्रत के दूसरे दिन का भोजन उपवास के दूसरे दिन का विहित भोजन।

पारतन्त्र्य तत्० (पु०) परतन्त्रता, पराधीनता, अस्वाधीनता, पारवश्य।

पारत्रिक तत्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक, परलोक का विषय।

पारद तत्० धातु विशेष, पारा, रस धातु, म्लेच्छ जाति विशेष।

पारदर्शी तत्० (पु०) पारगामी, निपुण, दक्ष, निष्णात, अभिज्ञ।

पारदारिक तत्० (पु०) कामुक, परस्त्री रत, दूसरी स्त्री पर आसक्त।

पारन तद्० (पु०) पारण, उपवास के दूसरे दिन का भोजन।

पारना दे० (पु०) पारण करना, पूर्ण करना, पूर्ति करना।

पारमार्थिक तत्० (पु०) परमार्थ सम्बन्धी, परकाम विषयक, पारलौकिक, मोक्षप्रापक, मुख्य, प्रधान।

पारम्पर्य तत्० (पु०) परम्परागत, कुलक्रम, अनुक्रम, परम्परा से प्राप्त, कुल रीति, कुल परम्परा।

पारल दे० (पु०) पौधा विशेष।

पारलौकिक तत्० (पु०) परलोक सम्बन्धी, परलोक के उपयोगी, परलोक का विषय।

पारशव तत्० (पु०) शूद्रा के गर्भ और ब्राह्मण के औरस से उत्पन्न सन्तान, निषाद जाति, पर स्त्री तनय, अस्त्र, लोहास्त्र।

पारस दे० (पु०) स्पर्श मणि, मणि विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। देश विशेष, ईरान, फ़ारस देश।—नाथ (पु०) पार्श्वनाथ, जिन विशेष, तेईसवाँ जिन।—पीपल (पु०) वृक्ष विशेष।

पारसाल दे० (पु०) गत या आगामी वर्ष।

पारसी तत्० (स्त्री०) भाषा विशेष, पारस देश की भाषा, ईरान की भाषा, पारसवासी।

पारसीक तत्० (पु०) पारस्य देशीय, पारस देश के वासी या वस्तु।

पारा दे० (पु०) धातु विशेष, पारद, रस धातु।

पारायण तत्० (पु०) पुराण पाठ विशेष, नियम पूर्वक सप्ताह भर पठन या पाठन, सम्पूर्णता समाप्ति।

पारायणिक तत्० (पु०) पारायण-कर्ता, पाठक, छात्र।

पारावत तत्० (पु०) कपोत, गृह कपोत, कबूतर, मर्कट बानर।

पारावार तत्० (पु०) सरित्पति, समुद्र, सागर, तोयनिधि, नीरनिधि, महहृद, दोनों ओर का तट।

पाराशर तत्० (पु०) पराशर का पुत्र, वेद व्यास। (गु०) पराशर सम्बन्धी, पराशर-स्मृति, भिक्षु संहिता।

पाराशर्य तत्० (पु०) पराशर पुत्र, व्यासदेव।

पारिजात तत्० (पु०) पारिभद्र वृक्ष, देवतरु, सुरद्रुम, देवताओं का वृक्ष, पुष्प विशेष, हरिचन्दन वृक्ष।

पारिणाह्य तत्० (पु०) सम्बन्ध, बन्धन, गृहोपकरण, गृहस्थों के लिये उपयुक्त सामग्री।

पारितथ्या तत् (स्त्री०) सधवा स्त्रियों के पहनने की उपयुक्त वस्तु ललाटालङ्कार, शिरोभूषण विशेष, टिकुली, बेंदी।

पारितोषिक तत्० (गु०) तुष्टिजनक दान, प्रसन्नतासूचक दान, पुरस्कार।

पारीन्द्र तत्० (पु०) सिंह, मृगेन्द्र, केशरि, पञ्चानन।

पारिपन्थिक तत्० (पु०) तस्कर, चोर, लुटेरा, डाकू।

पारिपात्र तत्० (पु०) पर्वत विशेष, एक पर्वत का नाम, विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग का नाम जो मालवा देश की सीमा पर है।

पारिपार्श्वक तत्० (पु०) नट विशेष, जो सूत्रधार की सहायता करता है।

पारिभद्र तत्० (पु०) देवदारु वृक्ष, निम्ब वृक्ष, साखू का पेड़।

पारिभाव्य तत्० (पु०) जमानत, जामिनी, प्रतिभूत्व, माध्यस्थ्य।

पारिभाषिक तत्० (पु०) साङ्केतिक शब्द, शिल्प विद्या आदि की कल्पित कथा।

पारमाण्डल्य तत्० (पु०) परमाणु का परिमाण, अति सूक्ष्म परिमाण, वह परिमाणु जिससे छोटा दूसरा परिमाणु न हो।

पारिषद् तत्० (पु०) सभासद, सभास्थ सभ्य। (गु०) परिषत् सम्बन्धी, सभा सम्बन्धी।

पारी दे० (स्त्री०) बारी, पाला, अवसर, क्रम, एक

पारीण तत्० (गु०) पारगमन-कर्ता, पारगामी।

पारुष्य तत्० (पु०) परनिन्दा, परद्रोह, वाचिक अप्रिय भाषण, चार प्रकार के वाचिक पापों के अन्तर्गत पाप विशेष। कठोरता, पड़षत्व, दुर्वाक्य, कठोर वचन।

पार्थ तत्० (पु०) पृथा का पुत्र, अर्जुन, तीसरा पाण्डव।

पार्थक्य तत्० (पु०) पृथकता, पृथक् होना भिन्नता, प्रभेद।

पार्थिव तत्० (पु०) राजा, नृपति, महीपाल। (गु०) पृथिवी सम्बन्धी, पृथिवी का विकार, पृथिवी से उत्पन्न, मृण्मय।

पार्वण तत्० (पु०) पर्व पर किया जाने वाला श्राद्ध उत्सव, अमावस्या आदि के दिन कर्तव्य श्राद्ध पर्व कृत्य।

पार्वती तत्० (स्त्री०) सौराष्ट्र मृत्तिका, गुजराती मिट्टी, धात्री फल, आमलकी, आवला, एक प्रकार का पत्थर, दुर्गा, भगवती, महादेव की स्त्री, अपने पिता दक्ष के यज्ञ में बिना निमन्त्रण के सती उपस्थित हुई, परन्तु वहाँ पिता के द्वारा की गयी पति की निन्दा ये सह नहीं सकीं, अतएव वहीं, यज्ञकुण्ड में कूद कर इन्होंने अपने प्राण दे दिये। तदनन्तर पर्वतराज हिमालय के घर में, मेनका के गर्भ से ये उत्पन्न हुईं। ये पर्वतराज की कन्या थी। इस कारण इनका पार्वती नाम हुआ। शिव से विवाह करने के लिये इन्होंने कठिन तपस्या की थी।

पार्श्व तत्० (पु०) कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर, पास, निकट, समीप।—**वर्ती** (गु०) पार्श्वस्थ सहचर, पास रहने वाला।—**भाग** (पु०) हाथ के समीप का भाग, पसली।—**शूल** (पु०) शूलरोग विशेष, पाजर का शूल।

पाल तत्० (पु०) पालक, रक्षक, त्राण-कर्ता, स्वनाम ख्यात वस्तु, जो नावों पर टाँगी जाती है, जिसके सहारे नावें चलती हैं। तम्बू, छोटा तम्बू। आम पाल में रख कर आम पकाना।

पालक तद्० (पु०) रक्षक, पोषक, शासन-कर्ता, चरवाहा रक्षक। (दे०) भाजी, शाक विशेष, पालक का साग।—ना (स्त्री०) दयालुता, रक्षकता, रक्षा।

पालकी दे० (स्त्री) शिविका, डोली, मनुष्य वाह्ययान विशेष।

पालक्य तद्० (पु०) पालक का साग।

पालन तद्० (पु०) [पाल + अनट्] भरण पोषण, प्रतिपालन, रक्षण, अङ्गीकार, पूरण, निर्वाह।

पालना तद्० (क्रि०) पालन करना, रक्षण करना, पोसना, निबाहना।—(पु०) हिण्डोला, झूलन।

पालनीय तद्० (पु०) पालने योग्य, रक्षण करने योग्य, पालन करने के उपयुक्त।

पाला दे० (पु०) रक्षित, पोसा हुआ, नीहार, हिम, तुषार, बार, पारी, बारी, पर्याय, क्रम निरूपण, काम निरूपण।

पालागन दे० (पु०) अभिवादन, प्रणाम, पाँव छूना, प्रणाम करना।

पलाश तद्० (पु०) पलाश वृक्ष विशिष्ट, पलाश वृक्ष सम्बन्धी, हरित वर्ण, हरे रङ्ग का।

पालि तद्० (स्त्री०) भाषा विशेष। बौद्धों के समय की हिन्दुस्तानी भाषा यह भाषा संस्कृत से गिरी और मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से चढ़ी हुई बीच की भाषा है। बौद्ध धर्म के ग्रन्थ इसी भाषा में लिखे गये हैं।

पालिक दे० (पु०) पोषक, रक्षक, पालक।

पालित तद्० (पु०) रक्षित, स्थापित, पोषित, रक्षा किया हुआ।

पाली तद्० (स्त्री०) पंक्ति, श्रेणि, कोन, प्रशंसा, कल्पित भोजन, अलङ्कार विशेष। कान की बाली, मूंछ वालों स्त्री, प्रान्त भाग, सेतु, उत्सङ्ग, क्रोड देश, प्रस्थ परिमाण।

पाले दे० (अ०) अधीन, वश में, अधिकार में अधीनता में।—पड़ना (वा०) अधीन होना, वश होना। यथा—

" आज करउँ खल काल हवाले।
परेउँ कठिन रावण के पाले॥ "
—रामायण।

पाव दे० (पु०) चतुर्थांश, चौथाई भाग, चौथ, एक सेर का चौथाई, चार तोला।

पावक तद्० (पु०) अग्नि, अनल, आग, वह्नि। (पु०) पवित्र, पवित्र करने वाला, परिष्कारक, पवित्रकारी, पूतकारी।

पावड़ा दे० (पु०) पाँवड़ा।

पावन तद्० (पु०) पवित्र, पवित्रकारक, स्वच्छ, शुद्ध करने वाला। जल, अग्नि, गोबर, कुशा, गङ्गा, सत्सङ्ग, सूर्य दर्शन आदि पावन करने वाले हैं।

पावना दे० (पु०) पाना, प्राप्त होना, मिलना, प्राप्य, पाने योग्य, आदाय धन, बाक़ी।

पावला दे० (पु०) चौथा भाग, चतुर्थांश, चार आना, रुपये का चौथा भाग, चौवन्नी।

पावस दे० (पु०) वर्षा ऋतु, प्रवृट काल, वर्षा काल, बरसात।

पाश तद्० (पु०) रज्जु, रस्सी, गुन, फाँसी, फन्दा, अस्त्र विशेष।

पाशक तद्० (पु०) पासा, पासा खेलना, जूआ खेलना।

पाशा दे० (पु०) अक्ष, जुआ, चौपड़, कर्ण भूषण विशेष।

पाशित तद्० (पु०) पाशयुक्त, बद्ध, बन्धा हुआ।

पाशी तद् (पु०) पाशधर, रज्जु विशिष्ट, वरुण।

पाशुपत तद्० (पु०) पशुपति मन्त्र के उपासक, शैव, शैव सम्प्रदायी।

पाशुपतास्त्र तद्० (पु०) शूल विशेष। अर्जुन का अस्त्र, इसी अस्त्र को अर्जुन ने तपस्या द्वारा महादेव से पाया था।

पाश्चात्य तद्० (पु०) पश्चाज्जात, पश्चात् उत्पन्न, पश्चिम देशी, पश्चिम के वासी, पश्चिम देशोद्भव।

पाषाण तद्० (पु०) शिला, पत्थर, पाथर।—दारुण (पु०) टाँकी, छेनी, पत्थर काटने का अस्त्र।

पास दे० (अ०) समीप, निकट।

पासा दे० स्वनाम प्रसिद्ध क्रीड़ोपयोगी वस्तु, पाशक।

पासी दे० (पु०) जाति विशेष, व्याध।

पाहन दे० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर ।—कृमि (पु०) एक प्रकार का कीड़ा, पत्थर का कीड़ा, यह पत्थर ही में अपने रहने का घर बनाता है ।

पाहरु दे० (पु०) प्रहरी, चौकीदार, पहरुआ, चौकी देने वाला ।

पाही दे० (स्त्री०) दूसरे गाँव में खेती करना, दूसरे गाँव से सम्बन्ध रखना ।

पाहुन दे० (पु०) पाहुना, अतिथि ।

पाहूँ दे० (पु०) व्यक्ति, जन, सर्वसाधारण ।

पिऊ दे० (पु०) पति, स्वामी, प्रियतम, भर्ता, प्यारा ।

पिक तत्० (पु०) परभृत, कोकिल, कोइल ।—बयनी (स्त्री०) मिष्टभाषिणी स्त्री, कोकिल के समान बोलने वाली स्त्री ।—बैनी (स्त्री०) पिक बयनी, मधुर भाषिणी ।

पिकदान दे० (पु०) निष्ठीवन पात्र, थूकने का पात्र, उगालदान ।

पिघलना दे० (क्रि०) टघलना, द्रव होना, पतला होना, पानी होना ।

पिघलाना दे० (क्रि०) टघलाना, गलाना, द्रव कराना, पतला करना ।

पिघलाव दे० (पु०) टघलाव ।

पिङ्ग तत्० (गु०) पिङ्गल वर्ण विशिष्ट, कपिल, पीत वर्ण ।

पिङ्गल तत्० (पु०) नील पीत मिश्रित वर्ण, कपिश रङ्ग । कबार, कपिश, पिशङ्ग । पीतल, हरताल । (गु०) नील पीत वर्ण विशिष्ट, नील पीत, निधि विशेष, कपि, वानर, अग्नि, मुनि विशेष, नकुल, स्थावर, विष विशेष एक सम्वत्सर का नाम, पिङ्गलाचार्य कृत छन्दो ग्रन्थ विशेष ।

पिङ्गला तत्० (स्त्री०) विदेह देश में रहने वाली एक वेश्या का नाम, कर्णिका, नाड़ी विशेष जो दहिनी नाक से निकलती है, पक्षि विशेष, राजा भर्तृहरि की पत्नी का नाम, वामन नाम दक्षिण दिग्गज की हथिनी का नाम ।

पिङ्गूर दे० (पु०) हिण्डोला, झूलन, पालना ।

पिचकना दे० (क्रि०) दबना, निचुड़ना, सिमिटना ।

पिचकाना दे० (क्रि०) दबाना, निचोड़ना ।

पिचकारी दे० (स्त्री०) पचूका, दमकला, रङ्ग आदि दूर फेंकने के लिये यन्त्र विशेष ।

पिचण्ड तत्० (पु०) पशु का अङ्ग, पेट, उदर, जठर ।

पिचण्डिल तत्० (गु०) तुन्दिल, तोंद वाला ।

पिचपिचा दे० (गु०) पिलपिला, सड़ा हुआ, गला हुआ ।

पिचु तत्० (पु०) कार्पास, कपास, वृक्ष विशेष, कुष्ठ विशेष, एक असुर का नाम, भैरव, शस्त्र विशेष, कर्ष परिमाण ।

पिचुका दे० (पु०) पिचकारी, पचूका ।

पिचुमन्द तत्० (पु०) निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़ ।

पिचोट दे० (पु०) आँख की जलन ।

पिच्छ तत्० (पु०) मयूरपुच्छ मोरपङ्ख, शिखण्ड, लाङ्गुल, पूँछ ।

पिच्छलन दे० (पु०) फिसलना, खसकना, गिरना, पड़ना ।

पिछलना दे० (क्रि०) फिसलना, गिरना, पड़ना, पैर रपटने से गिर जाना ।

पिछलपाई दे० (स्त्री०) डाकिन, भूतिन, चुड़ैल ।

पिछला दे० (गु०) पीछे का, अनन्तर का, पश्चाद्भव ।

पिछवाड़ा दे० (पु०) पश्चाद्भाग, पीछे का भाग, मकान का पिछला हिस्सा ।

पिछाड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रस्सी, जिससे घोड़ों का पिछला पैर बाँधा जाता है । (अ०) पीछे, पश्चात्, पृष्ठ भाग ।

पिछान दे० (स्त्री०) परिचय, पहचान, जान पहचान ।

पिछाने दे० (गु०) परिचित, जाने हुए, पहचाने गये ।

पिछूत दे० (अ०) पीछे, पश्चात्, पीछे का भाग । (पु०) मकान का पिछवाड़ा ।

पिछेल दे० (पु०) पिछवाड़ा, घर का पिछला भाग ।

पिछौरा दे० (पु०) दोहर, दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र ।

पिछौरी दे० (स्त्री०) दोहर, दुपट्टा, पतली चादर ।

पिञ्जन तत्० (पु०) रूई धुनने की धनुही ।

पिञ्जर तत्० (पु०) धातु विशेष, पीत रक्त वर्ण, रक्त पीत मिश्रित वर्ण, पिंजरा, जिसमें पखेरू रखे जाते हैं। नागकेशर पुष्प, पक्षियों के रखने का घर, शरीर का अस्थि समूह।

पिञ्जरा दे० (पु०) पञ्जर, पक्षि रखने का घर, जो लकड़ी या लोहे के तारों से बनता है, पिंजड़ा।

पिञ्जल तत्० (पु०) कुश पत्र, हरिताल, अतिशय व्याकुल सेना, तीतर पक्षी, भूषण विशेष, बाजूबंद, बाजूबन्द, त्रिजायट।

पञ्जिका तत्० (स्त्री०) रुई का गला।

पिञ्जियारा दे० (पु०) पिंजारा, रुई धुनने वाला, पींजने वाला।

पिञ्जूल तत्० (पु०) बाती, बत्ति का, दशा, दीप की बत्ती, मशाल।

पिञ्जूष तत्० (पु०) कर्णमल, कान का मल, खूंट, ठेठ।

पिट तत्० (पु०) पेटी, पिटारा, सन्दूक, पिटारी, मरकुन, नरकट।

पिटक तत्० (पु०) वेत्रादि रचित पात्र विशेष, पिटारा, पिटारी।

पिटना दे० (क्रि०) मार खाना। (पु०) मुद्गर, मुँगरा, गदा, पीटने की लकड़ी, डण्डा।

पिटारा दे० (पु०) कपड़े आदि रखने का डब्बा, मञ्जूषा, टोकरा।

पिटारी दे० (स्त्री०) छोटी पिटारी, चमड़े की पेटी।

पिण्ड तत्० (पु०) आटे की बनी गोल वस्तु विशेष, देह का एक देश, गृह का एक देश, शरीर, देह, पितरों के उद्देश से दिया हुआ दान, गोल, मण्डल, वर्तुलाकार, गन्धद्रव्य विशेष, जपा पुष्प, आजीवन, जीविका, श्राद्ध से बचा हुए द्रव्य से बना अन्न का गोला जो पितरों को दिया जाता है। —छुड़ाना (वा०) बचाना, भार उतारना, अपना दायित्व हटाना, पीछा छुड़ाना, उद्धार पाना। —फला (स्त्री०) तुम्बी विशेष, कड़ुतुम्बी, तितलौकी।

पिण्डली दे० (स्त्री०) फिल्ली, पिण्डरी, रोग विशेष, नसों का अकड़ना।

पिण्डा दे० (पु०) पितरों को उद्देश करके दिया हुआ अन्न, टुकड़ा, मैनफल, कस्तूरी विशेष।

पिण्डारा दे० (पु०) लुटेरा, ठग, डकैत, एक जाति विशेष, जिसका लूटना खसोटना काम है, डाकुओं का दल। क्षपणक, बौद्ध, संन्यासी, गोप, महिषी रक्षक, चरवाहा, द्रुम विशेष।

पिण्डालू दे० (स्त्री०) फल विशेष, औषधि की जड़।

पिण्डित तत्० (गु०) राशि कृत, एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ, मिलित, जड़ित, गुणित।

पिण्डी तत्० (स्त्री०) दिवड़ी, तगर, लौकी, लाऊ, खजूर विशेष, ज्ञान निरूपण करने का उपन्यास, वेदा, पिलिण्डी, लटाई, शिव का लिङ्ग, देवता की मूर्ति। —मुस्ता (स्त्री०) नागरमोथा।

पिण्डुक तत्० (पु०) पक्षि विशेष, घुग्घू, कबूतर की जात का एक पखेरू।

पिण्डोल दे० (पु०) खड़िया मिट्टी, छुई।

पिण्याक तत्० (पु०) पीना, खली, तिल आदि से तेल निकाल लेने पर जो उसका भाग बचता है।

पितर दे० (पु०) पितृ पितामह, पूर्व पुरुष, पूर्वज, पुरखा।

पितराई दे० (स्त्री०) पितर सम्बन्धी, कुटुम्ब, पीतल का मुर्चा, जङ्ग।

पितरौ तत्० (पु०) माता पिता, मा बाप, यह शब्द संस्कृत है, पितृशब्द के प्रथमा द्विवचन का यह रूप है।

पितरौला दे० (पु०) पितृ पूजन करने का पात्र, पात्र विशेष, जिसमें पितरों की पूजा करने की सामग्री रखी जाती है।

पितलाना दे० (क्रि०) पीतल के बर्तन में रखने के कारण दही आदि का बिगड़ जाना, पीतल का मुर्चा लग जाना।

पिता तत्० (पु०) बाप, जनक, तात। —मह तत्०

पीछे दे० (अ०) पश्चात्, अनन्तर, परे।—डालना (वा०) भूल जाना, भुला देना, धर रखना, हटा देना, दूर कर देना।—पड़ना (वा०) दिक-दिकाना, सताना, किसी काम के लिये सतत कहना।—लगना (वा०) पीछे पड़ना, दृष्टि रखना, सर्वदा दुःख देना, सतत दुःख देने की चेष्टा करना।

पीजाना दे० (क्रि०) पी लेना, सुखना, क्रोध रोकना।

पीटना दे० (क्रि०) मारना, कूटना।

पीठ दे० (पु०) पृष्ठ, पिछाड़ी, पीछे, आसन, पीठा।—के पीछे डालना (वा०) बचाना, रक्षा करना, त्राण करना।—ठोकना (वा०) हिम्मत बाँधना, साहस देना, अभय देना।—देना (वा०) भागना, भाग जाना, मुकरना, हताश होकर किसी काम से हाथ हटा लेना। हटना, टलना।—पर हाथ फेरना (वा०) प्रसन्नता प्रकाश करना, उत्साह बढ़ाना, सहायता देना धीरता देना, ढाँढस बँधाना।—फेरना (वा०) सम्मुख होना, प्रस्तुत होना, उद्यत होना, किसी काम को करने लगना।—लगना (वा०) पटका जाना, पछाड़ खाना, कुश्ती में हार जाना, पीठ पर घाव होना।

पीठा दे० (पु०) भोजन विशेष।

पीठियाठोक दे० (वा०) अव्यवधान, सतत, एक के बाद दूसरा।

पीठी दे० (स्त्री०) पीसा अरद की दाल।

पीठौता दे० (पु०) पत्रों का पृष्ठ, पीठ।

पीड़ दे० (स्त्री०) दुःख वेदन, व्यथा, पीड़ा, दर्द, वेदना।

पीड़क तत्० (गु०) दुःखदायी, दुःखदायक, क्लेश-दायक।

पीड़ना दे० (क्रि०) दुःख देना, पीड़ा देना, क्लेश देना।

पीड़ा तत्० (स्त्री०) व्यथा, दुःख, वेदना, बाधा।—कर (गु०) पीड़क, क्लेशकर, दुःखदायी।

पीड़ित तत्० (गु०) दुःखित, दुखी।

पीड्यमान तत्० (गु०) पीड़ायुक्त, पीड़ा विशिष्ट।

पीढ़ा दे० (पु०) पटरा, मोढ़ा, मचिया, पटा, काष्ठासन।—बन्ध (पु०) मङ्गलाचार।

पीढ़ी दे० (स्त्री०) वंश परम्परा, पुरुषानुक्रम।

पीत तत्० (पु०) वर्ण विशेष, एक प्रकार का रङ्ग हलदिया रङ्ग। (गु०) पीतवर्णयुक्त पीयर पीला।

पीतम दे० (पु०) प्रियतम, प्रिय धव, स्वामी।

पीतरस तत्० (पु०) हरिद्रा, हलदी।

पीतल दे० (पु०) मिश्रित धातु विशेष।

पीतला दे० (गु०) पीतल निर्मित, पीतल का बना, पीतल का।

पीताम्बर तत्० (पु०) [पीत + अम्बर] श्रीकृष्ण, विष्णु। (गु०) पीतवर्ण वस्त्रयुक्त।

पीन तत्० (गु०) पीवर, स्थूल, माँसल, मोटा, तुन्दिल, तोंदैला।

पीनक दे० (स्त्री०) अफीम के नशे की झोंक, अफीम के नशे से ऊँघाई आना।

पीनना दे० (क्रि०) धुनना, रुई ओटना।

पीनस दे० (पु०) नासिका का एक रोग विशेष पालकी।—धारा (गु०) जिसकी नाक में पीनस का रोग हो।

पीना दे० (क्रि०) पान करना, जल पीना, सिकुड़ना सकुचित होना।

पीपल दे० (पु०) अश्वत्थ का वृक्ष, पिप्पल का पेड़।

पीपला दे० (पु०) तलवार की नोक।

पीपलामूल दे० (पु०) औषधि विशेष।

पीपा दे० (पु०) काष्ठ या लोह निर्मित गोलाकार पात्र विशेष, मद्यपात्र, मद्य रखने का पात्र।

पीब दे० (स्त्री०) मल विशेष, पूय, फोड़े का मल।

पीबियाना दे० (क्रि०) पकना, पीब बहना, गलना गलाना।

पीयूष तत्० (पु०) अमृत, सुधा, अमी, दूध।

पीर दे० (स्त्री०) दुःख, वेदना, पीड़, पीड़ा, व्यथा।

पीरा दे० (स्त्री०) पीड़ा, पीर।

पीराई दे० (स्त्री०) ढोल बजाने वाला।

पीला दे० (पु०) पीतवर्ण, पीतवर्ण का, पीले रङ्ग का।

पीलाई दे० (स्त्री०) पीतत्व, पीला रङ्ग, पीलापन।

पीलाम दे० (पु०) रेशमी वस्त्र विशेष।

पीली दे० (स्त्री०) मोहर, सुवर्ण मुद्रा, सोने की मोहर।

पीलु तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके पत्ते हाथी खाते हैं।

पीवकड़ दे० (पु०) मद्यप, उन्मत्त, पियैया।

पीवर तत्० (पु०) स्थूल, पीन, मोटा।

पीसना दे० (क्रि०) पिसान करना, बुकना, चूर्ण करना।

पीहर दे० (पु०) नैहर, मैका, स्त्री के पिता का घर, माइके, नइहर।

पीहु दे० (पु०) पिल्लू, कृमि विशेष।

पुं तत्० (पु०) पुरुष, पुमान, नर, पुरुष वाचक शब्द।

पुंलिङ्ग तत्० (पु०) पुरुष चिन्ह, पुरुषत्व।

पुंशक्ति तत्० (स्त्री०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पुरुष का सामर्थ्य।

पुंश्चली तत्० (स्त्री०) पतुरिया, व्यभिचारिणी, वेश्या, कुलटा।

पुंसवन तत्० (पु०) गर्भ संस्कार विशेष, स्त्रियों के करने का एक व्रत।

पुंस्त्व तत्० (पु०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व।

पुकार दे० (स्त्री०) हाँक, गुहार, टाँक, हाँक, दुःख निवेदन।

पुकारना दे० (क्रि०) गुहराना, हाँक मारना, टोकना, आह्वान करना।

पुखराज दे० (पु०) मणि विशेष, एक रत्न का नाम, पद्मराग मणि, गोमेद।

पुङ्ग तत्० (पु०) राशि, श्रेणि, समूह, दल, ढेर।

पुङ्गव तत्० श्रेष्ठ, बड़ा, माननीय, उत्तम, यह शब्द जिसके अन्त में आता है, उसीकी श्रेष्ठता बतलाता है। यथा—राजपुङ्गव, ब्राह्मणपुङ्गव आदि।

पुचकार दे० (पु०) सान्त्वन वाक्य, ढाँढ़स देना, वश करना, बिगड़े हुए बैल आदि को सांत्वन वाक्य से वश में करना।

पुचारा दे० (पु०) चूना पोतने की कूँची जिससे भीत में चूना पोता जाता है।

पुच्छ तत्० (पु०) लाङ्गूल, पूँछ, दुम, पश्चाद्भाग।

पुच्छल तत्० (पु०) पूँछ वाला, पुच्छ विशिष्ट, पुच्छयुक्त।—तारा (स्त्री०) धूमकेतु, अशुभ सूचक तारा।

पुछैया दे० (पु०) पृच्छक, पूछने वाला, अनुसन्धानकारी।

पुजना दे० (क्रि०) पूरा होना, पूर्ण होना, न्यून न रहना, पूजित होना, प्रतिष्ठा पाना।

पुजाना दे० (क्रि०) पूजा कराना, पूजा पाना, भराना, पूर्ण कराना।

पुजापा दे० (पु०) पूजा के उपकरण, पूजा की सामग्री।

पुजारी दे० (पु०) पूजा करने वाला, पूजक, अर्चक।

पुञ्ज तत्० (पु०) ढेर, राशि, समूह, जड़ पदार्थों का समूह।

पुट तत्० (पु०) युगल, युग्म, आच्छादन, पत्रादि रचित पुष्पाधार, मध्य, अभ्यन्तर, चूर्ण, पेषण, अश्वखुर, घोड़े का पैर, औषधि पकाने का पात्र विशेष, दोना, मिलाव, मिलना, पद्म, कमल।

पुटक तत्० (पु०) दोना, पत्र निर्मित पात्र, पद्म, कमल।

पुटकिनी तत्० (स्त्री०) पद्मिनी, पद्मलता, पद्मयुक्त देश, पद्म समूह।

पुटित तत्० (पु०) युक्त, आच्छादित, आवृत, आद्यन्त प्रणव से युक्त मन्त्र।

पुटी तत्० (स्त्री०) आच्छादन विशेष, कौपीन, पत्रादि रचित पात्र, दोना।

पुट्ठा दे० (पु०) पशु आदि का पश्चाद्भाग, कटि के ऊपर का भाग।

पुड़ा दे० (पु०) बड़ी पुड़िया, गट्ठा, पुलन्दा।

पुड़िया दे० (स्त्री०) कागज़ की छोटी गाँठ जिसमें दवा आदि बाँधी जाती है।

पुड़ी दे० (स्त्री०) खाल, ढोल का चमड़ा, चर्म।

पुण्डरीक तत्० (पु०) शुक्ल पद्म, श्वेत कमल, कमल मात्र, श्वेतच्छत्र, औषध विशेष, अग्निकोण का दिग्गज, कोषकार विशेष।

पुण्डरीकाक्ष तत्० (पु०) [पुण्डरीक+अक्ष] श्रीकृष्ण, कमल के समान जिसको आँखें हों।

पुण्ड्र तत्० (पु०) इक्षु विशेष, पौंडा, ऊख, दैत्य विशेष, बलिराज का क्षेत्रज पुत्र। अन्ध महर्षि दीर्घतमा के औरस से बलिराज की महारानी सुदेष्णा के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न हुए थे, उनमें पुण्ड्र एक थे। इनके नाम पर इनका अधिकृत राज्य भी उसी नाम से परिचित होता है।

पुण्य तत्० (पु०) शुभ अदृष्ट, धर्म, सुकृत, शोभन कर्म, उत्तम कर्म, पावन, पवित्र।—**कर्म** (पु०) पवित्र कर्म, धर्म कर्म।—**कृत** (गु०) पुण्य-कर्ता, धार्मिक, सुकृती।—**गन्ध** (पु०) चम्पा।—**जन** (पु०) सज्जन, राक्षस, यक्ष।—**जनेश्वर** (पु०) कुबेर, यक्षराज।—**पत्तन** (पु०) एक नगर का नाम, पूना।—**भूमि** (स्त्री०) आर्यावर्त्त देश, हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का स्थान, पुण्यस्थान, तीर्थस्थान।—**वान्** (गु०) पुण्य-युक्त, सुकृती, धार्मिक।—**शील** (पु०) पुण्य-शाली, धार्मिक, पवित्र।—**श्लोक** (पु०) विष्णु, युधिष्ठिर, नल राजा।

पुण्याई दे० (गु०) पुण्यवान्, धार्मिक, सुकृती। (स्त्री०) धर्म, सुकृत, धार्मिकता।

पुण्यात्मा तत्० (पु०) [पुण्य+आत्मा] पुण्य स्वभाव, पुण्याचारी, धर्मशील, धर्माचारी, धर्मी, धार्मिक।

पुण्याह तत्० (पु०) पुण्यजनक दिवस, पवित्र दिन, सरकारी मालगुज़ारी, वसूल करने का पहला दिन।—**वाचन** (पु०) दैव कर्मों में स्वस्तिवाचन के पहले मङ्गल के लिये पुण्याह शब्द का तीन बार उच्चारण।

पुतला दे० (पु०) मूर्ति, काष्ठ तृण आदि निर्मित मूर्ति।

पुतली दे० (स्त्री०) आँख का तारा, काष्ठादि निर्मित छोटी प्रतिमा।

पुताई दे० (स्त्री०) पोतने का काम या मज़ूरी।

पुत्तलिका तत्० (स्त्री०) पुतली, क्रीड़ा साधन मूर्ति विशेष।

पुत्तिका तत्० (स्त्री०) पुतली, काष्ठ निर्मित मूर्ति, पुत्तलिका, कीट विशेष, क्षुद्रमक्षिका।

पुत्र तत्० (पु०) सुत, अपत्य, सन्तान, बेटा, पुन्नाम नरक से रक्षा करने वाला।—**जीवी** (पु०) वृक्ष विशेष, पुत्र जीवक वृक्ष।

पुत्रार्थी तत्० (गु०) [पुत्र+अर्थी] सन्तानार्थी, पुत्रेच्छु, पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाला।

पुत्रिका तत्० (स्त्री०) कन्या, दुहिता, तनया, पु[illegible] पुत्र के समान रखी हुई कन्या, पुत्तलिका, पुतली।—**पुत्र** (पु०) दौहित्र, दोहता, पुत्री का [illegible] गौण पुत्र, दत्तक लिया हुआ कन्यापुत्र।

पुत्रिणी तत्० (स्त्री०) पुत्रवती, सन्ताना स्त्री, स[illegible] वाली।

पुत्री तत्० (पु०) पुत्रवान्, पुत्रयुक्त। (स्त्री०) दुहि[ता], कन्या, तनया।

पुत्रेष्टि तत्० (पु०) सन्तानार्थ यज्ञ, सन्तान [illegible] का उपायभूत यज्ञ।

पुदिना दे० (पु०) सुगन्ध शाक विशेष।

पुद्गल तत्० (पु०) आत्मा, देह, शरीर, जैनि[यों के] मत से चैतन्य विशिष्ट, पदार्थ विशेष। [illegible] सुन्दराकार, रूपादि विशिष्ट द्रव्य।

पुन. तत्० (अ०) द्वितीयवार, पुनर्वार, बार[-बार], भेद, अवधारण, अधिकार, फिर, पुनि, बहु[रि]।—**पुनः** (अ०) बार बार, फिर फिर, मुहुः, असकृत्।—**पुना** (स्त्री०) नदी विशेष, और

के पास है।—संस्कार (पु०) द्वितीयवार, उपनयनादि संस्कार।

पुनरपि तत्० (अ०) द्वितीयवार, पुनर्वार।

पुनरागमन तत्० (पु०) द्वितीयवार, आगमन, लौटना, लौट आना, फिर आना।

पुनरावृत्ति तत्० (स्त्री०) फिर आवृत्ति, पुनः पाठ।

पुनराय दे० (पु०) दूसरे बार, पुनर्वार, पुनश्च।

पुनरुक्ति तत्० (स्त्री०) पुनः कथन, कही बात को फिर कहना, काव्य का एक दोष।

पुनरुत्थान तत्० (पु०) पुनः उठना, द्वितीय बार उठना।

पुनर्जन्म तत्० (पु०) द्वितीयवार उत्पत्ति, दूसरा जन्म, पुनः उद्भव।

पुनर्नवा तत्० (स्त्री०) शाक विशेष।

पुनर्भव तत्० (पु०) नख, नह। (पु०) पुनर्जन्म, पुनर्वार उत्पत्ति।

पुनर्भू तत्० (स्त्री०) द्विरूढ़ा, दो बार ब्याही स्त्री।

पुनर्वसु तत्० (पु०) सातवाँ नक्षत्र, गन्धर्व, मुनिभेद।

पुनर्विवाह तत्० (पु०) प्रथम ऋतु के समय का संस्कार विशेष, गर्भाधान संस्कार, द्वितीयवार विवाह, दूसरा विवाह।

पुनयाला दे० (क्रि०) अनादर करना, अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।

पुनश्च तत्० (अ०) पुनर्वार, पुनरपि, द्वितीयवार, फिर भी, और भी।

पुनि दे० (अ०) फेर, पुनः, बहुरि, द्वितीयवार, फिर। —पुनि (अ०) बार बार, पुनः पुनः, बारम्बार। यथा:—

"पुनि पुनि लावा ,दरस दिखावा।"

पुनीत तत्० (गु०) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ।

पुंसा दे० (क्रि०) गाली देना, अनादर करना, अपमान करना।

पुन्नाग तत्० (पु०) पुष्प वृक्ष विशेष, पाटल द्रुम।

पुमान तत्० (पु०) मनुष्य, जातीय पुरुष, मानव।

पुर तत्० (पु०) घर, गेह, गृह, मकान, नगर, ग्राम इट्टादियुक्त स्थान, वह ग्राम जिसमें बाज़ार आदि हों, एक राक्षस का नाम।

पुरइन दे० (स्त्री०) कोका, कुमुदिनी, कुमोदिनी, नलिनी।

पुरउब दे० (क्रि०) पूर्ण करेंगे, पूरा करेंगे।

पुरजन तत्० (पु०) पुरवासी, पुर के मनुष्य।

पुरञ्जन तत्० (पु०) जीव, राजा विशेष।

पुरञ्जय तत्० (पु०) एक सूर्यवंशीय राजा, बहुत पुराने समय में देवासुर युद्ध में देवता दैत्यों से हार कर भगवान् के शरणापन्न हुए, और उनकी आज्ञा से महाराज पुरञ्जय के निकट उन लोगों ने प्रार्थना की, उन्होंने इन्द्र को वृषरूप धारण करने का आदेश दिया, यद्यपि इन्द्र इसे स्वीकार करना नहीं चाहते थे परन्तु अन्त में देवताओं के अनुरोध से इन्द्र को स्वीकार करना पड़ा, वृषरूपधारी इन्द्र पर चढ़ कर महाराज पुरञ्जय ने युद्ध में दैत्यों को हरा दिया। तभी से राजा पुरञ्जय ककुत्स्थ कहे जाते हैं। और उनके वंश की काकुत्स्थ नाम से प्रसिद्धि हुई। इन्हीं के वंश में भगवान् रामचन्द्र के रूप में प्रकट हुए थे।

पुरञ्जर तत्० (पु०) वक्ष, बाहुमूल, स्कन्ध, कन्धा।

पुरट तत्० (पु०) सुवर्ण, काञ्चन, स्वर्ण, हेम, सोना।

पुरनियाँ दे० (गु०) प्राचीन, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर का नाम, जो प्राचीन अङ्गदेश में और सम्प्रति बिहार में है।

पुरन्दर तत्० (पु०) इन्द्र, महेन्द्र, देवराज इन्द्र का नामान्तर। इन्द्र असुरों के नगर का नाश करते हैं इस कारण उनका नाम पुरन्दर पड़ा है।

पुरवहु दे० (क्रि०) पूरा करो, पूर्ण करो, भर दो, पुजा दो।

पुरवासी तत्० (गु०) [पुर+वस्+णिन्] गृहवासी, पौरजन, नगर में रहने वाला।

पुरवी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।

पुरश्चरण तत्० (पु०) [पुरस्+चर+अनट्] मन्त्र आदि को चेतन करना, नियम पूर्वक मन्त्रजप, अनुष्ठान करना, विधि सहित भगवत् पूजा।

पुरस्कार तत्० (पु०) [पुरस्+कृ+घञ्] पारितोषिक, आदर पूर्वक दान, साधुवाद, उत्तम कर्म का बदला, धन्यवाद, पूजा।

पुरस्कृत तत्० (गु०) [पुरस्+कृ+क्त] अभिग्रस्त, अग्रकृत, पारितोषिक, दत्त, पूजित, धन्यवादित।

पुरस्तात् तत्० (अ०) पूर्वदिक्, प्रथम काल, अतीत काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में।

पुरा तत्० (अ०) प्राचीन, पुराना, पुराने समय में, चिरन्तन, अतीत, भूत, चिरातीत, निकट, सन्निहित। (दे०) गाँव, पुरवा, बस्ती।—**कृत** (गु०) प्रारब्ध, कर्म, पूर्वकाल कृत, पहले जन्म में किया हुआ, भाग्य, अदृष्ट।

पुराण तत्० (पु०) व्यासादि मुनि प्रणीत ग्रन्थ विशेष, अष्टादश पुराण, पुरातन इतिहास, पुराण उस विद्या को कहते हैं जिसमें प्राचीन इतिहास के सिवा धर्म के तत्व निरूपण किये गये हों। पुराणों में पाँच प्रकार के विषय लिखे जाते हैं। यथा:—
सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, और वंशानुचरित ये ही पाँच विषय पुराणों में वर्णनीय हैं। सर्ग—आदि सृष्टि की उत्पत्ति क्रम, प्रतिसर्ग—प्रलय के अनन्तर सृष्टि का क्रम, वंश—देवता दानव और राजाओं की वंशावली, मन्वन्तर—मनुओं का राज्यकाल और राज्यव्यवस्था, वंशानुचरित—मनुओं की वंशावली।—**पुरुष** (पु०) विष्णु, नारायण, भगवान्।—**वेत्ता** (पु०) पुराणज्ञ, पुराणादि शास्त्रज्ञाता, पौराणिक।

पुरातन तत्० (गु०) प्राचीन, पूर्व कालीन, बहुकालीन, चिरन्तन, पुराना, अगले समय का, पहले का।—**कथा** (स्त्री०) इतिहास, प्राचीन वृत्तान्त।

पुराना दे० (गु०) प्राचीन, पुरातन, पहले का, पहले समय का। (क्रि०) पूरा करना, भरना, पूर्ण करना, भर देना।

पुरारि तत्० (पु०) महादेव, शिव, शम्भु, त्रिपुर दाह के अनन्तर शिव का नाम त्रिपुरारि या पुरारि पड़ा है। हिरण्याक्ष के तीन पुत्रों के नगरों के त्रिपुर या पुर संज्ञा है। उसके जलाने के अनन्तर महादेव का नाम पुरारि है।

पुरी तत्० (स्त्री०) नगर, गाँव, पुर, पुरवा, नगरी, जगदीशपुरी, जगन्नाथ क्षेत्र।

पुरीतत् तत्० (पु०) अन्त्र, आँत, नाड़ी, एक नाड़ी का नाम, निद्रा के समय मन जिसमें रहता है।

पुरीष तत्० (पु०) विष्ठा, मल, गूह।

पुरु तत्० (पु०) देवलोक, राजा विशेष, ययाति राजा का कनिष्ठ पुत्र और नहुष का पौत्र, ययाति की देवयानी और शर्मिष्ठा दो स्त्रियाँ थीं। देवयानी शुक्राचार्य की कन्या थी और शर्मिष्ठा दैत्यराज वृषपर्वा की। शर्मिष्ठा के गर्भ से तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनमें पुरु सब से कनिष्ठ थे। शुक्राचार्य के शाप से ययाति जराग्रस्त हो गये थे, उन्होंने अपना वार्द्धक्य अपने पुत्रों में से किसी को देना चाहा परन्तु किसी ने पिता की बुढ़ाई लेनी स्वीकार नहीं की। अन्त में उन्होंने पुरु को अपनी बुढ़ाई देनी चाही, पुरु ने पिता की आज्ञा को आदर के साथ ग्रहण किया। ययाति ने पुरु को ही अपने राज्य का अधिकारी बनाया।
(२) हस्तिनापुर के चन्द्रवंशी राजा, प्रसिद्ध विजयी अलकजेंडर के भारत-आक्रमण के समय इन्होंने वितस्ता नदी के पास उसे रोका था, यद्यपि उस युद्ध में पुरु हार गये थे और अलकजेंडर जीत गया था, तथापि उसने पुरु की वीरता से सन्तुष्ट होकर इनका राज्य इन्हें लौटा दिया था।

पुरुकुत्स तत्० (पु०) मान्धाता के पुत्र, ये राजा शशिबिन्दु की कन्या इन्दुमती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनके बड़े भाई का नाम मुचकुन्द था। महर्षि के शाप से पुरुकुत्स की स्त्री नदी हो गई थी। महर्षि सौभरि के साथ इनकी पाँच बहिनें ब्याही गई थीं। नर्मदा नदी के उत्तर तीर के देश इनके राज्य में थे। नर्मदा के गर्भ से पुरुकुत्स को एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसका नाम त्रसदस्यु था। राजा पुरुकुत्स ने नर्मदा की प्रार्थना से पाताल के अनेक गन्धर्वों का विनाश किया था।

पुरखा दे० (पु०) पूर्वपुरुष, पिता पितामह आदि।

पुरखे दे० (पु०) पूर्वपुरुष, पिता पितामह आदि, बापदादे।

पुरराज तत्० (पु०) बुध का पुत्र और चन्द्रमा का पौत्र, बृहस्पति की पत्नी तारा को चन्द्रमा हर ले आये थे, तारा ही से चन्द्रमा को एक पुत्र हुआ था जिसका नाम बुध था। राजपुत्री इला के साथ बुध का विवाह हुआ था। इला के गर्भ से बुध के पुत्र पुरुरवा हुए थे। उर्वशी इन्द्र के शाप से मर्त्यलोक में पुरुरवा की स्त्री के रूप में उत्पन्न हुई। अपनी प्रतिज्ञा पूरी न करने के कारण उर्वशी ने पुरुरवा को छोड़ दिया। उर्वशी के विरह से अधीर होकर पुरुरवा चारों तरफ़ घूमते फिरे, अन्त में एक दिन कुरुक्षेत्र नामक स्थान में पुरुरवा ने उर्वशी को देख पाया। राजा ने उर्वशी को अपने घर चलने के लिये कहा। उर्वशी बोलीं, "मैं आपसे गर्भवती हुई हूँ। वर्ष के अनन्तर कई सन्तान उत्पन्न होने वाले हैं। मैं आपके पुत्रों को आपको सौंपने आऊँगी, उसी समय आपके घर एक रात रहूँगी, उर्वशी के सात पुत्र हुए। उनको लेकर उर्वशी राजा को सौंपने आई और उसी समय वह एक रात रही भी थी। प्रयाग नगरी पुरुरवा की राजधानी थी, यह नगरी गङ्गा के किनारे स्थापित की गई थी। इस कारण उसका नाम प्रतिष्ठान था। पुरुरवा को गन्धर्वों से एक अग्नि पूर्ण स्थान मिला था। उसी अग्नि से पुरुरवा ने अनेक यज्ञ किये और यज्ञबल से गन्धर्वलोक में प्राप्त हुए।

पुरुष तत्० (पु०) पुमान्, नर, जीव, जीवात्मा। —कार (पु०) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य। —कुञ्जर (पु०) पुरुषश्रेष्ठ, यह शब्द भी पुङ्गव शब्द के समान है। जिन संज्ञा वाचक शब्दों के अन्त में यह शब्द आता है उनकी श्रेष्ठता बोधन करता है। यथा—नरकुञ्जर, क्षत्रियकुञ्जर। —त्व (पु०) पुरुषभाव, पुंसत्व, साहस, कृतित्व। —त्वहीन (पु०) पुंसत्व रहित, नपुंसक, हिजड़ा, खोजा। —सिंह (पु०) पुरुषसिंह, पुरुषश्रेष्ठ, उत्तम पुरुष।

पुरुषाधम तत्० (पु०) [पुरुष + अधम] निकृष्ट मनुष्य, नीच, पामर मनुष्य।

पुरुषार्थ तत्० (पु०) पुरुष का प्रयोजन, पुरुष का उद्देश्य—धर्म अर्थ काम और मोक्ष इनकी पुरुषार्थ संज्ञा है।

पुरुषोत्तम तत्० (पु०) नारायण, विष्णु, भगवान्, श्रीकृष्ण। वल्लभाचार्यजी के मत से गोलोक विहारी नित्य अनिर्वचनीय कृष्ण।

पुरुहूत तत्० (पु०) पुरन्दर, देवराज, इन्द्र।

पुरैन दे० (स्त्री०) कमलबेल, कमलदल.

पुरोचन तत्० (पु०) दुर्योधन का मित्र और सेवक दुर्योधन की आज्ञा से इसने वारणावत नगर में पाण्डवों का विनाश करने की इच्छा से लाक्षागृह बनाया था। विदुर के सङ्केत से पाण्डवों को पुरोचन की दुष्टता मालूम हो गई। भीमसेन ने पुरोचन के घर में और उनके रहने के लिये जो लाक्षागृह बना था उसमें आग लगा कर स्वयं निकल गये। पुरोचन परिवार के साथ वहीं जल गया।

पुरोडाश तत्० (पु०) यज्ञीय हवि विशेष, जव के आटे की बनी हुई एक प्रकार की रोटी, हवन का अवशेष।

पुरोधा तत्० (पु०) पुरोहित, ऋत्विक, याजक, यज्ञ कराने वाला।

पुरोवर्ती तत्० (पु०) अग्रसर, अग्रगामी।

पुरोहित तत्० (पु०) ऋत्विक्, पुरोधा, याजक, धर्म कर्म कराने वाला, ब्राह्मण, उपाध्याय।

पुरोहितानी दे० (स्त्री०) पुरोहित की स्त्री, पुरोहिती करने वाली स्त्री।

पुर्खा दे० (पु०) प्राचीन, पुरातन, बुड्ढा, वृद्ध।

पुर्चक दे० (पु०) छल, कपट, साहस, बढ़ावा, उत्साह।

पुर्वा दे० (स्त्री०) पूर्व की हवा।

पुर्वाई दे० (स्त्री०) पुर्वा, पूर्व की हवा।

पुर्वाना दे० (क्रि०) भरवाना, पूर्ण करना।

पुर्वैया दे० (स्त्री०) पुरवाई, पूर्व की हवा।

पुर्सा दे० (पु०) पुरुष का परिमाण, पुरुष के बराबर, चार हाथ का नाप।

पुल दे० (पु०) सेतु, बाँध, बन्ध।

पुलक तत्० (पु०) रोमाञ्च, रोमोद्भेद, शरीर के अन्तर और बाहर हर्षजन्य विकार, प्रस्तर विशेष, मणि का दोष विशेष, गन्धर्व विशेष, हरताल।

पुलकित तत्० (गु०) सजात पुलक, हर्षित, आह्लादित, रोमाञ्चयुक्त।

पुलस्ति तत्० (पु०) सप्तर्षियों के अन्तर्गत एक ऋषि, ब्रह्मा के मानस पुत्र।

पुलस्त्य तत्० (पु०) मुनि विशेष, सप्तर्षियों के अन्तर्गत ऋषि विशेष। पुलस्ति ऋषि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे, इनकी गणना प्रजापतियों में है। इनके पुत्र का नाम विश्रवा था।

पुलह तत्० (पु०) पुलस्त्य के समान ये भी ब्रह्मा के मानस पुत्र और सप्तर्षियों के अन्तर्गत हैं। इनकी स्त्री का नाम गति था, गति के गर्भ से कर्मश्रेष्ठ वरीमान् और सहिष्णु नामक तीन पुत्र पुलह के हुए थे। कोई पुलह की स्त्री का नाम क्षमा बतलाते हैं और उनके गर्भ से कर्दम अर्वरीश और सहिष्णु नामक तीन पुत्रों का होना मानते हैं।

पुलपुला दे० (गु०) गला हुआ, सड़ा हुआ, पिलपिला।

पुलपुलाना दे० (क्रि०) भीत होना, डरना, कपना।

पुलपुलाहट दे० (स्त्री०) भय, डर।

पुलहाना दे० (क्रि०) मनाना, खुश करना, प्रसन्न करना।

पुलाक तत्० (पु०) तुच्छ धान्य, शस्यहीन धान्य, अल्पता।

पुलाव दे० (पु०) माँसोदन, माँस के साथ बना हुआ भात।

पुलिन तत्० (पु०) तट, तीर, किनारा, जल से निकला हुआ भाग, द्वीप।

पुलिन्द तत्० (पु०) म्लेच्छ जाति विशेष, भील, शबर।

पुलिन्दा दे० (पु०) गठरी, गाँठ, पोटरी।

पुलोमजा तत्० (स्त्री०) इन्द्राणी, शची, इन्द्र की स्त्री का नाम, पुलोम नामक दानव की कन्या, जो इन्द्र को ब्याही गयी थी।

पुलोमा तत्० (स्त्री०) महर्षि भृगु की पत्नी और च्यवन की माता, दैत्यराज वैश्वानर की ये कन्या थी।

पुवाल दे० (पु०) पयाल, पराल, धान की डाँठी।

पुष्कर तत्० (पु०) हस्ति शुण्डाग्र, वाद्यभाण्ड मुख, आकाश, जल, पद्म, कमल, कुष्ठ रोग की ओषधि, काण्ड, शर, बाण, द्वीप विशेष, युद्ध, असिकोष, तलवार की म्यान, रोग विशेष, नाग विशेष, सारस पक्षी, वरुण पुत्र, पर्वत विशेष, तीर्थ विशेष जो अजमेर के पास है। एक राजा का नाम। निषध देश के राजा नल का छोटा भाई। इन्होंने कलि की सहायता से जूए में राजा नल को हरा कर उन्हें राज्यच्युत कर दिया था और स्वयं निषध देश के राजा बन गये थे। जब कलि ने नल को छोड़ दिया तब नल पुनः अपने राज्य के अधिकारी हुए थे।

पुष्करिणी तत्० (स्त्री०) सौधनु के परिमाण का चौकोना जलाधार, जलाशय, तालाब।

पुष्कल तत्० (पु०) ग्रास चतुष्टयात्मक भिक्षा। (गु०) अधिक, बहुत, ढेर, श्रेष्ठ, उत्तम।

पुष्ट तत्० (गु०) प्रतिपालित, मांसल, स्थूल, हृष्ट पुष्ट, मोटा ताज़ा।

पुष्टई दे० (स्त्री०) औषध विशेष, पुष्टकर औषधि।

पुष्टि तत्० (स्त्री०) मुटाई, पोषण, पालन, षोडश मातृकान्तर्गत देवता विशेष।—कर (पु०) बल वर्द्धक, पुष्टई।—दा (स्त्री०) अश्वगन्धा वृक्ष, पुष्टिदात्री, स्थौल्यकारिणी।

पुष्प तत्० (पु०) कुसुम, प्रसून, फूल, स्त्री का रज, विकाश, कुबेर का रथ, चक्षु रोग विशेष, फुल्ली रोग।—करण्डक (पु०) उज्जयिनी नगरी का एक भाग, जो शिव का बाग कहा जाता है।—चाप (पु०) कामदेव, मदन।—रस (पु०)

पुष्प का मधु, मकरन्द ।—रेणु (पु०) पराग, धूलि, पुष्परेणु ।—विमान (पु०) देवताओं का विमान, कुबेर का विमान ।

पुष्पदन्त तत्० (पु०) शिव का अनुचर विशेष, यह अनुचर एक समय शिव और पार्वती की बातें सुनता था, इससे पार्वती बहुत क्रुद्ध हुईं। उनके शाप से मर्त्यलोक में कौशाम्बी नगरी में एक ब्राह्मण के यहाँ पुष्पदन्त उत्पन्न हुए थे। इस ब्राह्मण का नाम सोमदत्त था। सोमदत्त ने अपने पुत्र का नाम कात्यायन वररुचि रखा था।

(२) एक प्रधान गन्धर्व, ये, पार्वती की सहचरी जया के स्वामी थे। इन पर किसी कारण से शिव जी क्रुद्ध हुए थे, जिससे इनकी आकाश में चलने की शक्ति नष्ट हो गयी, पुनः प्रार्थना करने पर शिवजी प्रसन्न हुए और गन्धर्व पुष्पदन्त की गयी शक्ति फिर मिल गयी। पुष्पदन्त के बनाये शिव स्तोत्र का नाम महिम्न स्तोत्र है।

(३) अष्ट दिग्गजों में का एक दिग्गज। उत्तर और पश्चिम दिशा के अधिपति वायु इस हाथी पर चढ़ कर उन दिशाओं की रक्षा करता है।

पुष्पाञ्जलि तत्० (स्त्री०) पुष्प पूर्ण अञ्जुलि।

पुष्पित तत्० (गु०) विकसित, प्रफुल्ल।

पुष्य तत्० (पु०) एक नक्षत्र का नाम, आठवाँ नक्षत्र।

पुस्तक तत्० (स्त्री०) ग्रन्थ, पोथी, (यह शब्द हिन्दी साहित्य में "पोथी" अथवा "किताब" का अर्थवाची होने के कारण स्त्रीलिङ्ग समझा जाता है।)

पुहुप दे० (पु०) पुष्प, कुसुम, प्रसून।

पुहमि दे० (स्त्री०) पृथिवी, पृथ्वी, धरती।

पूआ दे० (पु०) पक्वान्न विशेष।

पूंगी दे० (स्त्री०) वंशी, बांसुरी, मुरली।

पूंछ दे० (स्त्री०) पुच्छ, लाङ्गूल।

पूँछना दे० (क्रि०) पोंछना, झाड़ना, साफ करना, पूछना, प्रश्न करना, जिज्ञासा करना।

पूंछार दे० (गु०) बड़ी पूँछ वाला, अब्बुदार, पूँछ वाला।

पूंजी दे० (स्त्री०) मूल धन, सम्पत्ति।

पूग तत्० (पु०) वृन्द, समूह, राशि।

पूगना दे० (क्रि०) पहुँचना, पास जाना, प्राप्त होना।

पूगीफल तत्० (पु०) सुपारी, कसैली।

पूछ दे० (स्त्री०) आदर, सम्मान, अन्वेषण, प्रश्न।

पूछना दे० (क्रि०) जिज्ञासा करना, अनुसन्धान करना, टोह लगाना।

पूछी दे० (स्त्री०) मछलियों की पूँछ।

पूजक तत्० (पु०) पुजारी, देवलक, अर्चक, मन्दिरों में वेतन लेकर पूजा करने वाला।

पूजन तत्० (पु०) पूजा, अर्चन, आराधन।

पूजना दे० (क्रि०) अर्चन करना, आराधन करना, ध्यान करना।

पूजनीय तत्० (गु०) पूजनार्ह, पूजन के योग्य, पूजन करने के उपयुक्त।

पूजा तत्० (स्त्री०) अर्चा, आराधना, आदर, सम्मान।

पूज्य तत्० (गु०) पूजनीय, पूजने योग्य।

पूठ दे० (पु०) पुट्ठा, पशु के चूतड़ की हड्डी।

पूठा दे० (पु०) पुट्ठा, गत्ता, जिल्द।

पूड़ा दे० (पु०) पकौड़ी, बरा।

पूणी दे० (स्त्री०) रुई की पहल।

पूत दे० (पु०) पुत्र, सन्तान, बेटा, अपत्य।

पूतना तत्० (स्त्री०) दानवी विशेष, इसी दानवी को कंस ने कृष्ण को मारने के लिये गोकुल भेजा था। यह माया से सुन्दर मूर्ति बन कर नन्द के घर गयी, और कृष्ण को गोदी में लेकर विषलिप्त स्तन उनको पिलाने लगी, श्रीकृष्ण स्तनपान करने लगे; परन्तु श्रीकृष्ण के स्तनपान करने से दानवी के स्तनों में भयङ्कर पीड़ा होने लगी। उसने अपना भयङ्कर रूप प्रकट किया और श्रीकृष्ण से अपना स्तन छुड़ाने लगी; परन्तु छुटा नहीं वेदना बढ़ने लगी, दानवी भी घोर गर्जना करती हुई सदा के लिये सो गई। श्रीकृष्ण उसकी देह पर चढ़ कर खेलने लगे।

पूतनारि तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, पूतना का वध करने वाले।

पूतनासूदन तत्० (पु०) श्रीकृष्ण, नारायण।

पूतली तत्० (स्त्री०) गुड़िया, पुत्तलिका, कपड़े की बनी खेलने के लिये मूर्ति ।

पूतात्मा तत्० (पु०) [पूत+आत्मा] पवित्र स्वभाव, शुद्ध देह, निष्पाप शरीर, कलङ्करहित ।

पूति तत्० (स्त्री०) [पू+क्ति] पवित्रता, शुद्धि, स्वच्छता ।—**कर्णक** (पु०) कर्ण रोग विशेष, कान का पकना ।—**गन्ध** (पु०) दुर्गन्ध ।

पूती-कृत तत्० (गु०) पवित्रित, पवित्री-कृत, शोधित, शुद्ध किया हुआ, मज्जित, रचित, समवेत ।

पूदीना दे० (पु०) सुगन्धि साग विशेष ।

पूनशलाई दे० (स्त्री०) शलाका विशेष, जिससे पूनी बनाई जाती है ।

पूनिया दे० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, मास का अन्तिम दिन, जिस दिन महीना समाप्त होता है ।

पूनी दे० (स्त्री०) रुई का गाला ।

पूनो दे० (स्त्री०) पूनिया, पूर्णिमा, पूर्णमासी ।

पूप तत्० (पु०) पूआ, पिष्टक, पकवान विशेष ।

पूय तत्० (पु०) व्रण से निकला हुआ गाढ़ा सफेद बिगड़ा हुआ खून, दुर्गन्ध रक्त, पीव ।

पूर तत्० (पु०) जल समूह, जल प्रवाह, जल धारा, खाद्य विशेष ।

पूरक तत्० (गु०) पूरणकर्ता, समापक, समाप्ति करने वाला, प्राणायाम विशेष । बायीं नाक से श्वास खींचने का नाम पूरक है । गुणन करने का अङ्क, फल विशेष, बीज पूरक, बिजौरा नीबू ।

पूरण तत्० (पु०) [पूर+अनट्] पिष्ट विशेष, पूर्ण करना, भरना, पूरा करना, भर देना ।

पूरना दे० (क्रि०) बिनना, बुनन , बनाना ।

पूरणीय तत्० (गु०) पूर्ण करने के उपयुक्त, पूरा करने के योग्य ।

पूरब तद्भ० (पु०) पूर्व दिशा ।

पूरा दे० (स्त्री०) पूरण, पूर्ण, भरा पूरा, सब, समस्त, सम्पूर्ण ।

पूराई दे० (स्त्री०) बोझाई, भराई, पूर्णता ।

पूरिया दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

पूरी दे० (स्त्री०) लुचई, सोहारी, पकवान विशेष ।

पूर्ण तत्० (गु०) भरा, पूरा, सम्पन्न, शेष ।—**कुम्भ** (पु०) जल पूरित घट, मङ्गल घट, पूर्ण कलश ।—**ज्या** (स्त्री०) सोधारोदा, सीधी रेखा ।—**ता** (स्त्री०) पूर्ति, पूरत्व, भरण ।—**पात्र** (पु०) वस्तु पूर्ण पात्र, हवन के समय चावल आदि से भर कर दान किया जाने वाला पात्र । पात्र विशेष, जिसमें २५६ मुट्ठी चावल भरा जाता है ।—**भूत** (पु०) काल विशेष, पहले का समय, बीता समय । जो समय स्वयं देखा गया हो, परन्तु उसे बीते बहुत दिन हो गये हों वह पूर्णभूत कहा जाता है ।—**मासी** (स्त्री०) पूर्णिमा, शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि ।

पूर्णा तत्० (स्त्री०) पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या इनकी पूर्ण संज्ञा है ।

पूर्णावतार तत्० (पु०) भगवान् का अवतार विशेष, भगवान् की षोडश कलाओं का प्रकाश । श्रीकृष्ण भगवान् ।

पूर्णाहुति तत्० (स्त्री०) [पूर्ण+आहुति] हवन पूर्ण करने की आहुति, अन्तिम आहुति ।

पूर्णिमा तत्० (स्त्री०) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि, जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है ।

पूर्त तत्० (पु०) खातादि कर्म, परोपकारार्थ तालाब कुआँ आदि खुदवाना ।

पूर्ति तत्० (स्त्री०) पूरण, भरण, पालन, पूर्णता, समाप्ति ।

पूर्व तत्० (पु०) पूरब दिशा, प्राची दिशा । (गु०) पहले का, आदि का, आद्य, प्राथमिक ।—**गङ्गा** (स्त्री०) नदी विशेष, नर्मदा विशेष ।—**ज** (पु०) ज्येष्ठ भ्राता, अग्रज ।—**दिन** (पु०) गत दिवस, गया कल का दिन ।—**देश** (पु०) प्राची दिशा के देश, मध्य देश ।—**पक्ष** (पु०) शुक्ल पक्ष, शास्त्र का प्रश्न, सिद्धान्त का विरुद्ध पक्ष ।—**पुरुष** (पु०) पिता पितामह आदि ।—**याम** (पु०) प्रथम प्रहर, पहला पहर ।—**वत्** (अ०) पहले के समान ।—**वर्ती** (गु०) आगे वाला, अग्रसर ।—**वायु** (पु०) पूर्व का पवन, पुरवैया ।—**लिखित** (गु०) पहले का लिखा हुआ ।—**राग** (पु०) नायक और

नायिका की अवस्था विशेष । दर्शन श्रवण जन्य परस्पर अनुराग ।

"जो प्रथमहिं देखे सुने, बाढ़ै प्रेम सभाग ।
बिन मिलाप जो विकलता सो है पूरब राग ॥"
—रसराज।

[पू]र्वा तत्० (स्त्री०) पूर्व दिक्, प्राची दिक्, प्रथम । (गु०) पूर्वज, प्रथम जात, पूर्वपुरुष । (दे०) गाँव, पुरवा, टोला ।—ऽभिमुख (पु०) पूर्व मुख, पूरब के सामने ।—ऽभ्यास (पु०) पहले का अभ्यास, आगे की बात ।—ऽवधि (गु०) पूर्व कालावधि, चिरकाल पर्यन्त ।—ऽवस्था (स्त्री०) पहले की अवस्था, प्रथम अवस्था ।—ऽषाढ़ा (स्त्री०) सत्ताईस नक्षत्रों के अन्तर्गत बीसवाँ नक्षत्र ।—ऽह्न (पु०) दिन के भाग का पहला भाग, दिन का पहला याम ।

[पू]र्वी दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष ।

[पू]र्वोक्त तत्० (गु०) [पूर्व + उक्त] प्रथम कथित, पहले कहा हुआ ।

[पू]ला दे० (पु०) घास की घंटिया, घास की गड्डी ।

[पू]ष दे० (पु०) पौष मास, पूस, अनुमांस ।

[पू]षण तत्० (पु०) सूर्य, रवि ।

[पू]षा तत्० (स्त्री०) पूजन, चन्द्रकला विशेष, शरीरस्थ वायु विशेष, जो दक्षिण कान से निकलता है । (पु०) सूर्य, रवि, भास्कर ।

पृच्छक तत्० (पु०) प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु, पूछने वाला ।

पृच्छा तत्० (स्त्री०) जिज्ञासा, प्रश्न, पूर्वपक्ष ।

पृतना तत्० (स्त्री०) सैन्य, सेना, कटक, विशेष संख्यायुक्त सेना ।

पृथक् तत्० (अ०) भिन्न, अन्य, विच्छेद, न्यारा । —करण (पु०) अलग करना, भिन्न करना, बाँटना, विभक्त करना ।—क्षेत्र (पु०) एक से अनेक वर्ण की स्त्रियों में उत्पन्न पुत्र ।

पृथगात्मता तत्० (स्त्री०) विवेक, वैराग्य ।

पृथाजन तत्० (पु०) साधारण मनुष्य, मूर्ख, नीच, पापी, प्राकृत ।

पृथाविध तत्० (अ०) नाना प्रकार, अनेक विध, विविध, बहुरूप ।

पृथवी दे० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरती ।

पृथा तत्० (स्त्री०) कुन्ती, पाण्डवों की माता ।

पृथिवी तत्० (स्त्री०) भूमि, धरिणी ।—पति (पु०) भूपति, राजा, यम, वराह, ऋषभ नामक ओषधि । —पाल (पु०) राजा, भूपति, भूमीश्वर । —पालक (पु०) राजा, भूपति, दण्डधर ।

पृथु तत्० (गु०) महत्, निपुण, विशाल । (पु०) त्रेतायुग के मनुवंशी पाँचवें राजा, आदि राजा । ये वेणु राजा के पुत्र थे । इन्होंने अपने बाहुबल से पृथिवी के समस्त राजाओं को जीत लिया था । इन्होंने पृथिवी को बराबर-समतल कर दिया था, इस कारण इनका नाम पृथु पड़ा था । इनके राजसूय यज्ञ में आकर महर्षियों ने इनका राज्याभिषेक किया था । इनके शासनकाल में बिना जोते ही भूमि से अन्न उत्पन्न होता था । महाराज पृथु ने अनेक यज्ञ किये थे, और समस्त प्राणियों को अभिलषित द्रव्य प्रदान करके सन्तुष्ट किया था । इन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने के समय पृथिवी की समस्त वस्तुओं की सोने की प्रतिमा बनवा कर ब्राह्मणों को दिया था । उन्होंने ६६ हज़ार सुवर्ण छत्र और मणिरत्न भूषित सुवर्णमय पृथिवी बनवा कर ब्राह्मणों को दान दी थी । इनकी उत्पत्ति इस प्रकार है । अत्रिवंशी अङ्ग नामक प्रजापति ने धर्मराज की कन्या सुनिथा के गर्भ से वेणु नामक एक पुत्र उत्पन्न किया था । वेणु महादुराचारी और कुमार्गी राजा था । उसकी समझ से संसार में उसके अतिरिक्त और कोई पूजा के योग्य न था, अतएव उसने याग यज्ञ आदि करना बन्द करा दिया । वेणु के अत्याचार से प्रजा दुःखित होगयी, तब मरीचि आदि ऋषियों ने वेणु को चितावनी दी, परन्तु उसने इन बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, तब महर्षियों का क्रोध और बढ़ गया, उन्होंने वेणु का निग्रह करना ठान लिया । महर्षि मिल कर वेणु के उरु को मथने लगे, मथने से एक काला मनुष्य उत्पन्न हुआ । जो निषाद जाति

का आदि पुरुष है। पुनः ऋषियों ने वेणु का दहिना हाथ मथना प्रारम्भ किया, उससे पृथु की उत्पत्ति हुई।

पृथुक तत्० (पु०) [पृथु+क] चिउड़ा। (पु०) बालक, शिशु, कुमार।

पृथुरोमा तत्० (पु०) [पृथु+रोमन्] मछली, मत्स्य, मीन। (गु०) वृहल्लोमयुक्त, रोयेंदार।

पृथुल तत्० (गु०) महत्, बड़ा, अति विस्तृत।

पृथुशिखा तत्० (पु०) पत्र विशेष, स्यौना वृक्ष।

पृथूदक तत्० (पु०) [पृथु+उदक] तीर्थ विशेष।

पृथूदर तत्० (पु०) [पृथु+उदर] मेष, मेंढ़। (गु०) वृहत् उदर युक्त, बड़ा पेट वाला।

पृथ्वी तत्० (स्त्री०) पृथिवी, धरणी धरित्री।—**पति** (पु०) राजा, नरपति।—**पाल** (पु०) राजा, भूपति।

पृथ्वीका तत्० (स्त्री०) बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कृष्ण जीरक, कलौंजी।

पृथ्वीराज तत्० (पु०) भारत का अन्तिम हिन्दू राजा। सन् ११९३ ई० में महम्मद ग़ोरी पृथ्वीराज को जीत कर और क़ैद कर ग़ज़नी ले गया। वहाँ ले जाकर उसने पृथ्वीराज की आँखें फोड़ डालीं। अन्त में चन्द कवि के कौशल से महाराज पृथ्वीराज ने महम्मद ग़ोरी का वध किया और स्वयं उन्होंने आत्महत्या कर ली। (देखो जयचन्द)

पृषत् तत्० (पु०) बिन्दु, कण, श्वेत बिन्दु युक्त मृग, राजा विशेष।

पृषत्क तत्० (पु०) बाण, शर।

पृषदश्व तत्० (पु०) [पृषत्+अश्व] वायु, पवन, बतास, राजा विशेष।

पृषोदर तत्० (गु०) [पृष+उदर] अल्पोदर, छोटे पेट वाला।

पृष्ठ तत्० (पु०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ।—**ग्रन्थि** (पु०) कुब्ज, कूबड़।—**तः** (अ०) पश्चात्, पृष्ठ देश, पीठ की ओर।—**वंश** (पु०) पृष्ठास्थि, पीठ की हड्डी, मेरुदण्ड।—**व्रण** (पु०) पृष्ठ देश में स्फोटक विशेष, पिरकी।

पृष्ठास्थि तत्० (स्त्री०) [पृष्ठ+अस्थि] पीठ की हड्डी।

पेई दे० (स्त्री०) पिटारी, मञ्जूषा, पेटी।

पेंग दे० (स्त्री०) झूला का हिलाना, पक्षि विशेष।

पेंठ दे० (स्त्री०) हाट, बज़ार, मण्डी।

पेंदा दे० (पु०) तला, पेंदी, नीचे का भाग, अधो भाग।

पेखना दे० (क्रि०) प्रेक्षण, देखना, निरखना, दर्शन करना। स्वाँग बनाना, खेल करना, क्रीड़ा करना।

पेखनिया दे० (पु०) स्वाँग रचने वाला, बहुरूपिया, देखने वाला, दर्शक।

पेखवैया दे० (पु०) देखने वाला, देखवैया, प्रेक्षक।

पेखित दे० (गु०) प्रेषित, भेजा हुआ।

पेच दे० (पु०) घुमाव, मरोर, कील विशेष, काँटा।

पेचक तत्० उलूक, उल्लू।

पेचा दे० (पु०) उल्लू।

पेट दे० (पु०) उदर, जठर।—**आना** (वा०) पेट चलना, दस्त आना, अधिक काड़े फिरना, दस्त की बीमारी।—**को दुख देना** (वा०) भूखों मरना, पेट भर अन्न न खाना।—**का पानी न हिलना** (वा०) किसी बात को छिपाना, प्रकाश करने का समय आने पर भी प्रकाशित नहीं करना, हिलना, खुलना नहीं, स्थिर रहना।—**की आग** (वा०) क्षुधा, भूख की पीड़ा, सन्तान का दुःख।—**की आग बुझाना** (वा०) खाना, भोजन करना।—**की बातें** (वा०) गुप्त बातें, छिपी बातें।—**गड़बड़ाना** (वा०) पेट में दर्द होना, पेट की पीड़ा।—**गिरना** (वा०) गर्भपात होना, गर्भ का गिर जाना, गर्भ नष्ट होना।—**जलना** (वा०) भूखा रहना, क्षुधित होना।—**दिखाना** (वा०) अपनी अवस्था जनाना, दरिद्रता प्रकाशित करना।—**पालना** (वा०) किसी प्रकार निर्वाह करना, स्वार्थ साधना, दुःख से दिन बिताना।—**पीठ एक होना** (वा०) दुर्बल होना, निर्बल होना।—**पोंछन** (वा०) सब में छोटा लड़का, अन्तिम गर्भ की सन्तान।—**पोसू** (गु०) पेटार्थु, पेटू,

खाऊ, पेट पालने वाला ।—फूलना (वा०) बहुत हँसना, हँसते हँसते पेट में बल पड़ जाना ।—पड़ाना (वा०) लोभ करना, दूसरे का धन पचाना ।—बाँधना (वा०) कम खाना ।—भर (वा०) जी भर, इच्छा भर ।—भरना (वा०) अघाना, तृप्त होना, सुख करना, तृप्त करना, सुख देना ।—मारना (वा०) आत्मघात करना, स्वयं मार कर मर जाना, आत्महत्या करना ।—में पैठना (वा०) अन्तरङ्ग बनना, अत्यन्त मित्र बनना, भेद लेना, भीतर की बातें जानना ।—में लेना (वा०) सहना, झेलना ।—रहना (वा०) गर्भ रहना, गर्भवती होना ।—लग जाना (वा०) भूखों मरना, भूखे रहना, पेट भर अन्न न मिलना । —लग रहना (वा०) क्षुधित होना, भूखे रहना । से होना (वा०) गर्भिणी होना, पेट रहना, गर्भ रहना ।—हड़बड़ाना (वा०) पेट की बीमारी होना ।

पेटा दे० (पु०) टोकरा, पिटारी, पिटारा ।

पेटारा दे० (पु०) पिटारा, टोकरी ।

पेटार्थी, पेटार्थू दे० (गु०) खाऊ, पेटू ।

पेटिया दे० (पु०) प्रति दिन का भोजन, सीधा, एक मनुष्य खाने के योग्य सीधा ।

पेटी दे० (स्त्री०) कमरबन्द, कमरकस, पेट का बन्धन, पिटारी, सन्दूक़, छोटा पिटारा ।

पेटू दे० (गु०) पेटार्थी ।

पेटौका दे० (पु०) रोग विशेष, अतिसार, आँव गिरना, हिकहिकाना, व्याकुलता, उद्वेग, उद्विग्नता ।

पेठा दे० (पु०) कौंहड़ा, कुष्माण्ड ।

पेड़ दे० (पु०) वृक्ष, रूख, तरु, द्रुम ।

पेड़ा दे० (पु०) मिठाई विशेष, एक मिठाई का नाम ।

पेड़ी दे० (स्त्री०) छोटा पेड़ा, सुपारी, नीम आदि की कटी हुई डाँठी ।

पेड़ू दे० (पु०) नाभी के नीचे का भाग ।

पेम तद्भ० (पु०) प्रेम, स्नेह, प्रीति ।

पेमी तद्भ० (गु०) प्रेमी, प्रीतिपात्र, प्रिय ।

पेय तद्भ० (गु०) पान योग्य, पान करने के उपयुक्त ।

पेरू दे० (पु०) पक्षि विशेष, विलायती मुर्ग़ी ।

पेलना दे० (क्रि०) ठेलना, ठूसना, ठौंसना, घुसेड़ना । तेल निकालना ।

पेल्म दे० (पु०) अपराध, दोष ।

पेलू दे० (गु०) ढकेलू, घुसेड़ू ।

पेवड़ी दे० (स्त्री०) पीला रङ्ग, पियङ्ग ।

पेवसी दे० (स्त्री०) पीयूष, अमृत, सुधा, खाद्य विशेष, जो फटे दूध से बनता है, हाल की ब्याही गौ का पहला दूध ।

पेशाब दे० (पु०) मूत्र, मूत, प्रस्राव ।

पेशी तत्स० (स्त्री०) खण्ड, माँसपेशी, सुपक्वकलिका, नदी विशेष, पिशाची विशेष, राक्षसी विशेष, असिकोष, म्यान ।

पेषक तत्स० (पु०) मर्द्दनकारी, पीसने वाला ।

पेषण तत्स० (पु०) [पिष् + अनट्] मर्दन, पीसना, चूर्ण करना, बाँटना ।

पेषणी तत्स० (स्त्री०) पेषण यन्त्र, शिलापट, सिल ।

पेषणीय तत्स० (गु०) पेषण योग्य, पीसने योग्य ।

पै दे० (अ०) पर, परन्तु ।

पैंचना दे० (क्रि०) पछोड़ना, फटकना, बनाना ।

पैंचा दे० (पु०) उधार, बदला, पलटा ।

पैंजनी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, पैर का गहना, एक आभूषण जिसे लड़के पहनते हैं ।

पैंड दे० (स्त्री०) फाल, डेग, चलने के समय दोनों पैर के बीच की भूमि ।

पैंड़ा दे० (पु०) मार्ग, बाट, गैल ।

पैंताना दे० (क्रि०) पैर की ओर, पदतल, पायतन ।

पैंतालीस दे० (गु०) संख्या विशेष, चालीस और पाँच, ४५ पाँच अधिक चालीस ।

पैंतीस दे० (गु०) संख्या विशेष, तीस और पाँच, ३५ ।

पैंसठ दे० (गु०) संख्या विशेष, साठ और पाँच, ६५ ।

पैकड़ा दे० (पु०) बेड़ी, साँकर, रिकाब ।

पैकी दे० (स्त्री०) इक्के का भाड़ा दिवैया ।

पैगू दे० (पु०) ब्रह्मदेश का प्रान्त विशेष ।

पैज दे० (पु०) प्रण, प्रतिज्ञा, होड़ ।

पैठ दे० (स्त्री०) हुण्डी का खोखा, पहुँच, हुण्डी की प्रतिलिपि, हुण्डी के खोने पर जो लिखी जाती है। पहुँच प्रवेश।

पैठना दे० (क्रि०) प्रवेश करना, घुसना, भीतर जाना।

पैठालना दे० (क्रि०) प्रवेश कराना, घुसाना, पैसार कराना।

पैड़ दे० (पु०) पदाङ्क, पदचिन्ह, पैरों का चिन्ह।

पैड़ा दे० (पु०) ऊँची खड़ाऊँ, जो बरसात के दिनों में काम में लायी जाती हैं।

पैड़ी दे० (स्त्री०) सीढ़ी, सोपान, निसेनी।

पैतरा दे० (पु०) चलने की रीति, गति विशेष, कुश्ती या लकड़ी खेलने के समय की चाल।

पैतला दे० (गु०) उथला, छिछला, उथलान।

पैतृक तत्० (गु०) पितृधन, पिता का धन, बपौती, मारूसी।

पैदल दे० (पु०) पैरों से चलने वाला, पदाति, सिपाही।

पैन दे० (पु०) छोटी नहर, नाली, खेतों में पानी ले जाने के लिये छोटी नहर।

पैना दे० (पु०) निशित, तीक्ष्ण, तेज, अङ्कुश आँकुश।

पैनाना दे० (क्रि०) तीक्ष्ण करना, तेज कराना, धार दिलवाना।

पैनाला दे० (पु०) पनारा, मोरी।

पैया दे० (पु०) पहिया, चक्र, निस्सार धान्य।

पैयान तत्० (पु०) प्रस्थान प्रस्थिति, बिदा, यात्रा।

पैर दे० (पु०) पाँव पद, चरण।

पैरना दे० (क्रि०) तैरना, तिरना, तरण करना।

पैराई दे० (स्त्री०) पैरना, पैरने की रीति।

पैराक दे० (पु०) पैरने वाला, अच्छी तरह पैरना जानने वाला।

पैराव दे० (पु०) पैरने के योग्य जल, अधिक जल, डुबाव।

पैरी दे० (स्त्री०) पाँव का एक प्रकार का गहना।

पैला दे० (पु०) काठ का पात्र विशेष, जिससे अन्न आदि मापा जाता है। मापपात्र।

पैशाच तत्० (पु०) आठ प्रकार के विवाह के अन्तर्गत एक विवाह। (गु०) पिशाच सम्बन्धी पिशाच का।

पैशून्य तत्० (पु०) पिशुनता, खलता, परनिन्दा, पर का अहित चिन्तन।

पैसा दे० (पु०) ताँबे का सिक्का, डेबुआ, धन, द्रव्य, रोकड़, सम्पदा।—उड़ाना (वा०) बहुत धन खर्च करना, अधिक व्यय करना, चुराना हरना। —खाना (वा०) विश्वासघात करके खा जाना —डुबोना (वा०) धन गँवाना, धन बरबाद करना।—डूबना (वा०) धन का मारा जाना, धन का नाश होना।

पैसे लगाना दे० (वा०) धन लगाना, धन खर्च करना।

पैसेवाला दे० (गु०) धनवान, धनी।

पैसो से दरबार बाँधना दे० (वा०) घूँस देकर किसी दरबार में प्रवेश करना, घूँस देना।

पैसार दे० (पु०) प्रवेश, पैठ।

पैहै दे० (क्रि०) पावेगा, प्राप्त करेगा।

पोआ दे० (पु०) साँप का बच्चा, दूध पीने वाला बच्चा, छोटा लड़का।

पोआना दे० (क्रि०) पकाना, तपाना, रोटी [illegible] करके देना।

पोईस दे० (अ०) अलग हो, दूर, यह शब्द नीच जातियों को सावधान करने के लिये—जिससे वे छुएँ नहीं बोला जाता है। अथवा वे ही बोलते जाते हैं जिससे लोग हट जाँय।

पोकना दे० (क्रि०) छेरना, दस्त होना।

पोका दे० (पु०) कीट, कृमि।

पोगा दे० (पु०) पर्व, पोला पोर। (गु०) छूँछा, शून्य।

पोगी दे० (स्त्री०) नली, छूँछी, खोखली, पूर्णी भी।

पोछन दे० (पु०) झाड़न साफ करण।

पोछना दे० (क्रि०) झाड़ना, साफ करना, स्वच्छ करना।

पोटा दे० (पु०) नासिका मल, नेटा, श्लिनक।

पोखर दे० (पु०) तालाब, सरोवर, तड़ाग ।
पोट दे० (पु०) गाँठ, गठरी, भेंट ।
पोटला दे० (पु०) बड़ी गठरी, गट्ठर, गट्ठा ।
पोटली दे० (स्त्री०) गठरी, शक्कर विशेष ।
पोटा दे० (पु०) गँदा, पलक, पत्ती का भोंक ।
पोढ़ा दे० (गु०) पुष्ट, बलवान्, प्रौढ़, साहसी, उत्साही ।
पोढ़ाई दे० (स्त्री०) कड़ाई, पुष्टता, बलवत्ता ।
पोत तत्० (पु०) शिशु, शावक, वत्स, बच्चा, तरणी, नौका, समुद्रयान, जहाज़, दस वर्ष का हाथी ।
पोतक तत्० (पु०) बालक, बच्चा ।
पोतड़ा दे० (पु०) बच्चे का बिछौना ।
पोतड़ी दे० (स्त्री०) फेरी, भिल्ली, हल ।
पोतना दे० (क्रि०) लीपना, मिट्टी या चूने से दीवाल पोतना । (पु०) पोतने का वस्त्र या कूँची, जिससे पोतते हैं, पोता ।
पोता दे० (पु०) पौत्र, पुत्र का पुत्र, पुत्र का लड़का, पुतला ।
पोती दे० (स्त्री०) पुत्र की कन्या, पौत्री, बेटे की कन्या ।
पोथा दे० (पु०) बड़ी पोथी, ग्रन्थ ।
पोथी दे० (स्त्री०) ग्रन्थ, पुस्तक ।
पोदना दे० (पु०) पक्षि विशेष ।
पोना दे० (क्रि०) गूंथना, गाँथना, गूहना, पिरोना ।
पोपनी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष, एक बाजा का नाम ।
पोपला दे० (गु०) अदांत, दन्तरहित, बिन दांत का ।
पोमचा दे० (पु०) रङ्गीन वस्त्र, एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा ।
पोय दे० (स्त्री०) लता विशेष जो बरसात में उत्पन्न होती है, शाक विशेष ।
पोर दे० (पु०) गाँठ, ग्रन्थि, बाँस की गाँठ, दो गाँठों के बीच का भाग ।
पोरी दे० (स्त्री०) छोटी गाँठ ।
पोला दे० (गु०) छूछा, शून्य, रीता, रिक्त, खाली, नरम, कोमल ।
पोली दे० (स्त्री०) अनारी, अनाड़ी, मूर्ख, अज्ञानी ।
पोषक तत्० (पु०) [पुष्+णक्] पालक, पालनकर्ता, भरणकारी, सहायता देने वाला ।
पोषण तत्० (पु०) [पुष्+अनट्] प्रतिपालन, रक्षण, भरण ।
पोषणीय तत्० (गु०) पोष्य, पोसने योग्य, पोषण करने के उपयुक्त ।
पोषयित्नु तत्० (पु०) कोकिल, भर्ता, पति, स्वामी ।
पोष्टा तत्० (पु०) पोषक, पालयिता, पालन करने वाला ।
पोष्य तत्० (गु०) पाल्य, पोषणीय, पालन करने योग्य ।—पुत्र (पु०) दत्तक पुत्र, पालन पोषण के द्वारा बनाया हुआ पुत्र ।—वर्ग (पु०) अवश्य पालनीय, वृद्ध पिता माता आदि । परिजन वर्ग ।
पोसना दे० (क्रि०) पालना, पोषण करना, रक्षा करना ।
पोस्ता दे० (पु०) अफ़ीम का वृक्ष, दाने का पेड़ ।
पोह दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, तड़का, विहान, सबेरा ।
पोहना दे० (क्रि०) रोटी बनाना, गूँधना ।
पौ दे० (स्त्री०) जल सत्र, चौपड़ के पासे का एक्का ।
पौगण्ड तत्० (पु०) अवस्था विशेष, पाँच वर्ष से सोलह वर्ष की अवस्था तक ।
पौड़ा दे० (पु०) ईख विशेष, ऊख, पौंड़ा ।
पौढ़ना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना, लेटना ।
पौण्डरीक दे० (गु०) पुण्डरीक सम्बन्धी, कमल का ।
पौण्ड्र तत्० (पु०) देश विशेष, बन्देल देश, भीमसेन के शङ्ख का नाम, ईख विशेष, पौंड़ा, ऊख ।
पौण्ड्रक तत्० (पु०) जाति विशेष, इक्षु विशेष । पुण्ड्र देश का एक राजा, पौण्ड्रक वासुदेव नाम से इनकी प्रसिद्धि है । जरासन्ध के ये बड़े मित्र थे । इनके पिता का नाम वसुदेव था । वसुदेव की दो स्त्रियाँ थीं, सुतनु और नाराची, सुतनु के गर्भ से पौण्ड्रक और नाराची के गर्भ से कपिल उत्पन्न हुए थे, कपिल संसारत्यागी होकर योगी हो गये । अपना वासुदेव नाम रख कर पौण्ड्रक राज्य करते थे । वासुदेव श्रीकृष्ण द्वारिका ही से इनकी ढिठाई सुना करते थे । श्रीकृष्ण का वासुदेव कहा जाना पौण्ड्रक से सहा नहीं जाता था । पौण्ड्रक

कहा करता था मैं शङ्खचक्र गदाधारी हूँ, मेरे पास भी शार्ङ्गधनु और शर तथा तूणीर हैं। मेरे जैसी क्षमता किस में है, इसी प्रकार यह अपनी उद्दण्डता प्रकाशित किया करता था। यह और भी कहता था कि वासुदेव इस नाम को ग्वाल के छोकरे ने ले लिया है। श्रीकृष्ण को सुधारने के लिये उसने द्वारिका पर आक्रमण किया था। अनेक यादव इसकी सेना के द्वारा मारे गये। अन्त में श्रीकृष्ण और पौण्ड्रक के साथ युद्ध हुआ, अब पौण्ड्रक को असली वासुदेव का पता लग गया, इसी युद्ध में वह मारा गया।

पौत्तलिक दे० (गु०) अन्धविश्वासी, अहेतुक सिद्धान्त को मानने वाला, बिना विचारे किसी मनुष्य की बातों पर विश्वास करने वाला।

पौत्र तद्० (पु०) पोता, पुत्र का पुत्र।

पौत्री तद्० (स्त्री०) पोती, पुत्र की कन्या।

पौधा दे० (पु०) वृक्ष का अंकुर, छोटा वृक्ष।

पौन दे० (स्त्री०) तीन चौथाई, चार भाग का तीन हिस्सा।

पौना दे० (पु०) भरना, लोहे का एक बर्तन जिससे सेव तथा पकौड़ी आदि छानी जाती हैं।

पौने दे० (गु०) एक चौथाई कम।

पौर तद्० (गु०) नगर सम्बन्धी, द्वार, किवाड़, फाटक।

पौरव तद्० (पु०) पुरु वंशज राजा विशेष, दुष्यन्त।

पौरस्त्य तद्० (गु०) प्रथम, आद्य, पूर्व का, पूर्वीय, पूर्व दिशा सम्बन्धी।

पौराणिक तद्० (पु०) पुराण शास्त्रवेत्ता, पुराण मतावलम्बी।

पौरिया दे० (पु०) द्वारपाल, द्वारपालक, डेवढ़ीदार, दरवान।

पौरी दे० (स्त्री०) पौर, डेवढ़ी, द्वार।

पौरुष तद्० (पु०) पुरुषत्व, पुरुष का कर्म, पुरुष की शक्ति, पुरुष का परिमाण।

पौरुषेय तद्० (गु०) पुरुष निर्मित, पुरुष का बनाया हुआ।

पौरोहित्य तद्० (पु०) पुरोहित का कर्म।

पौर्णमासी तद्० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूर्णिमा की अधिष्ठात्री देवी।

पौर्वाह्णिक तद्० (गु०) पूर्वाह्ण की क्रिया, पूर्वाह्ण सम्बन्धी।

पौलस्त्य तद्० (पु०) कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण।

पौलिया दे० (स्त्री०) पौरिया, छोटी लड़ाई।

पौली दे० (स्त्री०) पौरी, लड़ाई।

पौलोमी तद्० (स्त्री०) पुलोमजा, पुलोम नामक दानव की कन्या, इन्द्राणी, शची।

पौवा दे० (पु०) चौथा भाग, पाव भर।

पौष तद्० (पु०) पूष, चैत्रादि द्वादश महीने के अन्तर्गत दशम मास।

पौष्टिक तद्० (पु०) पुष्टि वर्द्धक कर्म।

पौसरा दे० (पु०) पौ, प्याऊ, प्रपा, पानी पिलाने का स्थान।

पौह दे० (पु०) जलशाला, जल सत्र।

प्याना दे० (क्रि०) पिलाना, पान कराना।

प्यार दे० (पु०) प्रेमी, प्रीति, स्नेह।

प्यारा दे० (गु०) प्रेमी, प्रिय, स्नेही, प्रियतम। —जानना (वा०) आदर करना, सम्मान करना, श्रेष्ठ जानना।

प्यारी दे० (स्त्री०) प्रिया, पियारी, प्रियतमा।

प्यावना दे० (क्रि०) प्याना, पिलाना, पान कराना।

प्यास दे० (स्त्री०) तृषा, पिपासा, तृष्णा। —बुझाना (वा०) पानी पीना, प्यास दूर करने के लिये जैसा पानी पी लेना। —लगना (वा०) पिपासा लगना, तृषा मालूम होना।

प्यासा तद्० (गु०) पिपासित, तृष्णावन्त, तृष्णान्वित।

प्यासे मरना दे० (वा०) अधिक प्यास लगना, पिपासित होना।

प्र तद्० (उपसर्ग) आरम्भ, उत्कर्ष, सर्वतोभाव, प्राधान्य, आद्य, व्याप्ति, उत्पत्ति, व्यवहार।

कट तत्० (गु०) [प्र + कट + अच्] स्पष्ट, प्रकटित, प्रकाशित, व्यक्त।

कटन तत्० (पु०) [प्र + कट + अनट्] प्रकाशन, व्यक्तीकरण, प्रकाश करना, व्यक्त करना।

कटित तत्० (गु०) प्रकाशित, व्यक्त, स्पष्ट।

कम्प तत्० (पु०) कौपन, कँपकँपाहट, थरथरी।

कम्पन तत्० (पु०) वायु, नरक विशेष।

कर तत्० (पु०) फैले हुए कुसुम आदि, समूह, दल, गिरोह।

करण तत्० (पु०) [प्र + कृ + अनट्] प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक भेद, ग्रन्थ सन्धि, ग्रन्थ विच्छेद, निरूपणीय एक विषय की समाप्ति। एकार्थप्रतिपादक सूत्रों का समूह, प्रसङ्ग, काण्ड, अध्याय।

करी तत्० (स्त्री०) नाट्याङ्ग अवसर भूमि, नाटक खेलने की वेदी।

कर्ष तत्० (पु०) [प्र + कृष् + घञ्] उत्तमता, उत्कर्ष, श्रेष्ठता, प्रशस्त।

काण्ड तत्० (गु०) वृहत्, अतिशय, विशाल। (पु०) वृक्ष स्कन्ध, वृक्ष का वह स्थान जहाँ से शाखा निकलती हैं।

काम तत्० (गु०) [प्र + काम + घञ्] यथेच्छित, यथेष्ट, इच्छा पूर्वक, इच्छापूर्ति, मनमाना, मन भर, पूर्ण।

कार तत्० (पु०) [प्र + कृ + घञ्] भेद, सादृश, विशेष, रीति, ढङ्ग, रीति भाँति।

कारान्तर तत्० (गु०) [प्रकार + अन्तर] अन्य विध, अन्य प्रकार, दूसरी रीति।

काश तत्० (पु०) [प्र + काश् + अच्] व्यक्त, विकाश, उदय, दीप्ति, प्रकट, स्पष्ट, प्रसिद्धि, ख्याति, उज्ज्वल, चमकीला, दीप्तिमान।

काशक तत्० (पु०) प्रकाशकर्ता, दीप्तिकारक, प्रकाश करने वाला, उजाला करने वाला।

काशन तत्० (पु०) [प्र + काश् + अनट्] प्रचार करण, व्यक्तकरण, फैलाना, व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना।

प्रकाशित तत्० (गु०) [प्र + काश् + क्त] प्रकाश, विशिष्ट, आविष्कृत, प्रकटित, उदित, व्यक्तीभूत, प्रसिद्ध, उदित।

प्रकाश्य तत्० (गु०) प्रकाशनीय, प्रकटनीय, प्रकाश करने योग्य, प्रकाश करने के उपयुक्त।

प्रकीर्ण तत्० (गु०) [प्र + कृ + क्त] विक्षिप्त, विस्तृत, अनेक प्रकार से मिश्रित। (पु०) ग्रन्थविच्छेद, अध्याय, काण्ड, चामर।

प्रकीर्तन तत्० (पु०) [प्र + कृत् + अनट्] प्रस्तावन, वर्णन, कथन।

प्रकीर्तित तत्० (गु०) कथित, भाषित, उक्त, व्याहृत, वर्णित, निरूपित।

प्रकुपित तत्० (गु०) क्रोधान्वित, क्रोधित, क्रोध युक्त, क्रुद्ध।

प्रकृत तत्० (गु०) प्रकरण प्राप्त, प्रकर्ष से किया हुआ, उत्तमता से किया हुआ, अविकृत, यथार्थ, सत्य, वास्तविक।

प्रकृतार्थ तत्० (गु०) [प्रकृत + अर्थ] न्याय अर्थ, उचित अर्थ, उचित व्यवहार, यथार्थ, उपयुक्त।

प्रकृति तत्० (स्त्री०) [प्र + कृ + क्ति] स्वभाव, धर्म, चरित्र, योनि, उत्पत्ति स्थान, उद्भव क्षेत्र, चिन्ह, अङ्ग, स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोष, राष्ट्र, राज्य, दुर्ग, क्रिया, पुरवासी, समूह, शक्ति, परमात्मा, पञ्चभूत, इक्कीस अक्षर के पाद वाला छन्द विशेष, माता, धातु, प्रत्यय के पहले का भाग, सत्व, रज और तम इन त्रिगुणों की साम्यावस्था, प्रधान, माया, शक्ति, चैतन्य, भगवान् की माया नाम की शक्ति।—सिद्ध (गु०) स्वभाव जात, स्वभाव सिद्ध, स्वाभाविक।

प्रकृष्ट तत्० (गु०) [प्र + कृष् + क्त] उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, मुख्य, उत्कृष्ट, प्रधान।

प्रकोष्ठ तत्० (पु०) कोठे के नीचे का घर, हाथ का पहुँचा, कलाई से केहुनी तक, कलाई और केहुनी के बीच का भाग।

प्रक्रम तत्० (पु०) क्रम, अवसर, उद्योग, आरम्भ, अनुष्ठान।

प्रक्रान्त तत्० (गु०) [प्र+क्रम्+क्त] आरब्ध, अनुष्ठित ।

प्रक्रिया तत्० (स्त्री०) राजाओं का चामर व्यजन और छत्र धारणादि व्यापार, देवचेष्टा, देवकर्म, रीति, प्रकार, विधि ।

प्रक्लिन्न तत्० (गु०) तृप्त, तुष्ट, अत्यन्त स्वेद युक्त ।

प्रक्षालन तत्० (पु०) पखारना, धोना, साफ़ करना, शुद्ध करना ।

प्रक्षेप तत्० (पु०) फेंकना, त्यागना, त्याग करना, छोड़ना ।

प्रखर तत्० (गु०) तीखा, तीक्ष्ण, निशित । (गु०) घोड़े की जीन, चारजामा ।

प्रखरांशु तत्० (गु०) तीक्ष्ण किरण, तीव्र किरण ।

प्रख्यात तत्० (गु०) प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्तिमान् ।

प्रख्याति तत्० (स्त्री०) प्रकृष्ट कीर्ति, विख्याति, प्रसिद्धि, सुयश ।

प्रगट तद्० (गु०) प्रकट, व्यक्त, प्रसिद्ध, प्रकाश, साक्षात् प्रत्यक्ष ।

प्रगटना दे० (क्रि०) व्यक्त होना, प्रसिद्ध होना, प्रकाश होना ।

प्रगल्भ तत्० (गु०) प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभान्वित, दाम्भिक, व्यापक, धृष्ट, ढीठ ।—ता (स्त्री०) प्रागल्भ्य, दाम्भिकता, ढिठाई ।

प्रगाढ़ तत्० (गु०) दृढ़, कठोर, अधिक, अतिशय, बहुत, कृच्छ्र, कष्ट ।

प्रगुण तत्० (गु०) सरल, ऋजु, उदार । (पु०) उत्तम स्वभाव ।

प्रग्रह तत्० (पु०) तुला सूत्र, तुलारज्जु, तराज़ू की डोरी, पशु बाँधने की डोरी, लगाम, पगहा, बन्दी, स्तुतिपाठक ।

प्रग्राह तत्० (पु०) बाँधने की डोरी, रस्सी ।

प्रघटी दे० (स्त्री०) घुरिहया, सोना आदि धातुओं के गलाने का पात्र,घरिया ।

प्रघाण तत्० (पु०) प्रघण, अलिन्द, द्वार के आगे का बरामदा ।

प्रचण्ड तत्० (गु०) दुर्वह, दुर्द्धर्ष, असह्य, उग्र, तीक्ष्ण, प्रतापी ।—मूर्ति (स्त्री०) प्रताप युक्त शरीर, भयानक आकार ।

प्रचलन तत्० (पु०) प्रचार, प्रसार, प्रसिद्ध, प्रकाश करना, फैलाव, विस्तृत ।

प्रचलित तत्० (गु०) प्रसिद्ध, व्यापक, सर्वत्र गृहीत सर्वत्र व्यवहृत, जिसका व्यवहार सब स्थान होता हो ।

प्रचार तत्० (पु०) [प्र+चर+घञ्] प्रकाश, व्यक्त प्रचलन, विस्तार, व्यापकता ।

प्रचारक तत्० (गु०) प्रकाशक, व्यक्तकारक, प्रसिद्ध कर्ता, फैलाने वाला ।

प्रचारण तत्० (पु०) व्यक्त करण, प्रकाश करण, स्पष्ट करण, चराना ।

प्रचारना दे० (क्रि०) व्यक्त करना, प्रसिद्ध करना, फैलाना, चलाना, चराना ।

प्रचारित तत्० (गु०) विस्तारित, फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ ।

प्रचुर तत्० (गु०) भूरि, अधिक, बहुत, यथेष्ट।—ता (स्त्री०) बाहुल्य, आधिक्य, अधिकता, अधिकाई । —त्व (पु०) यथेष्टता, बाहुल्य, आधिक्य ।—पुरुष (पु०) चोर, तस्कर ।

प्रचेतसी तत्० (स्त्री०) प्रचेता मुनि की कन्या ।

प्रचेता तत्० (पु०) वरुण, मुनि विशेष, प्रकृष्टचित्त, प्रशस्त चित्त, प्राचीन बर्हिराज के पुत्र, प्रजापति विशेष, ब्रह्मा का पुत्र, लोक पितामह ब्रह्मा ने अपने शरीर से वेद वेदाङ्गवित् पुत्रों की सृष्टि की उनके नाम ये हैं:—अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, मरीचि, भृगु, अङ्गिरा, क्रतु, वशिष्ठ, वोढु, कपिल, आसुरी, कवि, मंकु, शङ्कु, पञ्चशिख और प्रचेता ।

प्रचोदित तत्० (गु०) प्रेरित, नियोजित, गमनानुमति प्राप्त, जाने की अनुमति प्राप्त, सन्दुक् कथित ।

प्रच्युत तत्० (गु०) पतित, हरित, गिरा हुआ, स्खलित, पदभ्रष्ट ।

प्रच्छद तत्० (पु०) [प्र + छद् + अल्] आच्छादन, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर ।—पट (पु०) उत्तरीयवस्त्र, पिछौरी ।

प्रच्छन्न तत्० (गु०) आच्छन्न, आच्छादित, गुप्त ।

प्रच्छर्दिका तत्० (स्त्री०) रोगविशेष, उद्गार, वमन, वमि रोग विशेष ।

प्रच्छादन तत्० (पु०) उत्तरीय वस्त्र, प्रावरण, गुप्त होने का वस्त्र, बुरका, पिछौरी, ओढ़नी, चादर ।

प्रजव तत्० (पु०) प्रकृष्टवेग, अतिशय वेग ।

प्रजरण तत्० (पु०) ज्वलन, जलन ।

प्रजरित तत्० (गु०) ज्वलित, जलाया हुआ, भस्म ।

प्रजल्प तत्० (पु०) वाक्यविशेष, कहानी, क़िस्सा ।

प्रजा तत्० (स्त्री०) सन्तान, सन्तति, वशवर्ती मनुष्य, अधिकारस्थित मनुष्य, रैयत ।

प्रजागर तत्० (पु०) अतिशयजागरण, अत्यन्त चिन्ता ।

प्रजापति तत्० (पु०) ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि महर्षि, महीपाल, राजा, जामाता, दिवाकर, वन्हि, त्वष्टा, दस प्रजापति, पिता, स्वनामख्यात कीटविशेष ।

प्रजावती तत्० (स्त्री०) भ्रातृजाया, ज्येष्ठ भ्रातृपत्नी, पुत्रवती स्त्री ।

प्रजाहित तत्० (पु०) प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ ।

प्रजेश्वर तत्० (पु०) राजा, महीपाल, भूपाल ।

प्रज्ञ तत्० (गु०) विज्ञ, अभिज्ञ, पण्डित, प्रवीण ।

प्रज्ञप्ति तत्० (स्त्री०) निवेदन, विज्ञापन, सङ्केत ।

प्रज्ञा तत्० (स्त्री०) बुद्धि, मति, धी ।—चक्षु (पु०) धृतराष्ट्र । (गु०) बुद्धिमान्, ज्ञानी, ज्ञान दृष्टि के द्वारा देखने वाला, अन्धा ।

प्रज्वलित तत्० (गु०) अतिशय ज्वलन विशिष्ट, ज्वलन्त ।

प्रजाधिकारी राज्य तत्० (पु०) प्रजा-सत्ताक-राज्य शासन, जहाँ का राज्य प्रजा की व्यवस्था के अनुसार चलता हो ।

प्रडीन तत्० (पु०) पक्षी की गति विशेष, प्रथम उड्डयन, तिर्यग्गमन ।

प्रण तत्० (पु०) पन, प्रतिज्ञा, क़ौल, क़रार, पुराण, पुरातन, बहुकालीन ।

प्रणत तत्० (गु०) [प्र + नम् + क्त] प्रणति विशिष्ट, कृत प्रणाम, चरणों में गिरा हुआ, नम्र, विनत ।—पाल (पु०) शरणागतरक्षक, दीनपालक ।

प्रणति तत्० (स्त्री०) [प्र + नम् + क्ति] प्रणाम, प्रणिपात, नम्रता ।

प्रणय तत्० (पु०) [प्र + नी + अल्] प्रेम, प्रीति, अनुराग, अनुरक्ति, विश्रम्भ, निर्वाण ।

प्रणयन तत्० (पु०) [प्र + नी + अनट्] रचन, प्रस्तुतकरण, निर्माण, संस्कारकरण, रचन, ग्रंथन ।

प्रणयिनी तत्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा वनिता, प्रिया, भार्या, अङ्गना, स्त्री ।

प्रणयी तत्० (गु०) प्रेमी, अनुरागी, अनुरक्त ।

प्रणव तत्० (पु०) ओंकार, मन्त्रसेतु ।

प्रणवौं दे० (क्रि०) प्रणाम करता हूँ, नम्र होता हूँ ।

प्रणाम तत्० (पु०) [प्र + नम् + घञ्] प्रणति, प्रणिपात, अत्यन्त भक्ति और श्रद्धा के सहित नमस्कार ।

प्रणामी तत्० (गु०) नमस्कारी, देवताओं के प्रणाम के लिये दी जाने वाली दक्षिणा ।

प्रणाली तत्० (स्त्री०) धारा, रीति, प्रकार, जल निकलने का मार्ग, परम्परा, पनाला, नर्दवा ।

प्रणाश तत्० (पु०) ध्वंस, नाश, उत्पात ।

प्रणिधान तत्० (पु०) मनोयोग, अवगति, ध्यान, प्रयत्न, प्रवेशन ।

प्रणिधि तत्० (पु०) चर, दूत, प्रार्थना, अवधान ।

प्रणिपात तत्० (पु०) प्रणति, प्रणाम, नमस्कार ।

प्रणिहित तत्० (गु०) रक्षित, न्यासित, मनोयोग कृत, समाहित ।

प्रणीत तत्० (गु०) संस्कृत अग्नि, यज्ञ मन्त्र द्वारा प्रज्वलित अग्नि ।

प्रणोदित तत्० (गु०) प्रेरित ।

प्रतप्त तत्० (गु०) उत्तप्त, प्रभाववान् ।

प्रतान तत्० (पु०) विस्तार, चौड़ा, वायु रोग विशेष ।

प्रताप तत्० (पु०) प्रभाव, तेज़, प्रखरता, शूरता ।

प्रतापसिंह (पु०) मेवाड़ के प्रसिद्ध स्वदेशसेवक सन्यासी महाराणा चित्तौर के अधिपति महाराणा उदयसिंह के पुत्र । इन्होंने धर्मरक्षा के लिये जो कष्ट सहे हैं उससे इनका नाम इतिहास में प्रसिद्ध है । राजस्थान के समस्त राजा मुगलसम्राट् के अधीन हो गये । स्वार्थ के वश होकर धर्म को अवहेला कर समस्त राजाओं ने अपनी स्वाधीनता बेच दी थी, परन्तु महाराणा ने अनेक कष्ट सह कर, अपनी स्वाधीनता की रक्षा की थी । एक समय अम्बर के राजकुमार मानसिंह (अकबर पुत्र सलेम का साला) दिल्ली जाने के समय प्रताप की राजधानी कमलमीर गये । प्रताप ने उनके स्वागत के लिये बड़ी तैयारियाँ की, भोजन के समय प्रताप का पुत्र अमरसिंह वहाँ खड़ा था । मानसिंह प्रताप के न आने का कारण बार बार अमरसिंह से पूँछने लगे । अन्त में प्रताप वहाँ उपस्थित हुए और बोले कि " जो राजपूत कुलाङ्गार अपनी बहिन बेटियाँ मुसल्मानों को ब्याहता है और तुर्कों के साथ नित्य भोजन करता है, उसके साथ सूर्य-वंशी राणा भोजन नहीं कर सकता ।" इस बात से मान का क्रोध बढ़ गया । मान दिल्ली पहुँच कर अनेक छलबल फैला कर प्रताप को कष्ट पहुँ-चाने लगा । अन्त में उसने अकबर से कह कर प्रताप पर चढ़ाई करा दी । परन्तु उस चढ़ाई से प्रताप डरने वाले नहीं थे । मुट्ठी भर राजपूतों को लेकर महाराणा ने मुसल्मानी सेना का सामना किया, इसी प्रकार वे यावज्जीवन लड़ते रहे, परन्तु स्वाधीनता उन्होंने नहीं बेची । इन्हींको धर्मरक्षा के कारण भारत ने " हिन्दुओं के सूर्य " की उपाधि दी थी । आज तक इनके वंशज भी उसी गौरवास्पद उपाधि से भूषित किये जाते हैं । धर्मरक्षा के कारण ये अमर हैं ।

प्रतापवान् तत्० (गु०) तेजस्वी, तेजधारी, ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली ।

प्रतापी तत्० (गु०) प्रतापवान्, तेजस्वी तेजधारी, ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली ।

प्रतारक तत्० (गु०) वञ्चक, ठग, धूर्त, छल, शठ ।

प्रतारण तत्० (पु०) वञ्चना, ठगई, धूर्तता, शठता ।

प्रतारणा तत्० (स्त्री०) प्रवञ्चना, मिथ्या, छलना, ठगई, धूर्तता ।

प्रतारित तत्० (गु०) प्रवञ्चित, छलित, मिथ्या कथित, ठगा हुआ ।

प्रति तत्० (उपसर्ग) प्रतिनिधि, मुख्य, सदृश, लक्षण, चिन्ह, एक एक, सब, समस्त, भाग, अंश, प्रतिदान, स्तोक, अल्प, निश्चय, प्रशंसित, विरोध, समाधि, अभिमुखता, आभिमुख्य, स्वभाव ।

प्रतिकार तत्० (पु०) उपाय, निवारण, शोधन, उपशम, उपकार ।

प्रतिकूल तत्० (गु०) अनुकूल, विपक्ष, प्रतीप, विरुद्ध —ता (स्त्री०) विपक्षता, प्रतिपक्षता, विरोध ।

प्रतिक्रिया तत्० (स्त्री०) प्रतिकार, प्रतिविधान, उपाय, निवारण ।

प्रतिक्षण तत्० (पु०) क्षण क्षण, पलपल, प्रतिपल ।

प्रतिग्रह तत्० (पु०) स्वीकार, ग्रहण, दान लेना, ब्राह्मण को विधिप्रदान, ग्रह विशेष, ब्राह्मण प्रयोजन ।

प्रतिग्रहण तत्० (पु०) आदान, ग्रहण, स्वीकार, दान लेना, बदला लेना, एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना ।

प्रतिघात तत्० (पु०) मारण, आघात, मार बदले की मार ।

प्रतिचिकीर्षु तत्० (गु०) प्रतिकार करने का इच्छु बदला चुकाने की इच्छा रखने वाला ।

प्रतिचिन्तन तत्० (पु०) चिन्तित का पुनः चिन्त

प्रतिच्छाया तत्० (स्त्री०) प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा ।

प्रतिछाँह दे० (पु०) प्रतिबिम्ब, छाया ।

प्रतिज्ञा तत्० (स्त्री०) कर्तव्यज्ञान, साध्य निर्देश, अङ्गीकार, शपथ, दिव्य, नियम, प्रण, पण।—पत्र (पु०) नियम लिपि, अङ्गीकार लिपि, स्वीकार पत्र।

प्रतिज्ञात तत्० (गु०) अङ्गीकृत, स्वीकृत, कर्तव्य रूप से स्वयम् कहा हुआ।

प्रतिज्ञान तत्० (पु०) अङ्गीकार, प्रतिज्ञा, स्वीकार, पण।

प्रतिदर्शन तत्० (पु०) दर्शनान्तर दर्शन, फिर फिर देखना, पुनः पुनः दर्शन।

प्रतिदान तत्० (पु०) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, रखे हुए द्रव्य का लौटाना।

प्रतिदिन तत्० (पु०) प्रत्यह, अहरह, दिन दिन, नित्य।

प्रतिदेय तत्० (गु०) पुनर्दातव्य, लौटाने योग्य, फेर देने योग्य।

प्रतिध्वनि तत्० (स्त्री०) प्रतिशब्द, शब्द का शब्द।

प्रतिनिधि तत्० (पु०) प्रतिमा, मुख्य के समान, मुख्य स्वरूप, प्रधान के स्थानापन्न, प्रतिमूर्ति।

प्रतिनिवर्त्तन तत्० (पु०) प्रत्यावर्तन, लौटाना, फेरना।

प्रतिपक्ष तत्० (पु०) वैरी, अरि, शत्रु, रिपु।

प्रतिपत् तत्० (स्त्री०) तिथि विशेष, चन्द्रमा की पहली कला का क्रियाकाल, शुक्ल और कृष्ण पक्ष की पहली तिथि।

प्रतिपत्ति तत्० (स्त्री०) प्रतिशक्ति, सम्मान, सम्भ्रम, गौरव, प्रगल्भता, पदप्राप्ति, प्रबोध, निष्पत्ति, दान, प्रतिष्ठा।

प्रतिपन्न तत्० (गु०) अवगत, अङ्गीकृत, विक्रान्त सम्मान प्राप्त, प्रस्तुत, प्रतिष्ठित, माननीय, मान्य।

प्रतिपादक तत्० (पु०) प्रतिपत्तिजनक, बोधक, ज्ञापक, संस्थापक, प्रकाशक।

प्रतिपादन तत्० (पु०) बोधन, ज्ञापन, कथन, दान, प्रतिपत्ति।

प्रतिपाद्य तत्० (गु०) बोधनीय, ज्ञापनीय, कथनीय।

प्रतिपालक तत्० (पु०) पालनकर्ता, रक्षक, पोषणकर्ता।

प्रतिपालन तत्० (पु०) पालन, रक्षण, पोषण, पोसना।

प्रतिपालना दे० (क्रि०) पोसना, पालना, रखना, रक्षा करना।

प्रतिपाल्य तत्० (गु०) प्रतिपालनीय, रक्षणीय, गोपनीय, पोषणीय, पोष्य।

प्रतिपुरुष तत्० (पु०) प्रतिनिधि, प्रत्येक मनुष्य।

प्रतिप्रसव तत्० (पु०) निषेध की हुई वस्तु का पुनः विधान, एक बार रोक कर पुनः आज्ञा देना।

प्रतिफल तत्० (पु०) तुल्यफल, समुचित फल, कर्म के अनुसार फल, जैसा कर्म वैसा फल। कृतप्रतिकार।

प्रतिफलित तत्० (गु०) प्रतिबिम्बित, प्रतिच्छाया प्राप्त।

प्रतिबन्ध तत्० (पु०) कार्य प्रतिबन्धक, प्रतिष्टम्भ, विघ्न, बाधा, रुकावट।

प्रतिबन्धक तत्० (पु०) प्रतिरोधक, बाधक, निवारक, व्याघातकारक निवारणकर्ता, रोकने वाला।

प्रतिभट तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, दूत के प्रति दूत।

प्रतिभा तत्० (स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, प्रत्युत्पन्नमतित्व, दीप्ति, प्रगल्भता।

प्रतिभाग तत्० (पु०) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से।

प्रतिभू तत्० (पु०) विश्वासवान्, ज़ामिनदार, मनौतिया।

प्रतिम तत्० (गु०) तुल्य, सदृश, समान।

प्रतिमा तत्० (स्त्री०) प्रतिमूर्ति, मूर्ति के समान, प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र।

प्रतिमान तत्० (पु०) प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया, हाथी के मस्तक का एक भाग।

प्रतिमार्ग तत्० (पु०) प्रतिपथ, मार्ग मार्ग, प्रत्येक मार्ग।

प्रतिमास तत्० (पु०) मास मास, प्रत्येक मास।

प्रतिमूर दे० (पु०) प्रतिबिम्ब, परछाहीं, छाया।

प्रतिमूर्ति तत्० (स्त्री०) आकार, छवि, प्रतिमा, प्रतिकृति, मूर्ति के समान मूर्ति।

प्रतियत्न तत्० (पु०) लिप्सा, वाञ्छा, बन्दी, निग्रह करने का प्रयत्न, गुणान्तर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, ग्रहण, प्रतिग्रह ।

प्रतियोग तत्० (पु०) विरोध, विवाद, प्रतिपक्षता ।

प्रतियोगी तत्० (गु०) विरोधी, प्रतिपक्ष, विरुद्ध पक्ष ।—**ता** (स्त्री०) विपक्षता, शत्रुता, विरोध, विवाद, प्रतिस्पर्द्धा, चढ़ा उतरी । (पु०) तुल्याकार व्यक्ति, समान आकार का मनुष्य ।

प्रतिरात्र तत्० (पु०) प्रतिरात्रि, प्रत्येक रात ।

प्रतिरूप तत्० (पु०) प्रतिमा, प्रतिमूर्त्ति, आकृति । (गु०) समान, सदृश, तुल्य, बराबर ।

प्रतिरोध तत्० (पु०) तिरस्कार, अप्रतिपक्ष, निषेध, रोक, रुकावट ।

प्रतिरोधक तत्० (पु०) चोर, तस्कर, अपहारक ।

प्रतिलिपि तत्० अनुरूपलिपि, समान लेख, नक़ल ।

प्रतिलोम तत्० (पु०) वाम, विलोम, व्यतिक्रम, विपरीत क्रम ।—**ज** (पु०) प्रतिलोम जात, उत्तम वर्ण की स्त्री में अधम वर्ण के पुरुष से उत्पन्न ।

प्रतिवचन तत्० (पु०) उत्तर प्रत्युत्तर ।

प्रतिवर्ष तत्० (पु०) प्रत्येक वर्ष, साल साल ।

प्रतिवाक्य तत्० (पु०) प्रतिवचन, उत्तर प्रत्युत्तर ।

प्रतिवाद तत्० (पु०) विरोध, विवाद, आपत्ति, प्रतिपक्षी का वचन ।

प्रतिवादी तत्० (गु०) प्रतिपक्ष, विपक्ष, असामी ।

प्रतिवाधक तत्० (पु०) निवारक, प्रतिबन्धक, बाधा कारक ।

प्रतिवास तत्० (पु०) पड़ोस, निकट वास, समीप स्थिति ।

प्रतिवासर तत्० (पु०) प्रतिदिन, प्रत्यह, दिन दिन ।

प्रतिवासी तत्० आसन्न गृही, निकटस्थ, प्रतिवेशी पास पास रहने वाले, पड़ोसी ।

प्रतिविधान तत्० (पु०) प्रतीकार, प्रतिक्रिया, निवारण, उपाय ।

प्रतिविम्ब तत्० (पु०) प्रतिच्छाया, प्रतिमा, प्रति-मूर्त्ति, अनुरूप ।

प्रतिविम्बित तत्० (गु०) प्रतिविम्बगत, प्रति-च्छाया प्राप्त ।

प्रतिवेश तत्० (पु०) मकान के सामने का मकान गृह के समीपस्थ गृह, पड़ोस ।—**वासी** (पु०) प्रतिवासी, समीप रहने वाला, पड़ोसी ।

प्रतिबोध तत्० (पु०) अनुभव, प्रबोध, ज्ञान प्रकाश, ज्ञान प्राप्ति, जागरण, अनुमान ।

प्रतिशब्द तत्० (पु०) प्रतिध्वनि, शब्द का शब्द ।

प्रतिश्याय तत्० (पु०) रोगविशेष, पीनस रोग ।

प्रतिश्रव तत्० (पु०) अङ्गीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा, निश्चित कथन ।

प्रतिश्रुत तत्० (गु०) अङ्गीकृत, स्वीकृत, प्रतिज्ञात ।

प्रतिषिद्ध तत्० (गु०) प्रतिषेध का विषय, निषिद्ध, निषेधित, निषेध किया हुआ ।

प्रतिषेध तत्० (पु०) निषेध, निवारण, वारण ।

प्रतिष्ठा तत्० (स्त्री०) गौरव, प्रशंसा, सम्मान, पृथिवी, स्थान, यज्ञ समाप्ति, चार अक्षर का छन्द विशेष । संस्कार विशेष, उद्यापन ।—**कारक** (गु०) सम्मानकारक, गौरवकारक ।—**सूचक** (पु०) सम्मान प्रकाशक, आदर प्रकाशित करने वाला ।

प्रतिष्ठान तत्० (पु०) नगर विशेष, राजा पुरूरवा की राजधानी, हरिवंश में लिखा है कि यह नगर गङ्गा की उत्तर की ओर है । परन्तु कालिदास कहते हैं कि गङ्गा और यमुना के सङ्गम पर यह नगर है, आज कल यह नगर झूसी नाम से प्रसिद्ध है ।

प्रतिष्ठित तत्० (गु०) प्रतिष्ठायुक्त, गौरवान्वित ।

प्रतिस्पर्द्धा तत्० (स्त्री०) ईर्ष्या, मत्सरता, गुणद्वेष, स्पर्द्धा ।

प्रतिहत तत्० (गु०) प्रतिघात प्राप्त, प्रतिस्खलित, रुद्ध, निराश, निराकृत, प्रतिबद्ध, हत ।

प्रतिहार तत्० (पु०) द्वार, ड्योढ़ी, देहली, द्वार-पालक, ड्योढ़ीदार, दरवान ।

प्रतिहिंसा तत्० (स्त्री०) हिंसा का प्रतिशोध, अपकार का बदला।

प्रतीक तत्० (पु०) एकदेश, अङ्ग, अवयव, व्याख्या में श्लोक या वाक्य का उद्धृत एक देश।

प्रतीकार तत्० (पु०) अपकारी के प्रति अपकार, वैर शोधन, शत्रुता निर्यातन, प्रतिफल, परिशोध, चिकित्सा, निवारण का उपाय।

प्रतीक्षा तत्० (स्त्री०) प्रत्याशा, बाट देखना, बाट जोहना, किसी के आने के लिये ठहरना।

प्रतीक्षक तत्० (पु०) बाट देखने वाला, राह जोहने वाला, प्रत्याशी।

प्रतीकाश तत्० (पु०) तुल्य, समान, सदृश, तुलना, उपमा।

प्रतीची तत्० (स्त्री०) पश्चिम दिशा, सूर्य के अस्त होने की दिशा।

प्रतीचीन तत्० (गु०) पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम दिशा में स्थित।

प्रतीत तत्० (गु०) ज्ञात, अवगत, हृष्ट, सादर, ख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतीति तत्० (स्त्री०) ज्ञान, बोध, ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति, आदर, हर्ष।

प्रतीप तत्० (पु०) महाराज शान्तनु का पिता। (गु०) प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी।

प्रतीयमान तत्० (गु०) ज्ञेय, बोधगम्य, अनुभूत, अवगत।

प्रत्न तत्० (गु०) पुरातन, पुराण।

प्रत्यक्ष तत्० (गु०) साक्षात्, सम्मुख, सामने, प्रकाश, प्रकट, प्रसिद्ध।

प्रत्यग्र तत्० (गु०) नूतन, नवीन, अभिनव, शुद्ध, शोधित।

प्रत्यङ्ग तत्० अवयव विशेष, कर्ण नासिका आदि।

प्रत्यन्त तत्० (पु०) म्लेच्छ देश। (गु०) सन्निकृष्ट, प्रान्त भाग।—पर्वत (पु०) पर्वत के समीप का क्षुद्र पर्वत।

प्रत्यभिज्ञान तत्० (पु०) पश्चात् ज्ञान, पीछे जानना, स्मरण, अनुमान, कारण विशेष से स्मरण होना।

प्रत्यभियोग तत्० (पु०) प्रत्यपराध, अपराधी होकर अपराध करना, अभियुक्त होकर अभियोग करना।

प्रत्यभिलाप तत्० (पु०) पुनरभिलाप।

प्रत्यय तत्० (पु०) विश्वास, निश्चय, ज्ञान, अधीन, शपथ, हेतु, छिद्र, आचार, प्रकृति से उत्तर आने वाली विभक्ति।

प्रत्यर्थी तत्० (पु०) शत्रु, प्रतिवादी, अर्थी का प्रतिपक्ष, मुद्दालेह।

प्रत्यर्पण तत्० (पु०) पुनर्दान, लौटना, फेर देना, प्रति दान।

प्रत्यवाय तत्० (पु०) पाप, दुरदृष्ट, दोष, अनिष्ट, विघ्न, व्याघात।

प्रत्यह तत्० (अ०) प्रतिदिन, दिन दिन, प्रतिवासर।

प्रत्याख्यान तत्० (पु०) निराकरण, निरसन, खण्डन, अस्वीकार, निन्दन।

प्रत्यादेश तत्० (पु०) निराकरण, खण्डन, भक्त के प्रति देवता का आदेश, उपदेश, दैववाणी, परामर्श।

प्रत्याशा तत्० (स्त्री०) आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाष, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा, बाट देखना।—रहित (गु०) आशा रहित, वाञ्छा शून्य।

प्रत्याशी तत्० (गु०) भरोसा वाला, आकाङ्क्षी, अभिलाषी।

प्रत्यासन्न तत्० (गु०) निकटवर्ती, समीपस्थित।

प्रत्याहार तत्० (पु०) अपने अपने विषयों से इन्द्रियों को हटाना।

प्रत्युत तत्० (अ०) वैपरीत्य, वरन्, वरङ्।

प्रत्युत्पन्न तत्० (गु०) उत्पत्ति विशिष्ट, प्रस्तुत, प्रतिभान्वित।—मति (गु०) उपस्थित बुद्धि, सूक्ष्म बुद्धि युक्त, सूक्ष्मदर्शी, प्रतिभान्वित।

प्रत्युपकार तत्० (पु०) उपकार के अनन्तर उपकार, प्रतिफल।

प्रत्युपकारी तत्० (गु०) उपकार के बदले उपकार करने वाला।

प्रत्यूष तत्० (पु०) प्रभात, प्रातःकाल, सूर्य, वसु विशेष।

प्रत्यूह तत्० (पु०) विघ्न, बाधा, आपद, अटकाव।

प्रत्येक तत्० (अ०) एक एक, प्रति, भिन्न भिन्न, समस्त, सकल।

प्रथम तत्० (गु०) श्रेष्ठ, प्रधान, प्राक्, पूर्वतन, पहला, आदिम, अग्रिम।—**साहस** (पु०) अपराधियों का प्रथम दण्ड, प्रथम बार का अपराध।

प्रथमतः तत्० (अ०) पहले पहल का, प्रथम, पूर्व।

प्रथमा तत्० (स्त्री०) पहली विभक्ति, श्रेष्ठा, बड़ी, प्रधाना।

प्रथमावयव तत्० (पु०) प्रथमोत्पन्न अङ्ग, आद्य अङ्ग, श्रेष्ठ अङ्ग।

प्रथा तत्० (स्त्री०) चलन, धारा, रीति, व्यवहार, ख्याति, प्रकार।

प्रथित तत्० (गु०) ख्यात, प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध।

प्रद तत्० (गु०) प्रकृष्टदाता, दानकर्ता, दानी।

प्रदक्षिण तत्० (पु०) देवोद्देश्य से दक्षिणावर्त्त भ्रमण, चतुर्दिक् भ्रमण, चारो ओर भ्रमण।

प्रदत्त तत्० (गु०) आदर पूर्वक दान किया हुआ, समर्पित।

प्रदर तत्० (पु०) स्त्रियों का रोग विशेष।

प्रदर्शक तत्० (पु०) दर्शक, प्रकाशक, दिखानेहारा।

प्रदर्शन तत्० (पु०) ईक्षण, दर्शन, दिखाना।—**स्थान** (पु०) जुनायबगाह।

प्रदर्शनी तत्० (स्त्री०) उपहार, पारतोषिक, प्रदर्शन का मेला।

प्रदान तत्० (पु०) दान, अर्पण, प्रकृष्ट दान, त्याग।

प्रदीप तत्० (पु०) दीपक, दीया, दीप।

प्रदीप्त तत्० (गु०) उज्ज्वलित, प्रकाशित।

प्रदेश तत्० (पु०) एक देश, स्थान, देश का एक भाग, प्रान्त, तर्ज्जनी और अङ्गुष्ठ का परिमाण।

प्रदेशिनी तत्० (स्त्री०) तर्जनी नामक अंगुली।

प्रदोष तत्० (पु०) रजिनी मुख, सायङ्काल, सूर्यास्त के पश्चात् दो मुहूर्त काल। रात्रि का पहला चार दण्ड।—**काल** (पु०) सायङ्काल, सन्ध्या का समय।

प्रद्युम्न तत्० (पु०) कन्दर्प, कामदेव, श्रीकृष्ण का पुत्र। ये रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। शिव के क्रोधरूपी अग्नि में भस्म होकर ये रूप में श्रीकृष्ण के यहाँ उत्पन्न हुए। जन्म के सातवें दिन श्रीकृष्ण का शत्रु शम्बर सूतिकागृह से प्रद्युम्न को उठा ले गया। श्रीकृष्ण व सब जान गये तथापि उन्होंने इसके लिये कुछ प्रयत्न नहीं किया। दैत्यपति शम्बर की महारानी का नाम मायावती नाम था। मायावती के पुत्र नहीं था। शम्बर ने प्रद्युम्न को पालन करने के लिये मायावती के हाथ सौंपा था। यही मायावती स्वयं रति थी। प्रद्युम्न को देखते ही मायावती को अपना पूर्व जन्म की बातें स्मरण हो आयीं। मायावती न पति का पुत्रवत् पालन करना अनुचित समझ धात्री को उनके पालन का भार सौंपा। जब प्रद्युम्न युवा हुए, तब मायावती ने उनको अपना पति बनाना चाहा, यह देख प्रद्युम्न ने कहा कि तुम पुत्र भाव छोड़ कर यह भाव क्यों स्वीकार करना चाहती हो। मायावती ने कहा, "नाथ! आप मेरे पुत्र नहीं हैं और न शम्बर ही आपका पिता है। आपके पिता श्रीकृष्ण हैं, शम्बर आप को यहाँ चुरा कर लाया है। मैं आपके रूप पर मोहित हूँ, आप शम्बर का नाश कर मेरा मनोरथ पूर्ण कीजिये। यह सुन कर प्रद्युम्न ने शम्बर के साथ युद्ध किया और वैष्णव अस्त्र से शम्बरासुर को मार कर द्वारका चले गये।

प्रधान तत्० (गु०) श्रेष्ठ, आद्य, अग्रिम, मुख्य। (पु०) प्रशस्त, माया, प्रकृति, परमात्मा, बुद्धि सेनापति, मन्त्री, सचिव आदि।—**ता** (स्त्री०) श्रेष्ठता, मुख्यता, प्रधानत्व।—**नगर** (पु०) प्रसिद्ध नगर, बड़ा नगर, जिला।

प्रधी तत्० (गु०) प्रकृष्ट बुद्धि युक्त, उत्तम बुद्धि विशिष्ट। (स्त्री०) प्रकृष्ट बुद्धि।

प्रध्वंस तत्० (पु०) नाश, विनष्टि, क्षय, अपचय।

प्रनाम तद्० (पु०) प्रणाम, नमस्कार, अभिवादन।

प्रनाशी तद्० (गु०) विनशनशील, अनित्य, अचिरस्थायी।

प्रपञ्च तत्० (पु०) विपर्यास, भ्रम, विस्तार, सञ्चय, प्रतारण, जगत्, ससार।

प्रपञ्चित तत्० (गु०) विस्तृत, भ्रम युक्त, प्रतारित, सञ्चित ।

प्रपन्न तत्० (गु०) शरणागत, आश्रयाकाङ्क्षी, आश्रित ।

प्रपा तत्० (स्त्री०) पानीयशाला, पनशाला, प्याऊ ।

प्रपात तत्० (पु०) निरवलम्ब पर्वतों का पार्श्व, करार, किनारा ।

प्रपितामह तत्० (पु०) ब्रह्मा, पितामह के पिता ।

प्रपितामही तत्० (स्त्री०) प्रपितामह की पत्नी, पितामह की माता ।

प्रपुन्ना दे० (पु०) लता विशेष, पवाँर नामक पौधा ।

प्रपौत्र तत्० (पु०) पौत्र का पुत्र, पनाती, पोते का बेटा ।

प्रपौत्री तत्० (स्त्री०) पौत्र की कन्या, पनातिन, पोते की लड़की ।

प्रफुल्ल तत्० (गु०) विकाश युक्त, उत्फुल्ल, विकसित, खिला ।—ता (स्त्री०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास, विकाश, प्रसन्नता ।—वदन (पु०) प्रसन्न वदन, प्रसन्न मुख, सहास वदन ।

प्रफुल्लित तत्० (गु०) प्रस्फुटित, विकसित, विकाश युक्त ।

प्रबन्ध तत्० (पु०) सन्दर्भ, ग्रन्थ, काव्यादि ग्रन्थन, परस्पर अन्वित वाक्य समूह ।—कल्पना (स्त्री०) प्रबन्ध रचना, काव्य रचना ।

प्रबन्धक तत्० (गु०) प्रबन्धकर्ता, प्रबन्ध रचयिता ।

प्रबल तत्० (गु०) बलवान्, समर्थ, बली, उत्साही, साहसी ।—ता (स्त्री०) बलात्कार, पारवश्य, परवशता ।

प्रवाल तत्० (पु०) विद्रुम, मणि विशेष, मूँगा ।

प्रबुद्ध तत्० (गु०) जागृत, जागता हुआ, सचेत, सावधान, सावहित ।

प्रबोध तत्० (पु०) ज्ञान, सावचेती, सावधानी, निद्रा त्याग, नींद से जागना ।

प्रबोधन तत्० (पु०) जागरण, जगाना, चिताना, चितावनी देना, सावधान करना ।

प्रभञ्जन तत्० (पु०) अनिल, वायु, पवन ।—जाया (पु०) हनुमान ।—सुत (पु०) हनुमान्, भीम ।

प्रभद्र तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, निम्ब वृक्ष ।

प्रभव तत्० (पु०) उत्पत्ति, जन्म, जन्म हेतु, जन्म कारण, जहाँ से जन्म होता है, स्थान ।

प्रभा तत्० (स्त्री०) दीप्ति, आलोक, प्रकाश, तेज, कुबेर की पुरी, गोपी विशेष ।—कर (पु०) रवि, दिनकर, अग्नि, चन्द्र समुद्र, अर्क वृक्ष, अकवन का पेड़ ।—कीट (पु०) खद्योत, जुगनूँ ।

प्रभात तत्० (पु०) प्रातःकाल, प्रत्यूष ।

प्रभाव तत्० (पु०) कोष और दण्ड का तेज, शक्ति, माहात्म्य, गौरव, सामर्थ्य ।

प्रभावती तत्० (स्त्री०) पाताल गङ्गा, त्रयोदशाक्षर छन्द, वज्रनाभ दैत्य की कन्या, जिसको श्रीकृष्ण ने हरण किया था ।

प्रभास तत्० (पु०) तीर्थ विशेष, सोमतीर्थ, जैन-गणाधिप विशेष ।

प्रभिन्न तत्० (पु०) मत्तहस्ती, मद वाला हाथी ।

प्रभु तत्० (पु०) स्वामी, मालिक, पालक, समर्थ, नायक, नेता ।—ता (स्त्री०) प्रधानता, आधिपत्य, कर्तृत्व ।—भक्त (पु०) स्वामी का अनुरागी, कुक्कुर ।

प्रभूत तत्० (गु०) प्रचुर, यथेष्ट, अधिक, अतिशय ।

प्रभृति तत्० (अ०) तदादि, गणबोधक, इत्यादि, वगैरह ।

प्रभेद तत्० (पु०) भिन्नता, विशेष, वैलक्षण्य ।

प्रमथ तत्० (पु०) शिव के गण ।

प्रमथाधिप तत्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु ।

प्रमद तत्० (पु०) हर्ष ।—कानन (पु०) रम्यवन, राजाओं के अन्तःपुर के योग्य उपवन ।—वन (पु०) राजा के अन्तः पुरोचित वन ।

प्रमदा तत्० (स्त्री०) उत्तमा स्त्री, रमणीया नारी, सुलक्षणा स्त्री ।

प्रमा तत्० (स्त्री०) यथार्थ ज्ञान, प्रमिति, प्रमाण, भ्रम रहित ज्ञान ।

प्रमाण तत्० (पु०) मर्यादा, शास्त्र, निदर्शन, दृष्टान्त, उदाहरण, साक्षी, नेत्र प्रभृति, प्रतिपत्ति, माननीय, सत्यवादी, नित्य ।—पत्र (पु०) निदर्शन-पत्र, दृष्टान्त लिपि ।

प्रमातामह तत्० (पु०) मातामह के पिता, परनाना, नाना के पिता।

प्रमातामही तत्० (स्त्री०) प्रमातामह की स्त्री, मातामह की जननी, परनानी।

प्रमाथ तत्० (पु०) प्रमथन, बल द्वारा हरण, विलोडन, निकालना।

प्रमाथी तत्० (पु०) पीड़नकर्ता, मारणकर्ता, प्रमथनशील, देह और इन्द्रिय को दुःख पहुँचाने वाला।

प्रमाद तत्० (पु०) अनवधानता, असावधानी, भ्रम, भूल।

प्रमादी तत्० (पु०) प्रमाद विशिष्ट, अनवधानतायुक्त, असतर्क, भ्रान्त स्वभाव।

प्रमित तत्० (पु०) ज्ञात, विदित, अवगत, प्रमाण सिद्ध।

प्रमिति तत्० (स्त्री०) प्रमा, यथार्थ ज्ञान, सत्य बोध, यथार्थ बोध।

प्रमीला तत्० तन्द्रा, तन्द्री।

प्रमुख तत्० (पु०) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, मान्य, माननीय।

प्रमुदित तत्० हृष्ट, आह्लादित, आनन्दित।

प्रमेय तत्० (पु०) उपपाद्य प्रतिपादन करने के योग्य, प्रमाण साध्य, प्रमाण से सिद्ध किया जाने वाला।

प्रमेह तत्० (पु०) रोग विशेष, मेह रोग, मूत्र दोष, बहुमूत्रता।

प्रमोचन तत्० (पु०) मोचन, त्याग, उत्सरण।

प्रमोद तत्० (पु०) हर्ष, आह्लाद, उल्लास।

प्रयत तत्० (पु०) पवित्र, पूत, शुद्ध, नियमित, तत्पर।

प्रयत्न तत्० (पु०) प्रकृष्ट, यत्न, अध्यवसाय, चेष्टा, आदर।

प्रयाग तत्० (पु०) तीर्थ विशेष, तीर्थराज, प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ गङ्गा यमुना और गुप्त सरस्वती का सङ्गम है। यहाँ ब्रह्माजी ने अश्वमेध यज्ञ किये थे।

प्रयाण तत्० (पु०) गमन, प्रस्थान, निर्याण, यात्रा।

प्रयास तत्० (पु०) प्रयत्न, श्रम, क्लेश, आयास, चेष्टा।

प्रयुक्त तत्० (पु०) प्रकर्ष युक्त, प्रकृष्ट समाधि, प्रकृष्ट संयोग युक्त, संयमी, संयम विशिष्ट।

प्रयोग तत्० (पु०) प्रयुक्ति, अनुष्ठान व्यवहार, निदर्शन, उदाहरण।

प्रयोगक तत्० (पु०) प्रयोगकर्ता, नियोजक, नियमकारी, प्रवर्तक, प्रेरक।

प्रयोजन तत्० (पु०) कार्य, हेतु, निमित्त, अभिप्राय, उद्देश्य।

प्रयोज्य तत्० (पु०) जिसका प्रयोग किया जा सके। भृत्य, प्रेष्य, मूल धन।

प्ररोचना तत्० (स्त्री०) प्रवर्तना, प्रवर्तनार्थ रोचक कथा।

प्ररोह तत्० (पु०) अंकुर, बीजोद्भेद।

प्रलपित तत्० (पु०) कथित, उक्त, मिथ्या उच्चारित।

प्रलम्ब तत्० (पु०) दैत्य विशेष, दनु का पुत्र, एक समय श्रीकृष्ण बलराम और गोप बालक खेल रहे थे, वहाँ यह गोप का वेष धर कर गया था। श्रीकृष्ण प्रलम्बासुर की अभिसन्धि समझ कर गोप बालकों से मल्ल युद्ध करने लगे। इस युद्ध में यही होड रखा गया था कि जो हार जायगा वह जीतने वाले को कन्धे पर बैठा कर घुमावेगा, प्रलम्बासुर बलराम के साथ युद्ध में हार कर उनको अपने कन्धे पर बैठाकर ले चला। कुछ दूर ले जाकर बलराम का बध करना ही प्रलम्बासुर चाहता था। यह समझ कर बलराम इतने भारी हो गये कि प्रलम्बासुर उनको ढो नहीं सका। अन्त में प्रलम्ब अपनी मूर्ति धारण कर उनकी ओर लपका, परन्तु बहुत शीघ्र ही बाहु युद्ध में बलराम ने उसे मार डाला।

प्रलय तत्० (पु०) कल्पान्त, लय, संक्षय, विलय, मूर्च्छा, नष्ट चेष्टता।—**कर्ता** (पु०) लयकारक, विनाशक, महादेव।

प्रलाप तत्० (पु०) अनर्थक वचन, उन्मत्तों के समान असङ्गत वचन।

प्रलेप तत्० (पु०) प्रकृष्ट लेपन, औषध आदि का लेपन।

प्रलोभ तत्० (पु०) स्पृहा, लालसा, वाञ्छा, अभिलाषा।

प्रलोभन तत्० (पु०) लोभ, लुभाव, लालच।
प्रवञ्चना तत्० (स्त्री०) प्रतारणा, ठगाई।
प्रवण तत्० (गु०) नम्र, विनत, झुका हुआ, नवा हुआ, नीची भूमि।
प्रवर तत्० (पु०) सन्तान, वंश, श्रेष्ठ, प्रधान।
प्रवर्त तत्० (पु०) आरम्भ, लगा, नियुक्त, तत्पर।
प्रवर्तक तत्० (पु०) प्रेरक, प्रयोजक, उत्साहदाता, सहायक, उठाने वाला।
प्रवर्तन तत्० (पु०) प्रेरण, प्रवृत्ति, आज्ञापन, प्रेषण।
प्रवर्तित तत्० (गु०) आज्ञापित, प्रेरित, लगाया हुआ।
प्रवर्षण तत्० (पु०) एक पर्वत का नाम, यह पर्वत दक्षिण दिशा में किष्किन्धापुरी के पास है। वनवास के समय वर्षा ऋतु में राम और लक्ष्मण इसी पर्वत पर रहे थे।
प्रवाद तत्० (पु०) प्रचार, चर्चा, निन्दावाद, किंवदन्ती, उड़ती खबर।
प्रवास तत्० (पु०) विदेश, अन्यदेश, परदेश, भिन्न देश, देशान्तर, देशावर, देशान्तरवास।
प्रवासन तत्० (पु०) देशान्तर भेजना।
प्रवासी तत्० (गु०) विदेशी, अन्य देश वासी, देशान्तर में रहने वाला।
प्रवाह तत्० (पु०) नदी की धारा, स्रोत, बहाव।
प्रवाहक तत्० (पु०) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकने वाला।
प्रवाहिका तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, अतिसार।
प्रविष्ट तत्० (गु०) निविष्ट, घुसा हुआ।
प्रवीण तत्० (गु०) निपुण, कुशल, दक्ष, चतुर, बुद्धिमान्, सयाना।—ता (स्त्री०) निपुणता, दक्षता, चतुराई।
प्रवृत्त तत्० (गु०) उद्यत, तत्पर, प्रविष्ट, लगा हुआ।
प्रवृत्ति तत्० (स्त्री०) कार्य में लगने की इच्छा, यत्न, उपाय, इच्छा।
प्रवेश तत्० (पु०) पैठ, पहुँच।
प्रवेशक तत्० (पु०) प्रवेशकर्ता, प्रवेशकारी, पैठने वाला।
प्रशंसनीय तत्० (गु०) सद्गुण विशिष्ट, कीर्तिमान्, यशस्वी, प्रतिष्ठापात्र।
प्रशंसा तत्० (स्त्री०) श्लाघा, प्रतिष्ठा, वर्णना, गुण कथन, स्तोत्र, स्तुति।
प्रशम तत्० (पु०) शमता, उपशम, शान्ति, विराम, निवारण।
प्रशमन तत्० (पु०) मारण, वध, शमता, प्रशान्ति, विरति, निवारण।
प्रशस्त तत्० (गु०) सुन्दर, स्वच्छ, विस्तृत, परिसर युक्त, प्रशंसनीय, अति श्रेष्ठ, अति उत्तम।
प्रशस्ति तत्० (स्त्री०) उत्तमता, गुण स्तुति, अभिनन्दन।
प्रशान्त तत्० (गु०) अत्यन्त शमताशाली, अतिधीर।
प्रश्न तत्० (पु०) जिज्ञासा, पूछना, पृच्छा।
प्रश्रय तत्० (पु०) प्रणय, स्नेह, स्पर्द्धा, प्रगल्भता।
प्रश्रित तत्० (गु०) प्रणयी, विनीत, स्नेहान्वित, एक हाथ में आने योग्य द्रव्य।
प्रश्लथ तत्० (गु०) शिथिल अशक्त।
प्रश्वास तत्० (पु०) नासिका से वायु का निकलना, दीर्घ निश्वास।
प्रष्टा तत्० (गु०) प्रश्नकर्ता, प्रच्छक, जिज्ञासु।
प्रष्ठ तत्० (गु०) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, अगुआ।
प्रसक्त तत्० (गु०) प्रसङ्ग विशिष्ट, अतिशय अनुरक्त, अनुरागी, प्राप्त, उपस्थित।
प्रसङ्ग तत्० (पु०) सङ्गति विशेष, प्रसक्ति, प्रस्ताव, मैथुन, सम्बन्ध, उद्देश, उपलक्ष, अवसर।
प्रसन्न तत्० (पु०) सन्तुष्ट, दयान्वित, निर्मल, स्वच्छ, प्रफुल्ल।—चित्त (पु०) सन्तुष्ट चित्त, दयालु, अनु-

ग्राहक।—ता (स्त्री०) सन्तोष, प्रसाद, प्रफुल्लता, निर्मलता, स्वच्छता।

प्रसव तत्० (पु०) गर्भ मोचन, अपत्य जन्म, फल, कुसुम, फूल।—गृह (पु०) सूतिका गृह, सौरि।

प्रसर तत्० (पु०) प्रकृष्ट रूप से सञ्चार, विस्तार, प्रणय, वेग, समूह।

प्रसरण तत्० (पु०) सेना आदि का चारों तरफ़ फैलाव।

प्रसाद तत्० (पु०) प्रसन्नता, नैर्मल्य, अनुग्रह, काव्य का गुण विशेष, स्वास्थ्य, सुस्थता, देव निवेदित द्रव्य, नैवेद्य, गुरु की जूठन।

प्रसादन तत्० (पु०) प्रसन्नता करण, सेवन, मनाना, प्रसन्न करना।

प्रसादी तत्० (गु०) प्रसन्नता युक्त, कृपा विशिष्ट, देव निवेदित अन्न।

प्रसाधन तत्० (पु०) निष्पादन, सम्पादन, वेश रचना।

प्रसाधनी तत्० (स्त्री०) कङ्कतिका, कँगही।

प्रसाधिका तत्० (स्त्री०) वेश कारिणी, वेश रचना करने वाली, शृङ्गार करने वाली।

प्रसार तत्० (पु०) प्रसरण, विस्तार, फैलाव प्रकरण।

प्रसारण तत्० (पु०) विस्तार करण, पसारना, बिछाना, पञ्चविध कर्म के अन्तर्गत एक प्रकार का कर्म।

प्रसारित तत्० (गु०) विस्तारित, विस्तृत, फैलाया हुआ।

प्रसिद्ध तत्० (गु०) ख्यात, नामलब्ध प्रतिष्ठित, प्रचलित, भूषित।

प्रसिद्धि तत्० (स्त्री०) ख्याति, प्रचार, भूषा, अलङ्कार।

प्रसू तत्० (स्त्री०) माता, जननी, अम्बा।

प्रसूत तत्० (गु०) उत्पन्न, जात।

प्रसूता तत्० (स्त्री०) जातापत्या, प्रसवकारिणी, जिसने बच्चे उत्पन्न किये हैं।

प्रसूति तत्० (स्त्री०) प्रसव, उद्भव, उत्पत्ति, जन्म, जन्माना, दक्ष की पत्नी और सती की माता का नाम, दक्ष यज्ञ का विनाश करके जब महादेव ने दक्ष को मार डाला था, तब इन्हीं की प्रार्थना से महादेव ने दक्ष को पुनः जीवित किया था।

प्रसून तत्० (पु०) पुष्प, फूल, कुसुम।

प्रस्तर तत्० (पु०) पाषाण, पत्थर, पाथर, शिला उपल, पल्लवादि रचित शय्या।—मय (पु०) पाषाणमय, पथरीला।

प्रस्ताव तत्० (पु०) अवसर, प्रसङ्ग स्तुति, प्रसङ्ग, प्रकरण, वृत्तान्त, कथा, कथानुष्ठान।

प्रस्तावना तत्० (स्त्री०) आरम्भ, वाक्यानुष्ठान भूमिका, अवतरणिका, मुख्य वक्तव्य के पहले का वक्तव्य।

प्रस्ताविक तत्० (गु०) समयानुसार, यथासमय।

प्रस्तावित तत्० (गु०) कथित, उल्लिखित, कृत, विचारित, कर्तव्य रूप से निर्द्धारित।

प्रस्तार तत्० (पु०) पत्तों की बनाई शय्या, छन्दों के भेद जानने वाले सङ्केत विशेष।

प्रस्तुत तत्० (गु०) प्रकरण प्राप्त, प्राकरणिक, प्रासङ्गिक, निष्पन्न, प्रकर्ष, स्तुति युक्त, उपस्थित, प्रतिपन्न, उद्यत।

प्रस्थ तत्० (गु०) प्रकृष्ट स्थिति विशिष्ट। (पु०) परिमाण विशेष, तौल, एक सेर, पर्वत का एक देश, पर्वत की समतल भूमि।

प्रस्थान तत्० (पु०) गमन, यात्रा, प्रयाण, निर्गम।

प्रस्थापन तत्० (पु०) प्रेरण, प्रेषण, पठाना, भेजना।

प्रस्थापित तत्० (गु०) प्रेषित, प्रेरित, अति सुन्दर रूप से स्थापित।

प्रस्फुटित तत्० (गु०) प्रफुल्लित, प्रकाशित, विकासित।

प्रस्रवण तत्० (पु०) उत्तम रूप से बहना, पर्वत का निर्झर, एक पर्वत का नाम।

प्राव तत्० (पु०) पुत्र, पुत्र।

प्रस्वेद तत्० (पु०) अतिशय घर्म, अधिक पसीना।

प्रहर तत्० (पु०) दिन के आठ भाग का एक भाग, चार घड़ी।

प्रहरी तत्० (पु०) यामिक, पहरुआ, पहरेदार, चौकीदार।

प्रहर्ष तत्० (पु०) अतिशय आह्लाद, अत्यन्त हर्ष।

प्रहर्षिणी तत्० (स्त्री०) त्रयोदशाक्षर छन्द विशेष।

प्रहसन तत्० (पु०) परिहास, उपहास, आक्षेप, रूपक विशेष, नाटक का एक भेद।

प्रहस्त तत्० (पु०) विस्तृत अङ्गुलि वाला हाथ, चापट, थापड़, तमाचा, रावण के एक सेनापति का नाम।

प्रहार तत्० (पु०) आघात, मारण।

प्रहारी तत्० (पु०) मारणकर्ता, मारने वाला।

प्रहित तत्० (पु०) क्षिप्त, निरस्त, प्रेषित, प्रेरित।

प्रहृष्ट तत्० (पु०) सन्तुष्ट, उल्लसित, आनन्दित। —मना (पु०) सन्तुष्ट चित्त।

प्रहेलिका तत्० (स्त्री०) दुर्विज्ञ प्रश्न, कूटार्थ भाषित, दुरूह वाक्य, पहेली।

प्रह्लाद तत्० (पु०) दैत्यपति हिरण्यकशिपु का पुत्र। ये परम विष्णु भक्त थे, बाल्यावस्था ही से इनकी विष्णुभक्ति प्रकाशित हो गयी थी। दैत्यराज ने अपने पुरोहित षण्ड और अमरक को प्रह्लाद को पढ़ाने के लिये नियुक्त किया था। प्रह्लाद की विष्णुभक्ति देख कर बेचारे ब्राह्मण रोज़ी जाने के भय से काँपने लगे। अपना बचाव करने के लिये उन लोगों ने हिरण्यकशिपु से कह दिया कि राजपुत्र नास्तिक हो गया। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को बहुत समझाया परन्तु कुछ फल नहीं हुआ। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को कुपुत्र समझ कर उसे मार डालने के लिये अनेक प्रयत्न किये परन्तु प्रह्लाद नहीं मरे। एक दिन प्रह्लाद अपने पिता के सामने भगवान् का गुण कीर्तन करने लगे। प्रह्लाद ने कहा परमेश्वर व्यापक हैं, उनकी प्रभा चारों ओर फैली हुई है। हिरण्यकशिपु ने कहा तो इस खम्भे में तेरा ईश्वर क्यों नहीं है, प्रह्लाद ने खम्भे की ओर देख कर भगवान् को प्रणाम किया। परन्तु हिरण्यकशिपु खम्भे में भगवान् को नहीं देख सका था, अतएव उसने खम्भे पर पदाघात किया। बस, वह खम्भा बीच से फट गया वहीं से नृसिंह रूपधारी भगवान् प्रकट हुए और उन्होंने दैत्यकुल का नाश कर दिया। देव पितर ऋषि आदि सभी वहाँ उपस्थित हुए और उन लोगों ने भगवान् की स्तुति की, परन्तु नृसिंह का क्रोध शान्त नहीं हुआ। अन्त में प्रह्लाद उनकी स्तुति करने लगा, भगवान् ने कहा, प्रह्लाद मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। तुम वर माँगो, प्रह्लाद ने कहा कि महाराज, आप मुझे वर का लालच न दिखावें, हम कामासक्त हैं, अतएव हमको वर न चाहिये, यदि आप वर देना चाहते हो हों तो यही वर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी वासना उत्पन्न न हो। भगवान् ने यही वर दिया। पुनः भगवान् के कहने से प्रह्लाद ने दूसरा वर यह माँगा कि मेरे पिता का अपराध क्षमा हो भगवान् ने "एवमस्तु" कह कर पितृ-शोक-कातर प्रह्लाद को आश्वासित किया।

प्राक् तत्० (अ०) पूर्व, आगे, पहले, प्रथम, आद्य, आदि, आरम्भ।—तन (पु०) पुराना, प्राचीन, पहला।—काल (पु०) पूर्वकाल, प्राचीन समय।

प्राकाम्य तत्० (पु०) शिव के षड्विध ऐश्वर्यों के अन्तर्गत ऐश्वर्य विशेष, यथेष्टता, प्रचुरता, स्वेच्छानुसार।

प्राकार तत्० (पु०) ईंटों की बनी दीवार, चार दीवारी, कोट की भीत, नगर के चारों ओर की दीवार।

प्राकृत तत्० (पु०) प्रकृत सम्बन्धी, नीच, अधम, अन्त्यज, भाषा विशेष, वास्तविक, वस्तुतः। स्वाभाविक।—ज्वर (पु०) वर्षा शरत् और वसंत-ऋतु में क्रम से वातपित्त और कफ से उत्पन्न ज्वर। —प्रलय (पु०) प्रलय विशेष, प्रकृति का नाश, महाप्रलय।—भाषा (स्त्री०) भाषा विशेष, संस्कृत का एक भेद।—शत्रु (पु०) एक देश पर अपना अपना अधिकार चाहने वाले राजा। स्वाभाविक शत्रु।

प्राखर्य तत्० (पु०) प्रखरत्व, तीक्ष्णता ।

प्रागभाव तत्० (पु०) संसर्गाभाव विशेष, विनाश भावत्व, सम्भावना, किसी वस्तु के उत्पन्न होने के पहले का अभाव ।

प्रागल्भ्य तत्० (पु०) प्रगल्भता, अहङ्कार, अभिमान, दर्प, गर्व, घमण्ड, व्यापकता, औद्धत्य, स्त्रियों का स्वाभाविक भाव ।

प्राघूर्णिक तत्० (पु०) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत ।

प्राची तत्० (स्त्री०) पूर्व दिशा, सूर्योदय दिक्, पूर्व दिक् ।

प्राचीन तत्० (गु०) पूर्व देश का उत्पन्न, पूर्व दिशा का उत्पन्न, पूर्वकाल का उत्पन्न, पुरातन, पूर्वकालीन, वृद्ध ।—**गाथा** (स्त्री०) प्राचीन कथा, पुरातन इतिहास ।—**ता** (स्त्री०) पूर्वकालीनता, प्राचीनत्व, पुरातनत्व, वृद्धावस्था ।—**बर्हि** (पु०) राजा विशेष ।

प्राचीर तत्० (पु०) बाहर का कोट, प्राकार, चार दिवारी ।

प्राचुर्य तत्० (पु०) प्रचुरता, अधिकता, बाहुल्य, बहुत्व ।

प्राच्य तत्० (पु०) शरावती नदी के पूर्व दक्षिणदेश । (गु०) पूर्वदेशीय, पूर्वदेश-उत्पन्न ।

प्राजापत्य तत्० (पु०) द्वादश दिन का व्रत, रोहिणी नक्षत्र, प्रयाग, विवाह विशेष, याग विशेष ।

प्राज्ञ तत्० (गु०) पण्डित, बुद्धिमान्, अभिज्ञ, विज्ञ, दक्ष, निपुण ।

प्राज्य तत्० (गु०) प्रचुर, यथेष्ट, बहु, अधिक ।

प्राञ्जल तत्० (गु०) सरल, ऋजु, सीधा ।

प्राञ्जलि तत्० (स्त्री०) संयुक्त करद्वय, अञ्जलिपुट ।

प्राड्विवाक तत्० (पु०) व्यवहार द्रष्टा, विचारक, न्यायकर्ता ।

प्राण तत्० (पु०) हृदयस्थ वायु, जीव, अनिल, वायु, निश्वास, ब्रह्मा, प्रजापति, स्वनाम ख्यात वणिक् द्रव्य ।—**त्याग** (पु०) जीवन विसर्जन, जीवन त्याग, मृत्यु, मरण ।—**दण्ड** (पु०) वध दण्ड, प्राण नाशक दण्ड ।—**दाता** (पु०) जीवन दाता, प्राण रक्षक ।—**नाथ** (पु०) स्वामी, नाथ, पति, प्रभु ।—**पण** (पु०) प्राणत्याग, प्राण त्याग प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास ।—**प्रतिष्ठा** (स्त्री०) प्रतिमा आदि में देवत्वकरण, जीव संस्कार ।—**प्रिय** (गु०) प्रियतम, प्राण तुल्य प्रिय ।—**मय कोष** (पु०) कर्मेन्द्रिय सहित प्राण पञ्चक ।—**सम** (गु०) प्राण तुल्य, प्राण सदृश ।—**समा** (स्त्री०) जाया, भार्या, पत्नी ।

प्राणान्त तत्० (पु०) प्राणावसान, प्राण शेष, नाश, मृत्यु ।

प्राणायाम तत्० (पु०) योगाङ्ग विशेष, श्वास विरोध, रेचक, पूरक और कुम्भक नामक प्राणों को दमन करने का उपाय ।

प्राणी तत्० (गु०) प्राण विशिष्ट, मनुष्य आदि सब तन जीव, शरीरी, देही, जीवधारी ।

प्राणेश तत्० (पु०) पति, स्वामी, प्राणों का ईश्वर ।

प्रातः तत्० (अ०) प्रभात, विहान, सूर्योदय के समय का तीन मुहूर्त काल ।—**कर्म** (पु०) प्रातःकाल किया जाने वाला कर्म ।—**काल** (पु०) सूर्योदय के अनन्तर छ दण्ड काल ।—**क्रिया** (स्त्री०) प्रातःकाल का कर्त्तव्य कर्म ।—**सन्ध्या** (स्त्री०) प्रातःकाल की सन्ध्या, प्रातःकाल की जाने वाली वैदिक मन्त्रोपासना ।

प्रातराश तत्० (पु०) प्रातःकालीन भोजन, प्रातर्भोजन, जलपान, जलखावा ।

प्रातिकूल्य तत्० (पु०) वैपरीत्य, विरुद्धाचरण, विपक्षता, शत्रुता ।

प्रादुर्भाव तत्० (पु०) आविर्भाव, उदय, प्रकाश, महिमा ।

प्रादेश तत्० (पु०) तर्ज्जनी सहित विस्तृत अङ्गुष्ठ, वितस्ति, बित्ता ।

प्राधा तत्० (स्त्री०) प्रजापति महर्षि कश्यप की भार्या, गन्धर्व और अप्सरा इन्हींके गर्भ से उत्पन्न हुए हैं ।

प्राधान्य तत्० (पु०) प्रधानता, प्रधानत्व, श्रेष्ठता मुख्यता ।

प्रान्त तत्० (पु०) अन्त भाग, शेष, सीमा, किनार ।

प्रान्तर तत्० (पु०) दूर शून्य पथ, दुर्गम पथ, छाया जल आदि रहित स्थान, उजाड़ स्थान, वीरान, जङ्गल।
प्रापक तत्० (पु०) प्रापणकर्ता, पहुँचाने वाला।
प्रापण तत्० (पु०) प्राप्ति, पावना, पहुँचाना, मिलना।
प्राप्त तत्० (गु०) लब्ध, समासादित, मिलित, उपस्थित।—काल (पु०) निर्दिष्ट काल, उपयुक्त समय।
प्राप्ति तत्० (स्त्री०) पाना, लाभ, अधिगम, उपार्जन, धनादि वृद्धि।
प्राप्य तत्० (गु०) प्राप्तव्य, प्रापणीय।
प्रामाणिक तत्० (गु०) अति मान्य सिद्धान्त, यथार्थ, सत्य।
प्रामाण्य तत्० (पु०) ग्राह्यत्व, ग्रहण करने योग्य, प्रमाण सिद्ध।
प्रायः तत्० (अ०) बाहुल्य, बहुधा, कभी कभी, लगभग, क़रीब।
प्रायश्चित तत्० (पु०) पापनाशन कर्म, पापक्षय करने वाले कर्म।
प्रारब्ध तत्० (पु०) पूर्वानुष्ठित कर्म, अदृष्ट, प्राक्तनकर्म, पूर्व कर्म, भाग्य।
प्रारम्भ तत्० (पु०) उत्तम रूप से, आरम्भ, उपक्रम, अनुष्ठान।
प्रार्थना तत्० (स्त्री०) याञ्चा, निवेदन, रीति से माँगना।
प्रार्थित तत्० (गु०) याचित, निवेदित, विनय किया, वाञ्छित, जाँचा, माँगा।
प्रालब्ध तद्० (स्त्री०) ललाट, भाग्य, अदृष्ट।
प्रावृत तत्० (पु०) घूँघट, ओढ़नी।
प्रासाद तत्० (पु०) मन्दिर, मकान, देवता और राजाओं के रहने का भवन।
प्रिय तत्० (गु०) इष्ट, स्नेह-पात्र, प्रियतम, प्रेमी, प्रणयी।—तम (पु०) अत्यन्त प्रिय, पति।—वादी (गु०) मिष्टभाषी, प्रशंसक, स्तुतिकर्ता।
प्रिया तत्० (स्त्री०) प्रेमास्पदा नारी, प्रियतमा, प्रणयिनी।
प्रीत तत्० (गु०) तुष्ट, सन्तुष्ट, प्रेम पात्र, प्रिय।
प्रीति तत्० (स्त्री०) प्रेम, स्नेह, प्यार, प्रणय।
प्रेङ्खन तत्० (पु०) हिंडोला, डोला।
प्रेत तत्० (पु०) भूत, पिशाच, योनि विशेष, मृतक।—कर्म (पु०) अन्त्येष्टि क्रिया, श्राद्ध।—नदी (स्त्री०) वैतरणी नदी।
प्रेतनी दे० (स्त्री०) भूतनि, डाँकनी, डायन, चुड़ैल।
प्रेम तत्० (पु०) स्नेह, प्रियता, हार्द, प्रणय, प्रीति।—भक्ति (स्त्री०) स्नेहयुक्त भगवत्सेवा, भगवान् में एकान्त प्रीति।
प्रेमास्पद तत्० (गु०) स्नेह भाजन, प्रणयी, प्रणयभाजन।
प्रेमी तत्० (गु०) प्रेमयुक्त, स्नेहयुक्त, स्नेह भाजन।
प्रेयसी तत्० (स्त्री०) प्रियतमा नारी, दयिता, कान्ता, वल्लभा, प्रिया।
प्रेरक तत्० (पु०) प्रेरणकर्ता, प्रेषक, पठाने वाला, भेजने वाला।
प्रेरण तत्० (पु०) प्रेषण, पठाना, भेजना।
प्रेरणा तत्० (स्त्री०) विधि, आज्ञा, आदेश।
प्रेरित तत्० (गु०) प्रेषित, नियोजित, पठाया, भेजा हुआ, नियुक्त किया गया।
प्रेष्ठ तत्० (गु०) अतिशय प्रिय, अत्यन्त स्नेह पात्र, अत्यन्त वल्लभ।
प्रेष्य तत्० (गु०) प्रेरणीय, दास, भृत्य, सेवक, आज्ञानुवर्ती, आज्ञा पालक।
प्रोक्त तत्० (गु०) कथित, उत्तम प्रकार से कथित।
प्रोत्साह तत्० (पु०) अतिशय उत्साह, अत्यधिक, उद्योग।
प्रोषित तत्० (गु०) प्रवासगत, विदेशस्थ, परदेशी।—पतिका (स्त्री०) विदेशस्थ पतिका नायिका विशेष, यथा—

> जाको पिय परदेश में विरह विकल तिय होय।
> प्रोषितपतिका नायिका ताहि कहत सब कोय॥
> —रसराग।

प्रोहित दे० (पु०) पुरोहित।

प्रौढ तत्० (गु०) प्रवृद्ध प्रगल्भ, निपुण, यौवनावस्था के बाद की अवस्था, विवाहित।

प्रौढा तत्० (स्त्री०) तीस वर्ष से पचास वर्ष तक की स्त्री, नायिका विशेष। यथाः—

निज पति सो रति केलि की, सकल कलानि प्रवीन।
ताका प्रौढ़ा कहत हैं जे कविता रसलीन॥
—रसराज।

प्रौढ़ि तत्० (स्त्री०) सामर्थ्य, उत्साह, प्रगल्भता, उद्यम, उद्योग, अध्यवसाय।—वाद (पु०) प्रभुता के सहित विवाद।

प्लव तत्० (पु०) मेष, वानर, चाण्डाल, उछलन, भूमि, जलकाक पानी कौड़ी, बेड़ा नाव, तरणि।

प्लवङ्गम तत्० (पु०) वानर, कपि।

प्लावन तत्० (पु०) जलमय, डूबा।

प्लीहा तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, पिलही, तल्ली तिल्ली।

प्लुत तत्० (पु०) स्वर विशेष, अतिशय दीर्घ स्वर।

प्लुति तत्० (स्त्री०) कूदना, फाँदना, उछलना।

फ

फ यह व्यञ्जन का बाइसवाँ अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है इस कारण इस वर्ण को ओष्ठ्य कहा है।

फँदना दे० (क्रि०) फसना, अटकना, उलझना, रुकना।

फँदलाना दे० (क्रि०) भुलाना, भुलावा देना, फुसलाना।

फंदा दे० (पु०) पाशु, फाँसी, फसरी, उलझन, अटकन।

फँसना दे० (क्रि०) उलझना, अटकना, बझना, फन्दे में फँसना।

फँसाव दे० (पु०) उलझाव, अटकाव।

फँसियारा दे० (पु०) बटवार, बटमार, ठग, जल्लाद।

फकड़ी दे० (स्त्री०) अनादर, अपमान, तिरस्कार।

फकिया दे० (स्त्री०) फाँक, खण्ड, टुकड़ा, अंश, भाग।

फकोड़िया दे० (पु०) बतक्कड़, बकझकिया, बकवादी, गप्पी।

फकोड़ियात दे० (स्त्री०) बे सिर पैर की बात, अनर्थक बात, बिना प्रयोजन की कथा।

फक्क तत्० (पु०) दुराचार, दुराचारी मन्दगति, रिंगन।

फक्कड़ दे० (गु०) उच्छृङ्खल, हुड़, बखेड़िया, झगड़ालू, लड़ाकू।

फक्का दे० (पु०) पट्ठा, पतला, नातीक्षा, पूर्वपक्ष वितण्डा।

फक्किका तत्० (स्त्री०) असद्व्यवहार, धोखा भुलावा, पूर्वपक्ष, मिथ्या न्याय सम्बन्धी व्याख्या।

फक्की दे० (स्त्री०) फाँकी, दवा की मात्रा।

फगुनहट दे० (स्त्री०) फागुन की हवा।

फगुवा दे० (पु०) होली, होली का व्यवहार।

फङ्का दे० (पु०) कवल, ग्रास, फकाव।

फङ्गा दे० (पु०) कीट, कीड़ा पतङ्ग।

फट दे० (गु०) प्रकाश प्राप्त, विकसित, फूला हुआ प्रफुल्लित। (अ०) फटकार, तिरस्कार, अनादर मन्त्राक्षर।

फटक तत्० (पु०) स्फटिक, प्रस्तर विशेष।

फटकन दे० (स्त्री०) पछोरन, भूसा।

फटकना दे० (क्रि०) पछोरना, अन्न से भूसा निकालना।

फटकिरी दे० (स्त्री०) फिटकिरी, क्षार विशेष।

फटकी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का जाल जिससे पक्षी पकड़े जाते हैं, व्याध का बड़ा पिंजरा।

फटना दे० (क्रि०) टूटना, टुकड़े होना, तड़कना दो खण्ड होना।

फटफटाना दे० (क्रि०) व्याकुल होना, हाथ पैर धुनना, विवश होने के कारण उछलना कूदना।

फटा दे० (गु०) सछिद्र, फाँकदार, दरका हुआ।

फटाक दे० (अ०) शीघ्र, तुरत, तुरन्त, उसी समय, तत्क्षण।

फटाका दे० (पु०) धड़ाका, बन्दूक आदि का शब्द।

फटाना दे० (क्रि०) अलग होना, पृथक् होना।

फटाव दे० (पु०) विलगाव, भिन्नता, भेद।

फटिक तद्० (पु०) स्फटिक, बिल्लौरी पत्थर।

फड़ दे० (स्त्री०) द्यूत स्थान, जुआ घर।

फड़क दे० (स्त्री०) स्फुरण, थरथर, मन्दगति, ईषत्-स्पन्दन।

फड़कना दे० (क्रि०) स्फुरण होना, फुरफुराना, वायु के कारण अङ्गों का ईषत् कम्पन, फरकना।

फड़की दे० (स्त्री०) ओट, व्यवधान, अन्तर, आड़।

फड़फड़ाना दे० (क्रि०) तलफना, छटपटाना।

फड़फड़िया दे० (गु०) धृष्ट, ढीठ, प्रगल्भ, बकवादी।

फड़ाना दे० (क्रि०) चिरवाना, चिराना, फड़वाना।

फड़िङ्गा दे० (स्त्री०) झिल्ली, झींगुर, एक प्रकार का कीट।

फड़िया दे० (पु०) पैकार, बिसाती, खरीद कर बेचने वाला, व्यापारी।

फण तद्० (पु०) साँप का चौड़ा मस्तक, फणा, फन।
—धर (पु०) नाग, सर्प, साँप।

फणिज्झक तद्० (पु०) छोटा पत्ता, तुलसीदल।

फणिपति तद्० (पु०) सर्पराज, शेष, अनन्त, वासुकी।

फणी तद्० (पु०) सर्प, साँप, नाग।

फणीन्द्र तद्० (पु०) सर्पराज, फणिपति, वासुकि, अनन्त।

फदफदाना दे० (क्रि०) उबलना, बलबलाना, छोटे छोटे दाने पड़ना।

फनगा दे० (पु०) अँखफोड़ा, टिड्डी, कीट विशेष।

फनफनाना दे० (क्रि०) फुफकारना, फुफकार छोड़ना, उत्तेजित होना।

फफसा दे० (गु०) फूला हुआ, फीका, फोफसा।

फफून्दी दे० (स्त्री०) सड़ी हुई गुमसाहट।

फफोला दे० (पु०) छाला, स्फोट, स्फोटक, फुल्का, फलका।

फफोले फूटना दे० (वा०) मानसिक दुःख, मन की चिन्ता, आधिमानसी व्यथा।

फफोले दिल के फोड़ना दे० (वा०) मन की चाह पूरी करना, गुब्बार निकालना, इच्छा पूर्ण करना।

फब दे० (स्त्री०) शोभा, मनोहरता, रमणीयता रम्यता।

फबकना दे० (क्रि०) पनपना, डाल निकलना, शाखा फूटना।

फबता दे० (गु०) योग्य, सजता, ठीक, सुहाना।

फबती कहना दे० (वा०) घटती हुई बातें कहना, चुटकुला कहना, हँसी करना, चुहल करना, किसी की शोभा को दूषना।

फबन दे० (स्त्री०) शोभा, शृङ्गार, सजावट, छाजन।

फबना दे० (क्रि०) सोहना, शोभना, शोभा देना या पाना।

फबीला दे० (गु०) सजीला, शोभायमान, रम्य, रमणीय।

फर दे० (पु०) फल।

फरकना दे० (क्रि०) फड़कना, काँपना, स्फुरण होना, फुरफुराना।

फरचा दे० (पु०) परिष्कार, निष्पत्ति, मेघों का फटना।

फरचाना दे० (क्रि०) आज्ञा देना, चुकाना।

फरछा दे० निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध।

फरछाना दे० (क्रि०) स्वच्छ करना, निर्मल करना, शोधना, मलना।

फरफन्द दे० (पु०) छल, कपट, धोखा, दुष्टता।

फरफन्दिया दे० (गु०) छली, कपटी, धोखेबाज़।

फरस दे० (पु०) बिछौना।

फरसा दे० (पु०) फावड़ा, कुल्हाड़ी।

फरहरा दे० (पु०) ध्वजा, पताका, केतु।

फरहरी दे० (स्त्री०) झपटी का कपड़ा। (गु०) अधसुखा।

फरिया दे० (स्त्री०) लहँगा, सारी, ओढ़नी।

फरी दे० (स्त्री०) ढाल, फलक।

फरुहा दे० (पु०) फावड़ा, अस्त्र विशेष, जिससे मिट्टी बटोरी जाती है।

फर्राटा दे० (पु०) पाँस का टुकड़ा, शब्द विशेष।

फर्राना दे० (स्त्री०) हिलना, उड़ना, फहराना।

फल तत्० (पु०) शस्य, लाभ, फलक, चर्म ढाल, इष्टसिद्धि, अभिप्राय, कर्म जन्य शुभ या अशुभ फल, अनिष्ट इष्ट।—जनक (पु०) फलद, सफल। —द (गु०) फलदाता, फलदायक।—दाता (पु०) फल देने वाला, फल प्रद।—मूल (पु०) फल और मूल।

फलक तत्० (पु०) चर्म, ढाल, अस्थि खण्ड, नागकेसर, काष्ठ पट्टक, पटरा, तख़्ता।

फलना दे० (क्रि०) सफल होना, फल लगना, फरना।

फलघुम्भीचल दे० (पु०) एक प्रकार का खेल।

फलवान् तत्० (गु०) सफल, सार्थक, फलयुक्त।

फला दे० (पु०) युक्त अक्षर, सारे स्वर, बाणादि का अग्रभाग, अस्त्रों की धार।

फलाङ्ग दे० (पु०) प्लुत गति, लाँघ, लङ्घन, फलास।

फलान दे० (पु०) अमुक।

फलाफल तत्० (पु०) लाभालाभ, हिताहित।

फलास दे० (पु०) ढेंग, फलाङ्ग।

फलाहार तत्० (पु०) फल भोजन, अन्नातिरिक्त भोजन।

फलित तत्० (गु०) फल विशिष्ट, सफल, ज्योतिष विशेष।

फलितार्थ तत्० (पु०) [फलित+अर्थ] सिद्ध अर्थ, तात्पर्यार्थ, सिद्धान्त।

फलियाँ दे० (स्त्री०) छीमी, फली।

फली तत्० (गु०) फल युक्त, फलवान्, सफल, फल विशिष्ट, छीमी, फलियाँ।

फलूवा दे० (पु०) गठीला, झालर।

फलोदय तत्० (पु०) [फल+उदय] लाभ, प्राप्ति, मनोरथ सिद्धि, आनन्द।

फलोत्तमा तत्० (स्त्री०) द्राक्षा वृक्ष, मुनक्का।

फल्गु तत्० (गु०) असार, निरर्थक, तुच्छ। (पु०) गया की एक नदी का नाम। इसी नदी के तीर पर गया शहर बसा है।

फसकड़ दे० (पु०) पैर फैला कर बैठना।

फसकना दे० (क्रि०) फटना, फूटना, दरकना, मसकना, ढीला होना, शिथिल पड़ना।

फसकाना दे० (क्रि०) फाड़ना, दरकाना, ढीला करना, शिथिल करना।

फसना दे० (क्रि०) बझना, रुकना, उलझना।

फसफसा दे० (गु०) निर्बल, पिलपिला।

फसाना दे० (क्रि०) उलझाना, बझाना, बाधित करना, वश में करना।

फहराना दे० (क्रि०) ध्वजा उड़ाना, फर्राना।

फाँक दे० (स्त्री०) फल आदि का टुकड़ा, अंश, विभाग, हिस्सा, भाग।

फाँकना दे० (क्रि०) फक्का मारना, खाना, चबाना।

फाँकी दे० (स्त्री०) पूर्वपक्ष, न्याय की व्याख्या, शास्त्रीय प्रश्नों का विचार, फक्किका, दवा की मात्रा, चूर्ण।

फाँद दे० (पु०) फन्दा, फाँसी, पाश, फसड़ी।

फाँदना दे० (क्रि०) कूदना, उछलना, प्लुतगति, लाँघना।

फाँदा दे० (पु०) फन्दा, फाँसी, फसड़ी।

फाँदी दे० (स्त्री०) भार, पेड़ों का बोझा।

फाँपना दे० (क्रि०) फूलना, सूजना, सूजन होना।

फाँपा दे० (गु०) फूला, सूजा।

फाँफड़ दे० (पु०) व्यवधान, अवकाश, अंतर, छेद, मुँह, छिद्र।

फाँस दे० (पु०) सूक्ष्म काँटा, सींक।

फाँसना दे० (क्रि०) रोकना, बाँधना, अटकाना, उलझाना, बझाना, पकड़ना, जाल में बझाना।

फाँसा दे० (पु०) फाँदा, फन्दा, फँसड़ी।

फाँसी दे० (स्त्री०) दण्ड विशेष, प्राण दण्ड, एक प्रकार की रस्सी जिससे गला दबा कर आद

मार डाले जाते हैं।—देना (क्रि०) मार डालना, मरवा डालना, सूली पर चढ़ाना।—पड़ना (वा०) मारा जाना, प्राण दण्ड से दण्डित होना, सूली पर चढ़ाया जाना।—लगाना (वा०) गला घोंट कर मरना, फाँसी लगा कर मरना, आत्म-हत्या करना।

फाग दे० (पु०) राग विशेष, होली का गाना, होली का खेल, होली में रङ्ग आदि डालना।—खेलना (वा०) होली का त्योहार मनाना, रङ्ग डालना।

फागुन दे० (पु०) फाल्गुन मास, बारहवाँ महीना।

फाटक दे० (पु०) द्वार, दरवाज़ा, बाहर का दरवाज़ा।

फाटना दे० (क्रि०) फूटना, टूटना, बिगड़ना, नुक-सान।

फाड़खाऊ दे० (गु०) काटने वाला, कटहा, कट-खना।

फाड़खाना दे० (क्रि०) काटना, काट खाना, सताना, क्रोध करना।

फाड़ना दे० (क्रि०) चीरना, फोड़ना, तोड़ना।

फारा दे० (गु०) चीरा हुआ, फटा, टुकड़ा।

फाल तद्० (पु०) हलोत्करण, एक प्रकार की लोहे की कील जो हल के आगे लगाई जाती है, जिससे ज़मीन खोदी जाती है। शिव, बलराम। कार्पास वस्त्र विशेष, नवविध शपथ के अन्तर्गत अष्टम शपथ। सुपारी का टूक।

फालसा दे० (पु०) फल विशेष।

फाल्गुन तद्० (पु०) वर्ष का बारहवाँ मास, अर्जुन, पार्थ।

फाव दे० (पु०) घलवा, वस्तु ख़रीदने के बाद जो बिना दाम लिया जाता है।

फावड़ा दे० (पु०) कुदार, कुदारी, फरसा।

फावड़ी दे० (स्त्री०) छोटा कुदार, कुदाली।

फाहा दे० (पु०) रुई का छोटा गाला, जिसमें सुगन्ध द्रव्य अतर आदि लगा रहता है। पट्टी, मलहम की पट्टी।

फिकारना दे० (क्रि०) सिर नङ्गा करना, सिर उघा-रना।

फिकिर दे० (स्त्री०) चिन्ता, उपाय, कल्पना।

फिट दे० (पु०) धिक्कार, दुत्कार, तिरस्कार, अप-मान।

फिटकरी दे० (स्त्री०) क्षार विशेष।

फिटकार दे० (पु०) धिक्कार, तिरस्कार, गाली, शाप, सराप।

फिटकारना दे० (क्रि०) धिक्कारना, तिरस्कार करना, शाप देना, सरापना।

फिटाना दे० (क्रि०) फेंटना, मिलाना, फिनाना।

फिर दे० (अ०) और, पुनः, अनन्तर।

फिरकी दे० (स्त्री०) एक खेलने की वस्तु।

फिर जाना दे० (क्रि०) लौटना, लौट आना, पल-टना, मुड़ जाना, पराङ्मुख होना।

फिरत दे० (गु०) फिरा हुआ, लौटाया हुआ, लौटाया गया, फेरा हुआ।

फिरता दे० (गु०) रमता, चलता, घूमता।

फिरना दे० (क्रि०) घूमना, भ्रमण करना, पर्यटन करना, रमना, लौटना, पलटना, रमना, मुड़ना।

फिराना दे० (क्रि०) घुमाना, लौटाना, पलटाना, मोड़ना।

फिराव दे० (पु०) घुमाव, फेरबदल, पलटाव।

फिर्नी दे० (स्त्री०) खेलने की एक वस्तु।

फिल्ली दे० (स्त्री०) पिण्डली, घुटना।

फिसफिसाना दे० (क्रि०) डरना, भीत होना, आगा पीछा करना।

फिसलना दे० (क्रि०) खसकना, गिरना, खिसकना, रपटना।

फिसलाहा दे० (गु०) चिकनाहा, पिच्छिल, जहाँ की भूमि बहुत चिकनी हो।

फिसलाहट दे० (स्त्री०) चिकनाहट, चिकनाहट।

फींचना दे० (क्रि०) धोना, धोती धोना, कपड़े धोना।

फीका दे० (गु०) नीरस, स्वाद रहित, अमल, मीठा।

फुँकार दे० (पु०) फुफकार, क्रुद्ध सर्प आदि का शब्द।

फुकना दे० (क्रि०) जलना, बुझाना। (पु०) थैली।

फुकनी दे० (स्त्री०) आग फूँकने के लिये बाँस की या धातु विशेष की चोंगी।

फुट दे० (गु०) अलग, भिन्न, अयुग्म, एकाकी, अकेला।

फुटकर दे० (गु०) भिन्न भिन्न, अलग अलग, पृथक् पृथक्।

फुटकी दे० (स्त्री०) छिटकी, अयुग्म, असहाय, अकेला, एकाकी।

फुड़िया दे० (स्त्री०) फुंसी, छोटा घाव।

फुत्कार दे० (पु०) दुतकार, तिरस्कार।

फुदकना दे० (क्रि०) फुदकना, उछलना।

फुदकी दे० (स्त्री०) पक्षि विशेष।

फुनगी दे० (स्त्री०) कली, कोंपल, मञ्जरी, कोमल पत्ते।

फुनङ्ग दे० (स्त्री०) शिखर, चोटी, ऊपर की भूमि, ऊपर का भाग।

फुनसी दे० (स्त्री०) मुहासा, फुड़िया, छोटे छोटे घाव।

फुन्दना दे० (पु०) झब्बा, झालर, गुच्छा, स्तवक।

फुफ्फा दे० (पु०) बुआ के पति, फुफ्फी के स्वामी, फूफा।

फुफ्फी दे० (स्त्री०) पिता की बहिन, फूआ, बुआ।

फुफकार दे० (पु०) फुत्कार, फूँ फूँ का शब्द, फुँकार।

फुफेरा दे० (गु०) फूआ के सम्बन्धी।

फुर दे० (पु०) सत्य, यथार्थ, ठीक, परीक्षित, सच्चा, प्रमाणित।

फुरफुराना दे० (क्रि०) काँपना, हिलना।

फुरफुरी दे० (स्त्री०) थरथरी, कम्प, कम्पन।

फुरहारी दे० (स्त्री०) कपकपी, सिहरन।

फुर्त दे० (गु०) शीघ्रकारी, वेगी, जवी, प्रजवी, वेगवान्।

फुर्ती दे० (स्त्री०) शीघ्रकारित्व, शीघ्रता, जल्द

फुर्तीला दे० (गु०) वेगी, वेगवान्, शीघ्रकारी, [illegible] करने वाला।

फुलका दे० (गु०) फूला हुआ, हलका। (पु०) फफोला, पतली रोटी।

फुलकारना दे० (क्रि०) फुफकारना, फुलाना, [illegible] उठाना।

फुलकारी दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा, जिसे सुई के काम बने रहते हैं, नैनू कपड़ा।

फुलकी दे० (स्त्री०) हलकी रोटी, पतली रोटी।

फुलझड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की आतशबाज़ी।

फुलवाड़ी दे० (स्त्री०) पुष्पोद्यान, पुष्पवाटिका।

फुलहथा दे० (पु०) लाठी की मार।

फुलाना दे० (क्रि०) सुजाना, मोटा करना, फुला देना।

फुलासरा दे० (पु०) लम्बी चप्पो।

फुलेल दे० (पु०) सुगन्धित तेल।

फुलौरी दे० (स्त्री०) पकौड़ी, बड़ी।

फुल्ली दे० (स्त्री०) आँख का एक रोग।

फुसफुसाना दे० (क्रि०) छिप कर बातें करना, काना कानी करना, गुप्त बातें करना।

फुसलाना दे० (क्रि०) भुलावा देना, झाँसना, धोखा देना।

फुसाहिन्दा दे० (गु०) घिनौना, घृणास्पद।

फुस्का दे० (गु०) दुर्बल, शक्तिहीन, ढीला।

फूआ दे० (स्त्री०) फुफ्फी, पिता की बहिन।

फूँक दे० (स्त्री०) श्वास, साँस, दम, प्राण।—देना (वा०) आग लगाना, मन्त्र से झाड़ना।—फूँक कर पाँव धरना (वा०) सावधानी से काम करना, सोच विचार कर चलना।

फूँकना दे० (क्रि०) आग सुलगाना, बजाना।

फूँकारना दे० (क्रि०) फनफनाना, फुफकारना, क्रोध का निश्वास।

फूँही दे० (स्त्री०) झींसी, छोटी छोटी बूँद।

फूँकना दे० (क्रि०) मुँह से हवा निकालना, आग सुलगाना।

फूट दे० (स्त्री०) फल विशेष, ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, विरोध, परस्पर द्वेष, अनमेल, असम्मति, अलगाव, बिलगाव।—पड़ना (वा०) विरोध होना, द्वेष बढ़ना, विरोध उत्पन्न होना।—फूट कर रोना (वा०) फूट रोना, बड़े कष्ट से रोना। —रहना (वा०) द्वेष बढ़ना, अलग होना। —होना (वा०) अनबनाव, बिलगाव।

फूटन दे० (स्त्री०) अनबनाव, विरोध, द्वेष।

फूटना दे० (क्रि०) टूटना, नष्ट होना, अलगना, टुकड़े टुकड़े होना।

फूटला दे० (गु०) टूटा हुआ, फूटा, नष्ट भ्रष्ट, भग्न।

फूटा दे० (गु०) भग्न, खण्डित, टूटा।

फूटी दे० (स्त्री०) विरोध, भेद, बिगाड़, टूटी हुई, भग्न।—सहें पर काजल न सहें (वा०) समय पर सामान्य कष्ट न सह कर पीछे अधिक कष्ट उठाना, छोटे कष्ट से बचने के लिये बड़े कष्ट में फँसना।

फूफा दे० (पु०) फूआ के पति, पिता के भगिनी-पति।

फूल दे० (पु०) पुष्प, कुसुम।—कोबी (स्त्री०) एक प्रकार का साग।

फूलना दे० (क्रि०) खिलना, सूजना, हुलसना, आनन्दित होना।

फूलाव दे० (पु०) सूजन, शोथ, फुलाहट।

फूली दे० (स्त्री०) आँख का रोग।

फूस दे० (पु०) तृण, घास, सूखी घास।—में चिनगारी डालना (वा०) झगड़ा उठाना, झगड़ा टण्टा करना।

फूसड़ा दे० (पु०) गूदड़, कपड़ा, धज्जी, पुराने वस्त्र।

फूसी दे० (स्त्री०) चोकर, भूसी।

फूहड़ दे० (गु०) अशिक्षित, अनसीखा।

फूहड़ा दे० (गु०) कुत्सित, वादी, कुवक्ता।

फूहा दे० (पु०) रुई का फाहा जिसे दूध में भिगो कर बच्चों को पिलाते हैं।

फुहार, फूही दे० (स्त्री०) झींसी, छोटी छोटी बूँद।

फेंक दे० (स्त्री०) प्रक्षेप, निक्षेप, त्याग।

फेंकना दे० (क्रि०) प्रक्षेपण करना, त्यागना, दूर करना, निकाल देना, अलग कर देना, घोड़े को सरपट दौड़ना। जड़ पदार्थों ही के त्याग के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।

फेंक देना दे० (वा०) दूर गिरा देना।

फेंकाव दे० (पु०) फेंक, त्याग। (गु०) त्यागने योग्य, फेंकने योग्य।

फेंकैत दे० (पु०) फेकने वाला।

फेंट दे० (स्त्री०) कमरबन्द, कटि बन्धन, पटुका। —बाँधना (वा०) उद्यत होना, तैयार होना, प्रस्तुत होना, ठानना, कमर बाँधना, कुश्ती।

फेंटना दे० (क्रि०) मिलाना, बेसन आदि का सानना।

फेंटा दे० (पु०) मुरेठा, साफा, मुड़बन्धा, छोटी एक प्रकार की पगड़ी।

फेंटी दे० (स्त्री०) आँटी, लच्छी।

फेण तद्० (पु०) झाग, गाजमल।

फेन तद्० (पु०) झाग, समुद्र कफ, जलमल।—वाही (पु०) जल, रस, समुद्र, दूध।

फेनाना दे० (क्रि०) झाग आना, झगाना, फेन उठना, व्याकुल होना, चकित होना।

फेनी दे० (स्त्री०) पकवान विशेष, एक प्रकार की मिठाई।

फेनुस दे० (पु०) अमृत, सुधा, पीयूष, नव प्रसूत, गौ और भैंस का दूध।

फेफड़ी दे० (स्त्री०) चलने की अशक्ति, आगमन का असामर्थ्य।

फेर दे० (अ०) पुनः, पुनि, बहुरि, बारबार। (पु०) घुमाव, बाँकापन, वक्रता, चक्कर, पलटाव, बदली, बुरे दिन, अभाग्य, कठिनता।—खाना (वा०) चक्कर खाना, भटकना, कष्ट उठाना, दुःख सहना, —देना (वा०) लौटा देना, पलटा देना, पीछा

दे देना, प्रत्यर्पण करना। —पड़ाना (वा०) मार्ग की दूरी होना, चक्कर पड़ना, घुमाव पड़ना। —फार (वा०) छल, झपट, धोखा, इधर उधर।

फेरना दे० (क्रि०) लौटाना, घुमाना, हटाना।

फेरा दे० (पु०) घुमाव, प्रदक्षिण।

फेराफेरी दे० (स्त्री०) अनटा पलटा, परस्पर अर्पण।

फेरी दे० (स्त्री०) प्रदक्षिण, भिक्षा माँगना, भिक्षा के लिये चक्कर लगाना।—वाला (पु०) बिसाँती, पैकार, गली गली घूम कर बेचने वाला।

फेरु तत्० (पु०) सियार, शृगाल, गीदड़।

फैलना दे० (क्रि०) पसरना, बिथरना, बिखरना, विस्तृत होना, व्याप्त होना, चारों ओर फैल जाना।

फैलाना दे० (क्रि०) बिछाना, पसारना विस्तार युक्त करना, चौड़ाना, प्रचार करना, प्रकाश करना।

फैलाव दे० (पु०) प्रकाश, प्रचार, पसराव, बिछाव।

फोक दे० (पु०) खोखला, पोला, भीतर से शून्य, थोथा। (स्त्री०) बाण का एक भाग जिधर पंख लगाया जाता है।

फोफी दे० (स्त्री०) नली, छुछी, नलिका, एक प्रकार का बाजा, पोली, खोखली।

फोहार दे० (स्त्री०) फुहार, फुही, झींसी।

फोक दे० (पु०) तलछट, सीठी, निस्सार वस्तु (गु०) खोखला, गुदड़, फटा वस्त्र, बाण का एक भाग।

फोकट दे० (पु०) छूँछा, कङ्गाल, दरिद्र। (गु०) सेंत का, बिना दाम का, बिना परिश्रम का।

फोकड़ दे० (पु०) खूद, खुदरा, तलछट।

फोड़ना दे० (क्रि०) तोड़ना, भग्न करना, नष्ट करना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना।

फोड़ा दे० (पु०) स्फोटक, विस्फोटक, घाव, फुंसी, व्रण, पिरकी।

फोला दे० (पु०) फफोला, छाला, आँखों में दाना पड़ना, फुल्का।

फोल्का दे० (पु०) फफोला, फोला, फुलका, झलका, छाला।

फौज दे० (स्त्री०) सेना, सैन्य, सैनिक, योद्धा।

फौत दे० (स्त्री०) मृत्यु, मरण, निधन।

फौरन दे० (अ०) तुरन्त, शीघ्र, सद्य।

व

व यह व्यञ्जन का तेईसवाँ वर्ण है, यह ओष्ठ्य वर्ण है क्योंकि इसका उच्चारणस्थान ओष्ठ है।

व तत्० (पु०) वरुण समुद्र सागर, जल।

वँकाई दे० (स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन, तिरछापन।

वँझोटी दे० (स्त्री०) औषधि विशेष, गर्भ नाशक औषधि।

वँटवाना दे० (क्रि०) विभाग कराना, बँटाना, हिस्सा लगाना।

वँटवैया दे० (पु०) बाँटने वाला, विभाजक, विभाग-कर्ता।

वँटाना दे० (क्रि०) भाग करना, हिस्सा करना, भाग लगाना, हिस्सा बाँटना।

वंडी दे० (स्त्री०) परिधेय, वस्त्र विशेष, चार अङ्गा।

वँडोहा दे० (पु०) बवण्डर, चक्रवात, अन्धड़।

वकर दे० (पु०) लता, लतिका बेल।

वक तत्० (पु०) पक्षि विशेष, बगला।—ध्यान लगाना (वा०) पाखण्ड करना, दम्भ करना, मतलब साधने के लिये धार्मिक बनना। [असुर विशेष, श्रीकृष्ण के हाथ से यह मारा गया है। श्रीकृष्ण गोप बालकों के साथ गाय चराने के लिये वन गये थे, वहाँ प्यासी गायों को

खिलाने के लिये वे एक तालाब पर गये उसी समय बकरूपधारी असुर श्रीकृष्ण को निगल गया। अनन्तर श्रीकृष्ण के तेज से व्यथित होकर उसने श्रीकृष्ण को उगल दिया। श्रीकृष्ण ने उसकी चोंच पकड़ कर उसे मार डाला।

बक दे० (स्त्री०) बकवाद, बकबक, निरर्थक, बहुवाद, बड़बड़ाहट, गुलगपाड़ा, व्यर्थ की बातें।—झक (वा०) बकबक, बकवाद।—झक करना (वा०) झगड़ा टंटा करना, बकवाद करना, वृथा बकना। —बक करना (वा०) बोल चाल करना, मन माने बकते रहना।—लगाना (वा०) गुलगपाड़ा करना, चिल्लाना, शोर मचाना।

बकची दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष।

बकना दे० (क्रि०) भकमारना, बकवाद करना।

बकरा दे० (पु०) अज, छाग, छागल।

बकरी दे० (स्त्री०) छेरी, छागी, अजा।

बकला दे० (पु०) छिलका, छाल, त्वक्, त्वचा।

बकवाद दे० (पु०) बकझक, बकबक।

बकवादी दे० (पु०) बकबकिया, गप्पी, गपोड़िया, वृथावादी।

बकवास दे० (पु०) बकवाद, वाचालता, मुखरापन।

बकवाहा दे० (पु०) बड़बड़िया, बक्की, वाचाल, बकवादी, बकवाद करने वाला।

बकसा दे० (गु०) ममेट, मिलान, बन्धेजी।

बकसूवा दे० (पु०) बकराल का काँटा।

बकसैला दे० (गु०) बकसा, ममेट, बन्धेजी।

बकासुर तत्० (पु०) बकनाम असुर (देखो बक)।

बकिया दे० (स्त्री०) छूरी, चाकू, चक्कू। (गु०) बकवादी, बक्की।

बकी तत्० (स्त्री०) पक्षिणी विशेष, बक की स्त्री, पूतना नामक राक्षसी।

बकेलू दे० (पु०) मुँज, काँस का बकला।

बकोटना दे० (क्रि०) नोचना, खसोटना, नखाघात करना, नखक्षत करना।

बक्कम दे० (पु०) रङ्गने का काष्ठ विशेष।

बक्कल तद्० (पु०) वल्कल, बकला, छिलका, त्वक्, त्वचा।

बक्की दे० (गु०) गप्पी, बकवादी, वाचाल।

बक्रदन्त तत्० (पु०) असुर विशेष, शिशुपाल के भाई का नाम।

बखरी दे० (स्त्री०) मकान, गृह, घर, कुटी, झोपड़ी।

बखान तद्० (पु०) व्याख्यान, वर्णन, स्तुति, स्तोत्र, प्रशंसा।—करना (वा०) स्तुति करना, स्तव करना।

बखानना दे० (क्रि०) प्रशंसा करना, स्तुति करना, वर्णन करना।

बखार दे० (पु०) भण्डार, खाद, भूमि खोद कर बनाया हुआ खाद, जिसमें अन्न रखा जाता है।, ढौका।

बखारी दे० (स्त्री०) अन्न रखने का भण्डार, टाँका, खाद।

बखिया दे० (पु०) एक प्रकार की सिलाई।

बखेड़ा दे० (पु०) झगड़ा, झंझट, टंटा, लड़ाई। —चुकाना (वा०) झगड़ा चुकाना, झगड़ा मिटाना।—मचाना (वा०) झगड़ा करना, टंटा करना।

बखेड़िया दे० (पु०) झगड़ालू, लड़का।

बखेरना दे० (क्रि०) विकीर्ण करना, विक्षिप्त करना, फैलाना, छीटना।

बखोर दे० (पु०) अपशकुन, अपशकुन, अशुभ सूचक चिन्ह।

बखोरना दे० (क्रि०) टोकना, पूछना, दिक् दिकाना।

बखौरा दे० (पु०) कन्धा, स्कन्ध।

बग दे० (पु०) बक, बगला।—चाल (स्त्री०) बगले की सी चाल, बकगति।—छुट (स्त्री०) सरपट धावा, दौड़।—छुट दौड़ना (वा०) सरपट दौड़ना, बिना रोक दौड़ना।

बगड़ दे० (पु०) एक प्रकार का चाँवल, चाँवल

एक भेद।
बगड़ा दे० (पु०) दुःख, छल, कपट, धोखा।
बगड़िया दे० (पु०) छली, छलिया, कपटी, धूर्त।
बगदना दे० (क्रि०) बिगड़ना, भूलना, ख़राब होना।
बगदाना दे० (क्रि०) भुलाना, बिगाड़ना, डाँवाडोल करना।
बगपाती दे० (स्त्री०) कच, काँख।
बगला दे० (पु०) बक, बकपक्षी।—**भगत** (पु०) कपटी, पाखण्डी, धूर्त।—**मारे पखना हाथ** (वा०) व्यर्थ का परिश्रम करना, ग़रीब को मारना निष्फल है।
बगहंस दे० (पु०) हंस विशेष।
बगारना दे० (क्रि०) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना, फेंक देना, पसारना।
बगिया दे० (पु०) फुलवाड़ी, पुष्पवाटिका, बगीचा, उपवन।
बगीचा दे० (पु०) उद्यान, फुलवाड़ी, पुष्पवाटिका।
बगुला दे० (पु०) बवण्डर, चक्रवात, चन्डूल।
बघनहा दे० (पु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक वृक्ष की जड़।
बघना दे० (पु०) बाघ का नख, बाघ का दाँत।
बघार दे० (पु०) छौंकना, छौंक मसाला।
बघारना दे० (क्रि०) छौंकना, छौंक डालना, मसाला डालना।
बघी दे० (स्त्री०) डाँस, मधुमक्खी, पशुओं की मक्खी।
बघेल दे० (पु०) राजपूतों की एक जाति।—**खण्ड** (पु०) प्रदेश विशेष, जहाँ बघेल क्षत्री रहते हैं, रीवाँ का प्रदेश।
बघेला दे० (पु०) डाँवरू, बाघ का बच्चा, बघेल, क्षत्रिय।
बङ्ग दे० (पु०) धातु विशेष, रस विशेष, राँगे की भस्म।
बङ्गरी दे० (स्त्री०) अलङ्कार विशेष, हाथ में पहनने का गहना, जिसे स्त्रियाँ हाथ में पहनती हैं।
बङ्गला दे० (पु०) खपरैल घर, बारादरी, हवादार नये ढङ्ग का मकान।
बङ्गसेन तत्० (पु०) अगस्त्य का वृक्ष।
बङ्गा तत्० (पु०) बाँस की जड़ का पोर। (गु०) नासमझ, अनभिज्ञ, मूर्ख, निर्बुद्धि, बेवकूफ़ यथाः—

> तीरथराज प्रयाग नदी पुनि गङ्गा।
> राम मनुज कसरे शठ बङ्गा॥
> —रामायण।

बङ्गाल दे० (पु०) देश विशेष, जो गया जी से पूर्व है, गौड़देश।
बङ्गालिन दे० (स्त्री०) बङ्गाल देश की स्त्री।
बङ्गाली दे० (पु०) बङ्गाल देश का वासी, बङ्गवासी।
बङ्गी दे० (स्त्री०) भौरा, लट्टू, फिर्की, खेल की एक वस्तु।
बच दे० (पु०) वचन, वाक्य, बोली। (स्त्री०) औषधि विशेष, एक वृक्ष की जड़।
बचकाना दे० (गु०) छोटा, बच्चों के लिये, बच्चों के उपयुक्त। (पु०) भतीया, भगतिया।
बचकानी दे० (स्त्री०) नीची, लौंडी, छोटी।
बचत दे० (स्त्री०) शेष, अवशिष्ट, अवशेष, बकिया, बाक़ी।
बचती दे० (स्त्री०) शेष, अवशिष्ट।
बचन तत्० (पु०) बात, वाक्य, कथन, क़ौल, करार, पण, होड़।—**चूक** (गु०) अविश्वासी।—**छोड़ना** (वा०) नकारना, वचन से मुकरना, भ्रष्ट प्रतिज्ञ होना।—**तोड़ना** (वा०) कही हुई बात से मुकरना, वचन छोड़ना।—**दत्त** (गु०) मंगेतर, सगाई किया हुआ।—**देना** (वा०) पण करना, प्रतिज्ञा करना।—**निभाना** (वा०) प्रतिज्ञा पालन करना, कही बात को पूरा करना, अपनी बात का पक्का रहना।—**बन्ध करना** (वा०) वचन लेना, प्रतिज्ञा कराना।—**बन्ध होना** (वा०) वचन देना, प्रतिज्ञा करना, अपनी बातों में बँध जाना।—**मानना** (वा०) आज्ञा पालना, आज्ञा मानना, कही हुई बात मानना।—**लेना** (वा०) प्रतिज्ञा कराना, वचन बद्ध करना, हारना (वा०) कही बात को पूरी न करना, अपनी हानि की बात को स्वीकार कर लेना, बिना जाने बूझे किसी बात के लिये प्रतिज्ञा करना।

बचना दे० (क्रि०) रक्षा पाना, शेष रहना, अवशिष्ट रहना, बचा रहना।

बचपन दे० (पु०) बाल्य, लड़काई, लड़कपन, बालपन।

बचाना दे० (क्रि०) रक्षा करना, उद्धार करना, छिपाना, शेष रखना, शेष बचा रखना।

बचाव दे० (पु०) रक्षा, उद्धार, रखवाली, पक्ष, सहायता।

बच्चा दे० (पु०) लड़का, छोटा लड़का।

बच्छनाग दे० (पु०) औषध विशेष, एक विष का नाम।

बच्छल तद्० (पु०) वत्सल, प्रेमी, कृपालु, दयालु।

बच्छासुर तद्० (पु०) वत्सासुर, एक असुर का नाम जिसे कंस ने कृष्णचन्द्र के मारने के लिये भेजा था।

बछड़ा, बछड़ू दे० (पु०) वत्स, गौ का बच्चा, गौ का छोटा बच्चा।

बछिया दे० (पु०) गौ की बाछी।

बछेरा दे० (पु०) घोड़े का बच्चा।

बजना दे० (क्रि०) शब्द होना, बाजे से शब्द निकलना, सस्वर शब्द निकलना। (पु०) झगड़ा, डंडा।

बजनी दे० (स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा, बाजा, बजने की चीज़, जिससे सस्वर शब्द निकले।

बजन्त्री दे० (पु०) बजाने वाला, वाद्यकार नृत्य करने वाले के साथी, समाजी।

बजबजाना दे० (क्रि०) उबलना, बजना, उफनना, सड़ना, गलना।

बजरबट्टू दे० (पु०) फल विशेष, सुनते हैं इस फल के प्रताप से बच्चों पर बुरी दृष्टि नहीं लगती।

बजरङ्ग दे० (पु०) महावीर, हनुमान जी का एक नाम।

बजरङ्गी दे० (पु०) एक प्रकार का तिलक, महावीरी तिलक।

बजरा दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, जो छाई रहती है।

बजाक दे० (पु०) सर्प विशेष।

बजाज़ दे० (पु०) कपड़ा बेचने वाला, कपड़े का दूकानदार।

बजाना दे० (क्रि०) बाजा बजाना, बाजे से स्वर के साथ शब्द निकालना।

बजा लाना दे० (वा०) पूरा करना, पालन करना, निभाना।

बझना दे० (क्रि०) फसना, उलझना, लगना, बंधना, बंध जाना।

बझाना दे० (क्रि०) फसाना, फन्दे में डालना, पकड़ना, अधीन करना।

बट तद्० (पु०) वृक्ष विशेष, बरगद का वृक्ष, यह वृक्ष वनस्पति कहा जाता है।

बटई दे० (स्त्री०) बटेर पक्षी, जरी का काम बनाने की विद्या।

बटखरा दे० (पु०) बाँट, तौलने की वस्तु।

बटना दे० (क्रि०) बल देना, ऐंठना, रस्सी बनाना।

बटमार दे० (पु०) ठग, डाँकू, डकैत, धूर्त।

बटमारी दे० (स्त्री०) ठगई, धूर्तता, डकैती।

बटरी दे० (स्त्री०) छोटी कटोरी, पियाली।

बटलोही दे० (स्त्री०) बटुआ, पतीली, भात या दाल चुराने का पात्र।

बटपार दे० (पु०) मार्ग का कर लेने वाला, ठग, बटमार।

बटवारा दे० (पु०) भाग, अंश, हिस्सा, बाँट।

बटाई दे० (स्त्री०) रस्सी बटना, रस्सी बनाना, रस्सी बनाने की मजूरी।

बटाऊ दे० (पु०) पथिक, यात्री, बटोही।

बटिया दे० (स्त्री०) बटखरा, बाँट, तौलने की वस्तु।

बटुआ दे० (पु०) थैली, झोली, बटलोही।

बटुक तद्० (पु०) भैरव विशेष, ब्रह्मचारी, विद्याध्ययनार्थ ब्रह्मचारी।

बटेर दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष।

बटोर दे० (पु०) जमात, जमाव, समूह, भीड़।

बटोरना दे० (क्रि०) एकत्रित करना, इकट्ठा करना, समेटना।

बटोही दे० (पु०) पथिक, पान्थ, यात्री, बटाऊ।
बट्टा दे० (पु०) खाद, फिरता नोट गिन्नी आदि बदलने का मूल्य, डिब्बा डिबिया, दर्पण।
बड़ दे० (पु०) वट, बरगद, वृक्ष विशेष।
बड़ना दे० (क्रि०) पैठना, घुसना, भीतर जाना।
बड़बड़ दे० (पु०) बक बक, व्यर्थ प्रलाप, निष्प्रयोजन बातें।
बड़बड़ाना दे० (क्रि०) बक बक करना, प्रलाप बकना।
बड़बड़िया दे० (पु०) बकवादी, बक्की, गप्पी।
बड़वानल दे० (पु०) समुद्र के भीतर की आग।
बड़हल दे० (पु०) फल विशेष, एक फल का नाम।
बड़ा दे० (गु०) महान, प्रधान, विशाल, मुख्य, वृहत्।
बड़ाई दे० (स्त्री०) महत्व, उच्चता, प्रशंसा, विशालता।
बड़ाना दे० (क्रि०) अचेत की दशा में बकना, सोते सोते बकना, प्रलाप बकना।
बड़ापा दे० (पु०) महत्व, बड़ाई, श्रेष्ठता।
बड़ी दे० (स्त्री०) भक्ष्य विशेष, खाने की एक वस्तु, जो उरद या मूँग की बनाई जाती है।
बड़ूँखा दे० (पु०) जल्प, दैत्य, रक्षु।
बड़े मियाँ दे० (पु०) वृद्ध, बूढ़ा, निर्बुद्धि वृद्ध।
बढ़ई दे० (पु०) सुतार, लकड़ी के काम बनाने वाली एक जाति।
बढ़ती दे० (स्त्री०) अधिकता, वृद्धि, लाभ, प्राप्ति।
बढ़न दे० (स्त्री०) सुतारिन, सुतार की स्त्री।
बढ़ना दे० (क्रि०) अधिक होना, वृद्धि होना, प्राप्ति होना, अधिकता होना।
बढ़नी दे० (स्त्री०) झाड़ू बुहारी।
बढ़ाना दे० (क्रि०) अधिकाना, वृद्धि करना, लम्बा करना।
बढ़ा लाना दे० (वा०) सम्मुख करना, आगे लाना, प्रत्यक्ष करना।
बढ़ाव दे० (पु०) बढ़ती चढ़ाव, उमड़ाव।
बढ़ावा दे० (पु०) उसकावा, उत्साह।
बढ़िया दे० (गु०) उत्तम, रमणीय, महँगा, दुर्लभ।
बढ़ेला दे० (पु०) वन्य सूकर वन का सूअर।
बढ़ोतर दे० (पु०) ब्याज, सूद रुपये का भाड़ा लाभ।
बढ़न्त दे० (स्त्री०) वृद्धि बढ़ती, उपज, लाभ।
बणिक् तत्० (पु०) जाति विशेष, बनिया, व्यापारी, महाजन, सौदागर।—पथ (पु०) हाट, बज़ार।
बणिज दे० (पु०) वाणिज्य, लेनदेन, व्यापार, सौदागरी।
बणिया दे० (पु०) वणिक्, वैश्य जाति।
बण्डेरी दे० (स्त्री०) छप्पर का शिखर, छप्पर का सब से ऊपरी भाग।
बत दे० (पु०) कीट विशेष, बात, कौल, करार। —चढ़ाव (पु०) झगड़ा, बातों बातों में विरसता। —बना (पु०) बातूनी, बात बनाने वाला।
बतक दे० (पु०) पक्षी विशेष, हंस पक्षी का एक भेद विशेष।
बतकहा दे० (गु०) बातूनी, गप्पी, वाचाल, बकवादी।
बतकहाव दे० (पु०) बातां बाती कहा सुनी।
बतक्कड़ दे० (गु०) बकवादी, बड़बड़िया।
बतराना दे० (क्रि०) बतियाना, बातचीत करना, सम्भाषण करना, सलाप करना।
बतलाना दे० (क्रि०) समझाना, सुझाना, दिखाना सिखाना, सङ्केत करना।
बता दे० (पु०) खपाच लम्बी गिर्री, बाँस की फराठी या खपाँची।
बताना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखाना, समझाना, सुझाना।
बतास दे० (पु०) वात, पवन, वायु।
बतासा दे० (पु०) मिठाई विशेष।
बतियाई दे० (स्त्री०) बातचीत वार्ता, कथन।
बतियाना दे० (क्रि०) बात करना, बतराना सम्भाषण करना, सलाप करना।
बतूनी दे० (गु०) बक्की, वाचाल।

बतोली दे० (स्त्री०) भौंड़ैत, भौंड़पना, भौंड़ों का काम।

बतौरी दे० (स्त्री०) घाव, फुड़िया, जो बालों के टूटने से होती है, बलतोड़।

बत्ती दे० (स्त्री०) बाती, पलीता, बत्ती, दीपक, दीया, बाँस की छड़, लाख की छड़ी, मोमबत्ती, घाव में भरने की बत्ती, एक प्रकार की योग क्रिया।—चढ़ाना (वा०) घाव में बत्ती डालना। —जलाना (वा०) दीपक जलाना, दीया बारना।

बत्तीस दे० (गु०) तीस और दो, ३२, दो अधिक तीस।

बत्तीसा दे० (पु०) एक औषधि का नाम जो घोड़े आदि को दी जाती है।

बत्तीसी दे० (स्त्री०) दन्तपंक्ति, दन्त समूह दाँतों की कतार। (गु०) बत्तीस वस्तुओं का समुदाय। —दिखाना (वा०) दाँत दिखाना, हँसना, खिरौरी करना।

बथला दे० (पु०) चाँवल का भेद।

बथुआ दे० (पु०) शाक विशेष।

बद दे० (स्त्री०) रोग विशेष, बाघी, बाँघी उठना।

बदना दे० (क्रि०) नियत करना, निश्चित करना, मानना, दाँव लगाना।

बदर तत्० (पु०) फल विशेष, बेर या सेव, तोड़ा, हज़ार रुपये की थैली, बिनौला, कपास का बीज।

बदरि तत्० (पु०) फल विशेष, बेर का फल।

बदरिकाश्रम तत्० (पु०) तीर्थ विशेष, उत्तरीय तीर्थ, जहाँ नर नारायण तपस्या करते थे।

बदल दे० (पु०) प्रतीकार, निवारण।

बदलना दे० (क्रि०) पलटाना, परिवर्तन करना, उलटा करना, अन्यथा करण, एक वस्तु दे कर, दूसरी वस्तु लेना।

बदला दे० (पु०) परिवर्तन, पलटा।

बदलाई दे० (स्त्री०) पलटाई, गुड़वाई भुनवाई।

बदलाना दे० (क्रि०) पलटा करना, बदल देना, पुरानी वस्तु को देकर नयी वस्तु लेना।

बदली दे० (स्त्री०) मेघ, बादल, स्थान परिवर्तन, स्थान का परिवर्त्तन, एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान पर जाना।

बदा दे० (गु०) भविष्य, भवितव्य, भाग्य, अदृष्ट, होनहार, भावी।

बदाबदी दे० (अ०) ईर्ष्या, स्पर्द्धा, हिर्स, देखा-देखी।

बदि तत्० (अ०) कृष्ण पक्ष।

बदी दे० (अ०) कृष्ण पक्ष।

बद्दल दे० (पु०) मेघ, बदली, बादल, घटा।

बद्ध तत्० (गु०) बँधा, बँधा हुआ।

बद्धी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, कण्ठभूषण।

बध तत्० (पु०) हनन, मारण, हत्या, हिंसा।

बधना दे० (क्रि०) मारना, मार डालना, हनना, हत्या करना। (पु०) टोटीदार लोटा, गड़ुआ, मुसल्मानों का जल पात्र, मिट्टी का लोटा।

बधस्थान तत्० (पु०) बध्य स्थान, प्राणियों के मारे जाने का स्थान, वह स्थान जहाँ अपराधियों को फाँसी दी जाती है।

बधाई दे० (स्त्री०) हर्षोत्सव, आनन्दोत्सव, मङ्गलाचार, पुत्रोत्सव आदि माङ्गलिक समय में जो बान्धव लोग मनाते हैं।

बधावा दे० (पु०) माङ्गलिक उपहार, मङ्गलाचार, मङ्गलोत्सव।

बधिक तत्० (पु०) हत्यारी, व्याध, बहेलिया।

बधिया दे० (पु०) पुंस्त्व हीन किया हुआ पशु, आख़ा।—करना (वा०) अण्ड निकालना, आख़ा करना।

बधिर तत्० (पु०) बहरा, कर्णेन्द्रिय रहित।

बधू तत्० (स्त्री०) बहू, पतोहू, लड़के की स्त्री, भार्या, स्त्री, पत्नी।

बधूटी तत्० (स्त्री०) युवती स्त्री, पुत्रवधू, छोटी बहू।

बध्य तत्० (गु०) बधार्ह, शीर्षच्छेद्य, बध के योग्य, प्राणदण्डार्ह।—भूमि (स्त्री०) बधस्थान।

बनजर दे० (पु०) परती भूमि, ऊसर भूमि, खण्डहर।

बनजारा दे० (पु०) व्यापारी, बनिया, सौदागर, व्यापारी की एक जाति, पहले समय में ये लोग बेचने की चीजों को बैल पर लाद कर इस प्रान्त से उस प्रान्त तक जाते थे, और अपनी चीजें वहाँ बेंच कर वहाँ से दूसरी चीजें ले जाते थे। इनकी उस समय "सार्थवाह" या "सौदागर" संज्ञा थी।

बनजारी दे० (स्त्री०) बनजारे की स्त्री, बनजारे की वस्तु, तम्बू।

बनठनके दे० (वा०) सज धज कर, शृङ्गार कर।

बनत दे० (स्त्री०) एक प्रकार का गोटा, जो गोटे से ही बनाई जाती है, बनना, तैयार होना, सिद्ध होना, प्रस्तुत होना।

बनतराई दे० (स्त्री०) पौधा विशेष।

बनना दे० (क्रि०) तैयार होना, स्वाँग सजना, प्रेम होना।

बनपड़ना दे० (वा०) सुधरना, निभना, निबहना।

बनमानुष तद्० (पु०) एक प्रकार का पशु, जिसकी बहुत सी बातें मनुष्यों से मिलती हैं।

बनमाला तद्० (स्त्री०) वनमाला, वह माला जिसे भगवान् धारण करते हैं, गले से पैर तक लटकने वाली माला, तुलसी कुन्दमन्दार पारिजात और कमल इन पुष्पों की बनी माला।

बनमाली तद्० (पु०) वनमाली, श्रीकृष्ण।

बनरा दे० (पु०) दूल्हा, वर।

बनरी दे० (स्त्री०) दुलहिन, विवाहिता या ब्याही जाने वाली कन्या।

बनवाई दे० (स्त्री०) बनाने का दाम, बनाने की मजूरी।

बनवैया दे० (पु०) बनाने वाला, कर्ता, रचयिता, निर्माता।

बनसी दे० (स्त्री०) मछली पकड़ने का साधन, काँटा।

बना दे० (पु०) दुल्हा, बनरा, वर।

बनात दे० (पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा, जो जाड़े के काम का होता है।

बनाना दे० (क्रि०) रचना, प्रस्तुत करना, तैयार करना, ठीक करना, दीवार आदि का बनाना, बिगड़ा सुधारना, जोड़ना, सन्धान करना, सवाँरना, करना, मिलाना। पकाना, उत्पन्न करना, सिजना, पूरा करना, पूर्ण करना, जीर्णोद्धार करना।

बनायुज तद्० (पु०) वनायुज, घोड़ा, अरब का घोड़ा।

बनाव दे० (पु०) बनावट, सिंगार, सजावट, मिलाप, मित्रता।

बनावट दे० (स्त्री०) रचना, निर्माण, डौलडौल, आकार, सङ्गठन।

बनावटी दे० (स्त्री०) काल्पनिक, बनायी हुई कल्पना प्रसूत।

बनिज दे० (पु०) वाणिज्य, व्यापार, लेनदेन, आदान प्रदान।

बनिया दे० (पु०) वणिक्, व्यापारी, सौदागर।

बनियायन दे० (स्त्री०) वणिक् स्त्री, बनिये की स्त्री।

बनी दे० (स्त्री०) दुलहिन, नई बहू।

बनेटी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की लाठी, जिसके दोनों ओर गोल लट्टू लगे रहते हैं, अथवा कोई कोई मशाल लगा देते हैं, और उस लकड़ी को घुमाते हैं।

बनैनी दे० (स्त्री०) बनियायन, वणिक् स्त्री, बनिये की स्त्री।

बनैला दे० (पु०) वन्य, वनवासी, जङ्गली।

बनौटिया दे० (स्त्री०) कपासी रङ्ग, कपास के समान रङ्ग।

बन्दनवार दे० (पु०) सेहरा, मौर, तोरण।

बन्दर दे० (पु०) वानर, कपि, मर्कट, जहाजों के ठहरने का स्थान।—**की सी आँख बदलना** (वा०) शीघ्र क्रोध करना, बहुत जल्दी रिसाना। —**की तरह नचाना** (वा०) अपने अधीन कर बहुत कष्ट देना, बहुत कड़े कड़े काम कराना। —**क्या जाने अदरक का स्वाद** (वा०) निर्गुण गुण की परीक्षा नहीं कर सकता, अयोग्य योग्य

गुणों का आदर करना, नहीं जानता।—क्षत (पु०) असाध्य घाव, कठिन फोड़ा।

बन्दरी दे० (स्त्री०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार की छींट।

बन्दी तद्० (पु०) यशोगायक, स्तुतिकर्ता, भाट, चारण, क़ैदी, बन्धुआ। भूषण विशेष, जिसे स्त्रियाँ मस्तक पर लगाती हैं।—गृह (पु०) जेलख़ाना, कारागार।—जन (पु०) भाट, चारण, गुण बखान करने वाले।

बन्दीही दे० (स्त्री०) दासी, परिचारिका, सेविका, चेरी।

बन्दील दे० (पु०) भृत्यपुत्र, दास का लड़का।

बन्ध तद्० (पु०) बाँधना, गाँठ, ग्रन्थि।—में पड़ना (वा०) फन्दे में फसना, आफ़त में पड़ना, क़ैद होना, जेल में पड़ना।

बन्धक तद्० (पु०) थाती, धरोहर, निक्षेप, न्यास, गिरों।—दाता (पु०) ऋणदाता, रेहनदार।—धारी (पु०) गिरों रखने वाला, न्यासधारी।—पत्र (पु०) रेहननामा।

बन्धन तद्० (पु०) बाँधना, गाँठ, क़ैद, गिरह लगाना, क़ैद करना।

बन्धना दे० (क्रि०) बन्ध होना, अटकना, बन्धाना, जोड़ा जाना।

बन्धाई दे० (स्त्री०) बाँधने का काम, बाँधना, बाँधने की मजूरी।

बन्धान दे० (स्त्री०) नियत, निश्चित वृत्ति, नियत वृत्ति, किसी बात का निश्चय।

बन्धानी दे० (पु०) पत्थर ढोने वाला, अमले का सेवक, अफ़ीमची।

बन्धु तद्० (पु०) मित्र, सुहृद, प्रेमी, सम्बन्धी।

बन्धुआ दे० (गु०) बन्धित, बँधा हुआ, क़ैदी, बन्दी।

बन्धुर तद्० (गु०) चढ़ाव, उतराव। (पु०) हंस, विहङ्ग।

बन्धुल तद्० (पु०) असती पुत्र, वेश्या पुत्र, भड़ुआ।

बन्धेज दे० (पु०) बन्धान, किफ़ायत, कम ख़र्च, निश्चय।

बन्ध्या तद्० (स्त्री०) बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री।

बन्ना दे० (क्रि०) बनना, तैयार होना, सुधरना, सवाँरना।

बन्हा दे० (पु०) टोना, टुटका, यन्त्र मन्त्र।

बपंश दे० (पु०) बाप का अंश, बपौती, पैतृक धन।

बपुरा दे० (गु०) रङ्क, अनाथ, असहाय, दीन, कंगाल।

बपौती दे० (स्त्री०) बपंश, बाप का द्रव्य।

बफारा दे० (पु०) वाष्प, बाफ, भाफ, गरम जल या दूध का धुँआ।—लेना (वा०) भाफ शरीर में लगने देना, वाष्पस्नान।

बबुआ दे० (पु०) लड़का, पुत्र, प्रिय पुत्र, दुलारा लड़का।

बबूर, बबूल (पु०) बर्बुर, वृक्ष विशेष, एक कटीले वृक्ष का नाम।

बबेसिया दे० (पु०) प्रलापी, प्रलाप बकने वाला, गप्पी, गपोड़िया।

बबेसी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, अर्श रोग, बवासीर।

बभ्री दे० (स्त्री०) झूमा, मीठी, चुम्बा, चुम्बन।

बम दे० (स्त्री०) सोता, स्रोत, चार हाथ का माप।

बमकना दे० (क्रि०) उभरना, ऊपर उठना, सूजना, फूलना।

बम्बा दे० (पु०) कूप, सोता, स्रोत।

बया दे० (पु०) पक्षी विशेष, एक पक्षी का नाम, यह पक्षी सीख बहुत जल्दी मान लेता है।

बयार दे० (पु०) वायु, पवन, बतास।

बयाना दे० (पु०) वस्तु का विक्रय, कुछ अग्रिम मूल्य।

बयाला दे० (गु०) वादी, वातुल, वात विशिष्ट।

बयालीस दे० (गु०) संख्या विशेष, चालीस और दो, ४२।

बयासी दे० (गु०) अस्सी और दो, दो अधिक अस्सी, ८२।

बर तद्० (पु०) वर, वरदान, आशिष, आशीर्वाद, इष्ट प्राप्ति, मनोरथसिद्धि, पति, स्वामी, दूलह।

बरखना दे० (क्रि०) वृष्टि होना, वर्षा होना, पानी बरसना।

बरगद दे० (पु०) वट, बड़ का पेड़ ।

बरगा दे० (पु०) कड़ी, तड़क, धरन, लम्बी सीधी लकड़ी जो कड़ी आदि बनाने के काम में आती हैं।

बरजना दे० (क्रि०) वर्जन करना, निषेध करना, वारण करना, मना करना ।

बरटा तद्० (स्त्री०) हंसी, राजहंसी, बरें ।

बरत तद्० (पु०) व्रत, उपास, उपवास, चमड़े की रस्सी ।

बरतन दे० (पु०) बर्तन, बासन, पात्र, भाण्ड ।

बरतना दे० (क्रि०) काम में लाना, उपयोग में लाना, व्यवहार करना ।

बरतनी दे० (स्त्री०) अक्षरौटी, वर्णमाला ।

बरताना दे० (क्रि०) भाग लगाना, विभाग करना, बाँटना ।

बरदैत दे० (पु०) भाट, दसौंधी, आशीर्वादक, आशीर्वाद देने वाला ।

बरध दे० (पु०) बैल, वृषभ ।

बरधना दे० (क्रि०) बढ़ाना, पालन करना, गौ का गर्भ धारण ।

बरधाना दे० (क्रि०) गौ का गर्भ धारण करना ।

बरन तद्० (पु०) वर्ण, रङ्ग, अक्षर, लिखावट । (अ०) बल्कि, प्रत्युत ।

बरना दे० (क्रि०) वरण करना, स्वीकार करना, चीन्हना, बराना, अपने अभिमत को स्वीकार करना । ब्याह करना, पति का वरण करना ।

बरबस दे० (पु०) प्रबल, बलात्कार, प्रबलता, जबरदस्ती ।

बरब दे० (पु०) पक्षी विशेष ।

बरबट दे० (पु०) रोग विशेष, पिलही, एक प्रकार का सर्प ।

बरभसिया दे० (पु०) बहुरुपिया, स्वाँग रचने वाला ।

बरराना दे० (क्रि०) प्रलाप बकना, स्वप्न में बड़बड़ाना ।

बरवा दे० (पु०) एक छन्द का नाम, काँटा जिससे मछली मारी जाती है, रागिनी विशेष, कहते हैं उस रागिनी की मधुरता पर सर्प और हरिण मोहित हो जाते हैं ।

बरस तद्० (पु०) वर्ष, सम्वत, संवत्सर, एक औषधि वस्तु जो अफ़ीम से बनायी जाती है।—गाँठ (पु०) जन्म दिन के उपलक्ष का उत्सव, साल गिरह ।

बरसना दे० (क्रि०) पानी पड़ना, वृष्टि होना ।

बरसवान दे० (पु०) वार्षिक, सांवत्सरिक, बर्षी ।

बरसौंड़ी दे० (स्त्री०) वार्षिक कर, भाड़ा, वार्षिक वृत्ति ।

बरहा दे० (पु०) गोचर भूमि, पशुओं के चरने की भूमि, पुरवट का रस्सा, खेत में पानी ले जाने का मार्ग ।

बरा दे० (पु०) पकौड़ा, बड़ा ।

बरात दे० (स्त्री०) विवाह की यात्रा, बरयात्रा, वर के साथियों का गमन ।

बराती दे० (पु०) बरात के जाने वाले ।

बराना दे० (क्रि०) पृथक् रहना, अलग रहना, परहेज करना ।

बरारा दे० (पु०) रस्सा, चमोटी ।

बराव दे० (पु०) संयम, रोक, परहेज़ ।

बराह तद्० (पु०) शूकर, सूअर, विष्णु का तीसरा अवतार ।

बरियाई दे० (स्त्री०) बलात्कार बड़ाई, ज़ोरावरी, ज़बरदस्ती हठ ।

बरियार दे० (पु०) बलवान, प्रबल, बलशाली, प्रभाववान्, समर्थ ।

बरियारा दे० (पु०) बलवान्, पौधा विशेष ।

बरी दे० (स्त्री०) कली, चूने की कली, बड़ी, पकौड़ी ।

बरुण तद्० (पु०) वरुण, जल के अधिपति देवता, पश्चिम दिशा के अधिपति, दिक्पाल ।

बरुणालय तद्० (पु०) [वरुण + आलय] समुद्र, सागर, वरुण के रहने का स्थान ।

बरुणी दे० (स्त्री०) पपनी, आँख पर के बाल ।

बरेज दे० (पु०) पनवाड़ी, पान का खेत ।

बरेठन दे० (स्त्री०) धोबिन, रजकी ।

बरेठा दे० (पु०) धोबी, रजक, कपड़ा धोने वाली एक जाति।

बरेरा दे० (स्त्री०) बिरनी, हाड़ा, एक प्रकार का पङ्खदार कीट।

बरै दे० (पु०) तम्बोली, बारी, पान वाला।

बरैन दे० (स्त्री०) तम्बोलिन, बारिन, पनेरिन।

बरोठा दे० (पु०) धोबी, देवढ़ी, द्वार आदि का दृयठल।

बरौठा दे० (पु०) रजक, धोबी, बरोठा, ड्योढ़ी।

बर्छा, बर्छी दे० (पु०) अस्त्र विशेष, बेल, भाला।

बर्छैत दे० (पु०) बर्छे वाला, बर्छाधारी, भालैत।

बर्त दे० (पु०) काम, अभ्यास, साधन।

बर्तन दे० (पु०) बरतन, बासन, भाँड़, पात्र।

बर्तना दे० (क्रि०) काम में लाना, उपयोग करना, व्यवहार करना।

बर्मा दे० (पु०) अस्त्र विशेष, बढ़ई का अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ियों में छेद किया जाता है। क्षत्रिय जाति सूचक, यथा—विजयसिंह बर्मा।

बर्माना दे० (क्रि०) छेदना, बेधना, बींधना।

बर्राहट दे० (स्त्री०) प्रलाप, बकवाद, बड़बड़।

बर्वै दे० (पु०) भाषा के एक छन्द का नाम।

बर्ष तद्० (पु०) संवत्सर, बारह महीना।

बर्षात दे० (स्त्री०) वर्षाकाल, वर्षा का समय।

बर्षी दे० (स्त्री०) वर्ष दिन के बाद का कृत्य, वार्षिक श्राद्ध।

बर्ह तद्० मोरपङ्ख, मयूर पुच्छ, मोर के पांख।

बर्ही तद्० (पु०) मयूर, मोर, केकी, चित्रबर्ही।

बल तद्० (पु०) सामर्थ्य, शक्ति, ताक़त, बलदेव, पट, ऐंठन।

बलकना दे० (क्रि०) उभरना, उफनना, खौलना, अपनी बड़ाई आप करना।

बलखना दे० (क्रि०) सिसकना, ठुनकना, रोना, विलाप करना।

बलताड़ दे० (पु०) वृक्ष विशेष।

बलतोड़ दे० (पु०) घाव, फुड़िया, बाल के टूटने से जो फुड़िया होती है।

बलद दे० (पु०) बरध, वृषभ, बैल।

बलदाऊ दे० (पु०) बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।

बलदी दे० (पु०) लदे हुए बैल।

बलना दे० (क्रि०) जलना, धधकना, दहना, दग्ध होना।

बलयकरा दे० (पु०) बकारण मारा जाने वाला, बलिदान के लिये निर्दिष्ट बकरा।

बलबलाना दे० (क्रि०) उबलना, कामातुर होना। ऊँट की बोली।

बलबीर दे० (पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण, रामचन्द्र।

बलभद्र तद्० (पु०) बलदेव, बलराम।

बलम, बलमा दे० (पु०) बल्लभ, स्वामी, प्रियतम।

बलराम तद्० (पु०) वसुदेव के पुत्र, ये उनकी स्त्री रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवकी के सातवें गर्भ के समय कंस ने रक्षक नियुक्त किये थे, परन्तु माया ने उस गर्भ को खींच कर रोहिणी के गर्भ में स्थापित कर दिया। रक्षकों को तो ये बातें मालूम नहीं हुईं, अतः उन लोगों ने कंस से कहा कि गर्भ नष्ट हो गया। एक गर्भ आकर्षण करके दूसरी जगह रखा गया इस कारण रोहिणी के पुत्र का नाम सङ्कर्षण पड़ा। बलराम ने गदायुद्ध में मगध के राजा जरासन्ध को हरा दिया था, परन्तु मारा नहीं था। दुर्योधन की कन्या लक्ष्मणा के स्वयम्बर के समय कौरवों ने श्रीकृष्ण पुत्र साम्ब को पकड़ कर क़ैद कर लिया था। यह सुन कर बलराम वहाँ पहुँचे, परन्तु दुर्योधन किसी प्रकार साम्ब को छोड़ना नहीं चाहता था। यह देख कर बलराम ने कौरवपुरी को गङ्गा में फेंक देने के लिये उस नगरी के दीवार में हल लगाया, हस्तिनापुर घूमने लगा, यह देख कर दुर्योधन साम्ब और लक्ष्मणा के सहित उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, साम्ब को समर्पण कर उनसे गदा युद्ध सीखने की उनसे प्रार्थना की। महावीर बलराम ने, भाण्डीर वन में एक मुक्के के आघात से प्रलम्बासुर को मार गिराया था। उन्होंने गर्दभ रूपी धेनुकासुर को भी पर्वत पर फेंक कर मार डाला था।

बलवन्त दे० (पु०) बलवान्, समर्थ, सशक्त।

बलही दे० (स्त्री०) घाँटी, खटिया, भार, बोझ, ताग्गा, लम्बी और पतली लकड़ी।

बलहीन तत्० (गु०) निर्बल, बल शून्य, दुर्बल।

बलाई दे० (गु०) आशीर्वाद, असीस, बाहरी, दूर के, उदासीन।—लेना (वा०) दुःख में सहायता पहुँचाना, अन्य के दुःख हटाने की इच्छा।

बलात्कार तत्० (पु०) बरबस, हठात्, ज़बरदस्ती।

बलि तत्० (पु०) नैवेद्य, देवता का भोग, कर, पूजा, राजा विशेष, दानवपति, ये विरोचन के पुत्र और प्रह्लाद के पौत्र थे। बलि के सौ पुत्र थे, उनमें बाण सब से बड़ा था। पराक्रमी दानवपति बलि को दमन करने के लिये भगवान् ने वामन अवतार ग्रहण किया था। बलि ने एक अश्वमेध यज्ञ किया था, उस यज्ञ की समाप्ति के समय भगवान् वामन रूप धर करके वहाँ उपस्थित हुए। वामन रूपी विष्णु ने बलि को अनेक प्रकार से प्रसन्न करके उससे तीन पैर भूमि माँगी। दैत्य-गुरु शुक्राचार्य ने भगवान् को पहचान लिया था, अतएव बलि को उन्होंने दान देने से रोका, परन्तु बलि ने उनकी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बलि ने प्रतिज्ञाभ्रष्ट होना उचित नहीं समझा। बलि ने वामन की यथाविधि पूजा की, और तीन पैर भूमि उनको सङ्कल्प कर दी। अब वामन ने अपना रूप इतना विशाल बनाया कि लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने दो पदों ही में स्वर्ग और मर्त्यलोक नाप डाला, तीसरे पैर के लिये स्थान नहीं बचा। इनको मायावी समझ कर बलि के अनुचरों ने इन्हें अस्त्र शस्त्र ले कर मारना चाहा, परन्तु वे शीघ्र ही विष्णु के अनुचरों द्वारा हटा दिये गये। बलि ने भी अपने अनुचरों को युद्ध करने से रोका। अनन्तर विष्णु ने तीसरा पैर रखने के लिये बलि से स्थान माँगा, बलि ने अपना सिर ही स्थान बताया। वामन का तीसरा पैर अब बलि के सिर पर रखा गया, तब दानवपति भगवान् की स्तुति करने लगे। उसी समय विष्णु के अनन्य भक्त और बलि के पितामह प्रह्लाद वहाँ उपस्थित हुए। उनकी प्रार्थना से भगवान् ने बलि का बन्धन कटवा दिया। भगवान् ने प्रह्लाद से कहा कि "बलि ने बहुत त्याग करके अपनी सत्यता का पालन किया है, अतएव मैं इनको देवताओं का भी दुर्लभ पद दूँगा। सावर्णि मन्वन्तर में ये इन्द्र होंगे। जब तक वह मन्वन्तर नहीं आता, तब तक सुतल में जाकर इन्हें रहना पड़ेगा, मैं सर्वदा कौमोदकी गदा लेकर वहाँ उपस्थित रहूँगा, और इनकी रक्षा करूँगा।" भगवान् विष्णु की आज्ञा से बलि सुतल नामक पाताल में रहने लगे।

बलिदान तत्० (पु०) देवभोग, देवता के लिए नैवेद्य।

बलित तत्० (गु०) सङ्कुचित, सिमटा।

बलिपुष्ट तत्० (पु०) काक, कौआ, काग।

बलिरसा तत्० (स्त्री०) उपधातु विशेष, गन्धक।

बलिसद्म तत्० (पु०) अङ्कुश, चाबुक, कोड़ा, बानरों का समूह।

बलिष्ठ तत्० (गु०) बलशाली, बलवान्, समर्थ।

बलिहारी दे० (स्त्री०) निछावर, बधाई।—जाना (वा०) निछावर होना, बल जाना, बलजल जाना।

बली तत्० (गु०) बलवान्, समर्थ, पराक्रमी, पराक्रमशाली।—बर्द (पु०) साँड़, साड़, गर्दभ, वृषभ।—मुख(पु०) वानर, कपि, मर्कट, बन्दर।

बलीयान् तत्० (गु०) बली, बलशाली, बलवान् पराक्रमी, अत्यन्त पराक्रमी, अधिक बलवान्।

बलुवा दे० (गु०) रेतीला, बालुकामय।

बलूरना दे० (क्रि०) नोचना, खसोटना, खखोरना, खुरचना।

बल्ला दे० (पु०) बुलबुला, बुलबुला, बुदबुदा।

बलेंडी दे० (स्त्री०) मर्कचा, मगरा, खपरा।

बल्लम दे० (पु०) भाला, सेल, बर्छा, नेजा, अस्त्र विशेष।

बल्ली दे० (स्त्री०) डण्डा, बल्ला, नाव खेने के लिये डण्डा।

बवण्डर दे० (पु०) अन्धड़, बगूला, बवण्डर।

बवाई दे० (स्त्री०) पैर तले का घाव, बिवाई, शीत से पैर का फटना।

बवासीर दे० (पु०) रोग विशेष, अर्श रोग।

बस दे० काबू, अधिकार, वश। (गु०) अधीन। **—करना** (वा०) आधीन करना, वश में करना, चुप करना, ठहरना।

बसन सद्द० (पु०) वसन, वस्त्र, कपड़ा, लूगा।

बसना दे० (क्रि०) बसना, रहना, भरना, ठहरना, वास करना।

बसनी दे० (स्त्री०) थैली, झोली।

बसन्त सद्द० (पु०) वसन्त, एक ऋतु का नाम, जो प्रधान ऋतु समझी जाती है। फाल्गुन और चैत ये दोनों महीने वसन्त ऋतु में हैं, कोई कोई चैत और वैशाख को ही वसन्त ऋतु मानते हैं। **—फूलना** (वा०) सरसों का फूलना। **—के घर की भी ख़बर है** (वा०) कुछ ज्ञान भी है, कुछ जानते भी हो।

बसन्ती सद्द० (पु०) पीला रङ्ग। (गु०) पीले रङ्ग का।

बसराना दे० (क्रि०) पूरा करना, समाप्त करना।

बसाना दे० (क्रि०) टिकाना, बस्ती कराना, नये गाँव बसना, बस्ती बसाना।

बसूला दे० (पु०) बढ़ई का एक अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी छाटते हैं।

बसूली दे० (स्त्री०) बढ़इयों का अस्त्र, ईंट काटने का अस्त्र।

बसैंधा दे० (गु०) सड़ा, उबसा, दुर्गन्ध।

बसेरा दे० (पु०) खोंता, घोंसला, पक्षियों के रहने का स्थान।

बसोवास दे० (पु०) स्थिति, स्थान, वास।

बस्ती दे० (स्त्री०) ग्राम, गाँव, मुहल्ला, पुरवा, पूरा।

बस्ता दे० (पु०) स्थिति, बसन, बसना, बेठन, लपेटना।

बहकना दे० (क्रि०) निराश होना, धोखा खाना, भटकना, भूलना, लक्ष्यच्युत होना, उद्देश्य भ्रष्ट होना।

बहकाना दे० (क्रि०) भुलाना, निराश करना, धोखा देना।

बहङ्गी दे० (स्त्री०) काँवरि, बोझ ढोने के लिये एक यन्त्र, जिसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं।

बहजाना दे० (क्रि०) बहना, बिगड़ना, ख़राब होना।

बहत्तर दे० (गु०) सत्तर और दो, दो अधिक सत्तर।

बहन दे० (स्त्री०) भगिनी, बहिन।

बहना दे० (क्रि०) चलना, पानी का चलना, हवा का चलना।

बहनेऊ दे० (पु०) बहनोई, भगिनीपति, बहिन का पति।

बहनेली दे० (स्त्री०) बहिन।

बहनोई दे० (पु०) बहनेऊ, बहिन का पति, भगिनीपति।

बहर दे० (स्त्री०) नावों की भीड़, नौका समूह।

बहरा दे० (पु०) बधिर, न सुनने वाला।

बहरिया दे० (पु०) अशुद्ध बर्तन, अपवित्र बासन, (गु०) बाहर का, अपूर्व, अतिथि, पाहुन।

बहरी दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, बाज पक्षी।

बहल दे० (स्त्री०) गाड़ी, बैलगाड़ी, रथ, एक प्रकार की बैलगाड़ी जो पुराने समय में बनती थी।

बहलना दे० (क्रि०) प्रसन्न होना, भूलना, खेलना, बहकना।

बहलाना दे० (क्रि०) खिलाना, प्रसन्न करना, मनोरञ्जन करना, मन बहलाव करना, भुलाना, फिराना।

बहलिया दे० (पु०) गाड़ीवान, गाड़ी हाँकने वाला।

बहली दे० (स्त्री०) छोटा बहल, चढ़ने की गाड़ी, रथ, बैलगाड़ी।

बहादेना दे० (क्रि०) तोड़ना, उजाड़ना, बिगाड़ना, ख़राब करना, फैंकना।

बहाना दे० (क्रि०) भसाना, चलाना, बहा देना।

बहा फिरना दे० (वा०) भटकते फिरना, बिना काम के दौड़ते फिरना।

बहाव दे० (पु०) बाढ़, चढ़ाव, नदी की धार, मोरी का पानी।

बाजू दे० (पु०) भूषण विशेष, अङ्गद, भुजबन्द। —बन्द (पु०) बाजू, भूषण विशेष।

बाट दे० (पु०) पन्थ, मार्ग, राह, रास्ता, डगर। —काटना (वा०) मार्ग तै करना, रास्ता चलना।

बाटिका दे० (स्त्री०) फुलवाड़ी, उपवन, बगीचा, बाग।

बाटी दे० (स्त्री०) घर, गृह, वासस्थान, एक प्रकार की मोटी रोटी, स्वनाम ख्यात रोटी।

बाड़ दे० (स्त्री०) धार, तलवार आदि की तीक्ष्णता, पंक्ति, पाँति, क़तार, बेड़ा, बाड़।—उड़ाना (वा०) एक साथ बन्दूक़ चलाना।—झाड़ना (वा०) एक साथ बन्दूक़ दागना।—दिलवाना (वा०) धार तेज करवाना, शान चढ़ाना, तीक्ष्ण कराना। —बाधना (वा०) काँटे आदि से कुछ स्थान की परिधि बनाना, बाड़ा बनाना।—रखना (वा०) तीखा करना, शान चढ़ाना।—ही जब खेत खाय तो रखवाली कौन करे (लो० उ०) रक्षक ही भक्षक का काम करे तो रक्षा की क्या आशा, जिससे हानि होना असम्भव है यदि उसीसे हानि पहुँचे तो फिर भरोसा किस पर किया जाय।

बाड़व तद्० (पु०) ब्राह्मण, घोड़ों का समूह।

बाड़वानल तद्० (पु०) [बाड़व+अनल] समुद्र का अग्नि, समुद्र की आग।

बाड़ा दे० (पु०) हाता, घेरा।

बाड़िया दे० (पु०) शान चढ़ाने वाला, छुरी या तलवार आदि को तीखा करने वाला।

बाड़ी दे० (स्त्री०) उपवन, बाग़, बगीचा, बाग में का घर।

बाढ़ दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई, बढ़ती, परिवृद्ध, नदी में अधिक जल का आना।

बाढ़ना दे० (क्रि०) बढ़ना, उमड़ना, उफनाना।

बाण तद्० (पु०) अस्त्र विशेष, शर, बलिराज का ज्येष्ठ पुत्र, मूँज की बनी हुई रस्सी, सख्या विशेष, पाँच की संख्या।—गङ्गा (स्त्री०) नदी विशेष, सोमेश्वर नामक पर्वत से निकली हुई नदी, कहते हैं किसी कारण से रावण ने सोमेश्वर पर्वत पर बाण मारा था, जिससे उस पर्वत के दो खण्ड हो गये और उनके सन्धि स्थान से एक नदी निकली जिसका नाम बाणगङ्गा पड़ा।

—भट्ट (पु०) संस्कृत के एक कवि और ग्रन्थकार, गद्यकाव्य की रचना में ये सर्वश्रेष्ठ हैं हर्षचरित और कादम्बरी नामक दो गद्य-काव्य इनके बनाये हैं और चण्डिकाशतक नामक एक पद्य-काव्य भी है। पार्वती परिणय नामक एक छोटी नाटिका भी इनके नाम से प्रसिद्ध है। पर इस विषय में विद्वानों की सम्मति भिन्न प्रकार की है। ये कवि कान्यकुब्ज देशाधिपति राजा हर्षवर्द्धन के सभापण्डित थे। हर्षवर्द्धन का समय छठीं शताब्दी निश्चित हुआ है, अतएव उनके सभापण्डित का भी वही समय मानना पड़ेगा। —लिङ्ग (पु०) नर्मदा नदी में उत्पन्न शिवलिङ्ग विशेष।

बाणिज्य तद्० (पु०) वैश्य वृत्ति विशेष, क्रयविक्रय व्यवसाय, व्यापार, लेन देन।

बाणी तद्० (स्त्री०) वचन, बोली, उक्ति, भाषण, सरस्वती।

बाण्डा दे० (पु०) निराश्रय, निःसहाय, लँडा, लुच्चा, लुचा।

बात दे० (स्त्री०) बोलचाल, कथा, कथन, सम्भाषण, बोलने का विषय, प्रश्न, जिज्ञासा, कारण, निदान (पु०) रोग विशेष, गठिया बाई।—उठाना (वा०) आज्ञा का उल्लङ्घन करना, बात न मानना, चर्चा करना।—करना (वा०) बोलना, बतियाना, बातचीत करना।—काटना (वा०) बात को अशुद्ध प्रमाणित करना।—बात का बतकड़ बनाना (वा०) छोटी बात को बड़ी बनाना, सामान्य बात पर हुज्जत करना।—की बात में (वा०) अभी, तुरन्त, शीघ्र, झटपट।—गढ़ना (वा०) बात बनाना, फुसलाने की इच्छा से मिथ्या प्रशंसा करना।—चबाना (वा०) बोलते बोलते चुप हो

रहना, धीरे धीरे बोलना, ठहर ठहर कर बातें करना।—चलाना (वा०) किसी की चर्चा करना, बोलने का प्रारम्भ करना।—चीत (वा०) परस्पर भाषण, आपस में उक्ति प्रयुक्ति।—टालना (वा०) आज्ञा भङ्ग करना, प्रस्तुत बात का उत्तर न देना।—पर बात याद आती है (वा०) यह बात कहने की मेरी इच्छा नहीं थी, परन्तु प्रसङ्ग आ पड़ने से कहता हूँ जहाँ ऐसा अभिप्राय बतलाना होता है वहाँ यह बात कही जाती है। —पी जाना (वा०) कटूक्ति को भी सह लेना। —फेंकना (वा०) ठट्ठा करना, किसी की बात की अवहेला करना।—फेरना (वा०) कहते कहते बात बदल देना, अकस्मात् न कहने योग्य निकली हुई बात को छिपा लेना अथवा उसका अर्थ बदल देना।—बढ़ाना (वा०) झगड़ा टंटा करना, छोटी बात के लिये लड़ना, किसी बात को बढ़ा कर कहना।—बनाना (वा०) स्वार्थ साधने के लिये झूठी बातें कहना।—बिगाड़ना (वा०) बने हुए कार्य को नष्ट कर देना।—मानना (वा०) कहना मानना, आज्ञा मानना।—रखना (वा०) प्रतिज्ञा पालन करना, कही बात को पूरा करना।—रहना (वा०) प्रतिष्ठा का रह जाना, मान रह जाना। —लगाना (वा०) इधर की बात उधर करना, निन्दा करना, झगड़ा लगाना।

बातें करना दे० (वा०) बतियाना, सम्भाषण करना। —बनाना दे० (वा०) झूठी बातें कहना, अपना अपराध छिपाने के लिये झूठ बोलना।—मारना दे० (वा०) अपनी वीरता बताना, डींग हाँकना।—सुनना दे० (वा०) ध्यान से बात सुनना, कटूक्ति सहना, अधिक्षेप वचन सहना। —सुनाना दे० (वा०) अधिक्षेप करना, निन्दा करना, कड़ी कड़ी बातें कहना।—में उड़ाना दे० (वा०) किसी की प्रार्थना पर ध्यान न देना, किसी के काम की बातों पर हँसी करना।—में धर लेना दे० निरुत्तर (वा०) करना, उक्ति प्रयुक्ति में चुप करा देना। —में लपेटना दे० (वा०) बिना प्रयोजन किसी को रोकना, पहले बात से बड़ी बड़ी आशायें दे कर पीछे धोखा देना।

बाती दे० (स्त्री०) बत्ती, दिया में जलाई जाने वाली बाती, बर्ती, पलीता।

बातूनिया दे० (गु०) वाचाल, अधिक बातें करने वाला, बड़बड़िया।

बातूनी दे० (गु०) बातें बनाने वाला, अधिक बोलने वाला, गप्पी, बकवादी, वाचाल।

बादल दे० (पु०) मेघ, घटा, बद्दल।

बादला दे० (पु०) लप्पा, एक प्रकार का तार, जो सोना और रूपे का बनता है।

बादुर दे० (पु०) चमगीदड़।

बाध तत्० (पु०) रोक, रुकावट, निवारण। (दे०) रस्सी, जिससे खाट बिनी जाती है।

बाधक तत्० (पु०) प्रतिबन्धक, विघ्न, अड़चन, रोकने वाला।

बाधा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, क्लेश, मानसिक दुःख, प्रसूति सम्बन्धी पीड़ा।

बाधित तत्० (गु०) प्रतिबन्धित, रोका हुआ। —करना (वा०) अनुगत करना, आभारी बनाना।

बाध्य तत्० (गु०) बाधनीय, रोकने योग्य, प्रतिबद्ध करने के उपयुक्त वशीभूत, बेबश।

बान दे० (स्त्री०) स्वभाव, प्रकृति, चाल, रीति, व्यवहार। यथा—"तुलसी यह मन तजत नहिं, कुटिलिनियों की बान" (पु०) बाण, शर, खाट बीनने की रस्सी।

बानगी दे० (स्त्री०) आदर्श, दृष्टान्त, नमूना।

बानबे दे० (गु०) संख्या विशेष, नब्बे और दो, ९२।

बाना दे० (पु०) स्वभाव, प्रकृति, व्यवहार, परिच्छद, वेष विन्यास, वेष धारण, भरनी, जिस सूत से कपड़े की चौड़ाई भरी जाती है। प्रतिज्ञा, विस्तार शस्त्र विशेष। (क्रि०) खुलना, फटना, पसरना, द्विविधा होना, दो भाग होना।

बानी दे० (स्त्री०) कपड़े बुनने का सूत, वाणी, बोली।
—बोनी दे० (स्त्री०) बिनावट, बिनवाई, बुनावट।
बानूबा दे० (पु०) जल पक्षी विशेष।
बानूसा, बानूसी दे० (पु०) एक प्रकार के कपड़े का नाम।
बानैत दे० (गु०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, बाण धारण करने वाला, धनुर्धर।
बान्धव तत्० (पु०) भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार सम्बन्धी, नतैत, नातेदार।
बाप दे० (पु०) पिता, जनक।—करना (वा०) बाप के समान आदर करना, आज्ञानुवर्ती होना, वश होना।—रे बाप (वा०) आश्चर्य-भय-द्योतक। —मारे का बैर (वा०) अतिशय विरोध, बड़ा भारी विरोध।—न मारी पीदड़ी बेटा तीरन्दाज़ (लो० उ०) अयोग्य पिता के पुत्र का घमण्डी होना। जिसका बाप अयोग्य हो और वह भी स्वयं अयोग्य हो और वह अपना बखान करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।
बापड़ा दे० (गु०) दीन, असहाय, दरिद्र, कंगाल।
बापुरो दे० (गु०) बापड़ा, दीन, दुखिया, असमर्थ, असहाय।
बाफ तद्० (पु०) बाष्प, बफारा, गरम जल आदि का धूँआ।
बाबनी दे० (स्त्री०) सर्प का बिल, साँपों के रहने का स्थान।
बाबर दे० (पु०) मिठाई विशेष।
बाबा दे० (पु०) बाप, दादा, बूढ़ा, साधु, सन्यासी, इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में किया जाता है।—जी (पु०) योगी, संन्यासी, साधु आदि।
बाबू दे० (पु०) बालक, पुत्र, ठाकुर, ज़मींदार, बङ्गाली किरानी, आजकल यह पुरुष मात्र के लिये प्रयुक्त होता है।
बाम दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम। (गु०) बाया, उलटा, स्त्री, सुन्दर।—(पु०) महादेव, कामदेव।

बामा तत्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भार्या।
बाम्हन तद्० (पु०) ब्राह्मण।
बाम्हनी दे० (स्त्री०) एक पौधे का नाम, जो दवा के काम में आता है। अञ्जनहारी, कञ्चिरा, ब्राह्मणी, कीट विशेष, छिपकली, बिसखुदरा।
बायन दे० (पु०) उपहार, बैना, डाली, किसी उत्सव विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर जो भेजा जाता है।
बायव तद्० (पु०) वायव्य कोण, वायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना। (गु०) अन्य, दूसरा, भिन्न।
बायव्य तत्० (पु०) वायु कोण।
बायाँ दे० (गु०) वामाङ्ग, बायी ओर, उलटा, वाम, अङ्ग से दूसरा अङ्ग।—पाँव पूजना (वा०) पाखण्डियों के धोखे में आना, दाम्भिकों पर विश्वास करना।
बायो दे० (क्रि०) फैलाया, पसारा, विस्तारित।
बार दे० (स्त्री०) विलम्ब, समय, दिन, बेला, अवसर, देरी, देरी।—लगाना (वा०) विलम्ब करना, देरी लगाना।
बारण तद्० (पु०) वारण, रुकावट, अटकाव, हाथी, करी, गज।
बारन दे० (पु०) वारण, रोक, रुकावट।
बारना दे० (क्रि०) बिलगाना, अलग अलग करना निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना।
बारनारी तद्० (स्त्री०) वारनारी, वेश्या, गणिका, वाराङ्गना, पतुरिया।
बारम्बार दे० (अ०) बार बार, प्रतिक्षण, हर घड़ी, प्रति पल।
बारह दे० (गु०) संख्या विशेष, दस और दो, दो अधिक दश, १२।—खड़ी (स्त्री०) द्वादश मात्राओं का व्यञ्जनों के साथ मिलान।—बाँट (पु०) भय, [illegible]—बाँट होना [illegible] सत्या-
[illegible]

बाराखरी दे० (स्त्री०) अक्षरों का मिलान, बारहखड़ी।

बारासिंगा दे० (पु०) कन्दसार, मृग विशेष, यह जङ्गली जन्तु है, हिरनों से बड़ा होता है और इसके सींगों से सींड़ा निकलते हैं।

बाराह तद्० (पु०) वराह, सूकर, सूअर।

बाराहीवेर दे० (पु०) ओषधि विशेष, नेत्र वाला।

बारी दे० (स्त्री०) बाड़ी, बगीचा, झरोखा, बिन ब्याही कन्या, क्वारीकन्या, ओसरी, पाला। (पु०) जाति विशेष, पतरी बनाने वाला, मशाल दिखाने वाला, कान और नाक में पहनने का गहना।—दार (पु०) नियत समय का नौकर।

बारुणी तद्० (स्त्री०) मदिरा, मद्य, वरुण देवता की दिशा, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र।

बारूद दे० (स्त्री०) दारू, शोरा, गन्धक और कोयले से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भक से उड़ जाती है।

बारे दे० (पु०) बच्चे, लड़के, बालक।

बाल तद्० (पु०) लड़का, बालक, बच्चा, केश, शिरोरुह। (पु०) ना समझ, अज्ञान, मूर्ख।—गोपाल (वा०) बाल बच्चे, लड़के बाले।—ग्रह (पु०) बालकों के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, सूखना आदि।—बाँधो कौड़ी मारना (वा०) निशाना लगाना।—बाल बच गये (वा०) बिलकुल बच जाना, आक्रमण से रक्षा पाना।—बाल बैरी होना (वा०) सब से विरोध होना।—बाल गजमोती पिरोना (वा०) खूब शृङ्गार करना, खूब सजाना—बच्चे (वा०) लड़के बाले, पुत्र पौत्र आदि।—बाँका न होना (वा०) किसी प्रकार की हानि न होना, कुछ भी न बिगड़ना।

बालक तद्० (पु०) लड़का, छोकरा, छोटा, ढोटा।—पन (पु०) बाल्य, लड़काई, बालपन।

बालका दे० (पु०) योगी या संन्यासियों का चेला।

बालछड़ दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, सुगन्ध वाला।

बालतोड़ दे० (पु०) घाव, फुन्सी, बाल टूटने से जो घाव होता है।

बालना दे० (क्रि०) सुलगाना, जलाना, दीपक आदि का जलाना।

बालभोग दे० (पु०) प्रातःकाल का नैवेद्य, प्रातःकाल जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है।

बालम दे० (पु०) प्रियतम, पति, प्यारा।

बालमखीरा दे०(पु०) एक तरह की ककड़ी, खीरा विशेष।

बालराँड दे० (स्त्री०) बालरण्डा, बालविधवा।

बाललीला तद्० (स्त्री०) लड़कपन का खेल, बाल चरित्र।

बालवत्स तद्० (पु०) कबूतर, बालकों पर कृपा, बालकों पर दयालु।

बालसुख तद्० (पु०) बाल्यकाल का सुख, बालकपन का सुख।

बाला तद्० (स्त्री०) छोटी अवस्था की लड़की, कुंवर, कानों में पहनने का गहना।—चाँद (पु०) द्वितीया का चन्द्रमा, दूज का चन्दा।—पन (पु०) बालकपन, लड़काई।—भोला (वा०) सीधा सादा, छल कपट रहित।

बालि तद्० (पु०) बानरराज, इनकी राजधानी का नाम किष्किन्धा था। मेरु पर्वत पर योगध्यान मग्न ब्रह्मा के नेत्रों से अकस्मात् आँसू टपक पड़े, उससे एक सुन्दर बानरी उत्पन्न हुई। उसी बानरी के गर्भ से देवराज इन्द्र और सूर्य के औरस से सुग्रीव और बालि उत्पन्न हुए थे। ब्रह्मा की आज्ञा से बालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन किया। बालि की स्त्री का नाम तारा और सुग्रीव की स्त्री का नाम रूमा था।

किसी मायावी दैत्य का बध करने के लिये एक समय बालि पाताल गया था, उसके आने में विलम्ब देख सुग्रीव ने उसकी मृत्यु निश्चित कर ली और तदनुसार उन्होंने यह सम्वाद प्रचारित किया कि मन्त्रियों ने सुग्रीव को राजा बनाया, राज्यासन

बानी दे० (स्त्री०) कपड़े बुनने का सूत, बाणी, बोली।
—बोनी दे० (स्त्री०) बिनावट, बिनवाई, बुनावट।
बानूया दे० (पु०) जल पक्षी विशेष।
बानूसा, बानूसी दे० (पु०) एक प्रकार के कपड़े का नाम।
बानैत दे० (गु०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला, बाण धारण करने वाला, धनुर्धर।
बान्धव तद्० (पु०) भाई बन्धु, कुटुम्ब, परिवार सम्बन्धी, नतैत, नातेदार।
बाप दे० (पु०) पिता, जनक।—करना (वा०) बाप के समान आदर करना, आज्ञानुवर्ती होना, वश होना।—रे बाप (वा०) आश्चर्य-भय-द्योतक।—मारे का वैर (वा०) अतिशय विरोध, बड़ा भारी विरोध।—न मारी पीदड़ी बेटा तीरन्दाज़ (लो० उ०) अयोग्य पिता के पुत्र का घमण्डी होना। जिसका बाप अयोग्य हो और वह भी स्वयं अयोग्य हो और वह अपना बखान करे तब यह लोकोक्ति कही जाती है।
बापड़ा दे० (गु०) दीन, असहाय, दरिद्र, कंगाल।
बापरो दे० (गु०) बापड़ा, दीन, दुखिया, असमर्थ, असहाय।
बाफ तद्० (पु०) बाष्प, बफारा, गरम जल आदि का धूआँ।
बाबनी दे० (स्त्री०) सर्प का बिल, साँपों के रहने का स्थान।
बाबर दे० (पु०) मिठाई विशेष।
बाबा दे० (पु०) बाप, दादा, बूढ़ा, साधु, सन्यासी, इस शब्द का प्रयोग बड़े माननीय के अर्थ में किया जाता है।—जी (पु०) योगी, संन्यासी, साधु आदि।
बाबू दे० (पु०) बालक, पुत्र, ठाकुर, ज़मींदार, बङ्गाली किरानी, आजकल यह पुरुष मात्र के लिये प्रयुक्त होता है।
बाम दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम। (गु०) बायाँ, उलटा, टेढ़ा, सुन्दर।—(पु०) महादेव, कामदेव।
बामा तद्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, भार्या।
बाम्हन तद्० (पु०) ब्राह्मण।
बाम्हनी दे० (स्त्री०) एक पौधे का नाम, जो दवा के काम में आता है। अञ्जनहारी, कुञ्जिका, ब्राह्मणी, कीट विशेष, छिपकली, बिसखुपरा।
बायन दे० (पु०) उपहार, बैना, डाली, किसी उत्सव विशेष के उपलक्ष में मित्रों के घर जो भेजा जाता है।
बायव तद्० (पु०) वायव्य कोण, वायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना। (गु०) अन्य, दूसरा, भिन्न।
बायव्य तद्० (पु०) वायु कोण।
बायाँ दे० (गु०) बामाङ्ग, बायीं ओर, उलटा, बाया, अङ्ग से दूसरा अङ्ग।—पाँव पूजना (वा०) बाल रिझयों के धोखे में आना, दाम्भिकों पर विश्वास करना।
बायो दे० (क्रि०) फैलाया, पसारा, विस्तारित।
बार दे० (स्त्री०) विलम्ब, समय, दिन, बेला, अवसर, देरी, देरी।—लगाना (वा०) विलम्ब करना, देरी लगाना।
बारण तद्० (पु०) वारण, रुकावट, अटकाव, हाथी, करी, गज।
बारन दे० (पु०) वारण, रोक, रुकावट।
बारना दे० (क्रि०) बिलगाना, अलग अलग करना, निषेध करना, रोकना, रुकावट डालना।
बारनारी तद्० (स्त्री०) वारनारी, वेश्या, गणिका, वाराङ्गना, पतुरिया।,
बारम्बार दे० (अ०) बार बार, प्रतिक्षण, हर घड़ी, प्रति पल।
बारह दे० (गु०) संख्या विशेष, दस और दो, दो अधिक दश, १२।—खड़ी (स्त्री०) द्वादश मात्राओं का व्यञ्जनों के साथ मिलान।—बाँट (पु०) भय, शोक, ग्लानि, दीनता आदि।—बाँट होना (वा०) उजड़ना, बिगड़ना, खराब होना, सत्यानाश होना।
बारहदरी दे० बारह दरवाजे का मकान, हवादार मकान, बङ्गला।

बाराखरी दे० (स्त्री०) अक्षरों का मिलान, बारहखड़ी।

बारासिंगा दे० (पु०) कन्दसार, मृग विशेष, यह जङ्गली जन्तु है, हिरनों से बड़ा होता है और इसके सींगों से सींहा निकलते हैं।

बाराह तद्० (पु०) वराह, सुकर, सूअर।

बाराहीघेर दे० (पु०) ओषधि विशेष, नेत्र वाला।

बारी दे० (स्त्री०) बाड़ी, बगीचा, भरोखा, बिन ब्याही कन्या, क्वारीकन्या, ओसरी, पाला। (पु०) जाति विशेष, पत्तरी बनाने वाला, मशाल दिखाने वाला, कान और नाक में पहनने का गहना।—दार (पु०) नियत समय का नौकर।

बारुणी तद्० (स्त्री०) मदिरा, मद्य, वरुण देवता की दिशा, पश्चिम दिशा, शतभिषा नक्षत्र।

बारूद दे० (स्त्री०) दारू, शोरा, गन्धक और कोयले से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भक से उड़ जाती है।

बारे दे० (पु०) बच्चे, लड़के, बालक।

बाल तद्० (पु०) लड़का, बालक, बच्चा, केश, शिरोरुह। (पु०) ना समझ, अज्ञान, मूर्ख।—गोपाल (वा०) बाल बच्चे, लड़के बाले।—ग्रह (पु०) बालकों के कष्टदायक ग्रह, उपग्रह, पूतना आदि।—बाँधी कौड़ी मारना (वा०) निशाना लगाना।—बाल बच जाना (वा०) बिलकुल बच जाना, आक्रमण से रक्षा पाना।—बाल बैरी होना (वा०) सब से विरोध होना।—बाल गजमोती पिरोना (वा०) खूब शृङ्गार करना, खूब सजाना—बच्चे (वा०) लड़के वाले, पुत्र पौत्र आदि।—बाँका न होना (वा०) किसी प्रकार की हानि न होना, कुछ भी न बिगड़ना।

बालक तद्० (पु०) लड़का, छोकरा, छोटा, ढोटा।—पन (पु०) बाल्य, लड़काई, बालपन।

बालका दे० (पु०) योगी या संन्यासियों का चेला।

बालछड़ दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, सुगन्ध वाला।

बालतोड़ दे० (पु०) घाव, फुन्सी, बाल टूटने से जो घाव होता है।

बालना दे० (क्रि०) सुलगाना, जलाना, दीपक आदि का जलाना।

बालभोग दे० (पु०) प्रातःकाल का नैवेद्य, प्रातःकाल जो भगवान् को नैवेद्य लगाया जाता है।

बालम दे० (पु०) प्रियतम, पति, प्यारा।

बालमखीरा दे०(पु०) एक तरह की ककड़ी, खीरा विशेष।

बालरंडा दे० (स्त्री०) बालरण्डा, बालविधवा।

बाललीला तद्० (स्त्री०) लड़कपन का खेल, बाल चरित्र।

बालवत्स तद्० (पु०) कबूतर, बालकों पर कृपा, बालकों पर दयालु।

बालसुख तद्० (पु०) बाल्यकाल का सुख, बालकपन का सुख।

बाला तद्० (स्त्री०) छोटी अवस्था की लड़की, युवती, कानों में पहनने का गहना।—चाँद (पु०) द्वितीया का चन्द्रमा, दूज का चन्दा।—पन (पु०) बालकपन, लड़काई।—भोला (वा०) सीधा सादा, छल कपट रहित।

बालि तद्० (पु०) वानरराज, इनकी राजधानी का नाम किष्किन्धा था। मेरु पर्वत पर योगध्यान मग्न ब्रह्मा के नेत्रों से अकस्मात् आँसू टपक पड़े, उससे एक सुन्दर वानरी उत्पन्न हुई। उसी वानरी के गर्भ से देवराज इन्द्र और सूर्य के औरस से सुग्रीव और बालि उत्पन्न हुए थे। ब्रह्मा की आज्ञा से बालि ने किष्किन्धा में अपना राज्य स्थापन किया। बालि की स्त्री का नाम तारा और सुग्रीव की स्त्री का नाम रुमा था।

किसी मायावी दैत्य का बध करने के लिये एक समय बालि पाताल गया था, उसके आने में विलम्ब देख सुग्रीव ने उसकी मृत्यु निश्चित कर ली और तदनुसार उन्होंने यह सम्वाद प्रचारित किया कि मन्त्रियों ने सुग्रीव को राजा बनाया, राज्यासन

पर बैठ कर सुग्रीव वालि की स्त्री तारा को रख कर राजसुख भोगने लगे। कुछ दिनों के बाद पाताल से वालि अपनी राजधानी में लौट आया सुग्रीव के आचरणों से दुःखित होकर वालि सुग्रीव को मारने के लिये चेष्टा करने लगा। प्राण बचाने के लिये सुग्रीव वहाँ से भाग गये, वालि ने अपनी स्त्री और सुग्रीव की स्त्री को भी रख लिया, अन्त में वालि रामचन्द्र की सहायता से मारा गया।—कुमार (पु०) अङ्गद।

वालिश तत्० (पु०) मूर्ख, अज्ञ, नासमझ।

वाली दे० (स्त्री०) लड़की, कन्या, कुण्डल।

वालुका तत्० (स्त्री०) रेत, बालू, कङ्कर।—**मय** (पु०) रेतीला, किरकिरा।

वालू दे० (स्त्री०) वालुका, रेत।—**चर** (पु०) गाँजे का एक भेद।—**चरी** (स्त्री०) रेशमी वस्त्र विशेष।—**शाही** (स्त्री०) एक मिठाई का नाम।

वाल्य तत्० (पु०) लड़कपन, लड़काई।

वाव दे० (पु०) वायु, पवन, बयार।—**गोला** (पु०) रोग विशेष, पेट की पीड़ा, शूल।—**बाँधना** (वा०) विरौरी करना कफ बाँधना।—**बहना** (वा०) हवा चलना, किसी प्रकार का विचार फैलना।—**के घोड़े पर सवार होना** (वा०) अभिमान करना, घमण्ड में आ कर किसी को कुछ न समझना।—**बतास** (पु०) दैवी आपद, भूत बाधा।—**शूल** (पु०) वायगोला।

वावन दे० (पु०) बौआई।

वावभक दे० (पु०) गप्पी, बकवादी, बड़बड़िया, वाचाल।

वावड़ी दे० (स्त्री०) वावली, तड़ाग, छोटा तलाव।

वावना दे० (पु०) ठिगन, बवना, खर्व।

वावला दे० (पु०) विक्षिप्त, उन्मत्त, पागल, सिड़ी।

वावली दे० (स्त्री०) बावड़ी, तड़ाग, तालाव।

वाष्प तत्० (पु०) नेत्र जल, आँसू, वाष्प, भाफ।

वास दे० (पु०) स्थान, वासस्थान, रहने का स्थान, डेरा, बसेरा। (स्त्री०) महक, सुगन्ध, गन्ध।

वासन दे० (पु०) बरतन, भाँडा, पात्र।

वासना दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ। (क्रि०) सुगन्धित करना, बासना, महकाना, वास देना।

वासा दे० (पु०) स्थान, रहने का स्थान, डेरा।

वासी तद्० (पु०) वासी, निवासी, रहने वाला, निवास करने वाला।

वासी दे० (पु०) पर्युषित अन्न, भाफ निकला अन्न, दुर्गन्ध युक्त।—**बचे न कुत्ता खाय** (क० व०) विरोध का कारण नहीं रहना, ऐसी कोई बात ही नहीं, जिससे झगड़ा हो।—**फूलों बास नहीं परदेसी बालम आस नहीं** (लो० व०) दूसरों के अधीन बातों में लाभ की आशा नहीं, समय पर किसी काम को न कर, समय बीतने पर उस की सिद्धि की आशा निरर्थक है।

वाहक तत्० (पु०) [वह + णक्] ढोने वाला, भार पहुँचाने वाला, मजूर।

वाहन तत्० (पु०) [वह + अनट्] असवारी, घोड़ा गाड़ी आदि।

वाहना दे० (क्रि०) अस्त्र चलाना, फेंकना, छोड़ना, त्यागना, भैंस गौ आदि का गर्भधारण करना।

वाहर दे० (अ०) अन्यत्र, दूसरा स्थान, परदेश अन्य देश।—**के खा जाँय, घर के गीत गावें** (लो० व०) जिसका नियमित अधिकार है उसे तो कुछ नहीं बलाई और सब ले लें। हकदार को न मिलना और दूसरे को लाभ होना।

वाहु तत्० (पु०) बाँह, भुजा।—**ज** (पु०) बाहु से उत्पन्न, दूसरा वर्ण, क्षत्रिय।—**युद्ध** (पु०) मल्ल युद्ध पहलवानों की लड़ाई कुश्ती।

वाहुल्य तत्० (पु०) बहुलता, आधिक्य, अधिकाई। "बाहुल्यता" शब्द बिलकुल अशुद्ध है, तो भी इसका प्रयोग किया जाता है।

विञ्जन तद्० (पु०) व्यञ्जन, तरकारी, भाजी।

विक तद्० (पु०) वृक, हुण्डार, भेड़िया।

विकट तद्० (पु०) भयङ्कर, भयानक, डरावना, कठिन, कठोर।

बिकना दे० (क्रि०) बिक्री होना, बेचा जाना, समाप्त होना, उठना ।

बिकराल तद्० (गु०) डरावना, भयङ्कर, भयानक, विकट, कठोर ।

बिकल तद्० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न, बेचैन ।

बिकसना दे० (क्रि०) खिलना, विकसित होना । फूलना, प्रस्फुटित होना, प्रसन्न होना, मुसकाना ।

बिकसित तद्० (गु०) खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न ।

बिकाऊ दे० (गु०) विक्रेय वस्तु, बेंची जाने वाली वस्तु, जो चीज़ बेची जाय ।

बिकाना दे० (क्रि०) बिक जाना, खप जाना, उठाना ।

बिकाव दे० (स्त्री०) बिक्री, खपत, उठाव ।

बिकाश तद्० (पु०) चमक, प्रकाश, आनन्द, हर्ष, विकाश ।

बिक्की दे० (पु०) ढोल के साथी, किसी खेल के एक पक्ष वाले आपस में बिक्की कहे जाते हैं ।

बिक्री दे० (स्त्री०) विक्रय, बिकाव, खपत ।

बिखरना दे० (क्रि०) फैलना, पसरना, क्रुद्ध होना, तितर बितर होना, क्रोध करना, क्रुद्ध होना ।

बिगड़ना दे० (क्रि०) ख़राब होना, नष्ट होना, अनबनाव होना, क्रोध करना, विरोधी होना ।

बिगड़ी दे० (स्त्री०) लूट, लड़ाई ।

बिगसना दे० (क्रि०) विकसना, विकसित होना, खिलना, फूलना ।

बिगहा दे० (पु०) बीघा, बीस बिस्वा ।

बिगाड़ दे० (गु०) विरोधी, तोड़, भङ्ग, लड़ाई, झगड़ा, हानि, क्षति ।

बिगाड़ना दे० (क्रि०) विरोध करना, तोड़ना, क्षति पहुँचाना ।

बिगोई दे० (स्त्री०) भुलावा, छुपाव, छिपाव ।

बिघन तद्० (पु०) विघ्न, रुकावट, बाधा, अड़चन ।

बिच दे० (अ०) बीच, अन्तर, व्यवधान ।

बिचकना दे० (क्रि०) निराश होना, भागना, ताड़ जाना, सावधान होना, समझ लेना ।

बिचकन्ना दे० (पु०) मध्यमा, अँगुलि ।

बिचकाना दे० (क्रि०) निराश करना, भगाना, सावधान कर देना ।

बिचलना दे० (क्रि०) विचलित होना, फिसलना, बिछलना, खसकना, स्खलित होना ।

बिचली दे० (स्त्री०) बीचवाली, मध्यस्था ।

बिचवई दे० (पु०) मध्यस्थ, बिचवान, बिचवई ।

बिचार तद्० (पु०) ध्यान, निर्णय ।

बिचारना दे० (क्रि०) ध्यान करना, सोचना, निर्णय करना, समझना, बूझना, जाँचना ।

बिचारित तद्० (गु०) सोचा हुआ, निश्चय किया हुआ ।

बिचारी तद्० (गु०) विचारक, विचारकर्ता, निर्णय कर्ता ।

बिचाली दे० (स्त्री०) पुआल, एक प्रकार की चटाई जो पुआल या बाँस के डंठों से बनाई जाती है ।

बिचौलिया दे० (पु०) मध्यस्थ, तिसरैत, बिचवाई ।

बिच्छू दे० (पु०) जन्तु विशेष, वृश्चिक, जिसका डङ्क विषैला होता है ।

बिछना दे० (क्रि०) फैलना, पसरना, विस्तृत होना ।

बिछुरना दे० (क्रि०) वियुक्त होना, वियोग होना, अलग अलग होना ।

बिछुराहट दे० (स्त्री०) वियोग, पृथकता, भिन्नता ।

बिछलना दे० (क्रि०) बिलगाना, पृथक् होना, अलग होना, पैर फिसलना, रपटना ।

बिछवाना दे० (क्रि०) फैलाना, पसराना, बिछाना ।

बिछाता दे० (पु०) बिछुआ, भूषण विशेष ।

बिछाना दे० (क्रि०) फैलाना, पसारना ।

बिछुड़ना दे० (क्रि०) वियोग होना, पृथक् पृथक् होना, अलग होना, अलगना ।

बिछुरा दे० (पु०) अस्त्र विशेष, कटार विशेष एक गहने का नाम जो पैरों में पहना जाता है ।

बिछोड़ना दे० (क्रि०) अलगाना, वियोग कराना, भिन्न कराना ।

बिछोह दे० (पु०) वियोग, जुदाई, भिन्नता, भेद ।

बिछौना दे० (पु०) बिस्तरा, शय्या ।

बिजना दे० (पु०) व्यजन, पङ्खा ।

बिजली दे० (स्त्री०) विद्युत्, दामिनी, चपला, बादलों की टक्कर से उत्पन्न अग्नि ।

बिजया तद्० (स्त्री०) भङ्ग, भङ्ग की पत्ती ।

बिजान दे० (गु०) अजान, मूर्ख, अज्ञान ।

बिजायठ दे० (पु०) एक आभूषण का नाम जो बाँह में पहना जाता है ।

बिजारा दे० (पु०) साँड़, वृषभ, बैल ।

बिजाला दे० (गु०) बीजयुक्त, बीज सहित ।

बिजोग तद्० (पु०) वियोग, बिछुड़न, वियोग ।

बिज्जु तद्० (स्त्री०) विद्युत् ।

बिझकना दे० (क्रि०) चमकना, चौंकना, डरना, भय करना ।

बिझकाना दे० (क्रि०) चमकाना, चौंकाना, डराना ।

बिट दे० (पु०) विष्ठा, मल, बीट ।—चर (पु०) शूकर, गाँव का सूअर ।

बिटना दे० (क्रि०) बिथुरना, छिटकना, अलगना, छिटक जाना ।

बिटप तद्० (पु०) वृक्ष की शाखा, नये पल्लव ।

बिटाना दे० (क्रि०) छिटकाना, बिथराना, गिराना, पसराना ।

बिटौरा दे० (पु०) गुबरौटी, गोईंठा, उपरी ।

बिठाना दे० (क्रि०) बैठाना, ठहराना, रोकना ।

बिडकन दे० (पु०) पक्षी विशेष, बटेर आदि पक्षी, यथा—

'बिडकन घनघूरे, भच्छिके बालजीवे'

—रामचन्द्रिका ।

बिडरना दे० (क्रि०) भागना, भाग जाना, डरना, डर जाना ।

बिडार तद्० (पु०) बनबिलाव, बिडाल ।

बिडारना दे० (क्रि०) भगाना, डरवाना ।

बिडारी दे० (स्त्री०) भगाई, भगदड़ ।

बिडौजा तद्० (पु०) इन्द्र, पाकशासन, देवराज ।

बितरण तद्० (पु०) त्याग, दान, बाँटना ।

बितरना दे० (क्रि०) देना, दे देना, बिना मूल्य दे डालना ।

बिताना दे० (क्रि०) गवाना, काटना, व्यतीत करना ।

बितीत तद्० (गु०) व्यतीत, गत, बीता हुआ ।

बित्त तद्० (पु०) धन, द्रव्य ।

बित्ता दे० (पु०) वितस्ति, बित्तौद ।

बित्तिया दे० (गु०) बवना, ठिगना ।

बिथकना दे० (क्रि०) आश्चर्यित होना, अचम्भे में आना, पड़ा रहना, जहाँ का तहाँ रह जाना आगे नहीं बढ़ना ।

बिथरना दे० (क्रि०) छिटकना, बिखरना, बिखर जाना ।

बिथा तद्० (स्त्री०) व्यथा, पीड़ा, दुःख, आपत्ति, मानसी व्यथा ।

बिथुरना दे० (क्रि०) बिथरना, फैल जाना, इधर उधर होना ।

बिदरना दे० (क्रि०) बिहरना, फटना, चिरना ।

बिदरी दे० (स्त्री०) बिदर देखो, दस्ता ।

बिदा दे० (स्त्री०) बिदाई, भेजना, छुट्टी, जाने की आज्ञा ।—करना (वा०) भेजना, जाने की अनुमति देना ।

बिदराना दे० (क्रि०) विदारण करना, फाड़ना, चीरना ।

बिदाहना दे० (क्रि०) जोते हुए खेत में हेंगा चलाना, हेंगाना, खेत के ढोंके फोड़ कर बराबर करना ।

दोरना दे० (क्रि०) विद्रूप करना, चिराना।

ध तद्० (स्त्री०) विधि, रीति, व्यवहार।

धना दे० (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता, (क्रि०) भिदना, छेदना।

धवा तद्० (स्त्री०) रांड, बेवा, जिस स्त्री का पति मर गया है।

धावट दे० (स्त्री०) घाव, छेद।

न दे० (अ०) बिना, रहित, छोड़ कर, अतिरिक्त। —मारे मरना (वा०) असमय हो जाना, बिना अवसर मरना, बे मौत मरना। —रोये लड़का दूध नहीं पाता (वा०) बिना प्रयत्न के कुछ भी नहीं मिलता, अभीष्ट प्राप्ति के लिये कुछ भी प्रयत्न करना आवश्यक है। —भय प्रीति नहीं (वा०) बिना पराक्रम दिखाये प्रभाव नहीं जमता, प्रभाव विस्तार के लिये अपनी प्रभुता दिखानी चाहिये। —माँगे दे दूध बराबर माँगे दे सो पानी (लो० उ०) बिना माँगे मिलना उत्तम है। जो स्वयं तुम्हारा कल्याण करना चाहता है, उसी पर भरोसा रखो, तुम्हारे कहने से जो तुम्हारा कल्याण करेगा उससे अधिक लाभ नहीं।

ती दे० (स्त्री०) विनय, चिरौरी, प्रार्थना।

ना दे० (क्रि०) बटोरना, एकत्रित करना।

वाना दे० (क्रि०) बटोरना, एकत्रित कराना, कपड़े आदि का बुनना।

याई दे० (स्त्री०) बिनने का काम, बिनने की मजूरी।

सना दे० (क्रि०) नष्ट होना, बिगड़ना, खराब होना।

ा तद्० (अ०) रहित, अतिरिक्त, बिन।

ाई दे० (स्त्री०) बिनावट, बिनने का काम।

ास तद्० (पु०) नाश, संहार, विध्वंस।

ीना दे० (क्रि०) विनय करना, अर्चना, पूजा करना, ध्यान करना, पूजना, भजना, छाँटना।

ौला दे० (पु०) कपास का बीज।

दी दे० (स्त्री०) बिन्दु, शून्य।

बिन्धना दे० (क्रि०) डसना, डङ्क मारना, हङ्कियाना।

बिन्ना दे० (क्रि०) जाली काढ़ना, कपड़े में बेल बूटे निकालना।

बिपत दे० (स्त्री०) आपत्ति, दुःख, क्लेश।

बिपता दे० (स्त्री०) दुःख, कष्ट, क्लेश, आपत्ति। यथा—

> "एक बुलाये चौदह आवें,
> निज निज बिपता रोय सुनावें।
> भूखे मरें भरे नहीं पेट,
> क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट॥"
>
> —भारतेन्दु।

बिपरना दे० (क्रि०) आक्रमण करना, धावा करना, चढ़ाई करना।

बिफरना दे० (क्रि०) बिगड़ना, धृष्ट होना, ढीठ होना।

बिफै दे० (पु०) बृहस्पतिवार, गुरुवार।

बिया दे० (पु०) बीज, गुठली।

बियारी दे० (स्त्री०) रात्रि भोजन, ब्यालू।

बियाह दे० (पु०) विवाह, ब्याह।

बिरकत तद्० (पु०) विरक्त, योगी, काम वासना शून्य, इच्छा रहित।

बिरचन दे० (पु०) बैर का आटा।

बिरद तद्० (पु०) यश, ख्याति, प्रसिद्धि, सुकीर्ति।

बिरमना दे० (क्रि०) विराम करना, विश्राम करना, ठहरना, विलम्ब करना, विलम्ब लगाना।

बिरमाना दे० (क्रि०) ठहराना, रोकना, बिलमाना।

बिरला दे० (गु०) कोई, कोई, अनूठा, अपूर्व, अनुपमेय, अद्भुत।

बिरवा दे० (पु०) रूखड़ा, पौधा, छोटा वृक्ष।

बिरसना दे० (क्रि०) रहना, टिकना, ठहरना।

बिरह दे० (पु०) वियोग, बिछोह, बिछुड़न।

बिरहनी दे० (स्त्री०) विरहिणी, वियोगिनी, अपने पति से जिस स्त्री का वियोग हो गया हो।

बिरहा दे० (पु०) वियोग, बिछोह, अहीर का गीत।

बिरहिया दे० (गु०) विरहिणी, विरही।

विरही तद्० (पु०) वियोगी।
विराजना दे० (क्रि०) शोभना, सुन्दर मालूम होना, सुख भोग करना, सुख पूर्वक रहना।
विराना दे० (क्रि०) चिढ़ाना। (गु०) अन्यदीय, अन्य सम्बन्धी, दूसरे का।
विराम तद्० (पु०) विश्राम, वाक्य की समाप्ति, वाक्य समाप्ति सूचक चिन्ह।
विरिया दे० (स्त्री०) अवसर, समय, बारी, पाला।
विरोग दे० (पु०) विरह, वियोग।
विरोगन दे० (स्त्री०) वियोगिनी, विरहिनी।
विर्नी दे० (स्त्री०) बर्रे, हड्डा।
विल तद्० (पु०) छिद्र, चूहे आदि जन्तुओं के रहने का स्थान, माँद, बाँबी, सेंध।
विलखना दे० (क्रि०) सिसकना, रोना।
विलखना दे० (क्रि०) देखना, निरखना, उदास होना।
विलग दे० (गु०) अलग, भिन्न, जुदा, न्यारा। —मानना (वा०) भेद मानना, जुदाई मानना, विरोध करना।
विलगना दे० (क्रि०) भिन्न भिन्न होना, पृथक् पृथक् होना, फटना, छटना।
विलगाव दे० (पु०) भिन्नता, भेद, चिलगाहट।
विलगाहि दे० (क्रि०) अलग होते हैं, पृथक् पृथक् होते हैं।
विलङ्घना दे० (क्रि०) चढ़ना, आरोहण करना।
विलचना दे० (क्रि०) छाँटना, चुनना, बाछना, बिलगाना।
विलटना दे० (क्रि०) बिगड़ना, नष्ट होना, स्खलित होना, धर्म भ्रष्ट होना।
विलनी दे० (स्त्री०) सूक्ष्म कीट विशेष, जो आँखों के सामने घूमा करती है, आँख पर की फुड़िया।
विलबन्द दे० (स्त्री०) निपटारा, निर्णय।
विलबिलाना दे० (क्रि०) विलाप करना, कूकना, व्याकुल होना, तड़पना, तड़फड़ाना।
विललाना दे० (क्रि०) विलाप करना, रोना।
विलल्ला दे० (पु०) मोढ़ू, मूर्ख, बेसमझ।
विलसना दे० (क्रि०) शोभित होना, आनन्दित होना, सुख भोगना, सुख भोग करना।
विलस्त दे० (पु०) बिलाद, बित्ता, बितस्ति।
विलहरा दे० (पु०) पनडब्बा, पान रखने का डब्बा।
विलहरी दे० (स्त्री०) छोटा पनडब्बा, पान रखने का छोटा डब्बा।
विलाई दे० (स्त्री०) बिल्ली, मार्जार, कद्दूकश, लोहा या पीतल की बनी एक वस्तु जिससे कद्दू के लच्छे काटते हैं। किवाड़ी की बिटकनी, जिससे किवाड़ी बन्द करते हैं।
विलाना दे० (क्रि०) नष्ट होना, ध्वस होना, मिट जाना।
विलान्द दे०,(स्त्री०) बिलस्त, वितस्ति, बित्ता।
विलापना दे० (क्रि०) रोना, बिलखना, दुःख करना।
विलार दे० (पु०) मार्जार, बिलाव, बिलाई।
विलावल दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष, एक रागिनी का नाम।
विलोना, विलोवना दे० (क्रि०) मथना, महना, दही से मक्खन निकालना, दही मथना।
विल्ला दे० (पु०) बिढाल, बिलाव।
बिल्ली दे० (स्त्री०) बिलाई, बिडाल।—भी लड़ती है तो मुँह पर पंजा धर लेती है (लो० उ०) दूसरे से सामना करने के पहले अपनी रक्षा का उपाय कर लेना चाहिये। अपनी रक्षा का प्रबन्ध करके दूसरों से भिड़ना चाहिये।—के भाग छींका टूटा (लो० उ०) भाग्य से मनोरथ पूर्ण हो गया। संयोग वश काम हो गया।
विषखोपरा दे० (पु०) गोह, गोधा।
बिसन तद्० (पु०) व्यसन, बुराई, दोष, बुरा अभ्यास।
बिसनी तद्० (पु०) व्यसनी, शुहदा, लम्पट।
बिसबिसाना दे० (क्रि०) सड़ना, भजभजाना।
बिसर दे० (पु०) भूल, चूक, विस्मरण।

बिसरना दे० (क्रि०) भूलना, विस्मरण होना, मिट जाना।

बिसराना दे० (क्रि०) भुलाना, बहकाना, विस्मरण कराना।

बिसात दे० (स्त्री०) पूँजी, मूलधन।

बिसाती दे० (पु०) फेरी वाला, पैकार।

बिसौध दे० (पु०) दुर्गन्ध, कुबास।

बिसाना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना, कीनना, क्रय करना।

बिसारना दे० (क्रि०) भुलाना, बिसराना।

बिसाह दे० (स्त्री०) मोल ली हुई वस्तु, खरीदी वस्तु।

बिसाहना दे० (क्रि०) मोल लेना, खरीदना।

बिसुरना दे० (क्रि०) विलाप करना, बिलपना, धीरे धीरे रोना।

बिस्तुई दे० (स्त्री०) छिपकली, पल्ली।

बिहन दे० (पु०) बीया जो खेत में बोने के लिये रखा जाता है।

बिहनौर दे० (स्त्री०) बीज बोने की क्यारी।

बिहरना दे० (क्रि०) विहार करना, आनन्द करना, घूमना, ठहरना।

बिहरी दे० (स्त्री०) चन्दा, सहायता, सहायतार्थ, नियमित धन।

बिहरना दे० (क्रि०) बीच से फटना, दरकना, छाती फटना।

बिहसना दे० (क्रि०) मुसकाना, हँसना, स्मित करना।

बिहान दे० (पु०) प्रातःकाल, भोर, भिनसार।

बिहाना दे० (क्रि०) छोड़ना, त्यागना, निर्वाह करना, काल काटना।

बीँड़ा दे० (पु०) गेंडुरी, ऐंडुरी, जो मूँज का बनता है और जिस पर भरा हुआ घड़ा रखा जाता है।

बींधना दे० (क्रि०) छेदना, भेदना, भेदन करना, बेधना।

बीअर दे० (पु०) बिल, छिद्र, छेद, माँद, साँप आदि के रहने का स्थान।

बीघा दे० (पु०) बिस्वा, बिगहा, बीस बिस्वे का एक बीघा होता है, भूमि का नाप।

बीच दे० (वा०) मध्य, माँझ, मँझ, अन्तर, भीतर। (पु०) विच्छेद, विरोध।—पड़ना (वा०) अन्तर पड़ना, विरोध होना, कलह होना।—बिचाव करना (वा०) विरोध शान्त करना, झगड़ा निपटाना, निर्णय करना, द्वेष दूर कर देना।—में पड़ना (वा०) मध्यस्थ होना, किसी काम को निपटाने का भार लेना।

बीचो बीच दे० (वा०) मध्य में, ठीक बीच में।

बीछू दे० (पु०) बिच्छू, वृश्चिक।

बीजक दे० (पु०) वस्तुओं की सूची, चलान, वस्तुओं की इयत्ता बताने वाली फेहरिस्त।

बीजना दे० (पु०) पंखा, व्यजन, तालवृन्त, कीर विशेष।

बीजार दे० (पु०) अधिक बीज वाला, बीजमय, बीजैला।

बीजी दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, नकुल, नेवला।

बीझना दे० (क्रि०) खोदना, रेलना, ठेलना, पेलना।

बीट दे० (स्त्री०) विट, मल, विष्ठा, पक्षियों की विष्ठा।

बीटना दे० (क्रि०) छलकना, उपराना, ढलना, बिथराना।

बीठा दे० (पु०) गेंडुरी, बींड़ा, जिसको सिर पर रख कर भरा हुआ घड़ा पनिहारी ले जाती है।

बीड़ा दे० (पु०) बीटिका, पान की खोंड़ी, लगा हुआ पान, एक प्रकार का सूत जो तलवार की मूठ में बाँधा जाता है।—उठाना (वा०) किसी काम को सिद्ध करने के लिये प्रतिज्ञा करना। पहले यह प्रथा थी कि जब किसी राजकुल में कोई बड़ा काम आ पड़ता था, तब राज्य के लोग बुलाये

जाते थे और उनके बीच तलवार या और कोई वस्तु रख दी जाती थी। उनमें जो अपने को शक्तिमान् समझता था वह उस वस्तु को उठा लेता था। इसका अर्थ यह होता था कि इसने काम पूरा करने की प्रतिज्ञा की।—डालना (वा०) किसी काम को पूरा करने के लिये लोगों से कहना।

बीणा तद्० (स्त्री०) वीणा, बीन बाजा।

बीतना दे० (क्रि०) व्यतीत होना, पूरा होना, समाप्त होना, गुजरना।

बीन दे० (स्त्री०) वीणा, वाद्य विशेष।

बीनना दे० (क्रि०) बुनना, बनाना, निर्माण करना।

बीबी दे० (स्त्री०) स्त्री, मेहराऊ, मेहरिया, मेम, अँग्रेज की स्त्री।

बीमा दे० (पु०) मैाखिम, हुण्डी, यह एक प्रकार की राजकीय व्यवस्था है। डाक के द्वारा भेजी जाने वाली वस्तु के टूटने फूटने की जिम्मेदारी लेने के लिये जो डाक विभाग को कुछ नियमित द्रव्य देकर इनकी व्यवस्था करनी पड़ती है उसे बीमा कहते हैं। इसके अतिरिक्त बीमे का व्यापार भी होता है। व्यवसाई जीवन बीमा आदि का व्यापार करते हैं। बड़े बड़े नगरों में मकान आदि का भी बीमा कराया जाता है। बीमा की अवधि में यदि मकान जल जाय तो बीमे वालों को मकान का दाम देना पड़ता है।

बीर तद्० (पु०) उत्साही, शूर, अध्यवसाई, भाई, भैया, कान का गहना।—बहूटी (स्त्री०) कीट विशेष, यह लाल रङ्ग का होता है और बरसात में ही यह पैदा होता है।

बीरा दे० (पु०) भाई, भैया, बीड़ा, पान की खिल्ली।

बीरी दे० (स्त्री०) बीड़ा, बीरा, पान की खीली।

बीसा दे० (पु०) बीस नख वाला कुत्ता, कुत्ते दो प्रकार के होते हैं, अठरहा, और बीसा, बीसा कुत्ते बड़े भयानक और विषैले होते हैं। उनका काटा हुआ आदमी भाग्य ही से बचता है।

बीसी दे० (स्त्री०) अन्न मापने का नाप।

बुन्दा दे० (पु०) बिन्दी, बिन्दु, शून्य, गोलाकार टीका।

बुँदिया दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई का नाम।

बुन्देला दे० (पु०) बुन्देलखण्ड का राजपूत, बुन्देलखण्ड का रहने वाला।

बुकटा, बुकट्टा दे० (पु०) मुट्ठी भर, भरमुट्ठी, मुष्टि परिमित।

बुकनी दे० (स्त्री०) चूर्ण, चूरा, सफूफ, बूरा।

बुकलाना दे० (क्रि०) बकना, स्वयं बकते रहना, बक बकाना।

बुक्का दे० (पु०) बुकटा, मुट्ठी भर, बुटकी, एक प्रकार का लाल रङ्ग।

बुकी दे० (स्त्री०) काँधे पर का वस्त्र, वह कपड़ा जो काँधे पर रक्खा जाता है।

बुजना दे० (पु०) स्त्रियों के पहनने का कपड़ा, जिसे अशुद्धि की दशा में स्त्रियाँ पहनती हैं, महान का कपड़ा।

बुजहरा दे० (पु०) पात्र विशेष, जिसमें पानी गर्म किया जाता है।

बुझना दे० (क्रि०) बुताना, गुल होना, ठंढा होना।

बुझाना दे० (क्रि०) बुतवा देना, गुल करा देना, प्रत्यर्पण करना, आग ठण्डी करना, दिया बुझाना।

बुड़ाना दे० (क्रि०) डुबाना, जलमग्न करना, बोरना।

बुड्ढा दे० (पु०) वृद्ध, बूढ़ा। (गु०) प्राचीन, पुराना, जीर्ण, शीर्ण।

बुढभस दे० (गु०) अपने को युवा समझने वाला बूढ़ा, जवान की चाल चलने वाला बूढ़ा।—लगना (वा०) बुढाई में जवानी का काम करना।

बुढवा दे० (गु०) वृद्ध, बूढ़ा, डोकरा।

ढ़ापा दे० (पु०) बुढ़ाई, वृद्धावस्था—बिगड़ना। (वा०) वृद्धावस्था में कष्ट सहना, बुढ़ाई में कलङ्क लगना।

ढ़िया दे० (स्त्री०) वृद्धास्त्री, बुढ़ी।

एडा दे० (पु०) कर्ण भूषण विशेष, कान के एक गहने का नाम।

ल दे० (पु०) जुआ खेलने की एक वस्तु, जिस पर पाँसा फेंका जाता है।

ताना दे० (क्रि०) बुझाना, बुझ जाना, गुल होना।

त्ता दे० (पु०) ठगहाई, छल, कपट, धूर्तता, धोखा।—देना (वा०) ठगना, छलना, धोखा देना।

दबुद तद्‌० (पु०) बुलबुला, पानी का बुलबुला, बबूला।

दबुदाना दे० (क्रि०) धीरे धीरे बोलना, मन मानी कुछ बकते रहना।

तद्‌० (पु०) भगवान् का अवतार विशेष। (गु०) सर्वज्ञ, सुगत, विदित, ज्ञात, कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन का पुत्र। इनका दूसरा नाम था गौतम। बुद्ध ने जिस धर्म का संसार में प्रचार किया वह भी उन्हींके नाम से प्रसिद्ध है। समस्त भूमण्डल में बौद्ध धर्म का प्रचार है, यहाँ तक कि संसार का तीसरा भाग बौद्ध धर्मावलम्बी है। तिब्बत चीन और जापान में भी बौद्ध धर्म फैला हुआ है। बौद्धमत में बारह इन्द्रियाँ मानी जाती हैं। पाँच कर्मेन्द्रिय और पाँच ज्ञानेन्द्रिय तथा मन और बुद्धि नामक दो उभयेन्द्रिय। शरीर द्वादश इन्द्रियों का आयतन है इसी कारण बौद्धमत में शरीर की द्वादशायतन संज्ञा है। सेवा ही इस शरीर का प्रधान कर्म है, इनके देवता सुगत हैं। इनके मत में प्रत्यक्ष और अनुमान दो ही प्रमाण हैं, सुतरां शब्द प्रमाण रूप वेद का इनके यहाँ आदर नहीं है जगत् क्षणभंगुर है। बौद्ध कहते हैं प्रति क्षण जगत् का परिवर्तन हो रहा है, अतएव जगत् में कोई पदार्थ स्थायी नहीं है। परिवर्तन होना ही इस जगत् का लक्षण और स्वरूप है। सांख्य और बौद्ध की अनेक बातों में एकता है। दोनों कहते हैं कि दुःख का कारण जन्म, जन्म का कारण कर्म, कर्म का कारण प्रवृत्ति और प्रवृत्ति का कारण अज्ञान है। इससे यह स्पष्ट ही सिद्ध होता है सांख्य दर्शन ही बौद्ध धर्म का मूल है। बौद्धों के मत में चार भेद हैं, माध्यमिक, योगाचार, सौत्रान्तिक और वैभाषिक। माध्यमिक बौद्धों के मत में जगत् स्वप्न दृष्ट पदार्थ के समान मिथ्या है, समस्त शून्य है। योगाचारों के मत में सभी बाह्य वस्तु असत्य है, केवल विज्ञानरूप आत्मा ही सत्य है। सौत्रान्तिक बौद्ध बाह्यवस्तु को सत्य और अनुमान सिद्ध मानते हैं वैभाषिक बौद्धों के मत से समस्त पदार्थ प्रत्यक्ष सिद्ध है। बौद्धों के मत से सब पदार्थ क्षण स्थायी हैं। ऐसी स्थिर वासना का नाम मार्ग सत्य है और यही मोक्ष है।

बुद्धि तत्‌० (स्त्री०) [बुध्+क्ति] मनीषा, धी, धिषण, ज्ञान का कारण, विवेक शक्ति।—मान् (गु०) मनीषी, समझदार, विवेकी।—हीन (गु०) मूर्ख, नासमझ, अज्ञान।

बुद्धीन्द्रिय तत्‌० (पु०) बुद्धि और इन्द्रिय, इन्द्रिय सहित बुद्धि।

बुध तत्‌० [बुध+क्त] पण्डित, विद्वान्, अभिज्ञ, चतुर्थग्रह, सौम्य, सूर्य वंशी एक राजा का नाम।—जन (पु०) पण्डितजन, अभिज्ञ, बुद्धिमान्।—वार (पु०) बुध का दिन, चौथा दिन।

बुधान तद्‌० (पु०) गुरु, पण्डित, अध्यापक, ब्रह्मा की सभा।

बुना दे० (क्रि०) बिनना, जाली निकालना, कपड़े में बेल बूटे निकालना।

बुभुक्षा तत्‌० (स्त्री०) भोजन की इच्छा, भोजनाभिलाष।

बुभुक्षित तत्‌० (गु०) भूखा, क्षुधित, पेटू, पेटार्थू।

बुरा दे० (गु०) ख़राब, दुष्ट, नीच, अधम, निकम्मा।—कहना (वा०) निन्दा करना, कलङ्कित करना; दुर्यश फैलाना।—चीतना (वा०) अशुभ चाहना, किसी की बुराई चाहना, बिगाड़ चाहना।—पेटा,

खोटा पैसा काम आता है (वा०) किसी प्रकार की भी वस्तु समय पर काम आती है। —मानना (वा०) अप्रसन्न होना, अपमान समझना, द्वेष मानना। —लगना (वा०) कष्ट होना, अनुचित मालूम होना।

बुराई दे० (स्त्री०) दुष्टता, नीचता, अधमता खोटापन, बुरापन। —पर कमर बाँधना (वा०) अशुभ करने को उद्यत होना, कष्ट पहुँचाने की चेष्टा करना।

बुलबुला दे० (पु०) बुद्बुदा, पानी का बुद्बुद, बुल्ला।

बुलाक दे० (पु०) नाक में पहनने का एक गहना।

बुलाना दे० (क्रि०) पुकारना, हाँक मारना, आह्वान करना।

बुलाहट दे० (स्त्री०) आह्वान, पुकार, बाकन।

बुल्ला दे० (पु०) बुद्बुदा, बुलबुला।

बुहनी दे० (स्त्री०) पहली बिक्री, बयाना।

बुहरी दे० (स्त्री०) भूँजे जौ।

बुहारन दे० (स्त्री०) झाड़न, कूड़ा, कर्कट।

बुहारना दे० (क्रि०) झाड़ना, बुहारी लगाना, साफ करना।

बुहारी दे० (स्त्री०) झाड़ू, बढ़नी, बढनि।

बूआ दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी, पिता की बहिन, फूफू, फूफा।

बूह दे० (अ०) भय सूचक, डराने का शब्द।

बूँद दे० (स्त्री०) बिन्दु, जलकण, जलबिन्दु, छींटा, टपका।

बूँदा दे० (पु०) बड़ी बूँद। —बाँदी (वा०) पानी बरसना, धीरे धीरे पानी पड़ना, झींसी गिरना।

बूँदी दे० (स्त्री०) वृष्टि, वर्षा की बूँद, एक प्रकार की मिठाई।

बूकना दे० (क्रि०) पीसना, कूटना, चूर्ण करना, चूरन करना।

बूका दे० (पु०) चूर्ण, बुकनी, सफूफ।

बूचा दे० (गु०) कनकटा, कर्णहीन, जिसके कान न हों, या कट गये हों।

बूझ दे० (स्त्री०) समझ, बुद्धि, ज्ञान।

बूझना दे० (क्रि०) समझना, हृदयङ्गम करना, जानना, सोचना।

बूझाई दे० (स्त्री०) शिक्षा, सीख, परिचय, बुझावट।

बूट दे० (पु०) अन्न विशेष चणक, चना।

बूटा दे० (पु०) बेल, कपड़े में सूत का या तार का बना काम।

बूटी दे० (स्त्री०) छोटा बूटा, वनस्पति, जड़ी बूटी, भूरि औषध।

बूड़ना दे० (क्रि०) डूबना, मग्न होना, जल में डूबना।

बूड़िया दे० (गु०) डूबने वाला, जल में गिरी वस्तु को डुब कर निकालने वाला, पनडुब्बा, गोताखोर।

बूड़ी दे० (स्त्री०) भाले की नौंक, बर्छी की धार, भाले का फल।

बूढ़ा (पु०) वृद्ध, बुड्ढा। (गु०) पुराना, प्राचीन, अधिक दिन का, अधिक समय का। —घाग (वा०) बहुत बूढ़ा, छटा, चालाक।

बूता दे० (पु०) शक्ति, सामर्थ्य, बल।

बूबू दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी, छोटी बहिन, दुलारी बहिन।

बूर दे० (स्त्री०) भूसी, छिलका, कैराई, अन्न का कण। —के लड्डू (वा०) एक प्रकार की मिठाई का नाम। —के लड्डू जो खाय सो भी पछताय न खाय सो भी पछताय (लो० उ०) जिस काम के करने से कुछ विशेष फल न हो, वैसे काम जो देखने से अच्छे मालूम पड़ें पर उनका फल कुछ नहीं।

बूरा दे० (पु०) साफ की हुई खाँड, लकड़ी का बूरा, आरा से लकड़ी चीरते समय जो बारीक चूरा निकलता है।

बे दे० (अ०) अबे, अरे, रे, नीच सम्बोधन।

बेंट दे० (पु०) किसी शस्त्र का मूठ, हथकड़ा, दस्ता।
बेंड़ा दे० (पु०) तिरछा, बाँका, वक्र, टेढ़ा।
बेंधना दे० (क्रि०) विधना, चुभाना, गाड़ना।
बेगार दे० (पु०) बिना मजूरी का काम, बल पूर्वक किसी से काम लेना और मजूरी न देना या थोड़ी मजूरी देना।—**पकड़ना** (वा०) जबरदस्ती बिना मजूरी के काम कराने के लिये पकड़ना, जबरदस्ती किसी के काम करने के लिये बाध्य करना।
बेगारी दे० (स्त्री०) बेगारी का काम, सेंत मेंत का काम।
बेङ्ग दे० (पु०) मेढ़क, भेक, दादुर।
बेचना दे० (क्रि०) बिक्री करना, मोल लेकर देना, दाम लेकर देना, बदला बदला करना, बदलौवल करना।
बेचू दे० (पु०) बेचने वाला।
बेजू दे० (पु०) जन्तु विशेष, नकुल, नेऊला।
बेभा दे० (पु०) लक्ष्य, निशाना, ताक, चिन्ह।
बेटवा दे० (पु०) लड़का, पुत्र, बेटा।
बेटा दे० (पु०) पुत्र, लड़का, छोकड़ा, छोटा।
बेटिया, बेटी दे० (स्त्री०) पुत्री, तनया, दुहिता, लड़की।
बेठन तद्० (पु०) बेष्टन, लपेटन, खोल, आच्छादन, ढाकन।
बेड़ दे० (पु०) घेरा, बाड़ा, मेंड़।
बेड़ा दे० (पु०) घरनई, बोयड़ा, बाड़।—**पार लगाना** (वा०) दुःख से उद्धार करना, दुःख दूर करना।—**पार होना** (वा०) सब दुःखों से छूटना, मनोरथ सफल होना।
बेड़िया दे० जाति विशेष।
बेड़ी दे० (स्त्री०) बन्धन सूत्र, पैकड़ी, पात्र विशेष, जो सींचने के काम में आता है।
बेड़ना दे० (क्रि०) घेरना, बाड़ा बाँधना।
बेढ़ा दे० (पु०) कठघरा, कठरा।
बेण, बेणु तद्० (पु०) वंशी, बाँसुरी, मुरली।
बेत तद्० (स्त्री०) वेत्र, एक प्रकार की लकड़ी जो लचीली होती है। यथा—

"फूले, फरै न बेत यदपि सुधा बरसहिं जलद,
मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलहिं विरञ्चि सम।"
—रामायण।

बेध तद्० (पु०) नक्षत्र युक्त योग विशेष, छिद्र, छेद, सूराख।
बेधड़क दे० (पु०) निर्भय, भय शून्य, निडर, निधड़क।
बेधना दे० (क्रि०) छेदना, गोंसना, फोड़ना, भेदना, गड़ाना, चुभाना।
बेन तद्० (स्त्री०) वेणु, बाँसुरी, वंशी।
बेना दे० (पु०) पङ्खा, बाँस का बना हुआ पङ्खा।
बेनी तद्० (स्त्री०) वेणी, चोटी, जूड़ा, किवाड़ में लगाया जाने वाला एक काठ।
बेमात तद्० (स्त्री०) विमाता, सौतेली माता।
बेर दे० (पु०) एक वृक्ष और उसके फल का नाम, बदरी वृक्ष, बदरी फल। (स्त्री०) बार, अवसर, विलम्ब बेला।—**बेर** (वा०) बार बार, अनेक बार, अनेक समय, बारम्बार।—**भयानक** (पु०) भयानक रात्रि, प्रलय की रात, मृत्यु की रात।
बेरी दे० (स्त्री०) बैर के झाड़, बदरी वन, बैर कंटी।
बेल दे० (पु०) बूटा, सूत या तार से बनाया हुआ कपड़े पर का काम, एक वृक्ष और उसके फल का नाम। (स्त्री०) लता।
बेलन दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वस्तु विशेष, जिससे रोटी पोई जाती है।
बेलना दे० (क्रि०) फैलाना, बढ़ाना, रोटी पोना।
बेलनी दे० (स्त्री०) टहनी, शाखा, लता।
बेल बूटा दे० (पु०) चित्रकारी का काम, बूटे का काम।
बेला दे० (पु०) पुष्प विशेष, एक सुगन्धित पुष्प और उसके पेड़ का नाम मोती या फूल, कटोरा, वाद्य विशेष, यह बाजा आकार में सारङ्गी के समान होता है।
बेलि दे० (स्त्री०) लता, पौधा जो स्वयं खड़ा न हो सके।
बेलू दे० (पु०) लुढ़कन, लुढ़काव।
बेलौ दे० (पु०) उदासीन, म्लान, निराश, हताश।

बेवरेवार दे० (अ०) स्पष्ट रूप से, साफ़ साफ़, खोल के, प्रकाश भाव से, क्रमशः, यथा क्रम।

बेवहर दे० (पु०) ऋण, उद्धार, धार, कर्ज़, लेनदेन।

बेवहरिया दे० ऋणदाता, कर्ज़ देने वाला, उत्तमर्ण, महाजन।

बेवहार तद्० (पु०) व्यवहार, चाल चलन, रीति, प्रथा।

बेवान दे० (पु०) विमान, मृतक की अरथी।

बेसन दे० (पु०) चने का आटा।

बेसनौटी दे० (स्त्री०) बेसन की रोटी।

बेसर दे० (पु०) नथुनी, नाक का एक गहना।

बेसरा दे० (पु०) पक्षी विशेष, बाज सिकरा।

बेसुरा दे० (गु०) अमेल, बेताला, कुस्वाद्य।

बेस्वा तद्० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, नर्तकी, गणिका, नगर नारी।

बेह तद्० (पु०) बेध, छिद्र, साल, छेद।

बेहड़ दे० (गु०) ऊँचहर, ऊँची नीची भूमि।

बैंगन दे० (पु०) तरकारी विशेष, बैंगन, भँटा, वृन्ताक।

बैंगनी दे० (पु०) रङ्ग विशेष, बैंगन के समान रङ्ग। (गु०) बैंगनी रङ्ग में रङ्गा हुआ।

बैंटा दे० (पु०) बेंट, कुल्हाड़ी की मूँठ, हथकड़ा।

बैंदा दे० (पु०) बूँदा, टिकुली, टीका, गोलाकार टीका।

बैंदी दे० (स्त्री०) बिन्दु, बिन्दी, टिकुली।

बैकाल दे० (पु०) तीसरा पहर, अपराह्न।

बैगन दे० (पु०) बैंगन, भण्टा, वृन्ताक।

बैजन्ती माल तद्० (स्त्री०) पञ्चरङ्गी माला, भगवान् की माला, नीलम, मोती, माणिक, पुखराज और हीरा इन रत्नों से बनी माला, बैजन्ती माल का लक्षण नीचे लिखे दोहे से स्पष्ट है—

"आँसो सोपी सूकरी कारी दरी मठ आल,
पट् पट् मुक्ता पोहिये सो बैजन्ती माल।"

बैठक दे० (स्त्री०) बैठका, बैठने का स्थान या रीति, आसन।

बैठना दे० (क्रि०) आसन मारना, आसन मार के बैठना, उपविष्ट होना, उपवेशन करना, दीवार आदि का गिर जाना, बिना काम के होना।

बैठवा दे० (गु०) बैठा हुआ, चपटा, चिपटा।

बैठाना दे० (क्रि०) बैठालना, बैठने को कहना स्थापन करना, टूटी हड्डी को बैठाना, बैठने की आज्ञा देना।

बैतरणी तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, प्रेत नदी, यम-द्वार की नदी।

बैतरा दे० (पु०) एक प्रकार की सोंठ, सूखा अदरख।

बैद तद्० (पु०) वैद्य, वैद्यकी करने वाला, चिकित्सक, औषध करने वाला।

बैदक तद्० (पु०) वैद्यक, चिकित्सा करने वाला शास्त्र, वह शास्त्र जिसमें रोग परीक्षा और चिकित्सा की विधि लिखी है।

बैन दे० (स्त्री०) वचन, बोली, कथन, बात, शब्द, ध्वनि।

बैना दे० (पु०) शिरोभूषण विशेष, एक प्रकार का भूषण जो माथे में पहना जाता है। उपहार, बाहुर।

बैपार तद्० (पु०) व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय।

बैपारी दे० (पु०) महाजन, वणिक, सौदागर, व्यवसायी।

बैमात्र तद्० (पु०) वैमात्रेय, सौतेला भाई।

बैया दे० (पु०) पक्षी विशेष।

बैयान दे० (पु०) प्रसव, जन्म, उत्पत्ति।

बैयाना दे० (क्रि०) जन्माना, उत्पन्न कराना, प्रसव कराना।

बैयाला दे० (गु०) वायु विशिष्ट, वायु वाला, बादी।

बैर तद्० (पु०) वैर, द्वेष, विद्वेष, शत्रुता, विरोध।
—**पड़ना** (वा०) द्वेष होना, विरोध करना।
—**लेना** (वा०) वैर का बदला चुकाना, प्रतिशोध करना।

बैरख दे० (पु०) झण्डा, ध्वजा, पताका।

बैरागा दे० (पु०) बैरागी का वेश।

बैल दे० (पु०) वरध, बरद, वृषभ, अनड्वाह्।

बैस तद्० (स्त्री०) वयस, अवस्था, उमर। (पु०) तीसरा वर्ण, बनिया, राजपूतों की एक जाति, बैसवारा प्रान्त के रहने वाले।

बैसन्दर तद्० (पु०) वैश्वानर, अग्नि, आग।
बैसाख तद्० (पु०) वैशाख मास, दूसरा महीना।
बैसाखी दे० (स्त्री०) वस्त्र विशेष।
बैसाँड़ दे० (पु०) घासाँटो, धसकती, धलकती।
बोआई दे० (स्त्री०) खेत बोने का काम, बीज वपन।
बोआना दे० (क्रि०) छीटना, खेत बोना, खेत में बीया छिटकाना।
बोआरा दे० (पु०) खेत बोने का समय, सुकाल।
बोरिया दे० छोटी टोकरी।
बोंट दे० (पु०) बोंट, बड़ा, बहुत।
बोक दे० (स्त्री०) बकरे का शब्द, बकरे की बोली।
बोकरा दे० (पु०) छाग, बकरा, अज।
बोकरी दे० (स्त्री०) छेरी, छेरी, बकरी, अजा।
बोच दे० (पु०) जल जन्तु विशेष, जलद, कुम्भीर, मगर।
बोचा दे० (पु०) पालकी का भेद, एक प्रकार की पालकी।
बोझ दे० (पु०) भार, लादी, बोझना।—सिर पर होना (वा०) किसी प्रकार का कठिन काम आ जाना।
बोझना दे० (क्रि०) भरना, लादना, उठवाना।
बोझल दे० (पु०) भारी, वज़नदार, वज़नी।
बोटी दे० (स्त्री०) माँस के छोटे छोटे टुकड़े।—बोटी फड़कना (वा०) बहुत चालाक होना, फरेब करना, फरफन्द करना।
बोड़ना दे० (क्रि०) डुबाना, डुहाना, मग्न करना।
बोदू दे० (पु०) बकरा, छाग, अज, छागल।
बोदली दे० (स्त्री०) भोली, गेगली।
बोदा दे० (पु०) निर्बल, अशक्त, निर्जीव, असमर्थ, नासमझ, मूर्ख।
बोद्धा तद्० (पु०) व्युत्पन्न, बुद्धिमान्, समझदार।
बोध तद्० (पु०) ज्ञान, समझ, बुद्धि, विवेक, मति।
बोधक तद्० (पु०) बोधनकर्ता, ज्ञापक, शिक्षक, बताने वाला।

बोधन तद्० (पु०) [बुध्+अनट्] ज्ञान, बोध, विवेक, समझाना।
बोधना दे० (क्रि०) समझाना, बताना, बतलाना, फुसलाना, भुलाना।
बोधनीय तद्० (पु०) बोधन करने योग्य, बोधनाई, बोधन के उपयुक्त।
बोना दे० (क्रि०) खेत बोना, बीज डालना, खेत में बीज छीटना।
बोनी दे० (स्त्री०) बोआई, खेत बोने का काम, बोने का समय।
बोया दे० (पु०) माल, सम्पत्ति, गठरी, गाँठ।
बोर दे० (पु०) पैजेब का घूँघर।
बोरा दे० (पु०) गोन, टाट का थैला, बड़ा थैला।
बोरिया दे० (पु०) चटाई, पाटी, बोरा, बड़ा थैला, टाट।
बोरो दे० (पु०) इन्द्रधनुष, एक प्रकार का चाँवल।
बोल दे० (पु०) वाद्य शब्द, गीत का शब्द, बात।
बोलचाल दे० (स्त्री०) बातचीत, सम्भाषण, कथन, सम्वाद।
बोलता दे० (पु०) बोलने की शक्ति। (पु०) बोलने वाला प्राणी, जीव।
बोलना दे० (क्रि०) बात करना, कहना, कथन करना, सम्भाषण करना।
बोलवाला दे० (पु०) प्रताप, आशीर्वाद विशेष।
बोली दे० (स्त्री०) वाणी, भाषा, बात।—ठोली सुनना (वा०) ताना सहना।
बौंड़ दे० (पु०) बेल, लता, बंवर।
बौंड़ना दे० (क्रि०) लिपटना, भरराना, बलखाना, चकराना।
बौंड़ियाना दे० (क्रि०) बवण्डर के साथ घूमना, चक्कर खाना, घूमना।
बौछार दे० (पु०) जल सहित वायु का झोंका।
बौद्ध तद्० (पु०) बुद्ध मतावलम्बी, बुद्ध मत के अनुयायी।
बौना दे० (पु०) वामन, ठिगना, खर्व।

बौरहा दे० (पु०) उन्मत्त, सिड़ी, पागल, बावला।

बौराना दे० (क्रि०) उन्मत्त होना, सिड़ाना, पागल होना।

बौरापन दे० (पु०) पागलपन, उन्मत्तता।

बौराहा दे० (पु०) बावला, पागल, उन्मत्त।

बौला दे० (पु०) पोपला, मुर्खा, दन्तहीन।

बौहा दे० (पु०) पथरीला, कङ्करीला।

बौहाई दे० (स्त्री०) उपदंश, रोगिणी स्त्री।

ब्यान दे० (पु०) बियाना, पशुओं का प्रसव।

ब्याना दे० (क्रि०) बियाना, उत्पन्न करना, प्रसव करना।

ब्याह दे० (पु०) विवाह, परिणय।

ब्याहता दे० (स्त्री०) विवाहिता, परिणीता, ब्याही हुई।

ब्याहना दे० (क्रि०) विवाह करना, परिणय करना।

ब्याहा दे० (पु०) ब्याहा हुआ, विवाहित।

ब्योंगा दे० (पु०) एक अस्त्र विशेष, जिससे चमड़ा छीला जाता है।

ब्योंत दे० (पु०) गढ़न, डौल, छांट, काट, कपड़े की काट।

ब्योंतना दे० (क्रि०) पहिरन बनाने के लिये कपड़े काटना, कतरना।

ब्योपार तद्० (पु०) व्यापार, वाणिज्य, लेनदेन, व्यवसाय, सौदागरी।

ब्योपारी तद्० (पु०) महाजन, सौदागर, व्यापारी।

ब्योमासुर तत्० (पु०) एक राक्षस का नाम, यह कंस का मन्त्री था।

ब्योरा दे० (पु०) समाचार, वृत्तान्त।

ब्योहार तद्० (पु०) व्यवहार, ब्योपार।

ब्रज तत्० (पु०) गोकुल नामक गाँव, गोष्ठ। —बाला (स्त्री०) ब्रज की स्त्री, गोपी। —भाषा (स्त्री०) ब्रज की बोली।

ब्रह्म तत्० (पु०) वेद, तप, तपस्या, विराट्, हिरण्य-गर्भ, ईश्वर, जगत्कर्ता। —कुण्ड (पु०) ब्रह्मा का बनाया सरोवर विशेष, तीर्थ विशेष। —घाती (पु०) ब्राह्मण मारने वाला, ब्रह्महत्याकारी। —चर्य (पु०) आश्रम विशेष, प्रथम आश्रम, वेदाध्ययन करने का समय, व्रत विशेष। —चारी (पु०) प्रथमाश्रमी, यज्ञोपवीत के अनन्तर नियम पूर्वक गुरुकुल में वेदाभ्यास करने वाला। —ज्ञ (पु०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मतत्त्वज्ञ, वेदज्ञ, वेदवित्। —ज्ञान (पु०) परमात्म विषयक ज्ञान। —कर्म (पु०) वेद बोधित कर्म्म। —तत्व (पु०) आत्म तत्व, ब्रह्मधर्म, ब्रह्मस्वरूप, ब्रह्मज्ञान। —तीर्थ (पु०) पुष्करमूल। —भोजन (पु०) ब्राह्मणों को खिलाना। —पुरी (स्त्री०) सुमेरु पर्वत पर ब्रह्मा की पुरी। —भूति (स्त्री०) वेदाधिकार, ब्रह्म ऐश्वर्य, ब्रह्मतेज, ब्राह्मण का धर्म। —यज्ञ (पु०) वेद पाठ। —योग (पु०) परमेश्वर प्रार्थना, भक्ति, उपासना। —रन्ध्र (पु०) मस्तक का मध्य-स्थान। —राक्षस (पु०) भूत विशेष, योनि विशेष। —रात्रि (स्त्री०) ब्रह्मा की रात, जिसमें 1000 युग होते हैं, मनुष्यों के २१६000000 वर्ष बीत जाते हैं, वह रात्रि, जिसमें श्रीकृष्ण ने रास क्रीडा की थी। —लोक (पु०) ऊर्ध्वलोक विशेष, ब्रह्मा का निवास स्थान। —वादी (पु०) वेदान्ती, ब्रह्मज्ञानी। —श्रव (पु०) वेद। —सूत्र (पु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ, वेदान्त सूत्र। —हत्या (स्त्री०) ब्राह्मण की हत्या।

ब्रह्मर्षि तत्० (पु०) वेद मन्त्र द्रष्टा, ब्राह्मण, ऋषि। —देश (पु०) आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र।

ब्रह्मा दे० (पु०) देश विशेष, बङ्गाल के पूर्व का देश, विधाता, ईश्वर।

ब्रह्माण्ड तत्० (पु०) जगत्, संसार।

ब्राह्मण तत्० (पु०) पहला वर्ण, विप्र।

ब्राह्मणी तत्० (स्त्री०) विप्रपत्नी, ब्राह्मण की स्त्री।

ब्राह्मण्य तत्० (पु०) ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की सभा, सातवाँ ग्रह।

ब्राह्म दे० (पु०) अचंभा, आश्चर्य, ब्राह्मणों की सभा। —मुहूर्त (पु०) सूर्योदय के पहले की चार घड़ी।

भ

भ व्यञ्जन का चौबीसवाँ वर्ण, ओष्ठ स्थान से उच्चारण होने के कारण इसे ओष्ठ्य वर्ण कहते हैं।

भ तत्० (पु०) अश्विनी आदि सत्ताइस २७ नक्षत्र, ग्रह, राशि, भ्रमर, भ्रान्ति, शुक्राचार्य।

भटमास दे० (पु०) अन्न विशेष।

भँभोरना दे० (क्रि०) काटना, काट खाना, कुत्ते का काटना, फाड़ खाना।

भँवर दे० (पु०) भौंर, आवर्त, चक्कर।—कली (स्त्री०) गलाबी, डोरी।

भँवरा तद्० (पु०) भ्रमर, षट्पद।

भँवरी तद्० (स्त्री०) भ्रमरी, तितिरी।

भकसी दे० (स्त्री०) अन्धेरा घर, गुफा, खोह।

भकुआ दे० (पु०) निर्बुद्धि, शठ, मूर्ख, भोंदू।

भकुवाना दे० (क्रि०) चकपकाना, भुलाना, कर्तव्य-मूढ़ होना।

भकोसना दे० (क्रि०) खाना, ठूस ठूस कर खाना।

भक्त तत्० (पु०) [भज्+क्त] सेवक, तत्पर, अनुगत, भात ओदन।—कार (पु०) पाचक, रसोइया, दार।—वत्सल (पु०) भक्तों पर दया करने वाला।

भक्ताई दे० (स्त्री०) भक्ति करना, परमेश्वरानुराग।

भक्ति तद्० (स्त्री०) [भज्+क्ति] परमात्मा में परम अनुराग, सेवा, श्रद्धा अनुरक्ति, श्रवण, कीर्तन, अर्चन, वन्दन, स्मरण, निवेदन, सख्य, दास्य और सेवन ये भक्ति के नौ भेद हैं।—मन्त (पु०) भक्त, पूजक, सेवक।

भक्ष तद्० (पु०) भक्ष्य, भोजनीय पदार्थ, खाने योग्य वस्तु।

भक्षक तत्० (पु०) [भक्ष+णक्] खाने वाला, खादक।

भक्षण तत्० (पु०) [भक्ष+अनट्] भोजन, आहार, भोजन करने की वस्तु।

भक्षणीय तत्० (गु०) [भक्ष+अनीय] भोजनार्ह, भोजन योग्य, भोजन करने के उपयुक्त।

भक्षित तत्० (गु०) [भक्ष्+इत] खाया हुआ, खादित।

भक्ष्य तत्० (गु०) [भक्ष्+य] भक्षणीय, खाने योग्य, भोजनार्ह, भोजन के उपयुक्त।

भग तत्० (पु०) स्त्रीचिन्ह, योनि, वीर्य, इच्छा, ज्ञान, वैराग्य, कीर्ति, माहात्म्य, ऐश्वर्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, यश, सौभाग्य।

भगण तत्० नक्षत्र समूह, नक्षत्र मण्डल, गण विशेष, अक्षर वृत्त पद्य में तीन तीन अक्षर के एक एक गण होते हैं, भगण में आदि का अक्षर गुरु होता है। राघव, माधव, नागर आदि।

भगत तद्० (पु०) भक्त, भक्ति करने वाला, नर्तक, कत्थक, नचनिया।—खेलना (वा०) स्वाँग रचना, रूप उतारना।

भगतन दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, नर्तकी।

भगताई दे० (स्त्री०) भगतपन, भक्त का कर्म, भक्ति।

भगतिया दे० (पु०) भवैया, कथिक, जाति विशेष, कत्थक।

भगदत्त तत्० (पु०) प्राग्ज्योतिषपुर, वर्तमान आसाम के राजा का नाम, यह नरकराज का ज्येष्ठ पुत्र था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के समय इसने अर्जुन से ८ दिनों तक युद्ध किया था। युद्ध में हार कर यह युधिष्ठिर के अधीन हो गया था, महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की ओर से इसने बड़ा भयङ्कर युद्ध किया था। द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में यह अर्जुन से लड़ता रहा और उन्हीं के हाथ से मारा गया। इसने अर्जुन को मारने के लिये वैष्णवास्त्र का प्रयोग किया था, परन्तु श्रीकृष्ण ने उस अस्त्र को अपने छाती से रोक लिया इससे उसका अस्त्र व्यर्थ गया।

भगन्दर तत्० (पु०) रोग विशेष, एक रोग का नाम, गुदा के आस पास का नासूर।

भगल दे० (पु०) छल, कपट, धोखा।

भगलिया दे० (पु०) छली, कपटी, ठग।

भगवत तद्० (पु०) भागवत, भगवत् भक्त, भगवान्, परमेश्वर, नारायण।

भगवन्त तद्० (पु०) ईश्वर, परमेश्वर।

भगवाँ दे० (पु०) गेरुआ कपड़ा, काषाय वस्त्र।

भगवान् तत्० (पु०) षट् ऐश्वर्य युक्त, नारायण।

भगाना दे० (क्रि०) हटाना, हकाना, खेदना, खदेड़ना, दुरदुराना।

भगिनी तत्० (स्त्री०) बहिन, बहन, दीदी।

भगीरथ तत्० (पु०) सूर्यवंशीय दिलीपराज के पुत्र और अंशुमान के पौत्र। राजा दिलीप भगीरथ को राज्य देकर तपस्या करने के लिये हिमालय चले गये, वहाँ बहुत दिनों तक तपस्या करने के पश्चात् उन्होंने शरीर त्याग किया। राज्य पा कर भगीरथ सोचने लगे कि किस प्रकार स्वर्ग से गङ्गा लायी जा सकती हैं। भगीरथ प्रजा हितैषी धर्मात्मा राजा थे, तथापि उनके कोई पुत्र नहीं था। वे मन्त्रियों को राज्य सौंप कर गङ्गा को लाने के लिये निकले। हिमालय के गोकर्ण तीर्थ पर ऊर्ध्वबाहु हो कर वे तपस्या करने लगे। उनकी तपस्या से सन्तुष्ट हो कर वर देने के लिये ब्रह्मा जी आये, उनसे दो वर देने के लिये भगीरथ ने प्रार्थना की। (१) कपिल के शाप से भस्म हमारे साठ हज़ार प्रपितामह गङ्गा जल से पवित्र हो कर स्वर्गवासी हों। (२) हमारा वंशलोप न हो। ब्रह्मा जी ने प्रथम वर प्रार्थना के उत्तर में कहा तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, परन्तु गङ्गा के गिरने का वेग पृथिवी सहन नहीं कर सकती, अतएव तुम महादेव की आराधना करो, वे यदि गङ्गा को धारण करना स्वीकार करेंगे तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा। दूसरे वर के लिये उन्होंने कहा तुम्हारे वंश की रक्षा होगी, भगीरथ ने महादेव की आराधना की, महादेव प्रसन्न हो कर गङ्गा का वेग धारण करने के लिये प्रस्तुत हुए। महादेव के मस्तक पर बड़े वेग से गङ्गा का प्रवाह गिरने लगा, गङ्गा ने चाहा कि अपने तीव्र वेग से महादेव को पाताल में लिये चली जाँय। गङ्गा का यह अभिप्राय समझ कर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा ही में रोक रखा। एक वर्ष तक गङ्गा वहीं घूमती रहीं। पुनः भगीरथ के स्तुति करने पर महादेव ने गङ्गा को अपनी जटा से बाहर निकाल दिया। गङ्गा की सात धारायें निकलीं, जिनमें सात पूर्व की ओर सात पश्चिम की ओर गयीं। सातवाँ प्रवाह भगीरथ के साथ साथ चला, भगीरथ पैदल धारा के साथ नहीं चल सकते थे, इस कारण उन्हें एक रथ मिला। भगीरथ के साथ चलने वाली गङ्गा की धारा का नाम भागीरथी है।

भगेल दे० (स्त्री०) पराजय, हार। (पु०) भगोड़ा, भागने वाला।

भगोड़ दे० (पु०) भागने वाला, भगेल, भगैया।

भग्गुल दे० (पु०) भगोड़, दूत, हरकारा।

भग्गू दे० (पु०) भगोड़ा, डरपोक, बुजदिल।

भग्न तत्० (पु०) पराजित, त्रुटित, चूर्णित, टूटा हुआ, नष्ट भ्रष्ट।

भग्नांश तत्० (पु०) टूटा भाग, टूटा हुआ हिस्सा, खण्डित भाग।

भग्नाश तत्० (पु०) निराशा, हताश, जिसकी आशा भङ्ग हुई हो, हतमनोरथ।

भङ्ग तत्० (पु०) भेद, खण्डन, टूटा, तरङ्ग, ऊर्मि, लहर, पराजय, रोग विशेष, कौटिल्य, कुटिलता, भय, रचना, बेल बूटे काढ़ना। (स्त्री०) एक प्रकार की पत्ती, नशीली पत्ती।

भङ्गन दे० (स्त्री०) मेहतरानी, हलालखोरिन, भङ्गी की स्त्री।

भङ्गना दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मछली का नाम।

भङ्गा दे० (पु०) भाँग, पक्षि विशेष।

भङ्गी दे० (पु०) जाति विशेष।

भङ्गार दे० (पु०) भङ्गरा, भङ्गड़ा, लड़ी विशेष।

भङ्गेरन दे० (स्त्री०) भाग बेचने वाली स्त्री।

भङ्गेरा दे० (पु०) भाग बेचने वाला।

भचक दे० (गु०) भड़का, अचम्भित, विस्मित, आश्चर्यित।

भचकना दे० (क्रि०) अचम्भित या विस्मित होना।

भचक्र तत्० (पु०) नक्षत्र मण्डल, राशि चक्र।

भच्छन तद्० (पु०) भक्षण, आहार, भोजन, जेवनार।

भच्छहिं दे० (क्रि०) खाते हैं, भोजन करते हैं, जेवते हैं।

भजई दे० (स०) भजन करे, सेवै, स्मरण करे, ध्यान करे।

भजन तद्० (पु०) स्मरण, कीर्तन, ध्यान, निरन्तर रटन, जप, गान।

भजना दे० (क्रि०) ध्यान करना, ध्याना, जपना, स्मरण करना, भागना।

भजनीक दे० (पु०) पूजक, पूजक, भजनकर्ता, भजन करने वाला।

भजहिं दे० (क्रि०) भजते हैं, सुमिरते हैं, स्मरण करते हैं।

भजहु दे० (क्रि०) भजो, भजन करो, स्मरण करो, सुमिरो।

भजि दे० (स०) भजन करके, स्मरण करके, भजके, रटके।

भजि जाना दे० (क्रि०) भागना, पलायन होना, हटना, लुकना, छिपना।

भजिय दे० (क्रि०) स्मरण कीजिये, सुमिरिये, भागिये, भागना चाहिये, हट जाइये, हटना चाहिये।

भजी दे० (क्रि०) सुमिरन करो, स्मरण। (स्त्री०) दौड़ी, पराई, भागी।

भजे दे० (क्रि०) भजन करने से, स्मरण करने से।

भञ्जक तद्० (पु०) भञ्जनकर्ता, भङ्गकारी, तोड़ने वाला, त्रोटन करने वाला।

भञ्जन तद्० (पु०) तोड़न, भांगना, नष्ट करना, नाश करना।—हार (पु०) तोड़ने वाला, हटाने वाला, नाश करने वाला।

भञ्जाना दे० (क्रि०) भुनाना, बदलवाना, छुड़ाना।

भञ्जित तद्० (पु०) खण्डित, घूर्णित, तोड़ा हुआ।

भट तद्० (पु०) [भट्+अच्] सैन्य, योद्धा, वाहिनी, वीर, लड़ाका, निशाचर, वर्णसङ्कर जाति विशेष।

भटई दे० (स्त्री०) गुणगान, बखान, स्तुति, मिथ्या प्रशंसा भांटों का काम, भांटों का व्यवहार।

भटकना दे० (क्रि०) बहकना, भूलना, भ्रम में पड़ना, भ्रान्त होना।

भटकाना दे० (क्रि०) भुलाना, भुलावा देना, भ्रम में डालना, डराना।

भटकीला दे० (पु०) भययुक्त, डरावना, भटका का स्थान।

भटपड़ना दे० (क्रि०) अभागा होना।

भटभेरे दे० (पु०) घात प्रतिघात, धक्कमधक्का, धक्का मुक्की।

भटित्र तद्० (पु०) शूली पक्व मांसादि, दग्ध मांस, जलाया मांस, कबाब।

भटियारा दे० (पु०) एक जाति विशेष, मुसल्मानों का खाना पकाने वाली और सराय में मुसाफ़िरों के ठहराने वाली जाति, संस्कृत में इसे भट्टकार कहते हैं।

भट्टू दे० (स्त्री०) सखि, प्रणयिनी, प्रिया। यथा—

"देखि के भट्टू को मैं भट्टू हूँ रहो गिवनाथ
ओढ़े पीत पट्ट सो घटा पै घाम ठाढ़ो है।"

भट्ट तद्० (पु०) जाति विशेष, भाट, मीमांसादि शास्त्र-वेत्ता, दक्षिणी ब्राह्मणों का एक आस्पद।—नारायण (पु०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि। इनका बनाया वेणीसंहार नामक एक नाटक है। राजा आदिशूर के समय में मध्य देश से जो पाँच ब्राह्मण बङ्गाल गये थे, उनमें भट्ट नारायण भी हैं। डा० राजेन्द्रलाल मित्र महोदय आदि शूर का ही नामान्तर वीरसेन बतलाते हैं। ये रसेन का समय १८वीं सदी निश्चित हुआ है। भट्ट नारायण का बनाया प्रयोगरत्न नामक दूसरा ग्रन्थ है। भट्ट नारायण के पिता का नाम भट्ट महेश्वर था।—लोल्लट (पु०) काश्मीर निवासी संस्कृत कवि, काव्यप्रकाशकार ने अपने रसनिरूपण में इनका मत उद्धृत किया है। राजानक रुय्यक ने भी अपने अलङ्कारसर्वस्व में इनका मत उद्धृत किया है। ऐसी दशा में यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि इनका कोई भी ग्रन्थ नहीं था। परन्तु उस ग्रन्थ का पता नहीं है। काव्यप्रकाशकार मम्मट भट्ट से ये प्राचीन हैं इसमें सन्देह नहीं। तो भी ११वीं सदी के पहले के ये नहीं हो सकते। यह विद्वानों की सम्मति है। इनके ठीक समय का निर्णय करना विद्वानों ने असम्भव माना है।

भट्टार तत्० (पु०) सूर्य, रवि। (गु०) पूज्य, पूजनीय, मान्य।

भट्टारक तत्० (पु०) नाटकोक्ति में राजा को कहते हैं। देव, सूर्य, तपोधन।—वार (पु०) रविवार, इतवार।

भट्टाचार्य तत्० (पु०) बङ्गालियों का आस्पद, विद्या सम्बन्धी उपाधि।

भट्टकल्लट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित, इनके गुरु का नाम वसु गुप्त था, वसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है। उसकी स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्टकल्लट ने बनायी है। ये काश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा के समकालीन थे। राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ९वीं सदी मालूम होता है। प्रसिद्ध आलङ्कारिक मुकुल इनके पुत्र थे। ये शैव थे।

भट्टोत्पल तत्० (पु०) प्रसिद्धज्योतिर्वेत्ता, वराहमिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है। केवल वराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका की टीका इनकी बनायी नहीं मिलती, इसका जो कारण हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है। परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे। बृहज्जातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शाके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है।

भट्टोद्भट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित, ये काश्मीर के राजा जयापीड़ के सभासद थे। महाराज जयापीड़ का राज्यकाल स० ७७९ से लेकर ८१२ ई० तक था। अतएव उनके सभासद का भी ८वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है। अलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है। जिसकी टीका प्रतीहारेन्दुराज ने रची। कुमार सम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था, परन्तु उसका इस समय पता नहीं। कुट्टनी मत-कर्ता दामोदर गुप्त वामन आदि पण्डित इनके समय के हैं। व्याकरण अलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे। काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें कहीं कहीं उद्भट, कहीं उद्भट भट्ट और किसी स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है। अलङ्कार सारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को छोड़ कर अन्य पुस्तकों का पता नहीं मिलता।

भट्ठी दे० (स्त्री०) भाड़, पजावा, बड़ा चूल्हा।

भठाना दे० (क्रि०) तोपना, गाड़ना, छिपाना।

भठियाना दे० (क्रि०) नदी की धार पर बहना, धार में बहना।

भठियारा दे० (पु०) जाति विशेष, सराय का स्वामी।

भठियारिन दे० (स्त्री०) भठियारे की स्त्री, सराय की वेश्या।

भठियाल दे० (गु०) बहाव, घटाव, प्रवाह।

भड़ दे० (पु०) बड़ी नाव।

भड़क दे० (स्त्री०) चमक, झलक, शोभा, घबराहट, झकक, चौंक।

भड़कना दे० (क्रि०) चमकना, चौंकना, झिझकना।

भड़काना दे० (क्रि०) चमकाना, चौंकाना, झिझकाना, बिचकाना, घबड़वाना।

भड़की दे० (स्त्री०) घुड़की, डरपाव, भभकी।

भड़कीला दे० (गु०) चटकीला, चमकीला, सजीला।

भड़कैल दे० (गु०) जङ्गली, अनपरचा।

भड़ङ्ग दे० (गु०) सरल, सीधा, अकपटी निश्छल।

भड़भड़िया दे० (पु०) निष्कपट, निश्छल, बोलक्कड़ साफ़ साफ़ बोलने वाला।

भड़भूजा दे० (पु०) काण्डु, भूजा भूनने वाला।

भड़रिया दे० (पु०) खत्री, टोनहा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं। तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ब्राह्मण विशेष, शनिचरा ब्राह्मण जो निषिद्धदान लेते हैं।

भड़साई दे० (स्त्री) भाड़, भट्ठी, बड़ा चूल्हा, भड़भूँजे का चूल्हा।

भड़िहाई दे० (स्त्री) चोरी, दगा, धोखा, कपट, छल, ठगहाई। भड़िहापन, यथा "सो दशशीश स्वान की नाईं इत उत चितै चला भड़िहाई।"

—रामायण।

भड़ुवा दे० (पु०) वेश्यापुत्र, वेश्या के साथ रहने वाला, कुटना ।

भड़िहा दे० (पु०) चटोर, चाटने वाला, चोर, चोरी करके खाने वाला ।

भड़िहाई दे० (स्त्री) कुटनाई, कुटनापन ।

भड़ैत दे० (पु०) भाड़े के मकान में रहने वाला, भाड़ा देने वाला, किरायेदार ।

भणन तत्० (पु०) [भण् + अनट्] कथन, पठन, पढ़ना ।

भणित तत् (गु०) कथित, उक्त, पठित, पढ़ा हुआ ।

भण्टा दे० (पु०) भांटा, बैंगन, वृन्ताक ।

भण्ड (पु०) भण्ड, दुश्चरित्र, नीच, चरित्र, निर्लज्ज, भँड़ई करने वाला ।

भण्डन तत्० (पु०) प्रतारण, छलन, छलना, ठगना ।

भण्डा दे० (पु०) पात्र, बर्तन, बड़े बड़े बर्तन, मटकी, मटका ।

भण्डार तत्० (पु०) कोठा बखार ।

भण्डारा दे० (पु०) साधुओं का भोज, साधुओं की जेवनार ।

भण्डारी दे० (पु०) भण्डार का अध्यक्ष, भण्डारे की देख रेख करने वाला, रसोइया, टोकड़िया ।

भण्डोरिया दे० (पु०) भंडुरिया ।

भण्डेला दे० (पु०) भांड़, भड़ुवा ।

भण्डौवा दे० (पु०) निन्दा, फक्कड़ ।

भतार तद्० (पु०) भर्ता, पति, स्वामी ।

भतीजा दे० (पु०) भ्रातृव्य, भाई का पुत्र ।

भतीजी दे० (स्त्री) भाई की पुत्री ।

भत्ता दे० (पु०) भात्त, भक्त, भाता ।

भद दे० (स्त्री०) धप्पा, धड़ाका, किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।

भद् दे० (पु०) वृक्ष के फल गिरने या पैर का शब्द ।

भद्भदाना दे० (स्त्री०) भदभद शब्द करना ।

भद्भदाहट दे० (स्त्री०)

भद्दाक दे० (पु०) धड़ाक धड़ाक, भदाक शब्द के साथ गिरना, ऐसा गिरना जिससे भदाक शब्द हो ।

भदेशल (पु०) बेडौल, कुडङ्गा ।

भद्दा दे० (गु०) निर्बुध, अज्ञानी, अबोध, मूर्ख, भोंदू, बेडौल, भदेसल ।

भद्र तत् (पु०) मङ्गल, कल्याण, शुभ, सोना, करण विशेष, विष्टि करण शिव, खञ्जन पक्षी, हस्तिको जाति विशेष।—होना (वा) मूंडन कराना, हिन्दुओं की एक प्रथा, जब कोई मरता है तब मुंडन किया जाता है।—काली (स्त्री०) दुर्गा महामाया, काली ।—श्री (स्त्री०) चन्दन, केसर, कुङ्कुम, मङ्गल, शोभा, श्री ।

भद्रक तत्० (पु०) भद्र मुस्तक, देवदारु वृक्ष । (गु०) मनोज्ञ, देश, विशेष ।

भद्रा तत्० (स्त्री०) कपास लता विशेष, रास्ना, नील वृक्ष, व्योम नदी, तिथि विशेष, द्वितीया, षष्ठमी, द्वादशी ।

भद्राक्ष तत्० (पु०) कृत्रिम रुद्राक्ष ।

भद्रिका तत्० (स्त्री०) दशा विशेष, कल्याणी ।

भंड्री दे० (पु०) डकौतिया, सामुद्रिक शास्त्रवेत्ता ।

भनक दे० (पु०) शब्द, ध्वनि, आहट ।

भभकना दे० (क्रि०) उभलना, क्रुद्ध होना, जल उठना, तड़पना ।

भभकाना दे० (क्रि०) क्रुद्ध कराना, जलाना, तड़पाना ।

भभका दे० (पु०) पात्र विशेष, जिससे अर्क निकालते हैं ।

भभकी दे० (स्त्री०) भड़की, धमकी, घुड़की ।

भभ्भड़ दे० (पु०) डर, रेला, धक्का, अव्यवस्था ।

भभ्भल दे० (पु०) मोटा, स्थूल, तोंदैल, तुन्दिल ।

भभकना दे० (क्रि०) गिरना, टपकना, उभलना, फफाना, खलबलाना ।

भभर दे० (पु०) खटका, डर, रौला, घबड़ाहट, उद्वेग, व्याकुलता ।

भट्टार तत्० (पु०) सूर्य, रवि। (गु०) पूज्य, पूजनीय, मान्य।

भट्टारक तत्० (पु०) नाटकोक्ति में राजा को कहते हैं। देव, सूर्य, तपोधन।—वार (पु०) रविवार, ऐतवार।

भट्टाचार्य तत्० (पु०) बङ्गालियों का आस्पद, विद्या सम्बन्धी उपाधि।

भट्टकल्लट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित, इनके गुरु का नाम वसु गुप्त था, वसु गुप्त के रचित ग्रन्थ का नाम स्पन्दकारिका है। उसकी स्पन्द सर्वस्व नाम की टीका भट्टकल्लट ने बनाया है। ये काश्मीर के राजा अवन्ति वर्मा के समकालीन थे। राजतरङ्गिणी के अनुसार इनका समय ९वीं सदी मालूम होता है। प्रसिद्ध आलङ्कारिक मुकुल इनके पुत्र थे। ये शैव थे।

भट्टोत्पल तत्० (पु०) प्रसिद्धज्योतिर्वेत्ता, वराहमिहिर के ग्रन्थों की इन्होंने टीका लिखी है। केवल वराह मिहिर कृत पञ्चसिद्धान्तिका की टीका इनकी बनायी नहीं मिलती, इसका जो कारण हो। प्राचीन ज्योतिषियों ने इन्हें भट्टोत्पल लिखा है। परन्तु ये अपने को केवल उत्पल ही लिखा करते थे। वृहज्जातक की टीका में इन्होंने अपना समय ८८८ शाके अर्थात् ९६६ ई० लिखा है।

भट्टोद्भट तत्० (पु०) काश्मीरी पण्डित, ये काश्मीर के राजा जयापीड के सभासद थे। महाराज जयापीड़ का राज्यकाल ई० ७७९ से लेकर ८१२ ई० तक था। अतएव उनके सभासद का भी ९वीं सदी का प्रारम्भ ही समय माना जा सकता है। अलङ्कारसारसंग्रह नामक ग्रन्थ इन्होंने बनाया है। जिसकी टीका प्रतीहारेन्द्रराज ने रची। कुमार सम्भव नामक एक काव्य भी इन्होंने रचा था परन्तु उसका इस समय पता नहीं। कुट्टनी मत-कर्ता दामोदर गुप्त वामन आदि पण्डित इनके समय के हैं। व्याकरण अलङ्कार में ये अत्यन्त निपुण पण्डित थे। काव्य प्रकाश के टीकाकारों ने इन्हें कहीं कहीं उद्भट, कहीं उद्भट भट्ट और किसी स्थान में उद्भटाचार्य भी लिखा है। अलङ्कार सारसंग्रह और कुमारसम्भव काव्य इन दो पुस्तकों को छोड़ कर अन्य पुस्तकों का पता नहीं मिलता।

भट्ठी दे० (स्त्री०) भाड़, पजावा, बड़ा चूल्हा।

भठाना दे० (क्रि०) तोपना, गाड़ना, छिपाना।

भठियाना दे० (क्रि०) नदी की धार पर बहना, धार में बहना।

भठियारा दे० (पु०) जाति विशेष, सराय का स्वामी।

भठियारिन दे० (स्त्री०) भठियारे की स्त्री, सराय की वेश्या।

भठियाल दे० (गु०) बहाव, घटाव, प्रवाह।

भड दे० (पु०) बड़ी नाव।

भड़क दे० (स्त्री०) चमक, झलक, शोभा, घबराहट, भभक, चौंक।

भड़कना दे० (क्रि०) चमकना, चौंकना, झिझकना।

भड़काना दे० (क्रि०) चमकाना, चौंकाना, झिझकाना, बिलकाना, घबड़ाना।

भड़की दे० (स्त्री०) घुड़की, डरपाव, धमकी।

भड़कीला दे० (गु०) चटकीला, चमकीला, सजीला।

भटकैल दे० (गु०) जङ्गली, अनपरचा।

भड़ङ्ग दे० (गु०) सरल, सीधा, कपटी निश्छल।

भड़भड़िया दे० (पु०) निष्कपट, निश्छल, खोलकर साफ साफ बोलने वाला।

भड़भूजा दे० (पु०) भाड़, भूजा भूजने वाला।

भड़रिया दे० (पु०) छली, टोनहा, जाति विशेष, जो हाथ देखने का काम करते हैं। तीर्थों में यात्रियों को दर्शन कराने वाले ब्राह्मण विशेष, अनितरा ब्राह्मण जो निषिद्धदान लेते हैं।

भड़साई दे० (स्त्री) भाड़, भट्ठी, बड़ा चूल्हा, भड़ भूँजे का चूल्हा।

भड़िहाई दे० (स्त्री) चोरी, दगा, धोखा, कपट, छल ठगहाई। भड़िहापन, यथा "सो दशशीश स्वान की नाईं इत उत चितै चला भड़िहाई।"

—रामायण।

भरपाना दे० (क्रि०) दाम पाना, दाम वसूल होना।

भरपूर दे० (गु०) पूर्ण, अत्यन्त पूर्ण, अतिशय पूर्ण,

भरभराना दे० (क्रि०) छोटना, छिड़कना, घूमना, झूमना।

भरभरी दे० (स्त्री०) सूजन, फूलाव, फूलन।

भरम तद्‌० (गु०) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, भेद, रहस्य, मान।—खुलना (वा०) भेद खुल जाना, रहस्य प्रकाश होना।—खोल देना (वा०) सन्देह मिटाना, भ्रम दूर करना।—गवाँना (वा०) प्रतिष्ठा खोना, यश में धब्बा लगाना, कीर्ति में बट्टा लगाना।—निकल जाना (वा०) सन्देह दूर होना, संशय मिटना, भेद खुलना।

भरमाना दे० (क्रि०) ठगना, वञ्चन करना, छलना।

भरमोला दे० (गु०) संशयी, सन्देही, भरम वाला।

भरवाना दे० (क्रि०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना, पुरवाना।

भरा दे० (गु०) पूरा, पूर्ण, मुहामुह।

भराना दे० (क्रि०) पुराना, पूर्ण कराना, भराना, भरवाना।

भरावट दे० (स्त्री०) पूर्ति, पूर्णता, भर्ती।

भरी दे० (स्त्री०) तोला, बारहमाशा, तौल विशेष।

भरोठा दे० (पु०) बोझा, भार, मोट।

भरोसा दे० (पु०) आशा, विश्वास, प्रतीति, प्रत्यय।

भर्ग तद्‌० (पु०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज प्रकाश, दीप्ति।

भर्ज्जन तद्‌० (पु०) भूँजना, भुनना, दग्ध करना, जलाना।

भर्ता तद्‌० (गु०) पति, स्वामी, भतार। (गु०) पालने वाला, रक्षक, प्रतिपालक। (दे०) एक प्रकार की तरकारी, भंटा, आलू, आदि को भून कर जो बनाया जाता है।

भर्तिया दे० (पु०) जाति विशेष, ठठेरा, कसेरा।

भर्ती दे० (स्त्री०) समाप्ति, भरावट, पूर्णता, पूर्ति।

भर्त्सना तद्‌० (स्त्री०) तिरस्कार, निन्दा, कुत्सा, गर्हा, अपवाद।

भर्त्सक तद्‌० (पु०) तिरस्कार, निन्दक।

भर्तृहरि तद्‌० (पु०) विक्रमादित्य राजा के भाई, इनके बनाये तीन शतक शृङ्गार, वैराग्य और नीति प्रसिद्ध हैं, कहते हैं अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता से दुःखी होकर ये घर छोड़ कर वनवासी हो गये थे। वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विज्ञान का अपूर्व ग्रन्थ भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निश्चय करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्ता ये ही भर्तृहरि हैं या अन्य। इनका भी, यही ईसवी सदी ही समय मानना उचित है।

(२) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है। भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है। इनके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असाधारण ज्ञान से सुपरिचित हैं। इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक यहाँ तक कि पदों में भी प्रयोग कुशलता देखी जाती है।

भल दे० (गु०) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहर, रमणीय।

भलका दे० (पु०) भूषण विशेष, सोने की टिकली।

भलमनसात दे० (पु०) महा पुरुषत्व, उत्तम पुरुष का आचार, मनुष्यत्व, पुरुषत्व।

भलमनसी दे० (स्त्री०) सुशीलता, सद्‌गुण।

भला (गु०) उत्तम, शीलवान, रचक्षा, श्रेष्ठ, सद्‌गुणी।

—कर भला हो सौदा कर नफा हो (लो० उ०) जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मानुसार ही फल होता है।—आदमी (वा०) अच्छा आदमी, श्रेष्ठ पुरुष।—मानना (वा०) उत्तम समझना, एहसान मानना।—चङ्गा (गु०) नीरोग, मोटा, स्वस्थ।

भलाई दे० (स्त्री०) अच्छापन, कुशलक्षेम, कल्याण, मङ्गल, लेना (वा०) आशीर्वाद लेना, नेकी करना,

भमराना दे० (क्रि०) झुकना, फूलना, झटकना, झटका होना।

भमूका दे० (पु०) सुन्दर, मनोहर, साफ़, स्वच्छ।

भमूत तद्० (स्त्री) विभूति, भस्म, छार।

भय तत्० (पु०) डर, भीति, शङ्का, त्रास।—खाना (वा) डरना, त्रास करना।—कारक (गु०) डराने वाला, भय देने वाला, भयानक, भयङ्कर।

भयङ्कर तत्० (गु०) भयानक, डरौना, भयकारक।

भयचक दे० (पु०) भयातुर, भयभीत, डरा हुआ।

भयभीत तत्० (गु०) डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर।

भयहु दे० (स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री।

भयातुर तत्० (गु०) भयचक, डरपोंक, भयभीत, भयविह्वल।

भयानक तत्० (गु०) डरावना, भयङ्कर, भयप्रद।

भयापह तत्० (गु०) भयनाशक, भय दूर करने वाला।

भयाया दे० (पु०) बन्धुत्व, भाईपना, अपनायत।

भयावना दे० (गु०) डरावना, भयङ्कर, भयानक।

भयावह तद्० (गु०) भयदायक, भयानक, भयङ्कर।

भयावहि दे० (क्रि०) डराते हैं, शङ्कित करते हैं, त्रास देते हैं।

भर दे० (गु०) पूरा, पूर्ण, मुँहामुँह, एक जाति। (क्रि०) पूर्ण करो, पालन करो।

भरऊँ दे० (क्रि०) भरता हूँ, पूरा करता हूँ, पूर्ण करता हूँ, ऋण चुकाता हूँ, देता हूँ, दान करता हूँ।

भरका दे० (पु०) बुझाया हुआ चूना, चूने की कली।

भरकाना दे० (क्रि०) बुझाना, चूना बुझाना।

भरण तत्० (पु०) भरना, पूरना, पालना, पोषण करना, रक्षा, बचाव।

भरणी तत्० (स्त्री०) एक नक्षत्र का नाम, दूसरा नक्षत्र।

भरणीय तत्० (गु०) पोष्य, पालन योग्य, पालनीय।

भरत तत्० (पु०) अयोध्याधिपति दशरथ का पुत्र। ये महारानी कैकेयी के गर्भ से सम्भूत थे। 2. भरत राजा दुष्यन्त के शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, इन्होंने ही इस देश का नाम भारतवर्ष रखा है। नाट्यशास्त्र प्रणेता ऋषि विशेष, इनके समय का ठीक पता अभी तक भी पुरातत्त्वान्वेषियों को नहीं लगा है, तथापि वे साहस पूर्वक कहते हैं कि ये ईसा के पूर्व ६ वीं सदी के पूर्व के नहीं हो सकते। अस्तु जो कुछ हो परन्तु ये बहुत ही पुराने हैं, कालिदास के भी पूर्ववर्ती हैं, भास के नाटकों के श्लोकों से भी इनकी प्राचीनता सिद्ध होती है।

भरतपुत्रक तत्० (पु०) नट, विदूषक, भाँड, बहुरूपिया, बाज़ीगर।

भरताग्रज तत्० (पु०) श्रीरामचन्द्र।

भरद्वाज तत्० (पु०) विख्यात प्राचीन ऋषि, उतथ्य की पत्नी ममता के गर्भ और बृहस्पति के औरस से ये उत्पन्न हुए थे, मरुद्गण ने इनका भरण किया था और ये दो के द्वारा उत्पन्न हुए थे इस कारण इनका नाम भरद्वाज पड़ा। इनका दूसरा नाम वितथ है। एक समय गङ्गास्नान के समय घृताची नामक अप्सरा को देखकर इनका रेतःपात हुआ वह रेत एक द्रोण में रखा गया, उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। यही पुत्र विख्यात द्रोणाचार्य थे। प्राणियों का दुःख दूर करने के लिये देवताओं के अनुरोध से इन्होंने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से आयुर्वेद का अध्ययन किया। इन्द्र से समग्र आयुर्वेद का अध्ययन करके ये मर्त्यलोक लौट आये, और आयुर्वेद की शिक्षा इन्होंने महर्षियों को दी। उनसे शिक्षा पाकर महर्षियों ने आयुर्वेद का प्रचार किया।

भरन दे० (पु०) पूरन, पूर्ति, तोषण, तक।

भरना दे० (क्रि०) पूरा करना, ऋण चुकाना, बन्दूक में गोली भरना, सहना, पाना, दुःख पाना, दुःख सहना।

भरनी दे० (स्त्री०) बाना पूरना।

भरपाना दे० (क्रि०) दाम पाना, दाम वसूल होना।

भरपूर दे० (गु०) पूर्ण, अत्यन्त पूर्ण, अतिशय पूर्ण,

भरभराना दे० (क्रि०) छींटना, छिड़कना, फूलना, सूजना।

भरभरी दे० (स्त्री०) सूजन, फुलाव, फूलन।

भरम तद्० (पु०) भ्रम, भ्रान्ति, संशय, सन्देह, भेद, रहस्य, तत्व।—खुलना (वा०) भेद खुल जाना, रहस्य प्रकाश होना।—खोल देना (वा०) सन्देह मिटाना, भ्रम दूर करना।—गवाँना (वा०) प्रतिष्ठा खोना, यश में धब्बा लगाना, कीर्ति में बट्टा लगाना।—निकल जाना (वा०) सन्देह दूर होना, संशय मिटना, भेद खुलना।

भरमाना दे० (क्रि०) ठगना, वञ्चन करना, छलना।

भरमीला दे० (गु०) संशयी, सन्देही, भरम वाला।

भरवाना दे० (क्रि०) पूर्ण कराना, पूरा करवाना, पुरवाना।

भरा दे० (गु०) पूरा, पूर्ण, लुदालुद।

भराना दे० (क्रि०) पुराना, पूर्ण कराना, भराना, भरवाना।

भरावट दे० (स्त्री०) पूर्ति, पूर्णता, भर्ती।

भरी दे० (स्त्री०) तोला, बारहमाशा, तौल विशेष।

भरोठा दे० (पु०) बोझा, भार, मोट।

भरोसा दे० (पु०) आशा, विश्वास, प्रतीति, प्रत्यय।

भर्ग तद्० (पु०) शिव, महादेव, ब्रह्मा, ज्योति, तेज प्रकाश, दीप्ति।

भर्ज्जन तद्० (पु०) भूँजना, भुनना, दग्ध करना, जलाना।

भर्ता तद्० (पु०) पति, स्वामी, भतार। (गु०) पालने वाला, रक्षक, प्रतिपालक। (दे०) एक प्रकार की तरकारी, भाँटा, आलू, आदि को भून कर जो बनाया जाता है।

भर्तिया दे० (पु०) जाति विशेष, ठठेरा, कसेरा।

भर्ती दे० (स्त्री०) समाप्ति, भरावट, पूर्णता, पूर्ति।

भर्त्सना तद्० (स्त्री०) तिरस्कार, निन्दा, कुत्सा, गर्हा, अपवाद।

भर्त्सक तद्० (पु०) तिरस्कार, निन्दक।

भर्तृहरि तद्० (पु०) विक्रमादित्य राजा के भाई, इनके बनाये तीन शतक शृङ्गार, वैराग्य और नीति प्रसिद्ध हैं, कहते हैं अपनी स्त्री की दुश्चरित्रता से दुःखी होकर ये घर छोड़ कर वनवासी हो गये थे। वाक्यप्रदीप नामक एक व्याकरण विज्ञान का अद्वितीय ग्रन्थ भर्तृहरि के नाम से प्रसिद्ध है। इसका निश्चय करना कठिन है कि वाक्यप्रदीपकर्ता ये ही भर्तृहरि हैं या अन्य। इनका भी वही इवीं सदी ही समय मानना उचित है।

(२) इनका बनाया भट्टी नामक काव्य प्रसिद्ध है। भट्टी काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न है। इनके पाठ करने वाले इनके व्याकरण के असाधारण ज्ञान से सुपरिचित हैं। इस ग्रन्थ के प्रत्येक श्लोक यहाँ तक कि पदों में भी प्रयोग कुशलता देखी जाती है।

भल दे० (गु०) भला, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहर, रमणीय।

भलका दे० (पु०) भूषण विशेष, सोने की टिकली।

भलमनसात दे० (गु०) महा पुरुषत्व, उत्तम पुरुष का आचार, मनुष्यत्व, पुरुषत्व।

भलमनसी दे० (स्त्री०) सुशीलता, सद्गुण।

भला (गु०) उत्तम, शीलवान, अच्छा, श्रेष्ठ, सद्गुणी।

—कर भला हो सौदा कर नफा हो (लो० उ०) जैसा करोगे वैसा पाओगे, कर्मानुसार ही फल होता है।—आदमी (वा०) अच्छा आदमी, श्रेष्ठ पुरुष।—मानना (वा०) उत्तम समझना, अहसान मानना।—चङ्गा (गु०) नीरोग, मोटा, स्वस्थ।

भलाई दे० (स्त्री०) अच्छापन, कुशलक्षेम, कल्याण, मङ्गल, लेना (वा०) आशीर्वाद लेना, नेकी करना,

एहसान करना ।— रहना (वा०) सुयश रहना, कीर्ति रहना ।

भल्ल तत्० (पु०) भाला, बरछी, बर्छा ।

भल्लूक तत् (पु०) रीछ, भालू ।

भव (पु०) संसार, जगत्, जन्म, प्राप्ति, शिव, महादेव ।

भवदीय तत्० (गु०) युष्मत् सम्बन्धी, तुम्हारा, त्वदीय ।

भवन तत्० (पु०) घर, गृह, स्थान, वास, वास-स्थान ।

भवभूति तत् (पु०) संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार, इन्होंने उत्तररामचरित, वीरचरित और मालती-माधव नामक तीन नाटक बनाये थे। भवभूति खृष्टीय ८वीं सदी के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए थे। पद्मपुर नामक गाँव इनका जन्मस्थान है। इनके पिता का नाम नीलकण्ठ था और पितामह का नाम भट्टगोपाल भट्ट था। इनकी माता जतुकर्ण गोत्र में उत्पन्न हुई थीं। इस कारण यह जतुकर्णी नाम से प्रसिद्ध हैं। शब्द प्रयोग की कुशलता और भावकी उच्चता के विचार से भवभूति का स्थान संस्कृत साहित्य में बहुत ऊँचा है। इन तीन ग्रन्थों के अतिरिक्त भवभूति का दूसरा भी कोई ग्रन्थ अवश्य होगा। क्योंकि संग्रह ग्रन्थों में भवभूति के नाम से जो श्लोक देखे जाते हैं वे उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों में नहीं हैं। राजायशोवर्म की सभा के ये पण्डित थे। इनकी रचना करुणरस प्रधान है।

भवादृश तत्० (गु०) आपके तुल्य, आपके समान, आपके योग्य ।

भवानी तत्० (स्त्री०) पार्वती, शिव की स्त्री, दुर्गा, काली ।

भवार्णव तत्० (पु०) भव, अर्णव, संसार सागर, संसार रूपी समुद्र, भीषण समुद्र ।

भवितव्यता तद्द (स्त्री०) होनहार, भावी, भाग्य, कपाल, यथाः—

"जैसी हो भवितव्यता तैसी उपजै बुद्धि ।
होनहार हृदय बसै बिसर जात सब सुद्धि ।"

भविष्णु तत्०,(पु०) होने वाला, होनहार, भावी

भविष्य तत्० (गु०) होनहार, होने वाला, भवितव्यता ।

भविष्यत् तत्० (पु०) आगामी काल विशेष, आगामी काल ।—वक्ता (पु०) भविष्यत् काल की बात जानने वाला, भविष्यवेत्ता, होनहार जानने वाला, भाविवेत्ता ।

भवैया दे० (पु०) नत्यक, नर्तक, नाचने वाला ।

भव्य तत्० (गु०) सत्य, योग्य, भावी, उज्ज्वल, सुन्दर

भस दे० (पु०) भस्म, राख, विभूति ।

भसकना दे० (क्रि०) गिरना, पड़ना ।

भसना दे० (क्रि०) तरना, तैरना, बहना, उतराना ।

भसभसा दे० (गु०) पिलपिला, पलपला ।

भसाना दे० (क्रि०) बहाना, चलाना, तिराना ।

भस्त्रा तत्० (स्त्री०) चमड़े की धौंकनी, भाथी ।

भस्म तत्० (स्त्री०) राख, क्षार, भभूत,—सात् (अ०) अशेष भस्म, समस्त जला ।

भस्मक तत्० (पु०) रोग विशेष, जिस रोग में लोग बहुत खाते भी हैं परन्तु दुर्बल होते जाते हैं ।

भहराना दे० (क्रि०) काँपना, डगना, डगमगाना, गिरना पड़ना ।

भाँग दे० (पु०) बूटी, विजया, भङ्ग ।

भाँज दे० ऐंठ, बल, चक्कर पेच ।

भाँजना दे० (क्रि०) ऐंठना, बल देना, फिराना, हिलाना, तोड़ना ।

भाँजा दे० (पु०) भगिनेय, बहिन का बेटा ।

भाँजी दे० (स्त्री०) बहिन की बेटी ।

भाँटा दे० भण्टा वत्ताक, बैंगन ।

भाँड दे० (पु०) बहुरूपिया, निर्लज्ज, एक तरह का तमाशा करने वाला, हँसोड़ ।

भाँडना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, गाली देना ।

भाँडा दे० (पु०) मृत्तिका का बड़ा पात्र, मटुका ।

भाण्डीर तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, बड़ीर का वृक्ष ।

भाँडैती दे० (स्त्री०) स्वाँग, बहुरूपीपना ।

भाँति दे० (स्त्री०) ढोल, ढब, रीति, प्रकार ।
भाँति भाँति दे० (वा०) तरह तरह का, नाना प्रकार का ।
भाँवर दे० (स्त्री०) घुमाव, भांवरी, बारबार घूमना, परिक्रमा, दूल्हा और दुलहिन का वेदी की परिक्रमा ।
भाई (पु०) भ्राता, सहोदर ।—चारा (पु०) भाई का सम्बन्ध, भयापा,—बन्द (पु०) भाई बन्धु, बिरादरी ।
भाकसी (स्त्री०) अन्धकूप, कैदियों के रहने का घर, कोठा घर ।
भाक्त तत्० (पु०) कृत्रिम, गौण, भिक्षणशील ।
भाखना दे० (क्रि०) बोलना, कहना, कथन करना, भाषण करना ।
भाखा दे० (स्त्री०) भाषा, बोली, बात ।
भाग तत्० (पु०) अंश, हिस्सा, बाँटा, विभाग (तद्०) भाग्य, प्रारब्ध—खुलना (वा०) भाग्यवान् होना, प्रारब्ध का अच्छा होना, सुख मिलना,—जागना (वा०) धनी होना, अच्छा भाग होना—भाही (पु०) भागी, हिस्सेदार।—भरोसा (वा०) धीरता, धीरज, धैर्य, साहस ।
भागड़ दे० (स्त्री०) पलायन, भगाव, देशत्याग ।
भागना दे० (क्रि०) पलाना, भाग जाना, पलाना, दौड़ना, अवज्ञा करना ।
भागचलना दे० (वा०) निकल चलना, भाग जाना, चला जाना ।
भागजाना दे० (वा०) चला जाना चम्पत होना ।
भागधेय दे० (पु०) भाग्य, प्रारब्ध, शुभकर्म, उत्तम कर्म ।
भागनिकलना दे० (वा०) छिप कर भागना, जान बचा कर भाग जाना, भाग चलना ।
भागमान दे० (गु०) भाग्यवान्, प्रारब्ध ।
भागमानी दे० (स्त्री०) सुभाग, सौभाग्य, उत्तम कर्म ।
भागवत तत् (गु०) भगवान का भक्त । (पु०) अष्टादश पुराणान्तर्गत पुराण विशेष ।
भागहार तत्० (पु०) भागनियम, अंश की रीति, भाजक (गु०) भागहर्ता, अंशहारी, भाग का अधिकारी ।
भागाभाग दे० (पु०) चलाचली, प्रस्थान की हल चल, भगाड़ ।
भागिनेय तत्० (पु०) भाँजा, भगिनी पुत्र, बहिन का बेटा ।
भागी दे० (गु०) साझी, हिस्सेदार, बँटैत, अंशी ।
भागीरथी तत्० (स्त्री०) [भगीरथ + इञ्] गङ्गा, सुरधुनी, सुरनदी ।
भाग्य तत्० (पु०) प्राक्तन शुभाशुभ कर्म, दैव, भागधेय, भवितव्यता, अदृष्ट, प्रारब्ध ।
भाग्यवन्त तत्० (गु०) धनी, धनिक, शुभ अदृष्ट वाला ।
भाग्यवान् तत्० (गु०) भाग्यवन्त, अदृष्टवान, पुण्यकर्मी ।
भाग्यहीन तत्० (गु०) अभागी, हतभाग्य, मन्दभाग्य, दरिद्र, दुःखी ।
भाजन तत्० (पु०) पात्र, योग्य, आढक परिमाण । (दे०) बासन, बरतन ।
भाजना दे० (क्रि०) भुँजना, भुनना, तलना, भागना ।
भाजर दे० (स्त्री०) भगोड़, भगैल, पलायन, भाजन ।
भाजी दे० (स्त्री०) साग, तरकारी ।
भाज्य दे० (गु०) भागाई, भाजनीय, अंश करने योग्य, अङ्कहार्य, जिसका अङ्कों से विभाग किया जाय ।
भाट दे० (पु०) चारण, स्तुति गायक, बन्दी, बरदैत, एक जाति विशेष, जिसका काम यश प्रशंसा करना है ।
भाटन दे० (स्त्री०) भाट की स्त्री ।
भाटा दे० (पु०) समुद्र का उतराव ।
भाठियाल दे० (पु०) भटियाल, उतार, गिराव ।
भाठी दे० (स्त्री०) धौंकनी, भाथी ।

भाड दे० (पु०) चूल्हा, भट्ठी, वह चूल्हा जहाँ अन्न भूने जाते हैं।

भाड़ा दे० (पु०) किराया, शुल्क, महसूल, घर आदि का कर।

भाण्ड तत्० (पु०) बर्तन, बासन।

भाण्डना दे० (क्रि०) गाली देना, बिगाड़ना।

भात दे० (पु०) भात, भक्त, ओदन।

भाता दे० (गु०) सोहावना, सुन्दर, मनभावन।

भाथा दे० (पु०) तूण, तरकस।

भादो दे० (पु०) भाद्रमास, भादवा, भाद्रपद।

भादों दे० (पु०) वर्ष का छठवाँ महीना, जिस महीने में भाद्रपद नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो।—की भरन (वा०) अधिक वृष्टि, भड़, झड़ी।

भान तत्० (पु०) ज्ञान, स्मरण, बोध, सुधि, चेत।

भाना दे० (क्रि०) अच्छा लगना, सुहावना मालूम होना, सोहावना, मन भावन होना।

भानमती दे० (स्त्री०) नटिनी, जाति विशेष की स्त्रियाँ, जो इन्द्रजाल विद्या में निपुण होती हैं।

भानु तत्० (पु०) सूर्य, रवि, सूर्य की किरण।—ज (पु०) अश्विनीकुमारद्वय, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण।—जा (स्त्री०) यमुना, जमुना नदी।

भानुमती तत्० (स्त्री०) कहते हैं प्रसिद्ध कवि कालिदास की स्त्री का नाम भानुमती था, ये भोजराज की कन्या थीं, ये ऐन्द्रजालिक विद्या में निपुण थीं। भोजराज के वंशज इस विद्या में अति निपुण थे, और वे इस विद्या से अपना मनोरञ्जन किया करते थे, इसी कारण इन्द्रजाल विद्या का दूसरा नाम भोजराजी हो गया है। भानुमती के नाम के अनुसार इस विद्या का नाम भानुमती का खेल पड़ गया है।

भाफ़ दे० (पु०) वाष्प, बफारा, धुआँ, धूम।

भाफना दे० (क्रि०) अटकलना, अटकल लगाना, झूलना, अनुमान से किसी का पता लगाना।

भाभी दे० (स्त्री०) भौजाई, बड़े भाई की स्त्री।

भामिन दे० (स्त्री०) क्रोधी, क्रोध करने वाला।

भामिनी तत्० (स्त्री०) कोपान्विता स्त्री, कोप युक्त नारी, स्त्री।—विलास (पु०) जगन्नाथ पण्डितराज कृत काव्य का एक ग्रन्थ।

भार तत्० (पु०) गुरुत्व, बोझा, काम सम्पादन करने का अधिकार, आठ हजार तोला परिमित वस्तु।

भारत तत्० (पु०) ग्रन्थ विशेष, महाभारत, भरत पुत्र, नट, अग्नि।—वर्ष (पु०) जम्बू द्वीप के नव वर्ष के अन्तर्गत वर्ष विशेष, हिन्दुस्तान। वर्षीय (गु०) भारतवर्षवासी, भारत वर्ष में रहने वाला।

भारती तत्० (स्त्री०) वाक्य, वचन, बोली, सरस्वती, पक्षी विशेष, भरुई पक्षी, काव्य की एक वृत्ति।

भारतीय तत्० (गु०) महाभारत उक्त, महाभारत कथित, महाभारत सम्बन्धी, भारतवर्षीय, भारत वर्ष सम्बन्धीय।

भारद्वाज तत्० (पु०) द्रोणाचार्य्य मुनि विशेष, अगस्त्य मुनि, मङ्गलग्रह।

भारवाहक तत्० (गु०) मोटिया, कहार, भार ढोने वाला, भारवहनकर्ता।

भारवि तत्० (पु०) संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, इनका बनाया हुआ किरातार्जुनीय नामक प्रसिद्ध काव्य है। ये कालिदास के समकालीन माने जाते हैं। इसके प्रमाण में एक शिला लेख दिया जाता है जो ६३४ ई० में लिखा गया था उस शिला में खुदे हुए पद्य से यह बात सिद्ध होती है। बहुतों का अनुमान है कि ये चौथी सदी में उत्पन्न हुए थे।

भारा दे० (पु०) बोझ, मोट, भार।

भारी दे० (गु०) गुरु, गरवा, बड़ा, महँगा, मोटा।

भार्या तत्० (स्त्री०) स्त्री, पत्नी, जाया।

भार्यातिक्रम तत्० (पु०) स्त्रीत्याग, स्त्रीनाश, पर स्त्री गमन।

भाल तत्० (पु०) ललाट, मस्तक। (दे०) भाले की नोक।

भाला दे० (पु०) बर्छा, शस्त्र विशेष, सांग।

भालू दे० (पु०) रीछ, भल्लूक।

भालैत दे० (पु०) बर्छैत, बर्छा चलाने वाला।

भाव तत्० (पु०) अभिप्राय, चेष्टा, मानस विकार, सत्ता, स्वभाव जन्म, क्रिया, लीला, पदार्थ, विभूति, धात्वर्थ, योनि, उपदेश, संसार, नवग्रहों की द्वादश चेष्टा।

भावई दे० (स्त्री०) होनहार, भवितव्यता, भविष्य।

भावक तत्० (पु०) भाव, मनोविकार। (गु०) चिन्ताकारक, सोचने वाला, सत्ताप्रद।

भावज दे० (स्त्री०) भौजाई, बड़े भाई की स्त्री, भाभी।

भावज्ञ तत्० (गु०) भावज्ञाता, मर्मज्ञाता, मर्मज्ञ, रहस्यवेत्ता।

भावता दे० (गु०) प्रिय, चाहीता, अभिलाषित, ईप्सित इष्ट, प्रिय, मनोहर।

भावना तत्० (क्रि०) चिन्ता, ध्यान, पर्यालोचना।

भाववाचक दे० (पु०) संज्ञा शब्द विशेष, जो कि वस्तु का धर्म गुण बतलाता है।

भावहु दे० (स्त्री०) छोटे भाई की स्त्री।

भावान्तर तत्० (पु०) प्रकारान्तर, अन्य अभिप्राय, भिन्न अभिप्राय, दूसरे प्रकार।

भावार्थ तत्० (पु०) अभिप्राय, तात्पर्य।

भाविक तत्० (गु०) भावुक, चिन्ताशील, अभिप्रायज्ञ।

भावित तत्० (गु०) चिन्तित, विचारित, सोचा हुआ, विचारा हुआ।

भावी तत्० (गु०) भविष्यत्काल, आगामी, उत्तर काल, होनहार, भवितव्य।

भावुक तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, कुशल, क्षेम।

भावैं दे० (अ०) लेखे, विचार में, मन में।

भाव्य तत्० (गु०) भवितव्य, भवनीय, चिन्तनीय, भावी।

भाषा तत्० (स्त्री०) वाक्य, कथा, वचन, बोली, वाग्देवता, वाणी।

भाषित तत्० (गु०) कथित, उक्त। (पु०) वचन, बोली, भाषा।

भाषी तत्० (गु०) वादी, वक्ता, कथक, कहने वाला।

भाष्य तत्० (पु०) टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, सूत्र विवरण ग्रन्थ, सूत्रार्थ का विशद रूप से वर्णन करने वाला ग्रन्थ, विस्तृत टीका।—कार (पु०) महाभाष्यकर्त्ता, मुनि विशेष, पतञ्जलि। (गु०) भाष्यकर्त्ता, भाष्य बनाने वाला।

भासना दे० (क्रि०) विदित होना, मालूम होना, ज्ञात होना, प्रकट होना, प्रकाशित होना।

भासन्त तत्० (पु०) सूर्य, चन्द्र, पक्षी विशेष, मोर की चोटी, नक्षत्र। (गु०) मनोहर, सुहावना, रमणीय।

भासुर तत्० (गु०) दीप्तिशील, दीप्तिमान।

भास्कर तत्० (पु०) सूर्य, अग्नि, रवि।

भास्कराचार्य तत्० (पु०) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् और गणितज्ञ, इनके पिता का नाम महेश आचार्य या महेश दैवज्ञ था। ये दक्षिण देश के सह्य नामक पर्वत के समीपवर्ती विज्जिडविड नामक गाँव में १०३६ शाके १११४ ई० में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ३६ वर्ष की अवस्था में अपने विख्यात सिद्धान्त शिरोमणि नामक ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के चार खण्ड हैं, १ लीलावती या पाटीगणित, २ बीजगणित, ३ ग्रहगणिताध्याय, ४ गोलाध्याय। अन्तिम दोनों ग्रन्थ ज्योतिष के ग्रन्थ हैं। इनके पुत्र का नाम लक्ष्मीधर और कन्या का नाम लीलावती था। कहते हैं कि इन्होंने अपनी प्रिय कन्या के नाम से अपने ग्रन्थ का पहला भाग बनाया था।

भास्करानन्द स्वामी तत्० (पु०) प्रसिद्ध संन्यासी, इनका जन्म १८३३ ई० के आश्विन शुक्ल सप्तमी को कानपुर ज़िले के मैथेलालपुर गाँव में हुआ था ये बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं। इन्होंने १९०१ ई० में अपनी लीला संवरण की।

भास्वर तत्० (गु०) दीप्तियुक्त, तेजस्वी, प्रतापी, स्वच्छ, उज्ज्वल ।

भिक्षा तत्० (स्त्री०) भिक्षण, याचन, चाह, चाहना, माँगना, याचना, याञ्चा, सेवा, नौकरी ।—जीवी (गु०) याचित वस्तु द्वारा जीने वाला, भिक्षुक, भिखारी ।—टन (पु०) [भिक्षा+अटन] भिक्षार्थ गमन, भिक्षा के लिये जाना, भीख माँगने के लिये घूमना ।

भिक्षु तत्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, संन्यासी, परिव्राजक बौद्ध संन्यासी, याचक, भिखारी ।

भिक्षुक तत्० (पु०) भिक्षोपजीवी, भीख से जीने वाला, याचक, अर्थी, भीख माँगने वाला, भिखारी ।

भिखरी दे० (गु०) खोखला, शून्य, रिक्त ।

भिखारी दे० (पु०) याचक, मँगता, भीख माँगने वाला, भिक्षुक ।

भिगाना दे० (क्रि०) आर्द्र करना, ओदा करना, सजल करना ।

भिजाना दे० (क्रि०) आर्द्र करना, ओदा करना, भिगाना ।

भिटनी दे० (स्त्री०) ढोंठा, भिठना, भेंटी ।

भिड़ना दे० (क्रि०) मिलना, सटना, सट जाना, लड़ना, मुठभेड़ होना, सामना सामनी करना ।

भिड़ाना दे० (क्रि०) लड़ाना, लड़ाई लगाना, झगड़ा कराना, झगड़ा लगा देना ।

भिण्डी दे० (स्त्री०) तरकारी विशेष ।

भित्ति तत्० (स्त्री०) दीवार, भीति, जड़, मूल ।

भिनकना दे० (क्रि०) भिनभिन शब्द करना, मक्खियों का बैठना ।

भिनभिनाना दे० (क्रि०) घृणा करना, अत्यन्त घृणा करना ।

भिन्न तत्० (गु०) [भिद्+क्त] भेद विशिष्ट, विदारित, पृथक्, भिन्न, अन्य, अतिरिक्त, वात रोग विशेष, अतीत ।—गुणन (पु०) अङ्क विशेष, न्यून अङ्क की वृद्धि करना ।

भिन्नाना दे० (क्रि०) सिर में चक्कर, सिर-घूमना, सिर ठनकना ।

भिन्नार्थक तत्० (गु०) अन्य तात्पर्य, अन्य अर्थ, दूसरा आशय ।

भिन्सार दे० (पु०) विहान, प्रात काल, सवेरा ।

भिलावा दे० (पु०) औषधि विशेष ।

भिलौंजी दे० (स्त्री०) भिलावे का बीज ।

भिल्ल तत्० (पु०) म्लेच्छ जाति विशेष, जङ्गली जाति, भील ।

भिषक् तत्० (पु०) वैद्य, चिकित्सक ।

भी तत्० (स्त्री०) भय, त्रास, डर, आशङ्का । (दे० वाक्य समुच्चायक ।

भीख दे० (स्त्री०) भिक्षा, याञ्चा, माँगना ।

भीगना दे० (क्रि०) गीला होना, ओदा होना, भीजना ।

भीचना दे० (क्रि०) निचोड़ना, दबाना ।

भीजना दे० (क्रि०) भीजना, भीगना ।

भीजा दे० (गु०) भीगा, गीला, ओदा ।

भीटा दे० (पु०) खण्डहर, गिरी हुई भीत, पुराना घर, ऊँची ज़मीन ।

भीड़ दे० (स्त्री०) समुदाय, समूह, जमावड़ा, झुण्ड, कष्ट, आपद् ।

भीड़ा दे० (गु०) सङ्कीर्ण, सङ्कुचित, सङ्केत ।

भीत दे० (स्त्री०) दीवार, भित्ति । (गु०) डरा हुआ, भय प्राप्त ।

भीतर दे० (अ०) अन्दर, बीच, मध्य, में ।

भीतरिया दे० (पु०) भीतर रहने वाला, रसोई बनाने वाला ।

भीति तत्० (स्त्री०) भय, त्रास, डर, शङ्का ।

भीम तत्० (गु०) भैरव, भीषण, भयङ्कर, भयानक, भयजनक । (पु०) राजा युधिष्ठिर का छोटा भाई, द्वितीय पाण्डव । पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र, कुन्ती के गर्भ से और वायु के औरस से ये उत्पन्न हुए थे । भीम और दुर्योधन दोनों बराबर उमर के थे । ये दोनों एक ही दिन उत्पन्न हुए थे । भीम बड़े बलवान् थे । दुर्योधन आदि कोई इनकी बराबरी नहीं कर सकता था । इस कारण दुर्योधन सदा

इनसे डाह रखता था और भीम के मारने का उद्योग किया करता था। एक दिन भीम को विष खिला कर दुर्योधन ने जल में फेंकवा दिया, भीम बहते बहते नागलोक पहुँचे और वहाँ इनकी रक्षा हुई। नागलोक से आ कर भीम ने दुर्योधन का पाप युधिष्ठिर से कहा। अन्य पाण्डवों के साथ भीम को भी वारणावत नगर के लाक्षागृह में जला देने की चेष्टा दुर्योधन ने की थी। दुर्योधन की चालाकी समझ कर भीम लाक्षागृह में आग लगने के पहले ही कुन्ती और भाइयों के साथ निकल गये। द्रुपद राज्य में जाने के पहले ही हिडिम्ब नामक राक्षस को मार कर भीम ने उसकी बहिन हिडिम्बा को ब्याहा। हिडिम्बा के गर्भ से भीम के एक पुत्र हुआ था जिसका नाम घटोत्कच हुआ था। द्रौपदी की प्राप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ नगर में आ कर राजसूय यज्ञ करना प्रारम्भ किया। कृष्ण और अर्जुन के साथ मगध राज्य में जा कर भीम ने जरासन्ध को मार डाला था। कपट द्यूत में युधिष्ठिर को हरा कर दुर्योधन ने द्रौपदी का अपमान किया था। सभा के बीच में ही भीम ने प्रतिज्ञा की थी कि इसका बदला चुकाने के लिये मैं भाइयों के साथ दुर्योधन को मार डालूँगा। और दुःशासन के हृदय का रुधिर पीऊँगा, तथा दुर्योधन का जङ्घा तोड़ डालूँगा। कुरुक्षेत्र के युद्ध में भीम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी। पाण्डवों के महाप्रस्थान के समय द्रौपदी, सहदेव, नकुल और अर्जुन के पतन के अनन्तर भीमसेन ने भूमि में गिर कर प्राण त्याग किया था। युधिष्ठिर ने उस समय कहा था। तुम दूसरों को न दे कर स्वयं खा जाते थे और अपने सामने दूसरे को बलशाली नहीं समझते थे, इसी कारण तुम्हें यहाँ गिरना पड़ा है।

भीमसेनी दे० (स्त्री०) सुगन्ध द्रव्य विशेष, एक प्रकार का कपूर।

भीरु तत्० (गु०) भयशील, डरने वाला।

भील दे० (पु०) एक पहाड़ी जाति का नाम, म्लेच्छ जाति विशेष।

भीषण तत्० (गु०) भयङ्कर, भयानक, भैरव, घोर, भयजनक, भयावह। (पु०) सेहुँड वृक्ष, भटकटैया, बाज पक्षी।

भीषा तत्० (स्त्री०) त्रास, भय, भयङ्करता।

भीष्म तत्० (गु०) भयानक, भयङ्कर। (पु०) गाङ्गेय, शान्तनु राजा का पुत्र, ये गङ्गा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इन्होंने पिता की मुग्ध लालसा पूर्ण करने के लिये जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य रहने और राज्य न लेने की प्रतिज्ञा की थी।

भीष्मक तत्० (पु०) विदर्भ राज्य के राजा, श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी इन्हीं की पुत्री थीं।

भीष्म पञ्चक तत्० (पु०) व्रत विशेष, कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक।

भुआल दे० (पु०) भूपाल, राजा, नरपति।

भुक्त तत्० (गु०) भक्षित, खादित, जो भुक्ता, भोगा गया।—भोगी (पु०) पुनः भोग कर्ता, विशेष रूप से अनुभूत।

भुगतना दे० (क्रि०) भोगना, सहना, कर्मों का फल भोगना, कष्ट उठाना, कष्ट सहना।

भुगताना दे० (क्रि०) भोगवाना, दण्ड देना, भोग करवाना, सहाना, सहवाना, पूरा कर देना, बाक़ी रुपये दे देना।

भुग्गा दे० (गु०) सीधा, भोला, भोंदू।

भुग्न तत्० (गु०) कुटिल, वक्र, कुबड़ा, टेढ़ा, तिरछा।

भुच्च दे० (गु०) अनगढ़, अनपढ़, मूर्ख, अजान, अनभिज्ञ।

भुज तत्० (पु०) भुजा, बाहु।

भुजङ्ग, भुजङ्गम तत्० (पु०) सर्प, साँप, अहि।

भुजबन्द दे० (पु०) बाजूबन्द, अङ्गद, बिजायट।

भुजा तत्० (स्त्री०) बाँह, भुज, बाहु।

भुजिया दे० (गु०) भूँजा हुआ, तलना हुआ।

भुट्टा दे० (पु०) बाल, मकई की फली, जनहार।

भुणडली दे० (स्त्री०) कीट विशेष, एक कीट का नाम।

भुतना दे० (पु०) भोकस, छोटा भूत, प्रेत, पिशाच।

भुतहा दे० (गु०) फुतहा, भूत के समान।
भुनना दे० (क्रि०) भूँजना, भर्जन करना, सेंकना।
भुरभुरा दे० (गु०) बुकनी, सूखी बुकनी।
भुरभुराना दे० (क्रि०) छींटना, छिड़कना, फैलाना।
भुलसाना दे० (क्रि०) जलना, झुलसना।
भुलाना दे० (क्रि०) भुलवाना, फुसलाना, धोखा देना, छलना करना, प्रतारण करना।
भुलावा देना दे० (वा०) भुलाना, भुलवाना, फुसलाना।
भुव तत्० (पु०) स्वर्ग, आकाश, अम्बर, पृथिवी, भूमण्डल।
भुवङ्ग तत्० (पु०) भुजङ्ग, साँप, सर्प।
भुवन तत्० (पु०) जगत्, लोक, प्राणी, जीव।
भुस दे० (स्त्री०) तुष, चोकर, छिलका, अनाज के डण्ठल का चूरा।
भुसेरा दे० (पु०) भूसा रखने का स्थान, वह घर जिसमें भूसा रखा जाता है।
भू तत्० (स्त्री०) भूमि, धरती, पृथ्वी।
भूडोल दे० (पु०) भूचाल, भूकम्प।
भूजा दे० (पु०) भड़भूजा, काढ़ू।
भूकना दे० (क्रि०) भों भों करना, कुत्ते का शब्द, भौंकना।
भूकम्प तत्० (पु०) भूचाल, भूडोल।
भूख दे० (स्त्री०) भोजन करने की इच्छा, खाने का अभिलाष, क्षुधा, आहारेच्छा, बुभुक्षा।
भूखा दे० (गु०) बुभुक्षित, क्षुधातुर।
भूगर्भ तत्० (गु०) भूमिका मध्य, भू भेवा घ्यम्यस्तर।
भूगोल तत्० (पु०) भुवन कोष, मही मण्डल, पृथिवी की आकृति के विवरण करने वाला शास्त्र।
भूचक्र तत्० (पु०) विषुव रेखा, मध्य रेखा, भूमण्डल।
भूचर तत्० (पु०) स्थलचर, मनुष्य आदि।
भूड़ दे० (स्त्री०) बालुकामय भूमि, रेतीली भूमि।
भूडल दे० (पु०) अभ्रक, अबरख।
भुण्डपैरा दे० (पु०) अपशकुन, अपशकुन।
भूत तत्० (पु०) काल विशेष अतीत काल, योनि विशेष, पिशाच आदि। अधोमुख या ऊर्ध्व मुख पिशाच। रुद्रानुचर, बालग्रह, कृष्णा चतुर्दशी।
भूतल तत्० (पु०) पृथिवी तल, धरती, भूमि भूमण्डल।
भूतात्मा तत्० (पु०) देह, ब्रह्मा, परमेष्ठी, शिव, बुद्ध, विष्णु।
भूति तत्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, महादेव के अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य, शिव का भस्म, हाथी का शृङ्गार, सम्पत्ति, जाति, वृद्धि नामक औषध।
भूतेश तत्० शिव, महादेव।
भूदार तत्० (पु०) शूकर, सूअर, वराह, भूमि विदारणकारी।
भूदेव तत्० (पु०) ब्राह्मण, द्विज, विप्र, भूसुर।
भूधर तत्० (पु०) पर्वत, गिरि, शैल, भूमि धारण कर्ता, यन्त्र विशेष।
भूप तत्० (पु०) नृपति, राजा, भूपाल, महीपाल।
भूपाल तत्० (पु०) राजा, नृपति, महीपाल।
भूभल दे० (स्त्री०) अङ्गार, अङ्गारा, गरम राख।
भूमा तत्० (पु०) महत्त्व, पूर्णता, विराट् पुरुष, महिमायुक्त।
भूमि तत्० (स्त्री०) भू, पृथिवी, धरती।—कम्प (पु०) भूकम्प, भूचाल।—जा (स्त्री०) सीता, जानकी।—पाल (पु०) महीपति, भूपाल, राजा।
भूमिका तत्० (स्त्री०) आमाछ, रचना, प्रस्तावना, उपक्रम, वेशान्तर परिग्रह, अन्य रूप धारण, छद्मवेश, ग्रन्थों की पूर्व पीठिका, कथा मुख, चित्त की अवस्था विशेष।
भूमिया तत्० (पु०) भूमि का देवता, उस भूमि का वासी।
भूयः तत्० (अ०) पुनः, फिर, बार बार।

भूयोभूयः तत्० (अ०) बार बार, फिर फिर, पुनः पुनः।

भूर दे० (स्त्री०) दक्षिणा, दान।

भूरसी दे० (स्त्री०) दक्षिणा विशेष, उत्सव आदि में जो द्रव्य बिना सङ्कल्प के ब्राह्मणों को दिया जाता है

भूरा दे० (पु०) वर्ण विशेष, पिङ्गल वर्ण, कपिल, कपिश। (गु०) पिङ्गल वर्ण का, कपिश।

भूरि तत्० (अ०) प्रचुर, यथेष्ट, अधिक, ढेर, बहु। —प्रेमा (पु०) चक्रवाक पक्षी, चकवा। —लाभ (पु०) बहुत प्राप्ति, अधिक लाभ।

भूरिश्रवा तत्० (गु०) कीर्तिमान्, अतिशय यशस्वी। —(पु०) चन्द्रवंशी राजा सोमदत्त का पुत्र, महाभारत युद्ध में ये कौरवों की ओर से युद्ध करते थे। पहले अर्जुन ने इनके बाहु काट डाले थे, उसी समय सात्यकी ने तलवार से इनका सिर काट डाला था।

भूरुह तत्० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, गाछ।

भूर्जपत्र तत्० (पु०) एक वृक्ष की छाल।

भूल दे० (स्त्री०) चूक, विस्मृति, अज्ञान से अपराध, त्रुटि।

भूलना दे० (क्रि०) विस्मरण होना, बिसरना, चूकना।

भूला बिसरा दे० (वा०) भटका, भूला, मार्गभ्रष्ट, रास्ता भूला हुआ।

भूला भटका दे० (वा०) विपथ पतित, रास्ताभूलने से भटकता हुआ।

भूलोक दे० (पु०) मर्त्यलोक, मृत्युलोक, मनुष्यलोक।

भूषक तत्० (गु०) भूषण कारक, अलङ्कारक, अलङ्कार करने वाला, शृङ्गार करने वाला।

भूषण (तत्०) (पु०) [भूष्+अनट्] आभरण, अलङ्कार, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, वीर रस के एक प्रसिद्ध कवि।

भूषित तत् (गु०) अलङ्कृत, शोभित, शृङ्गारित।

भूसा दे० (पु०) भुस, तुष।

भूसी दे० (स्त्री०) चोकर, पछोरन।

भूसुर तत्० (पु०) भूदेव, ब्राह्मण।

भृकुटी तत्० (स्त्री०) भ्रूभङ्ग, मुखभङ्ग, त्योरी, भौं, भौंह।

भृगु तत्० (पु०) भार्गव, शुक्राचार्य, पर्वत का करारा, प्रपात, कमठ, मुनि विशेष, विख्यात मुनि, पहले के समय में महादेव वारुणी मूर्ति-धर कर एक यज्ञ करते थे, इस यज्ञ में देव कन्या और देवाङ्गनाएँ उपस्थित थीं। देवाङ्गनाओं को देख कर ब्रह्मा का वीर्यपात हुआ, उसको अपनी किरणों से उठा कर सूर्य ने अग्नि में डाल दिया, उससे भृगु अङ्गिरा और कवि ये तीन उत्पन्न हुए। इनको देख कर महादेव ने कहा कि ये हमारे यज्ञ में उत्पन्न हुए हैं इस कारण ये हमारे पुत्र हैं। अग्नि ने कहा कि जब ये मेरे द्वारा उत्पन्न हुए हैं तब ये दूसरे के पुत्र नहीं हो सकते। ब्रह्मा ने कहा कि इनकी उत्पत्ति मेरे वीर्य से हुई है अतः इनका पिता मैं ही हूँ। इसी प्रकार तीनों आपस में विवाद करने लगे। तब देवताओं ने निर्णय कर दिया। एक एक पुत्र तीनों देवताओं को दे दिये गये। भृगु महादेव को अङ्गिरा अग्नि को और कवि ब्रह्मा के भाग में पड़े।

भृङ्ग तत्० (पु०) भ्रमर, अलि, षट्पद, भँवरा।

भृङ्गराज तत्० (पु०) पौधा विशेष, भँगरिया।

भृङ्गी तत्० (स्त्री०) कीट विशेष, भीरी, लखोरी (पु०) शिवगण विशेष।

भृति तत्० (स्त्री०) वेतन, मजूरी, कमाई, महीना, मासिक या दैनिक वेतन। —भुक् (पु०) वेतन ग्राही, वैतनिक।

भृत्य तत्० (पु०) परिचारक, सेवक, दास, किङ्कर, चेला, नौकर, टहलुआ।

भृष्ट तत्० (गु०) भुँजा हुआ, भुना हुआ, जल संयोग के बिना पकाया।

भेद दे० (पु०) भेद, रहस्य, स्वभाव, मर्म।

भेंगा दे० (गु०) टेढ़ा, तिरछा, बाँका, बहुत टेढ़ा।

भेंट दे० (स्त्री०) मिलाप, साक्षात्कार, दर्शन, उपहार।

भेंटना दे० (क्रि०) भेंट करना, मिलाप करना, साक्षात्कार करना।

भेक तत्० (पु०) जन्तु विशेष, मण्डूक, बेंग, मेंढक, दादुर।

भेख दे० (पु०) आकृति, आकार, वेष, परिच्छद ।
भेजना दे० (क्रि०) प्रस्थापित करना, पठाना, पहुँचाना, दूसरी जगह जाने की आज्ञा देना ।
भेजा दे० (पु०) गूदा, भीतरीभाग, पठाया हुआ, पठाया ।
भेट दे० (स्त्री०) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, सौगात, उपहार ।
भेटना (क्रि०) भेंट करना, भेंट देना, मिलना, मुलाक़ात करना ।
भेटी भेटू दे० (स्त्री०) बोठा, डंठा, फल आदि के ऊपर की डंठी ।
भेड़ दे० (पु०) मेढ़ा, मेष ।
भेड़िया दे० (पु०) हिंस्र जन्तु विशेष, हुँडार । —धसान (वा०) देखा देखी करना, किसी कारण न रहने पर भी केवल दूसरे करते हैं इसलिये स्वयं भी करना भेड़िया धसान कहा जाता है ।
भेड़ी दे० (स्त्री०) भेड़ी, मेषी, गाडर ।
भेद तत्० (पु०) भिन्नता, दूसरे के अधिकार से हटा कर अपने अधिकार में करना, शत्रुओं के वश करने योग्य चार उपायों के अन्तर्गत तीसरा उपाय, विदारण, विवेचन, विवेक, छिपी बात, गुप्त समाचार, विच्छेद, प्रथक्ता ।
भेदक तत्० (गु०) विदारक, मित्रता तोड़ने वाला, विरेचक औषधि, फोड़ने वाला ।
भेदकिया दे० (गु०) भेदी, खोजी, पता लगाने वाला, गुप्तचर ।
भेदी दे० (पु०) भेदक, चर, भीतरी बात जानने वाला, मर्मज्ञ ।
भेदू दे० (पु०) भेदी, भेद रखने वाला, मर्म जानने वाला ।
भेद्य तत्० (गु०) भेदनीय, भेद के योग्य ।
भेना दे० (स्त्री०) बहिन, भगिनी ।
भेर दे० (स्त्री०) भेरी, वाद्य विशेष ।
भेरी तत्० (स्त्री०) वाद्य यन्त्र विशेष, वृहत् ढक्का, पटह, दुन्दुभि, नगारा ।
भेला दे० (पु०) पौधा विशेष, भिलावा ।
भेली दे० (स्त्री०) गुड़ का लड्डू ।
भेव दे० (पु०) स्वभाव, प्रकृति, भेद, मर्म, भीतरी बातें ।
भेष तत्० (पु०) वेश, रूप, आकार, आकृति, पुं पुरुषों का वासस्थान ।
भेषज तत्० (पु०) औषध, दवा ।
भैंस दे० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध पशु विशेष, महिषी ।
भैंसा दे० (पु०) महिष ।
भैंसिया दाद दे० (पु०) रोग विशेष, दद्रु रोग ।
भैचक दे० (अ०) आश्चर्यित, अचम्भित ।
भैमी तत्० (स्त्री०) माघ शुक्ला एकादशी, राजा भीम की पुत्री, दमयन्ती, नल की स्त्री ।
भैया दे० (पु०) भाई, भ्राता, बड़ा भाई ।
भैयापा दे० (पु०) भायारो, बन्धुत्व, भाई चारा ।
भैरव तत्० (पु०) शङ्कर, महादेव, देव विशेष, भया नक रस नद विशेष, राग विशेष, एक राग का नाम, शिवजी के गण का अधिपति । (गु०) भयानक, भयङ्कर, भीषण, कराल ।
भैरवी तत्० (स्त्री०) अवधूतिन, अवधूत आश्रम में गई स्त्री, रागिनी विशेष, भैरव राग की स्त्री । —चक्र (पु०) वामाचारियों का मद्यपानार्थ चक्र विशेष ।
भैरों तद्० (पु०) भैरव ।
भैंहु दे० (स्त्री०) अनुज बधू, छोटे भाई की स्त्री ।
भोंकड़ा दे० (गु०) बड़ा, मोटा, स्थूल, विशाल ।
भोंकना दे० (क्रि०) हूलना, ठोंकना, घुसाना, भैं भैं करना ।
भोंकस दे० (पु०) ओझा, भूतहा, टोनहा ।
भोंघरा दे० (पु०) तलघरा, तल कोठा, नीचे का घर ।
भोंड़ा दे० (गु०) कुडौल, कुत्सित रूप वाला ।
भोंथरा दे० (गु०) भोथर, भोथा, कुण्ठित, बिना धार का ।
भोंदू दे० (पु०) मूर्ख, बेवक़ूफ़, सीधा, भोला, अनजान, अनभिज्ञ ।

भोंपू दे० (पु०) नरसिंघा, सींगा, एक प्रकार का बाजा।

भोई दे० (स्त्री०) कहार, धीमर।

भोकस दे० (पु०) मन्त्र यन्त्र करने वाला, ओझा, टोनहा।

भोक्ता तत्० (गु०) भोग करने वाला, भोगी, खाऊ, अधिक खवैया।

भोग तत्० (पु०) सुख दुःख का अनुभव, स्त्री आदि का उपभोग, साँप का शरीर, पालन, भोजन, तिरस्कार, अपमान।—राग (पु०) देवता का सेवन पूजन।

भोगना दे० (क्रि०) सुख दुःख उठाना, कर्म का फल भोगना, सुख दुःख सहना।

भोगा दे० (पु०) छल, कपट, धोखा।

भोगी तत्० (गु०) विलासी, ऐश्वर्यवान्, व्यसनी, दुराचारी, आनन्दी, सुखी, प्रारब्धी।

भोग्य तत्० (गु०) भोगने योग्य, सुख दुःख, कर्म फल।

भोज दे० (पु०) ज्योनार, आहार।

भोजदेव तत्० (पु०) राजा विशेष, ये मालवा के अन्तर्गत धारा नगरी के राजा थे। ये ११वीं खृष्टीय शताब्दी में उत्पन्न हुए थे। ये केवल राजा ही नहीं थे, किन्तु संस्कृत साहित्य का ज्ञान इन-का अगाध था। सरस्वती कण्ठाभरण भोज चम्पू आदि इनके ग्रन्थों का संस्कृतज्ञों में बड़ा आदर है। स्मृति शास्त्र के भी ये बड़े भारी पण्डित थे। इन्होंने मनु संहिता की एक टीका बनाई थी। इन्हींके समय में भारत में संस्कृत विद्या का बड़ा प्रचार था। संस्कृत के अधिकांश साहित्य ग्रन्थ इन्हींके आश्रित कवियों के बनाये हैं।

भोजन तत्० (पु०) आहार, खाना।

भोजपत्र तत्० (पु०) भूर्जपत्र, वृक्ष की छाल।

भोज्य दे० (गु०) भोजन योग्य, खाने के योग्य।

भोडल दे० (पु०) अभ्रक, उपधातु विशेष।

भोथा दे० (गु०) भोथर, कुण्ठित, गुठाधार।

भोपा दे० (पु०) मन्त्र यन्त्र करने वाला, ओझा।

भोमीरा दे० (पु०) मणि विशेष, विद्रुम, प्रवाल, मूँगा।

भोर दे० (स्त्री०) प्रातःकाल, सबेर, बिहान।

भोला दे० (गु०) छलहीन, निष्कपट।

भौं दे० (स्त्री०) भृकुटी, भ्रू।

भौंकना दे० (क्रि०) हौं हौं करना, भूकना, बिना प्रयोजन बक बक करना, कुत्ते के समान शब्द करना।

भौंचाल दे० (पु०) भूडोल, भूकम्प, भूमिकम्प, भूचाल।

भौंर दे० (पु०) भंवर, आवर्त, घुमाव, पानी का चक्कर।

भौंरा दे० (पु०) भ्रमर, अलि, षट्पद, मधुप।

भौंरियाना दे० (क्रि०) घूमना, फिरना, चक्कर काटना, भ्रमर की गति से चलना।

भौंरी दे० (स्त्री०) आवर्त, घोड़े का एक दोष और गुण। गले के नीचे की ओर जिस घोड़े के बाल फिरे रहते हैं वह घोड़ा अच्छा समझा जाता है। परन्तु वही बालों का आवर्त यदि किसी दूसरे स्थान पर रहता है तो वह दोष समझा जाता है। यदि वह मनुष्य के मस्तक पर आगे की ओर हो तो स्त्रीहन्ता योग समझा जाता है।

भौंपना दे० (क्रि०) हौं हौं करना, भौंकना।

भौ दे० (पु०) भय, डर, शङ्का, त्रास।

भौंचक दे० (अ०) अकस्मात्, सहसा, अचानक।

भौजाई दे० (स्त्री०) भाभी, बड़े भाई की स्त्री।

भौतिक तत्० (गु०) भूत सम्बन्धी, भूत का, अद्भुत।

भौना दे० (क्रि०) भ्रमण करना, फिरना, घूमना।

भौनास दे० (पु०) हाथी बाँधने का खूँटा।

भौमवार दे० (पु०) मङ्गलवार।

भ्रंस तत्० (स्त्री०) ध्वंस, नाश।

भ्रम तत्० (पु०) सन्देह, संशय।

भ्रमण तत्० (पु०) पर्यटन, घूमन, भाँवर फिरना।

भ्रमर तत्० (पु०) भौंरा, अलि, मधुप।

भ्रष्ट तत्० (पु०) पतित, अधर्मी, गिरा, अधःपतित, स्थानच्युत।

भ्राता तत्० (पु०) भाई, सहोदर, बन्धु।

भ्रान्ति तत्० (स्त्री०) भूल, भ्रम, संशय, सन्देह।

भ्रामक तत्० (पु०) रोग विशेष, मूर्छा रोग, मिर्गी। (पु०) सन्देह उत्पन्न करने वाला।

भ्रू तत्० (स्त्री०) भौं, भृकुटी, भ्रुकुटी।

भ्रूण तत्० (पु०) गर्भ, गर्भस्थ बालक।—हत्या (स्त्री०) गर्भपात।

भ्रूभङ्ग तत्० (पु०) त्योरी चढ़ाना, घुड़की, तेवर बदलना, कटाक्ष, अस्पृह, निरीक्षण।

म

म व्यञ्जन का पचीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ होने से यह ओष्ठ्य वर्ण कहा जाता है।

म तत्० (पु०) ब्रह्मा, शिव, चन्द्रमा, विष्णु, यम, समय, विष।

मकड़ा दे० (पु०) कीट विशेष, जाल का कीड़ा।

मकड़ाना दे० (क्रि०) टेढ़ा चलना, जी चुराना, जी छिपाना।

मकड़ी दे० (स्त्री०) कीट विशेष, छोटा मकड़ा।

मकर तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, दशम राशि, कामदेव की ध्वजा का चिन्ह, कुबेर का धन विशेष। (दे०) छल, कपट, धोखा।—ध्वज (पु०) कामदेव, रस सिन्दूर विशेष, चन्द्रोदयरस।

मकरन्द तत्० (पु०) पराग, पुष्प रस, पुष्पासव, मधु।

मकराक्ष तत्० (पु०) राक्षस विशेष, यह रावण के सेनापति खर राक्षस का पुत्र था। यह भी रावण का सेनापति था। इसको रामचन्द्रजी ने मारा था।

मकराना तत्० (पु०) एक स्थान का नाम, जहाँ श्वेत पत्थर निकलता है। यह स्थान मारवाड़ में है।

मकरोना दे० (क्रि०) भिगाना, गीला करना, कोदा करना, आर्द्र करना।

मकुट दे० (पु०) मुकुट, मौर, सिरपेच, किरीट।

मकोड़ा दे० (पु०) चींटा, चींउँटा, पीपर्दा।

मकोय दे० (पु०) एक वृक्ष और उसका फल।

मक्खन दे० (पु०) नैनू, नवनीत, माखन।

मक्खी दे० (स्त्री०) मच्छी, मक्षिका, माखी।

मख तत्० (पु०) यज्ञ, क्रतु, याग।

मखन दे० (पु०) माखन, मक्खन, नैनू।

मखना दे० (पु०) हाथी विशेष, छोटा हाथी।

मखनिया दे० (पु०) माखन बेचने वाला।

मखाना दे० (क्रि०) फल विशेष।

मखी दे० (स्त्री०) मक्खी, मक्षिका।

मग तद्० (पु०) मार्ग, डगर, बाट, राह, पैंडा।

मगन दे० (पु०) आनन्दित, हर्षित, प्रफुल्ल।—ता (स्त्री०) हर्ष, प्रसन्नता।

मगर तद्० (पु०) मकर, मगर, मच्छ, ग्राह, जल जन्तु विशेष।

मगरा दे० (पु०) ढीठ, निर्लज्ज, धृष्ट, घमण्डी, अहङ्कारी।

मगराई दे० (स्त्री०) ढिठाई, धृष्टता, मचलाहट।

मगरापन दे० (पु०) मचलाई, धृष्टता, घमण्ड।

मगरेला दे० (पु०) बीज विशेष।

मगसिर तद्० (पु०) मार्ग शीर्ष, अगहन महीना।

मगहैया दे० (पु०) मगध देशवासी।

मगुरी दे० (स्त्री०) मत्स्य विशेष।

मग्न तत्० (पु०) मगन, प्रसन्न, मुदित।

मघन दे० (पु०) महक, सुवास, सुगन्ध, उत्तम गन्ध।

मघवा तत्० (पु०) इन्द्र, देवराज, सुरपति, देवताओं के अधिपति।

मघा तत्० (पु०) नक्षत्र विशेष, दशवाँ नक्षत्र।

मङ्का दे० (पु०) माला, जप करने की माला, सुमिरनी।

मङ्गता दे० (पु०) भिक्षुक, भिखारी, कंगाल, दरिद्र।

मङ्गुनी दे० (स्त्री०) उधार।

मङ्गरा दे० (पु०) बरदेरी, छांद का सिर, छाजा, मर्कवा।

मङ्गल तत्० (पु०) अभिप्रेत, अर्थ की सिद्धि, कल्याण, शुभ, क्षेम, कुशल, ग्रह विशेष, तृतीय-ग्रह।—वार (पु०) भौमवार, मङ्गल का दिन, तीसरे ग्रह का दिन।—समाचार (पु०) अच्छा संवाद, सुसम्वाद।

मङ्गलाचरण तत्० (पु०) मङ्गल के लिये अनुष्ठान, मङ्गल कृत्य, ग्रन्थ के आदि में इष्टदेव की वन्दना।

मङ्गलाचार तत्० (पु०) मङ्गल उत्सव।

मङ्गलामुखी तत्० (गु०) गवैया, गाने वाली, मङ्गल मनाने वाली, रण्डी।

मङ्गली दे० (गु०) मङ्गल करने वाला, मङ्गलकारी, कल्याणदायक। जिसकी कुण्डली में लग्न, चतुर्थ सप्तम, अष्टम और द्वादश स्थान में मङ्गल पड़ा हो, यह योग यदि पुरुष में पड़ा हो तो स्त्रीहन्ता योग कहा जाता है, और स्त्री में पड़ा हो तो पुरुषहन्ता।

मङ्गवाना दे० (क्रि०) मङ्गाना, पास लाने के लिये कहना।

मङ्गसिर तद्० (पु०) मार्गशीर्ष, अगहन का महीना।

मङ्गाना दे० (क्रि०) मङ्गवाना, मँगा भेजना।

मङ्गूला दे० (पु०) छोटा झब्बा, फूँदना।

मङ्गेतर दे० (स्त्री०) वचनदत्त, मांङ्ग।

मचक दे० (स्त्री०) गाँठ की पीड़ा, धीरे धीरे दर्द।

मचकना दे० (क्रि०) व्यथा होना, चरांना, पीड़ा होना।

मचकाना दे० (क्रि०) मटकाना, झटकाना, धौंस बताना।

मचना दे० (क्रि०) रचना, उठना, होना, सम्पादन करना, किया जाना।

मचमच दे० (अ०) चरचर, मरमर, ध्वनि विशेष, मचमच शब्द।

मचमचाना दे० (क्रि०) मचमच करना, हिलाना, कँपाना, जिससे मचमच शब्द हो।

मचलना दे० (क्रि०) मटकना, घमण्ड करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, हठ करना, दुराग्रह करना।

मचलापन दे० (पु०) मचलाहट, अभिमान, अहङ्कार, हठ।

मचला दे० (गु०) हठी, हठीला, अहङ्कार, अभिमान घमण्ड।

मचलाना दे० (क्रि०) हठ करना, दुराग्रह करना, बहाना करना।

मचलाहा दे० (गु०) हठीला, ढीठ, धृष्ट, घमण्डी।

मचाना दे० (क्रि०) करना, होने देना, उठाना, प्रारम्भ करना।

मचामच दे० (अ०) झटपट, लदालद, चकाचक।

मचिया दे० (स्त्री०) पीढ़ा, चौकी, छोटी खाट, मोढ़ा।

मचोड़ना दे० (क्रि०) निचोड़ना, ऐंठना, गारना।

मच्छ तद्० (पु०) मछली, मत्स्य, मीन।

मच्छड़ दे० (पु०) मशक, मस, मांछड़।

मच्छी दे० (स्त्री०) घुमर, घुम्बा, मीठी, मीठिया।

मछन्दर दे० (पु०) चूहा। (गु०) मूर्ख, अनभिज्ञ, बड़ी मूँछ वाला।

मछली दे० (स्त्री०) मत्स्य, मच्छ, मीन।

मछुआ दे० (पु०) धीवर, कैवर्त, मछली पकड़ने वाला।

मजीठ दे० (पु०) रङ्ग विशेष, लाल रङ्ग।

मजीत दे० (गु०) पुराना, सस्ता, निकम्मा।

मजीरा दे० (पु०) वाद्य विशेष, झाँझ।

मजूर दे० (पु०) सेवक, परिचारक, भृत्य, कामकाजी, दास, दैनिक वेतन पर काम करने वाला, कारखाने में काम करने वाला।

मज्जन तत्० (पु०) स्नान, नहान, धो धो कर नहान।

मज्जा तत्० (पु०) वैद्यक के मत धातु के अन्तर्गत धातु विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का माँस।

मझला दे० (गु०) माध्यमिक, बीच का, मध्य का, मध्यम, मझोला, न बड़ा न छोटा, मध्यम क़द का।

मझार दे० (पु०) मध्य, मौंझ, बीच, मनार।

मझेली दे० (स्त्री०) मझोली, बहेली।

मझोला दे० (पु०) बीचला, मध्य का, मध्यम।

मझोली दे० (स्त्री०) एक प्रकार की छोटी गाड़ी।

मञ्च तत्० (पु०) गरगज, डौंजा, मचान, उच्चासन, खाट, सिंहासन।

मञ्चा दे० (पु०) खाट, चौकी, सिंहासन।

मञ्जन तत्० (पु०) मार्जन, माजा, दाँत धोने का द्रव्य, चूर्ण विशेष।

मञ्जना दे० (क्रि०) उजला होना, फरछाना, साफ़ करना।

मञ्जरी तत्० (स्त्री०) बौर, मुकुल, कली, कोढ़ी।

मञ्जार तद्० (पु०) बिलाव, बिड़ाल, बिल्ला।

मञ्जीरा दे० (पु०) झाँक, मजीरा।

मञ्जु, मञ्जुल तत्० (पु०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनोज्ञ, अभीप्सित, रम्य।

मञ्जूषा तत्० (स्त्री०) पेटारी, पिटारी, सन्दूकची, छोटा सन्दूक, संस्कृत व्याकरण के एक ग्रन्थ का नाम।

मटक दे० (स्त्री०) चोंचला, भावली, नखरा, हावभाव।

मटकन, मटकना दे० (क्रि०) आँख घुमाना, आँख चमकाना, दुबराना, दुर्बल होना, झाँकना, ताकना। (पु०) पुरवा, मिट्टी का छोटा बरतन, बधना।

मटकाना दे० (क्रि०) आँख घुमाना, आँख चमकाना, कटाक्ष करना।

मटकी दे० (स्त्री०) मिट्टी का घड़ा, मटकना, गगरी, घूसनी, भूपकी।

मटकोठा दे० (पु०) मिट्टी का बना घर।

मटर दे० (पु०) कलाई विशेष, एक अन्न का नाम, कलिली।

मटरा दे० (पु०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र, बड़ा मटर।

मटरी दे० (स्त्री०) छोटा मटर, छीमी।

मटियाना दे० (क्रि०) माटी लगाना, माटी घुपड़ना, सहना, धून खींचना।

मटियारा दे० (पु०) जुताऊ खेत, जो खेत जो जाता है।

मटियाव दे० (पु०) उपेक्षा, उदासीनता प्रद आनाकानी, सहन।

मट्टी दे० (स्त्री०) माटी, मृत्तिका, मिट्टी, नि शरीर।—**करना** (वा०) नाश करना, बिगाड़ ख़राब करना।—**खाना** (वा०) मौत का दुःख पहुँचाना, पीड़ा देना।—**डालना** (वा तोपना, गाड़ना, झगड़ा मिटाना, दोष छिपा —**देना** (वा०) गाड़ना, तोपना, छिपाना, कि का छिद्र प्रकाशित नहीं होने देना।—**पर लड़ना** (वा०) भूमि के लिये झगड़ना, व्यर्थ लड़ना, छोटी सी बात के लिये लड़ना।—**में मिलना** (वा०) बेकार होना, ख़राब होना, नष्ट होना, बरबाद होना।—**होना** (वा०) निर्बल होना, सत्यानाश होना, बिना काम का होना, बेकार होना।

मट्ठा दे० (पु०) छाँछ, मट्ठी, तक्र।

मठ तत्० (पु०) छात्रावास, छात्रों के रहने का स्थान, संन्यासी साधुओं का घर, पाठशाला, देवागार।

मठड़ी दे० (स्त्री०) मठरी, एक प्रकार की मिठाई का नाम।

मठा दे० (पु०) मट्ठा, मही, घोल, तक्र। (पु०) ढीला, शिथिल, आलसी।

मठोर दे० (पु०) मटका, माँट, मटकना।

मड़ियाना दे० (क्रि०) चिपकाना, जमाना।

मड़ुआ दे० (पु०) एक अन्न का नाम।

मड़ोड़ दे० (पु०) ऐंठ, बल, पेंच, पेट का एक रोग।

मड़ोड़ना दे० (क्रि०) ऐंठना, बल देना।

मड़ोड़ा दे० (पु०) ऐंठन, मरोरा, खोंचा, शूल की बीमारी।

मढ़न दे० (स्त्री०) आवरण, अस्तर, ढाकन, खोल।

मढ़ना दे० (क्रि०) तोपना, आवरण करना, छिपा देना, कपड़ा चढ़ाना।

मढ़ी दे० (स्त्री०) कुटी, झोंपड़ी, मण्डप।

मड़ैया दे० (स्त्री०) छोटा छप्पर, बहुत छोटी झोपड़ी।

मणि तत्० (पु०) पत्थर विशेष, मुक्ता आदि रत्न, मग।—कर्णिका (स्त्री०) काशी के एक तीर्थ का नाम।—कार (पु०) मणियुक्त अलङ्कार आदि बनाने वाला जौहरी, न्याय के चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का कर्ता।—ग्रीव (पु०) धनाधिपति कुबेर के पुत्र का नाम।—पूर (पु०) षट्चक्र के अन्तर्गत नाभि चक्र स्थित तीसरा चक्र।—मण्डप (पु०) रत्नमय गृह।—मय (गु०) मणि द्वारा निर्मित, प्रभूत रत्न युक्त।—माला (स्त्री०) मणिमय हार, मणि की माला, छन्दविशेष, लक्ष्मी, दीप्ति।

मणिमान् तत्० (पु०) कुबेर के एक कर्मचारी का नाम, एक बार इसने अज्ञान से महर्षि अगस्त्य के सिर पर थूक दिया। महर्षि ने मनुष्य द्वारा मारे जाने का इसको शाप दिया। गन्धमादन पर्वत पर जब ये रहता था उसी समय सुवर्ण कमल लेने को भीमसेन वहाँ गये और उन्हीं के हाथ से यह मारा गया।

मणियाँ दे० (स्त्री०) माला का दाना।

मणियार दे० (पु०) चूड़ी वाला, चूड़ी बनाने और बेचने वाला।

मण्ड तत्० (पु०) माँड़, जूस, पीच।

मण्डन तत्० (पु०) भूषण, अलङ्कार, गहना, सजने की वस्तु।

मण्डप तत्० (पु०) जन विश्रामगृह, तृणादि निर्मित देवगृह, मड़वा, ब्याह के लिये बनाया तृण गृह।

मण्डल तत्० (पु०) चन्द्र सूर्य के बाहर की परिधि, परिवेश, गोल, चक्र, संघात, समूह, सैनिकों की स्थिति विशेष, व्याघ्रनख नामक गन्ध द्रव्य, कुछ नगरों का प्रधान नगर, जनपद, ज़िला, सूबा।

मण्डलाकार तत्० (गु०) गोलाकार, वर्तुलाकार।

मण्डलाधीश तत्० (पु०) मण्डलेश्वर, मण्डलाध्यक्ष।

मण्डलाना दे० (क्रि०) घूमना, फिरना, चक्कर काट कर घूमना।

मण्डलिया दे० (पु०) कपोत विशेष।

मण्डली तत्० (स्त्री०) समूह, सभा, जथा, झुण्ड।

मण्डवा दे० (पु०) मण्डप, कुञ्ज, घेरा, बैठक, तृण निर्मित देवगृह।

मण्डवी दे० (स्त्री०) अन्न विशेष।

मण्डा दे० (पु०) पेड़ा, दूध की मिठाई।

मण्डित तत्० (गु०) भूषित, अलङ्कृत, वेष्टित, जड़ित, शोभित, मुद्रांकित।

मण्डियाना दे० (क्रि०) लेई लगाना, कलप करना, कलप चढ़ाना।

मण्डी दे० (स्त्री०) हाट, बज़ार, अन्न आदि बिकने का स्थान, गोलागञ्ज।

मण्डूक तत्० (पु०) भेक, भेंग, मेढक, मुनि विशेष।

मत तत्० (पु०) अभिप्राय, सिद्धान्त, आशय, रीति, ढंग, धर्म, धर्म या शास्त्र का मन्तव्य, विचार, पन्थ, धर्म पन्थ।—मतान्तर (पु०) अनेक मत।—विरोधी (पु०) धर्म विरोधी, अधर्मी।—ावलम्बी (पु०) मतावलम्बी, धर्मानुयायी।

मतङ्ग तत्० (पु०) हाथी, हस्ति, गज, करी, ऋष्यमूक पर्वत वासी एक मुनि, वानर-राज वालि ने जब दुन्दुभि नामक असुर को मार कर फेंका तब उसके शरीर के रुधिर का छींटा मतङ्ग मुनि के शरीर पर पड़ा। इससे क्रुद्ध होकर मुनि ने वालि को शाप दिया कि ऋष्यमूक पर्वत पर आने से वालि की मृत्यु होगी। तभी से वह ऋष्यमूक पर्वत पर नहीं आता था। इसीसे जब सुग्रीव किष्किन्धा से निकाले गये तब वालि के भय से इसी पर्वत पर रहना सुग्रीव ने उत्तम समझा था।

मतना दे० (पु०) छन्द का एक भेद।

मतभेद तत्० (पु०) अभिप्राय, विरुद्ध सिद्धान्त।

मतराना दे० (क्रि०) मनाना, समझाना, बुझाना, जनाना।

मतलाना दे० (क्रि०) जी मिचलाना, जी मथना, जी मचलाना।

मतवाला दे० (गु०) उन्मत्त, माता, मदमाता, मदहङ्कार।

मतहीन तत्० (गु०) मतिहीन, निर्बुद्धि, बुद्धिहीन।

मता दे० (पु०) उपदेश, परामर्श, विचार, सम्मति, सलाह।

मति तत्० (स्त्री०) बुद्धि, मेधा, मनीषा, धी।—भ्रम (पु०) भूल. बुद्धि विपर्यय।—मान (पु०) चतुर, बुद्धिमान्, विज्ञ।

मत्त तत्० (गु०) उन्मत्त, मतवाला, पागल।

मत्सर तत्० (पु०) द्वेष, डाह, दूसरे की बढ़ती न सहना।

मत्स्य तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष, माछ, मछली, मीन, पुराण विशेष, भगवान् का प्रथम अवतार, विराट् देश।—गन्धा (स्त्री०) मच्छोदरी, व्यास की माता।

मथन तद्० (पु०) विलोवन, लोड़न।

मथना दे० (क्रि०) महना, बिलोना, घी निकालना।

मथनिया दे० (स्त्री०) मन्थन दण्ड, दधि मथने का दण्ड।

मथनी दे० (स्त्री०) महानी, मथनिया।

मथा दे० (पु०) माथा, मस्तक, कपाल, सिर।

मथानी दे० (स्त्री०) दुधहाड़ी, मटकी, दही महने की हड़िया।

मथित तत्० (गु०) मथा हुआ, बिलोया हुआ।

मथुरा तत्० (स्त्री०) नगर विशेष, सप्तपुरियों के अन्तर्गत पुरी विशेष, श्रीकृष्ण का जन्म स्थान, हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ।

मथुरिया तत्० (गु०) माथुर, चौबे ब्राह्मण, मथुरा के वासी।

मथौर दे० (पु०) चन्दा बिहरी, चिट्ठा।

मथौरा दे० (पु०) सूरजमुखी छाता।

मद तद्० (पु०) गर्व, मद्य, मत्तता, मोह, मादक वस्तु।—माता (गु०) मतवाला, उन्मत्त, अहङ्कार।

मदन तत्० (पु०) कामदेव, वसन्त ऋतु, धतूरे का वृक्ष, धतूर का पेड़।—गोपाल (पु०) श्रीकृष्ण की मूर्ति विशेष।—बाण (पु०) कामदेव का बाण, एक फूल का नाम।

मदार दे० (पु०) अर्क वृक्ष, अकवन का पेड़।

मदारी दे० (पु०) बाजीगर, इन्द्रजाली, साँप वाला, नटवर।

मदिक दे० (पु०) अभिमानी, अहङ्कारी, घमण्डी।

मदिरा तत्० (स्त्री०) सुरा, दारु, मद्य, आसव।

मद्गु तत्० (पु०) अन्न विशेष, मूँग।

मद्गुर दे० (पु०) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की मछली।

मद्य तत्० (पु०) सुरा, मदिरा, मद, दारु।—प (पु०) मद्यपी, शराबी, मद्य पीने वाला।

मधमाता दे० (गु०) मतवाला, पागल, उन्मत्त।

मधु तत्० (पु०) मद्य, मदिरा, पुष्परस, शहद, चैत्र महीना।—कर (पु०) भ्रमर, भौंरा।—कोष (पु०) शहद का छाता।—प (पु०) भँवरा, भ्रमर, अलि।—पर्क (पु०) दधि युक्त मधु, दही और शहद। षोडशोपचार पूजा का छठवाँ उपचार।—मास (पु०) चैत्र, चैत का महीना।

मधुपर्ण दे० (पु०) पक्का फल, रसयुक्त फल,

मधुमक्खी (स्त्री०) शहद की मक्खी।

मधुमात दे०(पु०) रागिणी विशेष।

मधुर तत्० (गु०) मीठा।

मधुमल तत्० (पु०) मोम।

मधुरी दे० (स्त्री०) मीठी, रसीली।

मधुकरी तद्० (स्त्री०) ब्रह्मचारियों की भिक्षा।

मध्य तत्० (गु०) अन्तराल, बीच, माँझ, मझार।—भाग (पु०) मध्यस्थान, बीचा बीच।—दिवस (पु०) मध्यान्ह, दोपहर।—देश (पु०) मध्य का देश, बीच का देश।—लोक (पु०) मनुष्य लोक, मर्त्यलोक, पृथिवी।—वर्ती (स्त्री०) मध्यस्थ, बिचवई।—रूप (पु०) बीचवाला, साक्षी, निर्णय कर्ता।—स्थल (पु०) कटि, कमर, कटिप्रदेश।

मध्यम तत्० (पु०) स्वर विशेष, राग विशेष, वनस्पति विशेष, मध्य देश, यहाँ की सामयिक सत्ता, मध्य में उत्पन्न।—पाण्डव (पु०) अर्जुन, धनञ्जय, सव्यसाची।

मध्यमा तत्० (स्त्री०) दृष्टरजस्का नारी, अङ्गुलि विशेष, नायिका विशेष यथा:— दोहा।—
"प्रिय सों हित तें हित करै अनहित कीन मान।
ताहि मध्यमा कहत हैं कवि मति राम सुजान॥
—रसराज।

मध्यान्ह तत्० (पु०) दिनका मध्य, दोपहर।
मन तत्० (पु०) मन, चित्त, हृदय। (दे०) परिमाण विशेष, चालीस सेर की तौल। —का दे० (पु०) जयमाला, मणियाँ, गले की हड्डी। —कामना तद्० (स्त्री०) अभिलाष, इच्छा, मनोरथ।
मनगड़ा दे० (गु०) बली, पराक्रमी, बलवाला, बलवान, समर्थ।
मनघटा दे० (पु०) कूप का जगत् चौतरा।
मनचला दे० (गु०) चटपटा, शूर, उत्साही, साहसी, वीर।
मनत दे० (पु०) मनौती, स्वीकार, मानन।
मनन तत्० (पु०) चिन्तन, स्मरण, ध्यान, जानी हुई बात का स्मरण करना।
मनभावन दे० (गु०) सुन्दर, सुहावना, मनोहर।
मनमथ तद्० (पु०) मन्मथ, कामदेव, मदन।
मनमोहन तद्० (गु०) मन भावन, मनोहर, सुन्दर, मनोज्ञ।
मनमौज दे० (पु०) उच्छृङ्खलता, यथेच्छाचारिता, अपमान, घमण्ड।
मनसा दे० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।
मनसिज तद्० (पु०) कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग।
मनसेद दे० (पु०) मानुष, मनुष्य, मानव।
मनस्ताप तत्० (पु०) मनःकष्ट, मानसिक दुःख, मन की पीड़ा।
मनहरण तद्० (गु०) चितचोर, मनोहर।
मनहारी तद्० (गु०) मनोहारी, मन को हरण करने वाला, चितचोर।
मनहुँ दे० (अ०) मानो, उपमाबोधक, उत्प्रेक्षालङ्कार बोधक, सादृश्यार्थक, समानता बोधक।
मनाना दे० (क्रि०) प्रसादन करना, प्रसन्न करना, मनौती करना।
मनार्य तद्० (गु०) विचारार्य।
मनिहार दे० (पु०) चुड़िहार, चूड़ी वाला।
मनिहारी दे० (स्त्री०) मनिहारे की स्त्री।
मनु तत्० (पु०) ब्रह्मा का पुत्र और मनुष्यों का आदि पुरुष। प्रत्येक कल्प में चौदह मनुओं का आविर्भाव होता है। इनके नाम ये हैं। स्वायम्भुव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, और इन्द्रसावर्णि। इस समय सप्तम मनु का अधिकार चलता है। दम से १४ शब्द के तक मनुओं के अधिकार पीछे आवेंगे। मत्स्य पुराण में मनुओं के नाम इनसे भिन्न लिखे गये हैं।
मनुज तत्० (पु०) मनुष्य, मनु की सन्तान, मनई, मानवेन्द्र।
मनुष्य तत्० (पु०) नर, मानव, मर्त्य, मनुज। —त्व (पु०) मनुष्य का धर्म, मनुष्यपन।
मनुहार दे० (स्त्री०) सुन्दरी, मोहनी। (पु०) आदर, सत्कार।
मनूवा दे० (पु०) मन, विचार।
मनौं, मानौं दे० (अ०) सादृश्यार्थक, समानार्थक।
मनोज्ञ तत्० (गु०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनभावन।
मनोनीत तत्० (गु०) चाहीता, इच्छित, अभिलषित।
मनोयोग तत्० (पु०) अवधान, ध्यान।
मनोरथ तत्० (पु०) इच्छा, कामना, वासना, अभिलाष।
मनोरम तत्० (गु०) मनोज्ञ, मनोहर, सुघड़, सुन्दर।
मनोरमा तत्० (स्त्री०) सरस्वती नदी की एक धारा, हैहयपति कार्त्तवीर्य की महारानी। परशुराम के साथ कार्त्तवीर्य का युद्ध आरम्भ होने के समय ही इन्होंने अपने पति का पराजय निश्चित कर के योगावलम्बन से अपने प्राण छोड़ दिये।
मनोलौल्य तत्० (पु०) मन की चञ्चलता, लहर, तरङ्ग, मानसिकभाव।
मनोहर तत्० (गु०) सुन्दर, मनोज्ञ, सुघड़।
मनौती दे० (स्त्री०) जामिनी, जिम्मेदारी।
मन्त्र तत्० (पु०) मन्त्रणा, युक्ति, परामर्श, गुप्त उपदेश।

मन्त्रण तत्० (स्त्री०) एकान्त में कर्तव्य का अवधारण, युक्ति, परामर्श, सलाह, सम्मति ।
मन्त्री तत्० (पु०) सम्मतिदाता, परामर्शदाता ।
मन्थन तत् (पु०) विलोडन, मथन, महना ।
मन्थनी दे० (स्त्री०) मन्थानी, महानी ।
मन्द तत्० (गु०) अपकृष्ट, अधम, मूर्ख, स्वेच्छाचार, अतीक्ष्ण, अल्प, अत्यल्प, थोड़ा, शिथिल ।—ता (स्त्री०) मूर्खता, शिथिलता, बुराई, अल्पता । —गामी (गु०) शनैःगमन कर्ता ।—मन्द (अ०) धीरे धीरे ।
मन्दर तत्० (पु०) मथनपर्वत, मन्दरपर्वत, पारिजात वृक्ष, हार विशेष ।
मन्दा तत्० (स्त्री०) संक्रान्ति विशेष, कम दाम में वस्तु बेचने का समय, मृदु, अल्प, थोड़ा, कोमल, मंद ।
मन्दाकिनी तत्० (स्त्री०) स्वर्गगङ्गा, स्वर्णनदी, संक्रान्ति विशेष ।
मन्दाक्रान्ता तत्० (स्त्री०) छन्द विशेष ।
मन्दाग्नि तत्० (पु०) कफ द्वारा जठराग्नि का निस्तेज होना, अजीर्णता ।
मन्दार तत्० (पु०) स्वर्गीय पाँच वृक्षों के अन्तर्गत वृक्ष विशेष ।
मन्दिर तत्० (पु०) भवन, गृह, देवालय, देवगृह ।
मन्दिरा दे० (पु०) मजीरा, झाँझ, झाल ।
मन्नत दे० (स्त्री०) मनौती, मनत, स्वीकार ।
मन्वन्तर तत्० (पु०) एक मनु का राज्य काल, एक मनु का समय ।
मपना दे० (क्रि०) मापना, नापना, परिमाण करना, तौलना ।
मम तत्० (गु०) मेरा, हमारा ।
ममता तत्० (स्त्री०) मोह, माया, स्नेह, प्रेम ।
ममिया ससुर दे० (पु०) पति का मामा ।
ममियासास दे० (स्त्री०) पति की मामी ।
ममेरा दे० (गु०) मामा के सम्बन्ध का, मामा सम्बन्धीय ।
ममोड़ा दे० (पु०) मड़ोरा, मरोड़ा, ऐंठन ।
मय तत्० (पु०) दैत्य विशेष ।—काल (पु०) विशेष ।
मयङ्क दे० (पु०) चन्द्रमा, चाँद ।
मयन दे० (पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन ।
मयना दे० (स्त्री०) पक्षि विशेष, सारिका ।
मया तद्० (स्त्री०) माया, ममता, मोह ।
मयी दे० (स्त्री०) सरावन, हेंगा, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे खेत बराबर किया जाता है ।
मयूख तत्० (पु०) रश्मी, किरण, तेज, दीप्ति, ज्योति, प्रकाश ।
मयूर तत्० (पु०) पक्षि विशेष, शिखी, केकी ।
मरक दे० (पु०) संक्रामक रोग, महामारी ।
मरकच्चा दे० (पु०) अरंडी, खजरा ।
मरकत तत्० (पु०) मणि विशेष, हरे रङ्ग का मणि, पन्ना ।
मरकहा दे० (गु०) मरवैया, मारने वाला, दुष्ट ।
मरखपना दे० (क्रि०) विनष्ट होना, क्या पैद होना, मर जाना, मर मिटना ।
मरखाहा दे० (गु०) मारने वाला, हुरपेटने वाला ।
मरगजी दे० (गु०) मुरझाया हुआ, मूर्छित, यह शब्द बसवई में प्रयुक्त हुआ है ।
मरघट (पु०) श्मशान, मुर्दाघाट, मुर्दा जलाने का स्थान, शवदाह स्थान ।
मरजाना दे० (क्रि०) मरना, मरण होना, प्राण वियोग होना ।
मरजिया पनडूबा, नदी कूप आदि में डूब कर वस्तु निकालने वाला, मोती निकालने वाला ।
मरण तत्० (पु०) मृत्यु, मरण, प्राण वियोग, मौत ।
मरना दे० (क्रि०) प्राण छूटना, मरजाना, मृत्यु होना ।
मरपच दे० (गु०) सड़ा, गला, गन्दा, गला ।
मरपचना दे० (क्रि०) अतिशय परिश्रम करना, मरना बहुत दुःख सहना ।
मरभूखा दे० (गु०) उपास, बिन खाया, खाऊ, पेटू ।
मरम तद्० (पु०) मर्म, आशय, रहस्य, तत्व ।

मरमराना दे० (क्रि०) मरमर शब्द करना, चरचराना, मचमचाना।

मरवाना दे० (क्रि०) मरवा डालना, धोखा देकर हत्या कराना, अनुमति देकर हत्या कराना।

मरवैया दे० (पु०) मरनहार, मरणासन्न, मरणप्राय।

मराल तत्० (पु०) पक्षी विशेष, हंस, राजहंस, मेघ।

मरिच तत्० (स्त्री०) छोटा गोलाकार, कटु द्रव्य विशेष, गोल मरिच, काली मिर्च।

मरियल दे० (पु०) दुर्बल, दुबला, पतला, निर्बल।

मरी दे० (स्त्री०) मृत्यु रोग, संक्रामक रोग, मरक, महामारी।

मरीचिका तत्० (स्त्री०) मृग तृष्णा, सूर्य की किरणों में जल प्रत्यय।

मरीचि तत्० (स्त्री०) किरणें, रश्मि, छ त्रसरेणु का परिमाण। (पु०) ब्रह्मा के पुत्र, मुनि विशेष, ये सप्तर्षियों में एक हैं।—माला (स्त्री०) सूर्य आदि का किरण समूह, दीप्ति समुदाय।—माली (पु०) सूर्य, चन्द्र।

मरु तत्० (पु०) निर्जल देश, जल रहित देश विशेष, मारवाड़।

मरुआ दे० (पु०) क्षुप भेद, एक पौधे का नाम, जिस के पत्ते सुगन्धित होते हैं।

मरुत् तत्० (पु०) वायु, पवन पञ्चाशत् वायु।—पथ (पु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष।—पुत्र (पु०) भीमसेन, हनुमान।—सख (पु०) देवराज, इन्द्र, अग्नि, अनल, वायुसख।

मरुभूमि तत्० (स्त्री०) निर्जल देश, वृक्ष लता तृणादि शून्य भूमि या देश, शुष्क देश।

मरोड़ दे० (स्त्री०) मरोड़, ऐंठ, बल, पेट की दर्द।

मरोड़ी दे० (स्त्री०) मरोड़ी, ऐंठन।

मरोह दे० (पु०) छोह, स्नेह, प्रेम, प्यार, दुलार।

मर्कट तत्० (पु०) वानर, कपि, कीश।

मर्कटी तत्० (स्त्री०) वानरी।

मर्त्य तत्० (पु०) मरण धर्मा, मनुष्य, मनई, मानव, मनुज।—लोक (पु०) मनुष्य लोक, मरने का लोक, मृत्यु लोक, भूमंडल।

मर्दक तत्० (पु०) पवांर नामक पौधा। (पु०) मर्दन करने वाला, मलने वाला, मीसने वाला।

मर्दन तत्० (पु०) गात्र मर्द्दन, अङ्ग चप्पी, मलन, रगड़न।

मर्द्दल तत्० (पु०) वाद्य विशेष।

मर्द्दित तत्० (पु०) घर्षित, मला हुआ।

मर्दनिया दे० (पु०) नौकर, सेवक, शरीर में तेल लगाने की नौकरी करने वाला।

मर्म तत्० (पु०) मरम, रहस्य, भेद, अभिप्राय, आशय, सन्धि स्थान, जीवन स्थान।—ज्ञ (पु०) मर्मवेत्ता, रहस्यज्ञ, तात्पर्य ज्ञाता।—वेत्ता (पु०) मर्मज्ञ, तात्पर्य ज्ञाता।

मर्मर तत्० (पु०) शब्द विशेष, ध्वनि विशेष, सूखे पत्ते का शब्द।

मर्यादा तत्० (स्त्री०) मान, पत, प्रतिष्ठा, सीमा, टेक।

मर्यादिक दे० (पु०) मानी, आदरी, सम्मानी।

मर्षण तत्० (पु०) तितिक्षा, क्षमा, सहना, शान्ति।

मल तत्० (पु०) मैल, विष्ठा, पाप, क़िट्ट, धातु, पित्त कफ आदि।—मल (पु०) वस्त्र विशेष, एक प्रकार का कपड़ा।—मास (पु०) अधिमास, अधिक मास, लौंद, पुरुषोत्तम महीना।

मलकना दे० (क्रि०) मटकना, कहार के समान चलना, नखरे से चलना, मटक कर चलना।

मलङ्गी दे० (पु०) जाति विशेष, जो नोन बनाने का काम करती है।

मलत दे० (पु०) मलता, चिता, चित्पट।

मलन दे० (पु०) दलन, रगड़न, मर्दन।

मलना दे० (क्रि०) मींजना, घसना, रगड़ना, मर्दन करना, रगड़ कर साफ करना।

मलवा दे० (पु०) मल, कूड़ा, मैल।

मलमेट दे० (पु०) उजाड़, सत्यानाश, नाश, विध्वंस।

मलराशि तत्० (स्त्री०) मल की राशि।

मलय तत्० (पु०) पर्वत विशेष, दक्षिणाचल, चन्द्रनाद्रि, देश विशेष, उपद्वीप विशेष।—ज (पु०) श्रीखण्ड, चन्दन।—पवन (पु०) सुगन्ध वायु।

मलया दे० (स्त्री०) पद्माक, त्रिवृत्ता लता-विशेष। —गिरि (पु०) चन्दन का वृक्ष।

मलवाई दे० (स्त्री०) मलने की मजूरी।

मलाई दे० (स्त्री०) साढ़ी, दूध का सार।

मलाना दे० (क्रि०) मलवाना, मर्दन कराना, घिसाना।

मलार दे० (स्त्री०) रागिनी विशेष।

मलिन तत्० (गु०) मैला, धुँधला, अस्वच्छ, साफ नहीं, उदास, मलयुक्त वस्तु, मल दूषित, कृष्णवर्ण, नित्य नैमित्तिक क्रिया त्यागी, पाप ग्रस्त।—ता (स्त्री०) मालिन्य, विरसता, अप्रफुल्लता।—मुख (गु०) क्रूर, खल, म्लान। बदन। (पु०) प्रेत, भूत।

मलिनी तत्० (स्त्री०) रजस्वला स्त्री, ऋतुमती नारी।

मलिम्लुच तत्० (पु०) मलमास, अधिकमास, अग्नि, तस्कर, चोर, पवन वायु, हवा।

मलिया दे० (स्त्री०) काँच या लकड़ी का बना छोटा पात्र विशेष, जिसमें लगाने का तेल रखा जाता है।

मलीन तद्० (गु०) मलिन, असुन्दर, अस्वच्छ।

मलेपञ्ज दे० (गु०) दस वर्ष से ऊपर का घोड़ा।

मलेछ तद्० (पु०) म्लेच्छ, मैली जात वाले, असभ्य, जङ्गली, वर्बर, संस्कृत से अतिरिक्त भाषा बोलने वाला, असंस्कृत, वह जाति जिसमें चातुर्वर्ण्य व्यवस्था न हो।

मल्ल तत्० (पु०) बलवान्, बाहुयोद्धा, पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला।—युद्ध (पु०) कुश्ती, पहलवानों की लड़ाई।

मल्लार तत्० (पु०) राग विशेष, दूसरा राग, छः रागों में का दूसरा राग।

मल्लारी तत्० (स्त्री०) रागिनी विशेष, वसन्त राग की रागिनी।

मल्लिक तत्० (पु०) हंस विशेष, शुक्ल हंस। (दे०) उपाधि विशेष, गाने वालों की एक जाति।

मल्लिका तत्० (स्त्री०) पुष्प विशेष, बेला का फूल, पात्र विशेष, मृत्तिका पात्र, दोना।

मल्लूर तद्० (पु०) मालूर, वृक्ष विशेष, बेल, बिल्व।

मवास दे० (पु०) शरण, आसरा, भरोसा, आस।

मशक तत्० (पु०) मच्छड़, मच्छर, मसा, डाँस।

मशहरी दे० (स्त्री०) मसेहरी, मच्छड़दान, एक प्रकार का बना हुआ कपड़ा, जो मसों से बचने के लिये लगाया जाता है।

मष्ट दे० (वा०) चुप, मौन, नीरव, निःशब्द, स्थिरता, —मारना (वा०) चुप रहना, मौन रहना।

मसक दे० (स्त्री०) पुर, पुरवट, चमड़े का जलपात्र।

मसकना दे० (क्रि०) फटना, टूटना, थोड़ा फट जाना, दरकना, दरक जाना।

मसकाना दे० (क्रि०) फाड़ना, तोड़ना, मसकाना, दरकाना, चीरना।

मसविर्द दे० (स्त्री०) मसा, माँस वृद्धि।

मसमसाना दे० (क्रि०) पिसपिसाना, पिस पिसाना, भीतर ही जलते रहना।

मसलना दे० (क्रि०) कुचलना, मींजना।

मसा दे० (पु०) मसविर्द, रक्षा।

मसान तद्० (पु०) श्मशान, मरघट, मरघटा।

मसानिया दे० (पु०) डोम, कुमार। (गु०) श्मशानवासी, श्मशान पर रहने वाला।

मसिधानी तत्० (स्त्री०) मसिपात्र, दवात।

मसी तद्० (स्त्री०) स्याही, सियाही, काली।

मसीना दे० (स्त्री०) चलसी, तीसी।

मसूड़ा दे० (पु०) दाँतों के ऊपर का माँस।

मसूर दे० (पु०) अन्न विशेष, मसूरि।

मसूरिया दे० (स्त्री०) गोटी, सितला, चेचक, माता।

मसे दे० (स्त्री०) मूँछ, श्मश्रु।

मसोसना (क्रि०) मरोड़ना, निचोड़ना, धीरे धीरे दर्द होना।

मस्तक तत्० (पु०) माथा, सिर, कपाल।

मस्तूल दे० (पु०) नाव का डण्डा, जिस पर पाल ताना जाता है। यह शब्द पोर्तुगाली भाषा के 'मस्तो' या "मस्तरो" शब्द से निकला है।

मस्याधार तत्० (पु०) मसीपात्र, दवात।

मस्सा दे० (पु०) चट्टा, मसा, माँस वृद्धि।

महँगा दे० (पु०) महर्घ, बहुत मूल्य, अधिक दाम का, बड़े मोल का।

महँगी दे० (स्त्री०) काल, दुर्भिक्ष, दुःसमय।

महक दे० (स्त्री०) सुगन्ध, सुवास, गन्ध।

महकना दे० (क्रि०) बसाना, गन्ध आना, सुवास आना।

महकाना दे० (क्रि०) सुँघाना, बासना, बास देना।

महकीला दे० (गु०) सुगन्धित, सुवासित, सुगन्ध युक्त।

महत तत्० (गु०) श्रेष्ठ, बड़ा, मान्य, माननीय, पूज्य, श्रद्धेय।

महतारी दे० (स्त्री०) माता, जननी, माँ, अम्बा।

महतो दे० (पु०) जाति विशेष, कोहरी, चौधरी, जाति का प्रतिष्ठित।

महत्व तत्० (पु०) बड़ापन, श्रेष्ठता, उच्चता, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।

महना दे० (क्रि०) मथना, बिलोना, विलोड़न करना।

महन्त तद्० (पु०) मठाधीश, गुसाईं अथवा साधुओं का प्रधान, ज़मींदार साधु, गद्दीधर।

महन्ताई तत्० (स्त्री०) महन्त का काम, महन्त की रीति।

महर दे० (पु०) प्रधान, मुख्य, नेता।

महरा दे० (पु०) कहार, धीमर, भोई, काम करने वाली जाति।

महरी दे० (स्त्री०) महरा की स्त्री।

महर्लोक तत्० (पु०) लोक विशेष, भूर्लोक आदि सप्तलोक के अन्तर्गत चौथा लोक।

महर्षि तत्० (पु०) [महा+ऋषि] मन्त्रद्रष्टा ऋषि, श्रेष्ठ ऋषि।

महा तत्० (गु०) बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, महान।—उन्मत (पु०) कदम्ब वृक्ष, कदम का पेड़।—कन्द (पु०) लहसुन।—काम (पु०) शिव का द्वारपाल, नन्दीश्वर, हाथी (गु०) मोटा शरीर वाला, भारी।—काल (पु०) विष्णुस्वरूप अखण्ड समय, शिव की मूर्त्ति विशेष, प्रथमगण विशेष।—काली (स्त्री०) दुर्गा, महाकाल की पत्नी।—कुम्भी (स्त्री०) कायफल।—कोढ़ (पु०) अतिशय कष्ट, अत्यन्त कुष्ठ रोगाक्रान्त।—खात (पु०) समुद्र की खाड़ी।—घोर (पु०) नरक विशेष, काकड़ासिंघी, अत्यन्त भयानक, बहुत डरने वाला।—जन (पु०) साहुकार, सेठ। (गु०) श्रेष्ठ उत्तम।—जनी (स्त्री०) महाजन का काम, कोठी वाली, लेन देन का काम, व्यवहार।—जम्बू (पु०) जामुन, फल विशेष।—तम (पु०) माहात्म्य, उपकारिता, उपयोगिता, प्रसिद्ध, बड़ाई, अतिशय अन्धकार, अत्यन्त अंधेरा।—तल (पु०) पञ्चम तल, पाताल।—तीर्थ (पु०) उत्तम तीर्थ, पुण्यतीर्थ, उत्तम क्षेत्र, पुण्य स्थान।—तेजा (गु०) प्रतापी, तेजस्वी, यशस्वी, भाग्यवान।—निद्रा (स्त्री०) मरण, मृत्यु, अधिक निद्रा, अचेत नींद।—निशा (स्त्री०) आधीरात, निशीथ।—नुभाव (गु०) [महा+अनुभव] महाशय, प्रशस्त हृदय, विशाल हृदय।—पद्मक (पु०) सर्प विशेष, निधि विशेष।—पातक (पु०) पाप विशेष, ब्रह्महत्या, सुरापान, गुरु स्त्री गमन आदि से उत्पन्न पाप।—पातकी (पु०) महापापी, अधर्मी, पतित।—पुरुष (पु०) श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम पुरुष, सुजान, सज्जन।—प्रभु (पु०) परमात्मा, परमेश्वर, चैतन्य देव, वल्लभाचार्य।—प्रलय (पु०) त्रिलोक का नाश, विश्व का ध्वंस, कल्पान्त, ब्रह्मा की आयु की समाप्ति।

—ठनकना (वा०) अनिष्ट की आशङ्का करना, भीत होना, डरना ।—रगड़ना (वा०) बिनती करना, चिरौरी करना, नम्रता पूर्वक प्रार्थना करना ।

माथी लेना दे० (वा०) समान बनाना, एक समान बनाना ।

माथुर तत० (पु०) ब्राह्मण विशेष, मथुरा के वासी ब्राह्मण ।

माथे पर चढ़ाना दे० (वा०) आदर करना, अतिशय आदर करना, आवश्यकता से अधिक मानना ।

मादक तत० (पु०) उन्मादकारी, द्रव्य, नशीली वस्तु ।—ता (स्त्री०) नशा, अमल, मत्तता ।

माद्री तत० (स्त्री०) राजा पाण्डु की रानी, और मद्र देश के राजा की रानी । इसके गर्भ से अश्विनीकुमार के औरस से नकुल और सहदेव उत्पन्न हुए थे । पाण्डु के मरने के अनन्तर ये भी पति के साथ मर गयीं ।

माधव तत० (पु०) विष्णु का नामान्तर माँ लक्ष्मी को कहते हैं, उनके पति होने के कारण विष्णु का नाम माधव है । बसन्त ऋतु, वैशाख का महीना, किरातार्जुनीय महाकाव्य का विख्यात टीकाकार ।

माधवाचार्य तत० (पु०) वेदों के भाष्यकर्ता सायणाचार्य के बड़े भाई, ख़ृष्टीय १४वीं सदी में दक्षिण की तुङ्गभद्रा नदी के तीरस्थ पम्पा नगरी में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम सायण और माता का नाम श्रीमती था । ये विजयनगर के राजा बुक्कनराय के कुलगुरु और प्रधान मन्त्री थे । इन्होंने भारतीतीर्थ के पास सन्यास ग्रहण किया था । १३३३ ई० में ये शृङ्गेरी मठ के अध्यक्ष बनाये गये । ९० वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हुई थी । इन्होंने पराशर संहिता का एक भाष्य लिखा है, उसीमें अपना परिचय भी दिया है ।

माधवी तत० (स्त्री०) लता विशेष, बसन्ती लता ।

माधुर्य तत० (पु०) मधुरता, मीठापन, मिठास ।

माध्वी तत० (स्त्री०) मदिरा विशेष, महुवे का मद्य ।

मान तत० (पु०) प्रतिष्ठा, आदर, सम्मान, यश, कीर्ति, अभिमान, अहङ्कार ।

मानता दे० (पु०) पण, प्रतिज्ञा, मानत ।

मानना दे० (क्रि०) पण रखना, आदर करना, सम्मान करना, प्रेम करना ।

माननीय तत० (पु०) मान्य, श्रेष्ठ पुरुष, श्लाघ्य ।

मानव तत० (पु०) मनुष्य, दनुज ।

मानस तत० (पु०) मन, हृदय, मनसा ।

मान सम्मान दे० (पु०) आदर, प्रतिष्ठा ।

मानसिंह दे० (पु०) अम्बर के राजा भगवानदास का भतीजा, इनके पिता का नाम जगत्सिंह था। भगवानदास ने इनको अपना दत्तक पुत्र बनाया था । भगवानदास के मरने के बाद मानसिंह अम्बर के राजा हुए । भगवानदास की बहिन सम्राट् अकबर से ब्याही गयी थी और मानसिंह ने अपनी बहिन का ब्याह सलीम से किया था। सम्राट् के साथ वैवाहिक सम्बन्ध होने के कारण इनको राज्य का उच्च पद मिला था, इन्होंने पठानों के हाथ से बङ्गदेश को छीन कर मुग़ल सम्राट् के अधीन किया । काबुल पर भी इन्होंने मुग़ल सम्राट् की विजय पताका फहराई थी, परन्तु रणस्थल में महाराणा प्रताप से भिड़ कर इन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान हो गया था ।

मानहु दे० (अ०) मानो, समान, सदृश । (क्रि०) मानो, जानो, समझो ।

मानिक जोड़ दे० (पु०) पक्षी विशेष ।

मानिनी तत० (स्त्री०) मानवती, अभिमानवती स्त्री ।

मानी तत० (पु०) अभिमानी, अहङ्कारी ।

मानुष तत० (पु०) मनुष्य, मानव ।

मानुष्य तत० (पु०) मनुष्यत्व, पौरुष ।

मानो दे० (अ०) इव, यथा, उपमार्थक । (क्रि०) जानो, समझो, बूझो । (पु०) बिल्ली, बिलाव ।

मान्य तत० (पु०) पूजनीय, पूज्य, माननीय ।

माप दे० (पु०) परिमाण, नाप ।

मापना दे० (क्रि०) परिमाण करना, नापना, तौलना।

मा बाप दे० (पु०) माता पिता।

मामा दे० (पु०) मातुल, माँ का भाई।

मामी दे० (स्त्री०) मामा की स्त्री, मामा की पत्नी।
—पीना (वा०) पक्षपात करना, पक्ष खींचना।

मामू दे० (पु०) मामा, मातुल, सर्प विशेष।

माया तत्० (स्त्री०) कृपा, मोह, दया, करुणा, अनुकम्पा, प्रेम, स्नेह, छल, कपट, धोखा, सम्पत्ति, धन, योग माया, इन्द्रजाल विद्या।—कृत (पु०) संसार, इन्द्रजालीय। (गु०) माया से निर्मित, माया द्वारा बनाया हुआ।—पति (पु०) परमात्मा, विष्णु, भगवान्।

मायावी तत्० (गु०) छली, कपटी, राक्षस विशेष।

मायिक तत्० (पु०) ऐन्द्रजालिक, नट, नज़र बन्द करके तमाशा करने वाला।

मार तत्० (पु०) कामदेव, मन्मथ, मदन। (स्त्री०) मारना, प्रहार, लड़ाई।—कुटाई (स्त्री०) मारना, कूटना, धुनना।—केश (पु०) मारक ग्रह, लग्न से दूसरे और सातवें घर का स्वामी।—खाना (वा०) पिटाना, पिटना।—गिराना (वा०) पछाड़ना, पटक देना।—पड़ना (वा०) मार खाना, पिटाना।—पीट (स्त्री०) मारामारी, लड़ाई, भिड़ाई।—मारना (वा०) अपघात करना, आत्महत्या करना।—लाना (वा०) लूट लाना।—लेना (वा०) मारना, जीतना।—हटाना (वा०) जीत लेना, मारना और हटाना, मार कर हटा देना।

मारग तत्० (पु०) मार्ग, पथ, बाट, डगर, धर्मपद्धति।

मारना दे० पीटना, बिगाड़ना, वध करना।

मारात्मक तत्० (पु०) हिंसक, हिंस्र।

मारा पड़ना दे० (वा०) मारा जाना, बड़ी हानि होना।

मारामारा फिरना दे० (वा०) बिना काम इधर उधर फिरना, डाँवाडोल होना, कहीं आश्रय न मिलना।

मारी तत्० (स्त्री०) मृत्यु, मौत, मृत्युदायक रोग।

मारीच तत्० (पु०) राक्षस विशेष, ताड़का राक्षसी का बेटा।

मारुत् तत्० (पु०) हवा, वायु, बयार, पवन।
—सुत (पु०) हनुमान, भीमसेन।

मारुतात्मज तत्० (पु०) वायु पुत्र, हनुमान।

मारू दे० (पु०) युद्ध बाजा, लड़ाई का बाजा, एक प्रकार का गाना, जो लड़ाई में गाया जाता है।

मारे दे० (अ०) करण, निमित्त, से। यथा—धूप के मारे व्याकुल है, मारे भीड़ के मार्ग नहीं सूझता है।

मार्ग तत्० (पु०) सड़क, बाट, राह, रास्ता, पथ।

मार्गशीर्ष तत्० (पु०) अगहन, मगसिर।

मार्जन तत्० (पु०) परिष्कार करण, शोधन।

मार्जार तत्० (पु०) बिल्ली, बिलाव, मंजार।

माल दे० (पु०) मल्ल, पट्ठा, पहलवान।

मालती तत्० (स्त्री०) पुष्प विशेष।

मालपूआ दे० (पु०) पकवान विशेष।

माला तत्० (स्त्री०) पुष्पहार, रत्न या सोने का हार।—कार (पु०) माली, बागवान, माला बनाने वाला।—दीपक (पु०) अर्थालङ्कार विशेष।

मालिन दे० (स्त्री०) मालाकार की स्त्री।

मालिन्य तत्० (गु०) मलिनता, मैलापन।

माली दे० (पु०) पुष्प व्यवसायी, मालाकार।

माल्य तत्० (पु०) माला, पुष्प की माला।

मावस दे० (पु०) अमावस, अमावस्या।

मावा दे० (पु०) अण्डे की पिलाई, खोआ, औटा हुआ दूध।

माष तत्० (पु०) अन्न विशेष, उरद।

माषा दे० (पु०) मान विशेष, वज़न, आठ रत्ती की तौल।

मास तत्० (पु०) महीना, तीस दिन।—का वार (पु०) महीने का अन्तिम दिन।

मासान्त तत्० (पु०) मास का पिछला दिन, मास की समाप्ति।

मिङ्गनी दे० (स्त्री०) बकरी आदि की मेंडी।

मिचकारना दे० (क्रि०) निचोड़ना, गारना, खंगालना, मथालना।

मिचना दे० (क्रि०) बन्द करना, मूँदना, आँखें बन्द करना।

मिचराना दे० (क्रि०) धीरे धीरे खाना, अनिच्छा से खाना, अरुचि पूर्वक भोजन।

मिचलाना दे० (क्रि०) आँख मूँदना, मींचना, बन्द करना।

मिटना दे० (क्रि०) बिगड़ना, बनी हुई बात का बिगड़ना, लिखे अक्षरों का बिगड़ना।

मिटाना दे० (क्रि०) बिगाड़ना, नष्ट करना।

मिटिया दे० (स्त्री०) मट्टी का बर्तन, घड़ा, गगरी, घैला।

मिट्टी दे० (स्त्री०) मट्टी, मृत्तिका, माटी।

मिट्ठी दे० (स्त्री०) चुम्मा, चूमा, चुम्बन।

मिठरी दे० (स्त्री०) मठरी, पकवान विशेष।

मिठाई दे० (स्त्री०) मिष्टान्न, जोरीमी, मिठास, मधुरता।

मिठास दे० (स्त्री०) मधुरता, मिष्टता, मिठाई।

मित तत्० (गु०) परिमित, नपा हुआ तौला हुआ। —**प्रद** (गु०) परिमितदाता, हिसाब से देने वाला। -**व्ययी** (गु०) परिमित व्ययी, अल्प व्यय करने वाला, आय के अनुसार व्यय करने वाला।

मिताक्षरा तत्० (स्त्री०) स्मृति के एक ग्रन्थ का नाम। प्रसिद्ध याज्ञवल्क्य स्मृति की टीका।

मिति तद्० (स्त्री०) मान, परिमाण, अन्त, मर्याद।

मिती दे० (स्त्री०) तिथि, दिन, बार, वासर।

मित्र तत्० (पु०) बन्धु, सखा, सुहृद्, मीत, शत्रु से अन्य, हितू, स्नेही, प्रेमी।—**ता** (स्त्री०) बन्धुता, सख्य, परस्पर प्रीति।—**द्रोही** (गु०) मित्र का द्रोही, खल, दुष्ट, वैरी।—**लाभ** (पु०) सुहृत्प्राप्ति, बन्धुलाभ।—**वर्ग** सुहृद्गण।

मित्राई तद्० (स्त्री०) मित्रता, बन्धुता।

मिथ तत्० (अ०) परस्पर, अन्योन्य, आपस में।

मिथिला तत्० (स्त्री०) नगरी विशेष, जनकराज की पुरी।—**पति** (पु०) मिथिला का राजा, जनक।

मिथिलेश तत्० (पु०) [मिथिला+ईश] राजा जनक।—**कुमारी** (पु०) जानकी, सीता।

मिथुन तत्० (पु०) जोड़ा, युग्म, स्त्री पुरुष का जोड़ा, द्वन्द्व, युगल, तीसरी राशि।

मिथ्या तत्० (स्त्री०) असत्य, झूठ, अयथार्थ। —**चार** (गु०) [मिथ्या+आचार] कपटाचार, दाम्भिक।—**दृष्टि** (स्त्री०) कर्मफलापवादक ज्ञान, नास्तिकता, असत्य दर्शन।—**वादी** (गु०) असत्य वादी, झूठा।—**भियोग** (पु०) [मिथ्या+अभियोग] असत्य दोषारोपण, मिथ्यावाद झूठी लड़ाई।

मिनती दे० (स्त्री०) बिनती, प्रार्थना, निवेदन, चिरौरी।

मिनियाना दे० (क्रि०) मीं मीं शब्द करना, बकरी का शब्द करना।

मिमियाहट दे० (स्त्री०) बकरी आदि का शब्द।

मिरगी दे० (स्त्री०) मूर्छा, रोग विशेष, अपस्मार।

मिर्च दे० (स्त्री०) मरिच, गोल मरिच।

मिर्चा दे० (स्त्री०) मिर्चाई, लाल मिर्च।

मिर्दङ्ग तद्० (पु०) मृदङ्ग, वाद्य विशेष, स्लवाद्य, एक प्रकार का ढोल।

मिर्दहा दे० (पु०) ग्रामवासी, अर्दली।

मिलन दे० (पु०) मेल, मिलाप, साक्षात्कार, संयोग, दर्शन, भेंट।—**सार** (गु०) मेली, मिलाप।

मिलना दे० (क्रि०) प्राप्त होना, लाभ, भेंटना, मिलना, मेल करना, जुड़ना, पाना, बराबर होना। —**जुलना** (वा०) सदा मिला रहना, शुद्ध भाव से मिलना, दिल खोल कर मिलना।—**हिलना** (वा०) एकत्रित रहना, एक साथ रहना।

मिले जुले रहना दे० (वा०) मेल मिलाप से रहना, प्रेम पूर्वक रहना।

मिलाप दे० (पु०) मेल, प्रेम, मिलना, मिताई।

मिलापी दे० (गु०) मिलनसारी, मेली, सज्जन, मित्र।

मिलाव दे० (पु०) मिलौनी, मेल, बनाव, मित्रता।

मिलित तद्० (गु०) एकत्रित, मिश्रित, मिला हुआ।

मिश्र तद्० (पु०) वैद्य, ब्राह्मणों की पदवी, प्रतिष्ठित मनुष्य, पूज्य, माननीय। (गु०) संयुक्त, मिश्रित। (पु०) देश विशेष।—केशी (स्त्री०) वेश्या, एक स्वर्गवेश्या।

मिश्रित तद्० (गु०) मिलित, मिला हुआ, चाल मेल।—भाषा (स्त्री०) मिली हुई भाषा, खिचड़ी भाषा, अशुद्ध भाषा।

मिश्री दे० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध मिठाई।

मिष तद्० (पु०) ब्याज, छद्म, कैतव, कपट, बहाना।

मिष्ट तद्० (गु०) मीठा, मधुर।

मिष्टान्न तद्० (पु०) मिठाई, पकवान, शीरीनी।

मिसना दे० (क्रि०) पीसना, चूर्ण करना, मलना।

मिस्सी दे० (स्त्री०) मीसी, मुखमञ्जन।

मिहदी दे० (स्त्री०) मेंहदी, वृक्ष विशेष, इसके पत्तों से स्त्रियाँ हाथ पैर रङ्गती हैं।

मिहना दे० (पु०) ताना, बोली, ठठोली।—मारना (वा०) ताना मारना, ठठोली करना।

मिहरा दे० (पु०) स्त्री के समान रहने वाला पुरुष, नारी रूपी पुरुष, मेहरा।

मिहरारू दे० (स्त्री०) महिला, नार, तिरिया, तीय।

मिहरी दे० (स्त्री०) मिहरिया, स्त्री, भार्या, पत्नी।

मिहाना दे० (क्रि०) गीला होना, मींगना, सीड़ना।

मिहिका तद्० नीहार, कुहरा, हिम।

मिहिर तद्० (पु०) रवि, दिवाकर, सूर्य।

मींगी दे० (स्त्री०) बीज, गूदा, सार, मज्जा, मेद।

मीच दे० (स्त्री०) मौत, मृत्यु, मरण, निधन। यथा—

"चिन्तनीय है वस्तु है सदा जगत के बीच,
ईश्वर के पदपद्म युग और आपनी मीच।"

मीचना दे० (क्रि०) मूँदना, ढाँकना, मिचना, मरना।

मीजना दे० (क्रि०)-मलना, मसलना, रगड़ना, रगड़ कर रस निकालना।

मीजू दे० (पु०) मयूर, कलाई विशेष।

मीठा दे० (गु०) मधुर, धीमा, विष विशेष।

मीठिया दे० (स्त्री०) मीठी, चूमा, चुम्मा, मच्छी।

मीठी दे० (स्त्री०) मच्छी, मीठिया, चूमा।

मीत दे० (पु०) मित्र, सुजन, सनेही, मीता।

मीतल दे० (गु०) गनामी, एक नाम वाला, सखी, सनेही।

मीन तद्० (पु०) मछली, मत्स्य।—केतन (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ।

मीना दे० (पु०) जङ्गली जाति विशेष, इस जाति के लोग राजपुताने में रहते हैं और चोरी डकैती करते हैं! यथा—

निन्दहिं आप सराहहिं मीना,
धिग् जीवन रघुबीर विहीना।
—रामायण।

मीमांसक तद्० (पु०) मीमांसा शास्त्रवेत्ता, सिद्धान्तकारी, निष्पत्तिकारी, निर्णय कर्त्ता।

मीमांसा तद्० (स्त्री०) विचार, निष्पत्ति, सिद्धान्त, निर्णय, दर्शन शास्त्र विशेष, पूर्व मीमसा और उत्तर मीमांसा इस दर्शन के ये दो भेद हैं। पूर्व मीमांसा में कर्मकाण्ड की परस्पर विरुद्ध बातों का निर्णय किया गया है। उत्तर मीमांसा में उपनिषद् के वाक्यों का विचार किया गया है। उत्तर मीमांसा का दूसरा नाम वेदान्त दर्शन है, पूर्व मीमांसा के आचार्य जैमिनि और उत्तर मीमांसा के आचार्य व्यास हैं।

मीमांसित तद्० (गु०) विचारित, निर्णीत, सिद्धान्तित।

मीमीयाना दे० (क्रि०) मैं मैं करना, मिमियाना।

मीसना दे० (क्रि०) मलना, मुरेरना, मर्दन करना।

मुँह दे० (पु०) मुख, वदन, आनन।—अँधेरा (वा०) सन्ध्या का समय या प्रातःकाल, झुलझुलाहट, अन्धेरा, जब मुँह न दीखे।—अपना सा

ले के रह जाना (वा०) निराश होना, हताश होना, कुछ कर न सकना ।—आना (वा०) रोग विशेष, मुँह फूलना, मुँह में छाले पड़ना । —उतर जाना (वा०) उदास होना, दुखी होना, कष्ट पाना ।—करना (वा०) सामना करना, मिलाना, बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना, आक्रमण करना, धावा करना, टूट पड़ना, देखना, चलना, जाना ।—का फूँहड़ (वा०) गाली बकने वाला, मनमाना बोलने वाला । —काला (वा०) कलङ्क, अपराध, दोष ।—काला करना (वा०) कलङ्क लगाना, अपराध लगाना, अपमान करना ।—के कौवे उड़ जाना (वा०) उदास होना, व्याकुल होना, चिन्तित होना । —खोलना (वा०) गाली देना, सामना करना, जवाब देना उत्तर करना ।—चढ़ाना (वा०) क्रोध करना, मेल करना, प्रेम करना, सामने होना ।—चलाना (वा०) काटना, खाना, इधर की बात उधर करना, चुगली करना ।—चोर (वा०) लज्जालु, लज्जाशील, डरपोंक, अपराधी । —चोरी (वा०) लाज, भय, छिपकर ।—छिपाना (वा०) छिपना, लुकना, लज्जा से छिपना । —ठठाना (वा०) मुँह पर मारना, लज्जित करना, निरुत्तर करना, झूठा साबित करना । —डालना (वा०) माँगना, याचना, याचन करना, किसी विषय में भाग लेना ।—ताकना (वा०) चकित होना, विस्मित होना, भौंचका जाना ।—तोड़ना (वा०) दबा देना, पराजय कर देना, हराना, दुख देना ।—तो देखे (वा०) अयोग्यता बताना, अपनी शक्ति न जान कर बड़े काम को करने वालों को इस वाक्य से सावधान किया जाता है ।—थुथाना (वा०) मुँह बनाना। —दिखाई (स्त्री०) बच्चे या नयी बहुओं का मुँह देखकर कुछ देना ।—देख कर बात करना (वा०) खुशामद करना, किसी को प्रसन्न करने के लिये उसके मन के योग्य बातें करना । देखना, सहायता माँगना, आज्ञा की प्रतीक्षा करना आदर करना ।—देख रहना (वा०) आश्चर्य होना, किसी के कारण क्रोध दबा लेना ।—देखे की प्रीति (वा०) बाहरी प्रेम, दिखावटी प्रेम ।—पर गर्म होना (वा०) सामने क्रोध करना ।—पर लाना (वा०) कहना ।—पर हवाई उड़ना (वा०) मुँह की रङ्गत उड़ जाना, निष्प्रभ जान पड़ना ।—पसारना (वा०) अधिक माँगना। —फेरना (वा०) अप्रसन्न होना, रुष्ट जाना। —फैलाना (वा०) अधिक चाहना, ज्यादा माँगना, अधिक लोभ दिखाना ।—बन्द करना (वा०) बोलने न देना, निरुत्तर करना ।—बनाना (वा०) त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्न होना ।—बाना (वा०) मुँह खोलना, मुँह फाड़ना जम्हाई लेना। —बिगड़ना (वा०) अप्रसन्न होना, क्रोध करना, बुरा मानना ।—बिगाड़ना (वा०) त्योरी चढ़ाना क्रोध करना, अपमानित करना, तङ्ग कर देना दुख देना ।—बोला (वा०) किया हुआ, बनाया हुआ, शब्द से बनाया हुआ ।—भरी (वा०) रिश्वत, घूस, उत्कोच ।—माँगा (वा०) अभीप्सित, चाहा हुआ, अपनी इच्छा के अनुसार। —मारना (वा०) चुप रहना, उदास होना, चिन्तित होना ।—में पानी आना (वा०) अधिक चाह, अतिशय लोभ, लालच ।—मोड़ना (वा०) फिर जाना, छोड़ देना, चला जाना। —लगना (वा०) हिल मिल जाना, अधिक प्रेम होना, अधिक मित्रता होना ।—लगाना (वा०) आदर करना प्रेम करना, बहुत चाहना ।—ले के रह जाना (वा०) लजा जाना, लज्जित होना। —सुकड़ना (वा०) मुँह का रङ्ग बदलना, मुँह उतरना ।—से फूल झड़ना (वा०) आशीर्वाद देना।

मुकरना दे० (क्रि०) नकारना, टोटना, अस्वीकार करना, न मानना ।

मुकुरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द और अलङ्कार । किसी बात को कह कर पुनः उसको छिपाने की इच्छा से उलटना । यथा—

> बालिन चित चहुँ दिशि डोले,
> चातक ज्यों पुनि पिय पिय बोले ।
> प्रनय होय, आये नहिं गेह
> क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥

मुकुट तत्० (पु०) किरीट, मकुट, चूड़ा, सिर पेंच, सेहरा ।

मुकुर तत्० (पु०) दर्पण, आदर्श, शीशा, आइना ।

मुकुल तत्० (पु०) कलि, कलिका, बौर ।

मुकुलित तत्० (गु०) मुरझाया हुआ, अर्द्ध स्फुटित, थोड़ा खिला ।

मुकेश दे० (पु०) मकेश, ऊँट का मसाला ।

मुक्का दे० (पु०) घूस्सा, मुष्टिका, घूसा ।

मुक्त तत्० (गु०) छूटा, छुटा, त्यक्त, मुक्ति प्राप्त, मोक्ष प्राप्त, बन्ध रहित ।—हस्त (गु०) वदान्य, दाता, दानशील ।

मुक्ता तत्० (स्त्री०) रत्न विशेष, मोती, मौक्तिक । —कलाप (पु०) मुक्ताहार, मोती की माला । —फल (पु०) मुक्ता, मोती, मौक्तिक । —वली (स्त्री०) मुक्ताहार, मोती की माला । —मणि (पु०) मोती, मौक्तिक ।

मुक्ति तत्० (स्त्री०) दुःख की अत्यन्त निवृत्ति, नित्य सुख की प्राप्ति, कैवल्य, निर्वाण, श्रेय, निःश्रेयस, मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, परित्राण, मोचन, सद्गति । —दाता (पु०) मुक्ति देने वाला, सद्गुरु, ज्ञान, उद्धारक, उद्धारकर्ता ।

मुख तत्० (पु०) वदन, मुँह, मुखड़ा । (गु०) प्रधान, मुख्य, नेता ।—दूषक (पु०) मुख बिगाड़ने वाला, मुख दुर्गन्ध करने वाला, पियाज ।—मण्डन (पु०) तिलक वृक्ष ।

मुखड़ा दे० (पु०) मुख, वदन, मुँह ।

मुखर तत्० (गु०) अप्रियवादी, दुर्मुख, बकवादी, बहुरङ्गिया ।—ता (स्त्री०) अप्रियवादित्व ।

मुखशुद्धि तत्० (स्त्री०) वक्त्रशोधन, मुख प्रक्षालन, दन्तधावन ।

मुखस्थ तत्० (गु०) मौखिक, मुख स्थित, कण्ठाग्र, जिह्वाग्र ।

मुखापेक्षा तत्० (स्त्री०) अनुरोध, पक्षपात ।

मुखावलोकन तत्० मुखदर्शन, मुख देखना ।

मुखामुखी दे० (स्त्री०) सामना सामनी, मुँहामुँही, मुख परम्परा द्वारा ।

मुखिया दे० (पु०) मुख्य, प्रधान, अगुआ ।

मुख्य तत्० (पु०) प्रथम कल्प, यज्ञ आदि में शास्त्रोक्त प्रथम कल्प । (गु०) श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया, अगुआ ।

मुगदर दे० (पु०) मोंगरी, मोगरा, मुँगरी ।

मुग्धर तत्० (पु०) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मूर्ख ।

मुग्धा तत्० (स्त्री०) कन्या कुमारी, नायिका विशेष, स्वकीया नायिका का एक भेद । यथा—

"अभिनव यौवन आगमन, जाके तन में होय,
ताको मुग्धा कहत हैं कवि कोविद सब कोय ।"

—रसराज ।

मुचा दे० (पु०) माँस का टुकड़ा ।

मुजरा दे० (पु०) प्रणाम, दण्डवत, सविनय भेंट ।

मुञ्ज तत्० (पु०) तृण विशेष, राजा विशेष, भोज-राज के चचा ।

मुटापा दे० (पु०) मुटाई, स्थूलता ।

मुट्ठी तद्० (स्त्री०) मुष्टिका, मूठ, बकोट, बकटा ।

मुठिया दे० (पु०) हाथ भर, मुठी भर ।

मुड़ना दे० (क्रि०) टेढ़ा होना, बलखाना, ऐंठन पड़ना ।

मुड़ियाना दे० (क्रि०) मुड़ना, फिरना, घूमना ।

मुड्ढ दे० (पु०) प्रधान, मुखिया, बड़ा ।

मुण्ड तत्० (पु०) मूँड़, कपाल, सिर, मस्तक ।

मुण्डक तत्० (पु०) नापित, नाऊ, क्षौरकार ।

मुण्डना दे० (क्रि०) बाल बनाना, मूँड़ना ।

मुण्डला दे० (गु०) मुँड़ा, मुण्डित, मुण्डा हुआ ।

मुण्डवाना दे० (क्रि०) मुण्डन कराना, मुण्डित करना, मुण्डला बनाना ।

मुण्डा दे० (पु०) पतङ्ग का सिर, चन्दोआ ।

मुण्डासा दे० (पु०) मुरेठा, साफा, मुड़बन्धा ।

मुण्डित तत्० (गु०) मूँड़ा हुआ, मुण्डला ।

मुण्डिया दे० (पु०) सिर, कपाल, मस्तक । (गु०) संन्यासी, मुण्डे सिर का ।

मुण्डी दे० (स्त्री०) एक औषधि का नाम ।

मुण्डू (पु०) संन्यासी, यति, मुण्डित शिर ।

मुण्डेर दे० (पु०) परछती, मेड़, दीवार।
मुण्डेरी दे० (स्त्री०) छोटी भीत, दीवा।
मुतना दे० (पु०) झट मुतवा।
मुतास दे० (पु०) मूतने की इच्छा, मुताई।
मुद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, आह्लाद।
मुदित तत्० (पु०) हर्षित, आह्लादित, हर्षित, निहाल।
मुद्ग तत्० (पु०) मूँग, कलाई विशेष।
मुद्गर तत्० (पु०) मोगरी, मुगरा।
मुद्रा तत्० (पु०) छापा, छल्ला, अङ्क, सिक्का, रुपया, मोहर।
मुद्राङ्कित तत्० (पु०) चिन्हित, छापा गया, अङ्कित।
मुद्रित तत्० (पु०) अविकसित, अस्फुटित, अङ्कित, छापा हुआ, मुहर दिया हुआ।
मुनक्का दे० (पु०) मेवा विशेष, एक प्रकार की दाख।
मुनमुन दे० (अ०) प्यार से बुलाने के अर्थ में इसका प्रयोग होता है।
मुनमुनाना दे० (क्रि०) मुनमुन करना, बिल्ली को बुलाना, धीरे धीरे कुछ बोलना।
मुनि तत्० (पु०) योगी, तपस्वी, वेदज्ञ महात्मा।
मुनिया दे० (स्त्री०) पक्षी विशेष, लाल चिड़िया।
मुनीश तत्० (पु०) ऋषीश, मुनि प्रधान, मुनिराज।
मुँदना दे० (क्रि०) बन्द करना, तोपना, ढापना।
मुन्द्रा दे० (पु०) कड़ा, अँगूठा, अँगूठी।
मुमाखी दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मैामाखी, मधुमाखी।
मुमानी दे० (स्त्री०) मामी, मातुली।
मुमूर्षु तत्० (पु०) मरनहार, मरणासन्न, मृतप्राय।
मुरई दे० (स्त्री०) मूली, एक प्रकार की जड़।
मुरकना दे० (क्रि०) ऐंठना, बल पड़ना, हड्डी का टूटना।
मुरकी दे० (स्त्री०) कान का भूषण विशेष, कान में पहनने का गहना।
मुरचङ्ग दे० (पु०) बाजा विशेष।
मुरझाना दे० (क्रि०) कुम्हलाना, सूख जाना, उदास होना, निष्प्रभ होना।
मुरण्डा करना दे० (वा०) जकड़ना, बाँधना।
मुरमुरा दे० (पु०) चर्बण विशेष, एक प्रकार का चबैना।
मुरला दे० (पु०) मोपला, पक्षि विशेष, मोर, मयूर।
मुरली तत्० (स्त्री०) बंसी, बाँसुरी।
मुरहा दे० (पु०) नटखट, लुच्चा, ऐंठा, मयूर, मोर।
मुराई दे० (स्त्री०) जाति विशेष, कुँजड़ा, कोइरी, शाक तरकारी आदि का व्यापार करने वाली जाति।
मुरेला दे० (पु०) मोर का बच्चा, छोटा मोर।
मुर्रा दे० (पु०) पटाका, छछून्दर।
मुलतानी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की रागिनी, मृत्तिका विशेष।
मुलहट्टी दे० (स्त्री०) ओषधि विशेष, मुरैठी।
मुलाई दे० (स्त्री०) आँकाव, निरख, दर, भाव।
मुलाना दे० (क्रि०) आँकना, ठहराना, निरखना।
मुश्के दे० (पु०) बाहु, भुजा।
मुष्क तत्० (पु०) अण्ड, अण्डकोश, कस्तूरी।
मुष्टामुष्टी तद्० (स्त्री०) मुष्टी, मुष्टि, मुक्कामुक्की, घुस्सा घुस्सी।
मुष्टि तत्० (स्त्री०) मुट्ठी, मूठी, मूका।
मुसकाना दे० (क्रि०) हँसना, स्मित करना, ईषद् हास्य करना।
मुसकुराई दे० (स्त्री०) मन्दस्मित, मुसकुराहट।
मुसकुराना दे० (क्रि०) मुसकाना, हसना, मन्दस्मित करना।
मुसल तद्० (पु०) मूसल, डण्डे के समान, एक प्रकार की लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं।

मुसलमान दे० (पु०) एक जाति विशेष, मुहम्मद के मतावलम्बी।

मुसली तद्० (पु०) बलभद्र, बलराम, श्रीकृष्णचन्द्र के बड़े भाई, मूषिका, चूहो, चुहिया।

मुसाना दे० (क्रि०) चोरी करवाना, लुटवाना।

मुस्ता तत्० (स्त्री०) मूल विशेष, मोथा।

मुहरा दे० (पु०) हरावल, अगाड़ी।

मुहरी दे० (स्त्री०) कोप, बन्दूक का मुँह।

मुहासा दे० (पु०) फोड़ा, फुन्सी, मुँह पर के फोड़े।

मुहुर्मुह दे० (अ०) बारबार, पुनःपुनः भूयः अनेक बार।

मुहूर्त तत्० (पु०) समय विशेष, दो घड़ी समय, दो दण्ड काल, किसी काम करने का निर्द्धारित उत्तम समय, दिन रात का तीसवाँ भाग, ४८ मिनट।

मूआ दे० (गु०) मरा, मृत, निर्जीव।

मूँग दे० (स्त्री०) एक प्रकार का अन्न विशेष, मूँग, एक प्रकार का अन्न, जिसकी दाल बनती है।

मूँगा दे० (पु०) विद्रुम, प्रवाल, एक प्रकार का रत्न।

मूँगिया दे० (गु०) रङ्ग विशेष, मूँगा का रङ्ग, मूँगे के समान रङ्ग।

मूँछ दे० (स्त्री०) श्मश्रु, मोछ, ओठ पर के बाल।

मूँज दे० (स्त्री०) दाभ, तृण विशेष, एक प्रकार का तृण, जिसके छिलके की रस्सी बनाई जाती है।

मूँड़ दे० (पु०) मुण्ड, मस्तक, सिर, कपाल। —फिकारना (वा०) सिर नङ्गा करना।

मूँड़ना दे० (क्रि०) ठगना, बाल मूड़ना, बाल काटना, सिर घुटवाना, फुसलाना, धोखा देना।

मूँड़ला दे० (गु०) मुण्डा, मुड़िया, मुण्डित, मूड़ा हुआ।

मूँढ़ा दे० (पु०) मोढ़ा, बैठने की चौकी।

मूँदना दे० (क्रि०) बन्द करना, तोपना, ढाँकना, छिपाना, रोकना।

मूँदरी दे० (स्त्री०) मुद्रिका, छल्ला, अँगूठी।

मूँह दे० (पु०) मुख, बदन, मुखड़ा।

मूँहा दे० (पु०) मुर्ग का रोग।

मूक तत्० (गु०) गूँगा, अनबोल, वाक् शक्ति हीन।

मूका दे० (पु०) घूँसा, मुक्का, मुठी, झरोखा।

मूकी दे० (स्त्री०) मुक्की, घूसा, धक्का।

मूखा दे० (पु०) पर्छती, टोंड़ार, मुँडेर, मेंड़।

मूगरी दे० (स्त्री०) कपड़े पीटने का मोगरा, मूँगरी।

मूचकाना दे० (क्रि०) मोह चढ़ाना, ऐंठना, बलदेना।

मूचना दे० (पु०) चिमटी, चिमटा, लोहे का एक प्रकार का अस्त्र, जिससे बाल नोचते हैं।

मूछ दे० (स्त्री०) मूछ, श्मश्रु, मोछ।

मूछाकड़ा दे० (पु०) बड़ी मूँछ।

मूछैल दे० (गु०) बड़ी मूछों वाला।

मूठ दे० (पु०) बेंट, हाथ, हाथ भर।

मूठा दे० (पु०) भरमूँठ, बेंट, कब्ज़ा।

मूठी दे० (स्त्री०) मुष्टि, मुक्का, मुक्का, घूसा।

मूढ़ तत्० (गु०) मूर्ख, अज्ञानी, अनपढ़, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०) मूर्खता, अज्ञानता।

मूत दे० (पु०) मूत्र, लघुशङ्का, पेशाब।

मूतना दे० (क्रि०) लघुशङ्का करना, पेशाब करना।

मूत्र तत्० (पु०) प्रस्राव, मूत, पेट का निकला हुआ जल।—कृच्छ्र (पु०) मूत्र रोग, मूत्र रोध रोग। अश्मरी रोग।—दोष (पु०) प्रमेह, मूत्रगत दोष। —निरोध (पु०) मूत्र प्रतिबन्धक रोग विशेष, मूत्रकृच्छ्र रोग।

मूना दे० (क्रि०) मरना, मृत होना।

मूनू दे० (गु०) लघु, थोड़ा, अल्प, किञ्चित्।

मूरत तद्० (स्त्री०) मूर्ति, छवि, आकृति, प्रतिमा।

मूर्ख तत्० (गु०) मूढ़, अज्ञान, अजान, अनभिज्ञ।—ता (स्त्री०) अज्ञानता, मूढ़ता।

मूर्च्छना तत्० (क्रि०) गीत का अङ्ग विशेष।

मूर्छा तत्० (स्त्री०) सम्मोह, अचेतन, मोह, अज्ञानता, बेहोशी।—गत (गु०) मूर्छाप्राप्त, मोहित, अज्ञान।

मूर्च्छित तत्० (गु०) मूर्च्छा प्राप्त, मोहित, अज्ञान, मूढ, मूर्ख।

मूर्ति तत्० (स्त्री०) प्रतिमा, आकार, पुतली, तसवीर। —पूजक (पु०) देव पूजक, चतुर्वर्ण के मनुष्य। —मन्त (गु०) आकार वन्त, शरीरधारी।

मूर्द्धज तत्० (पु०) बाल, केश।

मूर्द्धन्य तत्० (पु०) मूर्द्धा स्थान से उच्चारित होने वाले वर्ण ऋ, ट ठ ड ढ ण, र ष, ये वर्ण मूर्द्धन्य हैं।

मूर्द्धा तत्० (पु०) मस्तक, तालु के ऊपर का भाग।

मूल तत्० (पु०) जड़, वंश, कुल, पूँजी, पुस्तक का मूल भाग।—कारिका (स्त्री०) मूल ग्रन्थार्थ प्रकाशक पद्य, मूल धन की वृद्धि विशेष।—धन (पु०) मूल द्रव्य, असल पूँजी।—भूत जड़।

मूलक तत्० (पु०) मूली, मुरई।

मूल्य तत्० (पु०) मूल्य, मोल, भाव, निरख, दर, दाम।

मूष तत्० (पु०) चूहा, मूसा, मूषिक।

मूषण तत्० (पु०) हरण, चोरी करण, चोरी करना।

मूषा तत्० (पु०) मूस।

मूसना दे० (क्रि०) चरना, चोरी करना, लूटना, खखोदना।

मूसरा दे० (पु०) चूहा, मूल, गण।

मूसला दे० (पु०) जड़, मूल।

मूसा दे० (पु०) चूहा, वन्दुर।

मृग तत्० (पु०) हरिण, मृगा, कुरङ्ग।—छाला (पु०) मृगचर्म, अजिन।—तृष्णा (स्त्री०) धूप में जल ज्ञान, व्यर्थ, तृष्णा, वृथा लोभ।—नयनी (स्त्री०) बड़ी आँख वाली, सुन्दरी स्त्री।—नाभि (स्त्री०) कस्तूरी, मृगमद।—पति (पु०) पशुओं का राजा, सिंह, मृगेन्द्र।—मद (पु०) कस्तूरी।—राज (पु०) मृगपति, पशुओं का राजा।—लोचनी (स्त्री०) मृगनयनी, बड़ी आँखों वाली, मृग के समान आँखों वाली।—शिरा (पु०) एक नक्षत्र का नाम।

मृगया तत्० (स्त्री०) शिकार, आखेट, अहेर।

मृगी तत्० (स्त्री०) हरिणी, रोग विशेष।

मृगेन्द्र तत्० (पु०) (मृग+इन्द्र) सिंह, मृगराज मृगपति।

मृग्य तत्० (गु०) अन्वेषणीय, दर्शनीय, अनुसन्धान करने योग्य।

मृजा तत्० (स्त्री०) मार्जन, शुद्धकरन, शौच, फरागत।

मृड तत्० (पु०) शिव, महादेव, शम्भु।

मृणाल तत्० (पु०) कमल नाल कमल की जड़।

मृत तत्० (गु०) मुआ, मरा हुआ, मुर्दा।

मृतक तत्० (पु०) शव, लोथ, मुर्दा।

मृत्तिका तत्० (स्त्री०) मट्टी, मिट्टी, माटी।

मृत्यु तत्० (स्त्री०) मौत मरण, निधन।

मृत्युञ्जय तत्० (पु०) शिव का एक नाम।

मृदङ्ग तत्० (पु०) वाद्य विशेष, भेरी।

मृदु तत्० (गु०) नरम कोमल।

मृषा तत्० (अ०) झूठा, मिथ्या, असत्य।

मेंगनी दे० (स्त्री०) मींगनी, लेंडी, लीद।

मेडक दे० (पु०) दादुर, भेक, मण्डूक।

मेंड़ा दे० (पु०) मेड़, कुए का मुँह, मेंड़।

मेंड़ियाना (क्रि०) घिरना, बटोरना घेरना।

मेंढा दे० (पु०) मेंढा, मेष, गाडर।

मेंह दे० (पु०) मेघ, वृष्टि, वर्षा, घटा, झड़, झड़ी।

मेंहदी दे० (स्त्री०) पौधा विशेष, मिहदी।

मेख दे० (पु०) कील, खूटा, मेष।

मेखला तत्० (स्त्री०) क्षुद्र घण्टिका, करधनी, मृगछाला से बना हुआ यज्ञोपवीत।

मेखली दे० (स्त्री०) टाट, पट्टी।

मेघ तत्० (पु०) मेह, बादल रागविशेष।—डम्बर (पु०) रावण का छत्र विशेष।—नाद (पु०) मेघ का शब्द, मेघ के समान शब्द, रावण के पुत्र का नाम। देवराज इन्द्र को पराजित करने के कारण इसका नाम इन्द्रजित पड़ा था। लङ्का के युद्ध में इसने राम लक्ष्मण को दो बार हराया था, परन्तु अन्त में यह लक्ष्मण के हाथों मारा गया।

।—पति (पु०) इन्द्र, देवराज ।—वरण (पु०) मेघ के रङ्ग के समान ।—माला (स्त्री०) मेघ, समूह, मेघों की माला ।

मेघाध्वा तत्० (पु०) मेघपथ, अन्तरिक्ष, आकाश।

मेघागम तत्० (पु०) वर्षाकाल, वर्षा का समय।

मेटना दे० (क्रि०) पोंछ डालना, नाशना, ख़राब करना।

मेंड़ दे० (स्त्री०) बाँध, थाला, मेंड़।

मेंथी दे० (स्त्री०) एक साग का नाम, एक प्रकार का मसाला जो छौंकने के काम में आता है।

मेद दे० (पु०) मज्जा, वसा, चर्बी, मोटाई, माँस का बढ़ जाना।

मेदिनी तत्० (स्त्री०) धरिणी, धरित्री, भूमि, अष्टवर्ग में प्रसिद्ध औषध विशेष।

मेदुर तत्० (पु०) अतिशय स्निग्ध, अत्यन्त चिक्कन शीतल।

मेध तत्० (पु०) ऋतु, याग, यज्ञ, अध्वर।

मेधा तत्० (स्त्री०) बुद्धि विशेष, धारणाशक्ति, बुद्धि, मनीषा।—तिथि (पु०) ये मनुस्मृति के विख्यात टीकाकार हैं इनके पिता का नाम वीर स्वामी भट्ट था।—वती (स्त्री०) बुद्धिमती, मेधा विशिष्टा, महाज्योतिष्मती लता।

मेधावी तत्० (पु०) मेधायुक्त, स्मरण शक्ति विशिष्ट, मतिमान। (पु०) पण्डित, अभिज्ञ।

मेधि तत्० (पु०) खलिहान में पशुओं को बाँधने के लिये ऊँचा गाड़ा हुआ काठ।

मेमना दे० (पु०) बकरी का बच्चा।

मेरु तत्० (पु०) पर्वत विशेष, सुमेरुपर्वत, जपमाला का सर्वप्रधान मनिया।—पृष्ठ (पु०) पीठ के बीच की हड्डी।

मेल तत्० (पु०) संयोग, मिलाप, भेंट।

मेलना दे० (क्रि०) भेजना, छोड़ना, रखना, घुसेड़ना दबाना।

मेला दे० (पु०) भीड़, रेला, समूह, समुदाय, देव-दर्शन पर्व विशेष, या तमाशा देखने के लिये बहुत लोगों का एकत्रित होना।—ठेला (वा०) भीड़ भाड़।

मेली तत्० (पु०) मित्र, मिलापी, परिचित, आना हुआ (स्त्री०) रख दी, छोड़ दी, धर दी।

मेव दे० (पु०) जाति विशेष।

मेवाती दे० (पु०) मेवात वासी, मेवात का रहने वाला।

मेष तत्० (पु०) मेषराशि, पहली राशि, भेड़ा।

मेह तत्० (पु०) मेघ, घटा, रोग विशेष, मूत्र रोग।

मेहतर दे० (पु०) बुहड़ा, भङ्गी, छोटी जात।

मेहतरानी दे० (स्त्री०) भङ्गी की स्त्री।

मेहना दे० (पु०) ठठोली, खिल्ली, ताना।

मेहन्हा दे० (पु०) ठठोलिया, हँसोड़।

मैका दे० (पु०) नहिहर, पीहर, स्त्रियों का पितृगृह।

मैत्री तत्० (स्त्री०) मित्रता, बन्धुता, प्रेम, स्नेह।

मैथुन तत्० (पु०) स्त्रीसंसर्ग, सुरत, रतिक्रिया, सङ्गम, प्रसङ्ग।

मैनफल दे० (पु०) औषध विशेष।

मैना दे० (स्त्री०) एक पक्षी का नाम, सारिका, पार्वती की माता, मेना।

मैनाक तत्० (पु०) पर्वत विशेष, हिमालय पर्वत का पुत्र।

मैमा दे० (स्त्री०) बियाता, सौतेली माता।

मैया दे० (स्त्री०) महतारी, माता, अम्बा।

मैल दे० (स्त्री०) मल, गुर्दा।

मैला दे० (पु०) गंदला, गन्दा, अशुद्ध, अपवित्र, मलिन।

मैहिषा दे० (पु०) महिष, भैंसा।

मो दे० (सर्व) मुझ।

मोक्ष तत्० (पु०) मुक्ति, परमानन्द प्राप्ति, कर्म बन्धन का नाश, छुटकाव, छुटकारा।

मोकना दे० (क्रि०) छोड़ना, भेलना, धरना, रखना।

मोखा दे० (पु०) झरोखा, कंगला, गवाक्ष।

मोगरा दे० (पु०) मुगरा, मुद्गर, पुष्प विशेष।

मोगरी दे० (स्त्री०) मुद्गर, छोटा मुगरा।

मोघ तत्० (पु०) प्राचीर, दीवार, (गु०) निरर्थक, हीन, वृथा, व्यर्थ।

मोच दे० (पु०) लचक।—न तत्० (पु०) उद्धार, उद्धरण, अपहरण।—ना दे० (पु०) चिमटा, चिमटा।—रस तत्० (पु०) गोंद विशेष, सेमल वृक्ष का गोंद।—स्रावी तत्० (पु०) सेमल का वृक्ष।

मोचा तत्० (पु०) कदली वृक्ष, केले का गाछ।

मोची दे० (पु०) चमार, चर्मकार, जूता बनाने वाली जाति।

मोंछ दे० (स्त्री०) मूछ, मुँह पर का बाल।

मोट दे० (पु०) गठरी, बोझ, भार।

मोटकी दे० (स्त्री०) कुदारी, मोटी स्त्री।

मोटा दे० (गु०) स्थूल, मुस्टैल।

मोटापा दे० (पु०) स्थूलता, मोटाई।

मोटिया दे० (पु०) कुली, भारवाहक, मोटरी ढोने वाला।

मोठ दे० (पु०) मोट, गठरी, बोझ।

मोड़ दे० (पु०) बाँक, फेर, घुमाव, बल, ऐंठन।

मोड़ना दे० (क्रि०) मुराना, फेरना, घुमाना।

मोड़ा दे० (पु०) मुड़ा हुआ, वैरागी, सन्यासी, साधु।

मोतिया दे० (पु०) पुष्प विशेष, बेला का फूल।—बिन्द (पु०) रोग विशेष, आँख का एक रोग।

मोती तत्० (स्त्री०) मुक्ता, मौक्तिक, रत्न विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध समुद्रीय रत्न।—की सी आब उतारना (वा०) अप्रतिष्ठा होना, अपमान होना, तिरस्कार होना, अनादर होना।—फूट कर भरने (वा०) प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना।—पिरोने (वा०) माला गूँथना, मधुरता के साथ बोलना, या लिखना।—चूर (पु०) एक प्रकार की मिठाई का नाम।

मोथरा दे० (पु०) घोड़े का रोग विशेष, हड्डा रोग।

मोथा दे० (पु०) मुथा, एक पौधे की जड़, नागरमोथा।

मोद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, आह्लाद।

मोदक तत्० (पु०) लड्डू। (गु०) हर्षदाता, हर्षकारक।

मोदी दे० (पु०) व्यापारी, बनिया, महाजन।

मोघू दे० (पु०) बोधा, भोला, निरक्षर, ज्ञानरहित।

मोनी दे० (स्त्री०) अणि, नोक, धार आदि का अग्रभाग।

मोम दे० (पु०) मधुमल।

मोमिया दे० (पु०) औषधि विशेष।

मोर तत्० (पु०) मयूर, पक्षि विशेष, शिखी, केकी।—चङ्ग (पु०) मुरचङ्ग, बाद्य विशेष।—छल (पु०) चमर एक प्रकार का चवर।—पङ्खी (स्त्री०) एक प्रकार की नाव।—मुकुट (पु०) मोर पङ्ख का बना मुकुट।

मोरी दे० (स्त्री०) पनाला, नाला, मकान का जल निकलने का मार्ग।

मोल दे० (पु०) भाव, दाम, मूल्य, किसी वस्तु का दाम।—ठहराना (वा०) दाम लगाना, मूल्य आँकना, निरख ठहराना, दाम ठहराना।—तोल (वा०) भाव, कीमत, दर।—चढ़ाना (वा०) दाम बढ़ाना, भाव चढ़ाना।—लेना (वा०) खरीदना, बिसाहना।

मोषक तत्० (पु०) ठग, लुटेरा, धूर्त, चोर, तस्कर।

मोसना दे० (क्रि०) चुराना, ठगना, लूटना।

मोह तत्० (पु०) मूर्च्छा, अज्ञानता, अविद्या, प्यार, माया, अधिक प्रेम, तामसिक प्रेम।—में आना (वा०) प्रिय के मिलने से अचेत होना।

मोहन तत्० (गु०) मोहने वाला, जिसको देखने से आपही आप मोह उत्पन्न हो, मोहना, वश करना। (पु०) श्रीकृष्ण का नाम।—भोग (पु०) भोजन विशेष, हलुवा, सीरा।—माला (स्त्री०) माला विशेष, सोने और मूँगे के दानों से बनी माला।

मोहना दे० (क्रि०) वश करना, मन हरना, अधीन करना ।

मोहनी दे० (स्त्री०) लुभावन, मोहित करने वाली, वश करने वाली, सुन्दरी, सुहावनी ।

मोहाना दे० (पु०) मुहाना, सङ्गमस्थान, वेणी ।

मोहित तद्० (गु०) मूर्च्छित, अचेत, मुग्ध, मोह प्राप्त ।

मोहिनी तद्० (स्त्री०) सुन्दरी, युवती, रूपवती, वेश्या ।

मौ दे० (पु०) मधु, शहद ।

मौक्तिक तद्० (पु०) मोती, मुक्ता ।

मौञ्जी तद्० (स्त्री०) मुञ्जतृण निर्मित मेखला, मूँज की करधनी ।—बन्धन (पु०) मुञ्ज मेखला बन्धन, उपनयन, यज्ञोपवीत संस्कार ।

मौड़ दे० (पु०) मुकुट, मौर, सिहरा, शिरपेंच, किरीट ।

मौन तद्० (पु०) शब्द प्रयोग शून्यता, अभाषण, अकथन, तूष्णीभाव, चुपचाप ।—व्रत (पु०) न बोलने का नियम, अभाषण, चुपचाप रहना ।

मौना दे० (पु०) लटका, डलिया, डगरा ।

मौनी तद्० (पु०) मौनव्रती, मौनयुक्त, नीरव, तूष्णीम्भूत, मौन विशिष्ट ।

मौमाखी दे० (स्त्री०) मधुमक्षिका ।

मौर दे० (पु०) मञ्जरी, फूल, बौर, कली, मुकुट, किरीट ।

मौराना दे० (क्रि०) खिलना, स्फुटित होना, विकसित होना ।

मौर्ख्य तद्० (पु०) मूर्खता, जड़ता, अनभिज्ञता ।

मौर्वी तद्० (स्त्री०) धनुष का गुण, रोदा, चिल्ला ।

मौलना दे० (क्रि०) वृक्षों में पुष्प लगना, मञ्जरित होना ।

मौलसरी दे० (स्त्री०) एक वृक्ष और उसका पुष्प, बकुल, बकुल पुष्प ।

मौलाना दे० (पु०) मुसलमानों का धर्मगुरु ।

मौलि तद्० (स्त्री०) जूड़ा, चोटी, किरीट, मुकुट, संयत केश, बन्धी हुई चोटी ।

मौलिक तद्० (गु०) मूल सम्बन्धी, जड़ का, जड़ की वस्तु । (पु०) कुलीन, भिन्न, अकुलीन ।

मौली दे० (स्त्री०) नारा, मुकुट, मस्तक ।

मौसा दे० (पु०) मौसी का पति, माँ की बहिन का पति ।

मौसी दे० (स्त्री०) माता की भगिनी, मातृष्वसा ।

मौसेरा दे० (गु०) मौसा के सम्बन्ध का ।

मौहूर्तिक तद्० (पु०) ज्योतिर्वेत्ता, दैवज्ञ, गणक ।

म्रदिमा तद्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुल्लिङ्ग) मृदुता, कोमलता, नम्रता, नरमाई ।

म्रदीयान तद्० (गु०) अतिशय मृदु, अत्यन्त कोमल ।

म्रियमाण तद्० (गु०) मृतकल्प, अर्धमृत, मृत तुल्य, मृतप्राय ।

म्लान तद्० (पु०) मलिन, शुष्क, विरस, विषादयुक्त, खेदित ।—ता (स्त्री०) म्लानभाव, खेद, विषाद, विषण्णता, अवसन्नता ।—मुख (गु०) उदास, मलिन मुख, विषादयुक्त ।—वदन (पु०) विषण्णमुख, उदासीन मुख ।

म्लानि तद्० (स्त्री०) कान्तिक्षय, विषाद, खेद, शुष्कता, मलिनता ।

म्लिष्ट तद्० (पु०) अस्पष्ट वाक्य, अव्यक्त वचन, अस्फुट स्वर ।

म्लेच्छ तद्० (पु०) अन्त्यज जाति, किरात, शबर, पापरत, अपभाषण, अशुद्ध कथन ।

य

य अन्तस्थ यकार, इसको इकतीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है इस कारण इसको तालव्य कहते हैं ।

य तद्० (पु०) वायु, यश, कीर्ति, योग, यान, गमनकर्ता ।

यकृत् तत्० (पु०) पेट के दाहिनी ओर का मांस खण्ड, उदररोग, प्लीहा, तापतिल्ली, पिलही रोग।

यक्ष तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, कुबेर के अनुचर।

यक्ष्मा तत्० (पु०) रोग विशेष, क्षयी रोग।

यजन तत्० (पु०) याग करण, पूजन, यज्ञ।

यजमान तत्० (पु०) यज्ञकर्ता, यज्ञानुष्ठान में दीक्षित, व्रती।

यजु तत्० (पु०) वेद विशेष, यजुर्वेद।

यजुर्वेद तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध वेद।

यजुर्वेदी तत्० (गु०) यजुर्वेदवेत्ता, यजुर्वेदाध्यायक, यजुर्वेद के अनुसार कर्म करने वाला।

यज्ञ तत्० (पु०) याग, अध्वर, मख क्रतु।—कुण्ड (पु०) यज्ञ करने के लिये चौकोना बना हुआ गर्त।—पुरुष (पु०) विष्णु, पुरुषोत्तम, नारायण।—वेदी (स्त्री०) यज्ञ के लिये साफ़ की हुई भूमि।—भाजन (पु०) यज्ञार्थ पात्र, यज्ञ के बर्तन।—भूमि (स्त्री०) यागस्थान, यज्ञस्थल, यज्ञशाला। सूत्र (पु०) यज्ञोपवीत, जनेऊ।

यज्ञोपवीत तत्० (पु०) यज्ञसूत्र, ब्रह्मसूत्र।

यज्वा तत्० (पु०) वेद विधि पूर्वक यागकर्ता, यजमान, याज्ञिक।

यतन तद्० (पु०) यत्न, उपाय, चेष्टा, उद्योग।

यति तत्० (पु०) जितेन्द्रिय, संन्यासी, परिव्राजक।—चान्द्रायण (पु०) व्रत विशेष।

यतनी तद्० (स्त्री०) यत्न करने वाला उद्योगी, परिश्रमी।

यत्किञ्चित् तत्० (अ०) थोड़ा बहुत, कुछ कुछ।

यत्न तत्० (पु०) यतन, उपाय, उद्योग, चेष्टा।

यत्नी तत्० (गु०) यतन करने वाला, खोजी, अनुसन्धानी।

यत्र तत्० (अ०) जहाँ, जिस स्थान पर, जिस स्थान में।—तत्र (अ०) जहाँ, तहाँ।

यथा तत्० (अ०) जैसा, ज्यों, जिस प्रकार, जिस रीति।—कथञ्चित् (अ०) जिस किसी प्रकार से, बड़े कष्ट से, बड़े परिश्रम से। काल (पु०) यथा समय, उपयुक्त समय, उचित काल, समयानुसार।—क्रम (पु०) क्रमानुरूप, आनुपूर्विक क्रमश।—तथा (अ०) जैसा, तैसा, ज्यों, त्यों।—योग्य (पु०) यथोचित, जैसा उचित।—र्थ (गु०) [यथा + अर्थ] ठीक, सत्य, उचित, वत् (अ०) विधिवत् यथा योग्य, व्यवस्था के अनुसार, रीति के अनुसार। विधि (गु०) यथायोग्य, विधि के अनुसार।—शक्ति (स्त्री०) जैसा सामर्थ्यानुसार।—शास्त्र (गु०) शास्त्रानुसार, शास्त्रानुकूल।—सम्भव (गु०) जैसा होने योग्य, जहाँ तक हो सके।—साध्य (गु०) साध्यानुसार, यथा शक्ति।—स्थित (गु०) सत्य, यथार्थ, निश्चित।

यथेच्छा तद्० (स्त्री०) यथेच्छ, इच्छानुसार, जैसा मनोरथ।

यथेष्ट तत्० (गु०) इच्छानुसार, यथेच्छ, इच्छानुरूप, प्रचुर, अधिक।

यथोक्त तत्० (गु०) पूर्वकथित, पूर्वोक्त, पहले कथित।

यथोचित तत्० (गु०) यथा योग्य, जैसा उपयुक्त, उत्तम मत।

यदवधि तत्० (अ०) जब से, जिस काल से, जब तक।

यदा तत्० (अ०) जब, जिस काल में।

यदि तत्० (अ०) पक्षान्तर, सम्भावनार्थ, यद्यपि।

यद्यपि तत्० (अ०) जो भी, यद्यपि।

यद्वा तद्वा तत्० (अ०) ऐसा, वैसा, भला, बुरा, अनिश्चित-अनियमित।

यन्त्र तत्० (पु०) कल, बाजा, देवताओं का अधिष्ठान, पात्र विशेष, नियन्त्रण, युक्ति पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिये पदार्थ विशेष, अग्नि यन्त्र, दारु यन्त्र आदि।

यन्त्रणा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख क्लेश।—दायक (गु०) क्लेशदायक, दुखदायक।

यन्त्रित तत्० (गु०) नियमित, रोका हुआ, बंधा हुआ।

यन्त्री तत्० (पु०) बाजा, यन्त्र विशिष्ट।

यम तत्० (पु०) यमराज, काल, अन्तक, सूर्यपुत्र। —स्वसा (स्त्री०) यमुना।
यमक तत्० (पु०) शब्दालङ्कार विशेष, इस अलङ्कार के उदाहरण में एकही शब्द को दो दो तीन तीन बार आवृत्ति होती है यथा।
"भिन्न अर्थ फिरि फिरि जहाँ वेई अक्षर वृन्द, आवत हैं सो यमक कहि. बरनत बुद्धि बिलन्द"
शिवराज भूषण
यमदूत तत्० (पु०) यमराज का गण, यम का सन्देशा, मृत्यु का लक्षण।
यमधार तत्० (पु०) कटार, अस्त्रविशेष।
यमन तत्० (पु०) यवन, मुसलमान राग विशेष।
यमल तत्० (पु०) जोड़ा, युग्म, दो।
यमलार्जुन तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, कहते हैं कुवेर के दोनों लड़के वेश्याओं के साथ गङ्गा में नङ्गे स्नान करते थे। भाग्यवश नारद वहाँ आ पहुँचे, उन्होंने इस अनीति के देख कर कुवेर के बेटों को शाप दिया कि तुम दोनों वृक्ष हो जाओ, नारद के शाप से वे तो वृक्ष हो ही गये। पुनः भगवान कृष्ण ने इनको नारदजी के शाप से उबारा।
यलाफैला तत्० (गु०) बिखरा, पसरा, फैला।
यव तत्० (पु०) अन्न विशेष, जौ।—क्षार (पु०) लवण विशेष, शोरा।
यवन तत्० (पु०) यमन, मुसलमान।
यश तत्० (पु०) कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी।
यशस्वी तत्० (गु०) कीर्तिमान्, सुख्यात, लब्धप्रतिष्ठ।
यशोदा तत्० (स्त्री०) नन्दपत्नी, श्रीकृष्ण की माता।
यष्टि यष्टिका तत्० (स्त्री०) लाठी, लकड़ी, छड़ी।
यह दे० (सर्व०) निकट वाचकसर्व नाम।
यहाँ दे० (अ०) इधर इस ठौर, इस स्थान पर। —यहीं (वा०) ठीक, इसी स्थान।
याग तत्० (पु०) यज्ञ, अध्वर, होम, हवन।
याचक तत्० (पु०) जाचक, भिक्षुक, मँगता।
याचना दे० (क्रि०) भीख माँगना, जाचना, चाहना।
याजक तत्० (पु०) याज्ञिक, ऋत्विक, पुरोहित।
याजन तत्० (पु०) याजक का कर्म, यज्ञकराना।
याज्ञिक तत्० (पु०) यज्ञ करने वाला।
यातना तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, तीव्र, वेदना, अधिक कष्ट।
यातायात तत्० (पु०) आवागमन, गमनागमन।
यात्रा तत्० (स्त्री०) तीरथ, कूच, प्रस्थान।
यात्री तत्० (पु०) परदेशी, तीर्थ करैया, मुसाफिर।
याथार्थिक तत्० (गु०) वास्तविक, ठीक, सत्य।
याथार्थ्य तत्० (पु०) सत्यता, सचाई, यथार्थता।
यान तत्० (पु०) असवारी, वाहन।
यापन तत्० (पु०) निर्वाह, कालक्षेप, समय बिताना, काल काटना।
याम्य दे० (पु०) दौंगन, टट्टू।
यावक तत्० (पु०) महावर, लाल रङ्ग, लाख।
यामिनी तत्० (स्त्री०) रात, रात्रि, निशा, रजनी।
यावज्जीवन तत्० (पु०) यावदायुः जीवन पर्यन्त।
यावत् तत्० (अ०) जब तक, जब लग, अवताईं।
युक्त तत्० (गु०) विशिष्ट, सहित, समेत (पु०) उचित, योग्य, यथार्थ।
युक्ति तत्० (स्त्री०) मिलना, मेल, योग्यता, प्रवीणता, चतुराई, चतुरता, हथोटी, विवेचना।
युग तत्० (पु०) युग्म, जोड़ा, सत्य त्रेता आदि चार युग, वृद्धि नामक औषध, चार हाथ, रथ हल आदि का अङ्ग विशेष, जुआड़ जुआँ।—धर्म (पु०) कालका धर्म, काल माहात्म्य।—पत् (अ०) एकदा एक कालीन, एक समय।
युगल तत्० (पु०) दो, युग, युग्म, जोड़ा।—मन्त्र (पु०) लक्ष्मीनारायण का मन्त्र, दो देवता का मन्त्र।
युगान्त तत्० (पु०) प्रलय, युगशेष, युग का अवसान।
युग्म तत्० (पु०) दो, जोड़ा, युग, द्वय।—पत्र (पु०) रक्त काञ्चन वृक्ष।—पर्ण (पु०) कोविदारक, सप्तपर्ण वृक्ष।

युज्यमान तत्० (गु०) युक्त होने के उपयुक्त, मिलने योग्य।

युञ्जान तत्० (पु०) सूत, सारथि, विप्र, ध्यान के द्वारा सब बातों को जानने वाला योगी।

युत तत्० (गु०) मिलित, अपृथग्भूत, एकत्र, विशिष्ट, जड़ित, (पु०) हस्तचतुष्टयः, चार हाथ।

युद्ध तत्० (पु०) लड़ाई, संग्राम, समर, विवाद। —निदेश (पु०) युद्ध की, आज्ञा, युद्ध का सन्देश।

युधिष्ठिर तत्० (पु०) पाण्डुपुत्र, अजात शत्रु, प्रथम पाण्डव।

युवक तत्० (पु०) तरुण, जवान, नवीन, युवा।

युवती तत्० (स्त्री०) यौवनवती, तरुणी, युवावस्था की स्त्री।

युवराज तत्० (पु०) राजा का बड़ा लड़का, राज्य का उत्तराधिकारी।

युवा तत्० (पु०) जवान, तरुण, यौवन वयस्था वाला।

यूँ दे० (अ०) ऐसा, इस प्रकार,।

यूका तत्० (स्त्री०) जूँ, चिल्लर।

यूथ तत्० (पु०) सजातीय समूह, वृन्द। —नाथ (पु०) बनैले हाथियों के मध्य में श्रेष्ठ हाथी। —प (पु०) सेनापति, दल का प्रधान। —भ्रष्ट (पु०) हस्ति समूह से निकला हुआ हस्ति।

यूप तत्० (पु०) यज्ञस्तम्भ, खम्भा।

यूष तत्० जूस, परेह, पथ्य।

योग तत्० (पु०) सामादि चतुर्विध उपाय, सङ्गति युक्ति, चित्त निरोध, विषयान्तर से मन की निवृत्ति मेल, संयोग।

योगिनी तत्० (स्त्री०) शूलिनी, पिशाचिनी, डाकिनी।

योगी तत्० (पु०) योगसाधक, तपस्वी।

योगेश्वर तत्० (पु०) सिद्ध, तपस्वी, योगी।

योग्य तत्० (गु०) उपयुक्त, उचित, यथार्थ। —ता (स्त्री०) निपुणता।

योजन तत्० (पु०) चार कोस का परिमाण।

योजना तत्० (स्त्री०) विन्यास, मिलाप, योग्य को योग्य के साथ विन्यास करना।

योद्धा तत्० (पु०) सूर, वीर, लड़ने वाला, सैनिक, सिपाही।

योधन तत्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम।

योधापन दे० (पु०) वीरता, शूरता।

योनि तत्० (स्त्री०) स्त्रीचिन्ह, भग, उत्पत्ति, स्थान।

योषित् तत्० (स्त्री०) नारी, स्त्री, अबला, वामा।

यों दे० (अ०) इस प्रकार, ऐसा, इस रीति।

यौतिक तत्० (पु०) ज्योतिष, नक्षत्र विद्या, गणित।

यौतुक तत्० (पु०) दहेज़ा, दायजा।

यौवन तत्० (पु०) जवानी, तरुणाई, यौवनावस्था।

र

र—यह व्यञ्जन का सत्ताईसवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। इससे यह अक्षर मूर्द्धन्य कहा जाता है।

र तत्० (पु०) अग्नि, तीक्ष्ण, कामाग्नि।

रई दे० (स्त्री०) मथनी, बिलोनी।

रँहट दे० (पु०) जल निकालने का यन्त्र।

रंस तद्० (स्त्री०) रश्मि, किरण, दीप्ति।

रक्त तत्० (पु०) रुधिर, लोहू, शोणित, कुंकुम, केशर। (गु०) रक्त वर्ण,-लाल। —कोढ़ (पु०) रक्त कुष्ठ, कुष्ठ रोग विशेष। —घ्न (पु०) लोध वृक्ष। —चन्दन (पु०) लाल चन्दन, देवी चन्दन। —चूर्ण सिन्दूर। —पा (स्त्री०) जोंक, जलौका। —पात (पु०) हत्या, रुधिरपात, लोहू का गिरना। —पित्त (पु०) रक्तस्राव रोग। —बीज (पु०) एक राक्षस का नाम, यह राक्षस, निशुम्भ का सेनापति था। यह दुर्गा के हाथ से मारा गया।

रक्षक तत्० (पु०) रक्षा करने वाला, पालने वाला, पालक, उद्धारकर्ता, स्वामी, प्रभु।

रक्षण तत्० रक्षा, पालन, पोषण।

रक्षस् तत्० (पु०) राक्षस, निशाचर, सत्कर्म द्वेषी, नीच।

रक्षा तत्० (स्त्री०) बचाव, बचाना, रखवारी करना, राख, भस्म।—पेक्षक (पु०) [रक्षा+अपेक्षक] द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, सिपाही, दरबान।

रक्षित तत्० (पु०) रक्षा हुआ, रक्षा किया गया।

रख छोड़ना दे० (क्रि०) धरना, रखना, सौंपना, अर्पण करना।

रख देना दे० (क्रि०) धरना, रखना, टिकाना, स्थापित करना।

रखना दे० (क्रि०) त्यागना, सौंपना, सेंतना।

रखवाना दे० (क्रि०) धराना, सौंपाना, अर्पित करना।

रखवाला दे० (पु०) रक्षक, रक्षा करने वाला, गड़रिया, चरवाहा।

रखवाली दे० (स्त्री०) रक्षा, रखाई, ख़बरदारी।

रखिया दे० (पु०) रक्षा, बचाव, रखवारी, रखाई।

रखी दे० (स्त्री०) रक्षा का कर।

रखैया दे० (पु०) रक्षक, रखवारा, रक्षा करने वाला।

रग दे० (स्त्री०) शिरा, नाड़ी, नस।

रगड़ दे० (स्त्री०) सङ्घर्ष, घिसाव।

रगड़ना दे० (क्रि०) घोटना, मलना, घिसना।

रगड़ा दे० (पु०) झगड़ा, घिसाव, बलात्कार से लड़ाई।—झगड़ा (वा०) लड़ाई, दङ्गा, बखेड़ा, फसाद।

रगेदना दे० (क्रि०) खदेड़ना, भगाना, पीछा करना।

रङ्क दे० (पु०) कङ्गाल, दरिद्र, कृपण।

रघु तत्० (पु०) एक सूर्यवंशी राजा। राजा दिलीप का पुत्र। इन्हींके वंश में श्रीरामचन्द्र ने अवतार लिया था।—नन्दन (पु०) श्रीरामचन्द्र।—नाथ (पु०) श्रीराम।—राज (पु०) श्रीराम, रीवाँ के एक राजा।—वंश (पु०) रघुकुल, काव्य विशेष, कालिदास का बनाया एक काव्य।—वर (पु०) रघु-श्रेष्ठ श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

रङ्ग तत्० (पु०) वर्ण, ढंग, रीति, ढङ्ग।—उड़ जाना (वा०) रङ्ग बदल जाना, रङ्ग फीका पड़ना।—उतर जाना (वा०) पीला होना, रङ्ग फीका पड़ना, सोच में होना, कुढ़ना, कलपना।—करना (वा०) ख़ुशी करना, विलसना, समय को आनन्द में बिताना।—चढ़ना (वा०) नशे में चूर होना।—देखना (वा०) परिणाम देखना, निष्पत्ति देखना।—रङ्ग (पु०) अनेक रङ्ग का, चित्र विचित्र, भाँति भाँति।—बिगड़ना (वा०) किसी की दशा बिगड़ना, रङ्ग उतरना।—भङ्ग (पु०) आनन्द में विगाड़ होना, आनन्द में खेद।—महल (पु०) आनन्द करने का महल, विलास करने का महल।—मारना (वा०) खेल जीतना।—रलिया (स्त्री०), आनन्द, हर्ष, हुलास, भोग विलास।—रस (पु०) आनन्द, हर्ष।—रातना (पु०) अति घनिष्ठ मित्रता।—राता (वा०) रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्द।—रूप (पु०) आकार प्रकार, रङ्ग ढङ्ग, चमक दमक।—लगना (वा०) रङ्गना, अपना अधिकार जमाना, प्रभाव विस्तार करना।—भूमि (स्त्री०) नाट्यशाला, नाटक खेलने का स्थान।

रङ्गना दे० (क्रि०) रङ्ग करना, रङ्ग चढ़ाना।

रङ्गवाई दे० (स्त्री०) रङ्गने का काम, रङ्गने की मजूरी।

रङ्गवैया दे० (पु०) रङ्गनेहारा, रङ्गकार, रङ्ग करने वाला।

रङ्गाई दे० (स्त्री०) रङ्गने का पैसा, रङ्गवाई।

रङ्गाना दे० (क्रि०) रङ्गवाना, रङ्ग कराना।

रङ्गावट दे० (स्त्री०) रङ्गाई, रङ्गाई देना।

रङ्गी, रङ्गीला दे० (पु०) रसीला, रसिक, मौजी, छैला, चमकीला।

रचक तत्० (पु०) रचना करने वाला, निर्माता। (वा०) थोड़ा, स्वल्प, सजावट, सजने वाला, सजैया।

रचना तत्० (स्त्री०) बनावट, निर्माण, निर्मित, सजैया, सजाने वाला।

रचाना दे० (क्रि०) बनाना, बनवाना, सिरजाना।

रज तत्० (स्त्री०) धूलि, पराग, रेत।

रजक तत्० (पु०) धोबी, कपड़े धोने वाला।

रजत तत्० (पु०) चाँदी, रूपा, रौप्य, दुर्वर्ण। —द्युति (पु०) गौरव वर्ण, श्वेत वर्ण।

रजन तत्० (पु०) राग उत्पादन रङ्गना, रङ्ग चढ़ाना।

रजनि, रजनी तत्० (स्त्री०) रात्रि, रात, यामिनी। —कर (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र।—चर (पु०) राक्षस, असुर, निशाचर, भूत।—जल (पु०) तुषार, ओस, नीहार कुहार, कुहेसा।—मुख (पु०) प्रदोष, सन्ध्या काल।

रजवाड़ा दे० (पु०) राज्य, राजसमूह, राजपूताना।

रजस्वला तत्० (स्त्री०) ऋतुमती स्त्री।

रजाई दे० (स्त्री०) राजत्व, ऐश्वर्य भोग, शीतकाल में ओढ़ने का कपड़ा विशेष।

रजाय दे० (पु०) आज्ञा, अनुशासन।

रजायसु दे० (पु०) राजाज्ञा, राजा का आदेश।

रजोगुण तत्० (पु०) प्रकृति के त्रिविध गुणों में का एक गुण।

रजोवती तत्० (स्त्री०) रजस्वला, ऋतुमती।

रज्जु तत्० (स्त्री०) सूत, रस्सी, डोरी, जेवरी।

रञ्जक तत्० (पु०) चित्रकार, रङ्गसाज़, रङ्ग करने वाला।

रञ्जन तत्० (पु०) रङ्गावट, चित्रकारी।

रटन दे० (पु०) घोखना, रटना, एक बात को कई बार कहना।

रटना दे० (क्रि०) बराबर बोलते रहना, कई बार बोलना, दोहराना, तिहराना।

रण तत्० (पु०) युद्ध, लड़ाई, संग्राम, समर।—भूमि (स्त्री०) समर भूमि, युद्ध भूमि, रणक्षेत्र, रणखेत। —वास (पु०) महल, रानियों के रहने का स्थान।

रणित तत्० (पु०) शब्दित, बजता हुआ।

रण्डा तत्० (स्त्री०) राँड़, विधवा, बिना पति की स्त्री।

रण्डापा दे० (पु०) वैधव्य, विधवापन।

रण्डिया दे० (स्त्री०) राँड़, विधवा स्त्री।

रण्डी दे० (स्त्री०) वेश्या, पतुरिया, दुराचारिणी।

रण्डुवा दे० (पु०) बिना स्त्री का, निरस्त्री।

रत तत्० (न०) मैथुन, कामकेलि, स्त्री प्रसङ्ग। (पु०) आसक्त, लवलीन।—जगा (पु०) रात्रि, जागरण, जगहट।—तालिन् (पु०) अध्यापक, उस्ताद, कामुक, भड़ुआ, परस्त्रीगामी।—ताली (स्त्री०) कुटनी, पुंश्चली।

रतन तद्० (पु०) रत्न, हीरा आदि रत्न।

रतनार दे० (पु०) लाल वर्ण का, लाल रङ्ग का।

रतनिया दे० (पु०) एक प्रकार का चावल।

रतवाही दे० (स्त्री०) सुरतैन, रखी हुई स्त्री। (अ०) रात ही रात, रातोंरात।

रताना दे० (क्रि०) कामातुर होना।

रतालू दे० (पु०) आलू विशेष, एक प्रकार का मूल।

रति दे० (स्त्री०) प्रीति, प्रेम, क्रीड़ा, स्त्री-सङ्ग, कामदेव की स्त्री।—पति (पु०) कामदेव, कन्दर्प, अनङ्ग।

रतीचमकना दे० (वा०) बढ़ना, फलना, फूलना, भाग्यवान होना।

रतीवन्त दे० (पु०) भाग्यवान्, प्रारब्धी।

रतौंधा दे० (पु०) एक रोग विशेष, जिस रोग से रात को नहीं सूझ पड़ता।

रतौंधी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, रतौंधा।

रत्ती दे० (स्त्री०) तौल विशेष, आठ यव का तौल।

रत्न तत्० (पु०) मणि, हरिक, जवाहिर, बहुमूल्य पत्थर।—कन्दल (पु०) मूँगा प्रवाल, विद्रुम। —गर्भ (पु०) समुद्र, सागर। (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरती।—जटित (पु०) रत्न खचित, रत्न भूषित, जिसमें रत्न जड़े हों।—जोत (पु०) एक प्रकार का पौधा, आँख की औषध।—माला (स्त्री०) रत्नों की बनी माला, मोती की माला। —सानु (पु०) देवालय, देवलोक, सुमेरु पर्वत।

—सिंहासन (पु०) राजसिंहासन, रत्नों से जड़ा हुआ सिंहासन।—(स्त्री०) मेदिनी, पृथिवी।

रत्नाकर तत्० (पु०) महोदधि, सागर, समुद्र।

रत्नावली तत्० (स्त्री०) रत्नों की माला, रत्न श्रेणि, एक नाटिका का नाम, जिसे राजा श्रीहर्ष ने बनाया था।

रथ तत्० (पु०) गाड़ी, बहल।—कार (पु०) रथ बनाने वाला, बढ़ई वर्णसङ्कर जाति विशेष, माहिष्य जाति के पुरुष से करण जाति की कन्या में उत्पन्न सन्तान को रथकार कहते हैं।—गर्भक (पु०) शिविका, पालकी।—गुप्ति (स्त्री०) रथ का परदा, ओहार।—वान (पु०) सारथी, रथवाह, रथ हाँकने वाला।—वाहक (पु०) सारथी, रथवान, यन्ता।

रथाङ्ग तत्० (पु०) [रथ+अङ्ग] पहिया, चाक, चक्र।

रथी तत्० (पु०) सवार, रथ पर चलने वाला, रथ का स्वामी।

रथ्या तत्० (स्त्री०) गली, मार्ग, राह, बाट, डगर।

रद, रदन तत्० (पु०) दाँत, दशन, दन्त।—च्छद (पु०) ओठ, अधर, ओठ।

रद्दा दे० (पु०) भीत की परत।

रद्दी दे० (स्त्री०) निकम्मा, पुराना कागज़।

रन तद्० (पु०) रण, युद्ध, संग्राम, समर।—गढ़ (पु०) छावनी, शिविर।—वन (पु०) महावन, भयानक वन।—वास (पु०) रानियों के रहने का स्थान।

रन्तिदेव तत्० (पु०) चन्द्रवंशी राजा विशेष।

रन्धना दे० (क्रि०) पकना, सुराना, सिज जाना।

रन्ध्र तत्० (पु०) छिद्र, छेद, बिल।

रपट दे० (स्त्री०) फिसलन, खिसकन, पतन।

रपटना दे० (क्रि०) फिसलना, गिरना, खिसकना।

रपटाना दे० (क्रि०) वेग से दौड़ना, बल पूर्वक दौड़ना, वेग पूर्वक चलना।

रपटा दे० (पु०) अभ्यास, बान, स्वभाव।

रपटाना दे० (क्रि०) दौड़ाना, भगाना, कुदाना।

रपड़ दे० (स्त्री०) श्रम, थकाई, थकावट, दौड़ धूप।

रपड़ना दे० (क्रि०) दौड़ धूप करना, भटकना, थकना, श्रम करना।

रबड़ा दे० (पु०) श्रान्त, थका।

रबड़ी दे० (स्त्री०) बसौंदी, खूब औटा हुआ दूध।

रमचेरा दे० (पु०) गुलाम, किङ्कर, नौकर, सेवक, भृत्य, चाकर।

रमण तत्० (पु०) [रम्+अनट्] चित्त विनोद, क्रीड़ा, खेल, विहार, साथियों के साथ क्रीड़ा।

रमणी तत्० (स्त्री०) मनोहारिणी स्त्री, सुन्दरी, स्त्री, ललना, महिला।

रमणीक तत्० (पु०) मनभावन, मनोहर, सुन्दर।

रमणीय तत्० (पु०) मनोहर, सुन्दर, सुघड़।

रमत दे० (पु०) खेल, क्रीड़ा, कौतुक, विहार।

रमना दे० (क्रि०) रमण करना, खेलना, कूदना।

रमल तत्० (पु०) ज्योतिष शास्त्र का अङ्ग विशेष, प्रश्न शास्त्र।

रमा तत्० (स्त्री०) लक्ष्मी, विष्णुपत्नी।—पति (पु०) विष्णु।

रमाना दे० (क्रि०) खिलाना, फुसलाना, बझाना।

रम्भा तत्० (स्त्री०) स्वर्गाङ्गना विशेष, एक अप्सरा का नाम, केला, कदली।

रम्या तत्० (स्त्री०) रात्रि, सुन्दरी, मनोहारिणी, पद्मिनी।

रय तत्० (पु०) वेग, प्रवाह, धारा।

रलना दे० (क्रि०) मिलना, पिसना, मिश्रना, एकाकार करना।

रलाना दे० (क्रि०) मिलाना, मीचना।

रल्लक तत्० (पु०) कम्बल, पशमीने का कम्बल।

रव तत्० (पु०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद, आहट।

रवन्ना दे० (पु०) रवांस का सेवक।

रवा दे० (पु०) छोटे छोटे कण, चूर, धूल, बालू।

रवि तत्० (पु०) सूर्य, मार्तण्ड, दिवाकर।—तनया

(स्त्री०) यमुना नदी।—नन्दिनी (स्त्री०) यमुना नदी।—पुत्र (पु०) कर्ण, सुग्रीव, यमराज, शनैश्चर।—मणि (पु०) सूर्यकान्तमणि, सूर्य का मणि।—मण्डल (पु०) सूर्यमण्डल, सूर्यलोक। —वार आदित्यवार, इतवार।

रशना तत्० (स्त्री०) जीभ, जिह्वा।

रश्मि तत्० (स्त्री०) किरण, तेज, कान्ति, मयूख, रास, घोड़े की बागडोर।

रस तत्० (पु०) स्वाद, सवाद, अर्क, सार, निष्कर्ष, षट् रस, भोजन के रस, शृङ्गार हास्य आदि नव रस, पारा, मेल, मिलाप, भस्म, औषधियों का भस्म।—रस (अ०) धीरे धीरे।—ज्ञ (पु०) रसिक, रसज्ञाता, रस समझने वाला।—ज्ञा (स्त्री०) जीभ, रसना।—राज (पु०) पारा धातु।

रसन तत्० (पु०) स्वाद, चीखना।

रसना तत्० (स्त्री०) रसज्ञा, जीभ, जिह्वा।

रसमसा दे० (गु०) भींजा, भींगा, आर्द्र, ओदा।

रसमसाना दे० (क्रि०) भींगना, आर्द्र होना, पसीजना।

रसरा दे० (पु०) डोरी, मोटी रस्सी जिससे पानी खींचा जाता है।

रसवत दे० (स्त्री०) रसौत, अञ्जन विशेष।

रसवती तत्० (स्त्री०) रसीली, रसयुक्ता, मधुर, मीठा, सुशीला।

रसा तत्० (स्त्री०) पृथिवी, भूमि, धरती, धरणी।

रसाञ्जन तत्० (पु०) काजल, सुर्मा।

रसातल तत्० (पु०) पृथिवी तल, अधोलोक विशेष, सातवाँ लोक, बलिराज का लोक।

रसाना दे० (क्रि०) जोड़ना, मिलाना, संयुक्त करना।

रसायन तत्० (पु०) कीमिया, रस विशेष, प्राण बचाने वाले रस।—विद्या (स्त्री०) रस सम्बन्धी विद्या, जिसमें धातुओं का मिलाना पृथक् करना आदि बातें लिखी हैं।

रसाल तत्० (पु०) आम, आम्र।

रसिक तत्० (पु०) रसज्ञ, रसज्ञाता, रसीला, रसिया लम्पट, दुराचारी, गुण्डा।

रसिकाई तद्० (स्त्री०) रसिकता।

रसिया दे० (पु०) रसिक, रसज्ञ, लम्पट, आसक्त।

रसियाना दे० (क्रि०) गीला होना, भींगना।

रसीद दे० (स्त्री०) पहुँच, पत्र, संवादपत्र।

रसीला दे० (गु०) रसयुक्त, रसपूर्ण, रस विशिष्ट।

रसुन दे० (स्त्री०) लहसुन, कन्द विशेष।

रसे दे० (अ०) धीरे धीरे, हौले हौले, शनैः शनैः।

रसोइया दे० (पु०) रिंधैया, पाचक, पकाने वाला।

रसोई दे० (स्त्री०) पाक, भोजन।

रसौत दे० (पु०) अञ्जन विशेष, रसवत।

रस्सा दे० (पु०) डोरी, जेवरी।

रस्सी दे० (स्त्री०) डोरी, रसरी।

रहकला दे० (स्त्री०) छोटी तोप, तुपक।

रहकला दे० (पु०) छकड़ा, गाड़ा, सामान ढोने वाली गाड़ी।

रहचोला दे० (पु०) लल्लो पत्तो, चापलूसी, मीठी बातें।

रहआना दे० (वा०) बाट जोहना, ठहरना, प्रतीक्षा करना।

रहट दे० (स्त्री०) गरारी, चर्खी, पानी निकालने की कल।

रहटा दे० (स्त्री०) चरखी, गरारी।

रहड़ू दे० (पु०) सगड़, छकड़ा।

रहत दे० (पु०) टिकाव, ठहराव, स्थिति, वास।

रहते दे० (अ०) सामने, आँख के सामने।

रहन दे० (स्त्री०) चलन, रीति, व्यवहार, भाँति।

रहना दे० (क्रि०) टिकना, ठहरना, बसना।

रहमार दे० (पु०) बटमार, चोट्टा, चोर, तस्कर, डाँकू।

रहला दे० (पु०) चणक, चना, बूट, बोड़ा।

रहवा दे० (पु०) चेला, लौंडा, दास, भृत्य, नौकर।

रहवाई दे० (स्त्री०) घर का भाड़ा, घर में रहने का किराया।

रहवैया दे० (पु०) वासी, निवासी, ठहरने वाला, रहने वाला ।

रहस तद्० (पु०) ठठोलपन, हसौवा, हसोड़पन ।

रहसना दे० (क्रि०) हुलसना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, हर्षित होना ।

रहस्य तद्० (पु०) एकान्त निर्जन, निगूढ़, गोपनीय, गुप्त ।

रहाइस दे० (स्त्री०) स्थिति, वास, टिकाव ।

रहाव दे० (पु०) रहन, स्थिति, टिकाव ।

रहित तद्० (पु०) वर्जित, हीन, शून्य, बिना ।

राई दे० (स्त्री०) सर्षप, सरसों, राजिका, (पु०) राजा, प्रधान, स्वामी, यह राजा के अर्थ में संज्ञा शब्दों के पीछे आता है । यथा—रघुराई, यदुराई ।

राईया दे० (स्त्री०) राजिका, सर्षप, सरसों, तोरी ।

राउ दे० (पु०) राजा ।

राउत तद्० (पु०) राजपुत्र, मान्य, ठाकुर, अहीरों की उपाधि ।

राए दे० (पु०) राजा, राणा, राजपुत्र, राजपूत । —रायान (पु०) राज राज, महाराज, राजों में प्रधान ।

रायता दे० (पु०) व्यञ्जन विशेष ।

रायबाँस दे० (पु०) भाला, बर्छी ।

राँगरांगा दे० (पु०) धातु विशेष, सीसा ।

राँझन दे० (पु०) प्रिय, प्रियतम; सज्जन एक प्रसिद्ध प्रणयी, राजपूताने में इसका स्वांग रचते हैं ।—

राँझरा दे० (पु०) खिझौना वाला ।

राँझा दे० (पु०) प्यारा, प्रिय, प्रियतम, स्नेही, प्रेमी ।

राँड़ दे० (स्त्री०) रण्डा, विधवा, अपतिका, बिना पति की स्त्री ।—का साँड़ (वा०) विधवा पुत्र, बिगड़ा हुआ लड़का ।

राँड़ा (पु०) बाँझ, बन्ध्या, बिना फल का, अफला ।

राँधनी दे० (स्त्री०) शाक विशेष, एक साग का नाम ।

राँद पड़ोस दे० (पु०) पड़ोस पड़ोस ।

राँधना दे० (क्रि०) रींधना, पकाना, सींझना, उबालना, रसोई बनाना ।

राँपी दे० (स्त्री०) खुर्पी, घास काटने का अस्त्र, करणी ।

राँभना दे० (क्रि०) गाय का शब्द, हकरना ।

राका तद्० (स्त्री०) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनों । —पति (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा ।

राख दे० (स्त्री०) भस्म, भभूत ।

राखना दे० (क्रि०) रखना, धरना, ठहराना, रक्षा पूर्वक ठहराना ।

राखी दे० (स्त्री०) रक्षा, गण्डा, रक्षासूत्र, रेशम या सूत का बना हुआ गण्डा, जो सावन की पूर्णिमा को हाथ में बाँधी जाती है ।

राग तद्० (पु०) रङ्ग, लाल, क्रोध, अनुराग, प्रेम, स्नेह, गाने का सुर, भैरव, मल्लार, मेघ, श्री, सारङ्ग, हिण्डोल, बसन्त और दीपक ये छः राग हैं ।—छाना (वा०) आनन्द होना, आनन्द मनाना ।—रङ्गना (वा०) गाना, बजाना ।

रागना दे० (क्रि०) गीत गाना, गाना प्रारम्भ करना ।

रागिणी तद्० (स्त्री०) राग भेद, राग, रागिनी छत्तीस हैं । भैरव आदि छः रागों में प्रत्येक राग की छः छः रागिणी होती हैं ।

रागी तद्० (पु०) गायक, गान निपुण, प्रिय क्रोधी ।

राघव तद्० (पु०) रघुनाथ, श्रीरामचन्द्र, रघुराज, रघुवंश के राजा ।

राचना दे० (क्रि०) प्रेम विवश होना, मिलना, लगना, लीन होना ।

राछ दे० (पु०) शिल्पियों के अस्त्र, बढ़ई आदि कारीगरों के औज़ार ।

राज तद्० (पु०) राज्य, राजा का अधिकार, कारीगर, संगतराश, थवई ।—कन्या (स्त्री०) राजा की बेटी, राजकुमारी, राजकुँवरी ।—कर (पु०)

राजस्व, राजकर, लगान, राजा को दिया जाने वाला धन, यह अंश।—कीय (पु०) राजा का, राज-सम्बन्धी, राजावत, सरकारी, बादशाही।—कीय महासभा (स्त्री०) राजा का दरबार, शाही दरबार।—कुटुम्ब (पु०) राजघराना, राजवंश, राजकुल।—कुमार (पु०) राजपुत्र, राजा का वह पुत्र जो राजा का अधिकारी हो।—कृत्य (पु०) राजकाज, राजा का काम।—कोश (पु०) राजा का खजाना, राजा का वह खजाना जो प्रजा के लाभ के लिये जमा रहता है, जिसके रुपये प्रजा की भलाई के लिये लगाये जाते हैं।—गादी (स्त्री०) राजासन, राजा का आसन, सिंहासन, राजगद्दी।—त्व (पु०) राजा का अधिकार, राजा का काम, प्रभुता।—द्वार (पु०) राजा के महल का द्वार, बड़ा द्वार, सुरद्वार, नगर का फाटक।—दण्ड (पु०) राजा की शक्ति विशेष, शासन सम्बन्धी बल, राजा का दिया हुआ दण्ड।—द्रोही (पु०) राज्य का द्रोह करने वाला, राजा का अशुभचिन्तक।—धर (पु०) अमात्य, मन्त्री, सचिव।—धानी (स्त्री०) राजनगर, राजा का मुख्य नगर, जहाँ राजा रहते हों।—नीति (स्त्री०) राजा के शासन करने की रीति, ग्रन्थ विशेष।—पत्नी (स्त्री०) राजा की स्त्रियाँ।—पुत्र (पु०) राजकुमार, राजपूत, क्षत्रिय।—भोग (पु०) बड़ा भोग, दोपहर का बड़ा भोग, मध्यान्ह काल का नैवेद्य।—मन्दिर (पु०) राजभवन, राजा का महल।—मार्ग (पु०) राजपथ, सड़क।—राणी (स्त्री०) महारानी, राजा की रानी।—रोग (पु०) क्षय रोग, बड़े रोग जो अच्छे नहीं होते।—शासन (पु०) राजा का दण्ड।—सूय (पु०) यज्ञ विशेष, राजा के करने का यज्ञ।—हंस (पु०) पक्षी विशेष।

राजना दे० (क्रि०) चमकना, शोभना, शोभित होना, विराजना।

राजस तत्० (पु०) रजोगुण, अहङ्कार, गर्व।

राजस्व तत्० (पु०) राजकर, राजधन, राजा को देय धन, मालगुजारी।

राजा तत्० (पु०) नृपति, भूपति, भूमिपाल भूपाल।

राजाज्ञा तत्० (स्त्री०) राजा की आज्ञा, राजादेश।

राजी तत्० (स्त्री०) पंक्ति, पाँति, श्रेणि, अवलि

राजेश्वर तत्० (पु०) [राजा+ईश्वर] महाराजाओं के मालिक, महीपति।

राज्ञी तत्० (स्त्री०) महारानी, महिषी, राजपत्नी।

राज्य तत्० (पु०) राज, देश, राष्ट्र राजा का अधिकृत देश, राजा का अधिकार स्थित देश।

राढ़ी दे० (पु०) ब्राह्मण विशेष, राढ़ देशी ब्राह्मण।

राणा दे० (पु०) राजपूत, क्षत्रिय विशेष, राजा।

राणी दे० (स्त्री०) राज्ञी, राजपत्नी, रानी।

रात तद्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, निशा, रैन।

रातना दे० (क्रि०) रङ्गना, रङ्ग देना, लाल रङ्ग में रङ्गना।

राता तद्० (पु०) रक्त, लाल, लाल रङ्ग में रङ्गा हुआ।

रतौंधिया दे० (पु०) रात्र्यन्ध, रात का अन्धा, धुन्धला।

रात्रि तत्० (स्त्री०) रात निशा, रैन।—चर (पु०) राक्षस, निशाचर, भूत, राक्षस।

राद दे० (पु०) पीब, पीप, बिगड़ा खून।

राधा तत्० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की स्त्री, गोपी, वृषभान की पुत्री।—कान्त (पु०) श्रीकृष्ण।—कुण्ड (पु०) गोवर्द्धन पर्वत के पास का एक कुण्ड जिसे श्रीकृष्ण ने खुदवाया था।—वल्लभ (पु०) श्रीकृष्ण।

राधिका तत्० (स्त्री०) राधा नाम की गोपी।

राब दे० (स्त्री०) गुड़ का रस, सीरा, छोआ।

राबड़ी दे० (स्त्री०) रबड़ी, बसौंदी।

राम तत्० (पु०) परशुराम, भगवान् का अवतार। ये जमदग्नि ऋषि के पुत्र थे, और इन्होंने इक्कीस बार क्षत्रियों का नाश किया था रामचन्द्र यह भी भगवान् ही के अवतार थे। राजा दशरथ के यहाँ

थे प्रकट हुए थे। बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई। —कहानी (स्त्री०) बड़ी कहानी, दुःख पूर्ण कथा।—राम (अ०) प्रणाम, सलाम, घृणा बोधक।—कली (स्त्री०) रागिणी विशेष, एक रागिनी का नाम।—गिरि (पु०) पर्वत विशेष, चित्रकूट पर्वत, यह बुन्देलखण्ड में है।—जनी (स्त्री०) लौंडी, वेश्या, पतुरिया।—तरोई (स्त्री०) एक तरकारी का नाम, भिण्डी।—दूत (पु०) रामचन्द्र का दूत, हनुमान।—दोहाई (पु०) राम की शपथ, राम की सौगन्द।—रस (पु०) लवण, नून, निमक।—शर (पु०) नरकट, तृण विशेष।

रामा तत्० (स्त्री०) नारी, सुन्दरी स्त्री।

रामानन्दी दे० (पु०) वैरागी, साधु, रामानन्द के अनुयायी।

रामानुज तत्० (पु०) विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के प्रचारकों में ये सर्वाग्रगण्य थे। इन्होंने भारतवर्ष में जैनियों और मायावादियों का प्रभाव हटाने के लिये प्राणपण से प्रयत्न किया था और अपने प्रयत्न में सफल भी हुए थे। स्मृति-काल तत्त्व में इनके प्रकट होने का समय शकाब्द १०४६ अर्थात् ११२७ ई० बतलाया गया है। परन्तु कोई कोई इनका जन्म १००३ ई० में मानते हैं। इन्होंने विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

रामायण तत्० (पु०) रामकथा, एक ग्रन्थ विशेष, जिसके कर्ता गोस्वामी तुलसीदासजी हैं।

रामावत दे० (पु०) साधु विशेष, रामानन्दी साधु।

राय दे० (पु०) क्षत्रियों की उपाधि।

रायता दे० (पु०) रायता, व्यञ्जन विशेष।

रायमुनिया दे० (पु०) चावल विशेष, एक प्रकार का चावल।

रार दे० (पु०) झगड़ा, विवाद, विरोध, विद्वेष, कलह।

राल दे० (पु०) धुना, कराल, एक प्रकार का गोंद, जो धूप में डाली जाती है।

राव दे० (पु०) राय, राई, राजकुमार क्षत्रियों की उपाधि।—चाव (पु०) राव रङ्ग, भोग विलास।

रावटी दे० (स्त्री०) तम्बू, क़नात।

रावण तत्० (पु०) दशानन, लङ्का का अधिपति।

रावत दे० (पु०) वीर, बहादुर, सूरमा, सावन्त।

रावरा, रावरो (सर्व) तुम्हारा।

राशि तत्० (स्त्री०) धान आदि का ढेर, मेष, वृष आदि बारह राशि, गणित का एक अङ्क विशेष।—चक्र (पु०) राशि चक्र, भग्रह मण्डल, द्वादश भाव।

राष्ट्र तत्० (पु०) बसा हुआ देश, शासित देश, देश शासन प्रणाली।

रास तत्० (पु०) क्रीड़ा, खेल, व्याज, एक प्रकार का नृत्य, छोटे छोटे लड़के और लड़कियाँ पहले आपस में एक दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते थे। जैसा आज कल श्रीकृष्ण लीला होती है।

रासन तत्० (पु०) रसना से उत्पन्न ज्ञान, जीभ का स्वाद।

रासभ तत्० (पु०) गदहा, गर्दभ।

रासी दे० (पु०) मध्यम।

राहना दे० चक्की में दाँत बनाना।

राहु तत्० (पु०) आठवाँ ग्रह, दैत्य विशेष, केतु का सिर, कहते हैं यही चन्द्रमा और सूर्य को ग्रसता है।—ग्रास (पु०) ग्रहण, चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण।

रिक्त तत्० (पु०) खोखला, शून्य, रीता।

रिचा तत्० (स्त्री०) ऋक्, वेद का मन्त्र विशेष।

रिझवैया दे० (पु०) रिझने वाला, चिढ़नेवाला, प्रसन्न करने वाला।

रिझाना दे० (क्रि०) प्रसन्न करना, मनाना, सताना, पीड़ा देना, दुःख देना।

रिताना दे० (क्रि०) रिक्त करना, छूँछा करना, शून्य करना।

रितु तद्० (स्त्री०) ऋतु, समय।—राज (पु०) वसन्त।

रिद्धि तद्० (स्त्री०) वृद्धि, सम्पत्ति, बढ़ती।

रिपु तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, द्वेषी, विरोधी।—ता (स्त्री०) शत्रुता, द्वेष, विरोध।

रिपुञ्जय तत्० (पु०) अति बलवान्, शत्रुजयी।

रिस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप, खिसियाहट, अप्रसन्नता।

रिसना दे० (क्रि०) क्रोध करना, खिसियाना, झरना, टपकना, चूना, गिरना।

रिसहा दे० (स्त्री०) क्रोधी, कोपी।

रिसाना दे० (क्रि०) क्रोध युक्त होना, क्रोध करना।

री दे० (अ०) अरी, नीच सम्बोधन।

रींगना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, खिझना, खिसियाना।

रींधना दे० (क्रि०) पकाना, चुराना, उबालना।

रीछ तद्० भालु, ऋक्ष, भल्लुक।

रीझ दे० (स्त्री०) चाह, इच्छा, प्यार, अभिलाष, लीला, कौतुक।

रीझना दे० (क्रि०) प्रसन्न होना, प्रीति करना।

रीढ दे० (स्त्री०) पीठ के बीच की हड्डी।

रीता दे० (गु०) शून्य, खाली, छूँछा, रिक्त।

रीति तत्० (स्त्री०) चाल, चलन, प्रकार, व्यवहार।

रीरियाना दे० (क्रि०) घिघियाना, गिड़गिड़ाना, रेरकरना।

रोस दे० (स्त्री०) क्रोध, कोप।

रुक तत्० (पु०) रोग, उदार, दाता, दीप्ति, प्रकाश, उजियाहट।

रुकना दे० (क्रि०) अटकना, बन्द होना, प्रतिहत होना, विरत होना।

रुकवैया दे० (पु०) रोकने वाला, प्रतिबन्धक, छेंक, रुकावट।

रुकाव दे० (पु०) छेंक बाधा, प्रतिबन्धक, रोक, अटकाव।

रुक्म तत्० (पु०) सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्य, राजा भीष्मक का बड़ा बेटा, यह रुक्मिणी का भाई था और श्रीकृष्ण का साला।

रुक्मिणी तत्० (स्त्री०) कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की पुत्री, जिसे श्रीकृष्ण ने ब्याहा था।

रुखा तत्० (गु०) रूखा, कठोर, स्नेह रहित, अचिक्कण।

रुख दे० (पु०) सन्मुख, सामना, आमना सामना सम्मति, अनुमति।

रुखाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कड़ाई, रूक्षता।

रुग्न तद्० (गु०) रोगी, टेढ़ा, बाँका, तिरछा।

रुच तद्० (स्त्री०) रुचि, इच्छा, अभिलाष, मनोरथ।

रुचक तत्० (पु०) आभूषण विशेष माला, माङ्गल्य द्रव्य, सज्जीखार।

रुचना दे० (क्रि०) अच्छा लगना, मनोहर, मालूम होना, भाना।

रुचि तत्० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष।

रुच्य तत्० (गु०) सुन्दर, मनोहर, रुचिकर।

रुजा तत्० (पु०) रोग, बीमारी।

रुण्ड तत्० (पु०) धड़, विना सिर का देह, कबन्ध।

रुदन तत्० (पु०) रोना, रोदन, रुलाई, अश्रुपात करना, आँसू बहाना, विलाप।

रुद्ध तत्० (गु०) रुका हुआ, छेंका हुआ, अटका हुआ, बंधा हुआ।

रुद्र तत्० (पु०) शिव, महादेव, रुद्र एकादश कहे जाते हैं।

रुद्राक्रीड तत्० (पु०) रुद्र + आक्रीड, श्मशान, रुद्र का विनोद स्थान।

रुद्राक्ष तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जिसके दानों की माला शैव और संन्यासी लोग पहनते हैं।

रुद्राणी तत्० (स्त्री०) शिवा, भवानी, पार्वती, उमा।

रुधिर तत्० (पु०) रक्त, शोणित, खून।

रुपना दे० (क्रि०) ठकना, अड़ना, थमना।

रुपया दे० (पु०) मुद्रा, चाँदी का सिक्का।

रुपहरा दे० (गु०) रूपा का बना हुआ, रूपा सम्बन्धी।

रुपैया दे० (पु०) रुपया, मुद्रा, सिक्का।

रुलना दे० (क्रि०) लोहे से पीसना, चूरकरना, चूर्ण करना, बुकना।
रुलाना दे० (क्रि०) दुख देना, दुखाना, पीड़ा, पहुँचाना।
रुसना (क्रि०) रिसाना, रुष्ट होना, अप्रसन्न होना, कोपना, क्रोध करना।
रुष्ट तत्० (गु०) क्रुद्ध, कुपित।
रुई दे० (स्त्री०) रूआ, कपास, तूल।
रुइया दे० (पु०) रुई का व्यापारी, रूए का।
रुँगटा दे० (पु०) रोम, रोवाँ, लोम, शरीर पर के बाल।
रुँघट दे० (स्त्री०) मैल, मल, मलिनता।
रुँधना दे० (क्रि०) रोकना, रुकावट डालना, छेंकना, अगोरना।
रुख दे० (पु०) वृक्ष, पेड़, तरु, तरुवर।
रुखड़ दे० (पु०) योगी विशेष।
रुखड़ा दे० (पु०) छोटा पेड़, बिरवा, पौधा।
रूखा दे० (गु०) रुक्ष, कठिन, कठोर, सूखा।
रुखाई दे० (स्त्री०) कठोरता, कठिनता, रूखापन।
रुखानी दे० (स्त्री०) अस्त्र विशेष, छेनी, काँटी।
रुखो दे० (स्त्री०) चिखुरी, गिलहरी।
रुज दे० (पु०) कोट विशेष।
रुग्ना दे० (गु०) रोग से पीड़ित, रुग्न।
रूठना दे० (क्रि०) अप्रसन्न होना, रूसना, झगड़ना, बिगड़ना।
रूठनो दे० (गु०) झगड़ालू, अव्यवस्थित चित्त।
रूढ़ तत्० (पु०) उत्पन्न, प्रसिद्ध।
रूढ़ि तत्० (स्त्री०) उत्पत्ति, प्रसिद्धि, शब्दार्थ विशेष, प्रकृति प्रत्ययगत अन्य अर्थ होने पर भी, अन्यार्थ वाचक शब्द रूढ़ि कहे जाते हैं।
रूप तत्० (पु०) आकार, आकृति सुन्दरता; —अस्त (पु०) राँगा।—निधान (पु०) अतिशय सुन्दर।—रस (पु०) रूपा का भस्म।—राशि (पु०) सुन्दरता का समूह, अतिशय सुन्दर।—वती (स्त्री०) रूपवाली, सुरूपा, सुन्दरी।—वान (गु०) सुन्दर, सुरूप, सुघड़।—हला (पु०) रूपे का बना, रूपावाला।
रूपा तत्० (पु०) रजत, चाँदी, श्वेत, धातु विशेष।
रूमटी दे० (स्त्री०) घोल घुमाव, मिस, बयाल, बहाना।
रूमाल दे० (पु०) अँगोछा, छोटा अँगोछा।
रूसना दे० (क्रि०) रूठना, कुपित होना, क्रुद्ध होना।
रूसी दे० (स्त्री०) सिर का मैल, चाँई।
रे दे० (अ०) नीच सम्बोधन।
रेंक दे० (पु०) गदहे की बोली।
रेंकना दे० (क्रि०) गधा का बोलना।
रेंगना दे० (क्रि०) चलना, फिरना, धीरे धीरे चलना।
रेंट दे० (स्त्री०) रहट, पानी निकालने का कल, जरखी।
रेंटा दे० (पु०) पोंटा, नेटा, नासिका का मल।
रेंड़, रेंड़ी दे० (स्त्री०) अरण्ड का वृक्ष, रेंड़ का पेड़।
रेंदी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का खरबूजा, छोटा खरबूजा।
रेख तत्० (स्त्री०) रेखा, लकीर, चिन्ह, बिन्दु समूह, जिसकी मोटाई न हो, किन्तु केवल लम्बाई हो वह रेखा कही जाती है। भाग्य, प्रारब्ध।
रेखा तत्० (स्त्री०) लकीर, चिन्ह, ललाट, कपाल, भाग्य, प्रारब्ध।
रेघारी दे० (स्त्री०) हलकी रेखा, चिन्ह।
रेणु तत्० (स्त्री०) रेणु, धूली, माटी की बुकनी, रज।
रेतः तत्० (पु०) वीर्य, शुक्र, धातु, शरीरस्थ सप्त धातुओं के अन्तर्गत मुख्य धातु।
रेतना दे० (क्रि०) काटना, शस्त्र को तेज करना, ऐसा काटना जिससे धीरे धीरे कटे।
रेतल दे० (पु०) किरकिरा, रेतीला, ककरैल।
रेता दे० (पु०) बालू, रेणु, रेत।
रेताई दे० (स्त्री०) रेतने की मजूरी।

रेतियाना दे० (क्रि०) रेतना, चिकनाना, तेज करना।

रेती दे० (स्त्री०) बालू, रेता, किरकिरा, सोहन।

रेतीला दे० (पु०) रेतयुक्त, रेतसहित, बलुवा, किरकिरा, कँकरैल।

रेतुआ दे० (पु०) रेतने वाला, रेतने का काम करने वाला।

रेफ तत्० (पु०) रकार, र अक्षर, व्यञ्जन का सत्ताइसवाँ अक्षर, र, ˈ ।

रेलना दे० (क्रि०) ठेलना, धक्का देना, धकेलना।

रेलपेल दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई, बहुतायत।

रेला दे० (पु०) बाढ़, नदी की वृद्धि, पशुओं की श्रेणी, ढकेल, धक्का।

रेवड़ी दे० (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।—के फेर में पड़ना (वा०) फन्दे में फँसना, कठिनता में पड़ना।

रेवती तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, सत्ताईसवाँ नक्षत्र, एक राजकन्या, जो बलराम को ब्याही गई थी।

रेवा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, नर्मदा नदी।

रेह दे० (स्त्री०) सज्जी, मिट्टी का एक प्रकार का खार विशेष, जो कपड़े साफ़ करने के काम में आती है।

रेहड़ू दे० (पु०) एक प्रकार की गाड़ी, लहडू।

रेहला दे० (पु०) चना, चणक, बूट।

रेह पेह दे० (स्त्री०) अधिकता, अधिकाई।

रैन दे० (स्त्री०) रात्रि, रात, निशा, रजनी।

रैवत तत्० (पु०) पर्वत विशेष, जो द्वारका के पास है जो आजकल गिरनार के नाम से प्रसिद्ध है। महादेव, चौदह मनुओं में का एक मनु, रैवती का पिता।

रोआँ दे० (पु०) रोम, रूँगटा, लोम।

रोआई दे० (स्त्री०) रोना, विलाप, रोदन, हाहाकार।

रोआना दे० (क्रि०) रुलाना, दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना।

रोआस दे० (पु०) रुलाई, रोवाँस, रोने की इच्छा

रोँए दे० (स्त्री०) रोँवा रूँगटा, लोम।

रोँगटी दे० (स्त्री०) झगड़ा, ठगविद्या, धूर्तता।

रोँट दे० (स्त्री०) छल, वञ्चना, प्रतारण, बहाना, व्याज मिष।

रोँटना दे० (क्रि०) मुकरना, नकारना, छल करना बहाना करना, घोल घुमाव करना।

रोँटिया दे० (पु०) विश्वासघातक, छली, कपटी प्रपञ्ची।

रोँपना दे० (क्रि०) लगाना, गाड़ना, वृक्ष आदि लगाना, एक स्थान से उखाड़ कर दूसरी जगह बोना।

रोँवा दे० (पु०) रोम, रोँआ, रूँगटा।

रोक दे० (स्त्री०) अटक, छेंक, रुकाव, अटकाव

रोकड़ दे० (स्त्री०) नगद, नक़दी, रुपैया पैसा।

रोकड़िया दे० (पु०) कोठारी, भण्डारी, खजानची रुपया पैसा रखने वाला।

रोकन दे० (स्त्री०) आड़, ओट, बाधा, व्याघात प्रतिबन्ध।

रोकना दे० (क्रि०) घेरना, अवरुद्ध करना, अटकाना घेरा डालना, बन्द करना, थामना।

रोकू दे० (पु०) रोकने वाला, बाधक, प्रतिबन्धक बाधाकर्ता, व्याघातकर्ता।

रोग तत्० (पु०) व्याधि, पीड़ा, दुःख, शारीरिक अस्वस्थता।—ग्रस्त (पु०) रोगी, रोग-पीड़ित, व्याधित, व्याधिग्रस्त।

रोगिया तद्० (पु०) रोगी, रोगग्रस्त।

रोगी तत्० (पु०) रोगिया, रोगग्रस्त, पीड़ित अस्वस्थ।

रोचक तत्० (पु०) रुचिकारक, पाचक, मनभावन।

रोचना तत्० (स्त्री०) गोरोचन, हरदी, पीला कुंकुम।

रोचिष्णु तत्० (पु०) दीप्तिशील, प्रकाशमान, शोभाशील, रुचने योग्य।

रोज दे० (पु०) दिन, दिवस, विलाप, रोदन।

रोझ दे० (पु०) नीलगाय, मृग विशेष।

रोट दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी रोटी, जो प्रायः हनुमानजी के नैवेद्य के लिये बनाई जाती है।

रोटा दे० (पु०) रोट, मोटी रोटी।

रोटी दे० (स्त्री०) स्वनाम प्रसिद्ध भोजनीय वस्तु, फुलका।

रोड़ा दे० (पु०) बड़ा कङ्कर, ईंट पत्थर आदि के टुकड़े।

रोदन तत्० (पु०) रुदन, रुलाई, रोना, अश्रुपात, आँसू बहना।

रोध तत्० (पु०) तट, तीर, किनारा, करारा, नदी का तट, रोक, रुकावट, अटकाव।

रोधन तत्० (पु०) रोकाव, अटकाव, प्रतिबन्ध।

रोना दे० (क्रि०) रोदन करना, आँसू बहाना, डबडबाना।

रोपण तत्० (पु०) स्थापन, पेड़ लगाना, वपन।

रोपना दे० (क्रि०) वृक्ष आदि का लगाना, रोपण करना।

रोपा तत्० (पु०) रोपणकर्ता, रोपने वाला, लगाने वाला, पेड़ या धान आदि का रोपण करने वाला।

रोम तत्० (पु०) लोम, बाल, केश, रोंआ।—कूप (पु०) रोम का छिद्र, रोंआ के निकलने का स्थान।—पाट (पु०) रोम का बना वस्त्र, दुशाला, कम्बल।—हर्षण (पु०) भयानक, भयङ्कर, कठिन कार्य।

रोमक तत्० (पु०) देश विशेष, रूम देश। (पु०) रोम देश के वासी, रूमी।

रोमन्थ तत्० (पु०) पगुराना, पगुरी करना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना।

रोमाञ्च तत्० (पु०) रोंओं का खड़ा होना, सिहरना, भय या हर्ष से रोओं का उठ जाना, पुलक।

रोमाञ्चित तत्० (पु०) हर्ष या भय से शरीर के रोओं का खड़ा होना, पुलकित।

रोमावली (स्त्री०) रोम श्रेणि, रोएँ की पंक्ति जो नाभि के पास से निकलती है।

रोर दे० (स्त्री०) हुल्लड़, धूमधाम, भीड़भाड़।

रोरीकर दे० (अ०) बहुत कष्ट, अतिशय क्लेश से।

रोलना दे० (क्रि०) बराबर करना, चिकना करना, चिकनाना।

रोली दे० (स्त्री०) कुंकुम, एक प्रकार का रङ्ग, साधु जिसका तिलक लगाते हैं।

रोष तत्० (पु०) क्रोध, कोप, रीस, अप्रसन्नता।

रोहिणी तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, चौथा नक्षत्र, बलराम की माता।

रोहित, रोहू तत्० (पु०) एक प्रकार की मछली।

रौंदना दे० (क्रि०) कुचलना, पीसना, चूर करना, चूर्ण करना।

रौंधना दे० (क्रि०) रोकना, बन्द करना, कुचलना।

रौद्र तत्० (पु०) भयानक, भयङ्कर। (पु०) रस विशेष।

रौर दे० (पु०) रौला, कीर्ति, प्रसिद्धि।

रौरव तत्० (पु०) नरक विशेष, अति कष्टदायक नरक।

रौला दे० (पु०) धूमधाम, बखेड़ा, हाहल्ला।

ल

ल यह व्यञ्जन का अट्ठाईसवाँ अक्षर है, दन्त से यह उच्चारित होता है इसी से इसे दन्त्य कहते हैं।

ल तत्० (पु०) इन्द्र, मन्त्र, काय, दीप्ति, प्रकाश।

लकड़ दे० (पु०) काष्ठ, काठ, लकड़ी, कुन्दा।—हारा (पु०) लकड़ी चीरने वाला, आराकश, लकड़ी बेचने वाला।

लकड़ा दे० (पु०) लक्कड़, बड़ा कुन्दा, लकड़ी के बड़े मोटे।

लकड़ी दे० (स्त्री०) काठ, इन्धन, काष्ठ, जलावन, जलाने की लकड़ी, छड़ी, डंडा ।

लकीर दे० (स्त्री०) रेखा, धारी, चिन्ह, पंक्ति, पाँत ।

लकुट दे० (पु०) लगुड़, छड़ी, लाठी, यष्टि ।

लक्ष तत्० (पु०) संख्या विशेष, लाख, सौ हजार, व्याज, बहाना, कैतव, कपट, अपदेश ।

लक्षक तत्० (पु०) दर्शक, दिखाने वाला, बताने वाला ।

लक्षण तत्० (पु०) चिन्ह, पहचान, स्वभाव प्रकार, रीति, भाँति ।

लक्षित तत्० (पु०) जाना हुआ, विदित ज्ञात, परिचित ।

लक्षणा तत्० (स्त्री०) शब्द की शक्ति विशेष, शब्दार्थ से सम्बन्ध रखने वाले, वस्त्वन्तर का बोधक, अध्याहार, सारसी, सारस पक्षी की स्त्री ।

लक्ष्मण तत्० (पु०) श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई, महाराज दशरथ की छोटी रानी सुमित्रा का पुत्र ।

लक्ष्मणा तत्० (स्त्री०) श्रीकृष्ण की पटरानियों में से एक पटरानी, यह मद्रदेश के राजा की कन्या थी । (२) दुर्योधन की कन्या, श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने इसे हर कर ब्याहा था ।

लक्ष्मी तत्० (स्त्री०) विष्णुप्रिया, इन्दिरा, कमला, लोकमाता, हरिवल्लभा । समुद्र से निकले हुए चौदह रत्नों के अन्तर्गत रत्न विशेष, ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति, सम्पदा ।—कान्त,—नाथ—पति (पु०) विष्णु, नारायण, रामनाथ, रमापति, भगवान्, रमेश ।

लक्ष्म तत्० (पु०) चिन्ह, अङ्क ।

लक्ष्य तत्० (पु०) निशाना, उद्देश्य ।

लखना दे० (क्रि०) पहचानना, चीन्हना, ताड़ना, जानना, देखना, भालना ।

लखपति तद्० (पु०) लक्षपति, धनी, धनवन्त, लक्षाधीश ।

लखमया दे० (पु०) औषध विशेष मूर्च्छा की औषधि ।

लखलखाना दे० (क्रि०) हाँफना ।

लखलूट दे० (गु०) उड़ाऊ, अपव्ययी, लुटा, खर्चीला ।

लखा दे० (पु०) लखे, लक्षित, देखा, दृष्ट, ज्ञात, जाना ।

लखाऊ दे० (पु०) लखने योग्य, जानने योग्य, समझने लायक ।

लखिया दे० (पु०) लखनहार, ताड़नहार, लखक जानने वाला, समझने वाला ।

लखेरा दे० (पु०) जाति विशेष, लाह का काम करने वाली जाति, लहेरा, लाख चढ़ैया ।

लखौरा दे० (गु०) लाह से बना हुआ, लाखी ।

लग दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि, लौं, साथ, सङ्ग ।
—चलना (वा०) साथ साथ चलना, पास जाना ।
—भग (अ०) आस पास, निकट, प्राय , करीब, अन्दाजन ।

लगड़ दे० (पु०) पक्षी विशेष, बाज ।

लगना दे० (क्रि०) सोहना, शोभना, वृक्ष आदि का जड़ जमना ।

लगातार दे० (अ०) बराबर, क्रमश , बारी बारी, पाला से, एक के बाद एक ।

लगान दे० (पु०) उतार, टिकाव, ठिकाना, माल गुजारी, किराया भाड़ा कर ।

लगाना दे० (क्रि०) रोपना, बोना, वपन करना, मिलाना, सटाना ।

लगाव दे० (पु०) मेल, मिलाप, सम्बन्ध ।

लगि दे० (अ०) तक, लग, अवधि, पर्यन्त, सीमा ।

लगुड़ तत्० (पु०) लाठी, मोटा डंडा, यष्टि, लाठी, छड़ी ।

लगुँहा दे० (गु०) मनोहर, सुन्दर, मनभावन ।

लगुआ दे० (पु०) यार, जार, लगा हुआ, उपपति ।

लग्गा दे० (पु०) प्रेम, प्यार, प्रीति, नाव खेने के लिये बड़ा बाँस ।—न खाना (वा०) अगाध, सर्वश्रेष्ठ होना ।

लग्गी दे० (स्त्री०) मोटा लग्गा, बाँस की छोटी लाठी।

लग्न तत्० (पु०) मेष आदि राशियों के उदय होने के समय मुहूर्त, समय। (गु०) लगा हुआ, सटा हुआ, मिला हुआ।

लग्नक तत्० (पु०) प्रतिभू, ज़ामिन।

लघिमा तत्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुल्लिङ्ग) लघुता, छुटाई, छोटापन, लाघव, योगियों की आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि।

लघिष्ठ तत्० (गु०) छोटा, नीच, लघु।

लघु तत्० (गु०) छोटा, हलका, खर्व, ह्रस्ववर्ण, शीघ्र, नीच, नीचा, एक मात्रिक स्वर।—काय (पु०) बकरा, छाग। (गु०) छोटा शरीर वाला।—ता (स्त्री०) छोटापन, छुटाई, नीचता, निचाई।—हस्त (पु०) छोटा हाथ।—शङ्का (स्त्री०) मूत्र त्याग, पेशाब।

लघ्वी तत्० (स्त्री०) छोटी, अति छोटी।

लङ्क दे० (पु०) कमर, कटि, शरीर का मध्यभाग।

लङ्का तत्० (स्त्री०) राक्षसाधिप रावण की राजधानी। लङ्का पहले कुबेर के अधिकार में थी, परन्तु रावण ने बलपूर्वक उनसे छीन कर उसे अपनी राजधानी बनाई।—पति (पु०) रावण, विभीषण, लङ्का का राजा।

लङ्गड़ दे० (पु०) बिना पैर का, पद रहित, चरण हीन।

लङ्गर दे० (पु०) लोहे का बना हुआ भारी काँटा जिससे नाव रोकी जाती है।

लङ्गरी दे० (स्त्री०) थाली, थरिया।

लंगूचा दे० (पु०) खाने की एक वस्तु।

लंगूर दे० (पु०) वानर विशेष, बड़ी पूँछ वाला बन्दर, बीर, मंसुखा बन्दर, इसकी पूँछ लम्बी और मुख काला होता है।

लङ्गोटा दे० (पु०) लङ्गोटा, कौपीन, पहलवानों की एक प्रकार की धोती, कछनी, करधनी।—बन्द (पु०) अनव्याहता, ब्रह्मचारी, कच्छबन्ध।

लङ्गोटिया दे० (पु०) समवयसी, समवयस्क, बालापन का साथी।

लङ्घन तत्० (पु०) [लघि+अनट्] लाँघना, पार उतारना, पार होना, उपवास, उपास करना।

लङ्घना दे० (क्रि०) उछलना, कूदना, पार उतारना, फाँदना।

लचक दे० (स्त्री०) नमन, लचीला, झुकाव।

लचकना दे० (क्रि०) नवना, झुकना, लचना।

लचका दे० (पु०) धक्का, झोंक, एक प्रकार की नाव, मत्स्य विशेष।

लचकाना दे० (क्रि०) झोंकना, झुकाना, नवाना, हिलाना, डुलाना।

लचना दे० (क्रि०) टेढ़ा होना, नवना, झुकना, तिरछा होना।

लचलचाना दे० (क्रि०) लचलच होना, नवना।

लचर दे० (पु०) अनाड़ी, अज्ञान, अबोध, मूढ़, मूर्ख।

लचाना दे० (क्रि०) टेढ़ा करना, नवाना, झुकाना।

लच्छन तद्० (क्रि०) लक्षण, स्वभाव, चिन्ह, आकार, आकृति के विशेष चिन्ह।

लच्छा दे० (पु०) स्तवक, गुच्छा, रंगे सूत की आंटी।

लजलजा दे० (गु०) चिपचिपा गोंददार, लसलसा।

लजलजाना दे० (क्रि०) चिपचिपाना, लसलसाना, सटना, नरमाना, नरम होना।

लजवाना दे० (क्रि०) लज्जित करना, सङ्कोच करना, लजाना।

लजालु या लज्जालु तद्० (गु०) लज्जावान, सङ्कोची, लजाने वाला।

लजियाना दे० (क्रि०) लजाना, लज्जा करना।

लजीला दे० (गु०) लाजवन्त, सङ्कोची।

लज्जा तत्० (स्त्री०) व्रीड़ा, त्रपा, लाज, सङ्कोच, शील।—रहित (गु०) निर्लज्ज।—शील (गु०) लज्जालु, लजीला।

लज्जित तत्० (गु०) लज्जायुक्त, लजीला, ब्रीडित।

लट दे० (स्त्री०) लटूरी, केश सिर का बाल। यथा —

ताही समय लट एक छटकि कपोलन पर।
मानो राहु चन्द्रमा को चाबुक चलायो है॥

लटक दे० (स्त्री०) ढङ्ग, रीति, भाँति, प्रकार।

लटकन दे० (पु०) आभूषण विशेष, झुमका, एक वृक्ष का फूल, जिससे कपड़े रँगे जाते हैं।

लटकना दे० (क्रि०) झूलना, टँगना, हिलना, पीछे रहना।

लटका दे० (पु०) गुन, जन्तर, मन्तर, टुटका, टोना, झाड़ फूँक।

लटकाना दे० (क्रि०) हिलना, झूलना, टाँगना।

लटकाव दे० (पु०) टँगाव, हिलाव, झुकाव, झुलाव।

लटपट दे० (गु०) मिला, सटा, चिपटा।

लटपटा दे० (गु०) चञ्चल, खिलाड़, नटखट।

लटपटाना दे० (क्रि०) लड़खड़ाना, विचलित होना, डिगना।

लटा दे० (गु०) दुर्बल, निर्बल, अशक्त, असमर्थ।

लटाइ दे० (स्त्री०) परेती, चर्खी, जिसमें डोरा रख कर गुड्डी उड़ाई जाती है।

लटपटा दे० (गु०) दुबला पतला, अत्यन्त निर्बल, अतिशय असमर्थ, अटाला।

लटूरिया दे० (पु०) लट, जटा, चोटी, बच्चों की छोटी जटा।

लट्टू दे० (पु०) भौंरा, भ्रमर, एक प्रकार का खिलौना, जिसे लड़के नचाते हैं।—होना (वा०) मोहित होना, आसक्त, किसी के प्रेम में फँसना।

लठ लाठी दे० (स्त्री०) लठबाजी, लाठी की लड़ाई।

लठ दे० (पु०) लाठी, सोटा, डण्डा।

लठियाना दे० (क्रि०) लाठी मारना, लाठी से मारना, लाठी से चोट देना।

लट्ठर दे० (गु०) शिथिल, ढीला, ठण्डा, धीमा, आलस।

लड़ दे० (स्त्री०) लरी, पाँति, पङ्क्ति, रास, मोत आदि की माला का परत।

लड़कपन दे० (पु०) लड़काई, बालपन, लड़काई।

लड़कबुद्धि दे० (स्त्री०) छिछोरापन, चुलबुलाहट।

लड़का दे० (पु०) बालक, छोरा, छोकरा, शिशु छोरा।—बाला (वा०) बड़ा बच्चे, लड़के लड़की।

लड़काई दे० (स्त्री०) बालपन, शिशुता, लड़कपन।

लड़की दे० (स्त्री०) छोकरी, बेटी, तनया, कन्या, कुमारी।

लड़खड़ाना दे० (क्रि०) डगमगाना, डिगना, स्थिर नहीं ठहर सकना।

लड़ना दे० (क्रि०) लड़ाई करना, संग्राम करना, युद्ध करना, बखेड़ा करना।

लड़बड़ाना दे० (क्रि०) लड़खड़ाना, तोतलाना, अस्पष्ट उच्चारण करना।

लड़बावला दे० (गु०) सक्की, पागल।

लड़ाई दे० (स्त्री०) युद्ध, संग्राम, समर।—करना (वा०) लड़ना, झगड़ना, बखेड़ा करना।

लड़ाऊ, लड़ाका दे० (गु०) झगड़ालू विवादी, लड़ने वाला।

लड़ाना दे० (क्रि०) लड़ना, लड़ाई कराना, झगड़ा लगाना जुझाना।

लड़ियाना दे० (क्रि०) गूँथना पिरोना, लड़वाना, पोहना।

लड़ी दे० (स्त्री०) पाँति, पङ्क्ति।

लड्डू दे० (पु०) मोदक, मिठाई, मोतीचूर आदि।

लढा, लढ़िया दे० (पु०) लढ़का, भार ढोने वाली गाड़ी।

लण्ठ दे० (पु०) निर्बोध, अबोध, गँवार भोंदू बोदला।

लण्डूरा दे० (गु०) अनाथ, असहाय, एकाकी, अपढ़।

लत दे० (स्त्री०) बान, अभ्यास चाल, बुरीबान।

लतरी दे० (स्त्री०) पुरानी, जूती ।

लता तत्० (स्त्री०) बेल, वल्ली, बल्लरी, उस पौधे को कहते हैं जिसकी लम्बाई तो बहुत हो, परन्तु वह बिना आश्रय के खड़ी न रह सके ।

लताड़ दे० (स्त्री०) ग्लानि, अपवाद, तिरस्कार, घोड़े की लात ।

लताड़ना दे० (क्रि०) तुच्छ करना, तिरस्कार करना, अपवाद करना, लथेड़ना, लात मारना ।

लतिका तत्० (स्त्री०) कोमलता, वल्ली बल्लरी ।

लतिया दे० (पु०) बुरी चाल का, कुचाली, दुराचारी ।

लतियाना दे० (क्रि०) लात से मारना ।

लत्ता दे० (पु०) फटा पुराना कपड़ा, चीथड़ा, चिरकुट ।

लत्ती दे० (स्त्री०) लता, घास, लट्टू नचाने की डोर ।

लथड़ना दे० (क्रि०) लद फद होना, कीचड़ से भीगना ।

लथेड़ना दे० (क्रि०) पछाड़ना, लथेड़ना ।

लदना दे० (क्रि०) बोझिल होना, भार बोझाना ।

लदाना दे० (क्रि०) बोझाना, लादना, भरना, भार रखना ।

लदाव दे० (पु०) मोट, बोझ, भार ।

लप दे० (स्त्री०) झप, शीघ्र, जल्दी, मुट्ठी भर, हथेली, पसर, पसा ।

लपक दे० (स्त्री०) चटक, भड़क, चमक, शोभा, प्रकाश, दीप्ति ।

लपकना दे० (क्रि०) चमकना, लहकना, आगे बढ़ना ।

लपका दे० (पु०) झपट, आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता, [illegible] ।

के लिये

लपची दे० (स्त्री०) मछली ।

लपझप दे० (पु०) फुर्तीला, चञ्चल, सतर्क, सावधान ।

लपट दे० (स्त्री०) लौ, सुगन्ध, महक ।

लपटना दे० (क्रि०) सटना, मिलना, लगना ।

लपटा दे० (पु०) जूती विशेष, लगाव, सम्बन्ध ।

लपटी, लपसी दे० (स्त्री०) हलुवा ।

लपाड़िया दे० (पु०) झूठा, मिथ्या वादी, लबार ।

लपाटी दे० (स्त्री०) मिथ्या, झूठमूठ ।

लपानक दे० (पु०) दुबला, पतला, क्षीण, झीना, सूक्ष्म ।

लपेट दे० (स्त्री०) बेठन, बेष्टन, ढक्कन ।—झपेट (स्त्री०) घोलघुमाव, टाल मटूल, बहाना ।

लपेटन दे० (पु०) बेठन, लपेटने का कपड़ा ।

लपेटना दे० (क्रि०) बेठन लगाना, बाँधना, बेठनियाना ।

लपेटवा दे० (पु०) पेंडुवा, घुमाव, घुमावट ।

लप्पा दे० (पु०) पट्टा, गोटा, किनारी ।

लबड़धन्दा दे० (पु०) नटखट, बखेड़ा, उल्लू जलूल ।

लबड़ घटाई दे० (स्त्री०) झूठी चूँथो, गिरी हुई चूँथी ।

लबड़सबड़ दे० (पु०) बकझक, झूठसाँच, इधर उधर की बातें ।

लबड़ा दे० (पु०) झूठा, असत्यवादी, अनर्थक वादी ।

लबनी दे० (स्त्री०) ताड़ी चुआने का घड़ा या कूण्डा ।

लबरघट्टा दे० (पु०) नकचढ़ा, छोटी बात में क्रोध करने वाला ।

लबत्वव दे० (पु०) जल्दी, शीघ्रता, लस, पपरी ।

लबलबा दे० (पु०) चिपचिपा, लसदार ।

लबलोस दे० (स्त्री०) चापलूसी, लल्लोपत्तो, खुशामद ।

लबार दे० (पु०) झूठा, गप्पी ।

लबो दे० (स्त्री०) चीनी की चासनी ।

लबादा दे० (पु०) रुई भरा जामा, बड़ा चुग्गा, सठ, मोटा सोंटा ।

लब्ध तत्० (गु०) [लभ + क्त] प्राप्त, उपार्जित। —वर्ण (पु०) पण्डित, विलक्षण, विद्वान्।

लब्धि तत्० (स्त्री०) [लभ् + क्ति] प्राप्ति, लाभ, हाथ लगना, हाथ में आना।

लभ्य तत्० (गु०) [लभ् + य] प्राप्य, प्राप्ति के योग्य।

लमकाना तद्० (पु०) लम्बकर्ण, शशक, ससा, खरहा।

लमछड़ दे० (स्त्री०) पथरकल्ला, लम्बा।

लम्पट तत्० (पु०) दुराचारी, दुष्कृत, झूठा, असत्यवादी।

लम्बर दे० (स्त्री०) लोमड़ी, लूकटी, बनैला जन्तु विशेष।

लम्बा दे० (गु०) ऊँचा, बड़ा, दीर्घ।—करना (वा०) फैलाना, बढ़ाना, पसारना।

लम्बाई, लम्बान दे० (स्त्री०) ऊँचाई, दीर्घता।

लम्बाना दे० (क्रि०) लम्बा करना, बढ़ाना, दीर्घ करना, फैलाना, पसारना।

लम्बित तत्० (गु०) लटकाया हुआ, टँगा हुआ, लटका हुआ।

लम्बिया दे० (स्त्री०) उछल कूद, खेल, क्रीड़ा, कलोल।

लम्बी साँस भरना दे० (वा०) रोना, बिलपना, विलाप करना।

लम्बोदर तत्० (पु०) गणेश, गणनायक, विनायक, गजानन।

लम्भा दे० (पु०) लमकाना, खरहा, शशक, ससा।

लय तत्० (पु०) प्रलय, नाश, ध्वंस, विनाश, ताल, स्वर, लीन, मग्न, तल्लीन।

लर्छा दे० (पु०) लच्छा, ऐंठी, फेंटी।

ललक दे० (स्त्री०) मन की चाह, इच्छा, अभिप्राय, उल्लोल, लहर, तरङ्ग।

ललकना दे० (क्रि०) लपकना, चढ़ना, धावा करना, आक्रमण करना, उत्सुक होना, उत्कण्ठित होना।

ललकाना दे० (क्रि०) लोभ देना, मोहित करना, उत्कण्ठित करना, लड़ाना, भगड़ाना।

ललकार दे० (पु०) हाँक, पुकार, हाँक, प्रशंसा, प्रोत्साहन वाक्य।

ललगण्डा दे० (पु०) वानर, कपि मर्कट।

ललचाना दे० (क्रि०) तरसाना, लुभाना, लहकाना।

ललन तत्० (पु०) कुतूहल, कौतुक, खेल, क्रीड़ा।

ललना तत्० (स्त्री०) महिला, नारी, स्त्री, कामकला, प्रवीणा स्त्री।

लला दे० (पु०) बालक, लड़का, छोरा, छोकरा। (गु०) प्रिय, दुलारा, इकलौता, अतिशय प्रिय।

ललाट तत्० (पु०) मस्तक, सिर, कपाल, भाग्य प्रारब्ध।

ललाम तत्० (गु०) सुन्दर, मनोहर, श्रेष्ठ उत्तम, भूषण।

ललित तत्० (गु०) सुन्दर, मनोहर, मनोज्ञ, मन भावन, सुहावना, चटुल।

ललिता तत्० (स्त्री०) एक गोपी का नाम।

ललियाना दे० (क्रि०) फुसलाना, बहलाना, वश में करना, परचाना, अपने में मिलाना।

लली दे० (स्त्री०) बालिका, छोकरी, लड़की।

लल्लोपत्तो दे० (पु०) चापलूसी, खुशामद, भुलाव, फुसलाव।

लव तत्० (पु०) क्षण, निमेष, पल, भिन्नगणित का एक भाग, रामचन्द्र का बड़ा बेटा। (गु०) लेश, अल्प, थोड़ा, न्यून, कम।

लवक तत्० (पु०) करवैया, करने वाला।

लवङ्ग तत्० (पु०) वृक्ष विशेष का फूल।

लवण तत्० (पु०) नोन, निमक।—समुद्र (पु०) खारा समुद्र।

लवणाम्बु तत्० (पु०) खारा पानी, खारा समुद्र, सागर।

लवन तद्० (पु०) कटनी, कटाई।

लवा दे० (पु०) पक्षी विशेष, बटेर पक्षी।

लवाक तत्० (पु०) हँसिया, दराती, खेत काटने का अस्त्र।

लशटपशटं दे० (अ०) उलटापुलटा, किसी प्रकार, किसी भाँति।

लशुन तत्० (पु०) लहसन, कन्द विशेष।

लस दे० (पु०) चिपचिपाहट, गोंद, तरी, सार।

लसकना दे० (क्रि०) चिपचिपा होना, सटना, लगना, सटना, गीला होना।

लसना दे० (क्रि०) शोभित होना, शोभा पाना, मोहना, सजना।

लसलसा दे० (गु०) चिपचिपा, लसदार, गोंदेला।

लसित तत्० (गु०) शोभित, विराजित, लक्षित, प्रत्यक्ष, आँखों के सामने।

लसियाना दे० (क्रि०) लस लस होना, चिपकना, चिपचिप होना।

लसोड़ा दे० (पु०) एक वृक्ष विशेष, और उसका फल, यह फल लसदार होता है।

लस्सी दे० (स्त्री०) भक्ष्य विशेष दूध और पानी मिला हुआ भोजन।

लहँगा दे० (पु०) घाँघरा, फरिया, स्त्रियों के पहनने का एक प्रकार का कपड़ा।

लहक दे० (स्त्री०) चमक, झलक, उजाला, प्रकाश।

लहकना दे० (क्रि०) चमकना, बलना, उजाला होना, प्रकाशित होना, जलना।

लहकाना दे० (क्रि०) बहकाना, गहगहाना, आग जलाना, बालना।

लहकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, शब्द से आदर करना, दिखावटी आदर करना।

लहकावर दे० (स्त्री०) चमक, दीप्ति, प्रकाश, शोभा।

लहकीला दे० (गु०) चमकीला, जगमगा, प्रकाशमान।

लहकौवर दे० (पु०) विवाह की एक रीति, वर को दही चीनी खिलाना।

लहना दे० (क्रि०) लगना, ठहरना, पाना, खाना, (पु०) क़र्ज़, ऋण, देन।

लहबर दे० (पु०) भीड़, तोता, सुग्गा।

लहर तद्० (स्त्री०) लहरी, तरङ्ग, गङ्गा या नदियों का हिलोरा, रङ्ग रङ्गने की एक प्रक्रिया, विष चढ़ने का पर्व, हिलोरा।

लहरना दे० (क्रि०) तरङ्ग उठना, हिलकोरा मारना, जलन होना, जलने लगना, आग लगना।

लहरबहर दे० (स्त्री०) सौभाग्य, सम्पत्ति, धन।

लहराना दे० (क्रि०) मचलना, बढ़ना, लहर मारना, तरङ्ग उठना।

लहरिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, ओरिया, एक रीति से रङ्गा हुआ कपड़ा।

लहरी दे० (स्त्री०) मन मौजी, उच्छृङ्खल, ओछा, मन माना काम करने वाला।

लहलहा दे० (गु०) विकसित, प्रफुल्ल, फूला हुआ।

लहलहाना दे० (क्रि०) खिलना, फूलना, विकसना, विकसित होना।

लहलोट दे० (गु०) जो उधार लेके न दे।

लहसुन दे० (पु०) लशुन, कन्द विशेष।

लहसनिया दे० (पु०) हीरे का एक भेद, एक प्रकार का हीरा।

लहासी दे० (स्त्री०) रस्सा, बुर्ज, लहास।

लहू दे० (पु०) रुधिर, रक्त, लोहू, शोणित।—लुहान (वा०) रुधिर पूर्ण, लोहू से भरा हुआ।

लाई दे० (स्त्री०) लावा का लड्डू, चबैना, भूँजा अन्न।

लाक दे० (पु०) कटि, कमर, लङ्क, भूसा, लामा, भूसी।

लाँघना दे० (क्रि०) उतरना, पार होना, पार जाना, कूदना, फाँदना।

लाँघ दे० (पु०) फलाँग, कूद, उछल, कुलाँच।

लाक्षा तत्० (स्त्री०) लाख, महावर, महावर का रङ्ग, लाह।

लाक्षणिक तत्० (गु०) लक्षण युक्त, लक्षणा वृत्ति से कथित अर्थ।

लाख दे० (पु०) संख्या विशेष, लक्ष, सौ हज़ार की संख्या, लाह, लाक्षा, जन्तु, लाही।

लाखी दे० (स्त्री०) लाही का रङ्ग।

लाग दे० (पु०) द्वेष, विरोध, बैर, शत्रुता, विद्वेष।

लागत दे० (स्त्री०) मोल, दाम, मूल्य।

लागना दे० (क्रि०) भिड़ना, विरोध करना, लपटाना, लगना।

लागी दे० (स्त्री०) स्नेह, छोह, प्रेम, प्यार। (पु०) द्वेष शत्रु, विरोधी।

लागू दे० (गु०) चलने वाला, पिछलग्गू, अनुयायी, अनुगत।

लाघव तत्० (पु०) लघुता, छोटाई, क्षुद्रता, नीचता, छुटाई, नीरोगता, सुस्थता।

लाङ्गल तत्० (पु०) हल, जिससे खेत जोता और बोया जाता है।

लाङ्गूल तत्० (पु०) पूँछ, लाङ, पशुओं का अङ्ग विशेष।

लाज तद्० (स्त्री०) लज्जा, सङ्कोच, व्रीडा, त्रपा।

लाजा तत्० (पु०) लावा, खीला, खोई धान का लावा।

लाजावर्त तत्० (पु०) मणि विशेष, रावटी।

लाञ्छन तत्० (पु०) चिन्ह, अपराध, कलङ्क, दाग, धब्बा।

लाञ्छना तत्० (स्त्री०) निन्दा, तिरस्कार, अपमान, बुराई।

लाञ्छित तत्० (गु०) तिरस्कृत, निन्दित, अपमानित।

लाझा दे० (पु०) लस, भैंस आदि के ब्याने के समय जो मल विशेष गिरता है।

लाट तत्० (पु०) देश विशेष, खम्भा, स्तम्भ। (गु०) प्राचीन, पुराना, जीर्ण।

लाटी तत्० (स्त्री०) काव्य की एक रीति का नाम, लाट देश की स्त्री। (दे०) फेफड़ी।

लाठ दे० (पु०) मोटा खम्भा, मोटा और लम्बा खम्भा, कोल्हू का लाठा।

लाठी दे० (स्त्री०) लाठी, लकड़ी, गोजी, सोटा।

लाड दे० (पु०) छोह, प्यार, दुलार।—लड़ाना (वा०) प्रेम करना, दुलार करना, दुलार में खिलाना।

लाडला दे० (गु०) प्यारा, दुलारा, प्रिय।

लाडू दे० (पु०) लड्डू, मोदक।

लात दे० (स्त्री०) पदाघात, पैर की मार।

लाभ दे० (पु०) प्राप्ति, नफा, पाना, मिलना, मुद।

लाद दे० (स्त्री०) बोझ, भार, अन्तड़ी, उदर।

लादना दे० (क्रि०) भरना, बोझना, भार भरना।

लादिया दे० (पु०) लादने वाला।

लादी दे० (स्त्री०) गठरी, गदहे पर का बोझ।

लादू दे० (गु०) लादने योग्य, लादने के उपयुक्त।

लाना दे० (क्रि०) ले आना, पास ले आना।

लाफना दे० (क्रि०) कूदना, फाँदना, हाँकना।

लार दे० (स्त्री०) राल थूक।

लाल दे० (पु०) दुलारा, दुलरुआ, प्रिय, प्यारा। (गु०) लाल रङ्ग का रक्त वर्ण।—बुझक्कड़ (पु०) बहुत बड़ा मूर्ख, जो स्वयं मूर्ख हो, परन्तु अपने को अधिक बुद्धिमान् समझे।

लालच दे० (पु०) लोभ, तृष्णा, चाह, इच्छा, अभिलाष।

लालची दे० (पु०) लोभी, स्वार्थी।

लालड़ी दे० (स्त्री०) मानिक चुन्नी।

लालन दे० (पु०) पालन करना, प्रेम पूर्वक पालना पोसना, पोषण करना।

लालना दे० (क्रि०) पालना, प्यार से खिलाना।

लालसा तत्० (स्त्री०) इच्छा, मनोरथ, अभिलाष मनोरथ।

लाला दे० (पु०) कायस्थ, जाति विशेष, पटवारी।

लालाटिक तत्० (गु०) ललाट देख कर शुभाशुभ कहने वाला, परभाग्योपजीवी, भाग्याधीन, प्रारब्धाधीन, भाग्य का भरोसा रखने वाला।

लालित्य तत्० (पु०) मनोहरता, रमणीयता, सुन्दरता।

लाव दे० (पु०) रस्सी, लहास।

लावण्य तत्० (पु०) सुन्दरता, शरीर की स्वाभाविक प्रभा जिससे सुन्दरता उत्पन्न होती है।

लाबलाब दे० (पु०) लोभ, चाह, अभिलाष, तृष्णा।

लावलाव दे० (पु०) लाभ, प्राप्ति, बढ़ती, वृद्धि।

लाशा दे० (पु०) लोथ, लोई।

लाबू दे० (स्त्री०) लौका, कद्दू।

लासा दे० (पु०) लेप, गोंद।

लाह तद्० (पु०) लाभ, प्राप्ति, क्षेमकुशल, मङ्गल, लाभ, लाही।

लाहा तद्० (पु०) लाभ, प्राप्ति, लब्धि।

लाही दे० (स्त्री०) लाख, लाचा, तोरी, सर्षप, सरसों, महीन कपड़ा।

लिखतङ्ग दे० (पु०) लेख, नियम पत्र, चिट्ठी।

लिखना दे० (क्रि०) अक्षर बनाना, लिखाई करना।

लिखनी दे० (स्त्री०) कलम, लिखने का साधन, लेखनी।

लिखन्त दे० (पु०) प्रारब्ध, भाग्य, कपाल, ललाट, लिखा हुआ।

लिखा दे० (पु०) प्रारब्ध, होनहार, भवितव्य।

लिखाई दे० (स्त्री०) लिखना, लिखने का काम, लिखना।

लिखावट दे० (स्त्री०) लेख, अक्षरों की बनावट।

लिखित तद्० (पु०) लिखा हुआ।

लिङ्ग तद्० (पु०) पुरुषेन्द्रिय, पुरुष चिन्ह, चिन्ह, लक्षण, शरीर विशेष, कारण शरीर, शिवजी की पिण्डी।

लिसड़ी दे० (स्त्री०) हल, पोतड़ी।

लिटाना दे० (क्रि०) सुलाना, पढ़ाना, सुला देना।

लिट्टी दे० (स्त्री०) मोटी रोटी, बाटी।

लिथड़ना दे० (क्रि०) पछाड़ना, अपमानित करना, तिरस्कार करना।

लिथाड़ना दे० (क्रि०) पछाड़ना, लथाड़ना।

लिपटना दे० (क्रि०) चिपकना, सटना, चिट-पिटाना।

लिपटाना दे० (क्रि०) सटाना, भिड़ाना, युक्त करना।

लिपटाव दे० (पु०) चिपटाव, सटाव, मिलान।

लिपड़ी दे० (स्त्री०) पुरानी पगड़ी।

लिपवाना दे० (क्रि०) पुतवाना, पुताना, चौका दिलाना, पोतन चलवाना।

लिपाई दे० (स्त्री०) लीपने का काम।

लिपि तद्० (स्त्री०) लेप, लेख, हस्ताक्षर, हस्तलेख। —कर (पु०) लेखक, लिखने वाला।

लिप्त तद्० (पु०) लिपा हुआ, लिपा पोता।

लिबलिबा दे० (पु०) लसलसा, चिपचिपा, लब-लबा।

लिब्बा दे० (पु०) थपत, चपेटा, धौल, धप्पा।

लिम दे० (स्त्री०) कलङ्क, दोष, अपराध, दौषा, चिन्ह, लक्षण।

लिये दे० (अ०) वास्ते, निमित्त, तदर्थ, हेतु, हेत्वर्थ।

लिलाना दे० (क्रि०) चाहना, इच्छा करना, लल-चाना, लोभ करना, तृष्णा करना।

लिवाना दे० (क्रि०) बुलवाना, आह्वान करना।

लिवालाना दे० (वा०) साथ बुला लाना, साथ ले कर आना।

लिहाड़ा दे० (पु०) तुच्छ, नीच, अधम, कदाचार, दुराचारी, तुच्छ।

लीक दे० (स्त्री०) रेखा, चिन्ह, पगडण्डी।

लीख तद्० (स्त्री०) सिर के बालों की छोटी जूँ।

लीचड़ दे० (पु०) कृपण, कञ्जूस, अर्थपिशाच, धन-दास।

लीची दे० (स्त्री०) फल विशेष, एक वृक्ष और उसके फल का नाम।

लीझी दे० (स्त्री०) गाद, मल, तलछट।

लीतरा दे० (पु०) पुराना जूता, टूटा जूता।

लीद दे० (स्त्री०) घोड़े की विष्ठा।

लीन तद्० (पु०) तन्मय, तत्पर, आसक्त, डूबा हुआ, मग्न।

लीथड़ दे० (पु०) कीचड़, पंक, पङ्क।

लीम दे० (पु०) सन्धि, मेल, मिलाप, शान्ति, विरोध की शान्ति।

लीमू दे० (पु०) नीबू, निबुआ।
लीर दे० (स्त्री०) चिट, चिथड़ा, कतरन।
लील तद्० (पु०) नील। (गु०) नीला, नील रङ्ग।
लीलना दे० (क्रि०) निगलना, घोंटना, गलाधःकरण, गले के भीतर करना।
लीला तत्० (स्त्री०) क्रीड़ा, विहार, खेल, कौतुक, अनुकरण।
लीलावती तत्० (स्त्री०) विलासवती स्त्री, विलास युक्ता स्त्री। प्रसिद्ध ज्योतिर्वेत्ता भास्कराचार्य की कन्या, कहते हैं भास्कराचार्य का प्रसिद्ध पाटी गणित इन्हीके नाम पर रचा गया है। जगह जगह पर उस ग्रन्थ में भास्कराचार्य ने लीलावती का नाम उल्लेख किया है। जिससे मालूम होता है कि उस ग्रन्थ की श्रोता उनकी कन्या लीलावती ही थी।
लुक दे० (पु०) आकाश से गिरने वाली, तारा, लू।
लुकना दे० (क्रि०) छिपना, गुप्त होना।
लुकन्दा दे० (पु०) दुराचारी, दुष्ट, दुष्कृत, लुच्चा, लम्पट।
लुकाना दे० (क्रि०) छिपाना, ढाँकना, लुकवाना, गुप्त करना।
लुगाई दे० (स्त्री०) नारी, स्त्री।
लुच दे० (गु०) निरा, केवल, नङ्गा, उघाड़ा।
लुचई दे० (स्त्री०) पूरी, सोहारी, लुचपन दुष्टता।
लुचपन दे० (पु०) दुष्टता, दुश्चरित्रता।
लुचरा दे० (पु०) मकड़ा, कीट विशेष।
लुच्चा दे० (पु०) कुकर्मी, अन्यायी, दुष्ट, दुराचारी।
लुञ्जा दे० (गु०) हस्त रहित, हाथ से हीन, लूला।
लुटना दे० (क्रि०) लुट जाना, अपहृत होना, छिन जाना, धन हरण होना।
लुटवैया दे० (पु०) लूटने वाला, ठग, बटपार, धूर्त।
लुटाना दे० (क्रि०) गवाँना, खोना, उड़ाना, दे देना, बाँट देना।
लुटिया दे० (स्त्री०) छोटा लोटा, झारी।
लुटेरा, लुटेरू दे० (पु०) लूट करने वाला, लुटवैया।
लुट्टस दे० (पु०) बिगाड़, नाश, ध्वंस, लूटखसोट।
लुडका दे० (पु०) कान का एक प्रकार का गहना।
लुडखना दे० (क्रि०) लुढ़कना, ढुलकना, ढलकाना।
लुडखुडी दे० (स्त्री०) ढुलन, लुढ़कन।
लुढकना दे० (क्रि०) गिरना, गिर जाना, ढलकाना, ढनमनाना।
लुढाना दे० (क्रि०) बगोरना, लोढ़ना, गिराना, वृक्ष से फूल आदि को अलग करना।
लुढिया दे० (पु०) लोढ़ा, बट्टा, जिससे मसाला आदि पीसा जाता है।
लुढियाना दे० (क्रि०) कपड़े सीना, टाँका दिये कपड़े को पुख़्ता सीना।
लुण्डा दे० (गु०) बण्डा, पुच्छहीन, बिन पूँछ का।
लुतरा दे० (गु०) बड़बड़िया, बकवादी, गप्पी, झूठा असत्यवादी, निन्दक, निन्दा करने वाला।
लुपरी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का भोग, लपसी।
लुपलुप दे०(क्रि०) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष।
लुप्त तत्० (गु०) नष्ट, विध्वस्त, आँखों की ओट, अदर्शन।
लुबदी दे० (स्त्री०) लेप आदि के लिये पीसी हुई दवा, औषधि पिण्ड।
लुब्ध तत्० (गु०) [लभ्+क्त] लोभी, सतृष्ण, तृष्णायुक्त, स्वार्थी।
लुब्धक तत्० (पु०) व्याध, बहेलिया, शिकारी।
लुभाना दे० (क्रि०) ललचाना, लोभ देना, लोभ दिखाना।
लुहण्डा दे० (पु०) लोहे का हण्डा।
लुहरा दे० (पु०) लहुरा, छोटा, कनिष्ठ।
लुहाङ्गी दे० (स्त्री०) लोहे से मढ़ी हुई लाठी।
लुहान दे० (गु०) लहू भरा, रक्त पूर्ण, रक्तमय।
लुहार दे० (पु०) जाति विशेष, लोहा का काम करने वाली जाति, लोहकार।
लू दे० (स्त्री०) उष्ण वायु, गरम बतास।
लूआट दे० (पु०) जली लकड़ी, अधजली, अर्धदग्ध।
लूक दे० (स्त्री०) हवा, गरम वायु, लू।

लूकट दे० (पु०) लुघाट, चाकन्ना।

लूकटी दे० (स्त्री०) लोमड़ी।

लूकना दे० (क्रि०) लू लगना, लू से जलना, दग्ध होना, छिपना, लुकना।

लूकवाही दे० (पु०) आगवाही, होली के दिन एक प्रकार का तृण निर्मित इषद, जिसमें आग बालते हैं।

लूका दे० (स्त्री०) जलती लकड़ी, चिनगारी, लपट, आग की लपट।

लूख दे० (स्त्री०) आग, लूक, ज्वाला।

लूट दे० (स्त्री०) चोरी, अपहरण, अपहार, डकैती, डाँका।

लूटना दे० (क्रि०) अपहरण करना, ठगना, डाँका मारना।

लूता तत्० (स्त्री०) मकड़ा, एक प्रकार का कीड़ा जो जाला बनाता है। संस्कृत में जिसे ऊर्ण नाम अर्थात् रेशम का कीड़ा कहते हैं।

लून दे० (पु०) नोन, लवण, निमक।

लूनिया दे० (पु०) जाति विशेष, बनियों की एक जाति।

लूनी दे० (स्त्री०) म.खन, माखन, नैनू, नवनीत।

लूला दे० (गु०) लुञ्जा, टूटा, बिना हाथ का, हस्त-रहित।

लूह दे० (स्त्री०) लू, लूक।

ले दे० (अ०) तक, तलक, अवधि, पर्यन्त।

लेई दे० (स्त्री०) माँड़ी माँड़, एक प्रकार का भोजन।

लेंड़ी दे० (स्त्री०) मींगनी, बकरे आदि की बीट।

लेंड़ा दे० (पु०) अन्तःसार शून्य फल, पोंचा फल, खोखला फल, गेहूँ, मेंड़ आदि का गुच्छ।

लेख तत्० (पु०) लिखन, लिखित, लिखतङ्ग प्रबन्ध, रचना, लिखावट।

लेखक तत्० (पु०) लिखने वाला, लिखने का काम करने वाला, लिपिकर, ग्रन्थकर्ता।

लेखकी दे० (स्त्री०) लिखाई, लेखक का काम।

लेखन तद्० (पु०) लिपि, लिखाई, लिखावट।

लेखनी तत्० (स्त्री०) लिखनी, लिखने का साधन, क़लम।

लेखा दे० (पु०) गिनती, गणित, हिसाब।

लेख्य तत्० (गु०) चिट्ठी पत्री, लिखने योग्य, चित्र, तसवीर।

ले जाना दे० (क्रि०) ले भागना, उठा ले जाना, दूसरे स्थान पर रखना।

लेट दे० (पु०) गच, मकान आदि को पक्का बनाने के लिये चूना सुरख़ी आदि का बना लेप।

लेटना दे० (क्रि०) सोना, शयन करना, आराम करना, विश्राम करना।

लेनदेन दे० (पु०) व्यवहार, व्यापार।

लेना दे० (क्रि०) ग्रहण करना, अपने अधिकार में करना, पकड़ना।

लेप तत्० (पु०) पोतने की वस्तु, व्रण आदि पर लगाने की दवा, मलहम।

ले पड़ना दे० (क्रि०) नष्ट होना, ले जाना, नाश करना, बिगाड़ना।

लेपना दे० (क्रि०) पोतना, लेप लगाना।

ले पालक दे० (पु०) धर्मपुत्र, पाला हुआ पुत्र, पोसा हुआ बेटा, पोष्यपुत्र।

ले पालना दे० (क्रि०) बेटा के समान पालना, पोसना।

ले मरना दे० (वा०) कलङ्क लगाना, दोषी करना, अपने साथ नष्ट करना, स्वयं ख़राब होना दूसरों को भी ख़राब करना।

ले रखना दे० (क्रि०) सञ्चय करना, संग्रह करना, बटोरना, एकत्रित करना।

ले रहना दे० (क्रि०) नष्ट रखना, मायी बनाना, अपने अधिकार में कर लेना।

लेरू, लेरुआ दे० (पु०) बच्चा, बछड़ा, बछरू।

लेला दे० (पु०) भेड़ का बच्चा, मेमना, छोटी भेंड़।

लेलूट दे० (गु०) लुटलूट, ले कर न देने वाला।

ले लेना दे० (क्रि०) छीनना, छीन लेना, लूटना, समेटना।

लेध दे० (स्त्री०) भीत की पपड़ी, छाप।

लेवा दे० (पु०) ग्राहक, लेने वाला।—**देई** (स्त्री०) लेनदेन, व्यवहार, व्यापार।

लेवार दे० (पु०) गीली मिट्टी, भीत पर छाप लगाने की मिट्टी, लेप, लेवा।

लेवास दे० (पु०) गच, सेट।

लेवैया दे० (पु०) लेने वाला, लेवा, ग्राहक।

लेश तत्० (पु०) अल्प, लघु, थोड़ा, स्वल्प, अत्यल्प, लव, मात्रा।

लेसना दे० (क्रि०) लीपना, पोतना, बालना, जलाना, सुलगाना।

लेसालेस दे० (पु०) लिपाई, चारों ओर लीपने का काम होना।

लेहन तत्० (पु०) चाटन, अवलेहन, पतली वस्तु का भोजन।

लेहना दे० (पु०) चारा, घास, पाला।

लेह्य तत्० (गु०) लेहन करने योग्य, अवलेह, अवलेहन करने की वस्तु, चाटने योग्य।

लैस दे० (गु०) तैयार, प्रस्तुत, बनाबनाया, सिद्ध, (पु०) लक्का।

लोई दे० (स्त्री०) कम्मल, ऊन की बनी ओढ़ने की वस्तु।

लों दे० (अ०) तक, पर्यन्त, अवधि।

लोंदा दे० (पु०) पिण्डा, मिट्टी आदि का पिण्डा, ढेला, धौंधा।

लोक तत्० (पु०) लोग, जन, मनुष्य, भुवन, द्वीप, मनुष्यों का वासस्थान।—**पाल** (पु०) राजा, दिक्पाल।

लोकना दे० (क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को बीच ही में पकड़ लेना। पकड़ना, गोचना, झुलना।

लोकरा दे० (पु०) चीथरा, फटा कपड़ा।

लोखर दे० (पु०) हथियार, लोहे के पात्र।

लोग तद्० (पु०) लोक, मनुष्य जन।

लोगाई दे० (स्त्री०) लुगाई स्त्री, नारी, मेहरारू।

लोचन तत्० (पु०) आँख, नयन, नेत्र, चक्षु।

लोटन दे० (स्त्री०) छपटन, नेत्र, नयन, चक्षु, आँख, पटकन, मचलिया।—**कबूतर** (पु०) कपोत विशेष, कबूतर की एक जाति।

लोटना दे० (क्रि०) तड़फना, छटपटाना, पटकना पटकन खाना।

लोटपोट दे० (पु०) तलफन, पटकन।

लोटा दे० (पु०) जल पात्र विशेष।

लोढ़ा दे० (पु०) बट्टा।

लोथ दे० (पु०) मृतक, मृतक शरीर, मुर्दा, शव।

लोथरा दे० (पु०) माँस का पिण्ड, बोटी।

लोथा दे० (पु०) बोरा, थैला।

लोथी दे० (स्त्री०) गठीली लाठी, लट्ठ।

लोदी दे० (पु०) पठानों की जाति विशेष, इ जाति के लोग भी कुछ दिनों तक भारत में राज रह चुके हैं।

लोधिया दे० (पु०) जाति विशेष, किसान, कुर्मी।

लोन दे० (पु०) नून, नुन, लवण।

लोना दे० (गु०) खारा लवण युक्त। (पु०) प विशेष।

लोनार दे० (पु०) खारी भूमि, रार, चार भूमि।

लोप तत्० (पु०) अदृश्य, अदर्शन, नाश, विध्व अगोचर, गुप्त।

लोपड़ी दे० (स्त्री०) लोंदा, लेप विशेष।

लोबान दे० (पु०) सुगन्धयुक्त द्रव्य विशेष, जो धूप जलाया जाता है।

लोबिया दे० (पु०) एक तरकारी जिसका ■ सेम है।

लोभ तत्० (पु०) तृष्णा, लालच, इच्छा, ईप्सा।

लोभना दे० (क्रि०) मोहित होना, चाहना, ल चना।

लोभी तत्० (गु०) लालची, लोलुप, लुब्ध।

लोम तत्० (पु०) रोम, रोंआँ, रोंगटा।

लोमड़ी (स्त्री०) लोखरिया, लुकरी, जन्तु विशेष।

लोयन दे० (पु०) लोचन, नयन, नेत्र।

लोर दे० (पु०) आँसु, अश्रु, नयन जल।

लोल तत्० (पु०) चञ्चल, लालची।

लोलक तत्० (पु०) कान का एक गहना विशेष।

लोलुप तत्० (पु०) अत्यन्त लोभी, लालची, लुब्ध।

लोष्ट तत्० (पु०) ढेला, मिट्टी, मृत्तिका।

लोह तद्० (पु०) धातु विशेष, लोह धातु।—चून (पु०) लोहे का चूरा, रेत।—घड़ा (पु०) लोहे का पात्र, लोहे का बर्तन।—सार (पु०) लोहे का भस्म, कान्तिसार।

लोहा तद्० (स्त्री०) धातु विशेष, लोह, लौह।

लोहान दे० (गु०) रुधिरपूर्ण, लुहान, रक्तमय, लोहू से लद फद।

लोहार दे० (पु०) लोकार, लोहे का काम करने वाला।

लोहित तत्० (गु०) रक्त, लाल, कुसुम्भा।

लोहिया दे० (गु०) लोहे का, लोहमय।

लोही दे० (स्त्री०) कवल, ग्रास, नेवला, पोह।

लोहू दे० (पु०) रुधिर, शोणित, रक्त।

लौं दे० (अ०) लों, तक, तलक, अवधि, पर्यन्त, सीमा।

लौंग तद्० (पु०) लवङ्ग, लवंग, पुष्प विशेष।

लौंडा दे० (पु०) छोकड़ा, छोरा, बालक, बाकरा, नाचने वाला लड़का।

लौंडिया दे० (पु०) छोकड़िया, लौंडी, दासी, बाक-रानी।

लौकना दे० (क्रि०) चमकना, बिजली चमकना।

लौका दे० (पु०) बिजली, विद्युत, इन्द्र धनुष।

लौकिक तत्० (गु०) सांसारिक, इस लोक का, इस लोक में होने वाला।

लौकी दे० (स्त्री०) घीया, छोटा लौका, कद्दू।

लौटना दे० (क्रि०) पलटना, फिरना, घूमना, घूम जाना, लौट जाना।

लौटाना दे० (क्रि०) फिराना, घुमाना, पलटाना।

लौना दे० (क्रि०) लवन करना, काटना, कटनी कराना।

लौंद दे० (पु०) मलमास, अधिमास, अधिक मास।

लौह तत्० (पु०) धातु विशेष, लोह, लोहा।

ल्यारी दे० (स्त्री०) भेड़िया, हुण्डारी।

व

व यह व्यञ्जन का, उन्तीसवाँ वर्ण है, इसका उच्चारण स्थान दन्त और ओष्ठ है इस कारण इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं।

वंश तत्० (पु०) सन्तान, सन्तति, कुल, परिवार, कुटुम्ब।

वंशावली तत्० (स्त्री०) वंश परम्परा, कुल, पीढ़ी, पुश्त, पुश्त।

वंशी तत्० (स्त्री०) बाद्य विशेष, बाँस का बना हुआ बाजा, मुरली, बाँसुरी।

वक तत्० (पु०) पक्षी विशेष, बगुला, क्रौञ्चपक्षी।

वकुल तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, मौलसरी का पेड़।

वक्ता तत्० (पु०) बोलने वाला, कहने वाला, व्याख्याता, व्याख्यान दाता।

वक्तृता तत्० (स्त्री०) कथन, व्याख्यान, उपदेश, अभिप्राय, प्रकाशन।

वक्र तत्० (गु०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा, कुटिल।

वक्रोक्ति तत्० (स्त्री०) टेढ़ी बात, चाटु वचन, ताना मारना, अलङ्कार विशेष, यथा:—

"जहँ श्लेषकौं काकुसों, अरथ लगावै और।
वक्रउकति तासों कहत भूषन कवि सिरमौर॥

उदाहरण—

करि मुहीम आये कहे हजरत मन सब बैन।
सिव सर जासों संगुरि पैहैं बचि कै हैन॥

—शिवराज भूषण।

वक्षःस्थल तत्० (पु०) छाती, हृदय, उरस्थल, कलेजा, सीना।

वक्षोज तत्० (पु०) उरोज, स्तन, कुच, चूँची, छाती।

वक्र तत्० (गु०) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, बाँका, कुटिल।

वक्रिल तत्० (गु०) टेढ़ा मेढ़ा।

वङ्ग तत्० (पु०) धातु विशेष, राँगा का भस्म, देश विशेष, बङ्गाल।

वच तत्० (पु०) ओषधि विशेष, वाक्य, वचन।

वचन तत्० (पु०) उक्ति, कथन, वाक्य।—**व्यक्ति** (स्त्री०) बात की सफाई।

वज्र तत्० (पु०) देवराज इन्द्र का अस्त्र विशेष, बिजली, विद्युत्, हीरक, हीरा, श्रीकृष्ण का प्रपौत्र और अनिरुद्ध का पौत्र।—**दन्त** (पु०) शूकर, सूअर।—**दन्ती** (स्त्री०) पौधा विशेष।—**नाभ** (पु०) सुमेरु पर्वत पर रहने वाला एक असुर, ब्रह्मा के वर से यह सकल देवताओं का अवध्य था और वज्रपुर नामक एक नगर भी इसे मिला था। तब से सुमेरु पर्वत छोड़ कर ये उसी नगर में रहने लगा था। कुछ दिनों के बाद यह वर के अभिमान से समस्त लोक को पीड़न करने लगा और स्वर्ग छोड़ने के लिये इसने इन्द्र को भी कहलाया। इन्द्र बृहस्पति के आदेश के अनुसार वज्रनाभ को साथ लेकर कश्यप मुनि के पास गये। और वहाँ इन्होंने सभी बातें कह कर महामुनि कश्यप की सम्मति माँगी। कश्यप ने कहा, वत्स वज्रनाभ, मैं इस समय एक यज्ञ करने के उद्योग में हूँ इसकी समाप्ति होने पर जो उचित होगा वह मैं कहूँगा, तब तक वज्रपुर में ही तुम रहो।

वज्राघात तत्० (पु०) वज्रपात, वज्र से मारना।

वञ्चक तत्० (पु०) ठग, ठगने वाला, धूर्त, प्रतारक, शृगाल, सियाल।—**ता** (स्त्री०) धूर्तता, ठगई।

वञ्चना तत्० (स्त्री०) प्रतारणा, धूर्तता, ठगई।

वञ्चित तत्० (गु०) प्रतारित, ठगा हुआ।

वट तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, बड़ का पेड़, बरगद।

वटर तत्० (पु०) मुर्ग, मुर्गा, चोर, पगड़ी, आसन, चटाई।

वटिका, वटी तत्० (स्त्री०) दवा की गोली, गोली, बड़ी।

वटु तत्० (पु०) विद्यार्थी, बालक, ब्रह्मचारी, विद्याध्ययन करने वाला, बालक, ब्राह्मण कुमार।

वटुक तत्० (पु०) बालक, वटु, भैरव विशेष।

वड तत्० (पु०) बरगद, बर, वट वृक्ष।

वडिश तत्० (पु०) बनसी, मछली पकड़ने का यन्त्र।

वण्टक तत्० (पु०) बाँटने वाला, विभाग करने वाला, विभाजक, अलगाने वाला, पृथक्कर्ता।

वत् तत्० (अ०) समान, सदृश, उपमा, तुल्य, यथा- ब्राह्मणवत्, पण्डितवत्।

वत्स तत्० (पु०) शिशु, बच्चा, बछड़ा।—**तर** (गु०) अतिशय छोटा, अत्यन्त छोटा बच्चा।

वत्सर तत्० (पु०) वर्ष, साल, संवत्, बारह महीनों का काल।

वत्सरीय तत्० (गु०) वत्सर सम्बन्धी, वर्ष का, वार्षिक।

वत्सल तत्० (गु०) पुत्र प्रेमी, स्नेही, छोही, दयावान्।

वत्सासुर तत्० (पु०) कंस का अनुचर, असुर विशेष, यही श्रीकृष्ण को मारने के लिये कंस के द्वारा गोकुल भेजा गया था। श्रीकृष्ण को मारने की इच्छा से यह गोकुल में वत्स रूप धारण करके घूमता था। यह जान कर श्रीकृष्ण ने इसे मार डाला।

वदन तत्० (पु०) आस्य, मुख, मुँह।

वदान्य तत्० (पु०) दाता, दानशील।

वधू तत्० (स्त्री०) स्त्री, भार्या, दारा, स्नुषा, पुत्रवधू।

वन तत्० (पु०) जल, नीर, अरण्य, जङ्गल, कान्तार, विपिन, वृक्षों का समूह, जो वृक्ष स्वयं उत्पन्न हुए हों।—**चर** (पु०) जङ्गली, बनैला, वन्य, वन में रहने वाला।—**ज** (पु०) कमल, जलज, नीरज।—**पाँशुल** (पु०) व्याध, बहेलिया।—**माला** (स्त्री०) तुलसी, कुन्द, मन्दार पारिजात और कमल इनसे बनी लम्बी माला, पैर तक लटकने वाली माला—**स्पति** (पु०) वृक्ष विशेष, जिन वृक्षों में बिना फूल के ही फल लगें, वे वनस्पति हैं।

वनिता तत्० (स्त्री०) भार्या, स्त्री, प्रियतमा, प्यारी ।

वनैला दे० (गु०) वन्य, वनवासी, वनचर, वनचारी ।

वन्दन तत्० (पु०) प्रणाम, अभिवादन ।—चरित (गु०) प्रशंसा योग्य, माननीय गुण ।

वन्दना तत्० (स्त्री०) स्तुति, नमस्कार, प्रणाम, नियत नमस्कार ।

वन्दनीय तत्० (गु०) वन्दन करने योग्य, प्रणाम करने लायक ।

वन्दा दे० (पु०) आकाश लता, वृक्षों पर से निकला हुआ वृक्ष विशेष ।

वन्दित तत्० (गु०) प्रणमित, नमस्कार किया हुआ, जिसको लोग प्रणाम करें ।

वन्दी तत्० (पु०) भाट, दसौंधी, स्तुति-कर्ता, स्तुति करने वाला, बँधा हुआ, क़ैद किया गया, क़ैदी । —जन भाट आदि स्तुतिकारी ।

वन्य तत्० (गु०) वनैला, जङ्गली, वनचर ।

वपन तत्० (पु०) बोना, बीजारोपण, मुण्डन, केश-कर्त्तन, बाल मुड़ाना ।

वपनी तत्० (स्त्री०) नापित शाला, हजामों का अड्डा ।

वपुः तत्० (पु०) शरीर, देह, काय ।

वप्ता तत्० (गु०) वपनकर्त्ता, बीज बोने वाला, मुंडन कर्त्ता ।

वप्र तत्० (पु०) प्राचीर, खावा, दीवार, भीत, चार दीवारी ।

वभ्रु तत्० (पु०) यादव विशेष, यदुवंश के नाश होने पर श्री कृष्ण की आज्ञा से ये यादवों की स्त्रियों की रक्षा के लिये जाते थे परन्तु रास्ते ही में दस्युओं ने इन्हें मार डाला ।

वभ्रुवाहन तत्० (पु०) अर्जुन का पुत्र ये मणिपुर की राजकन्या चित्राङ्गदा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । नाना के मरने के बाद ये मणिपुर के राजा हुए थे ।

वमन तत्० (पु०) उद्वान्त, वान्ति, उमटी, क़ै ।

वमनी तत्० (स्त्री०) जलौका, जोंक ।

वयस तत्० (स्त्री०) अवस्था, आयु, आयुष्य, उमर ।

वयस्क तत्० (गु०) प्राप्त, वयःप्राप्त, अवस्था वाला ।

वयस्य तत्० (गु०) समान अवस्था वाला, सखा, मित्र ।

वर तत्० (पु०) आशीष, आशीर्वाद, शुभ चिन्तन, शुभानुध्यान, मनोरथ सिद्धि । (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, प्रधान ।—द (पु०) अभीष्ट दाता ।

वरण तत्० (पु०) वेष्टन, लपेटना, चुनना, छीनना, आह्वान करना, निमन्त्रण देना ।

वरणा तत्० (स्त्री०) एक नदी का नाम, जो काशी के उत्तरी भाग से बहती हुई गङ्गा में जा मिली है ।

वरटा तत्० (स्त्री०) हंसी, हंसिनी ।

वर रहना दे० (वा०) जयी होना, जयवन्त होना ।

वर रुचि तत्० (पु०) व्याकरण का वार्तिककार, सोमदेव भट्ट कृत कथासरित्सागर में लिखा हुआ है कि ये सामदेव नामक ब्राह्मण के पुत्र थे । इन्हों ने पाणिनि के सूत्रों पर वार्तिक बनाये थे । कुछ लोगों का कहना है कि ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक रत्न थे । प्राकृत प्रकाश नामक एक प्राकृत भाषा का व्याकरण इन्होंने बनाया था ।

वरल दे० (पु०) बिरनी, बोली, हड्डा ।

वरवर्णिनी तत्० (स्त्री०) उत्तमा स्त्री, गुणवती और रूपवती स्त्री ।

वरह दे० (पु०) पत्ता, पत्र ।

वरा तत्० (स्त्री०) कुटकी, औषधि विशेष ।

वराक तत्० (पु०) बेचारा ।

वराटक तत्० (पु०) कौड़ी, कपर्द्दिका ।

वराह तत्० (पु०) भारत के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी, इनके पुत्र मिहिर विक्रमादित्य की सभा के वराह मिहिर नाम से प्रसिद्ध हो कर नवरत्नों में से थे । भगवान का अवतार विशेष ।

वरिष्ठ तत्० (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान ।

वरु दे० (अ०) यदि, अगर, पक्षान्तर ।

वरुण तत्० (पु०) वृक्ष विशेष, जल का देवता, जल का अधिपति देव। ये पश्चिम दिशा के दिक्पाल हैं। अदिति के गर्भ और कश्यप के औरस से इनकी उत्पत्ति हुई थी। श्रीमद्भागवत में लिखा है कि भृगु और वाल्मीकि इनके पुत्र थे। इनकी चर्षिणी नामक स्त्री के गर्भ से ये दोनों पुत्र उत्पन्न हुए थे। बहुत दिनों से इस देवता की पूजा आर्यों में प्रचलित है। ऋग्वेद में इस देवता को पराक्रमशाली और विमानाचारी कह कर वर्णन किया गया है। इनके प्रधान अस्त्र का नाम पाश है इसी कारण इनको पाशी भी कहते हैं।

वरुत्थ तद्० (पु०) समूह, दल, गिरोह, यूथ।

वरुत्थी तद्० (स्त्री०) सेना, चमू फौज।

वरूथ तत्० (पु०) रथ ओहारने का कपड़ा, समूह, झुण्ड, वरूथ।

वरूथिनी तत्० (स्त्री०) सेना, पृतना, अनीकिनी, फ़ौज।

वरे दे० (अ०) इस पार, इधर, समीप, समूह।

वरेखी दे० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अङ्कोल वृक्ष।

वरेवी दे० (स्त्री०) भूषण विशेष, एक गहना का नाम।

वरोरू तत्० (स्त्री०) गन्धनवती, श्रेष्ठ जङ्घे वाली।

वरोहक दे० (पु०) असगन्ध, ओषधि विशेष।

वर्ग तत्० (पु०) समान जाति का समूह, समान का समूह, गुण जाति और क्रिया इनसे समान वालों का समूह। एक स्थान से उच्चारण होने वाले अक्षर, गणित विशेष, एक अङ्क को उसीमें घात करने से जो गुणनफल होता है।—**क्षेत्र** (पु०) जिस क्षेत्र की चारो भुजा समान और चारों कोण भी समान हों।—**मूल** (पु०) वह अङ्क जिसका वर्ग किया गया हो। यथा—४—का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ हुआ।

वर्गीय तत्० (गु०) वर्ग का, समूह का।

वर्जन तत्० (पु०) निषेध, त्याग, परिहार।

वर्जित तत्० (गु०) रोका हुआ, छोड़ा हुआ, वर्जा, निषिद्ध।

वर्ण तत्० (पु०) रङ्ग, राग, ब्राह्मण आदि चार वर्ण, अक्षर माला।—**माला** (स्त्री०) ककहरा, अक्षर माला।—**सङ्कर** (पु०) विभिन्न जाति के माता पिताओं से उत्पन्न, दोगला।

वर्णक तत्० (गु०) प्रशंसक, स्तुति कर्ता। (पु०) रङ्ग, चित्रों में भरा जाने वाला रङ्ग।

वर्णन तत्० (पु०) प्रशंसन, गुण कथन, बखान।

वर्णना तत्० (स्त्री०) वर्णन, स्तव, स्तुति। (क्रि०) बखान करना, स्तव करना, बखानना।

वर्णात्मक तत्० (गु०) [वर्ण + आत्मक] अक्षर सम्बन्धी, अक्षरात्मक।

वर्णाश्रम तत्० (पु०) [वर्ण + आश्रम] ब्राह्मण आदि वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि आश्रम।

वर्णिका तत्० (स्त्री०) रङ्ग भरने की लेखनी।

वर्णित तत्० (गु०) प्रशंसित, स्तुत।

वर्तन तत्० (पु०) जीविका, वृत्ति, जीवनोपाय।

वर्तमान तत्० (गु०) काल विशेष, जो समय बीत रहा हो। किसी किसी को आरम्भ करके जब तक उसकी समाप्ति न हो तब तक का काल वर्तमान है।

वर्ता दे० (स्त्री०) काठ की क़लम, जिससे पटरे पर लिखा जाता है।

वर्ताव दे० (पु०) व्यवहार, आचरण, आचार, रीति।

वर्ति तत्० (स्त्री०) बाती, दीपक में जलने वाली बत्ती, आँखों में सुरमा लगाने की सलाई, नयनाञ्जन शलाकिका।

वर्तिका तत्० (स्त्री०) पक्षी विशेष, बटेर पक्षी, बाती, वर्ति।

वर्तुल तत्० (गु०) गोलाकार, गोल वस्तु, मण्डल।

वर्त्म तत्० (पु०) अध्वा, पथ, राह, रास्ता, मार्ग।

वर्द्धन तत्० (पु०) वृद्धि, बढ़ती, बढ़ना, उन्नति, उद्भव, अभ्युदय।

वर्द्धमान तत्० (गु०) श्रीमान्, भाग्यवान्, उन्नतिशील।

वर्द्धा दे० (पु०) बैल, वृषभ, बधिया बैल।

वर्द्धित तत्० (गु०) उन्नत, बढ़ा हुआ।

वर्म तत्० (पु०) कवच, शरीर त्राण, लोहे का वस्त्र, जिसे योद्धा लोग युद्ध के समय धारण करते थे।

वर्मा तत्० (पु०) क्षत्रियों का उपपद, अस्त्र विशेष, बढ़ई का यन्त्र।

वर्य तत्० (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रवर, वर, शिरोमणि, यह जिस संज्ञा शब्द के अन्त में आता है उसकी श्रेष्ठता बतलाता है।

वर्रा दे० (पु०) नदी का इस पार, इस पार का घाट।

वर्वर तत्० (पु०) असभ्य, जङ्गली।

वर्ष तत्० (पु०) वृष्टि, वर्षा, साल, संवत्, बारह महीने का समय, पृथिवी का खण्ड विशेष।

वर्षण तत्० (पु०) वृष्टि, बरसना, पानी पड़ना।

वर्षा तत्० (स्त्री०) वर्षा काल, प्रावृट् काल। वृष्टि, पानी बरसना।—काल तत्० (पु०) प्रावृट्, बरसात।

वर्षाशन तत्० (पु०) [वर्ष + अशन] एक वर्ष का भोजन, वर्ष भर की जीविका।

वर्हो तत्० (पु०) मोर, मयूर।

वल तत्० (पु०) सेना, चमू।

वलकल तत्० (पु०) वल्कल, छाल, त्वक्, वकला, वृक्षों की छाल।

वलभी तत्० (स्त्री०) बरामदा।

वलय तत्० (पु०) कङ्कण, कड़ा, हाथ में पहनने का कपड़ा।

वला तत्० (स्त्री०) सेना, लक्ष्मी, धरणी, ओषधि विशेष, बरियार।

वलाका तत्० (स्त्री०) बगुला, बक, बकपंक्ति, बक समूह।

वलाहक तत्० (पु०) मेघ, घटा, बादल।

वलि तत्० (पु०) पूजोपहार, पूजा की सामग्री, पशु का नैवेद्य, पाताल का राजा।

वल्कल तत्० (पु०) छाल, छिलका, वकला, वृक्ष त्वक्।

वल्गु तत्० (गु०) मनोहर, सुन्दर।

वल्मीक तत्० (पु०) दीमक, बिम्बोट।

वल्लकी तत्० (स्त्री०) वीणा, तम्बूरा, वाद्य विशेष।

वल्लभ तत्० (पु०) प्रिय, प्रियतम, स्वामी, प्रभु, प्रसिद्ध वल्लभ सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक आचार्य, ये दक्षिणी ब्राह्मण थे, इनके पिता का नाम महादेव भट्ट था। इनके अनुयायी इनको साक्षात् विष्णु भगवान् का अवतार मानते हैं। सम्भवतः ११३५ ई० में इनका जन्म हुआ था।

वल्लभा तत्० (स्त्री०) प्रिया, प्रियतमा, अत्यन्त प्रिया स्त्री।

वल्लव तत्० (पु०) अहीर, गोप, ग्वाला।

वल्ली तत्० (स्त्री०) लता, बवरी।

वश तत्० (गु०) अधीन, अधिकृत, अधिकार युक्त, अधिकार, प्रभुत्व।

वशिष्ठ तत्० (पु०) महर्षि विशेष, ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में से थे, सप्तऋषियों में से एक अन्यतम ये भी हैं। कर्दम प्रजापति की कन्या अरुन्धति इनकी स्त्री हैं। इनके एक सौ पुत्रों को राक्षस मायापन्न अयोध्या के राजा कल्माषपाद ने खा डाला था। महर्षि विश्वामित्र इनके स्वाभाविक शत्रु थे। सूर्यवंशियों के ये पुरोहित थे।

वशीकरण तत्० (पु०) अधीन करने की प्रक्रिया, तन्त्र या मन्त्र विशेष, जिससे वशीकरण होता है।

वशीभूत तत्० (गु०) अधीनीभूत, हिला, परचा।

वश्य तत्० (गु०) वशीभूत, अधीनी भूत, परचा।

वषट् तत्० (अ०) इससे देवताओं को हवि दी जाती है।

वसति तत्० (स्त्री०) वास, वासस्थान, पुर, नगर, गाँव, ग्राम।

वसन तत्० (पु०) वस्त्र, कपड़ा।

वसन्त तत्० (पु०) ऋतुराज, फागुन और चैत महीना, किसी के मत से चैत और वैशाख वसन्त ऋतु है। राग विशेष, शीतला, चेचक, गोटी। —दूत(पु०) कोकिल, आम्र वृक्ष।

वसा तत्० (स्त्री०) मज्जा, चर्बी।

वसीठ दे० (पु०) दूत, हरकारा, सन्देहारक।

वसीठी दे० (स्त्री०) दूतता, दूत का काम।

वसु तत्० (पु०) गण देवता विशेष, वसु नामक आठ देवता प्रसिद्ध हैं। यथा—धर ध्रुव, सोम, विष्णु, अनल, अनिल, प्रत्यूष, और प्रभास।

(२) चेदि देश के राजा, इनका जन्म पुरुवंश में हुआ था। इन्द्र के अनुग्रह से इन्हें चेदि देश का राज्य मिला था। कुछ दिनों के बाद अस्त्र शस्त्र छोड़ कर वसु तपस्या करने लगे, इनकी तपस्या से इन्द्र को बड़ा भय हुआ, इन्द्र इनके समीप आये, प्रेम पूर्वक इन्द्र राज्यशासन करने के लिये इनसे अनुरोध करने लगे। इन्होंने इन्द्र की बातें मान लीं, और तदनुसार तपस्या छोड़ कर ये राज्य-शासन करने लगे। इनके साथ इन्द्र की बड़ी मित्रता हो गई थी, ये मर्त्यलोक से भी इन्द्र की मित्रता निभा सकते थे। इन्द्र ने आकाशगामी एक विमान इन्हें दिया था, उसी विमान पर चढ़ कर ये कभी कभी आकाश में घूमते थे। अतएव इनका दूसरा नाम उपरिचर प्रसिद्ध हुआ था। —देव (पु०) श्रीकृष्णचन्द्र के पिता। —धा (स्त्री०) धरणी, पृथ्वी, पृथिवी। —मती (स्त्री०) वसुधा।

वसुन्धरा तत्० (स्त्री०) पृथ्वी, वसुधा।

वस्तव्य तत्० (पु०) वास योग्य, ठहरने योग्य, बसने के उपयुक्त।

वस्तु तत्० (स्त्री०) (संस्कृत में नपुसक) पदार्थ, द्रव्य, सामग्री।

वस्त्र तत्० (पु०) वसन, कपड़ा।

वह दे० (सर्व०) अन्य पुरुष विशेष।

वहला दे० (पु०) धावा, चढ़ाई, आक्रमण।

वहाँ दे० उस स्थान पर।

वन्हि तत्० (पु०) आग, अग्नि, अनल।

वा तत्० (अ०) विकल्प, पक्षान्तर, अथवा।

वांशी तद्० (स्त्री०) मुरली, वंशी।

वाक्, **वाक्य** (पु०) भाषा, वाणी, वचन। —चातुरी (स्त्री०) वचनपटुता। —देव (पु०) शारदा, सरस्वती। —पति (पु०) बृहस्पति, देवगुरु। —युद्ध (पु०) जवानी झगड़ा।

वाकुची दे० (स्त्री०) बकुची, औषध विशेष।

वाक्यार्थ तत्० (पु०) [वाक्य + अर्थ] वाक्य का अर्थ, शब्द बोध।

वाग्जाल तत्० (पु०) प्रपञ्च, वाक् समूह।

वाग्दत्त तत्० (पु०) वचनदत्त, वचन से दिया, एक प्रकार का विवाह।

वागुरा, **वागुरी** तत्० मृगबन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा, यथा.—

> मातु चरण सिरनाय, चले तुरत शङ्कित हिये।
> वागुरि विषम तोराय, मनोभाग मृग भागवत॥
> —रामायण।

वाच तत्० (पु०) वचन, वाक्, वाक्य, भाषा बोली।

वाचक तत्० (पु०) शब्द, अर्थबोधक, अर्थबोधन करने वाला, बाँचने वाला, पुराणवक्ता, कथक।

वाचनिक तत्० (गु०) वचन कथित, वचन सम्बन्धी।

वाचा तद्० (पु०) वाक्, वचन, वच।

वाचाल तत्० (गु०) बक्की, गप्पी, बकवादी, गपोड़िया, मुखर।

वाच्य तत्० (पु०) वक्तव्य, बोलने योग्य। (पु०) बोध्य, अर्थ, शब्दार्थ।

वाछिड दे० (अ०) वाहजी, धन्य, प्रियवाक्य।

वाज दे० (पु०) पक्षि विशेष।

वाजपेय तत्० (पु०) यज्ञ विशेष।

वाजी तत्० (पु०) घोड़ा, अश्व।

वाञ्छा तत्० (स्त्री०) आकांक्षा, मनोरथ, स्पृहा।

वाञ्छित तत्० (गु०) आकांक्षित, इच्छित, अभिलाषित।

वाट दे० (पु०) मार्ग, पथ, अध्वा, राह, डगर।

वाटिका तत्० (स्त्री०) फुलवाड़ी बगीचा, आराम।

वारी दे० (स्त्री०) घर, मकान, गृह।

वाड़ दे० (पु०) स्थान, वाढ़, थान।

वाड़ी दे० (स्त्री०) आँगन, उपवन, उद्यान, बग़ीचा।

वाण तत्० (पु०) तीर, शर, पत्रु, सायक।

वाणी तत्० (स्त्री०) बात, बोली, शब्द, वचन।

वात तत्० (पु०) वायु, पवन, हवा, रोग विशेष, गठिया, वाय।—शूल (पु०) शूल विशेष।

वातुल तत्० (पु०) वात रोगी, उन्मत्त, वायुग्रस्त।

वात्सल्य तत्० (पु०) करुणा, अनुकम्पा, स्नेह।

वाद तत्० (पु०) विवाद, वाक्कलह, शास्त्रार्थ, सम्भाषण, आलाप।

वादानुवाद तत्० (पु०) उत्तर प्रत्युत्तर, झगड़ा, कलह।

वादी तत्० (पु०) विरोधी, मुद्दई, प्रथम अभियोग करने वाला।

वाद्य तत्० (पु०) बाजा, बाद्य यन्त्र।—कर (पु०) वाद्यकर्ता, बजन्त्री, बजाने वाला।

वानप्रस्थ तत्० (पु०) तीसरा आश्रम।

वानर तत्० (पु०) कपि, बन्दर, मर्कट, बाँदर।

वापी तत्० (स्त्री०) तड़ाग, बावली, सरोवर।

वाम तत्० (पु०) बायाँ। (गु०) विरोधी, शत्रु, अशुभचिन्तक, अहितकारी।

वामन तत्० (पु०) बौना, खर्व, ह्रस्वआकार वाला।

वामा तत्० (स्त्री०) नारी, स्त्री, योषित्।—चार (पु०) कौल सम्प्रदाय, शाक्तमत का एक भेद, मद्य-मांस सेवन आदि ही जिनका धर्म है।

वायु तत्० (पु०) पवन, बयार, बतास, हवा।—ग्रस्त (गु०) उन्मत्त, वातुल।

वार दे० (पु०) ठोकर, आक्रमण, घाव, वार, पाला, बारी।

वारक तत्० (पु०) निवारणकर्ता, निषेधक, रुकवैया, बाधक।

वारण तत्० (पु०) अटकाव, रुकाव, रुकावट, बाधा, विघ्न, हस्ति, हाथी।

वारन दे० (पु०) अर्पण, भेंट चढ़ाना, न्योछावर करना, बलि।

वारा दे० (पु०) सस्ताई, बचाई, बचाव, निछावर।

वारि तत्० (पु०) जल, नीर, अप्, पानी, अम्बु।—चर (पु०) जलजन्तु, जलचर।—ज (पु०) कमल, पद्म।—द (पु०) मेघ, जलद, तोयद, घटा, घन।—धि (पु०) समुद्र, सागर।

वारुणी तत्० (स्त्री०) मदिरा, शराब, पश्चिम दिशा, पश्चिम।

वार्ता तत्० (स्त्री०) वृत्तान्त, बात, समाचार।

वार्तिक तत्० (पु०) सूत्रों की टीका, सूत्र में कहे नहीं अथवा दो बार कहे विषयों का विचार जिस ग्रन्थ में हो।

वार्द्धक्य तत्० (पु०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ौती।

वार्षिक तत्० (गु०) वर्ष में होनेवाला, साम्वत्सरिक।

व्याल तत्० (पु०) पलटा, बदला।

वालखिल्य तत्० (पु०) अँगुष्ठ प्रमाण शरीर वाले साठ हज़ार महर्षियों का समूह। इन्हींकी तपस्या से गरुड़ उत्पन्न हुए हैं। एक समय महर्षि कश्यप ने पुत्र की इच्छा से यज्ञ प्रारम्भ किया था। उन्होंने उस यज्ञ में लकड़ी के लाने के लिये इन्द्र और वालखिल्य को नियुक्त किया था। समस्त वालखिल्यों का समूह बड़े कष्ट से एक लपटा ले जा रहा था, क्योंकि वे बहुत ही छोटे और दुर्बल थे। रास्ते में जलपूर्ण एक गोष्पद में वे डूब रहे थे, बलाभिमानी पुरन्दर यह देख कर उपहास पूर्वक उनको डाक कर चले गये। इससे उनको बड़ा कष्ट हुआ, और इस इन्द्र से अधिक बलशाली इन्द्र की यज्ञ द्वारा वे प्रार्थना करने लगे। तब इन्द्र के प्रार्थना करने पर महर्षि कश्यप ने कहा, देखो, इनको ब्रह्मा ने इन्द्र बनाया है और तुम दूसरे इन्द्र की प्रार्थना करते हो इससे ब्रह्मा के नियम का तिरस्कार होगा और हम तुम्हारी भी प्रार्थना निष्फल नहीं करना चाहते हैं, अतएव तुम्हारा प्रार्थित इन्द्र पतगेन्द्र हो, वालखिल्यों ने कश्यप के प्रस्ताव को स्वीकृत किया।

वाल्मीकि तत्० (पु०) विख्यात रामायण के कर्ता मुनि। ये अयोध्याधिपति रामचन्द्र के समय में थे। परन्तु रामचन्द्र से ये अवस्था में बहुत बड़े थे। अयोध्या के दक्षिण ओर गङ्गा बहती हैं, गङ्गा के दक्षिण की ओर का वास आनार्यों की बस्ती थी, वह प्रदेश जङ्गल था। उसी जङ्गल के बीच से तमसा नदी प्रवाहित हुई है, इसी नदी के तीर पर महर्षि वाल्मीकि का आश्रम है। उसी आश्रम में इन्होंने अपने भुवन विख्यात काव्य की रचना की है। ये ही भारत के आदि कवि हैं। कोई कहते हैं कि अयोध्या से मथुरा जाने के मार्ग में वाल्मीकि का आश्रम है अतएव लवणासुर का वध करने के लिये जाते हुए शत्रुघ्न वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे। इनके डाकू होने की कथा आर्य रामायण में नहीं है।

वावदूक तत्० (पु०) वक्ता, विख्यात वक्ता, अत्यन्त बोलने वाला।

वास तत्० (पु०) स्थान, रहने का स्थान, गन्ध, महक।

वासन्ती तत्० (स्त्री०) लता विशेष, माधवी लता।

वासर तत्० (पु०) दिन, दिवस, दिवा, वार, तिथि।

वासित तत्० (गु०) सुगन्धित।

वासी तत्० (गु०) बसैया, रहने वाला, निवासी, वाशिन्दा। (पु०) ठण्डा अन्न, भाफ निकला अन्न, कल का बना हुआ अन्न।

वास्तव तत्० (पु०) यथार्थ, निश्चय, ठीक, सत्य।

वास्प तत्० (पु०) वाष्प, भाफ।

वाहिनी तत्० (स्त्री०) सेना, चमू।

वाह्य तत्० (गु०) बाहर, बाहरी, बाहर का।

वि तत्० (उप०) वियोग, विशेष, निश्चय, ईषत्, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन ज्ञान, गति, आलस्य, पालन।

विकट तत्० (गु०) भयानक, भयङ्कर, क्रूर।

विकल तत्० (गु०) विह्वल, उद्विग्न, व्याकुल, अधूरा, असम्पूर्ण।

विकराल तत्० (गु०) अतिशय भयानक, घोर भयङ्कर, डरावना, भयप्रद, भयजनक।

विकल्प तत्० (पु०) सन्देह, संशय, भ्रान्ति, भ्रम, अनिश्चय।

विकार तत्० (पु०) विकृति, परिवर्तन, परिवृत्ति, उलटफेर, बदलाव।

विकाल तत्० (पु०) गोधूँली, सन्ध्या, साय ङ्काल।

विकशन तत्० (पु०) प्रकाश, प्रफुल्लता, खिलना।

विकाश तत्० (पु०) प्रकाश, उद्भेद, व्यक्ति।
—**सिद्धान्त** (पु०) एक प्रकार का दर्शन सिद्धान्त।

विकृत तत्० (गु०) विरूप, अस्वच्छ, मलीन। (पु०) घृणा।

विकृति तत्० (स्त्री०) विकार, अन्यथा भाव, परिवर्तन, बदलाव।

विक्रम तत्० (पु०) पराक्रम, बल, शक्ति, सामर्थ्य, शूरता, वीरता, प्रभुता, वीर्य।

विक्रमादित्य तत्० (पु०) [विक्रम + आदित्य] उज्जयिनी के विख्यात विद्या प्रेमी राजा, ये स्वयं पण्डित थे, और पण्डितों को बहुत धन दे कर उनकी विद्या का आदर करते थे। इनके समय में सर्वोत्तम नौ पण्डित थे जो नवरत्न कहे जाते थे। पण्डितों के नाम हैं कालिदास, वररुचि, अमरसिंह धन्वन्तरि, क्षपणक, बैताल भट्ट, घटकर्पर, शङ्कु और वराहमिहिर। बहुतों के मत से ई० सन् के ५६ वर्ष पहले विक्रम का समय माना गया है। इनकी विश्वासनीय जीवनी कोई नहीं मिलती।

विक्रमी तत्० (गु०) बलवान, बली, पराक्रमशाली, वीर।

विक्रय तत्० (पु०) बिक्री, बेचना, माल खपाना।

विक्रयी, विक्रेता तत्० (पु०) बेचने वाला, बिक्री करने वाला।

विक्षेप तत्० (पु०) व्याघात, बाधा, व्याकुलता, फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना।

विख्यात तत्० (गु०) प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त, कीर्तिमान्, यशस्वी।

विख्याति तत्० (स्त्री०) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि।

विगत तत्० (गु०) गया हुआ, बीता हुआ, व्यतीत। —श्रम (गु०) श्रम रहित, बिना थकावट का।

विगति तत्० (स्त्री०) विरोध, बिगाड़, ख़राबी।

विगर्हण तत्० (पु०) तिरस्कार, निन्दन, निन्दा करना।

विगुण तत्० (गु०) गुण हीन, विगत गुण, बिना गुण का।

विगोये दे० (गु०) छिपे हुए, गुप्त, लुका।

विग्रह तत्० (पु०) विरोध, लड़ाई, युद्ध, संग्राम, झगड़ा, द्वेष, शरीर, देह, अङ्ग।

विघटन तत्० (पु०) अलगाव, पृथक्कार, वियोग, अलग अलग होना, खिलना, फूलना।

विघात तत्० (पु०) विघ्न, अड़चन, रुकावट, बाधा, व्याघात, अटक, नाश, ध्वंस, बिगाड़।

विघातक तत्० (पु०) बाधक, नाशक, घातक।

विघ्न तत्० (पु०) बाधा, अटकाव, रुकाव।

विचक्षण तत्० (पु०) चतुर, प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्।

विचरण तत्० (पु०) भ्रमण, घूमना।

विचल तत्० (पु०) चञ्चल, अस्थिर, अधीर।

विचलना दे० (क्रि०) विचलित होना, अधीर होना, मुकरना।

विचार तत्० (पु०) ध्यान, सोच, अनुमान, तत्व-निर्णय, मानसिक, अभिप्राय।

विचारित तत्० (गु०) निर्णीत, व्यवस्थापित।

विचित्र तत्० (गु०) रङ्ग बरङ्गा, अनेक रङ्ग का, अद्भुत।

विचित्रवीर्य तत्० (पु०) महाराज शान्तनु का पुत्र, काशिराज की कन्या अम्बालिका और अम्बिका इनको व्याही गई थीं। अम्बालिका के गर्भ से पाण्डु और अम्बिका के गर्भ से धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे।

विच्छेद तत्० (पु०) वियोग, पार्थक्य, भेद, अन्तर।

विजन तत्० (गु०) निर्जन, जनरहित, जनशून्य, वीरान।

विजय तत्० (पु०) जय, जीत।

विजया तत्० (स्त्री०) भाँग, बूटी, तिथि विशेष, कुआर शुक्ला एकादशी, दुर्गा।

विजाति तत्० (स्त्री०) अन्य जाति, भिन्न जाति, दूसरी जाति।

विज्ञ तत्० (पु०) पण्डित, चतुर, प्रवीण, अभिज्ञ, ज्ञाता, बुद्धिमान्, विद्वान्। —ता (स्त्री०) पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, चतुरता।

विज्ञान तत्० (पु०) शिल्प और शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान, संसारात्मक ज्ञान।

विज्ञापन तत्० (पु०) जनाना, जताना, प्रार्थना, निवेदन, विनती। —पत्र (पु०) प्रार्थना पत्र, निवेदन-पत्र।

विटप तत्० (पु०) वृक्ष, पेड़, रूख, यथा:—

> पुरुषकुयोगी ज्यों उरगारी।
> मोह विटप नहिं सकल उखारी॥
>
> —रामायण।

विडम्बना तत्० (स्त्री०) दुखदायक, दुःख, तिरस्कार, अपमान, अनुकरण।

विडम्बित तत्० (गु०) अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत।

विड़ाल तत्० (पु०) बिल्ली, मार्जार, बिलार।

वितण्डा तत्० (स्त्री०) मिथ्यावाद, वाक्प्रपञ्च, शास्त्रार्थ में दूसरे का पक्ष खण्डन करने की रीति।

वितरण तत्० (पु०) दान, त्याग, बाँटना, पार होना।

वितर्क तत्० (पु०) अनुमान, विचार, तर्क ।
वितल तत्० (पु०) पाताल विशेष ।
वितस्ति तत्० (स्त्री०) बित्तिद, बित्ता ।
वितान तत्० (पु०) चाँदनी, चंदवा ।
वितृष्ण तत्० (गु०) तृष्णाहीन, निस्पृह, विराग, तृप्त ।
वित्त तत्० (पु०) धन, ऐश्वर्य, विभव ।
विथकना तद् (क्रि०) अधूरा पड़ा रहना, बन्ध्या होना ।
विदग्ध तत्० (पु०) चतुर, प्रवीण, अनुभवी ।
विदा दे० (पु०) जाने की अनुमति ।
विदाई दे० (स्त्री०) भेंट, सौग़ात ।
विदारण तत्० (पु०) फाड़न, चीरन, छेदन ।
विदिक तत्० (स्त्री०) विदिशा, उपदिशा ।
विदित तत्० (गु०) ज्ञात, जाना हुआ, बूझा हुआ ।
विदिशा तत्० (स्त्री०) नगरी विशेष ।
विदीर्ण तत्० (गु०) खोखला, फाड़ा, चीरा ।
विदुर तत्० (पु०) कृष्ण द्वैपायन व्यास के औरस से और विचित्र वीर्य की स्त्री अम्बिका की परिचारिका के गर्भ से ये उत्पन्न हुए थे । ये अन्धराज धृतराष्ट्र के मन्त्री थे, परन्तु पाण्डवों का अधिक पक्ष करते थे । ये न्यायपरायण और सत्यवादी थे । जिस समय दुर्योधन आदि वारणावत नगर में पाण्डवों को भेज कर जतुगृह में उन लोगों को मारने का विचार करते थे उस समय विदुर की ही कृपा से पाण्डवों की रक्षा हुई थी । पाण्डवों के विवाह के पश्चात् धृतराष्ट्र की आज्ञा से ये पाञ्चालराज्य में गये थे, और वहाँ से पाण्डवों को लिवा लाये थे । महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर जब युधिष्ठिर राजा हुए थे, तब १५ वर्ष तक विदुर उनके साथ हस्तिनापुर में रहे थे । तदनन्तर धृतराष्ट्र के साथ वन गये और वहीं इन्होंने योगबल से शरीर छोड़ दिया । कहते हैं ये पूर्वजन्म में यम थे । परन्तु अणिमाण्डव्य के शाप से शूद्र योनि में उत्पन्न हुए थे ।

विदुला तत्० (स्त्री०) सौवीरराज महिषी, ये बड़ी महिला और वीर्यवती स्त्री थीं । इनके पति की मृत्यु के बाद सिन्धुराज ने इनके राज्य पर आक्रमण किया । प्रबल शत्रु के आक्रमण से इनका पुत्र सञ्जय पहले डर गया था । परन्तु पुनः माता के उत्साह वाक्यों से उत्तेजित होकर प्रबल शत्रु सिन्धुराज का उसने सामना किया और उन्हें हरा कर अपने पिता का राज्य लिया ।
विदूषक तत्० (पु०) मसख़रा, राजा के साथ रहने वाला मुसाहब ।
विदेश तत्० (पु०) अन्य देश, भिन्न देश, अपने देश से दूसरा देश ।
विदेशी तत्० (गु०) परदेशी, प्रवासी ।
विदेह तत्० (पु०) जनक मिथिला का राजा ।
विद्यमान तत्० (गु०) वर्तमान, जीवित, स्थित, सन्निहित, उपस्थित ।
विद्या तत्० (स्त्री०) ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, यथार्थ ज्ञान । —धर (पु०) देवयोनि विशेष (गु०) पण्डित । —र्थी (पु०) [विद्या+अर्थी] छात्र, शिष्य, पढ़ने वाला, पढ़ैया ।—लय (पु०) [विद्या+आलय] पाठशाला, पढ़ने का स्थान ।—वान् (गु०) पण्डित, विद्वान् ।
विद्युत (स्त्री०) चपला, तड़ित, बिजुली ।
विद्रुम तत्० (पु०) मूँगा, प्रवाल, रत्न विशेष ।
विद्रोह तत्० (पु०) विरोध, विद्वेष, बैर ।
विद्रोही तत्० (पु०) बैरी, शत्रु, अहित, अनिष्टकारक ।
विद्वान् तत्० (पु०) विद्यावान्, पण्डित, पढ़ा ।
विद्वेष तत्० (पु०) बैर, विरोध ।
विध तद्० (स्त्री०) विधि, रीति, प्रकार, ढब, ढौं[illegible]
विधवा तत्० (स्त्री०) रण्डा, राँड, पतिहीना [illegible]
विधातव्य तत्० (गु०) विधेय, करने योग्य ।
विधाता तत्० (पु०) ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता, [illegible]कारक ।

विधान तत्० (पु०) विधि, रीति, शास्त्रोक्तरीति, उपाय।

विधायक तत्० (गु०) विधान करने वाला, निर्णय करने वाला, सिद्धान्त करने वाला।

विधि तत्० (स्त्री०) (संस्कृत में पुलिङ्ग) व्यवस्था, विधान, उपाय, उद्योग।—वत् (अ०) विधि पूर्वक, यथा योग्य।

विधु तत्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र।

विधिन्तुद तत्० (पु०) राहु।

विधुर तत्० (पु०) विकलता, कष्ट, कृशता, वैकल्य।

विधूत तत्० (गु०) कम्पित, कंपाया हुआ, हिलाया गया।

विधेय तत्० (पु०) विनय ग्राही, लोनहार।

विध्वंस तत्० (पु०) नाश।

विध्वंस्त तत्० (गु०) नष्ट, विनष्ट।

विनत तत्० (गु०) नम्र, प्रणत, टेढ़ा, झुका।

विनता तत्० (स्त्री०) गरुड़ की माता, महर्षि कश्यप की स्त्री।

विनति (ती) तत्० (स्त्री०) नम्रता, निवेदन, अनुनय, विनय।

विनय तत्० (पु०) विनती, शिष्टता, शिष्टाचार, नम्रता।

विनष्ट तत्० (गु०) बिगड़ा, विनाश प्राप्त।

विनश्वर तत्० (गु०) भंगुर, नाशी, नाश होने वाला।

विना तत्० (अ०) छोड़कर, रहित, अतिरिक्त, भिन्न।

विनायक तत्० (पु०) गणेश, गजानन।

विनाश तत्० (पु०) ध्वंस, नाश, संहार, मरण।

विनाशित तत्० (गु०) विध्वस्त, नष्ट, नष्ट किया हुआ।

विनिपात तत्० (पु०) पतन, विपद, अधःपात, विषाद।

विनिमय तत्० (पु०) लेनदेन, बदला बदला, परिवर्तन।

विनीत तत्० (गु०) विनयी, नम्र, सुशील।

विनीतात्मा तत्० (गु०) नम्र, सुशील।

विनेता तत्० (पु०) शासक, शिक्षक, राजा।

विनोद तत्० (पु०) कौतुक, खेल, हँसी, ठट्ठा।

विन्दु तत्० (पु०) बूँद, अनुस्वार, शून्य, कणा, कणिका।

विन्ध्य तत्० (पु०) पर्वत विशेष।—वासिनी (स्त्री०) दुर्गा देवी, अष्टभुजा।

विन्ध्याचल तत्० (पु०) एक नगर का नाम, जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी हैं।

विन्न तत्० (गु०) प्राप्त, ज्ञात, विदित।

विन्यस्त तत्० (गु०) स्थापित, यथाक्रम युत, क्रम से रखा हुआ।

विन्यास तत्० (पु०) स्थापन, रचना, रखना।

विपक्ष तत्० (पु०) शत्रु, वैरी, द्वेषी।

विपत्ति तत्० (स्त्री०) आपद, विपदा, दुःख, दुर्गति।

विपथ तत्० (पु०) कुपथ, कुमार्ग।

विपद् तत्० (पु०) आपदा, दुर्दशा, दुःख।

विपरीत तत्० (गु०) उलटा, वाम, विरोधी, शत्रु।

विपर्यय तत्० (पु०) विरोध, उलटा, इधर उधर, अस्त व्यस्त।

विपर्यास तत्० (पु०) विपरीत, विपर्यय।

विपल तत्० (पु०) क्षण, एक पलका साठवाँ भाग।

विपश्चित् तत्० (पु०) विद्वान्, देवज्ञ, बुद्धिमान्।

विपाक तत्० परिणाम, फल, कर्म भोग सिद्धि।

विपिन तत्० (पु०) अरण्य, जङ्गल, वन।

विपुल तत्० (गु०) प्रचुर, अधिक, बहुत, गम्भीर, बड़ा, विस्तृत।

विप्र तत्० (पु०) ब्राह्मण, द्विज, श्रोत्रिय ब्राह्मण, वेदज्ञ ब्राह्मण।

विप्रलब्ध तत्० (गु०) वञ्चित, प्रतारित, धोखा खाया हुआ।

विप्लव तत्० (पु०) उपद्रव, हलचल।

विफल तत्० (गु०) निष्फल, फल रहित, निरर्थक, वृथा, अकारथ।

विभक्त तत्० (गु०) बटा हुआ पृथक् पृथक्, अलग अलग।

विभक्ति तत्० (स्त्री०) अंश, बाँट, टुकड़ा, प्रत्यय, कारकों के चिन्ह।

विभव तत्० (पु०) सम्पत्ति, धन ऐश्वर्य, एक सम्वत्सर का नाम।

विभाग तत्० (पु०) भाग, अंश, टुकड़ा, बाँट।

विभाजक तत्० (पु०) अंशकर्ता, विभागकर्ता, पृथक् करने वाला।

विभाजित तत्० (गु०) अंशित, अंश किया हुआ, बाँटा हुआ।

विभावना तत्० (स्त्री०) अर्थालङ्कार विशेष यथा—

भयो काज बिन हेतहूँ बरनै है जिहि ठौर।
तहँ विभावना होति है भाषत कवि सिरमौर॥

उदाहरण।

साहि तनै शिवराज की, सहज टेव यह ऐन।
अनरीझै दारिद हरे, अनखीझै अरिसैन॥

—शिवराजभूषण।

विभीषण तत्० (गु०) भयानक, भयङ्कर, विकराल, डरौना। (पु०) राक्षसपति, रावण का छोटा भाई जिसे रावण को मार कर रामचन्द्र ने लङ्का की राजगद्दी पर बैठाया था।

विभीषिका तत्० (स्त्री०) भयप्रदर्शन, भय दिखाना, डर बताना।

विभु तत्० (पु०) स्वामी, प्रभु, व्यापक।

विभूति तत्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, भस्म, राख।

विभूषण तत्० (पु०) अलङ्कार, गहना, शोभा।

विभेद तत्० (पु०) विच्छेद, भिन्नता, पृथक्ता। —क (पु०) विभाजक, विच्छेदक।

विभ्रम तत्० (पु०) स्त्रियों की स्वाभाविक चेष्टा विशेष, सन्देह कटाक्ष, घबराहट, प्रियागमन से घबरा जाना।

विमर्श, विमर्शन तत्० (पु०) विचार, अनुध्यान, परामर्श।

विमल तत्० (गु०) मल रहित, निर्मल, स्वच्छ, साफ, सुथरा।

विमाता तत्० (स्त्री०) दूसरी माता, सौतेली मा।

विमान तत्० (पु०) रथ, गाड़ी, देवयान विशेष, जो आकाश पथ से चलता है। लोक विशेष, परि-वह मार्ग।

विमुक्त तत्० (गु०) छूटा हुआ, बन्धन रहित।

विमुक्ति तत्० (स्त्री०) मोक्ष, छुटकारा उद्धार, मुक्ति।

विमुख तत्० (गु०) विरोधी, पराङ्मुख, फिरा हुआ।

विमूढ़ तत्० (गु०) अज्ञानी, अनभिज्ञ, अतिशय मूर्ख।

विमोचन तत्० (पु०) [वि + मुच् + अनट्] छोड़ना, मुक्त करना, त्यागना।

विम्ब तत्० (पु०) मण्डल, प्रतिबिम्ब, छाया, मूर्ति, तसवीर, फल विशेष, कुन्दरू का फल।

विम्बिसार तत्० (पु०) मगध के प्राचीन राजा, ये बुद्धदेव के समकालीन थे, और उन्होंने उन्हीं से बौद्ध धर्म की दीक्षा ग्रहण की थी। इनके पुत्र का नाम अजातशत्रु था।

विम्बुक तत्० (पु०) लाल, भभूका।

वियोग तत्० (पु०) विच्छेद, विछोह, बिछुड़ना, विरह।

वियोगी तत्० (पु०) विरही।

विरक्त तत्० (पु०) वैरागी, वासना शून्य, वीत राग, संसार विरागी।

विरचित तत्० (गु०) बनाया हुआ, निर्मित, रचित रचा हुआ।

विरञ्चि तत्० (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता।

विरज तत्० (गु०) क्रोधरहित, अहङ्कार शून्य निरभिमान।

विरत तत्० (गु०) निवृत्त, छोड़ा हुआ, विरक्त जिसने छोड़ दिया है।

विरति तत्० (स्त्री०) वैराग्य, त्याग, निस्पृहता।

विरद तत्० (पु०) बखान, प्रशंसा, गुणगान ।

विरदैत दे० (पु०) गुणगान करने वाला, भाट, चारण, बन्दी ।

विरल तत्० (गु०) अनुपम, अनूठा, अनोखा ।

विरस तत्० (गु०) रस हीन, नीरस, निस्वादु, बिना स्वाद का ।

विरह तत्० (पु०) वियोग, विछोह, बिछुड़न ।

विराग तत्० (पु०) विरक्ति, संसार में आसक्ति का त्याग, ममता त्याग ।

विराज तत्० (पु०) क्षत्रिय आदि पुरुष, विष्णु का स्थूल रूप ।—मान (पु०) शोभायमान, सोहता हुआ ।

विरुज तत्० (गु०) रोग रहित, नीरोग ।

विराट् तत्० (पु०) चतुर्दशभुवन रूप परमात्मा की मूर्ति । (गु०) विशाल, विस्तार, विकराल । (गु०) मत्स्य देश के राजा । इन्हींके यहाँ पाण्डवों ने एक वर्ष छिप कर बिताया था । ये अतुल ऐश्वर्य सम्पन्न तथा शक्तिशाली राजा थे । इनका साला सेनापति था और वह अत्यन्त बलवान् था । त्रिगर्त देश के राजा सुशर्मा को पराजित कर उसने उनके राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया था । सुशर्मा राज्यभ्रष्ट होकर हस्तिनापुर में दुर्योधन के यहाँ रहते थे । एक रात को भीमसेन ने मल्लयुद्ध करके कीचक को मार डाला था कीचक के मारे जाने की बात चारों ओर फैलगई । यह सुयोग समझ कर सुशर्मा ने कौरवों की सहायता से विराट् की दक्षिण गोशाला पर आक्रमण किया । विराट् भी युद्ध करने के लिये गये, परन्तु सुशर्मा ने इनकी सेना को हरा कर इन्हें कैद कर लिया । अनन्तर युधिष्ठिर की आज्ञा से भीमसेन ने विराट् की रक्षा की । कुछ दिनों के बाद अगणित सेना और भीष्म कर्ण आदि सेनापतियों के साथ दुर्योधन ने विराट् की उत्तर गोशाला पर धावा किया । अर्जुन ने समस्त कुरुसेना के छक्के छुड़ा दिये और गौओं की रक्षा की । अज्ञातवास की समाप्ति होने पर पाण्डवों का विराट् से परिचय हुआ । विराट् ने अपनी कन्या उत्तरा को अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से ब्याह दी । कुरुक्षेत्र के युद्ध में विराट् पाण्डवों की ओर लड़ते रहे, युद्ध के पन्द्रहवें दिन इनको द्रोण ने मार डाला ।

विराध तत्० (पु०) राक्षस विशेष, वनवास के समय यह राक्षस राम के द्वारा मारा गया ।

विराम तत्० (पु०) निवृत्ति, विश्राम, शान्ति, विश्रान्ति, अन्त, अवसान, समाप्ति ।

विरुद्ध तत्० (गु०) विपरीत, वाम, शत्रु ।—ता (स्त्री०) झगड़ा, शत्रुता, अहिताचरण, विपरीताचरण ।

विरूप तत्० (गु०) कुरूप, भौंड़ा ।

विरेक तत्० (पु०) रोग विशेष, अतीसार, पेटोखा ।

विरेचक तत्० (पु०) सारक, निकलने वाला, दस्तावर औषध ।

विरेचन तत्० (पु०) मल निस्सारण, जुलाब ।

विरोध तत्० (पु०) द्वेष, शत्रुता, लड़ाई झगड़ा । —क (पु०) विवादी, वैरी, शत्रु ।

विरोधी तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, वैरी ।

विल तत्० (पु०) बिल, छिद्र, छेद, माँद, गर्त ।

विलक्षण तत्० (गु०) अद्भुत, आश्चर्यमय, अपूर्व, उत्तम, श्रेष्ठ, भला ।

विलगावना दे० (वा०) अलग करना, पृथक् करना, भिन्न करना, अलगाना ।

विलपना दे० (क्रि०) रोना, चिल्लाना, दुःख करना, रोदन करना ।

विलपत दे० (क्रि०) रोते हुए, रोदन करते हुए ।

विलज्ज तत्० (गु०) निर्लज्ज, लज्जा रहित ।

विलम्ब तत्० (पु०) देर, अधिक समय ।

विलमना दे० (वा०) देर लगाना, अधिक समय लगाना ।

विलय तत्० (पु०) नाश, जगत् का नाश, प्रलय ।

विलाप तत्० (पु०) रोना, बिलखना, चिल्लाना, दुःख करना।

विलास तत्० (पु०) खेल, क्रीड़ा, कौतुक, भोग, सुख, आनन्द।

विलासी तत्० (गु०) भोगी, आनन्दी।

विलीन तत्० (गु०) नष्ट, लुप्त।

विलुप्त तत्० (गु०) अदृष्ट, नष्ट, गुप्त, नष्ट।

विलोकन तत्० (पु०) दृष्टि, ताक, दर्शन, नेत्र, नयन, देखना।

विलोकना दे० (क्रि०) देखना, ताकना, दर्शन करना।

विलोचन तत्० (पु०) नेत्र, नयन, आँख, चक्षु।

विलोप तत्० (पु०) अदर्शन, नाश, ध्वंस।

विलोम तत्० (पु०) विपरीत, उलटा, अक्रम, नीचे से ऊपर।

विल्व तत्० (पु०) बेल का वृक्ष।

विवर तत्० (पु०) छिद्र, छेद, बिल।

विवरण तत्० (पु०) टीका, व्याख्या, विस्तृत व्याख्या, गुण कथन।

विवर्ण तत्० (गु०) फीका, लज्जित, पश्चात्ताप युक्त।

विवश तत्० (गु०) अवश, पराधीन, अस्थिर।

विवस्त्र तत्० (गु०) वस्त्र रहित, नग्न, नङ्गा।

विवाद तत्० (पु०) वाद, काक् कलह, शास्त्रार्थ, झगड़ा, कलह।

विवादी तत्० (पु०) विवादकारक, वादी, मुद्दई।

विवाह तत्० (पु०) ब्याह, परिणय, पाणिग्रहण।

विवाहित तत्० (गु०) ब्याहा हुआ, कृतपरिणय, ब्याहता।

विवाहिता तत्० (स्त्री०) ब्याही हुई, परिणीता।

विविक्त तत्० (पु०) पूत, पवित्र एकान्त, निर्जन।

विवृत्ति तत्० (स्त्री०) व्याख्या, टीका, विवरण।

विविध तत्० (गु०) नाना प्रकार, भाँति भाँति, अनेक प्रकार का।

विवेक तत्० (पु०) विचार, निर्णयात्मिका, बुद्धि।

विवेकी तत्० (गु०) न्यायकर्ता, विचारक, निबटेरा कर्ता।

विवेचक तत्० (पु०) निर्णयकर्ता, विचारकर्ता।

विवेचना तत्० (स्त्री०) विचार, सत्य असत्य का ज्ञान।

विशद तत्० (गु०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, विशाल।

विशाखदत्त तत्० (पु०) संस्कृत के एक नैतिक कवि, मुद्रा-राक्षस नामक नाटक इन्होंने बनाया है। संस्कृत-साहित्य में इस ग्रन्थ का बड़ा आदर है। मिस्टर तैलङ्ग कहते हैं कि इस ग्रन्थ का रचना काल ईसा की ७वीं सदी है।

विशाखा तत्० (पु०) सोलहवाँ नक्षत्र।

विशाल तत्० (गु०) विस्तृत, बड़ा, चौड़ा वृहत्।

विशिख तत्० (पु०) बाण, शर, तीर। (गु०) शिखा रहित, बिना चोटी का।

विशिष्ट तत्० (गु०) संयुक्त, जुटा, मिला।

विशुद्ध तत्० (गु०) बहुत पवित्र, निर्मल, उज्ज्वल, विमल।

विशेष तत्० (गु०) प्रकार, भेद, जाति, अधिक, मुख्य, प्रधान, खास।—ण (पु०) गुण वाचक। जिस शब्द से विशेष्य मुख्य गुण आदि का बोध होता है।—तः (अ०) विशेष रूप से, अधिकता से खास कर।—ता (स्त्री०) भेद भिन्नता, पृथकता, अधिकता, प्रधानता मुख्यता।

विशेषोक्ति तत्० (स्त्री०) अलङ्कार विशेष।

विशेष्य तत्० (पु०) प्रधान, मुख्य, द्रव्य।

विशोक तत्० (गु०) शोकरहित, विगत शोक।

विश्रम्भ तत्० (पु०) विश्वास, प्रत्यय, निश्चय।

विश्रान्त तत्० (गु०) थकित, थका हुआ बैठा हुआ।—घाट (पु०) यमुना जी के एक घाट का नाम, यह मथुरा में है।

विश्राम तत्० (पु०) सुख, थकावट दूर करना, विराम करना।

विश्लेष तत्० (पु०) वियोग विरह, बिछोह, भेद, अलगाव।

विश्व तत्० (पु०) जगत्, संसार, देव विशेष, इनको श्राद्ध में पिण्ड और बलि दी जाती है।—**कर्मा** (पु०) परमात्मा, शिल्पी विशेष।—**नाथ** (पु०) जगत् स्वामी, काशी के प्रधान देव, परमेश्वर।

विश्वम्भर तत्० (पु०) जगत् का पालनकर्त्ता, संसार-रक्षक, विष्णु।

विश्वसनीय तत्० (गु०) विश्वास योग्य, विश्वास का पात्र।

विश्वसित तत्० (गु०) विश्वस्त, जिसका विश्वास किया गया हो।

विश्वस्त तत्० (गु०) जातप्रत्यय, प्रतीति योग्य।

विश्वामित्र तत्० (पु०) [विश्व + मित्र] विख्यात, महर्षि, ये राजवंश में उत्पन्न हुए थे। परन्तु इन्होंने कठिन तपस्या और साधनों से महर्षि पद पाया था।

विश्वास तत्० (पु०) प्रत्यय, प्रतीति, धारणा, भरोसा।—**घातक** (पु०) कपटी, धोखेबाज़, ठग, धूर्त।—**पात्र** विश्वसनीय, विश्वास योग्य।

विष तत्० (पु०) गरल, कालकूट, हलाहल, ज़हर, माहुर।—**धर** (पु०) सर्प, साँप, भुजङ्ग।

विषण्ण तत्० (गु०) उदास, दुःखी।

विषम तत्० (गु०) अयुग्म, बेमेल, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, कठिन, कठोर, भयङ्कर।—**ज्वर** (पु०) ज्वर विशेष, एक प्रकार का ज्वर।—**ता** (स्त्री०) कठिनता, कठोरता।—**बाण** (पु०) कामदेव, मदन, कन्दर्प।

विषय तत्० (पु०) पदार्थ, वस्तु, इन्द्रियार्थ वस्तु, भोग विलास, लिये, निमित्त, अर्थ, देश।

विषयी तत्० (पु०) विलासी, भोगी, संसारी।

विषवैद्य तत्० (पु०) जाङ्गलिक, सपेरा, कालबेलिया, साँप का विष उतारने वाला।

विषहर तत्० (पु०) विष नाशक, विषघ्न।

विषाण तत्० (पु०) सींग, शृङ्ग, हाथी का दाँत।

विषाद तत्० (पु०) शोक, दुःख क्लेश, खेद।

विषव, विषुवत् तत्० (पु०) पृथिवी की मध्यरेखा, मध्यरेखा।—**रेखा** (स्त्री०) धरती के बीच की रेखा, मध्यरेखा, भूमध्यरेखा।

विष्टर तत्० (पु०) आसन, कुश का आसन, वृक्ष विशेष।

विष्टि तत्० (स्त्री०) भद्रा, अशुभ समय।

विष्ठा तत्० (स्त्री०) मल, पुरीष, गू।

विष्णु तत्० (पु०) परमेश्वर, परमात्मा, सृष्टिपालक, देव विशेष।—**पद** (पु०) आकाश, वैकुण्ठ।—**पदी** (स्त्री०) गङ्गा, संक्रान्ति विशेष।

विसर्ग तत्० (पु०) स्वर के पीछे के दो बिन्दु (:)।

विसर्जन तत्० (पु०) त्याग, छोड़ना, त्याग देना।

विसूचिका तत्० (स्त्री०) रोग विशेष, महामारी, हैज़ा, कालरा।

विस्तर तत्० (गु०) अधिक, विस्तृत, बड़ा हुआ, विस्तारयुक्त।

विस्तार (पु०) फैलाव, चौड़ाई, विशालता।

विस्तारित तत्० (गु०) फैलाया हुआ, बढ़ाया हुआ।

विस्तीर्ण तत्० (गु०) बड़ा, विस्तारयुक्त, फैला हुआ, चौड़ा।

विस्तृत तत्० (गु०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा।

विस्फोट तत्० (पु०) फोड़ा, घाव, फुन्सी।—**क** (पु०) शीतला, चेचक, गोटी, गाँठ।

विस्मय तत्० (पु०) अचरज, अचम्भा, आश्चर्य।

विस्मरण तत्० (पु०) भूलना, बिसरना, विस्मित होना।

विस्मित तत्० (गु०) विस्मययुक्त, अचम्भित, आश्चर्यित।

विस्मृति तत्० (स्त्री०) विस्मरण, भूल, बिसरना।

विस्वाद तत्० (गु०) स्वादहीन, स्वादरहित।

विहङ्ग, विहङ्गम तत्० (पु०) पक्षी, पखेरू।

विहरण तत्० (पु०) भ्रमण, पर्यटन, घूमना, रास।

विहार तत्० (पु०) क्रीड़ा, खेल, लड़के लड़कियों का आपस में हाथ पकड़ कर घूमना। [illegible]

उपासना स्थान, बौद्ध मन्दिर, भारत का प्रान्त विशेष ।

विहित तत्० (गु०) कथित, उक्त, उचित, कर्तव्य, निर्णीत ।

विहीन तत्० (गु०) बिना, रहित, शून्य ।

विह्वल तत्० (गु०) व्याकुल, घबराया हुआ, चञ्चल, उद्विग्न ।

वीक्षण तत्० (पु०) दर्शन, देखना, विलोकन ।

वीक्षित तत्० (गु०) दृष्ट, विलोकित ।

वीचि तत्० (स्त्री०) लहर, तरङ्ग ।

वीज तत्० (पु०) वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र, मूल कारण, बोया । —गणित (पु०) गणित का ग्रन्थ विशेष, अव्यक्त गणित ।

वीणा तत्० (स्त्री०) बाजा विशेष, जिसे नारद और सरस्वती आदि बजाते हैं ।

वीत तत्० (गु०) अपगत, गत, व्यतीत, समाप्त, बीता हुआ ।—हव्य (पु०) हैहय राज्य के अधिपति। इन्होंने वाराणसी के राजा दिवोदास को जीत कर काशी को अपने अधिकार में कर लिया था सही, परन्तु दिवोदास के पुत्र ने इन्हें जीत कर अपनी राजधानी लौटा ली थी । वीतहव्य ने प्राण बचाने की इच्छा से भरद्वाज मुनि के आश्रम में आश्रय लिया ।

वीथि तत्० (स्त्री०) गली, गैल, प्रतोली ।

वीप्सा तत्० (स्त्री०) अधिकता, व्यापकता ।

वीर तत्० (पु०) बलवान्, योद्धा, काव्य का रस । —प्रसू (स्त्री०) वीर जननी, वीर माता ।—ता (स्त्री०) शूरता, वीरत्व ।—भद्र (पु०) महादेव का प्रिय अनुचर, इसने दक्ष यज्ञ का नाश किया था । पति की निन्दा न सह कर सती का प्राणत्याग करने का संवाद जब महादेव ने सुना तब क्रोध से अधीर हो कर उन्होंने अपनी जटा भूमि पर पटकी, उसीसे वीरभद्र उत्पन्न हुआ था ।

वीर्य तत्० (पु०) सामर्थ्य, बल, बीज ।—वान् (पु०) पराक्रमी, बलवान्, बलशाली ।

वृक तत्० (पु०) भेड़िया हुंडार अग्नि विशेष भीम के जठराग्नि का नाम ।

वृकोदर तत्० (पु०) [वृक+उदर] जिसके उदर में वृक नामक अग्नि हो । भीम, भीमसेन ।

वृक्ष तत् (पु०) पेड़, द्रुम, तरु, तरुवर, तरवर ।

वृत्त तत्० (पु०) घेरा, मण्डल, मण्डलाकार, गोल ।

वृत्तान्त तत्० (पु०) बात, समाचार, हाल, वार्ता ।

वृत्ति तत्० (स्त्री०) जीविका, जीवनोपाय, व्यवसाय।

वृत्रासुर तत् (पु०) [वृत्र+असुर] राक्षस विशेष, जिसको इन्द्र ने मारा था ।

वृथा तत्० (अ०) अनर्थक, निष्प्रयोजन ।

वृद्ध तत्० (पु०) बूढ़ा । पुराना, प्राचीन, जीर्ण ।

वृद्धा तत्० (स्त्री०) बुढ़िया, बूढ़ी ।

वृद्धि तत्० (स्त्री०) लाभ, बढ़ती, उन्नति ।

वृन्द तत्० (पु०) समूह, प्राणियों का दल, यूथ, जथा ।

वृन्दारक तत्० (पु०) देवता, अमर, देव ।

वृन्दावन तत्० (पु०) मथुरा के पास का एक बन जहाँ कृष्ण रहते थे ।

वृश्चिक तत्० (पु०) बीछू, आठवीं राशि ।

वृष तत्० बैल वृषभ, वर्ध, धर्म ।—केतु (पु०) शिव, महादेव ।

वृषण तत्० (पु०) अण्डकोष, फोता, अण्ड ।

वृषभ तत्० (पु०) बैल, बर्धा, वृष ।

वृषल तत्० (पु०) जाति विशेष, शूद्र जाति । चन्द्रगुप्त राजा ।

वृषाकपि तत्० (पु०) धर्म को न कँपाने वाला, महादेव, विष्णु ।

वृषोत्सर्ग तत्० (पु०) श्राद्ध का अङ्ग विशेष, साँड़ दाग कर छोड़ना ।

वृष्टि तत्० (स्त्री०) वर्षा, मेंह, मेघ, बारिश, बरसात ।

बृहत् तत्० (गु०) बड़ा, विशाल, विस्तृत ।
वेग तत्० (पु०) शीघ्रता, रय, प्रवाह, धारा ।
वेगी तत्० शीघ्रगामी, वेग वाला ।
वेणी तत्० (स्त्री०) चोटी, नदियों का सङ्गम ।
वेणु तत्० (पु०) बाँस ।
वेतन तत् (पु०) मासिक आय, महीना की मजूरी ।
वेताल तत्० (पु०) भूत विशेष, प्रेत ।
वेत्ता तत्० (पु०) जानने वाला, ज्ञाता, वेदी ।
वेत्र तत्० (पु०) बेंत का वृक्ष, छड़ी, चाबुक ।
वेद तत्० (पु०) हिन्दुओं का धर्म ग्रन्थ, वेद चार हैं, यजु, साम, ऋक् और अथर्व । ज्ञान, उपासना और कर्म भेद से इनके तीन काण्ड हैं ।—गर्भ (पु०) ब्रह्मा, ब्राह्मण ।
वेदना तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, यातना, क्लेश ।
वेदाङ्ग तत्० (पु०) वेद के अङ्ग, वेद ज्ञान प्राप्त करने के उपयोगी शास्त्र । शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द और निरुक्त ये छः वेदाङ्ग हैं ।
वेदान्त तत्० (पु०) वेद का भाग विशेष, उपनिषद्, उपनिषद् का विचार करने वाला दर्शन ।
वेदिका तत्० (स्त्री०) वेदी, होम करने का चौतरा ।
वेदी तत्० (स्त्री०) वेदिका, स्थण्डिल, हवन स्थान ।
वेला तत्० (स्त्री०) समय, काल ।
वेश तत्० (पु०) आकार, परिच्छद, बनावट, शोभा ।
वेशार दे० (पु०) भूषण विशेष, नाक का गहना ।
वेश्या तत्० (स्त्री०) पतुरिया, गणिका, वार स्त्री, वाराङ्गना ।
वेष्टन तत्० (पु०) वेठन, लपेटन ।
वेंछना दे० (क्रि०) छीलना, उधेड़ना, काढ़ना, काटना ।
वैकाल दे० (पु०) अपराह्न, दोपहर के बाद का समय, चौथा पहर ।
वैकुण्ठ तत्० (पु०) लोक विशेष, विष्णु का धाम ।
वैखानस तत्० (पु०) यती विशेष, वानप्रस्थाश्रमी, बौद्ध भिक्षुक ।
वैतरणी तत्० (स्त्री०) नरक की एक नदी का नाम ।
वैदिक तत्० (पु०) वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला । (गु०) वेदोक्त, वेद कथित, वेद में कही बातें, जो बात वेद में लिखी हो या उससे विरुद्ध न हो ।
वैदेही तत्० (स्त्री०) जानकी, सीता ।
वैद्य तत्० (पु०) चिकित्सक, वैद्यकशास्त्रवेत्ता । - नाथ (पु०) शिव, दिवोदास, धन्वन्तरि, वैद्यनाथ, जिनका मन्दिर झाड़खण्ड में है ।
वैद्यक तत्० (पु०) चिकित्सा शास्त्र, आयुर्वेद ।
वैनतेय तत्० (पु०) गरुड़, पक्षिराज, विनतापुत्र ।
वैभव तत्० (पु०) ऐश्वर्य, सम्पत्ति, धन, सम्पदा ।
वैमनस्य तत्० (पु०) भीतरी द्वेष, मनमुटाव ।
वैयाकरण तत्० (पु०) व्याकरण पढ़ने वाला या उसका ज्ञाता । इसके अर्थ में वयाकरणी शब्द का प्रयोग करना अशुद्ध है ।
वैर तत्० (पु०) द्वेष, शत्रुता, विरोध ।
वैरागी तत्० (पु०) विरक्त, वीतराग, संसारत्यागी, निस्पृह ।
वैराग्य तत्० (पु०) विषय त्याग, विषय उदासीनता, निस्पृहता ।
वैरी तत्० (पु०) शत्रु, रिपु, विरोधी, अरि, द्वेषी ।
वैशाख तत्० (पु०) महीना का नाम, जिस महीने में विशाखा नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हों ।
वैश्य तत्० (पु०) वर्ण विशेष, तीसरा वर्ण बनिया, महाजन आदि ।
वैष्णव तत्० (पु०) विष्णुभक्त, विष्णु के उपासक, विष्णु उपासक सम्प्रदाय ।
वैसा दे० (सर्व) उसके समान, उसके जैसा, उसके तुल्य ।
वैसे दे० (गु०) बिना मूल्य, सेंतमेंत ।
वौल दे० (पु०) गोंद, गुग्गुल, धूप विशेष ।
व्यक्त तत्० (गु०) स्पष्ट, प्रकाशित, दर्शन योग्य ।

व्यक्ति तत्० (स्त्री०) एक मनुष्य, एकाकी, एक वस्तु, जन, मनुष्य।

व्यग्र तत्० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न, विकल।

व्यङ्ग तत्० (गु०) अङ्गहीन, विकलाङ्ग।

व्यजन तत् (पु०) पङ्खा, बेना, बेनिया।

व्यञ्जक तत्० (पु०) प्रकाशक, भावबोधक, शब्द, जिनसे अर्थ प्रकाशित होते हैं।

व्यञ्जन तत्० (पु०) तरकारी, साग, वर्ण, अक्षर, स्वरहीन वर्ण, क से ह तक वर्ण।

व्यञ्जना तत्० (स्त्री०) शब्द शक्ति, जिससे अर्थों का बोध होता है।

व्यतिक्रम तत्० (पु०) डाँकना, लाङ्घना, विलोम, विपर्यय।

व्यतिरिक्त तत्० (गु०) अन्य, भिन्न।

व्यतिरेक तत्० (पु०) भेद, अलग, भिन्नता।

व्यतीत तत्० (गु०) गत, बीता, गया बीता।

व्यतीपात तत्० (पु०) योग विशेष, सतरहवाँ योग।

व्यत्यय तत्० (पु०) अतिक्रम, लङ्घन, डाकना।

व्यथा तत्० (स्त्री०) पीड़ा, दुःख, वेदना, क्लेश, कष्ट।

व्यथित तत्० (गु०) पीड़ित, दुःखित, क्लेश ग्रस्त, कष्ट पतित।

व्यपदेश तत् (पु०) बहाना, व्याज, कैतव।

व्यभिचार तत्० (पु०) परस्त्री वा परपुरुष सङ्गम, निन्दित कर्म, न्याय का एक दोष।

व्यभिचारिणी तत्० (स्त्री०) दुष्टा स्त्री, कुलटा, नष्ट चरित्रा।

व्यभिचारी तत्० (पु०) लम्पट, कुमार्गी।

व्यय तत्० (पु०) खर्च, लागत, क्षय, नाश।

व्यर्थ तत्० (गु०) वृथा, निरर्थक, निकम्मा, बिना काम का, निष्फल।

व्यवकलन तत्० (पु०) गणित विशेष, घटाना, बाकी निकालना।

व्यवच्छेद तत्० (पु०) भेद, भिन्नता, अलगाव, पृथक्ता।

व्यवधान तत्० (पु०) अन्तर, दूरी, दो पदार्थों के बीच का अन्तर।

व्यवसाय तत्० (पु०) व्यवहार, लेनदेन, उद्योग, रोजगार।

व्यवस्था तत्० (स्त्री०) उपाय, प्रक्रिया, रीति, धर्म निर्णय।

व्यवस्थित तत्० (गु०) अचल अटल, निश्चित।

व्यवहार तत्० (पु०) उद्यम, धन्धा, काम, रोजगार।

व्यवहरिया दे० (पु०) व्यवहार करने वाला, महाजन, ऋणदाता।

व्यवहित तत्० (गु०) व्यवधान प्राप्त, अन्तर, अन्तरालयुक्त।

व्यसन तत्० (पु०) आसक्ति, अभ्यास, खोटी आदत।

व्यस्त तत्० (गु०) व्याकुल, उद्विग्न।

व्याकरण तत्० (पु०) शास्त्र विशेष, भाषा के नियमित करने वाला शास्त्र, शब्द शास्त्र।

व्याकुल तत्० (गु०) घबड़ाया हुआ, उद्विग्न, व्यग्र, त्रस्त।

व्याख्या तत्० (स्त्री०) वर्णन, टीका, विवृत्ति।

व्याख्यान तत्० (पु०) उपदेश, वक्तृता।

व्याघात तत्० (पु०) बाधा, रुकावट, रोक, अटकाव

व्याघ्र तत्० (पु०) बाघ, शेर, नाहर, चीता।

व्याज तत्० (पु०) बहाना, मिष, छल, कपट, कैतव (दे०) सूद, लाभ।

व्याजू दे० (पु०) व्याज के लिये जो ऋण दिया जाता है। सूद पाने के लिये क़र्ज़।

व्याध तत्० (पु०) अहेरिया, शिकारी, बहेलिया।

व्याधि तत्० (स्त्री०) बिमारी, रोग, पीड़ा, दुःख क्लेश।

व्यान तत्० (पु०) प न विशेष।

व्यापक तत्० विभु, सर्वत्र, विस्तृत।—ता (स्त्री०) विभुता, फैलाव।

व्यापना दे० (क्रि०) फैलना, सर्वत्र पार जाना।

व्यापार तत्० (पु०) रोजगार, कामधन्धा, व्यवसाय।

व्यापी तत्० (पु०) व्यापक, विभु, सर्वगत।

व्याप्त तत्० (पु०) विस्तृत, फैला हुआ।

व्याप्ति तत्० (स्त्री०) विस्तार, फैलाव, न्याय मत से अनुमान का कारण।

व्यामोह तत्० (पु०) पश्चात्ताप, अनुशय, पीड़ा, दुःख।

व्यायाम तत्० (पु०) कसरत, शारीरिक श्रम।

व्याल तत्० (पु०) साँप, सर्प, अहि, भुजङ्ग।

व्यास तत्० (पु०) महर्षि विशेष, पुराणकर्ता, पुराणकथक।

व्याहृति तत्० (स्त्री०) वैदिक मन्त्र विशेष, जिससे प्राणायाम किया जाता है।

व्युत्क्रम तत्० (पु०) उलटा पलटा, क्रमरहित।

व्युत्पत्ति तत्० (स्त्री०) शास्त्रीय ज्ञान में अभिनिवेश, बोध।

व्युत्पन्न तत्० (पु०) शास्त्र में प्रवीण।

व्यूह तत्० (पु०) सेना की रचना विशेष, समूह, राशि।

व्योम तत्० (पु०) आकाश, गगन, अन्तरिक्ष। —यान (पु०) विमान।

व्रण तत्० (पु०) घाव, फोड़ा, फुंसी, क्षत।

व्रत तत्० (पु०) पुण्य तिथि का उपवास, अनुष्ठान।

व्रात तत्० (पु०) समूह, यूथ, दल।

व्रात्य तत्० (पु०) पतित, संस्कारहीन।

व्रीड़ा तत्० (स्त्री०) लज्जा, लाज।

व्रीहि तत्० (स्त्री०) धान्य विशेष, छोटे छोटे धान।

श

श—व्यञ्जन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु होने के कारण इसे तालव्य कहते हैं।

श तत्० (पु०) कल्याण, मङ्गल।

शंयु तत्० (पु०) प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित।

शंव तत्० (पु०) सुकृती, पुण्यात्मा, धर्मी।

शंबर तत्० (पु०) जल, शङ्ख, मायावी राक्षस विशेष। इन्द्रजाल विद्या का यह एक आचार्य हो गया है। अतएव इस विद्या का दूसरा नाम शांबरी भी पड़ा है।

शंसा तत्० (स्त्री०) चाहना, चाह, अभिलाष, उत्सुकता, उत्कट अभिलाष।

शंसित तत्० (पु०) उक्त, कथित, प्रोक्त, निश्चित, स्तुत।

शंस्य तत्० (पु०) स्तुत्य, प्रशंसनीय, प्रशंसा के योग्य।

शक तत्० (पु०) देश विशेष, एक जाति विशेष, जिसका विजय राजा विक्रमादित्य ने किया था। राजा शालिवाहन का चलाया संवत्।

शकट तत्० (पु०) रथ, गाड़ी, बैलगाड़ी, छकड़ा।

शकटासुर तत्० (पु०) दानव विशेष, कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिये इसको भेजा था। इसने शकट का रूप धारण करके श्रीकृष्ण को मारने का उद्योग किया था परन्तु स्वयं मारा गया।

शकाब्द तत्० (पु०) शालिवाहन प्रवर्तित, संवत्।

शकारि तत्० (पु०) राजाधिराज विक्रमादित्य।

शकुन तत्० (पु०) सगुन, शुभ सूचक चिन्ह, मङ्गलगान, पक्षी विशेष।

शकुनी तत्० (पु०) गान्धार राजा सुबल का पुत्र, और दुर्योधन का मामा।

शकुन्तला तत्० (स्त्री०) विख्यात पौरववंशी राजा दुष्यन्त की महारानी, महर्षि विश्वामित्र के औरस और मेनका नामक अप्सरा के गर्भ से ये उत्पन्न हुई थी, महर्षि कण्व ने इसे पाला पोसा था। ग्रन्थ विशेष, विख्यात कवि कालिदास निर्मित एक नाटक।

शक्त तत्० (पु०) समर्थ, शक्तिमान्, कठोर, बलवान्, दृढ़, पुष्ट।

शक्ति तत्० (स्त्री०) बल, पुरुषार्थ, सामर्थ्य, पराक्रम, अस्त्र विशेष, माया, बर्छी, इन्द्राणी, वैष्णवी आदि आठ शक्तियाँ। वशिष्ठ का ज्येष्ठ पुत्र। —मान् (पु०) पुरुषार्थी, पराक्रमी।

शक्य तत्० (पु०) सम्पादन होने योग्य, सिद्ध होने के उपयुक्त।

शङ्कर तत्० (पु०) शिव, शम्भु, महादेव। (गु०) शुभ कर, कल्याणकर मङ्गलप्रद।

शङ्करा तद्० (स्त्री०) रागिणी विशेष।

शङ्का तत्० (स्त्री०) त्रास, डर, भय।

शङ्कित तत्० (गु०) डरा हुआ, भयभीत, डरपोंकना।

शङ्कु तत्० (पु०) कीला, खूँटा, बर्छी।

शङ्ख तत्० (पु०) स्वनाम प्रसिद्ध बाद्य विशेष।

शङ्खिनी तत्० (स्त्री०) एक प्रकार की स्त्री।

शठ तत्० (पु०) धूर्त, ठग, कपटी, वञ्चक।—ता (स्त्री०) धूर्तता, ठगाई।

शण तत्० (पु०) शन, पाट, तृण विशेष, जिसके छाल की रस्सी बनायी जाती है।

शण्ड तत्० (पु०) बैल, साँड।

शत तत्० (पु०) सौ संख्या, १००।—शः असख्यात, सैकड़ों।

शतभि तत्० (स्त्री०) नक्षत्र का नाम, चौबीसवाँ नक्षत्र।

शतमूली तत्० (स्त्री०) लता विशेष।

शत्रु तत्० (पु०) द्वेषी, बैरी, रिपु, अरि।—ता (स्त्री०) दुष्टता, रिपुता।

शनि तत्० (पु०) सप्तम ग्रह, सूर्य पुत्र, शनैश्चर। —वार (पु०) सातवाँ दिन।

शनैः शनैः तत्० (अ०) हौले हौले, धीरे धीरे।

शनैश्चर तत्० (पु०) शनिग्रह।

शपथ तत्० (पु०) सौगन्ध, सौंह, किरिया।

शप्पा तत्० (पु०) चाँद, चन्द्रमा, बोझा, भार।

शब्द तत्० (पु०) ध्वनि, निनाद, बोली।

शम तत्० (पु०) शान्ति, निग्रह, इन्द्रिय वशीकार।

शमन तत्० (पु०) यम, यमराज, शान्ति।

शमी तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, अग्नि गर्भ वृक्ष।

शम्बूक तत्० (पु०) सेंप, घोंघा, शूद्र तपस्वी।

शयन तत्० (पु०) नींद निद्रा, पलँग।

शय्या तत्० (स्त्री०) सेज, पलँग बिछौना, खाट।

शर तत्० (पु०) बाण, तीर, सरकण्डा, साख़ विशिख।

शरट तत्० (पु०) कृकलास, गिरगिट।

शरण तत्० (पु०) रक्षा उद्धार, घर, मकान।

शरणागत तत्० (गु०) आश्रित, शरणार्थी रक्षा के लिये आगत।

शरण्य तत्० (गु०) शरण के योग्य, शरणदाता।

शरद् तत्० (स्त्री०) एक ऋतु, कुआँर और कार्तिक महीना।

शर्राटा दे० (पु०) शब्द विशेष, धड़ाके का शब्द।

शराबोर दे० (गु०) सना हुआ, भींगा हुआ, आर्द्र, तराबोर।

शराव तत्० (पु०) पुरवा, सकोरा, मिट्टी का पात्र विशेष, मदिरा।

शरासन तत्० (पु०) धनुष, धन्वा।

शरीर तत्० (पु०) काय, देह, अङ्ग, गात्र।

शरीरी तत्० (पु०) शरीरधारी पुरुष।

शर्करा तत्० (स्त्री०) चीनी, खाँड।

शर्म्मा तत्० (पु०) ब्राह्मणों का उपपद।

शर्वरी तत्० (स्त्री०) रात्रि, रजनी, रात, निशा, दामिनी।

शलभ तत्० (पु०) कीट, पतङ्ग, कीड़ा, मकोड़ा।

शलाका तत्० (स्त्री०) सलाई, कूँची, तूली।

शलीता दे० (पु०) थैला, बोरा।

शलूका दे० (स्त्री०) पहिरन विशेष, एक प्रकार के पहनने के कपड़े का नाम।

शल्य तत्० (पु०) बाण, नाम मद्रदेश के राजा, ये युधिष्ठिर के मामा थे। महाभारत युद्ध में ये कर्ण के सारथी बने थे।

शव तत्० (पु०) प्राण हीन शरीर, मुर्दा।

शवर तत्० (पु०) जङ्गली जाति विशेष, भील, पुलिन्द।

शशक तत्० (पु०) ससा, खरहा, खरगोश।

शशि तत्० (पु०) चन्द्रमा, विधु, शशि।

शस्त्र तत्० (पु०) अस्त्र, हथियार ।

शस्य तत्० (पु०) धान्य, धान, अन्न के पौधे ।

शाक तत्० (पु०) साग, भाजी ।

शाकल तत्० (पु०) हवन सामग्री, होम की वस्तु ।

शाक्त तत्० (पु०) शक्ति का उपासक सम्प्रदाय विशेष ।

शाखा तत्० (स्त्री०) डाल, टहनी ।—मृग (पु०) बानर, कीश ।

शाखी तत्० (पु०) वृक्ष, रूख, पेड़, तरु ।

शाटिका तत्० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा ।

ाठ्य तत्० (पु०) शठता, ठगई, धूर्तता ।

ाण तत्० (पु०) एक प्रकार का पत्थर जिस पर हथियार तेज़ किये जाते हैं ।

ान्त तत्० (गु०) स्थिर, अक्षुब्ध, अचञ्चल ।

ान्ति तत्० (स्त्री०) शम, स्थिरता, चैन, ठण्डाई ।

ाप तत्० (पु०) सराप, धिक्कार, अशुभ चिन्तन ।

ाणी लगाना दे० (धा०) तेज करना, धार चढ़ाना ।

ाम्बूक तत्० (पु०) शम्बूक, घोंघा, सीप ।

ाम्बरी तत्० (स्त्री०) माया, इन्द्रजाल विद्या ।

ाम्भव तत्० (पु०) शिवोपासक, शैव ।

ायक तत्० (पु०) विशिख, तीर, बाण ।

ायर दे० (पु०) कवि ।

ार्दूल तत्० (पु०) पशु विशेष, बाघ, व्याघ्र ।

ाल तत्० (पु०) काँटा, कील, मत्स्य विशेष, वृक्ष विशेष, पर्वत विशेष ।—ग्राम (पु०) भगवत् मूर्ति विशेष ।

ाला तत्० (स्त्री०) गृह, मकान, आलय ।

ालि तत्० (पु०) धान, चावल ।

ाल्मली तत्० (स्त्री०) वृक्ष विशेष, सेमल का वृक्ष ।

ाबर तत्० (पु०) मन्त्र शास्त्र विशेष, एक पशु का नाम ।

ासन तत्० (पु०) पालन, अपराध का दण्ड ।—पत्र (पु०) हुकुम नामा ।

ासनीय तत्० (गु०) शासन करने योग्य, दण्डनीय ।

ासित तत्० (गु०) जिसका शासन किया जाय ।

शास्ति तत्० (पु०) शासन, सीख, शिक्षा, राजाज्ञा ।

शास्त्र तत्० (पु०) नहीं जाने हुए ज्ञान को बताने वाले ग्रन्थ, विद्या ।—ज्ञ (पु०) शास्त्र जानने वाला ।

शास्त्रार्थ तत्० (पु०) शास्त्र सम्बन्धी विवाद, शास्त्र चर्चा ।

शास्त्री तत्० (पु०) शास्त्रज्ञ, शास्त्र वेत्ता ।

शास्त्रीय तत्० (गु०) शास्त्र सम्बन्धी, शास्त्र सम्मत ।

शिक्य तत्० (पु०) छिकहर, सींका ।

शिक्षक तत्० (पु०) सिखाने वाला, अध्यापक, शिक्षा दाता ।

शिक्षा तत्० (स्त्री०) सीख, सिखाई, उपदेश ।—पत्र (पु०) वसीयत नामा ।

शिक्षित तत्० (गु०) सीखा हुआ सिखाया गया, निपुण, अभिज्ञ ।

शिखर तत्० (पु०) शिखा, चोटी, शृङ्ग पर्वत के ऊपर का भाग ।

शिखा तत्० (स्त्री०) चोटी, हिन्दू लोग सिर के बीच में कुछ बाल रख छोड़ते हैं और उनकी धार्मिक दृष्टि में उपयोगी समझी जाती है । ज्वाला, अग्नि की ज्वाला ।

शिखी तत्० (गु०) शिखा विशिष्ट, शिखायुक्त । (पु०) मोर, मयूर, अग्नि, एक पेड़ का नाम ।

शिथिल तत्० (गु०) ढीला, आलसी, मन्द, धीमा, अदृढ़ ।—ता (स्त्री०) आलस्य, ढीलापन ।

शिर तत्० (पु०) सिर, मस्तक, भाल, कपाल, कपार ।—धरा (पु०) जिम्मेदार ।

शिरा तत्० (पु०) नाड़ी, नस, धमनी ।

शिरोमणि तत्० (पु०) गहना विशेष, शिर का एक आभूषण । (गु०) उत्तम, श्रेष्ठ, सब से बड़ा, सर्वोत्तम ।

शिरोरुह तत्० (पु०) बाल, केश ।

शिला तत्० (स्त्री०) सिल, चट्टान, पत्थर ।—जित शिला रस, शैलज, पर्वतों से उत्पन्न होने वाला द्रव्य विशेष, जो दवा के काम में आता है ।

शिल्प तत्० (पु०) कारुकार्य, कारीगरी, चित्र, व्यवसाय, गुन, हुनर ।—**कार** (पु०) शिल्पी, चित्रकार, चितेरा, कारीगर ।—**शाला** (स्त्री०) कारख़ाना ।

शिव तत्० (पु०) महादेव, महेश, मङ्गल, शुभ, कल्याण ।—**पुरी** (स्त्री०) काशी, वाराणसी । —**रात्री** (स्त्री०) व्रत विशेष ।—**सेनानी** (पु०) कार्तिकेय ।

शिवा तत्० (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा, उमा ।

शिवालय तत्० (पु०) शिवमन्दिर, शिव का स्थान ।

शिवाला तत्० (पु०) शिवालय, शिवमन्दिर ।

शिवि तत्० (पु०) राजा उशीनर का पुत्र, ये राजा ययाति के दौहित्र थे ।

शिविका तत्० (स्त्री०) पालकी, डोली ।

शिविर तत्० (पु०) छावनी, पड़ाव, सेना सन्निवेश सेना के रहने का स्थान ।

शिशिर तत्० (पु०) ऋतु विशेष, जाड़ा, पाला, हिम, सर्दी, माघ, और फागुन इन दो महीनों को शिशिर ऋतु कहते हैं ।

शिशु तत्० (पु०) बालक, बाल, बच्चा ।—**पाल** (पु०) चेदि देश का राजा, यह चेदिराज दमघोष का पुत्र था । यह श्रीकृष्ण की बुआ का लड़का था इसके छोटे भाई का नाम दन्तवक्र था । शिशुपाल की माता सुप्रभा को यह मालूम हो गया था कि शिशुपाल को श्रीकृष्ण मारेंगे । इसलिये उन्होंने श्रीकृष्ण को शिशुपाल के एकसौ अपराध क्षमा करने के लिये प्रसन्न किया था । युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उसने श्रीकृष्ण को बड़ी गालियाँ दीं, उसके सौ अपराध पूरे होने के बाद श्रीकृष्ण ने उसे मार डाला ।

शिष्ट तत्० (पु०) सदाचारी, प्रतिष्ठित, भलामानस । —**ता** (स्त्री०) सदाचार, भलमनसी ।

शिष्टई दे० (स्त्री०) नेवता, निमन्त्रण, आदर, सम्मान, शिष्टाचार ।

शिष्य तत्० (पु०) छात्र, विद्यार्थी, चेला ।

शीकर तत्० (पु०) कण, जलकण, फुहार, फुही ।

शीघ्र तत्० (गु०) त्वरित, तूर्ण, द्रुत, तुरन्त, जल्दी । —**गामी** (गु०) वेगवान्, वेगी, जल्दी चलने वाला ।—**ता** (स्त्री०) जल्दी, वेग, उतावली ।

शीत तत्० (गु०) ठण्ढा, सर्द, शीतल, यामसी (पु०) जाड़ा, सर्दी, हिम, पाला ।—**काल** (पु०) हेमन्त ऋतु, जाड़े का दिन ।—**ज्वर** (पु०) जाड़ा, जड़ैया ज्वर ।

शीतल तत्० (पु०) ठण्ढा, सर्द ।—**ता** (स्त्री०) शीत गुण, ठण्डापन ।

शीतलाई तत्० (स्त्री०) शीतलता, ठण्ढाई, ठण्ढापन ।

शीतला तत्० (स्त्री०) देवी विशेष माता, चेचक ।

शीतांशु तत्० (पु०) चन्द्रमा, चन्द्र, सुधांशु ।

शीताङ्ग तत्० (पु०) एक रोग विशेष, जिस रोग में आधा शरीर शून्य हो जाता है । अर्द्धाङ्ग, पक्षाघात ।

शीतार्त तत्० (गु०) शीतपीड़ित ।

शीर्ण तत्० (गु०) जीर्ण, पुराना, प्राचीन, पुराना होने से गला हुआ, बिलकुल निकम्मा ।

शीर्ष तत्० (पु०) शीस, सिर, माथा, मस्तक, उत्तमाङ्ग ।

शील तत्० (पु०) वृत्ति, बान, उत्तम स्वभाव लज्जा, सम्मान करने वाला स्वभाव ।—**वान** (गु०) सुशील, मिलनसार, सम्मान करने वाला ।

शीशम तत्० (गु०) एक वृक्ष और उसकी लकड़ी ।

शुक तत्० (पु०) पक्षी विशेष, तोता, सुग्गा, सुआ —**देव** (पु०) वेद विभागकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन के पुत्र, इनका उपनयन महादेव ने किया था देवराज इन्द्र ने इनको कमण्डलु और देवाम्बर देकर सम्मानित किया था । शुकदेव ब्रह्मचर्य पूर्वक पिता के निकट मोक्षधर्म का अध्ययन करते थे थोड़े दिनों के बाद पिता के उपदेश से मोक्षधर्म में अपना सन्देह मिटाने के लिये मिथिलाधिप जनकराज के पास गये । मोक्षधर्म की शिक्षा पूरी करके हिमालय प्रदेश में वे व्यासाश्रम में रहने लगे, वहाँ बहुत दिनों तक शिष्य मण्डल को उपदेश देते रहे ।

शक्ति तत्० (स्त्री०) सीप, घोंघा।

शुक्र तत्० (पु०) ग्रह विशेष, छठवाँ ग्रह, उशना, भार्गव, कवि, ऋषि विशेष, दैत्य गुरु, काग, अग्नि, वीर्य, बल, सामर्थ्य।—वार (पु०) छठवाँ दिन।

शुक्राचार्य तत्० (पु०) दैत्यगुरु ये महर्षि भृगु के पुत्र थे। इनके एक कन्या और दो पुत्र थे, कन्या का देवयानी और पुत्रों का नाम शण्ड तथा अमर्क था। देवगुरु बृहस्पति के पुत्र कच ने इन्हीसे मृतसञ्जीवनी विद्या सीखी थी।

शुक्ल तत्० (गु०) श्वेत वर्ण, उजला, धौला, सफेद।—पक्ष (पु०) सुदि, जिस पक्ष में चन्द्रमा बढ़ता है।

शुचि तत्० (गु०) श्वेत, श्वेतवर्ण, शुभ्र, पवित्र, शुद्ध, निर्मल, पुण्य, स्वच्छ।

शुण्ठी तत्० (स्त्री०) औषध विशेष, सोंठ, सूखा हुआ अदरख।

शुण्ड तत्० (पु०) सूँड़, हाथी का कर।

शुद्ध तत्० (गु०) पवित्र, साफ, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, दोष रहित।—ता (स्त्री०) पवित्रता, निर्दोषता, स्वच्छता।

शुद्धि तत्० (स्त्री०) पवित्रता, शोधन, सफाई, शुचिता।—पत्र (पु०) सफाई नामा।

शुद्धोदन तत्० (पु०) कपिल वस्तु के राजा, तथा जगत्प्रसिद्ध बुद्धदेव के पिता।

शुनःशेफ तत्० (पु०) महर्षि ऋचीक का मझला पुत्र, महाराज अम्बरीष के यज्ञ में ये बलि देने के लिये लाये गये थे। कृपावश होकर महर्षि विश्वामित्र ने इनको अग्नि की स्तुति सिखाई थी। इनकी स्तुति से अग्निदेव प्रसन्न हुए और ये भी यज्ञाग्नि से अक्षत शरीर निकले। तदनन्तर, विश्वामित्र ने ही इनको अपना पोष्य पुत्र बना रखा।

शुभ तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, अच्छा, भला।—ग (पु०) सुन्दर, मनोज्ञ, प्रियपति, स्त्रियों के मनोमत।—गता (स्त्री०) सुन्दरता, मनोहरता।—चिन्तक (पु०) हितचिन्तक, हितकारी।—लग्न (पु०) उत्तम मुहूर्त, कल्याणकारी समय, मङ्गलमय अवसर।

शुभङ्कर तत्० (गु०) मङ्गलकारी, कृपालु, कल्याणप्रद।

शुभाकाङ्क्षी तत्० (गु०) शुभ चाहने वाला, हितचिन्तक।

शुम्भ तत्० (पु०) दानवराज, इनके छोटे भाई का नाम निशुम्भ था। चण्डी के हाथों ये मारे गये।

शुभ्र तत्० (गु०) स्वच्छ, विशद, श्वेत।

शुल्क तत्० (पु०) किराया, भाड़ा, शुद्दो, फीस।

शुश्रूषक तत्० (पु०) सेवा करने वाला, सेवक, भृत्य, नौकर।

शुश्रूषा तत्० (स्त्री०) सुनने की इच्छा, सेवा, टहल।

शुषेण तत्० (पु०) वानरराज इनकी कन्या तारा बाली को ब्याही थी। इन्होंने शक्ति हत लक्ष्मण का औषधोपचार किया था।

शुष्क तत्० (गु०) [शुष्+क] सूखा, नीरस, कठोर।

शुहदा दे० (पु०) विलासी, लुचा, लम्पट, छैला।

शूकर तत्० (पु०) सूअर, वराह।—क्षेत्र (पु०) शूकरक्षेत्र, तीर्थ विशेष।

शूद्र तत्० (पु०) चौथा वर्ण।

शून्य तत्० (गु०) रिक्त, रीता, जन शून्य, असम्पूर्ण, अवसन्न।—वादी (पु०) बौद्ध विशेष, नास्तिक।

शूर तत्० (पु०) वीर उत्साही, बलवान्।—ता (स्त्री०) वीरता, उत्साह।—सेन (पु०) मथुरा के एक राजा का नाम।

शूरण तत्० (पु०) ज़िमीकन्द, गोलमूल विशेष।

शूर्प तत्० (पु०) सूप, छाज, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है।—नखा (स्त्री०) रावण की बहिन जिसकी नाक लक्ष्मण ने काटी थी।

शूल तत्० (पु०) अस्त्र विशेष, लोहे का एक प्रकार का काँटा।

शृगाल तत्० (पु०) सियार, गीदड़।

शृङ्खला तत्० (स्त्री०) साँकल, सिकरी।

शृङ्खलित तत्० (गु०) साँकल के समान नधा हुआ, एक दूसरे से लगाया हुआ।

शृङ्ग तत्० (पु०) सींग, विषाण।—वेर (पु०) नगर विशेष, आदा, अदरख।

शृङ्गार तत्० (पु०) सजावट, शोभा, शोभा के लिये शरीर का परिष्कार और भूषण आदि पहनना। रस विशेष, प्रथम रस, शृङ्गार रस में रति स्थायी भाव है नायक और नायिका आलम्बन हैं।

शृङ्गी तत्० (गु०) सींग वाला, शृङ्गविशिष्ट। (पु०) ऋषि विशेष, ये लोमश ऋषि के चेले थे। इन्होंने राजा परीक्षित को साँप काटने का शाप दिया था।

शेखर तत्० (पु०) फूलों की माला जो मुकुट पर धारण की जाती है। भूषण विशेष। हिन्दी के एक कवि का नाम। सिर, मस्तक, कपाल।

शेल तत्० (पु०) बर्छी, भाला, अस्त्र विशेष।

शेष तत्० (गु०) अवशिष्ट, बचा हुआ, अन्त, सीमा। (पु०) सर्प, साँप, नाग।—शायी (पु०) विष्णु, नारायण।

शेषावस्था तत्० (स्त्री०) वृद्धावस्था, अन्त की दशा।

शैत्य तत्० (पु०) शीतलता, ठण्ढा, जाड़ा।

शैथिल्य तत्० (पु०) शिथिलता, आलस्य, ढीलाई।

शैल तत्० (पु०) पहाड़, पर्वत।—राज (पु०) हिमालय, हिमाचल।

शैलाट तत्० (पु०) [शैल + अट] सिंह, किरात, भिल्ल, भील।

शैव तत्० (पु०) शिवभक्त, शिवोपासक, एक सम्प्रदाय विशेष।

शैवाल तत्० (पु०) सेवाल, जलमल, जम्बाल, सिवार।

शैव्या तत्० (स्त्री०) महाराज हरिश्चन्द्र की रानी, महर्षि विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र की धर्मबुद्धि, आत्मत्याग कष्ट सहिष्णुता आदि की परीक्षा के लिये इन्हें बड़ा कष्ट पहुँचाया था। उस समय महारानी शैव्या एक ब्राह्मण के हाथ बिकी थी। ऐसे कष्ट के समय उनका पुत्र साँप के काटने से मर गया। मृतपुत्र का शव श्मशान में रख कर शैव्या रो रही थी, इसी श्मशान में राजा हरिश्चन्द्र डोम का काम करते थे। विश्वामित्र इन पर प्रसन्न हुए, मृतपुत्र पुनः जीवित हुआ और उन लोगों को उनका राज्य मिल गया।

शोक तत्० (पु०) शोच, चिन्ता, दुःख, खेद, पश्चात्ताप, पछतावा।

शोकाकुल तत्० (गु०) शोकयुक्त, शोक पीड़ित।

शोकार्त तत्० (गु०) शोकाकुल, शोकयुक्त।

शोकापह तत्० (गु०) शोकनाशक, दुःख नाशक।

शोण तत्० (पु०) अग्नि, रक्त, लालवर्ण, नद विशेष।

शोणित तत्० (पु०) लोहू, रुधिर, रक्त।

शोथ तत्० (पु०) सूजन, फूलन, फुलाव, फूलना।

शोध तत्० (पु०) खोज, अनुसन्धान, शुद्धि, ऋण परिष्कार।

शोधन तत्० (पु०) स्वच्छ करना, निर्मल करना, पवित्र करण।

शोधनी तत्० (स्त्री०) सम्मार्जनी, कूचा, बुहारी, बढ़नी।

शोभन तत्० (गु०) श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, भला।

शोभा तत्० (स्त्री०) कान्ति, दीप्ति, सुन्दरता, छवि, मनोहरता।—यमान (गु०) सुन्दर, मनोहर।

शोभित तत्० (गु०) विभूषित, शोभायमान, अलङ्कृत, सजा हुआ।

शोषक तत्० (गु०) शोषण करने वाला, रसाकर्षक, रस खींचने वाला, चूसने वाला।

शोषण तत्० (पु०) सोखना, चूसना, सुखाव।

शौच तत्० (पु०) शुचिता, पवित्रता, सुन्दरता, स्नान, स्वच्छता।

शौण्डिक तत्० (पु०) कलवार, शराब बेचने वाला।

शौनक तत्० (पु०) एक तपोबल सम्पन्न ऋषि, इन्होंने नैमिषारण्य में द्वादश वर्ष में समाप्त होने वाले एक यज्ञ का अनुष्ठान किया था।

शौर्य तत्० (पु०) शूरता, सामर्थ्य, शक्ति।

श्मशान तत्० (पु०) मुर्दाघाट, मरघट।

श्मश्रु तत्० (पु०) मूँछ, मोछ।

श्याम तत्० (गु०) काला, कृष्णवर्ण।

श्यामल तत्० (गु०) कृष्णवर्ण विशिष्ट, काला।

श्यामा तत्० (स्त्री०) युवती, यौवन मध्या स्त्री, सोलह वर्ष की स्त्री, पक्षि विशेष।

श्यामक तत्० (पु०) सावाँ, धान्य विशेष।

श्यालक तत्० (पु०) साला, स्त्री का भाई, पत्नी भ्राता।

श्येन तत्० (पु०) पक्षि विशेष, बाज पक्षी।

श्रद्धा तत्० (स्त्री०) आदर पूर्वक प्रेम, सम्मान, गुरु पिता आदि माननीय व्यक्ति विषयक प्रेम।—लु (गु०) श्रद्धायुक्त, श्रद्धावान।

श्रम तत्० (पु०) परिश्रम, मिहनत, उद्योग।—जीवी (पु०) कुली, मजूर, किसान।

श्रमित तत्० (गु०) श्रान्त, थका हुआ, थका माँदा।

श्रमी तत्० (गु०) परिश्रम करने वाला, उद्योगी, उत्साह पूर्वक प्रयत्न करने वाला।

श्रवण तत्० (पु०) कान, कर्ण, कर्णेन्द्रिय।

श्रवणा तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, एक नक्षत्र का नाम, बाईसवाँ नक्षत्र।

श्राद्ध तत्० (पु०) श्रद्धा पूर्वक किया हुआ कर्म, पितरों की तृप्ति के लिये तर्पण पिण्ड दानादि।

श्रान्त तत्० (गु०) श्रमित, थका हुआ, थकित।

श्रान्ति तत्० (स्त्री०) श्रम, थकावट, परिश्रम जन्य अवसाद, शरीर की शिथिलता।

श्रावण तत्० (पु०) मास विशेष, पाँचवाँ महीना।

श्रावणी तत्० (स्त्री०) श्रावण की पूर्णिमा, उपाकर्म, श्रावण की पूर्णिमा को किये जाने वाले कर्म।

श्री तत्० (स्त्री०) सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य, [illegible] कान्ति, द्युति, छवि, [illegible], इन्दिरा, —खण्ड (पु०) [illegible] देवी की पूजा। [illegible] नारायण (गु०) [illegible] नारायण, विष्णु भगवान।—फल (पु०) बिल्व-फल, नारियल, नारिकेल।—मत् (गु०) धनवान, धनी, लक्ष्मीपात्र।—युक्त (पु०) धनी, कीर्तिमान्, यशस्वी।—युत् (गु०) भाग्यवान् लक्ष्मीपात्र, धनी।—हर्ष (पु०) महाराज आदिशूर ने जो कान्यकुब्ज से पाँच ब्राह्मण बुलवाये थे उनमें एक श्रीहर्ष भी थे। इन्हींके वंशज मुखोपाध्याय कहे जाते थे। इनका समय 1000 ई० सन् अनुमान किया जाता है। इनके पिता का नाम श्रीहरि था। नैषधीय चरित नामक काव्य इन्होंने बनाया है। जो संस्कृत साहित्य का चमकता हुआ एक रत्न है। इसके अतिरिक्त गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, अर्णव वर्णन काव्य नवसाहसाङ्कचरित खण्डन खण्डखाद्य आदि, बहुत ग्रन्थ इन्होंने बनाये हैं। परन्तु इनमें खण्डनखण्डखाद्य के अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। ये विद्या बुद्धि में अतुलनीय थे। इन्होंने नैषधीयचरित में अपनी जिस अद्भुत कवित्वशक्ति का परिचय दिया है वह अनोखी है।

श्रुत तत्० (पु०) सुना हुआ, कर्णगत, कर्णप्राप्त, कर्णगोचर।—कीर्ति (स्त्री०) शत्रुघ्न की स्त्री, यह कुशध्वज जनक की कन्या थी, इसके दो पुत्र थे, एक का नाम सुबाहु और दूसरे का नाम शत्रुघाती था।

श्रुति तत्० (स्त्री०) कान, कर्ण, वेद।

श्रेणी तत्० (स्त्री०) पंक्ति, पाँत, लकीर, कतार।

श्रेयः तत्० (पु०) मङ्गल, कल्याण, शुभ।

श्रेष्ठ तत्० (गु०) प्रधान, बड़ा, माननीय।

श्रोतव्य तत्० (गु०) श्रवणीय, सुनने योग्य, अच्छे उपदेश।

श्रोता तत्० (पु०) सुनने वाला, सुनवैया।

श्रोत्र तत्० (पु०) कान, कर्ण, श्रवणेन्द्रिय, श्रवण।

[illegible] (पु०) वेदज्ञ, वेदपाठी।

[illegible] (स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा, बखान।

[illegible]) प्रशंसनीय, वर्णनीय, श्लाघा

श्लेष तत्० (पु०) आलिङ्गन, संयोग, अलङ्कार विशेष, इसके सभङ्ग और अभङ्ग दो भेद होते हैं। यथा -

एक वचन में होत नहि बहु अर्थन को ज्ञान।
श्लेष कहत हैं ताहि को भूषन सकल सुजान॥
—शिवराज भूषण।

श्लेश्मा तत्० (पु०) कफ, खखार, शरीर सम्बन्धी, त्रिविध तत्त्वों में का एक तत्त्व।

श्लोक तत्० (पु०) कीर्त्ति, यश, कीर्त्तिगान, पद्य, छन्द, छन्द विशेष, अनुष्टुप वृत्त।

श्वसुर तत्० (पु०) पति पत्नी के पिता, पति का पिता, पत्नी का पिता।

श्वश्रू तत्० (स्त्री०) सास, पति पत्नी की माता, श्वसुर की स्त्री।

श्वान तत्० (पु०) कुत्ता, कुक्कुर।

श्वास तत्० (पु०) प्राण, दम, प्राणवायु साँस।

श्वित्र तत्० (पु०) रोग विशेष, श्वेत कुष्ट, सफेद कोढ़।

श्वेत तत्० (गु०) शुक्ल, शुक्लवर्ण, धवल।—द्वीप (पु०) वैकुण्ठ द्वीप विशेष, एक देश का नाम, इसी द्वीप में नर नारायण तपस्या करते थे। महर्षि कपिल का भी तपस्या स्थान यही है।

श्वेतकि तत्० (पु०) ऋषि विशेष, ये महर्षि उद्दालक के पुत्र थे।

ष

ष व्यञ्जन का इकतीसवाँ वर्ण, यह वर्ण मूर्धन्य है। क्योंकि इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

षट् तत्० (गु०) संख्या विशेष, छः, ६।—ऊर्मि (स्त्री०) छः प्रकार की तरङ्गें वे ये हैं—प्राण और मन की भूख, प्यास, शोक तथा मोह और शरीर सम्बन्धी जरा तथा मृत्यु ये ही षटूर्मियाँ हैं। इसी बात को एक संस्कृत पण्डित कहता है, यथा—

बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ।
शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यू षडूर्मय॥

—कर्म (पु०) छ प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं यथा—अध्ययन, अध्यापन यजन, याजन दान और प्रतिग्रह।—कोण (पु०) छकोना छ कोण का खेत आदि।—पद (पु०) भ्रमर, भौंरा।—प्रयोग (पु०) तन्त्र सम्बन्धी छ प्रयोग, शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण।—रस भोजन (पु०) षट् रसयुक्त भोजन।—वदन (पु०) कार्त्तिकेय, देवसेनापति।—वर्ग (पु०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।—शास्त्र (पु०) षट्दर्शन, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल।

षडङ्ग तत्० (पु०) [षट्+अङ्ग] वेद के छ अङ्ग, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योति छन्द, निरुक्त, हाथ पैर आदि शरीर के अङ्ग।

षडङ्घ्रि तत्० (पु०) भ्रमर, भौंरा।

षड्विधि तत्० (पु०) छ प्रकार, छ भाँति।

षण्ड तत्० (पु०) साँड, बैल, समूह।

षण्ढ तत्० (पु०) नपुंसक, हिजड़ा।

षष्टि तत्० (गु०) संख्या विशेष, ६०।

षष्ठ तत्० (गु०) छठवाँ, छ को पूर्ण करने वाली संख्या।—ी (स्त्री०) तिथि विशेष।

षोडश तत्० (गु०) सोलह, १६।—दान (पु०) दान विशेष।—भुजा (स्त्री०) दुर्गा, देवी।—संस्कार (पु०) कर्म विशेष, सोलह प्रकार के संस्कार।

स

स व्यञ्जन का बत्तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है, अतएव यह वर्ण दन्त्य है।

स तद्० (अ०) सम साथ, सङ्ग, सहित।

सम्रक्त तत्० (पु०) अनुराग, एक स्थान पूर्वक अन्यत्र

गमन, जाना, गमन, एक वस्तु का गुण, दूसरी वस्तु पर जाना।

संक्रान्त तत्० (गु०) सम्बन्धी, विषयक।

संक्रान्ति तत्० (स्त्री०) सूर्य का एक राशि पर से दूसरी राशि पर जाना।

संक्षिप्त तत्० (गु०) [सं + क्षिप् + क्त] न्यून, अल्प, थोड़ा, घटाया, कम किया हुआ।

संक्षेप तत्० (पु०) [सं + क्षिप + घञ] न्यूनता, अल्पता, सारभाग।

संख्या तद्० (स्त्री०) गणना, गिनती, संख्या, सङ्कलन।

संगत तद्० (स्त्री०) सङ्गति, साथ, मिलना, सिक्खों का धर्ममन्दिर।

संग्रह तद्० (पु०) संग्रह, एकत्री करण, समूह, बटोरना।

संग्राम तद्० (पु०) संग्राम, युद्ध, समर, रण।

संचना दे० (क्रि०) सञ्चय करना, संग्रह करना, एकत्रित करना, बटोरना।

संज्ञा तत्० (स्त्री०) नाम, आख्या, अभिधान, नामधेय, बुद्धि, चेतनता, गायत्री, सूर्य की स्त्री और विश्वकर्मा की स्त्री।

संजोवन दे० (क्रि०) संयोजन करना, संयुक्त करना।

संन्यासी तद्० (पु०) चतुर्थाश्रमी, योगी, यती।

संपत तद्० (स्त्री०) सम्पद्, धन, ऐश्वर्य, विभव।

संभलना दे० (क्रि०) सहायता पाकर बचना, थँभना, पकड़ना, बचना, उबरना, उद्धार पाना।

संभालना दे० (क्रि०) सहायता देकर बचाना, सहारा देना, उबारना, बचाना।

संयम तत्० (पु०) नेम, नियम, व्रत, इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रियों को अपने वश में करना।

संयमी तत्० (पु०) मुनि, योगी, यती, वशी, जिसने योग क्रिया द्वारा अपनी इन्द्रियों को वश कर लिया है।

संयुक्त तत्० (गु०) सम्बन्धयुक्त, मिला हुआ, सटा हुआ।

संयुक्ता दे० (स्त्री०) पृथ्वीराज की रानी और कन्नौज के राजा जयचन्द्र की कन्या। इनका ११७० ई० में जन्म हुआ था। ११९० ई० में पृथ्वीराज ने इनको ब्याहा और ११९३ ई० में मुहम्मद गोरी के साथ युद्ध में पृथ्वीराज के पराजित और शत्रु के हाथ बन्दी होने पर संयुक्ता ने देह त्याग किया था। इन्होंने युद्ध में जाने के लिये उद्यत अपने पति को युद्ध सामग्री से सजाया था।

संयुग तत्० (पु०) युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई।

संयुत तत्० (गु०) संयोग प्राप्त, मिश्रित, मिला हुआ।

संयोग तत्० (पु०) मेल, मिलाप, सम्बन्ध विशेष, अप्राप्ति की प्राप्ति।

संयोजित तत्० (गु०) मिलाया गया, कृत संयोग।

संरम्भ तत्० (पु०) कोप, क्रोध, मानसिक आवेग, आक्षेप।

संराधन तत्० (पु०) सेवा करना, सब प्रकार की सेवा करना, चिन्तन करना।

संराव तत्० (पु०) ध्वनि, शब्द, पक्षियों का शब्द।

संलग्न तत्० (पु०) संयुक्त, योग प्राप्त, मिला हुआ, घटित।

संलाप तत्० (पु०) सम्भाषण, आलाप, परस्पर कहना।

संवत् तत्० (पु०) संवत्सर, वर्ष, बरस, हायन, सन्।—सर (पु०) वर्ष, संवत्, बरस।

संवरण तत्० (पु०) आवरण, आच्छादन, ढाँकना।

संवरना दे० (क्रि०) सजना, शोभित होना।

संवाद तत्० (पु०) सन्देह, चर्चा।

संवारना दे० (क्रि०) सजाना, शृङ्गार करना।

संशय तत्० (पु०) सन्देह, भय, जिज्ञासा।

संशयापन्न तत्० (गु०) सन्देहयुक्त, सन्देही, भ्रान्त, भ्रम पूर्ण।

संशोधन तत्० (पु०) परिष्करण, मार्जन, संशोधि

संशक्त तत्० (गु०) मिला, समीप, आसक्त।

संसगर तत्० (गु०) उपजाऊ, निरजाऊ।

संसर्ग तत्० (पु०) सम्बन्ध, सगत, मैत्री।

संसर्गी तत्० (गु०) सम्बन्धी, मेल।

संसार तत्० (पु०) जगत्, जग, गमनागमन स्थान।

संसारी तत्० (गु०) संसार का, लौकिक, संसार सम्बन्धी।

संस्कार तत्० (पु०) मलीनता, निराकरण, दोष हटाना, मल दूर करना, शोधन करना, सफाई, शुद्धता।

संस्कृत तत्० (गु०) संस्कारित, संस्कार किया हुआ, परिष्कृत। (पु०) देवभाषा, हिन्दुस्तान की पुरानी राष्ट्र भाषा।

संस्थान तत्० (पु०) विन्यास, बनावट, बनाने का ढङ्ग, रूप, सङ्गठन।

संस्पर्श तत्० (पु०) स्पर्श, छूना।

संहत तत्० (गु०) मिला हुआ, मिलित, ठोस, घरि-यार, दृढ।

संहति तत्० (स्त्री०) समूह, ढेर, थोक, अधिकता।

संहार तत्० (पु०) नाश, विनाश, प्रलय, नरक विशेष एक भैरव का नाम।

संहारना दे० (क्रि०) नाश करना, नाशना, मार डालना।

संहिता तत्० (स्त्री०) ग्रन्थ विशेष।

सकत तद्० (स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, कड़ा, कठोर।

सकना दे० (क्रि०) समर्थ होना, उपयुक्त होना, उठाना।

सकरा दे० (गु०) सकेत, सङ्कीर्ण, छोटा, तङ्ग।

सकराना दे० (क्रि०) सङ्कीर्ण करना, सकेत करना, छोटा बनाना।

सकर्मक तत्० (पु०) जिस क्रिया के कर्म हो, कर्म युक्त क्रिया, जैसे पीना, खाना, देखना।

सकल तत्० (गु०) समस्त, सब, सम्पूर्ण।

सकाना दे० (क्रि०) शङ्कित होना, डरना, भय करना, त्रास पाना।

सकाम तत्० (गु०) कामना सहित किया गया कर्म, अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये कृतकर्म। (गु०) कामना सहित, सफल, फलवान्।

सकारना दे० (क्रि०) स्वीकार करना।

सकारे दे० (अ०) प्रात काल, प्रभात, सबेरे, प्रात काल, यथाः—

> सजन सकारे जाँयगे नयन रहेंगे रोय।
> विधिना ऐसी रैन कर भोर कभी न होय॥

सकाल तत्० (पु०) प्रात काल, प्रभात, सबेरा।

सकुच दे० (स्त्री०) लाज, सङ्कोच, डर, भय, त्रास।

सकुचना दे० (क्रि०) सङ्कोच करना, लजाना, डरना, भय करना।

सकृत् तत्० (अ०) एक बार।

सकेत तद्० (गु०) सकरा, छोटा, सङ्कीर्ण, सकुचित, अल्प।

सकेतना दे० (क्रि०) सकेत करना, छोटा करना, समेटना, एकत्र करना।

सकेलना दे० (क्रि०) समेटना, बटोरना, तहियाना, तह डालना।

सकेला दे० (पु०) एक प्रकार का लोहा।

सकोच तद्० (पु०) सङ्कोच, सहम।

सकोड़ना दे० (क्रि०) सकोच करना, सकेलना बटोरना।

सकोरा दे० (पु०) कटोरा, मरवा, मिट्टी का छोटा बर्तन।

सकोरी दे० (स्त्री०) थाली, परई, मिट्टी की परई।

सखा तत्० (पु०) मित्र, बन्धु, साथी, सङ्गी।

सखी तत्० (स्त्री०) सहेली, सङ्गिनी, वयस्या, आली।

सख्य तत्० (पु०) मित्रता, बन्धुत्व।

सगड तद्० (पु०) शकट, रथ, छकड़ा, गाड़ी, एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं।

सगपहता दे० (पु०) एक प्रकार की दाल, जिसमें साग डाल कर बनाते हैं।

सगा दे० (पु०) आत्मी, स्वजन, सम्बन्धी, अपनैत, नतैत।

सगाई दे० (स्त्री०) सम्बन्ध, नाता, सम्बन्ध ठीक करना।

सगुण तत्० (गु०) गुण सहित, गुण विशिष्ट, गुणयुक्त।

सगोती तत्० (गु०) सगोत्री, एक कुल का, भाई बन्धु। (पु०) मांस का बना भोजन।

सगोत्र तत्० (पु०) एक गोत्र, समान गोत्र, सगोती।

सघन तत्० (गु०) घना, सान्द्र, निविड़, मिला हुआ, खूब सटा हुआ।

सङ्कट तत्० (पु०) विपत्ति, दुःख, कष्ट, आपद्।

सङ्कर तत्० (पु०) वर्णसङ्कर, दोगला, दो जाति के माता पिता से उत्पन्न। (गु०) मिला हुआ।

सङ्कर्षण तत्० (पु०) बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई, ये देवकी के गर्भ से निकाल कर रोहिणी के गर्भ में लाये गये थे, अतएव इनका नाम सङ्कर्षण हुआ था।

सङ्कल तत्० (पु०) राशि, ढेर।

सङ्कलन तत्० (पु०) जोड़, जोड़ती।

सङ्कल्प तत् (पु०) मानसिक कर्म, इच्छा, चाह, अभिलाष।—प्रभव (गु०) सङ्कल्प से उत्पन्न, सङ्कल्प योनी, मङ्कल्पज।

सङ्कल्पना दे० (क्रि०) दान देना, नियम करना, किसी काम के लिये प्रतिज्ञा करना।

सङ्कीर्ण तत्० (गु०) घन, सघन, निविड़, संकरा, सकेत।—ता (स्त्री०) कोताही, तङ्गी।

सङ्कीर्तन तत्० (पु०) गुणगान, बखान, भजन।

सङ्कुचित तत्० (गु०) सकुचा, मुरफा, लज्जित।

सङ्कुल तत्० (गु०) भीड़, बहुत मनुष्यों का एकत्रित होना।

सङ्केत तत्० (पु०) सैन, इशारा, सङ्कित।

सङ्कोच तत्० (पु०) लाज, लज्जा, सिमट, सहम।

सङ्ग तत्० (पु०) साथ, संयोग, मेल, साथ।

सङ्गत तत्० (पु०) संलग्न, मिला हुआ, यथा योग्य, उचित, साथी, मेली, मित्र।

सङ्गति तत्० (स्त्री०) मेल, साथ, सङ्ग, मैत्री, दोस्ती।

सङ्गम तत्० (पु०) भेंट, प्रेमपूर्वक मिलन, नदियों का आपस में मिलन।

सङ्गर तत्० (पु०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई, समर।

सङ्गमी दे० (स्त्री०) संडासी, संडसी।

सङ्गी तत्० (गु०) साथी, सङ्ग वाला, दोस्त, मित्र।

सङ्गीत तत्० (पु०) गाना, गाने की विद्या।

सङ्गोपन तत्० (पु०) छिपाव, गोपन, दबाव, लुकाव।

सङ्घ तत्० (पु०) समूह, झुण्ड।

सच दे० (गु०) सत्य, सांच, हां, ठीक।—मुच (क्रि०) ठीक ठीक, बिलकुल सत्य, निःसन्देह सत्य।

सचराचर तत्० (गु०) समस्त जगत्, जीव जड़, जन्तु आदि।

सचाई दे० (स्त्री०) सत्यता, सचावट।

सचिव तत्० (पु०) मन्त्री, अमात्य, दीवान, सलाहकार, सलाह देने वाला।

सचेत तत्० (गु०) चौकस, चौकन्ना, सावधान।—न (गु०) ज्ञानवान्, बुद्धियुक्त, जीव, प्राणी।

सचेष्ट तत्० (गु०) चेष्टा युक्त, उद्योगी, यत्नवान्, यत्नी।

सचौटी दे० (स्त्री०) सचाई, सत्यता, सचावट।

सच्चा दे० (गु०) सत्य, सत्यवादी, ठीक, यथार्थ, उत्तम।

सच्चिदानन्द तत्० (पु०) परब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर।

सज दे० (स्त्री०) डौल, ढब, सिङ्गार, शोभा—धज (स्त्री०) शोभा, वेषरचना, बनावट, तैयारी।

सजग दे० (गु०) सावधान, सचेत।

सजन दे० (पु०) प्रिय, प्रियतम, पति।

सजना दे० (क्रि०) सोहना, शोभना। (पु०) पति, प्रियतम।

सजल तत्० (गु०) जल पूर्ण, जल सहित।

सजला दे० (पु०) चार भाइयों में तीसरा, मझले से छोटा। (गु०) जल पूर्ण, जल से भरी हुई।

सजाई दे० (स्त्री०) बनावटी, निर्मित, बनाव निर्माण, रचना।

सजाना दे० (क्रि०) बनाना, बनवाना, शृङ्गार करना।

सजाव दे० (पु०) अलङ्कार, बनाव।

सजीला दे० (गु०) सुडौल, सुन्दर, आकारवान्।

सजीव तत्० (गु०) जीता, जीवसहित, जीवयुक्त, प्राणी।

सजीवनी तत्० (स्त्री०) जड़ी विशेष, प्राण देने वाली बूटि।

सज्जन तत्० (पु०) कुलवन्त, साधु, उत्तम स्वभाव वाला।

सज्जा दे० (स्त्री०) वेश, कवच, झेलम।

सज्जी दे० (स्त्री०) खारी मिट्टी, जिससे कपड़े गहने आदि साफ़ किये जाते हैं।

सञ्चय तत्० (पु०) समूह, ढेर, इकट्ठा, एकत्रित।

सञ्चार तत्० (पु०) भ्रमण, पर्यटन।

सञ्चारक तत्० (पु०) नायक, संक्रमण, भ्रमण कराने वाला।

सञ्चारिका तत्० (स्त्री०) दूती, सन्देश हरण करने वाली।

सञ्चित तत्० (गु०) सञ्चय किया हुआ, एकत्रित, बटोरा हुआ, संगृहीत, रखा।

सञ्जय तत्० (पु०) ये अन्धराज धृतराष्ट्र के सचिव थे। व्यासदेव के आशीर्वाद से प्राप्त दिव्यचक्षुओं से महाभारत का युद्ध देख कर उसका वर्णन धृतराष्ट्र को ये सुनाया करते थे। महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर युधिष्ठिर के राज्य में धृतराष्ट्र के साथ ये हस्तिनापुर में रहते थे और उन्हीं के साथ वन भी गये थे। कुछ दिनों के बाद उस वन में दावाहा लग गया। धृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्ती ने तो जल कर प्राण त्याग दिये। परन्तु सञ्जय ने भाग कर अपने प्राण की रक्षा की। इसके बाद हिमालय प्रदेश में जा कर इन्होंने अपना समय बिताया था।

सज्ञान तत्० (पु०) ज्ञान सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्।

सटक दे० (स्त्री०) नरचा, नली, हुक्के की नली।

सटकना दे० (क्रि०) भगना, भाग जाना, छिपना।

सटकाई दे० (स्त्री०) छिपना, झुकाव, उतार चढ़ाव।

सटकाना दे० (क्रि०) छिपाना, सङ्कोच करना, छिपाना।

सटना दे० (क्रि०) मिलना, मिलित होना, जुड़ना, चिपकना।

सटपटाना दे० (क्रि०) विस्मित होना, अचम्भित होना।

सटर दे० (स्त्री०) प्रलाप, बड़बड़, बकबक।

सटाना दे० (क्रि०) चिपकाना, जोड़ना, मिलाना, मेल करना।

सटासट दे० (स्त्री०) तर ऊपर, एक पर एक, लगातार, भिड़ाभिड़।

सटिया दे० (स्त्री०) बाँस की पतली छड़ी, पतली लकड़ी, लठिया, आभूषण विशेष, एक प्रकार की चूड़ी।

सटीक तत्० (गु०) टीका के सहित, व्याख्या के सहित।

सट्टाबट्टा दे० (पु०) हेराफेरी, अदला बदला, इधर उधर।

सठियाना दे० (क्रि०) बूढ़ा होना, बुढ़ाई से दुर्बल और निर्बुद्धि होना।

सढोड़ा दे० (पु०) बुढ़ाई, एक प्रकार का लड्डू।

सड़क दे० (स्त्री०) चौड़ा मार्ग।

सड़न दे० (स्त्री०) दुर्गन्ध, दुर्गन्धित।

सड़ना दे० (क्रि०) उबसना, गलना, सड़ जाना।

सड़ांद दे० (गु०) सड़ा हुआ, गला हुआ, दुर्गन्ध युक्त।

सड़ाना दे० (क्रि०) गलाना।

सण्डसी दे० (स्त्री०) गहुवा, सड़सी।

सण्डा दे० (गु०) पोढ़ा, मोटा, हृष्टपुष्ट।

सण्डास दे० (पु०) पाखाना, जाज़रूर।

सत दे० (पु०) सार, निष्कर्ष, सार भाग, मुद्दा, सत्य। —मासा (पु०) गर्भ के सातवें मास में किया जाने वाला संस्कार विशेष।

सतराना दे० (क्रि०) क्रोधित होना, अप्रसन्न होना।

सतर्क तत्० (गु०) सावधान, सचेत।

सतलड़ी दे० (स्त्री०) सात लड़ की माला।

सतवन्त दे० (गु०) सत्यवादी, सच्चा।

सताना दे० (क्रि०) पीड़ा देना, कष्ट देना, छेड़ना।

सती तत्० (स्त्री०) पार्वती, दक्ष प्रजापति की कन्या, इनका विवाह महादेव से किया गया था। पतिव्रता, साध्वी।

सतीर्थ तत्० (गु०) सतीर्थ्य, साथी, साथ के पढ़ने वाले।

सतीला दे० (गु०) सत्तावान्, समर्थ, सामर्थ्यवान्, पराक्रमी।

सतीवाड़ दे० (पु०) सती का स्थान, पति का अनुगमन करने वाली स्त्रियों का स्मशान।

सतुआ दे० (पु०) सक्तु, सत्तू, सातू, भुँजे हुए अन्न का चून।

सत्कर्म तत्० (पु०) अच्छा काम, उत्तम काम, पुण्यजनक काम।

सत्कार तत्० (पु०) सम्मान, आदर, आगत स्वागत।

सत्क्रिया तत्० (स्त्री०) सत्कर्म, उत्तम कर्म, आदर, सम्मान।

सत्तम तत्० (गु०) अति उत्तम, अतिशय श्रेष्ठ, यह शब्द जाति या गुणवाचक शब्दों के अन्त में आता है और उसकी प्रधानता बतलाता है।

सत्ता तत्० (स्त्री०) बल, पराक्रम, विद्यमानता, अस्तित्व।

सत्तू दे० (पु०) सतुआ।

सत्त्वगुण तत्० (पु०) प्रकृति का एक गुण विशेष, त्रिगुणों में का एक गुण। यह लघु, प्रकाशक और इष्ट है।

सत्त्वता तत्० (स्त्री०) पराक्रम, बल, पवित्रता, शुद्धता।

सत्य तत्० (गु०) सच्चा, यथार्थ, ठीक, निश्चय, मिथ्या नहीं। —ता (स्त्री०) सचाई, सच्चापन। —युग (पु०) कृतयुग, प्रथम युग। —लोक (पु०) ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवाँ लोक। —वती (स्त्री०) महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास की माता और वसुराज की कन्या। —वादी (पु०) सत्यवक्ता, सच्चा, सच बोलने वाला, यथार्थ वक्ता। —वान् (पु०) शाल्व देश का राजा द्युमत्सेन का पुत्र, इनकी माता का नाम शैब्या था। अभाग्यवश राजा द्युमत्सेन अन्धे हो गये, तथा मन्त्रियों के षड्यन्त्र से राज्यच्युत हो कर पत्नी और शिशुपुत्र को ले कर वन में चले गये। एक समय उसी वन में मद्रदेश के राजा अपनी कन्या सावित्री के साथ आये। मातृपितृभक्त सत्यवान के गुणों पर सावित्री मोहित हो गयी और उन्हीं को अपना पति बनाया। सत्यवान् अल्पायु थे, उनकी आयु पूरी हुई, परन्तु पतिपरायणा सावित्री ने अपने पातिव्रत्य बल से यमराज को प्रसन्न कर उनसे वर ग्रहण किये। उन्हीं वरों के प्रभाव से सत्यवान् भी जीवित हो गये। और राजा द्युमत्सेन की भी गयी हुई आँखें लौट आयीं तथा राज्य भी मिल गया। —व्रत (गु०) सत्यवादी, प्रधानतः सत्य को उपास्य मानने वाला। —सन्ध (गु०) सत्यप्रतिज्ञ, अपनी प्रतिज्ञा सत्य करने वाला।

सत्यानाश तत्० (पु०) नाश, विनाश, बरबाद। —करना (वा०) नाश करना, विनष्ट करना, ध्वस्त करना, बरबाद करना। —जाना (वा०) नष्ट होना, बिगड़ना, ख़राब होना।

सत्यानृत तत्० (पु०) [सत्य+अनृत] वाणिज्य, व्यापार।

सत्वर तत्० (गु०) जल्द, शीघ्र, उतावला, तुरन्त, झटपट ।

सत्सङ्ग तत्० (पु०) सज्जन सङ्ग, उत्तम मनुष्यों की सङ्गति ।

सथशव दे० (पु०) रण में मरे हुओं की लोथ ।

सथिया दे० (पु०) जर्राह वैद्य ।

सदन तत्० (पु०) गृह, घर, मकान, मन्दिर, वासस्थान ।

सदय तत्० (गु०) दयायुक्त, मृदुल, कोमल अन्तःकरण वाला । दयालु, कृपालु, कारुणिक ।

सदसत् तत्० (गु०) सत्यासत्य, सच झूठ ।

सदस्य तत्० (पु०) सभासद, पञ्च ।

सदा तत्० (अ०) सर्वदा नित्य, सतत, हर हमेश ।
—व्रत (पु०) अन्नालय, वह स्थान जहाँ भूखों को अन्न दान दिया जाता है ।

सदृश तत्० (गु०) समान, तुल्य, सम, न्याय ।

सदेश तत्० (अ०) समीप, निकट, पास ।

सदोष तत्० (गु०) दोष सहित, दोषी, अपराधी ।

सद्गति तत्० (स्त्री०) निस्तार, त्राण, मुक्ति, उत्तम गति ।

सद्गन्ध तत्० (स्त्री०) सुगन्ध, उत्तम गन्ध ।

सद्वक्ता तत्० (पु०) उत्तम वक्ता, शैली के साथ बोलने वाला, उत्तम व्याख्याता ।

सद्विवेचक तत्० (गु०) विचार, निर्णयकर्ता, उत्तम निर्णयक ।

सधना दे० (क्रि०) बनना, होना, उठना, हिलना, परिचय होना ।

सधवा तत्० (स्त्री०) सुहागिन, सुभगा, पति वाली स्त्री, जिसका पति जीवित हो ।

सधाना दे० (क्रि०) साधन कराना, अभ्यास कराना, परिचय कराना, सिखाना, बनाना ।

सन दे० (पु०) पौधा विशेष, एक प्रकार का पाट ।

सनत्कुमार तत्० (पु०) ब्रह्मज, महातपा, महर्षि, ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे ।

सनना दे० (क्रि०) गर्भिणी होना, गर्भ धारण करना, गूँधना ।

सनातन तत्० (पु०) ब्रह्मा का मानस पुत्र, ये महा तपस्वी हैं, कहते हैं कि ये सर्वदा बालक रूप में रहते हैं ।

सनाथ तत्० (गु०) नाथ सहित, जिसके मालिक और सहायक हों ।

सनिया दे० (पु०) वस्त्र विशेष, टसर का बना वस्त्र ।

सनीचरा दे० (गु०) अभागा, अभागी, अपयशी ।

सनेह तत्० (पु०) प्यार, प्रीति, प्रेम मोह, चाह, दुलार ।

सन्त तत्० (पु०) साधु, सज्जन, उत्तम मनुष्य, धर्मी धार्मिक ।

सन्तति तत्० (स्त्री०) सन्तान, अपत्य, लड़के वाले ।

सन्तप्त तत्० (गु०) दुःखित, तपा हुआ, थका हुआ, श्रान्त, पीड़ित ।

सन्तरण तत्० (पु०) पैराव, तिराव, हिलाव ।

सन्ता दे० (गु०) बिगड़ा, नष्ट भ्रष्ट ।

सन्तान तत्० (पु०) वंश, सन्तति, लड़के वाले, आज कल यह शब्द स्त्री लिङ्ग माना जाता है । हिन्दी के कोषकार तो इस शब्द को पुल्लिङ्ग ही मानते हैं और व्याकरण में भी इस बात का कोई समाधान नहीं है । औलाद अर्थवाची उर्दू शब्द होने के कारण इसे लोग स्त्री लिङ्ग में व्यवहृत करते हैं ।

सन्ताप तत्० (पु०) शोक पीड़ा, मानसिक व्यथा ।

सन्ती दे० (पु०) बदला, बदले में, परिवर्तन में प्रतिनिधि ।

सन्तुष्ट तत्० (गु०) तृप्त, प्रसन्न ।

सन्तुष्टि तत्० (स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, आत्मसुख ।

सन्तोष तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, तृप्ति, मनस्तोष ।

सन्तोषी तत्० (गु०) सन्तोष रखने वाले ।

सन्था दे० (पु०) पाठ, अध्ययन, अध्याय ।

सन्दर्भ तत्० (पु०) रचना, प्रबन्ध ।

सन्दर्शन तत्० (पु०) साक्षात्कार, प्रत्यक्ष, देखाव।

सन्दिग्ध तत्० (गु०) सन्देहयुक्त, संशयान्वित, भ्रमयुक्त।

सन्देश तत्० (पु०) समाचार, वृत्तान्त, संदेशा।

सन्देशी तत्० (पु०) दूत, चर, सन्देश हारक, हरकारा।

सन्देह तत्० (पु०) संशय, शङ्का, भ्रम, दुविधा, अनिश्चित ज्ञान।

सन्धान तत्० (पु०) अन्वेषण, ढूँढ़ना, खोज, पता लगाना।

सन्धाना दे० (पु०) अचार।

सन्धि तत्० (स्त्री०) मेल, विरोध, हटाकर मित्रता स्थापन, कतिपय नियमों पर मित्रता स्थापन करना। दो पदार्थों के मिलने का स्थान, संयोग, दरार, छेद, छल, प्रपञ्च, स्वार्थसिद्धि के उपाय।

सन्ध्या तत्० (स्त्री०) सायङ्काल, दिन और रात्रि का सन्धि समय, सन्ध्या के समय की जाने वाली उपासना, सन्ध्योपासन।

सन्नद्ध तत्० (गु०) उद्यत, तैयार, प्रस्तुत, तत्पर।

सन्नाटा दे० (पु०) शब्द विशेष, जो पानी बरसने या वायु के चलने से होता है। नीरव, शब्दाभाव।

सन्नाह तत्० (पु०) कवच, बख़्तर।

सन्निकट तत्० (पु०) निकट, पास, सन्निधान, समीप।

सन्निकर्ष तत्० (पु०) सन्निधान, समीप।

सन्निधि तत्० (स्त्री०) पास पास, निकट।

सन्निपात तत्० (पु०) रोग विशेष, त्रिदोष से उत्पन्न रोग।

सन्निहित तत्० (गु०) निकट, समीप, पास।

सन्मान तद्० (पु०) सम्मान, आदर, सत्कार, मर्यादानुसार प्रतिष्ठा।

सन्मुख तद्० (गु०) सामना, पुरःस्थिति, आगे, साक्षात्, प्रत्यक्ष।

संन्यास तद्० (पु०) संसार, विराग, वासनात्याग, चतुर्थ आश्रम।

संन्यासी तद्० (पु०) संन्यासी, चतुर्थाश्रमी, योगी, यती।

सपक्ष तत्० (गु०) सहायक, सहायता देने वाला, सहकारी, साथी। (पु०) पक्षी, पखेरू।

सपदि तत्० (अ०) तुरत, शीघ्र, तत्पर, उसी समय उसी क्षण, तत्काल।

सपना तद्० (पु०) स्वप्न निद्रा के समय विचार में आयी हुई बातें।

सपिण्ड तत्० (पु०) बान्धव, सात पुरुष के अन्तर्गत बान्धव, जिनके जन्म और मरण में अशौच लगता है।

सपुत्र तद्० (पु०) सुपुत्र, सपूत, अच्छा लड़का, आज्ञाकारी बेटा।

सपोला दे० (पु०) साँप का बच्चा।

सप्त तत्० (गु०) संख्या विशेष, ७।—**चत्वारिंशत** (गु०) संख्या विशेष, सात अधिक चालीस, ४७, —**मी** (स्त्री०) सातवीं तिथि।—**दश** (गु०) सत्तरह, १७।—**र्षि** (पु०) [सप्त+ऋषि] कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ ये सप्तर्षि कहे जाते हैं।—**सागर** (पु०) सात समुद्र, वे ये हैं लवण, इक्षु, दधि, क्षीर, मधु, मदिरा, घृत।

सप्ताह तत्० (पु०) सात दिन, अठवारा।

सप्रीति तत्० (अ०) प्रेम सहित, प्रेम पूर्वक, प्रीति से, प्रेम से।

सप्रेम तत्० (अ०) प्रेम पूर्वक।

सफरी तत्० (स्त्री०) मत्स्य विशेष, एक प्रकार की मछली।

सफल तत्० (गु०) फलवान्, सार्थक, सिद्धि, फलदायक, फल देने वाला।

सब तद्० (सर्व०) सर्व, समस्त, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, समूचा।

सबल तत्० (गु०) बलवान्, प्रौढ़, बली, बलशाली।

सबेर दे० (अ०) प्रातःकाल, प्रभात, तड़का, भोर।

सबेरा दे० (पु०) बिहान, भोर।

सबोतर दे० (अ०) सर्वत्र, सब स्थान में, सब ठौर।

सभय तत्० (गु०) भययुक्त, भय सहित, डरा हुआ, भीत।

सभा तत्० (स्त्री०) मण्डली, समाज, पञ्चायत, उत्सव।—पति (पु०) सभा सञ्चालक, सभा का मुखिया, सरपञ्च।—सद् (पु०) सभा में बैठने वाला, सभा में उपस्थित रहने वाला।

सभिक तत्० (पु०) जुआ खेलाने वाला, नाल वाला, जुआ का प्रधान।

सभीत तत्० (गु०) डरा हुआ, सभय, भयभीत।

सभ्य तत्० (पु०) सभासद, सभा के योग्य, नागरिक, भद्र।

सम तत्० (अ०) तुल्य, बराबर, समान, सदृश।

समक्ष तत्० (अ०) समीप, सम्मुख, प्रत्यक्ष, सामने।

समगम तत्० (गु०) बराबर, तुल्य।

समग्र तत्० (गु०) समस्त, सारा, सम्पूर्ण।

समज्या तत्० (स्त्री०) सभा, कीर्ति, यश।

समझ दे० (स्त्री०) बुद्धि, धारणा, विचार विश्वास।—दार (गु०) बुद्धिमान्, विचारवान्।

समझना दे० (क्रि०) बूझना, जानना, धारण करना।

समझाना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखाना।

समझावा दे० (पु०) सिखावन, समझौती, बुझावट।

समञ्जस तत्० (गु०) योग्य, उचित।

समता तत्० (स्त्री०) तुल्यता, समानता, बराबरी।

समदर्शी तत्० (गु०) समान दृष्टि, अपक्षपाती, पक्षपात नहीं करने वाला।

समधिन दे० (स्त्री०) बेटा या बेटी की सास।

समधियाना दे० (पु०) समधी का स्थान, समधी का घराना।

समधी दे० (पु०) पति और पत्नी के पिता आपस में समधी होते हैं। लड़का लड़की के ससुर।

समन्तात तत्० (अ०) चारों ओर, सब तरफ से।

समन्वय तत्० (पु०) लक्षण का लक्ष्य में घटाना, मेल, परस्पर, अनुगतता।

समन्वीत तत्० (गु०) समन्वय किया हुआ।

समबल तत्० (गु०) तुल्य बल, समान बल वाला।

समभाव तत्० (पु०) समानता बुद्धि, समता, साम्य, तुल्यता।

समय तत्० (पु०) काल, अवसर, बेला।

समर तत्० (पु०) संग्राम, युद्ध, लड़ाई।

समर्थ तत्० (गु०) शक्तिमान्, योग्य, शक्तिशाली।

समर्थन तत्० (पु०) प्रमाण करण, दृढ़ करण।

समर्पण तत्० (पु०) सौंपना, त्याग, अर्पण, दान।

समल तत्० (गु०) मलयुक्त, मल सहित, मलिन, मैला।

समवाय तत्० (पु०) भीड़, समूह, समुदाय, नैयायिकों के मत से सम्बन्ध विशेष, उपादान कारण और कार्य का सम्बन्ध, यथा—सूत और कपड़े का।

समसूत्रपात्र तत्० (पु०) डोरी से मापना, जल थाहना, जल का पता लगाना।

समस्त तत्० (गु०) सब, सारा, सकल, सम्पूर्ण।

समस्या तत्० (स्त्री०) सङ्केत, किसी छन्द का एक अन्तिम पाद।—पूर्ति (स्त्री०) किसी छन्द के अन्तिम पाद को लेकर उसीके अनुसार श्लोक बनाना।

समा दे० (पु०) समय, काल, अवसर, साल और लय विशेष।—ई (स्त्री०) फैलाव, चौड़ाई।—कुल (गु०) व्याप्त, घिरा हुआ। दुःखी, परेशान।—गम (पु०) आगमन, आना, अवाई, मिलाप,

सम्पादन ।—चार (पु०) सन्देशा, संवाद, कुशल, मङ्गल ।—ज (पु०) सभा, मण्डली, जातीय संस्था, समूह, समुदाय ।—जी (पु०) सजन्मी, सवयसी, सभासद ।—धान (पु०) उत्तर, शङ्का का समाधान ।—धि (पु०) ध्यान, योग की क्रिया विशेष, इसके दो भेद होते हैं सातिशय, और निरतिशय सातिशय समाधि में ध्याता और ध्येय का बोध रहता है, परन्तु निरतिशय समाधि में वेदान्तियों का अन्तिम अनुभव ही वर्तमान रह जाता है। —देना (धा०) मृत साधु संन्यासियों का अन्तिम संस्कार।

समान तद्० (गु०) बराबर, तुल्य, एक प्रकार। —ता (स्त्री०) तुल्यता, बराबरी।

समाना दे० (क्रि०) घुसना, पैठना, प्रविष्ट होना।

समापन तद्० (पु०) समाप्त होना, समाप्ति, सम्पूर्णता।

समाप्त तद्० (गु०) पूरा, हो चुका, सिद्ध।

समाप्ति तद्० (स्त्री०) अन्त, समापन, सम्पूर्णता, नाश।

समारोह तद्० (पु०) जमाव, जमावड़ा, भीड़।

समाली दे० (स्त्री०) फूलों का गुच्छा, पुष्पस्तवक।

समाव दे० (पु०) समावेश, ठौर, स्थान।

समावेश तद्० (पु०) पैसार, द्वार, मिलाव, प्रवेश।

समास तद्० (पु०) संक्षेप, व्याकरण की एक प्रक्रिया, दो तीन पदों के मेल करने की रीति को समास कहते हैं। समास छः हैं। तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व।

समाहित तद्० (गु०) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, सावधान, दत्तोत्तर, उत्तर दिया हुआ, एक रसालङ्कार विशेष।

समिधि तद्० (स्त्री०) इन्धन, लकड़ी, जलाने की लकड़ी, होम की लकड़ी।

समीकरण तद्० (पु०) बराबर करना, समतल बनाना, बीजगणित का एक गणित, जिसमें दो राशियाँ बराबर की जाती हैं।

समीचीन तद्० (गु०) सम्यक्, सचाई, सच्चा, उत्तम।

समीप तद्० (पु०) पास, निकट, नगीच।

समीपी दे० (पु०) पड़ोसी, आत्मीय, स्वजन।

समीर तद्० (पु०) वायु, हवा, पवन, प्रकम्पन।

समीहा तद्० (स्त्री०) चेष्टा, इच्छा, अभिलाष।

समुचित तद्० (गु०) योग्य, यथार्थ, उचित, उपयुक्त।

समुच्चय तद्० (पु०) समुदाय, एकत्रित, ढेर, राशि, समूह, संग्रह।

समुदाय तद्० (पु०) समूह, समान जाति के लोगों का जमावड़ा।

समुद्र तद्० (पु०) सागर, समुद्र, जलनिधि, उदधि, पयोधि।

समूचा दे० (गु०) सारा, पूरा, समस्त, आद्यन्त सहित।

समूह तद्० (गु०) दल, झुण्ड, जथा, समुदाय।

समृद्धि तद्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, विभव, धन, सम्पत्ति, बढ़ती।

समेट दे० (स्त्री०) सङ्कोचन, सिमटन।

समेटना दे० (क्रि०) सिकोड़ना, बटोरना, सङ्कोच, करना।

समेत तद्० (गु०) सहित, युक्त।

समोना दे० (पु०) कुनकुना जल, गरम जल में ठण्डा जल मिला कर ठण्डा किया हुआ जल।

सम्पत्ति तद्० (स्त्री०) समृद्धि, धन, सम्पदा, सुभाग।

सम्पदा तद्० (स्त्री०) ऐश्वर्य, धन, विभव।

सम्पन्न तद्० (गु०) परिपूर्ण, धनाढ्य, पूरा, सिद्ध।

सम्पर्क तद्० (पु०) सम्बन्ध, मिलाव, संयोग, संसव।

सम्पाति तद्० (पु०) अरुण के पुत्र और जटायु के ज्येष्ठ भ्राता, ये दोनों भाई सूर्य को जीतने के लिये उनकी ओर दौड़े। सूर्य के प्रखर तेज से जटायु का पङ्ख भस्म होने लगा तब सम्पाति ने उसे

अपन पङ्ख द्वारा ढाँप लिया। छोटे भाई की रक्षा करने से सम्पाति स्वयं दग्धप्राय होगये। वे अचेत होकर विन्ध्य पर्वत पर गिर पड़े। चेत होने पर निशाकर मुनि के उपदेश से उन्होंने उसी पर्वत पर रहना स्थिर किया। सीता की खोज करने वालों को सीता का पता बताने से उनके पङ्ख पुन जम गये।

सम्पादक तत्० (पु०) कर्ता, सम्पादयिता, सम्पादन करने वाला, पूरा करने वाला, पूर्ण करने वाला।

सम्पादन तत्० (पु०) निरूपण, कथन समाप्ति करना, निष्पादन, सङ्घटन, प्राप्ति लाभ, निर्माण।

सम्पुट तत्० (पु०) डब्बा, डिबिया।—क (पु०) पिटारा, पेटी।

सम्पूर्ण तत्० (पु०) समस्त, परिपूर्ण।

सम्प्रति तत्० (अ०) अधुना, इदानी, इस समय, अब।

सम्प्रदान तत्० (पु०) दान, कारक विशेष, चतुर्थी कारक।

सम्प्रदाय तत्० (पु०) परम्परा का धर्म।

सम्बन्ध तत्० (पु०) संयुक्त, नाता, लगाव।

सम्बन्धी तत्० (पु०) सम्बन्ध रखने वाला, नातेदार, नतैत।

सम्बोधन तत्० (पु०) सम्मुखी करण, कारक विशेष, पहला कारक विशेष।

सम्भलना दे० (क्रि०) थम्भना, सुधरना, सावधान होना, सावचेत हो जाना।

सम्भव तत्० (पु०) योग्यता, होने के योग्य, होनहार, भवितव्य, सम्भावना।

सम्भालना दे० (क्रि०) प्रबन्ध करना, सुधारना, थाँभना।

सम्भावना तत्० (स्त्री०) दुविधा, सन्देह, अनिश्चय।

सम्भाषण तत्० (पु०) बातचीत आलाप बोलचाल।

सम्भोग तत्० (गु०) स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन।

सम्भोजन तत्० (पु०) भोज, भण्डार।

सम्भ्रम तत्० (पु०) आदर, सम्मान, घबराहट, भय, डर, त्रास।

सम्मत तत्० (गु०) अनुमत, स्वीकृत, ईप्सित, अभिमत।

सम्मति तत्० (स्त्री०) इच्छा, स्वीकार।—पत्र (पु०) राजीनामा।

सम्मार्जनी तत्० (स्त्री०) बढनी, झाडू, कूँची, बुहारी।

सम्यक् तत्० (अ०) अच्छी भाँति से, योग्यता से, ठीक ठीक भलीभाँति।

सम्राट तत्० (पु०) अधिराजा, चक्रवर्ती, राजा।

सयान दे० (गु०) वयस्क, वय प्राप्त, अधिक उमर का, अधिक अवस्था वाला।

सयाना दे० (गु०) चतुर, प्रवीण, निपुण, दक्ष।

सर तत्० (पु०) सरोवर, तालाब, तडाग।—कण्डा (पु०) तृण विशेष सरकण्ड।

सरकना दे० (क्रि०) हटना, दूर जाना, ख्सकना।

सरकाना दे० (क्रि०) हटाना, भगाना, खसकाना।

सरगुण तत्० (गु०) सगुण, गुण सहित, गुण विशिष्ट।

सरघा तत्० (स्त्री०) मधुमक्षिका, मधुमाखी शहद की मक्खी।

सरदा दे० (पु०) खरबूजा विशेष, एक प्रकार का खरबूजा।

सरन तत्० (पु०) शरण, रक्षक।

सरना दे० (क्रि०) चलना, हटना, जाना।

सरपट दे० (पु०) बड़े वेग से दौड़ना, खूब जोर से दौड़ना।—फेंकना (वा०) घोड़े की लगाम ढीली करके दौड़ाना।

सरपत दे० (पु०) तृण विशेष, पतला सेंठा, कण्डा।

सरल तत्० (गु०) उदार, सच्चा, ईमानदार, निष्कपट, छलशून्य, सीधा। (पु०) एक प्रकार के पेड़ का नाम इसे सरो भी कहते हैं।

सरवर तद्० (पु०) तालाब, तड़ाग, झील, पोखरा ।
सर तद्० (पु०) तालाब, सरोवर, तड़ाग ।
सरस तद्० (पु०) रस वाला, रस युक्त, रसीला ।
सरसराना दे० (क्रि०) रेंगना, फिरना, चलना ।
सरसराई दे० (स्त्री०) अधिकाई, बहुतायत, उत्तमता ।
सरसिज तद्० (पु०) कमल, पद्म, कँवल ।
सरसीरुह तद्० (पु०) कमल, पद्म ।
सरसों दे० (पु०) सर्षप, राई, तोरी ।
सरस्वती तद्० (स्त्री०) नदी विशेष, वाणी, भारती, वाग्देवता, वाक् की अधिष्ठात्री देवी, वागीश्वरी, शारदा ।
सरा दे० (पु०) आराम, झगड़ा, बखना ।
सराई दे० (स्त्री०) छोटा सरा, ढकनी ।
सराप तद्० (पु०) शाप, अशुभ चिन्ता, शाप ।
सरापना दे० (क्रि०) शाप देना, गलियाना, गाली देना ।
सरावक तद्० जैनी, जैन धर्मी, जैन धर्मी गृहस्थ ।
सरावन दे० (पु०) हेंगा, ज़मीन बराबर करने की लकड़ी ।
सराह दे० (पु०) बखान, बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा ।
सराहना दे० (क्रि०) बड़ाई करना, प्रशंसा करना । बखान करना ।
सरिगम तद्० (पु०) स्वर के आरोह, अवरोह करने के वर्ण, स्वर ।
सरित् तद्० (स्त्री०) नदी, निम्नगा, सोता ।—पति (पु०) समुद्र, सागर ।—सुत (पु०) गङ्गापुत्र, भीष्म ।
सरिस, सरिसा तद्० (पु०) सदृश, समान, बराबर, तुल्य ।
सरी दे० (स्त्री०) बिना फल का सर ।
सरीखा तद्० (पु०) समान, तुल्य, बराबर ।
सरीसृप तद्० (पु०) जन्तु विशेष, शरट, गिरगिट, साँप, बिच्छू ।
सरूप तद्० (पु०) बराबर, समान रूपवाला, आकारवान् । (दे०) स्वरूप, आकृति, आकार, साकार छवि ।
सरेखा तद्० (स्त्री०) श्लेषा नक्षत्र विशेष, नवाँ नक्षत्र ।
सरेश दे० (पु०) लसलसी वस्तु विशेष, जिससे प्रायः लकड़ी जोड़ी जाती है ।
सरोज तद्० (पु०) कमल, पद्म, पङ्कज ।—भव (पु०) ब्रह्मा, प्रजापति, विधाता ।
सरोता दे० (पु०) यन्त्र विशेष, सुपारी काटने का यन्त्र ।
सरोरुह तद्० (पु०) अरविन्द, कमल, कंवल, पद्म ।
सरोवर तद्० (पु०) तालाब, तड़ाग, सरवर, झील ।
सरोष तद्० (पु०) क्रुद्ध, क्रोध युक्त ।
सरोही दे० (स्त्री०) वस्तु विशेष, एक प्रकार की तलवार ।
सर्रा करें दे० (वा०) श्रम करना, दण्ड पेलना, बैठक करना ।
सर्ग तद्० (पु०) सृष्टि, उत्पत्ति, अध्याय, ग्रन्थभाग ।
सर्प तद्० (पु०) साँप, अहि, भुजङ्गम, भुजङ्ग ।—राज (पु०) साँपों का राजा, शेष, वासुकी ।
सर्व (सर्व) तद्० (पु०) सब, समस्त, सम्पूर्ण, सारा, सकल ।—ग (पु०) सब जगह जाने वाला, सर्व व्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला ।—गत (पु०) सर्वग, सर्वत्र व्याप्त, सर्वव्यापी ।—ज्ञ (पु०) सर्ववेत्ता, परमात्मा, परमेश्वर, एक वेदान्ती पण्डित का नाम, जिन्होंने "संक्षेप-शारीरक" नाम वेदान्त का ग्रन्थ बनाया है ।—तो भद्र (पु०) यज्ञ की प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की स्थापना की जाती है ।—त्र (अ०) सब जगह, चारों ओर ।—था (अ०) सब प्रकार, सब भाँति । —दमन (पु०) राजा दुष्यन्त का पुत्र ।—दा सदा, हमेशा ।—नाम (पु०) कुछ शब्द जिनका प्रयोग अन्य शब्दों के भी अर्थों में किया जा सके ।—नाश (पु०) सत्यानाश, बिगाड़ ।—भूत (पु०) चराचर, विश्व ।—मङ्गला (स्त्री०) अपूर्णा, पार्वती, दुर्गा ।—मय (पु०) सर्वस्वरूप, सर्वत्र व्याप्त ।—स्व (पु०) जमा, पूँजी, मूल धन ।
सर्वस तद्० (पु०) सर्वस्व, जमा, धन, समस्त धन ।

सर्वाङ्ग तत्० (पु०) [सर्व + अङ्ग] समस्त शरीर, सम्पूर्ण अङ्ग।
सर्वोपरि तत्० (अ०) सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ।
सर्षप तत्० (पु०) सरसों, तोरी।
सलकी दे० (स्त्री०) कमल की जड़।
सलज्ज तत्० (गु०) लज्जा युक्त, लज्जा सहित, लज्जालु।
सलना दे० (क्रि०) छिदना, चुभना, गड़ना।
सलभ तत्० (पु०) शलभ, पतङ्ग, टिड्डी, दीपक पर गिरने वाला, कीड़ा।
सलसलाना दे० (क्रि०) सरसराना, खुजलाना, पानी से खूब भींगना, दीवाल आदि में खूब पानी घुस जाना।
सलाई (स्त्री०) शलाका, लोहे या किसी धातु का पतला तार, सुर्मा लगाने की सलाई।
सलिता दे० (स्त्री०) नदी, सरित, सिन्धु।
सलिल तत्० (पु०) जल, पानी, अप, नीर।
सलोनो दे० (पु०) श्रावण की पूर्णिमा, राखी पूनों।
सलूप तद्० (गु०) स्वल्प, अल्पल्प, थोड़ा, बहुत थोड़ा।
सलोन दे० (गु०) लोन सहित, सलवण, नमकीन।
सलोना दे० (गु०) खारा, क्षार, नमकीन।
सलोनी दे० (गु०) रोचक, रुचिकर, स्वादिष्ट।
सल्लम दे० (पु०) एक प्रकार का कपड़ा।
सल्लु दे० (पु०) जूता सीने का चाम।
सल्लो दे० (स्त्री०) बेअक्ली स्त्री, भोली।
सवर्ण तत्० (गु०) समान वर्ण, एक जाति वाला, एक समान।
सवा दे० (गु०) चतुर्थांश अधिकता के साथ, १¼।
सवाई दे० (पु०) राजपूतों की पदवी, जैपुर के राजाओं की पदवी, एक और उसकी चौथाई, सवा।
सवांग दे० (पु०) स्वाङ्ग, भड़ैती, नकल।
सवाचना दे० (क्रि०) जाँचना, अनुसन्धान करना, पता लगाना, ढूँढना।
सवाद तद्० (पु०) स्वाद, मजा।
सवाया (पु०) सवाई, सवा।
सवार तद्० (पु०) अश्व या घोड़ चढ़ैया, घुड़चढ़ा।
सवारी दे० (स्त्री०) यान, वाहन।
सवैया दे० (पु०) सवाई नापने या तौलने की वस्तु।
सविता तत्० (पु०) सूर्य, रवि।
सव्य तत्० (गु०) वाम, बायाँ, विरुद्ध, उलटा। —साची (पु०) अर्जुन, तीसरा पाण्डव।
सशङ्क तत्० (गु०) शङ्का युक्त, त्रास युक्त, सभय, भीत।
ससा दे० (पु०) शशक, खरगोश, खरहा।
ससुर तद्० (पु०) श्वशुर, पति या पत्नी का पिता।
सस्ता दे० (गु०) स्वल्पमूल्य, थोड़े दाम में मिलने वाली वस्तु।
सह तत्० (अ०) साथ, सहित, सङ्ग, समेत। —कार (पु०) आम, आम्रफल, सहायता। —गामिनी (स्त्री०) स्त्री, भार्या, पतिव्रता स्त्री। —चर (पु०) साथी, सङ्गी। —चरी (स्त्री०) सखी, सहेली, वयस्या, आली। —ज (पु०) भाई, सहोदर भाई। —देव (पु०) राजा पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र, माद्री के गर्भ और अश्विनी कुमार के औरस से ये उत्पन्न हुए थे। द्रौपदी के गर्भ में श्रुतसेन नामक इनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में दक्षिण देश के राजाओं से कर लेने के लिये ये गये थे। अज्ञातवास के समय विराट राजा के यहाँ तन्त्रीपाल नाम धारण करके ये गोरक्षा करते थे। महाप्रस्थान के समय इन्होंने सुमेरु शिखर पर गिर कर प्राण त्यागा।
(२) जरासन्ध का पुत्र, महाभारत के युद्ध में ये कौरवों की ओर से लड़ते थे और अभिमन्यु के हाथ से मारे गये। —मरण (पु०) साथ मरना, सती होना। —योगी (पु०) एक व्यवसाय करने वाले, साथी, सङ्गी। —राना (क्रि०) थरथराना, काँपना। —रावन (स्त्री०) गुद गुदी, सुर सुरी। —लाना (क्रि०) गुदगुदाना, सुरसुराना। —वास (पु०) एकत्र स्थिति, पड़ोस। —वासी (पु०) पड़ोसी, साथ रहने वाला।

सहन दे० (पु०) कपड़ा विशेष। (तत्०) क्षमा, सहिष्णुता।—हार (पु०) सहने वाला, सहन करने वाला।

सहना दे० (क्रि०) सहन करना, भोगना, झेलना, उठाना, पाना, भुगतना, सन्तोष करना।

सहनाई दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष।

सहसा तत्० (अ०) अकस्मात्, झट पट, अचानक, अतर्कित, बिना विचारे।

सहस्र तत्० (गु०) संख्या विशेष, दस सौ, 1000।—नयन (पु०) देवराज, इन्द्र।—बाहु (पु०) कार्तवीर्य इसको परशुराम जी ने मारा था।

सहस तद्० (गु०) सहस्र।

सहसाखी तद्० (पु०) सहस्राक्ष, इन्द्र, देवताओं के राजा।

सहसानन तद्० (पु०) सहस्रानन, शेषनाग, जिनके हज़ार मुँह हैं।

सहाई तद्० (स्त्री०) सहाय, सहायता, सहायता कारक।

सहाऊ दे० (गु०) सहनीय, सहन करने योग्य, सह्य।

सहानुभूति तत्० (स्त्री०) अनुवेदना, समवेदना, दुःख सुख में भागी होना।

सहाय तत्० (पु०) सहारा, मदद।—क (पु०) सहारा देने वाला, मदद करने वाला।—ता (स्त्री०) सहाय, सहारा।

सहारा दे० (पु०) सहायता, योगदान।

सहित तत्० (गु०) साथ, सङ्ग, समेत, एकत्र।

सहिराना दे० (क्रि०) सहराना, खुजलाना।

सहिष्णु तत्० (गु०) सहन करने वाला।

सही दे० (अ०) शुद्ध, निश्चय बोधक शब्द।

सहेजना दे० (क्रि०) सौंपना, सम्भलाना।

सहेली दे० (स्त्री०) सखी, वयस्या, साथी, साथ रहने वाली।

सहोदर तत्० (पु०) सहज, सगा, एक माता का पुत्र।

सहोरी दे० (स्त्री०) सौतर।

सह्य तत्० (गु०) सहने योग्य, सहाऊ।

सा दे० (अ०) सादृश्य बोधक, अल्पार्थक, थोड़ासा।

साऊ दे० (पु०) सोखने हारा, शिष्ट।

साँऊगी दे० (स्त्री०) साँगी, गाड़ी का भण्डार।

साँई दे० (पु०) स्वामी, प्रभु, भगवान्।

साँक तद्० (स्त्री०) शङ्का, भय, कास, श्वास का रोग।

साँकर, साँकरी दे० (स्त्री०) शृङ्खला, सिकड़ी।

साँकल दे० (स्त्री०) सिकड़ी, भूषण विशेष, जो गले में पहना जाता है।

साँखू दे० (पु०) पुल, सेत, वृक्ष विशेष, सखुआ का वृक्ष।

साँग दे० (स्त्री०) बर्छी, सेल, भाला, एक प्रकार का शस्त्र।

साँगी दे० (स्त्री०) गाड़ी में का भण्डार।

साँगूल दे० (पु०) एक प्रकार की मछली।

साँधर दे० (पु०) पुनर्विवाहिता का पुत्र, पहले पति का लड़का।

साँच दे० (गु०) सत्य,सच्चा, ठीक, उचित, यथार्थ।

साँचा दे० (स्त्री०) चढ़िया, गहना या बर्तन ढालने की वस्तु।

साँझ दे० (स्त्री०) सन्ध्या, सायङ्काल।

साँझा, साँझी दे० (स्त्री०) पुतली का खेल।

साँटा दे० (पु०) कोड़ा, कशा, पैना।

साँठ दे० (गु०) संयोग, सबेरा, गुट।

साँठना दे० (क्रि०) सटाना, लगाना, जोड़ना।

साँड़ दे० (पु०) वृषभ, ढेन चिकनियाँ, बैल।

साँड़नी दे० (स्त्री०) ऊँटनी।

साँड़ा दे० (पु०) एक प्रकार का जन्तु।

साँति दे० (अ०) सन्ती, बदला, ख़ातिर।

साँप दे० (पु०) सर्प, भुजग, भुजङ्ग, उरग, अहि।

साँभर दे० (पु०) लवण, एक प्रकार का मृग, एक नगर विशेष, जहाँ साँभर निमक उत्पन्न होता है।

साँवला तद्० (गु०) श्यामल, कृष्ण वर्ण का, काला रङ्ग।

साँधा दे० (पु०) घास विशेष।

साँस तद्० (पु०) श्वास, प्राण, नाक से आने जाने वाला वायु।

साँसना दे० (क्रि०) डाँटना, ताड़ना, धमकाना, सुधारने के लिये दण्ड देना।

साँसा दे० (पु०) संशय, सन्देह, कष्ट, अटकाव।

साँसारिक तत्० (गु०) संसार सम्बन्धी, संसार का, संसार में उत्पन्न होने वाला।

साकार तत्० (गु०) आकार सहित, आकृति विशिष्ट।

साक्षात् तत्० (अ०) प्रत्यक्ष, सामने, आँखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट।

साक्षी तत्० (गु०) गवाह, साखी।

साख तद्० (स्त्री०) शाखा, आश्रित, अधीन, साक्षी।

साखी तद्० (गु०) साक्षी, गवाह।

साग तद्० (पु०) शाक, भाजी, तरकारी।

सागर तत्० (पु०) समुद्र, उदधि, पयोधि, अर्णव।

सागू दे० (पु०) काष्ठ विशेष।

साङ्ख्य तत्० (पु०) कपिल मुनि प्रणीत शास्त्र विशेष, दर्शन शास्त्र।

साङ्ग तत्० (गु०) अङ्ग सहित, समाप्त, पूर्ण।

साज दे० (पु०) सामग्री, सजाने का सामान।

साजन दे० (पु०) सज्जन, प्रिय, प्रियतम।

साजना दे० (क्रि०) पहिनना, बनाना, सजावट करना।

साझा दे० (पु०) भाग, हिस्सा, अंश, किसी काम में अनेक मनुष्यों का भाग।

साझी दे० (पु०) साथी, भागी, हिस्सादार, अंशक।

साठी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का चावल, यह चावल साठ दिनों ही में पक कर तैयार हो जाता है इसी से इसका नाम साठी पड़ा है।

साड़ी दे० (स्त्री०) शाटिका, स्त्रियों के पहनने का कपड़ा।

साढू दे० (पु०) पत्नी का बहनोई।

साढ़े दे० (गु०) सार्द्ध, आधा के साथ, आधा सहित।

सात तत्० (गु०) संख्या विशेष, सप्त, ७।—पाँच करना (वा०) कसमस करना, इधर उधर करना, संशयित होना, सन्देहान्वित होना।

सात्विक तत्० (गु०) सत्व गुण युक्त, सत्व गुण विशिष्ट, साधु, सरल, सज्जन।

साथ दे० (अ०) सङ्ग, सहित, समेत।—देना (वा०) सहायता देना, सहारा पहुँचाना।—वाला (गु०) साथी, सङ्गी।

साथरी दे० (स्त्री०) पत्तों का बिछौना, चटाई, तृण निर्मित शय्या।

साथिन दे० (स्त्री०) सहेली, सखी।

साथी दे० (पु०) सङ्गी, मेली, मित्र, बन्धु, साथ का पढ़ने वाला, सुहृत्।

सादर तत्० (गु०) आदर सहित, सम्मान पूर्वक।

सादृश्य तत्० (पु०) समानता, तुल्यता, बराबरी।

साध दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाष।

साधक तत्० (पु०) साधन करने वाला, धार्मिक, अनुष्ठान कर्ता, अभ्यासकारी, तपस्वी।

साधन तत्० (पु०) उपाय, यत्न, उद्योग, चेष्टा, अभ्यास, अनुष्ठान, व्याकरण के करणकारक का दूसरा नाम।

साधना तत्० (स्त्री०) साधन, अनुष्ठान, तपस्या, सिद्ध करने का उपाय। (क्रि०) सिद्ध करना, अभ्यास करना, बान डालना, साधन करना।

साधनीय तत्० (गु०) साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो।

साधारण तत्० (गु०) सामान्य, सहज, सरल, आम, जन समाज।—धर्म (पु०) वह धर्म जिसके पालन का अधिकार सभी को है। वे ये हैं:—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, दम, क्षमा, आर्जव और दान।

साधित तत्० (गु०) साधा गया, किया गया, सिद्ध, निष्पादित, पूर्ण किया हुआ।

साधु तत्० (पु०) सज्जन, परोपकारी व्यक्ति, एक सम्प्रदाय के मनुष्य।

साध्य तत्० (गु०) साधनीय, साधन करने योग्य।

सान तद्० (स्त्री०) सिल्ली, जिस पर शस्त्र तेज किये जाते हैं।—धुमाना (धा०) इशारे से बात करना, इङ्गित करना।

सानी दे० (स्त्री०) पशु भोजन विशेष, भूसा में पानी खली आदि डाल कर जो बनाई जाती है।

सान्त्वन तद्० (पु०) ढाढ़स देना, धीरज बँधाना, समझाना, बुझाना।

सानना दे० (क्रि०) मिलाना, गूँधना, मीड़ना।

सापराध तद्० (गु०) अपराध विशिष्ट, अपराधयुक्त, अपराधी, दोषी, कलङ्की, सदोष।

साफल्य तद्० (पु०) सफलता, फल सिद्धि।

साबर दे० (पु०) पशु विशेष, बारहसिंघा।

साबूत दे० (गु०) अक्षत, बिना टूटा फूटा, समूचा, समस्त।

साम तद्० (पु०) वेद विशेष, तीसरा वेद, गाने वाली ऋचा। (दे०) संध्या, साँझ, मूसल के मुँह पर का लोहा।

सामग्री तद्० (स्त्री०) सामान, चीज़, वस्तु, उपकरण, असबाब।

सामन्त तद्० (पु०) अधीनीभूत राजा, माण्डलिक राजा।

सामयिक तद्० (गु०) कालोचित, समय के अनुकूल।

सामर दे० (पु०) लवण विशेष, नोन।

सामर्थ तद्० (पु०) शक्ति, बल, पराक्रम, योग्यता।

सामर्थी तद्० (गु०) समर्थ, बलवान्, पराक्रमी, शक्तिमान्।

सामर्थ्य तद्० (पु०) शक्ति, योग्यता, पराक्रम, बल।

सामा दे० (पु०) सामान, सामग्री, भोजन सामग्री, बहुविध भोजन, जमाव, मण्डली की शोभा।

सामाजिक तद्० (गु०) सभासद, सभ्य, समाज सम्बन्धी, समाज विषयक।

सामान्य तद्० (पु०) साधारण, मध्यम स्थिति का, सबलसार।

सामान्या तद्० (स्त्री०) गणिका, वेश्या, व्यभिचारिणी, नायिका विशेष।

सामी दे० (स्त्री०) साम, सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सामीप्य तद्० (पु०) समीपता, निकटता, नज़दीकी, घनिष्ठता।

सामुद्रिक तद्० (पु०) विद्या विशेष, जिससे हस्तरेखा आदि का विचार किया जाता है।

साम्हना दे० (पु०) साक्षात्, सामने का भाग, आगे, प्रत्यक्ष।

सायङ्काल तद्० (पु०) संध्याकाल, दिन और रात्रि का संधिकाल, साँझ।

सार तद्० (पु०) खाद, लोहा, हीरा, वस्तु का उत्तम भाग।

सारङ्ग तद्० (पु०) राग विशेष, मोर, मयूर, सर्प, मेघ, बादल, हरिण, जल, पानी, एक देश का नाम, चातक, पपीहा, हाथी, राजहंस, सिंह, कोयल, कोकिल, कामदेव, रङ्ग विशेष, वर्ण, धनुष, भ्रमर, मधुमक्षिका। (स्त्री०) मधु की मक्खी, कपूर कमल, आभरण, भूषण, पुष्प, छत्र, शोभा, रात्रि, दीपक, स्त्री, शंख, वस्त्र।

सारङ्गी दे० (स्त्री०) वाद्य विशेष।

सारथी तद्० (पु०) रथवाह, रथ चलाने वाला, गाड़ी हाँकने वाला।

सारना दे० (क्रि०) सरकाना, हटाना, दूर करना।

सारस तद्० (पु०) पक्षि विशेष, एक पक्षी का नाम।

सारा दे० (गु०) सम्पूर्ण, समस्त, समूचा।

सारार्थ तद्० (गु०) [सार + अर्थ] मुख्यार्थ, प्रधान अर्थ।

सारिका तद्० (स्त्री०) तोता, मैना, पक्षी विशेष।

सारी दे० (स्त्री०) साड़ी, स्त्रियों के पहनने योग्य कपड़ा।

सार्थक तद्० (गु०) अर्थ सहित, अर्थ युक्त, सफल।

सार्वभौम तद्० (पु०) राजा, महाराजा, चक्रवर्ती राजा।

साल तद्० (पु०) शाल, एक प्रकार की लकड़ी, वृक्ष विशेष।

सालन दे० (पु०) बना हुआ मांस, मांस की तरकारी छेदन, भेदन, वेधन।

सालना दे० (क्रि०) भेदना, चुभना, गड़ना।

सालसा दे० (पु०) औषध विशेष, खींचा हुआ अर्क।

साला तद्० (पु०) श्यालक, पत्नी का भाई।

साली तद्० (स्त्री०) श्याली, साले की बहिन, स्त्री की बहिन।

सालू, सालूर दे० (पु०) एकरङ्गा, सून, लाल रङ्ग का कपड़ा विशेष।

सालोतरी तद्० (पु०) शलिहोत्र, घोड़े का वैद्यक।

सावक तद्० (पु०) शावक, शिशु, बच्चा, लड़का, बालक।

सावकरन तद्० (पु०) श्यामकर्ण, एक प्रकार का उत्तम घोड़ा।

सावकाश तत्० (पु०) अवकाश, अवसर, फुरसत, छुट्टी।

सावज दे० (पु०) बनैला पशु, अहेर में मिला पशु।

सावधान तत्० (पु०) सतर्क, चौकस, सावचेत, कार्यों में जागृत। —ता (स्त्री०) सतर्कता।

सावधानी तद्० (स्त्री०) सावधानता, चौकसी, सावचेती।

सावन तद्० (पु०) श्रावण, एक महीने का नाम। - हरे न भादों सूखे (वा०) सदा एक समान।

सावन्त तद्० (पु०) सामन्त, माण्डलीक राजा, अधिराज, करद राजा, चक्रवर्ती के अधिकार-युक्त राजा।

सास, सासु तद्० (स्त्री०) श्वश्रू, श्वसुर की स्त्री, स्त्री या पति की माता।

साह दे० (पु०) बनिया, महाजन, रोजगारी, सेठ।

साहस तत्० (पु०) उद्योग, उत्साह, वीरता, कार्य-तत्परता, कार्यों में अतिशय मनोयोग।

साहसी तत्० (गु०) उद्योगी, उत्साही, साहसयुक्त, निर्भीक, निडर।

साहाय्य तत्० (पु०) सहायता, उपकार, सहारा।

साहित्य तत्० (पु०) उपकरण, सामान, सामग्री, विद्या विशेष, काव्य अलङ्कार आदि।

साही दे० (स्त्री०) जन्तु विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं।

साहूकार दे० (पु०) महाजन, लेन देन करने वाला, कारबार करने वाला, सौदागरी, वणिक्।

साहूकारी दे० (स्त्री०) महाजनी, लेनदेन, कारबार, सौदागरी, वाणिज्य।

सिंह तत्० (पु०) मृगेन्द्र, केसरि, मृगराज। —द्वार (पु०) फाटक, राजा के महल का बड़ा द्वार। —नाद (पु०) गम्भीर ध्वनि, सिंह का शब्द।

सिंहनी दे० (स्त्री०) सिंही, सिंह की स्त्री।

सिंहलद्वीप तत्० (पु०) द्वीप, विशेष, लङ्का द्वीप, इसे सीलोन भी कहते हैं।

सिंहासन तत्० (पु०) राजासन, राजगद्दी, विचार का आसन।

सिंहिका तत्० (स्त्री०) राक्षसी विशेष, राहु की माता।

सिकता तत्० (स्त्री०) बालू, रेत, बालुका।

सिकरी, सिकली दे० (स्त्री०) साकल, आभूषण विशेष।

सिख दे० (पु०) जाति विशेष, नानक पन्थ के अनुयायी।

सिखनावट दे० (स्त्री०) शिक्षा, सीख।

सिखर तद्० (पु०) शिखर, पर्वतशृङ्ग, पहाड़ की चोटी, ऊँचे मकानों का ऊपरी भाग।

सिखरन तद्० (पु०) शिखरिणी, दही में दूध, चीनी और मसाले आदि डाल कर जो बनाया जाता है।

सिखलाना दे० (क्रि०) पढ़ाना, सिखाना, शिक्षा देना, बताना।

सिखाई दे० (स्त्री०) शिक्षा, सिखावट, पढ़ाई।
सिखाना दे० (क्रि०) बतलाना, सिखलाना।
सिगरो दे० (गु०) समग्र, समस्त, सम्पूर्ण, सारा।
सिङ्गा दे० (पु०) रणसिंगा, तुरही, वाद्य विशेष।
सिङ्गार तद्० (पु०) शृङ्गार, शोभा, सजावट।
सिङ्गारना दे० (पु०) सजाना, शोभा बनाना, सजावट करना।
सिङ्गारिया दे० (पु०) शृङ्गार करने वाला, पुजारी, पूजा करने वाला, पूजक।
सिङ्गौटी दे० (स्त्री०) पशुओं का आभूषण विशेष, जो उनके सींगों पर लगाया जाता है।
सिझाना दे० (क्रि०) पकाना, रींधना, उबालना, दुःख देना।
सिड़ दे० (स्त्री०) उन्मत्तता, पागलपन।
सिड़ा दे० (पु०) बावला, उन्मत्त, बौड़ाहा, पागल।
सित तत्० (गु०) धवल, श्वेत, शुक्ल, धौला।
सितरी दे० (स्त्री०) स्वेद, पसीना, क्लेद।
सिद्ध तत्० (पु०) देवयोनि विशेष, देवता का एक भेद। योग की आठ सिद्धियाँ जिन्हें प्राप्त हैं। सभक्त। (गु०) पूरा, समाप्त, पका, तैयार, बना हुआ, साबित किया हुआ। (पु०) साधु, योगी, तपस्वी।
सिद्धान्त तत्० (पु०) दृढ़ निश्चय, वादि और प्रतिवादि द्वारा, युक्ति तर्क से सिद्ध किया हुआ अर्थ।
सिद्धान्ती तत्० (पु०) मीमांसक, विचारक।
सिधारना दे० (क्रि०) जाना, चला जाना, उठना, स्थान त्याग करना।
सिनक दे० (स्त्री०) पोंटा, नेटा, नासिका मल, कफ, जो नाकों से निकलता है।
सिनकना दे० (क्रि०) नाक साफ करना, छींकना।
सिन्दूर तत्० (पु०) उपधातु विशेष, जिसका भस्म दवा के काम में आता है। स्त्रियों का सोहाग चिन्ह।
सिन्धु तत्० (पु०) समुद्र, सागर, पयोधि, एक नद का नाम, जिसका दूसरा नाम अटक। राग विशेष, सिन्धप्रदेश, एक रागिणी का नाम।
सिन्धुर तत्० (पु०) हाथी, हस्ति, करी, गज।
—गामिनी (स्त्री०) सुन्दर जाति वाली स्त्री, जिसकी गति गज के समान हो।
सिप्र तत्० (पु०) निदाघ, जल, पसीना, स्वेद, कणिका।
सिप्रा तत्० (स्त्री०) नदी विशेष, जो उज्जैन के पास है।
सिपाह दे० (पु०) सिपाही, योद्धा, लड़ने वाला, तिलङ्गा।
सिमिटना दे० (क्रि०) सिकुड़ना, बटुरना, संकुचित होना।
सिमाना तद्० (पु०) सीमा, मेंड़, अवधि, सीवाना।
सियाना दे० (गु०) प्रवीण, चतुर, निपुण, अभिज्ञ, दक्ष।
सियार तद्० (पु०) शृगाल, गीदड़।
सिर तद्० (पु०) मस्तक, माथा, कपाल।—उठना (वा०) स्वामी का विद्रोह करना, सिर में पीड़ा होना।—करना (वा०) प्रारम्भ करना।—फाटना (वा०) प्रसिद्ध होना, नामी होना, उद्यत होना, प्रस्तुत होना।
सिरका दे० (पु०) आसव विशेष।
सिरकी दे० (स्त्री०) सरकण्डे की छावनी।
सिरखप दे० (गु०) मनचला, प्रणी, अपनी टेक पर अटल।
सिरखपी दे० (स्त्री०) साहस, जोखिम।
सिरचढ़ा दे० (गु०) घमण्डी, अहङ्कारी।
सिरजना दे० (क्रि०) रचना, उत्पन्न करना, बनाना।
सिर फोड़ौवल दे० (स्त्री०) झगड़ा, लड़ाई।
सिरसींगा दे० (गु०) झगड़ालू, दङ्गा करने वाला।
सिरहाना दे० (पु०) सिर की ओर।
सिरा दे० (पु०) रग, नस।

सिरात दे० (क्रि०) ठण्डा, शीतल, शीत।

सिराना दे० (क्रि०) बन पड़ना, होना, ठण्डा करना।

सिलपट दे० (गु०) चौपट, उजाड़, बराबर, समतल।

सिलपट्टा दे० (पु०) सिल लोढ़ा।

सिलवाना दे० (क्रि०) सिवाना, सिलाना, सिलाई करना।

सिलाई दे० (स्त्री०) सीने का काम, सीने की मजूरी।

सिलाना दे० (क्रि०) ब्योंताना, कपड़े बनवाना।

सिली दे० (स्त्री०) पथरी, सिल, शान।

सिवाना दे० (पु०) सीमा, छोर, अवधि।

सिसकना दे० (क्रि०) रोना, धीरे धीरे रोना।

सिसकी दे० (स्त्री०) फूक, सुड़की।

सिहरना दे० (क्रि०) कपना, कम्पित होना, थर थराना।

सिहरा दे० (पु०) मुकुट, मौर, किरीट।

सिहराऊ दे० (गु०) जड़ाव, जड़वन।

सिहराना दे० (क्रि०) थकना, श्रान्त होना, थक जाना।

सींक दे० (स्त्री०) तृण, घास, नरकट।

सींका दे० (पु०) रेखा, लकीर, धारी।

सींकिया दे० (गु०) धारीवाला, डण्डीदार।

सींग तद्० (पु०) शृङ्ग, विषाण, पशुओं के सींग।

सींगड़ा दे० (पु०) सींग का बना हुआ पात्र, जिसमें बारूद रखा जाता है।

सींगा दे० (पु०) नरसिंगा, तुरही, वाद्य विशेष।

सींगी दे० (स्त्री०) तुमड़ी, सींगा, मछली।

सींचना दे० (क्रि०) सीचना, पाटना, पानी देना।

सींचाई दे० (स्त्री०) पानी देने का काम, पानी से पटाने का काम।

सींची दे० (स्त्री०) सींचने का समय।

सीख तद्० (स्त्री०) शिक्षा, पाठ, उपदेश, सिखापट।

सीखना दे० क्रि०) शिक्षा पाना, अभ्यास करना, पढ़ना।

सीचना दे० (क्रि०) परौना, सिंचाई करना।

सीजना दे० (क्रि०) पसीजना, रिसना, निथरना, निकलना।

सीटी दे० (स्त्री०) मुँह से बजाया हुआ शब्द।

सीठना दे० (क्रि०) ब्याह का गीत।

सीठा दे० (गु०) रसहीन, फीका, असार, नीरस।

सीठी दे० (स्त्री०) फूद, छानन, निकम्मा भाग।

सीढ़ी दे० (स्त्री०) सोपान, पैड़ी, आरोह, निसैनी।

सीतला तद्० (स्त्री०) शीतला, माता, गोटी, चेचक।

सीता तद्० (स्त्री०) जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की कन्या, श्रीरामचन्द्र की पत्नी, हल, हलका फल।—पति (पु०) रामचन्द्र।—फल (पु०) फल विशेष, शरीफा।

सीधा दे० (गु०) सोझा, अवक्र, निश्छल, शुद्ध, सच्चा, कोरा अन्न।

सीना दे० (क्रि०) सिलाई करना, तागना, टाँकना, गुथना।

सीपी दे० (स्त्री०) घोंघा, शङ्ख।

सीमा तत्० (स्त्री०) हद्द, सिवाना, अवधि, डाँड़।—विवाद (पु०) अठारह प्रकार के न्याय के अन्तर्गत एक न्याय।

सीय दे० (स्त्री०) सीता, जानकी, वैदेही।

सीरा दे० (पु०) भोजन विशेष, मोहन भोग।

सीला दे० (गु०) गीला, भीगा हुआ, शीतल।

सीवन दे० (पु०) सिलाई, जोड़, मेल।

सीस तद्० (पु०) शीर्ष, सिर, मस्तक, कपाल।

सीसक, सीसा तत्० (पु०) धातु विशेष, स्वनाम प्रसिद्ध, धातु, काच।

सु तत्‌० (उप०) उत्तमता बोधक।
सुँघाना दे० (क्रि०) महकाना, सुवासना।
सुकचाना दे० (क्रि०) संकुचित होना, सिमटना, डरना, भयपाना, सकुचाना।
सुकटा दे० (गु०) दुर्बल, दुबला, पतला।
सुकटी दे० (स्त्री०) भुनी मछली।
सुकड़ना दे० (क्रि०) सिमटना, संकुचित होना।
सुकर तत्‌० (गु०) अल्प परिश्रम से करने योग्य।
सुकाल तत्‌० (पु०) सुअवसर, अच्छी ऋतु, उत्तम समय।
सुकुमार तत्‌० (गु०) मनोहर, सुन्दर, कोमल।
सुकृत तत्‌० (पु०) पुण्य, उत्तम कर्म।
सुकृती तत्‌० (पु०) पुण्यात्मा, पुण्यवान, धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ।
सुख तत्‌० (पु०) आराम, कल, शान्ति, इन्द्रियों की तृप्ति।—चैन (पा०) विश्राम, अवकाश, अवसर। —तल (पु०) जूते का तला।—द (गु०) सुखदायक, आनन्ददायक।—दास (पु०) एक जाति का धान।—लाना (क्रि०) सुखाना, सूखा करना।
सुखाला दे० (गु०) सहज, सुख से, आनन्द से।
सुखित तत्‌० (गु०) सुखी, सुख प्राप्त, आनन्दित।
सुखिया दे० (गु०) सुखी, सुखित, सुखयुत, आनन्दी, विलासी।
सुखी तत्‌० (गु०) सुख करने वाला।
सुख्याति तत्‌० (स्त्री०) कीर्ति, यश, प्रसिद्धि, नाम, नामवरी, प्रतिष्ठा, मर्यादा।
सुगति तत्‌० (स्त्री०) उत्तम गति, अच्छी अवस्था।
सुगन्ध तत्‌० (स्त्री०) अच्छी बास, महक, शोभन, गन्ध।
सुगन्धी तत्‌० (गु०) सुगन्ध, महक, बास, अच्छी बास।
सुगम तत्‌० (गु०) सहज, सरल, सुकर, अल्प परिश्रम से करने योग्य।—ता (स्त्री०) सरलता।
सुग्रीव तत्‌० (पु०) वानरराज, बालि का छोटा भाई।
सुघड़ दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, सुडौल।
सुच दे० (गु०) निर्मल, स्वच्छ, मलरहित।
सुचरित तत्‌० (गु०) उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी, धर्मात्मा।
सुचकना दे० (क्रि०) विस्मित होना, अचम्भित होना, आश्चर्य में होना।
सुचित्त तत्‌० (गु०) सुगम, निश्चिन्त, चिन्ता शून्य, सावधान।
सुचिताई दे० (स्त्री०) सावधानी, सुचित्तता।
सुचेत तत्‌० (गु०) सावधान, चौकस, सतर्क।
सुजन तत्‌० (गु०) साधुजन, भलामानस, सदाचारी, परोपकारी।—ता (स्त्री०) साधुता, परोपकारिता, भलमनसी।
सुजान तत्‌० (गु०) ज्ञानवान्, ज्ञाता, अभिज्ञ, प्रवीण, दक्ष।
सुजाना दे० (क्रि०) फुलाना, बढ़ाना, मोटवाना।
सुझाना दे० (क्रि०) दिखाना, बताना, स्मरण करना, समझाना।
सुटुकना दे० (स्त्री०) लट्ठ, छड़ी, लाठी, लठिया।
सुटकना दे० (क्रि०) संकुचित होना, निगलना, घूँटना।
सुठि दे० (गु०) सुन्दर, मनोहर, उत्तम।
सुड़की दे० (स्त्री०) गुड्डी की डोरी छोड़ना।
सुड़प दे० (स्त्री०) कवल, ग्रास, कौर।
सुड़पना दे० (क्रि०) निगलना, चाटना, चूसना।
सुडुकना दे० (क्रि०) सुड़पना, चूसना, घोंटना।
सुडौल दे० (गु०) सुन्दर, शोभन, सुन्दर आकार वाला, सुघड़।
सुत तत्‌० (पु०) पुत्र, बेटा, लड़का, आत्मज, तनय।
सुतरा दे० (पु०) बलय, कड़ा, बाला, आभूषण विशेष।
सुतरी दे० (स्त्री०) सूत की बनी रस्सी।
सुता तत्‌० (स्त्री०) कन्या, तनया, दुहिता, पुत्री, लड़की, बेटी।

सुतार दे० (पु०) बढ़ई, खाती, जाति विशेष, जिनका लकड़ी का काम करना व्यवसाय है, अच्छा समय, सुयोग्य, अनुकूल समय।

सुथन या सूथन दे० (पु०) पायजामा, पैर में पहनने का कपड़ा।

सुथरा दे० (गु०) साफ, स्वच्छ, अच्छा, अनूठा। —**साही** (पु०) नानक साही साधु।

सुदर्शन तत्० (पु०) विष्णु के चक्र का नाम, पुरुष (गु०) सुदृष्टि, जो देखने में मनोहर हो।

सुदामा तत्० (पु०) एक दरिद्र ब्राह्मण, श्रीकृष्ण का पढ़ने के समय का साथी, श्रीकृष्ण ने उसे बहुत धन देकर धनी बनाया था।

सुदि तत्० (अ०) शुक्ल पक्ष, उजाला पाख।

सुदिन तत्० (पु०) अच्छे दिन, भला अवसर, सौभाग्य।

सुदृढ़ तत्० (पु०) कठोर, सुदृढ़, अटल।

सुदृश्य तत्० (गु०) उत्तम, दर्शनीय, देखने योग्य, मनोज्ञ, मनभावन।

सुध दे० (स्त्री०) स्मरण, चेत, ध्यान, चिन्ता। —**बुध** समझ, चेत, ध्यान, सूझ। —**लेना** (वा०) समाचार पूँछना, याद करना, स्मरण करना।

सुधरना दे० (क्रि०) बनना, सम्हल जाना, बन जाना।

सुधा तत्० (स्त्री०) अमृत, पीयूष, अमी, चूना, कलई, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य विशेष। —**कर** (पु०) चन्द्रमा।

सुधाँ दे० (अ०) सहित, समेत, युक्त।

सुधारना दे० (क्रि०) बनाना, सवाँरना, सजाना।

सुधी तत्० (पु०) बुद्धिमान्, अनुभवी, पण्डित, विज्ञ।

सुन तद्० (गु०) शून्य, रिक्त, रीता। —**कातर** (पु०) सर्पविशेष। —**बहरी** (स्त्री०) रोग विशेष, कुष्ट रोग का पूर्वरूप। —**सर** (पु०) एक प्रकार का गहना। —**सान** (वा०) एकान्त, उजाड़, वीरान। —**हरा** (गु०) सोने का।

सुनाना दे० (क्रि०) श्रवण कराना, निवेदन करना, जनाना।

सुनार दे० (पु०) जाति विशेष, जो गहने बनाता है, स्वर्णकार।

सुनारी दे० (स्त्री०) सुनार का काम, सुनार की विद्या।

सुन्दर तत्० (गु०) सुरूप, रूपवान, मनोहर। —**ता** (स्त्री०) मनोहरता, सुरूपता।

सुन्दरी तत्० (स्त्री०) रूपवती, सुरूपा।

सन्धाधर दे० (स्त्री०) गन्ध विशेष, मिट्टी की गन्ध, सुवास।

सुपथ तत्० उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सुमार्ग, सुपन्थ।

सुपात्र तत्० (गु०) योग्य, उत्तम पात्र, सज्जन, उत्तम जन।

सुपारी दे० (स्त्री०) पूँगी फल, प्रसिद्ध फल विशेष।

सुपास दे० (पु०) सुविधा, सुभीता।

सुपुत्र तत्० (पु०) अच्छा लड़का, सत्पुत्र।

सुप्त तत्० (गु०) निद्रित, सोया हुआ।

सुफल तत्० (गु०) उत्तम फल, लाभदायक, लाभकारी, सफल।

सुबुद्धि तत्० (स्त्री०) उत्तम बुद्धि, प्रवीणता।

सुभग तत्० (पु०) सुन्दर पति, प्यारा, प्रिय।

सुभगा तत्० (स्त्री०) सैाभाग्यवती, सुधवा।

सुभट तत्० (पु०) उत्तम योद्धा, वीर, शूर, लड़ाका सिपाही।

सुभाव तद्० (पु०) स्वभाव, अच्छा स्वभाव।

सुभीता दे० (स्त्री०) अवसर, अवकाश, सुविधा।

सुमङ्गल तत्० (पु०) शुभ, कल्याण, कुशल।

सुमति तत्० (स्त्री०) सुबुद्धि, भलमनसी, अच्छी बुद्धि।

सुमन तत्० (पु०) फूल, पुष्प, कुसुम।

सुमन्त तत्० (पु०) राजा दशरथ का सचिव, सारथी,

सुमरन दे० (पु०) स्मरण, याद, भजन।

सुमरना दे० (क्रि०) स्मरण करना, जपना, नाम लेना, भजन करना।

सुमिरनी दे० (स्त्री०) छोटी माला, स्मरण करने के लिये २७ दानों की बनी माला।

सुमित्रा तत्० (स्त्री०) राजा दशरथ की छोटी पटरानी, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता।

सुमेरु तत्० (पु०) पर्वत विशेष, उत्तर ध्रुव, केन्द्र, मध्य स्थान, माला की बड़ी मनिया।

सुम्भा दे० (स्त्री०) तोप या बन्दूक की टसनी, गज।

सुयश तत्० (पु०) सुख्याति, कीर्ति, यश।

सुर तत्० (पु०) देवता, देव, अमर, सूर्य।—गुरु (पु०) बृहस्पति।—मिलाना (वा०) बाजों का सुर मिलाना।

सुरङ्ग तत्० (स्त्री०) सेंध, ज़मीन के भीतर का मार्ग।

सुरत दे० (स्त्री०) सुध, याद, चेत, स्मृति, (तत्०) (पु०) मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग।—तरु (पु०) देववृक्ष, कल्प वृक्ष।

सुरती दे० (स्त्री०) तम्बाकू, तमाखू, खैनी।

सुरतीला दे० (गु०) स्मरणकर्ता, सावधान, सुचेत।

सुरभि तत्० (पु०) सुगन्ध।

सुरमा दे० (पु०) अञ्जन विशेष।

सुरस तत्० (गु०) रसयुक्त, उत्तम रसवाला।

सुर सुरना दे० (क्रि०) सरसराना, रेंगना।

सुरसुरी दे० (स्त्री०) गुद गुदी, सिहरन, सर सराहट।

सुरा तत्० (स्त्री०) मद्य, मदिरा, आसव, शराब।

सुरूप तत्० (गु०) सुन्दर, सुघड़, सुडौल।

सुरैतिन दे० (स्त्री०) अविवाहिता भार्या, रखनी।

सुलगना दे० (क्रि०) लहकना, लहराना, जलना, धुँआ निकलना।

सुलगाना दे० (क्रि०) बालना, लहकाना, जलाना।

सुलझना दे० (क्रि०) सुधरना, खुलना।

सुलझाना दे० (क्रि०) उकेलना, सुधारना, खोलना।

सुलभ तत्० (गु०) सहज, सुगम, आसान, सहल।—ता (स्त्री०) सुगमता।

सुलाना दे० (क्रि०) शयन कराना, पौढ़ाना।

सुवचन तत्० (पु०) विशद वचन, प्रिय वाणी।

सुवर्ण तत्० (गु०) सुजाति, अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, (पु०) सोना, काञ्चन।

सुवास तत्० (पु०) सुगन्ध।

सुवैया दे० (गु०) सोने वाला।

सुशील तत्० (गु०) उत्तम स्वभाव वाला।

सुषुप्ति तत्० (स्त्री०) अवस्था विशेष, योगियों की ध्यानावस्था।

सुसकारना दे० (क्रि०) पुचकारना, ललकारना, कुकियाना।

सुसताना दे० (क्रि०) विश्राम करना, थकावट उतारना।

सुस्त दे० (गु०) शिथिल, ढीला, निर्बल, दुबला।

सुस्थ तत्० (गु०) नीरोग, अच्छा, भला, चङ्गा।

सुहराना दे० (क्रि०) चमोटना, भूमि में लोटाना।

सुहाग तद्० (पु०) सौभाग्य, सधवापन।

सुहागिन दे० (स्त्री०) सधवा स्त्री, जिसका पति वर्तमान हो।

सुहागा दे० (पु०) टङ्कन, क्षार विशेष।

सुहाता दे० (गु०) अभीप्सित, इष्ट, चाहीता, मनभावन।

सुहाना दे० (क्रि०) अच्छा मालूम होना।

सुहावना दे० (क्रि०) रुचना, अच्छा लगना।

सुहृद तत्० (पु०) मित्र, बन्धु, हितचिन्तक, हितू।

सूआ दे० (पु०) तोता, सुग्गा, बड़ी सुई।

सुई दे० (स्त्री०) कपड़े सीने की सलाई, सूची।

सूँघना दे० (क्रि०) महकना, बास लेना।

सूँघनी दे० (स्त्री०) हुलास, नास, सूँघने की तमाकू।

सूँर दे० (स्त्री०) चुप्पी, मौन, अवाक्, नीरवता।

सूण्ड तद्० (स्त्री०) शुण्ड, हाथी का कर।

सूण्डी दे० (पु०) जाति विशेष, जो मद्य बेचने आदि का काम करते हैं, कलाल, कलवार।

सूँतना दे० (क्रि०) तोड़ना, बटोरना, एकत्रित करना।

सूँस दे० (पु०) जल जन्तु विशेष।

सूकी दे० (स्त्री०) रुपये का चौथा हिस्सा, चौअन्नी।

सूक्ष्म तत्० (गु०) पतला, छोटा, बारीक।—ता (स्त्री०) पतलापन, छोटापन।—दर्शी (गु०) चतुर, गुणी, प्रवीण।

सूखछुड़ी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, क्षयी रोग।

सूखना दे० (क्रि०) नीरस होना, रस निकल जाना। बिसुखना, बिगड़ना, खराब होना, कुम्हलाना।

सूखा दे० (पु०) नीरस, रसहीन, शुष्क, गला, सड़ा, (पु०) अकाल, महँगी।

सूचक तत्० (पु०) बोधक, ज्ञापक, बताने वाला, जताने वाला।

सूचना तत्० (स्त्री०) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन।—पत्र (पु०) नोटिस, विज्ञापन।

सूचित तत्० (गु०) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ।

सूचीपत्र तत्० (पु०) बोधपत्रिका, बोधनपत्र, जनाने वाला पत्र, बीजक।

सूज दे० (स्त्री०) फूल, फुलाव, सोज, फूलन।

सूजना दे० (क्रि०) फूलना।

सूजी दे० (स्त्री०) मोटा आटा, दर दर आटा।

सूझ दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, निरख, परख बुद्धि।

सूझना दे० (क्रि०) मालूम होना दीख पड़ना, दृष्टिगत होना।

सूत तद्० (पु०) सूत्र, तागा, धागा, डोरा, (तत्०) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे। इनको बलदेव ने मार डाला था।

सूतक तत्० (पु०) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि।

सूतना दे० (क्रि०) सोना, निद्रा जाना।

सूतल या सुतल तत्० (पु०) पाताल विशेष।

सूतली दे० (स्त्री०) सन की रस्सी, डोरी।

सूतिका तत्० (स्त्री०) प्रसूती स्त्री, ब्यायी स्त्री।

सूती दे० (गु०) सूत का बना, सूती।

सूत्र तत्० (पु०) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध व्याकरण के सूत्र।—धार (पु०) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्ध।

सूथन दे० (पु०) पायजामा, सुथना।

सूधा दे० (गु०) भोला सज्जन, निष्कपट।

सूना दे० (गु०) शून्य, उजाड़, रीता, खाली।

सून तत्० (पु०) पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई रवि, सूर्य।

सूप तद्० (पु०) सूर्प, अनाज पछोरने का एक बर्तन जो सिरकी का बनता है। (तत्०) दाल।—कार (पु०) रसोईया, पाचक।

सूम दे० (पु०) कृपण, कञ्जूस, मक्खी चूस।

सूर सूर्य, रवि, (दे०) अन्धा, बिन आँख का, वीर, बहादुर।—दास (पु०) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है। हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है।—मलार (पु०) एक रागिणी का नाम।

सूरज तद्० सूर्य—गहन (पु०) सूर्यग्रहण —मुखी (पु०) एक फूल के पौदे का नाम।

सूरन तद्० (पु०) शूरण, कन्द विशेष।

सूरमा दे० (गु०) वीर, शूर।—पन (पु०) वीरता, बहादुरी।

सूरा दे० (पु०) शूर, वीर, योद्धा, यथा:—

सूरा रण में जाय के लोहा करो निशङ्क।
ना मोहि चढ़े रडापरी ना तोहि चढ़े कलङ्क॥

सूर्य तत्० (पु०) रवि।—वंशी (पु०) राजपूतों की एक जाति।

सूर्योदय तत्० (पु०) प्रातःकाल प्रभात।

सूल तद्० (पु०) शूल, रोग विशेष, बायगोला, दशा, हाल, अवस्था।

सूली तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काँटा, प्राचीनकाल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी के प्राण दण्ड दिया जाता था।

सूसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा।

सूसुम दे० (पु०) थोड़ा गरम, कुन कुना।

सूहा दे० (पु०) लाल, लाल रङ्ग, अथवा, रक्त, एक प्रकार का रङ्ग।

सृष्टि तत्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना।

से दे० (अ०) अपादान बोधक, साथ, सङ्ग।

सेंकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण करना।

सेंत दे० (अ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का —मेंत (अ०) यों ही बिना दाम का।

सेंध दे० (पु०) छेद, चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद।

सेंधा दे० (पु०) नमक, लाहोरी निमक।

सेंधिया दे० (पु०) गेड़िहर, गड़रिया, ग्वालियर महाराज की पद्वी।

सेंधी दे० (पु०) खजूर का रस।

सेचन तत्० (पु०) छिड़काव, सींचना।

सेज दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना, बिस्तर।

सेठ तद्० (पु०) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, कोठी वाल।

सेत तत्० (पु०) धवल, सफेद, श्वेत, शुक्ल, यथा:—
सेत सेत सब ही भलो सेतो भलो न केश।
नारि रमे ना रिपु डरे, हेतो क्लेश विशेष॥

सेतना दे० (क्रि०) जुगाना, संग्रह करना।

सेतु तत्० (पु०) बाँध, पुल, वृक्ष विशेष।—बन्ध (पु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने बनाया।

सेना तत्० (स्त्री०) कटक दल, फौज, लश्कर।—पति (स्त्री०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष।

सेनानी तत्० (पु०) सेनापति, स्कन्द, कार्तिकेय, कार्तिक स्वामी।

सेम दे० (पु०) तरकारी विशेष।

सेमल दे० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़।

सेर दे० (पु०) प्रस्थ, परिमाण, विशेष, सोलह छटाक का परिमाण।

सेराना दे० (क्रि०) ठण्डा करना, सिराना।

सेलखड़ी दे० (स्त्री०) सफेद मिट्टी, जिससे लड़के लिखते हैं।

सेला दे० (पु०) साफा, जरी का मुंड़बन्धा, बर्छी, भाला, एक प्रकार का वाद्य।

सेव दे० (पु०) फल विशेष, एक प्रकार का फल।

सेवक तत्० (पु०) भृत्य, नौकर, चाकर।

सेवकाई तत्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, सेवा।

सेवड़ा दे० (पु०) जैन भिक्षुक, नमकीन पकवान।

सेवती दे० (स्त्री०) एक फूल का नाम।

सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, अण्डा पोसना।

सेवा तत्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल।

सेहथना दे० (क्रि०) चवर, डुलाना, चवर हाँकना।

सैकड़ा दे० (पु०) शतक, शतकड़ा, सौ संख्या से परिमित।

सैन दे० (स्त्री०) मटकी, आँख या अङ्गुलि का इशारा।

सैना सैनी दे० (वा०) इशारे से बात करना।

सैन्धव तत्० (पु०) लवण विशेष, लाहौरी नोन, घोड़ा, अश्व।

सैन्य तत्० (पु०) सेना, कटक।

सैसाँझ दे० (अ०) सन्ध्या का प्रारम्भ, सन्ध्या के आरम्भ में।

सैहरन दे० (पु०) समाई, घटाव, स्थान।

सोअर दे० (पु०) सूतिका गृह, जिस घर में स्त्रियाँ जनती हैं।

सोआ दे० (पु०) साग विशेष।

सोई दे० (सर्व०) वही।

सों दे० (अ०) से, साथ, ब्रजभाषा में अपादान का चिन्ह, शपथ।

सूँतना दे० (क्रि०) तोड़ना, बटोरना, एकत्रित करना।

सूँस दे० (पु०) जल जन्तु विशेष।

सूकी दे० (स्त्री०) रुपये का चौथा हिस्सा, चौअन्नी।

सूक्ष्म तत्० (गु०) पतला, छोटा, बारीक।—**ता** (स्त्री०) पतलापन, छोटापन।—**दर्शी** (गु०) चतुर, गुणी, प्रवीण।

सूखछुड़ी दे० (स्त्री०) रोग विशेष, क्षयी रोग।

सूखना दे० (क्रि०) नीरस होना, रस निकल जाना। बिसुखना, बिगड़ना, खराब होना, कुम्हलाना।

सूखा दे० (पु०) नीरस, रसहीन, शुष्क, गला, सड़ा, (पु०) अकाल, महँगी।

सूचक तत्० (पु०) बोधक, ज्ञापक, बताने वाला, जतलाने वाला।

सूचना तत्० (स्त्री०) जनाना, चेतावनी, विज्ञापन। —**पत्र** (पु०) नोटिस, विज्ञापन।

सूचित तत्० (गु०) जताया गया, विज्ञापन दिया हुआ।

सूचीपत्र तत्० (पु०) बोधपत्रिका, बोधनपत्र, जनाने वाला पत्र, बीजक।

सूज दे० (स्त्री०) फूल, फुलाव, सोज, फूलन।

सूजना दे० (क्रि०) फूलना।

सूजी दे० (स्त्री०) मोटा आटा, दर दर आटा।

सूझ दे० (स्त्री०) दृष्टि, दर्शन, निरख, परख बुद्धि।

सूझना दे० (क्रि०) मालूम होना दीख पड़ना, दृष्टिगत होना।

सूत तद्० (पु०) सूत्र, तागा, धागा, डोरा, (तत्०) सारथी, रथवाह, एक पौराणिक व्यास ये नैमिषारण्य में रहते थे और महाभारत आदि की कथा सुनाते थे। इनको बलदेव ने मार डाला था।

सूतक तत्० (पु०) अशौच, जनन और मरण की अशुद्धि।

सूतना दे० (क्रि०) सोना, निद्रा जाना।

सूतल या सुतल तत्० (पु०) पाताल विशेष।

सूतली दे० (स्त्री०) सन की रस्सी, डोरी।

सूतिका तत्० (स्त्री०) प्रसूती स्त्री, ब्यायी स्त्री।

सूती दे० (गु०) सूत का बना, सूती।

सूत्र तत्० (पु०) सूत, धागा, तागा, डोरा, रीति, व्यवस्था, प्रबन्ध व्याकरण के सूत्र।—**धार** (पु०) नाटकाचार्य, नाटक का प्रबन्ध।

सूथन दे० (पु०) पायजामा, सुथना।

सूधा दे० (गु०) भोला सज्जन, निष्कपट।

सूना दे० (गु०) शून्य, उजाड़, रीता, खाली।

सून तत्० (पु०) पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, अनुज, छोटा भाई, रवि, सूर्य।

सूप तद्० (पु०) शूर्प, अनाज पछोरने का एक बर्तन जो सिरकी का बनता है। (तत्०) दाल।—**कार** (पु०) रसोईया, पाचक।

सूम दे० (पु०) कृपण, कञ्जूस, मक्खी चूस।

सूर सूर्य, रवि, (दे०) अन्धा, बिन आँख का, वीर, बहादुर।—**दास** (पु०) एक कवि का नाम, ये अन्धे थे, इनका बनाया ग्रन्थ सूरसागर है। हिन्दी के कवियों में इनका आसन ऊँचा है। —**मलार** (पु०) एक रागिणी का नाम।

सूरज तद्० सूर्य—**गहन** (पु०) सूर्यग्रहण —**मुखी** (पु०) एक फूल के पौदे का नाम।

सूरन तद्० (पु०) शूरण, कन्द विशेष।

सूरमा दे० (गु०) वीर, शूर।—**पन** (पु०) वीरता, बहादुरी।

सूरा दे० (पु०) शूर, वीर, योद्धा, यथा—

सूरा रण में जाय के लोहा करो निशङ्क।
ना मोहि चढ़े रहापरी ना तोहि चढ़े कलङ्क॥

सूर्य तत्० (पु०) रवि।—**वंशी** (पु०) राजपूतों की एक जाति।

सूर्योदय तत्० (पु०) प्रातःकाल, प्रभात।

सूल तद्० (पु०) शूल, रोग विशेष, बायगोला, दशा, हाल, अवस्था।

सूली तद्० (स्त्री०) एक प्रकार का काँटा, प्राचीनकाल में जिस पर चढ़ा कर अपराधी को प्राण दण्ड दिया जाता था।

सूसी दे० (स्त्री०) एक प्रकार का कपड़ा।

सूसुम दे० (पु०) थोड़ा गरम, कुन कुना।

सूहा दे० (पु०) लाल, लाल रङ्ग, ललदा, राग, एक प्रकार का रङ्ग।

सृष्टि तत्० (स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म, उद्भव, संसार की रचना।

से दे० (अ०) अपादान बोधक, साथ, सङ्ग।

सेंकना दे० (क्रि०) गरमाना, गरम करना, उष्ण करना।

सेंत दे० (अ०) बिना दाम, बिना मूल्य, बेदाम का।—मेंत (अ०) यों ही बिना दाम का।

सेंध दे० (पु०) छेद, चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद।

सेंधा दे० (पु०) नमक, लाहौरी निमक।

सेंधिया दे० (पु०) सेंड़िहर, मठुरिया, ग्वालियर महाराज की पदवी।

सेंधी दे० (पु०) खजूर का रस।

सेचन तत्० (पु०) छिड़काव, सींचना।

सेज दे० (पु०) शय्या, शयन, पलङ्ग, बिछौना, बिस्तर।

सेठ तद्० (पु०) श्रेष्ठ, साहूकार, महाजन, कोठी वाल।

सेत तत्० (पु०) धवल, सफेद, श्वेत, शुक्ल, यथा—
सेत सेत सब ही भले मैती भलो न केश।
नारि रमे ना रिपु डरे, तेतो कूंजा विशेष॥

सेतना दे० (क्रि०) जुगाना, संयुत करना।

सेतु तत्० (पु०) बाँध, पुल, वृक्ष विशेष।—बन्ध (पु०) तीर्थ विशेष, जिसे राम ने बनाया।

सेना तत्० (स्त्री०) कटक दल, फौज, लश्कर।—पति (स्त्री०) सेनानी, सेना का अध्यक्ष।

सेनानी तत्० (पु०) सेनापति, स्कन्द, कार्तिकेय, कार्तिक स्वामी।

सेम दे० (पु०) तरकारी विशेष।

सेमल दे० (पु०) वृक्ष विशेष, सेमर का पेड़।

सेर दे० (पु०) प्रस्थ, परिमाण, विशेष, सोलह छटाक का परिमाण।

सेराना दे० (क्रि०) ठण्डा करना, सिराना।

सेलखड़ी दे० (स्त्री०) सफेद मिट्टी, जिससे लड़के लिखते हैं।

सेला दे० (पु०) साफा, जरी का मुँहबन्धा, बर्छी, भाला, एक प्रकार का धान।

सेव दे० (पु०) फल विशेष, एक प्रकार का फल।

सेवक तत्० (पु०) भृत्य, नौकर, चाकर।

सेवकाई तत्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, सेवा।

सेवड़ा दे० (पु०) जैन भिक्षुक, नमकीन पकवान।

सेवती दे० (स्त्री०) एक फूल का नाम।

सेवना दे० (क्रि०) सेवा करना, पालना पोसना, अण्डा पोसना।

सेवा तत्० (स्त्री०) नौकरी, चाकरी, टहल।

सेहथना दे० (क्रि०) चवर, डुलाना, चवर हाँकना।

सैकड़ा दे० (पु०) शतक, शतकड़ा, सौ संख्या से परिमित।

सैन दे० (स्त्री०) मटकी, आँख या अङ्गुलि का इशारा।

सैना सैनी दे० (वा०) इशारे से बात करना।

सैन्धव तत्० (पु०) लवण विशेष, लाहौरी नोन, घोड़ा, अश्व।

सैन्य तत्० (पु०) सेना, कटक।

सैसाँझ दे० (अ०) सन्ध्या का प्रारम्भ, सन्ध्या के आरम्भ में।

सैहरल दे० (पु०) समाई, चढ़ाव, स्थान।

सोअर दे० (पु०) सूतिका गृह, जिस घर में स्त्रियाँ जनती हैं।

सोआ दे० (पु०) साग विशेष।

सोई दे० (सर्व०) वही।

सौं दे० (अ०) से, सौंह, ब्रजभाषा में अपादान का चिन्ह, शपथ।

सोंटा दे० (पु०) छोटी मोटी लाठी, डण्डा।

सोंठ तद्० (पु०) शुण्ठि, सूखा अदरख।

सोंढ़राय दे० (पु०) कंजूस, कृपण।

सोंधना दे० (क्रि०) मट्टी से कपडा मलना, दूध के बर्तन को गरम करना।

सोंधा दे० (गु०) सुगन्ध द्रव्य विशेष।

सोंह दे० (स्त्री०) सौगन्द, शपथ।

सोंही दे० (गु०) सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

सोखना दे० (क्रि०) शोषण करना, चूसना, चूसन करना।

सोग दे० (पु०) दुःख, चिन्ता, शोच, शोक।

सोच दे० (पु०) शोक, दु:ख, चिन्ता।

सोझा दे० (गु०) सीधा, सामने, खड़ा।

सोत तत्० (पु०) धारा, प्रवाह, स्रोत।

सोदर तत्० (पु०) सहोदर, एक माँ के लड़के।

सोध तद्० (स्त्री०) खोज, अन्वेषण, पता।

सोधना दे० (क्रि०) शोधन करना।

सोन तद्० (पु०) शोण, एक नद का नाम।—**हरा** (गु०) सोने का, सोने का बना।

सोना तद्० (गु०) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्य।—**माखी** (स्त्री०) औषध विशेष।

सोनिया दे० (पु०) सोनार, सुवर्णकार, सोना शोधक।

सोपान तत्० (पु०) सीढ़ी, निसेनी।

सोभना दे० (क्रि०) सजना, सोहना, अच्छा दिखाई देना।

सोम तत्० (पु०) चन्द्र, चन्द्रमा, विधु, इन्द्र, लता विशेष, जो पहले के महर्षियों की दृष्टि से बड़े आदर की वस्तु थी। —**वार** (पु०) चन्द्रवार, दूसरा दिन।

सोरठ दे० (पु०) एक रागिनी का नाम।

सोरठा दे० (पु०) छन्द विशेष। इसके पहले और तीसरे पाद में ११ दूसरे और चौथे पाद में १३ मात्राएँ होती हैं। दोहा को उलट कर पढ़ने से यह छन्द हो जाता है।

सोह दे० (स्त्री०) शोभा, सजावट।

सोहना दे० (क्रि०) शोभना, अच्छा मालूम होना, सजना।

सौ दे० (गु०) दश दहाई, संख्या विशेष, शत, १००।

सौगन्द दे० (पु०) सौंह, शपथ।

सौंपना दे० (क्रि०) समर्पण करना, धरना, रखना।

सौंफ दे० (स्त्री०) औषध विशेष।

सौंरा दे० (पु०) कालख, काजल, झूल।

सौगन्ध दे० (पु०) शपथ, किरिया, आन।

सौच तद्० (पु०) शौच, शुद्धता, शुद्धि।

सौजन्य तत्० (पु०) सुजनता, साधुता, साधुपन।

सौत, सौतिन दे० (स्त्री०) सपत्नी।

सौतेला दे० (गु०) सौत से जन्मा।

सौन्दर्य तत्० (पु०) सुन्दरता, मनोहरता।

सौभाग्य तत्० (पु०) भाग्यवानी, अच्छा भाग्य।

सौर तत्० (गु०) सूर्य सम्बन्धी।

सौरभ तत्० (पु०) सुगन्ध, सुवास।

स्कन्ध तत्० (पु०) काँध, कन्धा, पेड़ का धड़, जहाँ से शाखा निकलती है।

स्खलन तत्० (पु०) पतन, गिरन, गिरना।

स्खलित तत्० (गु०) गिरा, पतित। (पु०) अशुद्धि।

स्तन तत्० (पु०) चूँची, पयोधर, थन।

स्तब्ध तत्० (पु०) कुण्ठित, हक्का बक्का, रुका हुआ।

स्तम्भ तत्० (पु०) खम्भा, रुकाव, अटकाव, थम्भा।

स्तम्भन तत्० (पु०) रुकाव, अटकाव, तन्त्र विशेष कामशास्त्र की क्रिया विशेष।

स्तव तत्० (पु०) स्तुति, प्रशंसा, बखान, गुण-गान।

स्तवक तत्० (पु०) गुच्छा, फूलों का गुच्छा।

स्तावक तत्० (पु०) स्तुतिकर्ता, भाट, चारण, बन्दी।

स्तिमित तत्० (गु०) स्तब्ध, स्थिर, अचञ्चल।

स्तुति तत्० (स्त्री०) बखान, स्तव।

स्तुत्य तत्० (गु०) स्तुति योग्य, स्तवनीय, बखान के योग्य।

स्तोत्र तत्० (पु०) स्तव, स्तुति।

स्त्री तत्० (स्त्री०) नारी, लुगाई, वनिता।—धन (पु०) दायज, दहेज, दहेज में स्त्री को मिला दान।

स्त्रैण तत्० (पु०) स्त्री का, स्त्री के अधीन।

स्थगित तत्० (गु०) रुका, छिपा, रोका।

स्थपति तत्० (पु०) शिल्पी, बढ़ई।

स्थल तत्० (पु०) भूमि, सूखी भूमि।

स्थाणु तत्० (पु०) ठूठा वृक्ष, शिव, महादेव।

स्थान तत्० (पु०) ठौर, ठाव, ठिकाना, घर।

स्थानापन्न तत्० (पु०) प्रतिनिधि, एक के स्थान पर काम करने वाला।

स्थापन तत्० (पु०) रखना, धरना, बैठाना।

स्थापना तत्० (स्त्री०) प्रतिष्ठा, स्थिति, देव आदि को स्थापना करना।

स्थापित तत्० (गु०) प्रतिष्ठा किया हुआ, रखा गया।

स्थाली तत्० (स्त्री०) पाकपात्र, हाँडी बटुई, बट-लोही, पतीली।

स्थावर तत्० (पु०) अचल, नहीं चलने वाला।

स्थिति तत्० (स्त्री०) स्थान, टिकाव, ठहराव।

स्थिर तत्० (गु०) अचल, अटल।

स्थूल तत्० (गु०) मोटा, पीवर, मोटैल।

स्थैर्य तत्० (पु०) स्थिरता, अचलता।

स्थौल्य तत्० (पु०) स्थूलता, मोटापन।

स्नातक तत्० (पु०) ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाला।

स्नान तत्० (पु०) नहाना, नहान, अवगाहन।

स्नेह तत्० (पु०) सनेह, प्रेम चिकनाई, चिकनाहट।

स्पन्द तत्० (पु०) कम्प, चञ्चलता।

स्पर्द्धा तत्० (स्त्री०) हिर्स, डाह, जलन, दूसरे की उन्नति देख दुःख पाना।

स्पर्श तत्० (पु०) छूना, छुहावट।

स्पष्ट तत्० (गु०) साफ, प्रकाश, सहज, व्यक्त।

स्पृहा तत्० (स्त्री०) इच्छा, अभिलाष, चाह।

स्फटिक तत्० (पु०) बिल्लौर पत्थर, स्वच्छ पाषाण विशेष।

स्फुट तत्० (गु०) खिला, फूला हुआ, प्रकट, प्रकाश।

स्फुटन तत्० (पु०) प्रकाशन, खिलन, फूलना।

स्फूर्ति तत्० (स्त्री०) धड़कन फुरण, फरकना।

स्फोटक तत्० (पु०) फोड़ा, फुंसी, घाव।

स्मर तत्० (पु०) कामदेव, मदन, मन्मथ।—हर (पु०) महादेव, शिव।

स्मरण तत्० (पु०) सुध, चेत, स्मृति, याद।

स्मारक तत्० स्मरण करने वाला, बोधक।

स्मित तत्० (पु०) थोड़ा हँसना, मुसकाना।

स्मृति तत्० (स्त्री०) स्मरण, याद, धर्मशास्त्र, मनु-स्मृति, याज्ञवल्क्य आदि।

स्यानपन दे० (पु०) निपुणता, बुद्धिमत्ता, चतुरता।

स्याना दे० (पु०) सियान, चतुर।

स्यार, स्याल दे० (पु०) शृगाल, गीदड़, सियार।

स्रोत तत्० (पु०) सोत, धारा, प्रवाह, सोता।

स्व तत्० (सर्व०) अपना, आत्मा, निज धन।—

स्वकीय तत्० (गु०) अपना, अपने सम्बन्ध का।

स्वकीया तत्० (स्त्री०) नायिका विशेष।

स्वच्छ तत्० (गु०) निर्मल, शुद्ध, उज्वल।—ता (स्त्री०) निर्मलता, स्वच्छता, सफाई।

स्वच्छन्द तत्० (पु०) स्वेच्छानुसार बर्तने वाला, यथेच्छाचारी, स्वाधीन, मनमौजी।—ता (स्त्री०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता।

स्वजन तत्० (पु०) बन्धु, मित्र।

स्वतः तत्० (अ०) अपने से, स्वाभाविक, स्वभाव से।

स्वतन्त्र तत्० (गु०) स्वाधीन, अपने वश।—ता (स्त्री०) स्वाधीनता।

स्वधर्म तत्० (पु०) अपना धर्म।

स्वधा तत्० (अ०) पितरों को पिण्ड दान करने का शब्द।(स्त्री०) अग्नि की स्त्री का नाम।

स्वप्न तत्० (पु०) शयन, निद्रा, नींद, सपना, निद्रा के विचार।

स्वभाव तत्० (पु०) प्रकृति, टेव, बान।

स्वयम् तत्० (अ०) आप, निज, आत्मा, खुद।—भू (पु०) स्वयम् उत्पन्न होने वाला, ब्रह्मा, शिव, कामदेव।—वर (पु०) स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विवाह, जो पहले समय में प्रचलित था। कन्या निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपनी इच्छानुसार अपना पति वरण कर लेती थी।

स्वर तत्० (पु०) शब्द, अकार आदि सोलह वर्ण, ध्वनि, नाद स्वर्ग, आकाश।

स्वरित तत्० (पु०) उच्चारण विशेष। अधिक उच्च-स्वर।

स्वरूप तत्० (पु०) अपना रूप, समान रूप, शोभा, सुन्दरता।

स्वर्ग तत्० (पु०) देवलोक, इन्द्रलोक, आकाश।—पताली (स्त्री०) ऐंचाताना।

स्वर्गीय तत्० (गु०) स्वर्ग का, स्वर्ग सम्बन्धी।

स्वल्प तत्० (गु०) थोड़ा, न्यून।

स्वस्ति तत्० (अ०) कल्याण, मङ्गल, भलाई।—वाचन (पु०) कल्याणार्थ वैदिक मन्त्रों का पाठ।—वाचक (पु०) मङ्गल पाठ का।

स्वाँग दे० (पु०) अनुकरण, नकल, भँड़ैती।

स्वागत तत्० (पु०) अतिथि सत्कार, आदर, सम्मान।

स्वाति तत्० (स्त्री०) नक्षत्र विशेष, चन्द्रमा की स्त्री।

स्वाद तत्० (पु०) सवाद, रस।—युक्त (गु०) स्वादयुक्त, स्वादु।

स्वादु तत्० (गु०) स्वादयुक्त।

स्वाभाविक तत्० (गु०) स्वभाव सिद्ध, स्वभाव से उत्पन्न।

स्वामी तत्० (पु०) मालिक, प्रभु, रक्षक।

स्वार्थ तत्० (पु०) अपना अर्थ, अभिलाष।—ी (गु०) स्वार्थ युक्त।

स्वास तत्० (पु०) श्वास, प्राण वायु।

स्वीकार तत्० (पु०) अङ्गीकार, मानना।

स्वेच्छा तत्० (स्त्री०) अभिलाष स्वाधीनता।

स्वेद तत्० (पु०) पसीना, घर्मजल।—ज (पु०) स्वेद से उत्पन्न कीट।

स्वैरण तत्० (पु०) स्वेच्छानुसार बर्तने वाला, लम्पट, दुराचारी।

स्वैरी तत्० (स्त्री०) स्वेच्छाचारिणी, व्यभिचारिणी।

ह

ह हल्वर्ण का तैंतीसवाँ अक्षर, कण्ठस्थान से उच्चारण होने के कारण इसको कण्ठ्य कहते हैं।

हँकाना दे० (क्रि०) हाँकना, निकालना, बैल आदि को चलाना।

हङ्कार तत्० (पु०) बैल आदि का शब्द, रँभना।

हङ्कारना दे० (क्रि०) हाँकने वाला।

हंस तत्० (पु०) मराल पक्षी, आत्मा, जीव।—क (पु०) स्वर्ण कटक, बिछिया, बिछुआ।

हँसना दे० (क्रि०) हँसी करना, मुस्कुराना।

हँसा दे० (पु०) हँसी, हास्य, मुस्कुराहट)।

हँसाई दे० (स्त्री०) हँसी, ठठोली।

हँसिया, हसुआ दे० (पु०) दाँत, दराती, खेत काटने का अस्त्र।

हँसोड़ दे० (गु०) ठठोल, हँसमुख।

हकबकाना दे० (क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना।

हकला दे० (गु०) तुतला, लड़बड़ा।

हकलाना दे० (क्रि०) हकारना, तुतलाना, ठहर ठहर कर बोलना।

हकारना दे० (क्रि०) खदेड़ना, दौड़ाना, भगाना।

हकावका दे० (पु०) घबड़ाया, व्याकुल, उद्विग्न।

हगना दे० (क्रि०) भाड़ा फिरना, जङ्गल जाना, दिशा जाना।

हगनेटी दे० (पु०) हगने की भूमि, भाड़े फिरने की भूमि।

हगास दे० (स्त्री०) हगने की इच्छा।

हचका, हचकोला दे० धक्का, आघात, झोंक।

हचरमचर दे० (पु०) विवाद, आगा पीछा, खटकना, सोच विचार।

हटकना दे० (क्रि०) रुकना, अटकना, बाधक होना।

हटना दे० (क्रि०) पीछे फिरना, अलग होना, मुड़ना, मुरकना।

हटवा दे० (पु०) तौलने वाला, बया।

हटाना दे० (क्रि०) टाल देना, दूर कर देना।

हटिया, हट्ट दे० (स्त्री०) हाट, बाज़ार।

हट्टाकट्टा दे० (पु०) बलवान्, पुष्ट, बलशाली, स्वस्थ।

हठ तद्० (पु०) मगराई, मचलाई, अड़, ज़िद्द। —धर्मी (पु०) ज़िद्दी, हठीला।

हठात् तद्० (अ०) अकस्मात्, सहसा।

हठी, हठीला तद्० (पु०) चिड़चिड़ा, मगरा, क्रोधी।

हड़ दे० (स्त्री०) फल विशेष, काठ की बेड़ी। —गीला (पु०) पक्षी विशेष, जो पाँच फुट ऊँचा होता है। —फूटन (पु०) हड्डी की पीड़ा। —बड़ाना (क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना। —बड़िया (पु०) शीघ्री, अ-हदबाज़। —बड़ी (स्त्री०) शीघ्रता। —हड़ाना (वा०) थरथराना, कँपाना। —हड़ाहट (स्त्री०) हड़हड़ शब्द।

हड्डी दे० (स्त्री०) हाड़, अस्थि। —ला (पु०) हाड़ वाला, दृढ़, मज़बूत।

हण्डा दे० (पु०) बड़ा पात्र।

हण्डाना दे० (क्रि०) देश निकाला देना, घुमाना।

हण्डिका दे० (स्त्री०) हाँड़ी, मिट्टी का बर्तन।

हत् दे० (अ०) दुत्कार, तिरस्कार।

हतना, हनना दे० (क्रि०) मारना, मार डालना।

हत्या तद्० (स्त्री०) वध, घात, मार, हिंसा।

हत्यारा दे० (पु०) मारने वाला, वधिक।

हथ दे० (पु०) हाथ, हस्त, कर। —कड़ी (स्त्री०) हाथ बेड़ी, लोहे की बेड़ी जिससे अपराधियों के हाथ जकड़ दिये जाते हैं। —कण्डा (पु०) टेव, ढब, रीति, भाँति। —चपुआ (पु०) भाग, बाँट, हिस्सा। —छुट (पु०) मारने वाला, पीटनेवाला। —फोला (पु०) एक प्रकार की होली। —नाल (स्त्री०) हाथी पर की तोप। —फेर (पु०) उधार, ऋण, क़र्ज़ा। —रस (पु०) झगड़ा, लड़ाई, धुम्मा-चाटी, विलास, हाथ का मैथुन। —लेवा (पु०) हथजोर, उचक्कापन, चोरी की बान।

हथिनी दे० (स्त्री०) हस्तिनी, हाथी की स्त्री, करिणी।

हथल, हथवास दे० (पु०) हथकड़ा।

हथा दे० (पु०) हथकड़ा, बेंट, खोदनी, एक प्रकार की वस्तु, जिससे पानी फेंकते हैं।

हथिया दे० (पु०) नक्षत्र विशेष, तेरहवाँ नक्षत्र।

हथियाना दे० (क्रि०) पकड़ना, ग्रहण करना, अधिकार में रखना।

हथियार दे० (पु०) अस्त्र, अंसकांटा, औज़ार।

हथी दे० (स्त्री०) घोड़ा मलने का ब्रुश।

हथेली दे० (स्त्री०) हस्ततल, हाथ के बीच का स्थान।

हथौटी दे० (स्त्री०) चतुराई, निपुणता, बनावट, बनाने की निपुणता।

हथौड़ा दे० (पु०) घन, बड़ा मार्तौल।

हथौड़ी दे० (स्त्री०) छोटा हथौड़ा।

हदियाना दे० (क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना, भीत होना।

हनन तद्० (पु०) मारण, वध।

हनना दे० (क्रि०) वध करना, मार डालना।

हनुमान् तद्० (पु०) सुग्रीव की सेना का प्रधान वानर।

हन्ता तद्० (पु०) हनता, वधक, हिंसक, वध करने वाला, मारने वाला।

हय तद्० (पु०)

हर तत्० (पु०) शिव, महादेव, गणित में भाजक अङ्क को हर कहते हैं।—गिरी (पु०) कैलास।—गुणी (पु०) गुणवान्, अनेक गुणों का ज्ञाता।

हरण तत्० (पु०) छीनना, बलात्कार से ले लेना, लूट, चोरी, डाँका।

हरता तद्० (पु०) हर्ता, हरण करने वाला, लुटैया, चोर, ठग।

हरना दे० (क्रि०) लूटना, छीनना, बरबस लेना।

हरनौटा दे० (पु०) हरिण का बच्चा, मृग शावक।

हरमुद्दा दे० (पु०) हट्टाकट्टा, बलवान्, बली।

हरा दे० (पु०) हरित, हरित् वर्ण, सब्ज।

हराना दे० (क्रि०) थकाना, जीतना, पराजय करना।

हरावल दे० (स्त्री०) मुहाना, सेना का आगे का भाग।

हरि तत्० (पु०) विष्णु, इन्द्र, साँप, मेढक, सिंह, घोड़ा, सूर्य, चन्द्रमा, सुग्गा, तोता, वानर, यमराज, पवन।—अरे (पु०) हरा हरा।—चन्दन (पु०) देववृक्ष, गोरोचन, सफेद चन्दन, ज्योत्स्ना।—श्चन्द्र (पु०) सूर्यवंशी राजा, सत्य और दान धर्म के पालन में ये प्रसिद्ध हैं।—जन (पु०) विष्णु का भक्त, विष्णु का अनन्य भक्त।—ताल (पु०) धातु विशेष, जो पीले रङ्ग का होता है।—तालिका (स्त्री०) व्रत विशेष, स्त्रियों का एक व्रत, भादों सुदी तीज का व्रत।—द्वार (पु०) एक तीर्थ और नगर का नाम।—पैड़ी (स्त्री०) विष्णु घाट।—प्रिया (स्त्री०) तुलसी, विष्णु पत्नी।—यल (पु०) हरा कबूतर।—यान (पु०) गरुड़।—याली (स्त्री०) सब्ज़ी, श्यामता।—वाहन (पु०) गरुड़।

हरिण तत्० (पु०) मृगा, मृग, कुरङ्ग।

हरिणी तत्० (स्त्री०) मृगी, मृग की स्त्री।

हरित् तत्० (पु०) हरा, सब्ज, श्याम, घोड़ा, अश्व।

हरिद्रा तत्० (स्त्री०) हलदी।

हरीरा दे० (पु०) भगोड़ा, हरा।

हरीधा दे० (पु०) एक प्रकार का सोताथ

हरौटी दे० (स्त्री०) छड़ी, बेंट, लठिया।

हर्ष तत्० (पु०) आनन्द, सुख, कान्यकुब्ज के राजा का नाम।

हर्षना दे० (क्रि०) हर्षित होना, फूलना, खिलना।

हर्षित तत्० (पु०) आनन्दित, आह्लादित, सुखित।

हल तत्० (पु०) हर, जिससे खेत जोतते हैं।—काना (क्रि०) धक्का देना, पहरा देना, उसकाना।—कोरना (क्रि०) बटोरना, हलोरना, समेटना।—चल (पु०) खलबली, हड़बड़ी, धूम, भीड़भाड़, डर, हुल्लड़।—चलमचाना (क्रि०) हुल्लड़ करना, गुल करना।—दिया (पु०) एक प्रकार का विष, पीलिया रोग, जिसमें शरीर पीला हो जाता है।—धर (पु०) बलराम।

हल्दी दे० (स्त्री०) हरिद्रा।

हलफना दे० (क्रि०) तड़फड़ाना, व्याकुल होना, उद्विग्न होना।

हलफल दे० (स्त्री०) शिष्टाचार, हड़बड़ी।

हलरा दे० (पु०) तरङ्ग, हेर, लहर।—वना (क्रि०) बहलावना, विनोदन करना।

हलवाहा तद्० (पु०) हल जोतने वाला, हल चलाने वाला।

हलवाही दे० (स्त्री०) हलवाह की मजूरी, जोतार खेत।

हलहलाहट दे० (स्त्री०) ज्वर आदि से काँपना, थरथराहट।

हलहलिया तद्० (पु०) विष, हलाहल।

हलहली दे० (स्त्री०) रोग, व्याधि, जूड़ी।

हलाई दे० (स्त्री०) जोताई, खेत की जुताई।

हलाहल तत्० (पु०) विष, महाविष।

हलिया दे० (पु०) बैलों का समूह।

हलियाना दे० (क्रि०) जी मचलाना, जी मथना, उबकाई आना।

हलोरना दे० (क्रि०) पछोड़ना, साफ़ करना, बटोरना।

हलोरा दे० (पु०) तरङ्ग, लहर।

हल्ला दे० (पु०) भीड़, कोलाहल, रौला, हुल्लड़।

हवन तत्० (पु०) होम, आहुति, अग्नि में मन्त्रपूर्वक, हविष्य दान ।
हवि, हविष्य तत्० (पु०) हवन की सामग्री ।
हव्य तत्० (पु०) नैवेद्य, देवता को बलि या भेंट ।
हस्त तत्० (पु०) हाथ, कर, नक्षत्र ।—गत (गु०) हाथ में आया ।
हस्तिनी तत्० (स्त्री०) करिणी, हथिनी ।
हस्ती तत्० (पु०) हाथी ।
हसली दे० (स्त्री०) गले में पहनने का एक गहना, जिसे औरतें पहनती हैं ।
हा तद्० (अ०) दुःख बोधक ।
हाँ दे० अङ्गीकार, स्वीकार ।
हाँक दे० (स्त्री०) पुकार, बुलाहट, आह्वान । —मारना (वा०) बुलाना ।
हाँकना दे० (क्रि०) पुकारना, बैल आदि को ले चलना ।
हाङ्गर तत्० (पु०) जल जन्तु विशेष ।
हाँड़ी दे० (स्त्री०) हण्डी, मिट्टी का बर्तन ।
हाँफना दे० (क्रि०) ज़ोर से साँस लेना ।
हाँसी दे० (स्त्री०) हँसी, हास्य, ठट्ठा ।
हाट तद्० (पु०) बाज़ार, पैंठ, हट्ट ।
हाटक तत्० (पु०) सुवर्ण, सोना ।
हाड़ दे० (पु०) हड्डी, अस्थि ।
हाथ दे० (पु०) हस्त, कर ।
हाथा दे० (पु०) हाथ, अधिकार, पानी फेंकने का यन्त्र ।
हाथी दे० (पु०) हस्ति, करी, गज, नाग ।—दाँत (पु०) हाथी का दाँत ।
हाथीवान् दे० (पु०) महावत ।
हानि तत्० (स्त्री०) घाटा, घटी, टोटा, नुकसान ।
हाय दे० (अ०) दुःख बोधक ।—मारना (वा०) दुःख करना ।
हायन तत्० (पु०) वर्ष, सम्वत्सर ।
हार तत्० (पु०) माला, मोती या फूलों की माला ।
हारना दे० (क्रि०) पराजित होना, हार जाना ।
हाव तत्० (पु०) नखरा, चोंचला, भाव, हावभाव ।
हास्य तत्० (पु०) हँसी, कौतुक, विनोद ।
हाहा दे० (अ०) हाय हाय, हा । (पु०) गन्धर्व विशेष ।
हाहाकार तत्० (पु०) हाय हाय का शब्द ।
हिंडोला दे० (पु०) पलना, झूला ।
हिंसक तत्० (पु०) वधिक, व्याध, हत्यारा, मारने वाला ।
हिंसा तत्० (स्त्री०) मारण, वध, घात ।
हिंगु तत्० (पु०) हींग, गन्ध द्रव्य ।
हिचकना दे० (क्रि०) आगा पीछा करना, रुकना, अटकना ।
हिचकाना दे० (क्रि०) धक्का देना, हिलाना ।
हिचकिचाना दे० (क्रि०) सन्देह में पड़ना, संशयित होना ।
हिचकी दे० (स्त्री०) हिक्का, गले से जो हिच् शब्द निकलता है ।
हिजड़ा दे० (पु०) नपुंसक, क्लीव, नामर्द ।
हित तत्० (पु०) उपकार, भलाई ।—कारी (गु०) उपकारी ।
हितैषी तत्० (गु०) हितकारक, हित करने वाला ।
हिनहिनाना दे० (क्रि०) घोड़े का शब्द ।
हिन्दी दे० (स्त्री०) हिन्द की भाषा ।
हिन्दू दे० (पु०) हिन्दुस्तान के वासी, वैदिक मत का मानने वाला ।
हिम तत्० (पु०) पाला, तुषार, ओस ।
हिमालय तत्० (पु०) पर्वत विशेष, हिमगिरी, हिमाद्री ।
हिया दे० (पु०) हृदय ।
हियाव दे० (पु०) उत्साह, साहस ।
हिरण्यकशिपु तत्० (पु०) दैत्यपति, प्रह्लाद का पिता ।
हिरद तद्० (पु०) हिया, हृदय ।
हिलामिला दे० (गु०) मिला जुला, सम्बन्ध युक्त ।
हिलसा दे० (स्त्री०) मछली विशेष ।
हिसक दे० [illegible] देखादेखी, स्पर्द्धा, हिर्स ।

हींग दे० (पु०) गन्ध द्रव्य, स्वनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य ।

हींसना दे० (क्रि०) हिनहिनाना, चाहना ।

हीक दे० (स्त्री०) उबकाई, मतलाई, मचलाई ।

हीन तत्० (गु०) न्यून, अधम, छोटा ।—जाति (पु०) अधम जाति ।

हीर तत्० (पु०) वज्र, हीरा, मणि विशेष ।

हीरा दे० हीरा, मणि विशेष ।—मन (पु०) एक प्रकार का तोता ।—पत्नी (स्त्री०) योगी की स्त्री।

हुङ्कार तत्० (पु०) गर्जन, डरावना शब्द, भयङ्कर ध्वनि ।

हुड़का दे० (पु०) अर्गल, झूरना ।

हुड़दङ्गा दे० (पु०) डकैत, गुण्डा, उपद्रवी ।

हुण्डी दे० (स्त्री०) रुपये की चिट्ठी ।

हुण्डार दे० (पु०) भेड़िया, हिंसक जन्तु विशेष ।

हुलकारना दे० (क्रि०) दुत्कारना, खदेड़ना, भगाना।

हुलसना दे० (क्रि०) आनन्दित होना, हर्षित होना ।

हुलास दे० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख, आह्लाद, नशा, सूँघने की तमाकू ।

हुल्लड़ दे० (पु०) रौला, झगड़ा, टण्टा ।

हूण तत्० हूण देश के वासी, कठोर मनुष्य ।

हूलना दे० (क्रि०) पेलना, धक्का देना, ढकेलना ।

हृदय तत्० (पु०) अन्तःकरण, मन, चित्त, छाती, हिया ।

हृष्ट तत्० (गु०) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित ।—पुष्ट (गु०) बलवान्, बली ।

हे तत्० (अ०) सम्बोधन सूचक ।

हेंगा दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे खेत बराबर किया जाता है ।

हेठ दे० (पु०) नीचे, अधः, तले ।—ा (गु०) आलसी, डरपोकना ।

हेतु तत्० (पु०) कारण, निमित्त, निदान ।

हेम तत्० (पु०) सुवर्ण, सोना, हिरण्य ।—माली (पु०) सूर्य, रवि ।

हेमन्त तत्० (पु०) ऋतु विशेष, जाड़े की ऋतु ।

हेय तत्० (गु०) त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

हेरना दे० (गु०) ढूँढ़ना ।

हेरम्ब तत्० (पु०) गणेश, गजानन, विनायक ।

हेलना दे० (क्रि०) पार होना, तैरना ।

हेला दे० (स्त्री०) अवज्ञा, अनादर, वाद्य विशेष । —मारना (वा०) पुकारना ।

हैंकना दे० (क्रि०) हाँकना, ऊँची साँस लेना ।

होठ दे० (पु०) ओष्ठ, ओठ, अधर ।

होड़ दे० (पु०) बाजी, शर्त, ठहराव, नियम, समय । —लगाना (वा०) बाजी लगाना ।

होत दे० (स्त्री०) बल, शक्ति, सामर्थ्य ।

होता तत्० (पु०) हवन कर्ता ।

होना दे० (क्रि०) रहना, विद्यमान, वर्तमान ।

होनहार दे० (गु०) भवितव्य, भविष्य, भावी, होने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि ।

होम तत्० (पु०) हवन, वेद मन्त्र पूर्वक अग्नि में आहुति देना ।—कुण्ड (पु०) हवन करने का कुण्ड ।

होला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, भूँजा चना, बूँट ।

होली तत्० (स्त्री०) पर्व विशेष, फागुन के महीने में यह होता है ।

हौंस दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाष ।

हौंका दे० (पु०) लोभ, लालच, लिप्सा, अभिलाष ।

हौले दे० (अ०) धीरे धीरे, शनैः शनैः ।

हौवा दे० (पु०) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित भूत ।

ह्रद तत्० (पु०) बड़ा जलाशय, झील ।

ह्रस्व तत्० (पु०) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर, लघु वर्ण ।

ह्रास तत्० (पु०) घाटा, टोटा, नुकसान ।

ह्लाद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख ।

॥ इति ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad

हींग दे० (पु०) गन्ध द्रव्य, स्वनाम प्रसिद्ध गन्ध द्रव्य।

हींसना दे० (क्रि०) हिनहिनाना, चाहना।

हीक दे० (स्त्री०) उबकाई, मतलाइ, मचलाई।

हीन तत्० (गु०) न्यून, अधम, छोटा।—जाति (पु०) अधम जाति।

हीर तत्० (पु०) वज्र हीरा, मणि विशेष।

हीरा दे० हीरा, मणि विशेष।—मन (पु०) एक प्रकार का तोता।—धली (स्त्री०) योगी की स्त्री।

हुङ्कार तत्० (पु०) गर्जन, डरावना शब्द, भयङ्कर ध्वनि।

हुडका दे० (पु०) अर्गल, झूरना।

हुडदङ्गा दे० (पु०) डकैत, गुण्डा, उपद्रवी।

हुण्डी दे० (स्त्री०) रुपये की चिट्ठी।

हुण्डार दे० (पु०) भेडिया, हिंसक जन्तु विशेष।

हुलकारना दे० (क्रि०) दुत्कारना, खदेडना, भगाना।

हुलसना दे० (क्रि०) आनन्दित होना, हर्षित होना।

हुलास दे० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख, आह्लाद, नशा, सूँघने की तमाकू।

हुल्लड दे० (पु०) रोला, झगडा, टण्टा।

हूण तत्० हूण देश के वासी, कठोर मनुष्य।

हूलना दे० (क्रि०) पेलना, धक्का देना, ढकेलना।

हृदय तत्० (पु०) अन्तःकरण, मन, चित्त, छाती, हिया।

हृष्ट तत्० (गु०) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित।—पुष्ट (गु०) बलवान् बली।

हें तत्० (अ०) सम्बोधन सूचक।

हेंगा दे० (पु०) एक प्रकार की मोटी लकडी, जिससे खेत बराबर किया जाता है।

हेठ दे० (पु०) नीचे, अध, तले।—ा (गु०) अशासी, हरपोंक्ना।

हेतु तत्० (पु०) कारण, निमित्त, निदान।

हेम तत्० (पु०) सुवर्ण, सोना, हिरण्य।—माली (पु०) सूर्य, रवि।

हेमन्त तत्० (पु०) ऋतु विशेष, जाडे का ऋतु।

हेय तत्० (गु०) त्याज्य, छोडने योग्य।

हेरना दे० (गु०) ढूँढना।

हेरम्ब तत्० (पु०) गणेश, गजानन, विनायक।

हेलना दे० (क्रि०) पार होना, तैरना।

हेला दे० (स्त्री०) अवज्ञा, अनादर, वाद्य विशेष।—मारना (वा०) पुकारना।

होंकना दे० (क्रि०) हाँफना, ऊँचो साँस लेना।

होठ दे० (पु०) ओष्ठ, ओठ, अधर।

होड दे० (पु०) बाजी, शर्त, ठहराव, नियम, समय।—लगाना (वा०) बाजी लगाना।

होत दे० (स्त्री०) वश, शक्ति, सामर्थ्य।

होता तत्० (पु०) हवन कर्ता।

होना दे० (क्रि०) रहना, विद्यमान, वर्तमान।

होनहार दे० (गु०) भवितव्य, भविष्य, भावी, होने वाला, तीक्ष्ण बुद्धि।

होम तत्० (पु०) हवन, वेद मन्त्र पूर्वक अग्नि में आहुति देना।—कुण्ड (पु०) हवन करने का कुण्ड।

होला दे० (पु०) एक प्रकार की नाव, भूँजा चना, घूँट।

होली तत्० (स्त्री०) पर्व विशेष, फागुन के महीने में यह होता है।

हौंस दे० (स्त्री०) इच्छा, चाह, अभिलाष।

हौंका दे० (पु०) लोभ, लालच, लिप्सा, अभिलाष।

हौंले दे० (अ०) धीरे धीरे शनैः शनैः।

हौवा दे० (पु०) बालकों को डराने के लिये एक कल्पित भूत।

ह्रद तत्० (पु०) बडा जलाशय, झील।

ह्रस्व तत्० (पु०) मात्रा विशेष, एक मात्रिक स्वर, लघु वर्ण।

ह्रास तत्० (पु०) घाटा, टोटा, नुकसान।

ह्लाद तत्० (पु०) आनन्द, हर्ष, सुख।

॥ इति ॥

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press Allahabad